



# हिन्दी-मुहावरे

( अध्ययन, संकलन एवं साहित्यिक प्रयोग )

डाक्टर प्रतिभा अग्रवाल एम० ए० डी० फिल०



कलकत्ता विश्वविद्यालय

कलकत्ता

१९६९

(1969)



# प्रकाशक :

श्री शिवेन्द्रनाथ काजीलाल

सुपरिन्टेन्डेन्ट, कलकत्ता युनिवर्सिटी प्रेस

४८, हाजरा रोड, कलकत्ता-१६

BCU 3479

© सर्वाधिकार सुरक्षित १९६९

प्रतिभा अग्रवाल

श्री शिक्षावतन कालेज

कलकत्ता

275106

मूल्य—(७५)

080 C. U.

266/5,

मुद्रक :

अजन्ता फाईन आर्ट प्रेस,

२०, बालमुकुन्द मक्कर रोड,

कलकत्ता-७





पूज्य बाबूजी को

## आमुख

मुझे हार्दिक प्रसन्नता है कि लम्बे व्यवधान के पश्चात् कलकत्ता विश्वविद्यालय पुनः हिन्दी ग्रन्थों का प्रकाशन कर रहा है। इस योजना का शुभारम्भ डाक्टर प्रतिभा अग्रवाल, एम० ए०, डी० फिल० के शोध-प्रबन्ध "हिन्दी-मुहावरे" से हो रहा है। यह प्रबन्ध कलकत्ता विश्वविद्यालय की डी० फिल० उपाधि के लिए स्वीकृत हुआ था एवं शोध-प्रबन्ध के परीक्षकों ने ग्रन्थ की सराहना करते हुए इसके प्रकाशन की भी संस्तुति की थी। भारतवर्ष में स्नातकोत्तर हिन्दी-शिक्षण का प्रारम्भ सर्व प्रथम कलकत्ता विश्वविद्यालय द्वारा सन् १९१६ में किया गया था। इसका श्रेय सुप्रसिद्ध शिक्षाविद् स्वर्गीय सर आशुतोष मुखर्जी को है। बीसवीं सदी के तीसरे दशक में विश्वविद्यालय द्वारा हिन्दी के कई महत्त्वपूर्ण ग्रन्थ प्रकाशित किए गए, जिनका समावेश और निर्धारण स्नातकोत्तर पाठ्यक्रम में विभिन्न विश्वविद्यालयों द्वारा किया गया। प्रायः चार दशकों के पश्चात् कलकत्ता विश्वविद्यालय हिन्दी ग्रन्थों का पुनः प्रकाशन प्रारम्भ कर रहा है और मुझे विश्वास है कि हिन्दी साहित्य के उच्चस्तरीय अध्ययन की दिशा में किया गया हमारा यह सत्प्रयास एवं योगदान सर्व-साधारण तथा विद्वज्जनों द्वारा समादृत होगा।

सत्येन्द्र नाथ सेन

ध्रीपंचमी—संवत् २०२५

सिनेट हाउस, कलकत्ता

उपाचार्य

कलकत्ता विश्वविद्यालय



## प्रकाशकीय विवृति

डा० प्रतिभा अग्रवाल के शोध प्रबन्ध "हिन्दी-मुहावरे—एक अध्ययन" पर कलकत्ता विश्वविद्यालय ने उन्हें डी० फिल० की उपाधि प्रदान की है। यह प्रबन्ध हिन्दी भाषा और साहित्य के अध्ययन की दिशा में एक मौलिक प्रयास है। मौलिक इसलिए कि जिस वैज्ञानिक दृष्टि से डा० अग्रवाल ने यह अध्ययन प्रस्तुत किया है, वह सर्वथा नवीन है। इसकी महत्ता भी स्वतः सिद्ध है। हिन्दी मुहावरों के प्रारम्भ, विकास, प्रयोग, अध्ययन, आकार, वर्गीकरण, अर्थव्यंजना और ऐतिहासिक विकास के साथ-साथ उनकी भाषागत विशेषताओं का भी इसमें विवेचन किया गया है। हिन्दी-मुहावरों के संकलन का कार्य तो अनेक विद्वानों ने किया पर उनके साहित्यिक प्रयोग और वर्गीकरण का अध्ययन अभी तक अछूता रहा। डा० ओमप्रकाश ने अपने शोध-प्रबन्ध "मुहावरा मीमांसा" में इस ओर स्तुत्य कार्य किया है। डा० प्रतिभा अग्रवाल ने मुहावरों के अध्ययन की वैज्ञानिक पद्धति अपनायी है। ग्रन्थ के तीनों अंश—भूमिका, वर्गीकरण और संग्रह, हिन्दी मुहावरों के विभिन्न पक्षों के सम्पन्न विवेचन हैं।

प्रस्तुत ग्रन्थ का सर्वाधिक महत्वपूर्ण अंश है, मुहावरों का संकलन, जिसमें हिन्दी साहित्य में प्रयुक्त प्रायः १०,००० मुहावरों को संग्रहीत किया गया है। कबीर से लेकर सन् १९६० तक की प्रकाशित रचनाओं में से चुनी हुई १५३ पुस्तकों से लिए गए मुहावरों के अर्थ, प्रयोग एवं प्रसंग-निर्देश करने वाला यह अंश अत्यन्त उपयोगी है। हिन्दी मुहावरों के सौन्दर्य एवं सूक्ष्म अर्थ को स्पष्ट करने के साथ-साथ गणमान्य लेखकों द्वारा प्रयुक्त होने के कारण उनको प्रामाणिकता और प्रयोगशीलता भी इस अंश के द्वारा पुष्ट होती है। मुहावरा शब्द का अर्थ ही "अभ्यास" है—भाषा के सरल और सारगर्भित प्रयोग का अभ्यास, जिससे उसके प्रयोग पर अधिकार प्राप्त हो सके। इसी से मुहावरे भाषा और साहित्य की शक्ति के परिचायक होते हैं। कभी-कभी व्याकरण-सम्मत न होने पर भी भाषा की सजीवता और समृद्धि में उनका योगदान कम नहीं होता। मुहावरों के प्रयोग का अर्थान्तरन्यासीपक्ष भी अपना वैशिष्ट्य रखता है। मुहावरे भाषा की लाक्षणिक और व्यंजक शक्ति के द्योतक और प्रमाण हैं। साहित्य और भाषा की दृष्टि से ही नहीं, किसी भी प्रदेश या जनपद के सामाजिक रीति-रिवाज, रहन-सहन एवं उसकी कला और संस्कृति भी मुहावरों में मूर्तमान होती है। सांस्कृतिक और सामाजिक परम्परा के प्रतीक बनकर, मुहावरे समाजशास्त्रीय अध्ययन की एक वैज्ञानिक भूमिका प्रस्तुत करते हैं। महापंडित राहुल सांकृत्यायन के शब्दों में "संसार में मनुष्य ने अपने विचारों को बड़े कौतूहल से देखा है, समझा है तथा बार-बार अनुभव किया है, उनको उसने शब्दों में बांध दिया है। वे ही मुहावरे कहलाते हैं"। ग्रामीण जीवन का लोकपक्षीय रूप इनमें प्रतिफलित होता है। पं० रामदीन पाण्डेय ने हिन्दी 'स्लैंग' पर जो कार्य किया है, वह



इसका प्रमाण है। मुहावरे जड़ नहीं होते, परिवर्तित परिवेश, वातावरण और युग से भी अपना पोषण करते रहते हैं। प्रत्येक भाषा में ऐसे अनेक मुहावरे प्राप्त होते हैं, जो परम्परा की दृष्टि से ही नहीं, युग की दृष्टि से भी कम महत्वपूर्ण नहीं। अनेक मुहावरों का विषयगत और संदर्भगत अर्थ भी विवेक्य है, जैसे—‘छड़ी का दूध याद आ जाना’ ‘नानी याद आना’ ‘मरे को मारे सोह मदार’ आदि ऐसे ही मुहावरे हैं। लोकोक्ति, सुभाषित, सूक्ति और कहावत से मुहावरों का क्या सम्बन्ध है और किस प्रकार इनमें प्रयोगगत भिन्नता आयी है, इसका अध्ययन भी अत्यन्त उपयोगी है। मुहावरों का प्रयोग प्रायः देश, काल और व्यक्तिनिष्ठ हुआ करता है और इनके प्रयोग का औचित्य भी इन पर निर्भर करता है। रंगों, अंगों आदि से सम्बन्धित हिन्दी मुहावरों की प्रयोगगत विविधता आश्चर्य में डाल देती है। ‘हाथ पकड़ना’, ‘पंर पकड़ना’ ‘कान पकड़ना’, ‘मुंह पर आना’, ‘मुंह चढ़ना’, ‘मुंह फूलना’ आदि, मुहावरों के प्रयोग और अर्थ में आकाश-पाताल का अन्तर है, ठीक उसी प्रकार ‘लाल-पीला-होना’, ‘हरा होना’, ‘स्याह होना’, ‘सफेद होना’ आदि भी।

यदि भारतीय भाषाओं के मुहावरों का तुलनात्मक अध्ययन किया जाय तो उनमें अन्तर्निहित अर्थगत एकता यह प्रमाणित करेगी कि इन भाषाओं में बाह्य विविधता के मध्य भी, इस दृष्टि से एक विचित्र साम्य है। संस्कृत की ‘गुडलिका प्रवाह’ जैसी अनेक वाग्योक्तियों से लेकर भारतीय भाषाओं में प्रयुक्त मुहावरों का विकासात्मक इतिहास भी कम रोचक नहीं।

हिन्दी के जिन विशिष्ट लेखकों ने अपनी रचनाओं में मुहावरों का प्रयोग किया है, उनकी भाषा-शैली का यदि इस दृष्टि से अध्ययन किया जाय तो वह भी महत्वपूर्ण होगा। प्रेमचन्द, हरिओष, शिवपूजन सहाय, अमृतलाल नागर, फणीश्वरनाथ ‘रेणु’ आदि कुछ ऐसे लेखक हैं, जिनके कर्तृत्व की गरिमा और प्रभविष्णुता का एक कारण उनकी भाषा का मुहावरेदार होना है। आंचलिक रचनाओं और रचनाओं में स्थानीय रंग : Local Colour : लाने के लिए मुहावरे सशक्त माध्यम हैं। शिवपूजन सहाय का ‘देहाती दुनिया’ इस दृष्टि से अनन्य ग्रन्थ है। हिन्दी मुहावरों के अध्ययन का एक और पक्ष है और वह है उनके दोषों का अध्ययन। ये दोष रूपगत और प्रयोगगत दोनों होते हैं। कहीं-कहीं आधुनिकीकरण के द्वारा भी इनका प्रयोग भ्रामक और अशुद्ध हो जाता है, जैसे ‘गज भर छाती’ का प्रयोग कुछ वर्षों के बाद अर्थहीन हो जायेगा।

हिन्दी में अनेक साहित्यकारों ने हिन्दी मुहावरों के संकलन का कार्य किया है। इस कार्य के दो रूप-मिलते हैं—हिन्दी मुहावरे और हिन्दुस्तानी मुहावरे। एस० डब्ल्यू फालेन और पं० अम्बिका प्रसाद वाजपेयी ने अपने संकलनों को ‘हिन्दुस्तानी’ नाम दिया है। फालेन इन सबमें अग्रणी हैं। उनकी मूल पुस्तक अंग्रेजी में थी, जिसका ‘नेशनल बुक ट्रस्ट आफ इण्डिया’ द्वारा हिन्दी संस्करण अब प्रकाशित हो गया है। हिन्दी मुहावरों के प्रमुख संकलन इस प्रकार हैं :—

१—एस० डब्ल्यू० फालेन—‘ए डिक्शनरी आफ हिन्दुस्तानी प्रावर्ब्स’ : १८८४ :

२—रामदहिन मिश्र—हिन्दी मुहावरे : १९२४ :



- ३—बहादुर चन्द—लोकोक्तियाँ और मुहावरे : १९३२ :  
 ४—जन्मनाथन —हिन्दी मुहावरा कोष : १९३५ :  
 ५—आर० जी० सिरहिन्दी—हिन्दी मुहावरा कोष : १९३६ :  
 ६—ब्रह्मस्वरूप दिनकर शर्मा—हिन्दी-मुहावरे : १९३८ :  
 ७—अम्बिका प्रसाद वाजपेयी— हिन्दुस्तानी मुहावरे : १९४० :  
 ८—डा० भोलानाथ तिवारी—हिन्दी मुहावरा कोष—दूसरा संस्करण : १९६० :

डा० अश्वाल के परीक्षकों ने उनके शोध-प्रबन्ध को प्रकाशित करने का सुभाव कलकत्ता विश्वविद्यालय को दिया। इन विद्वानों की सम्मति में डा० अश्वाल का यह शोधकार्य भविष्य में हिन्दी मुहावरों के वैज्ञानिक अध्ययन की निश्चित दिशा प्रस्तुत करने में सफल होगा। कलकत्ता विश्वविद्यालय के लिए हर्ष का विषय है कि अनेक वर्षों के अनन्तर ऐसे महत्वपूर्ण और उपयोगी ग्रन्थ से हो वह पुनः हिन्दी प्रकाशन का शुभारम्भ कर रहा है। हम कलकत्ता विश्वविद्यालय के उपकुलपति डा० सत्येन्द्रनाथ सेन, एम० ए० पीएच० डी०, एवं अन्य अधिकारियों के प्रति कृतज्ञ हैं जिन्होंने इसके प्रकाशन में हमें सुकर सहयोग प्रदान किया। इस ग्रन्थ का मुद्रण अजन्ता फाइन आर्ट प्रेस में हुआ है और इसके लिए मैं उसके प्रबन्धक और संचालक श्री मानिक वण्छावत को धन्यवाद देता हूँ, जिन्होंने इसके मुद्रण में सक्रिय रुचि और तत्परता दिखाई। हमारा विश्वास है कि सुधी साहित्य समाज इस योजना और ग्रन्थ का समुचित स्वागत करेगा।

हिन्दी-विभाग,

कलकत्ता विश्वविद्यालय

कलकत्ता

श्री पंचमी—संवत् २०२५

कल्याणमल लोढ़ा

## प्राक्कथन

मुहावरो के ऊपर काम करने की मूल प्रेरणा मुझे अपने पूज्य पिताजी ( स्वर्गीय बालकृष्ण दास जी सुपुत्र स्वर्गीय राधाकृष्ण दास जी ) से प्राप्त हुई थी। उनके द्वारा मुहावरा संग्रह करने के काम की जो नींव पड़ी थी, उसी पर प्रस्तुत ग्रंथ का निर्माण किया गया है। इसमें मैंने अपने आप को हिन्दी साहित्य से मुहावरो के प्रयोगों के चयन तथा उनका सम्पादन करने और तत्पश्चात् उनके वर्गीकरण (व्याकरण सम्मत शब्द-भण्डों की दृष्टि से) तक ही सीमित रखा है। चयन, सम्पादन एवं वर्गीकरण के प्रसंग में हिन्दी मुहावरो एवं उनके साहित्यिक प्रयोगों की जिन विशेष प्रवृत्तियों ने मेरा ध्यान आकृष्ट किया, उनका उल्लेख मैंने "हिन्दी मुहावरे—एक अध्ययन" के अन्तर्गत किया है। मेरा अध्ययन, चारणा एवं संतुल्य संकलन में गृहीत मुहावरो पर ही आधारित है, उनसे इतर नहीं। मुहावरो की उत्पत्ति, विकास, उनके सामाजिक-ऐतिहासिक महत्व एवं परम्परा का विचार या भाषा-विज्ञान की दृष्टि से उनका अध्ययन आदि मेरे क्षेत्र के अन्तर्गत नहीं आते। इनके सम्बन्ध में उक्त प्रसंग में यदि कुछ कहा गया है तो माध पृष्ठ-भूमि और उसके निर्देश के रूप में।

अज्ञेय गुरुवर डाक्टर सुकुमार सेन के निर्देशन एवं आशीर्वाद की छाया में ही यह कार्य सम्पन्न हुआ है, उन्हें मेरा नमन है। श्री कल्याणमल लोढ़ा, अध्यक्ष हिन्दी विभाग, कलकत्ता विश्वविद्यालय की आभारी हूँ जिनका प्रोत्साहन और परामर्श बहुत मूल्यवान रहा है। कलकत्ता विश्वविद्यालय की मैं अनुगृहीत हूँ जिसने इस शोध-प्रबंध को प्रकाशित करने का निर्णय किया और इस प्रकार मुझे साहित्य के विद्यार्थियों के एक बड़े समुदाय के समक्ष आने का अवसर प्रदान किया। उन सभी बन्धुओं की भी कृतज्ञ हूँ जिनसे इस सम्बन्ध में बराबर चर्चा की है और जिनका पर्याप्त समय एवं शक्ति मेरे लिए बहुत ही उपयोगी सिद्ध हुए हैं।

श्री शिक्षायतन कालेज

११, लार्ड सिन्हा रोड

कलकत्ता-१६

प्रतिभा अग्रवाल



## अनुक्रमणिका

हिन्दी मुहावरे—एक अध्ययन

एक से एकतीस

वर्गीकरण

तेइस से एक सौ सत्तासी

संज्ञा-क्रिया युक्त मुहावरे

तेइस से एक सौ सत्रह

संज्ञा युक्त मुहावरे

एक सौ सत्रह से एक सौ सत्ताइस

विशेषण-संज्ञा-क्रिया युक्त मुहावरे

एक सौ अट्ठाइस से एक सौ सैंतीस

विशेषण-संज्ञा एवं विशेषण युक्त मुहावरे

एक सौ अड़तीस से एक सौ सैंतालीस

विशेषण एवं क्रिया युक्त मुहावरे

एक सौ सैंतालीस से एक सौ पचास

क्रिया युक्त मुहावरे

एक सौ पचास से एक सौ उनसठ

अव्यय युक्त मुहावरे

एक सौ साठ से एक सौ चौंसठ

समसित-पद युक्त मुहावरे

एक सौ चौंसठ से एक सौ तिहत्तर

मुहावरे की तरह प्रयुक्त पूरे वाक्य

एक सौ तिहत्तर से एक सौ प्रठहत्तर

विविध मुहावरे

एक सौ उन्चासी से एक सौ दक्कासी

अप्रयुक्त मुहावरों के कुछ दृष्टान्त

एक सौ ब्यासी से एक सौ सत्तासी

संकेत-तालिका

एक सौ नवासी से दो सौ

संकलन एवं साहित्यिक प्रयोग

१ से ७५६

## हिन्दी मुहावरे—एक अध्ययन

### मुहावरों का प्रारम्भ एवं विकास

भाषा अभिव्यक्ति का सर्वाधिक सशक्त माध्यम है। मानव सभ्यता एवं विकास की विभिन्न स्थितियों पर दृष्टि डालने से स्पष्ट होता है कि मनुष्य के साथ ही साथ उसके अभिव्यक्ति के माध्यमों का भी विकास होता रहा है। मानव जीवन की प्रारम्भिक स्थिति में उनके भावों का विकास एवं परिवर्तन अपनी प्रारम्भिक स्थिति में था; स्थूल अनुभूतियों को वह स्पष्ट ढंग से व्यक्त कर देता था। शारीरिक क्रियाओं एवं इंगितों, विविध ध्वनियों के अनुकरण एवं नाचकूद के द्वारा प्रादिम मानव अपने हर्ष-विषाद के भाव को प्रकट करता था। भाषा एवं वाणी का वरदान मानव विकास की एक महत्वपूर्ण घटना है। वाणियों की प्राप्ति के पूर्व मनुष्य इंगित-भाषा, निश-भाषा एवं ध्वन्यानुकरण के आधार पर अपनी बात कहता था। धीरे-धीरे उसने विभिन्न वस्तुओं के लिए कुछ ध्वनियों को निर्धारित किया जो कालांतर में उन्हीं ध्वनों में बड़ हो गई और इस प्रकार उन सार्थक शब्दों की नींव पड़ी जो आज भाषा की सम्पत्ति हैं। ध्वनि से वर्ण, शब्द एवं वाक्य तक की भाषा की यात्रा मानव-जीवन के साथ-साथ घागे बढ़ती रही और आज मानव ने अपनी इस शक्ति को इतना विकसित कर लिया है कि स्पष्ट तो वषा, सूक्ष्म से सूक्ष्मतर भावों, अनुभूतियों एवं विचारों को वह अत्यंत कुशलता एवं पूर्णता के साथ, एक नहीं बनेक ढंग से व्यक्त करने में सक्षम है। अर्थ-व्याप्ति के द्वारा उसने शब्द-शक्ति को अपरिमेय बनाया है, विभिन्न अलंकारों के प्रयोग द्वारा उसने भाषा को सौंदर्य, माधुर्य एवं ओजस्विता प्रदान की है, शब्दों को गति-व्यति-न्यय में गूँथ कर उसने उसे मोहक एवं रसमय बनाया है। यह कम हजारों-हजारों वर्षों तक घनजाले चलता रहा, मनुष्य ने न इसके विषय में सोचा न जाना, वह तो सहज स्वाभाविक रूप से अपने मन के उद्गार अधिक से अधिक प्रभावपूर्ण ढंग से व्यक्त करता रहा। आज यह बताना कठिन है कि किस समय मनुष्य भाषा के प्रति सजग हुआ एवं उसके गुण-दोषों का विवेचन करने की ओर प्रवृत्त हुआ किंतु इतना निश्चित है कि ईसा के सदियों पूर्व उसका ध्यान इस ओर आकृष्ट हो चुका था और विचार-विमर्श होने लगा था। भाषा को समृद्ध, सम्पन्न एवं प्रभावशाली बनाने वाली विभिन्न शक्तियों में मुहावरे का अपना विशिष्ट स्थान है। शब्द की तीनों शक्तियों, अभिधा, लक्षणा और व्यञ्जना में लक्षणा पर आधारित यह अभिव्यक्ति-प्रकार, शब्द या वाक्यपांश के माध्यम से अभिव्यक्ति को एक अन्वृत्तापन, एक तीखा चुटौलापन एवं मार्मिकता प्रदान करता है। मुहावरों का उपयुक्त एवं संतुलित प्रयोग भाषा को नया रूप, नया ओज तथा नयी शक्ति देता है एवं सहज शाह्य भी बनाता है।



शब्द शक्तियों में प्रथम स्थान अभिधा का है जिसके द्वारा तथ्य बोध होता है। 'मनुष्य' शब्द को सुनते ही हमारे सामने उस द्विपद जीव का चित्र उभर आता है जो हमारी ही जाति का है। रूप-रंग, डीलडौल, रुचि, बुद्धि आदि की अपनी सारी विभिन्नता के बावजूद कुछ विशिष्ट सामान्य गुणों के आधार पर हमारे मन में 'मनुष्य' वर्ग का रूप स्पष्ट है और 'राम एक मनुष्य है' यह कहते ही हम उसे दूसरे सजीव एवं निर्जीव पदार्थों से भिन्न सत्ता भेदान कर देते हैं। यह अर्थ-बोध अभिधा पर आधारित है जो सीधा-स्पष्ट अर्थ है और जो उस क्षेत्र या भाषा के जाननेवालों में प्रचलित है। इसी के स्थान पर जहाँ हम 'राम गधा है' कहते हैं वही, अभिधेयार्थ में बाधा उठ खड़ी होती है। पूर्ण ज्ञान के आधार पर हम जानते हैं कि राम मनुष्य है और गधा जानवर है अतः 'राम गधा है' यह उक्ति हमें बक्कर में डाल देती है। यहाँ पर चट लक्षणा हमारी सहायता के लिए सा उपस्थित होती है और वह अर्थ स्पष्ट करती है कि गधा से बक्का का तात्पर्य उस चतुष्पद मूल ज्ञानवर से नहीं बरन् उसकी मूर्खता से है, उसके गुण से है। वह यह कहने के स्थान पर कि 'राम गधे के समान मूल है' अपनी बात को संक्षिप्त और अधिक प्रभावपूर्ण बनाने के लिए कहता है 'राम गधा है।' लक्षणा में जहाँ मूलार्थ का बोध होकर विशेष अर्थ की अभिव्यक्ति होती है वहीं व्यञ्जना के द्वारा मूलार्थ में बाधा पहुँचाए बिना एक विशेष अर्थ ध्वनित होता है। भोजन के लिए पति की प्रतीक्षा करती हुई गृहिणी की यह उक्ति कि 'दो बज गये'—समय की तात्त्विक स्थिति को बतलाते हुए भी ध्वनि इस तथ्य की देती है कि 'बहुत देर हो गई, भोजन का समय हो गया है, भूल लगी है।' कहने का तात्पर्य यह कि मनुष्य इन विभिन्न शक्तियों के द्वारा अपने भावों को अधिक मार्मिक बनाता रहा है। प्रश्न पूछा जा सकता है कि अतएव मनुष्य को इसकी आवश्यकता क्यों पड़ी? जब बात सीधे-सादे ढंग से कही जा सकती है तो फिर टेढ़े रास्ते को उसने क्यों पकड़ा जिसमें इस बात का भय तो बराबर बना ही है कि सामनेवाला श्रोता कुछ का कुछ समझ बैठे। वास्तव में तथ्य यह है कि यह मनुष्य की सहज स्वाभाविक प्रवृत्ति रही है कि वह अपनी बात को बड़ा-बड़ा कर कहता रहा है। जो है, उसका वैसा ही यथातथ्य बोध करना और करना बहुत उपयोगी एवं उपादेय है तथापि उसी बात को बक ढंग से कहना, उसमें अधिक सौंदर्य एवं चट्टीलापन लाना, क्या और अच्छा नहीं? उसने अनुभव से पाया कि आलंकारिक शैली में कही गई बात अधिक प्रभावपूर्ण होती है और कौन नहीं चाहता कि उसकी बात सब पर गहरा प्रभाव डाले, लोग बाह-बाह कर उठें। इसी प्रवृत्ति ने मनुष्य को नाना ढंगों से अपने कथन को अतिशयोक्तिपूर्ण, व्यापक एवं सरस बनाने को प्रेरित किया। मुहावरों के विकास के मूल में भी यही प्रवृत्ति काम करती प्रतीत होती है। संक्षेप में गहरी चोट कर जाना, कोई मार्मिक व्यञ्जना कर डालना, यह मुहावरों के माध्यम से ही सम्भव है। अवश्य ही अपनी आदिम अवस्था में मनुष्य ने इस उक्ति का प्रयोग प्रारंभ कर दिया होगा यद्यपि आज हमारे पास इसका कोई निश्चित प्रमाण नहीं है। हर भाषा में मुहावरों की स्थिति इस बात को पुष्ट करती है कि उसका सम्बन्ध मानवमात्र से है, यह अलग बात है कि किसी विशेष वर्ग या जाति के व्यक्तियों द्वारा इसका बहुत अधिक प्रयोग होता हो जबकि किसी दूसरे व्यक्ति द्वारा बहुत ही कम। किन्तु करते सभी हैं। मनुष्य ने कब, किस युग में सर्व प्रथम उस अभिव्यक्ति-रूप का प्रयोग किया होगा जिसे आज मुहावरा कहा जाता है, यह बतलाना असम्भव है, हमारे पास इसका कोई प्रमाण नहीं किन्तु पढ़े-लिखे, अनपढ़, शहर-गांव, हर जाति-वर्ग के बीच इसका प्रचलन ही इसकी दीर्घकालीन परम्परा एवं मानव-रक्त के साथ इसके घुले-मिले अस्तित्व की ओर इंगित करता है।



### तीन

मुहावरे क्या हैं, इस पर पर्याप्त विचार-विमर्श हो चुका है। भाषा-विज्ञान के ज्ञानार्थी ने, व्याकरणज्ञानार्थी ने एवं अन्वयार्थी विद्वानों ने भी इस पर समय-समय पर विचार किया है। मुहावरे का स्वरूप इतना स्पष्ट एवं अविवाद-स्पद है कि विभिन्न विद्वानों के मतों में कोई विरोध नहीं प्रतीत होता, बल्कि वे एक-दूसरे के पूरक कहे जा सकते हैं। विभिन्न मतों के देखने से स्पष्ट प्रतीत होता है कि मुहावरा लाक्षणिक प्रयोग है और इसके द्वारा भाषा को बकता एवं चुटीलापन प्राप्त होता है। 'लाक्षणिक प्रयोग' कहने का तात्पर्य यह नहीं सम्भवता चाहिए कि लाक्षणिक प्रयोग और मुहावरा समानार्थी हैं एवं हर लाक्षणिक प्रयोग मुहावरा है। लाक्षणिकता के साथ ही साथ दूसरा अनिवार्य गुण अपेक्षित है—रुढ़ होना अर्थात् उस विशेष अर्थ में वह लाक्षणिक प्रयोग रुढ़ एवं जन-प्रचलित हो। इस गुण के अभाव में मुहावरा मुहावरा हो ही नहीं सकता। लाक्षणिक प्रयोग, एवं मुहावरों के बीच सीमा-रेखा खींचना सरल नहीं। कहाँ कौन सा लाक्षणिक प्रयोग, अपनी विभूत आलंकारिकता छोड़ कर मुहावरे की सीमा स्पर्श करता है, और कहाँ अपनी सीमा में ही बड़ आलंकारिक प्रयोग मात्र है, यह कहना कठिन है। यह कठिनाई और भी अधिक प्रतीत होती है, हिन्दी के प्राचीन मुहावरों के सम्बन्ध में निर्णय करते समय। कहा जाता है कि हर २५-३० मील पर भाषा के रूप में कुछ न कुछ अंतर आ जाता है। इसे त्रिकुल शब्दिक अर्थ में २५-३० मील न भी मानें तो कहने का तात्पर्य यही है कि बहुत थोड़ी थोड़ी दूर पर भाषा का रूप बदलता जाता है। वही हालत में किसी एक क्षेत्र वाले के लिए दूसरे क्षेत्र के प्रयोग की पूरी-पूरी एवं ठीक-ठीक जानकारी सर्वदा संभव नहीं। यह बात एक काल एक देश में जितनी लागू होती है उतनी ही लम्बे घरसे पूर्व के विवेचन में भी। आज से सैकड़ों वर्ष पूर्व भाषा का घाम प्रचलित रूप क्या था, यह ठीक ठीक नहीं बताया जा सकता। साहित्य की थोड़ी सी उपलब्ध सामग्री के आधार पर हम उसका अनुमान भर कर सकते हैं।

फिर साहित्य में प्रयुक्त भाषा एवं जन साधारण की भाषा में सदा अंतर रहा है। साहित्य की भाषा का क्षेत्र विस्तृत होता है एवं अपेक्षाकृत दीर्घकालीन भी। उत्तर भारत में आम बोलचाल की भाषाएँ यद्यपि अनेक हैं तथापि एक बहुत बड़े क्षेत्र में हिन्दी ही साहित्य की भाषा के रूप में प्रयुक्त होती है। आम बोलचाल में विभिन्न क्षेत्रों में विभिन्न वर्ग, जाति एवं पेशेवाले व्यक्तियों के द्वारा प्रयुक्त भाषा में पर्याप्त अंतर है। सहरी एवं ग्रामीण व्यक्तियों द्वारा प्रयुक्त शब्दावली एवं अभिव्यक्ति भी अपनी विशिष्टता लिए रहती है। आज लोक-जीवन एवं लोक-साहित्य को पर्याप्त महत्व दिया जा रहा है एवं लोक-जीवन को लेकर लोक-भाषा में लिखा साहित्य आदर पा रहा है तथापि इसमें कोई संदेह नहीं कि दोनों का अंतर स्पष्ट है। लोक-जीवन की सहज-सरलता उसके काव्य में भी दिखलाई पड़ती है एवं बहुत बार शिष्ट समुदाय उनको चाहते हुए भी पूरी तरह ग्रहण नहीं कर पाता। श्रेष्ठ साहित्यकार सदा जन-जीवन की धमनियों के हर स्पंदन का अनुभव करने का प्रयत्न करता है, और उसमें सफल भी होता है तथापि भाषा की दृष्टि से, बहुत प्रयत्न के बावजूद वह बहुधा दूर ही रह जाता है, शिष्ट एवं ग्रामीण या लोक-साहित्य में यह अंतर बना ही रहता है।

कभी-कभी यह अंतर नाना कारणों से बहुत गहरा और स्पष्ट होता है और कभी कम पर होता अवश्य है। 'भाषा' अर्थात् जन-भाषा में रामचरित मानस की रचना करने की स्पष्ट घोषणा करनेवाले तुलसीदास भी अधिकतर



जनभाषा से दूर रहे और ग्रामीण जीवन का यथार्थ चित्रण करने में अपूर्व कुशलता प्राप्त प्रेमचंद के देहाती पात्र भी शुद्ध खड़ी बोली में ही अपने भावों को व्यक्त करते दिखाई पड़ते हैं यद्यपि स्थान-स्थान पर कुछ शब्दों के विकृत रूपों का प्रयोग कर लेखक ने भाषा में ग्रामीणता लाने का प्रयत्न किया है। कहने का तात्पर्य यही है कि जनता के निकट रहने का प्रयत्न एवं दावा करनेवाला लेखक भी सर्वदा भाषा को वास्तविक रूप नहीं दे पाता, कुछ न कुछ शिष्टता, विशिष्टता एवं विषय का स्वरूप उसे उससे दूर खींच ले जाता है। इस प्रवृत्ति के परिणाम स्वरूप साहित्य के माध्यम से तत्कालीन जन-भाषा का स्वरूप जानना, घासान नहीं। जन-भाषा एवं साहित्यिक भाषा की यह दूरी मुहावरों को और अधिक प्रभावित करती है क्योंकि मुहावरों का सम्बन्ध जन-साधारण से अधिक है, उन्हीं के बीच यह जन्म लेता, पनपता और बढ़ता है। आज से सदियों पूर्व अवधी-ब्रजभाषा के क्षेत्र में आम जनता के बीच किन-किन मुहावरों का प्रचलन था, क्या-क्या अनिर्वचित के रूप प्रयोग में थे, इसकी परम्परा का हम अनुमान लगाते हैं, निश्चित रूप से कुछ कह नहीं पाते। फिर भी एक परम्परा, जूझला तो है ही और उसी के आधार पर हम आज और आज से सदियों पूर्व के साहित्य का अध्ययन करते और अर्थ ग्रहण करते हैं।

हिन्दी भाषा भी हजार वर्षों से ऊपर का इतिहास अपने साथ लिए आज हमारे समक्ष है और उसके साथ ही मुहावरों का इतिहास भी। सिद्धों-नायों की संघा भाषा, जिनल, अवधी, ब्रजभाषा से होती हुई आज खड़ी बोली हिन्दी अपनी वर्तमान स्थिति को प्राप्त हुई है यों इस परम्परा को चाहें तो और पीछे अपभ्रंश, प्राकृत एवं संस्कृत तक ले जाया जा सकता है। संस्कृत में, जो सभी वर्तमान भारतीय आर्य भाषाओं की जननी रही है, मुहावरा का समानार्थी कोई शब्द नहीं प्राप्त होता किन्तु उसका तात्पर्य यह नहीं कि संस्कृत में मुहावरे थे ही नहीं। अतिव्यक्ति का यह विशेष प्रकार भी अवश्य, किन्तु बहुत अधिक प्रचलित नहीं था। हो सकता है कि शिष्ट, संस्कृत, व्याकरण-सम्मत संस्कृत भाषा में मुहावरों का प्रयोग इसके विकृत अर्थ के कारण ग्राह्य न हुआ हो। विकृत से तात्पर्य शाब्दिक अर्थ से भिन्न कई बार संवेचा उल्टे एवं अटपटे अर्थ से है जो मुहावरे की जान है, जो उसे बोधगमन प्रदान करता है। दूसरा कारण यह भी हो सकता है कि संस्कृत जन-साधारण की भाषा तो थी नहीं अतः उसमें जन साधारण में प्रचलित आम प्रयोगों को स्थान न दिया गया हो। किन्तु इसमें संदेह नहीं कि मुहावरों का प्रयोग होता था यद्यपि बहुत सीमित रूप में। संस्कृत साहित्य में वरत वरत बिचरे इसके प्रमाण उपलब्ध हैं जो शिष्ट साहित्यिक प्रयोग तो प्रचुर हुए ही हैं। साहित्य जब-जब जनता के निकट आता है, भाषा मुहावरेपन की ओर झुकती है। हिन्दी का साहित्य इसका प्रमाण है। वे लेखक या कवि जो जन-जीवन के चित्रण में संलग्न थे, उनकी रचनाओं में मुहावरों का प्रचुर प्रयोग मिलता है जब कि दर्शन-वेदान्त के प्रसंगों को लेकर लिखी गई रचनाओं में कम या नहीं था। हिन्दी भाषा के इस सुदीर्घ इतिहास के दौरान हर युग में मुहावरों का प्रयोग किया गया है और उनकी सोज तथा अध्ययन पर्याप्त महत्वपूर्ण एवं अधिक विषय है। हिन्दी मुहावरों की प्रकृति, प्रवृत्ति, आकार, गठन, ऐतिहासिक विकास एवं विशेषताओं पर आगामी पृष्ठों में विचार प्रगट किया जा रहा है तथा संलग्न संग्रह मत के स्पष्टीकरण एवं पृष्टि में महापक होगा।



## मुहावरों का क्षेत्र एवं आकार

जैसा कि पहले कहा जा चुका है, मुहावरा वह विशिष्ट पद-रचना है जो अभिधेयार्थ से भिन्न कोई विशेष साक्षणिक अर्थ को सम्मुख रखती है या किसी अभिधेयार्थ को गौण बनाकर कोई विशेष अर्थ की ध्वनि देती है। 'अभिधेयार्थ से भिन्न विशेष अर्थ' यदि इसे मुहावरा का मुख्य लक्षण माना जाय तो उसका क्षेत्र बहुत ही विस्तृत हो जाता है। आम बोलचाल में हम न जाने कितने तत्सम एवं देशज शब्दों का प्रयोग करते हैं जो अपने मूल अर्थ से भिन्न अर्थ में प्रयुक्त होते हैं या कोई विशेष साक्षणिक अर्थ ही नहीं रखते। कालान्तर में ऐसे प्रयोग इतने रुढ़ हो जाते हैं कि उनका वास्तविक रूप एवं अर्थ विस्मृत हो जाता है और आरोपित या विकसित अर्थ ही माना जाने लगता है। वे भाषा में ऐसे घुलमिल जाते हैं कि उनकी विशेषता की ओर हमारा ध्यान ही नहीं जाता। निश्चित रूप से ऐसी उक्ति अपना मुहावरापन खो बैठती है। यदि इस प्रकार के सभी विशिष्ट प्रयोगों को हम मुहावरा मानने लगे तो चारों ओर मुहावरा ही मुहावरा दिखलाई पड़े। इस प्रकार के रुढ़ विस्मृत प्रयोगों में हिन्दी की सहायक क्रियाओं का उल्लेख किया जा सकता है। उठना, करना, चलना, चाहना, डालना, देना, पढ़ना, पाना, बैठना, मारना, रहना, लगना, लेना आदि क्रियाएँ स्वतंत्र रूप से भी प्रयुक्त होती हैं और सहायक क्रिया के रूप में भी जैसे वे बोल उठे, तुम चले चलो, तस्वीर बोला चाहती है, मैंने पुस्तक पढ़ डाली, राम को काम करने दो, तुम्हें वहाँ जाना पड़ेगा, मैं यह नहीं कर पाऊँगी, तुम मेरे रूप मार बेंडे, गोविन्द ने इस पन्ना लिल मारा, तुम काम करते रहे, पानी बरसने लगा, मैंने बाग देख लिया आदि वाक्यों में स्पष्ट है कि उठना, चलना, पढ़ना, लगना आदि क्रियाएँ अपना मूल अर्थ छोड़ कर सहायक रूप में प्रयुक्त हुई हैं एवं प्रचानकता, पूर्णता, सामर्थ्य, अनुमति, बाधता आदि भावों को व्यक्त करती हैं। 'वे बोल उठे' वाक्य की दोनों क्रियाओं के भिन्न अर्थ को ले तो बोलना (to speak) और उठना (to get up) दो भिन्न भाव व्यक्त करेंगे जब कि वक्ता का तात्पर्य अचानक बोलने के भाव से है। इसी प्रकार 'आ जाओ, चल पड़, आदि भी हैं। ऐसे रूप इतने रुढ़ हो गए हैं और अपनी विशेषता को ऐसा खो चुके हैं कि (संभव है, मुहावरा रूप में कभी प्रयुक्त भी न हुए हों) इनके मुहावरेपन की ओर ध्यान नहीं जाता। किन्तु 'आ जाओ' को भले ही हम भूल जायें पर 'आ जमे' की नहीं भूल सकते, इसकी गणना मुहावरे में होगी ही। यह निर्णय करना जहाँ एक ओर कठिन लगता है, वहाँ बहुत आसान भी। कठिन इसलिए कि एक ही सी पद-रचना, समान सी अर्थ व्यञ्जना करने वाली उक्ति में से क्यों एक को मुहावरा माना जाय और दूसरी को नहीं, यह टेढ़ी खीर है। यहाँ कोई नियम-कानून नहीं चलता, बस, एक उक्ति मुहावरा है क्योंकि मुहावरा मानी जाती है और दूसरी नहीं, क्योंकि लोग उसे नहीं मानते, यह तर्क निर्णय को आसान बना देता है। अर्थ-व्यञ्जना और मुहावरापन उस भाषा की बोलनेवालों-समझनेवालों द्वारा आरोपित विशेषता है जो उनकी अपनी बीज है। यही कारण है कि एक ही उक्ति विभिन्न युगों या भिन्न-भिन्न क्षेत्रों में भिन्न-भिन्न अर्थों में प्रयुक्त होती है। इनमें से किसी एक को गलत या सही कहना, उचित नहीं क्योंकि उस क्षेत्र-विशेष में उसी अर्थ की व्यञ्जना के लिए उसका प्रयोग रुढ़ एवं प्रचलित हो गया होता है।

मुहावरों का क्षेत्र जितना विस्तृत है, उसके रूप-आकार की विविधता भी उतनी ही बहुमुखी। एक ओर एक शब्द वाले मुहावरे काफ़ी संख्या में उपलब्ध हैं और दूसरी ओर एक पूरा का पूरा वाक्य मुहावरे की तरह प्रयुक्त देखा



जाता है। उठलू (जिसका ठौर-ठिकाना न हो), उन्नीस (कम), बीस (बढ़कर), लंबा (दीर्घकालीन), सूखा (नीरस) आदि विशेषण-पद, उम्रटना (स्विर न रह पाना), उबलना (उद्भिन्न होना), उड़ाना (फैलाना), हुवाना (प्रहित करना), गिरना (पतित होना), गिराना (पतित करना), फूटना (अचानक व्यस्त हो जाना), आदि क्रिया-पद, आस (समझ, ज्ञान), उल्लू (मूर्ख), कांटा (बाधा), गठरी (मांस), गुंगा (आत्म विस्मृत), दूध (पीछे-पीछे चलनेवाला), हीरा (धिय, श्रेष्ठ) आदि संज्ञा-पद झकेले होते हुए भी अपनी विशेषता रखते हैं एवं किसी भी वाक्य को विशेष अर्थवान बनाते हैं। दूसरी ओर प्रचुर भाषा में ऐसे मुहावरे भी उपलब्ध हैं जो बहुत-काय हैं, पूरा का पूरा वाक्य मुहावरापन लिए विशेष अर्थ की व्यंजना करता है जैसे अपने मुँह मिठा मिट्टू बनना, इधर कुआँ उधर बावही, एक पैर यहाँ एक पैर वहाँ, काटो तो बदन में खून नहीं, जैसा मुँह वैसा बण्ड, पीपल के बन का दाहिना देना, बकरे की माँ का खैर मनाना आदि। संलग्न सूचियों में इसी प्रकार के अनेक मुहावरे देखे जा सकते हैं। जहाँ वाक्यों का प्रयोग मुहावरे के रूप में हुआ है वहाँ एक बात विशेष रूप से दिखलाई पड़ती है कि वाक्यांश वाले मुहावरे मुख्यतः लक्षणा पर आधारित हैं, और पूरे वाक्य वाले मुहावरे व्यंजना पर। इसका एक बहुत बड़ा कारण ऐसे मुहावरों का अधिकतर कहावतों पर आधारित होना है। कुछ लोगों की धारणा, मुहावरे और कहावत या लोकोक्ति के सम्बन्ध में स्पष्ट नहीं दिखलाई पड़ती। प्रायः लोकोक्ति और मुहावरे दोनों के अंतर को समझे बिना उन्हें एक या दूसरी कोटि में रख दिया जाता है किन्तु दोनों का अंतर स्पष्ट है। मुहावरा लाक्षणिक प्रयोग है एवं एक शब्द से लेकर पूरा वाक्य तक मुहावरे के रूप में प्रयोग में लिया जा सकता है। सामान्यतः वह वाक्यांश के रूप में किसी वाक्य में उसका अभिन्न अंग बन कर प्रयुक्त होता है एवं एक विशेष अर्थ की व्यंजना कर, उक्ति को मार्मिक एवं चामत्कारिक बनाता है। इसके विपरीत कहावतों का सम्बन्ध अतीत में लोक-जीवन में पड़ी किसी घटना से होता है जो किसी कारणवश विशेष प्रभावपूर्ण होने के कारण जन-मानस पर घमिट प्रभाव छोड़ जाती है एवं कालांतर में, वैसा ही कोई अन्य प्रसंग आने पर, उदाहरण स्वरूप उद्धृत की जाती है। चूँकि कहावतों के पीछे कोई न कोई कथा रहती है और वह अपनी बात की पुष्टि या स्पष्टीकरण के लिए उदाहरण स्वरूप उद्धृत की जाती है अतः अपने आप में पूर्ण होती है। बहुत सी ऐसी कहावतें समय-समय पर मुहावरे का रूप भी ले लेती हैं जैसे नौ दिन में अड़ाई कोस चलना (नौ दिन चले अड़ाई कोस), करेला और नीम चढ़ा होना (एक तो करेला, दूसरे चढ़ा नीम), भैंसके आगे बीन बजाना (भैंस के आगे बीन बजे औ भैंस खड़ी पगुराय), मिठा की जूती मिठा के सिर करना (मिठा की जूती मिठा का सर), होनहार पेड़ के पत्ते हरे होना (होनहार बिरबान के होत चीकने पात) आदि। इसके अतिरिक्त ऐसी भी बहुत सी उक्तियाँ हैं जो अपने विशेष अर्थ में ही प्रयुक्त होती हैं जैसे शेर की माँद में हाथ डालना, शेर-बकरी का एक घाट पानी पीना आदि। इन उक्तियों के शाब्दिक अर्थ में कहीं कोई अड़बट नहीं होती तथापि वक्ता का तात्पर्य न शेर की माँद में हाथ डालने से है और न शेर-बकरी के एक घाट पानी पीने से है बरन् वह तो खतरनाक काम करने तथा सशक्त और दुबल के एक समान अधिकार पाने या साथ रहने के भाव को व्यक्त करता है।

किन्तु एक शब्द वाले या पूरे वाक्य वाले मुहावरे अपेक्षाकृत थोड़े ही हैं। इन दो सीमाओं के बीच ऐसे मुहावरों की संख्या अधिक है जो दो या तीन-चार शब्दों से बने हैं। मैं, पर, को, से आदि विभक्ति चिह्नों को शब्दों



का अंग ही मानना चाहिए अतः इस प्रसंग में उनकी पूर्णक गणना नहीं की जा रही है। ऐसे मुहावरों संज्ञा, विशेषण, क्रिया एवं अव्यय पदों में से एक या उससे अधिक शब्द-रूप के योग से निर्मित होते हैं और हर प्रसंग में अपनी लक्ष-गिकता लिए रहते हैं।

### मुहावरों का गठन एवं वर्गीकरण

मुहावरों को आकार की दृष्टि से, विभिन्न वर्गों में या पेशेवालों में प्रचलन की दृष्टि से, तथा शब्दों के रूपों की दृष्टि से वर्गीकृत किया जा सकता है। प्रथम प्रकार का विभाजन विशेष महत्व नहीं रखता एवं द्वितीय प्रकार के अंतर्गत मुहावरों के स्वल्प अंग को ही लिया जा सकता है क्योंकि अधिकता ऐसे मुहावरों की है जो सर्व-प्रचलित हैं, किसी वर्ग या जाति तक ही सीमित नहीं, अतः मैंने अपने ध्यान को शब्द-रूपों की दृष्टि से वर्गीकरण करने तक ही सीमित रखा है। संज्ञायुक्त मुहावरों, संज्ञा-विशेषण एवं विशेषण युक्त मुहावरों, संज्ञा-विशेषण-क्रिया युक्त मुहावरों, विशेषण-क्रिया युक्त मुहावरों, क्रिया वाले मुहावरों, अव्यय युक्त मुहावरों, ध्वन्यात्मक एवं देशज शब्दों युक्त मुहावरों को अलग-अलग कोटियों में वर्गीकृत किया है जैसा कि सलग्न सूची से स्पष्ट होगा। इसके अतिरिक्त समसित पद युक्त मुहावरों को भी अलग स्थान दिया गया है क्योंकि इनके समसित रूप, मूल शब्द-गठन की दृष्टि से भिन्न अंगों की व्यंजना करते हैं। पूरे वाक्य के रूप में प्रयुक्त मुहावरों को एक साथ संकलित कर दिया गया है ताकि उनकी विशेष प्रवृत्ति स्पष्ट लक्षित हो जाय।

हिन्दी में—घौर हिन्दी में ही क्यों, संभवतः सभी भाषाओं में—यह से अधिक संख्या संज्ञा एवं क्रिया पद युक्त मुहावरों की है। यों मुहावरों का सम्बन्ध अधिकतर किसी क्रिया की व्यंजना से होता है तथा क्रिया का कर्ता कोई नामधारी जीव ही होगा अतः संज्ञा एवं क्रिया के योग से बने मुहावरों ही अधिक हैं। इनमें भी एक संज्ञा एवं एक क्रिया पद युक्त मुहावरों सर्वाधिक हैं जैसे घाँस खुलना, आँस लगना, गला बँटना, घर करना, जूँही घाना, भंडा उठाना, हाथ लगाना आदि। किन्तु एक से अधिक संज्ञा एवं क्रिया के योग वाले मुहावरों भी पर्याप्त हैं। संयुक्त क्रियाओं का प्रयोग भी मुहावरों में व्यापकता किया गया है जैसे बिड़िया हाथ से निकल जाना, तकड़ी का पलटा साना, दिल से निकाल डालना, पीठ चारपाई से लग जाना, पुट्टे पर हाथ न रखने देना, भूख प्यास बली जाना, मकान बँट जाना, हिसाब कर देना आदि। इतना ही नहीं पूर्वकालिक क्रियाओं का क्रिया-विशेषण के रूप में प्रयोग, मुहावरों को विशेष चमत्कार एवं बोक्पन प्रदान करता है और उनका भी प्रचुर उपयोग जन-समाज ने मुहावरों में किया है यथा घाँस भर कर देखना, आँस की पुतली बना कर रखना, कान खोल कर सुनना, चबा-चबा कर बातें करना, चादर तान कर सोना, दिल उड़ा-उड़ा फिरना, पिछल कर पानी होना, बाँह उठाकर पुकारना, भुजा टोक कर लड़ना, मैदान छोड़कर भागना आदि। बहुत बार पूर्वकालिक क्रिया का यह रूप स्वतंत्र रूप से भी मुहावरों में प्रयुक्त होता है यद्यपि वाक्य में उसके पूरक का होना निश्चित होता है यथा कंठ मिलाकर, गला फाड़कर, भस्म मार कर, ठठाकर, ताककर, तानकर, मुँह ऐसा मुँह लेकर आदि। चूंकि पूर्वकालिक क्रिया के दोनों ही प्रकार के प्रयोग मूलतः क्रिया रूप हैं, अतः उन्हें क्रिया के अन्तर्गत ही रखा गया है।

वर्गीकरण के प्रसंग में ही एक घौर प्रवृत्ति लक्षित होती है और वह है शब्द-रूपों का अपने मूल शब्द-रूपों से



भिन्न प्रकार-रूप का बाना पहन लेना । अनेक संज्ञा शब्द क्रिया से युक्त होकर क्रिया का रूप ले लेते हैं या यों कहा जा सकता है कि वहाँ पर क्रिया शब्द अपने आप में अपूर्ण होता है और अर्थ की पूर्ण अभिव्यक्ति संज्ञा-क्रिया के सम्मिलित रूप से ही होती है । उदाहरण स्वरूप उभास लेना, कंठ करना, कब्जा करना, खेद करना, चटपटी पड़ना, चबेना करना, जी होना, टक्कर खाना, नमकहरामी करना, पक्ष करना, पानी-पानी करना या होना, बेमोल करना, व्योत करना, भतार करना, भस्म होना, मेला लगना, हवा कर देना, होम करना आदि मुहावरे लिए जा सकते हैं । इन सभी में प्रयुक्त करना, कसना, खाना, पड़ना, लगना, होना आदि क्रियाएँ सलग्न संज्ञा शब्दों के बिना कोई अर्थ नहीं रखती, मुहावरे की दृष्टि से, किन्तु चूँकि मूलतः भस्म, मेला, हवा, होम आदि संज्ञा शब्द हैं (और मेरा वर्गीकरण शब्द-रूपों पर आधारित है, उनके अर्थों पर नहीं) अतः इन्हें संज्ञा-क्रिया ही माना गया है, केवल क्रिया नहीं । इसी प्रकार अनेक विशेषण शब्द भी क्रिया के साथ युक्त होकर क्रिया का काम करते हैं, संयुक्त-क्रिया बनाते हैं जैसे आस ऊँची करना, टेढ़ी करना, नीची करना, बंद करना, सीधी करना; चेहरा डीला पड़ना, पीला पड़ना, स्याह पड़ना; छाती ठंडी करना, ठंडी पड़ना, दूनी होना, सीतल होना; नसनस डीली करना; निगाह चार होना; बात ऊपर हो जाना; रास्ता साफ करना या होना; लहू-पसीना एक करना; हाथ साफ करना आदि । स्पष्ट है कि ऊँची, टेढ़ी, नीची, दूनी, डीली, चार, ऊपर, साफ आदि विशेषण करना, पड़ना, होना आदि क्रियाओं से सम्बद्ध होकर क्रिया के समान ही प्रयुक्त हुए हैं । परन्तु अपने विशेषता बतलानेवाले तत्त्व को छोड़ कर वे क्रिया से एक रूप नहीं हुए हैं वरन् अपनी विशेषता लिए हुए हैं । इस प्रसंग में यह दृष्टव्य है कि 'करना' क्रिया के योग से ऐसे क्रिया-रूप अधिकतर बने हैं, उसके बाद स्थान 'होना' क्रिया के योग से बने शब्दों का है । पड़ना, लगना आदि के योग से संज्ञा एवं विशेषण शब्दों को क्रिया का रूप कम ही मिल पाया है ।

मुहावरों में चूँकि विशेषता बतलाने की प्रवृत्ति रहती है अतः अन्यान्य शब्द-रूप भी विशेषण की तरह प्रयुक्त होते हैं । बहुत से क्रिया शब्द विशेषण की तरह प्रयुक्त हुए हैं यथा उगती तारिका, खड़ी जवानी, चलता सिक्का, चलती भाषा, जला हृदय, जली-भुनी बात, डूबती किशोरी, दलती उम्र, बोलती चिट्ठिया (उड़जाना) भुनी भांग (न होना), मंजी भाषा, रंगे हाथ आदि । क्रिया शब्दों की तरह संज्ञा शब्द भी विशेषण का काम करते हैं या यों भी कहा जा सकता है कि बहुत बार संज्ञावाले मुहावरों में घकेला संज्ञा शब्द या संज्ञा-संज्ञा के योग से बना मुहावरा समस्त रूप में किसी विशेषता का द्योतक होता है जैसे कपट की खान (कपटी), कांटों की सेज (दुखदायी या कठिन), किताब का कीड़ा (पढ़ाकू), गौदड़ (डरपोक), द्रोपदी का चीर (लंबा, न समाप्त होनेवाला), दिनों का फेर (बुरे दिन) आदि । सलग्न 'संज्ञा युक्त मुहावरों' की सूची में इस प्रकार के बहुत से प्रयोग उपलब्ध हो सकते हैं ।

'वाला' प्रत्यय युक्त शब्दों को मैंने संज्ञा के अंतर्गत ही रखा है जब तक कि वे निश्चित रूप से विशेष्य के साथ आकर अपने विशेषणत्व की स्पष्ट धोषणा न करते हों । आँसूवाला, ऊपरवाला, (गला) घोंटनेवाला, (तलवार) उठानेवाला, नचानेवाला निश्चित रूप से व्यक्ति विशेष की व्यंजना करते हैं, हाँ इनके साथ लड़का या आदमी लग जाने से वे विशेषण माने गए हैं । इसी प्रकार अंधा, काना, गरीब, गुंगा, बहरा, घनी एवं रंक शब्द भी हैं ।

विभक्ति चिन्हों को तो स्वतंत्र स्थान नहीं दिया गया है किन्तु ऊपर, नीचे, ऊँचे, तक, घागे, पीछे, भीतर,



बाहर आदि अव्ययों की उपेक्षा नहीं की जा सकती। ऐसे मुहावरों की संख्या बहुत कम है।

हर भाषा में कुछ ऐसे भी मुहावरे होते हैं जो ध्वनि-साम्य पर आधारित होते हैं और कुछ यों ही तिरस्क शब्दों को लेकर बना लिए जाते हैं। संभव है, पहले ये शब्द कुछ अर्थ रखते रहे हों, या किसी दूसरे अर्थ के साम्य पर बना लिये गये हों। इन्हें हम देशज प्रयोग कह सकते हैं। काँव-काँव करना, टाँप-टाँप करना, टाँप-टाँप फिस होना, ततोथंभो करना, नकनकी बजवा देना, बूम मारना, भिनभिन करना, रेड मारना, सबड़ धों-धों करना, लल्लो-चप्पो करना, सीसी सटकना, हट्टा-कट्टा, हरे होना आदि ऐसे ध्वन्यात्मक या देशज शब्द युक्त मुहावरे हैं जिन्हें 'विविध' मुहावरों के अंतर्गत रखा गया है। कुछ ऐसे भी शब्द हैं जिनका अपने मूल अर्थ से सर्वथा भिन्न अर्थ में प्रयोग मुहावरों में हुआ है यथा आकाश पाताल के कुलावे मिलाना, कल घाना, काफिया तंग करना, खाती करना, खट्टू होना। कुलावे, कल, काफिया, खाती, खट्टू आदि शब्द अपने मूल अर्थ से भिन्न अर्थ रखते हैं। वैसे तो मुहावरा में प्रयुक्त शब्दों का यह अनिवार्य गुण है कि वे अपने अभिप्रेक्ष्य से भिन्न विशेष अर्थ की व्यंजना करें तथापि कुछ न कुछ भाव-साम्य आम तौर पर पाया जाता है यों इस संबंध में कोई निश्चित नियम नहीं बनाया जा सकता।

### मुहावरों की अर्थ-व्यंजना

अर्थ-व्यंजना ही मुहावरों का प्राण है। थोड़े में बहुत कुछ कह देना, यह मुहावरों के माध्यम से ही संभव है। हाँ, इसके लिए यह आवश्यक है कि प्रयोग कर्ता को मुहावरों के अर्थ का ठीक-ठीक ज्ञान हो तथा थोटा भी उसे ठीक-ठीक पहचान कर सके अन्यथा अर्थ का प्रत्यय हो सकता है। चूँकि मुहावरों में शब्दों का स्थान निश्चित होता है तथा अर्थ भी सर्वथा रुढ़ होते हैं अतः उनमें तनिक भी हेर-फेर संभव नहीं। एक शब्द का इधर-उधर करना या घटाना-बढ़ाना अर्थ ही बदल देता है। 'लाल होना' मुहावरा जहाँ प्रसन्नता या अनुरक्त होने के भाव को व्यक्त करता है वहीं 'लाल-पीला होना' क्रोधित होने के भाव को तथा 'पीला होना' भयभीत होने के भाव को। 'ऊँची बात' से जहाँ श्रेष्ठ, अच्छी बातों का बोध होता है वहीं 'ऊँची-नीची बात' में 'ऊँची' का अर्थ ही लुप्त हो गया है, केवल 'नीची बात' की व्यंजना होती है। 'खट्टी-मीठी कहना' में भी इसी प्रकार की ध्वनि आती है।

पहले कहा जा चुका है कि मुहावरा में किसी क्रिया का होना अर्थात् किसी भाव की व्यंजना मुख्य होती है एवं इसी कारण क्रिया के योग से बने मुहावरों की संख्या बहुत अधिक है। बहुत बार ये भाव स्थूल क्रियाओं पर आधारित होते हैं एवं दैनंदिन जीवन में जिस प्रकार की स्थूल क्रियाओं का आश्रय हम प्रसंग-विशेष में भावाभिव्यक्ति के लिए लेते हैं, ठीक उसी प्रकार वे भी चल पड़े हैं—घोस ऊँची करना, नीची करना, फेरना, पैर पीछे रखना, पैर पकड़ना, लंबी सांस भरना, हाथ फैलाना आदि। हम गर्व से आँखें ऊपर करके देखते हैं, लज्जा से सामने देख नहीं पाते, विमुख होकर चेहरा घुमा लेते हैं, हार कर पैर पीछे हटा लेते हैं, किसी से विनती करने या कर उसका पैर पकड़ लेते हैं, दुःख में लंबी सांस लेते हैं तथा कभी मांगने या कर हाथ फैलाते हैं। इन्हीं स्थूल क्रियाओं पर आधारित ये मुहावरे उन्हीं अर्थों में रुढ़ हो गये हैं और बहुत बार तदनुरूप शारीरिक क्रियाओं के अभाव में भी वे उक्त भाव की व्यंजना करते हैं। 'राम सब के आगे हाथ फैलाता फिरता है' वाक्य यद्यपि राम के हाथ फैलाने की



बात कहता है तथापि संभव है वह जवान से ही मांगने की बात करता हो, हाथ न फैलाता हो फिर भी 'हाथ फैलाना' मुहावरा अपने मूल अर्थ की व्यंजना करता है।

इसी प्रकार कुछ मुहावरे सूक्ष्म व्यंजना पर आधारित होते हैं—डोंगा डुबाना मुहावरा वैसे ही अनिष्ट का बोध करता है जैसे कोई सवारी से भरी हुई नाव को डुबा कर करे। डूबती किशती पार लगाना, धाई से पेट छिपाना, दाना-पानी उठ जाना, धूप में बाल सफेद करना, पांखों उगली धी में होना, पुल बांधना, भीमता स्वर, मिजाज गरम होना, कई में लपेटो आग, आदि मुहावरे ऐसी ही सूक्ष्म व्यंजना करते हैं। हलका, भारी, साफ़, मजबूत, ऊँचा, नीचा आदि विशेषण ऐसी सूक्ष्म व्यंजना में सहायक होते हैं। हलकी वस्तु का बोझ वहन करना सहज है, भारी का कष्टप्रद इसीलिए जो हलका होना और भारी होना मन की दुश्चिन्ता या लटके के दूर होने या बढ़ जाने की व्यंजना करता है। मजबूत वस्तु को सहज ही तोड़ा नहीं जा सकता अतः 'दिल मजबूत होना' ऐसे व्यक्ति की ओर इंगित करता है जो दृढ़ एवं स्थिर प्रकृति वाला है। ऊपर वाला व्यक्ति नीचेवाले व्यक्ति के ऊपर हावी रहता है, कई दृष्टियों से उससे श्रेष्ठ स्थिति में रहता है, नीचेवाले को दबाए रहता है इसी कारण ऊँचे उठना, ऊँचे चढ़ना आदि उन्नति के शीतक और नीचे गिरना, नीचे उतरना आदि पतन के शीतक हैं। हमारे यहाँ विभिन्न रंग विभिन्न भावों के प्रतीक माने गए हैं। लाल अनुराग का, हरा प्रसन्नता का, काला दुःख या कलुष का, नीला शृंगार का, श्वेत पवित्रता एवं निर्मलता का। मुहावरों में इनका सुन्दर प्रयोग किया गया है, व्यक्ति लाल होता है, बी हरा होता है, चेहरा स्याह पड़ता है या चेहरे पर कालिमा पड़ती है, श्वेत-यश चारों ओर छा जाता है। दिल भी सफेद या काला होता है, कागज काला किया जाता है, अक्षर भी काले हो सकते हैं। अक्षर काले ही नहीं स्वर्णाक्षर भी होते हैं जो स्वर्ण की चमक-दमक एवं मूल्य, दोनों गुणों की ध्वनि देते हैं (यों अधरों से भी तात्पर्य स्पष्ट अधरों से नहीं बरन् उन अधरों द्वारा निर्मित सार्थक शब्द एवं वाक्य से ध्वनित अर्थ से ही है)।

अर्थ-विस्तार एवं अर्थ-संकोच मुहावरों की एक और विशेषता है। कही तो हम ऐसे मुहावरों को पाते हैं जिनमें अर्थ विस्तार हुआ है अर्थात् एक संकुचित अर्थवाले शब्द के द्वारा बहुत निस्तुत बात कही गई है यथा घाँख खुलना या खोलना स्पष्ट घाँख खुलने-खोलने नहीं बरन् जीवन-मरण को जानने-समझने के व्यापक अर्थ की व्यंजना करता है, घुन उबलना—अत्यधिक क्रुद्ध होने, चबेना करना—नाशता करने, चाय पर आना—चाय एवं नाशते के लिए निर्मणित होकर आने, बूझा फूकना—भोजन बनाने, डोली से उतरते ही—विवाहके छोटे दिनों के भीतर ही, नोन-तेल लकड़ी—दैनन्दिन आवश्यकताओं, धूप में बाल सफेद करना—अनुभव एवं ज्ञान द्वारा परिवर्तन होने, पलड़ा भारी होना—स्थिति दृढ़ एवं अनुकूल होने, बेंत कंपाना—भय दिखाने, भर मुँह बोलना—हार्दिकतासे बात चीत करने, हवा भरना—किसी को जबरदस्ती उत्साहित करने की व्यंजना करते हैं। इसके विपरीत बहुत बार अर्थ संकोच की प्रवृत्ति भी लक्षित होती है, आकाश से ऊँचा होना—बहुत ऊँचा होना, किताब का कीड़ा—बहुत पढ़नेवाला, भीमकाय—लंबा-चोड़ा, सैकड़ों तरह से—बहुत तरह से के अर्थ में प्रयुक्त होते हैं।

### हिन्दी मुहावरों का ऐतिहासिक विकास

साहित्य में प्रयुक्त मुहावरों पर दृष्टिपात करने से स्पष्ट हो जाता है कि हर कोटि एवं हर प्रवृत्ति वाले



## स्मारक

साहित्यकार ने प्रसंगानुसार मुहावरों का प्रयोग किया है। कबीर एवं जायसी जैसे साधक, तुलसी एवं सूर जैसे भक्त, बिहारी-मतिराम-देव जैसे शृंगारिक-कवि, घनानंद जैसे प्रेमी, भारतेन्दु जैसे सचेतन राष्ट्र एवं समाज के साहित्यकार, तथा प्रेमचंद-कौशिक-मुदर्शन जैसे जन-जीवन को चित्रित करनेवाले कुशल कलाकार, सभी ने समान रूप से मुहावरों का प्रयोग किया है। हाँ, विषय की विभिन्नता के परिणाम-स्वरूप उक्त साहित्यकारों द्वारा प्रयुक्त मुहावरों का स्वरूप भिन्न दृष्टिगत होता है। कबीर जीवन-मरण की चिंता से ग्रस्त थे, ब्रह्म के साक्षात्कार के लिए व्याकुल ब्रह्ममय होकर आवागमन के जंजाल से मुक्त होने का रास्ता ढूँढ़ रहे थे, अतः उनके काव्य में कर्म काटने, काल के पाश, चौरासी लाख योनि में भटकने, बंधन तोड़ने, मृग-तृष्णा, यम के डंडे, हृदय की गाँठ खोलने आदि की चर्चा की गई है, इस प्रकार के मुहावरे पर्याप्त मात्रा में हैं। जायसी का पय भी साधनात्मक था पर जीवन-मरण आदि के चक्कर में वे नहीं पड़े, उनका प्रेम का मार्ग कंधा पहनने, गुड़ खाकर गुंगे होने, नैनो में स्थान देने, प्रेम से दग्ध होने, शर चढ़ने, सिर पर आरा लेने आदि की चर्चा करता है। तुलसी और सूर का मार्ग इनसे भिन्न था यद्यपि लक्ष्य एक ही था। वैसे तुलसी और सूर की प्रवृत्ति भी भिन्न थी, तुलसी की भक्ति दास्य भाव की थी, उन्होंने अपनी आत्मा को भगवत् चरणों में अत्यंत दीन भाव से अर्पित किया था, उनकी अभिव्यक्ति में सर्वत्र यह भाव व्याप्त है, मुहावरों के क्षेत्र में भी। वे अंग शिथिल होने (भगवत् प्रेम से), आँख की पुतली बनाकर रखने, कलेजा दरकने, कुपथ पर पैर रखने, कोटि बदन से बखान करने (भगवत् गूण), तृण को बख बख को तृण बनाने (भगवत् सामर्थ्य), धर्म का टीका होने, पद-रज सिर पर चढ़ाने, पृथ्वी के रसातल में जाने आदि की बात करते हैं। सूर की भक्ति सख्य भाव की थी—भगवान को समकक्ष मान गोपियां तर्क-वितर्क करती हैं, उद्वेग को खूब खरी-खोटी सुनाती हैं, कृष्ण के विरह में व्याकुल होती हैं अतः सूर अंतर कपट खोलने, एक अंग भी कच्ची न होने, एक पट होने, तन करने, तन कसने, दाँव पड़ने,—लेने व हारने, नैन आकाश पर चढ़ाने, नैन-बाण मारने, सिर पर चढ़कर नाचने, मुख के सपने होने, हिय की तपन मिटाने की चर्चा में लीन दिखलाई पड़ते हैं। रीतिकालीन कवियों का क्षेत्र इन सबसे भिन्न हो गया—शृंगारिकता, उक्ति-वैचित्र्य एवं चुटीलेपन के आग्रह ने पैंने-नीले मुहावरों के प्रयोग की ओर इन्हें प्रेरित किया—आँख न आना, उघड़कर नाचना, ऐंड निकल जाना, ऐंडदार, कनखी देना, खरीदे गुलाम होना, घाटा बँठना, छिया-छिया होना, ढीले वचन, नाक के बल नचाना, नारदी-बिद्या, पाँच की सात सुनाना, पानी मथना, बात पढ़ाना, भूकुटि चढ़ाना,—तानना, मूँड़ चढ़ना, सिर रगड़ना, सो-सो चूहा खाकर बिल्ली का इज्ज करने जाना, हृदय में होली लगना जैसे मुहावरों केवल रीतिकाल में ही दिखलाई पड़ते हैं।

आधुनिक युग में विषय की विविधता एवं गद्य के प्रयोग ने मुहावरों के लिए बहुत बड़ा क्षेत्र खोल दिया है। उर्दू (जो मुहावरों के क्षेत्र में बहुत समृद्ध है) के निकट सम्पर्क ने भी इस ओर प्रगति में सहायता दी। नाना विषयों, नाना क्षेत्रों एवं नाना वर्गों संबंधी मुहावरे आज विभिन्न पुस्तकों में दिखलाई पड़ते हैं। किन्तु जिस प्रकार शहरी शिष्ट समुदाय में ग्राम बोल चाल में मुहावरों का प्रयोग कम होता जा रहा है, वह चिंता का विषय है। यदि यही प्रवृत्ति अधिक समय तक बनी रही तो संभव है, भविष्य में साहित्य में मुहावरे अपेक्षाकृत बहुत कम दिखलाई पड़ें। प्रस्तुत संग्रह में प्रायः १५०० मुहावरे ऐसे हैं जिनका प्रयोग आधुनिक काल में नहीं हुआ है। केवल



## बारह

भक्ति या रीति काल तक ही सीमित रहा है। प्रायः १००० मुहावरे ऐसे हैं जिनका प्रयोग आधुनिक के साथ ही भक्ति या रीति या आधुनिक, भक्ति और रीति तीनों ही कालों में हुआ है। इनमें भी अधिकता भक्ति और आधुनिक काल में एक साथ प्रयुक्त मुहावरों की है, रीति और आधुनिक काल में प्रयुक्त मुहावरे अपेक्षाकृत कम हैं। प्रायः २५०-३०० मुहावरे ऐसे हैं जिनका प्रयोग तीनों ही कालों में किया गया है जैसे झंक देना,—भरना,—लगाना, अंधा होना, आँख चुराना,—ठंडी करना,—फेरना,—बरसना,—लगना, आग लगना, कड़वी लगना, कान करना, कान देकर सुनना, गाँठ का, गिनती गिनना, घर बसना, घरण लेना,—छूना,—लगना, चार दिन, बिल देना, छाती जलना,—जुड़ाना, जलना, टूट जाना, नजर लगना, नाच नवाना, नाम धराना, पव जोहना, पढ़ना, पीठ देना, पेट के लिए, पैर गहना,—पकड़ना,—देना,—पड़ना, फीका लगना, बाँह पकड़ना, बाट जोहना,—देखना,—निरखना, बातें बनाना, बाल बाँका न कर सकना, भौंह चढ़ाना,—तानना, मन चुराना,—देना,—फटना,—मार कर रड़ जाना, माथा झुकाना मुँह में घुल डालना,—मोड़ना,—लगाना, राई-नोन उतारना, रात-दिन, रास्ता देखना, लट्ठू होना, सिर चढ़ाना,—झुकाना,—घुटना,—पर खड़ा होना,—पर हाथ होना, सोने में मुहाना, हाथ चढ़ना—पसारना, मलना,—में होना, हाथों बिक जाना आदि।

शब्दों के प्रयोग की दृष्टि से कई जगह उनका आधुनिक युग में स्वाभाविक परिवर्तन दिखाई पड़ता है—दृष्टि और दीठ का स्थान निगाह और नजर ने ले लिया है, कंठ का गले ने, हृदय और उर का जी और दिल ने यद्यपि सर्वत्र नहीं। ऐसे प्रयोगों की संख्या अधिक है जो आज छ सौ वर्षों से बराबर किये जा रहे हैं। विषय परिवर्तन हो जाने के कारण विशिष्ट पदावली का प्रयोग छूट गया हो, यह और बात है किन्तु आम तौर पर शब्दों के प्रयोग में बहुत अंतर नहीं हुआ है। नयी अभिव्यक्ति ने नये शब्दों के प्रयोग को प्रेरित किया है।

अंग्रेजी शब्दों का प्रयोग जिस प्रकार घड़ले के साथ आज आम बोल-चाल के क्षेत्र में हो रहा है, उसी रूप में वह मुहावरों में गृहीत नहीं हुआ है। चूंकि मुहावरे भाषा की अपनी सम्पत्ति हैं और उनका अनुवाद सहज संभव नहीं, अतः वे जल्दी दूसरी भाषा से ग्रहण नहीं किये जा सकते। यही कारण है कि अंग्रेजी के इतने प्रयोग के बावजूद वह मुहावरों के क्षेत्र को प्रभावित नहीं कर पाई है। प्रस्तुत कोष में केवल गिने-चुने चार प्रयोग अंग्रेजी शब्दों के हैं—टाचं लेकर दूढ़ने में टाचं, पोप सौला होना में पोप, रेकार्ड टूटना या तोड़ना में रेकार्ड एवं हुलिया टाइट करने में टाइट। टाचं लेकर दूढ़ना मुहावरा दिया लेकर दूढ़ने का आधुनिक रूप है, आज के बिजली एवं टाचं के युग में यह रूपान्तर स्वाभाविक एवं सार्थक है किन्तु अपवाद स्वरूप ही है। 'चार सौ बीस' या 'चार सौ बीसी' जैसे मुहावरे भी आधुनिक युग की देन हैं जिनका सम्बन्ध भारतीय-दंड संविधान की धारा ४२० से है।

जलियानवाला बाग होना, भानी की रानी होना, मोरझाफर होना, बापू होना, सन् सत्तावन मचना (महाभारत की तरह), आदि मुहावरों भारतीय इतिहास की गत डेढ़ शताब्दियों की घटनाओं पर आधारित हैं एवं नये प्रयोग हैं। इसी ढंग पर जयचंद होना भी कहा जाता है यद्यपि उसका सम्बन्ध कई शताब्दियों पूर्व के इतिहास से है। ये प्रयोग सामाजिक एवं राजनीतिक परिस्थितियों का जन-जीवन से कितना गहरा सम्बन्ध होता है, इसका प्रमाण है (यद्यपि साहित्य में मुझे उक्त मुहावरों का प्रयोग उपलब्ध नहीं हुआ है)। मुझुर घतौत की घटनाएँ अपनी मार्मिकता एवं



## वरह

तीव्रता के कारण जनता के ऊपर ऐसा प्रभाव छोड़ जाती है कि घटनाओं एवं उनका प्रभाव समाप्त हुए सदियों हो जाता है तथापि उनकी स्मृति बनी रहती है और मुहावरे में गुंथ कर जन-मानस वर्गों-वर्गों तक उन घटनाओं या व्यक्तियों के प्रति अपनी भद्रा या घृणा प्रगट करता रहता है। मुहावरों के माध्यम से हम तत्कालीन समाज एवं जन-मानस को बहुत दूर तक जान-समझ सकते हैं।

हिन्दी में पर्याप्त संख्या अंग सम्बन्धी मुहावरों की है जैसे आंख, उंगली, एड़ी, ओठ, कान, छाती, दांत, नाक, पैर, मिर, हाथ आदि। अंग सम्बन्धी मुहावरों की अधिकता हमारा ध्यान मनुष्य की आदिम अवस्था की ओर ले जाती है जब कि मनुष्य शारीरिक नाव-भंगिमा द्वारा नाना भावों की अभिव्यक्ति करता था। कालांतर में यद्यपि मनुष्य अधिक संभव होता गया तथा वाणी के वरदान-स्वरूप अभिव्यक्ति का अधिक पूर्ण तथा संशक्त माध्यम 'शब्द-भाषा' उसे मिल गया, तथापि अपनी उस मूल प्रवृत्ति से वह सर्वथा मुक्त नहीं हो पाया और बहुत से भावों की अभिव्यक्ति में वह वैसा ही आचरण करता रहा जैसा उसके आदिम पूर्वज करते थे—एड़ियां घिसना, नाक रगड़ना, नाक मिकोड़ना, पैर धूमना, पैर पकड़ना, मुंह फेंकना, मिर पकड़ कर बैठ जाना आदि मुहावरे संभवतः बहुत प्राचीन हो तथा किसी न किसी रूप में अभिव्यक्ति का माध्यम रहे हों। इस प्रसंग में एक बात विशेष रूप से लक्षित होती है कि आधुनिक काल से पूर्व के साहित्य में अंग सम्बन्धी मुहावरों का कम प्रयोग हुआ है। उंगली, ओठ, नाक, कान आदि से सम्बन्धित मुहावरे साहित्य में बहुत ही कम आए हैं। भक्ति और रीति काल में आंग सम्बन्धी मुहावरे तो पर्याप्त संख्या में हैं किन्तु पैर, मिर, हाथ सम्बन्धी कम हैं जब कि आधुनिक युग में ऐसे मुहावरों की संख्या काफी है। संभवतः इसका कारण मुख्य अभिव्यक्ति की अधिकता हो। आंख हृद्गत भावों की अभिव्यक्ति का सर्वाधिक पूर्ण साधन है। भक्ति-रीति युग में ऐसे भावों की अभिव्यक्ति को प्राधान्य दिया गया है अतः आंग सम्बन्धी मुहावरों की अधिकता है—अन्यान्य स्थल अंग सम्बन्धी मुहावरे कम हैं।

## कुछ विशिष्टताएं

कहा जा चुका है घोड़े में बहुत कहना तथा प्रभावपूर्ण डंग से कहना मुहावरे का अभीष्ट होता है। कई बार यह प्रवृत्ति बड़ी सूक्ष्म अभिव्यक्ति में सहायक होती है—जी हरा होना, द्रवित होना, भारी कदमों से, भीमता स्वर, लाल-पीले होना, हाथ होना आदि ऐसे ही गूढ़ व्यंजक मुहावरे हैं। इसी प्रकार कान के कच्चे, पतले और हलके होने में भी सूक्ष्म अंतर है, अपरिपक्वता, अजमता एवं गुरुत्व के अभाव का यों घाम तौर पर प्रयोग में संभवतः इस सूक्ष्मता की ओर ध्यान भी नहीं जाता। गाड़े का संगी, जलना, टूट जाना, नाता टूटना, पानी में नमक सा होना, भंवर की नाव होना, रंग बरसना, व्याधा भरना, स्नेह-मीना, संकरा समय, स्नेह जुड़ना, हृदय में ठूक उठना, आदि ऐसे अनेक मुहावरे हैं जो मन की बरबस बांध लेते हैं। ऐसे रसभीर्न प्रयोगों के साथ कुछ छटपटे से प्रयोग भी सामने आते हैं—परस्पर विरोधी शब्दों में कुछ मुहावरों का प्रयोग परिलक्षित होता है जैसे तिरछे होना ( अनुकूल होना, प्रतिकूल होना ), फूल कर बैठना, ( आनंदित होना, लुटना ), दिल बासों या बल्लियों उछलना, ( बहुत आनंदित होना, बहुत घबराना ), मिर धुनना ( दुःख प्रगट करना या पछताना, प्रशंसा करना ), हाथ उठाना ( मारना, प्रणाम करना ) हृदय में गड़ना या चुभना ( अत्यंत प्रिय होना, अत्यंत अप्रिय होना ) आदि। परस्पर विरोधी शब्दों में मुहावरों का



## चौपड़

प्रयोग इस तथ्य की ओर इंगित करता है कि मुहावरों का स्वरूप अपने घापमें जितना स्पष्ट होता है उतने अधिक अपने प्रसंग पर निर्भर करता है—हाथ नमस्कार करने के लिए उठाया गया है या मारने के लिए यह उस प्रसंग के पूरे ज्ञान से ही जाना जा सकता है। इसी प्रकार चूने को दिबिया से बाहर निकलना (अनुभव प्राप्त करना, बाहर आना), चोटी खड़ी होना (साहस और जोश में भर जाना), देने के नाम मुरली मनोहर होना (भाव बताना पर देना नहीं), पट पड़ना (अनुकूल होना), पेट के पतले होना (घन अपने नई न रख सकना), मन ऊंचा होना (मन में दुःखिता होनी), मन टूटना (दृष्टा होनी), मन मिट्टी होना (निष्ठाहा होना), साँई के सौ खेत होना (बहुत उपाय होना) आदि मुहावरों के प्रस्तुत अर्थ विविध से लगते हैं यद्यपि इन सब के प्रयोग इन्हीं अर्थों में उपलब्ध हैं। इसी प्रसंग में अरबी-फारसी बहना, घंघेजी भाड़ना की भी चर्चा कर ली जाय जिनमें अरबी-फारसी तथा अंग्रेजी किसी काल-विशेष की राजभाषा होने के कारण विशेष गौरव एवं महत्व पाकर मुहावरों में इन रूप में सुरक्षित हो गई हैं।

हिन्दी में जिन साहित्यकारों ने मुहावरों का प्रचुर प्रयोग किया है उनमें मूर, घनानंद, हरिऔध, प्रेमचंद, देवेन्द्र सत्याधी, धर्मपाल नागर, यशपाल, भगवतीचरण वर्मा एवं कर्णीचरण नाथ रेणु ने मुझे विशेष रूप में आकृष्ट किया। इन सभी लेखकों ने मुहावरों का बड़ा ही सुन्दर, सटीक, प्रसंगानुकूल प्रयोग किया है, एवं प्रचुर मात्रा में। मूर का व्यंग्य एवं तीक्ष्णता, साध ही मार्मिक वेदना, घनानंद की वक्तव्य, प्रेमचंद का निर्वाच्य स्वाभाविक प्रयोग, सत्याधी, नागर एवं रेणु के क्षेत्रीय प्रयोग विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं। भगवतीचरण वर्मा एवं यशपाल ने प्रचुर प्रयोग किए हैं, अच्छे प्रयोग। इन सभी में हरिऔध जी का स्थान सबसे भिन्न एवं विशिष्ट है। संभवतः अपने लेखन के माध्यम से इन्होंने हिन्दी साहित्य को सर्वाधिक मुहावरों दिए हैं। किन्तु चूंकि अपने चोखे-चोपदे, चुभते-चोपदे, बोल-बाज आदि पंक्तियों में हरिऔध जी ने साहित्य में मुहावरों का प्रयोग न करके, मुहावरों में साहित्य-रचना की है, अतः साहित्य की दृष्टि से विशेष महत्वपूर्ण न होते हुए भी मुहावरों की दृष्टि से वे विशेष सम्मान की अधिकारिणी हैं। मुहावरों का प्रयोग बतलाने के लिए ही इन पुस्तकों की रचना की गई है। अतः इनके चौपड़ों में हर पंक्ति में एक या उससे अधिक मुहावरों गुंथे गए हैं। इसके बहुत से प्रयोग बड़े ही सुन्दर एवं भाव-व्यंजक बन पड़े हैं।

## प्रस्तुत संग्रह-क्षेत्र, सीमाएं एवं स्वरूप

हिन्दी भाषा के सुदीर्घ इतिहास के होते हुए भी अभी तक उसके अंग-उपांगों के विवेचन का प्रयत्न उतना नहीं किया गया है जितना अपेक्षित है। भाषा विज्ञान, व्याकरण एवं शब्दों के स्वरूप आदि को लेकर बहुत ही कम काम हुआ है। अन्यान्य विषयों की तरह मुहावरों के विवेचन का प्रयत्न भी बहुत संतोषप्रद नहीं। सर्वश्री अयोध्या सिंह उपाध्याय हरिऔध, रामदीन मिश्र, रामचन्द्र वर्मा, ब्रह्म स्वरूप दिनकर शर्मा आदि ने अपने ग्रन्थों की भूमिका के रूप में या अन्यान्य प्रसंग में इस विषय पर अपने महत्वपूर्ण विचार व्यक्त किए हैं। इस सम्बन्ध में सर्वाधिक महत्वपूर्ण कार्य डा० घोम प्रकाश गुप्त का है जिन्होंने अपने शोध-ग्रन्थ 'मुहावरा मीमांसा' में अति विस्तार से मुहावरा शब्द के अर्थ, व्युत्पत्ति, प्रयोग, महत्व आदि का विवेचन तथा विभिन्न जाति, पेशे, रीतिरिवाज आदि से संबंधित मुहावरों का वर्गीकरण भी किया है।

मुहावरा कोशों के सम्बन्ध में भी कुछ ऐसी ही स्थिति दृष्टिगत होती है। मुहावरा-कोश नामी जिन १२-१५



पुस्तकों का परिचय प्राप्त होता है, उनमें से अधिकांश नगण्य हैं। मुहावरा कोशों में सर्वश्री भोलानाथ तिवारी, पं० छविनाथ पांडेय एवं प्रो० आर० जे० सरहिन्दो द्वारा सम्पादित कोश ही महत्वपूर्ण हैं जिनमें क्रमशः बारह हजार, दस हजार एवं नौ हजार से कुछ ऊपर मुहावरे संग्रहीत हैं (पं० रामदहिन मिश्र द्वारा संकलित एवं पं० छविनाथ पांडेय द्वारा सम्पादित कोश का प्रथम खंड ही अभी प्रकाशित हुआ है और सम्पादक का कहना है कि पूरे कोश में २५००० मुहावरे होंगे)। इनके प्रतिरिक्त सभी शब्द-कोशों में मुहावरों का उल्लेख एवं अर्थ भी दिया गया है। मुहावरा कोशों में संग्रहकर्ताओं ने स्वनिर्मित वाक्यों में मुहावरों का उदाहरण भी प्रस्तुत किया है। इन सभी कोशों में अपने-पूरे प्रकाशित कोशों से मुहावरे ले लिए गए हैं तथा कुछ थोड़े से अपने-अपने क्षेत्रों में प्रयुक्त प्रचलित मुहावरे भी। हिन्दी साहित्य में प्रयुक्त मुहावरों के विपुल भंडार की जल्दी तरह खानबीन का प्रयत्न आज तक नहीं किया गया था। प्रस्तुत संकलन इसी अछूते कार्य को करने का प्रयत्न एवं प्रारंभ है। वर्तमान संग्रह में हिन्दी के भक्तिकाल से वर्तमान काल तक की अनेक पुस्तकों से लिए गए प्रायः १०,००० मुहावरे संग्रहीत हैं। और इसमें केवल वे ही मुहावरे हैं जो साहित्य में कहीं न कहीं प्रयुक्त हुए हैं। यह कार्य अपने आप में अत्यंत गुरुत्वपूर्ण एवं समयसाध्य तब पता चला जब यह काफी आगे बढ़ चुका। यों इस कार्य की गुरुता का अनुमान तो पहले से ही था और प्रायः २०,००० मुहावरों का रत्न-कोश पास में होते हुए भी वर्षों उसमें हाथ लगाने का साहस नहीं हुआ। फिर जब एक दिन हिम्मत करके, काम करने का निर्णय कर ही लिया गया तब पीछे हटने का कोई उपाय नहीं था। नाना दृष्टियों से विचार करने पर मैंने अपने मुहावरा-चपन के क्षेत्र को भक्ति काल से लेकर आधुनिक काल तक ही सीमित रखना उचित समझा। प्रादिकाल एवं तत्पूर्व ग्रंथों की उपलब्धि, पाठ, प्रामाणिकता एवं भाषा आदि ऐसी अनेक अड़चनें थीं जिनके कारण प्रस्तुत संकलन में उनसे भी मुहावरे लेना संभव नहीं हो पाया। हाँ, आधुनिक युग में सन् ६१-६२ तक की प्रकाशित पुस्तकों का लोभ संवरण नहीं कर पाई हूँ। काम प्रारंभ करते ही पहली कठिनाई उठ खड़ी हुई कि किन-किन साहित्यकारों की कौन-कौन सी पुस्तकें ली जायँ। प्राचीन साहित्य के सम्बन्ध में तो उतनी कठिनाई नहीं हुई क्योंकि स्थायी महत्ववाले कवि एवं उनकी कृतियाँ अब तक निर्विवाद स्वीकार हो चुकी हैं। भारतेन्दु युग की कृतियों का चुनाव भी किसी प्रकार हो ही गया किन्तु आधुनिक युग में घाबर गाड़ी रकने लगी, या यों कहें कि कदम-कदम पर ऐसे नाम सामने आए कि निर्णय करना कठिन हो गया कि किसे लिया जाय और किसे छोड़ कर जदूरदर्शिता, धृष्टान एवं पक्षपात के दोष का भागी बना जाय। जितना ही पढ़ती जाती थी, और-और मुहावरों को समेटने का लोभ बढ़ता जाता था। लोभ के साथ ही उपलब्धित भय भी था कि समकालीन लेखकों में से अनेक को छोड़ कर बड़ा अपराध भी कर रही हूँ, जिसका समुचित दंड भोगना पड़ेगा। इस प्रसंग में मेरा इतना ही निवेदन है कि जिन साहित्यकारों की कृतियों का समावेश इस संग्रह में नहीं किया गया है, वह उनके प्रति अश्रद्धा या कृति की महत्वहीनता के कारण नहीं, वरन् समय के अभाव के कारण हुआ है। मुझे विश्वास है कि आगामी वर्षों में प्राचीन एवं आधुनिक युग की और अनेक कृतियों का अध्ययन कर एवं उनमें से मुहावरों का चपन कर उपर्युक्त दोष का मार्जन कर सकूँगी।



## मोलह

भक्तिकाल से १८६०-६१ तक की प्रकाशित पुस्तकों में से मैंने निम्नलिखित से महावरे संग्रहीत किए हैं :—

### भक्तिकाल

१ कबीर	कबीर ग्रन्थावली
२ जायसी	पदमावत
३ मूरदास	मूर सागर भाग १, २ : भ्रमर-गीत-सार
४ तुलसीदास	रामचरित मानस : विनय पत्रिका : कवितावली : दोहावली : गीतावली
५ नंददास	नंददास ग्रन्थावली
६ केशवदास	केशव ग्रन्थावली भाग १, २
७ अख्युल रहीम खानखाना	रहीम-कवितावली

### रातिकाल

१ बिहारो	बिहारो-रत्नाकर
२ देव	सब्द-रसायन
३ मतिराम	मतिराम मकरंद
४ पद्माकर	पद्माभरण : जगद्धिनोद
५ भूषण	भूषण-ग्रन्थावली
६ सेनापति	कवित्त-रत्नाकर
७ ठाकुर	ठाकुर-शतक
८ बोधा	इशकनामा
९ घनानंद	घनानंद-कवित
१० वृंद	वृंद-सतसई
११ गिरिधर	गिरिधर की कुंडलियां

### आधुनिक काल

१ इंशा अह्ला खां	इंशा, उनका काव्य और रानी केतकी की कहानी
२ सदल मिश्र	नामिकेतोपाख्यान : सदल मिश्र ग्रन्थावली
३ लल्लू लाल मिश्र	प्रेमसागर
४ भारतेन्दु	भारतेन्दु ग्रन्थावली भाग १, २, ३



सूचक

- ५ राधाकृष्णदास
- ६ प्रताप नारायण मिश्र
- ७ बालमुकुन्द गुप्त
- ८ बालकृष्ण भट्ट
- ९ किशोरीलाल गोस्वामी
- १० श्री निवास दास
- ११ ब्रजनन्दन सहाय
- १२ अमृतलाल नागर
- १३ अयोध्यासिंह उपाध्याय
- १४ इलाचंद्र जोशी
- १५ उदयशंकर भट्ट
- १६ उपेन्द्रनाथ अशक
- १७ गुरुभक्त सिंह भक्त
- १८ गुलाबराय
- १९ चन्द्रधर शर्मा गुलेरी
- २० चतुर सेन शास्त्री
- २१ जगदीश चन्द्र माथुर
- २२ जयशंकर प्रसाद
- २३ जैनेन्द्र
- २४ देवराज
- २५ देवेन्द्र सत्यार्थी
- २६ धर्मवीर भारती
- २७ नागाजुन
- २८ पदुमलाल पुन्नालाल बन्शी
- २९ पद्मसिंह शर्मा
- ३० प्रेमचंद
- ३१ फणीश्वरनाथ रेणु
- ३२ बेचन शर्मा उग्र
- ३३ भगवतचरण वर्मा

- राधाकृष्ण ग्रन्थावली  
प्रताप-पीयूष  
गुप्त ग्रन्थावली  
साहित्य सुमनः भट्ट-निबंधावली  
मालती माधव भाग १, २  
परीक्षा-गुरु  
राधाकान्तः सौंदर्योपासक  
बंद और समुद्र, सुहाग के नूपुर, ये कोठेवालिर्था  
प्रिय-प्रवासः बंदेही-वनवासः मर्मस्पर्शः चुभते-चौपदेः  
चोखे-चौपदेः ठेठ हिन्दी का ठाठः बोलचाल  
जहाज का पंछी  
धूमशिव  
चेतन, पैतरे  
नूरजहाँ  
मेरे निबन्ध—जीवन और जगत  
गुलेरी ग्रन्थ-भाग १ : गुलेरी की अमर कहानियाँ  
वैशाली की नगरवधू भाग १, २ : गोली  
भोर का तारा  
तितलीः कंकालः कामनाः ध्रुक्स्वामिनीः स्कंदगुप्त  
कल्यालीः त्यागपत्रः सुनीताः परस्वः जयवर्धन  
अजय की डायरीः बाहर-भीतर  
दूधगाछः ब्रह्मपुत्रः कठपुतली  
कनुप्रिया  
बलचनमा  
कुच्छ  
पद्मसिंह शर्मा के पत्रः पद्म पराग  
रंगभूमि भाग १, २ः गोदानः कर्मभूमिः प्रेमाश्रमः सेवा-  
सदनः निर्मलाः सबनः मानसरोवरभाग १, २, ३, ४, ७  
मैला आंचलः परती-परिकथा  
गंगा का बेटाः कला का पुरस्कारः अपनी खबर  
भूले बिसरे चित्रः इंस्टालमेंटः चित्रलेखा



## अठारह

३४ महादेवी वर्मा	अतीत के चलचित्र
३५ महावीर प्रसाद द्विवेदी	साहित्य-सीकर
३६ मैथिलीशरण गुप्त	साकेत: जयदत्त-वध: पंचवटी: यशोधरा
३७ यशपाल	भूटा-सच भाग १, २: ज्ञानदान
३८ रांगेय राघव	बौने और घायल फूल: भारती का सपूत: देवकी का बेटा
३९ रामकुमार वर्मा	रेगमी-टार्ड
४० रामचंद्र शुक्ल	चिंतामणि भाग १
४१ रामधारी सिंह दिनकर	कुक्षेत्र: चक्रवाल
४२ रामकृष्ण बेनीपुरी	अम्बपाली
४३ राहुल सांकृत्यायन	सतमी के बच्चे
४४ लक्ष्मीनारायण मिश्र	सिंदूर की होली
४५ विश्वम्भरनाथ शर्मा कौशिक	मिथारिणी: मा: चित्रशाला
४६ विष्णु प्रभाकर	निशिकांत: धरती अब भी घूम रही है
४७ वृन्दावन लाल वर्मा	भांसी की रानी: मुगनयनी
४८ सच्चिदानंद हीरानंद वात्स्यायन 'अज्ञेय'	शेखर-एक जीवनी भाग १, २: नदी के द्वीप
४९ सुदर्शन	सुदर्शन-सुमन
५० सुभद्राकुमारी चौहान	मुकुल
५१ सुमित्रानंदन पंत	पल्लव: स्वर्ण-धूलि: कला और बूढ़ा चांद
५२ सूर्यकांत त्रिपाठी निराला	परिमल: अनामिका: लिली: चतुरी-चमार: कुल्ली भाट
५३ हजारि प्रसाद द्विवेदी	चोटी की पकड़: मुकुल की बीबी
५४ हरवंशराय बच्चन	अशोक के फूल: कबीर: हिन्दी साहित्य: बाण भट्ट की आत्मकथा
५५ हरिकृष्ण प्रेमी	मधुशाला: सोपान
	विषपान



## उन्नीस

उपर्युक्त सूची से स्पष्ट हो जायगा कि गत छ-शताब्दियों के हिन्दी साहित्य के प्रमुख साहित्यकारों में से अधिकांश की महत्वपूर्ण कृतियों का समावेश इसमें किया गया है। साथ ही काव्य, उपन्यास, कहानी, नाटक, निबन्ध एवं प्रालोचना आदि प्रायः सभी विषयों की पुस्तकों को लिया गया है। आलोचनात्मक ग्रंथ बहुत कम लिए गए हैं। उसका कारण वैसे ग्रंथों में मुहावरों का बहुत कम ही प्रयोग दिखलाई पड़ता है। मुहावरों के चयन के क्षेत्र में हर युग से किसी मुहावरे के कम से कम दो प्रयोगों को—यदि उपलब्ध हुए हैं तो—संकलित करने का प्रयत्न किया गया है। भक्तिकाल में कबीर, जायसी, मूर एवं तुलसी में से सभी के प्रयोग यदि मिले हैं तो उन्हें अवश्य लिया गया है। ऐसा करने का कारण एक तो उक्त कवियों की व्यक्तिगत महत्ता है तथा दूसरा उनकी भाषागत भिन्नता है। ये चारों क्रमशः मिली-जुली भाषा, ठेठ अवधी, ब्रजभाषा एवं संस्कृत मिश्रित अवधी तथा ब्रजभाषा के कवि रहे हैं अतः उक्त भाषाओं में मुहावरों के प्रयोग पर भी प्रकाश पड़ सकता है। आधुनिक युग में भारतेन्दु-युग (१६०० ई० तक) एवं परवर्ती काल को मैंने इस दृष्टि से अलग-थलग इकाई माना है क्योंकि भारतेन्दु-युग की भाषा अपनी प्रारंभिक अवस्था में थी—सन् १६०० के बाद उसे संस्कृत किया गया। यों आम तौर पर चयन में कोई निश्चित रुढ़ नियम का पालन नहीं किया गया है—अच्छे एवं सटीक प्रयोग उपलब्ध होने पर दो से अधिक प्रयोग भी मुक्त-भाव से गृहीत हुए हैं। जैसा कि मैं पहले ही कह चुकी हूँ, हिन्दी साहित्य के चूने हुए १५४ ग्रंथों (जिनमें कई प्रभावलियाँ भी सम्मिलित हैं) से ही मुहावरे लिए गए हैं अतः साहित्यिक मुहावरों या साहित्य में प्रयुक्त मुहावरों का यह संग्रह पूर्ण है, इस दावे का तो प्रश्न ही नहीं उठता। दावा यदि किया जा सकता है तो केवल इतना ही कि वर्तमान संग्रह में संग्रहीत मुहावरे किसी न किसी युग में साहित्य में प्रयुक्त हुए हैं, वस। एक बात और स्पष्ट कर दूँ कि मैं यह दावा भी नहीं कर सकती कि जिन ग्रंथों को मैंने लिया है, उनके सब मुहावरों को लेने में समर्थ हो पाई हूँ। प्राचीन ग्रंथों में काफी मुहावरे छूट गए हैं कुछ अर्थ की अस्पष्टता के कारण और कुछ पकड़ में ही नहीं आए। जिन लेखकों ने मुहावरों का बहुत अधिक प्रयोग किया है (जैसे प्रेमचंद) उनकी रचनाओं के भी सब मुहावरे संभव है न प्राप्त हुए हों। साहित्य में मुहावरों का बहुत बड़ा भंडार खिपा पड़ा है जिसका उद्घाटन आवश्यक है। मैं यह निष्कर्ष स्वीकार करती हूँ कि प्रस्तुत कोश, हिन्दी के साहित्य में प्रयुक्त मुहावरों के केवल एक अंश को प्राप्त के सम्मुख रख रहा है।

पुस्तकों के चयन के बाद दूसरी कठिनाई सामने आ खड़ी हुई, मुहावरों के निर्णय की। कोई उक्ति केवल लाक्षणिक प्रयोग है या मुहावरा, यह सर्वदा बतलाना उतना आसान नहीं रहा। पं० भोलानाथ तिवारी के हिन्दी मुहावरा कोष, पं० छविनाथ पांडेय के बृहद् मुहावरा कोष, ब्रह्मस्वरूप दितकर शर्मा के हिन्दी मुहावरे, प्रो० आर० जे० सरहिन्दी के हिन्दी मुहावरा कोष, बृहत् हिन्दी शब्द सागर एवं ज्ञान मंडल द्वारा प्रकाशित बृहत् हिन्दी कोष से लिए गए सभी मुहावरों के प्रतिरिक्त प्रायः १२-१५ हजार मुहावरे मेरे पास ऐसे हैं जिनका उल्लेख किसी भी कोष में नहीं है (मेरे पास अभी प्रायः ३०,००० मुहावरे हैं जिनमें से केवल १०,००० मुहावरे वर्तमान संग्रह में जा रहे हैं) ऐसे मुहावरों के अर्थ का निर्णय अपनी ही अल्प बुद्धि पर निर्भर करता है, अपने निर्णय को किसी प्रमाण द्वारा पुष्ट करने का साधन मेरे पास नहीं। हाँ, वर्तमान संग्रह में वृत्ति है कि वे ही मुहावरे हैं जिनका साहित्यिक प्रयोग उपलब्ध है, यतः उनकी स्वतः पुष्टि हो जाती है। अब यह अलग बात है कि लेखकों ने प्रयोग ही गलत किया हो, यों ऐसी प्राशंका



एक या सबसे भी कम प्रतिष्ठित मुहावरों के सम्बन्ध में ही की जानी चाहिए। इसी प्रसंग में यह उल्लेख अनुचित न होना कि वर्तमान संग्रह के प्रायः ५० प्रतिशत मुहावरे अब तक के प्रकाशित किसी भी कोष में नहीं संग्रहीत हैं। हाँ, तो चर्चा मुहावरे हैं या नहीं, इस निर्णय की कठिनाई की हो रही थी। आज से कई सौ वर्ष पूर्व कौन सी उक्ति जन-प्रचलित कूट मुहावरा की थी, और कौन सी विद्वत् साधारण उक्ति, यह निर्णय करना, सर्वदा नहीं तो अनेक बार बहुत ही मुश्किल हुआ है। विद्वज्जन अब इस पर अपनी सम्मति देकर मेरे ज्ञान को विकसित एवं हिन्दी साहित्य के विद्यार्थी का ठीक-ठीक दिशा निर्देश कर सकेंगे।

हिन्दी के जिन चुने हुए ग्रंथों से लिए गए मुहावरे इस संकलन में संग्रहीत हैं वे सभी ग्रंथ हिन्दी के मौलिक ग्रंथ हैं, अनूदित नहीं (अपवाद स्वरूप भारतेन्दु की कुछ आधारित रचनाएं उद्धृत की जा सकती हैं)। इस प्रवृत्ति का कारण अपने क्षेत्र को सीमित करना ही था। यों तो भाषा और विशेषकर मुहावरों की दृष्टि से मौलिक और अनूदित रचनाओं में कोई अंतर नहीं करना चाहिए क्योंकि दोनों ही भाषा के तत्कालीन वर्तमान रूप का परिचय देती हैं किन्तु इतना निर्विवाद है कि ऐसी रचनाओं का स्थान मौलिक कृतियों के बाद ही मानना चाहिए। अतः प्रस्तुत संकलन में मैंने अपने ध्याप को मौलिक रचनाओं तथा ही सीमित रखा है।

कोष का स्वरूप हिन्दी में घाम तोर पर गृहीत शैली के अंतर्गत आता है। अकारादि कम से मुहावरों को व्यवस्थित किया गया है एवं अनुनासिक तथा अनुस्वार युक्त वर्ण (जिनमें पंचम वर्ण के लिए प्रयुक्त अनुस्वार भी सम्मिलित हैं, जिनका ऐसा प्रयोग आज हिन्दी में गृहीत हो चुका है जैसे अंक और अंकवार) प्रारंभ में तथा स्वरहीन प्रथम वर्ण अर्थात् संयुक्त वर्ण अंत में दिये गए हैं। शब्दों के विभिन्न रूपों जैसे जन्म और जनम, दीवार, दिवार और दीवान, ठंडा और ठंडा आदि में किसी एक रूप या दोनों रूपों को ग्रहण किया गया है यों अधिकतर प्रयत्न इसी बात का रहा है कि शुद्ध एवं बहुप्रचलित रूप ही ग्रहण किया जाय तथापि मुहावरों में प्रयुक्त रूप को प्राथमिक महत्त्व देने को बाध्य होना पड़ा है।

इसी प्रकार चरख, पद, पाँच और पैर, घाल, शीठ, दीठि, दुष्टि, नजर, निगाह, वजन और नैन, जी, दिल, हिय और हृदय जैसे समानार्थी शब्द भी सामने आए जिनके सम्बन्ध में निर्णय करने में दुविधा हुई। इस सम्बन्ध में किसी कठोर नियम का पालन नहीं किया गया है, यथा-संभव बहु-प्रचलित रूपों को ही महत्त्व देकर उनके अंतर्गत दूसरे समानार्थी शब्दों वाले प्रयोग ले लिये गये हैं। और इस बात की चेष्टा की गई है कि एक ही शब्द अर्थ-व्यंजना एवं प्रयोगवाले समानार्थी शब्दों के मुहावरे एक साथ ही रखे जायें। एक वचन और बहु-वचन प्रयोगों में भी यही दृष्टि रही है। ऐसे भी अनेक मुहावरे सामने आए हैं जिनका एक से अधिक अर्थों में प्रयोग किया जाता है। विभिन्न अर्थों में जहाँ-जहाँ मुहावरों का प्रयोग हुआ है, उन्हें उन अर्थों के साथ दिया गया है। कई बार ऐसा भी हुआ है कि कुछ अर्थों में प्रयोग उपलब्ध हुए हैं और कुछ में नहीं यद्यपि अन्योन्य कोषों में एवं जनसाधारण में उस अर्थ में प्रयोग प्रचलित है। ऐसी दशा में उन अर्थों को भी दे दिया गया है ताकि भविष्य में उन अर्थों में प्रयोग प्राप्त होने पर उनके सम्बन्ध में निर्णय करने में कोई कठिनाई न हो। इसी प्रकार ऐसे मिलते-जुलते मुहावरों का भी 'समानार्थी मुहावरे' के रूप में मुहावरों के साथ नीचे उल्लेख कर दिया गया है जिनका प्रयोग को साहित्य में नहीं मिला है किन्तु



## एनकीम

जिनका अर्थ प्रस्तुत मुहावरे जैसा ही है एवं जो उसी अर्थ में आम बोल-चाल में बराबर प्रयुक्त होते हैं। बहुत संभव है, और पुस्तकों के अध्ययन पर उनके प्रयोग भी मिल जायें। आधुनिक युग में भाषा को अधिकाधिक प्रचलित स्वाभाविक रूप में रखने की प्रवृत्ति लक्षित होती है और इसलिए आज साहित्य में संश्लेषी मिश्रित उस लिखटी भाषा के प्रायः दर्शन होते हैं (विशेष कर कथा साहित्य में) जो शिक्षित वर्ग की बातचीत में बराबर लक्षित होती है। फिर भी यह नहीं कहा जा सकता कि आज के साहित्य की भाषा का रूप, शब्दावली आदि वही है जो बोलचाल की है या कि बोलचाल में प्रयुक्त अधिकतर शब्दों का प्रयोग साहित्य में हुआ है। मुहावरों के प्रयोग में भी यह बात दिखलाई पड़ती है। आम बोलचाल में प्रचलित बहुत से मुहावरों का प्रयोग साहित्य में नहीं हुआ है विशेष कर अश्लील मुहावरों का। रोजमर्रा में प्रयुक्त बहुत से ऐसे मुहावरे जो अपनी अर्थव्यंजना में तो अत्यंत प्रभावपूर्ण हैं किन्तु शिष्ट-समुदाय में अश्लील माने जाते हैं (चाहे प्रयोग लोग कितने ही घड़ल्ले से क्यों न करते हों), साहित्य में नहीं प्रयुक्त किए गए हैं। इसी प्रकार विभिन्न क्षेत्रों में प्रयोग में आने वाले क्षेत्रज या ग्रामीण मुहावरे भी साहित्य में अपने वास्तविक प्रयोग के अनुपात में कम ही प्रयुक्त हुए हैं, यद्यपि आज का सांचलिक साहित्य इस दृष्टि से अपने क्षेत्र-विशेष के मुहावरों को पाठकों के सम्मुख रखने में सफल हो रहा है। अश्लील एवं क्षेत्रज मुहावरों के अतिरिक्त भी बहुत से ऐसे जन-प्रचलित मुहावरे हैं जो प्रस्तुत संग्रह में नहीं जा रहे हैं क्योंकि उनके प्रयोग अभी तक नहीं दिखलाई पड़े हैं जैसे अंग टटना, तोड़ना, अंगार बरसना, उंगली रखना, अंधरे में रास्ता टटोलना, झकल ठिकाने करना, अटकल-पन्थु भिड़ाना, ऊपरी खर्च, ऋण चढ़ना या चढ़ाना, काल कोठरी, काला पानी, गागर में मागर, चूड़ियां ठंडी करना, टेम्परेचर चढ़ जाना, नाई को देखकर हजामत बढ़ना, बाग-बाग होना, बाजार गिरना, मुंह-पुच्छा, सिर से कफन बांधना, आदि। ऐसे मुहावरों की और बानगी संलग्न 'अप्रयुक्त मुहावरा' सूची में देखी जा सकती है यद्यपि वह बानगी मात्र है, पूर्ण सूची नहीं।

ऐसे और अनेक जन-प्रचलित मुहावरों के अभाव में कोश अधूरा सा लगता है। इतना ही नहीं अन्याय्य मुहावरा कोशों में संग्रहीत मुहावरों में से भी करीब-करीब ५०-६० प्रतिशत मुहावरे वर्तमान संग्रह में नहीं मिले जा सकें हैं क्योंकि उनका साहित्य में प्रयोग नहीं मिला है। किन्तु मुझे विश्वास है कि भविष्य में इस कोश का कलेवर पर्वति वृद्धि प्राप्त कर सकेगा।

साहित्य में मुहावरों के संकलन एवं संपादन के अतिरिक्त मैंने एक और कार्य किया है—मुहावरों के वर्गीकरण का। भाषा एवं व्याकरण की दृष्टि से मुहावरों के गठन एवं उनमें प्रयुक्त शब्दों के स्वरूप आदि को लेकर कोई भी वर्गीकरण आज तक नहीं किया गया है। 'मुहावरों का गठन एवं वर्गीकरण' शीर्षक के अंतर्गत पहले ही मैं इस पर विचार कर चुकी हूँ। इस दिशा में मेरा यह प्राथमिक प्रयास केवल भूमि प्रदान कर रहा है जिस पर भविष्य में अध्ययन एवं रीचक तथ्यों के उद्घाटन का वृक्ष पल्लवित-पुष्पित किया जा सकेगा। वर्गीकृत मुहावरों की सूची संलग्न है। यह उल्लेख अप्रासंगिक न होगा कि वर्गीकरण उन्हीं मुहावरों का किया गया है जो वर्तमान संग्रह में गृहीत हैं अर्थात् साहित्य में प्रयुक्त प्रायः दस हजार मुहावरों का ही वर्गीकरण किया गया है, उससे भिन्न नहीं।

एक बात और कहे बिना बात पूरी नहीं होगी। संभव है, इस कोश में कुछ ऐसे मुहावरे हों जिनका मुहावरापन संदिग्ध हो। स्वयं मुझे भी कई जगह शंका हुई है फिर भी प्रयोग इतने स्पष्ट एवं व्यंजक मिले हैं कि उन्हें ग्रहण करना ही उचित लगा है। जैसा मैं पहले ही कह चुकी हूँ, मुहावरे को विस्तृत अर्थ में लें तो अनेक उक्तियां मुहावरे के अंतर्गत जा सकती हैं। अन्याय्य कोशों में ऐसे बहुत से मुहावरे दिखलाई पड़ते हैं जिनका मुहावरापन इसी प्रकार बहुत विस्तृत अर्थ लेने पर ही साध्य हो सकता है।







## मुहावरों का वर्गीकरण

### संज्ञा एवं क्रिया पद युक्त मुहावरें

अंक देना  
अंक भरना  
अंक लगाना  
अंक लेना  
अंकवार भरना  
अंकुर जमना  
अंकुश देना  
अंकुश रखना  
अंकुश रहना  
अंग अंग खिल जाना  
अंग अंग मसकुराना  
अंग करना  
अंग छूना  
अंग पड़ना  
अंग में अंग समाना  
अंग मोड़ना  
अंग लगाना  
अंग लाना  
अंगड़ाई लेना  
अंगारों पर लेटना  
अंगूठा चटाना  
अंगूठा चूमना  
अंगूठा दिखाना  
अंचल डाल कर लेना  
अंचल पसार कर  
अंचल भर कर लेना  
अंचल से बंधना  
अंटी पर चढ़ना  
अंत लेना  
अंतर्द्वियों में बल पड़ना

अंतही की बात जानना  
अंतर कपट न खोलना  
अंतर खोलना  
अंधकार छा जाना  
अंधकार नवर आना  
अंधकार में रहना  
अंधेरा ही अंधेरा दिखाई पड़ना  
अंधेरे में टटोलना  
अंधेरे में तीर मारना  
अंधेरे में रखना  
अक्ल की गांठ खोलना  
अक्ल खुल जाना  
अक्ल पास खाना  
अक्ल चरना  
अक्ल चक्कर में पड़ना  
अक्ल चर जाना  
अक्ल चरने जाना  
अक्ल चेंचरी में चढ़ना  
अक्ल ठिकाने आना  
अक्ल ठिकाने होना  
अक्ल पर ईंट पड़ना  
अक्ल पर पत्थर पड़ना  
अक्ल पर परदा पड़ना  
अक्ल मारी जाना  
अक्ल हवा हो जाना  
अक्ल के गद्दे लड़ाना  
अक्लाड़ा होना  
अगवानी लेना  
अप दहना  
अड़ंगा लगाना



## बीबीस

अड्डा जमाना  
अड्डे पर घाना  
अतीत की मिट्टी खूदना  
अधर में भूलना  
अनी पर पड़ना  
अपनपौ खोना  
अपनपौ छिपाना  
अपनपौ पहचानना  
अपनपौ पाना  
अपनपौ भूल जाना  
अपना अपना चर्खा ओटना  
अपना करना  
अपना लेना  
अपना घर समझना  
अपना राग अलापना  
अपना राग गाना  
अपना रास्ता लेना  
अपना समझना  
अपना सा मुंह लेकर चले जाना  
अपना सा मुंह लेकर रह जाना  
अपनी घाँव से देखना  
अपनी छोटे जाना  
अपनी करनी बखानना  
अपनी करनी हाँकना  
अपनी जोष का सहारा होना  
अपनी राह चलना  
अपनी राह लगना  
अपनी ही गाना  
अपनी ही चलाना  
अपनी बिल्ली का खौलियाना  
अपने को उड़ेलना

अपने को खो बैठना  
अपने को खोलना  
अपने को डुबा देना  
अपने को मिटा देना  
अपने को ही खाना  
अपने घर बैठना  
अपने चलते  
अपने तक रखना  
अपने पर घाना  
अपने पाँव में कुल्हाड़ी मारना  
अपने पैरों पर खड़े होना  
अपने मुंह में घण्टा मारना  
अपने मुंह में न होना  
अपने रंग में भूले रहना  
अपने रास्ते करना  
अपने रास्ते चलना  
अपने सिर घोड़ना  
अपने सिर लेना  
अपने ही सिर पड़ना  
अपमान का घूँट पीना  
अपलोक चढ़ाना  
अफवाह उड़ाना,—उड़ाना  
अपीम जाए होना  
अभिमान दलना  
अभिमान में डलना  
अमृत में डूबी हुई  
अमृत में सनी हुई  
अपश की पिठारी देना  
अरदब में डालना  
अरबी फारसी बूकना  
अरमान उछालना



पक्षीम

अरमान निकालना  
 अरमानों पर पाला पड़ना  
 अर्थ खोलना  
 अली की फटकार पड़ना  
 अवधि गिनना  
 अवधि बढ़ना  
 अवसर चुकना  
 अवसर ताकना  
 अवसर हाथ आना  
 अवसर हाथ में जाना  
 अवस्था उतरना  
 अस्पष्ट मोजना  
 अहिवाल जाना  
 आग जाना  
 आग उधारना  
 आग उधारी रहना  
 आग उठना  
 आग उठाकर देखना  
 आग उठाकर देखनेवाला  
 आग उठाकर न देखना  
 आग उठाना  
 आग उलभना,—उलभाना  
 आग उलट जाना,—देना  
 आग कड़वाना  
 आग करना  
 आग का काजल चुराना  
 आग का तिल खो देना  
 आग का तेल निकलवाना  
 आग का पानी गिरना,—मरना  
 आग का पानी डलना  
 आग का मारा

आँख का हमना  
 आँख कादना  
 आँख कान देना  
 आँख कान खोल कर  
 आँख की घोट करना  
 आँख की पकड़ में आना  
 आँख की पुतली फिर जाना  
 आँख की पुतली बनाकर रखना  
 आँख की पुतली समझना  
 आँख के तारे हिलना  
 आँख खोलना  
 आँख खोलना  
 आँख खोलकर  
 आँख गड़ना  
 आँख गड़ाकर देखना  
 आँख गड़ाना  
 आँख चकाबोथ होना  
 आँख चड़ना  
 आँख चड़ाना  
 आँख चमकना  
 आँख चरने जाना  
 आँख चलना,—चलाना  
 आँख चुराकर देखना  
 आँख चुरा लेना  
 आँख चुराना  
 आँख चुकना  
 आँख छत से लगना  
 आँख छिपाना  
 आँख जमना,—जमाना  
 आँख जमीन से गड़ना  
 आँख जलना



### छाबोस

आंस जाना  
 आंस जुड़ना  
 आंस जोड़ना  
 आंस भपकना  
 आंस टंग जाना  
 आंस टूटी पड़ना  
 आंस टिकना,—ठहरना  
 आंस डालना  
 आंस तरेरना  
 आंस विराना  
 आंस दिखाना  
 आंस देकर देखना  
 आंस देखना  
 आंस देना  
 आंस दोड़ना  
 आंस न उठाना  
 आंस न ठहरना  
 आंस न डालना  
 आंस न मिलाना  
 आंस नचाना  
 आंस निकलना  
 आंस निकालना  
 आंस पटपटा जाना  
 आंस पड़ना  
 आंस पधरा जाना  
 आंस पर चढ़ना  
 आंस पर परदा पड़ना  
 आंस पर रखना  
 आंस पर पट्टी बंधना  
 आंस पर पट्टी बांधना  
 आंस पसार कर देखना

आंस फटकना  
 आंस फटी रह जाना  
 आंस फड़कना  
 आंस फाड़ कर देखना  
 आंस फिर जाना  
 आंस फट जाना  
 आंस फेरना  
 आंस फेंकाकर देखना  
 आंस फेंकाना  
 आंस फोड़ना  
 आंस बचाना  
 आंस बदल जाना  
 आंस बरकाना  
 आंस बरसना  
 आंस बहाना  
 आंस बिगड़ना  
 आंस बिछाना,—बिछाना  
 आंस बँठ जाना  
 आंस भर जाना  
 आंस भर देखना  
 आंस मारते-मारते  
 आंस मारना  
 आंस मिचना  
 आंस मिलना,—मिलाना  
 आंस मुंदना  
 आंस मुंद कर  
 आंस में उंगली करना  
 आंस में टेसू कुलना  
 आंस में ठहरना  
 आंस में धूल भोंकना  
 आंस में धूल डालना



### ससाईस

आँख में धूल देना  
 आँख में पानी छाना  
 आँख में रखना  
 आँख में राई नोन डालना  
 आँख में सूई डालना  
 आँख रखना  
 आँख लगना  
 आँख लगाना  
 आँख लगी रहना  
 आँख लड़ना,—लड़ाना  
 आँख मिराना  
 आँख मोकना  
 आँख में अंगार बरसना  
 आँख में आग निकलना  
 आँख जुड़ना  
 आँख जोड़ना  
 आँख मिलना  
 आँख से उतर जाना  
 आँख में मोझल होना  
 आँख में गिर जाना  
 आँख उठी होना  
 आँख किसी पर होना  
 आँख खींचना  
 आँख खुल जाना  
 आँख छलछला जाना  
 आँख जलना  
 आँख जाती रहना  
 आँख तिरमिरा जाना  
 आँख दबाकर देखना  
 आँख दरबाजे से लगी होना

आँख पकना  
 आँख नाचना  
 आँख निकल पड़ना  
 आँख निकाल लेना  
 आँख पथ पर लगी होना  
 आँख पसारना  
 आँख फिसलना  
 आँख करना  
 आँख फोड़ना  
 आँख बंधना  
 आँख बदलना  
 आँख मिचलना  
 आँख लगाए बैठना  
 आँख लगाए रहना  
 आँख लहू से होना  
 आँखों आँखों में बातें होना  
 आँखों का कहे जाना  
 आँखों का परदा खुलना  
 आँखों की ओट करना  
 आँखों की घोट जाना,—होना  
 आँख की पट्टी खुलना  
 आँखों में तिललियां उड़ना  
 आँखों के पांवड़े बिछाना  
 आँखों को खींचना  
 आँखों को चौधियाना  
 आँखों को पकड़ना  
 आँखों देखी  
 आँखों पर अंधेरा छाना  
 आँखों पर टीकरी रखना



अठारह

आँखों पर परदा डालना  
आँखों पर बैठाना  
आँखों में अंगारे जलना  
आँखों में जड़ना  
आँखों में आँखें डालना  
आँखों में उतर आना  
आँखों में काटे की तरह लटकना  
आँखों में काटे की तरह चुभना  
आँखों में काजल धुलना,—धुलाना  
आँखों में काजल न टिकना  
आँखों में कंद करना  
आँखों में खून उतरना  
आँखों में खुमना  
आँखों में गड़ना  
आँखों में गिरना  
आँखों में घर करना  
आँखों में घूम जाना  
आँखों में चरबी छाना  
आँखों में चुभना  
आँखों में जंचना  
आँखों में जल छाना  
आँखों में जादू होना  
आँखों में भाँक कर देखना  
आँखों में तराबट आना  
आँखों में नाचना  
आँखों में पानी आना  
आँखों में पानी भर आना  
आँखों में फिरना  
आँखों में बसना  
आँखों में बैठना

आँखों में मल्लू नरना  
आँखों में रहना  
आँखों में रात कटना,—काटना  
आँखों में रामा जाना  
आँखों में सरसो फलना  
आँखों में घाँस चलना  
आँखों में खून आना  
आँखों में खून के घाँस टपकना  
आँखों में खून के घाँस निकलना  
आँखों से गंगा जमुना बहना  
आँखों से गुजरना  
आँखों से चिनगारी कटना  
आँखों से चिनगारी छूटना  
आँखों से चिनगारी फूटना  
आँखों से छनना  
आँखों से भट्टी लगना,—लगाना  
आँखों से देखकर मक्खी निगलना  
आँखों से देखना  
आँखों से न देखना  
आँखों से न निकलना  
आँखों से नींद उड़ जाना  
आँखों से परदा हटना  
आँखों से बरसना  
आँखों से बहना  
आँखों से मोती बरसना  
आँखों से रस बरसना  
आँखों से लगाना  
आँखों से विष उगलना  
आँख आना  
आँख खाना



### उत्तीस

आँच पाना  
 आँच लगना  
 आँच सहना  
 आँचल की ओट लेना  
 आँचल पसारना  
 आँचल में बाँधना  
 आँचल रोपकर  
 आँट पर चढ़ना  
 आँत उलटी घाना  
 आँत गले पड़ना  
 आँत गले में आना  
 आँत मुँह में आना  
 आँत कुलबुलाना  
 आँत समेटना  
 आँतें सूखना  
 आँतों से बातें निकाल लेना  
 आँधी आना  
 आँधी उठना  
 आँधी चलना  
 आँधी बनना  
 आँधी से खेलना  
 आँसुओं का तार बंधना  
 आँसुओं का तार बहना  
 आँसुओं का परनाला बहना  
 आँसुओं की भड़ी लगना  
 आँसुओं में बूड़ना  
 आँसुओं से मुँह धोना  
 आँसू का घूँट पीकर रह जाना  
 आँसू गारना  
 आँसू चलना

आँसू छतना  
 आँसू डालना  
 आँसू डरना  
 आँसू पुछना  
 आँसू पोछना  
 आँसू बरसना  
 आँसू बहाना  
 आँसों भीषना  
 आँसू में मुँह देखना  
 आकाश और पाताल में होना  
 आकाश का तारा तोड़ना  
 आकाश की बातें करना  
 आकाश चढ़ना  
 आकाश चढ़ाना  
 आकाश पकड़ना  
 आकाश पर चढ़ना  
 आकाश पर चढ़ाना  
 आकाश पर दिया जलाना  
 आकाश पर मस्तक उठाए होना  
 आकाश बाँधना  
 आकाश में एँटना  
 आकाश में खेद करना  
 आकाश से गिरना  
 आकाश से पाताल में गिरना  
 आग उगलना  
 आग को हुवा देना  
 आग देना  
 आग में तेल छिड़कना  
 आग में पड़ना  
 आग पर पानी डालना



### तीस

आग बरसना  
 आग बुझाना  
 आग बौना  
 आग भड़क उठना  
 आग में ईंधन डालना  
 आग में बूढ़ पड़ना  
 आग में भौंक देना  
 आग में पांव डालना  
 आग लगना  
 आग लगाकर पानी को दौड़ना  
 आग लगाना  
 आग सा लगना  
 आग मुलगना,—मुलगाना  
 आग से आग बुझाने की कोशिश करना  
 आग से खेलना  
 आग होना  
 आगम बंधना  
 आज्ञा कंधों पर होना  
 आज्ञा माथे होना  
 आज्ञा माथों पर रखना  
 आज्ञा माथों पर लेना  
 आज्ञा हाथों पर लेना  
 आज्ञा देना  
 आज्ञा में खेल खेलना  
 आज्ञा में लेना  
 आत्मसम्मान डेचना  
 आदमी पर आदमी गिरा पड़ना  
 आदमी लगाना  
 आदर की चादर पड़ना  
 आनंद में पगना

आनंद लूटना  
 आन बोलना  
 आप ही आप सा होना  
 आपा खोना  
 आपा दिखलाना  
 आपा भेटना  
 आपा सौपना  
 आपे में न रहना  
 आपे से बाहर होना  
 आफत के बादल उमड़ना  
 आव जाना  
 आवरू पर आ बनना  
 आवरू पर पानी फिरना  
 आवरू पर बट्टा लगना  
 आवरू लूटना  
 आमदनी टूटना  
 आय लूटना  
 आय तुलाना  
 आये दिन  
 आरती उतारना  
 आल्हा गाना  
 आवाज उठाना  
 आवाज कसना  
 आवाज गिरना  
 आवाज देना, लगाना  
 आशा टूटना  
 आशा तोड़ना  
 आशा पर तुषारापात होना  
 आशा पर पानी फिरना,—फेरना  
 आशा बंधना





एकतीस

आशा बंधाना  
 आशा बांधना  
 आसन जमाना  
 आसन टिंगना,—डोलना  
 आसन देना  
 आसन पहचानना  
 आसन मांडना,—माशना  
 आसन हिलाना  
 आसमान के तारे तोड़ना  
 आसमान खुलना  
 आसमान चढ़ना,—चढ़ाना  
 आसमान दिखा देना  
 आसमान पर उड़ना  
 आसमान फाड़े डालना  
 आसमान सिर पर उठाना  
 आसमान सूझना  
 आसमान से बातें करना  
 आसमान से गिरना  
 आस्तीन में सांप पालना  
 आह खींचना  
 आह पड़ना  
 आह भरना,—मारना  
 आह लेना  
 आहट लेना  
 इद्रिय मारना  
 इच्छा दवाना  
 इज्जत उतारना  
 इज्जत साक में मिला देना  
 इज्जत धूल में मिला देना  
 इज्जत पर घांच डालना

इज्जत पर हाथ डालना  
 इज्जत बेचना  
 इज्जत मिट्टी में मिला देना  
 इज्जत में बट्टा लगाना  
 इज्जत लुटाना  
 इज्जत लेना  
 इन्ही पावो लौटना  
 इशारों पर नाचना  
 इस्क लड़ाना  
 इसी पांव लौटना  
 ईंट से ईंट बजना,—बजाना  
 ईद मनाना  
 ईमान का खून करना  
 ईमान का पैसा खाना  
 ईर्ष्या से जलना-फूकना  
 उंगलियों पर आ जाना  
 उंगलियों पर गिन गिन कर दिन काटना  
 उंगलियों पर दिन गिनना  
 उंगलियों पर नचाना  
 उंगली उठना,—उठाना  
 उंगली चमकाना  
 उंगली दिखाना  
 उंगली न दुखना  
 उंगली पकड़ते पहुंचा पकड़ना  
 उंगली पर गिनते रात कटना  
 उंगली पसारना  
 उंगली रखना  
 उसड़ी उसड़ी बातें करना  
 उगती तारिका  
 उड़ड़ी कोश



बसोस

उठती उम्र  
उड़ती आँख  
उड़ती खबर  
लड़ती चिड़िया के पंख गिनना  
उड़ती चिड़िया पकड़ना  
उड़ती मज़र  
उड़ती मज़र डालना  
उड़ती निगाह  
उड़ते बुलबुल के पर बाँधना  
उड़ी-उड़ी बातें करना  
उतरा गला  
उतरी उम्र  
उतारा करना  
उत्तर घाना  
इत्साह की लहर दौड़ना  
उदर भरना  
उधार साँप बैठना  
उन्ही पैरों सौट घाना  
उपाय चलना  
उपाय रचना  
उम्र डलना  
उम्र पकना  
उम्र लदना  
उर आना  
उर ताड़ना करना  
उर में घड़ना  
उर में घाना  
उर में उपजना  
उर में गड़ना  
उर में छाई रहना

उर में घरना  
उर में न समाना  
उर में रखना  
उर में लाकर  
उर में हलना  
उर लाना  
उर सालना  
उर से टालना  
उरिण करना,—होना  
उल्लू की लकड़ी फेरना  
उल्लू फंसना  
उल्लू बनना,—बनाना  
उल्लू बोलना  
उल्लू समझना  
उमास लेना  
ऊँचाई पर चढ़ना  
ऊँख छोड़ कर आँक बिचोरना  
ऊँख काड़ना  
एड़ियाँ पिसना,—रगड़ना  
एड़ी चोटी का जोर लगाना  
एहसान का नमदा कसना  
एहसान का टोकरा लादना  
एहसान खोपड़ी पर लादना  
ऐँठ निकल जाना  
ऐँठ में रहना  
ऐँठ निकल जाना  
ओठ चवाना  
ओठों पर खेलना,—नाचना  
ओठों पर हंसी नाचना  
ओठों से हंसी फूटना





तृतीय

ओलली में सिर देना  
 ओट लेना  
 ओस पड़ना  
 कंचन बरसना  
 कंठ करना  
 कंठ खुलना  
 कंठ फटना  
 कंठ मिलाकर  
 कंठ में कफ घटकना  
 कंठ लगना,—लगाना  
 कंठ लाना  
 कंठ सीचना  
 कंठा फटना  
 कंधा उठाना  
 कंधा पहनना  
 कंधा भाड़ना  
 कंधा डाल देना  
 कंधा देना  
 कंधा पकड़ कर चलना  
 कंधा लगना,—लगाना  
 कंधे से कंधा छिलना  
 कंधे से कंधा भिड़ाकर  
 कंधे से कंधा मिलाकर  
 कंधे से कंधा लगाकर  
 कंधों पर घालना  
 कंधों पर उठाना  
 कंधों पर पड़ना  
 कंधों पर बोझ लेना  
 कंधों पर बोझ होना  
 कंपकंपी आना

कंपकंपी छूटना  
 कंपकंपी पैदा होना  
 कंबल तानकर सोना  
 कचूमर निकालना  
 कचोट खाना  
 कटक उतरना  
 कटती नाक बच जाना  
 कटाक्ष करना  
 कटी उंगली पर न मूतना  
 कटी सी आँख  
 कटे पेड़ सी बैठ जाना  
 कड़ाका कर जाना  
 कदम उखाड़ना  
 कदम उठाना,—उठाना  
 कदम चूमना  
 कदमों पर झुकना  
 कदमों में बैठकर  
 कनखी देना  
 कनौड़त करना  
 कनौड़ा करना  
 कन्नी काटना  
 कपड़े छोड़ना  
 कपड़े से होना  
 कपाट खुलना  
 कफन की घोर पैर बड़ाना  
 कक्का करना  
 कन्न में पैर लटकाना,—लटकाना  
 कमर कमान करना  
 कमर करना  
 कमर कसना

## चौतीस

कमर खोलना  
 कमर झुकना  
 कमर टूटना  
 कमर ठोकना  
 कमर तोड़ना  
 कमर बांधना  
 कमर रह जाना  
 कमाई करना  
 करम की रेखा पर मेस मारना  
 करम पकड़ कर रोना  
 करम फूटना  
 करबट बदलते रात बीतना  
 करबट बदलना  
 कर्म साटना  
 कलंक का टीका देना  
 कलंक का टीका लगाना  
 कलंक का टीका चढ़ाना  
 कलंक की कोठरी बनना,—होना  
 कलंक चढ़ना  
 कलंक धोना  
 कल धुमाना  
 कलाई उधरना,—खुलना  
 कलाई खोलना  
 कलम उठाना  
 कलम घिसना  
 कलम चलाना  
 कलम चूमना  
 कलम तोड़ना  
 कलह पर पानी छिड़कना  
 कलाई उतरना

कलेजा उछलना  
 कलेजा उड़ा जाना  
 कलेजा उमड़ा पड़ना  
 कलेजा कापना  
 कलेजा कचोटना  
 कलेजा कबाब होना  
 कलेजा कंपाना  
 कलेजा काठ होना  
 कलेजा काढ़ना  
 कलेजा कूटना  
 कलेजा लाना  
 कलेजा बिलाना  
 कलेजा खुरचना  
 कलेजा खोलना  
 कलेजा चलनी बना देना  
 कलेजा चलनी होना  
 कलेजा चिरना  
 कलेजा छिलना  
 कलेजा जलना  
 कलेजा जलाना  
 कलेजा टूक-टूक होना  
 कलेजा टूटना  
 कलेजा डोलना  
 कलेजा तोड़-तोड़ कर कमाना  
 कलेजा धाम कर रह जाना  
 कलेजा धाम कर रोना  
 कलेजा धाम लेना  
 कलेजा दरकना  
 कलेजा दहकना  
 कलेजा धक् धक् करना



## पैतीस

कलेजा धक से होना  
 कलेजा धड़कना  
 कलेजा घसकना  
 कलेजा निकलना  
 कलेजा निकाल कर रखना  
 कलेजा नुचना  
 कलेजा पक जाना  
 कलेजा पकड़ना  
 कलेजा पत्थर का करना  
 कलेजा पत्थर का होना  
 कलेजा पसीजना  
 कलेजा फटना  
 कलेजा फाड़ना  
 कलेजा फुकना  
 कलेजा फूल उठना  
 कलेजा बड़ जाना  
 कलेजा बल्लियों उछलना  
 कलेजा बांसों उछलना  
 कलेजा बिछा देना  
 कलेजा बंठ जाना  
 कलेजा मलना  
 कलेजा मसकना  
 कलेजा मसोस कर रह जाना  
 कलेजा मुह तक आना  
 कलेजा सुलगना  
 कलेजा सुलगाना  
 कलेजा हाथों उछलना  
 कलेजे का छाला छिलना  
 कलेजे का टुकड़ा-टुकड़ा करना  
 कलेजे पर घाव होना

कलेजे पर चोट लगना  
 कलेजे पर छाना  
 कलेजे पर छुरी चलाना  
 कलेजे पर पत्थर की सिल रखना  
 कलेजे पर पत्थर रखना  
 कलेजे पर बिजली गिरना  
 कलेजे पर सांप लोटना  
 कलेजे पर सिल रखकर  
 कलेजे पर हाथ रखकर  
 कलेजे पर हाथ रखना  
 कलेजे में छाले पड़ना  
 कलेजे में छेद करना  
 कलेजे में छेक पड़ना  
 कलेजे में ठंडक पड़ना  
 कलेजे में ठेस लगना  
 कलेजे में पैठना  
 कलेजे में बिठाना  
 कलेजे में रखना  
 कलेजे में शूल चुभना  
 कलेजे में सुई चुभना  
 कलेजे से लगाना  
 कल्ला भर आना  
 कस में रहना  
 कसम खाना  
 कसर काटना  
 कसर खाना  
 कसर न उठा रखना  
 कसर निकलना  
 कसर रहना  
 कसर लगाना

## छत्तीस

कसाला पड़ना  
 कसौटी पर कसना  
 कसौटी पर तौलना  
 कहकहा उड़ना  
 कहकहा पड़ना  
 कहकहा मारकर हंसना  
 कहकहा मारना  
 कहकहा लगाना  
 कहर इहना  
 कहर गिरना,—इहना  
 कहर बरसना—बरसाना  
 कहानी गढ़ना  
 कहानी चलना  
 कहानी रह जाना  
 काख में दबाए रखना  
 कांटा चुभना  
 कांटा खटकना  
 कांटा गड़ना,—चुभना  
 कांटा छाना  
 कांटा निकलना  
 कांटा पड़ना  
 कांटा बिखेरना  
 कांटा बोना  
 कांटे उठना  
 कांटे चुनना  
 कांटों पर चलना  
 कांटों पर सुलाना  
 कांटों भरा  
 कांटों भरा रास्ता  
 कांटों में घसीटना

कांटों में पड़ना  
 काग उड़ाना  
 कागज का घर बनाना  
 कागज का महल बनाना  
 काज निवाहना  
 काज सरना  
 काठ मारना  
 काठ में पाँव देना,—पड़ना  
 काठ होना  
 कान उछाड़ना  
 कान उठाना  
 कान ऐठना  
 कान करना  
 कान का पर्दा फटना  
 कान का मैल निकलना  
 कान काटना  
 कान की चैली भरना  
 कान की झिल्ली फटना  
 कान की रुई निकालना  
 कान खड़े करना,—होना  
 कान सुलना  
 कान खोल कर सुनना  
 कान खोलना  
 कान गरम करना  
 कान बिपकाए होना  
 कान चीरना  
 कान भाड़ कर निकल जाना  
 कान ठनकना  
 कान डलकना  
 कान देकर सुनना



## संतीस

कान देना  
 कान धरना  
 कान न दिया जाता  
 कान पकड़ना  
 कान पकड़ने का काम करना  
 कान पकना  
 कान पड़ना  
 कान पर जू न रेंगना  
 कान पर विश्वास न होना  
 कान पर हाथ रखना  
 कान पारना  
 कान फटना  
 कान फाड़ना  
 कान फूंक जाना  
 कान फूंकना  
 कान फूटना  
 कान फोड़ना  
 कान बचाकर  
 कान बहना  
 कान भर जाना  
 कान भरना  
 कान मलना  
 कान मूंद बैठना  
 कान में आना  
 कान में उंगली देना  
 कान में उड़ती बात पड़ना  
 कान में कान लगाना  
 कान में गरम मसाला भरना  
 कान में ठीठे ठोकना  
 कान में डाल देना

कान में पड़ना  
 कान में फूंकना  
 कान में भनक डालना  
 कान में पड़ना  
 कान रखना  
 कान लगाना  
 कान लगाकर सुनना  
 कान से लगना  
 कान हिलाना  
 कानि करना  
 कानि तोड़ना  
 कानि बहाना  
 कानून बधारना  
 कानों में अमृत टपकना  
 कानों में गूँजना  
 कानों में डालना  
 कानों में तेल डाले बैठना  
 कानों में रुई डाले बैठना  
 काम आना  
 काम उठाना  
 काम गिर जाना  
 काम चलाना  
 काम इगमगाना  
 काम देखना  
 काम निकलना  
 काम निकालना  
 काम पड़ना  
 काम बनना  
 काम में डूब रहना  
 काम में पैर डालना

### अड़तीस

काम में हाथ डालना  
 काम संभारना  
 काम से लगाना  
 काया पलट जाना  
 काल आना  
 काल का कंठ गहना  
 काल का केश पकड़ना  
 काल का सर साधना  
 काल की चोटी  
 काल के कोर होना  
 काल के गाल में होना  
 काल के मुंह में डालना  
 काल के वश में होना  
 काल चढ़ आना  
 काल सा लगना  
 काल सिर पर नाचना  
 काल सिर पर चढ़ना  
 काल हांक पाना  
 कालिल लगना  
 कालिमा धूलना  
 किताब भर जाना  
 किताब चाट जाना  
 किनारा करना  
 किनारा कसना  
 किनारा मिल्ना  
 किनारे रहना  
 किनारे लगना  
 किनारे होना  
 किवाड़ देना  
 किस घाट लगना

किसी को घांछों देना  
 किसी की ओर देना  
 किसी बात पर चलना  
 किसी रास्ते पानी न पीना  
 किसी पर जाना  
 किसी पर रखकर  
 किस्मत खुलना  
 किस्मत चमकना  
 किस्मत चक्कर में होना  
 किस्मत जागना  
 किस्मत लड़ना  
 किस्मत सो जाना  
 कीच उछालना  
 कीच उड़ाना  
 कीच फेंकना  
 कीचड़ में घसीटना  
 कीचड़ में लथपथ  
 कीना निकालना  
 कीमत कतना  
 कील घुमाना  
 कुंजी हाथ में होना  
 कुंदी करना  
 कुआँ सोदना  
 कुआँ भाकना  
 कुआँ बताना  
 कुएं में गिरना  
 कुएं में डालना  
 कुएं में डकेलना  
 कुएं में पड़ना  
 कुएं में पड़ा हुआ व्यक्ति



## उन्तालीस

कुटुंब जिलाना  
 कुटुंब डुबाना  
 कुटुंब पालना  
 कुठाव मारना  
 कुत्ते की मौत मरना  
 कुत्ते को धी न पचना  
 कुपप पर पैर रखना  
 कुरसी का नाम हंसाना  
 कुरसी तोड़ना  
 कुरसी पर बैठना  
 कुरसी मिलना  
 कुल को रखना  
 कुल बोरना  
 कुल में कलंक लगाना  
 कुल में चली आना  
 कुल में दाग लगाना  
 कूब बोलना  
 कूड़ा कर देना  
 केले का तना बनना  
 कंद काटना  
 कोंख खुलना  
 कोंख से मारी जाना  
 कोठे पर बैठना  
 कोना-कोना छानना  
 कोना पिस जाना  
 कोयले की दलाली करना  
 कोर दबना  
 कोआ बोलना  
 कोए का कोयल होना  
 कोइयों के मोल बिकना

कोइयों पर जान देना  
 कोड़ी-कोड़ी जोड़ना  
 कोड़ी-कोड़ी दांत में पकड़ना  
 कोड़ी भी न लगना  
 कोष मारना  
 कोष से जलना  
 क्षार करना या होना  
 खटका मिटाना  
 खटका लगा रहना  
 खटराग फैलना  
 खटाई में सीभना  
 खटिया तोड़ना  
 खड़ी जवानी  
 खड़े पांव  
 खड़े सिर डुबाना  
 खड्ग उठाना  
 खड्ग खटकना  
 खड्ग सम्हालना  
 खबर उड़ना  
 खबर चलना  
 खबर न पाना  
 खबर न लेना  
 खरत सवार होना  
 खम ठोकना  
 खयाल जानना  
 खयाल दोड़ना  
 खयाल दोड़ाना  
 खरीदे गुलाम होना  
 खर्च उठाना  
 खर्च तोड़ना

## बालोस

खर्राटा लेना  
 खलबली पड़ना  
 खलबली पैदा होना  
 खाई खुदना,—खोदना  
 खाक उड़ना  
 खाक करना  
 खाक छानना  
 खाक दातना  
 खाक में मिल जाना  
 खाक में मिलाना  
 खाका उड़ाना  
 खाका खींचना  
 खाट तोड़ना  
 खाट पर पड़ना  
 खाट पर पड़े जाना  
 खाट पर पड़े-पड़े दिन बिताना  
 खाट से लग जाना  
 खाट सेना  
 खार खाना  
 खाल उड़ाना  
 खाल खिंचना  
 खिचड़ो पकना  
 खिचरी रखना  
 खिलौना बनाना  
 खिल्ली उड़ाना  
 खीस काटना  
 खीस निकोसना  
 खीस निपोरना  
 खुचुड़ करना  
 खुशी से जमीन पर पैर न रखना

खुटी तान कर मोना  
 खून उबलना  
 खून का घूट पीना  
 खून का पानी करना  
 खून की नदी बहना,—बहाना  
 खून की होखी खेलना  
 खून के आंसू बहाना,—रोना  
 खून खोलना  
 खून गर्दन पर पड़ना  
 खून घूटना  
 खून चूसना  
 खून जलाना  
 खून पानी होना  
 खून बहना,—बहाना  
 खून मुह लगना  
 खून में आम लगना  
 खून सवार होना  
 खून सिर पर सवार होना  
 खून से हाथ रंगना  
 खून होना  
 खेत करना  
 खेत के दाने बीनना  
 खेत छोड़ना  
 खेत पर ओले पड़ना  
 खेत मांदना  
 खेत में पछाड़ना  
 खेत रखना  
 खेत रहना,—होना  
 खेत मुहाना  
 खेती मूल पर पानी बरसना



एकतालीस

खेल बिगड़ना  
खोज मारना  
खोज लेना  
खोपड़ी खाना  
खोपड़ी खुजलाना  
खोपड़ी काटना  
खोपड़ी जगाना  
खोपड़ी पर खड़ा होना  
गंगा उठाना  
गंगा नहाना  
गंडा बांधना  
गंध घ्राना  
गंध छिलना  
गंध रहना  
गद्दा पकड़ लेना  
गठरी उड़ाना  
गठरी काटना  
गठरी बनाना  
गठरी बांधना  
गठरी मारना  
गठरी हाथ आना  
गड़े मुँह उखाड़ना  
गड़्वा खोदना  
गड़्वाड़ कर बातें करना  
गड़े में गिरना  
गरदन पर खून सवार होना  
गरदन पर खून होना  
गरदन पर छुरी चलाना  
गरदन पर छुरी फिराना  
गरदन पर छुरी फेरना

गड़े में पैर पड़ना  
गत बनाना  
गति पाना  
गद्दी पर बैठना या बैठना  
गण्य उठाना  
गण्य करना  
गण्य मारना  
गण्य लड़ाना  
गण्य हाँकना  
गम खाना  
गम गलत करना  
गपा करना  
गरदन उठाना  
गरदन उड़ना  
गरदन उड़ाना  
गरदन उतरना  
गरदन उतारना  
गरदन कटवाना  
गरदन काटना  
गरदन छूटना  
गरदन भूकना  
गरदन भूकाना  
गरदन टूटना  
गरदन डलकना  
गरदन दबना  
गरदन देना  
गरदन न उठा सकना  
गरदन नपना या नापना  
गरदन पकड़ना  
गरदन पर खून लेना

## बयालिस

गरदन पर जुआ रखा जाना  
 गरदन पर वार जाना  
 गरदन पर हाथ डालना  
 गरदन फंसना  
 गरदन फिरना  
 गरदन मरोड़ना  
 गरदन मारना  
 गरदन में हाथ डालना,—देना  
 गरदन से उतार देना  
 गरदन हिलाना  
 गरदनिया देना  
 गरमी घाना  
 गरमी निकलना  
 गरमी बरसना  
 गर्द भी न पाना  
 गर्द में मिलाना  
 गर्व के हिठोरे में भूलना  
 गर्व गलना  
 गर्व गारना  
 गर्व गिरना  
 गर्व चूर-चूर कर देना  
 गर्व चूर होना  
 गर्व फाड़ देना  
 गर्व नवाना  
 गलती रात होना  
 गला उतरना  
 गला ऐठना  
 गला कटना  
 गला कटवाना  
 गला कतरना

गला काटना  
 गला खुलना  
 गला पोंटना  
 गला धलना  
 गला चापना  
 गला छुड़ाना  
 गला छूटना  
 गला छोड़ना  
 गला दबाकर धोलना  
 गला दवाना  
 गला दे देना  
 गला पकड़ना  
 गला पकड़ा जाना  
 गला पड़ना  
 गला फंसना  
 गला फंसाना  
 गला बंधना  
 गला बांधना  
 गला फटना  
 गला फाड़ कर  
 गला फाड़ कर कहना  
 गला फाड़ना  
 गला बेंटना  
 गला भर आना  
 गला भरा घाना  
 गला मरोड़ना  
 गला मांजना  
 गला कंधना  
 गला रकना  
 गली गली की ठोकरें खाना



## बैतालीस

गली-गली में मिलना  
 गले उतरना  
 गले उतारना  
 गले की फांसी छुड़ाना  
 गले-गले से फिरना  
 गले पड़ना  
 गले पड़ी दोल बजाना  
 गले पर कुठार देना  
 गले पर खांडा चलाना  
 गले पर छुरी चलाना  
 गले मड़ना  
 गले में कपड़ा डालकर  
 गले में चक्की का पाट होना  
 गले में जुआ पड़ना  
 गले में तागा डालना  
 गले में तौक पड़ना  
 गले में धूक अटकना  
 गले में फांसी देना  
 गले में फांसी पड़ना  
 गले में बांध लेना  
 गले में बांह डालना  
 गले में रस होना  
 गले में हाथ डालना  
 गले लगना  
 गले लगाना  
 गले से गला मिलाना  
 गहने धरना  
 गांठ उलभना  
 गांठ करना  
 गांठ काटना

गांठ खोलना  
 गांठ जोड़ना  
 गांठ पड़ना  
 गांठ बांधना  
 गांठ में बांधना  
 गांठ में रखना  
 गांठ मुलभना  
 गाज गिरना  
 गाज पड़ना  
 गाज मारना  
 गाड़ी ठेल ले जाना  
 गाड़ी पकड़ना  
 गाड़ी पड़ना  
 गाना उलड़ जाना  
 गाना जमना  
 गाल करना  
 गाल चलना  
 गाल चीरना  
 गाल तमतमा उठना  
 गाल फूलाना  
 गाल बजाना  
 गाल मारना  
 गाली गाना  
 गाली देना  
 गिनती गिनना  
 गिनती में होना  
 गिरता जमाना  
 गिरती हालत  
 गिरते दिन  
 गिरी दशा

## पौषातीत

गिलहरी का रंग लाना  
 गीत गाना  
 गीदड़ का घोर बनना  
 गुहरी की घोर तोड़ना  
 गुण गाना  
 गुल्मी गुलझाना  
 गुदगुदी होना  
 गुबार निकालना  
 गुह करना  
 गुल मिलना  
 गुल मिलाना  
 गुस्सा उड़ना  
 गुस्सा उबलना  
 गुस्सा झुक देना  
 गुस्सा पी जाना  
 गुस्सा बल खाना  
 गुस्सा मारना  
 गुस्सा हवा हो जाना  
 गुस्से में पचना  
 गुस्से में जलना  
 गुहार लगना  
 गुहार का फल पीड़ना  
 गुहस्थी खोड़ना  
 गुहस्थी बांधना  
 गोड़ गिरना  
 गोठा खाना  
 गोठा मारना  
 गोद पसार कर  
 गोद फलना  
 गोद भरना

गोर में डालना  
 गोर लेना  
 गोबर पाचना  
 गोलमाल करना  
 गोली मारना  
 गोहार लगना  
 गो ताकना  
 गंध रचना  
 ग्राहक टूटना  
 ग्राहक पटना  
 ग्लानि से मलना  
 घट-घट में समाना  
 घड़ी गिनना  
 घड़े की ठोंकना  
 घड़ों नगा चढ़ना  
 घड़ों पानी पड़ जाना  
 घर उड़ना  
 घर उजाड़ना  
 घर करना  
 घर का चक्कर काटना  
 घर का दीपक बुझ जाना  
 घर का भार जा गड़ना  
 घर काटे खाना  
 घर खोद डालना  
 घर खोना  
 घर-घर तक फैलना  
 घर पालना  
 घर पलना  
 घर पलाना  
 घर खोड़ना



पुस्तकालय

घर जोड़ना  
 घर डालना  
 घर पड़ना  
 घर फोड़ खाना  
 घर फूटना  
 घर फोड़ना  
 घर बनाना  
 घर बसना  
 घर बनाना  
 घर बहाना  
 घर बिगाड़ना  
 घर बैठना  
 घर बैठे  
 घर घटे की खीरनी होना  
 घर भरना  
 घर मगना  
 घर में धाग लगाना  
 घर में चांदना होना  
 घर में चूल्हा न जलना  
 घर में चहे खोदना  
 घर में डालना  
 घर में बैठना लेना  
 घर रखना  
 घर लुटाना  
 घाट उतारना  
 घाट का परवर समझना  
 घाट रोकना  
 घाटा बैठना  
 घात लाकना  
 घात में जाना

घात में लगाना  
 घाव पर नमक छिड़कना  
 घाव पर नमक पड़ना  
 घाव फूटना  
 घाव भरना  
 घाव में जहर देना  
 घाव मूखना  
 घाव काटना  
 घाव खाना  
 घाव खीलना  
 धिम्मी बंधना  
 धी का घड़ा लुटकना  
 धी का घड़ा लुटकाना  
 धी के बिराग जमाना  
 धुटना बला  
 धुटना टेक देना  
 धुटने लोड़ना  
 धुटने से लयकर बैठना  
 धुटनों बचाना  
 धुटनों में गिर देकर बैठना  
 धुट्टी में पड़ना  
 धुड़कियाँ जमाना  
 धुन लगना  
 धुन-धुन कर बार्ने करना  
 धुंधल काटना  
 धुंठ पीना  
 धुंठी में पड़ना  
 धुरे का दिन किरना  
 धोड़ा उड़ाना  
 धोड़ा पोकना

## छयालीस

घोड़े का धान से खूत जाना  
 चंग पर चढ़ाना  
 चंगुल में फँसना  
 चंगुल से बचना  
 चंदन चढ़ाना  
 चंवर दूरना  
 चकमा देना  
 चक्कर आना  
 चक्कर काटना  
 चक्कर में डालना  
 चक्कर में पड़ना  
 चक्की का बेल बनाना  
 चक्की पिसवाना  
 चक्की पीसना  
 चक्की में जुतना  
 चक्की में पिसना  
 चटनी बनाना  
 चटपटी पड़ना  
 चढ़ाई मठना  
 चढ़ता गौवन  
 चढ़ती घाए  
 चढ़ावा चढ़ाना  
 चतुराई छोलना  
 चतुराई झारना  
 चतुराई तोलना  
 चपत चलाना  
 चपत झाड़ना  
 चपत पड़ना  
 चवाचवाकर बातें करना  
 चबाए कौर चवाना

चबैना करना  
 चमगादर झूलना  
 चरका खाना  
 चरका देना  
 चरगा चूमना  
 चरगा छिना  
 चरगा जोहारी करना  
 चरगा मनाना  
 चरगा लगना  
 चरगा लेना  
 चरगा सिर पर चढ़ाना  
 चरणों तक पहुँचना  
 चरणों पर सिर रखना  
 चरणों में चढ़ाना  
 चरणों में पड़ रहना  
 चरणों में लोटना  
 चरवा उतारना  
 चरसा उड़ा देना  
 चर्चा चलना  
 चर्चा चलाना  
 चर्ची चढ़ना  
 चर्ची झुकना  
 चलता आदमी  
 चलता काम  
 चलता शब्द  
 चलता शिक्का  
 चलती भाषा  
 चलती रकम  
 चलितर उछलना  
 चलते फिरते नज़र आना



## संतालीस

चसका लगना  
 चहलकदमी करना  
 चांद लगना  
 चांदी कटना  
 चांदी काटना  
 चांदी के बटखरा से तीवना  
 चांदी बनना  
 चाट पड़ना  
 चाट लगना  
 चाट लगाना  
 चादर तानकर सोना  
 चाबुक जमाना  
 चाभी घुमाना  
 चाभी हाथ में होना  
 चाय पर आना  
 चारपाई पकड़ लेना  
 चारा फेंकना  
 चारा न होना  
 चाल चलना  
 चाशनी देना  
 चिउंटियों लगना  
 चिंता का टांगे रहना  
 चिंता का साये जाना  
 चिंता का मारे डालना  
 चिंता में डूबना  
 चिट लगना  
 चिट्ठा बंटना  
 चिट्ठा भरना  
 चिड़िया उड़ जाना  
 चिड़िया से दूध निकालना

चिड़िया हाथ से निकल जाना  
 चितवन डालना  
 चिता पर चढ़ना  
 चित्त घटकना  
 चित्त उचाट होना  
 चित्त उतरना  
 चित्त कर देना  
 चित्त करना  
 चित्त खिंचना  
 चित्त चढ़ना  
 चित्त चाक पर चढ़ा होना  
 चित्त चिट्ठना  
 चित्त चुराना  
 चित्त चूर होना  
 चित्त चेतना  
 चित्त छिलना  
 चित्त टूटना  
 चित्त हुलाना  
 चित्त बिराना  
 चित्त देना  
 चित्त धरना  
 चित्त पर चढ़ना  
 चित्त फटना  
 चित्त बंटना  
 चित्त बसना  
 चित्त बांधना  
 चित्त बिकना  
 चित्त में आना  
 चित्त में चुभना  
 चित्त में धरना

अद्वैतालीस

चित्त में न समाना  
चित्त में पैठना  
चित्त में पोई होना  
चित्त रखना  
चित्त लगना  
चित्त लगाना  
चित्त खाना  
चित्त लेना  
चित्त समा रहना  
चित्त से उतरना  
चित्त से उतारना  
चित्त से न टलना  
चित्त होना  
चित्त सीक देना  
चिनगारो भाड़ना  
चिराग गुल होना  
चिराग जले  
चिलम जगाना  
चीटी को पर निकलना  
चुगली खाना  
चुटकिया लेना  
चुटकियों पर उड़ा देना  
चुटकियों पर मुहिम सर होना  
चुटकी देना  
चुटकी बजाते  
चुटकी भरना  
चुटकी मांगना  
चुटकी लेना  
चुटिया हाथ में देना  
चुटिया हाथ में होना  
चुनौती देना

चुभती हुई आंखों से देखना  
चुल्लूओं रोना  
चुल्लूओं लह पीना  
चुल्लू में उल्लू होना  
चूक पड़ना  
चूड़िया पहन लेना  
चूतर पोछना  
चूना लगाना  
चूर-चूर हो जाना  
चूल न बँटना  
चूल से चूल मिलाना  
चूल्हा अगोरना  
चूल्हा चेतना  
चूल्हा तोड़ना  
चूल्हा फूकना  
चूल्हा फूटना  
चूल्हे में जाना  
चूल्हे में डालना  
चूल्हे में पड़ना  
चूल्हे से आग भागना  
चूहों का दंड पेलना  
चेतना को छूना  
चेला मूड़ना  
चेहरा उतरना  
चेहरा मिंचा होना  
चेहरा खिल उठना  
चेहरे का कहना  
चेहरे का चिराग बुझ जाना  
चेहरे का रंग उड़ जाना  
चेहरे का फक् हो जाना



उत्तरास

चेहरे पर जनानापन बरसना  
 चेहरे पर तस्वीर उतरना  
 चेहरे पर धूल उड़ना  
 चेहरे पर राख पुत जाना  
 चेहरे पर शिकन न जाना  
 चेहरे पर स्वाही फिरना  
 चेहरे पर हवाई उड़ना  
 चेहरे से टपकना  
 चैन की बंगी बजना  
 चैन से कटना  
 चोंच खोलना  
 चोंचला बघारना  
 चोट करना  
 चोट चलना  
 चोट चलाना  
 चोट पर चढ़ना  
 चोट धिलाना  
 चोटियां मोची जाना  
 चोटी कट जाना  
 चोटी की लाज रखना  
 चोटी खड़ी होना  
 चोटी हाथ में होना  
 चोर के घर छिछोर पड़ना  
 चोरी उधारना  
 चोला बदलना  
 चौक पूरना  
 चौकड़ी भरना  
 चौकड़ी भुला देना  
 चौकड़ी भूल जाना  
 चौका देना

चौका लगाना  
 चौकी देना  
 चौकी पड़ना  
 चौकी बैठना  
 चौखट पर माया नवाना  
 चौखट पर माथा रगड़ना  
 छंटेनी करना  
 छंटे गुर्गे  
 छक्का छड़ाना  
 छक्का छटना  
 छक्का पंजा भुलना  
 छक्का हाथ मारना  
 छठी का दूध पाद जाना  
 छठी का दूध पाद करना  
 छठी में न पड़ना  
 छप्पर पर रख देना  
 छप्पर काड़कर देना  
 छल न छ जाना  
 छल से सनी हुई  
 छाह करना  
 छाह की तरह साथ रहना  
 छाह तक न छू पाना  
 छाह न छूने देना  
 छाह में गहना  
 छाह में बसना  
 छाह में बैठना  
 छाती उछलना  
 छाती उठना  
 छाती उभरना  
 छाती उभड़ घाना

पचास

छाती कांपना  
छाती का हाड़ तोड़कर  
छाती कूटना  
छाती के टुकड़े-टुकड़े होना  
छाती चूर-चूर होना  
छाती छरछराना  
छाती छलनी कर देना  
छाती छलनी होना  
छाती छिरना  
छाती छिलना  
छाती जलना  
छाती जलाना  
छाती जुड़ाना  
छाती टूटना  
छाती ठुकना  
छाती ठोक कर कहना  
छाती ठोकना  
छाती तनी रहना  
छाती तानकर खड़ा होना  
छाती दरकना  
छाती दहना  
छाती दहलना  
छाती देना  
छाती धक्-धक् करना  
छाती धड़कना  
छाती धुकुर-धुकुर करना  
छाती निकालकर चलना  
छाती निकालकर रख देना  
छाती पत्थर की करना  
छाती पर कुलिश रखना

छाती पर कोदो दलना  
छाती पर तमक मलना  
छाती पर मूंग दलना  
छाती पर घुंसा मारकर चल देना  
छाती पर बड़ बेंटना  
छाती पर चढ़ना  
छाती पर छुरी चलना  
छाती पर पत्थर रखना  
छाती पर पाप चढ़ना  
छाती पर बेंटना  
छाती पर बेंठाना  
छाती पर बिछा होना  
छाती पर सवार रहना  
छाती पर सांप खोटना  
छाती पर से बोझ उतरना  
छाती पर हाथ रखना  
छाती पीटना  
छाती फटना  
छाती फाड़ कर काश करना  
छाती फाड़कर रोना  
छाती फाड़ना  
छाती फलाना  
छाती फूल उठना  
छाती बिहरना  
छाती भर घाना  
छाती में कांटा बिछना  
छाती में छाले पड़ना  
छाती में छुरी भोंकना  
छाती में छेद करना  
छाती में छेद पड़ना



## एकावन

छाती में छेद होना  
 छाती में झंझरी होना  
 छाती में तलवार उतर जाना  
 छाती में लिप्य रखना  
 छाती लाना  
 छाती मिराना  
 छाती सुलगना  
 छाती मूख जाना  
 छाती से लगाकर रखना  
 छाती से लगाना  
 छापा शान्तना  
 छापा पड़ना  
 छापा मारना  
 छापा की तरह साथ रहना  
 छापा भी न छू पाना  
 छार लगना (क्षार)  
 छार लगाना  
 छीटा आना  
 छीटा उड़ाना  
 छीटा कसना  
 छीटा जमाना  
 छीटा देना  
 छीटा पड़ना  
 छीटा फेंकना  
 छीछा लेदर करना  
 छीछालेदर होना  
 छुरी चलाना  
 छुरी फेरना  
 छूटा सांड होना  
 छेड़ करना

छोटा गिनना  
 छोटा बनना  
 जंग लगना  
 जंगल में रोना  
 जगह छोड़ना  
 जगह तोड़ना  
 जगह दिखाना  
 जगह देना  
 जठर में धरना  
 जड़ उखाड़ना  
 जड़ खोदना  
 जड़ मारना  
 जड़ कटना  
 जड़ काटना  
 जड़ खोदना  
 जड़ जमाना  
 जड़ जमाना  
 जड़ देना  
 जड़ पकड़ लेना  
 जड़ पर कुत्ताड़ी चलाना  
 जड़ मार देना  
 जड़ मारना  
 जड़ हिल जाना  
 जड़ हिला देना  
 जनबासा देना  
 जन्म मंजाना  
 जन्म जाना  
 जन्म बिगाड़ना  
 जन्म बिगाड़ना  
 जन्म भरना

जावन

जन्म लेना  
जन्म लेने का फल मिलना  
जन्म हारना  
जबड़े में फँसना  
जवान काँटा होना  
जवान काटना  
जवान की कठरनी चलना  
जवान लुटना  
जवान खोलना  
जवान चलना  
जवान चलाना  
जवान चुकना  
जवान खोलना  
जवान देना  
जवान धरना  
जवान पकड़ना  
जवान पत्थर की होना  
जवान पर चढ़ना  
जवान पर ताला लगाना  
जवान पर न लाना  
जवान पर नाचना  
जवान पर मँडराना  
जवान पर महर लगाना  
जवान पर लाना  
जवान फेरना  
जवान लड़ाई  
जवान समझाल कर खोलना  
जवान हिलना  
जवान हिलाना  
जमघट बना रहना

जमा मारना  
जमाना बीत जाना  
जमाना लद जाना  
जमाने का धुक चाटना  
जमाने की खाँसे देखे हुए  
जमाने की हवा लगना  
जमीन चाटना  
जमीन चुमना  
जमीन तैयार करना  
जमीन देखना  
जमीन नापना  
जमीन पर गिरा देना  
जमीन पर पैर न पड़ना  
जमीन पर सिर धरना  
जमीन पर सिर लाना  
जमीन में गड़ जाना  
जलकर भस्म होना  
जल-धर कर अंगोठी होना  
जलता घर छोड़ कर घरा बुझाना  
जलती आग बुझाना  
जलती आग में कूटना  
जलती हुई दृष्टि  
जलते हुए घर में हाथ सँकना  
जलते हृदय पर पानी के छीटे देना  
जलवे के बोल काढ़ना  
जलाकर भस्म कर देना  
जले दिल के फकोले फोड़ना  
जले पर नमक छिड़कना  
जले पर नमक देना  
जलवे के बोल काढ़ना



## तिरपन

जबानी उठना  
जवाब तलब करना  
जवाब देना  
जवाब मिलना  
जहन्नुम में जाना  
जहन्नुम में पढ़ना  
जहर उगलना  
जहर का घूंट पीना  
जहर का बुझाया  
जहर का बुताया छुरा  
जहर चढ़ना  
जहर देना  
जहर धोना  
जहर लगना  
जाँघ में होना  
जात दिखाना  
जाति मंवाना  
जादू उतरना  
जादू चढ़ना  
जादू चलना  
जादू डालना  
जादू सिर पर चढ़कर बोलना  
जान की बाजी लगाना  
जान के लाले पड़ना  
जान को आ पड़ना  
जान को आना  
जान खाना  
जान गाँवे में डालना  
जान चोटी पर आना  
जान छुड़ाना

जान डालना  
जान तोड़ कर मेहनत करना  
जान तोड़ना  
जान दिए देना  
जान देना  
जान नाखून में समाना  
जान पड़ना  
जान पर आ बनना  
जान पर खेल जाना  
जान पर बन आना  
जान फूटना  
जान बरसाना  
जान बवाल में डालना  
जान बसना  
जान मुसीबत में डालना  
जान में जान आना  
जान लड़ाना  
जान ले कर भागना  
जान सूई की नोक पर होना  
जान सूखी पर चढ़ी होना  
जान से हाथ धोना  
जान हथेली पर लिए रहना  
जानबूझ कर घाग में कूदना  
जाल फैलाना  
जाल बिछाना  
जाल से मुक्त होना  
जामूस होना  
जिदगी कटना  
जिदगी काटना  
जिदगी देखना

## जीवन

ज़िगर पर घारा चलना  
 जी जाना  
 जी उचाट होना  
 जी उठना  
 जी उड़ना  
 जी उमगना  
 जी उमड़ना  
 जी उलट जाना  
 जी कचटना  
 जी कचोटना  
 जी कट जाना  
 जी कांपना  
 जी का कांटा कड़ना  
 जी का मुबार निकलना  
 जी का मुबार निकालना  
 जी का बुलार उतारना  
 जी का मूल मिटना  
 जी की कसक मिटना  
 जी की कसर निकालना  
 जी की कहना  
 जी की जलन बुझना  
 जी की जलन बुझाना  
 जी की भड़ास निकालना  
 जी के फफोले फोड़ना  
 जी को भरोसा घाना  
 जी खपाना  
 जी खिलना  
 जी खोलकर  
 जी गिरना  
 जी चलना

जी चलाना  
 जी चुराना  
 जी छितराना  
 जी छिलना  
 जी छोड़कर भागना  
 जी जमाना  
 जी जलना  
 जी जलाना  
 जी जुड़ाना  
 जी टंगा रहना  
 जी टंगा होना  
 जी टटोलना  
 जी टटना  
 जी टूटना  
 जी डोलना  
 जी तोड़ कर  
 जी तोड़ना  
 जी दब जाना  
 जी दहलना  
 जी देना  
 जी दीड़ना  
 जी दीड़ाना  
 जी धंसा जाना  
 जी धक्-धक् करना  
 जी न मारना  
 जी न लगना  
 जी निकाल लेना  
 जी पकना  
 जी पत्थर करना  
 जी पत्थर होना



पञ्चपन

जी पर आ बनना  
 जी पर खेचना  
 जी फड़कना  
 जी फिरना  
 जी फिसलना  
 जी बढ़ना  
 जी बढ़ाना  
 जी बिखरना  
 जी बैठ जाना  
 जी भर कर  
 जी भरना  
 जी मचल जाना  
 जी मरोड़ना  
 जी मिलना  
 जी में कसर होना  
 जी में गड़ना  
 जी में गांठ पड़ना  
 जा में घर करना  
 जी में जगह करना  
 जी में जमना  
 जी में जी जाना  
 जी में छाना  
 जी में पैठना  
 जी में फफोले पड़ना  
 जी में बसना  
 जी में बात घंसना  
 जी में बैठना  
 जी में भेद बढ़ाना  
 जी में मान लेना  
 जी में मेल जमना

जी में रखना  
 जी में लेना  
 जी में शूल होना  
 जी में समाना  
 जी में सुई चुभाना  
 जी रखना  
 जी रहना  
 जी लगना  
 जी लगाना  
 जी लड़ाना  
 जी ललकना  
 जी लहराना  
 जी लाना  
 जी लुटाना  
 जी लेकर भागना  
 जी लेना  
 जी शूली पर टंगा होना  
 जी सन जाना  
 जी सूख जाना  
 जी से उतर जाना  
 जी से जाना  
 जी हाथ में रखना  
 जी हाथ में रहना  
 जी हारना  
 जी हिलना  
 जी हिलाना  
 जी होना  
 जीट उड़ाना  
 जीते जी नाम न लेना  
 जीते जी मर जाना

सह्यन

जीम ऐंड जाना  
जीम कांटा होना  
जीम काटना  
जीम काड़ना  
जीम खिचवा लेना  
जीम खूना  
जीम खोलना  
जीम चटकारना  
जीम चलना  
जीम चलाना  
जीम तानू से न लगना  
जीम दबा लेना  
जीम निकलना  
जीम पकड़ना  
जीम पनिषा जाना  
जीम पर सरस्वती बसना  
जीम में ठाला पड़ना  
जीम लड़ाना  
जीम लपलपाना  
जीम सम्हालकर बोलना  
जीम हिलना  
जीम हिलाना  
जीवन का बोझा होना  
जीवन का स्वप्न उड़ जाना  
जीवन काटना  
जीवन काने समाप्त होना  
जीवन चलना  
जीविका चलना  
जीविका चलाना  
जूधा हारना

जूत को कंधे से उतारना  
जूताहे का मुस्सा ढाड़ी पर उतारना  
जू न रेंगना  
जूही जाना  
जूता काटना  
जूता खाना  
जूता चलना  
जूता चलवाना  
जूता जाने पर भी घट्टा बना रहना  
जूता दिखाना  
जूतिपाँ उठाना  
जूती की नोक पर मारना  
जूती चटकारना  
जूती को तेल चुपड़ना  
जूतीपैजार होना  
जूते बरसना  
जूतों में खबर लेना  
जूते से पखा करना  
जेब कट जाना  
जेब में पड़ी रहना  
जेल काटना  
जेल की रोटियां तोड़ना  
जेल की हवा खाना  
जैकारा करना  
जैसे से तैसा करना  
जोक की तरह चिपक जाना  
जोग लगाना  
जोड़ तोड़ लगाना  
जोड़ा करना  
जोड़ा फूटना



संज्ञावन

जोड़ी से हाथ फेरना  
जोल से जोल मिलना  
जोर हावना  
जोर पकड़ना  
जोर मारना  
जोहर खुलना  
जोहर दिखाना  
ज्ञान छोटना  
ज्योनार बँटना  
ज्वर चढ़ना  
भंडा उठाना  
झंडा लड़ना करना  
भंडा गाड़ना  
भंडा फहराना  
भय मारकर  
भय मारना  
भयमारी करना  
भड़प होना  
भड़क होना  
भाई खाना  
भांकने भी न जाना  
भांसा देना  
भाड़ू फिरना  
भाड़ू फेरना  
भाड़ू मारना  
भौकना भौकना  
भोली फँलाना  
टकटकी बंधना  
टकटकी बांधना  
टकटकी लगना

टके को न पूछना  
टक्कर खाना  
टक्कर लेना  
टक्कर होना  
टट्टी की प्राण सिकार खेलना  
टमुए बढाना  
टांग बढाना  
टांग के रास्ते निकल जाना  
टांग खींचना  
टांग पसीटना  
टांग लोड़ना  
टांग पकड़ कर खींचना  
टांग पकड़ना  
टांग फैलाकर खींचना  
टाट उलट देना  
टिकट बटाना  
टिटकारी देना  
टिट्टी के रोके बांधी न रकना  
टिमटिमाता दिना  
टीका कड़ाना  
टीका करना  
टीका चढ़ना  
टीका देना  
टीका पाना  
टीका भेजना  
टीका लगाना  
टीप का बंद लगाना  
टीप लगाना  
टुकड़ा खाना  
टुकड़ा छिनना

घटावन

टुकड़ा तुड़वाना  
 टुकड़ा तोड़ना  
 टुकड़ा मांगना  
 टुकड़े के लिए तरसना  
 टुकड़े के लिए लालापित होना  
 टुकड़ों का पोला  
 टुकड़ों पर पलना  
 टुक-टुक करना  
 टूट में पड़ना  
 टूटा दिल  
 टूटी दशा  
 टूटे स्वर  
 टूट में होना  
 टेक गहना  
 टेक चलना  
 टेक चलाना  
 टेक छोड़ना  
 टेक टेकना  
 टेक पड़ना  
 टेनी मारना  
 टेनू बनना  
 टोना करना  
 टोना लगना  
 ठग का बोरा देना  
 ठग के लड्डू खाना  
 ठगोरी डालना  
 ठगोरी पड़ना  
 ठगोरी लगना  
 ठद्द लगना  
 ठद्दा उड़ाना

ठद्दा मारकर हंसना  
 ठट्ठे में उड़ा देना  
 ठहाका मार कर हंसना  
 ठाठ ठाटना  
 ठिकाने लगाना  
 ठीका लेना  
 ठेंगा दिखाना  
 ठेंगा सिर पर लेना  
 ठेंगे पर नाचना  
 ठेंगे पर मारना  
 ठेका लेना  
 ठोक पीटकर बेंच बनाना  
 ठोकर खाकर जानना  
 ठोकर खाते फिरना  
 ठोकर खाना  
 ठोकर मारना  
 ठंक मारना  
 ठंका पिटना  
 ठंका पीटना  
 ठंका बजना  
 ठंका बजाना  
 ठंड पेलना  
 ठंडा दिखाना  
 ठंडी तौलना  
 ठंडी मारना  
 ठग भरना  
 ठग मारना  
 ठर खाना  
 ठोड़ पड़ना  
 ठोड़ भरना



उत्तर

हाकपाही छोड़ देना  
 हाल भूकना  
 डाली देना  
 डींग उड़ाना  
 डींग का तार न टूटना  
 डींग मारना  
 डींग हांकना  
 डूब मरने की बात  
 डूबती किशती पार लगना  
 डेरा उठाना  
 डेरा करना  
 डेरा कूच होना  
 डेरा जमाना  
 डेरा डालना  
 डोंगा डुबाना  
 डोरा डालना  
 डोरी हिलाना  
 डोली से उतरते ही  
 डौंडी फिरवाना  
 डौंडी फेरना  
 डौंडी बजना  
 ड्योड़ी लगना  
 डंग करना  
 डक्का बजाकर  
 डरें पर जाना  
 डरें पर भूकना  
 डलती उभ  
 डलती जवानी  
 दाढ़ मार कर रोना  
 दिडोरा देना

दिडोरा पिट जाना  
 दिडोरा पीटना  
 डील करना  
 डील डालना  
 डील देना  
 डेर हो जाना  
 डोल देना  
 डोल पीटकर  
 डोल पीटना  
 डोल बजाकर  
 डोल बजना  
 डोल बजाना  
 तंगी उठाना  
 तंगी में पड़ना  
 तंगी में होना  
 तकदीर का पलटा खाना  
 तकदीर खुलना  
 तकदीर ठोकना  
 तन करना  
 तन कसना  
 तन का ताप बुझाना  
 तन का होश न रहना  
 तन की दशा भूल जाना  
 तन की मुधि न होना  
 तन गलाना  
 तन गारना  
 तन छीजना  
 तन छूटना  
 तन जाना  
 तन जीतना

माठ

तन ताना  
 तन तोड़ना  
 तन त्यागना  
 तन देना  
 तन धरना  
 तन न रहना  
 तन भूल जाना  
 तन मन भूल जाना  
 तन तन सौंपना  
 तन में जाग सग जाना  
 तन रखना  
 तन सोधना  
 तपन कुम्भाना  
 तबला ठनकना  
 तबीपत का राह न देना  
 तबीपत गिरना  
 तबीपत दिक होना  
 तबीपत लहराना  
 तबीपत हट जाना  
 तमतमापा चेहरा  
 तमाचा खाना  
 तमाचा चलाना  
 तमाचा जड़ना  
 तरस खाना  
 तलब खाना  
 तलब मर जाना  
 तलबेती पढ़ना  
 तलबेती लगना  
 तलवा चाटना  
 तलवा छलनी होना

तलवा धो धो कर पीना  
 तलवा सहलाना  
 तलवार का पानी पीना  
 तलवार की धार पर चढ़ना  
 तलवार पर तलबे ठिकना  
 तलवार के घाट उतरना  
 तलवार के घाट उतारना  
 तलवार खिंची रहना  
 तलवार चमकना  
 तलवार चलना  
 तलवार तोलना  
 तलवार पर पानी चढ़ाना  
 तलवार सिर पर नाचना  
 तलवार से जाग लगना  
 तलवार से लगना  
 तल्ला टूटना  
 तल्ला बंधना  
 तल्ला लगना  
 तल्लरी खाना  
 ताल पर बैठना  
 ताल पर रखना  
 ताल में बैठना  
 ताल में रहना  
 ताल रखना  
 ताल लगाना  
 ताल का तिल करना  
 तान उड़ाना  
 तान तोड़ना  
 तान मारना  
 तान लगाना



एकसठ

ताना कसना  
 ताना भादना  
 ताना देना  
 ताना मारना  
 ताने से छेदना  
 ताप जाना  
 ताप बढ़ाना  
 तार उतरना  
 तार टूटना  
 तार-तार करना  
 तार-तार होना  
 तार-तार रोना  
 तार न जानना  
 तार बांधना  
 तार लग जाना  
 तारीफ के पुल बांधना  
 तारे गिनते रात बीतना  
 तारे न चलना  
 ताल कटना  
 ताल ठोक कर लड़ा होना  
 ताल ठोकना  
 ताल पर नाचना  
 ताल मिलाकर चलना  
 ताला जड़ना  
 ताला ठोकना  
 ताली पिट जाना  
 ताली पीटना  
 ताली बज जाना  
 ताली बजाना  
 ताली लग जाना

तालू उठाने के दिन  
 तालू चटकना  
 तालू में दांत जमना  
 तालू से जीभ लयना  
 ताव खाना  
 ताव पर घाना  
 तिकड़म भिड़ाना  
 तिकड़म लड़ना  
 तिगनी का नाच नचाना  
 तिजारी में होना  
 तिनका खड़कना  
 तिनका चुनवाना  
 तिनका तोड़ करना  
 तिनका तोड़ना  
 तिनका भी न उठाना  
 तिनका भी न हिलवा पाना  
 तिनका सा तोड़ना  
 तिनका सा भार भी न सहना  
 तिनका से घटकर  
 तिल का ताड़ बनाना  
 तिल का ताड़ बनाना  
 तिल का पहाड़ बनाना  
 तिल की ओट में पहाड़ करना  
 तिल घरने की जगह न होना  
 तिलक करना  
 तिलक चढ़ना  
 तिलक चढ़ाना  
 तीर खाना  
 तीर छोड़ना  
 तीर ठिकाने पर बैठना

बासठ

तीर निशाने पर लगना  
 तीर मारना  
 तीर हाथ से निकल जाना  
 तीसमार खां बनना  
 तूती बोलना  
 तूफान आना  
 तूफान उठाना  
 तूफान खड़ा करना  
 तूफान खड़ा होना  
 तूल खींचना  
 तूल देना  
 तूल पकड़ना  
 तूण गिनना  
 तूण तोड़ना  
 तूण समझना  
 तूषा बुझाना  
 तूषा मारना  
 तेजी आना  
 तेजी रहना  
 तेल की धार में होकर देखना  
 तेल निकालना  
 तेवर चढ़ना  
 तेवर पर बल पड़ना  
 तेवर बदलना  
 तेवर महना  
 तेहा चढ़ना  
 तोड़ करना  
 तोते की तरह पड़ना  
 तोरई खोंकना  
 त्पोरी चढ़ना

त्पोरी चढ़ाना,—ठानना  
 त्पोरी पर बल आना  
 थपेड़े खाना  
 थप्पड़ खाना  
 थप्पड़ मारना  
 थप्पड़ लगाना  
 थाना बँठाना  
 थाली बजाना  
 थाह न होना  
 थाह पाना  
 थाह लेना  
 थूक चाटना  
 थूक सूख जाना  
 थूक से चुहिया जिलाना  
 थैली खोलना  
 दंगल मारना  
 दर्ई का खोया  
 दगा खाना  
 दफ्तर देखना  
 दबी आंखों से देखना  
 दबी डवान से कहना  
 दबी बिल्ली का बूहे से कान कटाना  
 दबे कंठ से कहना  
 दम घटकना  
 दम उलड़ना  
 दम का झलूना होना  
 दम खींचना  
 दम घोंटना  
 दम चुराना  
 दम टूटना



तिरसठ

दम तोड़ना  
 दम देना  
 दम निकलना  
 दम भरना  
 दम मारना  
 दम में दम रहना  
 दम फूलना  
 दम भर जाना  
 दम लगाना  
 दम लेना  
 दम साधना  
 दम सुखना  
 दमामा देना  
 दमामा पीटना  
 दमामा बजना  
 दर-दर की ठोकर खाना  
 दर-दर की धूल पाँकना  
 दर-दर की होना  
 दर-दर तिनके चुनना  
 दर-दर फिरना  
 दर पर आना  
 दरबार में खड़े होना  
 दरवाजा खटखटाना  
 दरवाजा भाँकना  
 दरवाजा लगाना  
 दरवाजे का मुँह न देखना  
 दरवाजे जाना  
 दरवाजे पर घाँव गड़ाए होना  
 दरवाजे आना  
 दरवाजे पर खड़े रहना

दरवाजे पर नज़र देना  
 दरवाजे पर नाक रगड़ना  
 दरवाजे पर पड़ा रहना  
 दरवाजे पर हाथी भूमना  
 दरार पढ़ना  
 दरार भर जाना  
 दर्द खाना  
 दर्प मर्दन करना  
 दलदल में पैर रखना  
 दलदल में निकलना  
 दलाली खाना  
 दहाड़ मार कर रोना  
 दही-दही हाँक लगाना  
 दाँत काड़ना  
 दाँत किटकिटाना  
 दाँत खट्टे होना  
 दाँत चबाना  
 दाँत टूटना  
 दाँत तोड़ना  
 दाँत देना  
 दाँत निकालना  
 दाँत निकोसना  
 दाँत निपोरना  
 दाँत पीस कर रह जाना  
 दाँत पीसना  
 दाँत फोड़ देना  
 दाँत बजना  
 दाँत बैठ जाना  
 दाँत लग जाना  
 दाँत लगाना

दांती लगना  
 दांती लगना  
 दांतों पर सीना आना  
 दांतों में उंगली देना  
 दांतों में पानी लगना  
 दांतों से कौड़ियां पकड़ना  
 दांतों से जीभ दबाना  
 दांतों से पैसा पकड़ना  
 दांव के पासे पड़ना  
 दांव से खेलना  
 दांव चलाना  
 दांव ताकना  
 दांव पड़ना  
 दांव पर चढ़ना  
 दांव पाना  
 दांव बन आना  
 दांव लगना  
 दांव लेना  
 दांव हारना  
 दाई से पेट छिपाना  
 दाग लगना  
 दाग लगाना  
 दाढ़ी पकना  
 दाद देना  
 दाना बिखेरना  
 दाने-दाने को तरसना  
 दाब में घाना  
 दाब में रखना  
 दाम उठना  
 दाम चढ़ना

दाम चढ़ाना  
 दाम लगना  
 दामन छोड़ना  
 दामन पकड़ना  
 दामन में दाग लगना  
 दामन से लगना  
 दाल गलना  
 दासता की बेड़ी पहनना  
 दिखाने के दांत  
 दिन कटना  
 दिन काटना  
 दिन गुजरना  
 दिन डले  
 दिन भरना  
 दिन खोना  
 दिन गंवाना  
 दिन गिरना  
 दिन चढ़ना  
 दिन चमकना  
 दिन चला जाना  
 दिन जाना  
 दिन डलना  
 दिन डकेलना  
 दिन पलटना  
 दिन फिरना  
 दिन बीतता न जानना  
 दिन मुंदना  
 दिन में तारे दिखाई पड़ना  
 दिन तट जाना  
 दिन लोटना



पैसड

दिमाग घासमान पर चढ़ना  
 दिमाग आसमान पर जाना  
 दिमाग उलझना  
 दिमाग का गुदा चट हो जाना  
 दिमाग खपाना  
 दिमाग चक्कर खाना  
 दिमाग चाटना  
 दिमाग पक्की करना  
 दिमाग फिर जाना  
 दिमाग बढ़ जाना  
 दिमाग लड़ाना  
 दिल घाना  
 दिल उछल पड़ना  
 दिल उठना  
 दिल उठा-उठा फिरना  
 दिल उमड़ पड़ना  
 दिल उलटना  
 दिल कचोटना  
 दिल कस में होना  
 दिल का विकार निकलना  
 दिल का घाव भरना  
 दिल का बुझार निकालना  
 दिल का बोझ उतरना  
 दिल की आग बुझाना  
 दिल की कली खिलना  
 दिल की दिल में रहना  
 दिल की लगना  
 दिल की हवस निकलना  
 दिल कुड़ना  
 दिल के फफोले टूटना

दिल के फफोले फोड़ना  
 दिल खटकना  
 दिल खिल उठना  
 दिल खींचना  
 दिल खुला रखना  
 दिल खोलना  
 दिल गवाही देना  
 दिल चुराना  
 दिल चूर-चूर होना  
 दिल छिलना  
 दिल छीन लेना  
 दिल छू लेना  
 दिल जलना  
 दिल जलाना  
 दिल जुड़ना  
 दिल जोड़ना  
 दिल टटोलना  
 दिल टुकड़ा-टुकड़ा होना  
 दिल टूटना  
 दिल ठिकाने होना  
 दिल तड़पना  
 दिल तोड़ कर  
 दिल तोड़नेवाली बात  
 दिल घाम लेना  
 दिल दबना  
 दिल दलकना  
 दिल देना  
 दिल दोड़ना  
 दिल दोड़ाना  
 दिल घड़कना

## विद्यामठ

दिल निकालकर रख देना  
 दिल पकड़ लेना  
 दिल पकड़े फिरना  
 दिल पर चोट करना  
 दिल पर चोट होना  
 दिल पिघलना  
 दिल पसीजना  
 दिल पानी करना  
 दिल फटना  
 दिल फिरना  
 दिल फेरना  
 दिल बंधना  
 दिल बड़ना  
 दिल बाँसों उछलना  
 दिल बाग-बाग होना  
 दिल बुझना  
 दिल बैठना  
 दिल बोझ से दबना  
 दिल बोलना  
 दिल भटकना  
 दिल भर जाना  
 दिल भरना  
 दिल मलना  
 दिल मसल देना  
 दिल मसोसना  
 दिल मिलना  
 दिल मिलाना  
 दिल में आग लगना  
 दिल में आग लगाना  
 दिल में एँठ कर रह जाना

दिल में कट कर रह जाना  
 दिल में कसर होना  
 दिल में कोटा सा चुभना  
 दिल में खटका होना  
 दिल में घर करना  
 दिल में जगह देना  
 दिल में कफोले पड़ना  
 दिल में बसना  
 दिल में बैठना  
 दिल में भासा चुभना  
 दिल में मेल आना  
 दिल में लगना  
 दिल लगाना  
 दिल लेना  
 दिल से आवाज घाना  
 दिल से निकाल डालना  
 दिल से निकाल देना  
 दिल से मलाल निकाल देना  
 दिल हाथ में रखना  
 दिल हाथ से जाना  
 दिल हाथों उछलना  
 दिल हिल उठना  
 दिल हिला देना  
 दिवाला कटना  
 दिवाला निकलना  
 दिवाला निकालना  
 दिवाला पिटना  
 दिशा फिरना  
 दिशाएँ दहल जाना  
 दीठ उठना



सङ्कलन

दीठ उतरना  
दीठ खराद पर खड़ना  
दीठ गड़ाना  
दीठ चूकना  
दीठ छिपाना  
दीठ जुड़ना  
दीठ ठहरना  
दीठ पकड़ना  
दीठ फिरना  
दीठ फेरना  
दीठ बचाना  
दीठ मरोरना  
दीठ में ठहराना  
दीठ लगना  
दीठ लड़ना  
दीठ लड़ाना  
दीदा फाड़कर देखना  
दीदा फेंकना  
दीपक बुझना  
दीया बड़ाना  
दीया लेकर दूड़ना  
दीये की बत्ती टालने को न कहना  
दीवार उठाना भीर दहाना  
दीवार के कान होना  
दीवार टूट जाना  
दीवार तोड़ना  
दीवार रखना  
दीवार से कहना  
दुंदुभी बजना  
दुंदुभी बजाना

दुकान चल निकलना  
दुकान बड़ाना  
दुख का घूट पीना  
दुख का पहाड़ टूटना  
दुख काटना  
दुख के बीज बोना  
दुख के समुद्र में पड़ना  
दुख के सागर में दूबना  
दुख को दहना  
दुख दलना  
दुख देना  
दुख बंटाना  
दुख भरना  
दुख भागना  
दुख मंढराना  
दुख में गारना  
दुख में पगे होना  
दुख में जलना  
दुख में जलाना  
दुषड़ी साधना  
दुनिया उजड़ना  
दुनिया की हवा लगना  
दुनिया देखना  
दुनिया देखे होना  
दुनिया सर पर उठाना  
दुनिया से उठ जाना  
दुनिया से कूच कर जाना  
दुनिया से बेटा पार होना  
दुम भाड़ कर चल देना  
दुम दबाकर भागना

अइसठ

दुम दबा जाना  
 दुम दबा बैठना  
 दुम बनना  
 दुम हिलाना  
 दुर्भाग्य के कोड़े खाना  
 दुर्लक्षियों भाड़ना  
 दुलार रखना  
 दुश्मनी मोल लेना  
 दुहाई देना  
 दुहाई फिरना  
 दुहाई बोलना  
 दूध का घोषा  
 दूध की कुल्लियाँ करना  
 दूध की बूँदों से न छटना  
 दूध के दाँत न टूटना  
 दूध के फेन को बज से तोड़ना  
 दूधों नहाना  
 दून की लेना  
 दून की सूझना  
 दूषण देना  
 दूषण लगाना  
 दूसरों का जीवन बनाना  
 दूसरों का मुँह ताकना  
 दूसरों की ताली पर नाचना  
 दूसरों के लिए दुष्काँ खोदना  
 दूसरों के सिर ठीकरा फोड़ना  
 दूसरों के हाथ बिक जाना  
 दूसरों के हाथ में चोटी होना  
 दुग छरना  
 दुग जोड़ना

दृष्टि उठना  
 दृष्टि गड़ना  
 दृष्टि डालना  
 दृष्टि डोलना  
 दृष्टि तानना  
 दृष्टि देना  
 दृष्टि दोड़ना  
 दृष्टि दोड़ाना  
 दृष्टि फेंकना  
 दृष्टि फेरना  
 दृष्टि में आना  
 दृष्टि में लटकना  
 दृष्टि लगना  
 दृष्टि लगाना  
 देखकर भी मक्खी निगलना  
 देवता कूच कर जाना  
 देवता मनाना  
 देवताओं की घाँस पड़ना  
 देह की सबर न होना  
 देह की दशा गर्बाना  
 देह को लगना  
 देह चुराना  
 देह छूटना  
 देह छोड़ना  
 देह टूटना  
 देह डलना  
 देह तजना  
 देह त्यागना  
 देह धरना  
 देह न संभलना



जनहृत्तर

देह बिसारना  
 देह भूलना  
 देह में आग लगना  
 देह रखना  
 देह लहराना  
 देव फिरना  
 देव कठना  
 दीपहर डलना  
 दीप चढ़ाना  
 दोस्ती गांठना  
 दीड़ लगाना  
 द्वार खुलना  
 द्वार पर खड़े होना  
 द्वार पर भांकना  
 द्वार लगना  
 धक्का खाना  
 धक्का लगना  
 धज्जियाँ उड़ाना  
 धज्जियाँ उड़ाना  
 धड़क खुलना  
 धन जोड़ना  
 धन बरसना  
 धब्बा आना  
 धब्बा लगना  
 धरती छोड़ना  
 धरती पर पैर न पड़ना  
 धरती पर पैर रखना  
 धरती से उठ जाना  
 धरना देना  
 धर्म बिगाड़ना

धर्म रखना  
 धर्म लेना  
 धर्म से न डोलना  
 धाक जमना  
 धाक बंधना  
 धाक बांधना  
 धाक बँटना  
 धाक बँटाना  
 धीरज को निगलना  
 धीरज बंधना  
 धीरज बंधाना  
 धीरज बांधना  
 धीरता भागना  
 धुँसा घोंटना  
 धुकधुकी घरकना  
 धुन लगना  
 धुन सवार होना  
 धुरी उड़ाना  
 धूनी रमाना  
 धूप चढ़ना  
 धूप में बाल न पकना  
 धूप लेना  
 धूम मच जाना  
 धूम होना  
 धूल उड़ना  
 धूल उड़ाते फिरना  
 धूल करना  
 धूल झाड़ कर चल देना  
 धूल फांकना  
 धूल फेंकना

सप्तम

धूल में पड़ी होना  
 धूल में मिलना  
 धूल में मिलाना  
 धूल में रस्ती बटना  
 धूल में लट्ठ मारना  
 धूल में सानना  
 धूल समझना  
 धूल देना  
 धोखा खाना  
 धोती बिगड़ना  
 धौंस जमाना  
 धौंस सहना  
 धोल मारना  
 धोल लगाना  
 ध्यान छुटना  
 ध्यान धरना  
 ध्यान पर चढ़ना  
 ध्यान पर लगना  
 ध्वजा फहराना  
 नकाब उलटना  
 नकेल हाथ में रखना  
 नकेल हाथ में होना  
 नक्कू बनना  
 नगाड़ा बजना  
 नज़र घटकना  
 नज़र गड़ाना  
 नज़र गाड़ना  
 नज़र चुराना  
 नज़र टकराना  
 नज़र डालना

नज़र दीवाना  
 नज़र न उठाना  
 नज़र पड़ना  
 नज़र पर चढ़ना  
 नज़र फेंकना  
 नज़र बचाना  
 नज़र बदल जाना  
 नज़रवाजी करना  
 नज़र भर कर देखना  
 नज़र मरना  
 नज़र मारना  
 नज़र मिलना  
 नज़र मिलाना  
 नज़र रखना  
 नज़र लगना  
 नज़र लगाना  
 नज़र लड़ना  
 नज़र लड़ाना  
 नज़र लाना  
 नज़र से गिरना  
 नज़र होना  
 नज़रों में खटकना  
 नदी बहना  
 नदी बहाना  
 नफा उठाना  
 नफा खाना  
 नब्ब टटोलना  
 नब्ब पहचानना  
 नमक खाना  
 निमक छिड़कना



## इकहत्तर

नमक बजाना

नमक मानना

नमक लगाना

नमस्कार करना

नयन अघाना

नयन की ओर ओहना

नयन के अतिथि करना

नयन जुड़ाना

नयन से पनारी बहना

नरक के कुएं में पड़ना

नरक में दिन बीतना

नरक में पड़ना

नरक में होना

नरमी करना

नरमी बरतना

नशा उखड़ना

नशा उतरना

नशा चढ़ाना

नशा मिट्टी होना

नशा हिरण होना

नशे में डूबा होना

नसनस का पता होना

नसनस में बिजली दौड़ना

नसीब के मारे

नसीब जल जाना

नसीब फिरना

नसीब फूटा होना

नह गिर जाना

नह में कील ठोकना

नहर बहा देना

नाक उड़ना

नाक उतरना

नाक कट जाना

नाक कटवाना

नाक कतर जाना

नाक काटना

नाक के बल नाचना

नाक घुमाना

नाक चढ़ना,—चढ़ाना

नाक छिदना

नाक जाना

नाक डालना

नाक दवाना

नाक पकड़ कर घुमाना

नाक पर गुस्सा रखा रहना

नाक पर मक्खी न बैठने देना

नाक पर रख देना

नाक फटना

नाक बचना

नाक मलना

नाक मारना

नाक में दम आना

नाक में दम करना

नाक में नकेल डालना

नाक रखना

नाक रगड़ कर रह जाना

नाक रगड़ना

नाक रगड़वाना

नाक रहना

नाक सिकोड़ना

बहुतर

नाका छेकना  
 नाकों घाना  
 नाकों बने बबाना  
 नाकों बने बिनवाना  
 नाकों दम होना  
 नाखून दुखना  
 नाग को दगाना  
 नाच नचाना  
 नाच नाचना  
 नाइ उठाना  
 नाड़ी गिरी होना  
 नाड़ी पहचानना  
 नाड़ी फड़कना  
 नाता जोड़ना  
 नाता टूटना  
 नाता लोड़ना  
 नाती के नाम रोना  
 नानी मर जाना  
 नाम उछालना  
 नाम उजागर करना  
 नाम कटना  
 नाम कमाना  
 नाम का जूता पहनना  
 नाम का देका पिट जाना  
 नाम की धूम मचाना  
 नाम की माला जपना  
 नाम को घुक्ना  
 नाम को न रहना  
 नाम को बट्टा लगाना  
 नाम को बट्टा लगाना

नाम को रोना  
 नाम चमकना;— चमकाना  
 नाम चलना  
 नाम छेकना  
 नाम जपना  
 नाम टांगना  
 नाम डुबाना  
 नाम डूबना  
 नाम तक न रहने देना  
 नाम तक न लेना  
 नाम धरना  
 नाम धराना  
 नाम न लेना  
 नाम पड़ना  
 नाम पर जान देना  
 नाम पर धब्बा लगाना  
 नाम पर धब्बा लगाना  
 नाम पर बट्टा लगाना  
 नाम पर बट्टा लगाना  
 नाम पर बिकना  
 नाम पर मरना  
 नाम पाना  
 नाम पैदा करना  
 नाम फैलना  
 नाम बढ़ाना  
 नाम बेचना  
 नाम खोरना  
 नाम मिटा देना  
 नाम मिटाना  
 नाम रख लेना



तिहुसर

नाम रटना	निगाह में (से) गिर जाना
नाम रह जाना	निगाह में खचना
नाम रोशन करना	निगाह में पड़ना
नाम रोशन होना	निगाह रखना
नाम लेकर	निगाह रहना
नाम लेना	निगाह लड़ना
नाम सम्हालना	निन्दा देवी की शरण लेना
नाम सहना	निवाह करना,—होना
नाम हंसना	निवाह देना
नालिश ठोकना	निशान बजाना
नाव चलना	निशान लगाना
नाव डूबना	नींद आना
नाव पार लगाना	नींद उड़ जाना
नाव भंवर से निकलना	नींद घुलना
नाव भंवर से निकालना	नींद टूटना
नाव भंभधार में पड़ना	नींद पड़ना
निगाह उठाना	नींद भर सोना
निगाह चुराना	नींद लेना
निगाह डालना	नींव डालना
निगाह देखना	नींव देना
निगाह दीड़ना	नींव पड़ना
निगाह दीड़ाना	नीयत डांवाडोल होना
निगाह पड़ना	नेवता फिरना
निगाह पर घाना	नेह जोड़ना
निगाह पर चढ़ना	नेह टूटना
निगाह फिरना	नेह तोड़ना
निगाह फेंलना	नैन घाकाश पर चढ़ना
निगाह बचना	नैन घाकाश पर चढ़ाना
निगाह बदलना	नैन उसभना
निगाह में ( से ) उतर जाना	नैन जुड़ना

बोहवर

नैन मिराना  
 नैन ओढ़ना  
 नैन टपकना  
 नैन डरना  
 नैन डोरना  
 नैन भर आना  
 नैन भर लाना  
 नैन भुला जाना  
 नैन मिलना  
 नैन सिराना  
 नन से झड़ी लगना  
 ननों में छाए रहना  
 ननों में बसना  
 ननों में समाना  
 ननों में स्थान देना  
 नोबत को पहुँचना  
 नोबत भड़ना  
 नोबत बजाना  
 पंखा डुलाना  
 पंगु हो जाना  
 पंचायत करना  
 पंजा चलाना  
 पंजा बड़ाना  
 पंजा लड़ाना  
 पंजा लेना  
 पंजे भाड़ कर पीछे पड़ना  
 पंजे में आना  
 पंजे करना  
 पंजे पड़ना  
 पंजे लाना

पंजे से लड़ाना  
 पंजे से छूटना  
 पंजों के बल चलना  
 पंजों से मुह धोना  
 पंथ चलाना  
 पंथ जोड़ना  
 पंथ दिखाना  
 पंथ देखना  
 पंथ निहारना  
 पंथ खगना  
 पकड़ छूटना  
 पक्की कर लेना  
 पक्ष करना  
 पगड़ी उछालना  
 पगड़ी उतारना  
 पगढ़ो देना  
 पगड़ी पर हाथ डालना  
 पगड़ी बंधना  
 पगड़ी बांधना  
 पचड़ा ले बैठना  
 पछाड़ खा-खा कर रोना  
 पछाड़ खाना  
 पटकनिया खाना  
 पटरा हो जाना  
 पटरी खाना  
 पटरी पर लाना  
 पटरी पर बैठना  
 पटरी पर बैठाना  
 पट्टी पुञ्जना  
 पट्टी में घाना



## पछतर

पट्टी संवारना  
पड़ाव मारना  
पड़कर मिर पर डालना  
पत उठ जाना  
पत उतारना  
पत खोना  
पत जाना  
पत रखना  
पत लेना  
पतन के गह्वर में गिरना  
पतिव्रत रखना  
पतल गरमाना  
पतल पड़ना  
पत्ता कट जाना  
पत्ता काटना  
पत्ता लड़कना  
पत्ता चाटना  
पत्ता डोलना  
पत्ता न लड़कना  
पत्ता न तोड़ने देना  
पत्ता न हिल सकना  
पत्ता न हिलना  
पत्थर का पिघलना  
पत्थर के तले हाथ होना  
पत्थर को मोम बनाना  
पत्थर पड़ना  
पत्थर पर दूब जमना  
पत्थर बनना  
पत्थर लड़काना

पत्थर हो जाना  
पथ पर चलना  
पनाह ताकना  
पन्ने उलटना  
पन्ने रंगना  
पर कतर जाना  
पर भाड़ कर अलग हो जाना  
पर निकलना  
पर कड़कडाना  
पर मारना  
पर लगना  
पर लगाना  
परदा खुलना  
परदा खोलना  
परदा रूका रहना  
परदा दूर होना  
परदा फाग होना  
परदा रखना  
परदेश में छाना  
परदेश लेना  
परम्परा डोना  
परिन्दों के पर कतर देना  
परिपाटी पर चलना  
परिवार चलाना  
परिवार टूटना  
परोसा धाल होना  
पर्वत को तिल की ओट करना  
पर्वत को राई बनाना  
पल गालना  
पलक झपकते

## छिहतर

पलक डालना  
 पलक न पड़ना  
 पलक न लगना  
 पलक न लाना  
 पलक मारते  
 पलक मारना  
 पलक लगना  
 पलकें बिछी होना  
 पलकों का दया देना  
 पलकों पर पानी फिरना  
 पलकों पर रखना  
 पलकों पर लेना  
 पलकों से धूल झाड़ना  
 पलीता देना  
 पलेघन लगना  
 पल्ला भाड़ देना  
 पल्ला पकड़ना  
 पल्ला पार होना  
 पल्ले पड़ना  
 पल्ले बांधना  
 पसली फड़कना  
 पसीना छूटना  
 पसीना बहाना  
 पसीने की जगह खून बहाना  
 पसीने पसीने होना  
 पहरायनी देना  
 पहलू बचाना  
 पहाड़ खड़ा करना  
 पहाड़ से टक्कर लेना  
 पहाड़ हो जाना

पहुँचा पेसना  
 पहुँचाई ठानना  
 पाँवड़ा पड़ना  
 पाँवड़े बिछाना  
 पाटी पड़ना  
 पाटी पड़ाना  
 पाटी पारना  
 पाठ पड़ना  
 पाठ पड़ाना  
 पाताल तक जाना  
 पान की तरह फेरे जाना  
 पान देना  
 पान फेरना  
 पान लेकर पूजना  
 पान समझना  
 पानी उतरना  
 पानी उतरवाना  
 पानी उतारना  
 पानी कर देना  
 पानी की चुपरी होना  
 पानी की तरह बहाना  
 पानी को भी न पूछना  
 पानी खोना  
 पानी चढ़ना  
 पानी चढ़ाना  
 पानी चीरना  
 पानी छूना  
 पानी दिखाना  
 पानी देना  
 पानी न पचना



सतहत्तर

पानी न मांगना  
 पानी पर घाना  
 पानी पर दिवार उठाना  
 पानी पाना  
 पानी-पानी करना  
 पानी पीकर पूछना  
 पानी पीकर जात पूछना  
 पानी पी-पी कर कोसना  
 पानी पीना  
 पानी फिर जाना  
 पानी फेरना  
 पानी बदलना  
 पानी बिलमना  
 पानी मरना  
 पानी भरो खाल  
 पानी मथना  
 पानी में गिर जाना  
 पानी डाल देना  
 पानी रखना  
 पानी लगना  
 पाप कमाना  
 पाप गलना  
 पाप जगना  
 पाप जगाना  
 पापड़ बेलना  
 पार उतरना  
 पार उतारना  
 पार पड़ना  
 पार पाना  
 पार लगना

पारा चढ़ना  
 पारा चढ़ाना  
 पारावार उमड़ना  
 पाला पड़ना  
 पाला मारना  
 पाला पलटना  
 पित्रे का पक्षी बनाना  
 पिठ छुड़ाना  
 पिठ छुटना  
 पिठा पारना  
 पिघलकर पानी होना  
 पिचकारी चलना  
 पिचकारी चलाना  
 पित्त लौलना  
 पित्त जलना  
 पित्त पानी करना  
 पिसना पीसना  
 पीछा छुड़ाना  
 पीछा न छोड़ना  
 पीछा पकड़ना  
 पीछे लेना  
 पीटना  
 पीटना ले बैठना  
 पीठ करना  
 पीठ की खाल उपेड़ना  
 पीठ चारपाई से लग जाना  
 पीठ से टूट जाना  
 पीठ ठोंकना  
 पीठ दिखाकर जाना  
 पीठ दिखाना

बठतर

पीठ देना  
 पीठ नपाना  
 पीठ नापना  
 पीठ पर खाड़ा होना  
 पीठ पर चावुक होना  
 पीठ पर बल होना  
 पीठ पर सवार होना  
 पीठ पर हाथ फेरना  
 पीठ पर हाथ रखना  
 पीठ पर होना  
 पीठ फेर कर बँठना  
 पीठ फेरना  
 पीठ बचाकर साव देना  
 पीठ मलना  
 पीठ मोजना  
 पीठ में छुरा भोंकना  
 पीठ में धूल लगना  
 पीठ में धूल लगाना  
 पाठ में मिट्टी लगाना  
 पीठ मोड़ना  
 पीठ लगना  
 पीठ लगा देना  
 पीठ लगाना  
 पीठ सहलाना  
 पीपल के पत्ते की तरह कांपना  
 पीपे को पीमना  
 पुकार पड़ना  
 पुकार लगना  
 पुकार मुनना  
 पुकार होना

पुट्टे पर हाथ न रखते देना  
 पुरजा दुस्त करना  
 पुरजा दुस्त होना  
 पुरषार्थ पकना  
 पुल बांधना  
 पूछ पकड़ना  
 पूजी टूटना  
 पूजी डूबना  
 पूछ होना  
 पूजा चढ़ाना  
 पूजा देना  
 पूजा होना  
 पृथ्वी कांपना  
 पृथ्वी का रसातल में जाना  
 पृथ्वी डोलना  
 पृथ्वी पर घाना  
 पृथ्वी से उठ जाना  
 पेंग बड़ना  
 पेंच में आना  
 पेंच में पड़ना  
 पेंच में होना  
 पेट एँठना  
 पेट और तन काटना  
 पेट का पानी न पचना  
 पेट का पानी हिल जाना  
 पेट काटना  
 पेट की आग बुझाना  
 पेट की घाह पड़ना  
 पेट की घाह लेना  
 पेट के सारे पड़ना



## बनायी

पेट खलाना  
 पेट गड़ना  
 पेट गदराना  
 पेट गिरना  
 पेट गिराना  
 पेट गुड़गुड़ाना  
 पेट चलना  
 पेट छूटना  
 पेट छूटना  
 पेट जलना  
 पेट जलाना  
 पेट जारी रहना  
 पेट घामे फिरना  
 पेट पकड़े फिरना  
 पेट दिखाना  
 पेट देना  
 पेट पकड़ना  
 पेट पकड़े फिरना  
 पेट पर छुरी चलाना  
 पेट पर पट्टी बांधना  
 पेट पर लात मारना  
 पेट पलना  
 पेट पाटना  
 पेट पानी होना  
 पेट पालना  
 पेट पीठ से लगना  
 पेट फाड़कर खाना  
 पेट फूलना  
 पेट बांधना  
 पेट भर कर

पेट भरना  
 पेट मारना  
 पेट में आग लगना  
 पेट में कसर होना  
 पेट में ललबली मचना  
 पेट में चूहा कुदना  
 पेट में चूहा दौड़ना  
 पेट में छलंदर छलवाना  
 पेट में छुरी भोंकना  
 पेट में जाना  
 पेट में जी न होना  
 पेट में डालना  
 पेट में पड़ना  
 पेट में पांव होना  
 पेट में पानी न पचना  
 पेट में पानी न हजम होना  
 पेट में पानी पड़ना  
 पेट में पानी होना  
 पेट में पैठना  
 पेट में बल पड़ना  
 पेट में बात की गंध न पचना  
 पेट में बात न पचना  
 पेट में बात न रहना  
 पेट में बलबुला उठना  
 पेट में समाना  
 पेट में होना  
 पेट रहना  
 पेट लेना  
 पेट से मारना  
 पेट काट पता सींचना

धम्मी

पेह काट कर पत्ता सींचना  
 पेशानी पर बल पड़ना  
 पैंग बढ़ाना  
 पैड़ी देखना  
 पैड़ी चढ़ना  
 पैड़े पड़ना  
 पैतरा काटना  
 पैतरा बदलना  
 पैतरा भरना  
 पैज पह जाना  
 पैडल फेंकना  
 पैर अड़ाना  
 पैर आँख से लगाना  
 पैर उखड़ना  
 पैर उल्टाड़ना  
 पैर उठना  
 पैर उठाकर चलना  
 पैर उठाना  
 पैर काड़ना  
 पैर कांपना  
 पैर कीचड़ में फंसना  
 पैर की ठोकर खाना  
 पैर की धूल झाड़ना  
 पैर की धूलि माये बढ़ाना  
 पैर की धूलि माये लगाना  
 पैर की धूलि माये लेना  
 पैर की घोबन होना  
 पैर के तलवे चाटना  
 पैर सींचना  
 पैर गड़ना

पैर गहना  
 पैर गाड़ना  
 पैर कांपना  
 पैर चाटना  
 पैर चूमना  
 पैर छलनी होना  
 पैर छानना  
 पैर जमना  
 पैर जमाना  
 पैर जमीन पर न पड़ना  
 पैर टलना  
 पैर टालना  
 पैर टिकना  
 पैर टिकाना  
 पैर टूटना  
 पैर टेकना  
 पैर ठहरना  
 पैर डगमगाना  
 पैर डालना  
 पैर तोड़कर बैठना  
 पैर घबना  
 पैर घामना  
 पैर घर्जना  
 पैर दबा कर चलना  
 पैर दलदल में फंसना  
 पैर देकर चलना  
 पैर देना  
 पैर धरना  
 पैर धूलवाना  
 पैर धो-धो कर पीना



पूज्यामी

पैर धोने लायक न होना  
 पैर न रखना  
 पैर निकालना  
 पैर पकड़ कर काम करना  
 पैर पकड़ना  
 पैर पसार कर पीना  
 पैर पटकना  
 पैर पड़ना  
 पैर पत्थर हो जाना  
 पैर पर गिरना  
 पैर पर पगड़ी रखना  
 पैर पर पैर रखकर सोना  
 पैर पर माथा रगड़ना  
 पैर पर सिर रखना  
 पैर पलोटना  
 पैर पसार कर पड़े रहना  
 पैर पसार कर सोना  
 पैर पसारना  
 पैर पीटना  
 पैर पूजना  
 पैर फिसलना  
 पैर फैलाना  
 पैर बंध जाना  
 पैर बढ़ाना  
 पैर बांध देना  
 पैर बिचलना  
 पैर भर जाना  
 पैर मन-मन भर के होना  
 पैर में काटे गड़ना  
 पैर में चक्कर होना

पैर में बेड़ी पड़ना  
 पैर में मेंहदी लगी होना  
 पैर में सिर देना  
 पैर रखना  
 पैर रखने की जगह होना  
 पैर रगड़ना  
 पैर रपटना  
 पैर रह जाना  
 पैर रुकना  
 पैर रोकना  
 पैर रोप कर  
 पैर रोपना  
 पैर लगना  
 पैर लटपटाना  
 पैर समेटना  
 पैर सम्हाल कर रखना  
 पैर सहलाना  
 पैर सिकोड़ना  
 पैर सिर पर रखना  
 पैर से जा लगना  
 पैर से ठुकाना  
 पैर से बांध कर रखना  
 पैर हवा में पड़ना  
 पैर हिलाना  
 पैरों की धूलि चाटना  
 पैरों पर खड़े होना  
 पैरों पर गिरना  
 पैरों पर झुकना  
 पैरों पर नाक घिसना  
 पैरों पर नाक रगड़ना

व्यासो

पैरों पर लोटना  
 पैरों पर सिर रगड़ना  
 पैरों में डाल देना  
 पैरों में पर लगना  
 पैरों में बेड़ियाँ डाल देना  
 पैरों में बेड़ियाँ पड़ जाना  
 पैरों में मन लगना  
 पैरों से कुचल डालना  
 पैरों से कुचला जाना  
 पैरों से ठुकराना  
 पैरों से मसलना  
 पैसा खाना  
 पैसा खींचना  
 पैसा घसीटना  
 पैसा चाटना  
 पैसा फूँकना  
 पैसा बनाना  
 पैसे को ठीकरी समझना  
 पैसे को दाँत से पकड़ना  
 पैसे खड़े करना  
 पोटी दुह ली जानी  
 पोल खुल जाना  
 पोल खोलना  
 पो फटना  
 पोरा जाना  
 प्वादे से फरजी होना  
 प्वार पसीजना  
 प्वाला भर जाना  
 प्वाला सबरैज होना  
 प्वास चटकना

प्वास बूझना  
 प्वास मिटना  
 प्वास से मरना  
 प्रकाश डालना  
 प्रकाश मर जाना  
 प्रकृति पड़ना  
 प्रण पालना  
 प्रण रखना  
 प्रण रोपना  
 प्रणाम करना  
 प्रताप जगाना  
 प्रताप तपना  
 प्रतीति खाना  
 प्रलय मचाना  
 प्रशंसा करते न चकना  
 प्रश्न उठ खड़ा होना  
 प्रश्नों की झड़ौ लगना  
 प्राण ओठों तक आना  
 प्राण जीटना  
 प्राण खिचना  
 प्राण चढ़ाना  
 प्राण छिड़कना  
 प्राण छूटना  
 प्राण छोड़ना  
 प्राण जाना  
 प्राण जुड़ाना  
 प्राण त्यागना  
 प्राण देना  
 प्राण नहीं में समाना  
 प्राण निकलना



## तिरासी

प्राण निकाल लेना  
 प्राण पक जाना  
 प्राण पिघलना  
 प्राण फूंकना  
 प्राण बसना  
 प्राण मुंह तक आना  
 प्राण मुट्ठी के लिए रहना  
 प्राण लगा रखना  
 प्राण लगा रहना  
 प्राण सूखना  
 प्राण हरना  
 प्राण हाथ में लिए रहना  
 प्राणों पर खेलना  
 प्राणों से हाथ धोना  
 प्रीति की बेल बोना  
 प्रेत लगना  
 प्रेम उपजना  
 प्रेम की डोर में बंधना  
 प्रेम की बेड़ी पड़ना  
 प्रेम जोड़ना  
 प्रेम ठानना  
 प्रेम तोड़ना  
 प्रेम में पगना  
 प्रेम में लिपटे रहना  
 प्रेम लड़ना  
 प्रेम से दग्ध होना  
 फंदे में पड़ना  
 फटकार पड़ना  
 फटकार बरसना  
 फटा मला

फटा-फटा रहना  
 फटी आंख  
 फटी-फटी आंखों से देखना  
 फटी हालत  
 फटे बांस सा स्वर  
 फड़ डालना  
 फबती उड़ाना  
 फबती कसना  
 फबती लेना  
 फर्ज कर देना  
 फल बखाना  
 फल बखाना  
 फल देना  
 फल पाना  
 फांसी पर चढ़ जाना  
 फांसी देना  
 फाग खेलना  
 फाल बांधना  
 फिकरा कसना  
 फुरेरी लेना  
 फूक-फूक कर पैर रखना  
 फूक से उड़ा देना  
 फूक से पहाड़ उड़ाना  
 फूट की बेल बड़ना  
 फूट के बीज डालना  
 फूट के बीज बोना  
 फूट डालना  
 फूटा भाग्य  
 फूटी आंख न देख सकना  
 फूटी घाव न भाना

## बीरामी

फूटी छांग न मुहाना  
 फूटी किन्मत  
 फूटी कौड़ी भी नहीं  
 फूटे मुंह से  
 फूल उतरना  
 फूल उतारना  
 फूल कर कुप्पा होना  
 फूल की छड़ी से भी न छूना  
 फूल बड़ना  
 फूल बढ़ाना  
 फूल भरना  
 फूल पर सुलाना  
 फूल बरसना  
 फूले अंग न समाना  
 फेंक कसना  
 फेंक पकड़ना  
 फेर में पड़ना  
 फेरा करना  
 फेरा देना  
 फेरी लगाना  
 फैल करना  
 फैल मचाना  
 फौज रेंगाना  
 फौज को आईना दिखाना  
 बन्दूक छठियाना  
 बंधन तोड़ना  
 बंधी गत बजाना  
 बंधी दीठ  
 बक फटना  
 बकरी की तरह मुंह चलाना

बकरी बनना  
 बकवाद बड़ाना  
 बलिया उधेड़ना  
 बगल भोंकना  
 बगल निकलना  
 बगल बजाना  
 बगल में दबाना  
 बगले का हंस होना  
 बचन निकलना  
 बच्चे से होना  
 बख गिराना  
 बट्टा लगना  
 बट्टा लगाना  
 बट्टे डालना  
 बड़ाई खाना  
 बड़ाई देना  
 बड़ाई मारना  
 बड़-बड़ कर बातें करना  
 बड़-बड़ कर बातें मारना  
 बड़ाकर हाथ मारना  
 बदन तोड़ना  
 बदन में आग लगना  
 बधाई बांटना  
 बधावा बजना  
 बघिया बैठ जाना  
 बन-बन की लकड़ी चुनना  
 बना बनाया खेल बिगड़ जाना  
 बनी बात बिगड़ जाना  
 बल भाड़ना  
 बनावा करना



पचासी

बल डालना  
बल तोड़ना  
बल धुक्ना  
बल पड़ना  
बल पर बसना  
बल पाना  
बल मचाना  
बला जाना  
बला टलना  
बला लगना  
बना सिर पर लेना  
बलाये लेना  
बवाल पालना  
बसेरा देना  
बहनापा ओड़ना  
बहरा कर देना  
बहाली बताना  
बहुरूपियापन करना  
बहे जाते का सहारा होना  
बाछे मिलना  
बांध टूटना  
बांध तोड़ कर बहना  
बांस पर चढ़ना  
बासों उछलना  
बासों पानी चढ़ाना  
बासों बड़ना  
बाह उठाकर पुकारना  
बाह की छांह लेना  
बाह गहना  
बाह गहे की लाज निभाना

बाह टूटना  
बाह देना  
बाह पकड़ना  
बाह फड़कना  
बाह में बसना  
बाहों में कसना  
बाई छूना  
बाई पचना  
बाई पचाना  
बाई लगना  
बाकी न उठा रखना  
बाकी निकलना  
बाकी निकालना  
बाग खोचना  
बाग न मोड़ना  
बागडोर हाथ में लेना  
बागडोर हाथ में होना  
बाजार करना  
बाजार चलते हाथ पटकना  
बाजार ठहरना  
बाजार मिलना  
बाजार में घाग लगना  
बाजार में बैठना  
बाजी बंदना  
बाजी मार लेना  
बाजी हाथ में रहना  
बाजू पकड़ना  
बाट करना  
बाट जोहना  
बाट दिखाना

## धियायी

बाट पड़ना  
 बाट जाना  
 बाट में बह जाना  
 बाट जाना  
 बाट उगल देना  
 बाट उधार कर कहना  
 बाट उछालना  
 बाट उठाना  
 बाट कट जाना  
 बाट करते  
 बाट करना  
 बाट कसना  
 बाट का काटना  
 बाट का तार उठाना  
 बाट का बतंगड़ करना  
 बाट काटना  
 बाट की भड़ी लगना  
 बाट की भड़ी लगाना  
 बाट की तह तक पहुंचना  
 बाट की तान टूटना  
 बाट की मार खाना  
 बाट खटकना  
 बाट खुलना  
 बाट खोल कर कहना  
 बाट खोलना  
 बाट गड़-गड़ कर बनाना  
 बाट गड़ना  
 बाट गंभ करना  
 बाट गिरह में बांधना  
 बाट बचा जाना

बाट चलना  
 बाट चलाना  
 बाट छीलना  
 बाट छेड़ना  
 बाट जड़ना  
 बाट जमना  
 बाट जमाना  
 बाट जाना  
 बाट टालना  
 बाट टूटना  
 बाट तोड़ना  
 बाट तौल कर कहना  
 बाट दबना  
 बाट दवाना  
 बाट देना  
 बाट न उठा रखना  
 बाट न पूछना  
 बाट निकलवा लेना  
 बाट पकड़ लेना  
 बाट पकना  
 बाट पड़ना  
 बाट पड़ाना  
 बाट पर जाना  
 बाट पी जाना  
 बाट फूटना  
 बाट फेंकना  
 बाट फेरना  
 बाट फेंलना  
 बाट फेंलाना  
 बाट फोड़ना



संज्ञासूची

बात बघारना  
 बात बढ़ना  
 बात बढ़ाना  
 बात बना लेना  
 बात बनाना  
 बात बहलाना  
 बात बिगाड़ना  
 बात बिगाड़ना  
 बात बैठना  
 बात मठोरना  
 बात मथना  
 बात मन में बैठना  
 बात मोजना  
 बात मुँह से निकलना  
 बात में न होना  
 बात में सल पड़ना  
 बात रखना  
 बात रह जाना  
 बात लगना  
 बात लगाना  
 बात लड़ना  
 बात संवारना  
 बात सुनना  
 बात सुनाना  
 बात से फिर जाना  
 बात से निकलना  
 बात हवा में उछलना  
 बात हाथ में घाना  
 बात हारना  
 बातचीत लगना

बातें भाड़ना  
 बातें तोड़ना  
 बातें मरोड़ना  
 बातें बनाना  
 बातें मारना  
 बातों में घाना  
 बातों में उड़ जाना  
 बातों में पड़ना  
 बातों में फंसाना  
 बातों में लगाना  
 बातों में लाना  
 बादल खुलना  
 बादल फटना  
 धाना बनना  
 धाना पहन लेना  
 बाप के जाए  
 बाप बनाना  
 बापन देना  
 बारात ठहरना  
 बारीकियों में उतरना  
 बाल कटाना  
 बाल की बाल काड़ना  
 बाल की बाल खींचना  
 बाल की बाल निकालना  
 बाल खिचड़ी होना  
 बाल चुनवाना  
 बाल मोचना  
 बाल पकना  
 बाल बाँका न कर सकना  
 बाल-बाल झुगी होना

## पढ़ावी

बाल-बाल बचना  
 बाल-बाल बिन जाना  
 बाल भी न दुखना  
 बाल मन होना  
 बालू में से तेल निकालना  
 बासा देना  
 बिखरा हुआ मन  
 बिगड़ी बनना  
 बिगड़ी बनाना  
 बिगाड़ का बीज बोना  
 बिच्छी चढ़ना  
 बिछोह पड़ना  
 बिजली गिरना  
 बिजली गिराना  
 बिजली टूटना  
 बिजली बन जाना  
 बिजली मार जाना  
 बिरादरी करना  
 बीच करना  
 बीच में आना  
 बीच में कूदना  
 बीच में डालना  
 बीच में दीवार लड़ी होना  
 बीच में पड़ना  
 बीच में खोलना  
 बीच में रखना  
 बीज बोना  
 बीड़ा उठाना  
 बीड़ा देना  
 बीड़ा लेना

बीमारी होना  
 बुखार उतरना  
 बुखार उठाना  
 बुखार टूटना  
 बुझती आग में घी पड़ना  
 बुझती आग में तेल पड़ना  
 बुझा हुआ हृदय  
 बुझाये की मारी  
 बुले में घाना  
 बुट् बुने रहना  
 बुद्धि का चरने जाना  
 बुद्धि लो देना  
 बुद्धि दौड़ना  
 बुद्धि दौड़ाना  
 बुद्धि पर पड़ा परदा दूर होना  
 बुद्धि मारी जाना  
 बुलबुल हो जाना  
 बूदाबूदादी होना  
 बू जाना  
 बूटी छानना  
 बेंत कंपाना  
 बेंत की तरह कंपना  
 बेंत खाना  
 बेड़ा गर्क होना  
 बेड़ा डुबाना  
 बेड़ा डूबना  
 बेड़ा पार करना  
 बेड़ा पार लगाना  
 बेड़ा पार होना  
 बेल मंडे (मूड़े) चढ़ना



नवासी

बेना झुकना  
बेना डलना  
बैठने का ठिकाना रहना  
बैठने का ठिकाना होना  
बैन भरना  
बैर काड़ना  
बैर ठानना  
बैर पड़ना  
बैर लेना  
बैल के से दीदे निकालना  
बल से दूध निकालना  
बैसाखी छोड़ना  
बोझ उठाना  
बोझ डालना  
बोटी नुबना  
बोटल उड़ाना  
बोल न आना  
बोल फूटना  
बोली कसना  
बोली बोलना  
बोली मारना  
बोली में मिठास षोलना  
बोली से घमूत टपकना  
बोछार पड़ना  
बोने का चाँद पकड़ना  
ब्योत करना  
ब्योत लगना  
ब्रह्मांड फूटना  
भंग लाये होना  
भंग चढ़ाना

भंग छलना  
भंडा फूटना  
भंडाफोड़ करना  
भगत बनाना  
भगवा पहनना  
भगवान के दर जाना  
भगवान के पहाँ जाना  
भट्ठी सा लगना  
भतार करना  
भद्रा उतरना  
भद्रा उतारना  
भभूत रमाना  
भय खाना  
भरोसा आना  
भरपाया स्वर  
भला ताकना  
भव तरना  
भविष्य हाथ में होना  
भबै तनना  
भस्म चढ़ना  
भस्म मांजना  
भांजी डालना  
भांजी मारना  
भांड भर कर पाप करना  
भांवर पड़ना  
भांवर होना  
भांवर फिरना  
भांवर लेना  
भागते भूत की लंगोटी  
भाग्य को रोना

नब्बे

भाग्य खुलना  
भाग्य चमकना  
भाग्य छीनना  
भाग्य जागना  
भाग्य ठोकना  
भाग्य फिरना  
भाग्य फूटना  
भाग्य भरा होना  
भाग्य में उजाला आना  
भाग्य में लिखा होना  
भाग्य में लीक लिखी होनी  
भाग्य सो जाना  
भाग्य नौटना  
भाड़ में जाना  
भाड़ में भौकना  
भात देना  
भार उठाना  
भाला तौलना  
भाव गिरना  
भाव चढ़ना  
भाव बिठाना  
भावनाएं मोई होना  
भिड़ का छत्ता होना  
भरा घर  
भरा हुआ गला  
भरे घर का चोर  
भीगा हुआ चमरोधा लगाना  
भीगता स्वर  
भीगी घाँस  
भीगी बिल्ली

भीगी हँसी  
भीड़ छूट जाना  
भीड़ पड़ना  
भीत के बिना चिप बनाना  
भीत में दौड़ना  
भुजा उठाकर कहना  
भुजा टेक कर कहना  
भुजा ठोक कर कहना  
भुजा भर भेंटना  
भुजाएँ फड़क उठना  
भुजाओं में बाँध लेना  
भुजाओं में भर लेना  
भुट्टे सा उड़ाना  
भुरकुस करना  
भ'जी भांग न होना  
भूल बूझ जाना  
भूल मिटाना  
भूल से आँख नाचना  
भूत उतरना  
भूत उतारना  
भूत की तरह जूट जाना  
भूत चढ़ना  
भूत भागना  
भूत लगना  
भूत घर पर सवार होना  
भूत सवार होगा  
भूलभुलैया में पड़ना  
भूसा फटकना  
भूकुटी चढ़ाना  
भूकुटी तनना



## इत्थानवे

भूकुटी तानना  
 भूकुटी में बल डालना  
 भूकुटी में बल पड़ना  
 भेद करना  
 भेद का बांध बांधना  
 भेद खोलना  
 भेद पाना  
 भैस लगना  
 भैस से बीन की दाद लेना  
 भोजन पाना  
 भौह उठना  
 भौह उठाना  
 भौह खिचना  
 भौह चढ़ना  
 भौह चढ़ाना  
 भौह तनना  
 भौह ताकना  
 भौह तानना  
 भौह मरोड़ना  
 भौह सिकोड़ना  
 भौहों के इशारे पर नाचना  
 भौहों में बस पड़ना  
 भौहों में शिकन पड़ना  
 भंजिल मारना  
 भंजी भाषा  
 भंझधार में छोड़ना  
 भंझधार में नाच डूबना  
 भंझधार में नाच होना  
 भंत्र चलाना  
 भंत्र देना

भंत्र पहाना  
 भंत्र लगना  
 भकान बंठ जाना  
 भक्ली निगलना  
 भक्ली पर भक्ली मारना  
 भक्ली मारना  
 भखौल उड़ाना  
 भगज मारना  
 भगज लड़ाना  
 भगचूरी चकचूर हो जाना  
 भजा किरकिरा होना  
 भजाक उड़ाना  
 भटरभल्ली करना  
 भटियामेट कर देना  
 भतलब गांठना  
 भति खोना  
 भति बकना  
 भति पंगु होना  
 भति फिरना  
 भति फेरना  
 भति हर लेना  
 भति हारना  
 भत्थे जाना  
 भत्थे पड़ना  
 भत्थे मड़ना  
 भथ डालना  
 भद गंजन करना  
 भद चूर करना  
 भद भारना  
 भद फटना

बानवे

मद मधना  
 मन अटकना  
 मन आकाश में उड़ना  
 मन उखड़ना  
 मन उखलना  
 मन उड़ना  
 मन उड़ा-उड़ा होना  
 मन उतरना  
 मन उमड़ना  
 मन उलझना  
 मन कट कर रह जाना  
 मन कटना  
 मन करना  
 मन कहना  
 मन का दाह मिटना  
 मन किसी में होना  
 मन की गांठ खोलना  
 मन की जलन जुड़ाना  
 मन की धाह लेना  
 मन की बात खोलना  
 मन की बात मन में रखना  
 मन की मन में रहना  
 मन की माला फेरना  
 मन की मिठाई खाना  
 मन की रोटी पोना  
 मन कुम्हलाना  
 मन के मनके फेरना  
 मन के लड्डू खाना  
 मन के लड्डू से भूख मिटाना  
 मन को पीट लगाना

मन को दवाना  
 मन को रखना  
 मन खींचना  
 मन खुलना  
 मन खोलना  
 मन घलना  
 मन गिरना  
 मन गिराना  
 मन घुमड़ना  
 मन चकरी होना  
 मन चलना  
 मन चुराना  
 मन छूटना  
 मन छूना  
 मन जमना  
 मन जाना  
 मन जीतना  
 मन जोड़ना  
 मन टंगा रहना  
 मन टटोलना  
 मन टूटना  
 मन ठहरना  
 मन उड़कना  
 मन दांवाडोल होना  
 मन डाल-डाल दौड़ना  
 मन दिगना  
 मन डूबना  
 मन डोलना  
 मन डरना  
 मन तपना



तिरानवे

मन तोड़ना  
 मन तोलना  
 मन धकना  
 मन धमना  
 मन दबना  
 मन दहना  
 मन दूसरे के हाथ देना  
 मन देना  
 मन दौड़ना  
 मन दौड़ाना  
 मन धरना  
 मन धुलना  
 मन नाचना  
 मन पकड़ना  
 मन पकना  
 मन पड़ना  
 मन पर चढ़ना  
 मन पर तलवार चलना  
 मन पर लगाम देना  
 मन पाना  
 मन पोहना  
 मन फंसना  
 मन फटना  
 मन फिर जाना  
 मन फिराना  
 मन फिसलना  
 मन फूलना  
 मन फेरना  
 मन बंटना  
 मन बंधना

मन बढ़ना  
 मन बढ़ाना  
 मन बल्लियों उछलना  
 मन बसना  
 मन बांधना  
 मन बिकना  
 मन बुझना  
 मन बैठना  
 मन भटकना  
 मन भर जाना  
 मन भर उठना  
 मन भर जाना  
 मन भाना  
 मन भीनना  
 मन भूलना  
 मन मथना  
 मन मरना  
 मन मसोस कर लाना  
 मन मसोस कर रह जाना  
 मन मार कर बैठना  
 मन मार कर रह जाना  
 मन मारना  
 मन मिट्टी होना  
 मन मिलना  
 मन मुंह को जाना  
 मन मुरझाना  
 मन मूसना  
 मन में आधी चलना  
 मन में आना  
 मन में उतारना

## चौरानवे

मन में कांटे की तरह खटकना  
 मन में गड़ना  
 मन में गांठ बैठना  
 मन में गांठ पड़ना  
 मन में घर करना  
 मन में चुभना  
 मन में थोर पालना  
 मन में चोर पैठना  
 मन में छुरी रखना  
 मन में जगह करना  
 मन में जगह बनाना  
 मन में जगह होना  
 मन में शोल करना  
 मन में तूफान उठना  
 मन में दरार पड़ना  
 मन में धंसना  
 मन में धरना  
 मन में पैठना  
 मन में फटकने न देना  
 मन में फूलना  
 मन में बसना  
 मन में बात उठना  
 मन में बैठना  
 मन में बैठाना  
 मन में मयानी चलना  
 मन में मरीर उठना  
 मन में मूड़ना  
 मन में मैल आना  
 मन में मैल करना  
 मन में मैल जमना

मन में मैल होना  
 मन में रखना  
 मन में रमना  
 मन में लाना  
 मन में शूल होना  
 मन में समाना  
 मन मोड़ना  
 मन रखना  
 मन रमना  
 मन रह जाना  
 मन लगाना  
 मन लगाना  
 मन लेना  
 मन लौटना  
 मन साधना  
 मन से जूझना  
 मन से देखना  
 मन से निकल जाना  
 मन से निकाल देना  
 मन से मूड़ना  
 मन से लड़ना  
 मन सोधना  
 मन हरना  
 मन हाथ में करना  
 मन हाथ में होना  
 मन हाथ से चला जाना  
 मन हाथों पर लिए रहना  
 मनसुबे बांधना  
 मनोरथ पुरवना



पंचानन

मरगु बनना  
 मरने की कुर्मत न होना  
 मरहम रखना  
 मरोड़ गहना  
 मर्म का भाला लगना  
 मर्म की चोट लगना  
 मर्म को छु लेना  
 मर्म लेना  
 मर्यादा के द्वार तोड़ना  
 मर्यादा थापना  
 मसिया पड़ना  
 मल धुलना  
 मलाले खाना  
 मवास करना  
 मस भोगना  
 मस भीजना  
 मस भीनना  
 मसा न भन्ताना  
 मसाला मिलना  
 मस्का पालिश करना  
 मस्का लगाना  
 मस्तक झाड़ना  
 महाजन का पेट भरना  
 महारानी घाना  
 मांइन में थापना  
 मांग से वारना  
 माटी होना  
 मात खा जाना  
 माथा खा जाना  
 मामला तूल पकड़ना

माया कटना  
 माया जोड़ना  
 माया लगना  
 मार खाना  
 मार लेना  
 मार से भूत भागना  
 मार होना  
 मार्ग खुलना  
 मार्ग देना  
 मार्ग पर लाना  
 मार्ग में खड़ा होना  
 मार्ग में बाधक होना  
 मार्ग में रोड़े बिछाना  
 मार्ग लगना  
 मार्ग लेना  
 माल उगलवा लेना  
 माल उठाना  
 माल कटना  
 माल चाभना  
 माल निगलना  
 माल मारना  
 माला चढ़ाया जाना  
 माला जपना  
 माला फेरना  
 मित्राद आसमान पर चढ़ना  
 मित्राद आसमान पर होना  
 मिट्टी उठना  
 मिट्टी कर देना  
 मिट्टी की तरह फेंकना  
 मिट्टी छूते मोना होना

छिपानवे

मिट्टी ठिकाने लगना  
 मिट्टी ठिकाने लगाना  
 मिट्टी धार लगाना  
 मिट्टी में मिल जाना  
 मिट्टी होना  
 मिट्टी पूजना  
 मिश्री पोखना  
 मुंह आना  
 मुंह उठाना  
 मुंह उतर जाना  
 मुंह ऐसा मुंह लेकर  
 मुंह करना  
 मुंह का आग उगलना  
 मुंह का कहे देना  
 मुंह का कौर छिन जाना  
 मुंह का कौर छीनना  
 मुंह का टांका टूटना  
 मुंह का पानी उतर जाना  
 मुंह की खाना  
 मुंह की बात छीन लेना  
 मुंह की रोटी छिन जाना  
 मुंह की लाली रखना  
 मुंह की लाली रह जाना  
 मुंह के भाव पड़ना  
 मुंह खिलना  
 मुंह खुलना  
 मुंह खुलवाना  
 मुंह खोलकर  
 मुंह खोलकर मांगना  
 मुंह खोलना

मुंह खोले बैठना  
 मुंह गिर जाना  
 मुंह बहाना  
 मुंह चलना  
 मुंह बलाना  
 मुंह चाहना  
 मुंह चिढ़ाना  
 मुंह चुराना  
 मुंह छिपाना  
 मुंह जोड़ना  
 मुंह झूलना  
 मुंह टूट जाना  
 मुंह डालना  
 मुंह ताकते रह जाना  
 मुंह ताकना  
 मुंह तोड़ देना  
 मुंह घामना  
 मुंह घुमाना  
 मुंह दर मुंह कहना  
 मुंह दिखाना  
 मुंह दिखाने लायक न छोड़ना  
 मुंह देखकर  
 मुंह देखकर भीना  
 मुंह देखकर बीड़ा देना  
 मुंह देखना  
 मुंह देखे का  
 मुंह देना  
 मुंह धी रखना  
 मुंह न खोल सकना  
 मुंह न दिखाना



संस्कृतशब्द

मुह न देखना  
 मुह न होना  
 मुह निकल जाना  
 मुह नीच लेना  
 मुह पकड़ना  
 मुह पर घाना  
 मुह पर कहना  
 मुह पर कालिख पोतना  
 मुह पर खड़ा होना  
 मुह पर चांटा लगना  
 मुह पर चूना पोतना  
 मुह पर भ्राष्ट्र किरना  
 मुह पर भ्राष्ट्र मारना  
 मुह पर तमाचा खाना  
 मुह पर तमाचा मारकर  
 मुह पर ताला पड़ना  
 मुह पर ताला डालना  
 मुह पर ताला पड़ना  
 मुह पर ताला लगना  
 मुह पर घण्टा खाना  
 मुह पर घूक देना  
 मुह पर फटकार बरसना  
 मुह पर बड़ाई करना  
 मुह पर मुहर लगना  
 मुह पर रखना  
 मुह पर रहना  
 मुह पर खाना  
 मुह पर स्पाही पुत जाना  
 मुह पर लग जाना  
 मुह पर हवाई उड़ना

मुह पर होना  
 मुह पाना  
 मुह पिटाना  
 मुह फाड़कर कहना  
 मुह फाड़ देना  
 मुह फाड़ना  
 मुह फिर-1  
 मुह फुलाकर बैठना  
 मुह फुलाना  
 मुह फूलना  
 मुह फेरना  
 मुह फैलाना  
 मुह बजाना  
 मुह बनना  
 मुह बगाना  
 मुह बाकर रह जाना  
 मुह बाना  
 मुह बापे होना  
 मुह बिगाड़ना  
 मुह बिचकाना  
 मुह मलना  
 मुह मारना  
 मुह मुरझाना  
 मुह मुंदना  
 मुह में उत्तर न जाना  
 मुह में काजल लगना  
 मुह में काजल लगाना  
 मुह में कालिख पुतना  
 मुह में कालिख पोतना  
 मुह में शाक पड़ना

अनठानवे

मुंह में बन्दन लगाना  
 मुंह में छार्द पड़ना  
 मुंह में छेद होना  
 मुंह में दही जमना  
 मुंह में दाँत न होना  
 मुंह में दाँत होना  
 मुंह में धूल डालना  
 मुंह में धूल पड़ना  
 मुंह में पानी भर घाना  
 मुंह में पानी भरना  
 मुंह में बल आना  
 मुंह में बात न घाना  
 मुंह में मक्खी जाना  
 मुंह में मुंह मिलाना  
 मुंह में लगाम रखना  
 मुंह में लगाम लगाना  
 मुंह में लगाम न होना  
 मुंह में लस न होना  
 मुंह में लाठी लगाना  
 मुंह मोड़ना  
 मुंह लगना  
 मुंह लगाना  
 मुंह लटक जाना  
 मुंह लटकाना  
 मुंह लपेट कर पड़ रहना  
 मुंह सम्हाल कर खोलना  
 मुंह सीना  
 मुंह मुजाना  
 मुंह मुखना  
 मुंह से अक्षर न फूटना

मुंह से घाह भी न निकलना  
 मुंह से खीनना  
 मुंह से घुआ निकालना  
 मुंह से निकल पड़ना  
 मुंह से निकालना  
 मुंह से प्याला लगा होना  
 मुंह से फूल भरना  
 मुंह से फूल बरसना  
 मुंह से बात खीनना  
 मुंह से बोली न घाना  
 मुंह से बोली निकलना  
 मुंह से बोली निकाल लेना  
 मुंह से लार टपकना  
 मुंह होना  
 मुहावाही होना  
 मुकदमा ठोकना  
 मुक्का चलाना  
 मुख कुम्हलाना  
 मुख भजन करना  
 मुख मुरझाना  
 मुजरा करना  
 मुजरा पाना  
 मुट्टी खुलना  
 मुट्टी खोलना  
 मुट्टी में घाना  
 मुट्टी में करना  
 मुट्टी रखना  
 मुट्टी रहना  
 मुठभेड़ होना  
 मुड़-मुड़ कर पछाड़ खाना



निम्नानव

मुरौवत का मुह मलना  
 मुदे जाग उठना  
 मुदे में जान भर देना  
 मुदे से बाजी लगाकर सोना  
 मुश्कें चढ़ाना  
 मुस्कान दौड़ जाना  
 मुहर लगाना  
 मुहर लगाना  
 मूछ उखड़ना  
 मूछ उखाड़ना  
 मूच एठना  
 मूछ के बाल बिन जाना  
 मूछ खड़ी होना  
 मूछ भिरना  
 मूछ जाना  
 मूछ टेना  
 मूछ तान कर  
 मूछ नोच लेना  
 मूछ पकड़ना  
 मूछ पट होना  
 मूछ फटकारना  
 मूछ मुड़ा डालना  
 मूछों की लाज रखना  
 मूछों पर ताव देना  
 मूड़ चढ़ना  
 मूड़ मारना  
 मूड़ मुड़ाना  
 मूड़ी हिलाना  
 मूठ चलाना  
 मूठ मारना

मूच्छा जागना  
 मूर्ति बन जाना  
 मूल गंवाना  
 मूल पूजना  
 मूसलों डोल पीटना  
 मूसलों डोल बजाना  
 मृत्यु के मुंह में पड़ना  
 मृत्यु बुलाना  
 मृत्यु सूच जाना  
 मृत्यु से खेलना  
 मेंढकी को जूकाम होना  
 मेंढ थापना  
 मेंला उठना  
 मेहनत की रोटी खाना  
 मेहमानी करना  
 मेंदान खाली करना  
 मेंदान छोड़कर भागना  
 मेंदान जाना  
 मेंदान पड़ा होना  
 मेंदान मारना  
 मेंदान में घाना  
 मेंदान में उतरना  
 मेंदान में कदम रखना  
 मेंदान हाथ से निकल जाना  
 मेंल रखना  
 मोची के मोची रह जाना  
 मोरचा धामना  
 मोरचा बनाना  
 मोरचा लेना  
 मोल न होना

सी

मोल लेना  
 मोह की धार में बहना  
 मोहिनी डालना  
 मोहिनी लाना  
 मौका हाथ पाना  
 मौज उड़ाना  
 मौत का शिकार होना  
 मौत का सिर पर खेलना  
 मौत का हाथ होना  
 मौत के घाट उतारना  
 मौत के मुंह में जाना  
 मौत के मुंह में फँकना  
 मौन रखना  
 मौन बांधना  
 यम का केश पकड़ना  
 यम का डंडा लगना  
 यम का फाँसी पड़ना  
 यम के मुंह से छुड़ाना  
 यश कमाना  
 यश गाना  
 यश पाना  
 यश में घबरा लगना  
 यश लेना  
 युवराज करना  
 रंग उड़ना  
 रंग उतरना  
 रंग करना  
 रंग खुलना  
 रंग चढ़ना  
 रंग चढ़ाना

रंग छोड़ना  
 रंग जमना  
 रंग जमाना  
 रंग जाना  
 रंग देखना  
 रंग न छोड़ना  
 रंग पकड़ना  
 रंग पर आना  
 रंग लाना  
 रंग बांधना  
 रंग बदलना  
 रंग बरसाना  
 रंग बरसाना  
 रंग बांधना  
 रंग बिगड़ना  
 रंग बिगाड़ना  
 रंग भरना  
 रंग में डरना  
 रंग में भंग पड़ना  
 रंग में रंग जाना  
 रंग में रलना  
 रंग रोचना  
 रंग लगना  
 रंग लाना  
 रंगरेलियाँ मचाना  
 रंगा स्यार  
 रंगीनी आना  
 रंगे हाथ  
 रकम उड़ाना  
 रकम खा जाना



## एक सी एक

रकम दब जाना  
 रकम दबा जाना  
 रकम पचा जाना  
 रकम मारना  
 रक्त की नदी बहना  
 रक्त की नदी बहाना  
 रक्त के आँसू रोना  
 रक्त में होना  
 रग पर नश्वर मारना  
 रग-रग पहचानना  
 रगड़कर चंदन करना  
 रंगों में बिजली दौड़ना  
 रण में रज रखना  
 रति जोड़ना  
 रहा चढ़ाना  
 रहा जमाना  
 रबदा पढ़ना  
 रस आना  
 रस बरसाना  
 रस भंग होना  
 रस में गीधना  
 रस में पगना  
 रस में सना  
 रस लूटना  
 रस लेना  
 रसातल को भेजना  
 रसोई तपना  
 राई-राई बनाना  
 राख करना  
 राख की चिनगारी चमकना

राख ढालना  
 राख में मिल जाना  
 राख खुलना  
 राख खोलना  
 राज्य उलट जाना  
 राज्य करना  
 रात आँखों में काटना  
 रात उतरना  
 रात ढलना  
 रात पढ़ना  
 रात भीगना  
 रात लगना  
 राम जाने  
 राम-राम करके  
 राम-राम करना  
 राम-राम होना  
 राय गाँठना  
 रार मोल लेना  
 रास्ता कट जाना  
 रास्ता खुलना  
 रास्ता खोलना  
 रास्ता छोड़ना  
 रास्ता दिखाई देना  
 रास्ता दिखाना  
 रास्ता देखना  
 रास्ता देना  
 रास्ता न छोड़ना  
 रास्ता नापना  
 रास्ता निकालना  
 रास्ता पकड़ना

एक सौ दो

रास्ता बताना  
 रास्ता बदलना  
 रास्ता बनाना  
 रास्ता बिगाड़ना  
 रास्ता भूलना  
 रास्ता रोकना  
 रास्ता लेना  
 रास्ता सोचना  
 रास्ते में धूल बटोरना  
 रास्ते पर घाना  
 रास्ते में आँख बिछाना  
 रास्ते में काँटे बोना  
 रास्ते में बबूल बोना  
 रास्ते में विघ्न खड़ा करना  
 रास्ते में रोड़ा अटकाना  
 रास्ते लगना  
 राह काटना  
 राह चलते  
 राह छेकना  
 राह ताक-ताक कर पक जाना  
 राह ताकना  
 राह देखते-देखते आँखें पक जाना  
 राह पर चलना  
 राह बचाना  
 राह लगना  
 राह लगाना  
 राह लाना  
 राह लेना  
 रोड़ टूटना  
 रोड़ तोड़ना

रख देखना  
 रख पाना  
 रख मोड़ना  
 रख मानना  
 रुपया उड़ाना  
 रुपया ऐँठना  
 रुपया जोड़ना  
 रुपया टूटना  
 रुपया डूबना  
 रुपया पटाना  
 रुपया पानी की तरह बहाना  
 रुपया मार लेना  
 रुपया मारा पड़ना  
 रुपये जगलना  
 रुपये बनाना  
 रुई में लपेटी घाग होना  
 रूप की दोपहरी खिलना  
 रूप की दोपहरी चढ़ना  
 रूप धरना  
 रूह फना होना  
 रेकार्ड टूटना  
 रेकार्ड तोड़ना  
 रेख खाँचना  
 रेख में मेख मारना  
 रेखा खींचना  
 रेखा न होना  
 रेत पर नाव चलाना  
 रेफ न आना  
 रोंगटे खड़े होना  
 रो-रो कर प्राण देना



एक सौ तीन

रोषां सड़ा होना  
 रोआं फूटना  
 रोआं न छू पाना  
 रोषां-रोषां कान होना  
 रोजा खोलना  
 रोजी लेना  
 रोजे से रहना  
 रोटियां चलना  
 रोटियां तोड़ना  
 रोटियां फाड़ना  
 रोटियां मिलना  
 रोटियों के लाले पड़ना  
 रोटी कमाना  
 रोटी चढ़ाना  
 रोड़ा घटकना  
 रोड़ा अटकाना  
 रोनेवाला न रह जाना  
 रोब गांठना  
 रोम खड़े होना  
 रोम-रोम चलना  
 रोम-रोम में रम रहना  
 रोमांच होना  
 रोशनी डालना  
 लंगरई करना  
 लंगोट कसना  
 लंगोटी लगाये घूमना  
 लकीर पीटना  
 लगती बात कहना  
 लगन लगना,—होना  
 लगाम कसना

लगाम खींचना  
 लगाम लगाना  
 लगी लिपटी कहना  
 लगे हाथ  
 लग्न धराना  
 लज्जा का आचमन करना  
 लज्जा के मारे मरे जाना  
 लज्जा धोल कर पी जाना  
 लज्जा टूटना  
 लज्जा धो डालना  
 लज्जा बेच खाना  
 लज्जा लुटना  
 लज्जा से गड़ जाना  
 लज्जा से पानी-पानी होना  
 लज्जा से मर जाना  
 लज्जा से मारी जाना  
 लटने पर लात चलना  
 लट्ट लिए फिरना  
 लड़कई करना  
 लड़खड़ाती बीभ  
 लड़्डू फूटना  
 लड़्डू बंटना  
 लताड़ पाना  
 लत्ता उड़ाना  
 लव हिलाना  
 ललाट में लिखा होना  
 लबलेस न होना  
 लहना पाना  
 लहर आना  
 लहर खाना

एक सौ चार

लहू की घूंट पीकर रह जाना  
 लहू का घूंट भर कर रह जाना  
 लहू मौसना  
 लहू गारना  
 लहू चूस लेना  
 लहू पिला-पिला कर पालना  
 लहू से हाथ रंगना  
 लहू होना  
 लाग लगना  
 लाज भोगी  
 लाजों डूबना-उतराना  
 लाजों मरना  
 लाठी में तेल लगाना  
 लाड़ लड़ाना  
 लात उठाना  
 लात की मारी रोटियां  
 लात देना  
 लात मारकर चला जाना  
 लात मारना  
 लात लगना  
 लात लगाना  
 लात सहना  
 लात भेजना  
 लार टपकना  
 लिफाफा बनाना  
 लीक खींची होना  
 लीक गाना  
 लीक पकड़कर चलना  
 लीक पर चलना  
 लीक पीटना

लीला करना  
 लुटिया हुबोना  
 लू खाना  
 लेखनी उठाना  
 लेखनी दोड़ाना  
 लेखा होना  
 लेखा मांगना  
 लेखे में होना  
 लोक की लीक छटना  
 लोन निकलना  
 लोरी देना  
 लोहा बजना  
 लोहा मानना  
 लोहा लेना  
 लोहे का सोना बनाना  
 लोहे की कील गाड़ना  
 लोहे के चने चबाना  
 लोहे से आग बरसना  
 लौ लगना  
 लौ लाना  
 लक्ष्मी भाड़ना  
 लचन न घाना  
 लचन न कड़ना  
 लचन न जाना  
 लचन न टरना  
 लचन में बंधना,—बोधना  
 लचन लगना  
 लपटा कर देना  
 लाण लगना  
 लाणी फूटना



एक सौ पांच

बार का घर करना  
 बारि पर भीत उठाना  
 बाहवाही छूटना  
 बिचारों को बिखेर देना  
 बिजगा छूटना  
 बिद्रोह का भंडा सड़ा करना  
 बिरास्ति का पहाड़ टूटना  
 बिपत्ति का बीज बोना  
 बिपत्ति की नींव देना  
 बिपत्ति के बादल फिर आना  
 बिपत्ति टूटना  
 बियोग में मरना,—मारना  
 बियोग में जलना,—जलाना  
 बिरद चलना  
 बिरह का दाग मेटना  
 बिरह का शूल मिटना  
 बिरह में जलना  
 बिहद बढ़ना  
 बिबेक की आंख फूटना  
 बिश्वास उठना  
 बिश्वास उपजना  
 बिश्वास जाना  
 बिश्वास में बिष घोलना  
 बिश्वास हिल उठना  
 बिष उगलना  
 बिष का धूँट पीना  
 बिष की बगारी बोना  
 बिष की पोट बांधना  
 बिष की बेल बोना  
 बिष की बुझाई होना

बिष घोलना  
 बिष चढ़ना  
 बिष पीना  
 बिष बोना  
 बिष भरा होना  
 बिष लगना  
 बिष वमन करना  
 बेश धारण करना  
 बंधव्य को भीत देना  
 व्यंग्य कसना  
 व्यंग्य भरना  
 व्याख्यान भाड़ना  
 घत ठानना  
 शत्रु का युद्ध में पीठ न देखना  
 शब्द पढ़ना  
 शब्दों के कोड़े लगना  
 शब्दों के कोड़े लगाना  
 शब्दों में बांधना  
 शर चढ़ना  
 शरण ताकना  
 शरण रखना  
 शरीर गलना  
 शरीर गिर जाना  
 शरीर धूला जाना  
 शरीर छूटना  
 शरीर छोड़ना  
 शरीर जलना  
 शरीर त्यागना  
 शरीर भर घाना  
 शरीर में आग लगना

एक सौ छ

शरीर में न समाना  
शरीर में बिजली दौड़ जाना  
शर्म भूल कर ला जाना  
शर्म से गड़ना  
शर्म से गर्दन टूटना  
शर्म से पानी-पानी होना  
शव की तरह जीना  
शास्त्र डाल देना  
सहृद लगाकर चाटना  
शाखा बढ़ाना  
शादी लगना  
शादी लगाना  
शान बढ़ाना  
शान मारना  
शान में बट्टा लगना  
शाबाशी लूटना  
शाम उतरना  
शिकंजे में कसना  
शिकायतों का दफ्तर खोल देना  
शिकार खेलना  
शिकार फंसना  
शिकार बनना  
शिकार हाथ से जाता रहना  
शिकार होना  
शिवर छूना  
शिगूफा छोड़ना  
शिष्वा जमना  
शिराजा बिखरना  
शीत मारना  
शीश नवाना

शीरो में उतारना  
शूल कटना  
शूल मिटना  
शूल सहना  
शूल होना  
शेखी किरकिरी होना  
शेखी बघारना  
शेखी मारना  
शेखी मारी जाना  
शेखी की मोद में घुसना  
शेर से पंजा लेना  
शौक चराना  
शमशान जमाना  
श्री गणेश करना  
संकट के बादल मंढराना  
संग डोलना  
संग लगना  
संग लगी डोलना  
संगीन बढ़ाना  
सदेह की हवा बहाना  
संपत्ति छाना  
संबन्ध टूटना  
संबन्ध तोड़ना  
संसार की हवा लगना  
संसार छलना  
संसार छोड़ना  
संसार तरना  
संसार में पदार्पण करना  
संसार से उठ जाना  
संसार से ऊपर उठना



एक भी बात

संसार से ऊपर होना  
 संसार से चले जाना  
 संसार से भाता टूटना  
 संसार से बिदा करना  
 संसार से बिदा होना  
 संस्था खोलना  
 सगाई आना  
 सड़क की धूल समेटना  
 सती होना  
 सत्त खो देना  
 सत्त बांधना  
 सनक सवार होना  
 सन्नाटा खींचना  
 सन्नाटे में आना  
 सन्यास लेना  
 सपना देखना  
 सपना हो जाना  
 सफाई कर देना  
 सफाई कराना  
 सफाई देना  
 समझ पर पत्थर पड़ना  
 समय आ जाना  
 समय का पलटा खाना  
 समय बहना  
 समय पड़ना  
 समा बांधना  
 समाई रखना  
 समाज जुड़ना  
 समाज साजना  
 समाधि छूटना

समाधि लगाना  
 समान देना  
 समुद्र उमड़ आना  
 समुद्र पर लीक डालना  
 सम्हल कर बोलना  
 सम्हल कर पैर रखना  
 सरकार की मेहमानी खाना  
 सलाम करना  
 सलामी बजाना  
 सवारी गांठना  
 सवालों की भड़ी लगा देना  
 समुराल की राई पहाड़ लगना  
 सहो भरना  
 सांव को आंव न होना  
 गांवे में डला होना  
 सांभ पड़ना  
 सांड की तरह घूमना  
 सांप के भाप खेलना  
 सांप को दूध पिलाना  
 सांप पालना  
 सांप सूँघ जाना  
 सांस उखड़ना  
 सांस गिनना  
 सांस बड़ना  
 सांस बलना  
 सांस छोड़ना  
 सांस जुड़ना  
 सांस टूट-टूट जाना  
 सांस तोड़ना  
 सांस न लेना

एक सौ साठ

सांस न होना  
सांस नहीं में बसना  
सांस निकलना  
सांस फूलना  
सांस भरना  
सांस रोक कर  
सांस लेना  
सांस लेने की जगह न होना  
सांस साधे होना  
साका चलना  
साका चलाना  
साख उठ जाना  
साख जाना  
साख जमना  
साख जमाना  
साख न रहना  
साख बंधना  
साख बांधना  
साख मिटना  
साखी बोलना  
साख सजाना  
साख लगना  
साथे से भागना  
साहस का साथ छूटना  
साहस टूटना  
सिंदूर लूटना  
सिंहनाद करना  
सिक्का जमाना  
सिक्का मनवाना  
सिक्का मानना

सितम डाना  
सितार का तार उतर जाना  
सितारा चमकना  
सितारा जोरों पर होना  
सितारा डूबना  
सिपाया चढ़ना  
सिपार बोलना  
सिर बाँधों पर होना  
सिर घाना  
सिर आसमान से लगना  
सिर उठाकर चलना  
सिर उठाना  
सिर उठाने की कुमंत न होना  
सिर उड़ाना  
सिर उतरना  
सिर उतारना  
सिर ऊँचा करना,—होना  
सिर ओढ़ लेना,—ओढ़ना  
सिर करना  
सिर कलम करना  
सिर का बोझ उतरना  
सिर कुचलना  
सिर कूटना  
सिर के बल होना  
सिर खपाना  
सिरखपी करना  
सिर खाना  
सिर मंजा करना  
सिर मंजा करवाना  
सिर मूँथना



## एक सो नौ

सिर घूमना  
 सिर चढ़कर बोलना  
 सिर चढ़ना  
 सिर चढ़ाना  
 सिर छिपाने का स्थान  
 सिर जमीन पर रखना,—होना  
 सिर जाना  
 सिर झुकना  
 सिर झुकाए  
 सिर झुकाकर मान लेना  
 सिर झुकाना  
 सिर ठोकना  
 सिर डालना  
 सिर तोड़ना  
 सिर देना  
 सिर धरना  
 सिर मानना  
 सिर धुनकर पख्ताना  
 सिर धुन-धुन कर  
 सिर धुनना  
 सिर न उठा सकना  
 सिर नवाना  
 सिर पकड़ कर बैठना  
 सिर पकड़ना  
 सिर पचाना  
 सिर पटकना  
 सिर पड़ना  
 सिर पर आ पड़ना  
 सिर पर आ पहुँचना  
 सिर पर घाफत आना

सिर पर आरा लेना  
 सिर पर आसमान उठा लेना  
 सिर पर उठा लेना  
 सिर पर कफन बांधना  
 सिर पर खड़ा होना  
 सिर पर खेलना  
 सिर पर गुजरना  
 सिर पर घड़ा फोड़ना  
 सिर पर चढ़कर नाचना  
 सिर पर चढ़ना  
 सिर पर चढ़ाना  
 सिर पर छाया होना  
 सिर पर जादू डालना  
 सिर पर जाना  
 सिर पर जूता बजना  
 सिर पर टूट पड़ना  
 सिर पर ठीकरा फोड़ना  
 सिर पर डालना  
 सिर पर घूम डालना  
 सिर पर धूल लगाना  
 सिर पर न होना  
 सिर पर नाचना  
 सिर पर पगड़ी बंधना  
 सिर पर पटिया पारना  
 सिर पर पड़ना  
 सिर पर पहाड़ सिर पड़ना  
 सिर पर पाँव देना  
 सिर पर पाँव रखकर भागना  
 सिर पर पैर रखना  
 सिर पर बला घाना

सिर पर बिजली गिरना १००० १० १०  
 सिर पर बिडाना १००० १० १०  
 सिर पर बीतना १००० १० १०  
 सिर पर बँडा होना १००० १० १०  
 सिर पर बोझ लेना १००० १० १०  
 सिर पर बोझ होना १००० १० १०  
 सिर पर भूत बढना १००० १० १०  
 सिर पर भूत सवार होना १००० १० १०  
 सिर पर भडकना १००० १० १०  
 सिर पर लेना १००० १० १०  
 सिर पर बल गिरना १००० १० १०  
 सिर पर सवार होना १००० १० १०  
 सिर पर सहना १००० १० १०  
 सिर पर साया होना १००० १० १०  
 सिर पर सुरक्षा का पर लगना १००० १० १०  
 सिर पर से छाया उठ जाना १००० १० १०  
 सिर पर सेहरा झाँपना १००० १० १०  
 सिर पर सेहरा होना १००० १० १०  
 सिर पर हाथ फेरना १००० १० १०  
 सिर पर हाथ रखकर रोना १००० १० १०  
 सिर पर हाथ रखना १००० १० १०  
 सिर पर होना १००० १० १०  
 सिर पीट-पीट कर रोना १००० १० १०  
 सिर पीट लेना १००० १० १०  
 सिर पीटना १००० १० १०  
 सिर फटना १००० १० १०  
 सिर फिरना १००० १० १०  
 सिर फोड़ना १००० १० १०  
 सिर डेचना १००० १० १०  
 सिर मड़ना १००० १० १०

सिर माँचे बढाना १००० १० १०  
 सिर मारना १००० १० १०  
 सिर मुड़ाते ओले पड़ना १००० १० १०  
 सिर रखना १००० १० १०  
 सिर रगड़ कर मट जाना १००० १० १०  
 सिर रगड़ना १००० १० १०  
 सिर लेना १००० १० १०  
 सिर सूचना १००० १० १०  
 सिर से खोलना १००० १० १०  
 सिर से बला टलना १००० १० १०  
 सिर से बला टालना १००० १० १०  
 सिर से बोझ डाल देना १००० १० १०  
 सिर से भूत उतरना १००० १० १०  
 सिर से लेकर पैर तक देखना १००० १० १०  
 सिर सौपना १००० १० १०  
 सिर हथेली पर लिए फिरना १००० १० १०  
 सिर हथेली पर लिए होना १००० १० १०  
 सिरकी तानना १००० १० १०  
 सींग समाना १००० १० १०  
 सीख धरना १००० १० १०  
 सीटी लगना १००० १० १०  
 सीना चाक करना १००० १० १०  
 सीना तानकर लड़े होना १००० १० १०  
 सीना तानकर चलना १००० १० १०  
 सीना घड़कना १००० १० १०  
 सीने पर मूँग दलना १००० १० १०  
 सीने पर साँप लोटना १००० १० १०  
 सीने में अंगार होना १००० १० १०  
 सीप में समुद्र उलीचना १००० १० १०  
 गुप्त का सपना हो जाना १००० १० १०



एक सौ ग्यारह

मुख की सौज उठ जाना  
मुख भरना  
मुख मानना  
मुतली में पोत पहनना  
मुनती उड़ती बात  
मुपश का टोका लेना  
मुर बदलना  
मुर भरना  
मुर में मुर मिलाना  
मुरसाब का पर लगना  
मुरत बंधना  
मुरमा धुलना  
मुराग पाना  
मुराग मिलना  
मुराग लगना  
मुराग लगाना  
मुहाग उजड़ना  
मुहाग खड़ा होना  
मुहाग लटन  
मूर्ई का पहाड़ होना  
मूखकर कांटा होना  
मूत की तरह तोड़ना  
मूतक लगना  
मूरज की तरह बढ़ना  
मूरज की तरह लहर आना  
मूरज को दीपक दिखाना  
मूरज चढ़ना  
मूरज झुकना  
मूरज डूबना  
मूरज पर घूल फेंकना

मूरज सिर पर चढ़ जाना  
मूरत घाँवों से न उतरना  
मूरत दिखाना  
मूरत निकलना  
मूखी पर चढ़ना  
सेध मारना  
सेध में बैठकर घूरना  
सेहरा बंधना  
सोच में भरना  
सोना उगलना  
सोना बरसना  
सोने का मूर्प उगना  
सोने के कोर खाना  
सौगंध टूटना  
सौदा पटना,—पटाना  
स्नेह जुड़ना  
स्नेह जोड़ना  
स्नेह तोड़ना  
स्नेह बंधना  
स्याही का टोका देना  
स्वप्न देखना  
स्वप्न हो जाना  
स्वर उठाना  
स्वर चढ़ना,—चढ़ाना  
स्वर टूटना  
स्वर भरना  
स्वर भीगना  
स्वर्ग जाना  
स्वांग करना  
स्वांग बनाना

एक सौ बारह

स्वांग भरना  
 स्वाद चखना  
 स्वाद चखाना  
 स्वार्थ में बंधे  
 स्वास्थ्य गिरना  
 हंस-हंस कर गले लगाना  
 हंसते-हंसते पेट में बल पड़ना  
 हंसाई होना  
 हंसी उछालना  
 हंसी उड़वाना  
 हंसी उड़ाना  
 हंसी कराना  
 हंसी का काम करना  
 हंसी का फौजदारा छूटना  
 हंसी खेलना  
 हंसी में उड़ा देना  
 हंसी करना  
 हंसी होना  
 हजम करके डकार तक न लेना  
 हजम करना  
 हजूर में हाजिर होना  
 हटक न मानना  
 हठ पड़ना  
 हठ मोड़ना  
 हड्डियां चलना  
 हड्डियां लोहे की होना  
 हड्डी पसली तोड़ना  
 हत्या करना  
 हत्या के घाट उतारना  
 हत्या लगना

हत्या होना  
 हथियार ढालना  
 हथेली पर जान रखना  
 हथेली पर जान लेना  
 हथेली पर सिर रखना  
 हथेली पर सिर लिये रहना  
 हथेली में आना  
 हथेली में होना  
 हरताल फिर जाना  
 हल पकड़ना  
 हलकापन दिखाना  
 हलकापन होना  
 हलफ उठाना  
 हुनाल का टुकड़ा खाना  
 हल्ला बोलना  
 हवा उलझना  
 हवा कर देना  
 हवा करना  
 हवा का रुख देना  
 हवा के घोड़े पर सवार होना  
 हवा खाना  
 हवा खिलाना  
 हवा चलना  
 हवा डोलना  
 हवा तक न छूना  
 हवा देख पाल तानना  
 हवा देख पीठ देना  
 हवा देना  
 हवा न लगना  
 हवा न लगने देना



## एक सी तरह

हवा फिर जाना  
 हवा फैलना  
 हवा बहना  
 हवा बांधना  
 हवा बताना  
 हवा बदल जाना  
 हवा बांधना  
 हवा बिगाड़ना  
 हवा बिगाड़ना  
 हवा मिलना  
 हवा में उड़ा देना  
 हवा में गिरह बांधना  
 हवा में मरना  
 हवा में महल बनाना  
 हवा लगना  
 हवा से बचना  
 हवा से बातें करना  
 हवा में होना  
 हवाइयां उड़ना  
 हवालेत की हवा खाना  
 हस्ती मिटाना  
 हाक मारना  
 हाक लगाना  
 हामी भरना  
 हाजरी देना  
 हाट चढ़ना  
 हाथ घाना  
 हाथ उठाकर कहना  
 हाथ उठाना  
 हाथ कट जाना

हाथ कटा देना  
 हाथ करना  
 हाथ की मक्खी न उड़ाना  
 हाथ के तोते उड़ जाना  
 हाथ खींचना  
 हाथ खुलना  
 हाथ खून से रंगा होना  
 हाथ पर चढ़ना  
 हाथ चलना  
 हाथ चलाना  
 हाथ चूमना  
 हाथ छोड़ना  
 हाथ जोड़ना  
 हाथ जोड़े  
 हाथ जोड़े रहना  
 हाथ भाड़कर खड़ा होना  
 हाथ भाड़कर चल देना  
 हाथ भाड़ते  
 हाथ डालना  
 हाथ घामना  
 हाथ दबाकर  
 हाथ दिखाना  
 हाथ देना  
 हाथ धो बैठना  
 हाथ धोना  
 हाथ न सूझना  
 हाथ न होना  
 हाथ नाड़ी पर होना  
 हाथ पकड़ना  
 हाथ पकड़ाना

## हाथों की शक्ति

हाथ पढ़ना  
 हाथ पर लिख रहना  
 हाथ पर हाथ धरे बैठना  
 हाथ पसारना  
 हाथ पसारे जाना  
 हाथ पसारे न सुझना  
 हाथ फेंकना  
 हाथ फेरना  
 हाथ फैलाना  
 हाथ बटना,—बाँटना  
 हाथ बंध जाना  
 हाथ बंधाना  
 हाथ बटोरना  
 हाथ बड़ाना  
 हाथ बांधकर  
 हाथ बांधकर खड़ा रहना  
 हाथ बांधकर लम्बे करना  
 हाथ बांधना  
 हाथ बांधा जाना  
 हाथ बांध बैठना  
 हाथ बैठना  
 हाथ भरा होना  
 हाथ भरोड़ना  
 हाथ मलकर पछुताना  
 हाथ मल कर रद्द जाना  
 हाथ मल-मलकर भरना  
 हाथ मलना  
 हाथ मारना  
 हाथ मिलाना  
 हाथ में धारना

हाथ में करना  
 हाथ में लुबकी होना  
 हाथ में भंडा लेना  
 हाथ में नकेल रखना  
 हाथ में पड़ना  
 हाथ में बागदोर होना  
 हाथ में मेंहरी लगना  
 हाथ में रखना  
 हाथ में रहना  
 हाथ में लेना  
 हाथ में हाथ देना,—लेना  
 हाथ में होना  
 हाथ रखना  
 हाथ रह जाना  
 हाथ रहना  
 हाथ रुकना  
 हाथ रोचना  
 हाथ रोना  
 हाथ लगना  
 हाथ लगाना  
 हाथ लगवाना  
 हाथ निर से लगाना  
 हाथ से खी जाना  
 हाथ से खला जाना  
 हाथ से छटना  
 हाथ से जाता रहना  
 हाथ से जले देना  
 हाथ से देना  
 हाथ से न छुना  
 हाथ से निकल जाना



## एक ही पन्ना

हाथ से हाथ न मुझना  
 हाथ दिलाते चलना  
 हाथों की फेरी  
 हाथों पर उठा लेना  
 हाथों बिक जाना  
 हाथों नीच देना  
 हाथों हारना  
 हाथी भरना  
 हाथ हाथ पट्टी रहना  
 हार जाना  
 हाथत बिगड़ना  
 हिचकी लगना  
 हिम्मत का जवाब देना  
 हिम्मत खूटना  
 हिम्मत टूटना  
 हिम्मत बोलना  
 हिप की तपन मिटना  
 हिप की तपन मिटाना  
 हिप में घेरना  
 हिप में गमना  
 हिप हारना  
 हिप्पा मिराना  
 हिप्पा पड़ना  
 हिप्पे की धाँक खुलना  
 हिरण्य हो जाना  
 हिलकी बंधना  
 हिस्सा कर देना  
 हीरे की कमी खाटना  
 हुन बरसना  
 हुनर बनना

हुनिया टाईट होना  
 हु न रह जाना  
 हुक उठना  
 हुटा देना  
 हुदय उड़ान पड़ना  
 हुदय उमड़ जाना  
 हुदय काँपना  
 हुदय का कोटा निगलना  
 हुदय का पीट खाना  
 हुदय की कली खिल जाना  
 हुदय की गोंठ खोलना  
 हुदय कुंभलना  
 हुदय कुँदना  
 हुदय कूटना  
 हुदय के टुकड़े-टुकड़े होना  
 हुदय की छुना  
 हुदय मथना  
 हुदय लूटना  
 हुदय लो देना  
 हुदय ललना  
 हुदय लटकना  
 हुदय लुगना  
 हुदय खोद हासना  
 हुदय जलना  
 हुदय जुलाना  
 हुदय टुक-टुक होना  
 हुदय डगमगाना  
 हुदय हाँसाहोल होना  
 हुदय तक पहुँचना  
 हुदय थामकर

## एक सौ सोलह

हृदय दे देना  
 हृदय धड़कना  
 हृदय नाच उठना  
 हृदय निकाल कर रख देना  
 हृदय निकाल लेना  
 हृदय पत्थर होना  
 हृदय पर चोट लगना  
 हृदय पर छनका लगना  
 हृदय पर साँप लोटना  
 हृदय पर हाव रख कर  
 हृदय पसीजना  
 हृदय पिघलना  
 हृदय फटना  
 हृदय बल्लियों उछलना  
 हृदय बिंधना  
 हृदय बिलगाना  
 हृदय बिलोना  
 हृदय बैठना  
 हृदय बोरा होना  
 हृदय भीगना  
 हृदय में आग लगना  
 हृदय में आग लगाना  
 हृदय में काँटा खटकना  
 हृदय में खटकना  
 हृदय में गड़ना  
 हृदय में धर करना  
 हृदय में झुम जाना  
 हृदय में दरार पड़ना  
 हृदय में न जाना  
 हृदय में समाना

हृदय में नभक लगना  
 हृदय में फफोले पड़ना  
 हृदय में बसना  
 हृदय में बसेरा करना  
 हृदय में रमना  
 हृदय में झूल उठना  
 हृदय में समाना  
 हृदय में हलचल होना  
 हृदय में हक उठना  
 हृदय में होली लगना  
 हृदय में रोना  
 हृदय में लगना  
 हृदय में लगाना  
 हृदय बख सा होना  
 हृदय में बोझ हटना  
 हृदय से लगाना  
 हृदय हर लेना  
 हृदय हिलना  
 हृदय हिलाना  
 हृदय उतारना  
 हृदय लाना  
 हृदय देना  
 हृदय काटना  
 हृदय खुलना  
 हृदय चबाकर  
 हृदय पर आना  
 हृदय फड़कना  
 हृदय बिलकना  
 हृदय मलना  
 हृदय में नहना



### एक मो सभह

हीठों में मुस्कराना  
होनी कहना  
होम कर देना  
होम करते हाथ जलना  
होली करना  
होश उड़ जाना

होश ठिकाने लगना  
होश फाँला होना  
होम मिटना  
होमला छूटना  
होमला बांधना



### संज्ञा-युक्त मुहावरे

अंधे की लकड़ी  
अंधे की लाठी  
अंधेरा होना  
अक्ल का दुश्मन  
अक्ल का पुतला  
अक्ल की दौड़  
अक्षर-अक्षर  
अदालत का कीड़ा  
अदृश्य का हाथ होना  
अपनी गली का शेर होना  
अपनी जेब का  
अपने मन का  
अपने रंग का राजा  
अपने हाथों  
अपवश का टीका  
अमृत होना  
आँख का काँटा  
आँख का तारा

आँख का पानी  
आँख की ओट  
आँख की कमी  
आँख की किरकिरी  
आँख की पुतली  
आँख के अंधे  
आँख से  
आँख होना  
आँखवाला  
आँखों का उजाला  
आँखों का मोती  
आँखों में  
आँखों में मोती होना  
आँसू का कतरा  
आग  
आह में  
आह होना  
आव होना

## एक सी जठारह

जाशा की रेख न होना  
 आसमान तक के घरमान  
 घास्तीन का सांप  
 इशारों का गुलाम  
 ईंट का जवाब पत्थर से  
 ईद का चांद होना  
 उपदेश की खराई  
 उल्लू  
 ऊंट के मुंह में जीरा होना  
 ऊपरवाला  
 ऊसर की खेती होना  
 ँठ  
 ओट में  
 कंटक होना  
 कंठ होना  
 कचहरी के कुत्ते  
 कच्चाई  
 कपट की खान होना  
 करम का लेख  
 करम की रेख  
 कलंक का टीका  
 कल की बात होना  
 कलम का मजदूर  
 कलम की नोक  
 कलम में जादू होना  
 कलम में जोर होना  
 कलेजा होना  
 कलेजे का टुकड़ा  
 कशमकश होना  
 कसौटी होना

कांच की भट्ठी होना  
 कांटा होना  
 कांटों की राह  
 कांटों की सेज  
 कांव-कांव  
 कागज का पुलसा  
 कागज की नाव  
 काजल की कोठरी  
 काजी होना  
 काठ का उल्लू  
 काठ का कलेजा  
 काठ की हांडी  
 काठ सी बात  
 कान का बहरापन  
 कान होना  
 कानाकानी होना  
 कास का खजाना  
 काल का गाल  
 काल का चबेना  
 काल का पाश  
 काल होना  
 किताब के कीड़े  
 किनारे का तूण  
 किनारे का पेड़  
 कीचड़ होना  
 कीड़ा होना  
 कुंजी होना  
 कुएं का मेवक  
 कुठारी होना  
 कुदांव



## एक सौ उन्नीस

कुल का दीपक  
कुल का लाल  
कुल की नाक होना  
कुल में रोनेवाला होना  
केसर की ब्यारी  
कोख की आंच  
कोड़ की साज  
कोने-कोने से  
कोल्हू का बेल  
कोसों  
कौड़ियों के लिए  
क्षण भर में  
खटराम  
खतरे की घंटी  
खाई होना  
खाक  
खान होना  
खाला जी का घर  
खुदा की मार  
खून की कमाई  
खेत का धोखा होना  
खेल होना  
खोपड़ी  
खाब की दुनिया  
गंध होना  
गऊ होना  
गठरी  
गति होना  
गधा होना  
गरदन पर

गरमागरमी  
गरमी से  
गरमी होना  
गरीब की बीबी होना  
गरीब होना  
गला घोटनेवाला  
गली-गली  
गले का डोल  
गले का हार  
गले की फांसी होना  
गले पर जुआ  
गलेबाजी  
गांठ का  
गांठ में पैसा होना  
गांठ से  
गांस की फांस  
गिनती न होना  
गिरह का  
गिरह में दम होना  
गोदड़ होना  
गुण की खान  
गुण के धाम  
गुरु होना  
गुर्दा होना  
गुलाब का फूल होना  
गुलाम होना  
गूंगा होना  
गूमे का गुड़ होना  
गूमे की बाणी  
गृहस्थी का बरखा

## एक सी बीस

गृहस्थी की चक्की  
 रोड का  
 गोली का टप्पा  
 घर  
 घर का भादमी  
 घर का मेरी  
 घर की चांदनी  
 घर की पुत्री  
 घर की सुर्ग होना  
 घर की लक्ष्मी होना  
 घर-घर  
 घर-घर का भौरा  
 घर-घर मिट्टी का चूल्हा होना  
 घर में  
 घर में दिया जलानेवाला  
 घरवाली  
 घाघ होना  
 घास होना  
 पी की मक्खी होना  
 पोंपा होना  
 चंदू खाने की गण  
 चकाटू का जाल होना  
 चरणों का दास होना  
 चरणों की धूलि होना  
 चांद का टुकड़ा  
 चांदी के टुकड़े  
 चांदी होना  
 चाकर होना  
 चार सी बीस  
 चाहनेवाला

चाह का रंग  
 चाँदी की चाल  
 चूटकियों में  
 बेरी होना  
 बीब होना  
 बोटी का होना  
 बोटी की बात  
 बीषापन  
 छतीसो होना  
 छाती का कांटा  
 छाती का बोझ  
 छुईमुई  
 छूट होना  
 छोटापन  
 जंगली होना  
 जग में लीक होना  
 जगह जगह  
 जगह होना  
 जड़ पेड़ से  
 जड़ से  
 जड़ होना  
 जनम-जनम की  
 जवान की सफाई  
 जवान का शेर  
 जवान होना  
 जमाने की मार  
 जबाब होना  
 जहाज का काग  
 जहाज का पक्षी  
 जाँघ का भरोसा



एक मो इक्कीस

बांध की कमाई  
 जादू होना  
 जान का ग्राहक होना  
 जान होना  
 जानकार होना  
 जिंदगी होना  
 जिंदादिली के पृतले  
 जी का ग्राहक  
 जो का अवाक  
 जी की धान  
 जी की गांठ  
 जी की जलन  
 जी जान से  
 जीबट के होना  
 जीवन की संध्या होना  
 जूतियों से तुफ़ल से  
 जूतियों के कारण  
 जेब  
 जैसे से तैसा होना  
 झुटपुटा होना  
 भोंक में  
 टका सा जवाब  
 टके का होना  
 टट्टी की झाड़  
 टट्टी की ओट होना  
 टाट पर रेशम की सिलाई  
 टीका होना  
 टीमटाम  
 टूट होना  
 टेंट से

टेसू होना  
 ठंडक  
 ठसका होना  
 ठीकेदार होना  
 ठौर  
 ठंके की चोट  
 ठंड़े के ओर से  
 ठंड़े के गिर से  
 हाल-हाल पाल-पाल  
 डेरा होना  
 डोल होना  
 डाल होना  
 डोल की पोख  
 तनातनी होना  
 तम हरने वाला  
 तरी होना  
 तलवार उठानेवाला  
 तलवार का घनी  
 तलवार की धार होना  
 तबा सा मूंह होना  
 सहसोल का चपरासी होना  
 तितली होना  
 तिनका सा  
 तिरिया चरित्तर होना  
 तिल-तिल  
 तिल-तिल कर  
 तिल-तिल पर  
 तिलक होना  
 तीर की तरह  
 तीसमार खा होना

## एक सौ बाईस

तेली का बेल होना  
 पैली  
 दबदबा होना  
 दम के दम  
 दम न होना  
 दम होना  
 दर-दर की होना  
 दरवाजे दरवाजे  
 दलदल होना  
 दवा होना  
 दांत होना  
 दाना  
 दास के दास होना  
 दाढ़ होना  
 दिन रात  
 दिनों का फेर  
 दिमाग की आंधी  
 दिल का कांटा  
 दिल का गुबार  
 दिल का घाव  
 दिल का परवर होना  
 दिल की घाग  
 दिल की गांठ,—गिरह  
 दिल के कफोले  
 दिल तोड़नेवाली बात  
 दिल में चोर होना  
 दिल में दर्द होना  
 दिल से  
 दीवार होना  
 दुख की घान होना

दुल की घटा  
 दुनियादारी  
 दुम होना  
 दुहाई होना  
 दूध की मक्खो  
 दोड़ होना  
 द्रौपदी का चोर  
 द्वार होना  
 धड़ाके से  
 धन्ना सेठ होना  
 धर्म का टीका होना  
 धर्म का मार्ग  
 धाक होना  
 धुएं का हाथी होना  
 धोखे का पुतला  
 धोखे की टट्टी  
 धोबी का कुत्ता  
 ध्वजा होना  
 नचानेवाला  
 नयन की कोर  
 नरक का कुंड़  
 नरक होना  
 नबाब के नाती  
 नसतस में  
 नसीब का खेल  
 नाक की सीध में  
 नाक के  
 नाक के बाल होना  
 नाक में नकेल न होना  
 नाक होना



एक सौ तेईस

नानी का घर  
 नाम की व्यास  
 नाम के  
 नाम के लिए  
 नाम न होना  
 नाम पर धब्बा होना  
 नाम भी नहीं  
 नारद होना  
 नारदी विद्या  
 निगाह से  
 निगाह होना  
 निधि होना  
 नील का खेत  
 नूर का तड़का  
 पंच की भीख  
 पग-पग  
 पग-पग पर  
 पद-पद पर  
 पट्टीदार होना  
 पट्टिया के ताऊ होना  
 पत्ता-पत्ता  
 पत्थर का कलेजा  
 पत्थर की लकीर  
 परदा होना  
 पलक की ओट  
 पलकबाजी  
 पशु होना  
 पसीने की कमाई  
 पसीने की रोटी  
 पसीने की वस्तु

पहाड़ सा  
 पहुंच होना  
 पागल होना  
 पात-पात  
 पानी का बुलबुला  
 पानी के मोल  
 पानी देनेवाला  
 पानी में नमक होना  
 पानी होना  
 पाप की गठरी  
 पाये का आदमी होना  
 पालसन का डब्बा  
 पिट्ट होना  
 पीठ की रीढ़ होना  
 पुतला होना  
 पुतली का तारा  
 पेट का  
 पेट का उपाय  
 पेट का चक्कर  
 पेट का कुत्ता  
 पेट का गुलाम  
 पेट का डर  
 पेट का धंधा  
 पेट का भूत  
 पेट की घाग  
 पेट की कठिनाई  
 पेट की चिंता  
 पेट की ज्वाला  
 पेट की बात  
 पेट के लिए

## एक सौ चौबीस

पेट में  
पेट में कसा होना  
पेटवाली  
पेट होना  
पैर की जंजीर  
पैर की जूती  
पैर की बेड़ी  
पैर में शनीचर होना  
पैसे का राज्य होना  
पैसे की गर्मी होना  
पोषी के बैठन  
पोर-पोर में  
प्राण के ग्राहक  
प्राण होना  
प्राणों की पुतली  
प्राणों की हंसी  
प्राणों के प्राण  
प्रेम की चोट  
फक्कड़ होना  
फरफंद  
फांसो होना  
फूल सा  
फेरबट  
बकरी होना  
बच्चे-बच्चे की जवान पर  
बच्चों का खेल  
बछिया के ताऊ होना  
बटाऊ होना  
बतौला  
बन का कुआ होना

बम भोलानाथ होना  
बला से  
बलि का बकरा  
बवंडर का तिनका होना  
बहाऊ होना  
बांह के सहारे  
बांह होना  
बात का बतगड़ होना  
बात की बात में  
बात की बात में होना  
बात की हवा  
बात-बात में  
बारीकी से  
बालू का परौदा  
बालू की भीत  
बाबले की बड़  
बीच की दीवार होना  
बीच के ग्राहमी  
बुढ़ापे की लकड़ी  
बुढ़ापे की साठी  
बू होना  
बूझ की दृष्टि  
बेल होना  
बोलबाला रहना,—होना  
ब्योत होना  
ब्रह्मा की शाम होना  
भंवर की भाव  
भट्ठी सा होता  
भाग्य की लकीर  
भाड़े का टट्टू होना



एक सौ अचीस

भूख होना  
भूत का डेरा  
भूत की मिठाई  
भूर का लड्डू  
भूसे की भीत होता  
भेड़िया होना  
भोर का तारा  
भौह में बल होना  
मंगलामुखी  
मन का प्रथकार  
मन का आदना होना  
मन का चोर  
मन का मेल  
मन का शूल  
मन की आंख  
मन की दौड़  
मन की सफाई  
मन में चोर होना  
मन सोना होना  
मसकत की कमाई  
मसाला होना  
मस्तिष्क की खुराक  
माई का लाल  
मार होना  
मार्ग  
मार्ग का दीपक  
मिट्टी  
मिट्टी का पुतला  
मिट्टी के माधो  
मिट्टी के लोंदा

मिट्टी के मोल  
मिट्टी का शेर  
मियाँमिट्टू  
मुंह का कोर होना  
मुंह पर  
मुंह में भी धक्कर होना  
मुंह लायक बीड़ा होना  
मुक्ति का द्वार  
मूर्दा होना  
मुलायमियत से  
मुसीबतों का पहाड़  
मुसीबतों की टोकरी  
मूल्य होना  
मृत्यु का मुंह  
मेल होना  
मोम का पुतला  
मोम की गुड़िया  
मोम की नाक  
मोम होना  
भ्याऊ का ठोर  
यम का पाश  
यश का टीका  
रंग होना  
रस्ती-रस्ती  
रस की बातें  
रस से  
रहट की परिया  
रांड का चरखा  
राखस होना  
राख की चिनगारी होना

## एक ही दुम्बीग

राजनीति का कीड़ा  
 रात की रात  
 राम का नाम  
 रास्ते का काँटा  
 रास्ते का रोड़ा  
 रुपये की गर्मी होना  
 रुपये के दोस्त होना  
 रूपचंद  
 रेखा  
 रोआ-रोआ काग होना  
 रोटी का चोर  
 रोटी का प्रह।  
 रोम-रोम में  
 लकड़ी होना  
 लकीर के फकीर  
 सपाव होना  
 लट्ठ होना  
 सलाट की रेखा  
 साग की आग  
 साड़ी के जोर से  
 सात के घादमी  
 सात के बैलगा  
 सात के भूत  
 सीढ़े का चना होना  
 विधि का लिखा  
 विधि का लेख  
 विपत्ति का सागर  
 विपत्ति की घाँधी  
 विपत्ति की घानी  
 विपत्ति के कपड़े

विपत्ति के बादल  
 विरह का घाव  
 विरह की घाँध  
 विरह की काली  
 विरह की चिनगारी  
 विरह की लपट  
 विरोध की आग  
 विष की गाँठ  
 विष के दाँत  
 विष होना  
 विषाद की गाँठ  
 घेर होना  
 सैतान की आँत  
 सैतान की फटकार  
 सैमीन के बल पर  
 सपना सा होना  
 सपने की बात  
 सपने की राजधानी  
 सपने की सम्पत्ति  
 सपने में भी नहीं  
 सफाई से  
 सम्पत्ता की सीढ़ी  
 समय का फेर  
 समय की हवा  
 समय होना  
 सरदार होना  
 महारों की लकड़ी  
 साँसत का छक्का  
 साँसे की खेता  
 सिर



## एक सौ पचाहवन

गिर की कसम  
 गिर की बला  
 गिर के बल  
 गिर से पैर तक  
 गिरे का  
 सीमा होना  
 मुख की खान होना  
 मुग्ध का सेमल होना  
 मुनमुन  
 मुबह का दीपक  
 मुर्खी होना  
 सैत का  
 सेमर का मुआ होना  
 सोंठ होना  
 सोने का संसार  
 सोने का होना  
 सोने की पड़ी  
 सोने की चिड़िया  
 सोने की मूर्ति  
 सोने के दिन  
 सोने के मोल  
 सोने में सुगन्ध होना  
 सोने में मुहाना होना  
 स्वप्न  
 स्वप्न में भी नहीं  
 स्वप्नों का रस  
 स्वर्ग होना  
 स्वार्थ का जवाड़ा होना  
 स्वार्थ के प्राहक

हूँसी की रेखा  
 हुयेसी का घोबला  
 हाथ का ज़ावला  
 हाथ का  
 हाथ का काम  
 हाथ का खिलौना  
 हाथ का पासा  
 हाथ का खेल  
 हाथ की सफाई  
 हाथ भर का कलेजा  
 हाथ में  
 हाथ से  
 हाथ होना  
 हाथिल की सक्की  
 हीरा होना  
 हर की बचखी  
 हृदय का घाव  
 हृदय का टुकड़ा  
 हृदय का दाह  
 हृदय का धनी  
 हृदय का गुल  
 हृदय का हार  
 हृदय की भाँव  
 हृदय की खटक  
 हृदय की गाँठ  
 हृदय की भूल  
 हृदय में स्थान होना  
 होधा होना

एक सौ जठ्ठादस

विशेषण, संज्ञा एवं क्रिया युक्त मुहावरें

अंग-अंग डीला होना  
 अंग-अंग फूले न समाना  
 अंग-अंग शिथिल होना  
 अंतिम घड़ियां गिनना  
 अंतिम सांस गिनना  
 अंदर-अंदर कड़ाही में गुड़ पगना  
 अंधे कुए की ओर दौड़ना  
 अंधे के हाथ बटेर लगना  
 अंधेरे कुआं में पड़ना  
 अकंटक राज्य करना  
 अकेले चने का भाड़ फोड़ना  
 अच्छे पर बयाना देना  
 अपना उल्लू सीधा करना  
 अफवाह गर्म होना  
 अस्साह को प्यारा होना  
 आंस ऊंची न होना  
 आंस ऊंची रखना  
 आंस ऊंची होना  
 आंस टेढ़ी करना  
 आंस ठंडी करना,—होना  
 आंस तृप्त करना,—होना  
 आंस नीची करना  
 आंस बंद करके  
 आंस बंद होना  
 आंस बराबर करना  
 आंस भर देखना  
 आंस मेली करना,—होना  
 आंस माल करना,—होना

आंस सीधी करना  
 आंस लुली रखना  
 आंस गीली होना  
 आंस गोल होना  
 आंस चार करना,—होना  
 आंस ठंकी रखना  
 आंस फटी रह जाना  
 आंस बंद करना,—होना  
 आंस बंद करके चलना  
 आंसों से सब कुछ पढ़ लेना  
 आगिरी दम पर होना  
 आग ठंडी पड़ना  
 आटे में नमक बराबर होना  
 आठ-आठ आंसू रलाना  
 आठ-आठ आंसू रोना  
 आड़े समय काम आना  
 आड़े हाथों लेना  
 आधी बात कहना  
 आवाज ऊँचे चढ़ाना  
 आवाज भारी होना  
 आशा हरी होना  
 उत्साह ठंडा पड़ना  
 उत्साह डीला होना  
 उल्टा पाठ पढ़ाना  
 उल्टी आँतें गले पड़ना  
 उल्टी राह पकड़ना  
 उल्टे छुरे से मूँडना  
 उल्टे पांव भागना



## एक सौ उन्तीस

उल्टे पैर चले जाना  
 उल्टे पैर लौटना  
 उल्टे मुंह गिरना  
 उल्टे हाथों लेना  
 उल्लू सीधा करना  
 ऊँचा पद पाना  
 ऊँची-ऊँची उड़ान भरना  
 ऊँची जगह पाना  
 ऊँची तान लेना  
 ऊँची हवा में होना  
 ऊँचे खाले पैर पड़ना  
 ऊर्ध्व सांस घोंटना  
 एक आँख देखना  
 एक आँख न भाना  
 एक आँख से देखना  
 एक-एक कौड़ी दांत से पकड़ना  
 एक-एक दिन पहाड़ सा लगना  
 एक-एक नस हिला देना  
 एक-एक पल भारी होना  
 एक-एक बाल चुन जाना  
 एक खून होना  
 एक घाट पर पानी पीना  
 एक द्वार के तोड़े होना  
 एक डोरे में बंधना  
 एक तिनका भी न लगाना  
 एक थाली में खाना  
 एक दूसरे का हाथ पकड़ना  
 एक धागे में पिरोना  
 एक पंख में बठना  
 एक पंख दो काज होना

एक पत्ती तक न तोड़ना  
 एक पल कल्प के समान लगना  
 एक फूक में उड़ा देना  
 एक मुंह से कहना  
 एक रंग में रंगना  
 एक रोम टेढ़ा न कर सकना  
 एक लाठी से सब को हांकना  
 एक स्वर में बोलना  
 एक हाथ से ताली न बजना  
 एक ही दाम बिकना  
 एक ही नाव पर सवार होना  
 एड़ी चोटी का पसीना एक करना  
 ओछी नजर से देखना  
 ओछे घर में धन आना  
 औंधे मुंह गिरना  
 औषट पाट उतरना  
 कच्चा चिट्ठा कहना  
 कच्चा चिट्ठा खोलना  
 कच्ची गोली खेलना  
 कच्चे घड़े की पीना  
 कच्चे मूत सा तोड़ देना  
 कड़वा घूंट पीना  
 कड़ा हाथ रखना  
 कड़ी आँख देखना  
 कड़ी नजर से देखना  
 कड़ी बात कहना  
 कड़े मुहरे पाना  
 कमर सीधी करना,—होना  
 करतब उल्टे होना  
 कलम पंम होना

एक सौ तीस

कलेजा कड़ा करना  
कलेजा छोटा करना  
कलेजा ठंडा करना  
कलेजा ठंडा होना  
कलेजा दूना होना  
कलेजा पुदीना के पत्ता बराबर होना  
कागज काले करना  
कागजी घोड़े दौड़ाना  
कान गरम करना  
कान भी न हिला सकना  
काम तमाम करना  
काम तमाम होना  
काम पूरा होना  
काम सिद्ध होना  
काला मुंह करना  
किनारा साफ नज़र घाना  
किस गिनती में होना  
किस घाट लगना  
किस बात में होना  
किन्ती के कहे अनुसार उठना या बैठना  
किसी के बाप का इजारा होना  
कुएं का प्यासे के पास जाना  
केसरिया बाना पहनना  
कोख बंद होना  
कोटि उपाय करना  
कोरा जवाब देना  
कोरे कागज पर लिख हर  
कोड़ी गलत पढ़ना  
कोन मुंह दिखाना  
कोन मुंह लेकर

खबर गरम होना  
खयाली पुलाव पकाना  
खरा दाम देना  
खरी-खरी बातें सुनाना  
खाने का लाला पढ़ना  
खूले दरवाजे न शरमाना  
खून एक करना  
खून ठंडा होना  
छोटा सिक्का चलना  
छोपड़ी लाल होना  
गरदन ऊंची करके चलना  
गरदन टेढ़ी करना  
गरदन डीली करना  
गरदन नीची करना,—होना  
गरम तवे पर तली जाना  
गरम हवा लगना  
गर्म सांस छोड़ना  
गलत राह चलना  
गला तर करना  
गहूरा हाथ मारना  
गहूरी चाल चलना  
गहूरी रकम हाथ लगना  
गहूरे पानी पैठना  
गहूरे पानी होना  
गाढ़ा धोरज धरना  
गाढ़ा रंग चढ़ना  
गाढ़े काम आना  
गात शीतल करना,—होना  
गाल लाल होना  
गुड़ लाकर गुंगा होना



### एक सी इकतीस

गुस्सा ठंडा होना  
 गोटी लाल होना  
 गोद सूनी होना  
 पाव हरा करना,—होना  
 चार अक्षर पढ़ना  
 चार आँख करना  
 चार आँसू बहाना  
 चार के कंधे पर चढ़ना  
 चार गाल बोलना  
 चार गाल हंसना  
 चार चाँद लगना  
 चार चाँद लगाना  
 चार पैसा कमाना  
 चार बातें कहना  
 चारों खाने चित्त करना  
 चारों खाने चित्त गिराना  
 चारों खाने चित्त मारना  
 चारों फल पाना  
 चारों हाथ पाँव से दौड़े जाना  
 चाल पट पड़ना  
 चित्त मेला करना  
 चिराग ठण्डा करना  
 चुल्लू भर पानी में डूब जाना  
 चूड़ियाँ मेलो होना  
 चूल्हा गरम होना  
 चूल्हा ठंडा करना,—होना  
 चेहरा पीला होना  
 चेहरा पीला पड़ना  
 चेहरा फक् होना  
 चेहरा स्याह पड़ना

चेहरा हरा होना  
 चेहरे पर बारह ब्रजना  
 चोर का दिल धाधा होना  
 चोला तर होना  
 चोला मस्त होना  
 चौकन्ने कानों होना  
 छटे कान में पड़ना  
 छाती ऊँची बनना  
 छाती कड़ी करना  
 छाती गज भर की होना  
 छाती ठंडी करना  
 छाती ठंडी पड़ना  
 छाती दूनी होना  
 छाती मजबूत होना  
 छाती शीतल होना  
 जन्म सुफल होना  
 जबाब बंद कर देना  
 जमीन आसमान एक करना  
 जान एक कर देना  
 जान भारी होना  
 जिन्दगी के दिन पूरे करना  
 जिन्दगी भारी होना  
 जी कड़ा करना  
 जी का बोझ हलका होना  
 जी लट्टा करना,—होना  
 जी छोटा करना,—होना  
 जी टेढ़ा होना  
 जी ठंडा होना  
 जी डाँवाडोल होना  
 जी निडाल होना

एक सौ बत्तीस

जी पोड़ा करना  
जी फीका करना  
जी भर माना  
जी भर जाना  
जी भारी होना  
जी में ऊना मानना  
जी हरा होना  
जी हलका होना  
जीभ पतली होना  
जीवन भार होना  
जूतियां सीधी करना  
जेब खाली होना  
जेब गरम होना  
जोश ठंडा पड़ना  
भूठी गंगा में तैरना  
टके सीधे करना  
टेढ़ी आंखों से देखना  
टेढ़ी चाल चलना  
टेढ़ी नजर से देखना  
टेढ़ी भुंकि करना  
ठंडी आग में जलना  
ठंडी आह कड़ना  
ठंडी आह भरना  
ठंडी सांस खींचना  
ठंडी सांस भरना  
ड्योड़ी बन्द होना  
दीला काम करना  
तबीयत साफ होना  
तबीयत हरी होना  
तर माल उठाना

तिरछी आंखों से देखना  
तिल के समान करना  
तीनों त्रिभुवन सूझना  
तृण समान गिनना  
तृण समान समझना  
तेज निगाह से देखना  
तौल में घोछा ठहरना  
दरवाजा बंद होना  
दशों दिशाओं में गूँज उठना  
दांत खट्टे करना  
दांत खट्टे कराना  
दांत साफ करना  
दाहिनी आंख फड़कना  
दाहिने-बायें दोनों ओर चलना  
दिन खोटा आना  
दिन-दिन सबाया होना  
दिन दूना बड़ना  
दिन पतला पड़ना  
दिन पूरा करना,—होना  
दिमाग खाली करना  
दिमाग ठंडा होना  
दिल कच्चा करना  
दिल काढ़वा करना  
दिल का घाव हरा करना  
दिल का बोझ हल्का होना  
दिल छोटा करना,—होना  
दिल ठंडा होना  
दिल नरम होना  
दिल भारी करना,—होना  
दिल मजबूत करना



एक सी तैतीस

दिल साफ करना,—होना

दिल हरा होना

दिल हलका करना

दूसरा द्वार देखना

दूसरा द्वार न होना

दूसरा स्थान न होना

दृष्टि ऊँची करना

दृष्टि भावरी होना

दो आँख से देखना

दो आँसू बहाना

दो कदम देना

दो गाल बात करना

दो गाल हँस कर खोलना

दो टुक बात करना

दो-दो चोंचें होना

दो-दो बातें करना

दो-दो हाथ दिखाना

दो-दो हाथ होना

दो बूंद आँसू डालना

दो रोटी कमाना

दो शब्द कहना

दो हाथ बढ़ कर

दोनों चूल बराबर करना

दोनों भुजा उठाकर

दोनों हाथ कट जाना

दोनों हाथ सकेरना

दोनों हाथों से लूटना

द्राविड़ी प्राणायाम करना

घरती पर पैर सीधे न पड़ना

धूप में बाल सफेद करना

नगी आँख देखना

नंगे हाथ जाना

नजर चार होना

नजर मँसो होना

नन्हा सा मुँह निकल जाना

नया रंग खिलना

नया शिकार फँसना

नयी ज्योति देना

नरद कच्ची करना

नशा किरकिरा होना

नशा ठंडा होना

नस ठीक कर देना

नस-नस झीली होना

नस-नस से वाकिफ होना

नाक ऊँची रहना,—होना

नाक बंद करना

निगाह चार होना

निगाह टेढ़ी होना

निगाह मोटो कर लेना

नींद भर सोना

नौ मूँड का होना

पक्की बात करना

पगड़ी नीची होना

परायी पीड़ा पाना

परायी पीड़ा लगना

पराये हाथों होना

पलकें भारी होना

पलड़ा भारी होना

पल्ला बड़ा होना

पल्ला भारी होना

034

O.P.—185

## एक सौ चौतीस

पल्ला हलका होना  
 पसली ढीली करना  
 पांचों उंगली धी में होना  
 पांचों धी में होना  
 पानी की तरह साफ होना  
 पाया मजबूत होना  
 पारा गरम होना  
 पासा सीधा पड़ना  
 पुरानी राह पर चलना  
 पुरानी लकीर पीटना  
 पेट की ज्वाला शांत करना  
 पेट बड़ा होना  
 पेट भारी होना  
 पैर भारी होना  
 पैर सौ-सौ मन का होना  
 प्याला सबरेज होना  
 प्याला सवालब होना  
 प्रथम रेल होना  
 प्रथम लोक होना  
 प्रभु का प्यारा हो जाना  
 प्राण हरा होना  
 बंधन डीला करना  
 बंधन डीला होना  
 बड़ा बोल बोलना  
 बड़ा हाथ होना  
 बड़ी-बड़ी बातें करना  
 बड़ी यात्रा करना  
 बड़े गुस्से की पड़ाई होना  
 बड़े घर की हवा खाना  
 बड़े घर की हवा खिलाना

बड़े घर भिजवाना  
 बड़े बोल बोलना  
 बनारसी चाल चलना  
 बहकी-बहकी बातें करना  
 बाजार गरम होना  
 बाजार तेजी पर होना  
 बाजार ऊपर हो जाना  
 बात का गहरी होना  
 बात गोल कर जाना  
 बात पक्की करना  
 बाल सफेद करना  
 बाल सफेद होना  
 बासी भाड़ू फेरना  
 बिसमिल्लाह गलत होना  
 बिस्तर गोल करना  
 बुद्धि का कोटा खाली होना  
 बुरी घड़ी पड़ना  
 बुरी नज़र रखना  
 बुरे रास्ते पर चलना  
 बूढ़े तोते का न पड़ना  
 भर जीभ बोलना  
 भर मुंह बोलना  
 भरे मुंह गिरना  
 भाग्य सीधा होना  
 भारी पांव से चलना  
 भाव ऊंचा होना  
 भौह ढीली पड़ना  
 मद से अंधा होना  
 मन एक करना  
 मन आधा होना



## एक ती पैतीस

मन ऊँचा होना  
 मन कड़ा करना  
 मन खट्टा होना  
 मन छोटा करना  
 मन डीला होना  
 मन दो होना  
 मन फीका होना  
 मन बूढ़ा होना  
 मन भारी करना  
 मन भारी होना  
 मन मीठा होना  
 मन मैला करना, —होना  
 मन मोटा करना  
 मन राता होना  
 मन रीता करना  
 मन साफ करना  
 मन साफ रखना  
 मन हरा करना, —होना  
 मन हलका होना  
 मनोरथ छूछा पड़ना  
 मस्तक उन्नत करना  
 माता का दूध लज्जित होना  
 माथा ऊँचा करना  
 माथा खाली करना  
 मामला गर्म होना  
 मामला गोल होना  
 मामला डीला होना  
 मामला फीका होना  
 मिजाज गरम होना  
 मिट्टी अच्छी होना

मिट्टी खराब करना, —होना  
 मिट्टी स्वार होना  
 मिट्टी पलीद करना  
 मिट्टी पलीद होना  
 मीठा वचन बोलना  
 मीठी घाँच पर पकाना  
 मीठी चुटकी लेना  
 मीठी-मीठी बातें बनाना  
 मुँह उजला करना  
 मुँह उजागर होना  
 मुँह उतरा होना  
 मुँह काला करना  
 मुँह काला कराना  
 मुँह काला होना  
 मुँह जरा सा निकल आना  
 मुँह टेढ़ा होना  
 मुँह पीला पड़ना  
 मुँह फीका करना  
 मुँह फीका होना  
 मुँह बंद कर लेना  
 मुँह बंद न करना  
 मुँह भर के पाना  
 मुँह भर के बोलना  
 मुँह भारी करना, —होना  
 मुँह मीठा करना  
 मुँह मीठा होना  
 मुँह लंबा करना  
 मुँह लाल करना  
 मुँह लाल होना  
 मुँह सीधा करना, —होना

## एक ही छतरी

मुह स्वाह पड़ना  
 मुह हरा होना  
 मुक्त कंठ में कहना  
 मुट्ठी गरम करना,—होना  
 मुट्ठी ढीली होना  
 मुकलिसों में आटा गीला होना  
 मुँह को बिंदा करना  
 मूँछ के बाल ऊँचे होना  
 मूँछ नीची होना  
 मैदान साफ होना  
 मोटा बोल मारना  
 मोटी ढाल पकड़ना  
 मोटी तह जमी होना  
 रंग चोखा करना  
 रंगी फीका करना,—होना  
 रंगें ढीली पड़ना  
 रात गहरी होना  
 रास्ता साफ करना,—होना  
 राह भारी होना  
 रिमझिम पानी बरसना  
 रिश्तों का बाजार गर्म होना  
 रुपया खरा होना  
 रुपये सीधे करना  
 रोटियों के मुहताज होना  
 रोम पुलकित होना  
 रोम-रोम गीला होना  
 लंबा हाथ मारना  
 लंबी तनख्वाह पाना  
 लंबी रस्सी देना  
 लंबी तारीखें पड़ना

लंबी साँस भरना  
 लंबे कदम रखना  
 लंबे डग भरना  
 लंबे पैर पसार कर सोना  
 लंबे-लंबे डग भरना  
 लज्जा का भी लज्जित होना  
 वह दिन न रह जाना  
 वाम अंग फरकना  
 वाम बाणी बोलना  
 वार ओछा पड़ना  
 वार खाली जाना  
 विचार शिथिल होना  
 विधि दाहिने होना  
 शरीर में गरम हवा भी न लगना  
 शासन की कमर ढीली पड़ना  
 संसार अंधेरा लगना  
 सत्तर चूहे खाए होना  
 सप्तम सोपान पर होना  
 सफेद बालों की लाज रखना  
 सफेद हाथी बंधना  
 सड़क बाग दिखाना  
 साई के सी खेत होना  
 साख ऊँची उठना  
 सात कोठरी में छिपाकर रखना  
 सात घाट का पानी पीना  
 सातवें घासमान पर मारना  
 सातों द्वीप में शोजना  
 सातों मुँह भूल जाना  
 साफ घासमान देखना  
 मितारा फीका होना



## एक सी सीतीस

सितारा बुलंद होना  
 सिर उठाना मुश्किल होना  
 सिर ऊँचा करना,—होना  
 सिर का बोझ हलका होना  
 सिर के बाल सफेद होना  
 सिर खाली करना  
 सिर नीचा करना  
 सिर नीचा पड़ना  
 सिर नीचा होना  
 सिर पर नंगी तलवार लटकना  
 सिर सफेद होना  
 सीधी उँगली घी निकालना  
 सीधी बात न भाना  
 सीधी बात न बोलना  
 सीधे मार्ग पर घाना  
 सीधे मुँह बात न करना  
 सीना चौड़ा होना  
 सुहाग भरी रहना  
 सुना जवाब देना  
 सोटे-लंगोटे में मस्त रहना  
 सो काम छोड़कर  
 सो जान से कुरबान होना  
 स्तर ऊँचा उठना  
 हंसी में दोहरा होना

हुवाई किला वा देना  
 हुवाई किला बनाना  
 हाथ कच्चा होना  
 हाथ खाली जाना  
 हाथ खुला होना  
 हाथ गरम करना,—होना  
 हाथ छोटा होना  
 हाथ तंग होना  
 हाथ तैयार होना  
 हाथ पाँव ठंडा होना  
 हाथ डीले होना  
 हाथ पीला होना  
 हाथ बंद करना  
 हाथ मजबूत करना  
 हाथ साफ करना  
 हाथ पतले होना  
 हालत खराब होना  
 हालत संगीन होना  
 हिसाब साफ होना  
 हृदय टेढ़ा होना  
 हृदय दो टुक होना  
 हृदय शीतल करना  
 हृदय हलका होना  
 होसला पस्त होना

एक सौ अठ्तीस

## विशेषण-संज्ञा एवं विशेषणयुक्त मुहावरे

अंत काल  
अंधा कुआ  
अंधा होना  
अंधाधुंध सरकार  
अंधी खाई  
अंधी खोपड़ी  
अंधेरे घर का उजाला  
अंधेरे घर का विराग  
अंधेरे घर का दीपक  
अंधक का अंधा  
अन्धरा घर  
अहिमन टट्टू होना  
अनमोड़ होना  
अपना सोना सौटा होना  
अभिन्न हृदय  
अहिवात जल होना  
आँख का अंधा, नाँठ का पुरा  
आँख का मक्का  
आँख के अँधे  
आँखवाला अंधा  
आँखों का अंधा होना  
आँसू बहानेवाला  
आकाश से ऊँचा होना  
आकाशी वृत्ति  
आठ बाना  
आठों गहर, थोसठ पड़ी  
आधी खोरी का

आसमान से ऊँचा होना  
आँखों से बिरबे होना  
उजली प्रकृति  
उजला होना  
उठल्लू  
उन्नीस-बीस होना  
उन्नीस होना  
उलंग होना  
उलटा लवा  
उलटी चाल  
उलटी रीति  
उस्ताद होना  
ऊँचा  
ऊँचा कुल  
ऊँचा घर  
ऊँचा दाम  
ऊँचा लाभ  
ऊँचा मोह  
ऊँचा सिंहासन  
ऊँचा स्थान होना  
ऊँचा स्वर  
ऊँचा हाथ होना  
ऊँचा होना  
ऊँची आवाज  
ऊँची उड़ान  
ऊँची करनी  
ऊँची बात होना



एक सौ उनचांस

ऊँची नाक होना	कच्चा
ऊँची-नीची बात	कच्चा खेज
ऊँची पहुँच	कच्चा बिट्टा
ऊँची बुद्धि	कच्चा पागा
ऊँची रुचि	कच्चा पथ
ऊँचे दर्जे का	कच्चा मन
ऊँचे मन का	कच्चा माल
ऊँचे विचार होना	कच्ची उख
ऊँचे स्वर में	कच्ची गगरी
एक अंग होना	कच्ची जदानी
एक अंग भी कच्ची न होना	कच्ची नौद
एक आँक	कच्ची पोल
एक चित्त	कच्ची बही
एक आप	कच्ची बात
एक कलम	कच्ची रसोई
एक पैनी के चट्टे-उट्टे	कच्ची होना
एक दूसरे का	कच्चे दिल का होना
एक पतियत	कठोर बचन
एक पलक	कठोर हृदय होना
एक प्राण दो शरीर होना	कड़वा बचन
एक मुट्ठी चावल	कड़वा होना
एक मुट्ठी होना	कड़ी घोल
एक म्यान में दो तलवार	कड़वी जवान
एक सांस में	कड़वी बात
ऐहदार	कड़ा
ऐन नाक पर	कड़ा कलेजा
घोछा होना	कड़ा मिजाज
घोंघी खोपड़ी होना	कड़े हाथों
अधट घाट	कपटियों की चटसार होना
कंठ रसीला होना	कलम का धनी

## एक ही वालीस

कलेजा बड़ा होना  
 कलेजेवाला घादमी  
 कागज भूठा होना  
 काट की  
 काठ कठोर  
 काठी अच्छी होना  
 कान कच्चा होना  
 कान का बहरा  
 कान के कपचे  
 कान के पतले  
 कान के हलके  
 कान के लम्बे होना  
 कानों कीड़ी  
 काला कानून  
 काला चोर  
 काला दिल  
 काला नाग  
 काला पानी  
 काला बाजार  
 काली करतूत  
 काली घटा  
 काली छाया  
 काले कोमों  
 काले होना  
 किस मुह से  
 किस्मत के धनी  
 कुछ होना  
 कुछ दिनों का मेहमान  
 कोटि कल्प  
 कोरे

जट्टा जंगूर होना  
 जट्टा जी होना  
 जट्टा होना  
 जड़ी जवानी  
 जरा होना  
 खस्वाट चांद  
 खाली जेब  
 खाली डोल  
 खाली हाथ  
 खिचड़ी बाल  
 खिचड़ी भाषा  
 खिचड़ी होना  
 खुला भेद  
 खुला हाथ होना  
 खुला होना  
 खुली चोट  
 खुली तबियत  
 खुली बात  
 खुली भाषा  
 खुले दिल से  
 खुले मैदान  
 खुले हाथ  
 खुशामदी टट्टू  
 खून का ध्यासा  
 खून सफेद होना  
 खोए खोए से  
 खोटा सिक्का  
 खोलता स्वर  
 गंगा-जमुनी  
 गंदा काम



एक सी एकतालीस

गमगौर होना  
गरज का बाबला होना  
गरम खबर होना  
गरम तबा होना  
गरम बात  
गरम होना  
गर्म राख पर बिस्तर होना  
गला भारी होना  
गला मधुर होना  
गहरा पेट  
गहरी निगाह  
गहरी पैठ होना  
गहरी बात होना  
गहरे से गहरे  
गांठ का पूरा  
गांठ गाली होना  
गाढ़ा प्रेम  
गाढ़ा संदेह  
गाढ़ा समय  
गाड़ी कमाई  
गाड़ी मेहनत  
गाड़े का सँगी  
गाड़े दिन  
गाड़े मित्र  
गीली घाँस  
गीली कहानी  
गुनाह बेलज्जत होना  
गुलाबी  
गेहूँ का रंग  
गोल बात

गी के टकी  
घर के भरे पूरे होना  
घर ही के बड़े होना  
घरवाली बात  
घुनी बात  
चटोरी जवान होना  
चार  
चार घाँस होना  
चार खादमो  
चार दिन  
चार पैसा होना  
चार सौ बीस होना  
चारों ओर  
चिकना पड़ा होना  
चिकना स्वर  
चिकनियाँ होना  
चित्त कठोर होना  
चिलचिलाती दोपहरी  
चिलचिलाती धूप  
चुचका घाम होना  
चूटकी भर  
चौतूना होना  
चौदह पुस्तों में  
छंटा हुआ  
छरहरा बदन  
छाती कठोर होना  
छिछली भावना  
छोटा घादमी  
छोटा भाग्य होना  
छोटा होना

## एक सो बयालीस

छोटी नाति  
छोटी बात  
छोटी हाजिरी  
जताना होना  
जवान के कच्चे  
जवान के तेज  
जवान बुरी होना  
जाहिल लट्ठ होना  
जी के घनी  
जूती की नोक बराबर  
जूती के बराबर होना  
जो-भर  
झंझो कौड़ी  
झोल की बात  
टकमाली  
टकिहाई होना  
टके-टके को मुहताज  
टकंत  
टरी होना  
टाट बाहर होना  
टूबाड़ों का पाला  
टेढ़ा मामला  
टेढ़ा होना  
टेढ़ी खीर होना  
टेढ़ी निगाह  
टेढ़ी बात  
टेढ़ी समस्या  
ठंडा  
ठंडा स्वभाव  
ठंडा स्वर

ठंडा होना  
ठंडे-ठंडे  
ठंडे दिमाग से  
बेव पसली का  
डाई माशे का घादमी  
डोले वचन  
तकदीर छोटी होना  
तबीयत का साफ होना  
तर होना  
तलवार का घनी  
तलवों के बराबर भी नहीं  
तिरछी आंख  
तिरछी चितवन  
तिरछी नजर  
तिरछे होना  
तोखा वचन  
तीन कौड़ी के  
तुर्फा होना  
तूफानी होना  
तेज गला होना  
तेज होना  
तेवर अच्छे न होना  
तोड़वाली बात  
तोल में ओछा होना  
धोबी बात होना  
दकियानुसी  
दक्षिण होना  
दबंग होना  
दबा क्रोध  
दबे पांव



एक सो तेतालिस

दबे स्वर में  
 दबैल होना  
 दरारवाला घर  
 दस दिन  
 दस पांच लोग  
 दाया हाथ  
 दाहिना हाथ होना  
 दिन खराब होना  
 दिल काला होना  
 दिल के काले होना  
 दिलदार  
 दुनियादार  
 दुबले होना  
 दूर देश  
 दो अंगुल ऊँचा होना  
 दो कोड़ी का  
 दो-बित्ता मन होना  
 दो जीभवाली  
 दो दातवाला  
 दो दिन का  
 दो दिन का सपना  
 दो-धारी तलवार  
 दो-मुँहा साँप  
 दो-रंगी चाल  
 दो-रुखा होना  
 दो-रुखी चाल  
 दो रोटियाँ होना  
 दो रोटियों का ठिकाना होना  
 दो सिर होना  
 दोनों आम मीठा होना

दोनों हाथ लड्डू  
 दोनों हाथों से  
 दोहरा बदन  
 धूल से भरा होना  
 ध्रुव सत्य होना  
 नंगी तलवार का बीच होना  
 नंबर एक का  
 नकटों का सरताज  
 नचानेवाला  
 नमकीन होना  
 नरक के समान होना  
 नये सिरे से  
 नरम चारा  
 नरम दिल  
 नरम होना  
 ना-मुलायम बात  
 नादिरशाही हुक्म  
 निष्कण्टक होना  
 निहत्थे  
 पके आम होना  
 पक्का होना  
 पक्की रगड़ी  
 पतला कान  
 पते की बात  
 पतेबाज होना  
 परकैव कबूतर  
 पहली सीढ़ी  
 पहाड़ ऐसा दिन  
 पहुँचा हुआ होना  
 पाँच का

एक सौ बीबाहिस

पाँच पलक  
पाँचवें सवारों में होना  
पाएदार होना  
पानीदार होना  
पिछला प्रहर  
पीठ का कच्चा  
पीठ का सच्चा  
पूरा दिन होना  
पेचदार बात  
पेचपाच की बात  
पेच की आदत  
पेट का हलका  
पेट के गहरे  
पेट के पतले  
पेटवाली  
पैलरेबाज होना  
पैर की धूलि बराबर होना  
पैसे-पैसे का मोहताज  
पोड़ा घासामी  
पोने सोलह प्राता  
प्यासी आँक  
प्यासी होना  
प्राण की तरह  
प्राणों से भी प्यारा  
प्राणों से भी बढ़कर  
प्रेम के प्यासे  
फरिशी सलाम  
फसली बुखार  
फिरंट  
फीका

फीका स्वर  
फीकी बात  
फीकी हंसी  
बड़ा कुल  
बड़ा गाल होना  
बड़ा घर  
बड़ा दिन  
बड़ा दिल  
बड़ा नाम होना  
बड़ा भाग्य होना  
बड़ा होना  
बड़ी नाक होना  
बड़ी बांह होना  
बड़े घादमी  
बड़े कांटे का होना  
बड़े बाप का बेटा  
बड़े भाग्यवाली  
बड़ भाग्य से  
बाँका होना  
बाएँ हाथ का खेल  
बाजार आदमी  
बाजार स्त्री  
बात का धनी  
बात का पक्का होना  
बात चटपटी होना  
बाएँ हाथ का खेल होना  
बारीक निगाह होना  
बारीक बात  
बाल की नोक बराबर  
बाल बराबर



## एक सौ पैंतालिस

बाल भर  
 बालिशत भर का  
 बावन तोले पाव रसी  
 बावन हाथ होना  
 बाहरी तरफ  
 बीस बिस्वा  
 बीस बिस्वा  
 बीस होना  
 बुद्धि का रंग होना  
 बुद्धि की मोटी होना  
 बुद्धि टेढ़ी होना  
 बुद्धि पिछली होना  
 बुरे दिन  
 बेलाग बात  
 बैठकबाज होना  
 बैठक होना  
 भर पेट  
 भरी जवानी  
 भाग्य झंघेरा होना  
 भाग्य के घनी  
 भाग्य के बली  
 भाग्य खोटा होना  
 भाग्य बड़ा होना  
 भारी बात  
 भाव के भूखे  
 भीमकाय होना  
 भूखी आँखें  
 मजबूत काठी  
 मति कच्ची होना  
 मन के अंधे

मन के काले होना  
 मन के मँले  
 मन के लड़कू  
 मन छोटा होना  
 मन मंजा होना  
 मस्तिष्क मोटा होना  
 माथा भर  
 मीठा उपदेश  
 मीठा प्रोच  
 मीठा टव  
 मीठा होना  
 मीठी छेड़छाड़  
 मीठी नींद  
 मीठी बातें  
 मीठी बोली  
 मीठी होना  
 मुंह का कड़वा  
 मुंह का खराब  
 मुंह की मीठी  
 मुंह के मीठे  
 मुट्ठी भर  
 मैले मनवाला  
 मोटा आदमी  
 मोटा काम  
 मोटा खाना  
 मोटा भाग  
 मोटा भाग्य  
 मोटा रहन-सहन  
 मोटा वस्त्र  
 मोटा होना

एक सौ छियालिस

मोटी बुद्धि  
मोटी आमदनी  
मोटी चमड़ी  
मोटी छाल  
मोटी तनकवाह  
मोटी बात  
मोटी-मोटी बात  
मोटी रकम  
रंगीन मित्राज के होना  
रंगीन होना  
रंगीले होना  
रज बराबर  
रत्ती भर  
राई भर  
रुखा जवाब  
रुखी बात  
रुखी हंसी  
लंबा  
लंगोट के कच्चे  
लंगोट के सच्चे  
लंबी-लंबी बात  
लंबी बाँह  
लंबे बोलोंवाली होना  
लच्छेदार बातें  
लच्छेदार भाषा  
लबाड़िया  
लास रुपये की बात  
लास आंख  
लात फीता  
लात बूंद होना

लाल मिर्च होना  
लाल साफा  
लिफाफिया होना  
लोमड़ी के खट्टे अंगूर होना  
वाम होना  
शीतल बाणी  
दुष्क व्यवहार  
द्वेत यश  
संकरा समय  
संकरे के साथी होना  
संकुचित हाथ से  
संजीवनी बूटी होना  
सजीव वरान  
सदर दरवाजा  
सफेद भूठ  
सफेद बघाई  
सफेद हाथी होना  
समझ से ऊँची बात  
सरसरी तौर पर  
सरसरी नजर से  
सवा बीस होना  
सवा सोलह आना  
सस्ता  
सस्ते  
साठे पर पाठे होना  
साढ़े-साती होना  
सात पांच  
साफ मन होना  
सीधी राह  
सीधी राह पर



### एक सौ सैतालिस

मुत्ती देह  
मु-दृष्टि होना  
मुत्तारवाली देह  
मुनहरा मौका  
मूखा  
मूखा दिल  
मूखी मुस्कान  
मूखी हंसी  
मूखी हड्डियां  
मेर का सवा मेर होना  
सोलह आने  
मी  
सी-सी तरह  
स्पाह सफेद  
हजार तरह से

हजार मुंह से  
हजार हाथ  
हराम की कौड़ी  
हलका कदम  
हलकी बात  
हवाई डंग  
हाथ का सन्धा  
हाथ की कठपुतली  
हाथ की बात  
हाथ की लकड़ी होना  
हाथ भर का कलेजा  
हाथ साफ होना  
हृदय में काला होना  
हृदय में कोमल स्थान होना

### चिशोषण एवं क्रिया युक्त मुहावरें

अंधा करना  
अंधा बनना  
अंधा बनाना  
अंधे के आगे रोना  
अनमुनी करना  
अपरस उधारना

ऊँधते को ठेलना  
ऊँचा करना  
ऊँचा मुनना  
एक कर देना  
एक की छट्टारह लगाना  
एक की चार जड़ना

एक सौ अड़तालिस

एक की लाल लगाना  
एक दो तीन होना  
एक न चलना  
एक भी न होना  
ऐंड़ा-ऐंड़ा डोलना  
कच्चा खा जाना  
कच्चा पड़ना  
कच्ची पक्की कहना  
कठिन पड़ना  
कड़वा बोलना  
कड़वी लगना  
कड़ा पड़ना  
कड़ी बीतना  
काने को काना कहना  
किरकिरी होना  
कुछ कहते न बनना  
कुछ न गाँठना  
कुछ न गिनना  
कुछ न समझना  
कोरा रहना  
कोरी-कोरी गुनाना  
खट्टा कर देना  
खट्टा खाना  
खट्टा बना देना  
खराब करना  
खरी-खरी गुनाना  
खोटी उतरना  
गरम लगना  
गहरी घुटना  
गहरी छनना

गाँठ पड़ना  
गोल कर देना  
गोल पारना  
चकनाचूर करना  
चार-चार घाँठ मुनना  
चित पट करना  
चित पड़ना या पट पड़ना  
चुपड़ी और दो-दो होना  
चूर कर देना  
चूर-चूर हो जाना  
चूर रहना  
चूर होना  
चोकस बना रहना  
छंगा बना फिरना  
छूछा लगना  
जलाने लापक  
टेढ़ा करना  
टेढ़ा पड़ना  
टेढ़े-टेढ़े चलना  
टेढ़े-टेढ़े जाना  
टेढ़े-टेढ़े फिरना  
ठंठ गिनना  
ठंढा करना  
ठंढा पड़ना  
ठीक उतरना  
झीला पड़ना,—होना  
तिरछे देखना  
तीखे देखना  
तीन तेरह करना,—होना  
तीन तेरह बकना



एक सौ उनचास

तीन पांच करना  
तेज पड़ना  
थककर चूर होना  
दाहिने होना  
द्रवित होना  
धवा बताना,—होना  
नरम पड़ना  
निष्कण्टक करना  
नीचा दिखाना  
नीचा देखना  
नौ दो ग्यारह होना  
पक्का पीड़ा करना  
पट पड़ना  
पांच की सात लगाना  
पांच की सात मुनाना  
पांच सात न जाना  
पांच सात भूल जाना  
पीला पड़ना,—होना  
पूरा जाना  
पूरा उतरना  
पूरा पड़ना  
पूरा पाना  
फिरंट रहना  
फीका पड़ना  
फीका लगना  
बंटाधार कर देना  
बड़ा करना  
बापे देना  
बापे होना  
बीस से उन्नीस पड़ना

भारी लगना  
मष्ट करना  
मष्ट घटना  
मष्ट मारना  
महीन खाना महीन पहनना  
मीठा बनना  
मीठा बोलना  
मीठा लगना  
मैला करना  
रूखा पड़ना,—होना  
लवा बनना,—होना  
लंबी तानकर सोना  
लंबी तानना  
लंबे होना  
लोल कहना  
लाशों में खेल सकना  
लाल होना  
लाल पड़ना  
संड के सैंड रह जाना  
सफेद को काला करना  
समीप घाना  
समीप होना  
सस्ते छूटना  
सात चौदह की संर कराना  
सात पांच करना  
साफ करना,—होना  
साफ-साफ बोलना  
सीधा करना  
सीधे बोलना  
मुन्न सींच जाना

एक सौ पचास

हंसने लायक होना  
हरा हरा सुभना  
हरा हो जाना

हरियाली सुभना  
हल्का होना

### क्रिया युक्त मुहावरे

अकड़ना  
आ जमना  
आ बनना  
आई गई  
झाई गई होना  
आना जाना  
उलड़ जाना  
उलड़ना  
उखाड़ देना  
उखाड़ फेंकना  
उगलना  
उगलवा लेना  
उपड़ पड़ना  
उपर कर नाचना  
उछल पड़ना  
उछलना  
उठ खड़ा होना  
उठ जाना  
उठते बैठते  
उठना

उठा देना  
उठा न रखना  
उठा रखना  
उठा लेना  
उठाए उठना, बंठाए बंठना  
उठाना  
उड़ बचना  
उड़ जाना  
उड़ता-उड़ता  
उड़ती-उड़ती  
उड़ना  
उड़ा देना  
उड़ा रखना  
उड़ा लाना  
उड़ाई हुई  
उड़ाना  
उतर कर  
उतर जाना  
उतरना  
उतराकर बहना



एक सौ दसवावन

उतारना  
 उबल पड़ना  
 उबलना  
 उमड़ घाना  
 उमड़ पड़ना  
 उलझ पड़ना  
 उलझाना  
 उलट जाना  
 उलट देना  
 ऐंठ-ऐंठ कर रह जाना  
 ऐंठ कर  
 ऐंठ कर चलना  
 ऐंठ कर लेना  
 ऐंठना  
 ऐंठ जाना  
 कचर-कचर कर खाना  
 कट जाना  
 कटवाना  
 कटी-कटी होना  
 कतरा जाना  
 कमाना  
 कस लेना  
 कसना  
 कह जाना  
 कहते न आना  
 कहते न बनना  
 कहने पर लगना  
 कहे में होना  
 काँख देना  
 काँपना

काट खाना  
 काटने दोड़ना  
 कुचल देना  
 कुचला जाना  
 कुम्हलाना  
 कूट-कूट कर भरा रहना  
 कूदना  
 काँचना  
 खटकना  
 खड़ा करना  
 खड़े-खड़े  
 खड़े होना  
 खरीद लेना  
 खा जाना  
 खाता-पीता होना  
 खाना  
 खाने दोड़ना  
 खिंच जाना  
 खिंचे-खिंचे रहना  
 खिल उठना  
 खिलखिला उठना  
 खिलखिला कर हँसना  
 खिलाना  
 खींच लाना  
 खींच लेना  
 खुल कर  
 खुल जाना  
 खुलना  
 खेला-खेलना  
 खेला-खेला कर मारना

एक गी बावन

खेलना  
खेली खाई  
खो जाना  
खोए खोए से  
खोद-खोद कर पूछना  
खोलकर, खोलकर कहना  
खोलना  
खोलना  
खोलाना  
खटक जाना  
खड़ जाना  
खड़ छील कर  
खया गुजरा  
खया बीता  
खरजना  
खरजना-बरसना  
खरमा जाना  
खलना  
खोठना  
ना बजाकर  
गिनना  
गिरता पड़ता  
गिरना  
गिरा हुआ होता  
गिराना  
गुजर जाना  
पसीटना  
पिसा होना  
पिसो पिसाई  
पूटना

घुटे घुकाए होना  
घुल जाना  
घुलते जाना  
घुलना  
घेरघार कर  
घोलकर पी जाना  
घट कर जाना  
घटक-जाना  
घटाना  
चढ़ आना  
चढ़ कर  
चढ़ बनना  
चढ़ बैठना  
चड़ा जाना  
चड़ा देना  
चड़ा लाना  
चवाना  
चमक उठना  
चमकना  
चरने जाभा  
चरना  
चल देना  
चल निकलना  
चल बसना  
चलता बनना  
चलता हुआ  
चलती होना  
चलते फिरते  
चलना  
चलाना



एक सौ तिरपन

चलाये न चलना  
चले जाना  
चहन कर खाना  
चाट जाना  
चिटक जाना  
चिपक जाना  
चिपके रहना  
चुभती हुई कहना  
चूना  
चूस लेना  
चौकन्ना होना  
छंटा हुआ  
छक रहना  
छटकना  
छनना  
छलका पड़ना  
छांटना  
छाए रहना  
छान डालना  
छान मारना  
छानना  
छाना  
छिल जाना  
छीकना  
छू न जाना  
छू लेना  
छूना  
छेड़ना  
छद डालना  
छोड़ने जाना

छीकना  
जकड़ा होना  
जगा देना  
जगा रहना  
जमकर  
जम जाना  
जमाना  
जल उठना  
जल-जल कर  
जल जाना  
जल भून जाना  
जलता हुआ  
जलना  
जल मरना  
जला भूना  
जली कटी  
जली भूनी  
जली भूनी मुनाना  
जलाना  
जले को जलाना  
जाग उठना  
जाग पड़ना  
जागता हुआ  
जागना  
जाता रहना  
जाना  
जूड़ना  
जोड़-जोड़ कर  
जोत देना  
झंझोड़ना

## एक सौ बीवन

भकभोरना  
 भड़ जाना  
 भँकने भी न आना  
 भाड़ डालना  
 भाड़ फटकार कर बल देना  
 भूक जाना  
 भूक पड़ना  
 भुकना  
 भूम उठना  
 भूमना  
 टटोलना  
 टहला देना  
 टाँकना  
 टापते रह जाना  
 टूटकर  
 टूट जाना  
 टूट पड़ना  
 टूटना  
 टूटी-फूटी  
 टूटे-फूटे  
 ठाकर हंसना  
 ठन जाना  
 ठहराना  
 ठहरी हुई  
 ठुक जाना  
 ठुकरा देना  
 ठोंक-ठाकर  
 ठोंक-पीट कर  
 ठोंक-बजाकर  
 ठाँकना  
 ठाँकना-बजाना

डकार जाना  
 डावाडोल होना  
 डुबा देना  
 डूब कर  
 डूब जाना  
 डूबना  
 डूबना उतराना  
 डोलना  
 डरना  
 डल चलना  
 डलना  
 डह जाना  
 डाँक-सँवार कर रखना  
 डालना  
 डुलकना  
 सनकर  
 सने रहना  
 सपना  
 समक उठना  
 सरस खाना  
 तरेर कर देखना  
 तह कर रखना  
 ताक कर  
 ताक-भाँक करना  
 ताकना  
 ताड़-ताड़ कर  
 तान कर  
 तान कर सोना  
 तारना  
 तिनक जाना



एक सौ पचपन

तिलमिला उठना  
 तुली होना  
 तोड़ देना  
 तोड़ लेना  
 तौल-तौल कर  
 तौलना  
 थक कर घूर होना  
 थरथराना  
 थरना  
 थूकवाना  
 थू-थू करना  
 थूक कर चाटना  
 थूक देना  
 थूकना  
 थूकने भी न आना  
 दब जाना  
 दबना  
 दबा देना  
 दुरदुराना  
 दे मारना  
 देख न सकना  
 देख लेना  
 देखते बनना  
 देखा न जाना  
 दौड़े जाना  
 धर दबाना  
 धरना देना  
 धाना धूपना  
 धो कर पी जाना  
 धो डालना

धो देना  
 न गिनना  
 नचाना  
 नहलाना  
 नाच उठना  
 नाचना  
 नाचना कुदना  
 निकल जाना  
 निकाल लाना  
 निकालना  
 निबट जाना  
 नोंचना  
 नोंचे खाना  
 पकड़ना  
 पगना  
 पच मरना  
 पचाना  
 पटकना  
 पटका जाना  
 पटना  
 पड़ना  
 पड़ना  
 पड़ाना  
 पथराना  
 पलट जाना  
 पसीजना  
 पस्त होना  
 पिए हुए होना  
 पिघल उठना  
 पिट जाना

एक सौ छप्पन

पिटा देना  
 पिटा हुआ  
 पिल पड़ना  
 पिल-पिल कर  
 पिल जाना  
 पी जाना  
 पीटना  
 पीना  
 पीस कर पी जाना  
 पीसा जाना  
 पुकार कर कहना  
 पुकारना  
 पूछना  
 पूजा करना  
 पैदा करना  
 फंस जाना  
 फंसाना  
 फट जाना  
 फट पड़ना  
 फटक पछोर कर देखना  
 फटकना  
 फटकने न देना  
 फटकारना  
 फटना  
 फड़क उठना  
 फटकता हुआ  
 फलना फूलना  
 कांस लेना  
 काड़ खाना  
 काड़े खाना

फिर जाना  
 फिर पड़ना  
 फिसलना  
 फुसफुसाना  
 फूंक देना  
 फूंक मारकर उड़ा देना  
 फूट पड़ना  
 फूटना  
 फूटफूट कर रोना  
 फूल उठना  
 फूल कर बैठना  
 फूलना  
 फूलना-फलना  
 फूला समाना  
 फूला फिरना  
 फूला होना  
 फूले न समाना  
 फूले-फूले फिरना  
 फोड़ देना  
 बंधना  
 बघारना  
 बजना  
 बजाकर  
 बढ़ जाना  
 बढ़-बढ़ कर बोलना  
 बढ़ना  
 बन जाना  
 बन कर  
 बन ठन कर  
 बन पड़ना



एक सौ सत्तावन

बनना  
 बनना-बिगड़ना  
 बनाकर  
 बना लेना  
 बनाना  
 बरस पड़ना  
 बरसना  
 बलि जाना  
 बलि-बलि जाना  
 बह जाना  
 बहना  
 बहा देना  
 बहा ले जाना  
 बांधना  
 बाज आना  
 बिकना  
 बिकी हुई  
 बिगड़ जाना  
 बिचका जाना  
 बिछा होना  
 बीतना  
 बुझ जाना  
 बुकना  
 बेच खाना  
 बैठकर खाना  
 बैठ जाना  
 बैठना  
 बैठ देना  
 बैठ होना  
 बैठाना

बैठी रहना  
 बोया हुआ काटना  
 बोर देना  
 बोल जाना  
 बोला चाहती है  
 भगा ले जाना  
 भटका खाना  
 भड़क उठना  
 भभक उठना  
 भर घाना  
 भर जाना  
 भरना  
 भरी बैठना  
 भरे होना  
 भांप लेना  
 भागना  
 भागे-भागो फिरना  
 भिगो-भिगोकर लगाना  
 भिड़ना  
 भीग कर देखना  
 भीग जाना  
 भुन जाना  
 भुला लेना  
 भूकना  
 भूज डालना  
 भुन देना  
 भूलकर भी नहीं  
 भूल पड़ना  
 भूलना  
 मजना

## एक सौ श्रुतान्त

मंजा होना	मुड़ना
मंजराना	मुरझा जाना
मनाना	मूड़ लेना
मरकर भी	मूस लेना
मर-लपकर	मोड़ना
मर जाना	रंगना
मर-पब कर	रंगा होना
मर-मर कर	रख लेना
मर मिटना	रगड़कर
मरना	रगड़ देना
मरने पर भी नहीं	रगड़ा जाना
मरम्मत करना	रच-रच कर
मरम्मत होना	रम जाना
मरा जाना	रम रहना
मरा हुआ	रो-रो कर
मरे को मारना	रोता हुआ होना
मरे जाना	रोना
मसल देना	रोना गाना
मारे डोलना	रोना रोना
मांजना	रोना ले बैठना
मारना	रोना होना
मारा जाना	लग जाना
मारा फिरना	लग रहना
मारा-मारा डोलना	लगना
मारा-मारा फिरना	लगाना
मिट जाना	लगी होना
मिठा-मिठा कर बोलना	लगे रहना
मिला लेना	लट जाना
मिले होना	लताड़ना
मुड़वाना	लथेड़ना



## एक सौ उनसठ

लदवा देना  
 लपक कर  
 लपट पड़ना  
 लाद देना  
 लाइना  
 लिखा न मेट सकना  
 लीप देना  
 लीपा-पोती करना  
 ले उड़ना  
 ले डालना  
 ले डूबना  
 ले-दे करना  
 ले-दे होना  
 ले-दे मचना  
 लेना-देना न होना  
 लेने के देने पड़ना  
 लेने-देने में न होना  
 लोट-पोट करना  
 लोट-पोट होना  
 लोट होना  
 बकालत करना  
 बारने जाना  
 सठिया जाना  
 सड़ा करना  
 सनसनाते हुए निकल जाना

सना होना  
 सर होना  
 मानना  
 सानी हुई  
 सिटपिटा जाना  
 सिमट जाना  
 सुनना  
 सुलपना  
 सुलभना  
 सुला देना  
 सूख जाना  
 सो जाना  
 सोते को जगाना  
 सोना  
 हंस कर  
 हंस कर टाल देना  
 हंसते-हंसते  
 हंसते-हंसते लोटपोट हो जाना  
 हंसना  
 हथिया लेना  
 हांकना  
 हिलना  
 हिला देना  
 हो रहना  
 हो लेना

एक गीत

## अव्यय युक्त मुहावरें

अंदर होना  
 अंशकार दूर होना  
 ऊँचे के आगे  
 अपनी खाट के नीचे देखना  
 अपनी गी  
 अपने आगे किसी की न मिलना  
 अपने को बहुत लजाना  
 अपने से बाहर होना  
 अपलक रहना  
 घब-तब होना  
 आस के आगे  
 आस के सामने करना  
 आसों के आगे लगी फिरना  
 आसों के आगे अंधेरा खाना  
 आसों के आगे धूम खाना  
 आसों के आगे नाचना  
 आसों के आगे फिरना  
 आसों के तले  
 आसों के तले खाना  
 आसों के नीचे खाना  
 आसों के सामने  
 आसों के सामने नाच खाना  
 आसों के सामने फिर खाना  
 आसों के सामने फिना करना  
 आसों के सामने लगे रहना  
 आसों से घलम न करना  
 आसों से दूर न करना  
 आगे

आगे खाना  
 आगे करना  
 आगे नाचना  
 आगे निकल खाना  
 आगे-नीचे  
 आगे-नीचे दोनों घोर चलना  
 आगे-नीचे होना  
 आगे पैर न पड़ना  
 आगे बढ़ना  
 आगे लेना  
 आगे से दूर होना  
 आगे होकर लेना  
 आगे होना  
 आजकल में  
 आदि-अंत न खाना  
 आसमान तक के घरमान  
 इधर-उधर भँकना  
 ऊँचे उठना  
 ऊँचे बढ़ना  
 ऊँचे टेरना  
 ऊँचे पुकारना  
 ऊपर  
 ऊपर-ऊपर का  
 ऊपर उठना  
 ऊपर उठाना  
 ऊपर का खर्च  
 ऊपर की आमदनी  
 ऊपर की बात



## एक ही एकमंड

ऊपर चढ़ाना  
 ऊपर से नीचे गिराना  
 ऊपरी  
 एक झंड़े के नीचे लड़े होना  
 एकटक देखना  
 एही से चोटी तक  
 कई कदम पीछे छोड़ना  
 कदम पीछे पड़ना  
 कमली के बाहर पैर निकालना  
 कमली के बाहर पैर फेंकना  
 कल का  
 कल की बात होना  
 कहीं का न रखना  
 कहीं का न होना  
 कहीं की कहीं लगना  
 कान तक जल उठना  
 कान तक पहुँचना या पहुँचाना  
 कितने पानी होना  
 किसी के नीचे बैठना  
 किसी से दूर न होना  
 कोसों दूर भागना  
 कोसों दूर रहना  
 कोसों दूर होना  
 कौड़ी पास में न होना  
 खुलकर  
 खुलकर कहना  
 खुलकर बातें होना  
 खुलकर खेलना  
 गहराई तक जाना  
 गोटी चित पड़ना

घर के बाहर  
 घर से बाहर जाना  
 थकावट घुटना  
 थरगों के नीचे आँखें बिछाना  
 थार कदम आगे होना  
 थारों ओर  
 थोटी बे-बस होना  
 थोका चलन करना  
 जहाँ तहाँ  
 जालि से बाहर करना  
 जामे से बाहर होना  
 जी ऊपर तले होना  
 झंड़े के नीचे  
 झाड़ू ले कर पीछे पड़ना  
 ठेंगे के नीचे होना  
 तलवार म्यान से बाहर रहना या होना  
 तलवों के नीचे घाँसे बिछाना  
 तलवों के नीचे पड़ी होना  
 तह तक पहुँचना  
 तिस मास  
 तूण मास  
 तृणवत्  
 तृणवत् तजना  
 थरथर कांपना  
 दम भर में  
 दाँतों तले उंगली दबाना  
 दाँतों तले तिनका दबाना  
 दाँतों तले तिनका पकड़ना  
 दाँतों तले तिनका रखना  
 दाँतों तले तिनका लेना

## एक सी बासठ

दिल ओठों तक घाना,—खोलकर  
 दुनिया के ऊपर होना  
 दुम के पीछे लगे रहना  
 दूर करना  
 दूर की कौड़ी  
 दूर की कौड़ी लाना  
 दूर की बात होना  
 दूर की लेना  
 दूर की सुझना  
 दूर की हांकना  
 दूर बहाना  
 दूर से प्रणाम करना  
 दूर हटना  
 दौड़ में पीछे रह जाना  
 नख से सिख तक  
 नाक के नीचे  
 नाक तक  
 नाक से आगे न देख पाना  
 नाम के पीछे  
 निकट आना  
 निकट होना  
 निगाहों के नीचे आना  
 नीचे गिरना  
 नीचे गिराना  
 नीचे लाना  
 नीचे होकर रहना  
 नैन नीचे होना  
 पान पत्ते तक सीमित होना  
 पास न भटकने देना  
 पीछे

पीछे पड़ना  
 पीछे होलना  
 पीछे पैर देना  
 पीछे फिरना  
 पीछे लगना  
 पीछे हटना  
 पीछे होना  
 पीठ पीछे  
 पैर के नीचे की मिट्टी  
 पैर तले की चींटी होना  
 पैर पीछे न रखना  
 पैर पीछे न हटाना  
 पैर बाहर निकलना या निकालना  
 पैरों के नीचे की जमीन खिसकना  
 पैरों के नीचे की जमीन निकल जाना  
 पैरों के नीचे की मिट्टी खिसकना  
 पैरों तले कुचल देना  
 पैरों तले गंगा बहना  
 पैरों तले गरदन दबना  
 पैरों तले घास न जमने देना  
 पैरों तले चोटी दबना  
 पैरों तले दबे होना  
 पैरों तले पड़े होना  
 पैरों तले रौदना  
 पैरों तले लोटना  
 पैरों तले होना  
 प्राणों के साथ  
 बंधन के नीचे घाना  
 बला पीछे पड़ना  
 बात आगे बढ़ाना



एक सौ तिरसठ

बाहर की हवा लगना  
बाहर न जाना  
बाहर न होना  
बिना कण के भूसा फूटना  
बिना कण के भूसा फटकना  
बिना कान पूछ हिलाये  
बिना गूठली का मेवा  
बिना छांह के  
बिना तप के काशी पाना  
बिना दाम के खरीद लेना  
बिना दाम के गुलाम  
बिना दाम के गुलाम बनाना  
बिना दाम के बिक जाना  
बिना दाम के बश में करना  
बिना नाक का करना  
बिना पंख के उड़ना  
बिना पानी का करना  
बिना पानी की मछली  
बिना बात की बात  
बिना भीत के चित्र बनाना  
बिना मूछ का आदमी  
बिना मोल के गुलाम  
बिना मोल के चेरा  
बिना मोत मरना  
बिना सोंग पूछ का पशु होना  
बे-कलेजे  
बे-कहा  
बे-जड़  
बे-ज्ञान  
बे-नकेल का ऊंट

बे-पर की उड़ाना  
बे-पानी कर देना  
बे-पानी होना  
बे-पेदी का  
बे-पेदी का लोटा  
बे-मुंह का  
बे-लगाम  
बे-सिर पैर का  
बे-हाथ पैर का होना  
बे-हाथ होना  
भाग्य का कुप्रसंग दूर करना  
भाग्य का सम्मुख होना  
भाग्य का साथ देना  
भाग्य साथ होना  
भीतर की आँख फूटना  
मन खोलकर  
मन से दूर होना  
मुंह आगे  
मुंह के बल गिर पड़ना  
मुंह के बल बैठना  
मुंह सामने करना  
मुखलावार दृष्टि होना  
लाठी लेकर पीछे पड़ना  
बारबार न होना  
समझ के पीछे लाठी लिए घूमना  
समूल जाना  
सांस ऊपर-नीचे होना  
सामने आना  
सामने दृष्टि करना  
सामने बोलना

### एक सौ चौसठ

सामने मुंह कर बात न करना  
 सिर के बल नीचे आना  
 सिर से पैर तक  
 सिर से पैर तक घाय लग जाना,—जल जाना  
 हत्ये चढ़ना

हत्ये चढ़ाना  
 हा में हा मिलाना  
 हाथ अलग रखना  
 हाथ धोकर पीछे पड़ना  
 हृदय खोलकर

### समसित-पद युक्त मुहावरें

अंतर्मुख होना  
 अंध-कूप में डालना  
 अंध-भक्त  
 अंधेर-खाता  
 अग्नि-संस्कार करना  
 अग्नि-संस्कार होना  
 अघकचरी बात  
 अधोमुख होना  
 अनाप-शनाप  
 अभय-बाहु देना  
 अरण्य-रोदन  
 अर्थ-पिशाच  
 अलि-कान खुला रखना  
 आंख नीली-पीली करना  
 आंख लाल-पीली करना  
 आंख लाल-पीली होना  
 आकाश-पाताल एक करना  
 आकाश-पाताल का अन्तर होना  
 आकाश-पाताल छाना  
 आकाश-पाताल सोचना  
 आकाश-भेदी

आग-पानी में कूदना  
 आगा-पीछा करना  
 आगा-पीछा देखना  
 आगा-पीछा विचारना  
 आगा-पीछा सुझाना  
 आगा-पीछा सूझना  
 आगा-पीछा सोचना  
 आगा-पीछा होना  
 आटा-दाल का भाव बताना  
 आटा-दाल का भाव मालूम होना  
 आटा-दाल होना  
 आना-पाई शुद्ध होना  
 आशा पर तुषारापात होना  
 उछल-कूद दिखलाना  
 उतार-चढ़ाव  
 उधेड़-बुन  
 उधेड़-बुन में पड़ना  
 उपराबद्धी होना  
 उर-दाह होना  
 उलट-फेर  
 उलटी-सीधी समझाना



एक सौ पैंसठ

उलटो मुलटो पहना	कलम-बंद करना
ऊँच-नीच	कहनी-अनकहनी कहना
ऊँचा-नीचा	कहा-सुनी
ऊँची-नीची पचाना	कहा-सुनी होना
एक-तार	काट-कपट करना
एक-पेट	काट-छाँट
एक-रस	काट-पीट
एही-चोटी का जोर लगाना	कान-घाँस खोलकर
ओढ़ना-बिछौना होना	कान-कटाई होना
कंधी-चोटी करना	कानोंकान खबर न होना
कंधी-पट्टी करना	कानोंकान फँलना
कच्ची-पक्की कहना	काम-काज करना
कटिबद्ध होना	कामकाज की पक्की में पिसना
कठ-करेजा	कायाकल्प करना
कठ-पुतली की तरह नचाना या नाचना	कायाकल्प होना
कठ-पुतली होना	कालकूट मुंह
कठ-प्रेम	कालक्षेप करना
कठ-मुल्ला	काशी-करवट लेना
कड़े-दम होना	किया-कराया मिट्टी में मिलना
कतर-झोत करना	किये-कराये पर पानी फिरना
कन-बतियाँ	कुठाराघात करना
कन-रसिया होना	कुम्हड़-बतिया होना
कपाल-क्रिया कर देना	कुल-खोवन
कपोल-कल्पित	कुल-पालक
कमर-बंद डीला होना	कुल-टोका
कणंधार	कुल-तिलक
कर्ता-धर्ता	कुल-दीपक
कल-पुर्जा जानना	कुल-बोरन
कल-मुँहा	कूड़-मग्न होना
कलम-तोड़	कूप-मंडूक

## एक सौ छियासठ

कृपा-कटाक्ष  
 कृपा-दृष्टि बरसना  
 कृपणापण करना  
 कोल-जली  
 कोल-मांग से भरी रहना  
 खट-पाटी लगना  
 खट्टी-मीठी लगना  
 खरी-खोटी सुनना  
 खरी-खोटी सुनाना  
 खाक-पत्थर  
 खींचतान करना  
 खींचतान होना  
 खींचातानी करना  
 खींचातानी होना  
 खुले-आम  
 खुले-खजान  
 खेलने-खाने के दिन  
 खेलौ-खाई  
 गंगाजल होना  
 गंगाजली उठाना  
 गंड-जोड़ा होना  
 गंड-बंधन करना  
 गंड-बंधन होना  
 गजस्नान करना  
 गर्मागर्म  
 गलबांही डालना  
 गहने-कपड़े को रोना  
 गीदड़-भभकी देना  
 गुर-चीटा होना  
 गुण-ग्राहक होना

गूढ़-दृष्टि होना  
 गोबर-गणेश होना  
 गोरख-धंधा  
 घन-चक्कर  
 घर-आंगन होना  
 घर-धमंडी होना  
 घर-धूसना  
 घर-द्वार देखना  
 घर-फूंक  
 घर-फोड़ी  
 घर-बसा  
 घरबारी  
 घर-बैठा करना  
 घुस-पैठ होना  
 चड़ा-उपरी करना  
 चल-चलाव लगना  
 चलता-गुरजा घादमी  
 चला-चली  
 चलित-वृत्त  
 चादर-चूड़ी रख लेना  
 चिंता सागर में गोते खाना  
 चिकनी-चुपड़ी बातें करना  
 चित-चेता होना  
 चित-चोर  
 चितवन-बाण चलाना  
 चितवन-बाण लगाना  
 चित्र-धवरेली होना  
 चूल्हा-चक्की  
 चोर-बाजार  
 चोली-दामन का साथ



## एक सौ सड़मठ

छक्का-पंजा  
छत-काड़ ठहाका  
छन-छाया  
छपन-छुरी  
छान-बीन करना  
छान-परताल करना  
छिद्रान्वेषण करना  
छिपे-रुस्तम होना  
छोटाकशी करना  
छेल-बिकनिया  
जग-हंसाई  
जग-हंसाई कराना  
जबानी जमा-खर्च  
जमामार  
जय-सियाराम होना  
जिह्वाय होना  
जी-तोड़  
जी-बुझाऊ  
जीभ-चटोरी होना  
जोड़-तोड़ का  
भाड़-फूक कराना  
टुकड़-खोर  
टुकड़-गदाई  
टूटी-फूटी दशा  
टेढ़ी-सीधी सुनाना  
ठकुर-मुहाती कहना  
ठग-मुरी खाना  
ठग-बिद्या खेलना  
ठोर-ठांव  
ठोर-ठिकाना

तंग-दस्त होना  
तंग-दिल होना  
तंग-हाथ होना  
ताना-बाना उधेड़ देना  
ताव-पेंच खाना  
तिरिया-चरितार करना  
तिलाजलि देना  
तुबाफेरी करना  
तुबाफेरी होना  
तू-तू मैं-मैं करना  
तू-तू मैं-मैं होना  
तुण-जल  
तोड़-जोड़ करना  
तोता-चश्म  
तोर-मोर करना  
दंड-प्रणाम करना  
दंत-कटाकट  
दम-भांसा देना  
दम-भांसे में आना  
दम-दिलासा देना  
दमन-चक्र चलाना  
दल-बादल खड़ा होना  
दस-नम्बरी होना  
दस्तंदाजी करना  
दांत-काटी रोटी  
दांव-पेंच का आदमी  
दाग-बेल पड़ना  
दाना-पानी उठ जाना  
दाल-भात की तरह कबूलना  
दाल-भात में मक्खी पड़ना

एक सौ षट्सठ

दाहिना-बाया जानना  
दाहिने-बाये होना  
दिग्विजय करना  
दिल-चला  
दिल-जमई करना  
दिल-जोई करना  
दिल-फेंक  
दिलोजान से  
दीदा-दिलेर होना  
दृष्टि-तार बांधना  
दृष्टि-बंध खोलना  
दु-चिन्ता होना  
दुध-मुहा बच्चा  
दुध-मुहा होना  
दूध-काजी की तरह  
दूध-पानी की तरह  
दूध-पीता बच्चा  
दो-चार  
दोष-गुण न गिनना  
दोड़-घुप करना  
धारा-प्रवाह  
मक-कटो  
मक-घड़ी  
मख-शिल से  
मखर-बन्द करना  
मपा-नुला  
मपी-नुली बात कहना  
ममकस्वार होना  
ममक-मिर्च लगना  
ममक-मिर्च लगाना

ममक-मिर्च लपेटना  
ममकहराम होना  
ममकहरामी करना  
ममकहरामी होना  
मयन-पट रोकना  
मयन-फल  
मयन-वाण चलाना  
मरम-मरम होना  
मरमी-मरमी  
मशा-पानी करना  
मसौब-जले  
माक-आँख  
माक-कटाई  
माप-तोल करना  
माभी-लगा  
माम-धराई होना  
माम-निशा मिटा देना  
माम-निशान न होना  
माम-लेवा  
माम-लेवा पानी-देवा न होना  
नित्य-क्रिया  
निबुआ-नोन चटा देना  
निबुआ-नोन चाटना  
नींद-भूख भूल जाना  
नीर-शीर विवेक करना  
नेम-उपवास करना  
नेन-पटल दूर होना  
नेन-वाण मारना  
नोच-खसोट करना  
पंच-मुहाता करना



एक सौ उनहत्तर

पक्की-कच्ची बात  
पटा-फेर  
पड़-पतल होना  
पत-पानी जाना  
पत-पानी रह जाना  
पद-चिन्हों पर चलना  
पद-रज सिर पर चढ़ाना  
कल-पुरजे निकालना  
पर-लोक बिगड़ना  
पर-लोक बिगाड़ना  
परम-गति पाना  
परम-पद के अधिकारी होना  
परम-पद देना  
परम-पद पाना  
पलक-पांवड़े बिछाना  
पाणि-ग्रहण करना  
पाणि-ग्रहण होना  
पाद-पीठ बनना  
पान-पत्ता  
पान-पानी बंद होना  
पानी-पान को पूछना  
पिछ-लग्न होना  
पेंच-ताव खाना  
पेट-पीठ एक होना  
पेट-पोंछना  
पेंसा-जोड़ कोड़ी-पकड़ होना  
पोप-खीला होना  
पो-बारह करना  
पो-बारह होना  
प्यार-पगो

प्राण कंट-गत होना  
प्राण-प्यारा होना  
प्रातः-क्रिया करना  
प्रेम-रस में पगी हुई  
प्रेम-रस में लिपटी हुई  
प्रेम-रस में सनी हुई  
प्रेम-मुख से फूले होना  
फटे-हाल  
फांके-मस्त  
बंदर-धुड़की देना  
बंदर-बांट  
बक-ध्यान लगाना  
बक-ध्यानी  
बगला-भगत होना  
बगला-भक्ति  
बटुक-विलासी  
बट्टे-खाते जाना  
बड़-बड़ कर बातें करना  
बत-कहा  
बत-चल  
बत-बढ़ाव करना  
बड़-बोला  
बड़-भागी  
बड़े-छोटे  
बड़-बोला  
बनी-बुनी बात  
बम-गोला गिराना  
बातघाई-गई करना  
बात घाई-गई होना  
बात बड़-बोली लगना

एक सौ सत्तर

बाप-दादा की हो जाना  
 बारह-सदी पढ़ाना  
 बाहु-बल तोलना  
 बिगड़े-रिल होना  
 बीच-खेत  
 बीच-बाजार  
 बीजारोपण करना  
 बोरिया-बंधना छोड़कर भागना  
 बोरिया-बंधना बांधना  
 बोरिया-बंधना समेटना  
 बोरिया-बंधना सम्हालना  
 बोरिया-बकचा लादना  
 बोहनी-बट्टा होना  
 भगीरथ-प्रवास करना  
 भरमा-भरमी  
 भव-ताप निवारण करना  
 भव-नाश काटना  
 भव-बंधन काटना  
 भव-बंधन खोलना  
 भव-बंधन छूटना  
 भव-सागर तरना  
 भव-सागर पार करना  
 भाई-चारा  
 भाग-दोड़ की हिन्दगी  
 भाग्य-उपड़ी  
 भाग्य-दशा खोलना  
 भाग्य-लक्ष्मी सो जाना  
 भाषा-बद होना  
 भूमिष्ठ होना  
 भेड़-बान चलना,—चलाना

भेड़िया-धसान होना  
 भैया-चार  
 भूक्षेप करना  
 मक्खी-चूस होना  
 मछली-हट्टा बनाना  
 मन-गदन्त  
 मन-चला  
 मन-चीती होना  
 मन-बड़ावन  
 मन-बीली  
 मन-मांगी  
 मन-बचन-कर्म से  
 मर-भूखा  
 मर्म-वेधी  
 मस्त-मोला  
 महा-भारत  
 महा-रथी  
 माई-बाप समझना  
 माई-बाप होना  
 मातम-पुरसी करना  
 माल-मलीदा उड़ाना  
 मिजाज-पुरसी करना  
 मिली-भगत  
 मीन-मेष करना  
 मीन-मेष निकालना होना  
 मुंह-अंधरे  
 मुंह का उतार-चढ़ाव  
 मुंह-चोर  
 मुंह-जोर  
 मुंह-तोड़ जवाब देना



एक सो एकहत्तर

मुह-देना  
मुह-देखी कहना  
मुह-फट  
मुह-बोली  
मुह-मांगा मिलना  
मुह-मांगी मुराद मिलना  
मुह-लगा  
मुह से कच्ची-पक्की निकालना  
मुल-पात्र  
मुट-मरही  
मुर्दा-दिल  
मुहा-मुह  
मुग-नृणा  
मै-मेरा करना  
मै-मेरी करना  
मोटा-महीन  
मोम-दिल  
मोर-नोर  
यम-पुर को घर बनाना  
यम-यातना होना  
रंग-रुंग  
रंग-भूमि में उतरना  
रंग-राचा  
रंग-राता  
रगड़-भगड़ मचाना  
रण-बांकुरा  
रक्त-जल होना  
रस-बोरी होना  
राई-नोन उतारना  
राई-नोन करना,—बारना

राई-रत्ती  
राई-रत्ती से परिचय रखना  
रात-दिन  
रात-दिन एक करना  
रात-दिन का अन्तर होना  
राम-कहानी  
राम-कहानी कहना  
राम-राज्य  
राम-बाण होना  
राह-रस्य करना  
रुवा-मूला  
रूप-माधुरी में सने होना  
रूप-राशि होना  
रेल-रेल होना  
रोटी-कपड़ा  
रोटी-दाल चलना  
रोटी-दाल से लड़ना  
रोटी-पानी की चिन्ता होना  
रोटी-पानी में लगना  
रोटी बेंटी करना  
रोटी बेंटी का व्यवहार  
रोमावली लड़ी होना  
लंगोटा बंद  
लंगोटिया-पार होना  
लंबा-चोड़ी  
लंबी-चोड़ी बात  
लकड़-तोड़ होना  
लक्ष्मी-बाहन होना  
लगी-लिपटी कहना  
लड़क-बुढ़ि करना

एक सो बहतर

लाग-डाँट करना  
लाग-डाँट पड़ना या होना  
लाग-लपेट  
लात-जूता चलना  
लात-जूते से बात करना  
लाम-काफ करना  
लाल-पीली आँखें दिखाना  
लाल-बुझकड़ होना  
लुब्बा-लुगाड़ा होना  
ले-उड़ा होना  
लेई-कुचेई  
लेला-तोला  
लेन-देन  
लोहा-लट्टु  
बचन-बाण से मारना  
बरद-हस्त होना  
बस्त्रामोचन करना  
विचार-सागर में डूबना  
विधि-गति वाम होना  
विधि-गति विपरीत होना  
विधि-गति सम्मुख होना  
विष-फल होना  
वैशाख-नन्दन होना  
शनि-दृष्टि पड़ना  
शाखोन्चार करना  
शेर-दिल  
सफेद-पोश  
सफेद-पोशी  
समर-सेज पर सोना  
साँठ-गाँठ होना

साँप-छलूंदर की गति होना  
सिक्का-बंद  
सिद्ध-हस्त  
सिर-आँखों के बल करना  
सिर-आँखों पर बैठाना  
सिर-आँखों पर रखना  
सिर-आँखों पर रहना,—होना  
सिर-आँखों से  
सिर-चढ़ा  
सिर-ताज  
सिर-तोड़ कोशिश  
सिर-दर्द  
सिर-धरा  
सिर-पक्की करना  
सिर-पूछ न होना  
सिर-पैर न होना  
सिर-पैर समझ में आना  
सिर-फिरा  
सिर-माघे चढ़ाना  
सिर-माघों पर  
सिर-मौर  
सीना-जोरी करना  
सुधा-रस में बोरी  
सुनती-उड़ती बात  
सुर-घाम जाना  
सुर-पुर की राह लेना  
सुर-पुर सिधारना  
मुल्लं-रु बनना  
सूचीभेद्य अंधकार  
स्नेह-भीना



### एक सौ तिहत्तर

हंस-कोए का साथ होना  
हंस-मुख होना  
हंसी-खेल होना  
हट्टी-तोड़ परिश्रम  
हथ-कंड़ा  
हथ-फेर  
हथ-फेर रुपये  
हथ-लपक होना  
हथ-लेवा होना  
हम-प्याला होना  
हराम-घाट उतारना  
हवा-खोरी  
हस्तक्षेप करना  
हस्त-रेखा होना  
हाथ-खर्च होना  
हाथ-पांव चलना,—चलाना  
हाथ-पांव जोड़ना  
हाथ-पांव डाल देना  
हाथ-पांव न चलना

हाथ-पांव फूल जाना  
हाथ-पांव बचाना  
हाथ-पांव मारना  
हाथ-पांव ( पैर ) हिलाना  
हाथ-पैर कट जाना  
हाथ-पैर कापना  
हाथ-पैर का मेल  
हाथ-पैर गलना  
हाथ-पैर छोड़े देना  
हाथ-पैर पड़ना  
हाथ-पैर मारना  
हाथ-पैर सम्हालना  
हाथ-पैर होना  
हाथा-बांही करना,—होना  
हाथों-हाथ  
हाथों-हाथ लेना  
हाथ-तोबा मचाना,—होना  
हुक्का-पानी बंद करना,—होना

### मुहावरे की तरह प्रयुक्त पूरे वाक्य

अड़ाई चावल की खिचड़ी पकाना  
अपना कान देखे बिना कोए के पीछे दौड़ना  
अपना घर छोड़ कर घूरा बुझाना  
अपना तमाचा अपने मुंह पर पड़ना

अपना दूध छोड़ कर खारा पानी पीना  
अपना बोया घास काटना  
अपनी खिचड़ी अलग बनाना  
अपनी डफली अपना राग होना

## एक सौ बौहत्त

अपनी तीन छटांक की अलग पकाना  
 अपनी नाक कटाकर दूसरों का असगुन मनाना  
 अपने मरे बिना स्वर्ग न मिलना  
 अपने मुंह मिथा-मिट्ट बनना  
 अपने हाथों पैर पर कुल्हाड़ी मारना  
 घवा की तरह छाती सुलगना  
 अघर्षियों की लूट और कोयलों पर मुहर  
 आगे नाथ न पीछे पगहा होना  
 आधा तीतर आधा बटेर होना  
 आम खाने से काम होना, गुठली गिनने से नहीं  
 इतना बड़ा मुंह रह जाना  
 इधर कुआं उधर बावड़ी होना  
 इस कोठे का घान उस कोठे में करना  
 उंगली में लहू लगाकर शहीद बनना  
 ऊंट की कोई कल सीधी न होना  
 ऊपर की सांस ऊपर, नीचे की नीचे रहना  
 एक कान से सुनकर दूसरे से निकाल देना  
 एक बावल से बटलोई भर का अंदाज लगाना  
 एक डेले से दो चिड़िया मारना  
 एक पान के दो टुकड़े करके खाना  
 एक पैर यहां एक पैर वहां  
 ऐसी की तैसी  
 ओखली में सिर देकर मूसलों को न गिनना  
 ओखली में सिर देकर मूसलों से न डरना  
 ओखली में सिर देकर मूसलों से न बचना  
 ओढ़े कि बिछाये  
 घोर की घोर  
 करेला और नीम-चड़ा होना  
 काटो तो बदन में खून नहीं  
 कान देखे बिना कोए के पीछे दौटना

कान पड़ी आवाज न सुनाई देना  
 कानी उंगली के नाखून पर खीछावर होना  
 काने को काना कहना  
 काबुल में भी गधे होना  
 काला अक्षर भैंस बराबर  
 काली कमली पर दूसरा रंग न चढ़ना  
 काली किताब में नाम दर्ज होना  
 किसका मुंह है  
 किस खेत की मूली होना  
 किस चिड़िया का नाम होना  
 कुआं खोदना और पानी पीना  
 कुत्ते की पूछ सीधी न होना  
 कुल का दीपक बुझना  
 केले के बगल में बैर होना  
 केले के लिए ठीकरा तेज होना  
 कोटि बदन से बखान कर पाना  
 कोयले की दलाली में हाथ काला होना  
 कोआ धोने से बगुला होना  
 खतरे के मुंह में उंगली न डालना  
 खयाली धोड़े की बाग डीली करना  
 खरबूजे को देख कर खरबूजे का रंग पकड़ना  
 गंगा-जमुना में जब तक जल होना  
 गड़ड़ा खोदने वाले के लिए कुआं तैयार होना  
 गरीब की घरवाली का गांव भर की भावज होना  
 गले में डोल डालकर डंका बजाना  
 गांठ के पूरे आंख के अंधे होना  
 गिरगिट की तरह रंग बदलना  
 गुड़ खाना गुलगुले से परहेज करना  
 गुड़ न तीता होना न मीठा  
 गुड़ से मरे तो जहर न देना



एक सौ पचहत्तर

गहूँ के साथ घुन पिसना  
 घर की मुर्गी दाल बराबर होना  
 घर के भीतर कुआँ होना  
 घर में दिया जलाकर मसजिद में जलाना  
 घर में भूनी भांग न होना  
 घर से मड़ी अच्छी होना  
 घाट-घाट का पानी पीये होना  
 घूमे का जवाब घूमे से देना  
 घूरे को पलट कर हीरा खोजना  
 घोड़े का रोग बंदर के सिर पड़ना  
 चक्की के दो पाटों में पिसना  
 चलती गाड़ी पर पैर रखना  
 बलते बेल को अरई करना  
 चादर के बाहर पैर फैलाना  
 चादर देखकर पैर पसारना  
 चिड़िया का पूत नहीं  
 चित्त भी अपना पट भी धपना  
 चील के घोंसले से मांस छीनना  
 चुपड़ी और दो-दो  
 चुल्लू भर पानी को भी न पूछना  
 चूने की डिबिया से बाहर निकलना  
 चोटी का पसीना एड़ी तक आना  
 चोर की दाड़ी में तिनका होना  
 चोर के बदले साव को दंड देना  
 चोर-चोर मौसेरे भाई होना  
 चोर से चोरी करने को और साव से जागते रहने को कहना  
 चौथ के चांद की तरह छोड़ देना  
 चौरासी लाख योनि में भटकना  
 छठे-आठवें का सम्बन्ध होना  
 छत्तीस अंकेन का रिश्ता होना

छाये घर में आग लगाना  
 जब तक गंगा की धारा है  
 जमीन घासमान का अंतर होना  
 जितना पानी पिलावे उतना पीना  
 जितना बड़ा मुंह उतना बड़ा कौर  
 जितनी चादर उतना पैर फैलाना  
 जिस गांव में न जाना उसका पता न पूछना  
 जिस पत्तल में खाना उसी में छेद करना  
 जीभ पीपल का पत्ता होना  
 जूम्मा-जूम्मा आठ दिन दुनियाँ में आए होना  
 जैसा बोना वैसा काटना  
 जैसा मुंह वैसा बण्ड  
 जैसा मुंह वैसा बोड़ा मिलना  
 जैसा सूला सावन वैसा हरा भावों  
 जैसे जाना वैसे ही लौट आना  
 जो कहा जाय सो बोड़ा  
 डूंगर की ओट में पहाड़ छिपाना  
 डेढ़ ईंट की मस्जिद अलग करना  
 डाक के तीन पात होना  
 डोल के छन्दर पोल  
 तबले की बला बंदर के सिर जाना  
 तलवार पर मलमल का गिलाफ चढ़ा होना  
 तलवे की आग माथे तक पहुँचना  
 तलवों के तले चाँदी सा बिछा होना  
 तलवों से लगकर सिर में जाकर बुझना  
 ताली एक हाथ से न बजना, दो से बजना  
 तिनके की छोट में पहाड़ छिपाना  
 तीन खाना तेरह की भूख बनी रहना  
 तीन बुलाए तेरह धाना  
 तीन लोक से न्यारी मचुरा बसाना

## एक सौ छिहत्तर

छलके दूध से लाभ उठाना  
 तीर घाट मीर घाट  
 तुम डाल-डाल, तो हम पात-पात  
 तूण को बख और बख को तूण बनाना  
 तोते की तरह आँखें फेरना  
 तोते की तरह आँखें बदलना  
 दमड़ी की हड्डिया खोकर कुत्ते की जात पहचानना  
 दांतों के बीच जीभ की तरह रहना  
 बाल भात में मूसरचंद  
 दिन को दिन और रात को रात न समझना  
 दिल्ली दूर है  
 दोन की हाथ मोटी होना  
 दुख के बादल सिर पर मंडराना  
 दूध का दूध, पानी का पानी  
 दूध का पानी पानी का दूध करना  
 दूध की मक्खी की तरह निकाल फेंकना  
 दूध के जले का मट्ठा भी फूंक फूंक कर पीना  
 दूध के फेन को बख से तोड़ना  
 दूध देनेवाली गाय की लात खाना  
 दूधों गहाओ पतों फलों  
 दूर के डोल सुहावने लगना  
 दूसरे की पतल से कौर छीनना  
 दूसरों के घर में घाग लगाकर हाथ सेंकना  
 दूसरों के लिए कुआँ खोदनेवाले का खुद कुएँ में पड़ना  
 दूसरों के लिए गड़वा खोदने वाले के लिए कुआँ तैयार होना  
 देगची का एक आवल टटोल कर सब ज्ञान लेना  
 देने के नाम मुरली मनोहर होना  
 दो नौकाओं में बैठकर नदी पार करना  
 धरती पर रहनेवालों का आकाश चाटने का प्रयत्न करना  
 नंगे घाना नंगे जाना

नंगों के देश में घोबी का काम न होना  
 न दुधर के न उधर के  
 न घर के न घाट के  
 न दिन चैन न रात नींद  
 नक्कार खाने में तूती की भावाज होना  
 नभ दुह कर दूध चाहना  
 नह उंगली का दुखना न महा जाना  
 नहाते समय बाल भी न ससना  
 नहार के लिए गाय मारना  
 नाक मिट्टी में घिस-घिस कर मर जाना  
 नाल एक ही जगह गड़ी होना  
 नीम लगाकर आम खाना  
 नेकी कर कुएँ में डालना  
 नेकी कर दरिया में डालना  
 नोन-तेल-लकड़ी की चिंता होना  
 नौ दिन में अढ़ाई कोस चलना  
 नौ दो ग्यारह होना  
 नौ नगद न तेरह उधार  
 पंछी का पर भी न मार सकना  
 पंतेरी में पांच सेर की भूल करना  
 पखेरू का पर भी न मार सकना  
 पत्ते को देखना जड़ न देखना  
 पत्ते पर घपना मांस बिकवाना  
 पत्ते पर बैठकर पेड़ काटना  
 पत्थर के कलेजे का पानी होना  
 परदे की ओट से शिकार करना  
 परनाले का पत्थर चौबारे में लगना  
 परोसी घाली सामने से चली जाना  
 पर्वत को धूल और धूल को पर्वत बनाना  
 पल-पल युग के समान बीत जाना



एक सौ सठहत्तर

पलक के समान बीत जाना  
 पल्ला भाड़ कर अलग होना  
 पवन का भूसा होना  
 पान-फूल के आधार पर रहना  
 पानी में बस कर सगर से बँर करना  
 पीपल के नथ पर गुमान करना  
 पीपल के बन को दाहिना देना  
 पुष्प करना और कुएं में डाल देना  
 पूत के पांव पालने में नजर खाना  
 पेट की आंत भीतर सिमट जाना  
 फूटी सहना आंजी न सहना  
 बंदर का आदी का स्वाद न जानना  
 बंदर की बला तबेले के सिर पड़ना  
 बकरे की मां का खैर मनाना  
 बछड़े का खूटे के बल उछलना  
 बबूल लगाकर आम बाहना  
 बरफी खाने के बाद गुड़ खाना  
 बहती गंगा में हाथ धोना  
 बहती नदी में पांव पखारना  
 बहत्तर घाट का पानी पीये होना  
 बांस की जड़ में घमोई होना  
 बाट जोहते आँखें पथराना  
 बाप-दादा का नाम डूबना या डूबाना  
 बाप-दादा का नाम मिटना या मिटाना  
 बाबा आदम के वस्त्र की  
 बाबा आदम निराला होना  
 बासी भात में खुदा का हिस्सा होना  
 बिल्ली के गले में घंटी बांधना  
 बिल्ली के भाग्य से छीका टूटना  
 बड़े मुंह मुहासा होना

बह्म का अपने हाथों संवारना  
 भविष्य काला होकर सामने नाचना  
 भाड़ लीप कर हाथ कात्थ करना  
 भीतर की आँखें अंधी होना  
 भुस में आग लगाकर तमाशा देखना  
 भूढ़ के खेत पर गोता मारना  
 भैंस के घागे बीन बजाना  
 भ्रम की यवनिका फटना  
 भ्रम के हिंदोरे में झूलना  
 मलमल में गाड़ें का पैबन्द लगाना  
 मलाने के पत्ते से मुंह पोंछना  
 मगर से बँर कर पानी में रहना  
 मणि फेंक कर धूल बांधना  
 मन में भाना पर मूंडी हिलाना  
 ममता के हजार दांत होना  
 मरने पर भी नहीं  
 मायके की जूती से खुशबू आना  
 मार-मार कर वैद्य बनाना  
 मिर्चा की जूती मिर्चा के सिर करना या होना  
 मिथी की डली दिखाकर विष देना  
 मीठा-मीठा गप्प करना, कड़वा-कड़वा घू करना  
 मुंह में और पेट में और होना  
 मुंह में तुलसी रखकर बात करना  
 मुंह में राम बगल में छुरी होना  
 मुंह से श्री या कृष्ण न कहना  
 मृत्यु की छाया सिर पर मंडराना  
 रग-रग में घुंघरू बज उठना  
 रस्ती जल जाने पर भी बल बना रहना  
 राई का पहाड़ और पहाड़ का राई करना  
 रानी का रुठकर अपना रनिवास लेना

## एक सौ बठहत्तर

रुई के बादल की तरह उड़ जाना  
 रोड़ कुआँ खोदना, रोड़ पानी पीना  
 रोड़ा बरसाते नमाज गले पहना  
 लज्जा को जूतों से मार कर निकाल देना  
 लटा हाथी भी नौ लाख का होना  
 लाभ के लोभ में मूल भी गंवाना  
 लेना एक न देना दो  
 लो दही लाख दही वाली बात होना  
 लोक-साज की लोई उतार फेंकना  
 वधिका की बांसुरी का मृग बनना  
 विरह का जंगल दूर होना  
 बँस के आगे भेद कैसा  
 शेर की माँद में हाथ डालना  
 शेर बकरी का एक घाट पानी पीना  
 शोभा की नदी उमड़ना  
 सब धान बाइस पैसेरी होना  
 सहस्र मुँह से भी वर्णन न कर पाना  
 साँप के बिल में हाथ डालना  
 साँप के मुँह की छछूंदर होना  
 साँप के मुँह में उँगली डालना  
 साँप निकल जानेपर तकीर पीटना  
 साँसे की सुई का ठेले पर सदन  
 सात जनम में भी नहीं  
 सात राजाओं को साक्षी देना  
 सात बार नौ स्नोहार होना  
 सामने की परोसी वाली छिन जाना  
 सिंह की मूँछ पर हाथ फेरना  
 सिंह के मुँह में उँगली देना  
 सिंह के मुँह में सिर देना

सिर गाड़ी पैर पहिवा करना  
 सिर पर एक बाल भी न बचना  
 सिर पर मुसीबतों का टोकरा पटक देना  
 सिर पर बिपत्ति का बितान तानना  
 सिर पर सफलता का मुकुट चढ़ना  
 सींग कटाकर बछड़ों में मिलना  
 सुख का हिंडोला झूलना  
 सुख की नींद सोना  
 सुधाकर लिखते राह लिख जाना  
 सुई के नाके से हाथी निकलना  
 सूखते धान में पानी पहना  
 सूरज के सम्मुख जुगनु  
 सोलह दूने घाठ का पहाड़ा पढ़ाना  
 सौ कसाई का एक कसाई  
 सौ बात की एक बात  
 सौ मुनार के बराबर एक लोहार की करना  
 स्वर्ग के पथ पर पैर देना  
 हंस का भाग कोए द्वारा लिया जाना  
 हंस बनाते-बनाते कौघा बना देना  
 हथ्या का टीका माथे पर होना  
 हरदी चूने सा एक रंग हो जाना  
 हरें फिटकिरी के बिना रंग चोखा होना  
 हरें लगे न फिटकिरी  
 हन्दी की कुटी गांठ होना  
 हांडी के चावल का पता होना  
 हाथ में दिया होते कुएं में गिरना  
 हाथी के खाए कंध होना  
 हीरे का रोजगार करने के बाद कांच देखना  
 होनहार पेड़ के पत्ते हरे होना



एक सौ उन्चासो

विविध मुहावरें

(ध्वन्यात्मक, देशज, अस्पष्ट शब्द या अर्थ तथा संदिग्ध प्रयोग)

अंधेरा कुप  
अकड़-तकड़  
अटकल-पच्चू  
अटवास-अटवास लेकर पड़ना  
अलल्ले तलल्ले खर्च  
आप-बाप  
आप-बाप बकना  
आप-बाप-साथ उड़ा देना  
आकाश-पाताल के कुलाबे मिलाना  
आग-बबूला होना  
आफत का परकाला  
इत्ते-पित्ते जलना  
उड़नघाई बताना या होना  
उड़न छू होना  
उघल-पुघल  
उपरकट्टू बात  
उलटी-मुलटी बात  
ऊनकी दून करना  
ऊलजललू बकना  
एक ही ताक  
ऐरे गैरे नत्थू खैरे  
घोने-पीने करना  
घोने-पीने बेचना  
कंगाल-टिरे होना  
कनफूसकियां लेना  
कल आना  
काटे का होना

काब-काब करना  
कानाटेरी देकर मुतना  
कानाफुस्की करना  
काफिया तंग करना  
किलकिल चुकाना  
खवाखच भरा होना  
खवाखच मचना  
खटखट होना  
खाता-पीता होना  
खातिर जमा रहना  
खाती करना  
खाना खराब करना  
खोरु खोद कर भिड़ना  
गच्चा खाना  
गच्चे में शालना  
गटगट मुनना  
गड्ड-मड्ड करना  
गप्पा देना  
गलचोर करना  
गिने-मिने  
गुरु-घंटाल होना  
गुलगपाड़ा होना  
गुलछरें उड़ाना  
गोलमटोल बात  
चपरगट्टू बनाना  
ची करना  
ची-चपड़ करना

## एक सी घस्सी

ची बोलना  
 चू करना  
 चू तक न करना  
 छलछंद करना  
 छलछंद का छलछंदर छू जाना  
 छलछंद छूना  
 छिया-छिया होना  
 छी-छी करना  
 छू-मंतर होना  
 इमीन आसमान के कुलाबे मिलाना  
 जार-जार घांसू बहाना  
 जिस कल बंटाए बैठना  
 जी लोट-पोट होना  
 भगड़ा-भंटा  
 भाँव-भाँव होना  
 भोल की बात  
 भोल में पड़ना  
 भौड़ होना  
 टगी लगना  
 टरी होना  
 टस से मस न होना  
 टाय-टाय मचाना  
 टिर-पिर करना  
 टिरें निकल जाना  
 टीप टाप होना  
 टुकुर टुकुर ताकना  
 टुटपुं जियां होना  
 टें-टें करना  
 ठक रहना या होना  
 ठगा सा

ठीया ठिकाने लगाना  
 ठूठ समुची  
 डोलडाल से हो घाना  
 ततो-धम्भो करना  
 तार कुतार होना  
 तिड़ी भूल जाना  
 तुकी-ब-तुकी जवाब देना  
 तुरी यह  
 तू-तुकार करना  
 तू-तुकार होना  
 तोबा-तिल्ला मचाना  
 पलपल पिलपिल होना  
 धुड़ो-धुड़ी करना या होना  
 दाँत खिसियाव पट्टी में निकलना  
 दाँता-किलकिल होना  
 दुर-दुर करना  
 दुर-दुर मारी होना  
 दो टप्पी बात  
 धमाचोकड़ी मचाना  
 धमाचोकड़ी होना  
 धाड़ मांकर रोना  
 धीगा-धीगी करना  
 धील-धप्पा होना  
 नंगाभोरी लेना  
 नकनकी बजवा देना  
 नकुआ जाना  
 ननू नच  
 नोक-भोंक होना  
 पढ़-पत्थर होना  
 पिड़ी बोल जाना



## एक सौ एक्यासी

फफक-फफक कर रोना

फफेड़ना

फिट्टा मुंह

फिसिर-फिसिर चलना

फिसिर-फिसिर होना

फुटानी निकल जाना

फेरन-फारन

बग छुट भागना

बगटुट भागना

बमबख मचना

बमबख मचाना

बद में

बारह-बार करना,—होना

बुक्का फाड़ कर रोना

बूम मारना

बे-ते करना

बोली-ठोली

भड़भड़िया व्यक्ति

मन कसर-मसर करना

मलियामेट कर देना

महनामय मचाना

मिनमिन करना

मुंह पाट होके पड़ना

रफूचकर होना

रास घाना

रेट मारना

लंगी लगाना

लटपट होना

लटपट होना

लबड़-धों-धों करना

लबड़-धों-धों होना

लल्ला जानना दहा न जानना

लल्लो चप्पो करना

लस्टम पस्टम

लू-लू बोलना

सांय-सांय बात करना

सिट्टी गुम होना

गिट्टी पिट्टी गुम होना

सिट्टी भूलना

सिप्पा भिड़ना

सी करना

सी-सी सटकना

हक्का-बक्का रह जाना

हट्टा-कट्टा

हटतार होना

हा-हा खाना

हा-हा ही-ही करना

हर हो जाना

हुरे बोलना

हुरा उड़ाना

एक सौ ब्यासी

## अप्रयुक्त मुहावरों के कुछ दृष्टांत

अंग टूटना  
अंग तोड़ना  
अंगड़ाई लेना  
अंगार पर चलना  
अंगार बरसना  
अंगूठी का नगोना होना  
अंगूर खट्टा होना  
अंचल पसारना  
अंजर-पंजर डौला करना  
अंत समय होना  
अंतर्द्विर्वा कुलबुलाना  
अंतरंग होना  
अंत्येष्टि करना  
अंदर की आंख खुलना  
अंधकार करना  
अंधकार का युग  
अंधा आइना  
अंधानुकरण  
अंधी सरकार  
अंधे को अंधा कहना  
अंधे को धिराग दिखाना  
अंधे को दो आंख  
अंधे बहुरे का संदेश  
अंधेर-नगरी  
अंधेरा पाश  
अंधेरे में डेला फेंकना  
अंधेरे में रास्ता टटोलना

अंधेरे में हाथ मारना  
अकाल पड़ना  
अकल का अजीर्ण होना  
अकल का दीवाला निकालना  
अकल का पूरा  
अकल के पीछे लट्ठ लिए फिरना  
अकल ठिकाने करना  
अगर-मगर करना  
अग्नि-परीक्षा  
अर्चभो का बच्चा  
अटकलपच्चू भिड़ाना  
अम्ल-जल उठ जाना  
अपना गीत गाना  
अपना पैसा खोटा होना  
अपने दही को खट्टा न कहना  
अपने रास्ते या हक में काटे बोना  
अब-तब लगना  
अशरफी कदम  
अस्मत्-लूटना  
आंख-कान से दुस्त होना  
आंख गड़ी होना  
आंख खोलकर देखना  
आंख दबाना  
आंख मीचना  
आंख में  
आंख में खून उतर घाना  
आंखें लाल होना



## एक सौ तिरासी

आँखों के आगे से परदा हट जाना  
 आँखों में न ठहरना  
 आकाश-कुसुम होना  
 आकाश चढ़ना  
 आकाश टूट पड़ना  
 आग पर लोटना  
 आग-पानी का बैर  
 आग-फूस का बैर  
 आग फूंकना  
 आग-भड़काना  
 आज-कल होना  
 आधी जवान भी न कहना  
 आप-आप की पड़ना  
 आवहवा बिगड़ना  
 आवाज दबना  
 आसमान पर धूकना  
 इति-श्री करना  
 इतिहास के काले पन्ने  
 इधर-उधर की बात करना  
 ईद का चांद  
 ईमान बिगाड़ना  
 ईमान बेचना  
 उंगली करना  
 उंगली पकड़ना  
 उंगली रखना  
 उट्टी बोल जाना  
 उठलू का चुल्हा  
 उड़ाऊ पूत  
 उन्नीस-बीस का फर्क  
 उलट-फेर की बातें करना

उलटे बाग बरैली ले जाना  
 उल्टी खोपड़ी  
 उल्टी सांस चलना  
 उल्टी सांस लेना  
 ऊँचा पीड़ा देना  
 ऊपर मरना  
 ऊपर से नीचे तक  
 ऊपरी खर्च  
 ऊग चढ़ना या चढ़ाना  
 एक बने की दो दाल  
 एक-एक ग्यारह होना  
 एक की दस मुनाना  
 एक टांग से खड़े रहना  
 एक नजर देखना  
 एक पत्तल में खाने वाले  
 एक पेट के  
 एक ही तराजू पर तौलना  
 छोड़ लेना  
 काँडा हो जाना  
 कचूमर निकालना  
 कचोड़ी काटना  
 कच्चा करना  
 कच्चा गिरना  
 कच्ची गृहस्त्री  
 कटे पर नमक छिड़कना  
 कठ-हुज्जती  
 कड़वा-कड़वा धू  
 कड़ी का उबाल  
 कनखी मारना  
 कफन फाड़ कर उठ खड़ा होना

## एक सौ चौरासी

कब खोदना  
 कल-पुर्जा बीला होना  
 कल से  
 कलई न लगना  
 कलेजा दो टुक होना  
 कमीटी पर पूरा उतरना  
 कांटा दूर होना  
 कागज रंगना  
 काम-चोर होना  
 काम बंद होना  
 काम बढ़ाना  
 काया-छाया का सम्बन्ध  
 काल-कोठरी  
 काला-पानी  
 कौल-कांटे से दुस्त  
 कुत्ता काटना  
 कैंची करना  
 कैंची चलाना  
 कोम भरना  
 कोठी करना  
 कोठी चलना  
 सजाने में साँप  
 खटाई में डालना  
 खट्टे-मोठे दिन  
 खड़ा रूपया  
 खड़ी दोपहर  
 खयाल से उतरना  
 खयाली दुनिया  
 खस्ता हाल  
 खा-पका डालना

खाई से निकल कर खंदक में गिरना  
 खाना न पचना  
 खानेके दाँत घोर दिखाने के और  
 खाली गगरी छलकना  
 खिचड़ी करना  
 खींच कर पानी पीना  
 खूजली उठना  
 खुला अधिवेशन  
 खुले बाजार  
 खुटे बंधी गाय  
 खून-पानी एक करना  
 खेत घाना  
 खेती मारी जाना  
 खोआ कूटना  
 खोपड़ी खाली करना  
 खोमचा लगाना  
 ख्वाब में भी नहीं  
 गंगा बहना  
 गंगा-लाभ होना  
 गदहे को बाप बनाना  
 गरमागर्मी होना  
 गरमी उतर जाना  
 गर्त में ढकेलना  
 गला चटकना  
 गला चलना  
 गले में बाँस होना  
 गांधी बनना  
 गागर में सागर  
 गाजर-मूली समझना



एक सौ पञ्चाननी

गिनती के  
गुड़-गोबर होना  
गुड़-गोंडठा होना  
गुस्सा नाक पर रहना  
गूंगे-बहरे का संदेश  
गूलर का फूल  
गोद में  
गोना देना  
घर का रास्ता नाचना  
घर-दमाद  
घर-फूँक सौदा  
घिसे-पिटे  
घोंघा के घोंघा  
घोंट कर पी जाना  
चाँद पर घूमना  
चाँद पर घूल डोलना  
चाँदी के जूते से मारना  
चाँदी की मार  
चार के कंधों पर लदने के दिन  
चार घर के भौरा  
चिकने घड़े पर पानी पड़ना  
चिट्टा लड़ाना  
चिट्ठी आ जाना  
चिड़िया फँसाना  
चिल्ल-पों मचाना  
चूड़ियाँ ठंडी करना  
चूल हिला देना  
चेक काटना  
चोका-बर्तन करना  
छंट जाना

छाछ फूँक कर पीना  
छाती तान कर चलना  
जवान में लगाम न होना  
जयचंद होना  
जहर की पुड़िया  
जहाँ सींग समाये वहाँ जाना  
जान सूखना  
जिन्दगी पहाड़ होना  
जिगरी शेस्त  
जीवन के लाले पड़ना  
जूता लगना या लगाना  
जूतों में दाल बटना  
भाड़ू लग जाना  
भूँठ के पुल बाँधना  
टका सा मुँह लेकर रह जाना  
टके सेर बिकना  
टपक पड़ना  
टूटा हाथी  
टेम्परेचर चढ़ जाना  
ठंड खा जाना  
डगमगाती नैया  
डूबते को तिनके का सहारा  
डूँपोड़ी खोद डालना  
डूँपोर शंख होना  
तकदीर सो जाना  
बपोड़ी पिट जाना  
बेली का मुँह खोल देना  
दरिया-दिल होना  
दुधार-भाय  
दूज का चांद होना

एक सौ छिपासी

धुएँ का हाथी  
धूल भाड़ कर अलग हो जाना  
नम्बर एक के  
नरक का कीड़ा  
नाई को देखकर हजामत बढ़ना  
नाड़ी डूबना  
नाड़ी पकड़ना  
नाम खोना  
नाम पर पानी फिरना  
नाम लगाना  
नाम-हंसाई  
निगाह टकराना  
निग्यानवे के फेर में पड़ना  
निरखर भट्टाचार्य  
नींव हिल जाना  
नील का टीका लगाना  
पंखी उड़ जाना  
पते की कहना  
पानी की तरह चलना  
पानी की लकीर  
पानी भरना  
पायजामे से बाहर होना  
पाया कमजोर होना  
बंदर के हाथ में आईना होना  
बाजार गिरना  
बाजार चढ़ना  
बाजार डीला होना  
बाट का रोड़ा  
बात उलझना  
बात उठना

बात नीचे न गिरने देना  
बात पक्की होना  
बात पचना,—पचाना  
बासी मुँह  
विस्तर पकड़ना  
बुद्धि पर पत्थर पड़ना  
बेवक्त की सहनाई बजाना  
भंडार करना  
भर मुँह की खाना  
भानुमती का पिटारा  
भीष्म प्रतिज्ञा करना  
भूत लौटना  
मन दौड़ना  
मंहगी में आटा गीला होना  
मामला पटाना  
मास्टर काटें  
मीठी आँच  
मीठी छुरी  
मील का पत्थर  
मीरजाफर होना  
मुँह चढ़ना  
मुँह-पुच्छा  
मुँह फटना  
मैदान में कूद पड़ना  
मैदान में ठहरना  
रकम डूबना  
राह का भिलारी  
लंका में बिभीषण होना  
लहर चढ़ना  
लाठी बसना,—चलाना



## एक सौ सत्तासी

विष की पुड़िया  
विष बोलना  
सब्ज बाग मजूर घाना  
समय लद जाना  
सर्दी खाना  
सिंहासन डोलना  
सिर के बाल उड़ जाना  
सिर पर खून चढ़ना  
सिर रंगना  
सिर से कफ़ल बांधना  
सुबह शाम करना  
सोने का घर मिट्टी होना  
सोने का देश  
स्वर देना  
स्वर लगाना  
हंडिया चढ़ना  
हड्डी टूटना  
हड्डी तोड़ना  
हथियार उठाना  
हल्के हाथ

हल्ला बोलना  
हवा का रुख देखकर पीठ देना  
हां जी-हां जी करना  
हाजिरी बजाना  
हाट करना  
हाथ कड़ा पड़ना  
हाथ के पास  
हाथ के बाहर  
हाथ को हाथ न सूझना  
हाथ गर्माना  
हाथ भूटा पड़ना  
हाथ में मिठास होना  
हाथ रंगना  
हाथ लगे  
हिसाब रखना  
हुक्का भरना  
हैं हैं करना  
होठों पर लाना  
हो-हल्ता करना

## संकेत-तालिका

संकेत	पूरा विवरण	प्रस्तुत संस्करण एवं विशेष द्रष्टव्य
१. अशोक०—ह० प्र० द्वि०	अशोक के फूल—हजारी प्रसाद द्विवेदी सस्ता साहित्य मंडल, दिल्ली १९४८	चतुर्थ १९५५
२. अजय०—देव०	अजय की दायरी—डा० देवराज राजपाल एंड संस, दिल्ली १९६०	प्रथम १९६०
३. अतीत०—महादेवी	अतीत के चम बिन्—महादेवी वर्मा भारती भंडार, प्रयाग १९४१	छठा २०१३ वि०
४. अना०—निराला	अनामिका—सूर्यकांत त्रिपाठी निराला भारती भंडार, प्रयाग १९३७	द्वितीय २००५ वि०
५. अपनी खबर—उग्र	अपनी खबर—पांडेय बेचन शर्मा उग्र राजकमल प्रकाशन, दिल्ली १९६०	प्रथम १९६०
६. अम्ब०—रा० बे०	अम्बपाली—रामबृक्ष बेनीपुरी बेनीपुरी प्रकाशन, पटना-६	संशोधित नवीन संस्करण १९५५
७. ईशा०—ईशा०	ईशा, उनका काव्य तथा रानी केतकी की कहानी—ईशा अल्ला खा : कमलमणि ग्रंथमाला कार्यालय, काशी १९८५ वि०	प्रथम १९८५ वि०; लेखक एवं संपादक—बजरत्न दास
८. इंस्टा०—भग० वर्मा	इंस्टालमेंट—भगवतीचरण वर्मा भारती भंडार, प्रयाग १९३६	चतुर्थ २००६ वि०
९. इस्क०—बोध	इस्कनामा—बोध नकछेदी तिवारी, इमराठ, शाहाबाद	रचनाकाल रीतिपुग
१०. कंकाल—प्रसाद	कंकाल—जयशंकर प्रसाद भारती भंडार, प्रयाग १९२६	अष्टम २०१३ वि०
११. कठ०—दे० स०	कठपुतली—देवेन्द्र सत्यार्थी एशिया प्रकाशन, नयी दिल्ली, १९५४	प्रथम १९५४
१२. कनु०—भारती	कनुप्रिया—धर्मवीर भारती भारतीय ज्ञानपीठ, काशी १९५९	प्रथम १९५९



एक सौ नव्वे

संकेत	पूरा विवरण	प्रस्तुत संस्करण एवं विशेष द्रष्टव्य
१३ कबीर—हृ० प्र० द्वि०	कबीर—हजारीप्रसाद द्विवेदी हिंदी ग्रंथ रत्ना० लि०, बम्बई १९६८ वि०	पंचम १९४५
१४ क० ग्रंथा०—कबीर	कबीर ग्रंथावली—कबीर नागरी प्रचारिणी सभा, काशी १९८७ वि०	चतुर्थ २००८ वि०; साक्षी, सबद एवं रमैनी; संपादक-श्यामसुन्दर दास; रचनाकाल—भक्तियुग
१५ क०—प्रेमचंद	कर्मभूमि—प्रेमचंद हंस प्रकाशन, प्रयाग १९३२	प्रथम १९३१
१६ कला०—पंत	कला और बूढ़ा चांद—मुमित्रानंदन पंत राजकमल प्रकाशन, दिल्ली १९५६	प्रथम १९५६
१७ कला०—उग्र	कला का पुरस्कार—पंडेय बेचन शर्मा उग्र आत्माराम एंड सन, दिल्ली १९५५	प्रथम १९५५
१८ कल्याणी—जैनेन्द्र	कल्याणी—जैनेन्द्र कुमार हिन्दी ग्रंथ रत्ना० कार्यालय, बम्बई १९४०	तृतीय १९५३
१९ कवि०—तुलसी	कवितावली—तुलसीदास गीता प्रेस, गोरखपुर	पंद्रहवां २०१५ वि०; रचना- काल—भक्तियुग
२० क० र०—सेनापति	कवित रत्नाकर—सेनापति हिन्दी परिषद, विश्वविद्यालय, प्रयाग १९३६	चतुर्थ १९४६; रचनाकाल- रीतियुग
२१ कामना—प्रसाद	कामना—जयशंकर प्रसाद भारती भंडार, प्रयाग १९८४ वि०	चतुर्थ २००४ वि०
२२ कुछ—५० पु० बरणी	कुछ—पदुमलाल पुन्नालाल बरणी इंडियन प्रेस, इलाहाबाद १९४७	प्रथम १९४७
२३ कुण्ड०—गिरधरदास	कुण्डलिया—राम गिरधर दास	रचनाकाल—रीतियुग
२४ कु०—दिनकर	कुशोत्र—दिनकर भार० सिन्हा, २००३ वि०	प्रथम २००३ वि०
२५ कुत्सी०—निराला	कुत्सी भाट—सूर्यकांत त्रिपाठी निराला गंगापुस्तक माला, लखनऊ १९३६	द्वितीय २००४ वि०
२६ केशव० (१)—केशव	केशव ग्रंथावली, भाग १—केशव दास हिन्दुस्तानी ऐकडमी, उत्तरप्रदेश, इलाहाबाद १९५४	प्रथम १९५४; रचनाकाल— भक्तियुग

एक सौ इक्यानवे

संकेत	पूरा विवरण	प्रस्तुत संस्करण एवं विशेष द्रष्टव्य
२७ केशव० (२)—केशव	केशव ग्रन्थावली, भाग २—केशव-दास हिन्दुस्तानी ऐकहमी, उत्तर प्रदेश इलाहाबाद १९५५	प्रथम १९५५
२८ गंगा०—उष	गंगा का बेटा—पांडेय वैचन शर्मा उष स्वरूप बदर्स, लजुरी बाजार, इन्दौर १९४०	प्रथम १९४०
२९ गबन—प्रेमचंद	गबन—प्रेमचंद हंस प्रकाशन, इलाहाबाद १९३१	उल्लेख नहीं
३० गीता०—तुलसी	गीतावली—तुलसीदास गीताप्रम, गोरखपुर	रचनाकाल—भक्तियुग; पद संख्या दी गई है
३१ गु० नि०—बा० मु० गु०	गुप्त निबन्धावली—बालमुकुन्द गुप्त गुप्त-स्मारक-ग्रन्थ प्रकाशन समिति, १४७, हरिसन रोड, कलकत्ता २००७ वि०	प्रथम २००७ वि०; सन् १८९० से १९०७ तक की रचनाएं संग्रहीत
३२ गुलेरी०(१)—गुलेरी	गुलेरी ग्रन्थ सङ्ग—चंद्रधर शर्मा गुलेरी नागरी प्रचारिणी सभा, काशी २००० वि०	प्रथम २००० वि०; जीवन- काल—सन् १८८३ से १९२२
३३ गु० कहा०—गुलेरी	गुलेरीजी की घमर कहानियाँ—चंद्रधर शर्मा गुलेरी, सरस्वती प्रेस, बनारस	तृतीय १९४५
३४ गोदान—प्रेमचंद	गोदान—प्रेमचंद सरस्वती प्रेस, बनारस १९३६	बारहवां १९५४
३५ गोली—चतुर०	गोली—चतुर सेन शास्त्री राजहंस प्रकाशन, दिल्ली, उल्लेख नहीं	प्रथम-सन् का उल्लेख नहीं
३६ घन० कवित्त—घना०	घनानंद कवित्त—घनानंद	प्रथम २००० वि०; संपादक— विश्वनाथप्रसाद मिश्र; रचनाकाल— रीतियुग
३७ चक्र०—दिनकर	चक्रवाल—रामधारी सिंह दिनकर उदयाचल, पटना १९५६	प्रथम १९५६; स्व-संकलित; रेणुका, ठुंकार, रसवन्ती, इंदु, गीत, सामभेनी, कुरुगोच, बापू, भूपछांह, घृष और धुंधा, रस्मि- रखी, नीम के पत्ते, दिल्ली एवं नीलकुसुम रचनाओं से संकलित



एक सौ बानबे

संकेत	पूरा विवरण	प्रस्तुत संस्करण एवं विशेष द्रष्टव्य
३८ चतुरी०—निराला	चतुरी चमार—सूर्यकांत त्रिपाठी निराला किताब महल, इलाहाबाद १९४५	द्वितीय १९४७
३९ चिंता० (१)—शुक्ल	चिंतामणि भाग १—रामचंद्र शुक्ल इंडियन प्रेस, इलाहाबाद १९१६	उल्लेख नहीं
४० चित्र०—भग० वर्मा	चित्रलेखा—भगवतीचरण वर्मा भारती भंडार, इलाहाबाद १९३४	सोलहवां २०१६ वि०
४१ चित्र०—कौशिक	चित्रशाला—विद्वन्मभरनाथ शर्मा कौशिक गंगापुस्तक माला, लखनऊ १९२४	तृतीय २००१ वि०
४२ चुभते०—हरिप्रोध	चुभते-चोपदे—अयोध्यासिंह उपा० हरिप्रोध हिन्दी साहित्य कुटीर, बनारस १९२४	प्रथम १९२४
४३ चेतन—अशक	चेतन—उपेन्द्रनाथ अशक अशक, ५, सूसरो बाग इलाहाबाद १९५२	प्रथम १९५२
४४ चोखे०—हरिप्रोध	चोखे-चोपदे—अयोध्या सिंह उपा० हरिप्रोध, हिन्दी साहित्य कुटीर, बनारस १९२४	नवीन संस्करण २००८ वि०
४५ चोटी०—निराला	चोटी की पकड़—सूर्यकांत त्रिपाठी निराला किताब महल, इलाहाबाद १९४६	द्वितीय १९४७
४६ जग०—पद्माकर	जगदिनोद—पद्माकर वाणी वितान, ब्रह्मनाथ, वाराणसी १९६२ वि०	द्वितीय २०१५ वि० ; सम्पादक— विद्वन्नाथप्रसाद मिश्र; रचनाकाल— रीतियुग
४७ जय०—गुप्त	जयदय-वध—मंथिलीशरण गुप्त साहित्य-भवन, चिरगांव भांसी १९१०	उनतालिषवां २०११ वि०
४८ जय०—जैनेन्द्र	जयवर्धन—जैनेन्द्र कुमार	उल्लेख नहीं
४९ जहाज०—इ० जोशी	जहाज का पंछी—इलाचंद्र जोशी राजकमल प्रकाशन, दिल्ली १९५५	प्रथम १९५५
५० ज्ञान०—यशपाल	ज्ञानधान—यशपाल विप्लव प्रकाशन १९४७	प्रथम १९४७
५१ भांसी०—बु० वर्मा	भांसी की रानी—बु० दावन लाल वर्मा मयूर प्रकाशन, भांसी १९४६	पंचम १९५४

एक सौ तिरानवे

संकेत	पूरा विवरण	प्रस्तुत संस्करण एवं विशेष द्रष्टव्य
५२ भूठा०(१)—यशपाल	भूठा-सच भाग १—यशपाल विप्लव कार्यालय, लखनऊ १९५८	प्रथम १९५८
५३ भूठा०(२)—यशपाल	भूठा-सच भाग २—यशपाल विप्लव कार्यालय, लखनऊ १९६०	प्रथम १९६०
५४ ठाकुर०—ठाकुर	ठाकुर शतक—ठाकुर भारत जीवन प्रेस	१९०४; संपादक—काशीप्रसाद; रचना काल—रीति युग
५५ ठेठ०—हरिऔध	ठेठ हिन्दी का ठाट अयोध्यासिंह उपा० हरिऔध हिन्दी साहित्य कुटीर, बनारस १८६६	नूतन संशोधित प्रथम संस्करण २०११ वि०
५६ तितली—प्रसाद	तितली—जयशंकर प्रसाद भारती भंडार, प्रयाग १९३४	छाठवां २०१५ वि०
५७ त्याग०—जैनेन्द्र	त्यागपत्र—जैनेन्द्र कुमार हिन्दी रत्नाकर प्रा० लि०, बम्बई १९३७	सातवां १९५५
५८ दूध०—दे० स०	दूधगाछ—देवेन्द्र सत्यार्थी राजकमल प्रकाशन १९५८	प्रथम १९५८
५९ देवकी०—रा० रा०	देवकी का बेटा—रांगेय राधव विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा १९५४	द्वितीय १९५६
६० दोहा०—गुलसी	दोहावली—गुलसीदास श्री सद्गुरु कुटीर, गोलाघाट, अयोध्याजी	प्रथम २०१५ वि०; रचनाकाल— भक्तियुग; दोहा संग्रह दी गई है
६१ धरती०—वि० प्र०	धरती अब भी घूम रही है—विष्णु प्रभाकर राजपाल एड संस, दिल्ली १९५६	प्रथम १९५६
६२ धूम०—उ० भट्ट	धूमशिला—उदयशंकर भट्ट गोतम बुक डिपो, दिल्ली १९४६	प्रथम १९४९
६३ ध्रुव०—प्रसाद	ध्रुवस्वामिनी—जयशंकर प्रसाद भारती भंडार, इलाहाबाद १९९० वि०	पन्द्रहवां २०१६ वि०
६४ नंद० ग्रंथा०—नंद०	नंददास ग्रंथावली—नंददास नागरी प्रचारिणी सभा, काशी २००६ वि०	दूसरा २०१४ वि०; सम्पादक— बजरत्नदास; रचनाकाल—भक्ति युग



एक सी चौरानवे

संकेत	पूरा विवरण	प्रस्तुत संस्करण एवं विशेष द्रष्टव्य
६५ नदी०—अज्ञेय	नदी के द्वीप— सन्धिदानंद हीरानंद वास्वायन अज्ञेय सरस्वती प्रेस, वाराणसी	तृतीय १९६०
६६ निर्मला—प्रेमचंद	निर्मला—प्रेमचंद हंस प्रकाशन, इलाहाबाद १९२८	दसवां १९६१
६७ निशि०—वि० प्र०	निशिकान्त—विष्णु प्रभाकर आत्माराम एंड संस, दिल्ली १९५५	प्रथम १९५५
६८ नूर०—भक्त	नूरजहाँ—गुरुभक्तसिंह भक्त गुरुदास एंड ब्रदर्स, आजमगढ़ १९३५	बारहवां संस्करण
६९ पंच०—गुप्त	पंचवटी—मैथिलीशरण गुप्त साहित्य सदन, विरगांव, भांसी १९२५	इकतिसवां २०१० वि०
७० पद०—जायसी	पदमावत—मलिक मुहम्मद जायसी साहित्य सदन, विरगांव, भांसी २०१२वि०	प्रथम २०१२ वि०; संपादक- वामुदेव शरण श्रववाल; खंड एवं चौपाई संख्या दी गई है; रचनाकाल—भक्तिकाल
७१ पद्म पराग—पद्म०शर्मा	पद्म पराग—पद्मसिंह शर्मा भारतीपब्लिशर्स लि० पटना १९८६ वि०	प्रथम १९८६ वि०
७२ पद्म० के पत्र—पद्म० शर्मा	पद्मसिंह शर्मा के पत्र—पद्मसिंह शर्मा आत्माराम एंड संस, दिल्ली-६ १९५६	प्रथम १९५६; संपादक—बनारसी दास चतुर्वेदी, हरिशंकर शर्मा
७३ पद्मा०—पद्माकर	पद्माभरण—पद्माकर वाणी वितान, ब्रह्मनाल, काशी १९९२वि०	द्वितीय २०१५ वि०; संपादक— विश्वनाथप्रसाद मिश्र; रचनाकाल— रीतियुग
७४ परल—जैनेन्द्र	परल—जैनेन्द्र कुमार हिन्दी ग्रंथ रत्ना० लि०, बम्बई-४ १९२६ या १९३०	नवम १९६०
७५ परती०—रेणु	परती परिकथा—कणीश्वर नाथ रेणु राजकमल प्रकाशन १९५७	प्रथम १९५७
७६ परि०—निराला	परिमल—सूर्यकान्त त्रिपाठी निराला गंगापुस्तक माला, लखनऊ १९३०	पंचम २००७ वि०

एक सौ पचासवे

संकेत	पूरा विवरण	प्रस्तुत संस्करण एवं विशेष द्रष्टव्य
७७ परीला०—श्री० दान	परीला गुरु—श्री निवास दाम मारवाड़ी टेडर्स एसोसियेशन, कलकत्ता, १८८४ वि०	द्वितीय
७८ पल्लव—पंत	पल्लव—सुमित्रानंदन पंत भारती भंडार, प्रयाग, १९२६	पंचम २००५ वि०
७९ पैतरे—प्रदह	पैतरे—उपेन्द्रनाथ अक्ष नीलाभ प्रकाशन, प्रयाग	प्रथम
८० प्र०पी०—प्र०ना०मि०	प्रताप पीयूष—प्रताप नारायण मिश्र	
८१ प्रिय०—हरिऔध	प्रिय प्रवास—अयोध्यासिंह उपा० हरिऔध हिन्दी साहित्य कुटीर, बनारस १९१४	अष्टम २०१० वि०
८२ प्रमसा०—ल० ला०	प्रेम सागर—लल्लू लाल भार्गव बुक डिपो, चौक, बनारस १८६७	द्वितीय संस्करण
८३ प्रेमा०—प्रेमचंद	प्रेमाश्रम—प्रेमचंद हंस प्रकाशन, इलाहाबाद १९२१	रचनाकाल १९१८-१९
८४ बल०—नागा०	बलचनमा—नागार्जुन किताब महल, इलाहाबाद १९५२	द्वितीय १९५६
८५ बाण०—ह० प्र० द्वि०	बाणभट्ट की आत्मकथा—हजारी प्रसाद द्विवेदी हिन्दी ग्रंथ रत्नाकर कार्यालय, बम्बई १९४६	द्वितीय १९५४
८६ बाहर०—देव०	बाहर भीतर—डा० देवराज राजकमल प्रकाशन, कापीराइट १९५४	कापीराइट १९५४
८७ बि० रत्ना०—बिहारी	बिहारी रत्नाकर—बिहारी लाल ग्रंथकार, शिवाली, बनारस १९२५	द्वितीय १९५५; सम्पादक—जगन्नाथ दास रत्नाकर; रचनाकाल-रीतियुग; दोहा संख्या दी गई है
८८ बुद्ध०—बच्चन	बुद्ध और नाचघर—हरवंशराय बच्चन राजपाल एंड संस, दिल्ली १९५८	प्रथम १९५८
८९ बुंद०—प्र० ना०	बुंद और समुद्र—अमृतलाल नागर किताब महल, इलाहाबाद १९५६	प्रथम १९५६
९० बोल०—हरिऔध	बोलचाल—अयोध्यासिंह उपा० हरिऔध हिन्दी साहित्य कुटीर, बनारस	द्वितीय २०१३ वि०



एक शो विधानबे

संकेत	पूरा विवरण	प्रस्तुत संस्करण एवं विशेष द्रष्टव्य
६१ बीने०—रा० रा०	बीने और पावल कृत—रांगेय राघव विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा १९५७	प्रथम १९५७
६२ बहा०—दे०स०	बहापुत्र—देवेन्द्र सत्याधी एशिया प्रकाशन, नयी दिल्ली १९५६	प्रथम १९५६
६३ भट्ट नि०—बा० भट्ट	भट्ट निबंधावली—बालकृष्ण भट्ट नागरी प्रचारिणी सभा, काशी २००४ वि०	प्रथम २००४ वि०
६४ भारती०—रा० रा०	भारती का संपूर्ण—रांगेय राघव विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा १९५४	द्वितीय १९५६
६५ भा० ग्रंथा० (१)— भारतेन्दु	भारतेन्दु ग्रंथावली भाग १—भारतेन्दु हरिश्चन्द्र नागरी प्रचारिणी सभा, काशी २००७ वि०	प्रथम २००७ वि०; संकलन एवं संपादन—बजरत्न दास; भारतेन्दु के १८ नाटक एवं निबंध
६६ भा० ग्रंथा० (२)— भारतेन्दु	भारतेन्दु ग्रंथावली भाग २—भारतेन्दु हरिश्चन्द्र नागरी प्रचारिणी सभा, काशी १९६१ वि०	द्वितीय २०१० वि०; संकलन एवं सम्पादन—बजरत्न दास; भार- तेन्दु के ६९ काव्य ग्रन्थ एवं स्फुट कविताएँ
६७ भा० ग्रंथा० (३)— भारतेन्दु	भारतेन्दु ग्रंथावली भाग ३—भारतेन्दु हरिश्चन्द्र नागरी प्रचारिणी सभा, काशी २०७० वि०	प्रथम २०१० वि०; संकलन एवं संपादन—बजरत्न दास; भारतेन्दु के निबंधों का संग्रह
६८ भिखा०—कौशिक	भिखारिणी—विश्वम्भर नाथ शर्मा कौशिक गंगा पुस्तकमाला कार्यालय, लखनऊ १९२६	
६९ भूले०—भग० वर्मा	भूले-बिसरे चित्र—भगवतीचरण वर्मा राजकमल प्रकाशन, दिल्ली १९४६	प्रथम १९४६
१०० भूषण ग्रंथा०—भूषण	भूषण ग्रंथावली—भूषण वाणी वितान प्रकाशन, काशी २०१७ वि०	प्रथम २०१७ वि०; संपादक—विश्व- नाथप्रसाद मिश्र; रचनाकाल—रीतियुग
१०१ भोर०—जग० माथुर	भोर का तारा—जगदीश चन्द्र माथुर नीलाम प्रकाशन, प्रयाग १९४७	द्वितीय १९४७
१०२ भ० सा०—सूर	भ्रमर गीत सार—सूरदास	सम्पादक—रामचन्द्र शुक्ल; रचना- काल—भक्तियुग

एक सौ सन्तानबे

संकेत	पूरा विवरण	प्रस्तुत संस्करण एवं विशेष द्रष्टव्य
१०३ मति०मक०—मतिराम	मतिराम मकरन्द—मतिराम इन्दियन प्रेस, प्रयाग १९३९	प्रथम १९३६; मण्णादक—हरदयाल सिंह; रचनाकाल—रीतिपुन
१०४ मधु०—बच्चन	मधुशाला—हरवंश राय 'बच्चन' मुषमा निकुंज, इलाहाबाद १९३५	तृतीय १९३८
१०५ मर्म०—हरिऔध	मर्म स्पष्ट—अगोप्यासिंह उपाध्याय हरिऔध राजपाल एंड संस, दिल्ली १९५४	प्रथम १९५४
१०६ मा—कीशिक	मा—विद्वन्मभर नाथ शर्मा कीशिक गंगापुस्तक माला, लखनऊ १९२६	पंचम १९५४
१०७ मा० मा० (१)— कि० गोस्वामी	माधवी माधव भाग १—किशोरीलाल गोस्वामी श्री सुदर्शन प्रेस, वृंदावन १९०६-१९१०	द्वितीय १९१९
१०८ मा० मा० (२)— कि० गोस्वामी	माधवी माधव भाग २—किशोरी लाल गोस्वामी श्री सुदर्शन प्रेस, वृंदावन १९०६-१९१०	द्वितीय १९२५
१०९ मान० (१)—प्रेमचंद	मानसरोवर भाग १—प्रेमचंद हंस प्रकाशन, इलाहाबाद	आठवां १९५६
११० मान (२)—प्रेमचंद	मानसरोवर भाग २—प्रेमचंद सरस्वती प्रेस, बनारस १९३६	
१११ मान० (३)—प्रेमचंद	मानसरोवर भाग ३—प्रेमचंद हिन्दुस्तानी पब्लिशिंग हाउस	पांचवां १९५०
११२ मान० (४)—प्रेमचंद	मानसरोवर भाग ४—प्रेमचंद सरस्वती प्रेस, बनारस १९३६	सातवां १९५५
११३ मान० (८)—प्रेमचंद	मानसरोवर भाग (८)—प्रेमचंद हंस प्रकाशन, इलाहाबाद	द्वितीय
११४ मुकुल—मु०कु०चो०	मुकुल—सुभद्राकुमारी चौहान ओभाबधु आश्रम, इलाहाबाद १९३०	प्रथम १९३०
११५ मृग०—वृ० वर्मा	मृगनयनी—वृंदावनलाल वर्मा मयूर प्रकाशन, भांसी १९५०	सातवां १९५५
११६ मेरे०—गुलाब	मेरे निबन्ध-जीवन घोर जगत—गुलाब राय गयाप्रसाद एण्ड संस, आगरा १९५५	प्रथम १९५५



एक सौ अठ्ठानवें

संकेत	पूरा विवरण	प्रस्तुत संस्करण एवं विशेष द्रष्टव्य
११७ मैला०—रेणु	मैला आंचल—फलीश्वर नाथ रेणु समता प्रकाशन, पटना १९५४	प्रथम १९५४
११८ यशो०—गुप्त	यशोधरा—मैथिलीशरण गुप्त साहित्य सदन, बिरगांव, भांसी १९८९ वि०	प्रथम १९८९ वि०
११९ ये० कोठे०—अ० ना०	ये कोठेवालिवा—धर्मलाल नागर राजकमल प्रकाशन १९६१	प्रथम १९६१
१२० रंग० (१)—प्रेमचंद	रंगभूमि भाग १—प्रेमचंद गंगा पुस्तक माला, लखनऊ १९२४	बारहवां १९५५
१२१ रंग० (२)—प्रेमचंद	रंगभूमि भाग २—प्रेमचंद गंगा पुस्तक माला, लखनऊ १९२४	"
१२२ रहीम कवि०—रहीम	रहीम कवितावली—अब्दुल रहीम खानखाना नवल किशोर प्रेस, लखनऊ १९२६	प्रथम १९२६; रचना—भविष्यकाल; दोहे, सोरठे, बरवैनायिका भेद, मदनाष्टक, नगर-शोभा वर्णन, खान- खाना कृत बरवै, खेड कौतुकम् स्फुट छंद
१२३ राधा—अ० स०	राधाकान्त—अर्जुनदेव सहाय हरिदास एड कं० २०१, हरिसनरोड कलकत्ता १९१२	प्रथम १९१२
१२४ राधा० ग्रंथा०— राधा०दास	राधाकृष्ण ग्रंथावली—राधाकृष्ण दास नागरी प्रचारिणी सभा १९३०	प्रथम १९३०; कविता लेख, जीवन- चरित एवं पांच नाटक
१२५ राम० (बाल) (अ) (घर) (कि) (सु) (लं) (उ)—तुलसी	रामचरित मानस—तुलसीदास गीताप्रेस, गोरखपुर	नवम २०१४ वि०; टीकाकार— हनुमान प्रसाद पोद्दार; रचनाकाल— भक्तियुग
१२६ रेशमी०—राम०वर्मा	रेशमी टाई—रामकुमार वर्मा भारती भंडार, इलाहाबाद १९४१	चतुर्थ २००६ वि०
१२७ सिली—निराला	सिली—मूयंकान्त त्रिपाठी निराला गंगा ग्रंथागार, लखनऊ १९३३	तृतीय २००६ वि०

एक सी निम्नान्वे

संकेत	पूरा चिचरण	प्रस्तुत संस्करण एवं विशेष द्रष्टव्य
१२८ विनय०—तुलसी	विनय पत्रिका— तुलसी दास गीता प्रेस, गोरखपुर	सत्रहवां २०१५ वि०; रचनाकाल- भक्तियुग; पद-संख्या दी गई है पंचम १९५८
१२९ विष०—प्रेमी	विषयान—हरिकृष्ण प्रेमी आत्माराम एड संस, दिल्ली १९४४	
१३० वृ० स०—वृन्द	वृंद-सतसई—वृन्द दास व्रदसं बुकसेलर, बनारस १९२९ लाहौर	प्रथम १९२९; रचनाकाल—रीतियुग
१३१ वंदेही०—हरिऔध	वंदेही-बनवास—अयोध्यासिंह उपा० हरिऔध हिन्दी साहित्य कुटीर, बनारस १९३९	चतुर्थ २००७ वि०
१३२ वैशाली०(१)—चतुर०	वैशाली की नगरवधू भाग १—चतुरसेन शास्त्री शारदा प्रकाशन, भागलपुर १९४९	तृतीय १९५९
१३३ वैशाली०(२)—चतुर०	वैशाली की नगरवधू भाग २—चतुर सेन शास्त्री दी अपर इंडिया पब्लिशिंगहाउस, लखनऊ १९४९	द्वितीय १९५५
१३४ शब्द०—देव	शब्द रसायन—देव हिन्दी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग संवत् २०००	द्वितीय २००४ वि०; सम्पादक— जानकी नाथ सिंह मनोज; रचनाकाल—रीतियुग छठा १९५८
१३५ शेखर०(१)—अज्ञेय	शेखर—एक जीवनी भाग १ सच्चिदानंद हीरानंद वात्स्यायन 'अज्ञेय' सरस्वती प्रेस, बनारस १९४१	
१३६ शेखर (२)—अज्ञेय	शेखर-एक जीवनी भाग २ सच्चिदानंद हीरानंद वात्स्यायन 'अज्ञेय' सरस्वती प्रेस, बनारस १९४४	
१३७ सतमी०—राहुल	सतमी के बच्चे—राहुल सांकृत्यायन किताब महल, इलाहाबाद १९३९	चतुर्थ १९५५
१३८ स० ग्रंथा—स० मिश्र	सदल मिश्र ग्रन्थावली—सदल मिश्र बिहार राष्ट्रभाषा परिषद, पटना १९६०	प्रथम १९६०
१३९ साकेत—गुप्त	साकेत—मैथिलीशरण गुप्त साहित्य सदन, चिरगांव, भांसी १९३२	द्वितीय १९६२ वि०
१४० सा० सी०—महा० द्विवेदी	साहित्य-सीकर—महावीर प्रसाद द्विवेदी तरुण भारत ग्रन्थावली, प्रयाग १९२९	ग्यारहवां



संकेत	पूरा विवरण	प्रस्तुत संस्करण एवं विशेष द्रष्टव्य
१४१ सा०मु०—बा० भट्ट	साहित्य सुमन—बालकृष्ण भट्ट एल के० भट्ट, ६४, काटन स्ट्रीट, कलकत्ता १८८६	द्वितीय० १९२२
१४२ सिंदूर०—ल० मिश्र	सिंदूर की होली—लक्ष्मीनारायण मिश्र भारती भंडार, बनारस १९३४	प्रथम १९३४
१४३ मुकुल०—निराला	मुकुल की बीबी—सूर्यकान्त त्रिपाठी निराला भारती भंडार, इलाहाबाद १९४१	प्रथम २००४ वि०
१४४ सु० सु०—सुदर्शन	सुदर्शन-सुमन—सुदर्शन राजपाल एड संस, दिल्ली १९२६	प्रथम १९२६
१४५ सुनीता—जैनेन्द्र	सुनीता—जैनेन्द्र कुमार हिन्दी रत्नाकर प्रा० लि०, बम्बई १९३५	छठा १९५८
१४६ सुहाग०—अ०ना०	सुहाग के नूपुर—धर्मलाल नागर राजकमल प्रकाशन, दिल्ली १९६०	प्रथम १९६०
१४७ सू०सा०—सूर	सूर-सागर—सूरदास नागरी प्रचारिणी सभा, काशी संवत् २००६	द्वितीय २०१२ वि०; रचनाकाल— भक्तिकाल; सम्पादक—नंददुलारे वाजपेयी; पद संख्या दी गई है
१४८ सेवा०—प्रेमचंद	सेवा सदन—प्रेमचंद हंस प्रकाशन, इलाहाबाद १९१६	
१४९ सो०—वचन	सोपान—हरवंश राय वचन भारती भंडार, इलाहाबाद २०१०	प्रथम २०१० वि०; स्वसंकलित प्रारंभिक रचनाएं मधुशाला, मधु- बाला, मधुकलश, निशा निमंत्रण, एकांत संगीत, आकुल अंतर, सत- रंगिनी, बंगाल का काल, हलाहल, सूत की माला खादी के फूल, मिलन यामिनी से
१५० सौ—व०स०	सौंदर्योपासक—ब्रजनंदन सहाय अज्ञवितास प्रेस, पटना १९१०	द्वितीय १९१०
१५१ स्कंद०—प्रसाद	स्कंदगुप्त—जयशंकर प्रसाद भारती भंडार, बनारस १९८५ वि०	द्वितीय १९६० वि०

## संकलन एवं साहित्यिक प्रयोग



# हिन्दी-मुहावरे

अ

## अंक देना,—भरना,—लगाना

आलिंगन करना । प्रयोग—घंक भरे भरि भेंटिया मन में नाही धीर । कहै कबीर ते क्यू मिलै, जब लग दोइ सरीर (क० ग्रंथा०—कबीर, १४); तब अंकम दे गोरा मिला (पद०—जायसी, ५३७); मूरदास प्रभु संग मिलिहरषित, प्यारी अंकम भरियां (सू० सा०—सूर, ३२३५); तेहि भरि घंक राम लघु भ्राता (राम० (अ)—तुलसी, ५५४); भेंटे नहीं भरि अंक लला भरि जीभ न बोली जू बोल नवीने (केशव० (१)—केशव, ५७); ए दई ऐसो कछु कर व्योत जु देखे अदेखिन के दग दामे जामे निसंक हवै मोहन को भरिये निज अंक कलंक न लागै । (जग०—पद्मनाभ, १२); भरि अंक निसंक हवै भेटन को अभिलाष अनेक भरी छतिया (घन० कवित्त०—घना०, ११२); ताको तू मन खोलि घंक भरि कण्ठ लगावै (कुण्ड०—गिरधरदास, २५); हाय एक बेर तो आकर अंकमें लगा जायो (भा० ग्रंथा० (१)—भारतेन्दु, ४४५); भेंटि अंक भरि लेहि कसक सब जाइ हिए कहि (राधा० ग्रंथा०—राधा० दास, ६२९); घंकमें ननुम मुझको भरने प्रायी हो । कुरूपति को कुछ दुबल करने प्रायी हो (चक्र०—दिनकर, २७५)

## अंक भरना

दे० अंक देना

## अंक लगाना

दे० अंक देना

## अंक लेना

(१) आलिंगन करना । प्रयोग—प्रिया निरखति पंच, मिले कब हरि कंत, गए इहि अंत हंसि घंक खीन्ही (सू० सा०—सूर, २६०२)

(२) गोद में लेना । प्रयोग—प्रथम भये मुनको बहु, अंकहि लेति लजाति (मलि० मक०—मतिराम, २५०)

## अंकवार भरना

(१) आलिंगन करना । प्रयोग—वरबस ही अंकवारि भरत धरि, काहुसौ अपनी मन लावै (सू० सा०—सूर, २०५१); ऊषा ने ज्यो प्यार करना चाहा कि पति को अंकवार भर कण्ठ लगाऊँ, तो नयनों से नींद गई (प्रेम० सा०—ल० ला०, २४०)

(२) गोद में बच्चा लेना ।

## अंकुर जमना

प्रारंभ होना । प्रयोग—यह भावना मेरे हृदय में उसी दिन अंकुरित हुई, जब यहाँ आने के चौथे दिन बाद मैंने आँखें खोलीं (रग० (१)—प्रेमचंद, १५५)

## अंकुश देना,—रखना

(१) नियंत्रण रखना । प्रयोग—मैं मंता मन मारि रे, पटही माहिं घेरि । जबही बाले पीछि दे, अंकुश दे दे फेरि (क० ग्रंथा०—कबीर, २९); बहुत दिनों में नारायण ने सरकार के सम्मुख यह सुझाव रखा था कि शिकारी गांव में खाना बनाया जाय, जिससे मांझुली के उस छोर पर महज ही अंकुश रखा जा सके (ब्रह्म०—दे० स०, २४५)

(२) दबाव डालना ।



## अंकुश रखना दे० अंकुश देना

### अंकुश रहना या होना

नियंत्रण होना । प्रयोग—भाषापर साहित्य का अंकुश रहता था, यहाँ तक कि चाहे कोई शब्द व्याकरणकी रीतिसे सर्वथा शुद्ध हो यदि वह साहित्य की दृष्टिकोण से होकर नहीं निकला तो कवि समाज में वह खरे सिक्के के रूप में स्वीकार नहीं किया जाता था (पद्म पराग—पद्म० शर्मा, 315)

### अंग-अंग खिल जाना

अंग-अंग से प्रसन्नता टपकना । प्रयोग—वह मनोभावों को छिपाना चाहती थी कि रमा उसे ओछी न समझे, लेकिन एक-एक अंग खिलता जाता था (गवर्न—प्रेमचंद, 60)

### अंग-अंग ढीला हो जाना

अत्यन्त थक जाना । प्रयोग—यात्रा बने नवरंग छबीले । डगमगाति पर अंग धंग ढीले (सू० सा०—सूर, 3268)

### अंग-अंग फूले न समाना

बहुत प्रसन्न होना । प्रयोग—अंगद तो अंग-अंग न फूले । पौन के पुत्रकहो अतिभूले (केशव० (2)—केशव, 812)

### अंग-अंग मुसकुराना

बहुत प्रसन्न होना, अंग-अंग से प्रसन्नता प्रगट होनी । प्रयोग—लज्जित होहि पुर बधू पूछ, अंग-अंग मुसकात (सू० सा०—सूर, 858)

### अंग करना

स्वीकार करना । प्रयोग—जाको मन मोहन अंग करे (सू० सा०—सूर, 38)

### अंग छूना

शरीर छूकर कसम खाना । प्रयोग—सूर हृदय तँ टरत न गोबुल अंग छुसत हौ तेरो (सू० सा०—सूर, 8913)

### अंग पड़ना

हिस्से पड़ना । प्रयोग—प्रकृति जोई जाके अंग परी (सू० सा०—सूर, 8188)

### अंग फड़कना (दक्षिण या वाम)

शरीर के किसी अंग में स्पंदन होना जो शुभ या अशुभ माना जाता है । प्रयोग—करकहि सुभग अंग सुनु आता (राम० (बाल)—तुलसी, 239)

### अंग में अंग न समाना

हर्षातिरेक होना । प्रयोग—कहि पठई जिय-भावती पिय आवन की बात । फूली अंगन मैं फिर, घांग न आंग समात (विहारी रत्ना०—विहारी, 258)

### अंग मोड़ना

(1) अंगड़ाई लेना । प्रयोग—पौड़ि गई हरूँ करि आपुन, अंग मोरि तब हरि अंगुजाने (सू० सा०—सूर, 515)

(2) पीछे हटना,

(3) लज्जा से देह छिपाना ।

### अंग लगाना

(1) महत्व देना । प्रयोग—पहले उसको राजा साहब बहुत अंग लगाए रखते थे (झांसी०—सू० शर्मा, 188)

(2) हिना-मिला लेना

(3) पहनना ।

### अंग लाना

अंग से लगाना, निकट बुलाना । प्रयोग—पीहरि जाऊ न रहूँ सामुरे, पुरपहि अंग न लाऊँ (क० प्रशा०—कवीर, 166)

### अंग शिथिल होना

भावतिरेक के कारण कुछ कर न पाना । प्रयोग—अस मन गुनत चले मग जाता । सकुच सनेहुँ सिधिल सब गाता । (राम० (अ)—तुलसी, 493)

### अंगड़ाई लेना

चेतनता का प्रारम्भ होना । प्रयोग—भीत न होओ, प्रिय, धव नारी लेती जागृति की अंगड़ाई (स्वर्ण०—पंल, 184)

### अंगारों पर लोटना

(1) कष्ट पाना । प्रयोग—तिन्हें धौ सिराति छाती तोहि वें लगति ताती, तेरे बाट आयो है अंगारनि पै लोटिबो (घन० कवित्त—घना०, 38); तीन दिन फिर मैंने अंगारों पर लोट-लोट कर काटे (मान० (2)—प्रेमचंद, 104)

(2) ईर्ष्या होनी

(3) रोष प्रगट करना

### अंगूठा चटाना

तृप्ति समझना । प्रयोग—पाँव की चाट चाट जो जीये है अंगूठा हमें चटाते थे (बोल०—हरिऔध, 142)



### अंगूठा चूमना

(१) खुशामद करना । प्रयोग—जो अंगूठा है हमें दिखा रहे क्यों अंगूठा है उन्हींका चूमते (चुभते०—हरिऔध, ८७) (+)

(२) अधीन होना । प्रयोग—देखिए (+)

### अंगूठा दिखा देना, या दिखाना

(१) किसी चीज को प्रवृत्ता पूर्वक देने से नाहीं करना । प्रयोग—धूषट ओट बितें घन आनन्द, चोट बितें अंगूठाहि दिखावें (घन० कवित्त—घना०, १९०); बस मैं प्रेम का चकमा देकर सरस्वती से अपना काम निकाल लूंगा और फिर उसे अंगूठा दिखाकर अलग हो जाऊंगा (मा०मा० (१)—कि० गो०, ५३-५४); क्यों दिखानेमें अंगूठा दोन को आपकी शक्ति आज दिन यो है तुली (चुभते०—हरिऔध, ४) (+); पर मैं तो देखता हूं कि यह मुकदमा अच्छी तरह न चलाया गया तो यहां के किसान फिर आप लोगों को अंगूठा दिखा देंगे (तिल्ली—प्रसाद, १८३) इन पैसों के बल पर जालिम जमींदार को हम अभी से अंगूठा दिखाने लगे थे (बल०—नागा०, १९६)

(२) किसी कार्य के करने से हट जाना, किसी कार्य का करना अस्वीकार करना । प्रयोग—जब रेशमा के अब्बा ने बिलकुल ही अंगूठा दिखा दिया तो चन्दूनाह को कबहरा जाना पड़ा (कठ०—दे० स०, २७३); आप राजा साहब से रुपए लेकर तिजोरी में रखते और मुझे अंगूठा दिखा देते (गोदान—प्रेमचंद, २३६); देखिए (+) भी ।

### अंचल डाल कर लेना

स्नेह पूर्वक लेना (मां के समान) । प्रयोग—एक जु साधु मोहि मिल्यो तिन लीया अंचल लाइ (क० ग्रंथा०—कबीर, २५८)

### अंचल पसार कर,—रोप कर

विनय पूर्वक, प्रार्थना करते हुए । प्रयोग—पुरनारि सकल पसारि अंचल, बिधिहि बचन सुनावही (राम० (बाल)—तुलसी, ३१४); चरन नाइ सिंह अंचल रोपा, मुनहु बचन पिय परिहरि कोपा (राम० (ल०)—तुलसी, ८६६)

### अंचल भर कर लेना

स्त्रियों का अंचल पसार कर आशीर्वाद ग्रहण करना । प्रयोग—मुदित मातु अंचल भरि लेही (राम० (बाल)—तुलसी, ३५८)

### अंचल रोप कर

दे०—अंचल पसार कर

### अंचल से बंधना

विवाह होना । प्रयोग—मैं स्वयं इनके अंचल से बंधी । (दूध०—दे० स०, ८५)

### अंजन लगाने को भी नहीं

तनिक भी नहीं । प्रयोग—दूध-पी अंजन लगाने तक को मिलता नहीं, पाठे होंग (गोदान—प्रेमचंद, ६)

### अंटी पर चढ़ना

बधा में जाना । प्रयोग—अलापार सा पुराना घाघ बा । बड़ी मुश्किलसे अंटी पर चढ़ा (निर्मला—प्रेमचंद, १६८)

### अंत काल,—की बेर

मृत्यु के समय । प्रयोग—अंत काल जब घाइ पड़ुंन, छिन मैं कीन्ह न बेरी (क० ग्रंथा०—कबीर, १२१) कपट की भगति करै जिन कोई अंत की बेर बहुत दुख होई (क० ग्रंथा०—कबीर, १६७)

(समा० मुहा०—अंत की बेला,—समय)

### अंत की बेर

दे०—अंत काल

### अंत न पाना

पूर्ण रूप से समझ न पाना । प्रयोग—गण गंधप मुनि अंत न पावा, रह्यो अलख जग धरै लगा (क० ग्रंथा०—कबीर, २३०); जाकी ब्रह्मा अंत न पावो । जाकी मुनि जन ध्यान लगायो (सु० सा०—सूर, १६०२); निगम नेति सिब अंत न पावा (राम० (बाल)—तुलसी, २१२); जिनकी महिमा महि अंत न पावो । हम को वपुरा जस वेदन पावो (केशव० (२)—केशव, २५५)

### अंत लेना

अंत करना, मार डालना । प्रयोग—बासर वसंत के अनंत हवै के अंत लेत, ऐसे दिन पारै नु निहारै जिय राति है (घन० कवित्त—घना०, १०६)

### अंतड़ियों में बल पड़ना

सांतों में दर्द होना । प्रयोग—बल पड़े दूसरे न क्यों बिगड़े । बल पड़े जब बला बनी आते (बोल०—हरिऔध, २२२)



### अंतही की बात जानना

खूब अच्छी तरह पहचानना । प्रयोग—मिसर खानदान का अंतही की बात में समझता हूँ (परसी०—रेणु, ४८२)

### अंतर-कपट न खोलना

मन के कपट को दूर न करना । प्रयोग—इन बातों का कौन पतंहे, अंतर कपट न खोलें (सु० सा०—सुर, ४४८७)

### अंतर खोलना

हृदय का भेद कह देना । प्रयोग—जे लागे बेहद सू, तिनसु अंतर खोलि (क० ग्रंथा०—कबीर, २६)

### अंतर्मुख होना

स्वसीमित हो जाना, अपने तक ही बात को रखना । प्रयोग—१० देवी दयाल विशेष रूप अंतर्मुख हो गए (लिली—निराला, ७२)

### अंतिम घड़ियाँ गिनना

मृत्यु के घटपट निकट होना । प्रयोग—सखी ने लिखा है कि बृद्ध विषम ज्वर से पीड़ित होकर अंतिम घड़ियाँ गिन रहे हैं (अतीत०—महादेवी, ५९)

### अंतिम साँस गिनना,—लेना

(१) मृत्यु निकट होना । प्रयोग—तुम्हारी साँस अपना अंतिम साँसों को गिन रही है (तिल्ली—प्रसाद, २४९)

(२) समाप्ति पर होना । प्रयोग—जब मैं सोचने-समझने लायक हुआ तो देश का व्यावसायिक रंगमंच अंतिम साँसे ले रहा था (पैतरे—अशक, ९)

(समा० मुहा०—अंतिम साँस चलना)

### अंतिम साँस लेना

दे०—अंतिम साँस गिनना

### अंदर-अंदर कड़ाही में गुड़ पगना

गुप्त मंजना होना । प्रयोग—बाहर किसी को कुछ मालूम नहीं, अंदर-अंदर कड़ाही (कड़ाई) में गुड़ पगता रहा (बल०—नागा०, १८३)

### अंदर होना

अंदर में बन्द होना । प्रयोग—तुम सब कोट की रोते हो, हम साला पकड़े जाते तो अंदर हो जाते (पैतरे—अशक, १२७)

### अंध-कूप में डालना

अहित करना । प्रयोग—निदान यह कि जन्मपत्री के ऊपर निर्भर होकर आजन्म अपनी संतानों को अंधकूप में डालना कैसी बड़ी मूर्खता है । (राधा ग्रंथा०—राधा० दास, ५५७)

(समा० मुहा०—अंधकूप में डकेलना)

### अंध भक्त होना

बिना सोचे विचारे भक्ति करना । प्रयोग—मैंने कहा लिख तो डालूँ लेकिन जीवित महाशयों की बिरादरी का बड़ा भय है (अपनी खबर—उग्र, १०)

### अंधकार छा जाना,—नज़र आना

चारों ओर प्रतिकूल परिस्थिति ही दिखलाई पड़नी । प्रयोग—ऐसी दसा जग छाये अंधेर बिना हित-मूर्ति कौन संभारें (घन० कवित०—घना०, १८१) चारों ओर अंधेरा नज़र आता था (कुल्लो०—निराला, ८०)

### अंधकार दूर होना ।

अज्ञान दूर होना । प्रयोग—प्रकटी ज्योति मिट्या अंध-यारा । (क० ग्रंथा०—कबीर, ३१५) श्री गुरुदेव कुपालु की, कृपा सुबुद्धि समीप । तिमिर मिटें, प्रगट हृद-मंदिर अनुभव दीप (शब्द०—देव, १) हे ईश्वर × × इस भारतभूमि का अंधकार दूर कर (राधा० ग्रंथा०—राधा० दास, ५६६)

### अंधकार नज़र आना

दे०—अंधकार छा जाना

### अंधकार में रहना या होना,—होना

अज्ञान में होना, अज्ञान होना । प्रयोग—अंधेरा भरा यहाँ पर था, उजाला पोख से छाया (मर्म०—हरिऔध, १११) इस तरह इनका बाजू पकड़े रहना है । पूरी जानकारी हासिल होगी । जैसे घंघेरे में हूँ (बोटी०—निराला, १५४)

### अंधकार होना

दे०—अंधकार में रहना

### अंधा करना

ज्ञान मूय्य कर देना । प्रयोग—मोह न बांध कोन्ह केहि केही । (राम० (३)—तुलसी, १०९६) हाथ आधा भी बचा बुरी बन्नु है और प्रेम भी मनुष्य की कैसा अंधा कर देता है (भा० ग्रंथा० (१)—भारतेन्दु, ४५७)



### अंधा कुआँ

मूखा कुआँ । प्रयोग—उसके एक कोने में, छोटा सा बेरा का बूझ जिसकी छाया में एक टूटा सा अंधा कुआँ (शेखर (१)—अज्ञेय, १८); पर प्यासा आदमी अंधे कुएँ की तरफ दौड़े तो मेरे खयाल में उसका कोई कमूर नहीं (गवन—प्रेमचंद, २८६)

### अंधा बनना

जान बूझ कर भी न जानना । प्रयोग—घाल होते जो अंधा बने । कैसे वह फल-फूल सकेगा जो जड़ अपनी आप खने (मर्म०—हरिऔध, १४८)

### अंधा बनाना

(१) जान शून्य करना । प्रयोग—वाल्म्व में आचार्य माण्डव्य ने पिताजी को कामुक और अंधा बना रखा है (वैशाली० (१)—चतुर०, १६२)

(२) धोखा देना, मूर्ख बनाना ।

### अंधा होना

(१) जान शून्य होना, विवेकहीन होना । प्रयोग—राम न जपहु कहा भयो अन्धा, राम बिना जम मेले पंधा (क० ग्रंथ०—कवीर, १२९); स्वामि घरम स्वारसहि विशेष, बैर अन्ध प्रेमहि न प्रबोच (राम० (अ)—तुलसी ६५१); मुनते ही श्रुगी ऋषि × क्रोध कर कहने लगे कि कलियुग में राजा उपजे हैं अभिमानी धन के मद से अंध हो गये हैं दुखदानी (प्रेम० सा०—ल० ला०, ३); बीरता नाम के किसी घटभूत पदार्थ की ओर अंधे होकर दौड़ना युवकों का कर्तव्य हो रहा है (कामना—प्रसाद, ४४) गरज बावली होती है पर साज मालूम हुआ कि वह अंधी भी होती है (रंग० (२)—प्रेमचंद, ७८); यह न समझो, मंगरामसिंह कि मैं अंधा हूँ (विप०—प्रेमी, ३१) (+)

(२) बे-फिक्र होना । प्रयोग—देखिए (+)

### अंधाधुन्ध सरकार होना

मनमानी स्थिति होनी । प्रयोग—सूरदास ऐसी क्यों निबहे, अंधधुन्ध सरकार (स० सा०—सूर, ४५२७)

### अंधी खाई होना

बहुत बड़ा अन्तर होना । प्रयोग—बाकई हमारे हीरो हीरोइनों और दूसरे टेक्नीशियनों की छाया के बीच अन्धी खाई नहीं होनी चाहिए (दूध०—दे० स०, ३१७)

### अंधी खोपड़ी

मूर्ख । प्रयोग—बीन से अंधेरे अंधाधुन्ध की, कर दिखाती है न अंधी खोपड़ी (वील०—हरिऔध, २३)

### अंधे की लकड़ी,—लाठी

एक मात्र सहारा । प्रयोग—एक है उपाइ, राम पाइन के पाइवे की, सेनापति बेद कहै, घब की लकरिये (क० र०—सेनापति, ११३); हाथ वह तपस्विनी बूढ़ा माता × × उसका तो सर्वस्व लुट गया, अन्धी की लकड़ी छिन गई (पद्मपराग—पद्म० शर्मा, ३९); निराशा में प्रतीक्षा अन्धे की लाठी है (रंग० (२)—प्रेमचंद, ५२)

(समा० मुहा०—अंधे की आँख)

### अंधे की लाठी

दे०—अंधे की लकड़ी

### अंधे कुएँ की ओर दौड़ना

असफल प्रयत्न करना । प्रयोग—पर प्यासा आदमी अंधे कुएँ की तरफ दौड़े तो मेरे खयाल में उसका कोई कमूर नहीं (गवन—प्रेमचंद, २८६)

### अंधे के आगे रोना

अज्ञानी के सामने कुछ कहना । प्रयोग—ऐसी सभा में अपना निबन्ध पढ़ना अन्धों के आगे रोना था । (प्रेमा०—प्रेमचंद, १३१)

### अंधे के हाथ बटेर लगाना

किसी अयोग्य व्यक्ति को कोई उपयोगी और महत्वपूर्ण चीज मिल जाना, अनायास कुछ मिल जाना । प्रयोग—यह समझ लो कि तुम अपनी मेहनत से नहीं पास हुए, अन्धे के हाथ बटेर लग गया (मान० (१)—प्रेमचंद, ८२) यद्यपि रचना श्रेष्ठ पल्लवी की थी, मेरी कुछ भी नहीं थी, लेकिन स्कूल में प्रतिभा का अभाव होने से मुझ अन्धे के हाथ भी बटेर लग गई थी (अपनी खबर—उग्र, ९९)

### अंधेर-खाता

मनमानी धोखाधड़ी । प्रयोग—इस अनर्थ और अंधेर-खाते का कुछ ठिकाना है (पद्म० के पत्र—पद्म० शर्मा, ५२) (समा० मुहा०—अंधेर-गर्दी)

### अंधेरा कूप

धना अन्धकार । प्रयोग—अन्ध कूप भा धारें उड़त आव तसि तार (पद०—जायसी, ४२/२३)



अंधेरा ही अंधेरा दिखाई पड़ना

(समा० मुहा०—अंधेरा गुप्प, अंधेरा टोप)

अंधेरा ही अंधेरा दिखाई पड़ना

चारों ओर निराशाजनक प्रतिकूल परिस्थिति होनी। प्रयोग—पत्ता के चारों ओर अंधेरा ही अंधेरा दिखाई देता था (मान० (१)—प्रेमचंद, १)

अंधेरा होना

(१) बुरे दिन होना। प्रयोग—पाछें चढ़ी बिमान मनोहर, बहुरी बज में होत अंधेरौ (सु० सा०—सूर, ३६०८)। आप जैसे विद्वान् संसार से उठ जावेंगे तो कौन फिर ऐसी जरूरी बातें इस सभाई से समझावेगा? तब तो हिन्दी की दुनिया में अंधेरा ही हो जायगा (गु० नि०—दा० मु० गु०, ४३५)

(२) निःसंतान होना। प्रयोग—खिन्दगी का मज्जा संतान से है। जिसके आगे अंधेरा है, उसके लिए धन-दौलत किस काम का (मान० (७)—प्रेमचंद, ३५)

(३) निराशा की स्थिति। प्रयोग—अब उनके चारों ओर अंधेरा था (रंग० (१)—प्रेमचंद, २९२)

अंधेरे कुण में पड़ना

घोर अनिष्ट होता या करना। प्रयोग—राम न रमहु मदन कहा भूले, परत अंधेरे कूपां (क० ग्रंथा०—कबीर, १७०)

अंधेरे घर का दीपक

(१) इकलौता बेटा। प्रयोग—वही लड़का तो × × मेरे अंधेरे घर का दीपक था (भा० ग्रंथा०—भारतेन्दु, ५७३)

(२) कुल-दीपक वंश की मर्चादा बढ़ाने वाला।

(३) अत्यन्त कान्तिमान—अत्यन्त सुन्दर।

अंधेरे में टटोलना

जहाँ सब कुछ अज्ञात हो, वहाँ किसी बात का पता लगाने की चेष्टा करना। प्रयोग—संयोग-लभ्य ज्ञान को लेकर मनुष्य ने अंधेरे में घोर टटोला है घोर धोड़ा-धोड़ा आगे बढ़ता गया है (अशोक०—ह० प्र० द्वि०, १५३)

अंधेरे में तीर मारना

अज्ञात स्थिति में लाभ का कोई प्रयत्न यों ही करना। प्रयोग—इस प्रतिस्पर्धा के लिए सावाजी ने भी जब एक गान प्रस्तुत किया, तब मेरे मन में भी आया कि अंधेरे में एक तीर मारने में धाटा ही क्या है (अपनी लवर—उग्र, १०३)

(समा० मुहा०—अंधेरे में डेला मारना,—तीर चलाना,—तीर छोड़ना,—निशाना लगाना)

अंधेरे में रखना

अज्ञान में रखना, स्थिति को न बताना। प्रयोग—उसको बुरा लगा कि हरिप्रसन्न अब भी श्रीकांत को अपने बारे में अंधेरे में रख सकता है (सुनीता—जेनेन्द्र, ७४)

अकंटक राज्य करना

बिना किसी विरोध या प्रतिद्वन्द्विता के राज्य करना। प्रयोग—करउ अकंटक राज मुलारी (राम० (अ)—तुलसी, ५९४)

अकड़-तकड़

घमंड। प्रयोग—अकड़ तकड़ उसमें बहुत सारी थी (इंशा०—इंशा०, ९१)

अकड़ना

घमण्ड करना, झिड़ करना। प्रयोग—न निकले कड़ी बात मुंह से, किसी से कभी नहीं अकड़ें (मर्म०—हरिश्चंद्र, ९०); सरकार के वे पुराने सेवक यों अकड़ते हुए चले जायें (रंग० (२)—प्रेमचंद, ३३९)

(समा० मुहा०—अकड़ जाना,—दिखाना)

अकेले चने का भाड़ फोड़ सकना

अकेले कुछ भी कर पाना। प्रयोग—कुछ पड़े लिखें मिल कर देश मुचारा चाहते हैं। हहा हहा! एक चने से भाड़ फोड़ेंगे (भा० ग्रंथा० (१)—भारतेन्दु, ४७४); तो बहूजी, अकेला चना तो भाड़ नहीं फोड़ता, अगर सब भाई साथ दें, तो तैयार हूँ (कर्म०—प्रेमचंद, २६५); अकेला चना भाड़ नहीं फोड़ सकता; दुनिया जब तक इस तरह की भद्दी मान्यताओं को मान कर चलती रहेगी तब तक एक महिषान दुकल ही बेचारा क्या कर सकता है (वृं०—अ० ना०, ४५४)

अकल का अंधा,—दुश्मन

महामूर्ख। प्रयोग—अकल का दुश्मन तो नहीं है गोविन्दन (दुध०—दे० स०, ३४१); कहीं तो अकल के संधे मिल ही जायेंगे जो 'मिट्टी की मूर्त' को सोने की मूर्त समझ लें (कठ०—दे० स०, ९०)

अकल का घास खाना,—चरना

अकल में कुछ न होना। प्रयोग—तुम्हारी समझ तो इस



समय शायद पास चरने चली गई है (मा० मा० (२)—कि० गो०, १५); धनिया झुमताकर बोली—तुम्हारी अकल तो पास खा गयी है (गोदान—प्रेमचंद, १२३)

**अकल का घास चरना**

दे०—अकल का घास खाना ।

**अकल का दुश्मन**

दे०—अकल का अंधा ।

**अकल का पुतला**

बड़ा बुद्धिमान; मूर्ख (व्यंग्य में) । प्रयोग—ये फिरभी भी बड़े चालाक है, पूरे अकल के पुतले हैं (इस्टा०—भाग० वर्मा, ८१)

(समा० मुहा०—अकल की पुड़िया)

**अकल की गाँठ खोलना**

बुद्धि द्वारा मुलभाना । प्रयोग—घड़ी दो-चार चालें चली तो आप ही आप जी लग जायगा । डरा अकल की गाँठ तो खोलो (गदन—प्रेमचंद, ३४)

**अकल की दौड़**

युक्ति, उपाय । प्रयोग—देख लिया तुम्हारा न्याय और तुम्हारे अकल की दौड़ (गोदान—प्रेमचंद, ११६)

**अकल खुल जाना**

समझदारी आ जाना । प्रयोग—होरी बँठा सोच रहा था—लड़के की अकल जैसे खुल गयी है (गोदान—प्रेमचंद, २१७)

**अकल चक्कर में पड़ना**

बुद्धि में कुछ समझ न खाना । प्रयोग—अकल चक्कर में पड़ जाती है यह सोचकर कि यहाँ कनातो और खेमों का एक पूरा का पूरा महानगर बसाया जा रहा है (भूले०—भाग० वर्मा, २८६)

(समा० मुहा०—अकल चकराना,—चक्कर में पड़ना)

**अकल चर जाना**

बुद्धिभ्रष्ट कर देना । प्रयोग—इसीसे कहते हैं, रियासत आदमी की अकल चर जाती है (गोदान—प्रेमचंद, १४७)

**अकल चरने जाना,—चेंथरी में चढ़ना**

अकल न होना, बुद्धि नष्ट होना । प्रयोग—शत्रु-संहार × × निमित्त व्यास ने महाभारत में राजनीति की काट व्योत जैसी जैसी दिखाई है उसे सुन कर विष्णुकांत सरोखे कुशल राजपुरुषों की अकल भी चरने चली जाती होगी

(सा० सु०—डा० भट्ट, ७); अकल चेंथरी में चढ़ गई सो अब उन्हें कुछ सुझत नईयां (झांसी०—व० वर्मा, १५०)

**अकल चेंथरी में चढ़ना**

दे०—अकल चरने जाना ।

**अकल ठिकाने आना या होना**

सबक मिलना । प्रयोग—अब कुछ दिन धक्के खाने में उसकी अकल अपन आप ठिकाने आ जायगी (परीक्षा०—श्री० दास, १०७)

**अकल पर ईंट पड़ना,—पत्थर पड़ना**

अकल का काम न करना । प्रयोग—ईंट पड़े तुम्हारी अकल पर, इतना भी नहीं जानते यह गुलाल है (राधा० प्रथा०—राधा० दास, ९५); तुम्हारी अकल पर पत्थर पड़ गया है, इसमें हमारा कोई दोष नहीं (मान० (७)—प्रेमचंद, २६)

**अकल पर पत्थर पड़ना**

दे०—अकल पर ईंट पड़ना ।

**अकल पर पर्दा पड़ना**

वस्तु या स्थिति को ठीक ठीक न समझ पाना । प्रयोग—मेरी अकल पर पर्दा पड़ा हुआ था । स्वार्थ ने मुझे घधा कर रखा था (गदन—प्रेमचंद, ३०८)

**अकल मारी जानी**

समझ का नष्ट होना, बुद्धि भ्रष्ट होना । प्रयोग—तुम्हारी सब अकल मारी गयी (झूठा० (२)—यशपाल, ५६७) कोई कोई कह भी देता था कि इनकी अकल मारी गई है (सु० सु०—सुदर्शन, २७१)

**अकल हवा हो जानी**

सारी वस्तुसमर्थ या गवें धूर हो जाना । प्रयोग—अगर कहीं महावीर स्वामी आ जाते तो × × सारी अकल हवा हो जाती तुरंतमानों की (लिली—निराला, ८६)

**अकली गद्दे लड़ाना**

दिमागी विचार या तर्क करना । प्रयोग—घाप बता सकती है, किसी फिलासफर ने अकली गद्दे लड़ाने के सिवा और कुछ किया है ? (गोदान—प्रेमचंद, १४५)

**अक्षर-अक्षर**

पूरा-पूरा, सब कुछ । प्रयोग—तेज ने सुनील को रेशमा की



अखाड़ा होना

कहानी भी तो अक्षर-अक्षर कह सुनाई थी । (कठ०—  
दे० सं०, २७१)

**अखाड़ा होना**

मकाबला होना, तर्क-वितर्क होना । प्रयोग—मेरा और  
आचार्य विजयका अखाड़ा तो इसी समय हो जाय (मृग०—  
सु० वर्मा, ३२७) उसके मध्यभागमें उनके लड़कोंकी पाठशालाएं  
और उनके मकदमेवाजी के अखाड़े होते हैं । (गबन—  
प्रेमचंद, ९)

**अगवाना लेना**

घाने बढ़कर स्वागत करना । प्रयोग—सबि गज रय पद-  
चर सुरंग लेन चले अगवान (राम० (बाल)—तुलसी, ३०७)

**अग्नि प्रगट करना**

आग जलाना । प्रयोग—पावक प्रगट करहु तुम्ह बेगी  
(राम० (लं)—तुलसी, ९९३)

**अग्नि संस्कार करना या होना**

मृतक का दाढ़ कर्म करना या होना । प्रयोग—ऊपर हमने  
देखा है कि बंगाल में योगियों को कहीं तो समाधि दी  
जाती है और कहीं-कहीं उनका अग्नि-संस्कार किया  
जाता है । (कवीर—ह० प्र० दि०, ११)

**अघ दहना**

पाप का नष्ट होना । प्रयोग—जनम अनेक रचित अघ  
दहही (राम० (बाल)—तुलसी, १३२)

**अच्छा घर**

सम्पन्न । परिवार । प्रयोग—पर बहू जब तक घर अच्छा  
न मिले, तब तक जी भी तो नहीं भरता (मा—कौशिक, १३७)

**अच्छे घर गयाना देना**

अच्छी साखवाले से व्यवहार करना । प्रयोग—उन्होंने मुझे  
चकमा देकर अच्छे घर वापन दिया है । (व्यंग्य)  
(मा—कौशिक, ३९२)

**अटकलपच्ची**

बिना सोचे-विचारे । प्रयोग—कदाचित् इसीलिए कल  
बुलाया है, सुब छान परताल करके तब राय देंगे ।  
अटकल-पच्ची बातें कहनी होती तो सभी न कह देते  
(प्रेमा०—प्रेमचंद, ७३)

(समा० मुहा०—अटकल पच्ची)

८

अढ़ाई चावल की खिचड़ी अलग पकाना

**अटचास खटचास लेकर पढ़ना**

(१) रुठ कर या हताश होकर चुपचाप खाट पर पढ़  
रहना । प्रयोग—बूढ़ा माता तो इतनी हताश हुई कि  
उसी वक्त अटचास-खटचास लेकर पढ़ रही । (मान० (३)  
—प्रेमचंद, १२४)

(२) काम काज छोड़ कर रुठना ।

(समा० मुहा०—अरपाटी परपाटी लेकर पढ़ना,  
अरचाटी खरचाटी लेकर पढ़ना)

**अड़ंगा लगाना**

बाधा पहुंचाना । प्रयोग—मिस्टर तंखा दांव पेंच के  
आदमी थे, सोदा पटाने में XX अड़ंगा लगाने में दूम XX भाड़  
कर निकल जाने में सिद्धहस्त (गोदान—प्रेमचंद, ९४) हमी  
बेतरह है अड़ंगे लगाते (चुमते०—हरिऔध, १८६)

(समा० मुहा०—अड़ंगा मारना)

**अड़ियल टट्ट होना**

हर काम को रुकते-रुकते करना, बिना टोके-कहे किसी  
काम को न करना । प्रयोग—बह मन चला, उड़त, सबसे  
अलग रहने वाला अड़ियल टट्ट हो गया (शेखर (१)  
—अश्वीय, ९१)

**अड़ड़ा जमाना**

(१) कई आदमियों का जूटकर हंसी मजाक करना ।  
प्रयोग—फिर छट्टी हुई तो लिखने लगे या दामोदरनकी  
दुकानपर अड़ड़ा जमाने बैठे (दुध०—दे० सं०, ८६)

(२) अधिकार में ले लेना ।

(३) टिक जाना ।

**अड़्डे पर आना**

(१) दुस्त हो जाना, ठीक रास्ते पर आना । प्रयोग—  
घर अभी भड़कता है, धीरे-धीरे अड़्डे पर आवेगा  
(मा—कौशिक, १०८)

(२) अपने निवास स्थान पर आना ।

**अढ़ाई चावल की खिचड़ी अलग पकाना**

अपनी बात सबसे अलग रखना । प्रयोग—न पके पर अढ़ाई  
चावल की कब न खिचड़ी अलग पका ली है (बोल०—  
हरिऔध, १०७)

(समा० मुहा०—अढ़ाई ईंट की मस्जिद उठाना)



### अतीत की मिट्टी खोदना

विगत बातों को याद करना । प्रयोग—शेखर जब एक विषण्ण औदास्य में अपने कमरे में बैठकर दुर्दम अभिमानी पोड़े की तरह अतीत की मिट्टी खोदने लगा XX तो उसने पाया कि मणिका के कहे हुए कुछ एक वाक्य बार-बार आकर उसके विचारोंको बिखेर देते हैं (शेखर (२)—अज्ञेय, २०)

### अदालत का कीड़ा

वह व्यक्ति जो बराबर कचहरी जाया आया करे, मामला मुकदमा किया करे । प्रयोग—दीन दयाल अदालत के कीड़े थे (गदन—प्रेमचंद, ४)

### अदृश्य का हाथ होना

किस्मत के अधीन होना । प्रयोग—हमारे प्रत्येक कार्य में अदृश्य का हाथ है (चित्र०—भग० वर्मा, १०८)

### अधकचरी बात

इधर-उधर से सुनी हुई अप्रामाणिक बात । प्रयोग—क्रान्ति-कारी दल और कांग्रेस दोनों का नाम उनके लिए पहले तो कुतूहल का कारण था किन्तु पीछे उनके सम्बन्ध की अधकचरी बातें भी पास तक पहुंचने लगी (सतमी०—राहुल०, ९१)

### अधर में लटकना

(१) पशोपेश में पड़ना । प्रयोग—समूची जाति का भाग्य अधर में लटका हुआ है (अशोक०—६० प्र० दिव०, ४६)

(२) पुरा न होना ।

(समा० मुहा०—अधर में झूलना,—पड़ना)

### अधोमुख होना

लज्जा के कारण दृष्टि नीची रखना । प्रयोग—अधोमुख रहति अनत नहि चितवति ज्यों गय हारे भक्ति जुवारी (सू० सा०—सूर, ४९९१)

### अनमेल बात करना

प्रतिकूल बात कहना । प्रयोग—अनमिलती बातें कहति, तार्त मुनियत नाहि (सू० सा०—सूर, २१०९)

### अनमोड़ होना

अपनी बात पर दृढ़ रहना । प्रयोग—दीपाली तो जन्म-जन्म की अनमोड़ है (कठ०—दे० सा०, ६०)

### अनसुनी करना

(१) पुकार पर ध्यान न देना । प्रयोग—जीवन-अधार घनआनंद उदार महा, कैसे अनसुनी करी चातिक-पुकार ते (घन० कवित्त०—घना०, १८)

(२) आनाकानी करना ।

### अनाप-शनाप

बेहिमाव, फालतू । प्रयोग—धीर अपनी आमदनी की परवाह न करता हुआ अनाप-शनाप खर्च करता है (गदन—प्रेमचंद, ३१८); देखना, एक बात का ध्यान रखना, घर लोभी न हो, कही अनाप-शनाप हाँके (मा—कौशिक, १३८)

### अनी पर अड़ना

तलवार का बार सहना, मरना । प्रयोग—फिर काम पड़ जाने पर अनी के ऊपर अड़ जाने के लिये मेरी देह तो है ही (मृग०—सु० वर्मा, ३९६)

### अपनपा खोना

अपने अहम् को छोड़ देना । प्रयोग—अति अभिमान लोभ के घाले चले अपनपी खोइ (क० ग्रंथा०—कबीर, १९५); अति सूधो सनेह को मारग है जहाँ नेकु सयानप बाक नहीं तहाँ सचि चलै तजि आपनपी भभकै कपटी जे निसाक नहीं (घन० कवित्त—घना०, ४८)

### अपनपा पहचानना

अपने आप को जानना-पहचानना । प्रयोग—अब आपनपी पहिचानि बिप्र । सब करहु आगिलो काज बिप्र (केशव० (२)—केशव०, २६९)

### अपनपा छिपाना

अपने वास्तविक रूप को छिपाए रखना । प्रयोग—सदा रहहि अपनपी दुराए । सबविधि कुसल कुबेप बनाए (राम० (बाल)—तुलसी, १७१)

### अपनपा पाना

अपने आप को समझना । प्रयोग—अपुनपी आपुन ही में पायो (सू० सा०—सूर, ४०७)

### अपनपा भूल जाना

आत्म-विस्मृत हो जाना । प्रयोग—देलि स्याम को वदन री माई मोहि अपनपी भूल्यो (सू० सा०—सूर, ३३९२); देलि भानुकुल भूषनहि बिसरा सखिन्ह अपान (राम० (बाल)—तुलसी, २४१)



### अपना-अपना चर्खा ओटना

अपनी ही बात किए जाना। प्रयोग—सब अपना-अपना चर्खा ओटने लगती हैं (मैला०—रेणु, ७१)

### अपना उल्लू सीधा करना

अपना मतलब निकालना। प्रयोग—ये किसी के समे नहीं है—ये केवल अपना उल्लू सीधा करना चाहते हैं (विष०—प्रेमी, ९); इस गड़बड़ से लाभ उठाने के लिए स्वार्थी पुस्तक-व्यवसायी प्रकाशक भ्रष्ट पाठोंवाली और असम्बद्ध टीकावाली अट-सट पोथियाँ प्रकाशित करके अपना उल्लू सीधा करते हैं (पद्म पराग—पद्म० जर्मा, ३९०)

### अपना करना,—लेना

सप्रेम स्वीकार करना। प्रयोग—अमृतनाम जपौ जप रसना समोल दास करि लीनो अपना (क० प्रश्ना०—कवीर, २६६); श्री राधे मोहि अपुनो कब करिहौ (भा० प्रश्ना०—भारतेन्दु, ५७७)

### (समा० महा०—अपना घनाना)

अपना कान देखे बिना कौए के पीछे दौड़ना पास में खोजे या देखे बिना दूर खोज करना, किसी के कहकावे में आकर ऐसा करना। प्रयोग—अपना कान देखे बिना कौए के पीछे दौड़ना अच्छा नहीं (मैला०—रेणु, १८)

### अपना घर छोड़कर घर बुझाना

अपने अहित का ध्यान छोड़ दूसरे के अहित को रोकना। प्रयोग—अपनी घर परिहरि कही को पूर बुझावै (सु० सा०—सूर, ४७१३)

### अपना घर समझना

किसी प्रकार का संकोच न करना। प्रयोग—फिर आपहें घर को मैं अपना घर समझता हूँ (मान० (७)—प्रेम-चंद, ५)

### अपना तमाचा अपने मुंह पर पहना

किसी व्यक्ति ने दूसरे को नुकसान पहुंचाने में अपना ही अहित होना। प्रयोग—अच्छा तो अब रहस्य खुला। मैंने तिर पीट लिया। क्या जानता था, अपना तमाचा अपने ही मुंह पर पहना (मान० (१)—प्रेमचंद, २८७)

### अपना दूध छोड़ कर खारा पानी पीना

अपनी अच्छी चीज छोड़ कर बुरी लेना। प्रयोग—अपनी दूध छाड़ि को पीवै कारे कूप को बारी (सु० सा०—सूर, ४५८३)

### अपना बोया आप काटना

जैसा करना वैसा पाना। प्रयोग—अपनी बोयी घाय लुनी तुम, आप ही निरवारौ (सु० सा०—सूर, ४५२२)

### अपना राग अलापना,—गाना

अपनी ही बात कहे जाना। प्रयोग—फिर भी घाना ही राग गाये जाता है (भा० प्रश्ना० (१)—भारतेन्दु, ६२१); अगर तुम अपना ही राग घलापोगे तो मैं कह देती हूँ मैं अपने घर चली जाऊँगी (कर्म०—प्रेमचंद, १७-१८)

### अपना राग गाना

दे० अपना राग अलापना

### अपना रास्ता लेना

(१) 'अपने काममें लगे'—ऐसा कहना। प्रयोग—वे हा काज फिरत भटकत कत अब मारग निज गहिये (सु० सा०—सूर, ४५१८); उनसे आँख बरकाओ। कान मूंद कर अपना रास्ता लिया करो (झांसी०—सु० जर्मा, ५२); उधर जड़ जगत के भीतर देखते हैं तो भरे हुए सरोवर के किनारे जो पक्षी बराबर कलरव करते रहते हैं वे उसके सुनने पर अपना-अपना रास्ता लेते हैं (चिंता० (१)—शुक्ल, १५५)

(२) कोई सम्पर्क न रखना, चल देना। प्रयोग—पै वेदया नहीं कि तुम्हें नोच खसोट कर अपना रास्ता लें (गवन—प्रेमचंद, ४८)

(३) किसी को कोई वस्तु न देनी हो या उसका कोई काम न करना हो तो उपेक्षा पूर्वक 'अपना रास्ता देखो' कह कर टालते हैं।

### अपना लेना

दे० अपना करना।

### अपना समझना

आत्मीय समझना। प्रयोग—अपनी जानि संदेस व्याज करि, ब्रज जन मिलन पठावौ (सु० सा०—सूर, ४७६९)

### अपना सा मुंह लेकर चले जाना,—लौट जाना

बिमिया कर चले जाना। प्रयोग—जब इन्द्रानी ने इन्द्र से माँ कह सुनाया तब वह अपना सा मुंह ले उलट नारदजी के पास आया (प्रेम० सा०—ल० ला०, २२२); रंगे रहे जो अपनापन के रंग में चले गये अपना सा मुंह लेकर वही (बोल०—हरिऔध, ८३); मित्रवृन्द मुजह नाम



अपना सा मुंह लेकर रह जाना

११

अपनी तीन छटांक की पकाना

हाजिरी देने आते और अपना सा मुंह लेकर लौट जाते (मान० (२)—प्रेमचंद, ५६); जब लिली बुलाई भाई, तो सभी शायद मान भी जाती, पर डैडी के साफ इन्कार करने पर लिली अपना-सा मुंह लेकर चली गई (ब्रह्म०—दे० स०, ३५३)

**अपना सा मुंह लेकर रह जाना**

सज्जित होना। प्रयोग—आज होरी ने ऐसी हेकड़ी बतायी कि मैं अपना सा मुंह लेकर रह गया (गोदान—प्रेमचंद, १३०); वह अपना सा मुंह लेकर रह गया (ब्रह्म०—दे० स०, २९); काजी अपना सा मुंह लेकर रह गया (पट्टम पराग—पट्टम० शर्मा, २३२)

**अपना सा मुंह लेकर लौट जाना**

दे० अपना सा मुंह लेकर चले जाना

**अपना सोना खोटा होना**

अपने ही व्यक्ति या वस्तु में ऐव होना। प्रयोग—भाई जान, कहें क्या, जब अपना ही सोना खोटा हो तो परल-बड़या का क्या कुसूर (राधा० ग्रंथा०—राधा० दास, ७१९)

(समा० मुहा०—अपना रुपया खोटा होना)

**अपनी आँख से देखना**

अपने दृष्टिकोण या विचार के अनुसार स्थिति को देखना। प्रयोग—अपने देश को अपनी आँखों से देखना है (अशोक०—८० प्र० द्वि०, १६२)

**अपनी ओंटे जाना,—ही हांकना**

अपनी ही बात कहे जाना। प्रयोग—भगत जी अपनी ही हाँकते चले गये—हरि मारे तो रक्षा कौन करेगा? (ब्रह्म०—दे० स०, २४३); बात समझे न बात की जड़ अपनी ही ओंटे जाती है (मा—कौशिक, ५७) किसी का कहना न मानोगी, बस अपनी ही हाँके जाओगी (धूम०—९० मट्ट, ९१—९२)

(समा० मुहा०—अपनी ओसाना)

**अपनी करनी बखानना, अपने मुंह मियां मिट्टू बनना**

स्वयं अपनी तारीफ करना। प्रयोग—अपने मुंह तुम आपनि करनी। बार घनेक भाति बहु बरनी (राम० (बाल)—तुलसी, २५०); बजरंगी बहुत बड़कर बातें न करो, अपने मुंह मियां मिट्टू बनने से कुछ नहीं होता

(रंग० (१)—प्रमचंद ३२); जो रहे मनमानियों में मस्त वे, क्यों न अपने मुंह मियां मिट्टू बने (बोल०—हरि-श्रीध, ५५)

**अपनी खाट के नीचे देखना**

अपना दोष देखना। प्रयोग—पहले अपनी खाटिया के नीचे भाँक लो, तब दूसरों से बोला (छूठ० (२)—यशपाल, ३४२)

**अपनी खिचड़ी अलग पकाना**

अपने को सबसे अलग समझना। प्रयोग—सब मुसलमान को बुरो बतावें अपनी खिचड़ी अलग पकावें (भा० ग्रंथा०—भारतेन्दु, ५१०)

**अपनी गली का शेर होना**

अपने क्षेत्र में सशक्त होना। प्रयोग—तुम लोग अपनी गली के शेर हो यहाँ चाहें जो कह लो परन्तु अदालत में तुम्हारी गौदड़ भभकी नहीं चल सकती (परीक्षा०—श्री० दास, ९१)

**अपनी जाँघ का सहारा होना**

अपने में शक्ति होना। प्रयोग—बड़ कमाई कर कभी हारा नहीं। जाँघ का अपनी सहारा है जिसे (चुमते०—हरिश्चंद्र, ३५)

**अपनी जेब का**

अपने पास का। प्रयोग—धन संग्रह करने का कार्य तो इन्हीं मोटे-मोटे लोगों के हाथ में होता है और ये अजगर स्वयं अपनी जेब से नाम मात्र को देते हैं (विप०—प्रेमी, २१)

**अपनी डफली अपना राग होना**

सब का अपनी-अपनी बात कहना। प्रयोग—हम कुछ हिन्दू जाति को एक रंग में रंगना चाहते हैं मगर जाति जाति के अपनी-अपनी डफली और अपने-अपने रागने रही सही एकताको धता बता दिया है (चुमते० (मू०)—हरिश्चंद्र, ५)

**अपनी तीन छटांक की पकाना**

अपनी राय देना, व्यर्थ कानून लगाना। प्रयोग—क्यों व्यर्थ बकता है, राजा के पास तो सब चलते ही हैं। वह जो समझेगा सो उचित दंड देगा, फिर तुमको अपनी तीन छटांक पकाए बिना क्या डूबी जाती है (भा० ग्रंथा० (१)—भारतेन्दु, ३०)



**अपनी नाक कटा कर दूसरों का असगुन मनाना**  
अपना नुकसान करके या मर्दा नष्ट करके भी दूसरे का नुकसान करना। प्रयोग—न जाने लोगों को अपनी नाक कटाकर औरों की बदनामी करने में क्या मजा आता है (परीक्षा०—श्री० दास, २१)

**अपनी राह चलना**

अपनी इच्छानुसार करना। प्रयोग—वैसे सब हैं घावा चलने को अपनी-अपनी राह (बुद्ध०—वृत्तन, ७६)

**अपनी राह लगाना**

अपने काम में लग जाना, कोई सम्पर्क न रखना। प्रयोग—पंख घाते ही पट्टे केले पर भाड़ कर गुरु को दक्षिणा में घंगूठा दिखा अपनी राह समते हैं (कला०—उग्र, २१)

**अपनी सी**

अपनी इच्छानुसार। प्रयोग—सिद्धि-मंथ कानों में अपनी सी करने को कूकेना (मर्म०—हरिऔध, १३२)

**अपनी ही गाना**

अपनी ही बात कहे जाना। प्रयोग—अब्ला, मुने दीन-एगा या अपनी ही गाने जाइगा (गोदान—प्रेमचंद, १६४)

**अपनी ही चलाना**

'अपनी कही बात ही मानी जाय' ऐसा रख रखना। प्रयोग—पर वह अपनी ही चलाती है (परस—जैनेन्द्र, ५५)

(समा० मुहा०—अपनी ही बात ऊपर रखना,—बात चलाना)

**अपनी बिल्ली का खींचियाना**

अपने ही व्यक्ति का गुस्सा दिखलाना। प्रयोग—हमारे सामने अकडेगी ! हमारी बिल्ली हमी को खींचियाए (झूठा० (२)—यशपाल, ४८४)

**अपनी ही हाँकना**

दे० अपनी ओर आना

**अपने आगे किसी को कुछ न गिनना**

अपने को ही सबसे बड़िमान समझना और सबको तुच्छ समझना। प्रयोग—बहुत रोस चाहे पिय हना। धागे धालि न काहू गना (पद०—जायसी, ४०१२)

(समा० मुहा०—अपने आगे किसी को कुछ न बढना,—न समझना)

**अपने को उड़ेलना,—खोलना**

अपने मन की सारी बातें कह देना। प्रयोग—उस लंबे से पत्र में मानो संतो ने अपने को उड़ेल कर रख दिया था (मूले०—भग० वर्मा, ३७१); फिर भी मैं आपह पूर्वक अपने को खोलता हूँ क्योंकि यह आत्मकथन नहीं है केवल स्वीकार है (शेखर (२)—अज्ञेय, २०३)

**अपने को खो बैठना**

(१) घात-विस्मृत हो जाना। प्रयोग—मेरी कोख धन्य हुई कि मेरा बेटा देश के काम में अपने को खो बैठा (बौने०—रा० रा०, ५२)

(२) अपना सब कुछ गंवा देना।

**अपने को खोलना**

दे० अपने को उड़ेलना।

**अपने को डुबा देना**

(१) व्यक्तित्व समर्पित करना। प्रयोग—मैं यहाँ आई हूँ तुममें अपने को डुबा देने के लिए (चित्र०—भग० वर्मा, ९५)

(२) किसी काम में लग जाना।

(३) आत्म-विस्मृत हो जाना।

**अपने को बहुत लगाना**

बहुत गर्व करना। प्रयोग—कान्हू तुम बहुत लगावत अपने को होरो-खिलार (भा० प्रश्ना० (२)—भारतेन्दु, ३६२)

**अपने को मिटा देना**

किसी काम में अपने को तबाह कर देना। प्रयोग—अपने को मिटा देने में मैंने कंजूसी नहीं की, खुले हाथ से दिया (शेखर (२)—अज्ञेय, १६६)

**अपने को ही खाना**

अपना ही अनिष्ट करना। प्रयोग—उतर धाड़ तब दीन्ह रिताई। रिमि धापुहि बुधि औरहि साई (पद०—जायसी, ८५८)

**अपने घर बैठना,—रखना**

अपने पास रखना, दूसरों के ऊपर न लादना। प्रयोग—गुर स्वाम देखै सब पश्ये, राजि संदेस परे। (सू० सा०—सूर, ४२०४); मुक्ति रही परि बंठि आपने, निर्गुन मुनि दुख पिये (सू० सा०—सूर, ४३१०)

**अपने घर रखना**

दे० अपने घर बैठना।



### अपने चलते

अपनी शक्ति भर । प्रयोग—अपने चलते न आजू जगि अनमल काहुक कीन्ह (राम० (अ)—तुलसी, ३९१)

### अपने तक रखना

किसी से न कहना । प्रयोग—तुम अभी बंद दिन यह बात अपने ही तक रखो (पैतरे—अशक, १०१)

### अपने पर आना

अपने ऊपर विपत्ति पड़ना । प्रयोग—सब गांधोजी की जे बोलते हैं, पर अपने पर आती है तो कान पर जूनही रंगती (वीने०—रा० रा०, २३)

### अपने पांच में कुल्हाड़ी मारना

अपने ही हाथों अपनी हानि करना । प्रयोग—आप अकारज आपनो, करत कुबुध के साथ । पाय कुल्हारी देत है मूरख अपने हाथ (वृ० स०—वृन्द, १०२); हाथ सबी इन हाथन सों अपने पग आप कुठार में दीनो (भा० ग्रंथा०(२)—भारतेन्दु, १७१); मैं अपने हाथों अपने पांच में कुल्हाड़ी न माखंगा (गोदान—प्रेमचंद, २२४); बहुमत जिस बात के विपक्ष में हो, उसका समर्थन करके हम अपने पांच में कुल्हाड़ी क्यों मारें (परसी०—रेणु, ५००)

### अपने पैरों खड़ा होना

(१) अपनी जीविका स्वयं अर्जित करना । प्रयोग—मैं इन्हें दिखा दूँगी कि मैं अपने पैरों पर खड़ी हो सकती हूँ (रंग० (१)—प्रेमचंद, ५२); अपने पाँवों पर आप खड़े होने का प्रयास करने वाले तुम जैसे युवकों से उन्हें बड़ी सहानुभूति है (चेतन—अशक, २७२)(+); उसे ज़रूर पढ़ना चाहिए परन्तु वह अपने पाँव पर क्यों न खड़ी हो (झुठा० (१)—यशपाल, २७)

(२) बिना किसी आश्रय या सहारे के अपना काम चलाने में समर्थ होना । प्रयोग—उर्दू पत्रों में बहुत कम ऐसे हैं जो अपने पाँवों से खड़े हो सकते हैं (गु० नि०—बा० मु० गु०, ३१०); क्यों न हों पाँव पर खड़े अपने, और का पाँव किस लिये पकड़ें (चुभते०—हरिऔध, ५); अब हमें अपने पैरों पर खड़ा होना चाहिए हमारा उद्धार अपने ही हाथों होगा (रंग०(१)—प्रेमचंद, ४१४); यह हृन्द तब तक चलता रहा x x जब तक पराङ्कर जी की कृपा से रचनाकार

की हैसियत से मैं अपने पैरों पर खड़ा नहीं हो गया (अपनी खबर—उग्र, १०९) देखिए प्रयोग(१) में (+) भी

### अपने मन का होना

मनमानी करने वाला । प्रयोग—आपने माना न, सोपा मान सब, मानते क्यों जब कि अपने मन के हैं (गोल०—हरिऔध, २०८)

### अपने मरे बिना स्वर्ग न मिलना

स्वयं कोई काम किए बिना उसका फल न मिलना । प्रयोग—यही तो बात है, बिना अपने मरे मुरग (स्वर्ग) देखने को नहीं मिलता (मा—कौशिक, ३५२)

### अपने मुँह मियां मिट्टू बनना

दे० अपनी करनी बखानना

### अपने मुँह में आप थप्पड़ मारना

ऐसा काम करना जिससे अपना ही ग्रहित या बदनामी हो । प्रयोग—बदा कैसे देता, अपने मुँह में आप ही थप्पड़ मारता (रंग०(२)—प्रेमचंद, १४४)

### अपने में न होना

अपने ऊपर नियंत्रण लो बैठना । प्रयोग—मुझे क्षमा करें डाक्टर, मैं इस समय अपने में नहीं हूँ (रैशमी०—राम० वर्मा, ६८)

(समा० मुहा०—अपने आप में न होना)

### अपने रंग के राजा

अपनी इच्छानुसार कार्य करने वाला । प्रयोग—अपने अपने रंग के राजा, मानव नहीं कोई (क० ग्रंथा०—कवीर, १९५)

### अपने रंग में भूले रहना,—रंग में रंगे होना

अपने मुख में मुखी होना । प्रयोग—अपने रंग सब कोह राता, मधुकर बास लेहि मँमता (क० ग्रंथा०—कवीर, २३५); रंग बिगड़ा कम न, वे समझी मगर रंग में सदा भूली रहो (चुभते०—हरिऔध, ५७)

### अपने रंग में रंगे होना

दे० अपने रंग में भूले रहना

### अपने रास्ते करना

अपने तरीके से करना । प्रयोग—हम वह काम अपने रास्ते करेंगे, लेकिन फिर अलवार वालों का डर भी तो है (वीने०—रा० रा० ६५)



### अपने रास्ते चलना

(१) अपने तरीके से आगे बढ़ना । प्रयोग—हरीचंद निज बाट चली चल याकों उपाधी नाम (भा० ग्रंथा०—भारतेन्दु, ३६२); दुनिया अपने रास्ते चली गई, अशोक पीछे छूट गया (अशोक—८० प्र० दि०, १३)

(२) किसी दूसरे के काम में बिग्न न डालना ।

### अपने सिर ओढ़ना,—लेना

अपने ऊपर दायित्व लेना । प्रयोग—मत अपजस आनो सिर अपने, कठिन मदन की पीर (सू० सा०—सूर, ४५६३); वह भाग न जाता तो क्या करता, तीन महीने का गर्भ वह अपने सिर ओढ़कर ब्याह करता (कंकाल—प्रसाद, ५४); और मुझे घर ले जाकर मेरी सारी आफत तुम अपने सिर पर ले लो उसमें मेरी हार ही नहीं, अपने को मार कर जो कुछ मने किया है, वह सब भी इतना विफल हो जाता है कि... (शेखर—अज्ञेय, १८८)

### अपने सिर लेना

दे० अपने सिर ओढ़ना ।

### अपने से बाहर होना

(१) आत्म-विस्मृत होना । प्रयोग—हाय ! यह तो अपने से बाहर होय रही है (भा० ग्रंथा—भारतेन्दु, ४३१)

(२) आत्म संयम होना ।

### अपने हाथों

स्वयं । प्रयोग—ते बिग्रन्ह सन आपु पुजावाहि । उभय लोक निज हाथ नमावाहि (राम० उ—तुलसी, ११२२)

### अपने हाथों पैर पर कुल्हाड़ी मारना,—पत्थर मारना

स्वयं अपने अहित का काम करना । प्रयोग—आपने हाथ सों आपने पाँव पै पाँवर पारि परधो पछिताने (जग०—पराकर, २५); अपने हाथ से अपने पाँव में कुल्हाड़ी कौन मारेगा (सुमते० मु०—हरिऔध, ६)

(समा० मुहा०—अपने हाथों अपना गला घोटना, अपने मुँह में थप्पड़ मारना, अपने लिये गड़्ढा खोदना, अपने हाथों कुआँ खोदना)

### अपने हाथों पैर पर पत्थर मारना

दे० अपने हाथों पैर पर कुल्हाड़ी मारना

### अपने हाथों में होना

अपने वश में होना । प्रयोग—कित आवन पुनि अपने हाथों । कित मिलिके खेलव एक सावा (पद०—जायसी, ४१२)

### अपने ही सिर पड़ना

(१) अपने को ही भुगतना । प्रयोग—सुनो सबो अति नहीं कोजिये मूढ़ परे अपने ही (सू०सा०—सूर, २६६८)

(२) अपने ही ऊपर दायित्व आना ।

### अपमान का घूँट पी जाना

अपमान चुपचाप सह लेना, प्रतिवाद न करना । प्रयोग—तो क्या हम अपमान का घूँट चुपचाप पी लें ? (विप०—प्रेमी, ९)

(समा० मुहा०—अपमान पी जाना)

### अपयश का टीका

कलक, बदनामी । प्रयोग—सुनि रे मधुप मूढ़ ब्रज जायो, लै अपजस की टीकी (सू०सा०—सूर, ४४४६)

### अपरस उधारना

अप्रिय कहना, नीरस बात कहना । प्रयोग—बारबार सरक मंदिरा की अपरस रटत उचारै (सू० सा०—सूर, ४१२२)

### अपलक रहना

स्तब्ध रह जाना, पूरी तरह मोहित हो जाना । प्रयोग—तुम्हारी शोभा देख फूलों की आँखें, अपलक रह गई (कला०—पंत, ९७)

### अपलोक चढ़ाना

दोषी ठहराना । प्रयोग—तेकु डरें सुधरें सब काज, अकाज इतो अपलोक चढ़ैयें (घेन० कविस—घना०, २००)

### अफवाह उड़ना या उड़ाना

अशामासिक चर्चा फैल जाना या फैलाना । प्रयोग—खाना खाते-खाते अफवाह उड़ी कि पुलिस आ रही है, बस इतने से ही हमारे हाल पल्ले हो जाते हैं (ये कोठे०—अ० ना०, ९९); बाकी विषयों ने उसे अब भी पढ़ाई में जुटे हुए पाकर आई. सी. एस. की तय्यारी से लेकर असीम खाने तक सब तरह की अफवाहें उसके विषय में उड़ाई (शेखर—अज्ञेय, २१)

### अफवाह गम होना

जोरों से चर्चा होना । प्रयोग—कुछ दिनों में वह अफवाह भी गम हुई कि अधिकारी वर्ग में कुञ्जर साहब की रिया-



सत जल करने का बिचार किया जा रहा है (रंग० (२)  
—प्रेमचंद, २४०)

### अफीम खाए होना

होश - हवास में न होना, सचेत न होना । प्रयोग—  
गायकबाड़, होलकर, सिधिया, अवध के नवाब सब अफीम  
ही खाए बैठे हैं (झासी०—वृ० वर्मा, ११५)

### अव-तब होना

मरने-मरने होना । प्रयोग—जब कभी उसका पोता अव-  
तब का होता तो उसके दरवाजे पर एक गम्भीर हलचल  
मच उठती (धरती०—वि० प्र०, १५२)

### अभय बांह देना

कोई अहित न होगा ऐसा आश्वासन देना । प्रयोग—बरपत  
में गोपाल बुलाए, अभय किये दे बांह (सू० सा०—सूर, १४५५);  
चरन नाइ सिरु बिनती कीन्ही । लछिमन अभय  
बांह तेहि दीन्ही (राम० (कि)—तुलसी, ७७८)

(समा० मुहा०—अभय करना,—दान देना,—देना,  
घबन देना)

### अभिन्न हृदय

बहुत घनिष्ठ । प्रयोग—परन्तु ११२ ... के मूनिवर्सिटी दूर  
में हम दोनों अभिन्न हृदय हो गये (ज्ञान०—यशपाल, ८८)

### अभिमान दलना

घमंड नष्ट करना । प्रयोग—केलि भोन बंठी प्यारी सरस  
सिगार करे सौतिन के सब अभिमान दलत सो (मा० प्रशा०  
(२)—भारतेन्दु, ८२४)

(समा० मुहा०—अभिमान चूर्ण करना)

### अभिमान में जलना

बहुत घमंड करना । प्रयोग—सो धो कहा जु न कियो  
मुजोधन, अबुध आपने मान जरै (विनय०—तुलसी, १३७)

### अमृत के समान होना, अमृत होना

प्रिय, सुखदायक । प्रयोग—काहूँ जल भएउ बिब काहूँ अंबित  
मूरि (पद०—जायसी, २०५); रघुपति चित्रकूट बसि माना ।  
चरित किए श्रुति मुधा समाना (राम० (अ०)—तुलसी, ६८८)

### अमृत में डूबी हुई

अत्यन्त मधुर । प्रयोग—बोले गिरा अभिजं जनु बोरी  
(राम० (बाल)—तुलसी, ३४०)

(समा० मुहा०—अमृत में सनी हुई)

### अमृत होना

दे० अमृत के समान होना

### अयश की पिटारी देना

अपयश का भागी बनाना । प्रयोग—अजस पेडारी ताहि  
करि गई गिरा मति केरि (राम० (अ)—तुलसी, ३८३)

### अरण्य रोदन

व्यर्थ रुदन; व्यर्थ, असफल । प्रयोग—कतलम करत मुनतको  
ह्यां है, होत जु बन को रोयो (सू० सा०—सूर, ४१५८);  
उन्होंने कौंसिल में मि० क्लार्क के बिरुद्ध बड़ा गोर मचाया  
पर यह अरण्य-रोदन सिद्ध झूठा (रंग० (२)—प्रेमचंद, ४३);  
उनसे सखे आने के लिए कहना अरण्य-रोदन ही हो  
गया है (अर्थात्—महादेवी, ६०); हमें आज सावधानी  
से बाधक तत्वों का अध्ययन करना है और देखना है कि  
हमारे मंगल-प्रयत्न अरण्य-रोदन सिद्ध न हों (अशोक०  
—ह० प्र० दिव०, १५५); निजत्व के बादक, इस अरण्य-रोदन  
से लाभ ? (कला०—पंत, ९०)

### अरद्व में डालना

किसी दबाव या रुकावट की स्थिति में डालना । प्रयोग—  
मन में सोच लिया था होरी को किसी अरद्व में डालकर  
गाय को उड़ा लेना चाहिए (गोदान—प्रेमचंद, १०४)

### अरबी फारसी बूकना

अपनी विद्वत्ता का बखान करना । प्रयोग—बे ते मत  
करो गण्यो के नाही, तो तोरी अरबी-फारसी घुसेड़ देवे  
(मा० प्रशा० (१)—भारतेन्दु, ३३५)

### अरमान उछालना

उमंगें तुष्ट करना । प्रयोग—बड़ी अपने मन ही मह-  
किल में घनेक मानसिक प्रेमियों को इकट्ठा कर अपने  
अरमान उछालती थी (वृ० द०—अ० ना०, ६८)

### अरमान निकालना

इच्छा पूरी करना । प्रयोग—वह तो दिल खोल कर अर-  
मान निकालेगी (मान० (१)—प्रेमचंद, ९४)

### अरमानों पर पाला पड़ना

इच्छाओं का दबी रह जाना । प्रयोग—पड़ गया रात ही  
भर में बस उनके अरमानों पर पाला (नूर०—मक़, ११७)

(समा० मुहा०—अरमान ठंडे पड़ना,—सिराना)

### अर्थ खोलना

अर्थ स्पष्ट करना । प्रयोग—और ददे उस जिति के अर्थ  
खोल रहा है (कनु०—भारती, ३२)



**अर्धपिशाच होना**

पैसा कमाने के लिए बहुत कुरबन जाना। प्रयोग—  
प्रकाशक प्रायः अर्ध-पिशाच है (पद्म० के पत्र—  
पद्म० शर्मा, २६)

**अलल्ले-तलल्ले खर्च**

बे-हिमाय खर्च। प्रयोग—कोई बालीस लाख का बोझ  
सिर पर है फिर भी वही दम कम है, वही अलल्ले-तलल्ले  
खर्च है (गोदान—प्रेमचंद, २३५)

**अली की फटकार पड़ना**

बहुत बड़ी मुसीबत पड़ना। प्रयोग—सदा करे, निगोहों  
पर अली की फटकार पड़े (मा—कौशिक, ३११)

**अल्लाह को प्यारा हो जाना**

मृत्यु को प्राप्त होना। प्रयोग—इनके प्रतिरिक्त हूथीता  
बाई और नसीम बाई दो उगती हुई संगीत-तारिकाएँ  
अपनी भरी जबानी में ही अल्लाह को प्यारी हो गई  
(ये कोठे—अ० ना०, १०७)

**अवधि गिनना**

प्रतीक्षा करना। प्रयोग—अवधि गनत इकट्ठक मग जोबत  
तब इतनी माँह झुली (सू० सा०—सूर, ४१७५)

**अवधि बढ़ना**

लिपि निश्चित करना। प्रयोग—आवन घबर्धि बढी हरि  
हुम सौ सोऊ गई व्यतीति (सू० सा०—सूर, ४३६१); बीता  
जानि प्रीधि सब प्रिय की जे हत सौ बरिदा (भा० ग्रंथा०  
(२)—भारतेन्दु, ११६)

(समा० मुहा०—अवधि देना)

**अवसर चूकना,—हाथ से जाने देना**

आए हुए अवसर का लाभ न उठाना। प्रयोग—अहह  
मंद मनु अवसर चूका अबहुँ न हृदय होत बुई टूका  
(राम० (अ)—तुलसी, ५०५); सोफी को जरूर साथ  
लाना और इस अवसर को हाथ से न जाने देना  
(रंग० (१)—प्रेमचंद, ७०-७१)

(समा० मुहा०—अवसर खोना)

**अवसर ताकना**

मोका देखना। प्रयोग—कुटिल कुबपु कुअवसर ताकी।  
जानि राम बनबास एकाकी (राम० (अ)—तुलसी,  
५५७); फिर मंची पर पर अभिषिक्त होने पर भी वह  
प्रतिज्ञा भूल न सका अवसर की ताक में लगा रहा

(राधा० प्रथा०—राधा०दास, २५५)

(समा० मुहा०—अवसर देखना)

**अवसर हाथ आना**

मुयोग मिलना। प्रयोग—यह तो बहुत अच्छा अवसर  
हाथ आया है, छप लेकर धर्म-कार्य में लगा दो (रंग०  
(१)—प्रेमचंद, १२७)

**अवसर हाथ से जाने देना**

दे० अवसर चूकना।

**अवस्था उतरना**

बुरापा आना, जबानी न रह जाना। प्रयोग—मैं पृथ्वी  
हूँ जब मेरी अवस्था उतर जायगी और मैं क्षीण हो  
जाऊँगी तब भी क्या आप इतना प्यार करेंगे? (मृग०—  
द० वमा, ३५६)

(समा० मुहा०—अवस्था ढलना)

**अवा की तरह छाती सुलगना**

भीतर ही भीतर जलन से कुड़ जाना। प्रयोग—समुझि  
राजमुख दुखित अराती। अवा अनल इव सुलगद छाती  
(राम० (वा)—तुलसी, १७१)

**अशक्तियों की लूट और कोयलों पर मुहर लगाना**

मृत्युवान वस्तु की परवाह न करना और व्यर्थ की वस्तु  
को महत्व देना। प्रयोग—उसकी किफायत अशक्तियों की  
लूट और कोयलों पर मोहर को चरितार्थ करती थी  
(प्रेमा०—प्रेमचंद, १५३)

**अस्त्र मोजना**

अस्त्र की धार तेज करना। प्रयोग—आप तो प्रोवेगन्दा-  
मान रहे य? (पद्म० के पत्र—पद्म० शर्मा, १०९)

**अहिवात अचल होना,—युग युग तक रहना**

सदा सीमाव्यवसी रहना। प्रयोग—पदा अचल एहि कर  
अहिवाता (राम० (वा)—तुलसी, ७९); साजि विहासन  
तानहि छातू। तुम्ह माघे जुग जुग अहिवातू (पद्म०—  
जायसी, ५१/७)

(समा० मुहा०—अहिवात अटल होना, चिर होना)

**अहिवात युग युग तक रहना**

दे०—अहिवात अचल होना

**अहिवात जाना**

विधवा होना। प्रयोग—प्रीति करहु रघुवीर पद मग  
अहिवात न जाइ (राम० (लं)—तुलसी, ५७६)



## आ

### आँख आना

आँख में लाली, सूजन और पीड़ा होना । प्रयोग—आँख पानी के बहे है वह गई, आँख आये आँख ही जाती रही ( बोलो—हरिऔध, ३४ )

### आँख उधारना

सचेत होना । प्रयोग—जिन्होंने नहीं आँख अब तक उधारी ( चुभते—हरिऔध, १८७ )

### आँख उधारी रहना

प्रतीक्षा में पलक न लगना । प्रयोग—भरि गड़ बिरह बयारि दरस बिनु, निसि दिन रहति उधारी ( सू० सा०—सूर, ४१८८ )

### आँख उठना

( १ ) बुरी नज़रों से देखा जाना । प्रयोग—अपनी जान की फिक्र न थी पर नारीत्व की ओर किसी की आँख भी न उठनी चाहिए ( मान० ( १ )—प्रेमचंद, २६० )

( २ ) घाशा पूर्णदृष्टि से देखना । प्रयोग—कर्म की समता प्राप्त करने के लिए बार-बार कर्ता की ओर आँख उठती है ( चिता० ( १ )—शुक्ल, १८ ) ; वह उठा तो उठ गई सब देश भरकी आँख उसकी ओर ( सी०—बच्चन, २५२ ) ; नवयुवक समुदाय की आँखें उधर उठ गई ( चित्र०—मग० वर्मा, ७९ )

( ३ ) कृपा दृष्टि होना । प्रयोग—आँख उठती दीन दुखियों पर रहे, पाँव गिरतों के उठाने को उठे ( चोखे—हरिऔध, २० )

( ४ ) लेने की इच्छा होना । प्रयोग—यहां तक कि चांदनी भोक के घमीर व्यापारियों की लोभी आँखें मुभागी के भाइकी तरफ उठने लगी ( सु० सु०—सुदर्शन, ४५ )

( ५ ) आँखों में सूजन, लाली और पीड़ा होना । प्रयोग—देखिए आँख आना ।

### आँख उठाकर देखना

( १ ) कुदृष्टि से देखना । प्रयोग—जब स्वजन लोग अपने शील-शिष्टाचार का पालन करें—आत्म समर्पण, गहानु-

भूति, सत्य का अवलम्बन करें, तो दुर्दिन का साहस नहीं कि उस कुदृष्टि की ओर आँख उठाकर देखे ( स्कंद०—प्रसाद, ६७ )

( २ ) मुकाबला करना या विरोध करने का साहस होना, असम्मान का भाव रखना । प्रयोग—भारत में जिस समय चन्द्रगुप्त, अशोक आदि के शक्तिशाली राज्य थे और देश एकताके सूत्र में बंधा हुआ था उस समय किसका साहस था कि इसकी तरफ आँख उठाकर देखता ( विप०—प्रेमी, ९८ )

( ३ ) गौर से देखना । प्रयोग—चारों ओर आँख उठाकर देखिए तो बिना काम करने वालों की ही चारों ओर बढ़ता है ( भा० ग्रंथा० ( ३ )—भारतेन्दु, ८९८ )

### आँख उठाकर देखने वाला

कुदृष्टि से देखने वाला । प्रयोग—को प्रभु संग मोहि चितबनिहारा ( राम० ( अ )—तुलसी, ४३५ )

### आँख उठाकर भी न देखना

( १ ) तुच्छ समझना, नकारत करना । प्रयोग—जिस हिन्दी की ओर पहले लोग आँख उठाकर न देखते थे वह सबकी आँखों का तारा हो चली थी ( गु० नि०—दा० मु० गु०, ११० )

( २ ) ध्यान न देना । प्रयोग—दुकान पर सभी तरह के लोग घाते थे, मर्द भी औरत भी । क्या मजा कि किसी की ओर आँख उठाकर देखा हो ( गद्य—प्रेमचंद, २३७ ) ; पोखर में कुछ लोग सिपाहों बटोर रहे थे × × उनकी ओर उमने आँख उठाकर देखा भी नहीं ( शैल ( १ )—अज्ञेय, ६८ )

( ३ ) धनित करने या हड़पनेका साहस भी न कर पाना । प्रयोग—जिस दिन ऐसा हो जायगा उस दिन कोई भी दूधर आँख उठाकर न देखेगा ( स्कंद०—प्रसाद, ११० ) ; और जब तक वह स्वाधीन था, मगध सम्राट अंग, कलिंग की ओर आँख उठाकर भी नहीं देख सकता था ( वैशाली० ( २ )—चतुर०, ९५ )



(४) भला आदमी होना, कुदृष्टि से न देखना । प्रयोग—वह किसी दूसरी मिहिरिया की ओर घाँव उठाकर भी नहीं देखता (मान० (१)—प्रेमचंद, ३०१)

(५) कार्य में इतना व्यस्त होना कि देखने का भी समय न मिले ।

(६) बहुत लजालु होना ।

### आँख उठाना

(१) बुरी दृष्टि से देखना । प्रयोग—फिर किसी की तरफ आँख भी न उठाये (सु० सु०—सुदर्शन, २००)

(२) हानि पहुँचाने की चेष्टा करना । प्रयोग—हुजूर के सहेदे हुक्मत में किस की मजाल है जो दाही रैयत पर आँख उठावेगा (राधा० ग्रंथा०—राधा० दास, ७१६)

(३) देखने का साहस होना । प्रयोग—जिते में उठाकर प्यार करता था, उसकी तरफ घ्राज घ्राखें न उठा सका (मान० (१)—प्रेमचंद, ९२); सिर उठा कैसे सकेंगे वे भला घ्राँख अपनी जो उठा सकते नहीं (चुमते०—हरिऔध, ६७)

(४) ताकना, देखना ।

### आँख उलझना या उलझाना

प्रेम होना या करना, आकृष्ट होना । प्रयोग—का करौ गोइया अरुमि गई अलिमा (मा० ग्रंथा० (२)—भारतेन्दु, १८२); बाबे ! तेरे बान-जाल में कैसे उलझा हूँ लोचन (पल्लव—पंत, ३७)

### आँख उलट जाना या उलट देना

(१) पुतली का ऊपर चढ़ जाना (मरते समय) । प्रयोग—यही तक कि कई बार उसकी घ्राखें उलट गई (निर्मला—प्रेमचंद, १४३); उन्होंने दो हिचकिचा ली और आँखें उलट दी (गोली०—चतुर०, ३२८)

(२) घमंड से व्यवहार में अन्तर आना । प्रयोग—लट गये जब कि चाल उल्टी चल, आँख कैसे न उलट तब जाती (बोल०—हरिऔध, ४८)

### आँख ऊँची न होना

(१) उच्च विचार न जाना, उसमें निर्णय न लेना । प्रयोग—हम जाति को ऊँचे उठाना चाहते हैं, पर हमारी आँख ऊँची होती ही नहीं (चुमते० (मू०)—हरिऔध, ६)

(२) लज्जा के कारण सामना न कर पाना ।

(समा० मुहा०—आँख ऊपर न उठना)

### आँख ऊँची रखना

(१) आत्मसम्मान होना । प्रयोग—घ्राँख ऊँची न रख सके जब तो आँख ऊँची भला रहे कैसे (चुमते०—हरिऔध, ९२) (+)

(२) मानदण्ड ऊँचा रखना । देखिए प्रयोग (+)

### आँख ऊँची होना

(१) सम्मानित होना । प्रयोग—आँख जिससे देव की ऊँची हुई क्यों न घ्राँखों पर बिठाये हम उसे (चुमते०—हरिऔध, ४)

(२) दूसरों का सामना कर पाना, सगर्व कुछ कह पाना । प्रयोग—भले ही वह रह ले नीची, आँख ऊँची होगी कैसे ? (मम०—हरिऔध, ८९)

### आँख ओट पहाड़ ओट होना

सामने न होने पर दूर-नजदीक एक मा होना । प्रयोग—क्यों लिखते, हम से नाता ही क्या था ! मुँह देखे का प्रीति थी । घ्राँख ओट पहाड़ ओट (गबन—प्रेमचंद, २५२)

### आँख कड़वाना

(१) आँख पर जोर पड़ने या नींद के कारण घ्राँखों में पीड़ा होना । प्रयोग—जागना जब न लग सका कड़वा तब भला आँख क्यों न कड़वाती (बोल०—हरिऔध, ३७)

(२) नींद घाना ।

### आँख करना

ध्यान देना, लगाव रखना । प्रयोग—घ्राँ हमसों मिनिबो ठहराय के नैन कहुँ प्रनते ही करीजे (मति० मक०—मतिराम, १०९)

### आँख का अंधा गाँठ का पूरा

मूर्ख धनवान । प्रयोग—सब तो यह है कि जो कोई ऐसा ही शीकीन आँख का अंधा गाँठ का पूरा मिलेगा तो लेगा (प्र० पी०—प्र० ना० मि०, १४७); आँख के अंधा और गाँठ के पुरों की तलाश आपको भी उतनी ही है, जितनी मुझ को (गोदान—प्रेमचंद, २३५); प्राचीनकाल



का दूकानदार अपने भगवान से छापन करोड़ की चौलाई की भिक्षा के साथ आँख के अंधे गाँठ के पूरे ग्राहक की भी माँग करता था (मेरे०—गुलाब०, ४९)

### आँख का कांटा

मन का दुर्भाव । प्रयोग—आज भी जीका नहीं कांटा कटा है खटकता आँखका कांटा न कम (चुमते०—हरिऔध, ६७)

### आँख का काजल चुराना

सामने की चीज चुरा ले जाना । प्रयोग—देखते ही देखते जो ले गया आँखका काजल चुराना है यही (बोल०—हरिऔध, ४५)

### आँख का तारा

बहुत प्रिय व्यक्ति । प्रयोग—सो तो प्रानप्यारी साँचो नैनन की तारो, जाहि नैक होत न्यारी देखिबोई मृत्तियत है (क०र०—सेनापति, ५१); तुमहि प्रान-धन जीवन-सर्वस्व तुम मम नैनन के तारे (राधा० प्र०—राधा० दास, ८०७); माता की आँखों का तारा, बाप का बहुत बड़ा दुलारा (मर्म०—हरिऔध, ११२); क्या वे अपनी माताओं की नयन-ताराएँ नहीं थी ? (वाग०—ह० प्र० द्वि०, २०५) (समा० मुहा०—आँख का तिल,—नूर)

### आँख का तिल खो देना

अंधा हो जाना । प्रयोग—क्यों न खो देंगे आँख का तिल वे आँखका तेल जो निकालेंगे (चोखे०—हरिऔध, १४)

### आँख का तेल निकालना या निकलवाना

बारीक काम करके आँखों पर बहुत जोर पड़ना या ढालना । प्रयोग—आँख का तिल है गर हमें प्यारा, आँख का तेल तो निकालें क्यों (बोल०—हरिऔध, ४२); कलकत्ते के प्रेस बड़े ही रहीं हैं । प्रूफ पड़ते-पड़ते आँखों का तेल घोर कमर का कचूमर निकल गया (पद्म० के पत्र—पद्म० शर्मा, १५०)

### आँख का पानी

लज्जा । प्रयोग—फूटें, पानी न हो बड़ी भी जिन आँखों में (साकेत—गुप्त, ४४८)

### आँख का पानी गिर जाना,—डल जाना,—मर जाना

निरलस हो जाना, मान मर्यादा का सवाल न करना । प्रयोग—जिनके आँख का पानी डर गया है और शर्म और हिजाब को धो बैठे हैं उन्हें नीचे से नीचा काम

करने में संकोच नहीं रहता (सा० सु०—वा० मट्ट, ४७); दूसरी लड़की होती तो मुँह न दिखाती । आँख का पानी मर गया है (गोदान—प्रेमचंद, १५८); तेरी आँख का पानी मर गया है तो तू जाकर माँग (झुठा०—यशपाल, ४८७); क्या शर्म हुआ सब छूटी ? गिर गया आँख का पानी (नूर०—मक्त, ३१); जो गिराये गिर न आँखों से सके गिर गये वे आँख का पानी गिरे (बोल०—हरिऔध, ४८)

(समा० मुहा०—आँख का पानी उतर जाना)

### आँख का पानी डल जाना

दे० आँख का पानी गिर जाना

### आँख का पानी मर जाना

दे० आँख का पानी गिर जाना

### आँख का मारा

प्रेम-पीड़ित । प्रयोग—क्या अजब मर मर जिये माता रहे आँख का मारा अगर मारा फिर (बोल०—हरिऔध, ५१)

### आँख का सच्चा

कुदृष्टि न रखनेवाला । प्रयोग—आदमी बड़ा देवता था, हाथ का मुच्चा और आँख का भी मुच्चा (झुठा०—यशपाल, १२६)

### आँख का हँसना

आँखों से हँसी टपकी पड़नी । प्रयोग—उसकी आँखें हँस रही थी (चित्र०—मंग० वर्मा, २४)

### आँख काढ़ना

रोष प्रकट करना । प्रयोग—आँख सो बाप काढ़ते ही थे । जब लगे काढ़ने कलेजा क्यों (चोखे०—हरिऔध, ५०)

### आँख-कान खुला रखना

अत्यन्त सावधानी से किसी काम को करना । प्रयोग—तो न खुल खेलती मुसीबत यों जो खुला आँख कान रखते हम (चुमते०—हरिऔध, ४४)

(समा० मुहा०—आँख-कान खोल कर चलना)

### आँख-कान देना

सुनकर या देखकर ध्यान देना । प्रयोग—धीरतों के भगड़े पर यदि मर्दे लोग आँख कान देने लगे तो हुआ (मैला०—रेणु, ७१)



### आँख कान होना

(१) समझाने वाले होना । प्रयोग—पहले तो हम लोगों के आँख कान यही थे (मैला०—रैनु, २३१)

(२) देख सुन कर समझने वाला ।

### आँख (आँखों) की ओट

(१) दृष्टि से परे । प्रयोग—जो हसि सो हसि मुह मसि साई आँखि ओट उठि बैठहि जाई (राम० (अ)—तुलसी, ५२५)

(२) क्षणिक वियोग । प्रयोग—हरीचंद रस-माती पलह दूग अंतर न सहै (भा० प्रथा० (२)—भारतेन्दु, ४०३)

### आँख (आँखों) की ओट करना

(१) सामने से दूर करना । प्रयोग—बेगि करहु किन आँखिन ओटा, देखत छोट छोट नूप डोटा (राम० (बाल)—तुलसी, २५६)

(२) प्रयत्न पूर्वक छिपा कर रखना ।

### आँख की कमी

ज्ञान की कमी । प्रयोग—किस तरह हमको भला कुछ सूझता क्योंकि हममें आँख की ही है कमी (सुमते०—हरिऔध, १४९)

### आँख (आँखों) की किरकिरी

बुझने वाला व्यक्ति या बात । प्रयोग—भड़ी तरह अदा किया हुआ छोटा पाठ भी नाटक के लिए आँख की किरकिरी बन सकता है (मीर०—जग० साधु, १५२); किरकिरी वह आँख की जाये न बन जो हमारी आँख का तारा रहा (चौखे०—हरिऔध, १९४)

### आँख (आँखों) की पकड़ में आना

दिखलाई पड़ना । प्रयोग—कुछ क्षण देखते रहने के उपरान्त बाँदी का वह गहना आँखों की पकड़ में आ गया (मृग०—वृ० वर्मा, ३१९)

### आँख (आँखों) की पुतली फिर जाना

मरणासन्न होना । प्रयोग—एक क्षण में आँखों की पुतलियाँ फिर गयीं (प्रेमा०—प्रेमचंद, ३६५)

### आँख (आँखों) की पुतली बनाकर रखना

मल और प्रेम से रखना । प्रयोग—जो बिधि पुरब मनो-रय काली करौ तोहि चख पुतरि आला (राम० (अ)—तुलसी, ३९३)

### आँख (आँखों) की पुतली होना

अत्यंत प्रिय होना । प्रयोग—राजकुमारी सभी सिसौदियों की आँखों की पुतली है (विप०—प्रेमी, ११); तुम्हारे पिता, बाबा, दादी तुम्हें आँखों की पुतली बना कर रखेंगे (मिखा०—कौशिक, ९०); घोर घम्माजी तुम्हें आँखों की पुतली बनाकर रखेंगी (रंग० (१)—प्रेमचंद, ६६)

### (समा० मुहा०—आँख की रोशनी होना)

### आँख (आँखों) के अंधे

मूर्ख, अज्ञानी । प्रयोग—मैं कुछ ऐसा x x आँखों का अंधा बोड़े ही हूँ जो गिर झिंझा कर खेद कहूँ (भा० प्रथा० (१)—भारतेन्दु, ६१५); पुस्तक के (और संस्थाओं के भी) भीतर चाहे कुछ न हो; टाइटिल रंगीन हों; कुछ चित्र हों, पढ़ाई-लिखाई साफ न हो, मकान बड़िया हों (रंगी हुई धोतियाँ हों) आँखों के अंधे लोग लट्टू हो जायेंगे (पद्म० के पत्र—पद्म० शर्मा, १२२)

### आँख (आँखों) के आगे

उपस्थिति में, सम्मुख । प्रयोग—इतनी ही सुल कमल नयन मेरी अखियनि आगे खेलौ (सू० सा०—सूर, ३५९१); यह सब भा इन आँखिन्ह आगे (राम० (अ)—तुलसी, ५२५); हरि मम आँखिन आगे डोलौ (भा० प्रथा० (२)—भारतेन्दु, ७५३); ऐसे-ऐसे जगत-हित के कार्य हैं चक्षु प्रागे (प्रिय०—हरिऔध, १९४)

### (समा० मुहा०—आँख के सामने)

### आँख के आगे अंधेरा छा जाना या होना

(१) अत्यन्त घायल जनक स्थिति का आ पड़ना । प्रयोग—जब से हरि ह्या से सिधारे तब से हमारी आँख आगे अंधेरा हो रहा है (प्रेम० सा०—ल०ला०, २६७); राशि बंध ठीक हो जाने पर जब लेन देन की बातें होने लगतीं तब कृष्णचन्द्र की आँखों के सामने अंधेरा छा जाता या (सेवा०—प्रेमचंद, ७) (÷)

(२) संसार सूना दिखलाई पड़ना । प्रयोग—जिस वक्त उसका वह तेजी के साथ निकल जाता खयाल करता है x x आँखों के सामने अंधेरा छा जाता है (राधा० प्रथा०—राधा० दास, ६१९); देखिए प्रयोग (÷) भी ।

(३) कमजोरी आदि के कारण चक्कर आ जाना । प्रयोग—



पेट में लगी हुई लात से शक्ति एक बार 'हुक' कर के रह जाती है, उसकी आँखों के सामे अंधेरा छा जाता है (शेखर (२)—अज्ञेय, १५६)

### आंख (आँखों) के तले आना,—नीचे आना

(१) देखने में आना । प्रयोग—मण्डन दे जू उठे कुच दोऊ आव न उपमा आँख तर कोऊ (नंद० प्रश्ना०—नंद०, १०८); है जिसे पैसा नचा नहीं पाता आ सका ऐसा न आँखों के तले (चौखे०—हरिऔध, १४)

(२) अच्छा या सुन्दर लगना । प्रयोग—देव देखि तब बालक दोऊ प्रब न आँख तर आवत कोऊ (राम० बा)—तुलसी, २९७; जूषभानुसुता हित मत्त मनोहर औरहि दीठि न आनत है (केशव०—केशव, ३४); ए मन मेरे कहा करी ते तजि दीन चलयो जू प्रवीन हूँ तो सौ । ल्यायो न काहु भे प्राँख तरहो कहूँ कबहुँ करि तेरा भरोसो (घन० कवित्त—घना०, २१५)

### आंख के तारे हिलना

प्रेम होना । प्रयोग—वे उतारे बित्त से न उतरे हिल सके जिन से प्राँख के तारे (चौखे०—हरिऔध, ३५)

### आंख के नीचे आना

#### दे० आंख के तले आना

### आंख (आँखें) खुल जाना या खुलना

(१) नींद टूटना । प्रयोग—बस बन्द करो, चन्द्रमा समुद्र के साथ सोने को गया और अभी उसकी आँख नहीं खुलने की (मा० प्रश्ना०(१)—भारतेन्दु, ६४६); एक दिन जब सुबह मेरी आँख खुली तो सर में कुछ हलका दर्द हो रहा था (इन्स्टा०—भग० वर्मा, ८)

(२) ज्ञान होना, चेतना । प्रयोग—'टकार' का यही गुण है कि जब सारी लक्ष्मी विलायत दो ले गये तब भारतीय लोगों की कुछ आँखें खुली हैं (प्र० पो०—प्र० ना० मि०, ८३); प्रहृष्ट क्यों नहीं भारतवासियों की खुल जाती हैं आँखें (सर्म०—हरिऔध, १४१); जब अपने सिर पड़ेगी तब प्राँखें खुलेंगी (कर्म०—प्रेमचंद, ४२); नीलू की माँ न जायेगी तो लोगों की आँखें खुलेंगी (बोने०—राँगा०, ४०)

(३) तराबट घाना । प्रयोग—तुमने गिलास मेज पर रख

दिया । जरा पियो, प्राँखें खुल जायेंगी (मान०(२)—प्रेमचंद, ४०)

(४) आश्चर्य चकित हो जाना । प्रयोग—बाग-बगीचे, सानदार सड़के बिजली की चकाचौध पैदा कर देनेवाली रोशनी देखकर आँखें खुल जायेंगी (भूले०—भग० वर्मा, ३०७); ऐसा बड़ावा हो कि मड़वे वाले देखकर फड़क उठे । सब की आँखें खुल जाय (गहन—प्रेमचंद, ७)

(५) मुग्ध में होना, स्वप्न होना ।

(६) सावधान होना ।

### आंख (आँखों) खोल कर

समझ बुझकर । प्रयोग—महाराज तनिक आँख खोलकर देखिए (राधा० प्रश्ना०—राधा० दास, ६७२); मेरी बुद्धि भ्रष्ट हो गई है, मैं आँखें खोलकर गड़ में गिर रहा हूँ (रंग०(१)—प्रेमचंद, १३९); देखो खोलकर आँख, सुनो खोलकर कान (दुद०—वचन, ४४)

### आंख खोलना

(१) किसी को सचेत करना, ज्ञान देना । प्रयोग—अस्तु मस्तु साधा सब बोले, प्रथ जो अहे नयनविधि खोले (पट०—जायसी १५१०); यद्यपि अनुवाद अच्छा नहीं बना तथापि योरप वालों की आँखें खोलदी (सा० सी०—महा० द्वि०, ४३); बहुत पो चुके प्राँखें खोलो । ग्याव तुला पर तन की तोली (सर्म०—हरिऔध, १६); शिक्षा-दीक्षा दूर, मेरे सामने तो आँखें खोलते ही जीवन-बंध का जो पृष्ठ पड़ा वह शिक्षा दीक्षाको चौपट करनेवाला था (अपनी खबर—उग्र, २६)

(२) जन्म पाना । प्रयोग—खोलता इवर जन्म नोवन मूदती उघर मृत्यु तण क्षण (पञ्चव—पंत, ९८)

(३) पशुओं के बच्चों का जन्म के तीन चार दिन पश्चात् साँख खोलना ।

(४) आँख बनवाना ।

### आंख गड़ना

(१) किसी वस्तु पर नजर लगी होना । प्रयोग—जाहू भले हो कान्हू, दान अंग-अंग को माँगत । हमरो जोवन रूप, आँखि इनकी गड़ि लागत (सू० सा०—सूर, २०७९); मिड़मिड़ाती है पकड़ कर पाँव जो क्यों तुम्हारी आँख उस पर ही गड़ी (बोल०—हरिऔध, ५५)



(२) आँख में पौड़ा होना ।

(३) आँख धंसना ।

(४) दृष्टि जमाना ।

### आँख गड़ाकर देखना

बहुत ध्यान पूर्वक देखना । प्रयोग—आहट की दिशा में आँखें गड़ाकर देखने लगे (मृग०—वृ० वर्मा, २६); तो गड़ेगा न आँख में कोई हम अगर दीठ को गड़ा देखें (चोखे०—हरिऔध, १२९)

### आँख गड़ाना या गाड़ना

दृष्टि जमाना, टकटकी बाँधना । प्रयोग—कुमारगिरि ने विश्वलेखा पर अपनी आँखें गड़ा दी (चित्र०—भग० वर्मा, ४९); कमी पतंग की पेंच देखती है और कटी हुई पतंग पर जब तक ओभल न हो जाय, आँख गाड़े रहती है (व्याग०—जैनेन्द्र, १०); सब लोग घोड़ों की घोर टकटकी लगाए थे और मैं उन दशकों के मुख के भावों पर आँखें गड़ाये था (जहाज०—इ० जोशी, २०५)

(२) प्राप्ति की उत्कट इच्छा होनी । प्रयोग—यह आपको चूसकर निसत्व बनाकर जयपुर का पल्ला पकड़ेगा उन्हें निबोड़ कर मेवाड़ पर आँख गड़ाएगा (विष०—प्रेमी, ९७)

### आँख चकाचौंध होना,—चौंधिया जाना

(१) किसी वस्तु की ऊपरी टीमटाम का बहुत आकृष्ट करना जिसके कारण और कुछ जंचे ही नहीं । प्रयोग—चाकचिक्य ने लोगों की आँखें चौंधिया दी है, सादी चीज पर ठहरती नहीं (पद्म० के पत्र—पद्म० शर्मा, १२२); उनकी घामा से आँखें होती चकाचौंध (सो०—वचन, २७०)

(२) किसी वस्तु की चमक इमक के कारण आँखों का न ठहरना ।

### आँख चढ़ना

(१) नसे या त्रीद से पलकों का चढ़ जाना । प्रयोग—कुछ हमें भी गया नशा था चढ़ देख उसकी चढ़ी चढ़ी आँखें (बोल०—हरिऔध, ३६)

(२) गुस्से में जाना । प्रयोग—चल न ऐसी चाल लखत जग आँख चढ़े जेहि (राधा० ग्रंथा०—राधा० दास, ५३);

मुन्नाकी आँख चढ़ गई (चोटी०—निराला, १३९); इधर तो उनकी आँखें और भी चढ़ी रहती हैं (सितली—प्रसाद, ५४)

(३) मृत्यु के पूर्व पुतलियोंका ऊपर की घोर स्थिर होना । प्रयोग—चढ़ गई आँखें, पलक धिर हो गई डल पड़ा आँसू डलक पड़ी गरदन (बोल०—हरिऔध, १३६)

### आँख चढ़ाना

गुस्सा करना । प्रयोग—आँख चढ़ गया न कौन भला आँख अपनी चढ़ा चढ़ा करके (चोखे०—हरिऔध, १३); इस पर लड़की कुछ आँखें चढ़ाकर धत् कह कर ढोड़ गई (गु० कहा०—गुलैरी, ४९)

### आँख चमकना

(१) खुश होना । प्रयोग—मुख हसते-खेलते देखकर उसकी आँखें चमकने लगती थी (सु० सु०—सुदर्शन, ७१)

(२) तेज रोशनी के कारण दृष्टि स्थिर न रह सकना ।

### आँख चरने जाना

सामने की चीज पर नज़र न होकर कहीं घोर होना । प्रयोग—आँख चरने न जो गई होती दुख लले आँख के न चयो घाता (बोल०—हरिऔध, ५३)

### आँख चलना

आँख से आँसू बहना । प्रयोग—हा करुणामय नाथ हो । केनो ! कृष्ण ! मुरारि ! फाटि हिय दृग चल्यो (नंद० ग्रंथा०—नंद०, १६३)

### आँख चलाना

आँखों से इशारा करना । प्रयोग—कैसी आँखें चलाता है । अगों को कितना फड़काती है (मृग०—वृ० वर्मा, १४६)

### आँख चुराकर देखना

छिप कर देखना । प्रयोग—सूर स्वाम वा छविकों नागरि निरखति नैन चुराए (सू० सा०—सूर, २७७३); जब अटल नृत्य कर रहा था तब वह आँख चुरा चुरा कर लासी की ओर देखता था (मृग०—वृ० वर्मा, ११-१२); उसका माना मुनने के जलावा अगर कोई साहित्य मेरे दिल में थी तो वह सिर्फ इतनी ही कि मैं आँख चुराता हुआ उसकी वह मोहनी मूरत देखता रहूँ (जहाज०—इ० जोशी, १३५)



### आंख चुरा लेना

आकृष्ट कर लेना । प्रयोग—चुराती किसकी आंखें न थी भलकती मुख पर सहज उमंग (मर्म०—हरिऔध, ११६)

### आंख (आंखें) चुराना,—छिपाना

(१) कतराना, सामने न जाना । प्रयोग—आप दियो मनु फेरि लै, पलटै दोनी पीठि । कौन चाल यह रावरी, लाल, लुकावत दीठि (बिहारी रत्ना०—बिहारी, २९०); प्रीति पगी अखियाँनि दिखाइके हाय घनीत सु दीठि छिपये (घन०कवित्त—घना०, १९); बोलो, है या नहीं ? आंखें क्यों छिपाते हो ? (गवन—प्रेमचंद, १२६); गांव का साहूकार भी पतिव्रता स्त्रियों की भांति आंखें चुराने लगा (मान० (८)—प्रेमचंद, ६); छद्मीनी री मोसे आंखों को चुराना नही अच्छा । चुराना, छिपाना, लजाना नहीं अच्छा (पैतरे—अशक, ११८); गायत्री इन स्त्रियों से आंख चुराया करती थी (प्रेमा०—प्रेमचंद, ३६६) (÷)

(२) लज्जा से बराबर न ताकना । प्रयोग—अगिया नील, माइनी राती, निरखत नैन चुराई (सू० सा०—सूर, १६७१); तेरी आंखें देख चुराते हैं आंखें बन में आहु (नूर०—भक्त, ३); देखिए प्रयोग (१) में (÷) भी

### आंख चूकना

प्रसावधानी होना । प्रयोग—चूक अपनी कब समय पर देख ली दीठ सब दिन चूकती ही तो रही (चुमते०—हरिऔध, ५८)

### आंख चौंधियाना

दे० आंख चकाचौंध होना ।

### आंख छत से लगाना

(१) प्रतीक्षा करते रात बीत जाना । प्रयोग—सोच में रात बीत जाती है, आंख छत से लगी रहती है (चुमते०—हरिऔध, १५)

(२) टकटकी लगाना ।

(३) आंख टंग जाना ।

### आंख छिपाना

दे० आंख चुराना

### आंख (आंखें) जमना या जमाना

नजर स्थिर होना या स्थिर नजर से देखना । प्रयोग—

अटल ने उसको देखा परन्तु आंख न जमा सका (मृग०—वृ० वर्मा, १४०); उत्तर में मैंने मुस्करा दिया और आंख भील पर जमा दी (अजय०—देवराज, १०५); एजाज उतरी । लोगों की आंखें जम गईं (चोटो०—निराला, ३०)  
(२) लेने की निपट होना । प्रयोग—किसलिये माला हिलाते तब रहे माल पर ही जब जमी आंखें रहीं (चुमते०—हरिऔध, १२४)

### आंख (आंखें) जमीन से गड़ना

शर्मा जाना या शर्माकर नीचे धरती की ओर एकटक देखना । प्रयोग—उनकी पीवा शूकी हुई थी, आंखें धरती में गड़ी हुई थीं (बाण०—ह० प्र० द्वि०, १३७); उसकी आंखें कुमारगिरि से हटकर पृथ्वी पर गड़ गईं (विश्व०—भग० वर्मा, १४८); उसकी आंखें जैसे धरती में गड़ी जा रही थीं (चेतन—अशक, १७)

(समा० मुहा०—आंखें ज़मीं से लग जाना,—लगा लेना)

### आंख जलना

(१) कोप होना । प्रयोग—झांति जाहु, दुर आगे तें देखत आंखि बरति हैं मेरी (सू० सा०—४१४६); आंख जल जाय देख देख उसे आंख का जल उसे बनालें क्यों (बोल०—हरिऔध, ४२)

(२) आंख का दुख से जलना या कष्ट पाना ।

### आंख (आंखें) जाना

(१) अंधा होना । प्रयोग—जोत तब कैसे चली जाती नहीं, जब किसी की आंख ही जाती रही (चौखे०—हरिऔध, ५५)

(२) दिखलाई पड़ना । प्रयोग—आंखिन ना खिन जात कहूँ, धृति साखिन, देव मुनाखिन दुखै (शब्द०—देव, ९); बारों ओर जहाँ तक आंखें जातीं, भीड़ ही भीड़, आदमी ही आदमी, सिर ही सिर (गोली—चतुर०, ३४)

(३) ध्यान आकृष्ट होना । प्रयोग—घोर कुछ नापव यह भी पा कि रेखा की चर्चा से रियासत में लोगों की आंखें उसकी ओर जायेंगी, कुछ तनाव पैदा होगा और रेखा फिर उससे साहाय्य चाहेगी (नदी०—अज्ञेय, ५३)



### आंख जुड़ना

टकटकी लगो होना । प्रयोग—केतु-पट अंधल सवश है उड़ रहे कनक-कलशों पर अमर दृग जुड़ रहे (साकेत—गुप्त, ३)

### आंख जोड़ना

(१) नजर मिलाना । प्रयोग—मुनहु सूर सहजहि की धी रिम, मो सौ लोचन जोरति ही (सु० सा०—सूर, २८१७); जोरि नयन निरलजवा कत मुसकाउ (रहीम कवि—रहीम, ५२)

(२) प्रेम पूर्ण दृष्टि से देखना । प्रयोग—भोह उर्व, आंख उलटि, मोरि मोरि, मुहु मोरि, नीठि नीठि भीतर गई रोठि दौठि सौ जोरि (बिहारी स्तना०—बिहारी, २४२); भोह नचाइ प्रेम बितवन लखि, हंसि मुमुकाइ नैन रह्यो जोरि (भा० ग्रंथा० (२)—भारतेन्दु, २८०)

### आंख भपकना

नौद घाना, आंख बन्द होना । प्रयोग—प्रातःकाल के समय उसकी आंखें क्षण भर के लिए भपक गई (मान० (८)—प्रेमचंद, ४९)

### (समा० मुहा०—आंखें भपना)

### आंख (आंखें) टंग जाना

(१) मृत्यु के पूर्व पुतलियों का ऊपर चढ़ जाना एवं स्थिर हो जाना । प्रयोग—जो हमारा बा बहुत दिन से टंगा आज आंखें भी हमारी टंग गई (बोले०—हरिऔध, ३३)

(२) स्थिर दृष्टि से देखना । प्रयोग—जो नेत्र अभी तक जपाव पर ठिके हुए थे, वे सब फिर चर पर टंग गये (देवकी०—रा० सा०, ७०)

### आंख (आंखें) टिकाना,—ठहराना,—धिराना

दृष्टि का स्थिर रह पाना । प्रयोग—कोई निराल बिचकी भ्रुकुटि पर, नैन ठहराई (सु० सा०—सूर, २४२०); तरनि गई चकाबोधि के, नहीं नैन विराही (सु० सा०—सूर, २८३५); धक्की बार शेखर ने आंखें नीची करली—व्यथा के उस अनिमान के घामे उसकी आंख नहीं टिकी (शेखर(२)—अज्ञेय, १२४)

### आंख (आंखें) टूटी पड़ना

बहुत नौद घाना । प्रयोग—मेरी आंखें तो टूटा पड़ रही हैं (मुगा०—वृ० वर्मा, ४६०)

### आंख (आंखें) टेढ़ी करना या होना

(१) नाराज होना । प्रयोग—कर सके हम भी भला ही तो करे घाल भी टेढ़ी करे तो क्यों करे (बोल०—हरिऔध, ३७); जब हमारी आंख टेढ़ी हो गई क्यों न टेढ़ी आंख से तो देखते (बोल०—हरिऔध, ३४) (+)

(२) पहले की कृपा दृष्टि में जतर पड़ना, प्रतिकूल होना । प्रयोग—एक शुक की आंख टेढ़ी थी सो उसे यह मरकत पाराम कर लेना (पैतरे—अश्क, १४८); देखिये प्रयोग (१) में (+)

### आंख टंढी करना या होना,—सिराना

किसी चीज को देखकर मुग्न होना । प्रयोग—मूरदास पनि नंद की घरनी, देखत नैन सिराइ (सु० सा०—सूर, ६५१); कबहु नयन मम सीतल ताता (शम० (सु०)—तुलसी, ८०९); इकलै प्रान पिपारे पाये देखि हरष भरे नैन सिराये (नन्द०ग्रंथा०—नन्द०, १५१); जे दृग सिराए घनआनंद दरस रख ते अब अमोही दुख-ज्वाला जारियत है (घन० कवित्त—घना०, २२६); अखिया सिराती ताप छाती की बुझाती, रोम रोम सरसाती तन सरस परस ते (क० र०—सेनापति, २४); मधुरी मूरति लखि अखिया आइ सिरावे (भा० ग्रंथा०(२)—भारतेन्दु, २९१) भगवान से नित्य मनाती हू कि हमारी राजकुमारी को सुन्दर वर मिले, जिसे देख देखकर मैं अपनी आंख टंढी करूं (भा०ग्रंथा०(१)—भारतेन्दु, १०); इस मरते बले और एक बार उनको देखकर अपनी आंख टंढी करूं (ठेठ०—हरिऔध, ६०); बड़ी सुन्दर और कोमल बपूटी थी उनकी पुषवपू । देखकर नत्र सीतल हो गए (गोलौ०—चतुर, २७९); ऐसी चीजें कि देखकर आंखें टंढी हो जाय (मान०(२)—प्रेमचंद, ६१); तुम देख आंखें टंढी कर जीवन मकल बनाऊंगी (नूर०—मक्त, १०)

### आंख ठहरना

(१) अत्यन्त सुन्दर वस्तु को देख कर दृष्टि का चकाबोह हो जाना । प्रयोग—चक्कीकारी ऐसी हो रही है कि आंखें नहीं ठहरती (गोदान—प्रेमचंद, २३५)

(२) कोई वस्तु खेच लगना । प्रयोग—वह कन्या जैमाल कर लिये, चारों ओर दृष्ट किय बीच में फिरती है, पर किसी पे दृष्टि उसकी नहीं ठहरती (प्रेम० सा०—ल० ला०, २२९); किस पर आंख ठहरती है, बतलाओ



(कल्याणो—जेनेन्द्र, १३२); आंख जिस पर ठहर नहीं पाती  
आंख में वह ठहर सके कैसे (चौले—हरिऔध, ४०)

(३) स्थिर दृष्टि से देखना । प्रयोग—देखिए “आंख  
टिकना” में

**आंख ठहराना**

दे० आंख टिकाना

**आंख डालना**

(१) प्रेम करना, ध्यान में रखना । प्रयोग—सौदागर  
की लड़की आंखें नृपकुमार पर डाले (नूरु—मक्त, ६१)

(२) किसी स्थिति पर विचार करना । प्रयोग—हुए  
उत्तेजित मन के भाव शान्त बन जाते हैं तत्काल, याद कर  
मानवता का मंत्र, लोक नियमन पर आंखें डाल (वेदेही—  
हरिऔध, २५)

(३) किसी वस्तु को ध्यान से देखना ।

**आंख (आंखें) तरेरना**

क्रोध भरी दृष्टि से देखना । प्रयोग—मुनि लछिमन  
बिहसे बहुरि नयन तरेरे राम (राम—(वा) तुलसी, २८४)  
आये जब मोहन रंग भरे, क्यों मो नैन तरारे करे  
(नन्द—ग्रंथानु—नंद०, १३३); जो भरते हैं तारने का दम  
उनका आंखें तरेरना देखो (चुमते—हरिऔध, १२३); मुन्नी  
उनके पास से दूर हट गई और आंखें तरेरती हुई बोली—  
कर चुके दूसरा उपाय (मान०(१)—प्रेमचंद, १४६); मोती  
बाई ने आंख तरेर कर जूही का हाथ दबाया—राजा मुन्गे  
तो गर्दन काट कर फिकवा देंगे (झांसी—पु० शर्मा, ७१)

**आंख तृप्त करना या होना**

देखकर सुख पाना या होना । प्रयोग—तृप्त बदन देखे  
बिना ये, तृप्त होत न नैन (सू० सा०—सूर, २६१९)

**आंख धिराना**

दे० आंख टिकाना ।

**आंख (आंखें) दिखाना**

गुस्सा करना, कोप जताना । प्रयोग—बहुत भांति लिन्ह  
आंखि दिखाए (राम० (वा)—तुलसी, २९७); भकुआ भरंगी  
जब हिलसी हरामजादे, लावर दंगल स्यार आंखिन दिखाये  
तैं (ठाकुर०—ठाकुर, २७); गुस्से से अगर कोई आंखें मुझे  
दिखावे (गु० नि०—वा० मु० गु०, ६७२); दिखाता है तम  
रवि को आंख, सपन धन की घनता धवलोक (मर्म०—हरि-

औध, ३७); हम महारानी राज्यश्री के चाकिचन सेवक हैं पर  
यदि किसी ने आंख दिखाई तो हम उसका उचित उपचार  
जानते हैं (वाण०—ह० प्र० दि०, २५८); मैंने तो निश्चय कर  
लिया है कि अगर कभी आंखें दिखायीं तो मैं भी इन्हें मजा  
चखा दूंगी (मान०(७)—प्रेमचंद, ४२)

**आंख देकर देखना**

एकटक देखना । प्रयोग—राष्ट्रहृ देखि दग दैं कहा तुहि  
न लाज कछु भूत । मैं वेटी वृषभानु की तूं अहीर को पूत  
(जग०—पद्माकर, ६४)

**आंख (आंखें) देखना**

गुस्सा या रोव सहना । प्रयोग—देखलें आंख क्यों किसी  
की हम पड़ गये भीड़ क्यों कुड़े काखें (बोल०—हरिऔध,  
३८)

**आंख (आंखें) देना**

(१) ध्यान देना । प्रयोग—समय और आंखें हमी हैं न  
देने (चुमते—हरिऔध, १८७)

(२) अज्ञान दूर करना ।

**आंख (आंखें) दौड़ाना**

(१) ध्यान देना । प्रयोग—दौड़ में हम हैं बहुत पीछे  
पड़े पर किसी ने आंख दौड़ाई नहीं (चुमते—हरिऔध, ५७)  
(२) चारों ओर देखना ।

**आंख न उठाना**

(१) कोई सम्पर्क न रखना, एक दम छोड़ देना ।  
प्रयोग—अबकी जान बची तो सराब की घोर आंख न  
उठाऊंगा (मान० (३)—प्रेमचंद, १९४)

(२) ध्यान देना, आकृष्ट होना । प्रयोग—इस विधुर  
जीवन में मैंने किसी स्त्री की ओर आंख तक नहीं उठाई  
(गहन—प्रेमचंद, ३८)

(३) लज्जा आदि के कारण सामने न देखना ।

(४) किसी काम में लगे रहना ।

**आंख न ठहरना**

(१) न जचना । प्रयोग—चाकविस ने लोगों की आंखें  
चोपिया दी हैं सादी चीज पर ठहरती नहीं (पद्य० के  
पत्र—पद्य० शर्मा, १२२)



(२) किसी वस्तु का बहुत चमकीला होना या सुन्दर होना जिसको देखते ही बने। प्रयोग—सब कहता है बाबू कीर्ति पर तो आंख नहीं ठहरती थी (मान० ७)—प्रेमचंद, ६१)

(३) दृष्टि न टिकना।

### आंख न डालना

(१) ध्यान या महत्व न देना। प्रयोग—जिसने तुम्हारी बुराई पर आंख न डाली, तुमको देवता समझा XX हाथ ! तुमने उसी देवबाला को छोड़ा (टैट०—हरिऔध, ५२-५३)

(२) तनिक भी न देना।

### आंख (आंखें) न मिलाना

रख न देना। प्रयोग—किस्मत का धनी है। हायरैक्टर हो गया। अब तो आंख भी नहीं मिलाता (पैतरे—अश्व, ८७)

### आंख न मिला सकता

(१) लज्जावश सामना न कर पाना। प्रयोग—मारे लज्जा के पत्नी से आंखें न मिला सका (लिलो—मिराला, ९१)

(२) प्रताप या तेज के कारण मुकाबला न कर पाना। प्रयोग—सीढ़ दिस्टि कड़ हेरि न जाइ। जेई देखा सो रहा मिर नाई (पट०—जायसी, १/१६)

### आंख नचाना

चंचलता पूर्वक आंख की पुतली को इधर-उधर करना। प्रयोग—छेल नए नित रोकत सैन मु फँसत का पै अरैल भए हो। छे लकुटी हँसि नैन नचावत बैन रचावत सैन-तए हो (घन० कवित्त—घना०, १९७)

### आंख (आंखें) निकलना

बहुत घबराना। प्रयोग—घबकी बाजार बड़ा तेज रहा महतो, इसके अस्सी रुपए देने पड़े। आंखें निकल गयी (गोदान—प्रेमचंद, ८)

### आंख निकालना

गुस्से से देखना। प्रयोग—हरिधन ने आंखें निकाल कर कहा—क्या मैं तुम लोगों से कम काम करता हूँ ? (मान० १)—प्रेमचंद, १४०); राम-राज्य के शकुलजी बुरा मान गए आंखें निकाल कर बोले..... (वेंद०—अ० ना०, ४२७);

जो उठा तक मर्के न अपनी आंख। आंख उस पर निकालना है भूल (बोल०—हरिऔध, ३६)

### आंख (आंखें) नीची करना या होना

लज्जित होना। प्रयोग—या पवित्र कुल सामने सबको नीची नैन (राधा० प्रश्ना०—राधा०दास, ६०६); यहाँ घाई हो आंख नीची करो। मतकन चटकने पर अब मत मरो (गु० नि०—वा० मु०गु०, ७०३); देखकर नीकपन तुम्हारा यह हिन्दुओं, आंख हो गई नीची (चुमते०—हरिऔध, २५); जब मैं उसके सामने जाता हूँ तो मेरी आंखें नीची हो जाती हैं (मिखा०—कौशिक, २०३); अबकी बार शेखर ने आंखें नीची कर ली (शेखर(२)—अज्ञेय, १२४); मेरी तरफ देखकर बोलो, आंखें नीची करना मर्ी का काम नहीं (गवन—प्रेमचंद, ९१)

### आंख (आंखें) नीली पीली करना या होना

कोध करना या होना। प्रयोग—पी ली है हमने ऐसी भंग निरासी उलटे आंखें नीली पीली कर लेंगे (बोल०—हरिऔध, ५५)

### आंख पटपटा जाना

आंख फूट जाना। प्रयोग—पट, पटा कर, न पट सकी जिससे क्यों गई पटपटा न वे आंखें (चोखे०—हरिऔध, ३५)

(समा० म्हा०—आंख पट्टम होना)

### आंख (आंखें) पड़ना

(१) देखने में आना, दिखाई पड़ना। प्रयोग—राम लखन जब दृष्टि परे, री (गीता० (वा)—तुलसी, ७६); ज्योंही आंखें मुझ पर पड़ी प्यार के साथ बोलो (प्रिय०—हरिऔध, ९५); सत्य पर उसकी आंखें पड़ रही हैं (परस—जनेन्द्र, ९६)

(२) किसी वस्तु पर नजर होना।

### आंख (आंखें) पथराजाना

(१) प्रतीक्षा करते करते थक जाना। प्रयोग—आंख पथरा गई न बरसे क्यों तुम ऐसे भए कठोर (राधा० प्रश्ना०—राधा०दास, २१); बड़े नालायक हो यहाँ प्रतीक्षा करते-करते आंखें पथरा गई (मिखा०—कौशिक, १९६)

(२) नैनो का गति हीन हो जाना, मरणासन्न होना। प्रयोग—बिनय ने नायकराम को देखा। नाड़ी का पता न



गा, आंखें पधरा गई थी (रंग०(२)—प्रेमचन्द, ६२); जो न रखते कालेजे पर पत्थर आंख पधरा अगर नहीं जाती (चुमते०—हरिऔध, १५३)

### आंख (आंखों) पर चढ़ना

(१) बुरा लगना । प्रयोग—क्यों चढ़ाकर आंख आंखों पर चढ़े (बोल०—हरिऔध, ३८); आंख पर चढ़ गया न कौन भला आंख अपनी चढ़ा चढ़ा कर के (बोले०—हरिऔध, १३)

(२) अच्छा लगना ।

(३) ध्यान में बना रहना ।

### आंख (आंखों) पर पट्टी बांधना,—परदा पड़ना

बुद्धि भ्रष्ट होना । प्रयोग—किन्तु लोभ तथा दुर्वासना की पट्टी मेरी आंखों पर बांधी थी (राधा०—द्र० स०, ६२); काकी ने लड़कों को खिला-पिला दिया मुझसे पूछा तक नहीं । क्या अब उसकी आंखों पर भी परदा पड़ गया है (मान०(१)—प्रेमचन्द, १३); किस लिये है आंख पर परदा पड़ा (चुमते०—हरिऔध, ९१)

### आंख (आंखों) पर पट्टी बांध रखना

(१) सामने होती हुई बात पर भी ध्यान न देना । प्रयोग—इसी प्रकार जब प्रभाव तेज हुआ तो आपने अकाल की तरफ से आंखों पर पट्टी बांधकर दिल्ली दरबार किया (गु० नि०—बा० मु० गु०, २००); भेद का बांध बांधती बेला, आंख पर बांध न लें हम पट्टी (चुमते०—हरिऔध, ४४)

(२) मूर्ख होना ।

### आंख (आंखों) पर परदा पड़ना

दे० आंख पर पट्टी बांधना

### आंख (आंखों) पर रखना

(१) आपस्त आदर करना । प्रयोग—हो चुके देश पर निष्ठावर जो X चाहिये आंख पर उन्हें रख लें (चुमते०—हरिऔध, ५)

(२) आराम से रखना ।

### आंख (आंखें) पसार कर देखना

अच्छी तरह देखना । प्रयोग—हरि त्यों ठुक दीठि पसारत ही अंगुरीन पसारन लोग लगे (केशव०(१)—केशव०, ९२); अतः आंखें पसार कर देखो कि तुम्हारे जीवनकाल में पड़ी

निर्वाण मृष्टि वाले पंच किस घोर भुक्त रहे हैं (प्र० पी०—प्र० ना० मि०, १५६); जब जाति के दुखों पर हम आंख अपनी पसार देते हैं (चुमते०—हरिऔध, ६०)

### आंख (आंखें) फटना

(१) आपसमें चर्कित रह जाना । प्रयोग—बस फट सी गई बड़ी आंखें, मानों भी नई जड़ी आंखें (साकेत—गुप्त, १६२); मुनन्द की पुत्री मुनन्दा, वृषभानु की पुत्री राधा, प्रचंड की दुहिता चित्रगंधा के नेत्र फटे से थे (देवकी०—रा० रा०, १२२-१२३); है रही फूट फूट जाये तो किस लिये आंख है फटी पड़ती (बोल०—हरिऔध, ३३)

(२) आंखों में बहुत पीड़ा होना ।

### आंख (आंखें) फड़कना

आंख की पलक का बार बार हिलना जो शुभ या अशुभ सूचक माना जाता है । प्रयोग—फरकहि मुखद विलोचन बाहू (राम० (अ)—तुलसी, ५८४); आप मत जाइए, देखिए मेरी दाहिनी आंख फड़कती है (राधा० ग्रंथ०—राधा० दास, ८०८); बाहू मेरी तो फड़कती ही नहीं है फड़कती आंख तो फड़का करे (बोल०—हरिऔध, ३५)

### आंख (आंखें) फाड़कर देखना

(१) आंख खोलकर देखना । प्रयोग—जागता मैं आंख फाड़े, हाथ, मुधियों के सहारे (सो०—बच्चन, ११३); देखते आंख फाड़ फाड़ रहे, हम गला फाड़ फाड़ बिल्लाये (चुमते०—हरिऔध, ७०)(÷); वे कागज-पेंसिल लिये बड़े उत्कण्ठित चित से आंखें फाड़े, आप के जाने का मार्ग देख रहे हैं (पद्म पराग—पद्म० शर्मा, ३६)

(२) आश्चर्य से देखना । प्रयोग—अंतर ही किधौ अंतरहोदग फारि फिरी कि अभागिन मीरी (घन० कवित—घना०, १०८); धुधली आंखें फाड़ कर बोले—आप भंग तो नहीं खा गये हैं ? (मान०(१)—प्रेमचन्द, २२९); मृत्युञ्जय ने बीज गुप्त की ओर आंखें फाड़ कर देखा (चित्र०—भग० वर्मा, १७९); वह चर्कित भाव से आंखें फाड़-फाड़ कर मेरी ओर देखा रहे थे (जहाज०—इ० जोशी, १४४)

(३) क्रोध से देखना ।

### आंख (आंखें) फिर जाना

पहले की सी कृपा न रह जाना; बे-मुरीबती आ जाना । प्रयोग—उनमें कोई तो भी चढ़ा कर आंखें फिरा गये और



कोई सिर हिलाकर चुप हो रहे (पद्म पराग—पद्म० शर्मा, ८८); भोला की आँखें कुछ ऐसी फिरी कि उस अब रंगू में सब बुराईयाँ ही बुराईयाँ नजर आती (मान० (७)—प्रेमचंद, १); हम फिरने न बात से अपनी आँख जो फिर गई तो फिरने दो (चुभते०—हरिऔध, १४)

### आँख (आँखें) फूट जाना

(१) घोर अज्ञान होना। प्रयोग—फूट घर में न फैलने पावे, फूट कर भी न घाँस फूटने पावे (चुभते०—हरिऔध, ३७); तो का ऐसी आँखें फूट गईं के घरम-करम कुछ नहीं लेखत ? (छासी०—गुं० शर्मा, १५०)

(२) बुरा लगना; कुछन होनी। प्रयोग—हाँ हाँ, मैं गवाही करने को तैयार हूँ। मेरा नाम सब से पहले बिना दो। अंधे को देखकर मेरी तो आँखें फूटती हैं (रंग०(२)—प्रेमचंद, ११७); देखकर कटता कलेजा जाति का फूटती है घाँस, छाती टूटती (चुभते०—हरिऔध, ७८)

(३) सिलसिले-बढ़ाई धाँदि कायों की बहुत अधिक करने से आँखों में कष्ट होना या ज्योति कम हो जाना। प्रयोग—कपड़े सोते-सोते मेरी आँखें फूट गयी (मान०(१)—प्रेमचंद, ९७)

(४) किसी रोग या चोट के कारण आँखों का ज्योतिहीन हो जाना।

### आँख (आँखें) फेरना

पहले की सी कृपा या स्नेह दुष्टि न होना। प्रयोग—मुनि री सभी दोष नहि काहुँ, हरि हित-जोवन फेरे (सू० सा०—सूर, ३८०७); दुख और पाँ कासों कहीं को मुनै, ब्रज की बनिता दुग फेरे रहै (जग०—पद्माकर, १४)(+); बीजमूल की ओर से आँखें फेर कर वह नृत्य करने लगी (चित्र०—भा० शर्मा, ११); आँख अपनी सिपा छिपा करके फेर मुँह घाँस फेरते देखा (बोल०—हरिऔध, ४८)(+)

(२) बिगड़ होना। प्रयोग—सूर, नर, मुनि, जसूर, नाग साहिब ती पनेरे। (पे) तो तो जो ली राखरे न नेकु नयन फेरे (विनय०—तुलसी, ७८); देखिए प्रयोग (१) में (+) भी (समा० मुहा०—आँख मोड़ना)

### आँख (आँखें) फैलाकर देखना

घाटपर्व से देखना, दूर तक देखना। प्रयोग—उन्होंने आँखें फैलाकर परिषद्-भवन में उमड़ती उल्लसित भीड़ को देखा (वैशाली०(१)—चतुर०, १६)

### आँख फैलाना

सचेत करना। प्रयोग—तुलसीदास ने सिर्फ सपानों की आँख फैलाई है, यानी महापुरुषों की नहीं (कुललो०—निराला, १०)

### आँख (आँखें) फोड़ना

कोई ऐसा काम करना जिससे आँख पर जोर पड़े। प्रयोग—यहां रात-दिन आँखें फोड़नी पड़ती हैं तब कहीं बिटा घाती है (मान० (१)—प्रेमचंद, ७९); दिन-दिन भर पूक रीढ़री में घाँसे फोड़ता हूँ (मोर०—जग० माधुर, ७०)

### आँख (आँखें) बंद करके

बिना सब बात सोचे बिचारे। प्रयोग—काम आयेगी नहीं चालाकियाँ, जब करेंगे काम घाँसे बंद कर (चोखे०—हरिऔध, १४); पद्मा की बातों को वह प्राचीन मर्यादानुसार आँखें बंद करके मान लेता था (मान०(१)—प्रेमचंद, १)  
(समा० मुहा०—आँखें मूंद करके)

### आँख (आँखें) बन्द होना

(१) मल्टु होना। प्रयोग—मालूम नहीं, कब घाँसे बंद हो जाँय, फिर यह छाती किसके हाथ लगेगी, कौन जाने ? (मान० (२)—प्रेमचंद, २७)

(२) अज्ञान में पड़े रहना। प्रयोग—हम अंधकार में उकासा करते थे, बंद आँखों को खोलते थे, सोते को जगाते थे (चुभते० (मू०)—हरिऔध, २)

(३) ध्यान न देना।

### आँख (आँखें) बचाना

चुपके-चुपके, बिना जानकारी के कुछ करना। प्रयोग—इती भीर हूँ भेदिके, कित हूँ हूँ इत आइ, फिरें होठि जूरि होठि सौ सब की होठि बचाइ (विहारी रत्ना०—विहारी, ६१२); हकए गवन नबेजिघा, होठि बचाइ। पीड़ी जाइ पलंगिघा सेज बिछाइ (रहोम कवि०—रहोम, ४४); मिस मालती उसकी आँख बचाकर कमरे से निकलने लगी (गोदान—प्रेमचंद, ७१); जूनतारा माता-पिता की आँख बचाकर जारती से मिल जाना चाहती थी (ब्रह्म०—दे० स०, १२३)

### आँख बदल जाना या बदलना

परस्पर वर्तवि में मूलता होना या करना। प्रयोग—है उसी का मिल रहा बदला तुम्हें, वे तबहु घाँसे गई हैं



मगो बदल (चुभते०—हरिऔध, २४)(+); क्यों भूट बोलते हो ? तुम्हारी तो आंखें ही बदल गई थी (सु० सु०—सुदर्शन, २४४) (÷)

(२) रख परिवर्तन होना या करना । प्रयोग—यही तो इनमें बुराई है कि चार पैस देले और आंख बदली (गोदान—प्रेमचंद, १३०); प्रेम देखकर एक बार उसने ही ऐसी आंख बदल (नूर०—मक्त, ७६); देखिए प्रयोग (१) में (÷) भी

### आंख बरकाना

आंख बचाना । प्रयोग—उनसे आंख बरकाओ । काम मूढ़ कर अपना रास्ता लिया करो (झांसी०—वृ० ठमा, ५२)

### आंख (आंखें) बरसना

आंखों से आंसू टपकना । प्रयोग—तौ हमकी होती बत यह गति, निश्चि दिन बरसति आंखी (सु० सा०—सूर, ३८२७); बाके गुन जब चित चढ़े, बरसत नयन अपार (कुण्ड०—गिरधरदास, १०); आंखें मकेत से कहती हैं कि हमें कुछ न कहो, नहीं बरसने लगेंगी (कंकाल—प्रसाद, ३८); सांस खींच कर कहते-कहते बरस पड़ी आंख भर-भर (नूर०—मक्त, १०)

### आंख (आंखें) बराबर करना या होना

सामना करना । प्रयोग—देखते बार-बार है उनकी आंख होती नहीं बराबर है (बोल०—हरिऔध, ४८)

### आंख बहाना

रोना । प्रयोग—घाय नहीं पर, दायं परी, बुरि आई बिनायक आंख बहाऊँ (केशव—हि० श० सा०)

### आंख (आंखें) बिगड़ना

(१) रख या विचार में परिवर्तन होना । प्रयोग—क्यों भला हम बिगड़ न जायेंगे जब हमारी बिगड़ गई आंखें (बोले०—हरिऔध, १५)

(२) आंख उलटना—पवरा जाना ।

### आंख (आंखें) बिछना

आदर-सम्मान होना । प्रयोग—उन बिछे निरुपरी के पांव तले जो न आंखें बिछी बिछी तो क्या (चुभते०—हरिऔध, ५)

### आंख (आंखें) बिछाना

(१) प्रेम से स्वागत करना । प्रयोग—आंखें बिछ जाती

थी पथ में मैं जब करने जाती मैं (नूर०—मक्त, ४)

(२) प्रेम या उत्सुकता से प्रतीक्षा करना । प्रयोग—क्या बिछाये आंख तब बैठे रहे, आंख बिछ पाई न जब तलचों तले (चुभते०—हरिऔध, ६); आधी पड़ी पीछे बटल भी X X था गया । जैसे वे दोनों उसके लिए आंख बिछाये बैठे हों (भूग०—वृ० ठमा, १५६)

### आंख बैठ जाना

आंख मल जाना । प्रयोग—जब कि उठना बहुत सताता है आंख तो बैठ क्यों नहीं जाती (चुभते०—हरिऔध, ६७)

### आंख (आंखें) भर आना या लाना

(१) आंखों में आंसू आना । प्रयोग—पंथ निहारै कामनी खोजन भरी नेह उवासा (क० ग्रंथा०—कबीर, ३०३); नयन भरि जो रोय दीनों धमिल आपद दीन (सु० सा०—सूर, ३८८८); ये फिरि फिरि लपटाये नेत्र बहुरे भरि आवें (कुण्ड०—गिरधरदास, २६); घाह भरे भरि घायो गरी घनुघान भरे अंखियां भरि आई (मर्म०—हरिऔध, २८); अमरकान्त की आंखें फिर भर आई (कर्म०—प्रेमचंद, ३)

(२) कससा होना । प्रयोग—महाराज इस बात के सुनते ही करना कर आंखें भर बगुदेव जी बोले..... (प्रे० सा०—ल० ला०, ३२७); यह सुन कर ब्रजकिशोर की आंखें भर आई (परोक्षा०—श्री० दास, १५३)

### आंख भर देवना

(१) सूख अफली तरह देवना । प्रयोग—बन बन बूंदी नैन भरि जोऊं, पीव न मिले तो बिलखि करि रोऊं (क० ग्रंथा०—कबीर, २१२); धनि न नैन भरि देखा पीऊ । पिय न मिला धनि सौ भरि जोऊ (पद०—जायसी, ५२/४) (÷); जाहु बसो पर आनु, नैन भरि हम देख्यो है (सु० सा०—सूर, २१०९); देखे नहीं कबहुं भरि घांघिनि घांघिहि जैसे बले चित सीने (केशव०(१)—केशव, ५७) (÷); देलान दे हरि को भरि दीडि, परी दिन एक सरोजिन मेरी (शब्द०—देव, ६१) (÷); जब वह कौन है जो तुम्हें आंख भरकर और तब से देख सके (इंशा०—इंशा०, १०४); मुनत हुती पुस्यारथ जिनको । देखहु रूप नैन भरि जिनको (प्र० सा०—ल० ला०, १०८) (÷); मैं ऐसी पाणिनी हूँ कि मेरी के साथमें आने पर भी उसे आंख भर न देखा



(भा० ग्रंथा० (१)—भारतेन्दु, ५०६) (÷); हा ! उन्मत्ते नयन भरतू देख ले धूलि ही को (प्रिय०—हरिऔध, ५७); इस बार बाबू साहब ने लड़की को दृष्टि भर के देखा (मिसा०—कौशिक, २)

(२) लुप्त होकर देखना । प्रयोग—चरन कमल नित रमा पलोवै चाहति नेकु नैन भरि जोवै (सु० सा०—सूर, ६२१); जगत पिता रघुपतिहि बिचारी भरि लोचन छवि लेहु निहारी (राम० (बा)—तुलसी, २५३); एक संग रंग ताकी चरचा पलावै कौन घाँख भरि देखिये की साथ मरिषत है (क० १०—सैनापति, ३६); सेखर ने आँख भरकर उसकी ओर देखा और आगे बढ़ गया (शेखर (१)—अज्ञेय, १७०)

### आँख (आँखें) मारते मारते

तनिक सी देर में, बहुत शीघ्र । प्रयोग—तिहिजल गाजत महावीर सब, तरत घाँखि नहि मारत (सु० सा०—सूर, ५६७); आँखें मारते मारते लहना सिंह सब समझ गया (गु० कहा०—गुलेरी, ५४)

### आँख (आँखें) मारना

(१) घाँखों से इशारा करना । प्रयोग—हरीचंद झूमे मतवारी दूग मारौ कोऊ जकी सी, धकी सी कोऊ खरी एक घर में (भा० ग्रंथा० (२)—भारतेन्दु, ७७२); भिगुरी सिंह ने आँखें मार कर कहा—निकालो पचास रुपए पटवारी साहब (गोदान—प्रेमचंद, ११८); चन्द्र ने आँख मार कर कहा था—दोस्त, सुना है तुम्हारा काम तो उसके बगैर चल जाता है (नदी०—अज्ञेय, २२३); बीगू के बाबू ने मुरेन्द्र की ओर देख कर घाँख मारी, और मुस्कराए (मा—कौशिक, १०८)

(२) आँख के इशारे से मना करना । प्रयोग—घाँख की देखी कहेंगे लाख में मारते है आँख तो मारा करें (बोल०—हरिऔध, ३६)

### आँख मिचना

मर जाना । प्रयोग—अच्छा, अब यदि भगवान न करें, कल को उनकी आँखें मिच गईं, तो मेरी क्या दशा होगी ? (मा—कौशिक, १०)

### आँख (आँखें) मिलना

(१) प्रत्यन्त प्रिय वस्तु का मिलना । प्रयोग—सबेरे हमारे रेजीमेंट को देहरादून जाने का हुक्म हुआ । मुझे घाँखें सी मिल गयीं (मान० (२)—प्रेमचंद, १०७)

(२) दो व्यक्तियों का परस्पर एक दूसरे की ओर देखना (विशेष-प्रेम भाव से) । प्रयोग—उन हरकी हंसि कै, इतै, इन सौपी मुसकाइ । नैन मिलै मन मिलि गये दोऊ मिलवत गाइ (बिहारी रत्ना०—बिहारी, १२८); आनन्द-सरूप घलि साँवरो तब्यौ ता कहं, दीठि के मिलत बड़ि परधौ बित चावरी (घन० कवित्त—घना०, १८७); उनकी एक मान अभिलाषा यही होती है कि किसी प्रकार आँखें मिल आयें (सु० सु०—सुदर्शन, २२१)

### आँख (आँखें) मिलाना

(१) आँख सामने करना, बराबर ताकना । प्रयोग—चन्द किरन रस रसिक चकोरी, रवि रख नयन सकद किमि जोरी (राम० (अ)—तुलसी, ४२८); राधोजू - श्री जानकी - लोचन मिलिबे को मोद, कहिवे को जोगु न, मै बातें सी बनाई है (गीता० (वा)—तुलसी, ७१) (÷ १); अब आप कान रखके, आँख मिला के, सम्मुख हो के टुक इधर देखिये (इन्शा०—इन्शा०, ९०); हम जाति जाति की मिलाने चलते हैं मगर ताब अछूतों से आँख मिलाने की भी नहीं (चुमते० (भू०)—हरिऔध, ५) (÷ २); मैं उससे आँखें ठीक से नहीं मिला पाता था (जहाज०—इ० जोशी, १३६)

(२) सामने आना । प्रयोग—कविराजजी सुबह मुझसे आँखें मिलाये बिना गुजर गये थे (चेतन—अशक, ३३७) (÷ ३); देखिए (१) में (÷ २) भी

(३) मुँह दिखाना । प्रयोग—पिता महिपाल अपने बच्चों से कैसे आँख मिलायेगा (बूँद०—अ० ना०, २१५); देखिए (२) में (÷ ३) भी

(४) प्रेम पूर्ण दृष्टि से देखना । प्रयोग—राह बाट में लाज निगोड़ी कैसे नैन मिलावै (भा० ग्रंथा० (२)—भारतेन्दु, ६३); देखिए प्रयोग (१) में (÷ १) (÷ २) भी

### आँख (आँखें) मुंदना

(१) मृत्यु होना । प्रयोग—उतने पर भी ताल्लुकदार साहब की घाँखें मुंदने के साथ साथ गाँव के लोगों ने इनकी तरफ से भी मुँह फेर लिया (कुल्लो०—निराला, ३७)

(२) अज्ञान में होना । प्रयोग—यहाँ तक कि एक नामी भारतीय विद्वान ने X X बड़े जोर के साथ कह डाला था कि संस्कृत की शिक्षा से मनुष्य की आँखें मुंद जाती हैं (सा० सी०—महा० द्विवेदी, २२)



### आंख मूंद कर

बिना कुछ सोचे विचारे। प्रयोग—आंख मूंद धर्म सम्बन्धी बातों को मानते रहो इसी में कल्याण है (भट्ट नि०—वा० भट्ट, १०४); यहां आंख मूंद कर जिए जाओ, धीर क्या? (कल्याणी—जैनेन्द्र, २); वैशाखी के नागरिक अपने उन महान् अतिथि की बात को मानेंगे जो उन्हीं के लिए इतनी पीड़ा पा रहे हैं (अम्ब०—रा० वै०, ६५)

### आंखें मूंद कर सोना

बिना कुछ किए बंटे रहना, बिना सोचे विचारे बंटे रहना। प्रयोग—किसी ने नहीं इस तरह हाथ धोया भला कौन यों मूंद कर आंख सोपा (चुभते०—हरिऔध, १८५)

### आंख (आंखों) मूंद लेना

(१) किसी की तरफ से उदासीन होना। प्रयोग—देख ऊंचे समाज को चढ़ते हैं हमीं आंख मीचने वाले (चुभते०—हरिऔध, १०७) (÷); आप अपने आपको क्यों इतना महत्व दें कि उपलब्ध आप हैं तो इसी कारण हिस वृत्ति पर आंख मीच ली जाए (मान०(३)—प्रेमचंद, १०८); लेकिन इस तरह तथ्य से कब तक आंखें मूंदी जा सकती हैं भगवान? (अम्ब०—रा० वै०, ३९); अपने दोषों की ओर आंख मूंद लेने से हमारी उन्नति की गति प्रवरुद्ध हो जायगी (कुछ—प० पु० बख्शी, ७५) (÷)

(२) अज्ञानी बनना। प्रयोग—खोल कर आंखें न आंखें मूंद लें (बोल०—हरिऔध, ३८); देखिए प्रयोग (१) में (÷) भा (३) मृत्यु होना। प्रयोग—खोलता इधर जन्म लोचन मूंदती उधर मृत्यु क्षण क्षण (पल्लव—पन्त, ९८)

### आंख में उंगली करना

धोखा देना। प्रयोग—जिसकी नह-उंगली का दुखना मुझ से सहा न जाता वही आंख में मेरी उंगली करते नहीं लजाता (मर्म०—हरिऔध, १५०)

### आंख (आंखों) में टेसू फूलना,—सरसों फूलना

मस्ती होना, अपने मनवाली बात ही सब धोर दिखाई पड़नी। प्रयोग—जिन दिनों लू से लपट से धूप की फूल पत्ता झूलसता जा रहा। आंख में ही कुछ कमर है, उन दिनों आंख में टेसू अगर फूला रहा (चुभते०—हरिऔध, ५८); हैं हम कुछ इस तरह के मिर-फिरे। आंख में सरसों सदा फूली रहो (चुभते०—हरिऔध, ५७); तुम लोग रियासत

लूटने पर तुले हुए हो, जैसे मालिक जैसे नीकर, सभी की आंखों में सरसों फूली हुई है (प्रेमा०—प्रेमचंद, १११)

### (समा० मुहा०—आंख में तीसी फूलना)

### आंख (आंखों) में ठहरना

मन में बना रहना, महत्वपूर्ण लगना। प्रयोग—आंख जिस पर ठहर नहीं पाती आंख में वह ठहर सके कैसे (चोखे०—हरिऔध, ४०)

आंख (आंखों) में धूल भोंकना,—डालना,—देना धोखा देना। प्रयोग—व्याकुल होत हरे ज्यों सरबस, आंखिन धूरि दई (सु०सा०—सूर, ५०); तुमने तो उसकी आंखों में धूल डाल दी (परीक्षा०—श्री० दास, १९); हां, जनता की आंखों में धूल भोंकने के लिए प्रच्छा स्वांग है (गोदान—प्रेमचंद, ९५); हरिऔध जो हैं लोक-लोचन, परम-खल उसके विलोचनों में धूल कैसे भोंकेगा? (मर्म०—हरिऔध, १५८); धूल में संतपन मिला करके संत क्यों धूल आंख में डाले (चुभते०—हरिऔध, १२३); धूल दें आंख में भले हो हम लोग क्यों आंख में किसी को दें (बोल०—हरिऔध, ४२)

### आंख में धूल डालना

### दे० आंख में धूल भोंकना

### आंख में धूल देना

### दे० आंख में धूल भोंकना

### आंख (आंखों) में पानो भर आना

रोना आ जाना। प्रयोग—उत्तर मुख आयो नहीं, जल भरि प्रायो नैन (केशव० (२)—केशव, ३९५)

### (२) दयाई होना, दुखी होना।

### आंख (आंखों) में रखना

(१) यत्नपूर्वक रखना। प्रयोग—आंखिन में सखि राखिबे जोगु, इन्हें किमि के बनवासु दियो है (कवि०—सुलसी, ३३); चाह जो यह है कि हाथों से पले पेड़ पौधों से अनूठे फल चखें। तो जिसे हैं आंख में सदा रखते सदा चाहिये हम आंख भी उस पर रखें (चोखे०—हरिऔध, १४)

(२) मन में रूप बसा होना। प्रयोग—आलि नयन जनु राखिअ पलक न कीजें ओट (पद०—जायसी, ४१/९९) ए रजिप्रहि सखि आखिन्ह मोही (राम० (अ)—सुलसी, ४८६)



### आंख (आंखों) में राई नोन डालना

नष्ट कर देना । प्रयोग—जब गई है फूट आंखें भीतरी लोन राई आंख में डालें न कपो (बोल०—हरिऔध, ३३)

### आंख में सरसों फूलना

दे० आंख में टेसू फूलना

### आंख (आंखों) में सूई डालना

किसी के साथ बुराई करना । प्रयोग—जो निकालें आंख का कांटा डाल दें तो न आंख में सूई (बोल०—हरिऔध, ४१)

(समा० मुहा०—आंख में सलाई करना)

### आंख (आंखें) मैली करना या होना

बुरी मउर रखना या होना । प्रयोग—तुम से घांख मैली बरुना तो मरने के बाद खुदा को क्या मुंह दिखाऊंगा ? (झुठा० (१)—यशपाल, ४९८)

### आंख रखना

(१) निगरानी करना, सचेष्ट होना । प्रयोग—आंखिगत संबंधों को मैं पवित्र मानता आया हूँ । उन्हीं में उत्सुकता की आंख रखना मुझे पितृता लग रहा था (जय०—जैनेन्द्र, ८९); मैं भी उन पर दृष्टि रखने चला आऊंगा (देवकी०—रा० रा०, ७८)

(२) मुहब्बत करना ।

### आंख (आंखें) लगाना

(१) नींद लगाना, भगकी घाना । प्रयोग—तैं फिरि फिरि दाघें सब पांखी । केहि दुख रैन न लावति घांखी (पद०—जायसी, ३१।१); बड़री भूलि घांखि लगी (सू० सा०—सूर, ३८८३); जब जब वै सुधि कीजिये, तब तब सब सुधि जाहि । आंखिनु आंख लगी रहै, आंखें लागति नाहि (बिहारी रत्ना०—बिहारी, ६२); नैन लगे जब तैं लखी तब तैं लगत न नैन (पदा०—पदाकर, ५३) (÷); तामो लगे तारे फेरि तारी न लगति कपो हू, जाहि बिधे मन तेव कैसे निकसत है (क० र०—सेनापति, ९) (÷); रूप के भार न होति है सोही लजोहिये दीटि मुजान यो भूली । लागिय जाती न लागी कहुं निनि, पायो तही पलकी गति भूली (घन० कवित्त—घना०, १२१); रीते-रीते तनिक लग जो पाय जानि कभी है (प्रिय०—हरिऔध, १२५); प्रातःकाल उसकी आंख लग गई (चित्र०—भाग० वर्मा, ९२)

(२) टफटकी लगाना, दृष्टि जमाना । प्रयोग—जै अंखियन तुम स्पाम बिलोके तैं अंखियां हम लागी

(सू० सा०—सूर, ४१५०); उसी ओर अति आकुल जांखें लग गई (वेदेही०—हरिऔध, २५०)

(३) प्रेम होना । प्रयोग—रैन-बोस जागै ऐसी लगी जु कहुं न लागे, पन धनुरागै पागै चंचलता चब गई (घन० कवित्त—घना०, १५९); न्योते गये कहुं नेह बढी, 'मतिराम' दुह के लगे दुग गाड़े (मति०मक०—मतिराम, १४८); अंखियां दुखियां कुबानि परी, न कहुं लगे, कौन परी सु-लगी (घन० कवित्त—घना०, ६) (÷); इनकी उनसों जो लगी अंखियां कहिये कछु तो हमें का परी है (जग०—पदाकर, १५); रहिमन सो न कछु गनै, जासों लागै नैन (रहोम कवि०—रहोम, २६); कठिन प्रीति की रीति अहां लागे दुइ नयना (कुण्ड०—गिरधरदास, १८); उन मभों में एक के साथ उसकी आंख लग गई (इन्शा०—इंशा०, ९१); ये आंख ऐसी बुरी हैं कि जब किसी से लगती हैं तब कितना भी छिराओ नहीं छिपती (भा० ग्रंथा० (१)—भारतेन्दु, ४२२); देखिए प्रयोग (÷) भी

(४) किसी वस्तु को पाने की ताक में होना । प्रयोग—'तुम्हें आंख तो नहीं लग गई उसकी?' मां ने कहा ! बड़ी चतुर है वह (देवकी०—रा० रा०, ७); गुलरीवाली धन-हर जमीन पर सोशलिटों की घांख है (परली०—रेणु, ३२७)

(५) पर्याप्त या अच्छा जान पड़ना । प्रयोग—जाहि लखें लोइन लगै कौन जुबति की जोति जाकें तन की छाह—बिग जोन्ह छाह सी होति (बिहारी रत्ना०—बिहारी, १०९); सभी को सेवयां चाहिये और थोड़ा किसी की आंख नहीं लगता (मान० (१)—प्रेमचंद, २५); देखिए प्रयोग (÷) भी

(६) ध्यान जाना । प्रयोग—जिस दिन से मुलोकना की आंखें धांभू पर लगी, उस दिन से उसका जीवन कुछ बदल गया (सा—कौशिक, १००)

### आंख (आंखें) लगाना

(१) नीयत खराब करना । प्रयोग—लेकिन सुनील लिखितकर हंस पड़ता, जैसे उसे दहेज-पर आंख लगाने की बात बहुत किजुल मालूम हो रही हो (कठ०—दे० सा०, २३१); मैकुलाल अब इसके घर घोर जमीन पर आंखें लगाये है (भुले०—भाग० वर्मा, ७)

(२) प्रेम करना । प्रयोग—जु कियो बदनाम सबै वृज में जब आंखें लगाइ दिखान न आंखन (ठकुर०—ठाकुर, ३०।३१); उन पहिले आकर हम से जांख लगाई



(भा० ग्रंथा०—(२)—भारतेन्दु, १९५) आंख लगाकर आंख बदल दी उसने आंख चुराकर (नूर०—मक्त, १०४)

### आंख (आंखें) लगी रहना

(१) उल्लुक्ता पूर्वक प्रतीक्षा करना। प्रयोग—पवि आंख तेहि मारग लागी दुनहुँ रहाहि। कोइ न संदेसो सारहि तेहि क संदेस कहाहि (पद०—जायसी, ३१/८); साजि सेज भूषण बसन सब की नजर बचाइ, रहो नौद मिस पौडि के दूग दुवार सों लाइ (जग०—पद्माकर, २९); अब अप्रिय हुआ है क्यों उसे गेह आना। प्रति दिन जिसकी ही घोर आंखें लगी हैं (प्रिय०—हरिऔध, २३४)

(२) स्थिर दृष्टि से देखना। प्रयोग—उन्होंने आंख फेलाकर परिषद भवन में उमड़ती उत्तेजित भीड़ को देखा, जिनकी जलनी हुई आंखें उन्हीं पर लगी थीं (देशाली० (१)—चतुर०, १६)

(३) उम्मीद होना; किसीसे किसी बात या काम की आशा होना। प्रयोग—हमारे इन शहीदों की आंखें तो आप पर लगी हैं (कठ०—दे० स०, १६२); देश की आंखें तुम्हारी ओर लगी हुई हैं, तुम्हीं इसका वेड़ा पार लगाओगे (रंग० (२)—प्रेमचंद, ३७६)

### आंख (आंखें) लड़ना

प्रेम हो जाना। प्रयोग—नैन जुग नैनन सों प्रथम लड़े हैं घाय अबर कपोल तेऊ टरै नहि टरे हैं (भूषण ग्रंथा०—भूषण, २३९); उन खंजन के मद-गंजन सों अखियां ये हमारी लरी सो लरी (भा० ग्रंथा० (२)—भारतेन्दु, १७१); आंख लड़ जाय आंख से न किसी आंख का बान आंख को न लगे (बोल०—हरिऔध, ५२); बेफिक्री के दिन थे, ताजा खून, एक मायूक से आंख लड़ गई (मान० (४)—प्रेमचंद, ८५); कोई रामगोपाल महोदय सगे सम्बन्धी थे; किसी ब्याह बरात में इसके यहां आये थे, आंख लड़ गई (ये कोठे०—अ० ना०, ५४)

### आंख (आंखें) लड़ाना

(१) एकटक देखना। प्रयोग—बह कभी इन्द्रदेव और कभी शैला को देखती फिर संध्या की आनेवाली कालिमा की प्रतीक्षा करती हुई नीले घाकाग से आंख लड़ाने लगती (तितली—प्रसाद, २८)

(२) दो प्रेमियों का चाव से एक दूसरे को देखना। प्रयोग—स्त्रियां सुन्दर तो ऐसी नहीं पर आंख लड़ाने में

बड़ी चतुर (भा० ग्रंथा० (३)—भारतेन्दु, १४७); उन आंखों से आंखें लड़ाना कोई बुद्धिमानी नहीं है, आनन्द (अम्ब०—रा० वे०, ३९); तुम तो सपना आंखी लड़ाय के चले गये (बुंद०—अ० ना०, ३१२)

(३) सहस होना।

### आंख (आंखें) लाल करना या होना,—लाल पीली करना या होना

क्रोध करना या होना। प्रयोग—अरुन नयन भुकुटी कुटिल चितवत नृपन्ह सकोप (राम० (बा)—तुलसी, २७४); त्यों पदमाकर हाल कहै मति लाल करी दूग ख्याल के खंजन (जग०—पद्माकर, १५); इधर उसकी नवीना सुन्दरी स्त्री लड़के को खूब डराने के लिये पति पर आंखें लाल करती है (गु० नि०—वा० मु० गु०, २२६); खाइये न मुंह की बखेरिये न बर कांटे। कर लाल आंख लहू समों का न गारिये (मर्म०—हरिऔध, १६४); जब हुई लाल लाल आंखें तब गाल कैसे न लाल लाल बनें (चोखे०—हरिऔध, ४३); किस तरह हुजूर के सामने भी आंख लाल करके कूट बोली बोलता है? (परती०—रेणु, ३६); अब उसे कोई कल्लू कहे तो आंखें लाल पीली करता है (मान० (८)—प्रेमचंद, ६५)

### आंख (आंखें) लाल पीली करना

दे० आंख लाल करना।

### आंख (आंखें) सामने करना या होना

सामना करना; लज्जा का अनुभव न करना। प्रयोग—नख-रेखा सोहैं नई, जलसोहैं सब गात। सीहैं होत न नैन ए तुम सोहैं कत खात (बिहारी रत्ना०—बिहारी, २४०); सामने आंख तब करें कैसे सामने आंख जब नहीं होती (चोखे०—हरिऔध, ४०)

### आंख सिराना

दे० आंख उंड़ी करना।

### आंख (आंखें) सीधी करना या होना

(१) लज्जा छोड़ मुक्तभाव से मिल पाना या सामना कर पाना। प्रयोग—संभव है, उसके पास धन भी हो जाय, पर यह असंभव है कि वह उसके सामने आंखें सीधी कर सके (गवन—प्रेमचंद, १३२)

(२) मेल करना या होना। प्रयोग—पड़ सकती जो नहीं किसीपर सीधी क्यों न घूल उन आंखों में देव भर (बोल०—हरिऔध, १२)



### आंख (आंखें) में कना

किसी सुन्दर वस्तु को भी भर देना, दर्शन का मुग्न उठाना । प्रयोग—सूखों पर विसृजती आंखें सेंक लें आंख सेकनेवाले (चौखे—हरिऔध, ३४); अजी, अभी आग आंखें सेकने का मुहाबरा इस्तेमाल करते हैं (बूँद—अ० ना०, ९६)

### आंख से

भाव से । प्रयोग—लोग जिस आंख से तुम्हें देख तुम उसी आंख से उन्हें देखो (चौखे—हरिऔध, १२)

### आंख (आंखों) से अंगार बरसना,—आग निकलना,—बरसना,—लौ छूटना

कोपित होना । प्रयोग—होरी आंखों से अंगारे बरसाता अनिया की ओर लपका (गोदान—प्रेमचंद, ११६); घरना उठा, उमने साथी को देखते ही आंख से आग बरसाई (मुग्न—बूँद वर्मा, ५८); ठाकुर सबहुन सिंह की आंखों से आग निकलने लगी (लिली—निराला, १३१); आंखों से आग बरसती थी । सिद्ध पुरुष महात्माओं के यही लक्षण है (सु० सु०—सुदर्शन, ३२); दुम्हाजू की आंख से लौ फूट पड़ी परन्तु मंदिर ने नहीं देखा (शासी—बूँद वर्मा, ३७२)

### आंख से आंख जुड़ना

एक दृष्टिकोण होना । प्रयोग—तो बुरी दीठ किस तरह लगती । किसलिये आग जाति में बोती । जो किसी देव-दीठ वाले की दीठ में दीठ जुड़ गई होती (चुमते—हरिऔध, ५८)

### आंख से आंख जुड़ना या जोड़ना,—बिधना

देखकर एक दूसरे से प्रेम होना । प्रयोग—नैनहि नैन जो बेधिये नहि निकसहि बै बान (पद—जायसी, २३८); भाति भलो वृषमान-नली जब तें अखियाँ अखियाँ सों जोरी (केशव—केशव, ४७)

### आंख से आंख बिधना

दे० आंख से आंख जुड़ना

### आंख से आंख मिलना

(१) एक दूसरे की ओर एक साथ देना । प्रयोग—उमभी आंखें बिजलेखा की आंखों से मिल गई (चित्र—भग० वर्मा, ११)

(२) सामना होना ।

### आंख से आग निकलना

दे० आंख से अंगार बरसना ।

### आंख से आग बरसना

दे० आंख से अंगार बरसना ।

### आंख (आंखों) से उतर जाना

मान प्रतिष्ठा में कमी होना । प्रयोग—जब कि तुम हो उतर गये जी से आंख से तो उतर न क्यों जाते (बोल—हरिऔध, ४०)

### आंख से ओझल होना

दिखाई न पड़ना । प्रयोग—पुजारी आंख की ओझल हो गया (मुग्न—बूँद वर्मा, २६१); मैं तो चाहती हूँ कि इन्द्र मेरी आंखों से ओझल न हो (तिल्ली—प्रसाद, ४२); किसे ज्ञात था पलक मारते ही ओम के धूर् के बादल सा यह संसार आंख से ओझल हो जाएगा (कला—पंत, ५८)

### आंख (आंखों) से गिर जाना या गिरा देना

वक्त कम हो जाना । प्रयोग—बिमाता ने नैना को भी आंखों से गिरा दिया (कर्म—प्रेमचंद, ७); हमेशा के लिये वह सबकी आंखों से गिर जायेंगे, किसी को मुँह न दिखा सकेंगे (गवन—प्रेमचंद, २३८); क्यों उसे आंख से गिरा देवें आंख पर है जिसे कि बिठलाते (बोल—हरिऔध, ३३); है गिर जाते जगतकी आंख से पेट गिरवाना गिराता है हमें (बोल—हरिऔध, २२१)

### आंख से लौ छूटना

दे० आंख से अंगार बरसना ।

### आंख होना

(१) लेने की नीयत होना । प्रयोग—आप नहीं जानते हैं कि डमीदार के घर के लोगों की आंख उस पर है (तिल्ली—प्रसाद, १०३); पर उसकी आंख तो भोंपड़े पर है (सु० सु०—सुदर्शन, ५८)

(२) ज्ञान होना या विवेक होना । प्रयोग—इससे भी मुझे एक अमूल्य शिक्षा मिली, एक भ्रम टूट गया, आगे की आंखें हो गई (पट्टम० के पत्र—पट्टम० शर्मा, ६५); एक क्या लाख बार देखे भी आंख इसकी हमें नहीं होती (चुमते—हरिऔध, ५६)



(३) अत्यन्त प्रिय होना । प्रयोग—मोरें भरतु राम दुष्ट आंखी (राम० (अ)—तुलसी, ४०१); दोनों बालक उसकी दो आंखें थी (मान० (४)—प्रेमचंद, १७०)

(४) संतति होना ।

(५) आंख के शक्ल का छेद होना ।

(६) कृपा-दृष्टि होना ।

(७) परख होना ।

### आंखवाला

समझदार, अनुभवी । प्रयोग—आंखवाले हम तुम्हें कैसे कहें जब न आंखें आज तक उन पर पड़ीं (चुमते०—हरिऔध, १६२)

### आंखवाला अंधा

जानते समझते हुए भी भूल करनेवाला । प्रयोग—अभियुक्त जबान है, निश्चित और सभ्य है, फलएव आंखों-वाला अंधा है (मान० (८)—प्रेमचंद, ४६)

### आंखें उठी होना

देखा जाना । प्रयोग—बाजार में मुझे पहचाननेवाले न पहचाननेवालों को मेरी विशेषता से परिचित करा रहे थे—चारों ओर से आंखें उठी थीं (चतुरी०—निराला, ११)

### आंखें किसी के ऊपर होना

किसी की ओर बराबर ध्यान लगा रहना । प्रयोग—और फिर, फिर जब मैं उस सभा में इसे सुनाना आरम्भ करूंगा, तब, तब, सारे उज्जयिनी की आंखें मेरे ऊपर होंगी (भोर०—जग० माथुर, १४१)

(समा० मुहा०—आंखें किसी की ओर लगाना)

### आंखें खींचना

ध्यान या दृष्टि आकृष्ट करना । प्रयोग—न जाने, दुलक ओस में कौन, खींच लेता मेरे दुग मोन (पञ्चव—पंत, ३९)

### आंखें खुली रखना

सचेत और जागरूक रहना । प्रयोग—चाहिये आंखें खुली रखना सदा । दुख सकेगे टल नहीं आंखें डके (चुमते०—हरिऔध, ३९)

### आंखें गीली होना

आंसू भर आना । प्रयोग—गयामुहीन का गला भर आया और आंखें गीली हो गईं (मृग०—वृ० वर्मा, ६८)

(समा० मुहा०—आंखें तर होना)

### आंखें गोल हो जाना

आश्चर्य होना । प्रयोग—मैंने हीरा दरबान से कहा तो उसकी आंखें गोल हो गईं (परली०—रेणु, २९२)

### आंखें चार करना या होना

(१) देखा देखी करना—सामने घाना । प्रयोग—बलते समय उनकी और कन्या की आंखें पुनः चार हुईं (मिसा०—कौशिक, ८); रानी-बहिना और मिथजी की आंखें फिर चार हुईं (परली०—रेणु, ४९१); जयदेव से आंखें चार हुईं तो कनक के चेहरे पर हर्ष का गुलाबीपन आकर उदासी से पलकें झुक गयीं (झुठा० (१)—यशपाल, ४५)

(२) प्रेमारेज होना । प्रयोग—वह कौन पड़ी थी जिसमें ये आंखें चार हुई थीं (नूर०—मक्त, २७)

### आंखें छलछला आना

आंखों में आंसू भर आना । प्रयोग—उन बातों को सोच न कब छलके नयन (वेदेही०—हरिऔध, १०७); छल छल आंखें, हेरते हो मेरे मुख की ओर एक-एक (अना०—निराला, ९७)

(समा० मुहा०—आंखें डबडवा आना)

### आंखें जाती रहना

आंखों की ज्योति समाप्त होना । प्रयोग—बाहरी आंखें गई पहले ही रही । भीतरी आंख भी अब अन्धी हुईं (चुमते०—हरिऔध, १२४)

### आंखें टंगी होना

आतुरता से प्रतीक्षा करना । प्रयोग—तुम्हारे लिये आंखें टंगी रहेंगी (राधा०—द्र० स०, ५६)

### आंखें ढकी रखना

अज्ञान में पड़े रहना । प्रयोग—चाहिये आंखें खुली रखना सदा दुल सकेगे टल नहीं आंखें डके (चुमते०—हरिऔध, ३९)

### आंखें तिरमिरा जाना

आंखें चकाचौंध होना, विमिश्र होना । प्रयोग—वहाँ की सजावट देखकर मेरी आंखें तिरमिरा गयीं (राधा०—द्र० स०, १०-११)



### आँखें धकना

देखकर लुब्ध या मूग्ध रह जाना। प्रयोग—लखो, दिया है पहना किसने यह हार बना भारत-उर में अपना, देख दूग बके (अना०—निराला, १७)

### आँखें दबाकर देखना

नीची दृष्टि से देखना। प्रयोग—सब तरह से जो बेचारे हैं दबे। मत उन्हें आँखें दबाकर देखिये (बुभते०—हरिऔध, ११५)

### आँखें दरवाजे से लगी होना

किसी की बहुत उत्सुकता पूर्वक प्रतीक्षा करना। प्रयोग—साजि सेज भूषन बसन सब की नजर बचाइ। रही नौद मिस पौड़ि के दूग दुवार सों लाइ (जग०—पद्माकर, ४९)

### आँखें नाचना

भूख के कारण आँखें निकली पड़ना। प्रयोग—तन हुआ मूख मूख कर काटा भूख से नाच है रही आँखें (बोल०—हरिऔध, ३५)

### आँखें निकल पड़ना

भूख आदि के कारण आँखों का बड़ी बड़ी लगना। प्रयोग—तखा दो डग और बड़े। आँखें निकली पड़ती थी (गोदान—प्रेमचंद, १००)

(२) रोषपूर्ण दृष्टि। प्रयोग—आँख निकली किसे लगी न बुरी (बोल०—हरिऔध, २१५)

### आँखें निकाल लेना

कठोर दंड देना। प्रयोग—जानते न कि जिन लड़कों के माँ बाप हैं, उन्हें मारेंगे, तो वे आँखें निकाल लेंगे (रंग०(१)—प्रेमचंद, ९१)

### आँखें पथ पर लगी होना

किसी की प्रतीक्षा होना। प्रयोग—उसकी आँखें भी आज उस पथ पर नहीं लगी हुई हैं (शेखर (१)—अज्ञेय, १६३)

### आँखें पसारना

दृष्टि डालना, देखना। प्रयोग—चुपचाप बंटी हुई खेत के कोनों पर आँख पसारे थी (मृग०—वृ० वर्मा, १४)

### आँखें फटी रह जाना

आश्चर्य या आनन्द से आँखें खुली रह जाना। प्रयोग—कमला की आँखें आश्चर्य और आनन्द से फटी रह गईं

(वीने०—रा० रा०, १५३); इसा की आँखें फटी रह गईं (जय०—जैनेन्द्र, १०२)

### आँखें फिसलना

दृष्टि स्थिर न रह पाना। प्रयोग—आँख मानसिंह पर से फिसलती हुई निहानसिंह पर जा घटकी (मृग०—वृ० वर्मा, ३२५)

(समा० मुहा०—आँखें बिछलना)

### आँखें फेरना

(१) ध्यान हटाना। प्रयोग—मूझे न मालूम था कि मेरे कंद होते ही लोग मेरी ओर से आँखें फेर लेंगे (मान०(१)—प्रेमचंद, ४०)

(२) दृष्टिपात करना, प्रेम से देखना। प्रयोग—जानू तो मैं हुई खता क्या? कौन चुक है मेरी। जो गत चार वर्ष से मेरी ओर न आँखें फेरी (नूर०—मक्त, १३१)

(३) सामना न करना, कतराना, उपेक्षा का भाव दिखलाना। प्रयोग—तुम्हारे बास्स और पार्टी के लोग मिलने पर भी आँखें फेर लेते हैं (परती०—रेणु, ४५०)

(४) नाराज होना।

### आँखें बंद करना या होना,—मिचलना

(१) मृत्यु होना। प्रयोग—एक बापू को ब्लावा घाया तो उन्होंने दस वर्ष के पोते को देखते-देखते ही आँखें बन्द की थी (ब्रह्म०—दे० स०, ४९); मनाती तो मैं रात-दिन यही रहती हूँ कि तुम्हारे सामने ही मेरी आँखें मिच जाय (मा—कौशिक, २१६); मालूम नहीं कब आँखें बंद हो जाय, फिर यह पाती किसके हाथ लगेंगी, कौन जाने? (मान० (७)—प्रेमचंद, २७)

(२) कोई ध्यान न देना। प्रयोग—उस सत्य से न इन्कार किया जा सकता था और न इसके प्रति आँखें बंद की जा सकती थी (मूले०—मग० वर्मा, १४५); सांसारिक समस्याओं की घोर से आँखें बंद कर लेने भर से ही उनका अस्तित्व नष्ट नहीं हो सकता (विष०—प्रेमी, १७)

### आँखें बंद करके चलना

अज्ञानावस्था में होना, स्वयं कुछ सोच-विचारे बिना काम किए चलना। प्रयोग—जो कथा पकड़े घोरों का आँखों को कर बंद चले (मर्म०—हरिऔध, १४५)



### आंखें बंधना

दृष्टि जमना । प्रयोग—पहली बार जो देखा तो आंखें बंधी की बंधी रह गयीं (भोर०—जग० माधुर, ७४)

### आंखें बदलना

रुख में परिवर्तन होना । प्रयोग—उन्हें क्या खबर कि चौधरी आज आंखें बदल लें तो यह सारी ईद मुहर्रम हो जाय (मान० (१)—प्रेमचंद, २३); 'हरिऔध' छलछंद छोड़ो, तो बदल आंखें (मर्म०—हरिऔध, १६४)

### आंखें मिचाना

दे० आंखें बंद करना ।

### आंखें राह में बिछाना

अत्यन्त सादर, उत्सुकता से प्रतीक्षा करना । प्रयोग—आंख उनकी राह में देवे बिछा प्यारवाली आंख से उनको लखें (बोल०—हरिऔध, ३४)

### आंखें लगाए बैठना

प्रतीक्षा करना, इच्छा लिए बैठना । प्रयोग—हम तो यहां आंखें लगाये बैठे थे (झूठा० (१)—यशपाल, १९२)

### आंखें लगाये रहना

इन्तजारी करना । प्रयोग—उन्तीस तारीख को भी कनक ग्यारह बजे तक बंगले के फाटक की घोर पोस्टमैन के लिये आंखें लगाये रही (झूठा० (१)—यशपाल, ३७६)

### आंखें लहू सी होना

गुस्से में भर जाना । प्रयोग—देख आंखें हुई लहू जैसी आंखों में हे लहू उतर घाता (चोखे०—हरिऔध, ५४)

### आंखें साथ लगी फिरना

किसी ओर दृष्टि का पूरी तरह आकृष्ट होना । प्रयोग—नाच की चटक लसें, अंगनि मटक-रंग, लाड़िली लटक-संग लोचन लगे फिरें (धन० कवित्त—धना०, १३४)

### आंखों-आंखों में बातें होना

आंखों के इशारे पर बातें होना । प्रयोग—नैन-नैन कीन्ही सब बात, गुप्त प्रीति प्रगटान्यौ (सु०सा०—सूर, १२९२); हृदय ने आंखों ही आंखों में अपनी पत्नी को बताया—मैं उनसे बिलकुल बात नहीं कहूँगा (बह्म०—दे०सा०, ३५८)

### आंखों-आंखों में रहना

प्रिय रहना, ध्यान में रहना । प्रयोग—ऐसे गुणों से बाबू

प्रमकुमार छात्रों की आंख-आंख पर रहते, गले-गले से फिरते हैं (लिली—निराला, १०९)

### आंखों का अंधा होना

बुद्धि न होना । प्रयोग—इसीलिए कि वह तुम्हें सबसे बड़ा आंखों का अंधा समझती है, दूसरों को इतनी आसानी से बेवकूफ नहीं बना सकती (गोदान—प्रेमचंद, १९५)

### आंखों का उजाला

अत्यन्त प्रिय । प्रयोग—हाय रे ! मेरे आंखों के उजियाले को कौन ले गया (मा० ग्रंथा० (१)—भारतेन्दु, ३१०); धन मुक्त निधनोका लोचनों का उजाला (प्रिय०—हरिऔध, ७५)

### आंखों का कहे देना

आंखों से भाव प्रकट होना । प्रयोग—कोई कहे या न कहे पर जानते सब हैं । तुम्हारी आंखें उनकी आंखें डोल पीट कर कहती हैं (मृग०—वृ० कर्मा, ५५)

### आंखों का कांटा होना,—शूल होना

अत्यन्त अप्रिय होना । प्रयोग—अगर न करूं तो नक्कू बनूं और सब की आंखों में कांटा बन जाऊँ (मान० (८)—प्रेमचंद, ६८); अब मैं उसकी आंखों का कांटा बन गई थी (गोली—चतुर०, ३४१); चम्पा का स्वतंत्र राज्य मगध की आंखों का पुराना शूल था (वैशाली०(२)—चतुर०, ९५); सब दिनों जो आंख में ही था बसा घाव वह क्यों आंख का कांटा हुआ (बोल०—हरिऔध, ५०)

### आंखों का परदा खुलना

अज्ञान दूर होना । प्रयोग—खुल रहा है दिन ब दिन परदा मगर, आंख का परदा नहीं अब भी खुला (चुमते०—हरिऔध, ५७)

(समा० मुहा०—आंखोंका परदा उठना,—हटना)

### आंखों का शूल होना

दे० आंखों का कांटा होना

### आंखों की ओट करना, जाना या होना

कहीं दूर जाना या होना । प्रयोग—नैनन ओट होत पल एको मैं मन भरित अतंक (सु० सा०—सूर, १२२३); मुझे भी अपने पुत्र से प्रेम है, मैं भी उसे आंख की ओट नहीं करना चाहती (मा—कौशिक, ५२)

### आंखों की ओट जाना या होना

दे० आंखों की ओट करना



### आँखों की पट्टी खुलना

सजग होना, ज्ञान होना । प्रयोग—आँख की पट्टी नहीं तब भी खुली बिछ रहे हैं जाल अब भी नित नये (सुभते०—हरिऔध, १३६)

### आँखों के आगे या सामने धूमना.—नाचना,—फिरना

(१) आँखों के सामने हूबहू रूप खड़ा हो जाना । प्रयोग—विधिलेखा के स्वर का संगीत उसके कानों में गूँज रहा था, उसके सौंदर्य की आभा उसकी आँखों के आगे नाच रही थी (चित्र०—भाग० २, ५२); मनुष्य जीवन की क्षण-भंगुरता, संसार की असुरता का चित्र आँखों के सामने फिर गया (पद्य० के पत्र—पद्य० शर्मा, ५९); तू हरदम मेरी आँखों के सामने फिरती रहती थी (गोदान—प्रेमचंद, ३५०) (÷)

(२) ध्यान में आना । प्रयोग—स्वयं भारतेन्दु जी की दो मूर्तियाँ आज तक आँखों के सामने घूमती हैं (राधा० प्रशा०—राधा० दास, ३६२); क्यों कहें कंगाल पन को भी कभी है खुली आँखें हमारी जाँचती । सामने जो वे न नाचे आँख के भूल से हैं आँख जिनकी नाचती (बोले०—हरिऔध, १५); देखिए प्रयोग (१) में (÷) भी

### आँखों के आगे नाचना

दे० आँखों के आगे घूमना

### आँखों के आगे फिरना

दे० आँखों के आगे घूमना

### आँखों के तारे होना

अत्यन्त प्रिय होना । प्रयोग—रूप-उजियारे जान प्यारे पर शान बारे, आँखिन के तारे, न्यारे बैसें धौं करो उर्ने (घन० कवित्त—घना०, २१५); तुम मम प्रानन तैं प्यारे हो तुम मेरे आँखिन के तारे हो (भा० प्रशा० (२)—भारतेन्दु, ४२६); सास कहती—बेटा तुम इस घर को अपना ही समझो, तुम्हीं मेरी आँखों के तारे हो (मान० (१)—प्रेमचंद, १३७)

### आँखों के पाँवड़े बिछाना

बहुत आनुरता एवं प्रेम पूर्वक प्रतीक्षा करना । प्रयोग—आँखों के पाँवड़े बिछा राहू तकने की बातें प्रेमिका के मुख से..... (ज्ञान०—यशपाल, १४४)

### आँखों के मोती

आँसू । प्रयोग—आँखों के मोती यों न बिखेरो, आँसो (साकेत—गुप्त, २२३)

### आँखों के सामने

सम्मुख-उपस्थिति में, जीवन काल में । प्रयोग—हम लोगों की अंगरेजी को “बाबू इंग्लिश” कह कर घृणा प्रकाशित करने वालों की आँख के सामने ही ये सब दृश्य हूँ प्रकट करते हैं (सा० सी०—महा० द्विवेदी, ५४)

### आँखों के सामने नाचना

दे० आँखों के आगे नाचना

### आँखों के सामने फिर जाना

दे० आँखों के आगे फिरना

### आँखों के सामने फिरा करना

हर समय ध्यान पर चड़ा रहना । प्रयोग—मगर अभी तक जोहरा की सूरत उनकी आँखों के सामने फिरा करती है (गदन—प्रेमचंद, ३२९)

### आँखों के सामने लगे रहना

स्मृति ताजी हो जाना । प्रयोग—लगे रहूँ मेरे नैननि आगे राम लखन अरु सीता (गीता० (अ)—तुलसी, ५३)

(गमा० महा०—आँखों के सामने धूम जाना)

### आँखों को खींचना

आकृष्ट करना । प्रयोग—मुँह बड़ा और गोल था, कपोल फूले हुए X X पर वल का उभार और मात का गुदगुदापन आँखों को खींचता था (गोदान—प्रेमचंद, २५)

### आँखों को चौंधियाना,—में चकाचौंध होना

(१) तेज प्रकाश के कारण सीधे देख न पाना । प्रयोग—मुझको चाहिए बिजली के समान चक रेखाओं का सृजन करने वाली, आँखों को चौंधिया देने वाली तीव्र और विचित्र ज्वाला (कामना—प्रसाद, ४७)

(२) आश्चर्य चकित रह जाना । प्रयोग—X X आप की वंशित प्रभा संसार के सारे संस्कृत पंडितों की आँखों में चकाचौंध पैदा कर देती है (सा० सा०—महा० द्विवेदी, १०३)

### आँखों को पकड़ना

दृष्टि आकृष्ट करना । प्रयोग—फिर भी उसमें कृष्ण जैसी आँखों को पकड़ने वाली बात न थी (देवकी०—रा० रा०, १४)



### आंखों तले

दृष्टि में; दिखाई पड़ना। प्रयोग—आप से आग ही जने हमको आ सका आप सा न आंख तले (बोल०—हरिऔध, ४३)

### आंखों - देखी

स्वयं देखी हुई। प्रयोग—इसकी कितनी ही आंखों-देखी मिसालें दी गयीं (गवर्न—प्रेमचंद, २७३)

### आंखों पर अंधेरा छाना

अज्ञान का अधिकार होना। प्रयोग—क्यों आंख पर है छा गया किस लिये हम लोग अंधे हो गये (चुमते०—हरिऔध, १३०)

### आंखों पर ठीकरी रखना

(१) देख कर भी तरह दे जाना। प्रयोग—ठोकरें देव जाति को खाते ठीकरी आंख पर घगर रख ले (चुमते०—हरिऔध, ४४)

(२) निलंज हो जाना। प्रयोग—तो कर लो, मैं क्या मना करती हूँ? तुमने तो आंखों पर ठीकरी रख ली (मा—कौशिक, ६१)

(३) रखाई करना। प्रयोग—सज्जन जब लालाजी के यहाँसे तस्वीरें लाने के लिए गया तो उन्होंने अपनी पहले-वाली मिठास जोर मुरीबत को भुला कर आंखों पर ठीकरी रखली (बूंद—अ० ना०, ४००)

### आंखों पर परदा डालना

(१) वस्तुस्थिति को ठीक न समझ पाना, अज्ञानमें रहना। प्रयोग—महत्वाकांक्षा आंखों पर परदा डाल देती है (मान० (१)—प्रेमचंद, ५२)

(२) जानबूझ कर अंधा बनना।

(३) मूख बनना।

### आंखों पर बैठाना

बहुत आदर करना। प्रयोग—दिलमें जिसने मुझे जगह दी, आंखों पर बैठाऊँ (नूर०—मक्त, ६२); यह पूछने की बात नहीं है बाबूजी। मैं उसे आंखों पर बैठाकर ले जाऊँगा (कर्म०—प्रेमचंद, ७५); आंख जिससे देस की ऊँची हुई क्यों न आंखोंपर बिठायेँ हम उसे (चुमते०—हरिऔध, ४)

### आंखों में

विचार में, परख में। प्रयोग—पर मुझे ऐसा लगा कि उनकी आंखोंमें अब भी मैं काटा हूँ (त्याग०—जैनेन्द्र, ६३)

### आंखों में अंगारे जलना

बहुत कोपित होना, आंखों से रोष प्रगट होना। प्रयोग—पिता की आंखों में अंगारे जल उठे (बेतन—अश्व, १४४)

### आंखों में अड़ना

बराबर ध्यान में बना रहना। प्रयोग—जब तुम्हीं आंख में अड़े आकर तब विचारी पलक पड़े कैसे (बोल०—हरिऔध, ५७)

### आंखों में आंखें गड़ाना,—डालना

(१) ध्यान पूर्वक एक दूसरे को देखना। प्रयोग—माधुरी ने उसकी आंखों में आंखें गड़ा कर कहा (मान० (७)—प्रेमचंद, ४६); शीला ने मेरी आंखों में अपनी आंखें गड़ा दी (इंस्टा०—भग० वर्मा, १०६); डाल दो हाथ पाँव मत अपना आंख में आंख डाल कर देखो (चोखे०—हरिऔध, १५) (÷); दीदे की सफाई तो देखो, आंख में आंख डाले सफेद झूठ बोल रहा है (मा—कौशिक, ३४५) (÷)

(२) प्रेमपूर्वक देखना। प्रयोग—घ्राणिगन में बंधी हुई माधवी ने अपने प्रेमी की छाती में छिपा हुआ सिर उठाकर आंखों में आंखें डालकर देखते हुए कहा (सुहाग०—अ० ना०, ५६); देखिए प्रयोग (१) में (÷)

(३) डिठार से देखना।

(समा० मुहा०—आंखों में आंखें समाना)

### आंखों में आंखें डालना

दे० आंखों में आंख गड़ाना।

### आंखों में आजने भर भी न होना

विलकुल ही न होना। प्रयोग—बच्चा, सभी अच्छा-बुरा कुछ मिल तो जाता है। वे दिन आ रहे हैं कि दूध आंखों में आजने को भी न मिलेगा (रंग० (१)—प्रेमचंद, ३३)

### आंखों में उतर आना

आंखों से प्रगट होना। प्रयोग—लेकिन मेरी मनोदशा शायद मेरी आंखों में उतर आई थी (मूले०—भग० वर्मा, ३२३)

### आंखों में कांटे की तरह खटकना,—चुभना

अत्यन्त अप्रिय लगना। प्रयोग—देवकान्त तो सरकार की आंख में कांटे की तरह चुभता है (मल्ल०—दे० स०, ११४); हम लोग तुम्हारी आंख में कांटे की तरह खटकते हैं (प्रेमा०—प्रेमचंद, २८)



आँखों में काँटे की तरह चुभना

दे० आँखों में काँटे की तरह खटकना

आँखों में काजल घुलना या घुलाना

आँखों में काजल लगाना या लगाना । प्रयोग—आँख में है धुला लिया काजल आँख में धूल क्यों न बे डाले (बोल०—हरिऔध, ४९)

आँखों में काजल न टिकना

बहुत अधिक रोना । प्रयोग—मन चित हुँ न बिसरें भोरे नैन काजल चल रही न मोरें (पद०—जायसी, ३११)

आँखों में कैद करना

आँखों के सामने सदा रूप बना रहना । प्रयोग—तूँ मति माने मुक्तई किम कपट चित कोटि । जो गुनही, तो राखिये आँखिनु माँक अंगोटी (विहारी रत्ना०—विहारी, २५०)

आँखों में खटकना

अत्यन्त अप्रिय लगना । प्रयोग—अपनी तेज जबान के कारण सारे घर की आँखों में खटकने लगी (बुंद०—अ० ना०, १२); लक्ष्य की इस एकता से समाज में एक दूसरे की आँखों में खटकने वाले की वृद्धि हुई (चित्ता०(१)—शुक्ल, ७३) (समा० मुहा०—आँखों में खार होना)

आँखों में खुब जाना,—गड़ जाना,—चुभना

(१) अत्यन्त प्रिय लगना, ध्यान पर चढ़ा रहना । प्रयोग—जनि जानहुँ हौं तुम्ह सों दूरी । नयनन्हि माँक गड़ो वह सूरि (पद०—जायसी, २४१२१); आँख में चुभ कर न आँख में चुभे, आँख में गड़ कर न आँख में गड़े (चौखे०—हरिऔध, ४०)(÷)

(२) अत्यन्त अप्रिय लगना । प्रयोग—सरस्वती उसकी आँखों में चुभती है (गु० नि०—वा० मु० गु०, ५०९); किसी ने सिर पर टोपी टेढ़ी रखी और पड़ोसियों की आँखों में खुबा (मान०(३)—प्रेमचंद, ५४); कभी एक-आध चीज-वस्तु बनवा लेती हूँ तो आँखों में गड़ने लगती है (गवन—प्रेमचंद, १७५); कभी कभी उसकी कठोरता है आँखों में गड़ती (नूर०—भक्त, ६३); देखिए प्रयोग (१) में (÷) भी

आँखों में खून उतरना

बहुत कोपित होना । प्रयोग—सब मेरी आँखों में खून उतर आया (शेखर(२)—अज्ञेय, ९१); सीतो के विषय में सुन कर उसकी आँखों में खून उतर आया था (झुठा० (२)

—यशपाल, ५२९); माँ ने सिर की चोट देखी तो आँखों में खून उतर आया (रंग०(१)—प्रेमचंद, ५५)

आँखों में गड़ जाना

दे० आँखों में खुब जाना

आँखों में गिरना

पूर्व प्रतिष्ठित मान-मर्यादा का नष्ट होना । प्रयोग—जब तक सन्यासी अपने सन्याधर्म में रहता है, वह हिन्दू का पूज्य होता है पर घरबारी होकर वह उसकी आँखों में गिरकर भ्रष्ट हो जाता है (कवार—ह० प्र० द्वि०, १०); सभी सबूत भी नहीं । जासामी बड़े-बड़े हैं X X पुलिस की आँख में गिर जाना है (चोटो०—निराला, १५)

आँखों में घर करना

(१) अत्यन्त धारा होना । प्रयोग—किस तरह उससे बचावे आँख हम आँख में जिसने हमारी घर किया (बोल०—हरिऔध, ४६) (÷)

(२) हर समय ध्यान में बसा रहना । प्रयोग—चाहिये न कछु आकी चाह तासो फल पायो यातें बाही बन के सरूप नैन कीनो घर (घन० कवित०—घना०, १७५); देखिए प्रयोग (१) में (÷) भी

आँखों में घूम जाना

स्वरूप ध्यान में आना । प्रयोग—उस नाजनी की शकल जब आँखों में घूम जाती है, तो मुँहको होठ नहीं रहता (राधा०प्रेथा०—राधा० दास, ६१६); वह समाँ हम हिन्दुओं के ओज का । आँख में है घूम जाता प्राव भी (चुभते०—हरिऔध, १६)

आँखों में चका-चाँध होना

दे० आँखों को चँधियाना

आँखों में चरबी छाना

अत्यन्त घमंड होना । प्रयोग—जहा । तुम्हारी आँखों पर तो गहरी चरबी छाई है (गु० नि०—वा० मु० गु०, ६३१); क्या मुँह नहीं पड़ता है, आँखों में चरबी छाई ? (नूर०—भक्त, ३१); कल का बनिया आज का सेठ । इतनी जल्दी आँखों में चरबी छा गई (प्रेमा०—प्रेमचंद, २६५)

आँखों में चुभना

दे० आँखों में खुब जाना



### आँखों में जंचना

योग्य मालूम होना । प्रयोग—कोई दूसरा गहना उसकी आँखों में जंचता ही न था (गवर्न—प्रेमचंद, ३)

### आँखों में जल छाना

आँसू भर आना । प्रयोग—हरण बंधू दोउ हृदय लगाए पुलक अंग अबक जल छाए (राम० (वा)—तुलसी, ३१०); बोली विदेहजा धीरे नयनों में जल का आया (वैदेही—हरिऔध, ७६)

### आँखों में जादू होना

ऐसी आँखें जिन्हें देखते ही लोग मोहित हो जायें । प्रयोग—क्या हुआ जो बात में जादू नहीं हो किसी की आँख में जादू अगर (बोल०—हरिऔध, ५०)

### आँखों में भाँककर देखना

आँखों से मन के भाव जानने की कोशिश करना । प्रयोग—वह लिली की छाँवों में भाँकने लगा (ब्रह्म०—दे० स०, २२९)

### आँखों में तराघट आना

(१) आँखों का तृप्त होना । प्रयोग—भूटे पट्टे की मुवाफ पट्टी चोटी में देखते ही जिसे आँखों में तरी घाती है (भा० ग्रंथा०(२)—भारतेन्दु, ७९०)

(२) ताजगी घाना ।

### आँखों में तितलियां उड़ना

दुर्बलता के कारण चकावट आना । प्रयोग—मगर मुश्किल से ५० कदम चले होंगे कि गर्दन फटने लगी, पाँव पर-पराने लगे और आँखों में तितलियां उड़ने लगी (गोदान—प्रेमचंद, ९९)

(समा० मुहा०—आँखों के आगे तारे छूटना)

### आँखों में नाचना,—फिरना,—बसना,—रमना,—रहना

बराबर ध्यान बना रहना, स्मृति में बना रहना । प्रयोग—भिजई हों रोम रोम धानंद के घन छाये, बसी मेरी आँखिन में आवनि गुणन की (घम० कवित०—घना०, १८२); आँखों में मेरे वह फिर रही है (इन्शा०—इन्शा०, १०६); जो निमोही कुवर बसते लोचनों में सदा थे (प्रिय०—हरिऔध, १९८); देखी जा के मुखवि जिसकी लोचनों में रमी हो (प्रिय०—हरिऔध, १९७); उनकी आँखों में बस करके गुलछरें खूब

उड़ाऊंगी (नुर०—भक्त, १०७); दो दिन में सीख जाओगी लली, न जाने कितनी आँखों पर नाचती फिरोगी (बाण०—ह० प्र० द्वि०, २४); आज भी जब उनकी याद आती है तो वह रंगरेलियाँ आँखों में फिर जाती हैं (मान०(१)—प्रेमचंद, ८८); फिर दुःख के ये दृश्य उनकी दृष्टि में फिरने लगे (जय०—गुप्त, ३१); आँख दिखलाकर नवायें क्यों उसे जो हमारी छाँव में नाचा किया (बोल०—हरिऔध, ४७); जो मेरी आँखों में रहती वही छाँव दिखलावे जो कल संग हवा खाती थी घाज हवा बतलावे (नुर०—भक्त, ६८)

### आँखों में पानी आना,—भर आना

आँसू भर आना, रोना घाना । प्रयोग—बचन कहत लोचन भरे बारी (राम० (वा)—तुलसी, ११५); अपने मित्र-बंधुओं के विषय में सोचा और उनकी आँखों में पानी घा गया (सु० सु०—सुदर्शन, १९)

### आँखों में पानी भर आना

दे० आँखों में पानी आना

### आँखों में फिरना

दे० आँखों में नाचना

### आँखों में बसना

दे० आँखों में नाचना

### आँखों में बैठना या बैठाना

अत्यन्त प्रिय होना, सदैव सामने रखने की इच्छा होना । प्रयोग—साँव की सी मूरति हूँ आँखिन में पैठो आय, महा निरमोही मझे मोह सों हियो ठगो (घन० कवित०—घना०, १५८); अज्ञा और प्रीति से तुमको नयनों में बिठलावेगी (मुकुल—सुकु० चौ०, १००)

### आँखों में मछली तेरना

रोना आना । प्रयोग—बड़ी की छाँवों में फिर मछली तेर गई (बुंद०—अ० ना०, ६१)

### आँखों में मोती होना

आँसू घाना । प्रयोग—कभी करुण - रस भाव से भरे भरती आँखों में मोती है (मर्म०—हरिऔध, १३०)

### आँखों में रमना

दे० आँखों में नाचना

### आँखों में रहना

दे० आँखों में नाचना



### आँखों में रात कटना या काटना

निद्रा न आना, रात जागकर बिता देना; किसी बिता या व्यग्रता में रात काटना। प्रयोग—आँखों में हूँ रात काटती, निद्रा भर नींद नहीं आती (नूर०—मक्त, ४); रात कैसे कटे न आँखों में क्यों न चिन्ता भरी रहे आँखें (बोल०—हरिऔध, ३३)

### आँखों में समा जाना

अत्यन्त प्रिय होना, हृदय में बसना; चित्त में स्मरण बना रहना। प्रयोग—नैनन्ह माह तो उहै समाना। देखउँ जहाँ न देखउँ आना (पद०—जायसी, २७४०); अहाँ लखो तहँ रूप तुम्हारी नैनन माहि समानो (भा० प्रथा० (२)—मारतेन्दु, १३४); काहने से नहीं कहती कभी आँख में मूरत समाई आपकी (चौखें०—हरिऔध, ३३); देखते ही वह मेरी आँखों में समा गयी (सो०—द्व० स०, ६)

**आँखों से अलग न करना,—दूर न करना या होना निकट रखना या होना।** प्रयोग—इन बलिबनि घामें तें मोहन एको पल बनि होहु निपारे (सु० सा०—सूर, ९१४); मैं आँखों से अलग न तुझे लाव मेरे कहंगी (प्रिय०—हरिऔध, ५०)

### आँखों से आँसू चलना,—छटना,—बरसना,—बहना

आँसू बहाना, रोना। प्रयोग—जो पाती तुम आनि दई है, देखि चढ्यो दुग नीर (सु० सा०—सूर, ४२३५); मूर स्वाम सुन्दर यह गुनि के, नैननि नीर बहायो (सु० सा०—सूर, ४७६९); कब होतो है खानि उसे आँखों में आँसू छने ? (मर्म०—हरिऔध, १२३); कब रही है तो कबें चिनगारियाँ अब न आँखें नीर बरसाती रहें (चुमते०—हरिऔध, ३१)

### आँखों से आँसू छटना

दे० आँखों से आँसू चलना

आँखों से आँसू बरसना

दे० आँखों से आँसू चलना

### आँखों से आँसू बहाना

दे० आँखों से आँसू चलना

### आँखों से खून आना,—के आँसू टपकना,—निचुड़ना

शोध आना। प्रयोग—आप को देखकर किस नागरिक के

हृदयमें प्रतिशोध की ज्वाला नहीं घबक उठती ? किस की आँख से खून के आँसू नहीं टपकने लगते ? (अम्ब०—१० वै०, ६४); क्यों निचुड़ता न आँख से लोह जब लह खोल बेतरह पाया (बोल०—हरिऔध, ३४); देख कर जाति का लह होते किम तरह आँख से लह आता (बोल०—हरिऔध, ३४)

(समा० मुहा०—आँखों से खून के आँसू बरसना,—खून बरसना)

### आँखों से खून के आँसू टपकना

दे० आँखों से खून आना

आँखों से खून निचुड़ना

दे० आँखों से खून आना

### आँखों से गंगा जमुना बहना

बहुत रोना। प्रयोग—आँखों से गंगा-जमुना बह चली (बुंद०—अ० ना०, १०७)

### आँखों से गुजरना

सामने आना। प्रयोग—उसने एक दुनिया देखी थी, मगर ऐसा पक्क उसकी आँखों से आज तक न गुजरा पा (सु० सु०—सुदर्शन, २२)

### आँखों से चिनगारी कड़ना,—छटना,—फूटना

अत्यधिक चोषित होना। प्रयोग—आँखों की आँखों से चिनगारियाँ छूट गईं (मुग०—वृ० वर्मा, ५४); कब रही है तो कबें चिनगारियाँ अब न आँखें नीर बरसाती रहें (चुमते०—हरिऔध, ३१); उस मौन के सम्भव कारणों की कल्पना में उसकी आँखों से चिनगारियाँ फूट जाना चाहती थी (ज्ञान०—यशपाल, १६१)

(समा० मुहा०—आँखों से चिनगारी निकलना,—बरसना)

### आँखों से चिनगारी छटना

दे० आँखों से चिनगारी कड़ना

आँखों से चिनगारी फूटना

दे० आँखों से चिनगारी कड़ना

### आँखों से भाड़ी लगना या लगाना

अनवरत रोना। प्रयोग—मुख सम्मति चिति गई सर्बनि की अलिपन लागी भरनि (सु० सा०—सूर, ४५७०); देखे कहा ? सपनेहुँ न देखत, नैन पो रैन दिना भर लावत (घन० कवित्त०—घना०, २५); कष्ट न लखात ताहि अति आकुल दुग-भर लावत भारो (भा० प्रथा० (२)—मारतेन्दु, ८४)



आँखों से दूर न करना

४३

आँच धाना

आँखों से दूर न करना

दे० आँखों से अलग न करना

आँखों से दूर होना

सामने से हट जाना । प्रयोग—जब दिनमणि श्रीकृष्ण दृग्नि तें दूरि भए दुरि (नंद० प्र० १०—नंद०, २); चली जा हो आँखों से दूर अब गहाँ क्या है तेरा काम (वेदेही०—हरिऔध, १७)

आँखों से देखकर मक्खी निगलना

जानकारी में कोई अग्रिम या बुरा काम करना । प्रयोग—दूध की माखी उजागर कीर मु हाइ मैं आँखिन देखत साई (ठाकुर०—ठाकुर, १६); धीरत जाति का हाथ पकड़ते भी तो नहीं बनता, आँखों देख कर मक्खी निगलनी पड़ती है (गोदान—प्रेमचंद, १२२)

आँखों से देखना

(१) प्रत्यक्ष अनुभव करना । प्रयोग—पौन सों जागति घागि सुनी ही पै पानी तें लागति आँखिन देखी (घन० कवित्त०—घना०, ७४)

(२) जानकारी में । प्रयोग—आप के चार पैसों गाता हूँ, तो आप को आँखों से देखकर गड़े में न गिरने दूँगा (रंग०(१)—प्रेमचंद, ३७७)

आँखों से न देखना

बिगुन पसन्द न करना । प्रयोग—जब हमें घाँव से न देख सके आँख से घाँव क्यों मिलाते सब (बोल०—हरिऔध, ४५)

आँखों से न निकलना

सदैव ध्यान बना रहना, भुलाये न भूलना । प्रयोग—ता बिन तें इन आँखिन तें न कहुँ न कह मागत नासतहारी (जग०—पद्माकर, १९)

(समा० मुहा०—आँखों से न उतरना)

आँखों से नींद उड़ जाना

चिन्ता या विरह के कारण नींद न घाना । प्रयोग—नींद भाभी की आँखों से उड़ गई और वह X X देवर और देवरानी की बातें सुनने लगी (चैतन—अशक, २०५)

(समा० मुहा०—आँखों से पलक न लगना)

आँखों से परदा हटना

अज्ञान दूर होना । प्रयोग—उसकी आँखों से सहसा एक

पर्दा हट गया था (चैतन—अशक, २९३)

आँखों से मोती बरसना

रोना । प्रयोग—दिल हिले आँख से गिरे मोती, दिल जिले, फूल भड़ पड़े मुल से (बोले०—हरिऔध, ३६)

आँखों से रस बरसना

प्रेम पूर्ण दृष्टिपात करना । प्रयोग—हे कोई आँख बिप उगल देती है किसी आँख से बरसता रस (बोल०—हरिऔध, ५२)

आँखों से लगाना

(१) सादर स्वीकार करना । प्रयोग—धन्यवाद की विभूति तक्रवीम कर दी है । सब ने सिरमाये चड़ाई, आँखों से लगाई (पद्म० के पत्र—पद्म० शर्मा, १५५)

(२) बहुत पत्न करना ।

(३) बहुत प्यार करना ।

आँखों से बिप उगलना

रोमपूर्ण दृष्टिपात करना । प्रयोग—हे कोई आँख बिप उगल देती है किसी आँख से बरसता रस (बोल०—हरिऔध, ५२)

आँखों से सब कुछ पढ़ लेना

चेहरा देखकर भाव जान लेना । प्रयोग—चपल भी तो नीलिमा जो मानों आँखों से सब कुछ पढ़ लेना चाहती थी (बोले०—रंग० रा०, ५६)

आँच धाना,—पाना,—लगना

हानि पहुँचना । प्रयोग—धनी, वेदविद, विप्र, नृप, नदी, बंध ये पाँच । जहाँ होहि नहि तह बसे निहचे पाँच आँच (राधा० प्र० १०—राधा० दास, ६७) मेरी सब शीलत सब हो जायगी तो भी ऊपर आँच न घाने दूँगा (परीक्षा०—श्री० दास, ९४); ठई गच्छे मौत परे दुख टरे न सपने । ज्यों-ज्यों जार्ज घाँव लगे रंग धोरहु दपने (राधा० प्र० १०—राधा० दास, ५३); कापदे के घन्दर रहो और जो चाहे करो, तुम पर घाँव तक न जाने पावेंगी (गवन—प्रेमचंद, ४४); कौसी बातें करते हो अशोक ? ईश्वर न करे तुम पर आँच घावे (रेश्मी०—राम० वर्मा, १४२); आप लोग यह जानते हैं कि यह भीर साहेब का जाती मामला है, वग, मुझ पर घाँव न जाने पाए (भूले०—मंग० वर्मा, ३५६); तुम्हारे ऊपर घाँव जाने के पहले मेरे तन के टुकड़े-टुकड़े हो जायेंगे (मंग०—वृ० वर्मा, ३९६)



### आँच खाना

- (१) गरम होना । प्रयोग—तब खरा रह गया कहाँ सोना जब हुआ मैं दूर आँचें सा (चुमते०—हरिऔध, १५)  
(२) गुस्सा होना ।

### आँच पाना

दे० आँच आना

### आँच लगाना

दे० आँच आना

### आँच सहना

दुख या विपत्ति सहना । प्रयोग—उतरती जाती है पगड़ी, आवक आँचें सहती है (मर्म०—हरिऔध, ७८)

### आँचल की ओट लेना

- (१) यत्न पूर्वक रखना । प्रयोग—मोहन है घति मापूरि मूरति, राखिबै आँचल ओट (सू० सा०—सूर, ३५१३)  
(२) अपने आशय में लेना । प्रयोग—छिप कर भी तो मुधि ले न सकी, छाया आँचल की दे न सकी (चक्र०—दिनकर, २५३)

### आँचल पसारना

- (१) अत्यन्त चीन भाव से भीख माँगना । प्रयोग—मुझ में वह कला वह कौशल न था जिससे एक घोर एक हजार चंद्रकला आँचल पसार कर भीख माँगती है (सिंदूर०—ल० मिश्र, ९२)  
(२) नम्रता दिखाना ।  
(समा० मुहा०—आँचल फैलाना,—रोपना)

### आँचल में बाँधना

- (१) या लेना, सहज उपलब्ध होना । प्रयोग—तुम घोड़े ही समय में सारी कलाओं की बाँध लोगो, मुझको विद्वान् है (मुग्ग०—वृ० वर्मा, २४२)  
(२) किसी की कही बात को अच्छी तरह याद रखना ।  
(३) हर समय पास रखना ।

### आँट पर चढ़ना

घात पर चढ़ना । प्रयोग—मुझा—जहाँ तक हो आँट पर न चढ़ो (घोटो०—निराला, १४४)

### आँत उलटी आना

दुर्गति होना; कष्ट होना, प्राणान्तक स्थिति होना । प्रयोग—जाति की आँतें उलटी देखकर, आ गईं मुँह में अगर आँतें नहीं (बोल०—हरिऔध, २२३)

### आँत गले पड़ना

मुसीबत में पड़ना । प्रयोग—रुपयें उससे अपने दिल की बात कही । इन लोगों से कह दे, तो उलटी आँतें गले पड़ जायें (गवन—प्रेमचंद, २९६)

### आँत गले में आना,—मुँह में आना

बहुत परेशानी में होना । प्रयोग—जाति की आँतें उलटी देखकर आ गईं मुँह में अगर आँतें नहीं (बोल०—हरिऔध, २२३); है मुनी जाती नहीं बातें भली, आज आँतें हैं गले में आ रही (बोल०—हरिऔध, २२३)

(समा० मुहा०—आँत निकलना)

### आँत मुँह में आना

दे० आँत गले में आना

### आँतें कुलबुलाना

भूल के मारे बुरी दशा होना । प्रयोग—दाँत कैसे नहीं निकालें हम आँत है कुलबुला रही मेरी (बोल०—हरिऔध, २२४)

### आँतें समेटना

भूल बर्दाश्त करना । प्रयोग—पेट भरता न देख कर अपना लोग आँतें समेट लेते हैं (बोल०—हरिऔध, २२२)

### आँतें सूखना

खाना न मिलना । प्रयोग—है पही चाह सुख मिले न मिले तन मुलायमे न सूखती घातें (बोल०—हरिऔध, २२३)

### आँतों से बातें निकाल लेना

पेट के भीतर की बात निकालवा लेना । प्रयोग—एतिस नवाब साहब जैसे हिन्दुस्तानियों की आँतों तले से बात को निकालने का कौड़ा जानता था (झासी०—वृ० वर्मा, १४४)

### आंधी आना

(१) किसी बात या वस्तु का पूरे वेग से आना । प्रयोग—सती भाई आई ग्यान की घाँघी रे (क० ग्रंथा०—कबीर, ९३)  
(२) असंतोष या विरोध होना । प्रयोग—द्विवेदी जी ने समय-समय पर कुछ ऐसे लेख लिखे हैं जिनके कारण



हिन्दी साहित्य में एक आंधी सी जा गई है (कु०—  
प० पु० कल्लो, ७५)

### आंधी उठना

मन में बहुत आवेग होना। प्रयोग—क्या घायली धारणा  
है कि दूसरी ओर से जो आंदोलन की आंधी उठ रही है  
वह ईर्ष्या-द्वेष के दुर्भाव से रहित है? (पद्म० के पत्र  
—पद्म० शर्मा, ६६)

### आंधी चलना

विचारों का मयन करना। प्रयोग—सच्चाट मेरी आत्मा  
में घाँधी, भीषण आंधी चलती रहती है (मोर०—जग०  
माथुर, ६०)

### आंधी से खेलना

जानबूझ कर विपत्ति में पड़ना। प्रयोग—आंधियों से  
खेलता है, बातें करता है—विजयियों से आतिथन  
(स्कन्द०—प्रसाद, २५)

### आँय-बाँय

व्यर्थ का। प्रयोग—आँकी रचना बाँके आगे। आँय-बाँय  
सारे में भागें (नंद० प्रशा०—नंद०, १६७)

### आँय-बाँय बकना

इधर-उधर की बेमतलब की बातें करना। प्रयोग—आँप-  
बाँय बकता है, साफ बात नहीं बताता (भा—कौशिक, ३२८)

### आँय-बाँय-साँय उड़ा देना

इधर-उधर की बात में मतलब की बात को समाप्त कर  
देना। प्रयोग—ये बेयाकरण भी निरे दूँठ लसूची होते  
हैं, जो उदाहरण जिस रूप में किसी मृग की व्याख्या  
में आ गये हैं, वस वही तक इनकी गति है। वह भी  
पुस्तक सामने हो तब, नहीं तो आँप-बाँप-साँप, जो है सो,  
बुझने लगते हैं (पद्म० के पत्र—पद्म० शर्मा, १३२)

### आँसुओं का तार बंधना,—बहना,—परनाला बहना,—की झड़ी लगना

बहुत देर तक रोते रहना। प्रयोग—तब मैं नहीं रहत,  
बहत धसुअनि के तारे (सु० सा०—सूर, ४२००); यदन  
विलोके बिना बावले युगल-नयन बन जायेंगे। तार बांध  
बहते आँसू का बार-बार पहरायेगे (तेदेही०—हरिऔध,  
५९); हिचकियाँ लग गईं अगर न हमें आँसुओं की अगर  
झड़ी न लगी (बोल०—हरिऔध ६०); अनेक बार कसल-

काव्य मुने-मुनाये हैं—आँसुओं के परनाले बहाये हैं, पर  
बैसी दशा कभी नहीं हुई (पद्म पराग—पद्म० शर्मा, ९२);  
यह सोच कर ज्ञान धँकर जोर से रो-उठे। आँसू की झड़ी  
लग गई (प्रेमा०—प्रेमचंद, ४४४)

(समा० मुहा०—आँसुओं का तार न टूटना,—की  
बाढ़ आना)

### आँसुओं का तार बहना

दे० आँसुओं का तार बंधना

### आँसुओं का परनाला बहना

दे० आँसुओं का तार बंधना

### आँसुओं की झड़ी लगना

दे० आँसुओं का तार बंधना

### आँसुओं में बूझना

रात दिन अश्रुपात होना। प्रयोग—स्वामि बिनु अंगुअनि  
बूझत, दुसह धुनि भइ गत (सु० सा०—सूर, ४६९२);  
डूबते हैं जो, गये वे डूब तो आँसुओं में आँख क्या है डूबती  
(बोल०—हरिऔध, ६४)

### आँसुओं से मुँह धोना

रोना। प्रयोग—मैंल कुछ भी धूल नहीं जी का सका  
आँसुओं से मुँह भले ही धो लिया (बोल०—हरिऔध, ६१)

### आँसू का कतरा

घाँसू। प्रयोग—पर वे मकबरे क्या उसकी कूह को उतनी  
राहत पहुंचा सकते हैं जितनी उसके दोस्त घाँसू के कतरे  
टपका कर पहुंचाते हैं? (सा० सु०—बा० भट्ट, १०८)

### आँसू का घूँट पीकर रह जाना,—पीकर रहना

भीतर ही भीतर रोकर रह जाना। प्रयोग—और वह एक  
बड़ी-सी सिसकी लेकर अपने घधाह आँसुओं को पीकर  
कहता है “मारदा, मैं तुम्हें कितना प्यार करता हूँ”  
(शेखर (१)—प्रज्ञेय, १६६); पीने को घब क्या रता है,  
घाँसू आँसू अब पीये (नुर०—मक्त, ५); नूख से मूख ओठ  
जब जाते जाता—भास्य विधाता से क्या पाते?—घूँट  
आँसुओं का पीकर रह जाते (परि०—निराला, १३३-१३४)

### आँसू गारना,—डालना,—ढारना

(१) रोना। प्रयोग—नारि चरित करि डारइ आँसू  
(राम० (अयो)—तुलसी, ३८४); निटुरा आगे रोइवो, आँसू



गारिको खीम (रहीम० कवि०—रहीम, १०); ये निराश नयनों से आंसू डारते (वैदेही०—हरिऔध, ११०); देखो भयंकर भेड़िये भी आज आंसू डालते (जय०—गुप्त, ७८)

(२) मौखिक सहानुभूति दिखलाना । प्रयोग—पोंछने-वाला न आंसू का मिला, कम न आंसू डालने वाले मिले (बोल०—हरिऔध, ६०)

(समा० मुहा०—आंसू गिराना)

**आंसू चलना,—छनना**

आँसों से आँसुधों की धारा बहनी । प्रयोग—मातृ जमुदा डार टाही, कलें आंसू डारि (सू० सा०—सूर, ३६०९); बात आपकी चले न कब दिल हिल गया कब न पतिरता आँसों से आंसू छना (वैदेही०—हरिऔध, १०७); जब सखा कुछ बस न आंसू के चले (बोल०—हरिऔध, ६१)

**आंसू छनना**

दे० आंसू चलना

**आंसू डालना**

दे० आंसू गारना

**आंसू डारना या डालना**

दे० आंसू गारना

**आंसू पीकर रह जाना**

दे० आंसू का घूंट पीकर रह जाना

**आंसू पुछना**

शोड़ा दाढ़म होना । प्रयोग—पर मदनबान से कुछ रानी केतकी के आंसू पुछते चले (ईशा०—ईशा०, ११३); पोंछने वाला न आंसू का मिला पुछ गया आंसू बिना पोछे हुए (बोल०—हरिऔध, ६१)

**आंसू पोछना**

डाढ़म बंधाना, दिखाना देना । प्रयोग—मान लिया कि उन पर मेरी ईर्ष्या का रहस्य खुल गया तो सहृदयता और पालीनता इसमें थी कि वह मुझसे सहानुभूति प्रकट करते, मेरे आंसू पोंछते (प्रेमा०—प्रेमचंद, ३५); पोंछने वाला न आंसू का मिला कम न आंसू डालने वाले मिले (बोल०—हरिऔध, ६०)

**आंसू बरसना**

एसा रोना जिसमें खूब आंसू गिरे । प्रयोग—बिना बिलोके

मुख-मयंक सबि पल-पल आंसू बरस रही है (वैदेही०—हरिऔध, १०५)

(समा० मुहा०—आंसू धार रोना)

**आंसू बहाना**

दुःख करना । प्रयोग—जो निजलु के बादक इस अरण्य-रोदन से लाभ ? अपने पर आंसू मत बहाओ (कला०—पंत, ९०); यहां बैठ कर मैंने दो-एक लेख लिखे हैं । एक छप गया है जो भेजता हूँ । दिन घाम कर पड़ लीजिये और संसार की कृतघ्नता पर आंसू बहाइए (पद्म० के पत्र—पद्म० शर्मा, २०९); विरादरी की संकीर्णता और अन्याय पर आंसू बहाऊंगा (प्रेमा०—प्रेमचंद, ११६)

**आंसू बहाने वाला**

समवेदना प्रकट करने वाला । प्रयोग—कोई उसकी लाश पर आंसू बहाने वाला भी न होगा (गवन-प्रेमचंद, १३३)

**आँसों भीगना**

मसों भीनना । प्रयोग—अटल हट्टा-नट्टा युवक था । आँसों भीग चुकी थी (मृग०—वृ० वर्मा, १३)

**आ जमना**

इकट्ठा होना या अट्टा जमाना । प्रयोग—मूढल्ले के आधे दर्जन मनचले बाह्यरा युवक उस वेदया से मिलने मेरे वहां आ जमते थे (अपनी स्वर—उग्र, २३)

(समा० मुहा०—आ जुटना)

**आ बनना**

(१) लाभ उठाने का अच्छा अवसर हाथ आना । प्रयोग—अब क्या सोचें आइ बनी सिर परि साहिब राम धनी (क० ग्रंथा०—कबीर, ११८)

(२) पाला पड़ना—मौका पड़ना । प्रयोग—मध पंचक लें गए स्वामपन, आय बनी यह बात (भ० सा०—सूर, ३६५); कपौ भरिये, करिये मु कहा, हमें आनि बनी इन लोगन में इत (घन० कवित्त—घना०, ७२)

**आई-गई**

भली बुरी । प्रयोग—वह तो भुम में आग लगाकर दूर से तमाचा देखने आई-गई तुम्हारे सिर जायगी (रा० (१)—प्रेमचंद, १०७)

**आई-गई होना**

(१) नष्ट होना, खोप होना । प्रयोग—फिर सब जगह



तो आई गई हुई केवल परिवार में नीलकांत की याद का साइ सास बह के हृदय के कगारों की सीमाओं से लौड़-लौड़ कर दरिद्रता की नदी में बहाता हुआ भविष्य के अंधकार की तरह उकारने लगा (बीने—रा० रा०, ७३)

(२) परिचित होना ।

**आइने में मुंह देखना**

अपनी योग्यता को जानना । प्रयोग—हे तुम्हारा न मुंह कि सम्हालोगे मुंह तनिक देख आइने में जो (चुमते—हरिऔध, ९५)

**आकाश और पाताल में होना**

बहुत ऊंची और नीची स्थिति में होना । प्रयोग—रंदा बस—घाघ आकाश पर है, मैं पाताल में हूँ, क्या बातें हों ? (रंग० (२)—प्रेमचंद, १३७)

**आकाश का तारा तोड़ना**

दुर्लभ वस्तु लाना; असंभव कार्य करना । प्रयोग—मैं भली भाँति जानता हूँ कि मैं आकाश के तारे तोड़ने जा रहा हूँ—वह फल खाने जा रहा हूँ, जो मेरे लिये वर्जित है (रंग० (१)—प्रेमचंद, १५४)

(समा० मुहा०—आकाश का तारा लाना, का फूल लाना)

**आकाश की बातें करना**

संभव बात करना । प्रयोग—सिपाही डरपुक्कन सिरट्ट बोले बात अकासी (भा० प्रथा० (१)—भारतेन्दु, ३३३)

**आकाश चढ़ना**

बड़ी-बड़ी कल्पनाएँ करना । प्रयोग—कबीर मन पंखी भया, बहुतक चढ़या प्रकास (क० प्रथा०—कबीर, ३०)

**आकाश चढ़ाना**

सम्मान देना । प्रयोग—घरती से आकास चढ़ाव, चड़े अकास गिरावें (क० प्रथा०—कबीर, ३२०)

**आकाश चूमना, छूना, पर मस्तक उठाए होना, लगाना**

बहुत ऊँचा होना । प्रयोग—घन अबराऊँ लाग चहुँ पाता । उठै पुहुमि हूति लाग अकासा (पद०—जायसी, २१३); पहन हरित परिधान प्रभूत प्रकुल हो ऊँचे उठ जो रहें व्योम को चूमते । ऐसे बहुशः चित्त वृन्द अवलोकते जन स्थान में रघुकुल रवि से चूमते (विदेही०—हरिऔध, ३२९);

कर रहे नृपति-सौध गगन-स्पर्श हैं, शिल्प कीशल के परम धारदर्श हैं (साकेत—गुप्त, ४); आकाश पर मस्तक उठाए हुए पर्वत शिखर हमारे सामने खड़े थे (चित्र०—भग० वर्मा, १०५)

**आकाश छूना**

दे० आकाश चूमना

**आकाश पकड़ना, बांधना**

(१) असंभव काम करना या बात कहना । प्रयोग—तुम बांधति आकाश, बात भूटी की सँदे (सू० सा०—सूर, २१०९); बातनि गझी अकास, मुनत न धावें सास, बोलि तो कहु न जावें, ताते मौन गहिये (सू० सा०—सूर, २३५२)

(२) बहुत दौड़ धुन करना ।

**आकाश पर चढ़ाना**

बहुत मान देना । प्रयोग—हे स्त्री देवी ! संसार स्त्री आकाश में गुब्बारा (बेलून) हो, क्योंकि बात बात में आकाश में चड़ा देती हो पर जब धक्का दे देती हो तब समुद्र में डूबना पड़ता है (भा० प्रथा० (३)—भारतेन्दु, ५४६); मैं धूल में पड़ी हुई थी । घाघ लोगों ने मुझे आकाश पर चड़ा दिया (कर्म०—प्रेमचंद, ७७)

**आकाश पर दिया जलाना**

गर्व करना, बड़ा से बड़ा काम करना या करने की हिम्मत रखना । प्रयोग—जब तेरी उमिर थी तो हम भी आकाश पर दिया जलाते थे, पर अब वह कजेड़ा कहाँ से लायें ? (प्रेमा०—प्रेमचंद, १००)

**आकाश पर मस्तक उठाए होना**

दे० आकाश चूमना

**आकाश पाताल एक करना**

भारी उद्योग करना; आंदोलन करना; हलचल करना । प्रयोग—फिर इन लोगों को विज्ञापन देने के ऐसे-ऐसे ईंग मालूम रहते हैं कि एक कम उपयोगी पुस्तक के लिये भी वे आकाश-पाताल एक कर देते हैं (सा० सी०—महा० द्विवेदी, ९३)

**आकाश पाताल का अंतर**

बड़ा अंतर । प्रयोग—लेकिन मैं तो आकाश-पाताल का अंतर देखता हूँ (गोदान—प्रेमचंद, २४५); उनके मेरे संस्कारों



में आकाश पाताल का अंतर है (पैतरे—४३५, १५५); वह भित्तिरिची में एक रईस का लड़का । आकाश पाताल का अंतर है (मिस्त्रा—कौशिक, ६)

### आकाश पाताल के कुलाचे मिलाना

(१) बड़ी-बड़ी बातें करना । प्रयोग—तुकीली मुख, लहराती-वहराती हाड़ियाँ X X आकाश-पाताल के कुलाचे मिलाने वाली लीगभरी गर्वोक्तियाँ, ये सब शौर्य सौंदर्य के धात्म-विज्ञापन ही तो वे (मेरे—गुलाब, ६०)

(२) भारी उद्योग करना ।

(समा० मुहा०—आकाश पाताल के कुलाचे एक करना)

### आकाश पाताल छाना

घोर उद्यम करना । प्रयोग—पड़े काम आकाश पाताल छाना (सुमति—हरिऔध, १८८)

### आकाश पाताल सोचना

दूर-दूर तक सोच-विचार करना । प्रयोग—वह दिन भर एकान्त में पड़े आकाश-पाताल सोचते रहे (मिस्त्रा—कौशिक, ८४)

### आकाश बांधना

दे० आकाश पकड़ना

### आकाश-भेदी

(१) बहुत जोर की आवाज । प्रयोग—मुरदास के घर से घट्टहास की आकाश-भेदी ध्वनि, तो चकराई (रंग—प्रेमचंद, ३८९)

(२) बहुत ऊँचा ।

### आकाश में पेंटना

बहुत गर्व करना । प्रयोग—को न लड़ेगी मरुप न काहि तुहीं मरु जाति अकामहि ऐही (केशव—केशव, ६९)

### आकाश में छेद करना

(१) गर्व करना । प्रयोग—हां भाभी, यह कर आकाश में छेद किया है उसने (परती—रेणु, १३५)

(२) बहुत बालाकी करना ।

### आकाश लगना

दे० आकाश चूमना

### आकाश से गिरना,—धरती पर आ गिरना

सम्र रह जाना । प्रयोग—माता मानों आकाश से गिर पड़ी (मान० (१)—प्रेमचंद, २११); मिरजम पल भर में आकाशसे पृथ्वी पर आ गया (कंकाल—प्रसाद, ७९)

### आकाश से धरती पर आ गिरना

दे० आकाश से गिरना

### आकाश से पाताल में गिरना

(१) उन्नति के बाद पतन होना । प्रयोग—धरती से आकाश चढ़ावे चड़े अकाम गिरावे (क० प्रथा—कवीर, ३२०)

(२) सम्र हो जाना । प्रयोग—सेठजी मानों आकाश से पाताल में गिर पड़े (मान० (२)—प्रेमचंद, ३६)

### आकाश से भी ऊँचा होना

बहुत ऊँचा होना । प्रयोग—मो गढ़ देल गगन से ऊँचा । नैन देल कर नाहि पहुँचा (पद—जायसी, १६३)

(समा० मुहा०—आकाश से बातें करना)

### आकाशी वृत्ति

निर्बाह की घनिष्ठित दशा । प्रयोग—पर बिका, कुछ जमीन थी वह बिकी, फिर गहनों की बारी आयी, यहां तक कि अब केवल आकाशी वृत्ति ही (मान० (२)—प्रेमचंद, १२८)

### आखिरी दम पर होना

मृत्यु या शेष होने के निकट होना । प्रयोग—टिबाना मिनिस्ट्री आखिरी दमों पर है (कठ०—दे० स०, २६८)

### आग

घोर घसतोप/विद्रोह । प्रयोग—अपनी विकसित होती हुई आत्मा में एक आग और छिपा कर एक प्रशान्त विद्रोही बन कर संवर घर लौट आया (शैलर (१)—अज्ञेय, १७७); माधवी के मन में जनवरी के द्वारा जो आग जलाई गयी है, वह कई रूप बाल कर उसके कोने-कोने को झूलवाने लगी है (तिली—प्रसाद, ४७)

### आग उगलना

किसी के विरुद्ध कुछ कटु कहना । प्रयोग—बाद में कपरान ने महिपाल को इसके लिये समझा-बुझा कर राखी कर



लिया कि पत्रिका उतनी ही आग उगले जितने में उसके प्रकाशन पर आंच न आये (सू०—३० ना०, १९२)

### आग को हवा देना

क्रोध या उत्तेजना को और बढ़ाना। प्रयोग—अम्मा ने आग को हवा दी—तभी तब सब लोग अन्धेरे ही में पड़ रहते थे (मान०—१)—प्रेमचंद, १५५

### आग ठंडी पड़ना

(१) क्रोध शान्त हो जाना। प्रयोग—क्रुद्ध हो दिल की आग तो ठंडी हो गई (रंग०—१)—प्रेमचंद, १९७

(२) उत्तेजना या आन्दोलन शान्त होना।

(३) आग बुझ जाना।

### आग देना

(१) दाह करना। प्रयोग—को मोहि आगि देइ रवि होरी (पट०—जायसी, ३४४); स्त्री—(हंस कर) मर जायेंगे तो आग देने तो जाओगे, तब कहाँ भागोगे? (मान०—१)—प्रेमचंद, २५४

(२) नष्ट करना

(३) गरम करना

### आग पड़ना

(१) शेष होना, नष्ट होना। प्रयोग—कैसे हूँ कत फिर नहीं फेरे। आगि परी चित उर धनि केरे (पट०—जायसी, ५२१५)

(२) बहुत गर्मी पड़ना।

(३) मंहगाई होना।

### आग पर (में) तेल छिड़कना

क्रोध को उत्तेजित करना। प्रयोग—जगधर, आग पर तेल छिड़कना अच्छी बात नहीं (रंग०—२)—प्रेमचंद, १३२; हमारे सामने तो मिन-मिन करती है, एकान्त में आग पर तेल छिड़कती है (सु० सु०—सुदर्शन, २१०)

(समा० मुहा०—आगमें घी डालना,—तेल डालना)

### आग पर पानी डालना

विद्रोह, क्रांति, क्रोध आदि को शान्त करने का प्रयत्न करना। प्रयोग—राजा साहब ने उनके तेवर देख कर आग पर पानी डालते हुए कहा—कथापि नहीं मि० मेहता, आप मेरे साथ धीरे धन्याय कर रहे हैं (मान०—२)—प्रेमचंद, १८१

### आग पानी में कूदना

सब प्रकार के खतरे या कष्ट उठाना। प्रयोग—संयोजक जी जी कहेंगे उसे कासी टोपी वाले नौजवान प्राण रहते नहीं काट सकते हैं। आग और पानी में कूद सकते हैं (मैला०—१७, २२०)

(समा० मुहा०—आग पानी से गुज़रना)

### आग बबूला होना

अत्यन्त क्रोधित होना। प्रयोग—बादशाह भए आग बबूला यह सब सुनतहि (राधा० प्रश्ना०—राधा० दास, ७२५); सेठजी सुनते ही आग बबूला होकर उठ बैठे। घोर झिड़कते हुए बोले, “तुम गधा” (जहाज०—इ० जोशी, ५६); फिर क्या था, मम्भले मालिक आग बबूला हो गये (बल०—नागा०, ४)

(समा० मुहा०—आग बबूला बनना)

### आग बरसना

बहुत गरमी पड़ना; खूब लू चलना। प्रयोग—आजकल तो आगरे में आग बरसती होगी (पट० के पत्र—पट० शर्मा, ४२); नारे शहर में जैने आग बरस रही हो (धूम०—उ० मट्ट, ९०)

### आग बुझना

(१) चिरह भाव दूर होना, दुख दूर होना। प्रयोग—जीव बिलम्बा जीव गीं, अल्प न लपिया जाद। गोविंद मिले न भल बुझ, रही बुझाद बुझाद (क० प्रश्ना०—कबीर, ३५)

(२) गुस्सा दूर होना। प्रयोग—आज दो-चार लून हो जायेंगे तभी यह आग बुझेगी (रंग०—२)—प्रेमचंद, १३२

(३) भूल शान्त होना।

(४) किसी उच्च आन्दोलन का ठंडा पड़ना।

### आग बोना

लड़ाई लगाना; प्रतिष्ठ करना। प्रयोग—जातिपां मुह जोह जिनका जी सकीं इन दिनों हैं आग ये ही वो रही (चुमते०—हरिऔध, २२)

(२) आंदोलन को सुरुआत करना, लोगों को उत्तेजित करना।

(३) आग लगाना।

### आग भड़क उठना

किसी दबे हुए क्रोध, प्रतिहिंसा या आंदोलन आदि का जोरों से उमड़ जाना। प्रयोग—अब मुझे देख कर महाराज के



कलेजे में आग भड़क उठती है (राधा० प्रंथा०—राधा० दास, ५९४); इलाके में आग सुलग रही थी, हवा पाते ही भड़क उठी (प्रेमा०—प्रेमचंद, २५)

### आग में ईंधन डालना

(१) लड़ाई में लड़ाई लगाना । प्रयोग—मिसेज सेवक घाग में ईंधन डालती रहती थीं,—एक ओर कलाकं को ठकसाती दूसरी ओर सोफी को समझाती (रंग० (१)—प्रेमचंद, ४०१)

(२) उठते हुए विद्रोह आदि के भाव को और बढ़ाना । (समा० मुहा०—आग में आग लगाना)

### आग में कूद पड़ना

जानबूझ कर विपत्ति में पड़ना । प्रयोग—सब बातें खूब सोच समझ कर इस घाग में कूदिये (पद्म० के पत्र—पद्म०, १०९); ना भैया, मैं इस आग में नहीं कूदना चाहती (रंग० (१)—प्रेमचंद, १०७)

### आग में घी पड़ना

ऐसा कुछ कहना या करना जिससे प्रोच या उत्तेजना घौर बढ़े । प्रयोग—जब रिस भरेउ लगन लपु भाई । बरत अनल घूत आहुति पाई (राम० (अ)—तुलसी, ५२५); आग में घी पड़ गया मगर राय साहब ने प्रोच को दबाया (गोदान—प्रेमचंद, २३४)

### आग में भोंक देना

नष्ट कर देना; विपत्ति में डाल देना । प्रयोग—क्या हमें जानबूझ कर राजकुमारी को आग में भोंक देना चाहिये ? (विप०—प्रेमी, ७४); XX यह कहाँ का ग्याव है कि मुचलके के डर से उसे आग में भोंक दें (प्रेमा०—प्रेमचंद, १०२)

### आग में पांच डालना

जान बूझ कर खतरे में पड़ना । प्रयोग—लोग से लोग जल रहे हैं तो पांच घपना न आग में डालें (चुमते०—हरिऔध, ४३)

### आग लगाना

(१) नष्ट हो—घाय भाव से प्रयुक्त । प्रयोग—घाकें तो है आज ही मिलो कि मरि जाऊँ ऐसं, आगि लागें मेरी माई मेहु पाहवतु है (केशव०—केशव, ६६); घाग ही उस पीसने में जाय लग जिस पिसाई में पड़े उंगली पिसे (चुमते०—हरिऔध, ६४)

(२) प्रोच उत्पन्न होना; कुड़न होना । प्रयोग—जोग की गति सुनत मेरे, अंग घागि कई (सु० सा०—सूर, ४३२१); सुरंग महाबल सौति पग निरसि रही अनखाइ । पिय-अंगुरिनु लाली ललै लरी उठी लगि लाइ (बिहारी रत्ना०—बिहारी, २८७); जिस वक्त उसका वह तेजी के साथ निकल जाना खयाल करता हूँ XX आग बल उठती है (राधा० प्रंथा०—राधा० दास, ६१९); सुनते ही एकाएक तन मन में आग लग गई (सुहाग०—अ० ना०, ३९); उसने अपनी देवरानी को निलंज्यों की भाँति अपने जेठ के सामने हंसते और ठहाके लगाते देखा तो उसके आग सी लग गई (चेतन—अशक, २०५)

(३) मंहगाई होना । प्रयोग—जहाँ तुम्हारी हुकूमत जाती है वहाँ खाने-पीने की चीजों को एकदम आग लग जाती है (गु० नि०—बा० मु० गु०, २४१); धोतियों को तो आजकल घाग लगी हुई है, तीन की मिलती थी सो तेरह की मिलती है (झुठा० (१)—यशपाल, ६८)

(४) किसी घाँदोलन या असंतोष का फैलना । प्रयोग—एटर्नी अब्दुल हक का नाम लेकर कहा, वह हाईकोर्ट में मुफ्त लड़ने घौर हिन्दुस्तान भर में यह घाग लगेगी (चौटी०—निराला, ५०); शेखर, पश्चिमोत्तर सीमा पर आग लग चुकी है । हुणों का सरदार तोरमाण भारतवर्ष पर चढ़ आया है (मोर०—जग० माधुर, १४३-१४४)

### आग लगा कर पानी को दौड़ना

जानबूझ कर अहितकर काम करना और फिर उससे बचने का उपाय करना । प्रयोग—मुन्शी दयानाथ की आँखों में उस कृत्य का कुछ मूल्य नहीं । आग लगा कर पानी लेकर दौड़ने से कोई निर्दोष नहीं हो जाता (गवन—प्रेमचंद, १४५); हमी में घाग लगा कर पानी को दौड़ने वाले हैं (चुमते० (मु०)—हरिऔध, ४)

(समा० मुहा०—आग लगा कर बुझाने को दौड़ना)

### आग लगाना

(१) लड़ाई लगाना, इधर की बात उधर कह कर लड़वा देना । प्रयोग—ऐसी न होय के यह बात फोड़ि के उलटी आग लगावे (भा० प्रंथा० (१)—भारतेन्दु, ४४२) (÷ १); यह सब इसी रानी का काम है XX घाग लगाती फिरती है (सु० सु०—सुदर्शन, २०९); स्त्री आकर और भी घाग



लगायेगी (मान० (१)—प्रेमचंद, १) ( $\div १$ ); कितनी है उत्पात-सहचरी, कितनी ही है आग लगाती (मर्म०—हरिऔध, १५१) ( $\div २$ )

(२) चुगली खाना, नष्ट करना। देखिए प्रयोग—(१) में ( $\div १$ ) भी

(३) जोश बढ़ाना, भड़काना। प्रयोग—मामा ने जो आग लगा दी है वह मेरे बुझाए नहीं बुझ सकती (रंग० (१)—प्रेमचंद, १८०); देखिए प्रयोग (१) में ( $\div २$ ) भी

### आग सा लगना

बहुत अप्रिय या दुखदायी लगना। प्रयोग—ये तो नैन बाही को बदन हरेँ सीरे होत, और बात आली सब लागति ज्यों आगि है (घन० कवित—घना०, १८३)

### आग सुलगना या सुलगाना

(१) क्रोध-विद्रोह आदि के भाव फैलना या फैलाना। प्रयोग—भीतर भीतर चित्तौर मुसलमानों से छीन कर अपने कुल का गौरव पुनः स्थापन करने की अग्नि सुलग रही थी (राधा० ग्रंथा०—राधा० दास, ६४८); इलाके में आग सुलग रही थी, हवा पाते ही भड़क उठी (प्रेमा०—प्रेमचंद, २५); पितृव्य सुभद्र कहते थे वृष्णि और अंधक स्वयं मथुरा में आग सुलगा रहे हैं (देवकी०—रा० रा०, ९०)

(२) क्रोध या जोश आना। प्रयोग—जिनके हृदय में कभी आग सुलगी ही नहीं ठेस लगते ही अहंकार नहीं छलका (कुरु०—दिनकर, ३०)

### आग से आग बुझाने की कोशिश करना

क्रोध या बुराई को क्रोध से शांत करने की कोशिश करना। प्रयोग—आग से आग बुझाने की कोशिश तो तुम ही किया करते हो (दूधगाछ—दे० स०, ३४२)

### आग से खेलना

जान बूझ कर भयानक परिस्थिति से सम्पर्क रखना। प्रयोग—आग से खेल बैठी बच्ची। आप भी जली, सारा नगर जला डाला (सुहाग०—स० ना०, ९९)

### आग होना

(१) कुट्ट होना, रोप में भरना। प्रयोग—हूँते रखवार आगें (आग्नेय) सुलतानी। देखि अंकोर भए जस पानी (पद०—जायसी, ५३/३); सुनते ही वह आग हो गये (स०

ग्रंथा०—स० मिश्र, १३); डेढ़ साल पहले बेटे ने इनसे यह प्रस्ताव किया होता तो आग हो जाते (कर्म०—प्रेमचंद, २४२); इतना सुनते ही पिताजी आग हो गये (मिसा०—कौशिक, ४३)

### आगम बांधना

आनेवाली बात का निश्चय करना। प्रयोग—आगम बांध तुमने यह बात बिचारी है, न जानिए कौसी होय, मैंने तुम्हारी बात मान ली (प्रेम० सा०—स० ला०, ९५)

### आगा-पीछा करना

सोच-विचार में पड़ना, दुविधा में पड़ना, किसी काम के करने से जी चुराना। प्रयोग—हमलोग आगा पीछा जितना चाहें करें, परन्तु उन्होंने जैसे ही यहाँ इन वाक्यों को साभिमान कहा है, वैसे ही इसके भीतर जो कुछ दुखदायकता या दूषण है उसे भी इस दोहे में स्पष्ट कह दिया है... (राधा० ग्रंथा०—राधा० दास, ४११); दजियों एवं धुनियों ने भी कुछ आगा-पीछा कर अपनी स्वीकृति दे दी (सतमो०—राहुल, १०); ऐसे कामों में आगा-पीछा अच्छा नहीं होता (प्रेमा०—प्रेमचंद, २१७)

### आगा-पीछा देखना,—विचारना,—सुझाना,—सोचना

भले बुरे परिणाम पर विचार करना। प्रयोग—कोई इनसे कह भर दे कि इस बात के करने से पर-लोक सुधरता है तो XXआगा पीछा कुछ न देख इसका सवाल कभी न करेंगे कि परलोक और परमार्थ भार में जाय यह लोक तो बनावें (मट्ट नि०—बा० मट्ट, १२१); वह तो गहनों की बहुत इच्छुक न थी, लेकिन पा जाती थी तो प्रसन्न हो जाती थी और मैं प्रेम की तरंग में आगा-पीछा कुछ न सोचता था (गवन—प्रेमचंद, १६३); मैंने जो कुछ किया, आगा-पीछा विचार कर किया था (भोर०—जग० माधुर, ५९); जब इज्जत की बात आती है, तब वह आगा पीछा नहीं देखता (गोली—चतुर०, १०३); मगर होरी ने आगा-पीछा सुझा कर आखिर धनिया को किसी तरह राजी कर लिया (गोदान—प्रेमचंद, १०५) मुँदर ने रानी को आगा-पीछा सुझाया—सरकार इस आक्रुत से दूर रहिए (झांसी—वृ० वर्मा, २५६)



### आगा-पीछा न होना

सोच-विचार छोड़ कर काम कर डालना । प्रयोग—प्रब मुझे प्राण विसर्जन करने में तनिक भी आगा पीछा नहीं है (राधा० १०—राधा० दास, ७३५)

(समा० मुहा०—आगा-पीछा त्यागना)

### आगा पीछा सुझाना

दे० आगा पीछा देखना

### आगा-पीछा सोचना

दे० आगा-पीछा देखना

### आगा-पीछा विचारना

दे० आगा-पीछा देखना

### आगा-पीछा होना

(१) दुविधा या सोच-विचार होना । प्रयोग—इससे भक्ति के सामाजिक महत्व को X X स्वीकार करने में किसी को आगा पीछा नहीं हो सकता (चिंता०(१)—शुक्ल, ३४)

(२) बालिकाओं का किशोरावस्था पार करने पर उरोज तथा नितम्बों का भर आना ।

(३) स्वसुर-कुल एवं पितृ-कुल में किसी का देख-रेख करने को होना ।

### आगा सूझना

आगे की बात समझ में आनी । प्रयोग—यह पंडित संहित बैराग्य । दोष ताहि नेहि सूझ न आग्य (पद०—जायसी, ८४)

### आगे

(१) सम्मुख । प्रयोग—दतकौ गुन औगुन हरि आगे तिल-तिल भेद जनावै (सू० सा०—सूर, २८७५)

(२) भविष्य में । प्रयोग—जौ प्रिय बिरह प्राण प्रिय लागे, देखव सुनव बहुत अब आगे (राम० अ)—तुलसी, ५४१)

(३) मुकाबिले में ।

### आगे आना

(१) सामने आना—मिलना । प्रयोग—कबीर मुख की आइ था, अगे आया दुख (क० ग्रंथा०—कबीर, १९)

(२) धटित होना, फल मिलना । प्रयोग—पर घाखिर को मुंह की साई । प्रपनी करनी आगे आई (गु० नि०—बा० मु० गु०, ७२१); दुधमनी करने वाले जैसा-जैसा हमरे

खिलाफ फैलाऊत हैं वैसा ठाकुर जी करिहैं तो उनके आगे अइहै (पू०—अ० ना०, १६०)

(३) सामना करना—भिड़ना ।

### आगे करना

(१) प्रमाणित कर देना । प्रयोग—मूरख कै ज्यों बुद्धि पाछिली हमहूँ करि दियो आगे (सू० सा०—सूर, २८५१)

(२) विपत्ति में फँसाना ।

(३) सामने करना ।

(४) अगुआ बनाना ।

### आगे नाचना

स्मृति में सबीब हो जाना । प्रयोग—मोहमिन के नंगे चूतड़ और बाबा के अंतिम दिन की आंखें शेखर के आगे नाच गईं (शेखर (२)—अज्ञेय, १०४)

### आगे नाथ न पीछे पगहा होना

परिवार में कोई न होना । प्रयोग—शतरंज खेलने बैठते तो सबेरा कर देते, दफ्तर भी भूल जाते । न आगे नाथ न पीछे पगहा (गबन—प्रेमचंद, ३२)

### आगे निकल जाना

श्रेष्ठ होना, प्रतियोगिता में श्रेष्ठ होना; उन्नति कर जाना । प्रयोग—शंख तो पहले ही बहुत आगे निकल गया (दूधगाछ—दे० स०, ४६)

### आगे पीछे

(१) सोच-विचार में । प्रयोग—इसी प्रकार आगे-पीछे में पड़े हुए सबेरा हो जायेगा (गबन—प्रेमचंद, १२३)

(२) खानदान में । प्रयोग—न कोई आगे न कोई पीछे, न रोनेवाला न कोई हंसनेवाला, मगर माया बनी हुई है (गबन—प्रेमचंद, १३६); जीवन के दिन तो वह पूरे करते हैं जिनके आगे-पीछे कोई न होता (मिरा०—कौशिक, ९५)

(३) कुछ समय के अंतर से । प्रयोग—सुसरो कहीं बाहर किसी मुहिम पर थे कि पीछे अचानक कुछ आगे-पीछे, माता और भाई, दोनों का एक साथ देहान्त हो गया (पद्म पराग—पद्म० शर्मा, १९९)

(४) सहायक होना । प्रयोग—अकेली बहू घर में कैसे रहेगी, न कोई आगे न कोई पीछे (गोदान—प्रेमचंद, ३५३)

### आगे पीछे दोनों ओर चलना

एक मत पर स्थिर न रहना; दो तरह की बातें करना । प्रयोग—तेरा मिजाज आज तक मेरी समझ में न आया ।



तु आगे भी चलती है, पीछे भी चलती है (गोदान—प्रेमचंद, २६६)

### आगे (पांच) पैर न पड़ना

दुश्चिन्ता या भय से गति रुक जाना। प्रयोग—कोय भयन मुनि सकुचेउ राऊ भय बग घगहुइ परइ न पाऊ (राम० (अ)—तुलसी, ३९४)

### आगे बढ़ना

(१) प्रगति होना। प्रयोग—नये युग का घादमी है, इस नई दुनिया में वह काफी आगे बढ़ेगा (भूले०—भग० वर्मा, २६३)

(२) किसी कार्य को करने के लिये मुस्तैद होना।

### आगे लेना

आश्रय में लेना। प्रयोग—हरि घादर आगे लिया, ज्यु गउ बछ की लार (क० ग्रंथा०—कबीर, ६४)

### आगे से दूर होना

सामने से हट जाना। प्रयोग—ऊधो होउ आगे ते न्यारे (सू० सा०—सूर, ४१४५)

### आगे होकर लेना

सादर अभ्यर्चना करना, स्वागत करना। प्रयोग—आगे होइ जेहि सुरपति लेई (राम० (अ)—तुलसी, ४६३); देखत ही मुसकाइ उठी चलि—आगे ह्वै घादर के पुनि सीनो (मति० मक०—मतिराम, १२८)

### आगे होना

श्रेष्ठ होना। प्रयोग—संसार-प्रसिद्धि में भी बंगाली देश में आगे थे (चोटो०—निराला, १०)

### आजकल में

जल्दी ही। प्रयोग—आबू कालिह हरि घादहे, यह सपने की बात (सू० सा०—सूर, ३७०८); वे चेताये क्यों नहीं हैं चेतते जो चित्ता पर आजकल में बढ़ेगे (चुमलै०—हरिऔध, १६०)

आज्ञा कंधों पर रखना,—माथों पर रखना,—माथों पर लेना,—माथों मानना,—सिर पर मानना  
आदर पूर्वक आज्ञा पहना करना। प्रयोग—पिउ आण्मु माये पर लेऊँ। जो माये ने ने सिर देऊँ (पद०—जायसी, २७३४); आण्मु सिर पे मानि के, भावुर होइ कीन्हो

(सू० सा०—सूर, ३५५७); जोइ जोइ कहत, करति सोइ सोइ आण्मु माये मानि (सू० सा०—सूर, २६१८); मिर धरि घाय्मु करिअ तुम्हारा (राम० (बाल)—तुलसी, ८८); तिन्हहि जीति रन आनेमु बांधी। उठि मुत पितु अनुशासन बांधी (राम० (बाल)—तुलसी, १९०)

### आज्ञा माथे होना

आज्ञा मान-र स्वीकार होना। प्रयोग—पिता के आण्मु माये मोरे (पद०—जायसी, ३८)

### आज्ञा माथों पर रखना

दे० आज्ञा कंधों पर रखना

### आज्ञा माथों पर लेना

दे० आज्ञा कंधों पर रखना

### आज्ञा माथों मानना

दे० आज्ञा कंधों पर रखना

### आज्ञा सिर पर मानना

दे० आज्ञा कंधों पर रखना

### आज्ञा हाथों पर लेना

आज्ञा तुरंत पूरी करना। प्रयोग—आण्मु लिहें रहेहु निनि हाथा। सेवा करेहु लाइ भुई माथा (पद०—जायसी, ३२८)

### आटा-दाल का भाव बता देना

अच्छा सबक देना। प्रयोग—अधर घाप न आ जाते तो अभी और भी पिटाता, मैं इसे दाल आटे का भाव बता देनी (सू० सु०—सुदर्शन, १९९)

### आटा-दाल का भाव मालूम होना

(१) किसी काम की गुणता मालूम होनी। प्रयोग—मेरे दरजे में आजोगे लाता XX तब आटे-दाल का भाव मालूम होगा (मान० (१)—प्रेमचंद, ८३) (÷)

(२) होश ठिकाने करना। प्रयोग—आज मियां सलीम को आटे दाल का भाव मालूम हुआ (कर्म०—प्रेमचंद, ३१४-३१५); यहां तो सरकार इन लोगों को बचाये है नहीं तो इन्हें आटा दाल का भाव मालूम हो जाता (झूठा०—यशपाल, ४६४); देखिए प्रयोग (१) में (÷) भी

### आटा-दाल होना

बहुत आवश्यक दैनिक उपयोगी की वस्तु होना। प्रयोग—प्रेम ही उनके लिए आटा दाल है और प्रेम ही उनका सर्वस्व है (कुछ—प० पु० कव्ही, ६)



### आटे में नमक बराबर होना

(१) उचित मात्रा में होना। प्रयोग—भूठ बिन पीकी लगे अधिक भूठ दुब भोन। भूठ तितो ही बोलिये, ज्यों आटे में लोन (पुं० स०—पुं० द. १००); अब तो अच्छी फिलमें आटे में नमक के बराबर भी नहीं रह गई (दूधगाछ—दे० स०, १६३)

(२) बहुत कम। प्रयोग—सरकार स्थान-स्थान पर सहायता तो कर रही है, पर यह आटे में नमक से भी कम है (प्रह्ल०—दे० स०, ३१६)

### आठ-आठ आंसू रुलाना

बहुत दुःख देना। प्रयोग—जो बात घाठ-आठ आंसू रुलाती है वही किसी दिन बड़ा आनन्द उत्पन्न कर सकती है (गु० नि०—हा० मु० गु०, २३४)

### आठ-आठ आंसू रोना

बहुत अधिक रोना। प्रयोग—किसी ने छेड़ा तो छरखट पर जाके अपना मुँह सपेट के आठ-घाठ आंसू पड़ा रोता है (ईशा०—ईशा०, ९६); माताजी तुम्हारी चर्चा करके घाठ-घाठ आंसू रोती थीं (रंग० (२)—प्रेमचंद, २७३-२७४); हो चुके काठ गाँठ का खोकर रो चुके घाठ आठ आंसू हम (चुभले०—हरिऔध, ७७)

### आठ आना

आधा। प्रयोग—इनकी कुटिल कामना यही होगी कि उन्हें फौड कर लखनपुर के आठ आने अपने लड़कों के नाम लिखा करालें (प्रेमा०—प्रेमचंद, १४९)

### आठों पहर,—पहर चौंसठ घड़ी

हर समय। प्रयोग—घाठ जाम चौंसठ घरी तुअ निरखत रहे बीउ (क० प्रशा०—कबीर, २४९); और वह तुम्हारे साथी क्या हो गये, जो तुम्हें घाठों पहर पेरे रहते थे (मान० (१)—प्रेमचंद, ४०)

### आठों पहर चौंसठ घड़ी

दे० आठों पहर

### आड़ देना

(१) सहायता देना। प्रयोग—इस अवसर पर मुझे यह बहुमूल्य अनुभव हुआ कि जो लोग सेवा भाव रखते हैं और जो स्वार्थ सिद्धि को जीवन का लक्ष्य नहीं बताते, उनके परिवार को आड़ देने वालों की कमी नहीं रहती (मान० (१)—प्रेमचंद, ८९)

(२) आड़ करना।

### आड़ में

(१) बहाने से। प्रयोग—लेकिन मेरा कुछ ऐसा मत है कि भगवान की छाड़ में अपनी क्षमता और अपने वैभव का प्रदर्शन मनुष्य में सहस्रगुणता को जन्म देता है (भूले०—भग० वर्मा, १६८)

(२) आश्रय में।

### आड़ में खेल खेलना

किसी के बहाने घटना स्वाधे साधना। प्रयोग—म इतना गया बीता है कि सुरेश मेरी आड़ में खेल खेले और मैं समझ तक न पाऊँ ! (वौने०—रा० रा०, १४६)

### आड़ लेना

(१) बाधा-बंधन मानना, मर्यादा मानना। प्रयोग—लड़के वालों ही के लिए आदमी आड़ पकड़ता है। जब लड़का ही न रहा तो भला बिरादरी किस काम आवेगी ? (मान० (८)—प्रेमचंद, १४)

(२) सहारा लेना।

### आड़ होना

रसक के रूप में होना। प्रयोग—उनकी आड़ न होती तो पुलिस ने जब तक मुझे कब का लटका दिया होता (रंग० (१)—प्रेमचंद, २१८)

### आड़ा वक्त

बुरा समय। प्रयोग—पर साथ ही यह भी सुना था कि घाड़े वक्त पर उन्होंने रियासत की अनेक बार बहुमूल्य मदद की थी (गोली—चतुर०, १४२)

### आड़े हाथों लेना

खूब फटकारना। प्रयोग—एक दिन उसने मेहता को आड़े हाथों लिया (गोदान—प्रेमचंद, ३३४); तब किमुन उसे खूब आड़े हाथों लेता था (गोली—चतुर०, १८२)

### आत्म-सम्मान बेचना

अपने मान-अपमान की उपेक्षा करके स्वाधे साधना। प्रयोग—इस तरह किसी की गर्दन पर सवार होकर अपना आत्म-सम्मान बेच कर गये तो क्या गये ? (मान० (७)—प्रेमचंद, २२)

### आदमी पर आदमी गिरा पड़ना

बहुत भीड़ होनी। प्रयोग—गोबर हैरान था, इतने आदमी



नगर में कहां से जा गये ? आदमी पर आदमी गिरा पड़ता था (गोदान—प्रेमचंद, १४३)

### आदमी लगाना

मुप्तचर पीछे लगा देना । प्रयोग—जहां-जहां जाय, आदमी लगा रखो, देखो रहे, मालूम कर ले, असली कौन है (चोटी—निराला, ९४)

### आदर की चादर पड़ना

आदर होना, प्रतिष्ठा बनी रहनी । प्रयोग—सोचती हूं कि यदि सती विधवा होती तो मेरे बूढ़ापे पर चार के चादर की चादर तो पड़ी रहती, मेरे रूप के खण्डहरों पर दुनिया यों घृणा और उपेक्षा की खिल्ली तो न उड़ाती (सुहाग—अ० ना०, ३१)

### आदि अंत न पाना

पूर्ण जानकारी न होना । प्रयोग—आदि अंत कोउ जामु न पावा (राम० बाल—तुलसी, १३१)

### आधा तीतर आधा बटेर

(१) न इधर का न उधर का । प्रयोग—शंकर ने XX बहुत चाहा कि भारत फिर वैसा ही हो जाय जैसा वैदिक ऋषियों के समय में था किन्तु भारत उस तरह न होकर आधा तीतर आधा बटेर सा हो गया (सा० सु०—वा० मट्ट, ११६) ; या तो हिन्दुस्तानी रस्खिण या अंगरेजी । यह क्या कि आधा तीतर आधा बटेर (गबन—प्रेमचंद, ८२)  
(२) दो-रंगा ।

(३) दो-रंगी चालवाला ।

(समा० मुहा०—आधी मुर्गी आधी बटेर)

### आधी कौड़ी का

तुच्छ । प्रयोग—राम नाम ललित ललामु कियो लाखनि को, बड़ो कूर कायर कपूत कौड़ी आध को (कवि०—तुलसी, १४४)

### आधी बात कहना

(१) जरा सा डाटना । प्रयोग—वहां कोई आधी बात तो कहेगा नहीं, मैं इसका जिम्मा लेता हूं (मिखा०—कौशिक, ६१) ; जिसने कभी आधी बात नहीं कही, कभी तु करके नहीं पुकारा, वह मालिक अब उसे छोड़े बना जा रहा था (गबन—प्रेमचंद, १९७)  
(२) शिकायत करना । प्रयोग—बचारे को न अच्छा खाने को मिले, न पहनने को, फिर भी कभी मुंह से आधी बात नहीं निकालता (मा—कौशिक, १३०)

### आनन्द में पगना

खूब प्रानन्दित होना । प्रयोग—संभव तजि मन आनन्द पाग्यो (भा० ग्रंथा० (१) —भारतेन्दु, ६०७)

### आनन्द लूटना

मौज करना । प्रयोग—इसी बहाने से आप यहां आकर दो-चार दिन आनन्द लूटते (पद्म० के पत्र—पद्म०शर्मा, ३०)

### आन बोलना

दुहाई देना । प्रयोग—दरसन-दान दीजें भावते मुजान, रहे आशा लागि आन आन बोलत तिहारिये (घन० कवित्त—घना०, २२५)

### आना जाना

(१) जन्म-मृत्यु । प्रयोग—कहं कबीर जे आप विचारै, मिटि गया आवन जाना (क० ग्रंथा०—कबीर, ९०)  
(२) अनंतिक संबंध रखना (हि० श० सा०)

### आना पाई शुद्ध होना

एक दम ठीक होना । प्रयोग—X X हिसाब-किताब आना पाई शुद्ध रखना, बीजक और माल की रवानगी में ठीक समय का ख्याल रखना, ये बातें कुछ ऐसी भारी नहीं हैं कि चस्त और चालाक रोजगारियों में बहुत कदर के लायक हों (मट्ट नि०—वा० मट्ट, ४१)

### आप ही आप सा होना

बेजोड़ होना । प्रयोग—सब भाति मुजान न आन समान कहा कहौ आप ते आप लसे (घन० कवित्त—घना०, १२९)  
(समा० मुहा०—आप ही अपना जचाव होना)

### आपा खोना

(१) झंकार त्यागना, नञ्ज होना । प्रयोग—ऐसी बांगी बोलिये, मन का आपा खोइ (क० ग्रंथा०—कबीर, ५७)

(२) अपने ऊपर नियंत्रण न रख पाना । प्रयोग—वह जबान लड़ाती है तो मैं अपना आपा खो बैठता हूं (बूंद०—अ० ना०, ११३)

(३) अपना गौरव छोड़ना ।

### आपा खोलना

मन की सारी बातें वह डाखना । प्रयोग—पर उससे गहरे अनुभव व्यक्त करना भी दीवार से कहना मान उसने कभी अपना आपा नहीं खोला (सुहाग—अ० ना०, १२०)



### आपा दिखलाना

दर्शन देना या आत्म-दर्शन होना। प्रयोग—कै विरहसि कूर्मीच दे, कै आपा दिखलाइ। आठ पहर का दीभरणा मोरे सखा न जाइ (क० ग्रंथा०—कवीर, १०)

### आपा मेटना

अभिमान जाता रहना या छोड़ देना। प्रयोग—आपा मेट्यां हरि मिले, हरि मेट्यां सब जाइ (क० ग्रंथा०—कवीर, ६५)

(समा० मुहा०—आपा मिटना, —बिसरना या बिस्तरना)

### आपा सौंपना

अपनी सत्ता को भूलना, निरभिमान होना। प्रयोग—क्या सचमुच हम इनके हाव में समूचे राष्ट्र की सम्पत्ति उसी प्रकार छोड़ देने को तैयार हैं, जिस प्रकार भक्त अपना समूचा आपा जनार्दन को सौंप देता है? (अशोक०—ह० प्र० द्वि०, २८)

(समा० मुहा०—आपा तजना,—डालना)

### आपाधापी होना

अपनी-अपनी बिता होनी। प्रयोग—प्रायः साल भर तक रियासत में वही आपाधापी रही (रंग० (२)—प्रेमचंद, ६७)

(समा० मुहा०—आपाधापी पड़ना)

### आपे में न रहना या होना

बेकाबू होना—बदहवास होना। प्रयोग—इसलिये जब एक दिव प्रेमा के पिता उनके पास पहुंचे और केराव से प्रेमा के विवाह का प्रस्ताव किया तो बड़े पंडित जी अपने आपे में न रह सके (मान० (१)—प्रेमचंद, २२९)

### आपे से बाहर होना

क्रोध या हर्ष के आवेश में सुषुब्ध होना, उद्विग्न होना। प्रयोग—मेरी बुद्धि ऐसी प्रकृता रही है कि मैं अपने आपे से बाहर हुमा जाता हूं (मा०ग्रंथा० (१)—भारतेन्दु, ५५१) नीकर ने बिस्तर लगाने में जरा भी देर की X X साइकिल अच्छी तरह साफ नहीं हुई, तो वह आपे से बाहर हो जाता (मान० (१)—प्रेमचंद, १०४); व्यास की इस चोट से सृजला लगभग आपे से बाहर हो तड़प उठी (ज्ञान०—यशपाल, ५३)

(समा० मुहा०—आपे से निकलना)

### आफत का परकाला

(१) प्रचंड या भयंकर मनुष्य। प्रयोग—हां, है तो वह ऐसी ही आफत की परकाला (रंग० (२)—प्रेमचंद, १८९)

(÷)

(२) बहुत खुराफाती। प्रयोग—देखिए प्रयोग (१) में (÷) भी

(३) कुशल, घोर उद्योगी।

(समा० मुहा०—आफत का टुकड़ा)

### आफत के बादल उमड़ना

बड़ी मुसीबत पड़नी। प्रयोग—इन पर चारों तरफ से आफत के बादल उमड़े चले आते हैं पर इन्हें कुछ खबर नहीं है (परीक्षा०—श्री० दास, १४६)

### आव जाना

(१) प्रतिष्ठा नष्ट हो जानी। प्रयोग—जब गया आव गालियां बक बक तब रहे क्या गुलाब से मुलते (चोखे०—हरिऔध, ८९)

(२) चमक नष्ट हो जानी।

(समा० मुहा०—आव बिगड़ना)

### आव होना

इज्जत होना। प्रयोग—इन्सान की आव तभी तक है, जब तक कि आवरू है (मा—कौशिक, ३३३)

(२) रौनक होनी।

### आवरू पर आ बनना

आवरू सतरे में होनी। प्रयोग—जब किसी की आवरू पर आ बनी किसलिये आंमू भला तब तुम बहे (बोल०—हरिऔध, ६३)

### आवरू पर पानी फिरना

इज्जत नष्ट हो जानी। प्रयोग—मेरी तो आवरू पर पानी फिरा जा रहा है (मा—कौशिक, २४८)

(समा० मुहा०—आवरू मिट जाना)

### आवरू में बट्टा लगना

पूर्व प्रतिष्ठा में दाग लगना। प्रयोग—मैं नहीं चाहता कि मेरी वजह से आपकी आवरू में बट्टा लगे (मान० (२)—प्रेमचंद, २१३)

(समा० मुहा०—आवरू में फरक आना)



**आवक लटना**

वेड़भूत होना । प्रयोग—बले किसलिये कभी तब वह, आवक गई अगर लूटी (मर्म०—हरिऔध, ७७)

**आम खाने से काम होना गुठली गिनने से नहीं**  
सार से मतलब होना । प्रयोग—इस पितृभक्त और पितृतुल्य कवि का नाम क्या था इस पर पुराने विद्वानों ने लक्ष्य नहीं दिया । उन्हें आम खाने से काम था, गुठलियाँ गिनने से नहीं (गुलेरी प्रश्न (१)—गुलेरी, २१९)

**आमदनी टूटना**

आमदनी कम होनी । प्रयोग—आमदनी एकदम टूटने लगी (कल्याणी—जैनेन्द्र, ३३)

**आयु खुटाना,—तुलाना**

आयु कम होनी, मोत निकट होनी । प्रयोग—जब जानि होइ अधीर, कंस की आयुतुलानी (सू० सा०—सूर, ३७०५); जेहि मुभाय चित्तवाहि हितु जानी । सो जानइ जनु आइ खुटानी (राम० (बाल)—तुलसी, २७५)

(समा० मुहा०—आयु सिराना)

**आयु तुलाना**

दे० आयु खुटाना

**आये दिन**

प्रायः । प्रयोग—आये दिन स्त्री-पुरुष में जूते चलते रहते हैं (मान० (२)—प्रेमचंद, ११३); आये दिन ये जमीनें मुसलमानों की (चोटी०—निराला, १७)

**आरती उतारना,—करना**

सत्कार करना । प्रयोग—मुफलक मुत की कहो मानिहँ आरति करिहँ गोपी (भ्र० सा०—सूर, ३९९); एक की तो है उतरती आरती दूसरे का है उतर जाता गला (चोखे—हरिऔध, १९९)

**आरती करना**

दे० आरती उतारना

**आल्हा गाना**

अपना दुख-मुख सुनाना । प्रयोग—वह घंटों तक लखन-पुर वालों की उद्दण्डता और दुर्जनता का आल्हा गाते रहे (प्रेमा०—प्रेमचंद, ३९४)

**आवाज उठाना**

(१) चर्चा करनी । प्रयोग—ब्रह्मपुत्र का इतिहास तो लोगों को मालूम नहीं था X X अनुलने ही इसके लिए सबसे पहले आवाज उठाई थी (ब्रह्म०—दे० स०, ३५०)

(२) किसी बात के विरोध में बोलना ।

(३) मांग उपस्थित करना ।

(४) (गाने में) स्वर ऊँचा करना ।

**आवाज ऊँचे चढ़ाना**

जोर में बोलना । प्रयोग—“मैं उनसे मिल कर रहूँगा, तुम मुझे रोक नहीं सकते”—आवाज को कुछ ऊँचा चढ़ाते हुए मैंने कहा (जह्ज०—३० जोशी, ६१)

(समा० मुहा०—आवाज ऊँची करना)

**आवाज कसना**

व्यंग्य मारना । प्रयोग—कुछ लोगों ने उसे देख कर आवाजें कसी (भूले०—भग०वर्मा, ५०२); धापाका नाम ले-ले कर आवाजें कसते हैं (झांसी०—व० वर्मा, ५१); जब वह धनी आवादी में पहुँची, तो शोहदों ने उस पर इधर-उधर से आवाजें कसने शुरू किये (रंग० (१)—प्रेमचंद, ५२)

**आवाज गिरना**

स्वर मंद पड़ना । प्रयोग—“समझ कर कहो, चाहिए या नहीं?” “चाहिए”—आवाज गिर गई (चोटी०—निराला, ५४)

**आवाज देना,—लगाना**

जोर से पुकारना । प्रयोग—मुझे यह अच्छा नहीं लगता कि ज़रा सी बातों के लिये नौकरों को आवाज देता किन् (मान०—(२) प्रेमचंद, २११); ऊपर से वह विमल बाबू की पूरी सेवा करता और भट लड़के को आवाज लगा कर बहता... (कठ०—दे० स०, २११) मास्टर जी को पूर्ण विश्वास था कि कट्टो जायेगी नहीं, आ जायगी, इसी से दो-तीन-चार आवाजें दी (परस—जैनेन्द्र, १७)

(समा० मुहा०—आवाज मारना)

**आवाज भारी होना**

आवाजिरेक के कारण गला भर आना । प्रयोग—हाथ कापता, हृदय धड़कता है मेरी भारी आवाज (मुकुल—सू० कु० चौ०, ७१)

**आवाज लगाना**

दे० आवाज देना



### आशा की रेख न होना

तनिक भी आशा न होनी। प्रयोग—बिछुरे तत फिर सहज समाना, रेख रही नहीं आसा (क० ग्रंथा०—कबीर, १०२)

### आशा टूटना

निराश होना। प्रयोग—ओ वे आते न बज बरसों, टूट जाती न आशा (प्रि०—हरिऔध, २०१)

### आशा तोड़ना

(१) निराश करना। प्रयोग—जियत धारि जिय धीर, मो आसा जिन तोरिए (राधा० ग्रंथा०—राधा० दास, ७७२)  
(२) आशा न लगाना।

### आशा पर तुषारापात होना,—पानी फिरना या फेरना

आशा पूरी न होना। प्रयोग—बीज गुप्त की आशा पर तुषारापात हुआ, उसका प्रकृत मुख मूरमा गया (चित्र०—भग० वर्मा, ११); आशा थी, तुमलोग बुझाये में मेरा पालन करोगे। तुमने उस आशा पर पानी फेर दिया (मान० (१)—प्रेमचंद, २६०)

(समा० मुहा०—आशा पर पानी पड़ जाना)

### आशा पर पानी फिरना या फेरना

#### दे० आशा पर तुषारापात होना

### आशा बंधना या बांधना

आशा होनी या करनी। प्रयोग—एक महात्मा मिले हैं, उनसे आशा बंध रही है (चोटो०—निराला, १५१)

### आशा बंधाना

आशा दिलाना। प्रयोग—इस प्रकार चारों ओर से हिन्दी की उन्नति के लिये जो प्रयत्न हो रहा है वह बहुत कुछ आशा बंधाने वाला है (पद्मपराग—पद्म० शर्मा, ३१५)

### आशा हरी होना

पुनः आशा होनी। प्रयोग—तू अब फिर बही निर्भय, मुड़वीर साहसी जसवंत सिंह है; ×× जिसके मुह की धोर देख कर मेरी मुरझाई हुई आशाएं हरी हो जाती हैं (सु० सु०—सुदर्शन, ३१६)

### आसन जमाना

(१) किसी एक जगह पर जम कर रहना। प्रयोग—मालूम होता है पण्डित पद्मसिंह शर्मा सम्मेलन के साथ

खिचे फिरते हैं, क्योंकि ×× गत वर्ष देहरादून सम्मेलन के समय वह ज्वालापुर में जम कर बैठे थे और जबके आगरे में आसन जमा है (पद्म० के पत्र—पद्म० शर्मा, ३); मगर जगो को रमा का आसन जमाना अच्छा नहीं लगता (गदन—प्रेमचंद, १५७)

(२) स्थायी घर होना।

(समा० मुहा०—आसन जोड़ना)

### आसन डिगना,—डोलना,—हिलना

(१) जाना, जाने को उद्यत होना, बैठने में स्थिर भाव न रहना। प्रयोग—जिस समय कोई कलावंत पक्का गाना गाने के लिए घाठ अंगुल मुंह फैलाता है और “आ-आ” करके विकल होता है उस समय बड़े-बड़े धोरों का धैर्य छूट जाता है—दिन-दिन भर चुपचाप बैठे रहनेवाले बड़े-बड़े आलसियों का आसन डिग जाता है (चिंता० (१)—शुक्ल, २५); आखिर लालाजी का आसन हिलता देखकर उसने तसल्ली की सांस ली (शेखर (२)—अज्ञेय, १५४)

(२) लालच होनी। प्रयोग—ऐसी स्थितिमें संयमी पुष्क का आसन भी डोल जाता, रमा तो विलासी था (गदन—प्रेमचंद, २८८)

(३) आतंकित होना। प्रयोग—बेदखली शुरू हुई तो बहुतेरे के आसन डोल जायेंगे (कर्म०—प्रेमचंद, ३२०)

(४) स्थिति डाँबाडोल होनी। प्रयोग—कबीर सूता क्या करे, सूता होइ अकाज। ब्रह्मा का आसन विस्था, मुण्डत काल की गाज (क० ग्रंथा०—कबीर, ६); उसको अपने सहकर्मियों पर, साथियों पर इतना विदवास था कि कुबेर सिंह का आसन डोल जाता बार बार (परतो०—रेणु, ४७९)

(५) प्रेरणा होना।

### आसन डोलना

#### दे० आसन डिगना

### आसन देना

सम्मान से बैठाना। प्रयोग—सनमुख मंदार आसनु दीन्हा (राम० (बाल)—तुलसी, ७३); आगत देखि लिये उठि धामें हूँ, आपुहीं (कैतव) आसन दीनो (केशव० (१)—केशव, १७)



### आसन पहचानना

(१) किसी के स्वर को ताड़ लेना । प्रयोग—जगधर ने आसन पहचाना, इसी डंग की दो-चार बातें और की । आखिर ठाकुरदास गवाही देने में इन्कार करने लगा (रंग० (२)—प्रेमचंद, १२१-१२२)

(२) बैठने के डंग से चुड़चुड़ार को पहचान लेना ।

### आसन मांडना,—मारना

आसन लमा कर बैठना । प्रयोग—त्रिकुट कोट में आसन मारें, सहज समाधि विधि सब छाड़ें (क० ग्रंथा०—कबीर, १५५); मड़ मंडप बहुत पास सवारें । जवा तपा सब आसन मारे (पट०—जायसी, २१६); आगे ये समाचार पाय अर्जुन सन्यासी का भेष बनाय एक भली सी ठौर देख मृगछाया बिछाय आसन मार बंठा (प्रेम सा०—ल० ला०, ३३५)

### आसन मारना

दे० आसन मांडना

### आसन हिलना

दे० आसन डिंगना

### आसमान के तारे तोड़ना

दुष्कर कार्य करने का प्रयास करना । प्रयोग—है तारे तोड़ता गगन के दिवि को आल दिखता है (मर्म०—हरिऔध, १३३)

### आसमान खुलना

वर्षा के बाद बादलोंका छटना, कृष्टि बंद होना । प्रयोग—बहुत दिनों बाद खुला आसमान (अना०—निराला, १३८)

### आसमान चढ़ना

(१) ऊपर उठना । प्रयोग—गगन चढ़े रज पवन प्रमगा (राम० (बाल)—तुलसी, १२)

(२) गर्व होना ।

### आसमान तक के अरमान

बड़े-बड़े अरमान । प्रयोग—घरमान आसमान तक के ये मगर जमीन का शिकजा उन्हें निचोड़ कर धूल में मिलाये देता था (बोने०—रा० रा०, १५५)

### आसमान दिखा देना

कुश्ती में परास्त कर देना । प्रयोग—गुरु, दो मिनट के अंदर ही आसमान दिखा दूँ इसे, उस्ताद बुद्धू सिंह पहल-

वान था शिष्य हूँ (मूले०—भग० वर्मा, १६४) चंद्रिका कुल्फी को देख-देख कर आजमा रहा था कि एक भगट होने पर आसमान दिखा सकेगा या नहीं (कुझी०—निराला, ४५)

(समा० मुहा०—आसमान तफा देना)

### आसमान पर (में) उड़ना

(१) गकर करना । प्रयोग—जो रहे आसमान पर उड़ते आज उनके कतर गये हैं पर (चुमते०—हरिऔध, १९)(ः)

(२) चलाना में डूबे रहना । प्रयोग—घब पहाँ आकर में साफ-साफ देख रहा हूँ कि आप लोग आसमान में उड़ रहे हैं धीरे जमीन पर उतरना ही नहीं चाहते (कठ०—दे० स०, ८५) देखिए प्रयोग (१) में (ः) भी

(३) बहुत ऊँचे संकल्प करना ।

### आसमान पर चढ़ना

(१) ऊपर उठना । प्रयोग—क्यों भला आसमान पर न चढ़ें जब पतंगें चढ़ी चढ़ाने से (चुमते०—हरिऔध, १००)

(२) गकर करना, घमंड दिखाना ।

### आसमान पर चढ़ाना

(१) बहुत बड़ा देना । प्रयोग—उनकी सुशामरी ने उसकी अहम्मन्यता को आसमान पर चढ़ा दिया था (मान० (१)—प्रेमचंद, १८५)

(२) भूठी प्रशंसा करके गर्व पैदा करना । प्रयोग—मदनमोहन को लोगों ने आसमान पर चढ़ा रक्खा था (परीक्षा०—श्री० दास, १२४-१२५); लोभियों, स्वाधियों और सुशामदियों ने उसका गला दबाकर कहीं अपानों की—आसमान पर चढ़ानेवाली स्तुति कराई है, कहीं ब्रह्म न देने वालों की निराधार निंदा (चिंता० (१)—शुक्ल, १८५)

(३) बहुत प्रशंसा करना ।

### आसमान फाड़े डालना

बहुत शोर करना या होना । प्रयोग—कुल्फी की स्त्री चिल्ला-चिल्ला कर आसमान फाड़ रही है—मुना करता था (कुझी०—निराला, १३९)

### आसमान सिर पर उठाना

(१) शोर मचाना, उपद्रव मचाना । प्रयोग—औरतों ने रो-रो कर आसमान को माथे पर उठा लिया (बल०—नागा०, १४२); जरा देरको लाना नहीं मिलता तो ये आसमान सिर पर उठा लेते हैं (धूम०—उ० मं०, ६०)

(२) खूब आन्दोलन करना ।



### आसमान सूझना

घबराहट होनी, होश दुस्त होना । प्रयोग—तजमनिया को भी जब आसमान सूझने लगा है । बड़े हवेली की पटरानी बनने घाई की (परती०—रेणु, ४२४)

### आसमान से ऊँचा होना,—बातें करना

बहुत ऊँचा होना । प्रयोग—तेतलन घाई बेवान पहुँचा । मन तो अधिक गहन मौ ऊँचा (पद०—जायसी, ४६१); बड़ा विशाल, आसमान से बातें करने वाला भवन था (कर्म०—प्रेमचंद, २४५)

### (समा० मुहा०—आसमान से टकर लेना)

### आसमान से गिरना,—ज़मीन पर आ जाना

(१) सन्न रह जाना । प्रयोग—यह मुनकर राजा माहब तो जैसे आसमान से गिर पड़े (भूले०—भग० ठम्रा, २३५); महिपाल आसमान से ज़मीन पर आ गिरा (बूँद०—अ० ना०, १९३)

(२) अत्यन्त लज्जा का अनुभव करना ।

(३) मान मर्यादा नष्ट होना ।

### आसमान से ज़मीन पर आ जाना

### दे० आसमान से गिरना

### आसमान से बातें करना

### दे० आसमान से ऊँचा होना

### आस्तीन का साँप

छिपा हुआ दुश्मन, वह व्यक्ति जो मित होकर शत्रुता करे । प्रयोग—क्यों न उगलें भला जहर दिन-रात, क्या करें आस्तीन के हैं साँप (मर्म०—हरिऔध, ९८); कोन जाने चौबीदार भी वन्हीं से मिल गया हो, खिदमतगार भी आस्तीन के साँप हो गये हों (मान० (२)—प्रेमचन्द, २६)

### आस्तीन में साँप पालना

किसी छिपे हुए दुश्मन को आश्रय देना । प्रयोग—भला

सालिगराम आस्तीनमें साँप पालेगा ? (बूँद०—अ० ना०, ५०)

### आह खींचना

दुख भरी साँस लेना । प्रयोग—बेतरह है जाति का खिचता लहू । आह हमने आज भी सीबी नहीं (चुमते०—हरिऔध, ६३)

### आह पड़ना

शाप पड़ना, किसी को दुख पहुँचाने का फल मिलना । प्रयोग—आज मुझ पर कितने बेकसों की आहें पड़ रही हैं (रंग० (२)—प्रेमचंद, २०५); मार पड़ती रही किसी पर जब आह कंने न तब भला पड़ती (बोल०—हरिऔध, ११७) (समा० मुहा०—आह लगना)

### आह भरना,—मारना

वेदना प्रगट करना, ठंडी साँस खींचना । प्रयोग—आहें भर-भर कर वह क्यों बहु दुख-भूले पर भूले (मर्म०—हरिऔध, २); लोग हैं बेमौत लाखों मर रहे हम नहीं हैं आह तब भी मारते (चुमते०—हरिऔध, ६३); रद रूप से सब डरते हैं देव देव भरते हैं आह (अना०—निराला, ११०)

### आह मारना

### दे० आह भरना

### आह लेना

किसी सताये हुए आदमी का शाप लेना । प्रयोग—बेतरह तो दिल मसल देवें नहीं आह भूले भी किसी की हम न लें (बोल०—हरिऔध, ११७)

### आहट लेना

(१) चुपके चुपके पता लगाना । प्रयोग—कालेज से सौटकर बाहर से आकर ने आहट ली । प्रेमकुमार प्रसन्न थे (लिली—निराला, १२३-१२४)

(२) किसी के जाने की टोह लेने के लिए कान लगाए बैठना ।



## ६—६

### इन्द्रिय मारना

इन्द्रियो को बध में रखना । प्रयोग—पद्मासन सब डार  
रोकि इन्द्रिय को मार (नंद० ग्रंथा०—नंद, १५५)

(समा० मुहा०—इन्द्रिय कसना)

### इक्कीस बिस्वे होना

तुलनात्मक दृष्टि से कुछ बड़ कर होना । प्रयोग—  
हमारी पतित समाज की नीचे को गिरने की भुकावट आगे  
सब इक्कीस बिस्वे है, उन्नीस नहीं हुई (महु० नि०—वा०  
महु, १०९)

(समा० मुहा०—इक्कीस होना)

### इच्छा दवाना

मन में हुई इच्छा को रोकना । प्रयोग—इच्छाओं को  
दवाना उचित नहीं, इच्छाओं को तुम उत्पन्न ही न होने  
दो (चित्र०—मग० वर्मा, २०)

### इज्जत उतारना

मर्यादा नष्ट करना । प्रयोग—आपने मेरी इज्जत उतारने  
के लिए मुझे यहाँ बुलाया था (मोर०—जग० माधुर,  
१२०)

(समा० मुहा०—इज्जत लेना)

इज्जत खाक में मिला देना,—धूल में मिला देना,  
—मिट्टी में मिला देना,—में बट्टा लगाना

इज्जत एकदम नष्ट कर देना, नाम पर कलक लगाना ।  
प्रयोग—× × ने मेरे ऊपर नालिश कर देने और मेरी  
इज्जत धूल में मिल जायगी (परीक्षा०—श्री० दास, ८९);  
मैं जानता हूँ कि आप को अपने कारण किसी गरीब की  
इज्जत में बट्टा लगाना हरगिज मंजूर न होगा (परीक्षा०—

श्री० दास, ९०); वह क्यों चौपरी से लड़ी ? क्यों उसकी  
इज्जत मिट्टी में मिला दी ? (गोदान—प्रेमचंद, ३१); घर में  
अपने किसी नातेदार से मिलने जाऊँ तो आप  
की इज्जत में बट्टा लगता है (मान० (४)—प्रेमचंद, ४८);  
आज इन गोरों ने मेरे बुजुर्गों की इज्जत खाक में मिला दी  
(झांसी०—वृ० वर्मा, १९७); उसकी बोली में जरा भी हेर-  
फेर हुआ कि महदेव की इज्जत धूल में मिल जायेगी  
(मैला०—रेणु, १३८); वह हमारे पड़ोसी की इज्जत धूल  
में मिलाने की धमकी दे रहा था (ये कोठे०—श्री० ना० २७)

(समा० मुहा०—इज्जत दो कौड़ी की करना,—पर  
पानी फेरना,—मिट्टी कर देना)

इज्जत धूल में मिला देना

दे० इज्जत खाक में मिला देना

इज्जत पर आंच आना

वेइज्जत होना । प्रयोग—मेरी जान भले ही चली जाए पर  
मेरी लड़की की इज्जत पर आंच न घाने पाए (गोली—  
चतुर०, ३०९)

इज्जत पर हाथ डालना

वेइज्जत करना । प्रयोग—घोरी से तो पुलिस को मौका  
मिलता है कि जांगलियों की इज्जत पर हाथ डाले (कठ०  
—दे० स०, २७०)

इज्जत बेचना

स्त्री का पर-पुरुष से समागम करना । प्रयोग—बल्कि व  
तो उसकी इज्जत भी बेच देना चाहते थे (वीने०—रा० रा०,  
२०६)

इज्जत मिट्टी में मिला देना

दे० इज्जत खाक में मिला देना



### इज्जत में बट्टा लगाना

नाम पर कलक लगाना । प्रयोग—धामदनी की कमी और दूसरे कारणों से कुछ उर्ध्व घसचारी को अमीरों की सुशामद के गौत माने पड़ते थे और कितने ही ऐसे काम करने पड़ते थे जिनसे घसचारी को इज्जत में बट्टा लगता है (गु० नि०—वा० मु० गु०, २८६); बाहू मेरी इज्जत में बट्टा लगा जा रहा है और आप कहती है कोई मुकदमा नहीं है ? (मान० १)—प्रेमचन्द, २७८)

### इज्जत में बट्टा लगाना

दे० इज्जत खाक में मिला देना

### इज्जत लुटाना

(१) ऐसा काम करना जिससे इज्जत खराब हो । प्रयोग—उस मुद्र की क्या, घर की इज्जत लुटा दी उसने (बौने०—रा० रा०, २७)

(२) अपमान होना ।

### इज्जत लेना

वेइज्जत करना । प्रयोग—मजदूरों का चिट्ठा एक महीने से नहीं बटा इस लिए वह मेरी इज्जत लिया चाहते हैं (परीक्षा०—श्री०दास, ९६)

### इतना बड़ा मुंह रहजाना या हो जाना

लज्जित होजाना । प्रयोग—मिल गया सारा बड़प्पन धूल में आज तो इतना बड़ा मुंह हो गया (बोल०—हरिऔध, ८५)

### इत्ते-पित्ते जलना

कुड़ जाना, कोपित हो जाना । प्रयोग—पेरियनायकी के इत्ते पित्ते जल उठे (सुहाग०—अ० ना०, ६५)

### इधर उधर भांकना

कतराना, उत्तर देने को बहाना ढूँढना । प्रयोग—मुनीम जी इधर उधर भांकने लगे (मारती०—रा० रा०, ५७)

### इधर कुआँ उधर बावड़ो

दोनों ओर विपत्ति होनी । प्रयोग—घटल बोला—इधर कुआँ है तो बावड़ो उधर फाँदता है तो कुआँ है (मुग०—वृ० वर्मा, २८४)

(समा० मुहा०—इधर कुआँ उधर खाई होना)

### इन्हीं पावों लौटना

अविलम्ब लौट जाना । प्रयोग—घरर अपनी कुशल चाहते हो, तो इन्हीं पैरों जहाँ से आये हो वहाँ लौट जाओ, उसके

सामने जाकर क्यों अपना पानी उतरवाओगे (गवन—प्रेमचन्द, २७६)

### दे० इसी पांव लौटना भी

(समा० मुहा०—इन्हीं पावों जाना)

### इशारों का गुलाम

इच्छानुसार चलने वाला । प्रयोग—सारा मुहल्ला उसके इशारों का गुलाम है (रंग० १)—प्रेमचन्द, २२३)

(समा० मुहा०—इशारों की दासी)

### इशारों पर नचाना

अपनी इच्छानुसार सब काम करवा लेना । प्रयोग—उन्हें जापद यह चिन्तित हो गया था कि उनकी कागडोर उस स्त्री के हाथ में है, जो पाटलिपुत्र के बड़े में बड़े सामंतों को सकेत पर नचा सकती है (चित्र०—भग० वर्मा, ६९)

### इशारों पर नाचना

दूसरों के कहे अनुसार सब काम करना । प्रयोग—वह घर का सारा काम करती, इशारों पर नाचती XX पर न जाने क्यों चाचा और चाची दोनों उससे जलते रहते थे (मान० १)—प्रेमचन्द, २०३)

### इश्क लड़ाना

प्रेम करना । प्रयोग—तो तुम जिम्मेदारी के नाम पर अपनी तमाम मासुकाओं से इश्क लड़ाओगे (बूँद०—अ०ना०, ५१२)

### इस कोठे का धान उस कोठे में करना

व्यर्थ का काम करना । प्रयोग—घोर हिन्दू, हिन्दू है बूज-दिल, खास तौर से ब्राह्मण, ठाकुर बनिया बेचारा क्या करे, इस कोठे का धान उस कोठे करे, उसे फुसंत नहीं उसके लिए ये सब समझ से बाहर की बातें हैं क्योंकि रुपए पैसे की नहीं (कुल्ली०—निराला, १०९)

### इस कोठे का धान उस कोठे जाना या होना

केवल स्थानांतरित होना । प्रयोग—जमादार मित्र इस कोठे का धान उस कोठे गया है । दबा जाओ (चोटी०—निराला, ११९)

### इसी पांव लौटना

तुरंत लौटना । प्रयोग—अर्वाहि गर्द, आई इनि पादनि, लं गयो को करि चोरो (सु० सा०—सूर, ९०३)

### ईंट का जवाब पत्थर से

अपमान या बुराई का कड़ा जवाब देना या बदला लेना । प्रयोग—मैं तो यह सब व्यवहार नहीं जानता । यहाँ तो ईंट



का जवाब पत्थरसे देना सीखा है (रंग० (२) प्रेमचन्द, २२५); ईंट का जवाब हमें पत्थर से देना है, तुकों को तुर्की में, घुसे से खप्पड़ का (परि०—निराला, २३१)

### ईंट से ईंट बजना या बजाना

(१) किसी नगर या घर को ध्वंस करना। प्रयोग—रानी साहब कुछ रिपायत कर देंगी नहीं तो हवेली की ईंट से ईंट बजा दूंगा (झांसी०—व० वर्मा, २८८); × × उस भीषण प्रतिहिंसा में तेरे प्रसाद की ईंटें बजने लगेंगी (देवकी०—रा० रा०, ७६-७७); उनको सूचना न हुई तो दुश्मन किले की ईंट से ईंट बजा देगा (सु० सु०—सुदर्शन, २८)

(२) गहरा मुकाबला करना। प्रयोग—तुम बुद्धिबल हो तो क्या, हम ईंट से ईंट बजाकर रख देंगे इस ब्रिटिश हुकूमत की (भूले०—भाग० वर्मा, ५०३)

(३) लड़ाई करवाना।

### ईद का चांद होना

बहुत कम दिखलाई पड़ना, कभी कभी दिखलाई पड़ जाना। प्रयोग—तारा जी तो ईद का चांद हो गयी है (झुठा० (२) —यशपाल, ४८२)

### ईद मनाना

आनंद, उत्सव मनाना। प्रयोग—गढ़े मसिना दुनियां सारी ईद मनाती मधुशाला (मधु०—दक्कन, पट २५)

### ईमान का खून करना

बेइमानी करना। प्रयोग—जाप इसकी कैसे आशा रखते हैं कि मेरे कहने से वह अपने ईमान का खून करने पर तैयार हो जायेंगे (प्रेमा०—प्रेमचन्द, २६)

### ईमान का पैसा खाना

ईमानदारी से जीविका चलाना। प्रयोग—हम ईमान का पैसा खाते हैं (शेखर (१)—अज्ञेय, ६३)

### ईर्ष्या से जलना,—फुंकना

बहुत ईर्ष्या करना। प्रयोग—सिंगार सिंह को जब से दया कृष्ण के इस प्रेमाभिनय की सूचना मिली है, वह उसके खून का प्यासा हो गया है। ईर्ष्याग्नि से फुका जा रहा है (मान० (७)—प्रेमचन्द, ४४); हां बेठा लोगों की तो आहत होती है ईर्ष्या से जलते हैं (शेखर (२)—अज्ञेय, १५३)

### ईर्ष्या से फुंकना

दे० ईर्ष्या से जलना

## उ

### उंगलियों पर आ जाना

बहुत निकट होना। प्रयोग—महिपाल के घर भांजी के विवाह के दिन भी उंगलियों पर आ गये थे (दूद०—अ०ना०, ५७६)

### उंगलियों पर गिन गिन कर दिन काटना

बहुत धानुरता पूर्वक प्रतीक्षा करना। प्रयोग—कैगरी सिंह चला गया और मैं उंगली पर गिन-गिन कर दिन काटने लगी (गोली—चतुर०, ३१५)

### उंगलियों पर दिन गिनना

(१) किसी प्रकार दिन काटना। प्रयोग—दिन फिरंगे या फिरंगे ही नहीं। अब दिन है उंगलियों पर गिन रहे (चुमते०—हरिऔध, ३)

(२) प्रतीक्षा करना।

### उंगलियों पर नचाना

बश में कर रखना, जैसे चाहें बैसा करना। प्रयोग—बाइ-मराय के ए० डी० सी० से उसकी दोस्ती है, गबनर की

बीबी से मिलती जुलती है, यहाँ के राजाओं और रईसों को उंगलियों पर नचाती है (भूले—भाग० वर्मा, ३८३) मैं चाहूँ तो मनुष्य को अपनी उंगलियों पर नचा सकती हूँ (ब्रह्म०—दे० स०, ३८); डाक्टरमं, नर्समं, कंफाउडरसं सबका मैं उंगलियों पर नचाता हूँ (रेशमों०—राम० वर्मा, १६२)

### उंगली उठाना

(१) कोई रुकावट या अड़ित होना। प्रयोग—जब ने मुना पर बिलकुल नहीं मुना। कोई प्रतिबंध नहीं किया। राज्य की घोर से उंगली तक उठने नहीं दी गई (मान० (३)—प्रेमचन्द, ९६-९७)

(२) निंदा होनी। प्रयोग—तो उठेंगी न उंगलियां कैसे जीव में की गई घगर उंगली (बोल०—हरिऔध, १५१); नारे शहर की उंगलियां उठेंगी, नगर तुम्हें इसकी क्या परवा (गबन—प्रेमचन्द, ११३)

(३) इशारा होना।

### उंगली उठाना



निदा या बदनामी करना या होना। प्रयोग—ऐसे ही बानक को काफी लोग जानते-पहचानते हैं। लोग उंगलियाँ उठाये तो अच्छा नहीं (झुठा०(१)—यशपाल, २०९); लोग उंगली क्यों उठायेगे न तब जब कि उंगली छालमें की जायगी (चोखे०—हरिऔध, १४)

(२) मारना (तनिक भी)।

### उंगली चमकाना

हाथ मटकाना। प्रयोग—जो न तलवार को सके चमका तो लगे उंगलियाँ न चमकाने (चुमते०—हरिऔध, ८८)

(समा० म्हा०—उंगली नचाना)

### उंगली दिखाना,—पसारना

निदा करना, दोष बतलाना। प्रयोग—हरि रंगी टुक दीडि पसारत ही अंगुरीन पसारन लोग लगे (केशव०—केशव, ९२) मगर इस उलट फेर के सम्बंध के लिए उनके पास ऐसी दलीलें थी कि कोई उंगली न दिखा सकता था (गोदान—प्रेमचंद, ९५); मुझको तो बात मटकती है उंगली दुनिया दिखाती है (नूर०—मक्त, ५४)

### उंगली न दुखना

तनिक भी कष्ट न होना। प्रयोग—जाय दुख तो जी हमारा जाय दुख देखिये उनकी न नह उंगली दुले (चोखे०—हरिऔध, १३६)

### उंगली पकड़ते पहुँचा पकड़ना

थोड़ा सहारा पाकर पूरा अधिकार जमाना। प्रयोग—श्वे विगुनी पहुँची गिलत घति ीनता दिलाइ। बलि बावन की खोनु मुनि को, बनि, तुम्हें पत्ताइ (विहारी राजा०—विहारी, १५९); कहाँ एती कतुराई, पड़ी घाय जदुराई, अंगुरी पकरि पहुँचा को पकरत हो (क० १०—सेनापति ४१); मूसवाई मिथिलेश नन्दिनी,—“प्रथम देवरानी, फिर भोत × × कहते हैं इसको हो—अंगुली पकड़ प्रकोष्ठ पकड़ लेना” (पंच०—गुप्त, ५३); लेकिन बेगम कादिर ने अंगुली पकड़ते पहुँचा पकड़ लिया (पैतरे—अटक, १११); लेकिन इतना तो सरकार जानते ही हैं कि लोग उंगली पकड़ते पकड़ते पहुँचा पकड़ लेते हैं (रंग० (१)—प्रेमचंद, १२८) यदि सबकी यह एक बारगी खुल जाय तो एक ओर छोटे मुँह से बड़ी-बड़ी बातें निकलने लगे × × उंगली का सहारा पानेवाले बाढ़ पकड़कर खींचने लगे × × (चिता० (१)—शुक्ल, ६५-६६)

### उंगली पर गिनते रात कटना

प्रतीक्षा करते करते ही रात बीत जानी। प्रयोग—जहाँ जहाँ दाम तहाँ मन धावे, अंगुरी गिनती रैनि बिहावे (क० ग्रंथा०—कवीर, १६९)

### उंगली पसारना

दे०—उंगली दिखाना

### उंगली में लहू लगाकर शहीद बनना

बिल्कुल नहीं या थोड़ा स्वाग करके बड़ा पश लेना। प्रयोग—धुलें, कायर रंगा हुआ नियार, राष्ट्रीयता का रम भरता है, उंगली में लहू लगाकर शहीदों में नाम लिखाना चाहता है (रंग० (२)—प्रेमचंद, २४६)

### उंगली रखना

दोष दिखाना। प्रयोग—× × द्विवेदी जी × × अपनी भाषा को ध्रुम रहित समझते हैं। उस पर किसीके उंगली रखने की गुंजाइश नहीं देखते (गु० नि०—वा०मु०गु०, ५०३)

### उखड़ जाना

(१) मुकाबला करने में असमर्थ हो जाना। प्रयोग—वे सामन्त उखड़ गए साम्राज्य डह गए और मदनोत्सव की धूम धाम भी मिट गई (अशोक०—ह० प्र० द्वि०, १३)  
(२) कुछ दम न रह जाना, प्रभाव नष्ट हो जाना। प्रयोग—उस वक्त से मुन्नी जान-का पासा जो पलटा तो फिर रामकली लाख कोविद करने पर भी जम ही नहीं सकी, बस उखड़ ही गई (जहाज०—इला० जोशी, १४१); जिसने महफिल का मूह समझ लिया वह तबायफ़ उखड़ नहीं सकती (यै कीर्ते०—अ० ना०, ११७)  
(३) रुक रुक कर सांस जाना।

### उखड़ना

(१) घनमना हो जाना। प्रयोग—सज्जन बहुत उखड़ा हुआ था (हुँद—अ० ना०, ४१८); क्यों मही तब जायगा कोई उखड़ बात हम उखड़ी हुई जब कहेंगे (चुमते०—हरिऔध, ३४)(+)  
(२) विचलित होना। प्रयोग—कबील ने इनमे सवाल किया पर सच्चे मवाह क्या उखड़ते (गश्न—प्रेमचंद, ३४१) देखिए प्रयोग (१) में (+) भी

### उखड़ी उखड़ी बातें करना

अव्यवस्थित सी बातें करना। प्रयोग—इस गृहस्थी की



विश्रुतलता के लिए वह अपने को अपराधी समझ रही थी। उसकी बातें उखड़ी-उखड़ी हो रही थी (तितली—प्रसाद, १५१); मैं जानता था। आपकी उखड़ी-उखड़ी सी बातें नाम देने से इन्कार करना। बगैरह, बगैरह (रेशमी—राम० वर्मा, १९१)

(२) उदासीनता या विरक्ति से बातें करना। प्रयोग—क्यों नहीं तब जायगा कोई उखड़ बात हम उखड़ी हुई जब कहेंगे (चुमते—हरिऔध, ३४)

### उखाड़ देना,—फेंकना

(१) परास्त कर देना—स्थिति प्रतिकूल बना देना। प्रयोग—अब तुम भी एक तकरीर कर डालो खन्ना, नहीं मेहता तुम्हें उखाड़ फेंकना (गोदान—प्रेमचंद, १६५); दूसरे दिन इफानि अली की जिरहों ने उन्हें बिल्कुल उखाड़ दिया (प्रेमा०—प्रेमचंद, ३९३)

(२) बिल्कुल नष्ट करना। प्रयोग—पुरातत्व की खोज में भी धर्म की तरह कुछ सिद्धान्त जम से जाते हैं, उन्हें उखाड़ने में देर लगती है (गुलेरी ग्रंथा०—गुलेरी, १५९)

### उखाड़ फेंकना

दे०—उखाड़ देना

### उगती तारिका

नयी अभिनेत्री। प्रयोग—इन्के अतिरिक्त हमीना बाई और नसीम बाई, दो उगती हुई संगीत तारिकाएँ अपनी भरी जवानी में ही अल्लाह को प्यारी हो गई (ये० कोठे०—अ० ना०, १०७)

### उगलना

कह डालना, बताना। प्रयोग—फिर क्या था, यह मुनते ही साधु-साहब प्लुत स्वर में हो ३ कहकर लगे अंगरेजी उगलने (पद्म पराग—पद्म० शर्मा, ११९)

### उगलवा लेना

अबरंती कहलवा लेना। प्रयोग—अब की जिस रोज श्याम बाबू आए उसी दिन उनसे सब उगलवा लूँगी (मा—कौशिक, २५२)

### उघड़ पड़ना

(१) वास्तविकता प्रगट हो जानी। प्रयोग—उपरि आए कान्ह कपट की शानि (सू० सा०—सूर, ४४७); उपरहि अंत

न होहि निबाह। कालनेमि जिमि रावन राहू (राम० बाल) तुलसी, १२)

(२) माफ या सच बात कह देना। प्रयोग—हम जातहि वह उपरि परंगी, दूध दूध, पानी सो पानी (सू० सा०—सूर, २३४१)

### उघर कर नाचना

लोक-लाज छोड़ कर मनमाना काम करना। प्रयोग—उघरि नचे हैं, लोक-लाज ते बचे हैं, पूरी चोपनि रचे हैं, मुदरस लोभी रावरे (घांघों के लिए) (घन० कवित्त—घना०, ६५)

### उछल-कूद करना

(१) बड़-बड़ कर बातें करनी। प्रयोग—तो उछल कूद क्या रहे करते जो किया छोड़ छल न देस भला (चुमते—हरिऔध, ३५)

(२) बहुत खुश होना।

### उछल-कूद दिखलाना

अभिमान की बातें करना। प्रयोग—किसी शुभ परिणाम पर दृष्टि रखकर निदान्तुति, मान-अपमान आदि की कुछ परवा न करके प्रचलित प्रथाओं का उल्लंघन करनेवाले वीर या उत्साही कहलाते हैं, यह देखकर बहुतसे लोग केवल इस विरद के लोभ में भी उछल कूद दिखाया करते हैं (चिता० (१)—सूक्ल, ८)

### उछल पड़ना या उछलना

एकाएक घावेश में आ जाना। प्रयोग—पहली जनवरी १९१२ के “पायोनियर” में नव-वर्ष की उपाधियाँ पानेवालों की सूची में अपना नाम देखकर लक्ष्मीचंद उछल पड़े (मूले०—भग० वर्मा, ३३०); बिमल बाबू तो सुनील से मिलकर उछल पड़े (कठ०—दे० स०, ४६); इसे सुन कर आप खुश होंगे × × आप उछल पड़ेंगे (सू० सु०—सुदर्शन, ३)

### उजड़ी कोख

निस्संतान, बध्वा। प्रयोग—मिल न इसकी सकी जड़ी कोई कोल उजड़ी उजाड़ देती है (बोल०—हरिऔध, २२५)

### उजली प्रकृति

भला व्यक्ति। प्रयोग—रहिमन उजरी प्रकृति को, नहीं नीच को संग। करिया वासन कर गहे, करिया लागत घग (रहीम कवि०—रहीम, २५)



### उजाला होना

- (१) उल्लसित होना, जानंद होना। प्रयोग—वह कुंवर उदेभान जिससे तुम्हारे घर का उजाला है इन दिनों में कुछ उसके घुरे तेवर घोर बेटोल जागें दिलाई देती है (हंशा०—ईशा०, ९६); तुम से ही इस घर में उजाला होगा (सुहाग०—अ० ना०, ९४)
- (२) प्रिय होना। प्रयोग—सुर बनी चोर जमुमति को उज्ज्वारो लाल चित को करत चैन बैनहि सुनाइ के (क० र०—सेनापति, १८)
- (३) सवेरा होना।

### उठ खड़ा होना

- (१) विरोध में खड़े होना। प्रयोग—मक्कारों को उठने दो पैरों से मैं कुचलूंगा (नूर०—भक्त, ९५)
- (२) समस्या प्रस्तुत होनी।
- (३) बीमारी के बाद स्वास्थ्य लाभ करना।
- (४) सामने आना।
- (५) चलने को तैयार होना।

### उठ जाना, उठना

- (१) किसी चलन या भाव का बढ़ या बहुत कम हो जाना। प्रयोग—भूषण भनत उठि गयो है धरा सों धर्म, उठियो सिंगार सर्व राजा राव राने को (भूषण ग्रंथा०—भूषण, २३९); एक किसान दूसरे के खेत पर न चढ़े, तो कोई जापा कंते करे, प्रेम तो संसार से उठ गया (गोदान—प्रेमचंद, २३) मैं भी हूँ सोचता जगत में कैसे उठे जिपिया (कुरु०—दिनकर, ३३)
- (२) मृत्यु होनी। प्रयोग—इस वाक्य से लेखक जी महाराज का मतलब तो यह है कि पण्डित बलदेव प्रसाद हिन्दी के अच्छे लेखक थे, वह उठ गये (गु० लि०—का० मु० गु०, ४४१); रामावतार जी घोर रघुवर दयाल जी का उठ जाना बहुत बुरी दुर्घटना है (पट्टम० के पत्र—पट्टम० शर्मा, १८५); तू नन्ही सी थी तभी पिताजी उठ गये (त्याग०—जेनेन्द्र, ३०); उठ जायेंगे जग से जीवन के पूरे दिन कर पायेंगे (मर्म०—हरिऔध, १३८)
- (३) खर्च हो जाना। प्रयोग—रघू—अभी तो तेलहन बिका था, क्या इतनी जल्दी रुपये उठ गए ? (मान० (१)—प्रेमचंद, ७); जो कुछ जोड़-बटोड़, काढ़-मसकर रुपये ले गया था, सब उठ गये (मेरे०—गुलाब०, २०)

(४) भाड़े पर लग जाना। प्रयोग—बाबा ओंकारनाथ बहुत चाहते हैं कि ये खेत उठ जायें, लेकिन गांव के लोग अब उन खेतों का नाम लेते डरते हैं (मान० (८)—प्रेमचंद, ७४)

(५) खेत में जुताई होना। प्रयोग—भूमि अभी थोड़ी सी ही उठ पाई है (सुग०—सू० वनी, ४३)

(६) उल्लसित करना, जागरित होना। प्रयोग—तब फिर यह देश उठ क्यों नहीं पाता ? (सुंद—अ० ना०, ४९३); निपुणिका का विवाह किसी कान्दविक वैश्य के साथ हुआ, जो भट्टभूजे से उठकर सेठ बना था (साण०—ह० प्र० द्वि०, ८)

(७) चोरी चला जाना। प्रयोग—नहीं बाबू साहब मैं यहाँ रुकना नहीं रखने दूंगा × × कहीं रुपये उठ जायें तो मैं बेगुनाह मारा जाऊँ। सुभोते का ताला भी तो नहीं है (गडन—प्रेमचंद, ९९)

(८) उद्योग में सलाह। प्रयोग—कम से कम ५० के मिट्टी के बर्तन उठ गये होंगे (प्रेना०—प्रेमचंद, २००)

### उठती उछ

युवावस्था का प्रारंभ। प्रयोग—उठति बयस, ममि भोजति, मलोंने मुठि, सोभा देखवैया बिनु बित ही बिकहे (गीता० (अ)—सुलसी, ३७)

(समा० मुहा०—उठती कौपल,—जवानी)

### उठते बंठते

हर स्थिति में, हर समय। प्रयोग—उठत बंठत मूलक लार्म मूलक परे रसोई (क० ग्रंथा०—कवीर, २८८); पांव भी रखें अहित पथ में न तो हित अगर कर दें न उठते बंठते (चोखे०—हरिऔध, १२३)

### उठना

दे० उठ जाना

### उठलू

जिसका कोई ठीर-ठिकाना या हक न हो। प्रयोग—इधर जमींदार दयाराम ने इन सब को उठलू और बाग को लावारिस साबित किया (जिल्ला—मिराला, ८३)

### उठा देना

(१) किराये पर देना। प्रयोग—यहाँ तक लीम ने लोगों को पेटा कि बजरंगी ने भी मकान का एक हिस्सा उठा दिया (रंग० (२)—प्रेमचंद, १५९)

(२) खर्च कर देना। प्रयोग—इस पर भी हमारे



हिन्दुस्तानी साहब के गिताने सपूत जी के पढ़ाने में भली बंगी रोकड़ उठा दी है (प्र० पी०—प्र० ना० मि०, १५९)

(३) स्थगित कर देना ।

(४) समाप्त कर देना ।

### उठा न रखना

कोई व्यक्ति बाकी न छोड़नी । प्रयोग—तुमने तो अपने साधु भर कोई बात उठा नहीं रखी ? (राधा० प्र०—राधा० दास, ७७६); तुम्हें स्वाय मिले इसके लिए मैंने कुछ उठा नहीं रखा (गंगा०—उग्र, ८०)

### उठा रखना

(१) बाकी रखना, कसर छोड़ना । प्रयोग—मैंने तुम्हारे हित स्वयं ही क्या उठा रखा कहो ? (जय०—गुप्त, ६८)

(२) स्थगित करना । प्रयोग—बात कल के लिये उठा रखी गयी (कर्मा०—प्रेमचंद, ६४)

### उठा लेना

(१) मृत्यु होना मृत्यु की कामना करना । प्रयोग—उसने कितनी बार ईश्वर से विनती की थी, मुझे स्वामी के सामने उठा लेना मगर उसने यह विनती स्वीकार न की (मान० (१)—प्रेमचंद, २५६); जमराज दुश्मन को मेरे ही साथ दुश्मनी है । उठा नहीं ले जाता (परती०—रेणु, २४८); मैं तो देवाधिदेव इन्द्र से यही मनाता हूँ कि मुझे अब उठा ले (देवकी०—रा० रा०, ६६)

(२) हटा लेना ।

(३) किसी कार्य का भार ले लेना ।

### उठाए उठना, बैठाए बैठना

पूरी तरह बख में होना । प्रयोग—घरे, मैं तो ऐसा कर दूँ कि वो तेरे उठाए उठे, तेरे बैठाए बैठे (बूढ़०—प्र० ना०, ३२९)

### उठाना

उन्नत करना । प्रयोग—उसे उठाने की कोशिश में खुद मेरे गिर जाने का खतरा है (भूले०—भग० वर्मा, ४९०); मेरे मौत, तुम किसी को उठाने में असमर्थ (बूढ़०—वर्धन, १०५); नित बहुत दोड़धूप भी से कर जो गिरी जाति को उठा देयें (चुभते०—हरिऔध, ५)

### उड़ चलना

(१) तेज दौड़ना—भागना । प्रयोग—फिटन उड़ी जाती

थी और ताहिरखली के होश उड़े जाते थे (रंग० (१)—प्रेमचंद, २०८)

(२) कुमार्ग स्वीकार करना ।

(३) इतराना, घमंड करना ।

(४) मना लगना, अच्छा लगना ।

### उड़ जाना

(१) लच हो जाना । प्रयोग—यह नहीं समझते कि उनके दो हजार कब के उड़ चुके (मान० (१)—प्रेमचंद, १३८); खैर, वह कम्पनी तो बंट गई और सपना जैसे घाघा या बैसे उड़ गया (पैतरे—अशक, ६४)

(२) समाप्त हो जाना । प्रयोग—न जाने क्यों, जब भी वह लिखने बैठता तभी उसके सब विचार कहीं उड़ जाते (शेखर (२)—अज्ञेय, ११७)

(३) गायब होना । प्रयोग—जब चाहता है बिना पूछे उड़ जाता है (झुठा० (२)—यशपाल, ६५४); एक बार तो उन्होंने यहां तक सोच डाला कि नन्दराम की तरह वह भी जम्सो को लेकर कहीं उड़ जाय (मिस्सा०—कौशिक, १०७)

(४) चोरी चला जाना । प्रयोग—सोने की करघनी, तोक X X निकालकर अम्मा ने अलग डिब्बे में रखे थे, सो रात में डब्बा ही उड़ गया (बूढ़०—प्र० ना०, १९)

### उड़ता-उड़ता

बिना पूरे विश्वास के, संशंक । प्रयोग—कनक ने उड़ता-उड़ता अनुमान प्रगट किया—हो सकता है, फिल्म लाइन में ही कोशिश कर रहे हों (झुठा० (२)—यशपाल, २८६-८७)

### उड़ती-उड़ती

इधर-उधर से । प्रयोग—उसकी बात बड़ती-बड़ती मुझ तक पहुँचती रहती है (ब्रह्म०—दे० सं०, २७५)

### उड़ती-उड़ती खबर, उड़ती खबर

बातारू खबर, अफवाह । प्रयोग—उड़ती उड़ती खबर तो हमने भी सुनी है (राधा० प्र०—राधा० दास, ६७७); उड़ती खबर सुनी गयी थी कि अखबारों आम की किसी खबर से अंग्रेजों को गाली आती थी इसी से पंजाबी सरकार उस पर नाराज हुई (गु० मि०—का० मु० गु०, २४०); उड़ती खबरों को सुन कर इतना व्यस्त हो जाना मेरी दृष्टि में आपका सम्मान नहीं बढ़ाता (प्रेमा०—प्रेमचंद, ९४); इसी समय जीता के कान में उड़ती खबर घाई कि X X किसी ने घासाम X X में नौकरी दिलाने की बात पक्की की है



(सप्तमी०—राहुल, १७-१८); सबर उड़ती उड़ती मूँसे भी मिली है लेकिन बने ध्यान नहीं दिया (मूले०—भग० वर्मा, १७२)

**उड़ती चिड़िया के पंख गिनना,—पहचानना**

पोड़ासा धानास मिलते ही बस्तु-स्थिति को समझ लेना प्रयोग—ये संयोज भी बड़े चतुर हैं आदमियों के चुनने में—ऐसे-ऐसे आदमी चुने हैं कि उड़ती चिड़िया पहचान लें (मूले०—भग० वर्मा, ३२६); यहाँ ऐसा अनाड़ी नहीं है, उड़ती चिड़िया पहचानता है (रंग० (२)—प्रेमचंद, ४४); मैं उड़ती चिड़िया पहचानूँ, उस चींटी की क्या हस्ती है (नू०—भक्त, ५२); उड़ते पंखी के पर गिन सकते हैं यहाँ फिल्मों में (पैतरे—अशक, ५४)

(समा० मुहा०—उड़ती चिड़िया भांपना)

**उड़ती चिड़िया पकड़ना**

चालाक होना । प्रयोग—उसकी कपल बुझिने जैसे उड़ती हुई चिड़िया पकड़ ली (गोदान—प्रेमचंद, ४२)

**उड़ती चिड़िया पहचानना**

दे०—उड़ती चिड़िया के पंख गिनना

**उड़ती नजर डालना**

यों ही जरासा देख लेना । प्रयोग—एक उड़ती हुई नजर मुजला की ओर डालते हुए व्यास ने फिर उभी × × रंग से उत्तर दिया (ज्ञान०—यशपाल, ५३)

**उड़ती आंख से,—नजर से,—निगाह से**

सरसरी तौर पर । प्रयोग—राहु × × में लिखे हुए लात पीले, नीले और श्वेत पुष्पों को उड़ती निगाह से देखकर वह इतनी ऊँचाई पर पहुँचा कि जहाँ तहाँ × × बर्फ दीखने लगी (शेखर (२)—अज्ञेय, २४); मुखदा ने पत्र को उड़ती घाँसों से देख कर कहा × × (कर्म०—प्रेमचंद, २३०); तारा ने उड़ती नजर से देख लिया (झूठा० (२)—यशपाल, ३९०)

**उड़ती खबर**

दे० उड़ती उड़ती खबर

**उड़ती नजर से**

दे० उड़ती आंख से

**उड़ती निगाह से**

दे० उड़ती आंख से

**उड़ते बुलबुल के पर बांधना**

दूर से किसी को फाँसना; बहुत होशियार होना । प्रयोग—वह उल्लू का पट्टा अगर कभी बम्बई में आता तो देखता कि बम्बई की फिल्मी जिन्दगी में चाबुकदस्त लोग किस तरह रंग-गुल से बुलबुल के—बड़े बुलबुल के नहीं, उड़ते बुलबुल के पर बांधते हैं (पैतरे—अशक, ६३)

**उड़नघाई बताना, उड़नभाई करना**

इधर उधर की बात करके बहकाना । प्रयोग—और लोग भी इसी तरह की उड़नघाईयाँ बताते थे । किसी को किसी पर विश्वास न था (गोदान—प्रेमचंद, १८६); मदनबान उनकी इस मखाई को उड़नभाई की बातों में लड़ाकर बोली—(ईशा०—ईशा०, १२५)

(समा० मुहा०—उड़नघाई करना)

**उड़न छू होना**

भाग जाना, गायब हो जाना । प्रयोग—बड़े लाट होकर आपके भारत में पदार्पण करने के समय इस देश के लोग श्रीमान से जो जो आशाएँ करते और मुखस्वप्न देखते थे, वह सब उड़नछू हो गये (गु० नि०—वा० मु० गु०, १९८)

**उड़नभाई करना**

दे० उड़नघाई बताना

**उड़ना**

(१) साफ साफ न बताना । प्रयोग—तू मुझसे इतना क्यों उड़ती है ? (मा० प्र० (१)—भारतेन्दु, ४२०) वाह ! आप तो ऐसा उड़ रहे हैं गोया यह भी छिपाने की बात है (गोदान—प्रेमचंद, १५०)

(२) बहुत खुश होना ।

**उड़ा देना**

(१) व्यय कर देना । प्रयोग—एक-एक हिस्से में पाँच-पाँच हजार आते हैं । पाँच हजार दहेज में दे दे, और पाँच हजार नेग-गोछावर बाजे-गाजे में उड़ा दे तो फिर हमारी बहिया ही बैठ जायगी (मान० (१)—प्रेमचंद, ६४); बाप जब तक मिर्जापुर पहुँचा तब तक पुत्र महा-गाय देड़ सी तो उड़ा ही चुके थे (अपनी खबर—उग्र, ८१) वह मेरे रुपये हैं, मैं उन्हें उड़ा सकती हूँ (कर्म०—प्रेमचंद, १४) (—)



(२) नष्ट कर देना । प्रयोग—उर ऊँचे उछुवात तूनापते, लिहि सकल उड़ाई दिण (सु० सा०—सूर, ४२३८) देखिए प्रयोग (१) में (÷) भी

(३) चुपकेसे किसी की वस्तु को गायब कर देना । प्रयोग—पंडित जी नीचे होते तो वे तुरन्त ऊपर की पुस्तकें छिपा देते और जब वे ऊपर आते तो बहाने से नीचे जाकर, वहाँ यदि कोई पुस्तक पड़ी हो तो, उसे उड़ा देते (चेतन—अश्क, ३४); महारमा जो ने उन्हें सब्ज बाग दिखाकर उनकी पड़ी, अंगूठियाँ, रुपये सब उड़ा दिये (गोदान—प्रेमचंद, ६३); वह चुकतेतर की किताबें नहीं उड़ा सकता (रेशमी—राम० वर्मा, २१८)

(४) हड़प लेना । प्रयोग—मन में सोच लिया था, होरी को किसी घरदब में डाल कर गाय को उड़ा लेना चाहिए (गोदान—प्रेमचंद, १०४)

(५) अफवाह फैलाना । प्रयोग—किसी ने उड़ा दिया है कि तुम लोगों को लड़का पसन्द नहीं है (झूठा० (१)—यशपाल, १५६)

(६) तुच्छ समझकर ध्यान न देना । प्रयोग—कई पंडितों ने इस बात को करामाती किम्बदन्ती कह कर उड़ा दिया है (कबीर—ह० प्र० द्वि०, ११); मुलोचना ने इस सवाल को उड़ा देना चाहा (मान० (४)—प्रेमचंद, ३९)

(७) हटा देना, न रखना । प्रयोग—मेरा सिद्धांत है, कम से कम खर्च और ज्यादा से ज्यादा नफा । मैंने एक चौड़ी दमाली नहीं दी, बिज्ञापनों की मक् उड़ा दी (रंग० (१)—प्रेमचंद, ८०) जहाँ तक रंगमंच का सम्बन्ध है, पूर्वोक्त ने उसका आधुनिककरण कर दिया है, पदों उड़ा दिये हैं और सेंटिंग प्रकृति कर दिये हैं (पैलर—अश्क, ३६)

### उड़ा रखना

अफवाह फैलाये रखना । प्रयोग—जयशंकर यह उड़ाये हुए थे कि वे शोकिया सिपाही का काम नहीं कर रहे (चौटी०—निराला, ९६)

### उड़ा लाना

(१) बहाना बताकर ले आना । प्रयोग—कहीं बम्मा से १० रु० उड़ा लाये, कहीं अम्बाबान से किताब के बहाने से पाँच-दस पेंड लिये (कर्म०—प्रेमचंद, ६४)

(२) किसी लड़की को भगा लाना या अपहरण करना । प्रयोग—यच्छा तो यदि आपकी समझ में यह बातें नहीं आती तो जाइये जसो को किसी वृक्ष से उड़ा लाइये (मिसा०—कौशिक, १६४); विवाह की प्रथा उस समय केवल यह थी कि घर पर अपने मूर सामन्तों को लेकर सदास्य जाता था और कन्या को उड़ा ले जाता था (मान० (२)—प्रेमचंद, १९)

(३) चोरी करके लाना । प्रयोग—नीयत बदलते क्या देर लगती है । आज मौका देना उड़ा ले गये (मान० (२)—प्रेमचंद, ६३)

### उड़ाई हुई

किसी के साथ भगायी गई स्त्री । प्रयोग—वह उड़ाई गई है, इसलिए उसकी गणना हुना वर्ग में की जायगी (सुहाग०—झ० ना०, २८)

### उड़ाना

बहकाना । प्रयोग—जब उसने पैर निकाले हैं बातों में मुझे उड़ाती है (नू०—मत्त, ५३)

(२) लाना । प्रयोग—यह महाशय एक ही बार में कोई चार रुपये का माल उड़ा गये (निर्मला—प्रेमचंद, ३२)

(३) झूठी चर्चा करनी । प्रयोग—झूठि लोग उड़ावल घर-घर, हम जान्यो अब तो रो (सु० सा०—सूर, २५७८)

(४) बर्बाद करना ।

(५) गोल्ले-बाकद से ध्वंस करना ।

### उड़ी-उड़ी बातें करना

बेमन से बातें करना । प्रयोग—तुम तो अब ऐसी उड़ी-उड़ी बातें करने लगे कि क्या बहू (मा—कौशिक, १०६)

### उतर कर

(१) निम्न खेणो का, घटकर । प्रयोग—वह बात में मुझ से उतर कर है (तेठ०—हृत्प्रौढ, ८)

(२) काँति या स्वर का प्रीका पड़ जाना ।

(३) उग्र प्रभाव या उद्वेग का दूर होना ।

### उतर जाना

(१) पहले से दुर्बल हो जाना । प्रयोग—मैं तो मोटी



ताजी कभी न थी । 'इस वक्त तो पहले से भी उतरी हुई हो' (कर्म०—प्रेमचंद, २४३)

(२) प्रीड होता । प्रयोग—मतलब यह कि बाई जी उछ से उतर चुकी थी (ज्ञान०—यशपाल, ४४)

### उत्तरती उछ

डलती उछ । प्रयोग—यज्ञेश का वाक्य पूरा नहीं हो पाया था—कि उत्तरती अवस्था की एक स्त्री डलिया भाड़ लिये दरवाजे पर आई (झांसी०—वृ० शर्मा, ४५)

### उतरना

(१) कहीं ठहरना, ठहरा करना । प्रयोग—भलेहि नाप कह कृपानिकेता । उतरे तहं मुनिबुन्द समेता (राम०—बाल) तुलसी, २२४); तुम्हारे ही वास्ते तो जी पर खेलकर यहां उतरे हैं (भा० ग्रंथा० (१)—भारतेंद्र, ५२५)

(२) पार करना । प्रयोग—सबमुख सोह भरत सन लेऊँ । जितन न मुरमरि उतरन देऊँ (राम०—तुलसी, ५५०); नदी उतर फिर आये तहाँ, बँठी सोवतो थी देवकी जहाँ (प्रेम० सा०—ल० ला०, १९)

(३) अतिथि रूपमें आना । प्रयोग—एडीटर साहब, एक एडी-कापेस आपके घर में उतर रहा है, आप उसे मार तो न डालेंगे (गु० नि०—बा० मु० गु०, २५९); कभी कतकतो आना हुआ तो उन्हीं के पास उतरूँगा (पद्म० के पत्र—पद्म० शर्मा, ११८)

(४) दाम में बसी करना । प्रयोग—आप समझते हैं यह कुछ और उतरेंगा ? (गवन—प्रेमचंद, ११९)

### उतरा कर बहना

बिना संभारता पूर्वक विचार किए किसी बात के प्रभाव में बह चलना । प्रयोग—कान्धुकुञ्ज विविध देश है, आधु-धम् ! काशी में लोग धर्म के नाम पर इस तरह उतरा कर नहीं बहते (बाण०—ह० प्र० द्वि०, १८३)

### उतरा गला

(१) दबी आवाज । प्रयोग—चट्टिका असमंजस में पड़ गया × उतरे गले से कहा—मैं भी पिला देस लेता (कुझी०—निराला, ४७)

(२) नीचे उतरा हुआ बेसुरा स्वर ।

(समा० मुहा०—उतरा स्वर)

### उतरा चेहरा

मलिन चेहरा, उदास चेहरा, अपमानित चेहरा । प्रयोग—उसका उतरा हुआ चेहरा देखकर तारा घोर छोटी दोनों को यह अनुभव हुआ (वृ०—प्र० ना०, ६१)

(समा० मुहा०—उतरा मुँह)

### उतार चढ़ाव

भली-बुरी स्थिति, हर रूप । प्रयोग—व्यवहार की दुनिया में रह चुकने के कारण उसके उतार-चढ़ाव को तुम्हारी अपेक्षा कुछ ज्यादा समझती हूँ (बाह्र०—देव०, १०५)

### उतारना

अवनत करना । प्रयोग—अपनी तरफ से मैं जितना लोगों को ऊँचा उठाने की कोशिश करता गया, सोना उतना मुझे उतारने पर तुलेरहे (चतुर्ती०—निराला, ३८)

### उतारा करना

भूल-प्रेत उतारने के लिए टीना-टोटका करना । प्रयोग—कर उतारा हम उतारेंगे उसे भूल सिर पर जो किसी के चढ़ गया (बोल०—हरिऔध, १५)

### उत्तर आना

उत्तर देते बनना । प्रयोग—उत्तर न आब बिकल वैदेही (राम०—तुलसी, ४३२)

### उत्साह की लहर दौड़नी

उत्साह होना । प्रयोग—घाट पर उत्साह की लहर दौड़ गई (सुहाग०—प्र० ना०, ११)

### उत्साह टूटना,—टंडा पड़ना या होना,—ढीला होना

उत्साह समाप्त होना । प्रयोग—इसका संपादन-भार पंडितवर दामोदर शास्त्री जी पर आया जबकि पंडितजी का उत्साह ढीला पड़ा और चट्टिका अस्त हुई (राधा० ग्रंथा०—राधा० दास, ५१३); कुत्ती का उत्साह टूट गया (कुत्ती०—निराला, ४६); उसका सारा उत्साह ठंडा पड़ गया (गोदान—प्रेमचंद, ३०४); पर जब मैं एक एक करके उन पुस्तकों को इस इरादे से उलट कर देखने लगा कि मन की तत्कालीन स्थिति के अनुसार कौन पुस्तक मेरे अनुकूल पड़ेगी तब उत्साह ठंडा पड़ने लगा (जहाज०—इ० जोशी, ४०२)



उत्साह ठंडा पड़ना या होना

७१

उबल पड़ना

उत्साह ठंडा पड़ना या होना

दे० उत्साह ठंडना

उत्साह ठंडा पड़ना

दे० उत्साह ठंडना

उथल-पुथल होना

(१) स्थिति में परिवर्तन होना। प्रयोग—इधर नन्दराम के परिवार में भी बड़ा उथल-पुथल हो गया (मिस्रा०—कौशिक, २२२)

(२) हलचल होना—गड़बड़ होना।

उदर भरना

(१) जीविका चलना। प्रयोग—मानु पिता बालकन्हि बोलावहि उदर भरें सोइ धर्म सिखावहि (राम० (उ)—तुलसी, ११२८)

(२) भोजन करना। प्रयोग—ग्वारनि के पनबारे चुनि-चुनि उदर भरीजें सोप्रिनि (सु० सा०—सूर, ११०८)

(समा० मुहा०—उदर पूर्ति करना)

उधार खाए बैठना

(१) किसी आसरे पर दिन काटना। प्रयोग—उनकी तो जैसे बुद्धि भ्रष्ट हो गई है × × मुरारीलाल के नाम पर उधार खाए बैठी हैं (मान० (१)—प्रेमचंद, ६६)

(२) हर समय तैयार रहना। प्रयोग—शास्त्रार्थ करने के लिये वह उधार ही लिये बैठा रहता था (मृग—दृ० वर्मा, ४०१); लेकिन प्राप भी अपना गृह्य कौशल दिखाने पर उधार लिये हुए हैं (प्रेमा०—प्रेमचंद, ११०)

उधेड़बुन

सोच-विचार। प्रयोग—तो आपने इतने दिनों में यह उधेड़-बुन की है (परल—जेनेन्द्र २४); इस उधेड़-बुन में ही मेरा सारा जीवन बीत गया (मधु०—वच्चन, पद ११९)

उधेड़बुन में पड़ना या रहना

सोच-विचार में होना। प्रयोग—शान्ति कुमार × × फिर उही उधेड़बुन में पड़ गये (कर्म०—प्रेमचंद, २३२); मैंने याद तो कई बार दिलाई पर चौबेजी और ही उधेड़-बुन में रहते हैं (पट्टम० के पत्र—पट्टम० शर्मा, १५१); कई दिन वह इसी उधेड़ बुन में पड़ी रही (मिस्रा०—कौशिक, १८९)

(समा० मुहा०—उधेड़बुन करना)

उन्नीस-बीस होना

कुछ कम-बेश होना, थोड़ा ही अंतर होना। प्रयोग—पोटा ने जैसे मुना था, वैसी ही है। दूसरी भी उन्नीस-बीस ही बेंडेगी (मृग०—दृ० वर्मा, ११६)

उन्नीस होना

तुलना में एक का कुछ घट कर होना। प्रयोग—हमारी पतित समाज की नीचे की मिरने की लुकावट प्रागे से अब इसकीस बिस्वे है उन्नीस नहीं हुई (भट्ट० नि०—बा० भट्ट, १०९)

उन्हीं पैरों लौट जाना

तुरंत लौट जाना। प्रयोग—‘अभी लो सरकार’ पवित्र राम उन्हीं पैरों लौट गया (बम्ह०—दे० स०, २९१); उन्हीं पावों पाड़ेपुर चले। देखा तो मूरदास एक नीम के नीचे राख के डेर के पास बैठा हुआ है (रंग०(२)—प्रेमचंद, १५२)

उपदेश की खराई होनी

उपदेश का बुरा माजूम पड़ना, अनुकूल न होना। प्रयोग—मीठी कथा कटुक सी जागति उपजत है उपदेश खराई (सु० सा०—सूर, ४२१७)

उपरफट्ट बात

इधर उधरकी दिखावटी बातें। प्रयोग—मेरी बांह छांदि दे राधा, करत उपरफट बातें (सु० सा०—सूर, १२९९)

उपराचढ़ी होना

स्पर्धा होनी। प्रयोग—कर दिनी में बेगबब उपरा चढ़ी जीव पर नड़ना मला होऊ नहीं (वील०—हरिऔध, ३९)

उपाय चलना

युक्ति कारगर होना। प्रयोग—कठिन पासि कट्टु नले न उपाई (क० प्रद्या०—कवीर, २३१)

उपाय रचना

उपाय करना, युक्ति करना। प्रयोग—जाइ उपाय रचहु नृप एहू (राम० (बाल )—तुलसी, १७८)

उबल पड़ना

(१) गुस्से में बकझक करना। प्रयोग—दुवेजी, लड़का नादान है, खून में गरमो है, जरा सी बात पर उबल पड़ता है, तो इधर की बात का बुरा न मानियेगा (भूले०—भग० वर्मा, १६); पापा ने मुझे बिलकुल मिलेन्द्र, आत्म,



सम्मान होना, विलासलोचन समझ सकता है, तभी तो जरा सी बात पर उबल पड़े (रंग० (२)—प्रेमचंद, १७४)

(२) मन का भेद खोलना। प्रयोग—मैं ऐसी कच्ची नहीं कि धोड़े में बहुत उबल पड़ें (म० प्र० १)—भारतेन्दु, ४४४)

### उबलना

(१) कोष करना। प्रयोग—महिपाल बहुत उबला (बुँद—अ० ना०, ५८२)

(२) बड़े जोश में आना; तीव्र असंतोष होना। प्रयोग—मैं जो कुछ लिखता हूँ, बहुत उबल कर लिखता हूँ, पर पीछे मुझे लगता है कि वह अच्छा नहीं है (शेखर (२)—अज्ञेय, ११४)

### उमड़ आना या पड़ना

भाव का अतिरेक होना। प्रयोग—एकाएक कृतज्ञता से उसका मन उमड़ आया (शेखर (२)—अज्ञेय, ११८) अपने गुरु के प्रति मधुपाल की थड़ा उमड़ पड़ी (चित्र०—भग० वर्मा, १८)

### उम्र ढलना,—लटना

प्रौढ़ावस्था की ओर बढ़ना। प्रयोग—कब घायल हो और जानि मुजान बहीर लौ वेंस तो जाति लदा (घना० कवित्त—घना०, ९२); लेकिन जब उनकी उम्र ढलने लगी थी (मूले०—भग० वर्मा, १६३); बात कुछ इस प्रकार चली थी कि कुछ स्त्रियाँ घनन्त-पौवना होती हैं, जो घायु ढल जाने पर बूढ़ा नहीं लगती (ब्रह्म०—दे० स०, ५४)

### उम्र पकना

बूढ़ी होना। प्रयोग—अब हमलोगों की उम्र पकने लगी है, महिपाल (बुँद—अ० ना०, ५१४)

### उम्र लटना

दे० उम्र ढलना

### उर आना

इच्छा उत्पन्न होनी, मन में कोई दिव्य भाव आना। प्रयोग—दत्तन मोह तम सो स प्रकामू। बड़े भाग उर आवइ जायू (राम० (बाल)—तुलसी, ४)

### उर ताड़ना करना

छाती पीटना। प्रयोग—उर ताड़ना करहि बिधि नाना (राम० (लं)—तुलसी, ९८४)

### उर दाह होना

(१) ईर्ष्या होनी। प्रयोग—राम तिलक मुनि भा उर दाह (राम० (अ)—तुलसी, ३८३)

(२) दुःख होना। प्रयोग—तब प्रभु गृहहि कहेउ घर जाह। सुनत बूल मुख भा उर दाह (राम० (अ)—तुलसी, ४६९); सूरत जराय कियो दाह पातसाह-उर स्याही जाइ सब पातसाही मुख भलकी (भूषण प्र०—भूषण, १६३)

### उर में अड़ना

हृदय में स्थान ले लेना। प्रयोग—बड़े मुसक्यानि, बड़े मूदु बतरानि, बड़े सड़कीली वानि आनि उर में अरति है (घना० कवित्त—घना०, ३)

### उर में आना,—उपजना

ध्यान में आना। प्रयोग—बहुत भांति करि मैं समुझायो, एक न उर में आवत (सु० सा०—सूर, ४७६३); सती सो दसा संभु की देखी उर उपजा संदेहु विसंखी (राम० (बाल)—तुलसी, ६४); रही बांह छान्ह, राधा राम की जनम भरि, भूति हू न सेनापति और उर घायो है (क० र०—सेनापति, ९५)

### उर में उपजना

दे० उर में आना

### उर में गड़ना

(१) हृदय में रूप बस जाना। प्रयोग—उर में मालन चोर गड़े (सु० सा०—सूर, ४३४९)

(२) कसकना।

### उर में छार्द रहना

हृदय पर पूर्ण प्रभाव होना। प्रयोग—रही न लाज प्रीति उर छार्द (राम० (बाल)—तुलसी, ३४५)

### उर में धरना,—रखना

(१) विश्वास करना। प्रयोग—अब उर धरहु ब्रह्म बर बानी (राम० (बाल)—तुलसी, ८६); जो हरि-वत निज उर न धरेंगो (सु० सा०—सूर, ७५)

(२) स्मरण रखना।

### उर में न समाना

भावातिरेक होना। प्रयोग—लै चार्द बजराम गृह, आनंद उर न समाय (सु० सा०—सूर, ४७१३)



### उर में लाकर

हृदय में ध्यान या स्मृति रख कर । प्रयोग—मंजू मधुर मूर्ति उर जानी । भई सनेह निधिल सब रानी (राम० (बाल)—तुलसी, ३४६)

### उर में हलना

मन में चुभाना या पीड़ा पहुंचाना । प्रयोग—नहि या उक्ति मृदुल श्रीमुख की जे तुम उर में हलहु (स० सा०—सूर, २४७)

### उर लाना

हृदय से लगाना, प्यार करना । प्रयोग—अपने-अपने गृह तें दोरी लै पाती उर लाई (स० सा०—सूर, ४१०४); बहुरिलाइ उर लीन्हि कुमारी (राम० (बाल)—तुलसी ११५); दोरि भुजनि भरि लई, सबनि लै लै उर लाई (नंद० ग्रंथा०—नंद०, १३)

### उर सालना

हृदय में कमक होनी । प्रयोग—बेधो जीव विरह कै भाले, राति दिवस मेरे उर सालै (क० ग्रंथा०—कबीर, १८५); लखनु भरतु रिपुदमनु मुनि भा कुबरी उर सालु (राम० (अ)—तुलसी, ३८४)

### उर से टालना

मन से दूर करना । प्रयोग—बहु मुस्कान मनोहर चितवनि, कैसे उर तै टारी (स० सा०—सूर, ४२३९)

### उरिण करना या होना

किसी उपकार के बदले में स्वयं भी कुछ कर के मुक्त होना । प्रयोग—कैसे हूँ कर उरिण कीजै, गोपिकनि सौ मोहि (स० सा०—सूर ४०४९); गुरुहि उरिण होतेउ श्रम थोरें (राम० (बाल)—तुलसी, २८१)

### उलग होना

बिना देख-रेख के याचारा सा हो जाना । प्रयोग—साबा-रिस है, बाप-माँ भाई बन्द कोई नहीं है, तभी ऐसा उलग हो गया है (शेखर (२)—अज्ञेय, ६६)

### उलझ पड़ना

भगड़ा कर बँडना, या उलझना । प्रयोग—सबरे की पूष में जयंत की उबंसी से उलझते देर न लगी (दूधगाछ—दे० स०, २५३); पर उसका डोल-डोल देख कर किसी को

उससे उलझने की हिम्मत न पड़ती थी (मान० (३)—प्रेमचंद, ८२)

### उलझाना

रोक रकाना, तंग करना । प्रयोग—सूर श्याम माखन दधि लीजै, जूवतिनि कत अरुभावत (स० सा०—सूर, २१४१)

### उलट जाना

(१) मर जाना । प्रयोग—कबरी न हिली न टूली, न चीली न चिल्लाई, बस एकदम उलट गई (इंस्टा०—भग० वर्मा, ९२)

(२) सरसरी तौर पर पढ़ जाना ।

(३) बात कह कर फिर पलट जाना ।

### उलट देना

स्थिति को बिगाड़ देना । प्रयोग—धव नहि समुझति कौन पाप तें, बिपना सो उलटावो (स० सा०—सूर, ४१५३)

### उलट-फेर

स्थिति-परिवर्तन । प्रयोग—सिमोदियों के भाग्य ने बहुत उलट-फेर देखे हैं (विप०—प्रेमी, ९१)

(समा० मुहा०—उलट-पुलट)

### उलटा तबा

बहुत काला । प्रयोग—ये तुम्हारा उलटा तबा, उसकी बीबी, उसके घर वाले मिल कर खा गये उसे, बरना बहोत बड़ा आर्टिस्ट होता महिपाल (वृ० द०—अ० ना०, २९)

### उलटा पाठ पढ़ाना

बहका देना, विरोधी बात बताना । प्रयोग—मैं आया था तुमसे सलाह लेने—गोचा था कोई उपाय बताओगे, सो तुम उलटा पाठ पढ़ा रहे हो (भिसा०—कौशिक, १६३)

### उलटी आँत गले पड़ना

मुसोबत जाना । प्रयोग—गोचा था, दो-चार साल और जिवंदगी का मजा उठा लूँ; पर उलटी आँत गले पड़ी (निर्मला—प्रेमचंद, ४९)

### उलटी चाल

विपरीत आचरण । प्रयोग—इन्दी घड़ित, बुद्धि विषयारत मन की दिन-दिन उलटी चाल (स० सा०—सूर, १२७)



### उलटी-पुलटी बात

व्यर्थ की बात, अनुचित बात। प्रयोग—परमात्मा करे—  
देखर, तूफ़ फिर तो नहीं मोचोगे उलटी-पुलटी बातें  
(शेखर (२)—आज्ञेय, १९११)

### उलटी राह पकड़ना

गलत काम करना। प्रयोग—राह उलटी किसलिये पकड़ी  
गई। क्यों घुमाने से नहीं है घूमते (बुभुक्षे—हरिऔध, ८७)

### उलटी रीति

मानो जाती हुई परम्परा से विमुख रीति। प्रयोग—  
उलटी रीति तिहारी उधो, सुन सो ऐसी को है (सू० सा०  
—सू०, ४१६८)

### उलटी सीधी समझाना

इधर-उधर की बातें समझाना। प्रयोग—परन्तु उस समय  
के अनेक हाकिमों को न जाने क्या उलटी सीधी समझाकर  
अमलों ने उड़ूँ ही हिन्दुस्तानी भाषा है, समझा दिया  
(राधा प्रथा०—राधा० दास, ८४)

### उलटी सुलटी पड़ना

कुछ भला-बुरा होना। प्रयोग—कर दो, मुझे क्या  
उलटी-सुलटी पड़ेगी, तो तुम्हें ही भुगतनी पड़ेगी (मो—  
कौशिक, २१५)

### उलटे छुरे से मूँड़ना,—हलाल करना

(१) बेवकूफ बनाना। प्रयोग—उन सब की हलालाह  
के लिए आपको स्वयं खलीफा या उस्ताद बनना पड़ा है  
और सबको एक ही उलटे उस्तरे से मूँड़ना पड़ा है  
(गु० नि०—बा० मु० गु०, ४३३); गरज बाबली होती है  
और गरज वाला खुशी-खुशी उलटे उस्तरे से मुड़ जाता  
है (मेरे०—गुलाब०, ७७)

(२) रुपए ऐठना। प्रयोग—घाफकी नीति में घर वालों  
को ही उलटे छुरे से हलाल करना चाहिए ? (मोदान—  
प्रेमचंद, १४६); आपकी एक नैष्या से आठनाई है। माधुरी  
नाम है और वह इन्हें उलटे छुरे से मुड़ रही है, जैसा  
उसका धर्म है (मान० (७)—प्रेमचंद, ४१)

### उलटे छुरे से हलाल करना

२० उलटे छुरे से मूँड़ना

### उलटे पांच भागना

सुरत बेतहाया भागना। प्रयोग—मैं तो उलटे पांच वहाँ

से भागा क्योंकि एक दफा मेरे जी में भी आया कि मैं  
इस्तीफा दे दूँ (मूले०—मग० वर्मा, ४८४)

### उलटे पैर चले जाना,—लौटना,—वापस होना

फौरन वापस होना। प्रयोग—उलटि जाहु अपने पुर  
माही, चादिहि करत लराई (सू० सा०—सूर, ४४१९);  
हुज़र ने किसी को बुला कर कुछ पूछताछ न की न सही  
XX पर जो लोग दौड़ कर कुछ कहने-सुनने की आशा से  
हुज़र के द्वार तक गये थे, उन्हें भी उल्टे पाँव लौट जाना  
पड़ा (गु० नि०—बा० मु० गु०, २२५); पहला विचार तो  
हवा कि उलटे पाँव वापस जाऊँ (रंग० (१)—प्रेमचंद, ३३५);  
स्को नहीं उलटे पाँवों मुम फौरन वापस आयो (नूर०—  
मकत, ६८); वह उलटे पैर वहाँ से लौट पड़े (मूले०—  
मग० वर्मा, १३५)

### (समा० मुहा०—उलटे पैर फिरना)

### उलटे पैर लौटना

२० उलटे पैर चले जाना

### उलटे पैर वापस होना

२० उलटे पैर चले जाना

### उलटे मुंह गिरना

दूसरे को नीचा दिखाने के बदले स्वयं नीचा देखना।  
प्रयोग—अंत तक लड़कों से लड़े। बाखिर को उलटे  
मुंह पड़ (गु० नि०—बा० मु० गु०, ७१९)

### उलटे हाथों लेना

खुब फटकारना। प्रयोग—मैंने उन्हें उलटे हाथों लिया  
(झुठा० (१)—यशपाल, ३६३)

### उलटू

बेवकूफ। प्रयोग—तुम जैसे उलटू उगे समझ ही नहीं  
सकते, हल क्या करेंगे (गहन—प्रेमचंद, १७४)

### (समा० मुहा०—उलटू का पट्टा)

### उलटू की लकड़ी फेरना

बेवकूफ बनाना। प्रयोग—अमींदार महोदय ने मेरे गिर  
पर ऐसी उलटू की लकड़ी फेरी कि मैं छः महीने के लिए  
नहीं तो छः दिन के लिए अवश्य अंधा हो गया (मेरे०—  
गुलाब०, २०)

### उलटू फंसना

मूल व्यक्ति मिलना। प्रयोग—चाहे आपने बास्तं खुशी



ही, चाहे अपने संगार के दुखते प्राणको दोनों उल्लू फँसे है  
(मा० ग्रंथा० (१)—भारतेंद्र ४४९)

### उल्लू बनना या बनाना

मूल बनना या बनाना । प्रयोग—मैं कहता हूँ, तुम पाँच मिनट में उल्लू बन जाओगे (शेखर (१)—अज्ञेय, २१४) सच तो यह है कि वह उल्लू बन जाता है, फिर बच नहीं सकता (ये कोठे०—अ० ना०, २१४); तब गले कंसे न उल्लूगन पड़े उल्लूओं में बैठ जब उल्लू बने (चुमते०—हरिऔध, १२९); वह सड़ा है इस सब जाननेवाली भरी सभा के आगे घोषित करने को कि देखो, मैं दोसर उल्लू बनाया जा रहा हूँ (शेखर (२)—अज्ञेय, १५२); उल्लू मुझे बनाने आई उड़ती मैं पहिचानू (नूर०—भक्त, २६); तरकीब बताते हो या उल्लू बनाते हो (मिसा०—कौशिक, १८५)

### उल्लू बोलना

उजाड़ होना । प्रयोग—मिर्हिवा टोला में तो अब दिन दिनमें ही उल्लू बोलता है (मैला०—रेणु, २३); जिन बाजारों में मनचले जवान अस्त्र-शस्त्र सजाये ऐठते फिरते थे, वहाँ उल्लू बोल रहे थे (मान० (३)—प्रेमचंद, १४५)

### उल्लू समझना

बेचकूफ समझना । प्रयोग—हरिधन चटुँउठ बैठा और तीव्र स्वर में बोला—क्या तुम लोगों ने मुझे उल्लू समझ लिया है ? (मान० (१)—प्रेमचंद, १३९)

### उल्लू सीधा करना

किसी को बेचकूफ बनाकर काम निकालना, किसी के अज्ञान का लाभ उठाना । प्रयोग—अपना उल्लू सीधा करने को बुलबुल उन्हें बनाऊंगी (नूर०—भक्त, १०७); दंगा—फिसाद कराने वाले तो अपना ही उल्लू सीधा करते हैं (कठ०—दे० स०, ३८९)

### उसास लेना

दुख भरी साँसें लेनी । प्रयोग—पंथ निहारो कामनी लोचन भरी लेइ उसासा (क० ग्रंथा०—कवीर, ३०३); उतर देइ न लेइ उसामू (राम० (अ)—तुलसी, ४८४)

### उस्ताद होना

(१) होसियार होना । प्रयोग—दबकर भूक कर तन कर या एंठ कर जैसे भी हो अपना मतलब पूरा करने में ओस्ताद थी (दल०—नगा०, ११२)

(२) छरी या पूत होना ।

### ऊँघते को ठेलना

तंग करना । प्रयोग—जब उन्हें मालूम है कि इनके प्यार रहने से मेरी निदा हो रही है, तो वह जान बूझ कर क्यों मेरा उपहास करा रहे हैं । यह तो ऊँघते को ठेलने का बहाना हो गया (रंग० (२)—प्रेमचंद, ३५५)

### ऊँच नीच

(१) भला बुरा । प्रयोग—ते के दिवो न जाय ऊँच अरु नीच बतावै (कुण्ड—गिरिधर दास, ७); स्त्रियाँ तो कुछ ऊँच-नीच समझती ही नहीं (मा—कौशिक, ३७); मानाइहूत को देर तक सारा ऊँच-नीच समझाया गया (सुहाग०—अ० ना०, १६६); यही पुछता हूँ कि क्या बिलंबे बात तो ऊँच-नीच सब तरह की हो सकती है (जय०—जनेन्द्र, ११४)

(२) जातिगत भेदभाव । प्रयोग—जब जय ऊँच-नीचकरि जाना, ते पमुवा भूले भ्रम नांना (क० ग्रंथा०—कवीर, १०९); एक के लिए समाज की ऊँच-नीच—भावना मजाक और आक्रमण का विषय थी, दूसरे के लिए मर्दादा और स्फूर्ति का (कवीर—ह० प्र० द्वि०, १५३)

### ऊँचा

अच्छा—ऊँचा दर्जे का । प्रयोग—सीभी सब तरकारी भा जेवन सब ऊँच (पद०—जायसी, ४५८); ऊँचे चड़े ऊँच खंड सूझा । ऊँचे पास ऊँची बुधि बूझा (पद०—जायसी, १६५); पान बेचना कोई ऊँचा काम नहीं है (रंग० (१)—प्रेमचंद, २९); हाँ, हाँ ऊँचे मनवाली है, महलों में रहने लायक (मृग—वृ० वर्मा, १४४); इपटा के रहस्य विभाग में काम करनेवाली लड़कियाँ तो ऊँचे घरों की ऊँचे चरित्र कीXXवीं (पेंतरे—अशक, २५); मुरदास ने अपने इंदे गिर्द जिस समाज को देखा था उसका कोई ऊँचा आदर्श न था (हिन्दी सा०—ह० प्र० द्वि०, १७४)

### ऊँचा उठना

(१) धेड़ होना । प्रयोग—दोखर को लगा कि वह कुछ छोटा हो गया है या उसके सामने वाला व्यक्ति कुछ ऊँचा उठ गया है (शेखर (२)—अज्ञेय, ६३)



(२) उन्नति होनी ।

### ऊँचा उठाना

उन्नति कराना । प्रयोग—जाति को ऊँचा उठाने के लिये बाग अपनी कब न वे लीचे रहे (चुमते०—हरिऔध, १३२); इस तरह अपनी तरफ से मैं जितना लोगों को ऊँचा उठाने को कोशिश करता गया, लोग उतना मुझे उतारने पर तृप्ते रहे (चतुर्दी०—निराला, ३८)

### ऊँचा करना

थोड़ा बनाना । प्रयोग—ऊँचे मन, ऊँचे कर, ऊँचे ऊँचे करो देके ऊँचे करे भूमि के भिखारिन के भाग है (मति० मक०—मल्लिकार्जुन, १७०)

### ऊँचा कुल,—घर

प्रतिष्ठित और धनी परिवार । प्रयोग—ऊँचे कुल क्या जनमिया, जे करसो ऊँच न होइ (क० प्र०—कबीर, ४८); इपटा के रहस विभाग में काम करनेवाली सहकिया तो ऊँचे घरों की × × थी (पैतरे—अशोक, २५)

### ऊँचा घर

दे० ऊँचा कुल

### ऊँचा दाम

महंगी होना । प्रयोग—अगर ऊँचे दामों का हूँ तो बचारा देगा कहाँ से ? (गदन—प्रेमचंद, ६४)

### ऊँचा नीचा

(१) हानिनाश, भलाबुरा । प्रयोग—तुम्हें पुरखी के पास बिल्ब मठ जाने के लिये जो सपना चाहिये उसके प्रबन्ध में मैं ऊँचा-नीचा सब काम करने को प्रस्तुत हूँ (मा० प्र०—भारतेन्दु, ५५७); चाहा लरी मुनाना अयोही सोच बहुत ऊँचा-नीचा । सत्ता भर गया, बोल न फूटा, जासों को अपनी मौचा (नूर०—मक्त, ६); महिपाल शीला से मिलने की तहय लिए ऊँच-नीच सोच कर कमरे से बाहर निकला (बुँद०—अ० ना०, ५०३)

(२) उबड़-खाबड़, समतल न होना ।

### ऊँचा पद पाना

थोड़ा स्थान पाना । प्रयोग—बैठ ऊँची और ऊँचा पद मिले क्यों भला ऊँची बने छाती नहीं (दोल०—हरिऔध, १५३)

### ऊँचा लाभ

बहुत अधिक लाभ । प्रयोग—कोवलन आगे गति न देख अपना सारा माल सिकन्दरिया में बापा, ऊँचा लाभ उठा स्वयं की आज्ञानुसार स्वदेश लौट पड़ा (सुहाग०—अ० ना०, ११७)

### ऊँचा साहस

बड़ा, थोड़ा कोटि का साहस । प्रयोग—पुरुषहि बाहिअ ऊँच हिषाऊ । दिन-दिन ऊँचे राखे पाऊ (पद०—जायसी, १६५)

### ऊँचा सिंहासन

शासक, उच्च अधिकारी वगैरे । प्रयोग—परन्तु मुझे यह भी मालूम है कि ऊँचे सिंहासनों तक इन साहित्यिकों की बाणी नहीं पहुँची है (अशोक०—ह० प्र० द्वि०, १५५)

### ऊँचा सुनना

कम सुनना, बहरा होना । प्रयोग—रेडियो का स्वर भी काफी ऊँचा रखते थे शायद घर के लोग बहुत ऊँचा सुनते थे (झुठा० (२)—यशपाल, ३८६)

### ऊँचा स्थान होना

थोड़ा माना जाना । प्रयोग—बौद्ध साहित्य में अश्वघोष, मानवेत अथवा आर्यशर का बड़ा ऊँचा स्थान है (गुलेरी ग्रंथ (१)—गुलेरी, १०२)

### ऊँचा स्वर

और से, तेज स्वर में । प्रयोग—कंठ लागि सो हीसुर रोई (पद०—जायसी, १९१); गोपी ग्याल झूलझूल ऊँचे सुरों में मलारें गाते थे (प्रेम सा०—ल० ला०, ५४)

### ऊँचा हाथ होना

(१) बड़ा योगदान होना । प्रयोग—हाथ ऊँचा सदा रहा किनका हित सकल गुण सहज सहेजे में (चोखे०—हरिऔध, ९)

(२) उधार होना । प्रयोग—ऊँचे मन, ऊँचे कर, ऊँचे ऊँचे करी देके, ऊँचे करे भूमि के भिखारिन के भाग है (मति० मक०—मल्लिकार्जुन, १७०)

### ऊँचा होना

(१) गुस्सा होना । प्रयोग—ऐसे मोकों पर मुनीता घनाघात ऊँची हो पड़नी है (मुनेता—जैनेन्द्र, १५)



(२) बड़ कर होना, घेष्ट होना । प्रयोग—दिन-दिन ऊँच होइ सो जेहि ऊँचे पर चाउ (पद०—जायसी, १६५); जालपा फिर तांगे पर बैठ कर घर चली, तो उसे मालूम हो रहा था मैं कुछ ऊँची हो गई हूँ (गबन—प्रेमचंद, १४२); उसके मन में एक विचित्र प्रकार की ज़चोट उठी, जैसे नीलकांत बहुत ऊँचा है, वह उसके सामने छोटी है, बहुत छोटी (वीने०—रा० रा०, ४२)

(३) जच्छा होना ।

### ऊँचाई पर चढ़ाना

ऊँचे उठाना, उन्नत बनाना । प्रयोग—मुझे क्यों ऊँचाई पर चढ़ाना चाहती हो, जहाँ पहुँचने की शक्ति मुझ में नहीं है ? (गबन—प्रेमचंद, २५५)

### ऊँची आवाज़

जोर से । प्रयोग—अब यह घर किसी रोगी का कमरा न था जहाँ ऊँची आवाज़ से बोलना बुरा समझा जाय (सु० सु०—सुदर्शन, १०९)

### ऊँची उड़ान

बड़ी-बड़ी कल्पनाएँ या सूझ । प्रयोग—योरपीय कला-समीक्षा की यह बड़ी ऊँची उड़ान या बड़ी दूर की कौड़ी समझी गई है (चिंता० (१)—शुक्ल, १६४); जिन सबक की ऊँची से ऊँची उड़ान भी यहाँ तक न पहुँची थी (रंग० (१)—प्रेमचंद, ८२)

### ऊँचो ऊँची उड़ान भरना

बड़ी बड़ी कल्पना करना । प्रयोग—चिंतन की ऊँची-ऊँची उड़ानें भर कर महिपाल फिर अपनी परेशानियों की सतह पर उतर आया (वृ०—अ० ना०, ११६)

(समा० मुहा०—ऊँची उड़ान लेना)

### ऊँची करनी

अच्छा काम । प्रयोग—ऊँचे कुल का जन्मिया, जे करनी ऊँच न होई (क० ग्रंथा०—कबीर, ४८)

### ऊँची जगह पाना

बड़ा मोहदा पाना । प्रयोग—घरर एम० ए० और एम० एमसी० पास करने पर भी मैं ऊँची जगह न पा सका तो इसमें मेरा कितना दोष है ? (देशमी०—रा०० वर्मा, १३६)

### ऊँची जात होना

वर्ग व्यवस्था के अनुसार ब्राह्मण, वैश्य या क्षत्रिय, जाति का वर्णन । प्रयोग—ऊँची समझी जानेवाली जातियों में सुरक्षित स्थान में पहुँच कर अपनी विशेषता बना रखने का उद्योग शुरू हुआ और इस प्रकार देश-विदेश के नाम से अपना परिचय देने की प्रथा चल पड़ी (हिन्दी सा०—ह० प्र० दि०, १००)

### ऊँची तान लेना

ऊँचे स्वर में गाना । प्रयोग—सबन मुहाई गारी दे गावति, ऊँची तान लेति प्रिय गोरी (सु०सा०—सूर, ३५२६)

### ऊँची नाक होना

मान मर्यादा का बहुत ध्यान होना । प्रयोग—शास्त्र अपनी ऊँची नाक रखते थे, पर धारकी सेवा से ढरते भी थे (देशली० (१)—चतुर०, १५२)

### ऊँची-नीची पचाना

भली-बुरी बातों को सहना । प्रयोग—संत लोग तो सबों के बचन सहते ही हैं, दुनियादार लोग भी न जाने कितनी ऊँची-नीची पचाते रहते हैं (चिंता० (१)—शुक्ल, १३६)

### ऊँची-नीची बात

भली-बुरी बात । प्रयोग—हम किसी से घृणा करेंगे तो बहुत करेंगे उसकी राह बचावेंगे उससे बोलेंगे नहीं, पर किसी पर क्रोध करेंगे तो हँस कर उससे मिलेंगे और उसे और नहीं तो इस-पांच ऊँची-नीची मुनासबे (चिंता० (१)—शुक्ल, ९९); मुग्धी जलबारी तुम हवेली की बहुत सी ऊँची-नीची बात जानते हो (पारती०—रेणु, ३७३)

### ऊँची पहुँच

दूरगति, दूर की सूझ-बूझ । प्रयोग—भाषा और वैराग्य को एक ही सठ से हाँकना हमारे द्विवेदी जी की ऊँची पहुँच का काम है (गु० नि०—वा० मु० गु०, ४४३)

### ऊँची बुद्धि

घेष्ट मति । प्रयोग—ऊँचे बड़े ऊँच बड़ सूझ । ऊँचे पास ऊँच बुद्धि बूझ (पद०—जायसी, १६५)

### ऊँची रुचि

घेष्ट रुचि । प्रयोग—मति अति नीच ऊँच रुचि धाँही (राम० (बाल)—गुलसी, १४)



ऊंची हवा में होना

32

ऊन की दून करना

**ऊंची हवा में होना**

बहुत बड़ा समझना, गर्व करना। प्रयोग—जब गोस्वामी जी अपनी पोथी के लिये ऐसी ऊंची हवा में हैं तो हम अपना चुप रहने का इरादा छोड़ कर उन्हें कुछ नीचे उतार लेना चाहिए (गु० नि०—वा० मु० गु०, ५६२)

**ऊंचे उठना**

सम्मान प्राप्त करना, उन्नति होनी। प्रयोग—जाति जिनके हाथ से ऊंचे उठी लोग उनको क्यों न हाथों हाथ लें (सुमले०—हरिऔध, ६)

**ऊंचे खाले पैर पड़ना,—नीचे पैर पड़ना**

(१) गलती होना। प्रयोग—बाबूजी, ऊंचे खाले पैर सब का पड़ जाता है (मा०—कोशिक, १९०) (÷)

(२) भ्रष्ट होना। प्रयोग—जो अच्छे घरों की स्त्रियाँ किसी बजह से पैर नीचा-ऊंचा पड़ जाने से इस पेश में आ गई हैं, वे रमजानी कहलाती हैं (ये कोठे०—अ० ना०, १८५) देखिये प्रयोग (१) में (÷) भी

**ऊंचे चढ़ना**

उन्नति करना। प्रयोग—क्या हुआ जो घर वह बढ़ गये, ऊंचे पर चढ़ गये (इं० शा०—इं० शा०, ९८); देख ऊंचे समाज को चढ़ते हैं हमी घाल मीचने वाले (सुमले०—हरिऔध, १०७)

(२) अभिमान करना।

**ऊंचे टेरेना**

जोर से पुकारना। प्रयोग—हरि भजि, बिलंब छाड़ि मुरज सठ, ऊंचे टेरे पुकार्यो (सू० सा०—सूर, ३३६) पुजिहौ देवी न देव कोऊ दिन वेद-पुरानहु ऊंचे पुकारी (मा० ग्रंथा० (२)—भारतेन्दु, ५४५)

(समा० महा०—ऊंचे पुकारना)

**ऊंचे दर्जे का**

अच्छा, श्रेष्ठ। प्रयोग—द्विवेदी जी कुछ ऊंचे दर्जे की बात कहने लगते हैं तो सड़क की धूल समेटने लगते हैं (गु० नि०—वा० मु० गु०, ४४३); पार तुम तो बहुत ऊंचे दर्जे के गर्वये हो (कुल्ली०—निराला, ५०)

**ऊंचे-नीचे पैर पड़ना**

दे० ऊंचे खाले पैर पड़ना

**ऊंचे पुकारना**

दे० ऊंचे टेरेना

**ऊंचे बोलना**

जोर से बोलना। प्रयोग—जब पिछली बेंचों पर से किसी ने चिल्लाकर पुष्पराज से कुछ ऊंचे बोलने को कहा तो मुझे पुष्पराज के बदले उस दर्शक से सहानुभूति हुई (पैतरे—अशक, ३२)

**ऊंचे मन का**

महान् श्रेष्ठ, उदार। प्रयोग—दान समें मन धन तुन सौ कुबेरहु को तनक सुमेरु महादानि ऊंचे मन को (मलि० मक०—मतिराम, १५५)

**ऊंचे विचार होना**

श्रेष्ठ विचार होना। प्रयोग—और विद्याभूषण ने लिखा था कि आपके विचार ऊंचे हैं, और आप में साधना और लगन है (शेखर(२)—अज्ञेय, २००)

**ऊंचे स्वर में**

जोर से, तारण्यतक में। प्रयोग—बोलत पिक चातक ऊंचे सुर, फेरत मनो दुहाई (सू० सा०—सूर, ३९४२); सखियन ऊंचे बंन कहे, पै कुबेर न बोले (नंद० प्रथा०—नंद०, १७१)

**ऊंट की कोई कल सीधी न होना**

वस्तुके आदमी के किसी काम का भरोसा न होना। प्रयोग—आदमी अच्छे हों, तमीज वाले हों तो कमरा छोड़ कोठरी में भी गुजारा किया जा सकता है। पर इसका क्या किया जाय कि ऊंट की कोई कल सीधी ही नहीं (पैतरे—अशक, ७४)

**ऊंट के मुँह में जीरा होना**

अधिक की आवश्यकता होने पर बहुत थोड़ा मिलना। प्रयोग—साम-दाम-दण्ड-भेद सब उपाय करने पर दो हजार ईंटे पहुँच पाती हैं, जिसे हमारे XXकान्ट्रेक्टर जी ऊंट के मुँह के जीरे से भी कम बताते हैं (मेरे०—गुलाब०, २४)

**ऊख छोड़ कर आग चिचोरना**

सारवान वस्तु को छोड़ निस्सार से सार पाने का प्रयत्न करना। प्रयोग—सूरदास प्रभु ऊख छाड़ि के चतुर चिचोरत आग (सू० सा०—सूर, ४२७०)

**ऊन की दून करना**

छोटी सी बात को बड़ी बनाना। प्रयोग—तू भी ऊन की बात दून करके बोलती है (पल्ली०—रेणु ४६९),



### ऊपर उठना

उन्नति होना, विकसित होना, खेठ होना। प्रयोग—आपका तर्क यह मान लेता है कि मनुष्य पशु से ऊपर उठ सकता है और यह कि वैसे उठना महत्व की बात है (अजय०—देवराज, ३८)

(समा० मुहा०—ऊपर चढ़ना)

### ऊपर उठाना, चढ़ाना

(१) उन्नति करना। प्रयोग—पाश्चात्य आचार व्यवहार के वैताल-संचार द्वारा वे मुर्दा जाति को ज़िलावा और अधः पतित देश को ऊपर उठाना चाहते थे (पद्मपराग—पद्म० शर्मा, २३)

(२) महत्व या प्रशंसा देना। प्रयोग—किसी को ऊपर चढ़ाने या नीचे गिराने के अभिप्राय से न मैंने कभी किसी की प्रशंसा की है न निंदा (पद्म० के पत्र—पद्म० शर्मा, १३१)

### ऊपर चढ़ाना

दे० ऊपर उठाना

### ऊपर ऊपर का

दिखावटी। प्रयोग—अबकी उसे आये छः महीने हो गये थे मगर उनका स्नेह अभी तक ऊपर ही ऊपर था (कर्म०—प्रेमचंद, १३)

### ऊपर का खर्च

इधर-उधर का फुटकर खर्च। प्रयोग—लेकिन ऊपर की घामदनी थी, तो ऊपरका खर्च भी था (गहन—प्रेमचंद, ८९)

### ऊपर की आमदनी

इधर-उधर की कमाई, घूस आदि। प्रयोग—हमारे स्थान पर कोई भी हो, ऊपर की आमदनी के बिना तो गुजारा कर ही नहीं सकता (ब्रह्म०—दे० सा० २४७); ऐसी नौकरी फिर न पाओगे। चार पैसे ऊपर की आमदनी है। नाहक खोदते हो (मान०(३)—प्रेमचंद, २३२)

### ऊपर की बात

वह बात जो हार्दिक न हो। प्रयोग—ऊपर की मोहि बात न भावें, देखे गावें तो सुन पावें (क० प्रश्ना०—कवोर, १६२)

### ऊपर की सांस ऊपर नीचे की नीचे रह जाना

बहुत डर जाना, स्तब्ध रह जाना। प्रयोग—बस पृथ्वी ना

जो ऊपर का सांस ऊपर और नीचे का नीचे (निशि०—वि० प्र०, २९३)

### ऊपर वाला

(१) अपने से ऊपरवाला अधिकारी। प्रयोग—इसके साथ-साथ यह चिन्ता भी लगी रहती है कि ऊपरवाले खुश रहें (प्रेमा०—प्रेमचंद, ३२)

(२) भगवान।

### ऊपर से नीचे गिरना

अत्यन्त अप्रत्याशित घटना के फलस्वरूप बड़ा आघात पहुंचना। प्रयोग—शेखर का मुंह खुला रह जाता है, आंखें फट सी जाती हैं, दुनिया भूल जाती है—वह कहीं बहुत ऊपर से गिरता है (शेखर (१)—अज्ञेय, १७५)

### ऊपर होना

(१) खेठ होना। प्रयोग—ये कूपमंडूक मतान्ध मूलांश नही जानते थे कि सरमद इन कुफु और कल के फलकों से बहुत ऊपर है (पद्म पराग—पद्म० शर्मा, २३४)

(२) बड़ा होना—ओहदे या उन्न में। प्रयोग—मैं जो चाहूँ सो होय मेरे ऊपर और न कोय (गु० नि०—बा० मु० गु०, ७०८)

(३) मान्य होना।

### ऊपरी

(१) सतही, जो गहरा न हो ऐसा ज्ञान। प्रयोग—एक मैं हूँ कि स्वयं अपने विषय का ऊपरी ज्ञान रखता हूँ (नट०—अज्ञेय, ९४)

(२) वैधानिक तरीकों से भिन्न।

(३) भूत-प्रेत संबंधी।

### ऊर्ध्व सांस घोंटना

योग साधना में सांस रोकना, कुम्भक। प्रयोग—तिहि मूल मोन गहे क्यों जीर्न घुटत ऊरध स्वास (सु० सा०—सुर, ४४३३)

### ऊल-जलूल बकना

बेकार बातें करना। प्रयोग—अक्सर ऐसी ऊल-जलूल बातें कह जाते हैं जिनका सिर पैर नहीं होता (पद्म० के पत्र—पद्म० शर्मा, १३४)



ऊसर की खेती होना

८०

एक-एक दिन पहाड़ सा लगना

**ऊसर की खेती होना**

असंभव होना । प्रयोग—परन्तु इस विभाग की वेतन-वृद्धि ऊसर की खेती है (मान० (८)—प्रेसचंद, ७६)

**झूण काटना**

कज लेना । प्रयोग—रिनि काट कर लीन्हेस काटी ।

मकु तहं गए होइ किछु बाड़ी (पद०—जायसी, ७१); पर क्षत्रिय का तो धर्म नहीं कि किसी के घागे हाथ पसारे, फिर कृण काहे ? (भा० प्रश्ना० (१)—भारतेन्दु, २८३)

## ए—ऐ

**एक अंग भी कच्ची न होना**

अविचलित होना । प्रयोग—मूर एकहू अंग न काँची में देखी टकटोरी (सु० सा०—सुर, ४७४६)

**एक अंग होना**

एकनिष्ठ प्रेम होना, अद्वय भाव होना । प्रयोग—कबीर दुबिधा दूर करि एक अंग है लागि (क० प्रश्ना०—कबीर, ५३)

**एक आँक**

ध्रुव बात, पक्की बात । प्रयोग—जाडं राम पहि आयसु देह, एकहि आँक मोर हित एह (राम० (अ)—तुलसी, ५४०) (समा० महा०—एक अंक)

**एक आँख देखना**

(१) एक भलक देसना । प्रयोग—इसलिए मैं सब हिसाब अपने ओर तुम्हारे बीच साफ समझूँगा यदि मैं अपने मरने के समय तुम्हें एक आँख देखूँ (भा० प्रश्ना० (१)—भारतेन्दु, ६१४); एक आँख देख कर कोई किसी को क्या समझ सकता है ? (झुठा० (१)—यशपाल, १०१); सबके-सब इस खिलाड़ी को एक आँख देखना चाहते थे, जिसकी हार में जीत का मोख बा (रंग० (२)—प्रेसचंद, ४०६) (२) सब के साथ समान भाव रखना ।

**एक आँख न भाना**

तनिक भी अच्छा न लगना । प्रयोग—बोयलों की दलाली में हाथ काले करते रहना मुझे एक आँख भी नहीं भाना (दुष्प्राप्त—द० स०, ३६०); बटों को गति की यह आचार-

निष्ठा एकआँख न भाती थी (मान० (४)—प्रेसचंद, १३५); सम्मोजान, इन लोगों का आना-जाना हमें एक आँख नहीं भाता (मा—कौशिक, ३०४)

**एक आँख से देखना**

सब को बराबर देखना या समझना । प्रयोग—पंजाब कालिज के चन्दे के लिए दौरा करने के वक्त लेक्चर में मैंने कहा था कि हिन्दू मुसलमानों को मैं एक ही आँख से देखता हूँ (गु० नि०—स० मु० गु०, २५३)

**एक आध**

कोई बिरला । प्रयोग—कहै कबीर मूर ज्ञान ये, एक आध उबरत (क० प्रश्ना०—कबीर, ३)

**एक-एक कौड़ी दांत से पकड़ना**

बहुत कंजूस होना । प्रयोग—XX जब हाथ खाली हो जाता है तब आदमी एक-एक कौड़ी दांत से पकड़ता है (मान० (४)—प्रेसचंद, १५४)

**एक-एक दिन पहाड़ सा लगना,—पल भारी होना,—पल युग सा लगना**

प्रतीक्षा की घड़ी का कष्टदायक होना, थोड़ा समय बहुत लम्बा जान पड़ना । प्रयोग—एक एक पल युग सबति कौ, मिलन कौ घतुरात (सु० सा०—सुर, ४०८१); शास्त्राचं धरु होने में अभी देर है, पर श्रोता अभी से उतावले—बेसब्र हो रहे हैं, उन्हें एक-एक मिनट भारी हो रहा है (पद्म पराग—पद्म० शमी, ४९); लूम कुल एक हफ्ते बाहर



एक-एक नस हिला देना

८१

एक चित्त होना

रही। मुझे एक-एक पल पहाड़ हो गया (गवर्न—  
प्रेमचंद, २५)

(समा० मुहा०—एक एक दिन भारी होना)

एक-एक नस हिला देना

अच्छी तरह मजा चला देना। प्रयोग—उन्हीं के चरखों  
के प्रताप से कल ये ऐसा अनमोल डाकूमेट मेरे हाथ में  
पड़ गया है कि हम इनकी एक-एक नस हिला देंगे  
(वृ०—३० ना०, २०७)

एक-एक पल भारी होना

दे० एक-एक पल पहाड़ सा लगना

एक-एक पल (मिनट) युग सा लगना

दे० एक-एक पल पहाड़ सा लगना

एक-एक बाल चुन जाना

बहुत मार पड़नी। प्रयोग—होरी ने जरा सा इशारा  
कर दिया होता, तो तुम्हारा एक-एक बाल चुन जाता  
(गोदान—प्रेमचंद, १५९)

एक कर देना

(१) यहाँ से वहाँ बहुत दौड़-धूप करना। प्रयोग—  
खजांची कलकत्ता और राजधानी एक किये हुए हैं  
(चोटों—निराला, ११७)

(२) मिला देना।

एक कलम

(१) एक बार के हुकुम से। प्रयोग—भासी राज्य की  
सम्पूर्ण सेना एक कलम बरखास्त कर दी गई (झासी०—  
वृ० ५६६)

(२) लगातार—एक साथ। प्रयोग—गहमरी जी ने  
बासठ वर्ष एक ही कलम से लिखा (वैशाली० (२)—  
चतुर०, ३१०)

(३) थोड़ी लिखावट। प्रयोग—भैया ! लिख दे एक  
कलम गत में बालम के जोग (उक्र०—दिनकर, ११)

(४) वही खाते का एक दाखिला।

एक कान से सुन कर दूसरे कान से निकाल देना  
सुनी बात पर कोई ध्यान न देना। प्रयोग—नन्हें-मुन्ने  
पंखों की माया पहने दूर से सुनती थी मजबूत की बेंटी

अपने प्रेमी के गीत—एक कान से सुनती थी दूसरे कान  
से निकाल देती थी (दुधगाछ—३० सा०, २५०)

एक की अठारह लगाना, चार जोड़ना,—  
लाख लगाना

खुब बढ़ा-चढ़ा कर बातें बनाना, दूसरे की बुराई करना।  
प्रयोग—हरीचंद ब्रज बड़े चवाई कहत एक की लाख  
लगाई (मा० ग्रंथा० (२)—भारतेंद्र, १९०); खजी वहाँ जाकर  
एक की अठारह लगावेंगे (राधा० ग्रंथा०—राधा० दास, ७७७);  
कोई सुन लेगा तो वहाँ जाकर एक की चार जड़ आवेगा  
(प्रेमा०—प्रेमचंद, १३)

(समा० मुहा०—एक की तीन लगाना, दस  
जड़ना)

एक की चार जड़ना

दे० एक की अठारह लगाना

एक की लाख लगाना

दे० एक की अठारह लगाना

एक खून होना

एक ही मां-बाप की सन्तान होना। प्रयोग—अलग हैं  
तो क्या हुआ, हैं तो एक खून (गोदान—प्रेमचंद, ३०)

एक घाट पर पानी पीना

आपस में भय न होना। प्रयोग—गठव सिध रेंगाहि एक  
घाटा। दूअउ पानि पिअहि एक घाटा (पद०—  
जायसी, ११५)

एक चावल से बटलोई भर का हाल जानना

जरा सी से पूरी का अन्दाज कर लेना। प्रयोग—एक  
चावल से ही चिलरैन पाठकों को बटलोई का हाल जानना  
होगा (गु० नि०—बा० मु० गु०, ४९३)

एक चित्त होना

(१) एकाग्र मन से करना। प्रयोग—मोहों भजी एक  
चित्त हूँ कैं, निदरि लोह-कुल कानि (सु० सा०—  
सूर, १६५१)

(२) एक मत होना। प्रयोग—मुहमद चारिउ मोत  
मिलि भए जो एकद चित्त (पद०—जायसी, ११२२)



एक झंडे के नीचे खड़े होना

८२

एक न चलना

### एक झंडे के नीचे खड़े होना

एक मत या दल में होना या लाना। प्रयोग—भाऊ अपनी बांध हैं जग में रहे एक झंडे के तले वे हो खड़े (चुभतै०—हरिऔध, १३३)

(समा० मुहा०—एक झंडे के नीचे लाना)

### एक टुक देखना

बिना पलक भ्रष्टा देखना। प्रयोग—लटकल बेसरि जननि की इकटक बस लाई (सु० सा०—सूर, ६९०); एकटक रही रूप धनुरागी (राम० बाल) —तुलसी, ३५७; घन आनन्द मोत मुजान बिना अखियन को सुभत एक टकी (घन० कवित्त—घना०, ८८)

### एक डार के तोड़े होना

एक समान। प्रयोग—जोड़ जोड़ आवत वा मयुरा तै एक डार के तोरे (सु० सा०—सूर, ४२१३)

### एक डोर में बंधना

(१) प्रेम होना। प्रयोग—बध सकेंगे न एक डोर में तोड़ करके रहा महा बन्धन (चुभतै०—हरिऔध, ९३)  
(२) विवाह होना।

### एक डेले से दो चिड़िया मारना

ऐसा काम करना जिससे दोहरा लाभ हो, दो काम बने। प्रयोग—मैं भी एक ही निबंध में इन दोनों विषयों का समावेश कर दूंगा, एक ही डेले से दो चिड़िया मार दूंगा (कुछ—प० पु० बलशी, ५)

(समा० मुहा०—एक तीर में दो निशाना लगाना, —दो शिकार करना)

### एक तार

(१) लगातार, सम भाव से। प्रयोग—कबीर हरि के नाथ मुं, प्रीति रहे इकतार (क० प्रशा०—कवीर०, ५७); पर इन काली काली घटा और गुरखेया के भोंके तथा पानी के एक तार भ्रमाके से तो कोई भी न बचेगा (भा० प्रशा०—१) —भारतेन्दु, ४४४)

(२) एक ही रूप रंग का।

### एक तिनका भी न लगाना

मुश्किल भी न समझना। प्रयोग—घन वाली की चहेती डहरी। किसी को एक तिनका क्यों लगायेंगी? (परती०—रेणु, ८०)

### एक थाली में खाना

मिश्रता होना, घनिष्ठ सम्बन्ध होना। प्रयोग—एक थाली में न खाओ, एक घर में तो रहो, इतना सम्बन्ध तो बनाये रहो (प्रेमा०—प्रेमचंद, ४३)

### एक थैली के चट्टे-बट्टे

(१) एक ही दल के, एक ही समान। प्रयोग—तुम दोनों एक ही थैली के चट्टे-बट्टे हो (मान० (४)—प्रेमचंद, ७४); एलिस, मालकम सब एक ही थैली के चट्टे-बट्टे हैं (झांसी—वृ० वर्मा, १३९)

(२) सगे भाई-बहन।

(समा० मुहा०—एक आँच के बरतन, —गुरु के चेले, —खपड़ी के नहवाये होना, —टाट के होना)

### एक दूसरे का

परस्पर। प्रयोग—जब तक बराबर सभाओं में जाकर एक दूसरे का मिर इमीलिए फोड़ते हैं जिसमें धर्म की उन्नति हो (राधा० प्रशा०—राधा० दास, ६३४)

(समा० मुहा०—एक दूसरे पर, —मैं, —से)

### एक दूसरे का हाथ पकड़ना

साथ-साथ चलना, सहारा देना। प्रयोग—परन्तु महाराज, कला कर्तव्य तो सजग किये रहे, भावना धिवेक को सम्बल दिये रहे, मनोबल और धारणा एक दूसरे का हाथ पकड़े रहे (मृग०—वृ० वर्मा, ४२२)

### एक-दो-तीन होना

चल देना। प्रयोग—राज्यधो भ्रम से थाल जमीन पर पटक कर कमरे से एकदम एक-दो-तीन हो गई (वृ०—अ० ना, ४९७)

(२) नीलाम होना।

(३) खेल का प्रारम्भ होना।

### एक धामो में पिरौना

एक साथ मिलाना। प्रयोग—मुरदास कंचन अक कांचहि एकहि धाम पिरौपो (सु० सा०—सूर, ४३)

### एक न चलना

कोई भी बधा न होना, कोई युक्ति कारगर न होना। प्रयोग—उमके सप्रेम आपह के सामने घमरकान्त की



एक न चलती (कर्म०—प्रेमचंद, २२); भानुप्रताप शासन करना चाहते पर पत्नी के आगे उनकी एक न चलती (अपनी खबर—उग्र, ७८)

(समा० मुहा०—एक न लगना)

**एक पंक्ति में बैठना**

(१) बराबर का दर्जा मिलना, एक साथ। प्रयोग—तै-मैहि रास कैलिरस अंचवो, बैठि एक ही पाति (सू० सा०—सूर, ४३७१)

(२) समान स्तर के व्यक्ति।

**एक पंथ दो काज होना**

एक काम करते दो लाभ होना। प्रयोग—ज्ञान बुझाइ खबर दे सावहु, एक पंथ दुँ काज (सू० सा०—सूर, ४०५०)

**एक पत्ती तक न तोड़ना**

कुछ न करना; बहुत सामान्य काम भी न कर पाना। प्रयोग—काउंसिल कुछ नहीं कर सकता। एक पत्ती तक नहीं तोड़ सकता (रंग० (२)—प्रेमचंद, १४२)

**एक पतिव्रत**

एकनिष्ठ प्रेम। प्रयोग—एक पतिव्रत हरि रस जिनके, शीर हृद नहि ग्राने (सू० सा०—सूर, ४१७०)

**एक पल कल्प के समान लगना**

समय का बहुत लंबा प्रतीत होना। प्रयोग—भरत रसा सुमिरत मोहि निमित्त कल्प सम जात (राम० (लं)—तुलसी, १००५)

**एक पलक**

पल मात्र में। प्रयोग—कहै कबीर करता की बाजी, एक पलक में राज विराजी (क० ग्रंथा०—कबीर, १७७)

**एक पान का दो टुकड़ा करके खाना**

बहुत पनिष्ठ होना। प्रयोग—तहसीलदार हरगोरी और तहसीलदार विश्वनाथ प्रसाद अब एक पान को दो टुक करके खाते हैं (मैला०—रेणु, २२४)

**एक पेट होना**

एक से-होना; गुप्त मंथना करके एक सा काम करने वाले। प्रयोग—ए सब दूष्ट हते हरि जेते, भए एक्की पेट (सू० सा०—सूर, ३७८९)

**एक पैर यहाँ एक पैर वहाँ**

काम की भीड़ के कारण कहीं स्थिर होकर नहीं टिक

पाना। प्रयोग—चार दिन तक ज्ञानशंकर को बैठने का अवकाश न मिला एक पैर दीवानखाने में रहता था × × दूसरा पैर शमियाने में रहता था (प्रेमा०—प्रेमचंद, ३३४)

(समा० मुहा०—एक पैर भीतर एक पैर बाहर)

**एक प्राण दो शरीर होना**

अत्यन्त पनिष्ठ होना। प्रयोग—सूर इधाम नागर, वह नागरि, एक प्राण तब दो है (सू० सा०—सूर, २५२१)

**एक फूंक में उड़ा देना**

महत्वहीन या नगण्य बना देना। प्रयोग—गोविन्दी ने इन प्रमाणों को एक फूंक में उड़ा दिया (गोदान—प्रेमचंद, १९५)

**एक भी न होना**

कुछ भी न होना। प्रयोग—कवित विवेक एक नहि मोरे (राम० (गल)—तुलसी, १६)

**एक भी रोम टेढ़ा होना**

तनिक भी क्षति पहुँचाना। प्रयोग—पर ऐसा कदापि न होने पावे कि बसंत के कारण उसके ऐसे अनुपम मित्र का एक रोम भी टेढ़ा हो (भा० ग्रंथा० (१)—भारतेन्दु, ६१४)

(समा० मुहा०—एक बाल तो टेढ़ा कर ही नहीं सकते, चाँका कर ही नहीं सकते)

**एक मुँह से कहना**

(१) सबका सहमत होना। प्रयोग—इस समय सारा चितौर एक मुँह होकर तुम्हारी प्रशंसा कर रहा है (राधा० ग्रंथा०—राधा० दास, ६२३)

(२) बार-बार कहना।

**एक मुट्ठी अन्न**

अत्यन्त थोड़ा धन। प्रयोग—हैं तरसते एक मुट्ठी धन्न को घायकी मुट्ठी नहीं अब भी चुली (चुभते०—हरिऔध, ४)

**एक मुट्ठी होना**

एक होना। प्रयोग—अब दिसांगमुखवाले एक मुट्ठी होकर रह सकेंगे (ब्रह्म०—दे०स०, २२०)

**एक म्यान में दो तलवार**

जहाँ एक की जगह हो, वहाँ दो का होना। प्रयोग—कहो नथुप, कैसे समाहिगे एक म्यान दो लांछे (सू० सा०—सूर, ४२२२); रहै क्यों एक म्यान अति दोष (भा० ग्रंथा० (२)—भारतेन्दु, ५८२)



### एक रंग में रंगना

एक सा प्रभाव या बिचार कर देना या होना। प्रयोग—  
घर्म निज रंगते दिशा म्यारी है उसे एक रंग में रंगता  
(चुमते०—हरिऔध, १७९)

### एक रस

(१) एक समान होना, पुन मिल जाता। प्रयोग—भरत  
मुभाउ सुसोवलाई, सदा एकरस बरनिन जाई। (राम०  
(बाल)—तुलसी, ५६)

(२) ऐसी स्थिति जिसमें कभी परिवर्तन न हो, भीरस।  
प्रयोग—आओ घोर, मैं घोर कुछ नहीं कर सकती, पर  
तुम्हारे इस एक रस जीवन में कुछ नयापन ला सकती हूँ  
(शेखर (१)—अज्ञेय, १०७-१०८)

### एक लाठी से सब को हांकना

घन्टे-बुरे सबको एक-सा समझना। प्रयोग—फिर यदि  
ईश्वर एक ही लाठी से सबको हाँके तो उसकी जगदीशता  
का क्या हाल हो? (५० पी०—५० ना० मि०, १२८);  
पर ये कृत्रीन औरते मुखर विरोध करने में  
असमर्थ थी, इसलिए कि मेरे उन्मत्त भाई साहब एक ही  
लाठी से दोनों ही को हाँकने में कोई स्थानि या हानि  
नहीं समझते थे (अपनी खबर—एप्र, २३); इसी धन। पर  
हमने दमन-नीति का व्यवहार किया। सबको एक लाठी  
से हाँका (रंग० (२)—प्रेमचंद, १९४)

### एक सांस में

एक बारगी। प्रयोग—छाछ का छत्रा एक सांस में चढ़ा  
गया (कठ०—दे० स०, २७१)

### एक स्वर से बोलना

(१) लगातार बोलते जाना। प्रयोग—एक मुर से बोलते  
तो क्यों नहीं मुर अगर मुर से मिलाना जानते (बोल०—  
हरिऔध, १३९)

(२) एक मत होकर कहना। प्रयोग—बोलते तो कान  
कैसे खोलते एक मुर से बोलते ही जब नहीं (चुमते०—  
हरिऔध, ११०)

### एक हाथ से ताली न बजना

(१) एक के लिये कुछ न होना। प्रयोग—दोऊ काँह  
मिलन को तो मिलाव निरधार। कबहु नाहि बाजिहे एक  
हाथ सा तार (५० स०—कुन्द, १०१)

(२) केवल एक आदमी से भगदा न होना।

### एक ही ताक

एक ही मेल के। प्रयोग—अब वे स्वाम कूबरी दोऊ बने  
एक ही ताक (सू० सा०—सूर, ४५०४)

### एक ही दाम विकना

एक से होना। प्रयोग—तैसे तुम तैसेई बँ ठाकुर, एकहि  
मोल विकाने (सू० सा०—सूर, ४५९८)

### एक ही नाव पर सवार होना

एक सी स्थिति होनी। प्रयोग—हम-तुम तो एक ही  
नाव पर सवार हे, पारल (कठ०—दे० स०, २४०)

### एड़ियां घिसना,—रगड़ना

(१) घोर परिश्रम करना। प्रयोग—घिस चुके जितना  
कि घिस सकते रहे लाभ क्या सब एड़ियां अपनी घिस  
(चुमते०—हरिऔध, ६४) (÷)

(२) कष्ट सहना। प्रयोग—है भली लगती हमें घिस घिस  
नहीं लोग एड़ी घिस रहे हैं तो घिस (बोल०—हरिऔध,  
२३३); उसकी छात्रों के सम्मुख एड़ियां रगड़-रगड़ कर  
प्राण देता, तो उसे भी अपनी कुटिलता और निर्दयता पर  
लज्जा आती (रंग० (१)—प्रेमचंद, ३०७-३०८); जब से  
देवकान्त का पिता लम्बी बीमारी में एड़ियां रगड़-रगड़  
कर चल बसा था, मां ने अपने हाथों के परिश्रम से ही  
पर चलाया था (ब्रह्म०—दे० स०, १८७) देखिए प्रयोग  
(१) में (÷) भी

### एड़ियां रगड़ना

#### दे० एड़ियां घिसना

#### एड़ी चोटी का जोर लगाना,—पसीना एक करना

घोर उद्योग करना। प्रयोग—पुलिस ने एड़ी-चोटी का जोर  
लगाया, कि मुलजिमों में कोई मुखबिर बन जाय, पर  
उसका उद्योग सफल न हुआ (गजल—प्रेमचंद, ३१३); लोग  
चोटी घोर एड़ी का घगर एक करते हैं परमात्मा तो करे  
(बोल०—हरिऔध, २३३)

#### एड़ी चोटी का पसीना एक करना

#### दे० एड़ी चोटी का जोर लगाना

#### एड़ी से चोटी तक

सिर से पैर तक। प्रयोग—उसमें दिखना पड़ी दिखावट  
एड़ी से चोटी तक देखा (बोल०—हरिऔध, २३४); एक  
विजली सी उसके शरीर में एड़ी से चोटी तक कौद गई  
(ज्ञान०—यशपाल, १००)



एड़ी से चोटी तक जल जाना

८५

एँड निकल जाना

**एड़ी से चोटी तक जल जाना**

(१) बहुत नाराज होना। प्रयोग—देखते ही बामुदेव महाराज एड़ी से चोटी तक जल उठे (गौली—चतु०, १९६)

(२) बहुत ईर्ष्या होनी।

(समा० मुहा०—एड़ी से चोटी तक आग लगाना)

**एहसान का नमदा कसना**

किसी के लिए कुछ करके उपकृत करना। प्रयोग—एक रुपये में यदि दस बीस बुद्धों पर एहसान का नमदा कसा जा सके तो क्या बुरा है (गोदान—प्रेमचंद, ९२)

**एहसान का टोकरा लादना,—खोपड़ी पर लादना**

अपने किये हुए उपकार की याद दिलाना। प्रयोग—आप उसटा हमारी खोपड़ी पर एहसान लादते हैं (मिलान—कौशिक, १३३); अपनी समझ में एहसान का टोकरा लाद ही देती थी (मा—कौशिक, १४९)

(समा० मुहा०—एहसान जताना,—सिर पर लादना)

**एहसान खोपड़ी पर लादना**

दे० एहसान का टोकरा लादना

**ऐंठ**

अकड़—घमण्ड। प्रयोग—मिट गये पर ऐंठ है अब भी बनी है अब बघी हमारी खोपड़ी (चुमते०—हरिऔध, १००)

**ऐंठ-ऐंठ कर रह जाना**

दिल मसोस कर रह जाना। प्रयोग—विश्वम्भर दिल में ऐंठ कर रह गया (गदन—प्रेमचंद, २३०)

**ऐंठ कर**

अभिमान से। प्रयोग—बोलती ऐंठ-ऐंठ कर जब भी जीभ तब ऐंठ क्यों न दी जाती (चौखे०—हरिऔध, ९३)

**ऐंठ कर चलना**

गर्व से चलना। प्रयोग—किन लोगों को पैसे की गर्मी हो गई है, कौन राह चलते ऐंठ कर चलते हैं (मैला०—रेणु, १७४)

**ऐंठ निकल जाना**

गर्व दूर होना। प्रयोग—जब निकल ऐंठ ही गई सारी

तब भला मूछ किसलिए ऐंठे (चुमते० हरिऔध, ४१)

**ऐंठ में रहना**

घमंड में चूर रहना। प्रयोग—तदपि इन सबों में ऐंठ देगी बड़ी ही लज दुखित जनों को ए नही ममान होते (प्रिय०—हरिऔध, २२५) ऐंठ में आप बंटे हो रहे इधर महाराज के दर्शन कर मैं पुनः जवान हो गया (गंगा०—उग्र, ११-१२)

**ऐंठ लेना**

(१) होशियारी से ले लेना। प्रयोग—कहीं अम्मा से १० उड़ा लाये, कहीं भग्वाजान से किताब के बहाने से पांच-दस ऐंठ लिये (कर्म०—प्रेमचंद, ६४)

(२) दबा लेना।

(समा० मुहा०—ऐंठ रखना)

**ऐंठना**

अभिमान करना। प्रयोग—अब तो तरकि तरकि ऐंठति है केनी लेति बनाइ (सू०सा०—सूर, ३०२३) ऐंठ ऐंठ बातें करता है। भीहि है मटकाता (मर्म०—हरिऔध, ११८) जिन बाजारों में मनचले जवान अस्व-गस्व सजाये ऐंठते फिरते थे, वहां उल्लू बोल रहे थे (मान० (३)—प्रेमचंद, १४५)

(२) बसूलना। प्रयोग—ईं दिन की चादनी ऐंठि जग तुन सम जान (राधा० प्रथा०—राधा० दास, ५०); धूल दे पांथ की टका ऐंठे धूलपन को भभूत दे पाले (चुमते०—हरिऔध, १२३); सिपाही ने समझा या शिकार फंसा, इससे कुछ ऐंठूंगा (मान० (४)—प्रेमचंद, २०३)

**ऐंठे जाना**

सीधे मुंह बात न करना, घमंड करना। प्रयोग—कितने मुफजिश कल्लांच पाकेमस्त जब अपने हाड़ के उलमता की देखीमें ऐंठे जाते हैं तो देखते ही बनता है (मट्ट नि०—बा० मट्ट, १८-१९)

(२) ठंड के मारे ठिठुरे जाना।

**ऐंड़ निकल जाना**

गर्व दूर हो जाना। प्रयोग—ताज ऊंचे जिन काज सगो तिनहीं सों पगो जिन रंग-रंग हो। ऐंड़ सर्वे निकसीगी अब धन खानंद जानि कहा उतए हो (धन० कवित्त—धना०, १९८)



### ऐंड़दार

घमण्डी । प्रयोग—जेते ऐंड़दार दरवार—निरदार घब,  
ऊपर प्रताप दिल्लीपति को अभंग भी (मति० मक०—मति-  
राम, १५५)

### ऐंड़ा-ऐंड़ा डोलना

घमंड में चूर रहना । प्रयोग—वै बिलोंकीनाथ चाहत है  
काहे न ऐंड़ी डोलें (सू० सा०—सूर, ४२६३); ऐंड़ि ऐंड़ि  
बतलाहि भानुके सम्मुख जुगनू (कुण्ड०—गिरधर दास २२);  
है सांवरो सो लगर होटा ऐंड़ी होले (भा० प्रथा० (२)—  
भारतेन्दु, ५७)

(समा० मुहा०—ऐंड़ा-ऐंड़ा फिरना)

### ऐन नाक पर

बहुत पास । प्रयोग—इस प्रकार वैशाली की ऐन नाक  
पर यह पाटनिग्राम मागधों का नैनिक स्कंधावार बनता जा  
रहा है (वैशाली० (२)—चतु०, १११)

### ऐरे गैरे नत्थू खैरे

ऐसे व्यक्ति जिनसे अपना विशेष संबंध नहीं; फालतू  
व्यक्ति । प्रयोग—आर्य जाति की गोद से छूटकर प्रभु-  
ईसासमीह के गल्ले में मिलने वाले निरे नीच और ऐरा-  
गैरा नत्थू खैरा हो न थे, उनमें गोलकनाथ और नीलकंठ  
शास्त्री जैसे द्विज निरोमणि विद्वान भी थे (पद्य पराग  
—पद्य० शर्मा, १४); मैं पानी-याड़े घोड़े ही हूँ जो ऐरे-  
गैरे नत्थू-खैरे सबको पानी पिलाता फिर (चतुरी०—निराला,  
१२)

(समा० मुहा०—ऐरे गैरे पंचकल्याणी)

### ऐसी की तैसी

"हमें कोई परवाह नहीं"—इस अर्थ में प्रयुक्त होता है ।  
प्रयोग—बैठका खोलते ही उन्होंने पूछा—डिप्टी साहब ?  
मैंने कहा—घपनी ऐसी की तैसी में चले गए (कुल्लो०—  
निराला, ११८)

## ओ—औ

### ओंठ चबाना

क्रोध या दुःख प्रकट करना । प्रयोग—पिताजी ने होठ  
चबाकर कहा—हम जैसा कहते हैं, कर (कुल्लो०—निराला,  
४०); सूरदास को देखता तो ओंठ चबाकर रह जाता  
(रंग० (२)—प्रेमचंद, ११०)

### ओंठों पर खेलना,—नाचना

हंसी की हल्की रेखा चेहरे पर प्रकट होनी । प्रयोग—  
वह मुसकराहट जो उस समय भी उनके अधरों पर खेल  
रही थी वह आत्माभिमान जो उस समय भी उनके मूल  
से टपक रहा था, क्या कस्या के हृदय से कभी विस्मृत

हो सकता था (मान० (१)—प्रेमचंद, ३८); एक मुहुर्त के  
लिए एक भीगी हंसी की रेखा उनके सूखे अधरों पर खेल  
गई (दाण०—ह० प्र० द्विव०, १३८); व्याकुलता प्राणों में  
बसती हंसी अधर पर करती नतन (स्वर्णधूलि—पंत, ७२)

(समा० मुहा०—ओंठों पर हंसी दौड़ जाना)

### ओंठों पर हंसी नाचना

दे० ओंठों पर हंसी खेलना

### ओंठों से हंसी फूटना

हंसी प्राना । प्रयोग—उसकी आँखों और ओंठों से हंसी  
फूटी पड़ती थी (ज्ञान०—यशपाल, १३४)



### ओखली में सिर देकर मूसलों को न गिनना,— न डरना

किसी कामको शुरू कर लेने पर फिर कठिनाइयों या कष्टों की ओर ध्यान न देना। प्रयोग—तब भला वह मूसलों को क्या गिने जब किसी ने ओखली में सिर दिया (चुभते०—हरिऔध, १०); यह तो सरासर ज्यादाती है मेरे साथ परन्तु जब ओखल में सिर दिया तो मूसल का क्या डर (सु० सु०—सुदर्शन, ८८); मैंने भी सोचा—जब ओखली में सर दिया तो चोटों से क्या डरना ?

### ओखली में सिर देकर मूसलों से बचना चाहना

कोई काम शुरू करके उसके परिणाम से बचना चाहना। प्रयोग—अब ओखली में सिर डालकर तुम मूसल से नहीं बच सकते (कर्म०—प्रेमचंद, ४६)

### ओखली में सिर देना

(१) जानते हुए विपत्ति में पड़ना। प्रयोग—पराई घालोचना करने को निकलना ओखली में सिर देना है (गु० नि०—बा० मु० गु०, ५०५)

(२) कष्ट सहने पर उतारू होना।

### ओछा होना

छोटा होना। प्रयोग—वे इन डेरेशरों की दृष्टि में ओछी थीं (ये कोठे०—अ० ना०, ११२) (÷)

(२) नीच होना। देखिए प्रयोग (१) में (÷)

(३) कम होना।

### ओछी नजर से देखना

बुरा समझना। प्रयोग—लेकिन कोई समझदार इन्सान आज भी किसी शरीफ लड़की लड़के को तवायफ की ओलाह होनेकी वजह से ओछी नजर से नहीं देखेगा (कोठे०—अ० ना०, ९६)

### ओछे घर में धन आना

ऐसे व्यक्ति को धन मिलना जो न अपने न दूसरों के लिए उसे खर्च कर सके। प्रयोग—डारत खात देत नहिं काहें ओछे घर निधि आई (सू० सा०—सूर, २८६०)

### ओट में

(१) शरण, रक्षा। प्रयोग—कबीर केवल राम की, तू जिनि छाड़े ओट (कबीर ग्रंथा०—कबीर, २६)

(२) बहाने से—हीले से।

### ओट लेना

सहारा लेना। प्रयोग—कहि कबीर भवसागर तरन की में सति गुरू ओट लयो (कबीर ग्रंथा०—कबीर, २९४); छाड़ि सबल अस निबल की, कबहु न गहिमें ओट। जैसे टूटी डार को लगे बिलम्ब ओट (वृ० स०—वृ०, ६१)

### ओढ़ना बिछौना होना

हर समय साथ होना। पूरा प्रभाव होना। प्रयोग—लोभइ ओढ़न लोभइ दासन सिस्नोदर पर जमपुर पासन (राम० (६)—तुलसी, १०६५)

### ओढ़ें कि बिछावें

लेकर क्या कर, निरुपयोगी वस्तु। प्रयोग—दुसह बचन जलि हमहि न भावें, जोग क्या ओढ़ें कि दसावें (सू० सा०—सूर, ४७१२)

### ओस पड़ना

नष्ट होना। प्रयोग—यह बात जो जी में गड़ गई है। एक ओस सी मुझ पे पड़ गई है (इंशा०—इंशा०, १०७); जीवन की सारी अभिलाषाओं पर ओस पड़ गई (रंग० (२)—प्रेमचंद, ३४४); समझ बल बसी, बिचारों का दिवाला निकल गया, आस पर ओस पड़ गई (चुभते० (मू०)—हरिऔध, ४)

### औंधी खोपड़ी होना

मूर्ख होना, बात का उल्टा अर्थ लगाने वाला। प्रयोग—लेकिन ये रुपए वाले कुछ ऐसी औंधी खोपड़ी के लोग हैं कि जो उनका उद्धार करने आता है उसी के दुश्मन हो जाते हैं (मान०(२)—प्रेमचंद, ३५); मिट गए पर एंठ है अब भी बनी है अजब औंधी हमारी खोपड़ी (चुभते०—हरिऔध, १००)

### औंधे मुंह गिरना

(१) बुरी तरह धोखा खाना। प्रयोग—हम भला कैसे न औंधे मुंह गिरें हैं अजब औंधी हमारी खोपड़ी (बोल०—हरिऔध, २३)

(२) मुंह के बल गिरना।

(समा० महा०—औंधे गिरना)

### औघट घाट

दुर्गम पथ। प्रयोग—गलतको न तो मानना गलत, न औघट घाटों से डरना (मर्म०—हरिऔध, १४३)



**औषट घाट उतारना**

मुसीबत में डालना । प्रयोग—सोग शुरू से ही कहा करते थे कि यह सेठ को अपने यहां बहुत बुलाता है, किसी समय उन्हें औषट घाट ही जा उतारेगा (ये कोठे—अ० ना०, १८)

**औने पौने करना**

(१) जितना दाम मिले उतने ही पर बेच डालना । प्रयोग—कल की जदापगी के लिए ही × × वे अपनी तमाम जाय-दाद सड़े-खड़े जाने-पौने करने लगे (बूँद०—अ० ना०, ५७८)  
(२) इधर-उधर कुछ कर लेना । प्रयोग—मैं तो उन सबको पापी समझता हूँ, जो औने-पौने करके, इधर का

सोदा उधर बेचकर, अपना पेट पालते हैं (रंग० (१)—प्रेमचंद, ३३)

(समा० मुहा०—औने पौने देना)

**औने पौने निकालना**

हानि उठाकर भी बेच देना । प्रयोग—मैंने तो यही सोचा कि कोई ग्राहक लग जाय तो इनके को औने पौने निकाल दूँ (मान० (१)—प्रेमचंद, ३०५)

(समा० मुहा०—औने पौने बेचना)

**और की और**

दूसरी या असंबंधित बात । प्रयोग—मधुकर तुम ही चतुर समाने । कहत और की और (सू० सा०—सूर, ४४७७)

## क

**कंगल टिरे होना**

गरीब । प्रयोग—भीड़ बहुत ही है, मेला दरिद्र और मेले लोगों का । यहां के लोग बड़े ही कंगल टिरे हैं (भा० ग्रंथा० (३)—भारतेन्दु, ९५१)

**कंधी चोटी करना,—पट्टी करना**

बनाव सिगार करना । प्रयोग—इन औरतों की तंबाकू भी XX मेहमान दरवाजे पर खड़ा हो तो ये कंधी पट्टी में जुट जायंगी (पैतरे—अशक, ६०); तब से सारा मरदानापन भागा जबसे सीखा कंधी-चोटी करना (बोल०—हरिऔध, ७)

**कंधी पट्टी करना**
**दे० कंधी चोटी करना**
**कंचन बरसना**

प्रत्यन्त खान होना, समृद्धि और शोभा से युक्त होना ।

प्रयोग—मैं तुम्हारी जगह होती तो दिखा देती कि इसी नौकरी में कैसे कंचन बरसता है (रंग० (२)—प्रेमचंद, २२२)

**कंटक होना**

कष्टदायक होना । प्रयोग—हारजीर कंचुकि कंटक भए, तरनि तिलक भयो भाल (सू० सा०—सूर, ४३५४)

**कंठ करना**

(१) जवानी याद करना या रखना । प्रयोग—यह छोटे हो पन में ऐसा श्रुतिधर था कि एक बेर जो मुनता था जो कन्ना देखता कंठ कर लेता और जान जाता (भा० ग्रंथा० (३)—भारतेन्दु, ६२); क्यों न होता दुतार दुनिया में प्यार का पाठ कंठ जो होता चौसे—हरिऔध, २५)

(समा० मुहा०—कण्ठ रखना, कण्ठस्थ करना)



### कंठ खुलना

आवाज साफ़ होनी, आवाज निकलना। प्रयोग—भाग खुल जाये खुले अब कण्ठ जो (बोल०—हरिऔध, १३८); इसबार मेरा कण्ठ खुला (राधा०—ब० स०, १९)

### कंठ फूटना

(१) घंटी फूटना—सुवाकस्या आरंभ होने पर आवाज का बदलना। प्रयोग—लड़केका कंठ फूट आया हैXअब बबुआ नहीं है (कुब्जी०—निराला, १५); कुछ कहें तो भला कहें कैसे कंठ भा आज तक नहीं फूटा (चोखे०—हरिऔध, १०६)  
(२) मुँह से शब्द निकलना। प्रयोग—कुछ कहें कंठ तब भला कैसे कंठ ही फूट अब नहीं पाया (बोल०—हरिऔध, १३९)

(३) तोते आदि के गले में रंगीन धारी निकलना।

(समा० मुहा०—कंठ फूट निकलना)

### कंठ मिलाकर

स्वर मिलाकर। प्रयोग—बार-बार रोनी राखीकी लहरों से निज कंठ मिलाकर देवि ! तुझे सच सला चुका हूँ सुने में घांसु बरमाकर (चक्र०—दिनकर, १८)

### कंठ में कफ अटकना

अंत समय निकट आना। प्रयोग—सूरदास सठ तब हरि मुमिर्यो अब कफ कंठ गह्यो (सू० सा०—सूर, ३२७)

### कंठ रसीला होना

स्वर में माधुर्य होना। प्रयोग—खींचते कंठ हैं घलपों का रस बरसते हुए रसीले कंठ (बोल०—हरिऔध, १३८)

(समा० मुहा०—कंठ मधुर होना)

### कंठ लगाना

(१) लिपटना। प्रयोग—कंठ लागि सो होसुर रोई (पद०—जायसी, १९११)

(२) प्रेम से मिलना। प्रयोग—वे भला कंठ से लगे कैसे कंठ पर तो कुठार है चलते (बोल०—हरिऔध, १३९)

### कंठ लगाना,—लाना

बहुत स्नेह करना, आलिंगन करना। प्रयोग—निमि राजै रानी कंठ लाई (पद०—जायसी, ५४५); मोहन बदन बिलोकि मानि रुचि हंसि हंसि कंठ लगाए (सू० सा०—सूर, ४००९); प्रातःपिबारे मो पावन लाग्योरी, मैं हंसि कंठ लगान न

लीनो (मति० मक०—मतिराम, १११); प्यारे जू है जग की यह रीति विदा की एमे सब कंठ लगावे (मा० ग्रंथी० (२)—भारतेन्दु, १५८)

### कंठ लाना

दे० कंठ लगाना

### कंठ सींचना

किसी पेय से मूला गला तर करना। प्रयोग—तब भला क्या उमड़ घुमड़ करके मेघ तू है बरस बरस जाता एक प्यासे हुए पपीहे का कंठ ही सींच जब नहीं पाता (चोखे०—हरिऔध, १०३)

### कंठ होना

सुरीला स्वर होना। प्रयोग—गीत क्यों कंठ के बिना गावें (बोल०—हरिऔध, १३८)

### कंठा फूटना

सुग्गे के गले में कंठों का चिन्ह पड़ना (उम्र के कारण)। प्रयोग—हीरामन हों तेहि क परेवा। कंठा फूट करत तेहि सेवा (पद०—जायसी, ९१२)

### कंधा उठाना

योगी बनाना। प्रयोग—वे मेरे सिर पटिया पारें, कंधा काहि उड़ाऊँ (सू० सा०—सूर, ४७४४)

### कंधा पहनना

योगी बनना। प्रयोग—तू राजा का पहिरनि कंधा। तोरें पटहि मांह दस पंचा (पद०—जायसी, ११६)

### कंधा भाड़ना

सजग एवं प्रस्तुत होना। प्रयोग—कंधा भाड़ कर एक बार अपने केशों को फिर संपत करने के बाद उसने कहा—मुनिए (वाण०—ह० प्र० दि०, २१४)

### कंधा डाल देना

(१) अधीनता स्वीकार कर लेना। प्रयोग—आज तक हम सके न कंधा डाल, कौन कहता है सिर गया है घूम ? (मर्म०—हरिऔध, ९७); एकदम से कंधा मत डालो पहले कोशिश तो करो (मा—कौशिक, ३७३)

(२) धक कर पस्त हो जाना।



### कंधा देना

(१) धरणी उठाना । प्रयोग—हम तो मर भी जाते हैं तो कोई दुआर पर भोकने नहीं आता, कंधा देना तो बड़ी बात है (मान० (१)—प्रेमचन्द, १३०); पाव से जिनको कुचलते ही रहे आज क्या कंधा उसे देने चले (बोल०—हरिऔध, १४६); दिया है उन्हें तूने कभी कंधा ? (बुद्ध०—वज्रन, ९८)

(२) अपनाना । प्रयोग—हम विचार अस धावें मेरहि दीज न कंध (पद०—जायसी, ४६७)

(३) बोझ उठाने में सहायक होना ।

### कंधा पकड़ कर चलना

दुसरे के सहारे काम करना । प्रयोग—जो कंधा पकड़े औरों का आँखों को कर बंद चले (मर्म०—हरिऔध, १४८)

### कंधा लगाना

भारी बोझ उठाने के कारण कंधे में पाव होना । प्रयोग—साग से ही जाति-हित गाड़ी खिचे । लग गया कंधा बला से लग गया (चुमते०—हरिऔध, २९)

### कंधा लगाना

(१) बोझ उठाने में योग देना । प्रयोग—जबकि कंधा था लगाना चाहता आह ! हमने डाल तब कंधा दिया (चुमते०—हरिऔध, ६४)

(२) किसी के सम्मान में उसका सिंहासन उठाना । प्रयोग—पहले तो विजयादशमी के दिन यहाँ के बड़े-बड़े महाजन रात्रि को जब विमान उठता था जामा पगड़ी पहिर कर कंधा लगाते थे (राधा० प्रश्ना०—राधा० दास, ३२०)

### कंधा से कंधा छिलना

बहुत भीड़ होनी । प्रयोग—हमलोग ठाकुर द्वारे में पहुँचे तो दर्शकों की भीड़ लगी हुई थी, कंधे से कंधा छिलता था (मान० (१)—प्रेमचंद, १५७); घसली रौनक तो संध्या समय ही होती है । कंधे से कंधा छिलता है (झुठा० (२)—यशपाल, १६४)

(समा० मुहा०—कंधे से कंधा रगड़ा जाना)

### कंधे से कंधा मिड़ाकर,—मिलाकर,—लगाकर

(१) आपस में सहयोग के साथ । प्रयोग—हम सब जब कंधे से कंधा मिड़ाकर लड़ रहे थे, सब एकाकार था, सब इन लोगों की छूत-छात को मानते तो एक—एक करके गिन-

गिन कर मारे जाते (मृग०—वृ० वर्मा, ४४); जाति और देश की सेवा सदा लोग कंधे से मिला कंधा करें (चुमते०—हरिऔध, ३३); तीनों जने मिल कर काम कीजिये कंधा से कंधा लगा कर (परती०—रेणु, ७०)

(२) समान स्तर पर । प्रयोग—वह मदें का आश्रय नहीं चाहती, उससे कंधा मिला कर चलना चाहती है (गोदान—प्रेमचंद, ७८); वह होड़ बन्द कर अपने पति से कंधे से कंधा मिड़ा कर खड़ी होती थी, किन्तु क्या सच-मुच उसकी उंचाई पर पहुँचती था (बीने०—रा० रा०, ४२)

### कंधे से कंधा मिला कर

दे० कंधे से कंधा मिड़ाकर

### कंधे से कंधा लगाकर

दे० कंधे से कंधा मिड़ा कर

### कंधों पर आना

किसी काम का उत्तरदायित्व घाना । प्रयोग—घब उनका काम भैया हरीकृष्ण के कंधों पर आ पड़ा (बाहर०—देव०, ७)

### कंधों पर उठाना

किसी कार्य की जिम्मेवारी लेना । प्रयोग—पर सच वह अवश्य कहती है कि दुःख किसी का अवश्य है, प्रश्न यह है कि कौन बढ़ कर उसे अपने कंधों पर ले ले (शेखर (२)—अज्ञेय, ७९); धासन कार्य का इतना बोझ कंधों पर उठाये भी आप साहित्य का इतना अध्ययन कर सकते हैं ? (झुठा० (२)—यशपाल, २१४)

(समा० मुहा०—कंधों पर लेना)

### कंधों पर पड़ना

दायित्व ऊपर पड़ना । प्रयोग—संसार की नयी ज्योति देने की जिम्मेदारी आज हमारे तरफ साहित्यकारों के कंध पर पड़ी है (अशोक०—ह० प्र० द्वि०, ४६)

### कंधों पर बोझ होना

दायित्व ऊपर होना । प्रयोग—इन सब का भार उसी के कंधों पर था (सु० सु०—सुदर्शन, १४५)

(समा० मुहा०—कंधों पर होना)

### कंधों पर लेना

दे० कंधों पर उठाना



**कंपकंपी आना,—पैदा होना,—कंपनी छूटना**  
 अत्यन्त भयभीत होना । प्रयोग—कोउ अपने जिय मान  
 करो भाई मोहि तो छूटति प्रति कंपनी (सू० सा०—सूर,  
 २७१०); राजा में समस्त राजकीय प्रभुता के गुण ऐसे  
 ही उद्घुष्ट हैं जिनका ब्याल भी मन में आने से कंपकंपी  
 पैदा होती है (महू नि०—बा० महू, ९); तब भला क्या  
 खड़े हुए रण में हे अगर कंपकंपी हमें घाती (बोल०—  
 हरिऔध, १७९)

(समा० मुहा—कंपनी चढ़ना)

**कंपकंपी पैदा होना**

दे० कंपकंपी आना

**कंपनी छूटना**

दे० कंपकंपी आना

**कंबल तान कर सोना**

निश्चित रहना । प्रयोग—भाणों के सामने, दिन दहाड़े  
 जल्म होता है धीरे हमारे सोमलिस्ट और कौमलिस्ट  
 भाई कमलिया तान कर मोये रहते हैं (परली०—रेणु, ९६)

**कई कदम पीछे छोड़ना**

किसी काम में किसी से आगे बढ़ जाना । प्रयोग—असह-  
 योग में लगे तो महात्मा गांधी को भी कई कदम पीछे  
 छोड़ गये (पद्म पराग—पद्म० शर्मा, ७६)

**कचर-कचर कर खाना**

खुब भर पेट भोजन करना । प्रयोग—हां जी, यह सब  
 मिथ्या एक प्रपंच है, खुब मजे में मांस कचर-कचर के  
 खाना और चैन करना (भा० ग्रंथा०—भारतेन्दु, ७१)

(समा० मुहा०—कचर कूट करना, कचर कूट खाना)

**कचहरी के कुत्ते**

कचहरी आने वालों की ओर ताक लगाए बैठे लोग ।  
 प्रयोग—अकेले न जाना, नहीं तो कचहरी के कुत्ते तुम्हें  
 बहुत दिक करेंगे । मैं तुम्हारे साथ चल्दूंगा (रंग० (२)—  
 प्रेमचंद, १६४)

**कच्चाई**

दुर्बलता, अस्थिरता । प्रयोग—क्यों बचाई जा सकेगी पत  
 बची जब कच्चाई है कलेजेमें कसी (चोखे०—हरिऔध, १७०)

**कचूमर निकलना**

बहुत परिश्रम पढ़ना । प्रयोग—दीड़ते-दीड़ते कचूमर निकल  
 गया (कर्म०—प्रेमचंद, ३२०); कलकत्ते के प्रेस बड़े ही रही  
 हैं । प्रूफ पढ़ते-पढ़ते आंखों का तेल और कमर का कचू-  
 मर निकल गया (पद्म० के पत्र—पद्म० शर्मा १५०)

**कचोट खाना**

दुखी होना । प्रयोग—पर उसका मन भीतर ही कचोट  
 खा गया (बीने०—रा० रा०, १०३)

**कच्चा**

(१) वह वस्तु या काम जो अभी पूरा न हुआ हो ।  
 प्रयोग—वहां सम्मेलन में सेंक से निकलवाकर सत्यनारा-  
 यणजी की जीवनी देखी । उसमें तो अभी कच्चा मसाला  
 संग्रहीत है, प्रेस में देने लायक नहीं (पद्म० के पत्र—पद्म०  
 शर्मा, ५७)

(२) अपरिपक्व ।

**कच्चा खा जाना**

अत्यंत क्रुद्ध होना, दुःख देना । प्रयोग—मिसेज टंडन  
 धीरे से बोलीं—तुम्हें कच्चा ही खा जायंगी (मान० (१)—  
 प्रेमचंद, २७०); अग्रे जकौन कच्चा खाये जाते हैं (शांसी०—  
 वृ० वर्मा, १५३)

**कच्चा खेल**

मामूली साधारण खेल । प्रयोग—यह काचा खेल न  
 होई जन बरतर खेले कोई (कवीर ग्रंथा०—कवीर, १४६)

**कच्चा चिट्ठा,—कच्ची पोल**

सारा भेद । प्रयोग—भाई-बहिन दोनों एक दूसरे की  
 कच्ची पोलें जानते थे मगर जबान पर नहीं ला सकते थे  
 (बुंद—अ० ना०, १६५); मैं इन सबों के कच्चे चिट्ठे  
 जानता हूँ (मान० (४)—प्रेमचंद, ४१); बजकिशोर मेरा  
 कच्चा चिट्ठा जानता है (मिला०—कौशिक, १५५)

**कच्चा चिट्ठा कहना,—खोलना**

भला-बुरी सब बातें खोल कर कहना । प्रयोग—मैंने  
 उसने सारा कच्चा चिट्ठा कह दिया (मिला०—  
 कौशिक, ४५); अगर उन्होंने अपना बयान न बदला, तो  
 मैं जदालत में जाकर सारा कच्चा चिट्ठा खोल दूंगी  
 (गबन—प्रेमचंद, २४४)



## कच्चा चिट्ठा खोलना

### दे० कच्चा चिट्ठा कहना

#### कच्चा धागा

(१) वह सबंध जो सहज टूट जाय। प्रयोग—हिन्दूधर्म एक कच्चा धागा, छईं मुई का पौधा या मकड़ी का जाला बना हुआ था कि जरा किसी ने छूजा, उंगली उठाई फूट मारी नहीं कि वह टूट गया और मूरजा गया (पद्म पराग—पद्म० शर्मा, १४)

(२) जीण महारा। प्रयोग—आशा का कच्चा धागा मुझे सब भी जीवन से बांधे हुए है (मान०—(७)—प्रेमचंद, १५)

#### कच्चा पड़ना

(१) सिरपिटाना, संकुचित होना। प्रयोग—उन्हें हिम्मत हुई। एजाज मुसलमान हैं, इससे काम निकल सकता है। फिर कच्चे पड़े (चोटो०—निराला, १८)

(२) अप्रामाणिक या झूठा ठहरना।

#### कच्चा पथ

गलत रास्ता। प्रयोग—इस देश की धर्मनीति और राजनीति में वह बड़े कच्चे पथ पर चलता है (गु० नि०—हा० मु० गु०, २८१)

#### कच्चा मन होना

दुर्बल मन होना। प्रयोग—भंगल मंहुं भय मन अति काना (राम० (सु)—तुलसी, ८३३) जयमाला छापे विलक सरै न गुनो काम् मन-कायै नाबै बुधा सांवे राबै राम् (विहारी रत्ना०—विहारी, १४१); कच्चे मन सा कांच पाथ, जिसमें चोटन की रहना (स्वर्णधूलि—पंत, ५७)

(२) अनुभवहीन। प्रयोग—बेध्या के सम्बन्ध में दोहरे भाव मेरे कच्चे मन में समा गए (दो कोठे०—अन्ना०, १३)

#### कच्चा माल

वह माल जिससे और दूसरी चीजें तैयार की जायें। प्रयोग—मुझे तो भय है कि यहाँ कच्चा माल मिलने में कठिनाई होगी (रंग० (१)—प्रेमचंद, १६)

#### कच्चा होना

(१) पूरी तरह विश्वास न करने वाला। प्रयोग—पतलन साको जो हो बाको सो तो आही पाकी, आनंद के घन प्रीति साको न बिमारिय (घन० कवित्त०—घना०, २२५);

हम है लोथ—लोथ का कच्चा कभी न कच्चा (लिली—निराला, ७३)

(२) अनुभवहीन होना, गलत होना, अपरिपक्व होना। प्रयोग—अब उसके दिल में जलन न थी जो किसी कच्चे कवि के हृदय में दूसरे कवि को देख कर होती है (सु० सु०—सुदर्शन, १८०); अनुमान क्या कच्चा मालूम होता है (मान० (३)—प्रेमचंद, ८९); मास्टर जी की प्रेस के काम का अनुभव जरूर नहीं था परन्तु इतने कच्चे भी नहीं थे कि रहस्य न समझ पाते (झुठा० (२)—यशपाल, ३५३)

(३) नरम दिल। प्रयोग—दिल्ली से जो राजनीति जोधपुर में आई है, उसका मेरे साथ आपने प्रयोग नहीं किया ? आप अभी कच्चे हैं (विप०—प्रेमी, ९५)

(४) कच्ची सिलाई।

(५) हतोत्साह होना।

#### कच्ची उछ,—जधानी

कम उछ, अनुभवहीन। प्रयोग—कच्ची उछ तो नहीं मेरी कि व्यर्थ घोंस सहूँ (दूधगाछ—दे० स०, २५४); वह भी कच्ची उछ की नहीं है (बूद०—अ० ना०, २१९); तब भी मेरी कच्ची जवानो (बुद०—दत्तन, ८६)

#### कच्ची गगरी होना

शरा भंगुर। प्रयोग—अमर जानि संचो इहि काया इह मिथ्या काची गगरी (कबीर प्रथा०—कबीर, ३१९)

#### कच्ची गोली खेलना

अनुभवहीन होना। प्रयोग—मगर चौधरी कच्ची गोलीयां न खेला था (गोदान—प्रेमचंद, ३३); यदि ये लोग समझते हैं कि अपेक्ष कच्ची गोलीयां खेल कर बड़ा हुआ है तो वह उनको भूल है (ब्रह्म०—दे० स०, २४७); बिजनाय बाबू कच्ची गोली नहीं खेलते हैं (ना—कौशिक, ३८७)

(समा० मुहा०—कच्ची गोटी खेलना)

#### कच्ची जधानी

#### दे० कच्ची उछ

#### कच्ची नींद

अचूरी नींद। प्रयोग—कच्ची नींद उठा कर तुमको कितना बाट दिया है (मुर०—मछ, ५७)



### कच्ची पक्की कहना

भली-बुरी बात कहना । प्रयोग—इस पर बहुत बिगड़ ।  
कच्ची पक्की मुह में निकालने लगे (रंग० २)—  
प्रेमचंद, २३७)

### कच्ची पोल

#### दे० कच्चा चिट्ठा

### कच्ची यही

रफ़ यही । प्रयोग—प्रेमकुमार दिवाना ने दलित नाटक  
मंडली की कच्ची यही पर नाम दर्ज करना शुरू किया  
(परती०—रेणु, २४४)

### कच्ची बात

गलत बात । प्रयोग—कहू बने छोड़ो चतुराई, बात नहीं  
सह कांची (सु० सा०—सुर, २४७८); धीजगत सिंह महाराज  
मान सिपावात, बात यह मांची बहुत कांची ना कहत हो  
(जग०—पट्टमाकर, १); क्यों भला बात हम मुने कच्ची है  
न बच्चे न कान के कच्चे (चुमते०—हरिऔध, १३)

(२) जल्लील बात ।

### कच्ची रस्मोई

उवाच कर पकाया हुआ घन । प्रयोग—बाबूजी, रस्मोई  
कैसी बनवाई जाय—कच्ची या पक्की ? (मिसा०—कौशिक,  
१२६)

### कच्ची होना

(१) भोली, अननुभव होना । प्रयोग—मुर एकट्ठ अंग  
न कांची, धन्य-बनि बज-वाला (सु० सा०—सुर, १६४८)(+);  
बातनि ही उड़ि जाहि और ज्यो, त्यो नाही हम कांची  
(सु० सा०—सुर, ४३०४)(+); अच्छा, तो कांची ने यह  
सलाह दी है, यह मंत्र पढ़ाया है, तो यहाँ ऐसी कच्ची  
नहीं हूँ (मान० (१)—प्रेमचंद, ८); मैं ऐसी कच्ची नहीं  
कि थोड़े में बहुत उबल पड़ूँ (भा० प्रथा०—भारतेन्दु, ४४४)  
(२) जड़ होना, अस्वायी होना । प्रयोग—नण्डि, क्या  
कहूँ तुमसे मेरी ममता कितनी कच्ची है (पंच०—  
गुप्त, २४); देखिए प्रयोग (१) में (+) भी

### कच्चे घड़े की पीना

(१) नशा करना, शराब पीना । प्रयोग—कहिये मुंशीजी

आजकल तो कच्चे घड़े की खूब छनती होगी (प्रेम०  
—प्रेमचंद, १४८)

(२) नशा में घनाशोषन करना ।

### कच्चे दिल का होना

(१) दुर्बल मन वाला होना । प्रयोग—भैया को मैं  
इतना कच्चे दिल का आदमी नहीं समझता था  
(गहन—प्रेमचंद, २७१)

(२) मुकौमल भावनाओं वाला होना ।

### कच्चे सूत सा तोड़ देना

जासानी में संबंध तोड़ देना । प्रयोग—कांची मूल तोरि  
मो डारयो । उरग केचुरी फिर न निहारयो (सु० सा०—  
सुर, २८३४)

### कट जाना

(१) लज्जित होना । प्रयोग—भैरो ने समझा था, नायक  
राम दिल में कट जायेंगे मगर वह छूटा हुआ शाही गुंदा  
ऐसे व्यंग्यों को कब ध्यान में लाता था (रंग० (१)—प्रेमचंद,  
१८६); ग्याल कवि की कुब्जा की कटुस्तिषांमुनकर बेचारी  
गोपियों बट गई होंगी (पट्टम पराग—पट्टम० शर्मा, १४२);  
चन्द्र इस बातसे कट गया था पर उसने प्रगट नहीं होने  
दिया (नद०—अज्ञेय, ४५)

(२) लड़ाई में मर जाना । प्रयोग—वह यही चित्तोर  
है जिसके निचे हजारों राजपूत कट गए परन्तु स्वा-  
धीनता कभी न छोड़ी (राधा० प्रथा०—राधा० दास, ५९५)

(३) समय बीतना, रास्ता लम्ब होना । प्रयोग—अच्छा  
यह तो बताओ, यहाँ कैसे कटती है (कंकाल—प्रसाद, २५)

(४) भिगक जाना, दूर-दूर रहना । प्रयोग—जिसे देता  
हूँ वही उसके धप्पे में पड़ जाता है और फिर परिधम से  
कटता और जो चुराता है (परस—जैनेन्द्र, १४१)

(५) कतरा जाना, झोटा जाना ।

(६) खीजना, नष्ट होना ।

(७) महोदय चुर होना ।

(८) किसी धारदार चीज से कट जाना ।

(९) घोसा देकर साथ छोड़ देना ।

(१०) ईर्ष्या करनी ।



कटती नाक बच जाना

(११) किसी निस्ट से नाम हट जाना, खारिज होना।

**कटती नाक बच जाना**

इज्जात जाते-जाते बची रह जाना। प्रयोग—वेद में रेल, तार, कमेटी कचहरी दिखाकर धार्यों की कटती हुई नाक बचा ली (भा० प्र० ३) —भारतेन्दु, ८३४

**कटवाना**

पैसा बसूलना, खर्च करवाना। प्रयोग—धाशिक को तरह तरह से कटवाती ही रहती है (दे कोठे०—अ० ना०, २०७)

**कटा-कटा होना**

उदासीन होना। प्रयोग—वे तो हम लोगों से कुछ कटी-कटी सी जान पड़ती है (शासी०—वृ० वर्मा, २६०)

**कटाक्ष करना**

व्यंग करना। प्रयोग—गोबर ने कटाक्ष किया—बड़े आदमियों की हाँ में हाँ मिलाने में कुछ-न-कुछ आनन्द तो मिलता ही है (गोदान—प्रेमचंद, १७)

**कटिबद्ध होना**

पूरी तरह तैयार होना। प्रयोग—पर छिन्की तो आज कटिबद्ध होकर आई थी (भूले०—भग० वर्मा, १४९); वह उस समय उद्विग्न होती थी और कटिबद्ध (कल्याणी—जेनेन्द्र, ५२)

**कटी उंगली पर न मूतना**

तनिक भी भला न करना। प्रयोग—हमने स्वयं अनुभव किया है कि बरसों जिनके साथ बदनाम रहे, बीसियों हानियों सहो × × और वे भी × × सदा कहते रहे जहाँ तेरा पसीना गिरेगा वहाँ हमारा मूत शरीर पहिले गिर लेगा, पर जब समय आया कि गैरों के सामने हमारी इज्जत न रहे, तो उन्हीं महाशयों ने कटी उंगली पर न मूता (प्र० पी०—प्र० ना० मि०, ७१)

**कटी सी आँख**

निराश एवं कुराह दृष्टि। प्रयोग—वह एकटक कटी सी आँखों से मौसी की आँखों की ओर देखता रह गया (शेखर (२)—अज्ञेय, ३२)

**कटे पेड़ सी बैठ जाना**

हताश या निराश होकर धम से बैठ जाना। प्रयोग—कमला कटे पेड़ सी वहीं बैठ गई (बीने०—रा० रा०, १८१)

(समा० मुहा०—कटे पेड़ सा गिर पड़ना)

१४

कड़वा बचन

**कठ-करेजा होना**

कठोर हृदय का होना। प्रयोग—सच कहूँ तुम बड़े कठ-कलेजी हो (मान० (१)—प्रेमचंद, १०)

**कठपुतली की तरह नचाना या नाचना**

दूसरे के कहे अनुसार काम कराना या करना। प्रयोग—बनारस के रईस भी कठपुतली बने हुए उसी गत नाचते रहे (भा० प्र० ३) —भारतेन्दु, ९३८; यही लोग उन बेचारों को कठपुतली की तरह नचा रहे हैं (गोदान—प्रेमचंद, २९०)

**कठपुतली होना**

किसीके बस में होना। प्रयोग—जिसे जरा भी इज्जत का खयाल है, वह पुलिस के हाथों की कठपुतली बनना पसंद न करेगा (गवर्न—प्रेमचंद, २६०)

**कठ-प्रेम**

एक-तरफा प्रेम। प्रयोग—नेह कथें सठ नीर मयं हठ के कठप्रेम को नेम निवाहे (धना० कवित्त—धना०, ११९)

**कठमुल्ला होना**

जड़ मूख होना। प्रयोग—मुल्ला नहीं कठमुल्ला है। निकाल दो उसको छावनी में से (मृग०—वृ० वर्मा, २६५)

**कठिन पड़ना**

विपत्ति घाना। प्रयोग—जब जब दीनानि कठिन परी (सू० सा०—सूर, १६)

**कठोर बचन**

(१) अप्रिय बात। प्रयोग—ऐसेउ बचन कठोर सुनि औ न हृदउ बिलगान (राम० (अ)—तुलसी, ४३५)

(२) दुर्वचन।

**कठोर-हृदय होना**

कठोर स्वभाव वाला होना, दया-ममता हीन होना। प्रयोग—बोलहि मचुर बचन जिमि मोरा, खाइ महा पहि हृदय कठोरा (राम० (उ)—तुलसी, १०६५)

**कड़वा बोल बोलना**

दुर्वचन बोलना, कठोर बात कहनी। प्रयोग—बलम्मा परियनायकी से कड़वे बोल बोलती, परन्तु माधवी पर जान देती थी (सुहाग०—अ० ना०, १५)

(समा० मुहा०—कड़वा बोलना)

**कड़वा बचन**



दुर्वचन । प्रयोग—कड़वी बचन सवन मुनि मेरो, अति रिख गही भुवान (सू० सा०—सूर, ५४८); बिन स्वारय कैसे सहै, कोऊ करुवे बिन (पू० स०—पुनट, ३६)

### कड़वा होना

बुरा बनना, अप्रिय होना । प्रयोग—यह कल का पुतला जो अपने उस खेलाही की मुघ रखे तो खटाई में क्यों पड़े और कड़वा कैसे हो ? (ईशा०—ईशा०, ८७) हमारे बीपदे कुछ कड़वे हों, मगर वे हितजल के गढ़वे हैं (चुमते० (मु०)—हरिऔध, ७); मर्द जरा कड़वा तीखा न हुआ तो मर्द क्या हुआ (झुठा० (१)—यशपाल, २००)

(समा० मुहा०—कड़वा मुंह होना)

### कड़वी लगना

घप्रिय लगना । प्रयोग—पा लागी मुख मोन गहो अब, कटुक लगति है बानी (सू० सा०—सूर, ४५५); और जे सवाद घन आनन्द बिचारें कोन, बिरह-बिपाद-जुर जीबो करवी लगै (घन० कवित्त—घना०, २२६); मिठाइयां खाते चलत तो मीठी मालूम होती हैं । दाम देते क्यों कड़वा लगता है (रंग० (१)—प्रेमचंद, ३७२); जागना जब न लग सका कड़वा तब भला आँख क्यों न कड़वाती (बोल०—हरिऔध, ३७)

### कड़वी आंख

सक्रोध दृष्टि । प्रयोग—कंवर साहब ने उसकी ओर कुछ ऐसी कड़वी आंखों से देखा कि वह सूख सा गया (मान० (१)—प्रेमचंद, २४१)

### कड़वी घूंट पीना

अपमान सहन करना । प्रयोग—शेखर इसे कड़वी घूंट करके पी गया (शेखर (२)—अज्ञेय, २००)

### कड़वी जवान

अप्रिय या टेढ़ी बात । प्रयोग—इस प्रकार घठारह वर्ष की उम्र, डेढ़ महीने की पढाई और नीम से भी कड़वी जवान वाली मां—इन तीन साधनों के साथ पुजारी गृहस्थी संभालने के काम में लगाये गये (सतमी०—राहुल, ३९)

### कड़वी बात

घप्रिय बात । प्रयोग—मुख जो कहीं कटुक सब बानी, हृदय हमारे नाही (सू० सा०—सूर, २२३०); भूल कर

चाहिये नहीं कहना बात कड़वी, कड़ी, बुरी तीखी (जोसे०—हरिऔध, २५); हक कड़वा बात कहता है न, वह काहे को अच्छा लगेगा (रंग० (२)—प्रेमचंद, १८०); क्यों सदा ही वह तीखी और कड़वी बात मुजला के सामने कह देता है (ज्ञान०—यशपाल, ५१); उसने बातें काफी कड़वी कही थीं (शेखर (१)—अज्ञेय, २२०)

### कड़ा

(१) मजबूत । प्रयोग—दिवाबरी तो जब देखता कि किसी कड़े खादमी से हाथ मिलाते । इस बालक को पीट लिया, तो कौन-सी बड़ादुरी दिखाई (रंग० (१)—प्रेमचंद, ९१)

(२) कठोर । प्रयोग—मुधा वालों को मने ८-१० दिन हुए एक कड़ा पत्र लिखा या कि लेखकों को पचेष्ट पुरस्कार दो जिनके लेख छप चुके हैं (पद्म० के पत्र—पद्म० शर्मा, १८३)

### कड़ा कलेजा

दुःख और सहनशील । प्रयोग—जरा ध्यान दीजिये जो लोग सालहा साल से आपकी कड़ी आलोचनाएं सह रहे हैं और कभी उफ नहीं करते, कहिये वह किस कड़े कलेजे के लोग हैं (गु० नि०—वा० मु० गु०, ५०८); पर कड़े दिल का यह साहसी आदमी पहले तो जल्दी डरता नहीं और डरता भी है तो संभल कर अपने बचाव के उद्योग में लग जाता है (चित० (१)—शुक्ल, १२५)

### कड़ा पड़ना

कठोर हो जाना । प्रयोग—न जाने क्यों एकाएक कड़े पड़कर उसने कहा—शनि, तुम्हारे दुःख से मेरा कुछ बने तो बिकार है उस बनने को (शेखर (२)—अज्ञेय, २२१) मने बैसे ही कड़े पड़कर तुमसे बात कह दी (मृग०—पू० दर्मा, ३३); एक बार कड़े पड़ जाते, तो मजाल भी कि यों हीले-हवाले करता (गदन—प्रेमचंद, ८८)

### कड़ा मिजाज

कोधी । प्रयोग—आप चाहें कैसे कड़े मिजाज हो × × जहाँ हम चार दिन झुक झुक के सजाम करेंगे × × बतलाइए तो आपकब तक राह पर न धावें ? (प्र० पी०—प्र० ना० मि०, ५८)



### कड़ा हाथ रखना

कठोर नियंत्रण में रखना । प्रयोग—सरकार को इन पर कड़ा हाथ रखना चाहिए । जरा भी गड़ मिली और यह काबू से बाहर हुए (प्रेमचंद—प्रेमचंद, ७९)

### कड़ा होना

कठोर हृदय होना, नियम-बानन के प्रतिपालन में बहुत दृढ़ । प्रयोग—हाकिम जिला इतना कड़ा है कि जरा भी रिआयत नहीं करता (मान० (१)—प्रेमचंद, ६८)

### कड़ाका कर जाना

उपवास कर जाना । प्रयोग—घार लोग तो रोजे कड़ाका करके ऐ पैजामा (मान० प्रश्ना० (१)—भारतेन्दु, ३३२)

### कड़ी आंख से देखना,—नजर से देखना

संकोच देखना । प्रयोग—जिन बन्वों को मैं डाँटता था, उन्हें आज कड़ी आंखों से भी नहीं देख सकता (मान० (१)—प्रेमचंद, १५); किया को कड़ी दृष्टि से देख पड़ता था यह बारम्बार (टैटोही—हरिऔध, १६) आपकी नजर कड़ी देखकर मेरा खून सँद हो जाता है (मान० (२)—प्रेमचंद, ३२३)

(समा० महा०—कड़ी नजर होना)

### कड़ी नजर से देखना

दे० कड़ी आंख से देखना

### कड़ी बात कहना

अप्रिय बात कहना । प्रयोग—ऐसी कड़ी-कड़ी बातें सुनाय सोच संकोच छोड़, हरि का रूप पकड़ आपस में कहने लगीं..... (प्रेम० सा०—ल० ला०, १०२); न निकले कड़ी बात मुँह से, किसी से कभी नहीं एकड़े (मर्म०—हरिऔध, ९०); मैं भगवान की बीच में डालकर कहता हूँ, घब में कभी उसे कोई कड़ी बात तक न कहूँगा (रंग० (२)—प्रेमचंद, १५६-१५७); 'रोती, क्यों हो भाभी' नीलिमा ने कहा—'मेने कोई कड़ी बात कह दी हो तो माफ करना' (वीने०—रा०रा०, १४२)

### कड़ी बीतना

बहुत कठिन या विपत्तिकी स्थिति में गुजरना । प्रयोग—बापूरे बटोही पर बड़ी कड़ी बीती (ठैठ०—हरिऔध, २७)

### कड़े-दम होना

मजबूत होना । प्रयोग—वह जरा था भी कड़े-दम, कुपती

लड़ता था (रंग० (१)—प्रेमचंद, १६२)

### कड़े मुहरे आना

टैदा व्यवहार करना । प्रयोग—हमसे जो आने लगी है आप यों मुहरे कड़े (इंशा०—इंशा०, १२५)

### कड़े हाथों

कठोरता पूर्वक । प्रयोग—रियायत का प्रबंध उन्होंने कड़े हाथों से किया था (गोली—चतुर०, १२६)

### कतर व्योंत करना, काट व्योंत दिखाना

(१) लच में इधर उधर की कमी करना । प्रयोग—कभी घर की सरस्वत के लिए × × कभी बीमारों की दवा दाम के लिए रुपये की जरूरत पड़ती रहती थी और जब बहुत कतर व्योंत करने पर भी काम न चलता तो अपनी कोई न कोई चीज निकाल देती (मान० (१)—प्रेमचंद, ११९)

(२) छल कपट करना । प्रयोग—मैं गर्दन उसकी नापूंगी जो कतर व्योंत दिखलावेगा (नूर०—मल्ल, ५३); कर कतर व्योंत देतरह उसमें क्यों भला जाति का गला कतरे (चुमते०—हरिऔध, १०९); शत्रु संहार और निजकार्य साधन निमित्त व्यास ने महाभारत में राजनीति की काट व्योंत जैसी जैसी दिखाई है उसे मुन विस्मार्क सरीखे इस समय के राजनीति के मर्म में कुशल राज पुरुषों की प्रकृति भी चरने चली जाती होगी (सा० सु०—वा० मद्र, ७)

(३) कम करना । प्रयोग—पर कुछ समय हुआ सरकार ने एक मंत्राय × × प्रकाशित करके इस अधिकार में बहुत कुछ कतर-व्योंत कर दिया (सा० सौ०—महा० द्विवेदी, १४१)

### कतराकर निकल जाना

इस तरह जाना कि कोई देख न पावे । प्रयोग—वह मार्ग में गुमागी की देख लेता तो कतराकर निकल जाता (रंग० (२)—प्रेमचंद, ११०)

### कतरा जाना

(१) आँख बचा कर निकल जाना । प्रयोग—हमें ललित आचल क्यों कतराये (मान० प्रश्ना० (२)—भारतेन्दु, ३७८); गोहदे उसे देखकर क्यों कतरा जाते हैं × × इसका रहस्य वह नहीं समझता (मान० (७)—प्रेमचंद, ४४); उन्हें देखकर महिपाल चौराहे से यों कतराया जैसे घोर ने पुलिस



मनो को देल लिया हो (दुंद०—अ० ना०, २१३)

(२) किसी काम से जान बचाना। प्रयोग—जब कि बारवत से गये कतरा नाक कैसे न तब कतर जाती (बाल०—हरिऔध, ७३)

### कदम उखड़ना

(१) मुकाबले में न ठहर पाना। प्रयोग—हरिधन ने देखा इन दोनों के कदम उखड़ गये हैं (मान० (१)—प्रेमचंद, १४०)

(२) लड़ाई के मैदान से भागना, हार होनी।

### कदम उठाना या उठाना

किसी काम को करना। प्रयोग—अंत में प्रभुदयाल ने प्रतिहिंसा से भरा अपना कदम उठा ही लिया (मूले०—भग० दर्मा, ४६); मुझे जिस स्थिति में यह कदम उठाना पड़ रहा है मैं उसे ही महत्व दे रहा हूँ, अपने को नहीं (दुंद०—अ० ना०, ५८६); लेकिन जनमत के खिलाफ कोई कदम न उठे, इसका ख्याल रखना होगा (परती०—रेणु, ५००)

### कदम चूमना

(१) खुशामद करना। प्रयोग—हमारी मर्यादा को धूल में मिलाना चाहती है। चाहती है कि मैं उसके कदम चूमूँ (रंग० (१)—प्रेमचंद, ३६६)

(२) अत्यन्त आदर करना।

### कदम पीछे पड़ना

किसी काम को करने का आश्वासन देकर पीछे हटना। प्रयोग—रात के बख्त बदला चुकाना। पीछे कदम न पड़े (चोटी०—निराला, ५०)

(समा० मुहा०—कदम पीछे हटाना)

### कदमों पर झुकाना

श्रद्धालु बनाना, महत्ता स्वीकार कराना। प्रयोग—तुम्हारे आदर्श ने मुझे तुम्हारे कदमों पर झुकाया (रंग० (२)—प्रेमचंद, ९०)

### कदमों में बैठ कर

किसी के घाजाधीन। प्रयोग—आप जैसे नुक्तरस डापरेक्टर के कदमों में काम करने का मौका मिल जाय तो बस बम्बई की जिन्दगी सफल हो जाय (पैतरे—अशक, ७५)

### कनखी देना

आँख की कोर में देखना। प्रयोग—एकन की तकि पूँपट में मूलभोरि कनेखिन दे चले दे चले (जग०—पद्माकर, १५)

(समा० मुहा०—कनखी से देखना)

### कनखतियां

कानाफूसी, गुप-गुप बातें। प्रयोग—लोग बड़ी उत्सुकता से फिसला मुनन के लिये और विमट गये X X और कन-वतिया भी बन्द हो गयी (गवन—प्रेमचंद, ३२१)

### कनफूसकियां सुनना

छिप कर किसी की बात सुनना, भेद लेना। प्रयोग—जी चाहता है महिलाओं की कनफूसकियां सुनती (मान० (१)—प्रेमचंद, २७३)

(समा० मुहा०—कनसुआ या कनसुइयां लेना)

### कनरसिया

सगीत प्रेमी। प्रयोग—अचानक एक सुरीली गाने की घावाज ने चौंका दिया। कनरसिया शिवशम्भु सटिया पर उठ बैठे (गु० मि०—बा० मु० गु०, २०४)

### कनाटेरी देकर सुनना

ध्यान से सुनना। प्रयोग—काम केलि कया कन टेरि दे सुनन लागी, जऊ अनुरागी बाल केलि के रसन है (क० र०—सेनापति, ४७)

### कनौड़ा करना

(१) प्रेमी या अनुगत बनाना। प्रयोग—भगवान किसी को किसी की कनौड़ी न करें, देखो मुझको इसको कैसे बातें सहनी पड़ती हैं (भा० प्र० शा० (१)—भारतेन्दु, ४३५)

(२) नीचा दिखाना।

### कनौड़त करना

दबना, परबाह करना। प्रयोग—मादिक रूप रसीले मुजान को पान किये छिनकी न छुई को, भूल को सोपि तबे जू सबे सुधि, काह को कानि कनौड़त के को (धन० कवित्त—धना०, १३५)

### कन्नी कटना या काटना

(१) बचना। प्रयोग—कानून भी तो बंधन है, उसे



क्यों नहीं सोइते ? उससे क्यों कन्नी कटाते हो ? (गोदान—प्रेमचंद, ७६); मैंने जब यह मुनगून मुनी थी तो समझावा था, मुझे तो साफ़ मुकर गये पर उसी दिन से कन्नी काटने लगे (पट्टम० के पत्र—पट्टम० शर्मा, १६९)

(२) किसी काम से बहाना कर निकल जाना ।

**कपट की खान होना**

महा कपटी होना । प्रयोग—उपरि आये कान्हू कपट की खानि (सू० सा०—सुर, ४४७५)

**कपट में घोंरी हुई**

कपट पूर्ण । प्रयोग—कपट बोरि बानी मृदुल बोलेउ जगति समेत (राम० (बाल)—तुलसी, १७१)

(समा० महा०—कपट में डूबी हुई)

**कपटियों की चटसार होना**

महा कपटी होना । प्रयोग—भंवर कुरंग काक अह कोकिल, कपटिन की चटसार (सू० सा०—सुर, ४३६७)

**कपड़े छोड़ना**

कपड़ा उतारना, बदलना । प्रयोग—मैं कपड़े छोड़ने भीतर गया (कुल्लू०—निराला, ५३)

**कपड़े से होना**

(१) मानिक धर्म से होना, रजस्वला होना । प्रयोग—एक दिन कपड़ों से भई तौ पति की आज्ञा से सखी सहेली को साथ कर रथ में चढ़ बन में खेलने को गई (प्रेम० सा०—ल० ला०, ७)

(२) पहनावा, पोशाक ।

**कपाट खुलना**

(१) प्रभाव दूर होना । प्रयोग—गुर मिलि कितके खुले कपाट, बहुरि न घावे ओनी बाट (कबीर ग्रंथ०—कवत, २०५)

(२) बुद्धि का जागरूक हो जाना । प्रयोग—भालूम होता है घोड़ी सी थी ली थी, जिससे कपाट खुल गये (पट्टम० के पत्र—पट्टम० शर्मा, ३७)

**कपाल क्रिया कर देना**

मार डालना । प्रयोग—इधर लहना बी हैनरी मटिनी के दो पापरों ने साहब की कपाल क्रिया कर दी (गु० कहा०—गुलेरी, ५७)

**कपोल कल्पित होना**

काल्पनिक होना । प्रयोग—इन लोक विश्वासों को केवल कपोल कल्पना कह कर उड़ा देना ठीक नहीं (मेरे०—गुलाब०, १२८)

**कफ़न की ओर पैर बढ़ाना**

मृत्यु के निकट होना । प्रयोग—रंग-बिरंगे पट की जगह जब सदा श्वेत वस्त्र भाये तब जान को—आदमी ने कफ़न की ओर पैर बढ़ा दिये (अम्ब०—रा० वे०, ४६)

**कड़वा करना**

अधिकार कर लेना । प्रयोग—वह अधिक घोर राज-नैतिक शक्तियों पर कड़वा करेगी (अशोक०—ह० प्र० दि०, २८)

(समा० महा०—कड़वा जमाना)

**कन्न में पाँच या पैर लटकाना**

मरने को होना । प्रयोग—एली सुखी रोटियों से घर भर का पेट भरने वाले पुरुष को अपनी युवती पत्नी, दुधमुँहे बच्चों तथा कन्न में पैर लटकाये हुए बिधवा माता, पाँची घोर दाश की घोर मौन तथा पीड़ित विवशता के साथ टक्कबाई हुई आँखों से देखते हुए दम तोड़ते देखा है (इंस्टा०—भग०वर्मा, १३-१४); कन्न में पैर लटक रहे हैं, चली है मुजरा करने ? (ज्ञान०—यशपाल, ४७)

**कमर कमान करना**

दुड़तापूर्वक । प्रयोग—कितने कमबोहर दलिया खाते हुए कमर कमान किये जान पर खल रहे हैं (कुल्ली०—निराला, १०)

**कमर करना**

कबूतर का कलावाजी करना । प्रयोग—तो कमर बन्द क्यों हुआ बीता है कबूतर अगर कमर करते बोल०—हरिऔध, २२९)

(२) घोड़ों का इस प्रकार कमर उछालना कि सवार का घायन उलट जाय ।

**कमर कसना—बांधना**

(१) लड़ने के लिये उद्यत होना । प्रयोग—परि कर बांधि उठे अकुलाई । चले इष्ट देखन विर नाई (राम० (बाल)—तुलसी, २५८); कसे रहै कटि रात—दिवस सब बीर हमारे



(मा० ग्रंथा० (१)—मारलेन्दु, ५२४); कसे रहें कटि रात, दिवस सब बीर हमारे (राधा० ग्रंथा०—राधा० दास, ५९८) यह रुक गया कमर कस कर। मरना ही है तो लड़ कर मरेगा (गोदान—प्रेमचंद, १५८); कमर कसे ही रहता हर-दम नाते मारे सब के (नूर०—भक्त, १००)

(२) दृढ़ता पूर्वक किसी काम को करने को प्रस्तुत होना। प्रयोग—जो लोग अपने को देश-हितैषी समाले हो वह अपने मुस को होम करके अपने धन और मान का बलिदान करके कमर कसके उठे (भा०ग्रंथा०—मारलेन्दु, ३); तिसपर भी सबको मिलानेके लिये कमर कस कर खड़े हो गये हैं (गु० नि०—बा० मु० गु०, ४३६); जिस कमलावती ने इनके मूल पुरुष मोह की रक्षा की थी उसी के वंश के लोगो ने इसकी रक्षा पर भी कमर बांधी (राधा० ग्रंथा०—राधा० दास, १५८); वे रोड़ जाने के लिये कमर कसते, लेकिन फिर रह जाते (मान० (४)—प्रेमचंद, १२५); दस मिनट भी हो गये, पर सवारी का पता नहीं। सब मैंने चलने के लिए कमर बांधी (इंस्टा०—भग० वर्मा, १२९); अच्छा, तूने गुस्ताखी पर कमर बांधी (गोदान—प्रेमचंद, ८७)

### कमर खोलना

- (१) अपने दृढ़ निश्चय को बदलना। प्रयोग—बन अमर देश-हित रहें करते। मर मिटे पर कमर न हम खोलें (चुमते०—हरिऔध, ३७) (+)
- (२) हिम्मत हारना। देखिए प्रयोग १ में (+)
- (३) विश्राम करने को प्रस्तुत होना।
- (४) कमर-बंद खोलना।

### कमर झुकना

- (१) थक जाना, हार जाना। प्रयोग—इसमें सहज गति है अहंकार नहीं; वैसे जीवन का बोझ ढोते हुए किसकी कमर नहीं झुकती (वीने०—रा० रा०, २०७)
- (२) बुढ़ होना।

### कमर टूटना

- (१) कमर में दर्द होना। प्रयोग—छोटे लोग इन ऊँचे पैलटों में रहते हैं, जहां चढ़ते-नढ़ते कमर टूट जाती है (प्रेतरे—अश्व, १४०)
- (२) निराशा होना, उत्साह का न होना। प्रयोग—टूट में जाय यह नहीं कोई टूट कर भी कमर न टूट सके न (चुमते०—हरिऔध, ३७) (+); मगर उस दिन उसकी

कमर टूट गयी, जिस दिन ऊँची जदालत ने भी × × कड़ी सजाए सुनादी (कला०—उग्र, ८५) (+); खीर खेतके साथ ही रहमान की सारी अभिलाषाएँ भी नष्ट भ्रष्ट हो गयीं। गरीब की कमर टूट गयी (मान० (३)—प्रेमचंद, १७९) (+)

(३) जोर में कभी जाना। देखिए प्रयोग (२) में (+)

(४) बेसहारा हो जाना। प्रयोग—कूलमती अपने कमरे में जाकर लेटी, तो उसे मालूम हुआ उसकी कमर टूट गयी है (मान० (१)—प्रेमचंद, ७३); मेरे कर युग हैं टूट चुके, कटि टूट चुकी, मुस छूट चुके (सार्केत—गुप्त, १६१) देखिए प्रयोग (२) में (+) भी

(समा० मूला०—कमर बैठना)

### कमर टेढ़ी होना

दुर्बल पड़ना। प्रयोग—धी कमर मेरी कभी टेढ़ी नहीं दैव के टेढ़े हुए टेढ़ी हुई (गोल०—हरिऔध, २३०)

### कमर ठोकना

(१) प्रशंसा करना, पीठ ठोकना। प्रयोग—बघाई के उप लक्ष्य में उनकी कमर ठोक दीजिए (पद्म० के पत्र—पद्म० शर्मा, १०१)

(२) हिम्मत बांधना।

### कमर तोड़ना

(१) निःशक्त कर देना। प्रयोग—भविष्य की चिंता हमें कायर बना देती है, भूत का भार हमारी कमर तोड़ देता है (गोदान—प्रेमचंद, २०२)

(२) बहुत बड़ी विपत्ति डालना।

(३) सहारा छीन लेना।

### कमर बांधना

#### २० कमर कसना

#### कमर रह जाना

कमर थक जाना। प्रयोग—दुकान पर दिन भर बैठे-बैठे कमर रह जाती है (मा—कौशिक, १६५)

### कमर सीधी करना

(१) मोड़ा विश्राम करना। प्रयोग—लोग सा-पीकर चले गये, तो प्यारी दिन भर की थकी-मादी आंगन में एक टाट का टुकड़ा बिछाकर कमर सीधी करने लगी (मान० (१)—प्रेमचंद, ११९)



कमर सीधी होना

१००

करघट बदलना

(२) मुकाबिला करने को प्रस्तुत होना। प्रयोग—बोश में जाकर भैया, मैं उठकर बैठ गया। कमर सीधी कर ली (बल०—नागा०, ८५)

कमर सीधी होना

विश्राम या राहत मिलनी। प्रयोग—साध पूरी हुई न काम सधा हो न सीधी सकी कमर मेरी (बोल०—हरिऔध, २३०)

कमर बन्द ढोला होना

साहस झूटना। प्रयोग—तो कमर बन्द क्यों हुआ ढोला है कबूतर चगर कमर करते (बोल०—हरिऔध, २२९)

कमली से बाहर पैर निकालना,—फैलाना

अपनी सामर्थ्य से अधिक काम या खर्च करना। प्रयोग—उसने खुद क्यों अपनी कमली से बाहर पांव फैलाया ? (गवर्न—प्रेमचंद, १४४); उसकी रक्षा करना हमारा धर्म है। लेकिन कमली के बाहर पांव निकालना भी तो उचित नहीं (मान० (४)—प्रेमचंद, १५७)

कमली के बाहर पैर फैलाना

दे० कमली के बाहर पैर निकालना

कमाई करना

महत्वपूर्ण काम करना। प्रयोग—वहाँ से ऐसी क्या कमाई करके था रहा है; सबके आग़ा वह तो (बौने०—दी० रा०, ३३)

कमाना

(१) शरीर को मुदौल बनाना। प्रयोग—मलबम्भ कुस्ती इत्यादि से शरीर को खूब कमाओ (झांसी०—वृ० वर्मा, ३८)

(२) फर्श इत्यादि को थोड़ा छीलकर मुदौल बनाना।

करतब उलट्टे होना

विपरीत गति होना। प्रयोग—विधि करतब उलट्टे सब बहर्ही (राम० (४)—तुलसी, ४८२)

करतलगत होना

प्राप्त होना, वश में होना। प्रयोग—कृपा सिधु मुनि दरसन तोरे। चारि पदारथ करतल मोरे (राम०(अ) तुलसी, १७४) सारा देश अकबर के करतलगत है (राधा० शा०—राधा० दास, ७६५)

करना

(१) विवाह करना। प्रयोग—तेरा सुमुख तो तुझे देख-कर निहाल होता है। वह दूसरी क्यों नहीं करता ? (देवकी०—रा० रा०, ३)

(२) अवैध संबंध रखना। प्रयोग—तेरी लड़की पटने में एक-दो-तीन-चार, एक-दो-तीन-चार कर रही है... हम अपनी आँखें देख आए हैं (कुल्लो०—निराला, ४३)

करम का लेख,—की रेख

भाग्य में जो हो। प्रयोग—सूर करम की रेख मिटें नहीं यह कहूँ जदुराई (सू० सा०—सूर, ४०५८); धब दया कर मेरा दोष जो मैं मत रखतो क्योंकि कर्म का लिखा कोई मेट नहीं सकता (प्रेम० सा०—ल०ला०, २१)

करम की रेख

दे० करम का लेख

करम की रेख पर मेख मारना

भाग्य में लिखे को बदलना। प्रयोग—संसार में भरमने वालों पर दया कैसी, मुक्ति के मार्ग में अक्सर होनेवालों को आराम कहा, करम की रेख पर मेख मार सका तो सत कैसा (कबीर—ह० प्र० द्वि०, १५५)

करम पकड़कर रोना

भाग्य को दोष देना। प्रयोग—किस के लिए अपने करम पकड़कर रो रही है (सुहाग०—अ० ना०, १६)

(समा० मूहा०—करम को रोना)

करम फूटना

भाग्य में होना। प्रयोग—बस बात की बात में सब के करम फूट गए (प्र० पी०—प्र० ना० मि०, १५३); फूटा करम ! धरम भी लूटा, शोण हिला रोते सब परिजन (स्वर्णधूलि—पंत, २)

करघट बदलते रात बीतना

बहुत बेचैनी होनी। प्रयोग—शोच कल न सुहाय सगी धर रैन विहाय न हाय करोटनि (घन० कवित्त०—घना०, १०१)

करघट बदलना

(१) बेचैनी होनी। प्रयोग—होरी घोर पश्चाताप में करघट बदल रहा था (गोदान—प्रेमचंद, ११०)



(२) एक पक्ष छोड़कर दूसरे का होना । प्रयोग—उदासी ने सिर्फ करवट बदली (वीने०—रा० रा०, ३१); दुनिया ने करवट बदली अब समय नज़ नीचे लाया (नूर०—मल्ल, ६); दुनिया ने तो कई बार करवट बदली (कठ०—दे० स०, ९८)

(समा० मुहा०—करवट लेना)

**करेला और नीम चढ़ा होना**

बहुत कटु या बुरा होना । प्रयोग—इस प्रकार मैं करेला और नीम चढ़ा ही नहीं बरन् विद्यागुड 'प्रह्लाद परमो-धर्म' का अनुयायी हूँ (मेर०—गुलाब०, ३२)

**कर्णपात करना**

मुनना । प्रयोग—युवती के उत्तर पर कर्णपात न कर, हम लोग गाड़ी पर आ बैठे (राधा०—व० स०, ६०)

**कर्णधार होना**

मांगदर्शक, सञ्चालक होना । प्रयोग—पछवि डाक्टर इफान्त जली इस मंडल के मुखपात्र थे, पर खुला हुआ भेद था कि प्रेमशंकर ही उसके कर्णधार हैं (प्रेमा०—प्रेमचंद, ४३५)

**कर्ताधर्ता होना**

वह व्यक्ति जिसके हुस्म से ही काम होता हो । प्रयोग—दादो का नाम लेती है, कर्ता-धर्ता तो तू ही है । उन्हें तो प्राणों से नहीं सृजता (भित्ता०—कौशिक, २१०)

**कर्म काटना**

कर्म फल से मुक्ति देना । प्रयोग—बालबनेके कर्म हमारे, काटे जानि गई (कबीर ग्रंथा०—कबीर, १९१)

**कलंक का टीका**

अपयश । प्रयोग—इज्जत के बिना प्रेम कलंक का टीका बन जाता है (रंग० (२)—प्रेमचंद, ९२)

**कलंक का टीका लगाना, कलंक चढ़ाना,—देना,—लगाना**

बदनाम करना । प्रयोग—सपने की पहिचानि मानि जिय हमहि कलंक लगावत (सू० सा०—सूर, ४२६५); केहि न राजपद दीन्ह कलंका (राम० (अ)—तुलसी, ५८८); होन भए जल मीन अधीन, कहा कछु मो अकुलानि समाने । नीर-सनेही को लाय कलक निराग हूँ कायर त्यागत

प्रानं (घन० कवित्त—घना०, ५); पाणिनी कुल में लगा कलंक यहां क्यों घाई हुए प्रभात (वेदेही०—हरिऔध, १६); वे लगाकर कलंक का टीका मोल टीका बहुत लगाते हैं (सुमते०—हरिऔध, १६४)

**कलंक की कोठरी बनना या होना**

घोर कलंक का भागी होना । प्रयोग—अस विचारि उर छाड़हु कोह । सोक कलंक कोठि जनि होहु (राम० (अ)—तुलसी, ४१८)

**कलंक चढ़ाना**

बदनाम होना । प्रयोग—वह कलंक तुमही को चढ़िहै, जै रंग मजीठी (सू० सा०—सूर, ४११०)

(समा० मुहा०—कलंक का टीका लगाना, कलंक पुतना,—लगाना)

**कलंक चढ़ाना**

दे० कलंक का टीका लगाना

**कलंक देना**

दे० कलंक का टीका लगाना

**कलंक धोना**

अपवाद को दूर करना । प्रयोग—तेरी माँ को एक आणा धो कि पुत्र × × भारतभूमि का उद्धार करके मेरा कलंक धो डालेगा (स्कंद०—प्रसाद, ७६)

**कलंक लगाना**

दे० कलंक का टीका लगाना

**कल आना**

कुछ धाराम मिलना । प्रयोग—रात भर कल हमें नहीं आई है कलाई मुझ गई तेरी (वील०—हरिऔध, १४९)

**कल का**

कम पुराना, अल्पायु, अपरिपक्व । प्रयोग—धभीकल का लड़का यह क्या जाने कि धामपुर के अत्तली मानिकXX कोन है (तितली—प्रसाद, ५१); कल के छोकरे हो, साहित्य का परिणाम बाद को समझोगे (सुकुल०—निराला, ७८)

**कल की बात होना**

(१) मोड़े दिनों पहले की ही बात होना । प्रयोग—



कालि की बात बालि की सुधि करि समुक्ति हिता-हित  
खोलि भरोखे (गीता० (सु)—तुलसी, १२)

(२) बीती बात होना ।

### कल घुमाना

किसी के मन को सब तरफ से फेर कर अपने वश में  
कर लेना, किसी के चित्त को किसी घोर फेरना । प्रयोग  
—वह गुप्त रूप से तो राजा महेन्द्रकुमार सिंह की कल  
घुमाते रहते थे, पर प्रकट रूप से मिस्टर क्लार्क के घावर  
सत्कार में कोई बात उठा न रखते थे (रंग० (१)—प्रेमचंद,  
४०१)

(समा० मुहा०—कल घेंटना)

### कल न पड़ना

बैठ न मिलना । प्रयोग—माँ के लाख यत्न करने पर भी  
भूलें बच्चे को कल नहीं पड़ती थी (कठ०—दे० स०, १७)

### कल-पुर्जा जानना

पूरी स्थिति या मनोवृत्ति जानना । प्रयोग—वह उनके  
कल-पुर्जे खूब जानते थे (प्रेमा०—प्रेमचंद, १०७)

### कल-मुँहा होना

बदचलन होना, कलंकित होना । प्रयोग—कत कर-  
मुख नैन भए जोब हरा जेहि बाट (पद०—जायसी, ३८५९)

### कलई उधरना,—खुलना

वास्तविक रूप प्रगट होना । प्रयोग—आई उधरि प्रीति  
कलई सी, जैसी खोटी आमी (सू० सा०—सूर, ४२४७); सब  
गुणों में पूरा भकेला परमात्मा है, अतः ठीक परीक्षा पर  
जिसकी कलई न खुल जाय उसी के धन्य भाग (प्र० पी०  
—प्र० ना० मि०, ७१); अभी घापकी भी कलई खुली जाती  
है (राधा० ग्रंथा०—राधा० दास, ६८६); यही तो मैं कहती  
थी कि इतनी उम्र हो गई, यह कबारी कैसे बँठी है ? अब  
कलई खुली (मान० (१)—प्रेमचंद, २७४); कलई खुली तब  
जब किसी बलिये ने दावा किया (अपनी सबर—उग्र, ८४)

### कलई खुलना

दे० कलई उधरना

### कलई खोलना

मंद प्रगट करना । प्रयोग—'और तार?' मुन्शी चुन्नीलाल  
ने रही सही कलई खोलने के वास्ते पूछा (परीक्षा०—श्री०  
दास, ५६); मैं मिस मालती से आपकी कलई खोलूँगा  
(गोदान—प्रेमचंद, ९४)

### कलम उठाना

लिखने का प्रयास करना, लिखना । प्रयोग—× ×  
इन्होंने पूर्ण स्वाधीन भाव से राजकीय विषयों पर कलम  
उठाया (राधा० ग्रंथा०—राधा० दास, ४९७); उत्तरी ध्रुव  
अथवा विकास सिद्धान्त पर लेख लिखने के लिए चाहे  
कोई कोई बरसों विज्ञापन दिया करे × × कोई उसके लिये  
कलम न उठावेगा (सा० सी०—महा० दिवेदी, १००);  
मैंने तो आजकल कोई बजट सम्बन्धी लेख आघोषात पड़ा  
तक नहीं, उस पर कलम क्यों कर उठाऊँ (प्रेमा०—  
प्रेमचंद, ११३); तुम्हारे ही लिए तो उठता है मेरा कलम  
(बुद्ध०—बच्चन, २७); मैं चाहता तो नहीं था कि इस  
मजमून पर कलम उठाऊँ (कठ०—दे० स०, १३२)

(समा० मुहा०—लेखनी उठाना)

### कलम का धनी

श्रेष्ठ लेखक । प्रयोग—वह तो कलम का धनी था (कठ०  
—दे० स०, १६९)

### कलम का मजदूर

लिखने का पेशा करनेवाला । प्रयोग—मैं हूँ कलम का  
मजदूर (बुद्ध०—बच्चन, ६७)

### कलम की नोक

लिखा-पढ़ी के कारण । प्रयोग—गरानपुर इस्टेट के इन  
दो कर्मचारियों ने मिलकर कलम की नोक और लाठी के  
जोर से जमींदारी की रक्षा की (परती०—रेणु, १६)

### कलम गर्म पड़ना

उत्तेजना पूर्ण बातें लिखी जानी । प्रयोग—कलम जरा  
भी गर्म पड़ जाय, तो गर्दन नापी जाय (मान० (२)—  
प्रेमचंद, २३०)

### कलम घिसना

(१) अत्यन्त साधारण लिखने का काम । प्रयोग—पर जब  
मानूम हो गया कि कलम घिसना और बात है, मनुष्य की  
नाड़ी पहचानना और बात (मान० (४)—प्रेमचंद, ५५)

(२) बराबर लिखते रहना ।

### कलम चलाना

लिखना । प्रयोग—आज हमने लेख में भी घासू ही पर  
कलम चला दी (सा० सु०—बा० मट्ट, १०९); एक किनारे



खड़े हुये मियां राहत कागज पर अपनी पेसिल चला रहे थे (इंस्टा०—भाग० ठमा, २३); पर वहाँ पर किसी को भेजने का समर्थन करने के लिए कलम चलाना नहीं चाहता (पद्म० के पत्र—पद्म० शर्मा, ४)

### कलम चूमना

किसी लेखन की बहुत प्रशंसा करना। प्रयोग—काद्य विनय यहाँ होते तो मेरी कलम चूम लेते (रंग० (२)—प्रेमचंद, १७०)

### कलम-तोड़

बेजोड़, ला-जबाब। प्रयोग—इस घटना पर कोई कविता प्राप अवश्य लिखें। कविता कलम तोड़ होनी चाहिए (पद्म० के पत्र—पद्म० शर्मा, २४१)

### कलम तोड़ना

लिखने की हृद कर देना, अनुठी उक्ति कहना। प्रयोग—आपने कलम तोड़ दी है, कमाल किया है (पद्म० के पत्र—पद्म० शर्मा, ८९)

### कलम बन्द होना

(१) लिखा जाना। प्रयोग—मैंने तुरन्त उठ कर उस नृत्य का वर्णन लिखा, जिसका संशोधन रूप इस उपन्यास में कलम बन्द है (वैशाली० (२)—चतुर०, ३१८)

(२) पूरे-पूरे गिनकर। प्रयोग—कलक बंद सौ जूते लगेंगे (हि श० सा०)

### कलम में जादू होना

प्रभावशाली लेखन होना। प्रयोग—ये मेरे मित्र सतीश हैं, बड़े अच्छे कवि हैं। गले में रस है और कलम में जादू (पैतरे—अशक, १४९); जिसकी कलम में यह जादू है, उसकी बाणी में क्या चमत्कार न होगा (रंग० (२)—प्रेमचंद, २४४)

### कलम में जोर होना

सशक्त रचना होना। प्रयोग—तुम्हारे कलम में, तुम्हारे सब साधियों से अधिक जोर था (पैतरे—अशक, ९०)

### कलह पर पानी छिड़कना

कलह को शांत करना। प्रयोग—नृप चाहिए नरों को, जो समझे उनकी नादानों। रहे छोटता पल-पल पारस्परिक कलह पर पानी (कुरु०—दिनकर, ११६)

### कलाई उतरना

कलाई की हड्डी जिसक जानी। प्रयोग—वह उतर कब सका अखाड़े में हो कलाई उतर गई जिसकी (बोल०—हरिऔध, १५०)

### कलेजा उछलना

(१) पबराहट होनी। प्रयोग—तो कभी क्यों न हाथ रस देखें हम उछलते हुए कलेजे पर (चुमते०—हरिऔध, १५५)

(२) मृग्य होना, हर्षित होना। प्रयोग—जिन पदों में छलक रहा है रस। क्यों कलेजा न मुन उसे छलके (चोखे०—हरिऔध, ६)

### कलेजा उड़ा जाना

होश उड़ा जाना। प्रयोग—बेतरह जातिजी उड़ा देखे जो कलेजा उड़ा नहीं मेरा (चुमते०—हरिऔध, १०५)

### कलेजा उमड़ा पड़ना

प्रानन्द या दुःख में मन भरा घाना। प्रयोग—जब से तुमने यह सुश खबरी दी कलेजा उमड़ा पड़ता है (राधा० ग्रंथा०—राधा० दास, ७२१); भाव में डूब घन उमड़ते लौ है कलेजा उमड़ सका किसका (चोखे०—हरिऔध, ८)

### कलेजा कंपाना

भयभीत कराना। प्रयोग—विदार देता शिर था प्रहार से। कंपा कलेजा दृग फोड़ डालता (श्रिय०—हरिऔध, १८२)

### कलेजा कचोटना

मन में कसक होनी। प्रयोग—चोट पर चोट देखकर खाते है कलेजा कचोटता मेरा (बोल०—हरिऔध, १८४)

### कलेजा कटना

(१) बहुत दुःख पड़ना। प्रयोग—देखकर कटता कलेजा जाति का फूटती है घाव, छाती टूटती (चुमते०—हरिऔध, ७८)

(२) अत्यंत प्रिय व्यक्ति से विद्योह होना।

### कलेजा कड़ा करना

हिम्मत करना। प्रयोग—तुम अपने कलेजे को कड़ा करो, यह आघात तुम्हें सहना ही पड़ेगा (सी०—ब्र० स०, १३७)

### कलेजा कबाब होना



जो ऊब जाना, बहुत दुखी हो जाना। प्रयोग—बहुत हुआ।  
कान भर गए, कलेजा कबाब हो चुका (राधा० प्रथा०—  
राधा० दास, ६३६)

### कलेजा कांपना

जो दहलना, डर लगना। प्रयोग—खड़े हो गये लगे कलेजे  
कांपने (वैदेही०—हरिऔध, १६६); तभी से तेतर का नाम  
मुनते ही मेरा कलेजा कांप उठता है (मान० (३)—  
प्रेमचंद, १०९); अब भाई की ससुरान जाने की कल्पना  
मात्र से बिजपका कलेजा कांप उठता (लिली—निराला, २९)  
(समा० मुहा०—कलेजा धराना)

### कलेजा काठ होना

निष्ठुर हो जाना। प्रयोग—काठ बना देती है जो को  
जो में गांठ पड़ी (सम०—हरिऔध, १३६)

### कलेजा काढ़ना

(१) बहुत दुख देना। प्रयोग—घूटे घटा कहुंथा धिरि के,  
गहि काढ़ि करेजो कलापि नृके (घन० कवित्त—घना०, २१७)  
(२) सबसे प्रिय वस्तु से लेना। प्रयोग—आख तो आप  
काढ़ते ही थे अब लगे काढ़ने कलेजा क्यों (चोखे०—  
हरिऔध, ५०)  
(३) सब कुछ से लेना।

### कलेजा कूटना

बहुत दुख करना। प्रयोग—जबतक जीयेगी, इसी भाँति  
कलेजा कूटती रहेगी (ठेठ०—हरिऔध, ३०)

### कलेजा खाना

बहुत तंग करना। प्रयोग—आज है खा रहा कलेजा वह  
है कलेजा खिला जिसे पाला (चोखे०—हरिऔध, १९४)

### कलेजा खिलाना

(१) प्यार से पालन पोषण करना। प्रयोग—आज है  
खा रहा कलेजा वह है कलेजा खिला जिसे पाला (चोखे०—  
हरिऔध, १९४)

### कलेजा खुरचना

(१) जोका बहुत कष्ट पाना। प्रयोग—खुरचते देखकर  
उसे खुरचन क्यों कलेजा खुरच नहीं जाता (बोल०—  
हरिऔध, १५७)

(२) बहुत मूख लगनी।

### कलेजा खोलना

(१) खूब जोरों से, हादिकता से। प्रयोग—जितन बापू  
कलेजा खोलकर ठहाका लगाते हैं (परती०—रेणु, ५०)

(२) मन की बात कहनी।

### कलेजा चलनी या छलनी बना देना

मर्मभेदी बातों से मन को कष्ट पहुँचाना। प्रयोग—पर  
जो कुछ कहो, नरमी और हमदर्दी के साथ। यह नहीं कि  
जहर उगलने लगे, कलेजेको चलनी बना डालो (रंग० (१)  
—प्रेमचंद, २०९)

(समा० मुहा०—कलेजा चलनी या छलनी करना)

### कलेजा चलनी हो जाना

किसी के हाथों कष्ट पाले-पाले पर्यंत दुखी हो जाना।  
प्रयोग—तुमसे सब कहता हूँ विरादरी के अन्याय से  
कलेजा चलनी हो गया है (मान० (३)—प्रेमचंद, १४३)

### कलेजा चिरना

जो को बहुत कष्ट होना। प्रयोग—आज दिन तो है  
कलेजे चिर रहे (चुमते०—हरिऔध, ८७)

### कलेजा छिलना

हृदय को मर्मघातक लगना। प्रयोग—किसका नहीं  
कलेजा उसको मुन छिला (वैदेही०—हरिऔध, १६७)

(समा० मुहा०—कलेजा छेदना, विधना)

### कलेजा छोटा करना

हठोल्लाह होना या अपने को दुच्छ स्थिति में पाकर दुखी  
होना। प्रयोग—अब क्या? मलारी किस बात में कम  
है, उससे! कलेजा मत छोटा करो कोई (परती०—रेणु,  
२६६)

### कलेजा जलना

(१) दुख होना। प्रयोग—बेतरह जल रहा कलेजा है  
ऊबते हैं, मलार है गाते (बोल०—हरिऔध, १४४)

(२) पाचन ठीक न होने से कलेजे में एक प्रकार की  
जलन होनी।

(३) अत्यन्त कोप होना, ईर्ष्या होनी।

### कलेजा जलाना

दुख देना। प्रयोग—क्या अजब, कवि जलाभूना कोई  
है कलेजा जला जला देता (चोखे०—हरिऔध, ८)



कलेजा टुकड़े टुकड़े या टुक टुक होना

१०५

कलेजा धक् से हो जाना

**कलेजा टुकड़े-टुकड़े या टुक-टुक होना**

शोक से हृदय विदीर्ण होना । प्रयोग—अब मेरा कलेजा-टुकड़े टुकड़े हुषा जाना है (इंशा०—इंशा०, ९९); जिस वक्त उसका वह तेजी के साथ निकल जाना ब्याल करता है XX कलेजा टुकड़े-टुकड़े हो जाता है (राधा० ग्रंथा०—राधा० दास, ६१९); उसे खलाते देख टुकड़े के लिये आज कलेजा टुकड़े टुकड़े हो गया (बोल०—हरिऔध, १८७); बिम्बाय भैया ! कलेजा टुक-टुक हो रहा है (मैला०—रेणु, २६४)

**कलेजा टूटना**

(१) हिम्मत पस्त होनी । प्रयोग—हाथ की पूंजी गवा, पड़ टूट में है कलेजा टूटता किसका नहीं (चोखे०—हरिऔध, १८) (—)

(२) दुःख से चूर-चूर हो जाना । प्रयोग—कोई प्राणी कब तक भला खिन्न होता रहेगा । डालेगा अब कब तक क्यों घाम टूटा कलेजा (प्रिय०—हरिऔध, २६२); देखिए प्रयोग (१) में (—) भी

(३) कमजोर हो जाना । प्रयोग—अभी वह कौन काम करने लायक है । इसी उमिर में मजूरी करने लगेगा, तो कलेजा टूट जायेगा (रंग० (२)—प्रेमचंद, १०६)

**कलेजा ठंडा करना**

संतोष देना—नुष्ट करना या होना । प्रयोग—काश ! मुझ में ताकत होती कि मैं उस वक्त तुम से बोल सकता और तुम्हारे पास आकर तुम्हें गोद में लेकर कलेजा ठण्डा करता (गु० नि०—वा० मु०गु०, २५०)

(समा० मुहा०—कलेजा ठंडा पड़ना,—होना)

**कलेजा डोलना**

मन में कुछ अन्य विचार उठना, मन अस्थिर होना । प्रयोग—जाति-प्रथा की सताई मुन्ना का कलेजा डोला (बोटी०—निराला, १२३)

**कलेजा तोड़ तोड़ कर कमाना**

बड़ी मेहनत से जीविका अर्जित करना । प्रयोग—रहमान ने कलेजा तोड़कर मिहनत की (मान० (३)—प्रेमचंद, १७९)

**कलेजा धाम कर रह जाना**

शोक के वेग को दबाकर रह जाना, मन मथोस कर रह जाना । प्रयोग—देख वह जाति की बड़ी सुचकी रह गये घाम कर कलेजा हम (चुमते०—हरिऔध, ७३)

(समा० मुहा०—कलेजा धाम कर बैठना )

**कलेजा धाम कर रोना**

बहुत दुःख करके रोना । प्रयोग—देखकर के मिरवरों का मिर किरा, है कलेजा घाम कर हम रो रहे (चुमते०—हरिऔध, ११८)

**कलेजा धाम लेना**

(१) दिल कड़ा करना । प्रयोग—घाम कलेजा बार-बार कमे मन को समझाऊंगी (बैदेही०—हरिऔध, ५९) (—)

(२) किसी प्रकार विपत्ति को सहना । प्रयोग—देखिए प्रयोग—(१) में (—)

(३) काबल होना । प्रयोग—अमरने कलेजा घाम लिया—गजब का दर्द है भाई ! दिल ममोम उठा (कर्म०—प्रेमचंद, ९३); कौन घामला नहीं कलेजा कानों को कर सड़े ? (मर्म०—हरिऔध, १२७)

**कलेजा दरकना**

मनको बहुत कष्ट होना । प्रयोग—दलक उठेउ मुनि हृदय कठोर (राम० (अ)—तुलसी, ३९७)

**कलेजा दहकना**

हृदय शेष से भर जाना । प्रयोग—हिन्दू मुसलमान स्त्रियों के भी कलेजे दहक उठे (झांसी०—व० वर्मा, २७२)

**कलेजा दूना होना**

घोर उत्साह पाना । प्रयोग—घनिपा का कलेजा दूना हो गया (गौदान—प्रेमचंद, ४५)

**कलेजा धक्-धक् करना**

जी में घबराहट होनी । प्रयोग—इसी से मेरा कलेजा धक्-धक् कर रहा है (उठ०—हरिऔध, ४३); रमा का कलेजा धक्-धक् करने लगा (गवन—प्रेमचंद, २११)

**कलेजा धक् से हो जाना**

डर से सहम जाना । प्रयोग—बाबू रामनाथ का कलेजा धक् से हुआ (मिथ०—कौशिक, १७)



### कलेजा धड़कना, — धसकना

(१) भयभीत हो उठना । प्रयोग—डर के मारे कलेजा धड़कने लगा है (सुगं०—दु० वर्मा, ३५१) स्वप्न का कलेजा धड़का (चोटी—निराला, ६१)

(२) चिला या लटका होना । प्रयोग—जाति को देव बेधड़क जाते हैं कलेजा धड़क रहा मेरा (चुमते०—हरिऔध ७२)

(समा० महा०—कलेजा दहल उठना, —धकुर-धकुर करना)

### कलेजा धसकना

दे० कलेजा धड़कना

### कलेजा निकलना

(१) बहुत दुःख होना । प्रयोग—जातिका देव के कलेजापन है कलेजा निकल पड़ा मेरा (चुमते०—हरिऔध, ७३)

(२) बहुत प्रिय चीज का चली जाना ।

(३) बहुत परिधम या कष्ट होना ।

### कलेजा निकाल कर रखना

प्रत्येक प्रिय वस्तु का समर्पण करना । प्रयोग—मित्र कलेजा निकाल देवें जो वे कलेजा कभी कपारें क्यों (चुमते०—हरिऔध, १४६)

### कलेजा नुचना

मन को पीड़ा होनी । प्रयोग—है कलेजा नुच रहा बेचैन हं हो रहे हैं रोंगटे फिर फिर लड़े (चुमते०—हरिऔध, १३७); क्या कहूँ मेरा तो कलेजा नुचा जाता है (मा—कौशिक, ५७)

### कलेजा पक जाना

दुःख सहते सहते तंग या जाना । प्रयोग—पर जब सता पर सता देखी तो उनका कलेजा पक गया (गुं नि०—वा० मु० गु०, ४५६)

### कलेजा पकड़ना

(१) दुःख करना । प्रयोग—कलेजा घट्टह क्यों न पकड़े ? कह क्या करे शीत पर जिसके चढ़ विपत्ति अकड़े (समं०—हरिऔध, १२३)

(२) विपत्ति के समय धैर्य धारण करना ।

### कलेजा पत्थर का करना

भारी दुःख सहने के लिए चित्त को दृढ़ करना ।

प्रयोग—अपने कलेजे को पत्थर सा करके जब तू मुझे धिक्

हे (राधा० प्रशा०—राधा० दास, ५६६); पर, तुमने जब पत्थर का किया कलेजा असली माता के पास भाग्य ने भेजा (चक्र०—दिनेकर, २७२) ।

### कलेजा पत्थर का होना

बहुत कठोर-हृदय होना । प्रयोग—रानी मैं जानी अजानी महा, पवि पाहनू ते कठोर हियो है (कवि०—तुलसी, ३३); घाजकल की औरतों का कलेजा सचमुच पत्थर का होता है (रंग० (१)—प्रेमचंद, १६७)

### कलेजा पसीजना

कससा होना । प्रयोग—किस तरह तब पसीजता कोई जब कलेजा नहीं पसीजा हो (चौखे०—हरिऔध, ५०)

(समा० महा०—कलेजा पानी होना)

### कलेजा पुदीना के पत्ता बराबर होना

कमजोर दिल होना । प्रयोग—मनका के बाप को तो जानती ही हो × × कलेजा तो पुदीना के पत्ता के बराबर है (परली०—रेणु, १४२)

### कलेजा फटना या फटा जाना

(१) मन को बहुत कष्ट होना । प्रयोग—न जाने क्यों इसके रोनेपर मेरा कलेजा फटा जाता है (मा० प्रशा० (१)—भारतेन्दु, ३१०); उन्हीं बालकों के दीन शब्दों से कलेजा फटा जाता है (राधा० प्रशा०—राधा० दास, ५५५); बिचारे नन्हें-नन्हें बालक मारे-मारे फिरते हैं, देखकर कलेजा फट जाता है (रंग० (२)—प्रेमचंद, २३६); लूट देखकर मांस की है लूट रहे फूट देस है कलेजा फट रहा (चुमते०—हरिऔध, १०५)

(२) किसी के दुर्व्यवहार से मन का उसकी ओर से खिन्न हो जाना ।

(३) ईर्ष्या होनी ।

### कलेजा फाड़ना

दुःख देना । प्रयोग—जब कलेजा भीर का है फाड़ते और कहते बात है ताड़ी हुई (चौखे०—हरिऔध, १२२); इसी प्रकार मुडोचना सुननेवालों का कलेजा फाड़ रही थी (मा—कौशिक, ४१६)

### कलेजा फुंकना

जी को कष्ट होना । प्रयोग—नचाई बड़ी ठीक है जिसमें कलेजा न फुंके (दीने०—रा० रा०, १४३)



### कलेजा फूल उठना

अत्यन्त प्रसन्न होना । प्रयोग—फूल मुँह से भाड़े किसी कवि के है कलेजा न फूलता किसका (चौखे०—हरिऔध, ७)

### कलेजा बड़ा होना

उदार हृदय । प्रयोग—बहुत बड़ा कलेजा चाहिए किसी का करने को सम्मान (पुट०—वृत्तन, १०५)

### कलेजा बढ़ जाना

उत्साह होना । प्रयोग—बढ़ गये चाव चित गया बढ़ बढ़ । बढ़ गये बढ़ गया कलेजा है (चौखे०—हरिऔध, १८)

### कलेजा बल्लियों उछलना, बांसों उछलना, हाथों उछलना

आनन्द से चित्त प्रफुल्ल होना, भय या आशंका से जी धक्-धक् करना । प्रयोग—मो घाज अचानक, अकस्मात् साक्षात् घन्नदाता ने जो मुझसे दारू मागी और उन संक्षिप्त दो शब्दों की आज्ञा के साथ उनके नेत्रोंसे जो चमक निकली उससे तो मेरा कलेजा बांसों उछलने लगा और मैं पसीने से नहा गई (गोली—चतुर०, ४०-४१); सब बला टाल देस के सिर की जो कलेजा न बल्लियों उछला (चुमते०—हरिऔध, ३५); होसला हो छलक रहा दिल में हो कलेजा है उछल रहा हाथों (चुमते०—हरिऔध, ३५); कब कलेजा है उछल बांसों सका (चुमते०—हरिऔध, ३५)

### कलेजा बांसों उछलना

#### दे० कलेजा बल्लियों उछलना

### कलेजा बिछा देना

सहायता करना या त्याग करना । प्रयोग—जिस जगह कांटा मिला बिखरा हुआ निज कलेजा ये बिछा देते वहाँ (चुमते०—हरिऔध, १४४)

### कलेजा बैठ जाना

(१) बहुत पथराहट होनी । प्रयोग—बैठ मुल से किस तरह कोई सके जब कलेजा जा रहा हो बैठता (बोल०—हरिऔध, १८४)

(२) जोश का कम होना ।

### कलेजा मलना

जी दुखना । प्रयोग—कोई कलेजे में बैठा उगे मल रहा है (सु०सु०—सुदर्शन, १४८); किस तरह जब जाति माला-माल हो है घर मलता कलेजा तो मले (बोल०—हरिऔध, १८४)

### (समा० मुहा०—कलेजा मसलना)

### कलेजा मसकना

मन में अत्यन्त कष्ट होना । प्रयोग—बेतरह भर गये मनोमों से है कलेजा मसक मसक जाता (बोल०—हरिऔध, १८५)

### कलेजा मसोस कर रह जाना

मन के दुख को मन में ही दबाकर रह जाना । प्रयोग—रमानाय का कलेजा मसोस उठा (गद्यन—प्रेमचंद, २३)

### कलेजा मुँह को या मुँह तक आना

(१) जी पथराना, संताप होना । प्रयोग—घपनी बधा कटु में कैसे, आह कलेजा मुँहको आया (उदेही०—हरिऔध, ७२); बस करो, अब जोर कुछ न कहो यह कससा क्या नहीं सुनी जाती । कलेजा मुँह को घाता है (रंग० (२)—प्रेमचंद, ९९); खाने बैठे हैं ओ डाकियों की पंर की घाहट आयी कलेजा मुँह को आया (गु० कहा०—गुलेरी, १०); मेरे देखते-देखते लाहौर कितना बदल गया, यह सोच कर कलेजा मुँह को घाता है (कठ०—दे०, स० २३)

(२) सुनी होनी । प्रयोग—इन सब बातों को सुनकर मेरा कलेजा मुँह को आने लगा (गोली—चतुर०, २२१)

### कलेजा मुलगना

(१) जोष होना । प्रयोग—तुम्हारी इस बात से रात दिन मेरा कलेजा मुलगता रहता है (चित्र०—कौशिक, ४३) (÷)  
(२) मन में कष्ट होना । प्रयोग—कवि सिवा कोन लग लगा उसके । है कलेजा मुलग रहा जिसका (चौखे०—हरिऔध, ९) देखिए प्रयोग (१) में (÷) भी

### कलेजा मुलगाना

बहुत सताना, कष्ट देना । प्रयोग—मुहते हो गई मुलगते ही अब कलेजा न जाय मुलगाया (चुमते०—हरिऔध, १११)

### कलेजा हाथों उछलना

#### दे० कलेजा बल्लियों उछलना

### कलेजा हिलना

(१) अत्यन्त भय होना । प्रयोग—नाप किये जो भय-विह्वल हो तुरत कलेजा हिलता (मर्म०—हरिऔध, ७)

(२) बहुत दुःख होना । प्रयोग—वहीं आपकी मृत्यु हुई । इन खबर ने कलेजा हिला दिया (गु०, नि०—बा० मु० गु० ३५); बेतरह जाति की जड़ हिल रही है कहाँ मेरा



## कलेजा होना

कलेजा हिल रहा (बोल०—हरिऔध, १८४); श्याम का नाम सुन कर मुलोचना का कलेजा हिल गया (मा—कौशिक, ९०)

## कलेजा होना

हिम्मत होनी। प्रयोग—जब तेरी उमिर थी तो हम भी आकाश पर दिया जलाते थे, पर अब वह कलेजा कहाँ से लाये ? (प्रेमा०—प्रेमचंद, १००); आपने बाबू साहब की समझा क्या है ? इस कलेजे का घादमी इस जिले में नहीं (सिद्ध०—श० मिश्र, १४)

(२) दया करुणा आदि का भाव होना, सहृदय होना। प्रयोग—पास बिनके नहीं कलेजा है बेटियाँ बेच जो अवति है (सुमते०—हरिऔध, १६४)

(३) अत्यन्त प्रिय होना।

## कलेजे का छाला छिलना

घोर यातना होनी। प्रयोग—मेरे तो कलेजे के छाले छिले हुए हैं (बुँद०—अ० ना०, ३२)

## कलेजे का टुकड़ा

अत्यन्त प्यारा। प्रयोग—कर न दे टुकड़े कलेजे के वही है जिसे टुकड़ा कलेजे का कहा (चोखे०—हरिऔध, १९४)

(२) पुत्र या सहोदर। प्रयोग—जिन पर नरोसा रख कर मैं हवा में महल बनाया करती हूँ, उन कलेजे के टुकड़ों को दूसरे को कैसे दे दूँ ? (मा—कौशिक, ५०); तो मिलानेसे मिलें क्यों दूसरे जो न टुकड़े हों कलेजे के मिले (चोखे०—हरिऔध, १६४)

(समा० मुहा०—कलेजे की कोर)

## कलेजे का टुकड़ा-टुकड़ा करना

बहुत दुःख देना। प्रयोग—कर न दे टुकड़े कलेजे के वही है जिसे टुकड़ा कलेजे का कहा (चोखे०—हरिऔध, १९४) वह आता तो टुक कलेजे के करता पछताता पय पर आता (परि०—निराला, १३३)

## कलेजे पर घाघ होना

मन को पीड़ा पहुँचनी। प्रयोग—अमाशील के कलेजे पर ऐसा घाघ क्यों होने लगा है ? (परीबा०—श्री० दास, १३१)

## कलेजे पर चोट लगना

सामिक चोट पहुँचनी। प्रयोग—जाति के पाँचवें सवारों में और उनमें जिन्हें कहें बरतर देल कर चोट बेतरह चलती चोट है लग रही कलेजे पर (सुमते०—हरिऔध, ७३)

## (समा० मुहा०—कलेजे पर चोट आना)

## कलेजे पर छाना

पूरा अमर होना। प्रयोग—एक ज पीड़ परीति की, रही कलेजे छाई (कबीर ग्रंथा०—कबीर, ८)

## कलेजे पर छुरी चलना

प्रेम या आसक्ति का गहरा अमर होना। प्रयोग—है मोहिनी, देखते ही कलेजे पर छुरी चल जाती है (मान० (२)—प्रेमचंद, ५४)

## कलेजे पर छुरी चलाना

कष्ट देना। प्रयोग—आज तो तुम यहाँ से न जाने पाओगी सुनी रानी, रोज-रोज कलेजे पर छुरी चला कर भाग जाती हो, आज मेरे हाथ से न बचोगी (गोदान—प्रेमचंद, ४८)

## (समा० मुहा०—कलेजे पर छुरी फेरना)

## कलेजे पर पत्थर की सिल रखना,—पत्थर रखना

हृदय बहुत कठोर बनना। प्रयोग—मैं तो चाहे कलेजे पर पत्थर की सिल रख कर बैठा भी रहता, पर तुम्हारी चाँची को कैसे समझाऊँ ? (प्रेमा०—प्रेमचंद, ४११) उनकी मेरी मित्रता बहुत पुरानी है और वह मुझसे भाइयों की तरह स्नेह करते हैं, पर मैं उन्हें छोड़ दूँगा। हाँ छोड़ दूँगा, चाहे कलेजे पर पत्थर ही रखना पड़े (पद्म पराग—पद्म० शर्मा, ४१४); जो न रखते कलेजे पर पत्थर आख पथरा छगर नहीं जानी (सुमते०—हरिऔध, १५३)

## कलेजे पर पत्थर रखना

## दे० कलेजे पर पत्थर की सिल रखना

## कलेजे पर बिजली गिरना

गहरी चोट पहुँचना। प्रयोग—बिजलियाँ जिससे कलेजों पर गिरें इस तरह भौह कोई क्यों चले (बोल०—हरिऔध, ३०)

## कलेजे पर साँप लोटना

चित्तमें किसी बात का स्मरण आ जाने से एक बारगी भय या शोक छा जाना। प्रयोग—हा ! हा ! मेरे हृदय पर साँप क्यों लोटता है (प्रिय०—हरिऔध, ८७); किंतु वे सामर्थ्यवान होकर हमें न पृष्ठ, हमारे यहाँ तीज और चौप न भेजें तो हमारे कलेजे पर साँप लोटने



कलेजे पर सिल रख कर

१०६

कलेजे में छेद करना

सगता है (मान० (४—प्रेमचंद, २०७)

**कलेजे पर सिल रख कर,—हाथ रख कर**

अत्यन्त बठोर बनकर । प्रयोग—चलो कलेजे पर सिल रख कर अब रोहिताश्व की किया करो (भा० ग्रंथा०—भारतेन्दु, ३१५); मनुष्य अपने वर्तमान संताप दुःख××को दम साध कर कलेजे पर हाथ फिरे सह लेता है (सो०—द्र० सा०, १४२)

**कलेजे पर हाथ रख कर**

(१) अपने दिल से । प्रयोग—जाति पत पत्र रखी पत खो । हाथ रख कर कहें कलेजे पर (चुमते०—हरिऔध, ९८)

(२) दे० कलेजे पर सिल रख कर

**कलेजे पर हाथ रखना**

(१) अपने दिल से पढ़ना । प्रयोग—बात यह पढ़ना अगर होवे पढ़िये हाथ रख कलेजे पर (बोल०—हरिऔध, १८६)

(२) ठंडे दिल से सोचना ।

**कलेजे में आग लगाना या लगाना**

(१) कष्ट होना या देना । प्रयोग—आग बल उठने कलेजे में लगे आग से चिनगारियां कड़ती रहें । देख उसका जी अगर जलता रहे तो हंसी को चांदनी कैसे कहें (चोखे०—हरिऔध, १२०)

(२) ईर्ष्या होनी । प्रयोग—बेतरह जल भून लगाई साग से क्यों कलेजे में लगावे आग हम (बोल०—हरिऔध, १८६)

(३) प्रेम जागरित होता या करना । प्रयोग—गई आगि उर साथ आगि लेन आई जु तिय (रहीम कवि०—रहीम, ३२)

**कलेजे में उतरना**

मन को प्रभावित करना । प्रयोग—कण्ठ-स्वर भी इतना मधुर है कि उनके पद बाण की तरह सीधे कलेजे में उतर जाते हैं (मान० (७)—प्रेमचंद, ५)

**कलेजे में करक होना,—कांटा खटकना**

हृदय में पीड़ा होनी । प्रयोग—हरिराम जे जन बेधिया, सतगुरु नी गणि नाहि लागी चोट सरीर में करक कलेजे

माहि (कबीर ग्रंथा०—कबीर, ६३); मेरे कलेजे में यही कांटा खटका करता है (मिला०—कौशिक, ६०)

**कलेजे में कांटा खटकना**

दे० कलेजे में करक होना

**कलेजे में खरकना**

हृदय को कष्ट देना । प्रयोग—कंचन घटा पर जराऊ परजंक तऊ कुंजन की सेजें वें करजे खरकति हैं (क० र०—लेन.पति, ४५)

(समा० मुहा०—कलेजे में कसकना,—कौंचना)

**कलेजे में गांठ पड़ना**

मनोमातित्व होना । प्रयोग—तब सके गांठ हम कहाँ मत-लब, पड़ गई गांठ जब कलेजे में (चोखे०—हरिऔध, २९)

**कलेजे में घाव करना,—शूल चुनना**

अत्यन्त दुःख होना । प्रयोग—बिरह भुवंगम पैति करि किया कलेजे घाव (कबीर ग्रंथा०—कबीर, ९); जबहुं मारवा खंवि करि, तब मैं पाई जाणि । लागी चोट मरम्म की, गई कलेजा छाणि (कबीर ग्रंथा०—कबीर, ८५); बिनु गिय शूल करेजवा, लखि तुव फूल (रहीम कवि०—रहीम, ४०); फिर बोवलन की बात उनके कलेजे में घाव कर गई (सुहाग०—द्र० सा०, १४३)

(समा० मुहा०—कलेजे में कांटे सा चुभना,—तीर सा चुभना,—भाला सा चुभना)

**कलेजे में छांटे पड़ना**

समर्पित पीड़ा होनी । प्रयोग—देखिये आप आ कलेजे में पड़ गये कुछ अजीब छाले हैं (चुमते०—हरिऔध, ३)

**कलेजे में छेक पड़ना**

अंतःकरण पर गहरा प्रभाव डालना । प्रयोग—सतगुरु सांचा मूरिवा, सबद जु बाह्या एक लागति ही में मैं मिलि गया, पड़वा कलेजे छेक (कबीर ग्रंथा०—कबीर, ६३)

**कलेजे में छेद करना**

बहुत जो दुखाना । प्रयोग—ऊधो कमल नयन की बतियां छिरि-छिदि जाति करेन (सू० सा०—सूर, ४४६५); बात से छेद छेद कर के क्यों छेद करदे किसी कलेजे में (चोखे०—हरिऔध, १८)



कलेजे में ठंडक पड़ना

**कलेजे में ठंडक पड़ना**

सुखी होना । प्रयोग—इन बातों से तेरे कलेजे में ठंडक पड़ती है (सा—कौशिक, ५०)

**कलेजे में ठेस लगना**

मन की पीड़ा पहुँचनी । प्रयोग—जो कलेजा है कलप जाता नहीं ठेस सड़की के कलेजे में लगे (चुमते—हरिऔध, १५६)

**कलेजे में पैठना**

(१) विश्वास जमाना, प्रभाव डालना । प्रयोग—किस कलेजे में कवि नहीं पैठता (चौखे—हरिऔध, ७)

(२) किसी का भेद लेनेके लिए उससे मेल-जोल बढ़ाना ।

(समा० मुहा०—कलेजे में दुसना )

**कलेजे में बिठाना**

प्रेम करना, हर समय मन में रखना । प्रयोग—तुम्हें देख कर तो यही जो बाहुता है कि कलेजे में बिठा ले (गोदान—प्रेमचंद, ५०)

**कलेजे में रखना**

प्रिय होना । प्रयोग—क्या हुआ प्यार-नाशने में पल जो नहीं है कमाल भेजे में वे रख आँख कालिजोंमें भी जो गये हैं रवे कलेजे में (चौखे—हरिऔध, २८)

**कलेजे में मूल चुभना**

दे० कलेजे में घाव करना

**कलेजे में सुई चुभना या चुभाना**

ममता का पीड़ा होनी या देना । प्रयोग—बेटियों को बेव बेवों को मता क्या कलेजे में नहीं चुभती सुई (चुमते—हरिऔध, १६३); जो लुभा करके लुभाते हैं नहीं क्यों चुभाते हैं कलेजे में सुई (दोल—हरिऔध, १८६)

**कलेजेवाला आदमी**

हिम्मत वाला आदमी । प्रयोग—मुंशी रामसेवक बड़े होसले और कलेजे के आदमी थे (मान०(८)—प्रेमचंद, २०); बड़े ही कलेजे का आदमी है (मौली—चतुर्द, २७१)

**कलेजे से लगाना**

(१) अत्यन्त प्रिय वस्तु को सदैव पास रखना । प्रयोग—रस-रसिक पागल मनोने भाव का, कौन कवि सा है

सुनाई का सगा । लोक-हित-गजरा लगन-फूलों बना है रखा किस ने कलेजे से लगा (चौखे—हरिऔध, ८)

(२) आतिथ्य करना । प्रयोग—दुख कलेजा गया जिन्हें देखे क्यों लगाये उन्हें कलेजेसे (चौखे—हरिऔध, ५०)

**काला भर आना**

गुष्ट हो जाना । प्रयोग—घायिक बिताघोंसे मुक्त होकर घायिके कलेजे भर गये हैं (पैतरे—अशक, १४३)

**कशनकश में होना**

(१) दुविधा में होना । प्रयोग—कुछ देर कशनकश में रहे (चोटो—निराला, १८)

(२) होड़ होनी ।

**कस में रहना**

बस में रखना, प्रवीण रखना । प्रयोग—मन हमारा रहा नहीं बस में और कस में रही नहीं काश (चुमते—हरिऔध, ७२)

(समा० मुहा०—कसमें करना,—रखना या होना,

**कस लेना**

कमी करना । प्रयोग—कुछ सरकार छीज-छाज, गलन-सड़न के लिये छूट देनी है और कुछ तौल में भी कस लिया जाता है (मेरे—गुलाब, ८०)

**कटना**

(१) सोने को कमीटी पर रगड़ कर जाँच करना । प्रयोग—कंचन जो वसिष्ठ की ताता । तब जानअ दहुं पीत की राता (पद—जायसी, १९५)

(२) तूब भोज भाव करके दाम ठीक करना ।

**कसम खाना**

चापस लेना, प्रतीक्षा करनी । प्रयोग—नख-रेखा सोहैं नई, अलसोहैं सब गात । सोहैं होत न नैन ए तुम सोहैं कत खात (बिहारी रत्ना०—बिहारी, २४०); जब-जब मोहन सूठी सोहैं खात (रहीम कवि—रहीम, ५८); सोती सोहैं खात विस एरो नहि दीजे (कुण्ड—गिधरदास, ६); मैं इस बात के लिये कसम खाता हूँ कि उस रानी को जरूर जरूर घरनी बेगम बनाऊँगा (राधा० ग्रंथा०—राधा० दास, ५८४)

(समा० मुहा०—कसम लेना)



### कसर काटना

(१) बदला लेना । प्रयोग—बात से बेतरह बिगड़ करके जिस जनम की कसर गई काढ़ी (चौखे०—हरिऔध, १९०)  
(२) क्षतिपूर्ति करना ।

### कसर खाना

नुकसान उठाना । प्रयोग—इन्के निकट प्रीति और मित्रता कोई ऐसी चीज है जो इस पांच रुपये की कसर खाने से बातों में हाथ धा सकती है (परीक्षा०—श्री० दास, २८-२९)  
(समा० मुहा०—कसर सहना)

### कसर न उठा रखना

कोई प्रयत्न बाकी न छोड़ना । प्रयोग—बाबू बैजनाथ ने इन्को हिम्मत बंधाने में कसर नहीं रखी (परीक्षा०—श्री० दास, ११६)

### कसर निकालना

बदला लेना, कमी पूरी करना । प्रयोग—हम चाहते हैं जाति की कसर निकालना मगर हमारे जी की कसर निकालने भी नहीं निकलेगी (चुभते० (भू)—हरिऔध, ५)

### कसर रटना

किसी काम में कुछ कमी रहना । प्रयोग—स्वों कड़ेनी दुरी डकार न तब जब रहेंगी कसर भरी जाते (बेल०—हरिऔध, ९०)  
(समा० मुहा०—कसर होना)

### कसर लगाना

कमी करना । प्रयोग—भगवान ने मुश्किलों से यह दिन दिखलाया फिर कसर क्यों लगाई जाय (मृग०—वृ० वर्मा, ४)  
(समा० मुहा०—कसर करना,—छोड़ना,—रखना)

### कसाला पड़ना

कष्ट होना, कमी होना । प्रयोग—है न कल मिल रही कसाले सह । पिस गये पांच कोस काले चल (चुभते०—हरिऔध, ७६)

### कसौटी पर कसना,—तौलना

खूब छानबीन करना, भली प्रकार जांच करना । प्रयोग—उर आनंद बड़ाई प्रेम कसौटी नसि गियहि । धबगुन मन बिसराइ मिली प्रिया उठि श्याम सौ (सू० सा०—सूर, ३४४६); प्रीति पुरातन पारि जिनहि सौ नेह कसौटी तोले (सू० सा०—सूर, ४२६३); यूरोप में तो प्रायः रंगमंच की कसौटी पर

कसे जाने के उपरान्त ही नाटक प्रकाशित किये जाते हैं (मो०—जग० माधुर, १४९)

### कसौटी पर तौलना

#### दे० कसौटी पर कसना

### कसौटी होना

जांच का माप दण्ड होना । प्रयोग—कौन प्राकृत पहले की और कौन पीछे की, यह बात जानने की अच्छी कसौटी इन दोनों की तुलना ही है (सा० सी०—महा० द्विवेदी, २०)

### कह आना

कहते बनना । प्रयोग—गुम परबीन सब जानत ही, ताते यह कहि आई (सू० सा०—सूर, ४१५५)

### कहकहा उड़ना,—पड़ना,—मारना,—लगाना

खूब जोरों से हंसना । प्रयोग—चारों तरफ कहकहे पड़ने लगे (मान० (१)—प्रेमचंद, २७९); मेहताने कहकहा मारा—नहीं, मैं पुरुष-कलंक भी छाप ही से सोखूंगा (गोदान—प्रेमचंद, १६२); इस पर दीवानखाने में खूब कहकहे उड़ते (मान० (४)—प्रेमचंद, १७६); इस पर जीनत ने कहकहा लगाया (कठ०—दे० स० ९७)

### कहकहा पड़ना

#### दे० कहकहा उड़ना

### कहकहा मार कर हंसना

खूब जोरों से हंसना । प्रयोग—तब कैसा कहकहे मार मार हंसा करते थे घोर बिना कारण हंसी आती थी (सा० सु०—वा० भट्ट, ५०)

### कहकहा मारना

#### दे० कहकहा उड़ना

### कहकहा लगाना

#### दे० कहकहा उड़ना

(समा० मुहा०—कहकहा लगाकर हंसना)

### कहते न आना,—न पड़ना,—न बनना

अपूर्व होना, अवर्णनीय होना । प्रयोग—कहे कबीर कछु कहत न पावे, परचं जिनां मरम को पावे (कबीर ग्रंथा०—कबीर, १६२); कहि न जाइ कछु नगर विभूती, जनु एतनिअ विरवि करवुती (राम० (प्रयो)—तुलसी, ३७२); मृन्दर



सरस सोनो ललित रंगीतो मुख, जोवन भलक वनी हूँ  
कही न परति है (घन कवित्त—घना०, १८५)

कहते न एड़ता

दे० कहते न आना

कहते न घनता

दे० कहते न आना

कहनी-अकहनी कहना

ऐसी बातें भी रहना जिनका कहना उचित नहीं।  
प्रयोग—आज यहाँ आये तो मुझको और चुन्नीलाल को  
सैकड़ों कहनी अकहनी सुना गए (परीक्ष०—श्री०दास, ११८)

कहने पर लगना

कहा मानना। प्रयोग—जो नहि लगिहु वहै हमारे।  
नहि लागिहि कछु हाथ तुम्हारे (राम० अयो—तुलसी,  
४१९)

(समा० मुहा०—कहने पर चलना)

कहर गिरना,—डहना

बड़ी मुसीबत का आना। प्रयोग—खुदा का कहर मरीचों  
हो पर गिरता है (रंग०(१)—प्रेमचंद, ११९); हीरोशीमा,  
नागासाकी पर डहा कहर (सो०—वचन, २६९)

(समा० मुहा०—कहर टूटना,—पड़ना)

कहर डहना

दे० कहर गिरना

कहर बरसना या बरसाना

ग़म होना या करना। प्रयोग—तुर्की और गुजरात की  
ताकत पुर्तगालियों पर बेपनाह कहर बरसावेगी (मृग०—  
पुं०वर्मा, ७८)

कहा-सुनी होना

मौखिक भगड़ा होना। प्रयोग—वहाँ से लौट कर गुरुजी  
मे मुझसे कहा सुनी हो गई (जितली—प्रसाद, ५७); स्त्रियों  
के भगड़े में एक दिन ब्रजमोहन लाल और बनबारी लाल  
में भी कहा सुनी हो गई (मा—कौशिक, ९५)

कहानी गढ़ना

भूटी कहानी बनाना। प्रयोग—घसल बात यह है कि  
आपों ने दक्षिण में जाकर अपनी धीम जमाई घोर इसे  
ठीक करने के लिए बामन और महाबलि की कहानी गढ़  
ली (दुष्काष्ठ—दे० स०, ७१); उस बालिका पर बदलू की

विशेष ममता थी, इसी से जब वह उसे पम्पा के गम्भीर  
जल में विसर्जित करके लौटा, तब उसके शान्त मन में  
छिपी मर्म-व्यथा का अनुमान कर रक्षिया ने एक सपने की  
कथा गढ़ डाली (अतीत०—महादेवी, १०८); यह कथा  
जैसी सुनी वैसी लिख दी है। मालूम नहीं कि यह सही थी  
या लख्वा जो ने बादशाह को हिंदुओं के धर्म की तरफ  
झुका हुआ देख कर वहाँ घुसाई होने के वास्ते गढ़ ली थी  
(गुलेरी ग्रंथ (१)—गुलेरी, २५३)

कहानी चलना

चर्चा होती, बराबर स्मरण किया जाना। प्रयोग—हर्ष है  
पुत्र भवत जति जानी। जा की जग में चले कहानी  
(सू० सा०—सूर, २२६); हेत-वैत धूरि चूरचूर हूँ निजो,  
तब चलेगी कहानी घनआनंद तिहारो की (व्यंगात्मक  
प्रयोग) (घन० कवित्त—घना०, ३१)

कहानी रह जाना

मृत्यु के बाद केवल चर्चा रह जानी। प्रयोग—कहं मुरूप  
पद्मावति रानी। कोइ न रहा जग रही कहानी  
(पद०—जयसी, ५८१); कल जिस मुखका अहर्निश हमलोग  
अनुभव करते थे वह आज कहानी मान रह गया (राधा०  
ग्रंथा०—राधा० द०स, १०३)

कहीं का न रखना या रहना

(१) हर तरह से क्षति करनी या होनी। प्रयोग—  
आपने मांगी जायदाद चोरट कर दी, हमलोगों को कहीं  
का न रखा (प्रेमा०—प्रेमचंद, १०)

(२) किसी लायक न रहना।

कहीं की कहीं लगाना

(१) किसी बात को दूसरे अर्थ में लेना। प्रयोग—  
कहा करो तुम बात, कहें की कहें लगावति। तरुतिनि  
यहै मुहाति मोहि कैसे यह भावति (सू० सा०—सूर, २१०९)

(२) एक की दूसरे से शिकायत करना।

कहे अनुसार चलना

बतलाये तरीके से काम करना। प्रयोग—तौ न चलव  
हम कहे तुम्हारे (राम० दाल)—तुलसी, १७६)

कहे में होना

कही बात मानने वाला होना। प्रयोग—यदि मापकी  
कहे में होती तो वह कठिन अवसर पढ़ने पर पान्ता का



हाथ छोड़ भी सकती थी (सुहाग०—अ० ना०, ११९); जहापनाह, वह एक खूबसूरत स्वादा लोड़े के बहुत कहने में है (मृग०—वृ० वर्मा, ७६)

### काँख देना

किसी काम को करने में पस्त हो जाना। प्रयोग—धीत पाते नहीं दुखों के दिन, कब तलक दुख सहे कुड़े काँखें (चुमते०—हरिऔध, १७)

### काँख में दबाये रखना

(१) हर समय साथ रखना। प्रयोग—चाँपे काँख फिरत निरगुन गुन, इहाँ न माहक कोई (सु० सा०—सुर. ४१६०)

(२) बश में रखना।

### काँच की भट्टी होना

बहुत दुःख पाना। प्रयोग—क्यों बने तन न काँच की भट्टी, कोख की आँच है बुरी होती (बोल०—हरिऔध, २२५)

### काँटा खटकना

(१) बुरा लगना। प्रयोग—मुझे अत्यन्त खेद है कि आप के मुरादाबाद आने की मझे सूचना न मिली वर्ना मैं उड़ कर वहाँ पहुँचता, यह काँटा सदा खटकता रहेगा (पद्म० के पत्र—पद्म० शर्मा, १७७)

(२) संदेह होना।

### काँटा गड़ना, चुभना

(१) हृदय को पीड़ा होनी। प्रयोग—कमला के काँटा गड़ा (बोने०—रा० रा०, ३३)

(२) मन में शंका होनी। प्रयोग—कलगी के सुखी मन में एक काँटा चुभ ही गया (सुहाग०—अ० ना०, ११७)

### काँटा चुभना

#### दे० काँटा गड़ना

### काँटा छाना

बाधाओं को दूर करना। प्रयोग—आखिर खलीका ने 'फ़जल' का काँटा छ़ाकर ही छोटा-कण्टकोदार करके न्यायमार्ग को निष्कण्टक बनाकर ही दम लिया (पद्म पराग—पद्म० शर्मा, १६०)

### काँटा निकलना

बाधा या कष्ट दूर होना, लटका मिटना। प्रयोग—ओरंगजेब का यह काँटा भी निकल गया (पद्म पराग—पद्म० शर्मा, २३७)

### काँटा पड़ना

मनोमालिन्य होना। प्रयोग—तब से भाई बहन में एक प्रजीव काँटा पड़ गया था (बुँद०—अ० ना०, १६५)

### काँटा बिखेरना

बाधा डालना। प्रयोग—साइये न मुँह की बखेरिये न बैर काटे। कर लाल आँख लहू सगों का न मारिये (मर्म०—हरिऔध, १६४)

### (समा० मुहा०—काँटा बिछाना)

### काँटा बोना

(१) अडचन डालना, उपद्रव मचाना। प्रयोग—आखिर तुमने क्या समझ कर ये काँटे बोए (रंग० (१)—प्रेमचंद, ३५१); चुन सकें तो चाहिये चुन लें उन्हें आज तक काँटे न कम हैं वो गये (चुमते०—हरिऔध, ९८)

(२) बुराई करना—अनिष्ट करना। प्रयोग—क्यों अपने लिये काँटे बो रही हो (निर्मला—प्रेमचंद, ७९)

### काँटा होना

(१) बहुत दुबला होना या सूख जाना। प्रयोग—तन हुआ सूख सूख कर काँटा भूल से नाच है रही छाँखें (बोल०—हरिऔध, ३५)

(२) दुःखदायी या अप्रिय होना। प्रयोग—पर मुझे ऐसा लगा कि उनकी छाँखों में अब भी मैं काँटा हूँ (त्याग०—जेनेन्द्र, ६३); इनकी यह दशा मेरे ही कारण तो है, मैं ही तो इनके जीवन का काँटा हो गई (मान० (४)—प्रेमचंद, ४०) (÷)

(३) बाधा होना। प्रयोग—शाणनाथ तुम्हारे मुख में मैं काँटा हूँ (राधा० ग्रंथा०—राधा० दास, ५९४); वह उसे अपने मुख में काँटा समझने लग जाता है (सा० सी०—महा० द्विवेदी, २२); अब उनके साम्राज्य के विस्तार में अवन्तीका चण्ड प्रद्योत ही, एक काँटा था (वैशाली०—बतुर०, ३१३); देखिए प्रयोग (२) में (÷) भी



कांटे उठना

११४

कांव-कांव करना

### कांटे उठना

अप्रिय लगना । प्रयोग—इनकी भीड़ भाड़ को देखते ही मेरे तो कांटे उठ आते हैं (मृग०—दृ० वर्मा, ३१६)

### कांटे का होना

कंड़े का होना—हिम्मतवाला होना । प्रयोग—उसने जान दे दी पर जान न छोड़ी । ऐसे कांटे का था तुम्हारा पति (गोली—चतुर०, ३४२)

### कांटे चुनना

अहित के कार्यों को दूर करना । प्रयोग—चुन सकें तो चाहिये चुन लें उन्हें आज तक कांटे न कम हैं वो गये (चुमते०—हरिऔध, ९८)

### कांटों की राह,—सेज

(१) अत्यन्त दुखदायी । प्रयोग—घब बह पर उसे कांटों की सेज हो रहा था (मान० (१)—प्रेमचंद, ७३); कांटों की राह भी जाह भर पार की परि०—निराला, २२३)

(२) कठिन कार्य ।

(समा० मुहा०—कांटों को शैल्या)

### कांटों की सेज

दे० कांटों की राह

### कांटों पर चलना

मुसीबतों से गुजरना । प्रयोग—जिस पर लोगों की अचढ़ा होती है उसके लिए व्यवहार के सब सीधे और सुगम मार्ग बन्द हो जाते हैं—उसे या तो कांटों पर या ढाई कोम नौ दिन में चलना पड़ता है (चिंता० (१)—दुल्ल, २७)

(समा० मुहा०—कांटों पर पांव रखना)

### कांटों पर सुलाना

दुखदायी स्थिति में डालना । प्रयोग—रानी तु ने तो सुना दिया पहले ही । यह कह कांटों पर सुला दिया पहले ही (साकेत—गुप्त, २३९); हैं सुला सकते नहीं जो फूल पर तो न कांटों पर किसी को दे मुला (बोल०—हरिऔध, १०४)

### कांटों भरा

दुखदायी । प्रयोग—संज्ञन के लिये कल की पूरी शाम घोर रात और आज का सबेरा भी कांटों भरा हो गया है (बुंद०—अ० ना०, १६९)

### कांटों भरा रास्ता

कठिन पथ, मुसीबतों भरा रास्ता । प्रयोग—जाति हित की राह है कांटों भरी (बोल०—हरिऔध, ९)

### कांटों में घसीटना

(१) मुसीबतों में डालना । प्रयोग—मुझे इन कांटों में मत घसीटिए (अम्ब०—रा० वै०, ५१); आप तो मुझे कांटों में घसीटती हैं (विष०—प्रेमी, ४५); शस्त्रधारी हो न तुम, विष के बुझे, क्यों न कांटों में घसीटोगे मुझे (साकेत—गुप्त, १५); तेजकौर को दीपाली पर गुस्सा था रहा था स्वाह-म-स्वाह मुझे कांटों में घसीट रही है (कठ०—दे० स०, ३४३)

(२) बहुत अधिक आदर करके लज्जित करना । प्रयोग—हैं-हैं-हैं यह लोबिया, आप तो मुझे कांटों में घसीटने लगे (मोर०—जग० माधुर, ११०); बेगम—घाप तो कांटों में घसीटते हैं (मा—कौशिक, ३३४)

(समा० मुहा०—कांटों में खींचना,—लथारना)

### कांटों में पड़ना

कष्ट सहना । प्रयोग—काटने से कट न दुख के दिन सके पों पड़े कब तक रहें कांटों में हम (चुमते०—हरिऔध, ६७)

### कांपना

बहुत डरना । प्रयोग—पिता ! पिता ! हम डरेंगे, तुमसे कांपेंगे ? क्यों ? (कामना—प्रसाद, २५); बुरी तरह डौंटता है, लोग उसके सामने जाते हुए कांपते हैं (गवन—प्रेमचंद, ३७); वह रावण जिसमें भूतल था कांपता (वेदेही०—हरिऔध, १००)

### कांव-कांव

लड़ाई । प्रयोग—गुन्नी पुरतानीकी छतार होनेवाली सास-बहू की कांव-कांवसे कान पक गए (बुंद०—अ० ना०, ४)

### कांव-कांव करना

शोर करना, जानोचना करना । प्रयोग—विराट्टी का समझ जो है । सारा गांव कांव-कांव करने लगेगा (गोदान—प्रेमचंद, ४७); अतः मेरे वहां जाते ही कांव-कांव मच गई (गोली—चतुर०, ३४३)

(समा० मुहा०—कांव-कांव करना या होना)



### काग उड़ाना

शुभ शकुन के लिए काग उड़ाना । प्रयोग—कड़वा उड़ा-  
वत मेरी बहियाँ पिरांनी, कहे कबीर मेरी कथा सिरांनी  
(कबीर ग्रंथा०—कबीर, २०८); मुरदास प्रभु तुम्हरे दरस  
को काग उड़ावति सैन (सू० सा०—सूर, ४६४७); पर्यो उड़ावन  
मोको, सब दिन काग (रहीम कवि०—रहीम, ५९)

### कागज का पुतला

अस्थायी वस्तु । प्रयोग—नस्वर तन जिनि भूल पुतरा  
कागद को सो (राधा० ग्रंथा०—राधा० दास, ५०)

(समा० मुहा०—कागज का घर होना,—महल होना,  
—नाच होनी)

### कागज का भवन बनाना

हवाई जहाज बनाना । प्रयोग—पीठि दिवें सब दीठि परे  
निमहे, जग ईठिनि कोन सकेरे । दीरि चक्यो जित ही  
तितही तिनहीं चितयौ न कहूँ हित हेरे । कागर-भौन ले  
आगर मोन दे बात बसो पै मुजानहि टेरे । नैनहि काननि  
सौ ही मदा घन आनंद घोरनि सों मुख फेरे (घना० कवित्त  
—घना०, १६६)

(समा० मुहा०—कागज का घर बनाना,— महल  
बनाना)

### कागज काले करना

व्यर्थ लिखना । प्रयोग—व्यर्थ कागज काले करने की  
मुझे यादत नहीं, धवकाश भी नहीं (पद्म० के पत्र—पद्म०  
शर्मा, ६७); हुफ्तो सरकारी कर्मचारियों में लिखा-पढ़ी  
होती रही । मनो कागज स्वाह कर दिये गये (गवर्न—  
प्रेमचंद, ३१३)

(समा० मुहा०—कागज रंगना)

### कागज की नाच

(१) असफल प्रयत्न । प्रयोग—भए कागद-नाच उपाव  
सब घन-घानद नेह-नदी गहर (घना० कवित्त—घना०, ३१)  
(२) न टिकने वाली वस्तु ।

### कागज भूटा होना

इकारनामा भूटा होना । प्रयोग—बहुत दिना हूँ जाय  
कहे तो कागद भूटा (कुण्ड०—गिरधरदास, ७)

### कागजी घोड़ा दौड़ना

(१) लिखा-पढ़ी करना । प्रयोग—आज कल भी कागजी  
घोड़े दौड़ाने और खानापुरी करने की प्रवृत्ति अधिक है  
(मेरे०—गुलाब०, १९७)  
(२) हुंसी पुर्जे के बल पर व्यापार करना । प्रयोग—  
जब तक कागज के घोड़े दौड़ते हैं रुपये की क्या कमी है  
(परीक्षा०—श्री० दास, ६)

### काज निवाहना

कार्य पूरा होना । प्रयोग—जो विधि कुशल निवाहे  
काज (राम० (अ)—तुलसी, ३८०)

### काज सरना

कार्य बनना, कार्य पूरा होना । प्रयोग—राज काज तुम  
ते न सरंगो, काया अपनी घोष (सू० सा०—सूर, ४१६८)

### काजल की कोठरी

कलक से भरा हुआ । प्रयोग—काजल केरी कोठरी,  
मसि के कर्म कपाट (कबीर ग्रंथा०—कबीर, ४३); वह मधुरा  
काजल की ओवरी, जे आवें ते कारे (सू० सा०—सूर,  
४३८०) इस काजल की कोठरी में बेधव्वा कौन रह सकता  
है ? (कला०—उग्र, २९)

### काजी होना

(१) मनमानो करनेवाला, स्वयं निर्णय करनेवाला । प्रयोग—  
इन सौ तुम परितीति बड़ावत, ये हैं अपने काजी  
(सू० सा०—सूर, २८७५)  
(२) जबर्दस्ती टांग बढ़ाने वाला होना ।

### काट-कपट करना

छिपाकर काट-छाट करना, चोरी-चोरी कोई काम करना,  
बचाना । प्रयोग—उत्तने मजूरी से एक-एक पैसा काट-कपट  
कर तीन रुपए कम्बल के लिए जमा किये थे (मान० (१)—  
प्रेमचंद, १४७)

### काट की

चुस्त और तीखी । प्रयोग—हां काफी पड़ी-लिखी जान  
पड़ती है । अंगरेजी बड़े काट की निखती है (शिला—  
निराला, ११८)

### काट खाना

(१) बुरा लगना, अप्रिय लगना । प्रयोग—नही अपनी  
भाषा भाती, भोग भी काटे खाता है (मर्म०—हरिऔध,



## काट खाने दौड़ना

११०): यह सदन हमारा है, हमें काट खाता (प्रिय०—हरिऔध, ४१)

(२) हानि पहुंचाना ।

### काट खाने दौड़ना

(१) मकान आदि का सूनेपन के कारण बहुत भयावना लगना । प्रयोग—गए सुमत तब राउर माहीं । देलि भयावन जात डेराहीं । घाड़ खाइ जनु जाइ न हेरा । मानहुं विपति विषाद बसेरा (राम० (अ)—तुलसी, ४०७)

(२) हर बात पर बिगड़ना ।

(३) कसेपन से जवाब देना ।

### काट छांट

छल-कपट । प्रयोग—है कपट से भरा हुआ कपटी है भरी काट छांट भेजे में (चोखे०—हरिऔध, १६९)

### काट-पीट

बुराई, छल-कपट । प्रयोग—है भरी काट पीट रग रग में क्यों न कपटी कपट भरा होगा (चुमते०—हरिऔध, ११२)

### काट ध्योत दिखाना

दे० कतर ध्योत करना

### काटना

(१) दूर करना, मुक्त होना । प्रयोग—जब काटी और पैसे का राज हो तब उसके धारकण को काट सकना कठिन है (अशोक०—ह० प्र० द्वि०, ३३)

(२) विटाना । प्रयोग—रात तो रेवती ने घर में काटी (मान० (४)—प्रेमचंद, १७४)

(३) प्रतिवाद करना या रोकना । प्रयोग—संजोजक जी जो कहेंगे उसे काली टोपी वाले नौजवान प्राण रहते नहीं काट सकते हैं (मैला—रेणु, २२०); मुंशी राधेलाल के भूट को काटना, यह किसी भी पड़ोसी की हिम्मत की बात नहीं थी (मुले०—भाग० वर्मा, १०); रहने दो, रहने दो ।—पड़ोसा ने बीच में ही काटा (देवकी०—रा०रा०, ९)

(४) बुरा लगना । प्रयोग—लक्ष्मी दादा को तो खंच करना जैसे काटता हो (मुले०—भाग० वर्मा, २७१); मोटर कार की क्या जरूरत है ? क्या दस-पांच रुपए काट रहे हैं (रंग० (१)—प्रेमचंद, ६७)

### काटने आना,—दौड़ना

(१) बिड़बिड़ाना, खीझना । प्रयोग—प्यार धीर स्नेह

का उत्तर देती है, जली-कटी बात धीर खाने के रूप में । काटने को दौड़ती है (ज्ञान०—यशपाल, १०७)

(२) कुछ होकर सामने वाले को भला बुरा कहना । प्रयोग—कुछ कहता हूँ तो काटने दौड़ती है (गोदान—प्रेमचंद, २९८)

(३) दुख देना, अप्रिय लगना । प्रयोग—फिर ये स्मृतियां तुम्हें सुखी बनाने के स्वप्न में तुम्हें काटने दौड़ेंगी (इंस्टा०—भाग० वर्मा, १२); लाली बक्त भारी हो जाता है । काम में काटो तो कट जाय, यों काटने को आता है (सुनीता—जैनेन्द्र, ८६); संयोग में वे सुख बढ़ाते हैं और वियोग में काटने दौड़ते हैं (चिंता० (१)—शुक्ल, १४७)

(समा० मुहा०—काटे खाना)

### काटने दौड़ना

दे० काटने आना

### काटो तो बदन में खून नहीं

अत्यन्त डर से एक बारगी सन्न हो जाना या अत्यन्त डर जाना । प्रयोग—जामूस बगलें भांकने लगा । काटो तो खून नहीं (मृग०—दृ० वर्मा, ७७); मूलियाके देहमें काटो तो लहू नहीं (मान० (४)—प्रेमचंद, १४८)

### काठ-कठोर

निष्ठुर । प्रयोग—ऐसे काठ-कठोर से कौन विवाह करेगा (गोदान—प्रेमचंद, ८१)

### काठ का उल्लू

जड़-मूल । प्रयोग—बैसे ही अंधेजों के राज्य में भी हम जो कूए के सेंडर, काठ के उल्लू, पिजड़े में गंगाराम ही रहे तो हमारी कमबल कमबली फिर कमबली है (भा० प्रथा० (३)—भारतेन्दु, ८९७); रामू जवान होकर भी काठ का उल्लू था (मान०—प्रेमचंद, २४९); बिलकुल गंधे घं घं सब निरे काठ के उल्लू (मृग०—दृ० वर्मा, १६५); कम नहीं उल्लू कहाना ही रहा काठ के उल्लू कहाने अब लगे (चुमते०—हरिऔध, १२९)

### काठ का कलेजा

निष्ठुर । प्रयोग—लज्जाते क्यों हो, गोद में ले लो, प्यार करो, बंसा काठ का कलेजा है तुम्हारा (गोदान—प्रेमचंद, ३४६)



### काठ की हांडी

ऐसी दिशाऊ वस्तु जिसका धोखा या उपयोग एक बार से अधिक न चले। प्रयोग—काया हांडी काठ की ना ओह चड़े बहोरि (कबीर ग्रंथा०—कबीर, २५९); यह अंधेर, याद रखो, काठ की हांडिया दुबारा नहीं चढ़ा करती (पद्म० कैपत्र—पद्म० शर्मा, १८३); इ ब्रह्मन्त—काठ की हांडी बार बार नहीं चढ़ती (रंग० (२)—प्रेमचंद, ७६)

### काठ मारना

मन हो जाना, स्तब्ध हो जाना। प्रयोग—राखाल ने धर्मनन्दी का कथा सहलाया। उसे तो जैसे काठ मार गया था (बिहम०—दे० स०, ४१७); सज्जन को कमरे में प्रवेश करते ही मानो काठ मार गया (तुंद०—अ० ना०, ४०३); मुनते ही भट्टिनी को जैसे काठ मार गया (बाण०—१० प्र० द्वि०, ५५)

### काठ में पांच देना—पड़ना

(१) विपत्ति में पतना। प्रयोग—धीरे उनके शरीर में पृष्ठ होने दीजिए, बिछा कुछ पड़ लेने दीजिए, मोत, तेल लकड़ी की फिक करने की बुद्धि भीज लेने दीजिए तब उनका पैर काठ में डालिए (भा० प्र० (३)—भारतेंद्र, ९०१); भई यह उन लोगों में नहीं है जो गा-बजाकर काठ में पांच देते हैं (भिला०—कोशि०, २०५); जटाशंकर का काठ में पैर पड़ा (चौटी०—निराला, १३९)

(२) अपराधी को काठ की बेड़ी पहनाना।

### काठ में पांच पड़ना दे० काठ में पांच देना

### काठ सी बात

कठोर बात। प्रयोग—माखन सो मेरे मोहन को मन काठ सो तेरी कठेरी ये बातें (केशव०—केशव, ६१)

### काठ होना

चेतना रहित होना, स्तब्ध होना। प्रयोग—कल्याणी पति की मूरत देखते ही काठ हो गई (तुंद०—अ० ना०, २९३); हो चुके काठ गाठ का सोकर रो चुके आठ आठ आंसू हम (चुमते०—हरिऔध, ७७)

(२) मुन्नकर कहा होता।

### काठी अच्छी होना

शरीर स्वस्थ-पुष्ट एवं लम्बा चौड़ा होना। प्रयोग—वह तो कहो सुभागी की काठी अच्छी है, नहीं बाल बच्चे हुए होते तो पोंसू से ब्रेडे होते (रंग० (२)—प्रेमचंद, २७८)

### कान आंख खोल कर

संचेत होकर। प्रयोग—रानी—यही कि कान घोर आंख खोलकर समय की प्रतीक्षा करें (शांसी०—पू० वर्मा, ११७)

### कान उखाड़ना

कान उमेट कर दंड देना। प्रयोग—पांच उखड़े न जब भले पब से, कान कैसे उखाड़ तब लगे (बोल०—हरिऔध, ७६)

### कान उठाना

मुनने के लिए तैयार होना, आहट लेना, चौकन्ना होना, गन्धे होना। प्रयोग—जाति की लान तान मुनने को कान जब है उठा नहीं रहता (चुमते०—हरिऔध, १०२)

(समा० मुहा०—कान उँचा करना)

### कान ऐंठना

(१) दंड देने के हेतु कान मरोड़ना। प्रयोग—दूर करता ठमक ठमक की है। ऐंठ का कान ऐंठ देता है (चुमते०—हरिऔध, १७६)

(२) सावधान करना। प्रयोग—कान कब ऐंठे जाते नहीं, पर कान कहाँ हो सके लड़े (सर्म०—हरिऔध, ८३)

(३) किसी काम को न करने की प्रतिज्ञा करना।

### कान कच्चा होना,—के कच्चे होना,—के पतले होना,—के हलके होना

मुनी बात पर भट विश्वास कर लेने वाला। प्रयोग—सखी पातरी कान की कौन कहाऊ बानि। आक कली न रनी करे घली, घली जिय जानि (बिहारी रत्ना०—बिहारी, १४); भी करे बाह दे बिपत हम पर पत उतारें न कान के पतले (चुमते०—हरिऔध, १३); क्यों भला बात हम मुनें कच्ची है न बच्चे न कान के कच्चे (चुमते०—हरिऔध, १३); दूसरे कान से लगे जब है क्यों मुनें बात कान के हलके (बोल०—हरिऔध, ७७); जिनके कान कच्चे हैं, उन्हें उनमें कई सगा लेनी चाहिए (कल्याणी—जैनेन्द्र, ५७); नये मेम्बरों का कान कच्चा होता है (मैला०—रेणु, २०७)



### कान कटाई होना

मूलं बनना, उपहास होना या बदनामी होनी। प्रयोग—सूरदास के प्रभु सो करिये, होइ न कान कटाई (सु० सा०—सूर, १८५)

### कान करना

(१) सुनना। प्रयोग—क्या क्या चर्चायें फैली हैं जरा उपर भी कान करो (गु० नि०—वा० मु० गु०, ६२२) (+); भनकत भिन्नी रट रहे दादुर चियो जात नहि कान (भा० प्र०—(२)—भारतेन्दु, ११२)

(२) ध्यान देना, महत्व देना। प्रयोग—जब तौनी समझाई कही नृप तब तैं करी न कान तैं (सु० सा०—सूर, २६९); सुनहु नाथ तुम सहज सुनाना। बालक बचन करिज नहि काना (राम० (बाल)—तुलसी, २८४); कामिनि काम कथा करै कान न ताकैं विधाम की मुदरलाई (केशव, ८८); दीनबंधु दीनके न बचन करत कान मोन हूँ रहे हो कछु भाति मन माखें हो (क० १०—सेनापति, १२२); धन धानद जान न कान करै इनके हित की कित कोठ कहे (धन० कवित्त—धना०, २२८); महाराज, अब आप किसकी कान करते हैं, बात बिगड़ चुकी, जो कुछ करना हो सो कीजें (प्रेम सा०—लालू लाल, २११); तुही कहा ब्रज में धनोली भई। कान नहि काहू की करत रई (भा० प्र०—(२)—भारतेन्दु, ३६४); बातें मेरी कमलिनिपते ! कान की भी न तुने (प्रिय०—हरिऔध, ४४)

### कान का पर्दा फटना

(१) बहुत शोर होना। प्रयोग—गरज से कान के परदे फटे जाते थे (मान० (८)—प्रेमचंद, ८०); मुन उमै कान के फटे परदे कान अब तो दिया नहीं जाता (चुभते०—हरिऔध, ५९); जब डोल के पास बैठे हुए लोगों के कान के परदे फटते रहते हैं, तब दूर किसी नदी के तट पर संध्या समय किसी दूसरे के कान में वही शब्द मधुरता का संचार कर देते हैं (कुछ—५० पु० बख्शी, ६)

(२) कोई बात बहुत अप्रिय लगनी। प्रयोग—छापकी बेतुकी सुनते-सुनते कानों के पर्दे फट चले (गु० नि०—वा० मु० गु०, ४४५)

### कान का बहरा या कान का बहरापन

प्रार्थना पर ध्यान न देना। प्रयोग—आ बहरापन सका

न बेहरे पर जा सका कान का न बहरापन (चुभते०—हरिऔध, ५९); सुन सके बात हित भरी वे ही हैं न जो लोग कान के बहरे (चुभते०—हरिऔध, ५५)

### कान का मैल निकलना

धनमुनी दूर होना, ध्यान देना, सुनना। प्रयोग—थक गये काढ़ काढ़ने वाले कान का मैल कड़ नहीं पाता (चुभते०—हरिऔध, १०१)

### कान काटना

मात करना, बड़कर होना। प्रयोग—यहाँ भंगेड़ने रंडियों के भी कान काटती हैं (भा० प्र०—भारतेन्दु, ९४७); मंगला देवी बात करने में मर्दों के भी कान काटती है (मैला०—रैपू, २१५); मान गया वह जी तुम्हें ! बाह कया, हिकमत निकाही है। हम सब के कान काट लिए (गवन—प्रेमचंद, २२९); जोगीदा ना लेने के बाद कबीर गाते हैं जो अदलीलता में जोगियों के भी कान काटने वाले होते हैं (कबीर—ह० प्र० दि०, ३९)

(समा० मुहा०—कान कतरना)

### कान की चैली झारना

बहुत जोरगुल करना, जोरगुल करके तंग करना। प्रयोग—इसमें अब भी हठ छोड़ सीधी राह पर आइये धर्म धर्म पुकार कान की चैलियां मत झारिये (महु नि०—वा० महु, २५)

(समा० मुहा०—कान की चैली खाना)

### कान की झिझी फटना, कान फटना

तेज आवाज से हैरान आ जाना। प्रयोग—वहाँ के कोलाहल से कानों की झिझियां फटनी थीं (राधा०—ब्र० स०, ४१-४२); कान जिनके फटे न पर दुख मुन बे कभी है न कनफटे जोगी (चुभते०—हरिऔध, १२२)

### कान की रुई निकालना

सुनना, प्रार्थना आदि पर ध्यान देना। प्रयोग—तू पुनि मरब होब जरि भई। धबहुं उपेल् कान के रुई (पद०—जायसी, ३८१०)

### कान के कच्चे होना

दे० कान कच्चा होना

### कान के पतले होना

दे० कान कच्चा होना



## कान के हलके होना

### दे० कान कच्चा होना

#### कान खड़े करना या होना

(१) सचेत होना । प्रयोग—बाहर से मोटर का हान मुनाई दिया । सुनदा के कान खड़े हो गये (कर्म०—प्रेमचंद, २७२); दरवाजे से सटा हुआ पीरखली कान खड़े करके सुनने लगा (झासी०—वृ० वर्मा, २०३); शनैः शनैः सरमद के भक्तों की भीड़ बढ़ने लगी, सारा शहर उसका उपासक हो गया, कट्टर मुल्लाओं के कान खड़े हुए (पद्म पराग—पद्म० शर्मा, २२९)

(२) लज्जित होना ।

(३) सावधान करना ।

#### कान खुलना

भविष्य के लिए सावधान होना । प्रयोग—कब खुला कान प्राण भी न खूली खुल बिबाड़े सके न छाती के (बोल०—हरिऔध, १८३)

#### कान खोलकर सुनना

ध्यान पूर्वक सुनना । प्रयोग—हृदय ! पत्थर के होकर तुम यह सब कान खोलके सुन लो (भा० ग्रंथ० (१)—भारतेन्दु, २६५); तो खुदेगान भाग खोले भी बात यह कान खोल कर सुनिये (चुमते०—हरिऔध, १०२); देखो खोलकर आँखें, सुनो खोलकर कान (बुद्ध०—वचन, ४४); और देखो गोविन्दन, एक बात सुन लो कान खोल कर (दूधगाछ—दे० स०, ७३)

#### कान खोलना

(१) सचेत करना । प्रयोग—आनंद के पन ही मुजान कान खोलि कहीं आरस जम्पो है कैसे सोई है कृपा डरक (धन० कवित्त—धना०, १७९); तुम्हारे अनुमान की बात हम कल डाक्टर साहब से कहकर उनके भी कान खोल दंगे (भा० भा० (१)—कि० गो०, १६१); खोलते तो कान कैसे खोलते एक सुर से बोलते ही अब नहीं (चुमते०—हरिऔध, ११०)

(२) किसी बात को किसी तक पहुँचा देना, कह देना । प्रयोग—आई दिमें रहोगे कहा लो बहरापवे की, कबहूँ तो मेरिय पुकार कान खोलिहै (धन० कवित्त—धना०, ५९); रघुनन्दन जी क्या किसी को भी बिना पुरस्कार लिए

एक पंक्ति भी न दीजिए । यह व्यवहार का परम धर्म बना लीजिए । यह बात मैंने उनसे कह भी दी थी और कान खोल दूंगा (पद्म० के पत्र—पद्म० शर्मा, ११८)

#### कान गरम करना

(१) सजा देना, शासन करना । प्रयोग—और समाज में दो चार ऐसी स्त्रियाँ बनी रहे, तो अच्छा, पुरुषों के कान तो गर्म करती रहें (गोदान—प्रेमचंद, १९७)

(२) कान उमड़ना ।

(३) दबाव डालना ।

#### कान चिपकाये होना

बहुत ध्यान से छिपकर सुनना । प्रयोग—उमिला दरवाजे के एक किबाड़े के साथ कान चिपकाये खड़ी थी (झुठा०—(२)—यशपाल, ३०१)

#### कान न्दीरना

बहुत तेज मुनाई पड़ना । प्रयोग—उसकी प्रतिध्वनि  $\times \times$  जाती है कान चौर (बुद्ध०—वचन, ४९-५०)

#### कान भाड़कर निकल जाना

उपेक्षा करना, परवाह न करना । प्रयोग—पाँव की धूल भाड़नेवाला किस तरह जाय कान भाड़ निकल (चोखे०—हरिऔध, १९०)

#### कान ठनकना

भावी विपत्ति की घाशका होनी । प्रयोग—कन्नगी के कान ठनक गए (सुहाग०—अ० ना०, २३९)

#### कान ढलकाना

श्वकर रहना । प्रयोग—कल यह होता था कि उनी पोपी को लेकर मुसलमान लड़के हिन्दुओं को छेड़ते थे और हिन्दु लड़के कान ढलका कर चुपके हो जाते थे (गु० नि०—वा० मु० गु०, ३०४)

#### कान तक जल उठना

बहुत कुड़ जाना । प्रयोग—पहले—और आगे लाखी नहीं सोच सकी  $\times \times$  कान तक जल उठी (मृग०—वृ० वर्मा, ३२०)

#### कान तक पहुँचना या पहुँचाना

किसी बात का मुनाई पड़ना, जानकारी में आना या करवाना । प्रयोग—जब यह बड़ हो गए थे और थी गोकुल में रहा करते थे, पीरे पीरे इनके गुल शाहनशाह घनवर



के कानों तक पहुँचे (भा० ग्रंथा०—(३)—भारतेन्दु, ७३); वह प्रजा के दुःखों को राजा के कानों तक पहुँचाना राज-हित सम्भवते थे (राधा० ग्रंथा०—राधा० दास, ३६९-७०); लेकिन मरने के करीब के जमाने की कोई शिकायत मेरे कान तक नहीं आई (झांसी०—वृ० वर्मा, १४४)

### कान देकर सुनना—धर कर सुनना

बड़े ध्यान से सुनना । प्रयोग—घोर उपाह नहीं दे बोरे मुनि तू यह दे कान (सू० सा०—सूर, ३०४); मुनो मेरा भूप सकल दे कान (गीता० (वा)—तुलसी, ५९); मुरली-वान कान्हरो गवत मुन ले री दे कान (नंद० ग्रंथा०—नंद०, ३९७); मेनापति मोटे, सौतापति के प्रसाद जाको सब कवि कान दे सुनत कजिनाई है (क० र०—सेनापति, २); पत-धानंद ध्यारी मुजान दे कान घा मुनिपै श्रित-बाल हहा (घन० वरिष्ठ—घना०, १५१); धानन के धान एहो सुंदर मुजान, मुनो कान धरि बाल, नेहु मेरो ओर चाहिये (घन० वरिष्ठ—घना०, २२४); यह बहुत अच्छी कथा है, इसे कान दे मुनो (स० ग्रंथा०—स० मिश्र, ७); बात के अर्थ से अलग और भी अर्थ है मुँहमें, अकथित, अकथ्य अनि-प्राय, जरा कान देकर मुनो (नदी०—अज्ञेय, १०६)

### कान देखे बिना कौए के पीछे दौड़ना

किसी के बहकावे में घाना—बात को स्वयं जाने-समझे बिना किसी के कहें में आजाना । प्रयोग—दोड़ पीछे पड़े न कौए के कान अपना न किमलिये टोबें (चुमले०—हरिऔध, १०२)

### कान देना

(१) ध्यान देना । प्रयोग—खेलत कान तहाँ दे रहे । जहें कोउ काम कथा कछु कहै (नंद० ग्रंथा०—नंद० १०६) (+); भावनी निहारी वह कान्हि ही तें 'किनोराइ', काम की कथानि कछु कान देन लागीहै (केशव० (१)—केशव, ७३); जो कोई मेरी प्रशंसा करता है, यद्यपि वह सब हो तो भी मैं उस पर कान नहीं देता (पद्म पराग—पद्म० शर्मा, १९७); कान नहीं देती थी कभी पगले प्रेमीके गीत पर (दूध्याध—दे० स०, २५०); हाकिमों से जो कुछ कहना-सुनना था कह मुन चुके, किसी ने भी कान न दिया (कर्म०—प्रेमचंद, २६२) (+१)

(२) ध्यान से सुनना । प्रयोग—यदि कोई काम ही न

न दे तो कौवे का शब्द बेना ही कोमल और मधुर है जैसा कोयल का (भा० ग्रंथा० (१)—भारतेन्दु, ६४६); निहार मणि, सारिका कुछ कहे बिना जानत-सी, दिमे धवण है यहीं, इधर मैं हुई भ्रांत सी (साकेत—गुप्त, २६१); वह कान देकर सुनने लगा (शेखर (२)—अज्ञेय, ६७) देनिए प्रयोग (१) में (+) भी

(३) विलीन सुनना । देनिए प्रयोग (१) में (+१)

### कान धर कर सुनना

#### दे० कान देकर सुनना

### कान धरना

(१) सुनना, मानना । प्रयोग—गंगा गृह के बचन पछाना झुजो बान न धरई काना (कबीर ग्रंथा०—कबीर, ३१०); बात न धरति कान, मानति भीह बान, तऊ न चलत बाम अतिव्या परकि रहो (सू० सा०—सूर, ३४०५); अपनी सब कुछ कह रहे हो, पर हमारे कवण कंदन पर तनिक कान नहीं धरते (पद्म पराग—पद्म० शर्मा, ४१); जब शत्रुपुत्र में वाद जाती है, तो वह किसी की प्रार्थना पर कान नहीं धरता (ब्रह्म०—दे० स०, २२८)

(२) सजा देना ।

(३) स्वीकार करना ।

### कान न दिया जाना

(१) घोर के कारण कुछ न मुनाई देना । प्रयोग—घोर मारे कोलाहल के कान नहीं दिया जाता (भा० ग्रं०—(१), भारतेन्दु २५७); मुन उसे कान के पटे परदे कान अब तो दिया नहीं जाता (चुमले०—हरिऔध, ५९)

(२) न सुन सकना—सहन न पाना । प्रयोग—कोलाहल के मारे कान नहीं दिया जाता था (लेशली० (२)—चतुर० ६)

### कान पकड़ना

(१) किसी कामसे न करने की प्रतिज्ञा करना । प्रयोग—और आज से कान पकड़ो कि किसी सब में एक शब्द भी न लिखोगे (मान० (१)—प्रेमचंद, ६८); तब से मैंने कान पकड़ा कि इस घर में अब कभी ऐसी चीज का नाम भी न लूँगी (बाहुर०—दे० स०, ३६)



- (२) गुलना में भी परास्त होना । प्रयोग—गाने बजाने में महादेवजी छूट सब उसके घागे कान पकड़ते थे (ईशा०—ईशा०, १०१); घोड़े की सवारी में पुरुषों के कान पकड़ती है (शांसी०—वृ० वर्मा, २७); बड़े-बड़े कलावन्ती उनके सामने कान पकड़ते थे (गौली—चतुर०, १०१)
- (३) किसी का कान पकड़ कर दंड देना ।
- (४) किसी बड़े का नाम लेने का दोष मार्जन करना ।

### कान पकड़ने का काम करना

ऐसा काम करना जिसके लिए दंड मिले—बुरा काम करना । प्रयोग—काम कर कान पकड़ने का, मान क्यों अपना है छोटे ? (मर्म०—हरिऔध, ६९)

### कान पकना

किसी बात को बार-बार सुनते-सुनते उकता जाना । प्रयोग—भगत जी की तीर्थ-यात्रा की कथाएँ सुनते-सुनते तो हमारे कान पक गये (ब्रह्म०—दे०स०, १४५); सुन्नो पुरतानी की छत पर होने वाली सास-बहू की काव-काव से कान पक गये (वृ०—अ० ना०, ४)

### कान पड़ना

सुनाई पड़ना । प्रयोग—रावन के वह कान पर्यो जब । छोड़ि स्वयंवर जात भयो तब (केशव० (२)—केशव, २४६); जब ते कुंवर कान्हू, रावरी कला-निधान, कान परी बाँके कहूँ, सुनस कहानी सी (शब्द०—देव, ३२); ऐसे समय कहूँ चातक की दुनि कान परी डरपी वह प्यारी (जग०—पद्माकर, ५); परिगो कानैन सखिआ, पिअ को गीन (रहीम कवि०—रहीम, ४७)

### कान पड़ी आवाज न सुनाई देना

बहुत शोर होना । प्रयोग—कान परी सुनिये नाही, बहु बाजत तान मृदंग (सू० सा०—सूर, ३५२५)

### कान पर जूँ न रेंगना

कुछ भी परवाह न होनी, कुछ भी ध्यान न होना । प्रयोग—हम भला कान क्या हिलायें कान पर रेंगती नहीं जूँ तक (चुभते०—हरिऔध, ११२); घम्मा और बाबूजी से एक बार नहीं लासों बार कहा, जोर देकर कहा कि दो-बार बीजें तो बनवा ही दीजिये, पर किसी के कान पर जूँ तक न रेंगी (गवन—प्रेमचंद, ३१); क्या एक बालक की माय से भी तुम्हारे कानों पर जूँ तक नहीं रेंगी (ब्रह्म०—

दे० स०, १५६); सब गांधी जी की जय बोलते हैं पर अपने पर गांधी है तो कान पर जूँ भी नहीं रेंगती (दीने०—श्री रा०, २३)

### कान पर विश्वास न होना

सुनी हुई बात पर विश्वास न होना । प्रयोग—मुंशी शिवलाल को अपने कानों पर विश्वास नहीं हुआ (मूले०—मग० वर्मा, ८)

### कान पर हाथ रखना

(१) भय या आश्चर्य से सहम जाना । प्रयोग—होल, भील, भर, पासी, × × × जिन बुराईयों का नाम सुन कर कान पर हाथ रखते हैं (ठेठ०—हरिऔध, ५३)

(२) धनजान बनना—साक इन्कार करना । प्रयोग—दूसरे की दया सब लोग खोजते हैं और स्वयं करनी पड़े तो कान पर हाथ रख लेते हैं (तिल्ली—प्रसाद, १५६); हमने बाहर के गवाहों को आजमाया, पर सब कानों पर हाथ रखते हैं (गदन—प्रेमचंद, २१४)

### कान पारना

ध्यान से सुनना । प्रयोग—काननि पारि न सुनत माहि ते नेको धैर हमारो (ठेठ०—हरिऔध, १३)

### कान फटना

#### दे० कान की भिल्ली फटना

### कान फाड़ना

बहुत शोर करना । प्रयोग—यह गीत बंद नहीं होता । कान फाड़े दे रहा है (धूम०—उ० मट्ट, ५)

### कान फूँकवाना

गुप्त मंत्र लेना—दीक्षा लेनी । प्रयोग—तो तू भी किसी सिद्ध से कान फूँकवाकर तुमझी तोड़वा ले (भा० ग्रं० (१)—भारतेन्दु, ४४५)

### कान फूँकना

(१) बहकाना—कान भरना । प्रयोग—तब रखें पाव फूँक फूँक के न क्यों और के कान फूँकने वाले (चुभते०—हरिऔध, ११९); स्वप्न में आकर कौन सुजान फूँक पा गया तुम्हारे कान (पञ्चव—पंत, ७२)

(२) मजक देना—दीक्षा देनी । प्रयोग—फूँकते कान क्यों नहीं अपना और के कान फूँकने वाले (चुभते०—हरिऔध, १२२)



### कान फूटना

बहुत शोर होना। प्रयोग—गरजति तरजति अनु  
अनु भाती। फूटे कान अरु फाटे झानी (नंद० ग्रंथा०—  
नंद०, १६८)

### कान फोड़ना

बहुत शोर करना। प्रयोग—बादुर भीगुर कानन फोरै  
(नंद० ग्रंथा०—नंद०, ११६); पैड़ परे पापी ये कलापी निस  
द्योम ज्यो ही, चातक ! चातक त्यों ही तूह कान फोरि नै  
(धन० कदित्त०—धना०, ५८); लवंग—अरे कान न फोड़े  
हाल, इधर द्या (मा० ग्रंथा०(१)—भारतेंदु, ६४३); भो भो  
करि के कान फोरि बित दुचित करावै (राधा० ग्रंथा०—  
राधा० दास, ५०)

### कान बचा कर

दूसरे न सुने, इस रूप में। प्रयोग—छिप-छिपके जो की  
जाती है बात, एक की बचा के धाय, दूसरे का बचा के  
कान उसमें भी होती है जान (बुद्ध०—द्वयन, ८८)

### कान बहना

कान से पस निकलना। प्रयोग—जब निराला रम सुभने  
बहा नही कान तू ही सोच तब तू क्या बहा (बील०—  
हरिऔध, ७८)

### कान भर जाना

अत्यधिक शब्द होना, किसी बात को सुनते-सुनते ऊब  
जाना। प्रयोग—मधकर घोर कोकिला चातक, सुनि-सुनि  
सबन भरे (सु० सा०—सुर, ४३५५); बहुत हुआ कान  
भर गये (राधा० ग्रंथा०—राधा० दास, ६३६)

### कान भरना,—में गरम मसाला भरना

बुगली खाना, बारखा बिगाड़ना। प्रयोग—इधर ठाकियों  
के कान भरे जाने लगे (राधा० ग्रंथा०—राधा० दास, ३६८);  
क्यों भला आप भर गये साहब कान ही तो भरे किसी ने  
से (चौखे०—हरिऔध, ४२); यह सारी आग मेरी की लगाई  
हुई है। उसने रामते ही में साहब के कान भर दिए थे  
(रंग० (१)—प्रेमचंद, २१७); न जाने कौन-सी पट्टी पड़ा  
कर उन्होंने न केवल ताई की जवान ही चुप रखी बरन्  
बड़ई सरदार के खिलाफ उनके कानों में गरम मसाला भर  
दिया (बुद्ध०—अ० ना०, ८); मुन्नी की कृपा के लिये पुरी  
से ईर्ष्या करनेवाले और उसके विरुद्ध मुन्नी के कान भरने

वाले भी थे (झुठा० (२)—यशपाल, ५४६)

(समा० मुहा०—कान में फूंकना)

### कान भारी करना

बात पहुँचाना, शिकायत करनी। प्रयोग—दरबार हो  
तो कर दू लाटों के कान भारी (गु० नि०—वा० मु० गु०,  
६७२)

### कान मलना

कान एँठ कर दंड देना। प्रयोग—तब हमारी बात ही  
फिर क्या रही जब न कोई कान नित मलता रहे (चौखे०  
—हरिऔध, १९०)

### कान मूँद बैठना

सुनी को अनसुनी करना। प्रयोग—हम मकें मूँद मंह  
भला कैसे आप तो कान मूँद बैठे हैं (चौखे०—हरिऔध,  
४३)

### कान में आना

खबर मिलनी, सुनाई पड़ना। प्रयोग—जिससे सुनते हैं  
उमंग भरी बातें कान में आती हैं (राधा० ग्रंथा०—राधा०  
दास, ६८१); सायद यह उनकी पहली शिकायत है, जो  
मेरे कान में आई है (रंग०(१)—प्रेमचंद, ३३६)

### कान में उंगली डालना,—देना

सुनने से इन्कार करना। प्रयोग—तुने सीखें आखें खोजें,  
न उंगली कानों में दे लें (मर्न०—हरिऔध, ७४); जाति  
हित की बात तब कैसे सुने कान में जब डाल उंगली दी  
गई (चुमते०—हरिऔध, १०४)।

### कान में उंगली देना

दे० कान में उंगली डालना

### कान में उड़ती बात पड़ना

यों ही मालूम पड़ जाना। प्रयोग—बात को दे उड़ा न  
पड़ कह कर पड़ गई बात कानमें उड़ती (बील०—हरिऔध,  
१०९)

### कान में कान लगाना

चोरी से कहना ताकि दूसरे न सुन सकें। प्रयोग—प्रभाकर  
उठने को था कि दिलबर भीतर आया, राजा साहब के  
कान में कान लगाया (जैटी०—निराला, १३२)

(समा० मुहा०—कान में कहना)

### कान में गरम मसाला भरना

दे० कान भरना



### कान में ठीठे ठोकना,—टेंटड़ खोसना

न सुनना, ध्यान न देना । प्रयोग—अंत को बाँधों पर पट्टी बांध कर, कानों में ठीठे ठोक कर, नाक में तकेल डाल कर आदमी क्यों जिधर तिधर घसीटे फिरता है (गुं नि०—बा० मु० गु०, २०१); इत्ती इत्ती खुशामद करो, की बहुआ तनी उठाय देओ-उठाय देओ-और कान में टेंटड़ खोस के बहुआ चली गई (बुँद—अ० ना०, २२)

(समा० मुहा०—कान में टेंटड़ी लगाना)

### कान में टेंटड़ खोसना

दे० कान में ठीठे लगाना

### कान में डाल देना

सुना देना, सूचित कर देना । प्रयोग—रघु पद्म ने कहा—देशमुख बाबू, मैंने तुम्हारी फीस नहीं दी, इसीलिए यह दूसरा मंत्र इसके कान में डाल रहे हो (दूधगाछ—द० स०, ५०); उसने परमानन्द के कान में डाल दी बात (परती०—रेणु, ४१९); सिविल सारजेंट के कान में यह बात डाल दी थी कि राजा साहब की ओर से पूरा एक हजार लठैत जबान बँटा हुआ है (रंग० (१)—प्रेमचंद, ४२०)

### कान में पड़ना

(१) सुनाई पड़ना । प्रयोग—स्वाम नाम खबननि परयो हरषी मुख जोई (सू० सा०—सूर, ३३३८); छठे श्रवण यह परत कहानी (राम० (वाल)—तुलसी, १७५); निदान पिता के कान में जा पड़ी (स० ग्रंथा०—स० मिश्र, १३) (+); कानों में भी न अब मुरली की सुताने पड़ेगी (प्रिय०—हृ० ओष, ८४); हम बुरे हैं दूसरों के कान में पड़ते ही इसका अर्थ उलट जाता है (चित्ता० (१)—शुक्ल, ५९); मेरा खयाल है अधरारंभ से पहले ही मेरे कान में वेश्या या रण्डी शब्द पड़ चुका था (अपनी खबर—उग्र, २३)

(२) सूचित होना । प्रयोग—भाई कोई ऐसी जुगत निकालो कि राजा साहब के कानों में यह बात पड़ जाय (रंग० (२)—प्रेमचंद, १११-११२); राजा के कान में बात जायगी तो बाँधों पानी चढ़ेगा (चोटी०—निराला, १२०); देखिए प्रयोग (१) में (+) भी

### कान में फूँकना

कुमंत्रणा देना । प्रयोग—घपनी इच्छा की पूर्ति के लिए वह उसे आँखों पहर बेसुध बनाए रखती और उस बेसुधी में वह निरन्तर मीठे-मीठे शब्दों में घपना स्वार्थ बांध कर कोवसनके कानोंमें फूँक करती (मुहा०—अ० ना०, १८१)

### (समा० मुहा०—कान में फूँक मारना)

### कान में भनक डाल देना

किसी को किसी बात की सूचना दे देनी । प्रयोग—इन लोगों के कानों में भी भनक डालनी थी सो डाक थी (सा—कौशिक, ३४)

### कान में भनक पड़ना

किसी बात की जानकारी हो जानी—उड़नी उड़नी खबर मिलनी । प्रयोग—होरो के कानों में भी इस बात की भनक पड़ी (गोदान—प्रेमचंद, १०७); पूरी ठीक-ठीक नहीं जानता था परन्तु कुछ भनक उसके भी कान में पड़ी थी (झुठा० (१)—यशपाल, १५२); लेकिन हाँ, यह जो मेरे कानों में भनक पड़ी है, यह तो गलत है न (भोर०—जग० माधुर, ११५); नवनीत जी के कान में भी उसकी भनक पड़ी (पद्म पराग—पद्म० शर्मा, १३३)

### कान रखना

सुनने या जानने को उत्सुक रहना । प्रयोग—जब प्राण कान रख के, घ्रास मिला के, सम्मुख हो के टुक इधर रखिए (इंशा०—इंशा०, ९०)

### कान लम्बे होना

खोज-खोज कर बात सुनना । प्रयोग—हाँ बड़, दुनिया के कान बड़े लम्बे होते हैं (निशा०—वि० प्र०, १३९)

### कान लगाना

(१) कानों में कहना । प्रयोग—यवन खबन राजा के लागा । लरहिं दुओ पदमावति नागा (पद०—जायसी ३६१३); कान लागि कह्यो जननि जसोदा, वा घर में बलराम (सू० सा०—सूदास, ८५८); लागि लनि कान कहहि धुनि माया अब सुर काज भरत के हाथा (राम० (अ)—तुलसी, ६२३); कानों में उसके लग कर कुछ नमक मिरच भी लगा लगा । शाहजादे और मेहर के उसने गुप्त प्रेम का हाल कहा (नूर०—मक्त, ५४)

(२) कानों के पास आना । प्रयोग—बोलाई सबद सहेली कान लागि गहि माय (पद०—जायसी, २७१३); भोर एक बहु दिनि तैं उड़ि उड़ि, कानन लागि-जनि गावैं (सू० सा०—सूर, ४०७३)

### कान लगाकर सुनना

ध्यान पूर्वक सुनना । प्रयोग—कन रनिवा सिवभम्भू खटिया पर उड़ बैठे । कान लगाकर सुनने लगे (गुं नि०



—सा० सु० सु०, २०४); पुनः पुनः कान लगा लगा सुना, बजेन्द्र ने उचित पोर शब्द को (प्रिय०—हरिऔध, १४३); तात्वा ने आशा से कान लगाए (शासी०—वृ० दर्मा, ११६); राज्यश्री दरवाजे के बाहर कान लगाए, सही थी (वृ० दर्मा—अ० ना०, २९४); मारे गरमी के देह फुकी जा रही थी, लेकिन कान द्वार की ओर लगे थे (गवर्न—प्रेमचंद, १४२)

### कान से लगना

गुप्त रूप से धीरे से कुछ कहना। प्रयोग—कह लगेस मंत्र लवि काना (राम० लं—चुलसी, ८७१); दूसरे कान से लगे जब है क्यों सुने बात कान के हलके (बोले०—हरिऔध, ७७)

### कान हिलाना

तनिक भी चेष्टा करना या ध्यान देना। प्रयोग—हम मला कान क्या हिलावे कान पर रेगती नहीं जु तक (चुमते०—हरिऔध, ११२)

### कान होना

(१) सचेत होना। प्रयोग—यदि ऐसी छे बार घटनायें हो जायें तो बदमाशों को भी कान हो जाये (सु० सु०—सुदर्शन, २००)

(२) ध्यान होना। प्रयोग—घाया तो नहीं है कि बल पर जबाब दोगे फिर भी मुस्किन है इधर कान हो जाय, जबाब मिल जाय (पद्म० के पत्र—पद्म० दर्मा, ४५)

### कानाकानी होना,—कानाफुंसी होना

गुप्त रूप बर्ण होना, टीका टिप्पणी होना। प्रयोग—जब जाना कि सब लोगों में यही बात कानाकानी हो रही है तब भय से डरती कापती × × कहने लगी (स० प्र०—स० निश्र, ९); जालपा की मिमिकिया, पिता की मिमिकिया, पड़ोसियों की कानाफुंसा सुनने की अपेक्षा मर जाना कहीं घातक होगा (गवर्न—प्रेमचंद, १३१); तिनके कुत्ते से उनको खबर विष का संदेश हुआ। कानाफुंसी हुई (मृग०—वृ० दर्मा, ३८३)

### काना फुंसी करना, कानाफुंसी करना, काना-चाती करना

(१) गुप्त रूप से राय करनी। प्रयोग—लोग उतपाती, कानाचाती है काल चाती, जब गली चाकी नैक पाऊ धरियत है (क० र०—सेनापति, ३६); नुप्रीलाल और

शिभुदयाल आपस में कानाफुंसी करने लगे (परीक्षा०—प्रो० दास, १८)

(२) बहुत धीरे धीरे बात करना। प्रयोग—हम × × मास्टर साहब को अनेक तरह का भुलावा और जुल दे कानाफुंसी में भाति भाति की गर्प हांक प्रसन्न होते थे (सा० सु०—वा० मट्ट, ४८); पूछने पर लड़के कानाफुंसी करने का सा एक साथ सभी उसकी अनुपस्थिति का कारण सुनाने को आनुर होते लगे (अतीत०—महादेवी, ७५)

### कानाफुंसी करना

#### दे० कानाफुंसी करना

#### कानाफुंसी होना

#### दे० कानाकानी होना

#### कानाचाती करना

#### दे० कानाफुंसी करना

### कानि करना

भर्षा का ध्यान रखना। प्रयोग—एक गाँव के बसत कहां लों, करें नन्द की कानी (सु० सा०—सूर, ९२९)

### कानि तोड़ना,—बहाना

लोक भर्षा का ध्यान न रखना। प्रयोग—प्रबलति सों न कही परें नु पैं, बात तोरि करि कानि (सु० सा०—सूर, ४७४५); मोर वेद कुल-कानि बहाई सुख न रह्यो खोयो (भा० प्र० (२)—भारतेन्दु, १६)

### कानि बहाना

#### दे० कानि तोड़ना

### कानी उंगली के नाखून पर न्यौछावर होना

पूर्ण अंगुल होना। प्रयोग—एक ओर उसका इतना बड़ा राजपाट और वह स्वयं भी मेरे चरण की इस कानी अंगुली के नाखून पर न्यौछावर था (गोली—चतुर्ग, १०)

(समा० मुहा०—कानी उंगलीपर न्यौछावर होना)

### कानी उंगली भी न हिला पाना

(१) कोई प्रतिवाद न कर पाना। प्रयोग—उनके खिलाफ तुम अपनी कानी उंगली भी न हिला सकते थे (दल०—नागा०, ६८)

(२) कुछ न कर पाना।



### कानी कौड़ी

(१) बहुत थोड़ा धन । प्रयोग—मेने कहा—कानी कौड़ी भी कभी नहीं देता (मान० (१)—प्रेमचंद, २६६); पर भूल से जिनकी आँखें नाच रही हैं उनको वे कानी कौड़ी भी देने के रवादार नहीं (चुभते० (मु०)—हरिऔध, ३); मृग्य नहीं था जीवन का कानी कौड़ी भर (स्वर्णधूलि—पंत, ३५)  
(२) वह कौड़ी जो टूटी हो ।

(समा० मुहा०—भंभी कौड़ी)

### कानून बधारना

तर्क-वितर्क करना । प्रयोग—इन्हें तो बस घर में कानून बधारना आता है (गधन—प्रेमचंद, ५३)

(समा० मुहा०—कानून छांटना)

### काने को काना कहना

अप्रिय सत्य कहना । प्रयोग—बात सच है, जल मरेगा वह मगर लोग काना को खगर काना कहें (चोखे०—हरिऔध, २२)

### कानों कान खबर न होना

रहस्य का प्रगट न होना । प्रयोग—मजूरी को कानों कान खबर न थी (गोदान—प्रेमचंद, २५५); किसी को कानों कान खबर न होने पाये कि हमारा कौन सा पर्चा आउट होने वाला है (बुंद०—अ० ना०, १५२)

(समा० मुहा०—कानों कान पता न होना)

### कानों कान फैलना

किसी गुप्त बात का फैलना । प्रयोग—बाबा की बीमारी की खबर कानोंकान फैल गई थी (शेखर (५)—अज्ञेय, ९६)

(समा० मुहा०—कानों कान खबर फैलना)

### कानों तक पहुँचना

सुनने में जाना, विदित होना । प्रयोग—ये बातें दरोगा जी के कानों तक जा पहुँचीं तो लेने के देने पड़ जायेंगे (ब्रह्म०—दे० स०, ११७)

### कानों में अमृत टपकना

सुनने में अत्यंत प्रिय लगना । प्रयोग—शालता था कानों में सुधा, कभी वह सुतली बोली बोल (मर्म०—हरिऔध, ११६); ढालते हैं शब्द श्रुतियों में सुधा, स्वाद मिन पाती नहीं रसना-क्षुधा (साकेत—गुप्त, ४)

### कानों में गुँजना

किसी सुनी हुई प्रभावशाली बात का बराबर ध्यान आना । प्रयोग—उमकी कड़वी बातों की ध्वनि क्यों कानों में गुँजी (मर्म०—हरिऔध, १५०)

### कानों में डालना

सूचित करना । प्रयोग—साथ ही एक बात और तुम्हारे कानों में डाल देना चाहता हूँ (जहाज०—इ० जोशी, २५७)  
(समा० मुहा०—कानों में फूँकना)

### कानों में तेल डाले बैठना,—रुई डाले बैठना

बात सुन कर भी उस ओर कुछ ध्यान न देना । प्रयोग—रुई दिये रहोगे कहा लो बहरायबे की, कबहुँ तो मेरिये पुकार कान, सोल्लिहै (घन० कवित्त—घना०, ५९); हम नहीं जानते कि सरकार इन बातों को जानती है वा नहीं जान-कर कान में तेल डाले बैठी है (भा० ग्रं० (३)—भारतेन्दु, ९४९); जाति को भेज कर रसातल में कान में तेल डाल कर सोये (चुभते०—हरिऔध, ५९); तब सुनेंगे कहीं किसी की क्यों कान में जब भरी रही रुई (चुभते०—हरिऔध, १०१); तेरा मदुआ कैसा है जो कान में तेल डाले बैठा है (गोदान—प्रेमचंद, २५०); और ये मरा कद्रोमल का पोता कान में तेल डाले बैठा है (बुंद०—अ० ना०, ५५१); विलायत को भी पड़ा लिखा, एक होशियार आदमी भेजा है, परन्तु सब ने कान में तेल डाल लिया है (झांसी०—वृ० वर्मा, ११५)

### कान में रुई डाले बैठना

दे० कान में तेल डाले बैठना

### काफ़िया तंग करना

बहुत हैरान करना । प्रयोग—तुम लोगों का काफ़िया तंग कर दिया उसने (गोदान—प्रेमचंद, ११७)

### काफ़िया तंग रहना या होना

हैरान हो जाना । प्रयोग—इधर भी गर्मी इन साल बेहद पड़ रही है, काफ़िया तंग है (पद्य० के पत्र—पद्य० शर्मा, ४३)

### काबुल में भी गधा होना

सभी जगह अच्छे-बुरे व्यक्तियों या वस्तुओं का होना । प्रयोग—दिल्ली-दरवाजे मकान बनाने वाले सभी लोग



सम्पन्न गिने जाते हैं किन्तु ठेकेदार यह भूल जाता है कि काबुल में भी गये होते हैं (मेरे०—गुलाब, २१)

### काम आना

घुड़ में मग्य पाना । प्रयोग—अपने चार गी बीर काम आए (राधा० ग्रंथा०—राधा० दास, ५८२); काम आ गये जो शय उनके ठंडी ठंडी आहुं भर कर । दफन किये उन बेचारों ने छाती पर पत्थर रखकर (मुर०—मरु, १६); परन्तु मेरी बाणी तुम्हारे घर में तभी फूटेगी जब तुम या तो बीरता से घुड़-जय करो या रसभूमि में काम घाओ, गौली—बसु०, २९)

(२) सहारा देना—सहायक होना । प्रयोग—धनु के एकहु काज न आवउ (राम० लं—तुलसी, १२६); अभी इस तरह पाल पोस रहे हो कि एक दिन काम में घाण्ठा, मगर देख लेना, जो बल्ल भर पानी को भी पूरे (राम० १)—प्रेमचंद, २६)

(३) व्यवहार में आना—उपयोगी होना ।

### काम उठाना

(१) काम को प्रारम्भ करना । प्रयोग—उसने कई बड़ी बड़ी कोठियों में पशु-व्यवहार करने का काम उठा लिया (कर्म०—प्रेमचंद, १६); जहाँ रहे, लौंडर बन कर रहे, घोर जो काम उठाया उसे बलाकर दिखा दिया (पद्म पराग—पद्म० शर्मा, ७४)

(२) व्यापार बंद करना ।

### काम-काज करना

(१) सादी-बिवाह आदि सामाजिक रीति-रिवाज करना । प्रयोग—रामनाथ की बहू के लिए कुछ भेंट भी ले जायगा या जो हो हाथ हिलाता आ बैठेगा ?' नंदराम बोले उठा— हा यह तो तुमने ठीक कहा, इसका तो मुझे ध्यान ही नहीं आ । 'तुम्हें ध्यान कैसे रहे, तुम्हें कभी अपने हाथ से कोई काम-काज किया हो तो ध्यान रहे' (मित्र०—कौशिक, १९४)

(२) मृतक-सम्भार संबंधी कार्य करना ।

### काम की बखी में पिसना

रात-दिन काम में लगे रहना । प्रयोग—उसने समय या कि स्थान बदलने से वायद किम्मत में भी कुछ हर कर हो काम, लेकिन वहाँ भी उस छोटी उम्र में उसे दिन-रात

काम की बकरी में पिसना पड़ता था (सलमी०—राहुल, ८५)

### काम गिर जाना

व्यवसाय का बिगड़ जाना । प्रयोग—पर मानुस हुआ कि इससे कुछ ही दिनों में काम बहुत गिर गया है (कल्याणी—जैनेन्द्र, ३३)

### काम चलाना

(१) काम को आगे बढ़ाना—करना । प्रयोग—वहाँ रहे, लौंडर बन कर रहे घोर जो काम उठाया उसे चला कर दिखा दिया (पद्म पराग—पद्म० शर्मा, ७४)

(२) किसी प्रकार आवश्यकता पूरी होनी ।

### काम उगमगाना

व्यापार का मंद पड़ जाना । प्रयोग—वह दिन गए अब लाला मदन मोहन का काम दिगमिया रहा है (परीक्षा०—श्री० दास, १८५)

(समा० मुहा०—काम ढीला होना)

### काम तमाम करना या होना

(१) मार डालना या मारा जाना । प्रयोग—इस जंग में प्रताप का तो काम तमाम हो चुका था (राधा० ग्रंथा०—राधा० दास, ७५२); उसने दया कृपा के पीछे कई मोहदे लगा रखे हैं कि वे उसे जहाँ पायें, उसका काम तमाम कर दें (मान० ७)—प्रेमचंद, ४४)

(२) काम पूरा करना या होना ।

(समा० मुहा०—काम आखिर करना)

### काम देखना

व्यापार की देखभाल करना । प्रयोग—अष्टम वर्ष से घर के काम काज देखने पड़े (राधा० ग्रंथा०—राधा० दास, २५०)

### काम निकलना

(१) उद्देश्य पूरा होना । प्रयोग—किसी तर की स्तुती कौन कारण नरे, करे सो आपनी जन्म हारे (सू० सा०—सूर, ४०५); जब ऊपर नाविस हो गई लौर मेरी साव जाती रही तो फिर लगे मिलने से मेरा क्या काम निकला (परीक्षा०—श्री० दास, ८९) (+); कहीं कहीं केवल वजन ही से काम निकल जाता है (विज्ञा० १)—शुक्ल, २८); उन्हें हिम्मत हुई । गजाज मूलजमान है । इससे काम निकल सकता है (चोटी०—निशाना, १८) (+१); बड़े आदमियों से



राह रसम हो जाय तो बुरा नहीं है, बड़े बड़े काम निकलते हैं (गवन—प्रेमचंद, ८०) (+१)

(२) मतलब गालना । देखिए प्रयोग (१) में (+१)

(३) कार्य निर्वाह होना । देखिए प्रयोग (१) में (+)

### काम निकालना

स्वार्थ सिद्ध करना । प्रयोग—काम काहि खुप रहे कोरि निहि नाहि पछाने (कुण्ड—गिरधरदास, २९); तुम बड़े चक्मेबाज हो, बातें बनाकर काम निकालना चाहते हो (मान० (४)—प्रेमचंद, २८५)

### काम पड़ना

अवसर घाना—आवश्यकता होनी । प्रयोग—बापर बहुत पमावहीं बहकि न बोलें मूर । काम पड़यो ही आगिये, किसके मुख परि नूर (कबीर ग्रंथा०—कबीर, ६९); काम गंवारी मौ पर्यो (सु० सा०—सूर, ४२६४); तुम तो निहकाम, सबाम हमें घनघानंद काम सो काम पर्यो (घन० कवित्त—घना०, ८०)

### काम पूरा होना

मृत्यु समय जाना । प्रयोग—कर्माइए तो किस नाकाम का काम आज पूरा होने वाला है (राधा० ग्रंथा०—राधा० दास, ७१४)

### काम बनना

स्वार्थ सिद्ध होना । प्रयोग—हाँ, ज्वाला दादा, अगर द्यामूदादा की इस जालसाजी में घाप भी घामिल हो जाय तब काम बड़े मड़े में बन जायगा (मुल्ले०—मग० ठर्मा, १५७)

### काम में डूबा होना

बहुत व्यस्त होना । प्रयोग—सौता कमरे में आई तो ठारा काममें बहुत ही डबी हुई थी (छुआ० (३)—यशपाल, ३४०)

### काम में पैर डालना,— हाथ डालना

काम शुरू करना । प्रयोग—मनुष्य को उचित है कि XX जो काम करे तिसमें पहले अपना भला बुरा बिचार ले, पीछे उस काज में पांव दे (प्रेम सा०—ल० ला०, १९९); तुम लोगों के भरोसे हम बड़े बड़े कामों में हाथ डाल देते हैं (राधा० ग्रंथा०—राधा० दास, ५८५)

### काम में हाथ डालना

दे० काम में पैर डालना

### काम संभारना

किसी बिगड़ते काम को बना लेना । प्रयोग—कबहुं न सोधें काज संभारे, पाणतिहारी माती (कबीर ग्रंथा०—कबीर, १६१); सब बिधि तोर संभारब काजा (राम० (बाल)—मुलसी, १७८)

### काम सिद्ध होना

मनोवांछित होना । प्रयोग—सकल काज भा सिद्ध तुम्हारा (राम० (बाल)—मुलसी, १९८)

### काम से लगाना

काम करने में लगाना । प्रयोग—तो सम्हालिए मुंसी तिवलालसाहेब और किसी काम से लगाइए (मुल्ले०—मग० ठर्मा, १३४)

### काया-कल्प करना या होना

आमूल परिवर्तन करना या होना । प्रयोग—बहु विभूति पाकर मेरी कायाकल्प हो जाएगी (मान० (७)—प्रेमचंद, ९) जायें समाज का कायाकल्प इसी ने किया है (पट्म० के पत्र—पट्म० ठर्मा, १५७)

### काया पलट जाना

क्यांतर हो जाना, और से और हो जाना । प्रयोग—धूर्त कापर, रया हुआ नियार, राष्ट्रीयता का दम भरता है, जाति की सेवा करेगा । एक श्याकपान ने काया पलट कर दी (रंग० (२)—प्रेमचंद, २४६); इनहोती ने पैर पसारे अब तो पलट गयी काया (मुकुट—सु० कु० चौ०, ५१)

### कार्क का खजाना

बहुत अधिक धन । प्रयोग—प्रकाशको के छाछोखाने में कार्क का खजाना नहीं गहा जो रद्दी कित्तियों की निगाई दो-दो बार-बार तोड़े देते बले जायें (सा० सी०—महा० द्वितीय, ९२); वह कोई ऐसा काम उठाना चाहता है, जिसमें बटपट कार्क का खजाना मिल जाय (मान० (४)—प्रेमचंद, ७५)

### काल भाना

मृत्यु निकट होती । प्रयोग—गीता देह मिलहु न त आया काल तुम्हारा (राम० (सु)—मुलसी, ८५८)

### काल का कंठ गहना

मृत्यु के पत्र में होना । प्रयोग—तूटि सके तो सुटियो,



राम नाम भंडार । काल कंठ तै गहैगा रुंधे इसुं दुवार  
(कबीर ग्रंथा०—कबीर, ७)

**काल का कलेवा होना,—के कौर होना,—के गाल में समाना,—खा जाना**

मृत्यु को प्राप्त होना । प्रयोग—निन बामुर जे सोवें नाहीं ता नरि काल न खाई (कबीर ग्रंथा०—कबीर, १६०); का न करे खबला प्रबल केहि जम काल न खाइ (राम० अ)—तुलसी, ४१६); काल कबलु होइहि छन माहीं (राम० वा)—तुलसी, २८०); खाल निच जाय काल-गाल में समाय जाय, करे लाल घात क्यों खबेला छई खीर के (मर्म०—हरिऔध, १५९); जो कलेवा काल का है उन रहा वह बने किलती कलौ का भौर क्यों (चुमते०—हरिऔध, १६०)

(ममा० मुहा०—काल के मुंह में जाना,—काल-कवलित होना)

**काल का केश पकड़ना,—चोटी पकड़ना,—सामने नाचना,—सिर पर खड़ा होना,—सिर पर नाचना,—सिर पर फिरना**

मृत्यु निकट होना । प्रयोग—सब जग मुता नींद भरि, सत न आवै नींद । काल खड़ा सिर ऊपरें ज्यु तोरणि आया बीद (कबीर ग्रंथा०—कबीर, ७२); कबीर बड़ा गरबिधो काल गहै कर बेम (कबीर ग्रंथा०—कबीर, ७४); घजहूँ चेत, भजन करि हरिको काल फिरत सिर ऊपर भायो (सू० सा०—सूर, ८०); अब तब काल सीसु पर नाख्यो (राम० हं)—तुलसी, ९७२); क्या तेरा काल ही मेरे सिर पर नाच रहा है ? (राधा० ग्रंथा०—राधा० दास, ६९०); तब खूनी घांस घोर मुख आई जब कि ली काल ने पकड़ चोटी (बोल०—हरिऔध, ७); छोड़ दे सूर बीर क्यों साहस काल है नाचता नहीं सिर पर (बोल०—हरिऔध, ९); काल उसके सिर पर खेल रहा है (रंग०/२)—प्रेमचंद, १८६); जब काल सामने नाचा तब मेरी निद्रा टूटी (मृ०—मत्त, २८)

**काल का गाल,—पाश**

मृत्यु । प्रयोग—भगवत भीर सकति मुमिरण की, काटि कालकी पासी (कबीर० ग्रंथा०—कबीर, २०८); काल व्याप्त के गाल मो रसवि लियो सहि हाथ (राधा० ग्रंथा०—राधा० दास, ६५); मुझे क्या मालूम था कि काल के गाल ने मुझे

निकालकर वह अपनी मैत्री का ज्वलंत तथा प्रत्यक्ष प्रमाण देगा (राधा०—सू० सा०, १८२); काल के गाल में न कीन गया (चुमते०—हरिऔध, ९१)

**काल का खेना होना**

काल के वश में होना । प्रयोग—खतक खबीरां काल का कुछ मुख में कुछ गोद (कबीर ग्रंथा०—कबीर, ७१)

**काल का चोटी पकड़ना**

दे० काल का केश पकड़ना

**काल का पाश**

दे० काल का गाल

**काल का सर साधना**

मृत्यु का निकट होना । प्रयोग—आपन नगर आपतें बाध्या, मोह के पाधि काल सर साध्या (कबीर ग्रंथा०—कबीर, ३२४)

**काल का सामने नाचना**

दे० काल का केश पकड़ना

**काल का सिर पर खड़े होना**

दे० काल का केश पकड़ना

**काल का सिर पर चढ़ना**

मृत्यु निकट होना । प्रयोग—कुच विचारे फूल काल या मुड़िया सिर चढ़ियो काल (कबीर ग्रंथा०—कबीर, २९६)

**काल का सिर पर नाचना**

दे० काल का केश पकड़ना

**काल का सिर पर फिरना**

दे० काल का केश पकड़ना

**कालकूट मुंह होना**

प्रलयत कटुभाषी होना । प्रयोग—गौरसरिरी स्वाम मन माही । कालकूटमूल पपमूल नाहीं (राम० (वाल)—तुलसी, २८३)

**काल के कौर होना**

दे० काल का कलेवा होना

**काल के गाल में समाना**

दे० काल का कलेवा होना

**काल के मुंह में डालना**

मर्त्य करना । प्रयोग—जाति को डाल कालके मुंहमें बेतरह मुंह किया गया काला (चुमते०—हरिऔध, ९५)



(समा० मुहा०—काल के गाल में डालना)

**काल के बस होना**

मृत्यु के निकट होना । प्रयोग—राम सत्य संकल्प प्रभु समा  
काल बस तोरि (राम०(सु०)—तुलसी, ८३८)

**काल खा जाना**

दे० काल का कलेवा होना

**काल चढ़ आना**

घोर विपत्ति आनी । प्रयोग—आप चढ़े ब्रज ऊपर काल  
(सु० सा०—सूर, ११४६)

**काल सा लगना**

अत्यन्त प्रिय लगना । प्रयोग—कारो जल जमुनाको काल  
सो लगत झाली छाड़ रह्यो मानों यह विष काली नाग  
को (भूषण ग्रंथा०—भूषण, २४१)

**काल सिरपर फिरना**

दे० काल का केश पकड़ना

**काल सिर पर खड़ा होना**

दे० काम का केश पकड़ना

**काल सिर पर नाचना**

दे० काल का केश पकड़ना

**काल हांक लाना**

जबरदस्ती मृत्यु को बुलाना । प्रयोग—तुम्हें तो कालु हाँकि  
जन्म लावा (राम० (वा०)—तुलसी, २८०)

**काल होना**

काल के समान घातक होना । प्रयोग—एई बिल चारै  
सब बधि ठगी । ओ भा काव हाय लै लगी (पद०—जायसी  
५५); मोहि बिलोकु तोर म कालू (राम० (ल०)—तुलसी,  
—९५६); कोन है रग डंगसे लै सोच संत है या कि संतपन  
के काल (चुभते०—हरिऔध, १२२)

**कालक्षेप करना**

(१) समय बिताना । प्रयोग—अरे आपके अन्न से पला  
हुआ यह शरीर मुख से कालक्षेप करे और आप बन बन  
की लकड़ी चुने (राधा० ग्रंथा०—राधा० दास, ७७७)

(२) डेर करना ।

**काला अक्षर भैंस बराबर**

अनपढ़ होना । प्रयोग—उन्हीं के नाते आज तक हमारे

बहुत से भाई कालाप्रक्षर भैंस बराबर होने पर भी जगत्  
गुरु कहलाते हैं (प्र० पी०—प्र० ना० मि०, १३०); यदि कोई  
काले अक्षर भैंस समझने वाले सिहजी हुए तो गर्व से कहते  
हैं—× × (मेर०—गुलाब०, ९७)

**काला कानून**

अविश्वेक पूर्ण विधान । प्रयोग—इन काले कानूनों के युग  
में वह और कर ही क्या सकते हैं (गोदान—प्रेमचंद, १७५)

**काला खाना**

साँप काटना । प्रयोग—देखहु महूरि मुता अपनी को, कहूँ  
इहि कारं खाई (सूर सा०—सूर, १३६१)

(समा० मुहा०—काला काटना)

**काला चोर**

पक्का चोर । प्रयोग—मैं अपने मावजे का दावा जरूर  
करूँगा, चाहे साहूब दें, चाहे सरकार दे, चाहे काला चोर  
दे मुझे तो अपने रूप से काम है (रंग० (२)—प्रेमचंद,  
३८८); मना कर जाऊँ तो जो काले चोर की सजा, वह  
मेरी (सु० सु०—सुदर्शन, १६८)

**काला दिल**

कुटिल स्वभाव । प्रयोग—लाक्षणिक अर्थ में जो काले  
दिल के आदमी का अर्थ होता है वही काले बाजार का  
अर्थ होता है (मेर०—गुलाब०, ७८)

**काला नाग होना**

अत्यंत दुष्ट होना । प्रयोग—बुढ़ा काला साँप है  
जिसके काटे का मंत्र नहीं (गोदान—प्रेमचंद, २१६); ऊपर  
से भला मानस छंदर से काता नाग (कठ०—दे० स०, ३१४)

**काला पानी**

आजीवन कारावास । प्रयोग—काले पानी भी भँजता है  
अंघेज, तो न्याय की खातिर (ब्रह्म०—दे० स०, २४७);  
महन्त जी सात वर्ष के लिए गए और दोनों चेलों को काले-  
पानी का दण्ड मिला (सेवा०—प्रेमचंद, १७)

**काला बाज़ार**

चोर बाजार, चोरी से किया हुआ व्यापार । प्रयोग—  
लाक्षणिक अर्थ में जो काले दिल के आदमी का अर्थ होता  
है वही काले बाजारका अर्थ होता है (मेर०—गुलाब०, ७८)



### काला मुँह करना

(१) अपमानित होकर जाना। प्रयोग—ताके बचन जान सम लागे, करिआ मुँह करि जाहि घामागे (राम० लं०—सुलसी, ११५); हम किसी तरह तरकी कर ही नहीं सकते जब तक पुरखों की उस सनातन रीति को काला मुँह कर बिना न करेंगे (महु० नि०—४१० महु, १३७)

(२) दूर होना।

### कालिया जमा ता

बदनामी के कारण मुँह दिमाने लाजक न रहना। प्रयोग—जे मति लागी सबे छाहावी, जब मोहि जिनि बहु रूपक छावो (कबीर ग्रंथ०—कबीर, ११३); जो भागे मत छावि के मति मुल पड़ी परात (पद०—जायसी, ४३३); काली कालिया छटह आज तक घोख में पद धुनी नहीं (मर्म०—हरिचौध, १४६)

### कालिया धुलना

कलंक मिटना। प्रयोग—काली कालिया आज साजलक घोख में पद धुनी नहीं (मर्म०—हरिचौध, १४६)

### काली कमली पर दूसरा रंग न चढ़ना

अपरिवर्तनीय प्रभाव। प्रयोग—मुरदान कारी कारारि पे, बड़त न दुजो रंग (सु० सा०—सुर, ३३२)

### काली करतूत

दुष्कर्म। प्रयोग—वे पैस बावो की काला करतूत है (पुं०—स० ना, ३४२); बिपरीत फल देलकर दुष्ट जात-तावो अपनी काली करतूत पर पछलाने होत (पदम० के पत्र—पदम० जर्मा, २४१)

### काली किताने में नाम दर्ज होना

बुरे लोगो की सुधी में आ जाना। प्रयोग—बाघेन में घरीक हुवा, उसका तावान धरौ तक देता जाता हूँ। काली किताने में नाम दर्ज हो गया (गोदान—प्रेमचंद, १७७)

### काली घटा

बुरे दिन। प्रयोग—पश्चिम और उत्तर में काली घटा आ रही है, यह समय बल भाग करने का नहीं है (स्कंद०—प्रसाद, ३४)

### काली छाया

अनिष्ट का आभास। प्रयोग—एक काली छाया घर पर महरावी रहती है (दीप्तर १—अज्ञेय १५)

### काले कोसों

बहुत दूर। प्रयोग—समुद्रा हूँ ते गए लखी री, अब हरि कारे कोसों (सु० सा०—सुर, ४५७६); मैं चाहें यहाँ रहूँ चाहें काले कोसों चला जाऊँ लेकिन तुमने मेरे हृ० में जो दीपक जला दिया, उसकी शोति जरा भी मन्द न होगी (कर्म०—प्रेमचंद, २५८); गंगा यमुना का तट छोड़कर जार भी कहाँ काले कोसों दूर साबरमती के किनारे जाकर बैठे है (पदम० के पत्र—पदम० जर्मा, ५३)

### काले होना

बुरे और दुष्ट होना। प्रयोग—मुकलक-मुल कारे नल-निल ते, कारे तुम अब ओऊ (सु० सा०—सुर, ४५७७)

### काशी-करघट लेना

(१) काशी में गया कटवाना, आरपहत्या करना। प्रयोग—मुरास प्रभु तुम्हारे दरम की, करकत लेहो काशी (सु० सा०—सुर, ४१०६)

(२) बहुत दुःख सहना।

### कितने पानी होना

कैसी स्थिति होनी। प्रयोग—सम्भव है, ईश्वरी ने समझ लिया हो कि यह कितने पानी में है (मान० (१)—प्रेमचंद, १०७); मैंने शिक्षा नीति के सम्बन्ध में जो बात कही थी वह केवल यह देखने की कि स्थीन कितने गहरे पानी में है (झांसी०—पुं० जर्मा, १७८)

### किताने के कीड़े

(१) हर समय पड़ने वाला व्यक्ति। प्रयोग—मेरे-जैसे किताने के कीड़ों को चीन औरत पसंद करेगी रेवी जी (गोदान—प्रेमचंद, १७०); वह काका से कहना चाहता था, मोरद जैसे लोग तो पुस्तकों के कीड़े बन कर ही रह जाते हैं (ब्रह्म०—दे० स०, ३७३); मैं कितानों का कीड़ा हूँ (पदम पराग—पदम० जर्मा, २७२)

(समा० मुहा०—कितानों कीड़े)

### किताने घर जाना,—चाट जाना

बुरी किताने की घबरी तरह पढ़ जाना। प्रयोग—हमारे बाबू साहब ने बरगो स्कूल की बाक छाती है XX विभाजन घर के बीच-बीचे है (५० पी०—५० ना० मि०, १४७); हाँ विद्यान क्यों नहीं है, दुनियाँ भर की किताने चाटे बैठे हैं (गोदान—प्रेमचंद, २५४); पत्र भी बन्द कर दिया



और निर्मम होकर अपनी पादुप पुस्तकें बाटना शुरू किया (शेखर (१)—अज्ञेय, २२७)

**किताब बाट जाना**

दे० किताब चर जाना

**किनारा बरना,—कसना, किनारा-कशी करना**  
किरी काम से दूर ही रहना, विमुख होना । प्रयोग—घोर अब पुलिस के छात्रों की बजह से वे भी किनाराकशी कर गए (ये कोठे०—अ० ना०, १३१); जब दिन से तुम्हारे फूला मुझसे किनारा करते चले गये (व्यास०—जैनेन्द्र, ६३); जिस लोक स्वाति के पीछे वे हाथ जोड़े नहीं किए, उसने इनसे कैसा किनारा क्या (मुलेरी प्रका० (१)—मुलेरी, २७७); सगो से हमी कर रहे हैं किनारा (चुमते०—हरिऔध, १८६)

**किनारा कसना**

दे० किनारा करना

**किनाराकशी करना**

दे० किनारा करना

**किनारा मिलना**

मुक्ति मिलना । प्रयोग—स्यान् दुःख से तुम्हें कही निर्जन में मिले किनारा सरण कहाँ पायेगा पर, यह दृष्टमान जब सारा (कुक०—दिग्दर्शक, १२१)

**किनारा साफ नज़र आना**

अद्वय दूर होनी, निर्विघ्न जान पहना । प्रयोग—मुन्ना ने कहा—किनारा साफ नज़र आ रहा है (चोटी०—मिरासा, १५१)

**किनारे का लुण**

किमी प्रवाह में किमी भी क्षण बह जाने वाला । प्रयोग—ताही प्रेम प्रवाह में ऊधो चले बहाव । भले ज्ञान की मेड़ हो, बज में प्रगट्वा आव । कूल के लून भवे (नंद० प्रका०—नंद०, १६३)

**किनारे का पेड़**

विनाश के निकट होना, मृतप्राय होना । प्रयोग—संकर जी अद्भुत पुरुष है, आप मिले तो आर्यत प्रसन्न होगे । वह अब 'कृतकृत्य' हो रहे हैं । जल्दी मिल लीजिए (पट्टम० के पत्र—पट्टम० शर्मा, ५६); बटा, हम करार के बल है, तुमने पड़ा नहीं तो हमारे रहते कोई काम ही कर लो, नहीं तो

पीछे तुम्हें कष्ट होगा (शिखी—मिरासा, ८८)

**किनारे रहना या होना**

(१) न रहना, बलव होना । प्रयोग—नित को मिलनो तो किनारे रह्यो, मुख देखत ही दुरि भावत ही (भा० प्र० (१)—मार्तण्ड, ४२९)

(२) दूर रहना । प्रयोग—जब तो हम गुल से मित्रों लगते हमारों के गले । जब तो हम खार हुए सब से किनारे ही मले (परीक्षा०—श्री० दास, ८९)

**किनारे लगना**

समाहित पर पहुँचना, समाप्त होना । प्रयोग—धीरे धीरे कवि के हाथों यह सब भी किनारे लगने लगा (मार्तण्ड—रा० रा०, ११७); उसको तो मृत हुई फटफटा के किनारे हो गई, जब खरी है (मिरा०—कौशिक, २८)

**किया कराया मिट्टी में मिलना या मिलाना, किये कराये पर पानी फिरना या फेरना**

सब परिश्रम या प्रयत्न नष्ट होना या कर देना । प्रयोग—हा ! सारा किया कराया मिट्टी में मिल गया (मान० (१)—प्रेमचंद, ६२); सब किये कराये पर पानी फिर रहा है (परती०—रेणु, १५२)

(समा० मुहा०—किया कराया बराबर करना)

**किये कराये पर पानी फिरना या फेरना**

दे० किया कराया मिट्टी में मिलना

**किरकिरी होना**

अप्रतिष्ठा होना । प्रयोग—इन्स्पेक्टर साहब ने कैफियत में लिखा—डिमिजिन बहुत बराबर है । डिमिजिन साहब की किरकिरी हुई (मान० (४)—प्रेमचंद, ६); अगर हाथ से निकल गई तो बड़ी किरकिरी होगी (मा—कौशिक, ३२८)

**किलकिल चुकाना**

सब श्रमट से मुक्त होना । प्रयोग—कई कबोर भाग करी को, किलकिल सब चुकाई (कबोर प्रका०—कबीर, ९६)

**किबाड़ देना**

किबाड़ बन्द करना । प्रयोग—हो निमज्ज अपने गगने ह तो आचल लण्डि किबाड़ न दीजे (कैलाश प्रका०—कैलाश, ६२); भाया अपने द्वार तप, लु दे रही किबाड़ (सकैत—गुप्त, २७०)



किसका मुंह है

१३२

किसी के रास्ते पानी न पीना

(समा० महा०—किवाड़ मूढ़ना—लगाना)

**किसका मुंह है**

किसका माहम है। प्रयोग—किसी का मुंह जो यह बता है हमारे मुंह पर लावे (इशा०—इशा०, ९९)

**किस खेत की मूली होना**

अत्युत्त नुस्ख। प्रयोग—दूसरे किस खेतकी मूली है, खुशामद यह चीज है कि परचर १० मोम बनाती है, बेल को दुध के दूध निकालती है (प्र० पी०—प्र० ना० मि०, ५१); बड़े बड़े तो धन की उपेक्षा कर ही नहीं सकते, तुम किस खेत की मूली हो? (कर्म०—प्रेमचंद, ११); नाहरों और अरनों की परवाह नहीं की, तो ये किस खेत की मूली है (सू०—पृ० ३२९); अरे इसमें तो घादमी की हड्डी तक मिट जाती है सोभा किस खेत की मूली है (मिखा०—कोशिक, १५५)

(समा० महा०—किस गली के, किस गली के भंडुण, किस बाग का बंधुआ, किस बाग की मूली)

**किस गिनती में होना—बात में होना**

नुस्ख होता, कोई मूल्य न होना। प्रयोग—कान्हू के बल मोसो करो खाती, हरि है कश, गोप बिहि बानी (नंद० ग्रंथा०—नन्द, १६५); जब ऐसे लोग मरने को तैयार है, जिनके लिये संसार में सुख ही सुख है, तो फिर हम किस गिनती में हैं (रंग० (२)—प्रेमचंद, ३३५)

**किस घाट लगाना**

न जाने क्या गति होना। प्रयोग—ईश्वर हो जाने अब तक मेरी क्या गति हुई होती, किस घाट लगा होता (गदन—प्रेमचंद, १६५)

**किस चिट्ठिया का नाम**

विलकुल परिचित न होना। प्रयोग—अब यह प्रश्न होगा कि भाई हम तो जानते ही नहीं कि उम्मेति और मुधारमा किस चिट्ठिया का नाम है? (भा० ग्रंथा० (३)—भारतेन्दु, ९००); उस समय वहां के हिन्दुस्तानी समाज में छलवार किस चिट्ठिया का नाम है यह नहीं जानते थे (राधा० ग्रंथा०—राधा० दास, ५०१); बेचारी को पता नहीं था, दुस है किस चिट्ठिया का नाम (नूर०—मक्त, ५); मैं मुझे अपना मित्र समझता हूं, मानिक किस चिट्ठिया का नाम है (मिखा०—कोशिक, ११७)

**किस बात में होना**

**३० किस गिनती में होना**

**किस मुंह से**

लज्जा जनक स्थिति होनी। प्रयोग—मैं कल किस मुंह से कचहरी जाऊंगा? (सिंदूर०—ल० मि०, १६०)

**किसी की आंखों देखना**

किसी दूसरे के दृष्टिकोण से विचार करना। प्रयोग—घरे मेरी आंखों से देख, तेरी आंखें खुल जायगी, कुस्मित हृदय सौन्दर्यपूर्ण हो जायगा (कामना—प्रसाद ३९); राजा लोग अपने दूतों और मन्त्रियों की आंखों से देखा करते हैं (मेरे०—गुलाब०, ५६)

**किसी की ओर देखना**

किसी का आश्रय चाहना। प्रयोग—ऐसी रसरागि लहि उलझो हृत्त मदा, कृपा-दिखबैसा काहू निनि देखै काहू को (घन० कवित्त०—घना०, १७३)

**किसी की बात पर चलना**

किसी के कह अनुसार काम करना। प्रयोग—ओरत की बात पर चलने से ऐसा हो होता है (ज्ञान०—यशपाल, १०६)

**किसी के कहे अनुसार उठना-बैठना**

किसी के पूरी तरह बश में होना। प्रयोग—बहू की बात उठने-बैठने वाले बेटे को फूटी निगाह से नहीं देख सकती वह (परत०—रैणु, २५६)

**किसी के नीचे बैठना**

किसी के साथ घर कर लेना। प्रयोग—तुझे क्या, वह भर जायगा, किसी और के नीचे बैठ जाना (मान० (४)—प्रेमचंद, १४१)

**किसी के बाप का इजारा होना**

किसी की परवाह होनी। प्रयोग—मानि हो एक गुपालहि को नहि और के बाप को यामे इजारी (भा० ग्रं० (२)—भारतेन्दु, ५४५)

**किसी के रास्ते पानी न पीना**

कोई सम्बन्ध न रखना। प्रयोग—मैं घब घपने मन यह ठानी, उनके पय न पीवौ पानी (सू० सा०—सूर, ३४४६)



### किसी पर जाना

किसी की तरह होना । प्रयोग—विलकुल अपने निक्कमे मामा पर गई है (धरती०—दि० प्र०, ३५)

### किसी पर रखकर

किसी को उत्तरदायी बनाकर, किसी बहाने । प्रयोग—वह स्पष्ट रूप से कोई आपत्ति नहीं कर सकती । हाँ, दूसरों पर रखकर श्लेष रूप से उसे सुना-सुनाकर दिल का गुबार निकालती रहती है (गवर्न—प्रेमचंद, १५७)

### किसी से दूर न होना

सब से अपनत्व होना । प्रयोग—वह आतंक के लिए प्रसिद्ध थी फिर भी वह किसी से दूर नहीं थी (धरती०—दि० प्र०, १५५)

### किस्मत के धनी

भाग्यवान । प्रयोग—जूते चटखाता आया था यहाँ ×लेकिन किस्मत का धनी है । डाइरेक्टर हो गया (पैतरे—अश्क, ८६-८७)

### किस्मत खुलना,—चमकना,—जागना

अच्छे दिन आना । प्रयोग—हम भी भांति भांति की चतुराई दिखाया चाहते हैं कि ग्राहक बड़े पर इस पत्र (हिन्दी प्रदीप) की फूटी किस्मत नहीं जागती, लाचारी है (सा०सु०—बा० भट्ट०, ९०); तुम्हारी किस्मत खुल गई (चोटी०—निराला, ११०); आप इसे आज पहनिण घोर देखिए कि सात दिनों के अन्दर अन्दर आपकी किस्मत चमकती है या नहीं ? (पैतरे—अश्क, १४७)

### किस्मत चक्कर में होना —सो जाना

बुरे दिन होना, दुर्भाग्य होना । प्रयोग—मेरी किस्मत है चक्कर में, बिगड़े भाग्य-वितारे है (नूर०—भक्त, ४); आज कौन कहा जाता है, किस्मत ही अब मोई है (नूर०—भक्त, ४)

### (सवा० महा०—किस्मत उलटना,—बिगड़ना)

### किस्मत चमकना

### दे० किस्मत खुलना

### किस्मत जागना

### दे० किस्मत खुलना

### किस्मत लड़ना

भाग्य अनुकूल होना । प्रयोग—और घमर कही किस्मत

खुल गई तो फिर सो हजार फी दिन भी कुछ न्याय नहीं (पैतरे—अश्क, १३३); शंकर को मालूम हो गया कि या तो कल इनकी किस्मत दर अगल लड़ गई, आज प्रय फिर चिट्ठी में कल कही मिलने की आज्ञा पहुँचती है (लिली—निराला, १२४)

### किस्मत सो जाना

### दे० किस्मत चक्कर में होना

### कीच या कीचड़ उछालना,—फेंकना

बदनामी करना । प्रयोग—तब तो वह और भी निबर होकर कीचड़ फेंकेगी (मान०(१)—प्रेमचंद, २६९); तुम कीचड़ उछालवाओ वह उछाले (बौने०—रा० रा०, २७) दिखाकर मन का मेलान, नीच बन कीच क्यों उछाले (मर्म०—हरिऔध, ७३)

### कीच उड़ाना

गंदगी फैलाना, दुर्भावना फैलाना, बुराई का प्रचार करना । प्रयोग—द्विर्जाहूँ वे, रस में विष मत घोल उड़ाती है तु घर में कीच (साकेत—गुप्त, ३०)

### कीच फेंकना

### दे० कीच उछालना

### कीचड़

दुर्दशाग्रस्त स्थिति; गंदी स्थिति । प्रयोग—मैं तुम्हें कीचड़ में छोड़ कर नहीं जा सकता (बाण०—ह० प्र० दि०, १४ (२) बहुत गंदा ।

### कीचड़ फेंकना

### दे० कीच उछालना

### कीचड़ में घसीटना

बुराई में भागी बनाना । प्रयोग—नहीं, रहने दो भाई मुझे कीचड़ में न घसीटो (विप०—प्रेमी, १७)

### कीचड़ में लथपथ होना

बुरे कर्म में रत होना । प्रयोग—यहाँ सभी मुझे कीचड़ में लथपथ देखना चाहते हैं, मेरे विकासोन्मुख रहने में ही उनका स्वाध है (मान०(३)—प्रेमचंद, १६)

### कीड़ा होना

किसी स्थिति, काम या बात में पूरी तरह लिप्त होना । प्रयोग—जो कि मुख के बने रहे कीड़े वे पड़े देख दुख उठाते भी (चोले०—हरिऔध, ५५)



### कीना निकालना

मन का आकांक्षे दूर होना । प्रयोग—किस तरह तब निकल सके कीना जब कतर ही निकल न पाती है (चोखे—हरिऔध, १२७)

### कीमत कृतना

मूल्यांकन करना । प्रयोग—कई अनर्थ रत्न ऐसे अच्छे हाथ लगे जिनकी कीमत अभी जोहरियों के बाजार में कुंजी न गई थी (पद्म पराग—पद्म० शर्मा, २७४)

(समा० मुहा०—कीमत आंकना,—लगाना)

### कील घुमाना

प्रेरित करना, रख फेरना । प्रयोग—वह धूर्त बा और जानता था कि जनता की कील क्यों कर घुमाई जा सकती है (मान० (३)—प्रेमचंद, १५१)

### कुंजी हाथ में होना

किसी के वश में होना । प्रयोग—बुआ को झुकाने के लिए उन्होंने आज्ञा दी थी कि किसी सिपाही या जमादारसे फंसा दी जाय, कुंजी उनके हाथ में रहे (चोटो—निराला, १००) कुंजी बहुमत के हाथों में रहेगी (गोदान—प्रेमचंद, १७२)

### कुंजी होना

कारण होना, आधार या साधन होना । प्रयोग—उसकी उपस्थिति किसी जलसे की सफलता की कुंजी है (कर्म०—प्रेमचंद, २१६)

### कुंदी करना

बहुत पीटना । प्रयोग—इपट सिंह सोच रहे थे कि भगवान करे मारपोट हो जाय तो इन लोगों की खूब कुंदी की जाय (प्रेमा०—प्रेमचंद, ९७)

### कुआँ खोदना

(१) नुकसान पहुँचाना । प्रयोग—जोड़ जोड़ कूप खनंगो पर कह, सो मठ फिर तेहि कूप पर (विनय०—तुलसी, १३७); उलझने डालता फिर न कभी और की राह में कुआँ न खने (बोल०—हरिऔध, ४०)

(२) जीविका के लिये प्रयत्न करना ।

(३) प्रयत्न करना ।

### कुआँ खोदना और पानी पीना

स्वयं प्रयत्न करके काम चलाना । प्रयोग—बेटी पर देखकर खर्च करो । अब कोई कमाने वाला नहीं बँटा है । आप ही

कुआँ खोदना और पानी पीना है (मान० (१)—प्रेमचंद, २५५)

### कुआँ भाँकना

हैरान होना । प्रयोग—तुम अगर भाँकी दिला देते हमें किस तरह से तो कुआँ हम भाँकते (बोल०—हरिऔध, १४१)

### कुआँ बताना

घटा बताना । प्रयोग—घपनी काज सवारी मुर मुनि हमें बतावत कूप (सू० सा०—सूर, ४३८८)

(समा० मुहा०—कुआँ दिखाना)

### कुएँ का प्यासे के पास जाना

जिस वस्तु की चाह हो, उस वस्तु का चाह करने वालों के पास जाना । प्रयोग—कांग्रेस के नेताओं ने यह तै किया कि कुआँ प्यासे के पास चले, यानी जलूस सिविल लाइन्स चले (इंस्टा०—भा० वर्मा, ३८)

### कुएँ का बँग,—मेंढक, कूप मेंढक

संकुचित विचार वाला । प्रयोग—रोकि बिनामत गमन कूप-मेंढक बनायो (भा० ग्रं०—भारतेन्दु, ४७५); वैसे ही अंग्रेजों के राज्य में भी जो हम कुएँ के मेंढक, काठ के उल्लू, पिजड़े के गंगा राम ही रहें, तो हमारी कमबलत कमबलती फिर कमबलती है (भा० ग्रं० (३)—भारतेन्दु, ८९७); कब तक पोखर के मेंढक बने रहोगे ? (ब्रह्म०—दे० स०, ३३); ये कूप-मेंढक मतान्ध मूलाने नहीं जानते थे कि सरमद इन कूप और कल के फतवों से बहुत ऊपर है (पद्म पराग—पद्म० शर्मा, २३४); हम कूप के बँग हैं × × हमारा कसूर मरक कर दो (मैला०—रेणु, १२)

### कुएँ का मेंढक

दे० कुएँ का बँग

### कुएँ में गिरना,—पड़ना

(१) अनिष्ट को प्राप्त होना । प्रयोग—जाका गुर भी अँधला, चेला खरा निरंध अँधे खंवा ठेलिया, दुग्यु कूप पड़ंत (कबीर ग्रंथा०—कबीर, २); जो कोउ परहित कूप खनवैं, परै मु कूपहि माही (सू० सा०—सूर, ४३०५); जोड़ जोड़ कूप खनंगो परकह, सो मठ फिर तेहि कूप पर (विनय०—तुलसी, १३७); परउ कूप तुअ वचन पर सगो पुत पति त्यागि (राम०(अ)—तुलसी, ३९१); आप आँजों



कुएं में डालना

१३५

कुठाराघात करना

से देख रहे हैं कि हिन्दू जाति की स्त्री कुएं में गिरी हुई है (सेवा०—प्रेमचंद, ९२)

(२) बड़ा से बड़ा कष्ट पाना ।

**कुएं में डालना**

(१) उपेक्षा भाव से छोड़ देना । प्रयोग—मैंने तो पुस्तक कुएं में डाल दी—और मुँडेर पर पड़े हुए साठ रुपए उठा लिये (शेखर (२)—अज्ञेय, २००)

(२) नष्ट कर देना या फेंक देना ।

**कुएं में ढकेलना**

बहुत अहित करना । कष्ट देना । प्रयोग—हों कै नेहु आनि कुंव मेली । सीचें नाग भुरानी बेनी (पद०—जायसी, ३५।१०); जे तुमको अवलंबई तिनको मेली कूप (नंद० ग्रंथा०—नंद०, १६५); तुमने मुझे कुएं में ढकेल दिया और क्या कहूँ (कर्म०—प्रेमचंद, २०)

**कुएं में पड़ना**

दे० कुएं में गिरना

**कुएं में पड़ा व्यक्ति**

अज्ञान में पड़ा व्यक्ति । प्रयोग—हमको तो ये मूल लोग कुएं में गिरा बतलाते हैं (राधा० ग्रंथा०—राधा० दास, ६३७)

**कुचल देना**

जड़ से नाश कर देना । प्रयोग—सिर उठानेवाली जनता को ये डिमीदार, ताल्लुकेदार ही कुचल दिया करेंगे (झांसी०—वृ० वर्मा, १३०)

(समा० मुहा०—कुचल डालना)

**कुचल जाना**

दुर्गति होनी । प्रयोग—जब बुरे कूचे तुम्हें रुचते रहे । सिर तभी तुम बेतरह कूचे गये (चोखे०—हरिऔध, ७२)

**कुछ कहते न आना**

(१) अवर्णनीय होना । प्रयोग—कहा कहाँ कछु कहत न घावें, जननी जो दुख पायी (सु० सा०—सूर, ४०९१)

(२) उत्तर न दे पाना । प्रयोग—नयउ सहमि नहि कछु कहि आवा (राम० (अ)—तुलसी, ३९९)

(समा० मुहा०—कुछ कहते न बनना)

**कुछ दिनोंका मेहमान**

घरवासी । प्रयोग—मुझे भय हो रहा है कि यह आदर,

प्यार, आनन्द के दिन कुछ ही दिनों के मेहमान है (सु० सु०—सुदर्शन २६०)

**कुछ न गांठना,—गिनना,—समझना**

कोई महत्व या मान न देना । प्रयोग—रहिमन सो न कछु गने जासों लागे नैन (रहीम कवि०—रहीम, २६); किसी को कुछ न समझता था (इंशा०—इंशा०, ९१); मुरपुर में रहता था और अपने रूपगुण के आगे गर्व से किसी को न गिनता था (प्रेम सा०—ल० ला०, ८८); देवनागरी अक्षरों के प्रवर्तक राजा शिवप्रसाद को आग कुछ गांठते ही नहीं है (गु० नि०—बा० मु० गु०, ६२)

**कुछ न गिनना**

दे० कुछ न गांठना

**कुछ न समझना**

दे० कुछ न गांठना

**कुछ होना**

कुछ महत्वपूर्ण होना । प्रयोग—होई दिन था कि हम कुछ थे, नहीं, बहुत कुछ थे (चुमते० (मु०)—हरिऔध, १)

**कुटुंब जिलाना,—पालना**

कुटुंब के भरण पोषण की व्यवस्था करनी । प्रयोग—हरि का सिमरन छाड़िके पाल्यो बहुत कुटुंब (कबीर ग्रंथा०—कबीर २६२); दुख मुख करिके कुटुंब जिवाया (कबीर ग्रंथा०—कबीर, २६७)

**कुटुंब डुबाना**

कुटुंब का नाश करना । प्रयोग—सदा सदा फिरहि अभि-मानी सकल कुटुंब डुबावहि (कबीर ग्रंथा०—कबीर, २८२)

**कुटुंब पालना**

दे० कुटुंब जिलाना

**कुठांव मारना**

(१) बहुत प्रहित करना । प्रयोग—सिर पुनि लीन्ह उसास असि मारेसि मोहि कुठाव (राम० (अ)—तुलसी, ४००)

(२) ऐसे स्थान पर मारना जहाँ बहुत कष्ट हो ।

**कुठाराघात करना**

(१) व्यंग्य करना—आघात करना । प्रयोग—मेरे तथा



## कुठारी होना

जस्यो के प्रेम पर तुम सदैव कुठाराघात करते रहें हो  
(मिसा०—कौशिक, २०७)

(२) बड़ा अहित करना।

## कुठारी होना

अनिष्ट करने वाला होना। प्रयोग—गहि पद विनय कीन्ह  
बंठारी अनि दिनकर कुल होसि कुठारी (राम० (प्र)—  
तुलसी, ४०४)

## कुत्ते की पूँछ सीधी न होना

स्वभाव में परिवर्तन न होना। प्रयोग—उससे तुम कितना  
ही दबो, पर वह तुम्हारा दुसमन ही बना रहेगा। कुत्ते  
की पूँछ कभी सीधी नहीं होती (रंग० (२)—प्रेमचंद, १५३)

## कुत्ते की मौत मरना

बहुत बुरी तरह से मरना। प्रयोग—है अवर जीना जिसे  
जीवट दिखा या कि अब हम मौत कुत्ते की मरें (चुमते०—  
हरिप्रोद्य, २५)

## कुत्ते को घी न पचना

जिसे कभी कोई सच्ची चीज न मिली हो, उसे उसका दंग  
से उपभोग करना न आना। प्रयोग—क्या कहते हैं कुत्ते  
पर बैठते ही दिमाग बिगड़ गये। कुत्ते को घी पोंडे ही  
पचता है (झूठा० (२)—यशपाल, २८२)

## कुदांच

बुरा पवसर। प्रयोग—कठिन कुदांच आप पिरी हौ  
अनंदधन, रावरी बसाय तो बसाय न उजारिये (धन०  
कवित०—धना०, ३०)

## कुपथ पर पैर रखना

बुरे कार्य करने की घोर प्रवृत्ति होनी। प्रयोग—रघुर्विन्ध्य  
कर सहज मुभाऊ। मन कुपथ पगु धरइ न काऊ (राम०  
(बाल)—तुलसी, २३९)

## कुम्हलाना

उदास या दुःखी होना, मुर्झाना। प्रयोग—आजू राधिका  
मान कर्यो है, स्वाम गए कुम्हलाइ (सूर सा०—सूर,  
३०४३); हैं कहां वे आप कुम्हला जाय जो जाति का मूँट  
देख कुम्हलाया हुआ (चुमते०—हरिप्रोद्य, ६०); आहा !  
बेचारी कुम्हला गई है (कामना—प्रसाद, २)

## कुम्हड़-बतिया होना

मुकुमार होना, अशक्त होना। प्रयोग—इहां कुम्हड़-बतिया

कोउ नाहीं। जे तरजनी देखि मरि जाहीं (राम० (बाल)  
—तुलसी, २७९)

## कुरसी तोड़ना

व्यर्थ बैठे रहना। प्रयोग—गया तो या। दिन-भर खाली  
बैठा कुरसी तोड़ता रहा (चित्र०—कौशिक, १२०)

## कुरसी पर बैठना,—मिलना

(१) अधिकार मिलना। प्रयोग—क्या कहते हैं, कुर्सी  
पर बैठते ही दिमाग बिगड़ गये (झूठा० (२)—यशपाल,  
२८२)

(२) सम्मान होना—स्वान होना। प्रयोग—बड़े-बड़े  
अंगरेज हाकिम उनके यहां आते थे, ताट साहेब के यहां  
उन्हें कुरसी मिलती थी (बूँद०—अ० ना०, ४४)

(३) पद मिलना। प्रयोग—एक दिन तुम मुझे प्रोड्यूसर  
की कुर्सी पर बैठे देखोगी (पैतरे—प्रश्न, ५५)

## कुरसी मिलना

### दे० कुरसी पर बैठना

## कुल का दीपक

वंश का व्यक्ति। प्रयोग—दाह के लिए कुल्लू-वंश के  
कई दीपक बुलाए गए हैं (कुल्लू०—निराला, १३७)

## कुल का दीपक बुझना या बुझाना

निर्वंश होना या करना। प्रयोग—हाय न-जाने किस बड़े  
कुल का दीपक आज इसने बुझाया है (मा० ग्रंथा० (१)—  
भास्तेन्दु, ३११)

## कुल का नाम हंसाना, कुल बोरना

कुल की मर्यादा को नष्ट करना। प्रयोग—जामु दूत होइ  
हम कुल बोर। (राम० (लं)—तुलसी, ८८३); इतना बड़ा  
कुल कर्म करके घाय तो गए ही सारे कुल को बोरना यह मरा  
कर्म नहीं है (राधा० ग्रंथा०—राधा० दास, ५६५); या तुल्ल  
जयत मुख कारनै जिन कुल नाम हंसाइयो (राधा० ग्रंथा०  
—राधा० दास, ७८४)

## कुल का लाल

सुरंगान-वंश की प्रतिष्ठा बढ़ाने वाला। प्रयोग—जो न  
मुख में लगावें कालिय, लाल कुल के कहावेंगे कैय ?  
(अंग्वात्मक प्रयोग) (मर्म०—हरिप्रोद्य, ८१)



कुल की नाक होना

१३७

कूट-कूट कर भरा होना

**कुल की नाक होना**

कुल की मान प्रतिष्ठा बनाये रखनेवाला व्यक्ति । प्रयोग—वे मुनें जो कि नाक कुल की हें रह सकी नाक नाक रखने से (बील०—हरिऔध, ७३)

**कुल को रखना**

कुल की मान मर्यादा बनाए रखना । प्रयोग—जोवन पंचल डीठ है करे निकाइहि काज । धनि कुलवति जो कुल धरे करि जोवन मह लाज (पट०—जायसी, १८७)

**कुल खोवन होना,—घाती होना,—घालक होना,—बोरन होना**

कुल की मर्यादा को नष्ट करने वाला । प्रयोग—कौंसिक मुनहु मंद यह बालकु । कुटिल कालवस निज कुल घालक (राम० (बाल)—तुलसी, २७९); मरु गर काटि निलज कुल घाती (राम० (लं)—तुलसी, ८९६); सूता बड़े वृषभानु की, कुल खोवनहारी (सू० सा०—सूर, २३२४); कुल बोरन सब कहत गांव में और नाम का धरिहे (राधा० प्रथा०—राधा० दास, ६४)

(समा० मुहा०—कुल कलंक होना,—नासी होना)

**कुल-घाती होना**

दे० कुल-खोवन होना

**कुल-घालक होना**

दे० कुल-खोवन होना

**कुल-टीका,—तिलक,—दीपक**

वंश की प्रतिष्ठा बढ़ाने वाला । प्रयोग—समाधानु करि सो सबही का गमउ जहां दिनकर कुल टीका (राम० (अ)—तुलसी, ४०८); जानउं सदा भरत कुलदीपा (राम० (अ)—तुलसी, ६४१); साहस अपार हिदुआन की अधार धीर सकल सिमोरिवा सपूत कुल की दिया (भूषणप्रथा०—भूषण, १३०); जो कुल दीपक बनना है तो बान भली बातों की डालो (मर्म०—हरिऔध, १०६); वह तो अब तभी घर आवेगा जब वह पैसे के बल से सारे गांव का मुंह बन्द कर सके और दादा और अम्मा उसे कुल का कलंक न समझ कर कुल का तिलक समझे (गोदान—प्रेमचंद, १३७)

**कुल-तिलक**

दे० कुल-टीका

34

○ P. 195

**कुल-दीपक**

दे० कुल-टीका

**कुल-बोरन होना**

दे० कुल खोवन होना

**कुल बोरना**

दे० कुल का नाम हंसाना

**कुल में कलंक लगाना,—कालिख लगाना,—दाग लगाना**

कोई बुरा काम करना जिससे कुल की बदनामी हो । प्रयोग—धनिय तनु धरि समर सकाना । कुल कलंकु तौहि पावैर आना (राम० (बाल)—तुलसी, २८९); ब्राह्मण होकर कुल में कालिख लगा दी (बौने०—रा० रा०, २७); जानती थी तू एक दिन कुल में दाग लगाकर रहेगी (निशि०—वि० प्र०, १७८)

**कुल में कालिख लगाना**

दे० कुल में कलंक लगाना

**कुल में चली आना**

वंश परम्परा होना । प्रयोग—जाकें कुल जैसी चलि पाई, तैसी रीति बलावे (सू० सा०—सूर, ४४५९)

**कुल में दाग लगाना**

दे० कुल में कलंक लगाना

**कुल में रौने वाला होना**

वंशज होना । प्रयोग—राम विमुख अस हाल तुम्हारा, रहा न कुल कोउ रोवनहारा (राम० (लं)—तुलसी, ९८८)

**कूब बोलना**

प्रस्थान करना । प्रयोग—मैं तो आज रात ही भड़ाई के लिए कूब बोल देता XX लेकिन रास्ते में बे-हिमाव की वजह से XX जान ला जायेंगे (मुग०—वृ० वर्मा, ६९)

**कूट-कूट कर भरा होना**

घनिक मात्रा में होना । प्रयोग—इस दुष्ट में तो हंसोद-घन कूट-कूट कर भरा है (भा० प्रथा० (१)—मार्तण्ड, ६२२); उनके डेढ़ी ने अजेज जाति की विशिष्टता की भावना उनके मस्तिष्क में कूट-कूट कर भर दी थी (ग्रहम०—दे० स०, १६२); वह जानते थे कि इसमें जायम सम्मान कूट-कूट कर भरा हुआ है (रंग० (१)—प्रेमचंद, २२३);



## कूड़ा कर देना

जात क्यों काट-कूट की न पड़े है भरा कूट-कूट पाजी पन (चुमते०—हरिऔध, १२८)

## कूड़ा कर देना

नष्ट या बर्बाद कर देना। प्रयोग—धब वह दरिद्र है, उसकी सारी जायदाद को इन्हीं लोगों ने कूड़ा कर दिया (मान० (१)—प्रेमचंद, १३५)

## कूढ़ मग्न होना

महा मूर्ख होना। प्रयोग—क्या करेंगे तीर पत्थर पर चला कूड़ से सिर मारते कब तक रहें (बोल०—हरिऔध, १६)

## कूदना

(१) बड़ बड़ कर बातें करना और काम करना। प्रयोग—वह तो हम लोगोंके बल पर ही कूदते थे (मैला०—रेणु, २०८); मेम साहब के भरोसे कूद रहे हो न (सितली—प्रसाद, ४९)

(२) प्रसन्न होना।

## कूप-मंडूक

दे० कुर्र के बैंग

## कृपा-कटाक्ष

कृपापूर्ण स्पर्श। प्रयोग—जामु कृपा काटाच्छु सूर चाहत नितव न सोइ। राम पदारीबंद रति करति सुभावहि सोइ (राम० (३)—तुलसी, १०४९); रानियों से लेकर घदना बांटी तक उसके कृपा-कटाक्ष की मुहताज रहती थी (गोली—चतुर०, १३६)

## कृपा-दृष्टि बरसना

अनुकूलता होनी। प्रयोग—कब सुदिस्टि कै बरिसं तन तरि-बर होय जाय (पद०—जायसी, ४६।१०); उनकी आंख पर कृपा-दृष्टि हो जाय तो कल ही रूप का बेर लग जाय (प्रेमा०—प्रेमचंद, १३१)

## कृष्णार्पण करना

धर्मादय कर देना। प्रयोग—तुम्हारी इन बातों से ऐसा जो जलता है कि सारी जायदाद कृष्णार्पण कर दूँ (कर्म०—प्रेमचंद, ४३)

## केले का तना बनना

ऐसी स्थिति होनी जिसमें एक के भीतर से एक विचार उठते चले। प्रयोग—दिन की चंद पाँड़ियाँ केले का तना बन गईं (दीने०—रा० रा०, ८४)

## केले के बगल में बेर

घन्ठे के पास में बरा। प्रयोग—कहियो जाय सूर के प्रभु सौ केरा पास ज्यों बेरि (सू० सा०—सूर, १४८)

## केले के लिए ठीकरा तेज होना

नरम या निबल के ऊपर सब का अन्याय करना। प्रयोग—घन्टा दादा भी बिगड़ रहे हैं। केले के लिए घाज ठीकरा भी तेज हो गया। मैं जरा घटव करता हूँ उसी का फल है (गोदान—प्रेमचंद, १३६)

## केसर की कपारी होना

दुसरो को मूल पहुँचाने वाली श्रेष्ठ और सुन्दर वस्तु। प्रयोग—जो न केसर की किवारी जी बना तो न केसर के तिलक कुछ कर सके (चुमते०—हरिऔध, ११९)

## केसरिया बाना पहनना

युद्ध के लिए प्रस्तुत होना। प्रयोग—जिनको अपने प्राण प्यारे हों जा सोवें, जिनको तोंगर, भंशोरिया और गूजर नाम प्यारा हो केसरिया बाने पहिन लें (मृग—वृ० वर्मा, ४६७)

## कँडे से

होसियारी या झग से। प्रयोग—कभी-कभी मंगल से उससे मूठमेढ़ हो जाती, परन्तु मंगल ऐसे कँडे से बात करता कि वह मान गया (कंकाल—प्रसाद, ३०)

## कंद काटना

कंद भुगतना। प्रयोग—मैंने मन ही मन अपनी ओर से पक्का कर लिया कि कंद काटूंगा, फांसी चढ़ूंगा × × पर इस संतान के घागे सपने में भी सिर नहीं झुकाऊंगा (बल०—नागा०, ८५)

(समा० मुहा०—कंद भरना)

## काँचना

कष्ट देना। प्रयोग—तुम क्यों मुझे काँच-काँच कर मारे दाखते हो? (सा—कौशिक, १४५)

## कोख की आंच

संतान का बियोग। प्रयोग—क्यों बने तन न काँचकी भट्ठी कोख की आंच है बुरी होती (बोल०—हरिऔध, २२५)

## कोख खुलना

पहली संतान का होना। प्रयोग—क्या मिला पूत जो मपूत



नहीं क्या खुली कोख जो न भाग खुला (चोखे—हरिऔध, ३२)

### कोख-जली

संतानहीना । प्रयोग—भाग में ही लिखा गया जलना क्यों जले सब दिनों न कोख-जली (बोलो—हरिऔध, २२४)

### कोख बंद होना

बंध्य होना । प्रयोग—जो लहे बे-कहे कपूतों को क्यों न तो बंद कोख बंद रहे (बोलो—हरिऔध, २२५)

### कोख मांग से भरी रहना

पुत्र तथा पति का मुख सदैव बना रहना । प्रयोग—हैं बड़ी भागवान वह, जो हो कोख औ मांग से भरी पूरी (बोलो—हरिऔध, २२५)

(समा० मुहा०—कोख मांग से टंडा होना)

### कोख मारी जाना

संतान न होना । प्रयोग—मर गया वह न क्यों जन्मते ही क्यों मर्द कोख वह नहीं मारी (चुमते—हरिऔध, ९०)

### कोटि उपाय करना

बहुत प्रयत्न करना । प्रयोग—कोटिक जतन कहाँ जो ऊँची हम न बढ़ाहि बाँह (सू० सा०—सूर, ४२३०); कहइ करहु किन कोटि उपाया, इहाँ न लागिहि राउरि माया (राम०—तुलसी, ४०३)

### कोटि कल्प

दीर्घ काल तक । प्रयोग—रामचन्द्र के चरित सुहाए कल्प कोटि लगि जाहि न माए (राम०—तुलसी, १५२)

### कोटि बदन से खान न कर पाना

अवर्णनीय होना । प्रयोग—मुन्दरना मरजाद भवानी जाइ न कोटिहु बदन खानी (राम०—तुलसी, ११३)

### कोठे पर बैठना

वेश्या बनना । प्रयोग—यदि ऐसा ही करना होगा तो मैं किसी कोठे पर जा बैठूँगी (कंकाल—प्रसिद्ध, ५७)

(समा० मुहा०—कोठे पर चढ़ना)

### कोड़ की खाज

दुख पर दुख । प्रयोग—ऐसे में कोड़ की खाज ज्यों 'कैसव' भारत काम के बान निनारे (कैशव०—कैशव, ३५४)

इस पर भी जो कही मालिक कड़े मिजाज का हुआ तो और भी कोड़में खाज है प्र०पी०—प्र० ना० मि०, १५९; कोड़ की तो खाज हम हैं बन रहे किस लिये सिर आप खुजलाने लगे (बोलो—हरिऔध, १५)

### कोना कोना छानना

हर स्थान देख लेना । प्रयोग—वन का कोना-कोना छान डाला गया (वैशाली०—चतुर०, १५)

(समा० मुहा०—कोना कोना भाँकना)

### कोना घिस जाना

निलज्ज होना । प्रयोग—ध्यूदोरा और लपेटिका के सारे कोने घिस चुके थे । उन्हें लज्जा ही नहीं रही थी (देवकी०—रा० सा०, ३५)

### कोने कोने से

हर देस या स्थान से । प्रयोग—जब युगों के चपेड़ों ने इस महान नगरी के घूरे उड़ा दिये होँगे, तब भी इसकी मिट्टी के दर्शनों के लिये जम्बूद्वीप के कोने कोने से लोग धावेंगे (अम्ब०—रा० वे०, ४३)

### कोयले की दलाली करना

ऐसा काम करना जिसमें अपना नुकसान हो । प्रयोग—अजन्ता प्रकाशन के प्रोप्राइटर उलटे वह शिकायत करने लगते कि डायरी छापकर उन्होंने कोयले की दलाली के सिवा और कुछ नहीं किया (कठ०—दे० स०, ३४५)

### कोयले की दलाली में हाथ काला होना

बुरी संगत का प्रभाव बुरा ही होता है । प्रयोग—कोयलों की दलाली में हाथ काले करते रहना मुझे एक आँस नहीं भाता (दूधगाछ—दे० स०, ३६०)

### कोयलों पर छाप और मुहरों की लूट होना

बड़े बड़े सबों को न रोकना और छोटे सबों में कजूसी करना । प्रयोग—कोयलों पर हम लगाते हैं मुहर । पर मुहर लूट जा रही है हर पक्षी (चुमते—हरिऔध, १००)

### कोयलों पर मुहर लगाना या लगाना

सामूली सबों में कजूसी होना या करना । प्रयोग—कोयलों पर हम लगाते हैं मुहर, पर मुहर लूट जा रही है हर पक्षी (चुमते—हरिऔध, १००)

(समा० मुहा०—कोयलों पर छाप पड़ना,—मुहर पड़ना)



### कोर दबना

किसी प्रकार के दबाव व बल में होना। प्रयोग—यह बेचारे अपनी बेगम साहब से मजबूर है × × उनसे इनकी कोर दबती है (गदन—प्रेमचंद, २५४); और की कोर ही रही दबती, आज तेरी कभी न कोर दबी (चौसे—हरिऔध, ७७)

### कोरा जबाब देना

साफ इन्कार करना—स्पष्ट उत्तर देना। प्रयोग—ऐसा आज तक कभी नहीं हुआ था कि इतना दौड़ाकर किसी ने कोरा जबाब दे दिया हो (रंग० (१)—प्रेमचंद, २२)

(समा० मुहा०—कोरा टाल देना)

### कोरा रहना

बिना कुछ लिए खाली हाथ लौटना। प्रयोग—सैकड़ों ही जंग इन्हीं हाथों फतह किए मगर जनाब, यह मायूसी, यह कोरा कोरा रहना तो कहीं भी नसीब न हुआ (राधा० ग्रंथा०—राधा० दास, ७५५)

(समा० मुहा०—कोरा लौटना)

### कोरा होना

कुछ भी न जाना। प्रयोग—भूबन इन मामलों में बिल्कुल कोरा होने की दुहाई देता तो वह कहती “और सब भी तो कोरे हैं...” (नदी०—अज्ञेय, ६३); तू कोरी है न, कुछ तुझ में प्यार का रंग भी है (प्रिय०—हरिऔध, २१७); चलने को चला चढ़ूंगा, मगर इस विषय में मैं बिल्कुल कोरा हूँ (गदन—प्रेमचंद, ४९)

### कोरी कोरी सुनाना

खूब डांट बताना। प्रयोग—मतलब अपना है, बरना इन लड़कों और इनके बापों को ऐसी कोरी-कोरी सुनाता कि मैं भी... (भीर०—जग० मासुर, १०८)

### कोरे

केवल मात्र। प्रयोग—मतलब यह कि कोरे “हास्य-रसा-वतार” ही नहीं हैं (पद्म० के पत्र—पद्म० शर्मा, १८९)

### कोरे कागज़ पर लिखकर

सपन पुर्वक। प्रयोग—कवित्त विवेक एक नहीं मोरें, सत्य कहूँ निज कागद कोरें (राम० (बाल)—तुलसी, १६)

### कोल्ह का बेल

घोर परिश्रम करनेवाला। प्रयोग—यह मुझे कोल्ह का बेल बनाना चाहते हैं (रंग० (१)—प्रेमचंद, २०६)

### कोसों

बहुत दूर। प्रयोग—घासों में सूत्र का जो लहरा बिछा है उसमें आपका सूत्र कोसों इधर उधर भाग रहा है (स० सी०—महा० द्विवेदी, ७०); जड़ाऊ कंगन और मोतियों के हारों की भी तो कभी न थी, पर जालपा अपने सादे घावरण में उनसे कोसों आगे थी (गदन—प्रेमचंद, ७३)

### कोसों दूर भागना,—रहना या होना

कोई सम्बन्ध न होना। प्रयोग—ससार के कठोर व्यवहार ने उन्हें विरक्त कर दिया था, उसके प्रलोभन से कोसों भागते थे (मान० (३)—प्रेमचंद, १६४); × × और अब तो जब कि वह प्रत्येक समय उनके घर ही में उपस्थित रहती थी उसके भूलने का प्रश्न कोसों दूर था (मिसा०—कौशिक, २५)

### कोसों दूर रहना या होना

दे० कोसों दूर भागना

### कौआ धोने से बगुला न होना

बुरे का बुरा ही रहना। प्रयोग—सच कहा है, कौआ धोने से बगुला नहीं होता (रंग० (३)—प्रेमचंद, ३१४)

### कौआ बोलना

(१) सबेरा हो जाना। प्रयोग—जाबिरी नकल समाप्त हुई तो कौवे बोल रहे थे (गोदान—प्रेमचंद, २२२)

(२) शुभ संकुन होना। प्रयोग—सगुन संदेहों हों सुन्नी, तेरे आंगन चोल कागरी (सू० सा०—सूर, ३४७७)

(३) उजाड़ होना।

### कौए का कोयल हो जाना

अयोग्य व्यक्ति का योग्य बन जाना। प्रयोग—मज्जन फल पेयिअ ततकाला। काक होहि पिक बकउ मराला (राम० (बाल)—तुलसी, ६)

### कोड़ियों के मोल बिकना

(१) बहुत कम दाम पर बिकना। प्रयोग—छोटे छोटे किसानों की जमीनें कोड़ी के मोल बिक रही हैं (मैल०—रेणु, १४९)



कौड़ियों के लिए

१४१

कीन मुंह लेकर

(२) तिरस्कृत एवं तुच्छ हो जाना। प्रयोग—जब गुण कूँ गाहक मिले, तब गुण लाल बिकाइ। जब गुण की गाहक नहीं तब कौड़ी बदल जाइ (कबीर ग्रंथा०—कबीर, ७८)

कौड़ियों के लिए

थोड़े से लाभ के लिए। प्रयोग—कौड़ी लागि लोभ बस करहि बिप्र गुर घात (राम० (३)—तुलसी, ११२५)

कौड़ियों पर जान देना

पैसे-पैसे के लिए व्याकुल होना। प्रयोग—उस प्राणी को तुच्छ समझो, जो लागि और निवृत्ति का राग अमापता हो, पर स्वयं कौड़ियों पर जान देता हो (रंग० (१)—प्रेमचंद, ३५६)

कौड़ी का कर डालना

बरबाद कर देना, इज्जत बिगाड़ देना। प्रयोग—छोड़ देगा कौड़ियों का ही बना यह तुम्हारा कौड़ियालापन तुम्हें (चोखे०—हरिऔध, १८५)

कौड़ी का भी हँ

निकम्मा-निकुष्ट। प्रयोग—जब हूत जीव रतन सब कहा। जो भा बिन जिय कौड़ि न लहा (पद०—जायसी, ५६११)

(समा० मुहा०—कौड़ी काम का नहीं)

कौड़ी का तीन बनना या होना,—तीन-तीन होना

(१) तुच्छ होना। प्रयोग—क्यों नहीं लक्ष्मी रुठेगी, जब कि कौड़ी के तीन बने (मर्म०—हरिऔध, ९८); कौड़ी के भये तीन छूटे धल भागी महिमा (राधा० ग्रंथा०—राधा० दास, ५३); इंसान को घाब तभी तक है, जब तक कि आवरु है—आवरु गई ओर इंसान कौड़ी का तीन-तीन हुआ (मा—कौशिक, ३३३)

(२) बहुत सस्ता होना।

कौड़ी का तीन तीन होना

दे० कौड़ी का तीन बनना

कौड़ी-कौड़ी

(१) एक-एक पाई। प्रयोग—परगने-परगने के अधिकारी तहसीलदार अधिकृत गश्क के समान नियत समय पर कौड़ी कौड़ी उगाह कर सक्षरान कलक्टर के पास भेज देते हैं

(मट्ट नि०—वा० मट्ट, ११)

(२) अत्यंत सामान्य एवं तुच्छ धनराशि। प्रयोग—कौड़ी कौड़ी पर लोग बेईमानी करने लग गये हैं (इस्ता०—मग० दर्मा, ७६)

कौड़ो-कौड़ी को मुहताज करना या होना

पास में धन एक दम न होना। प्रयोग—कौड़ो-कौड़ी की कलं, मैं सबको मुहताज (मा० ग्रंथा० (१)—भारतेन्दु, ४७२)

कौड़ी कौड़ी जोड़ना

घोटा-घोड़ा करके संग्रह करना। प्रयोग—कौड़ी कौड़ी जोरि के जोरें लाल करोरि (कबीर ग्रंथा०—कबीर, २५१)

कौड़ी कौड़ी दांत से पकड़ना

बहुत कंजूस होना। प्रयोग—नाली में गिरी हुई कौड़ी को दांत से उठाने वाले मक्खीचूसों की हिजो किया चाहें तो भी लिखते लिखते पक जायें (प्र० पौ०—प्र० ना० मि०, ७७); हजारों रुपये महीने की आमदनी है मिस साहब; मगर एक-एक कौड़ी दांत से पकड़ती हैं (मान० (१)—प्रेमचंद, २७५)

कौड़ी गलत पड़ना

बात या मुक्ति का प्रतिकूल असर होना। प्रयोग—नीलिमा ऐसे बैठो यी जैसे कौड़ी गलत पड़ी (वीने०—रा० रा०, ११३)

कौड़ी पास न होना

पास में बिल्कुल धन न होना। प्रयोग—पास जिसके न रही कौड़ी कब बना वह पैसे वाला (मर्म०—हरिऔध, ९९)

कौड़ी भी न लगना

अत्यंत तुच्छ लगना। प्रयोग—मूरदास स्वामी बिन गोकुल, कौड़ी ह न लहै (सू० सा०—सुर, ३७९८)

कीन मुंह दिखाना

लज्जा के मारे सामने न जाना। प्रयोग—यदि कलंकित हुई कीर्ति तो मुँह कैसे दिखलाऊँगी (देहेही०—हरिऔध, ६०)

कीन मुंह लेकर

किस माहुर पर, किस भरोसे। प्रयोग—धीलम जरत छाड़ि जो जाई पावस जाव कवन मुलताई (पद०—जायसी, ३५७); देहउं उतर कीन मुँह लाई आयउं कुसल कुजर पहुंवाई (राम० (३)—तुलसी, ५१०); फिर मृदाय त घोर



सत्य हरिश्चन्द्र आदि से हम उदाहरण देती क्या मुंह लेकर (गु० नि०—वा० मु० गु०, ४६१); है जहाँ पर बात चलती ही नहीं कौन मुंह लेकर वहाँ कोई थले (चोखे०—हरिश्चन्द्र, १३२); अब वह कौन मुंह लेकर उनके पास जाये (मान० (१)—प्रेमचंद, १७३)

### कोल हारना

बचन-बड़ होना । प्रयोग—हमारे बुजुर्गों से जब यह कहा गया, तब उन्होंने कुछ करना मुनासिब न समझा, क्योंकि शाहंशाह शाहजहाँ अपना कोल हार चुके हैं (इंस्टा०—मग० वर्मा, ८३)

### क्या खा कर

किस हिम्मत से । प्रयोग—कहा भी चड़ाए चाप, व्याह हूँ हे बड़े लाए, बोले, खोलें सेल, अति चमकत बोले हैं (गीता० (बा)—तुलसी, ९५); इसमें क्या संदेह है भाई । मालिक क्या खाके लेंगे (गोदान—प्रेमचंद, ८); भैया की बातें, राम भजो, इन बातों में क्या धरा है, हमें क्या खाके रास्ता बताएंगे (भा—कौशिक, ११८)

### क्या मुंह लेकर

ऐसी हिम्मत या स्थिति नहीं है । प्रयोग—मगर करें क्या मजबूरी है, क्या मुंह लेकर धावें (राधा०ग्रंथा०—राधा० दास, ७२०); इसके अतिरिक्त जिसके लिये घर छोड़ा × × उसको सोकर घर गाँव में क्या मुंह लेकर जाऊँ (मिला०—कौशिक, ४७)

(समा० मुहा०—क्या मुंह है)

### क्रिया करना

मृतक का अंतिम कृत्य समापन करना । प्रयोग—अनुष्ठ क्रिया करि सागर तीरा (राम० (कि)—तुलसी, ७८७)

(समा० मुहा०—क्रिया कर्म करना)

### क्रोध धूकना

क्रोध दूर करना । प्रयोग—उसने जैसे क्रोध को धूकते हुए कहा—मुझे गुस्सा आ गया था (वहम०—दे० स०, २९२)

### क्रोध पानी होना

क्रोध एकदम गायब हो जाना । प्रयोग—पर ज्योंही बुनिया लोटे का पानी लाकर रख देती हैं और उसके पाँव दवाने लगती, उसका क्रोध पानी हो जाता (गोदान—प्रेमचंद, १२८)

### क्रोध पी जाना,—मारना

क्रोध दबा जाना । प्रयोग—बीर सो रिस मारें मन गहा (पद०—जायसी, ३८१); क्रोध पी-पी कर रह जाती थी । रक्त खौलने लगता था कि दुष्ट के कान उखाड़ लूँ (मान० (१)—प्रेमचंद, ३१२)

### क्रोध मारना

दे० क्रोध पी जाना

### क्रोध से जलना

बहुत क्रोधित होना । प्रयोग—भृगुपति मुनि मुनि निरमय बानी । रिस तन जरइ होइ बल हानी (राम० (बाल)—तुलसी, २८४); श्री कृष्ण के सुन बचन अर्जुन क्रोध से जलने लगे (जय०—गुप्त, ३६)

(समा० मुहा०—क्रोध से लाल होना)

### क्षण भर में

बहुत कम समय में । प्रयोग—छन महं सबको परसि मे चतुर सुधार विनीत (राम० (बाल)—तुलसी, ३३८)

### क्षार करना या होना

नष्ट करना या होना । प्रयोग—तुलसी जानकी दिए, स्वामी सों सनेह किये कुसल, मतरु सब हर्षहँ छार छन मैं (गीता० (सु)—तुलसी, २३); मेरे हिय की वेदना—जो कियो जास सब छार (राधा०ग्रंथा०—राधा० दास, २८)



## ख

### खचाखच भरा होना

बहुत भरा होना । प्रयोग—उस दिन मंदुवा दर्शकों से खचाखच भर गया (पैतरे—अश्व, १५)

### खचाखच मचना

मारकाट होनी । प्रयोग—हैं खचाखच मची हुई तो क्या खींचलें पांव हम न खाल खिंचे (चुमते०—हरिऔध, १२)

### खटकना

(१) प्रिय लगना । प्रयोग—अरे हाँ बड़े दिल की बात चलाई तुमने कोई खटक गई है क्या मन में (मारतो०—रा० रा०, ९०)

(२) अप्रिय लगना, आशंका होनी ।

### खटका मिटना

कोई अंदेशा दूर होना । प्रयोग—सतुरु साल तब नेवर सोई । जो घर घाव सतुरु के जोई (पद०—जायसी, ४५४); और प्रजा ब्रज आनि बसाऊँ । अपने जिय की खटक मिटाऊँ (सू० सा०—सुर, ३४४०)

### खटका लगा रहना

अंदेशा बना रहना । प्रयोग—हकीकत में मदनमोहन का खचं दिन पर दिन बढ़ता जाता है इसमें मिस्टर ब्राइट को अपनी रकम का खटका होता है (परीक्षा०—श्री० दास, ५-६); उन्हें बात बात में खटका होता है कि उनका बैठना जाने कैसा मालूम होता हो—(चिंता०(१)—शुक्ल, ६७); कोई खटका मालूम हो तो मेरे साथ ही लौट आना (गवन—प्रेमचंद, १६६)

### खटखट होना, खटपट होना

भगड़ा होना । प्रयोग—कछु पिय यों खटपट भई टपटप टपकत नैन (राधा० ग्रंथा०—राधा० दास, ७०६); दो रोज

से घर में पति पत्नी की खटखट चल रही है (बूँद०—अ० ना०, १०२)

### खटपट होना

#### दे० खटखट होना

### खटपाटी लगना या लेना, खटवाटू लगाना या लेना

कठकर खाना पीना तथा काम-धंधा छोड़कर लेट रहना । प्रयोग—मैं तोहि लागि लेब खटवाटू (पद०—जायसी, ३४७); लोटि लोटि परत करोट खटपाटी लै लै सूखे जल सकरी ज्यों सेज पे परफराति (शब्द०—देव, ९५)

### खटवाटू लगना या लेना

#### दे० खटपाटी लगना या लेना

### खट-राग

भंगट । प्रयोग—अपने मिलने वालों में से एक कोई पड़े लिखेXXबड़े घाग यह खटराग लाए (इंशा०—इंशा०, ५९); हम राग अलापते हैं मेल जोल का मगर न जाने कहाँ का खटराग पेट में भरा पड़ा है (चुमते०—हरिऔध, ५)

### खटराग फैलाना

(१) बाहरी आउंवर फैलाना । प्रयोग—कुछ न छुपाछुत से बचकर हुषा किस लिये खटराग फैलाये बड़े (चुमते०—हरिऔध, १२२)

(२) भंगट का काम शुरू करना ।

(समा० मूहा०—खटराग करना,—मन्वाता)

### खटाई में पड़ना,—में सीझना

दुविधा में पड़ना । प्रयोग—यह काल का पुतला जो अपने उस खेलाड़ी की सुघ रले तो खटाई में क्यों पड़े ? (इंशा०—इंशा०, ५७); पड़ गया किस लिये खटाई में



खटाई में सीभना

क्यों नहीं रूप रंग की बाई (चुमलौं हरिप्रौध, १६२): दो रूपया पहले का बाकी है सो खटाई में सीभ रहा है और चावल यह लेगी, पांच महीने बाद उस की तस सौदा देगी (वल०—नागा०, २१); मेरा लेख-संग्रह लिया था, वह भी अभी खटाई में पड़ा है (पद्म० के पत्र—पद्म० शर्मा, २६)

खटाई में सीभना

३० खटाई में पड़ना

खटिया तोड़ना

निश्चिन्त होकर आराम करना। प्रयोग—बहुत दिनों लग खटिया तोड़िन हिंदुन को काहें जगाय माहीं देखो (भा० ग० (३)—भारतेन्दु, ५६३)(+)

(२) बेकार होना। प्रयोग—देखिए प्रयोग (१) में (+)

खट्टा अंगूर होना

(१) ऐसी वस्तु जिससे संतोष न होने वाला हो। प्रयोग—भ्रमर, इधर मत भटकना, ये खट्टे अंगूर, लेना चपक-गंध तुम, किंतु दूर ही दूर (साकेत—गुप्त, २९५)

(२) वह वस्तु जो सहज ही प्राप्त न हो।

खट्टा कर देना या बना देना

खिल्ल या दुस्ती बना देना। प्रयोग—पर उन वृद्धा की याद जैसे मेरे सब कुछ को खट्टा बना देती है (व्याग०—जैनेन्द्र, ५)

खट्टा खाना

नाराज रहना। प्रयोग—बापा के समय दधि और मिष्ठान्न खाते हैं, खटाई नहीं, इसलिये कि शापद खट्टा खाने का महावरा मार्गक न हो जाय (मेरे०—गुलाब०, १२५)

(समा० मुहा०—खट्टा रहना,—होना)

खट्टा जी होना

(१) कुड़ जाना। प्रयोग—मैंने खट्टे मन से कहा—इसी तरह अगर तुम अपने नौकरों को भी घाठ जाने गेज इनाम दिया करो तो शायद इससे ज्यादा तमीजदार हो जाय (मान०(१)—प्रेमचंद, १०६)

(२) उदासीन होना, खिल्ल होना।

(३) दिल टूट जाना।

खट्टा होना

(१) अपमान होना। प्रयोग—गलीम ने खट्टे होकर कहा

—पंडितजीके बसकी बात थोड़े ही है (कर्म—प्रेमचंद, ४)(+):

(२) स्वभाव में कटुआहट और असंतोष होना। प्रयोग—बहुत से लोग जेल जाकर खट्टे हो जाते हैं उनका किसी में विश्वास नहीं रहता (शेखर (२)—अज्ञेय, ११०) देखिए प्रयोग (१) में (+) भी

खट्टी मीठी कहना

भला या बुरा कहना। प्रयोग—सूर निरलि नंदरानि भ्रमित भई, कहति न मीठी खाटी (सू० सा०—सूर, ५७२); रहि गए कहत न खाटी मीठी (राम० (वाल)—तुलसी, २९४); कई तरह की खट्टी-मीठी कहानियां उस सुरमुट के बारे में बचपन से ही सुनता जाया था (वल०—नागा०, १३७)

(समा० मुहा०—खट्टी-मीठी बातें कहना)

खड़ा करना

(१) बनाना, तैयार करना। प्रयोग—पर कोरी नवीनता केवल मरे हुए आंदोलन का इतिहास छोड़ जाय तो छोड़ जाय, कविता नहीं खड़ी कर सकती (चिंता० (१)—शुक्ल, २४०); ज्वाला का जो रवैया है उससे तो यह उम्मीद नहीं की जा सकती कि ज्वाला कभी जमीन-जायदाद खड़ी कर सकेगा या कुछजमा कर सकेगा (भूले०—भग० वर्मा, १५९)

(२) परिस्थिति उत्पन्न करना।

खड़ी जवानी

पूर्ण यौवन। प्रयोग—अपिग महाराज की कृपा से खड़ी जवानी हाथ लगी है (गंगा०—उग्र, २९)

खड़े-खड़े

तुरंत, भटपट। प्रयोग—कजंकी अदायगी के लिए हीxxवे अपनी तमाम जायदाद खड़े-खड़े खोने-पीने करने लगे (बुंद०—अ० ना०, ५७५); बार-बार ध्यान दिलाने और प्रार्थना करने पर भी उन्हें “पद्मपराग” पर बार पंक्तियां लिख कर किसी पत्र में भेजने की कुरसूल आज तक न मिली। और खड़े-खड़े उनसे कई लेख पं० रमादाकर विपाटी ने लिखा लिये (पद्म० के पत्र—पद्म० शर्मा, १४३)

खड़े-पांच

(१) तुरंत। प्रयोग—बेटी, ऐसी बातों के फैसले खड़े पैरों थोड़े ही किये जाते हैं (झुंझ० (१)—यशपाल, ४३४)

(२) खड़ा होकर।



खड़े सिर दुबाना

१४५

खलत सवार होना

**खड़े सिर दुबाना**

बहुत प्रभाव में रहना । प्रयोग—चिता हमें खड़े सिर  
दुबा रही थी (ये कोठे—अ० ना०, ३९)

**खड़े होना**

(१) चुनाव में उम्मीदवार होना । प्रयोग—रामनिहोरा,  
ग्राम पंचायत की मुखियागिरी के लिए खड़ा हुआ है (पत्ती०  
—रेणु, ४४१)

(२) सहायता के लिए प्रस्तुत होना ।

(३) बीमारी के बाद स्वास्थ्य लाभ करना ।

**खड़ग उठाना,—सम्हालना**

लड़ने को प्रस्तुत होना । प्रयोग—छत्री हूँ करि खड़ग  
संभालूँ, जोग जुगति दोउ साधूँ (कबीर ग्रंथा०—कबीर,  
२१७); पाशविकता खड़ग जब लेवी उठा आत्मबल का एक  
वश चलता नहीं (कुरु०—दिनकर, २०)

**खड़ग सम्हालना**

दे० खड़ग उठाना

**खड़ग खड़कना**

लड़ाई होनी । प्रयोग—देवलोकहू में अजौ मुगल पठानन  
के सरजा के मूरन के खग खरकत है (भूषण ग्रंथा०—भूषण,  
२०८)

**खतरे की घंटी**

विपद की सूचना । प्रयोग—आज जो कुछ हुआ, वह हमारे  
लिए खतरे की घंटी है (अम्ब०—रा० वै०, ६८)

(समा० मुहा०—खतरे का बिगुल,—घंटा)

**खतरे के मुंह में उंगली डालना**

जान बूझकर विपत्ति में पड़ना । प्रयोग—खतरे से नहीं  
डरता लेकिन खतरे के मुंह में उंगली डालना हिमाकत है  
(गोदान—प्रेमचंद, ९४)

(समा० मुहा०—खतरे के मुंह में हाथ डालना)

**खबर उड़ना,—चलना**

चर्चा फैलनी, अफवाह होनी । प्रयोग—सबा कबीलए लैला  
में उड़ गयी यह खबर (इंश०—इंशा, ५९); बाजार में  
चेतार की खबरें चला करती हैं (गवन—प्रेमचंद, ८९); गांव  
में खबर उड़ी—मरेन्द्र बाबू ने आवारगी पर कम्पर कम ली  
(चतुरी०—निराला, ६५)

**खबर गरम होना**

चारों घोर चर्चा होनी । प्रयोग—उसकी चर्चा रामलीला  
मंडली वालों में भी कम गरम नहीं रही (अपनी खबर—  
उग्र, ६१)

**खबर चलना**

दे० खबर उड़ना

**खबर न पाना या होना**

(१) कुछ पता न होना । प्रयोग—लंका सा कोट समुंद  
सी साई । तिहि रावन घर खबरि न पाई (कबीर ग्रंथा०—  
कबीर, ३२१)

(२) ज्ञान न होना ।

**खबर न लेना**

हाल न लेना । प्रयोग—प्रायः साहित्य-सेवी, कवि, उपदेशक  
घोर लीडर सेवा-धर्म की डींग मारते हैं । पर घर में कोई  
बीमार पड़ जाय तो उसकी खबर तक नहीं लेते (पद्म० के  
पत्र—पद्म० शर्मा, १५३)

**खबर लेना**

(१) मारना-फटकारना । प्रयोग—‘मरसिया’ नामका  
एक लेख उक्त पत्र में छपा था पार लोगों ने छोटे साट  
सर विलियम म्योरको समझाया कि यह साप ही की खबर  
ली गई है (गु० नि०—बा० मु० गु०, ३१६); यह कौन सँतान  
है, नहीं मानता, ठहर तो, मैं आकर तेरी खबर लेता हूँ  
(मारना) (मान० (१)—प्रेमचंद, १४३); मैं प्राज्ञ ही मुरादा-  
बाद जाऊंगा और उस लौंडे की इस बुरी तरह खबर  
लूंगा कि वह भी पाद करेगा (फटकारना) (मान० (२)  
—प्रेमचंद, ७); चाहे कोई कितना ही बड़ा आदमी हो, वह  
यदि उन पर अपनी श्रीमता या लीडरीका प्रभाव डालकर  
दवाने की कोशिश करता तो बे-तरह उसकी खबर लेते थे  
(पद्मपराग—पद्म० शर्मा, ४६)

(२) पता लगाना । प्रयोग—खबरि लेन हम पछ  
नाचा (राम० (अ)—तुलसी, ६३०)

(३) खोज पूछ करना ।

**खलत सवार होना**

(१) सनक होना । प्रयोग—आपको नायद अभी मालूम



न हो, मैंने यहाँ एक सेवा-समिति खोल रखी है। कुछ दिनों में यही खल सवार है (रंग० १)—प्रेमचंद, ८१)

(२) बिड़ चड़ जाना।

**खम ठोंकना**

लड़ने को प्रस्तुत होना, दड़ता दिखानी। प्रयोग—इतनी बात के मुनते ही प्रद्युम्नजी ने अति क्रोध कर कहा कि मैं बालक हूँ बैरी तेरा, अब तू लड़कर देख बल मेरा, यों गुनाह संभ ठोक सनमूख हुआ (प्रेम० सा०—ल०ला०, १८६); या तो बंट जा सभी खम ठोंक के मैदान जे है (भा० ग्रंथा० (३)—भारतेन्दु, ८६४)

(समा० मुहा०—**खम बजाना, —मारना**)

**खयाल जानना**

संकोच करना। प्रयोग—तुम पौड़ी में चरन पलोटी, पिय जनि जानौ ख्याल (सू० सा०—सूर, ३२६८)

**खयाल दौड़ना**

खयाल घाना। प्रयोग—सोचते सोचते खयाल दौड़ा—नहीं नहीं बड़े लोग जो लिख गये हैं वह खयं नहीं है (भट्ट० नि०—बा० भट्ट, ९)

**खयाल दौड़ाना**

इरादा करना। प्रयोग—मगर उस जमाने के हुनरों की नकल करने की तरफ खयाल नहीं दौड़ाते क्योंकि वह टेढ़ी नीर है (गु० नि०—बा० गु०, २४८)

**खयाल पड़ना**

दिक् करने पर उताव होना। प्रयोग—निपट हमारे ख्याल परे हरि, बन में निरहि विभावत (सू० सा०—सूर, २१८६)

**खयाली घोड़े की बाग ढीली करना**

दूर दूर की कल्पनाएं करना। प्रयोग—नारंगी के रस में जाकरानी बसन्ती बूटी छानकर शिवशम्भु शर्मा कटियापर पड़े, मौजों का आनन्द ले रहे थे। खयाली घोड़े की बागें ढीली कर दी थी (गु० नि०—बा० गु०, २०३)

(समा० मुहा०—**खयाली घोड़े दौड़ाना**)

**खयाली पुलाव पकाना या होना**

असंभव बातें सोचना या होना, बड़ी बड़ी कल्पनाएं करनी। प्रयोग—यद्यपि ऐसे दुष्ट और स्थितप्रज्ञ, इन जालियों का केवल खयाली पोलाव मात्र है (भट्ट० नि०—बा० भट्ट, ८४); कोरा आदर्शवाद, खयाली पुलाव है (कर्म०—प्रेमचंद, १०४);

भजना के मन में आया कहे—जब से आपको खयाली पुलाव पकाने का शौक हुआ (सुकुल०—निराला, ८२)

**खरबूजे को देखकर खरबूजे का रंग पकड़ना**

किसी की देखा देखी किसी काम को करना। प्रयोग—यानी खरबूजे से खरबूजा रंग पकड़ता ही था। इस तरह राममनोहर दास की राम-मंडली खबरदस्त पाप-नाटी भी थी (अपनी खबर—उग्र, ६३); यह कभी न भूलियेगा कि खरबूजे को देखकर खरबूजा रंग बदल देता है (बुँद०—अ० ना०, ५६७)

**खरा दाम देना**

नगद दाम देना; ठीक दाम देना; अधिक दाम देना। प्रयोग—सहर में खरे दाम लगते हैं, यहाँ जी में आया दिया न दिया (प्रेमा०—प्रेमचंद, ५५)

**खरा होना**

(१) नीपत का साफ होना, निर्दोष होना। प्रयोग—राम सों बड़ो है कौन मोमों कौन छोटी। राम सों खरो है कौन मोमों कौन मोटी (विनय०—तुलसी, ७२); वह लेन-देन में बड़े खरे हैं (परीक्षा०—श्री०दास, १७२); लेन देन में खरा था। इसलिए उसकी साख जम गयी (गोदान—प्रेमचंद, २०४)

(२) स्पष्ट-वक्ता होना।

**खराब करना**

(१) कुकर्म करना। प्रयोग—वे लोग भले घरों की बहू बेटियां खराब करनेकी कोशिश करेंगे (मा—कौशिक, २९३)

(२) बर्बाद करना।

**खरी खरी बातें सुनाना, खरी खरी सुनाना, खरी खोटी कहना, खरी खोटी सुनाना**

भली बुरी कहना, स्पष्ट बे-लाग बातें कहना। प्रयोग—रोस करि पकरि परोस तैं लिवाई परे पी को प्रात-प्यारी भुजलतनि अरे भरे। कहे पद्माकर न ऐसी दोस कीज्यो फिरि सखिन समीप यों सुनावति खरे खरे (जग०—पद्माकर, १०); इसी तरह घर के सब आदमी अपने अपने पक्कर पर प्यारी को दो चार खोटी-खरी सुना जाते थे (मान० (१)—प्रेमचंद, ११७); लड़का ही तो है, उसे दो बात खरी खोटी सुनाकर डांट-डपटकर न रखने से काम नहीं



चलेगा (तिल्ली—प्रसाद, ४०-४१); लेकिन एक बार पति से मिल कर उनसे खरी-खरी बात करने के प्रलोभन को वह न रोक सकी (मान० (१)—प्रेमचंद, २३९); किताब वाले ने जब अपनी आशंका प्रगट की और खरी-खरी बातें मुझे सुना डालीं तब अपनी उस भरी हुई हालत में भी मेरे मन में पहली प्रतिक्रिया यह हुई कि उसके मुंह पर एक तमाचा जड़ दूँ (जहाज०—इ० जोशी, ४९)

### खरी खरी सुनाना

दे० खरी खरी बातें सुनाना

खरी खोटी कहना

दे० खरी खरी बातें सुनाना

खरी खोटी सुनना

भला बुरा सुन लेना, स्पष्ट ब्रैलाग बातें सुनना । प्रयोग—इसलिए गाडेग इत्यादि गंगाधर राव की खरी-खोटी भी सुन लेते थे (झांसी—यू० वर्मा, १०५); पर किसी की अच्छी चीज देखते ही जिनके मुँह में पानी आ जाता है, वे बराबर खरी-खोटी सुना करते हैं (चिंता० (१)—शुक्ल, ७५)

खरी खोटी सुनाना

दे० खरी खरी बातें सुनाना

खरीद लेना

पूत या प्रलोभन देकर अपनी चोर कर लेना । प्रयोग—कुछ असमिया और नेपाली लोगों को भी सरकार ने खरीद लिया था (ब्रह्म०—दे० स०, ३७०)

खरीदे गुलाम होना

आज्ञाकारी, पूरे वश में होना । प्रयोग—ज्ञान के रूप लुभाय के नैननि बेचि करी अधबीच ही लोहो (घन० कवित्त—घना०, १४)

खर्च उठाना

व्यय-भार वहन करना । प्रयोग—सात समुद्र पार कर इंग्लैंड वाले यहां आते हैं, घोर न जाने कितना परिश्रम और खर्च उठाकर यहां की नापाएँ सीलते हैं (सा० सी०—महा०द्विपेटी, ३९)

खर्च तोड़ना

खर्च कम करना । प्रयोग—बिजली का खर्च तोड़ दूंगा, १०) यो निकल धायेंगे (सेवा०—प्रेमचंद, ११६)

खर्राटा लेना

बेलबुर होना । प्रयोग—कभी किसी महातमा के भ्रंशेड़ने

पर आंखें खुलीं भी तो उसके हटते ही फिर खरटि लेने लगे (पद्म पराग—पद्म० शर्मा, ११)

(यमा० मुहा०—खर्राटा भरना या मारना)

खलबली पड़ना,—पैदा होना

(१) उत्पन्नता होनी । प्रयोग—खलबली उनमें कभी पड़ती नहीं, धर्म-बल जिनको बनाता है बली (चुभते०—हरिऔध, १५३); इन सब बातों को खयाल कर दिल में बड़ी खलबली पैदा हो गई (महु० नि०—बा० महु, ९)

(२) हलचल होनी ।

खलबली पैदा होना

दे० खलबली पड़ना

खलवाट चांद

जिस सिरपर बहुत कम बाल हों । प्रयोग—यह प्रायः देखा गया है कि खलवाट चांद या गंजी चांदवाला × × निर्वन होगा (सा० सु०—बा० महु, १७)

खा जाना

(१) कुछ लेकर न लौटाना । प्रयोग—पर फीस के कितने रुपये खा गया होगा आखिर (ब्रह्म०—दे० स०, ७९); कोई मौकर एक पैसा भी खा जाय तो उसे निकाल देते हैं (रंग० (१)—प्रेमचंद, १४२)

(२) खर्च कर डालना । प्रयोग—जो रुपये आपने दिये वे तो हम खा बैठे हैं (कठ०—दे० स०, ३४६)

(३) बरबाद कर देना । प्रयोग—हमारी फूट ने हमें खा लिया (झांसी०—यू० वर्मा, १५२); ये तुम्हारा उल्टा तवा, उसकी बीबी उसके तमाम घरवाले मिलकर खा गए उसे, बरना बहोत बड़ा आदिस्ट होता महिपाल (बुँद०—अ० ना०, २९); मीठी मीठी माया तजी न जाई, अम्पानी पुरुष को भोलि भोलि खाई (कबीर ग्रंथा०—कबीर, १६६)

(४) बिताना । प्रयोग—नहीं बाबू साहब । पूरे तो साल खा चुका हूँ । (खाना खाने के अर्थ में ?) (सु० सु०—सुदर्शन, १)

(५) बहुत तंग करना ।

(६) मार डालना (प्रारोप के रूप में प्रयुक्त) ।

खाई खुदना या खोदना

(१) दूरी होनी या करनी । प्रयोग—हां केवल चौबीस



## खाई पाटना

१४८

खाक में मिलना या मिलाना

पण्टों के पश्चात् मेरे और जसो के बीच में एक ऐसी गहरी खाई खुद जायेगी कि मेरा और उसका विवाह सम्बन्ध सदैव के लिए असम्भव हो जायेगा (मिसा—कोशिक, २०५)

(२) अहित करना या होना ।

## खाई पाटना

मतभेद मिटाना । प्रयोग—इस भेदभाव की खाई को नहीं पाटा जा सकता (मूले—भा० वर्मा, ४७७)

## खाई होना

दूरी होनी; भेदभाव होना; अंतर होना । प्रयोग—मुझे तो अतीत और वर्तमान के बीच बहुत बड़ी खाई नजर आती है (कठ०—दे० स०, ६२); वे राजकीय सत्ता के अधिकार से शासन करें जिसमें शासित को शासन का भार न अस्सरे और उनके बीच की खाई कम हो (मेरे—गुलाब०, १८१)

## खाए जाना

(१) दुखदायी होना । प्रयोग—यह घर तो अब हमें खाए जाता है (मूले—भा० वर्मा, २१२); यह पुत्र-अभाव उन्हें खाए जाता था (सु० सु०—सुदर्शन, २३७)

(२) तंग करना ।

## खाक

नगण्य या कुछ नहीं । प्रयोग—वह जानेगा तुम्हें खाक जो जाने न तुम्हारी परम्परा (बुद्ध०—वज्रन, ७२); पुस्तक के (और संस्थाओं के भी) भीतर चाहे कुछ न हो, टाइटिल रंगीन हो, कुछ चित्र हों, पढ़ाई लिखाई खाक न हो, मकान बड़िया हो (रंगी हुई धोतियाँ हों) आँखों के अंधे लोग लट्टू हो जायेंगे (पद्म० के पत्र—पद्म० शर्मा, १२२)

## खाक उड़ना

मूना पड़ा रहना । प्रयोग—वहाँ घाओं पाहर कचहरी-नी जगो रहती थी वहाँ अब खाक उड़ती है (निर्मला—प्रेमचंद, १८)

## खाक करना

नष्ट करना । प्रयोग—कितने अरमानों को करके गूँक बना पाया प्याला (मधु०—वज्रम, पद १३३)

## खाक छानना

(१) परीक्षण होना । प्रयोग—हमारे बाबू साहब ने

बरसों स्कूल की खाक छानी है, बीसियों मास्टर्स का दिमाग चाट डाला है (प्र० पी०—प्र० ना० मि०, १५७); बेचारे ताहिर घली हुक्काम के बंगलों की खाक छानते रहे (रंग० (२)—प्रेमचंद, २२०)

(२) मारा मारा फिरना । प्रयोग—जब आपकी मर्जी है कि गाँव-गाँव की खाक छानता फिरूँ, तो वही सही (मान० (१)—प्रेमचंद, ५०); हिंद छोड़कर जाता हूँ धब छानूँ गा अरब देश की खाक (नूर०—मक्त, १११); हर्षदेव विशिष्टा-वस्था में देश-विदेश की खाक छानता हुआ बीतीमय नगरी में जा पहुँचा (वेशाली० (१)—चतुर०, १६७)

(३) बहुत तलाश करना । प्रयोग—नौकरी की तलाश में बंबई की खाक छान डाली, मगर भाग्य ने अब तक कहीं साथ नहीं दिया था (ये कोठे०—अ० ना० २३); सरमद अपना सब सरमाया लुटाकर प्रेमोन्माद की दशा में मुद्दत तक खाक छानते फिरे (पद्म पराग—पद्म० शर्मा, २२८)

## खाक डालना

(१) धमा कर देना, जो हो गया सो हो गया । प्रयोग—अच्छा, खैर जो कुछ हुआ, उस पर खाक ढालो (मा—कोशिक, ३४४)

(२) किसी दोष या बात को छिपाना ।

## खाक-धूल समझना

कुछ नहीं समझना । प्रयोग—हाँ, हमसे सुनो, आप वेद-शास्त्र-पुराणादि पर राय देने में स्वतंत्र हैं, संस्कृत का काला घंघर नहीं जानते, हिन्दी के भी साहित्य को खाक धूल नहीं समझते (प्र० पी०—प्र० ना० मि०, १६५)

(समा० मुहा०—खाक समझना)

## खाक-पत्थर

एकदम नहीं । प्रयोग—भाज भी पांडेय बेचन शर्मा उसकी लिखना खाक-पत्थर आता है, आप जानते हैं (अपनी खबर—उग्र, १०३)

(समा० मुहा०—खाक-धूल)

## खाक में मिलना या मिलाना

नष्ट होना, बर्बाद होना । प्रयोग—खुबचार देखत इहि जाइ, अधिक गरब यँ खाक मिलाइ (कबीर ग्रंथा०—कबीर, २०९); अगर वह अपनी भलाई चाहे तो पद्मावती मुझे दे दे, नहीं तो उसको खाक में मिला दूँगा (राधा० ग्रंथा०—



राधा० दास, ५५४); दोनों तरफ के दस बारह हजार रुपये खाक में मिल गए और उनके साथ मेरी अभिलाषाएं खाक में मिल गयीं (मान० (७)—प्रेमचंद, २२); मगर बिनकी यह हरकत है, उन्हें मैं खाक में मिला दूंगा (गोदान—प्रेमचंद, २९४); सारे मनमूवे खाक में मिला दिये (पद्मपराग—पद्म० शर्मा, ११२)

### खाका उड़ाना

मजाक उड़ाना । प्रयोग—राय साहब ने इस प्रहसन में एक मुकदमेबाज देहाती जमींदार का खाका उड़ाया था (गोदान—प्रेमचंद, ७५); “उद्भिज्ज परिषद” में शास्त्रीय मतों के अपूर्णतापूर्वक मनोहर निदर्शन के साथ गवर्नर मानव समाज की ग्रहमन्यता का जो खाका शास्त्री जी ने उड़ाया है, वह विचारशील लोगों की आंखें खोलने के लिए सिद्धांतजन का काम देता है (पद्मपराग—पद्म० शर्मा, ६९)

### खाका खींचना

(१) मजाक उड़ाना । प्रयोग—जो लोग बात-बात में तुक-बन्दी करते हैं और कवि होने का आत्मगौरव बहन करते हैं उन लोगों का घन्नपूर्णानंद ने “महाकवि चच्चा” में बहुत अच्छा खाका खींचा है (मेरे०—गुलाब०, १५१)(+)  
(२) वर्णन करना । देखिए प्रयोग (१) में (+)

### खाट तोड़ना

निष्क्रिय पड़े रहना । प्रयोग—आपके यहां नित्य दो चार निठल्ले नातेदार पड़े खाट तोड़ा कियेXXपर आपने कभी इशारे से भी उनकी अवहेलना नहीं की (प्रेमा०—प्रेमचंद, ४४)

### खाट पर पड़ना

बीमार होना । प्रयोग—बंसक की कमाई से अपने पैरों खड़े होने की आशा निष्फल हुई और खाटिया पर पड़ गए । (गुलेरी प्रश्ना० (१)—गुलेरी, २७७)

(समा० मुहा०—खाट पर गिरना)

### खाट पर पड़े खाना

(१) बिना कमाए खर्च करना । प्रयोग—सारा जीवन खाट पर पड़े-पड़े पूर्वजों की कमाई खाने में काट दिया (प्रेमा०—प्रेमचंद, १०)

(२) बीमारी की हालत में खर्च करना ।

### खाट पर पड़े पड़े दिन बिताना

बेकार पड़े रहना । प्रयोग—दिन पड़े खाट पर बिताने हैं काहिरी बाट में पड़ी मेरे (चुमते०—हरिऔध, १२६)

### खाट से लग जाना

बहुत दुर्बल हो जाना (बीमारी के कारण) । प्रयोग—घीघू ही मैं खाट से लग गई (गोली—क्षुर०, ३४४); पर किशोर की माँ की बात अलबत्ता है । खाट से लग गई है (धरती०—वि० प्र०, २१)

### खाट सेना

बीमारी के कारण खाट पर ही पड़े रहना । प्रयोग—हां गैर तो हूं ही, गैर न होता तो, रानी जी के इशारे पर यहां कैसे दोड़ा आता, जेहल में जाकर कैसे बाहर निकाल लाता, घौर साल भर तक खाट क्यों सेता (रंग०(२)—प्रेमचंद, ६८)

### खाता-पीता होना

साधारण रूप से जीविका अर्जित करने वाला । प्रयोग—दो-तीन घरों को छोड़कर सभी ब्राह्मण खाते पीते खासे (अपनी खबर—उग्र, १९); अब दिमागमुख के खाते-पीते लोगों में उसकी गिनती थी (ब्रह्म—दे० स०, ७०)

### खातिर जमा रखना

निश्चित रहना, विश्वास करना । प्रयोग—भोज भात जो लगेगा वह हम सब दे लेंगे, तू खातिर जमा रख (गोदान—प्रेमचंद, १२५)

### खाती करना

झगड़ा मोल लेना या करना । प्रयोग—कान्हू के बल मोलों करी खाती (नंद० प्रश्ना०—नंद०, १६८)

### खान होना

अत्यधिक होना । प्रयोग—मंदिर यह सब राजहि रानी । सोभा सोल तेज की खानी (राम०(वाल्मीकि)—तुलसी, १९९); मोहनी की खानि है मुभाय ही हंसनि जाकी, लाहिली लसनि ताकी प्राननि तें प्यारिये (घन० कवित्त—घना०, १४०) नागर विदेस में बिताइ बहु चोख घायो नागरि कं हिये में हूलासनि की खानि की (मति० मक०—मतिराम, १२७); बन गये हैं ओगुनों की खान वे (चुमते०—हरिऔध, २३); वह पद्म-



राम की गद्दी हुई पुतली के समान मौदर्य की खान थी  
(देशाली०(१)—चतुर०, ६६)

### खाना

(१) घूस लेना । प्रयोग—मुझे न रकम खाने का तजरबा है, न खिलाने का (कर्म०—प्रेमचंद, २४१); दो चार सौ पान सौ खाने के फेर में जहां मुई नहीं समा सकती वहां फावड़ा चला रहे हैं (बुंद०—अ० ना०, ८७)

(२) रकम हड़पना । प्रयोग—ब्राह्मणों ने खाने का यह भी एक ढंग निकाला है (राधा० ग्रंथा०—राधा० दास, ५५५) अरे एक दो सौ क्या, वे न जाने कितने दो सौ खाएंगी (मा—कौशिक, ३००)

(३) अपना लाभ करना । प्रयोग—आपके चार पैसे खाता हूं तो आपको आंखों से देख कर मड़े में न निरने दूंगा (रंग० (१)—प्रेमचंद, ३७७)

### खाना खराब करना

भ्रंशित होना । प्रयोग—जमादार खाना-खराब न करो । हमारी तरक्की होनेवाली है (चोटो०—निराला, ६२)

### खाना दाना चलना

(१) खाया-पिया जाना । प्रयोग—जब से यह तुम्हारे यहां से आई तब से इसका यही हाल होता चला आ रहा है । न अच्छी तरह खाना चले न दाना (मिखा०—कौशिक, १२९)

(२) जीविका चलनी ।

### खाने के लाले पड़ना

खाने का अभाव होना । प्रयोग—दो दिन में खाने के लाले पड़ते ही सब छठी का दूध याद न आ जाये तो कहना (वीने०—रा० रा०, ७८); ताई जब ब्याह कर आई उस समय द्वारकादास के घरमें खाने के लाले पड़े हुए थे (बुंद०—अ० ना०, ११)

### खाने दीड़ना

(१) दुखदायी लगना । प्रयोग—फिर कागज का दाम तो खाने की दीड़ता है (कठ०—दे० स०, २१२)

(२) निहचिड़ाना, कुठ होना ।

### खार खाना

द्वेषपरखना, बदले की भावना रखना । प्रयोग—उस रात को जो भगाड़ा हुआ था, उसी दिन से वह खार खाये बैठता था (गोदान—प्रेमचंद, ११२); बापू से वह तभीसे खार खाता है (ग्रहम०—दे० स०, ७९)

### खाल उड़ाना

बहुत मारना । प्रयोग—अच्छा जाओ, ई दफा छोड़े देहूत है, घागे कबूह ऐसी गफलत करिहौ तो खाल उड़ाव दीन जाई (मिखा०—कौशिक, १३८)

### खाल खिंचना

ईदित किया जाना । प्रयोग—सदाचारी की खिचतौ खान, कदाचारी पर चढ़ते फूल (वेदेहो०—हरिऔध, ३४)

### खाला जी का घर

(१) सहज काम । प्रयोग—जमींदार से घांसे बदलना खालाजी का घर नहीं है (प्रेमा०—प्रेमचंद, १६)

(२) ऐसा स्थान जहां कोई रुकावट या बंधन न हो । प्रयोग—न बीर यह घर प्रेम का खाला का घर नाहि (कबीर ग्रंथा०—कबीर, ६९)

### खाली जेब,—हाथ

बिना कुछ अर्जन किए या पास में पैसे बिना । प्रयोग—घर कैसे पंठव मैं छूँछे । कौन उत्तर देवेउं तिन्हू पूछे (पट०—जायसी, ७२); पार जो कहीं वहां खाली हाथों गए तो वह बे भाव की पड़ेगी कि धिर में एक बाल भी न रहने पावेगा (राधा० ग्रंथा०—राधा० दास, ७५५—७५६); घर वालों ने समझा था कि जब यह पड़ कर तैयार होंगे सारा दुख दारिद्र्य दूर हो जायगा, पर जब आप खाली पाकेट घर लौटकर आए, बिचारिए उन बेचारों पर क्या गुजरी होगी (राधा० ग्रंथा०—राधा० दास, ७७); आदमी खाली हाथ लौट आया (मान० (१)—प्रेमचंद, ६१)

### खाली ढोल

व्यर्थ की बड़ी बड़ी बातें करने वाला । प्रयोग—कलम तेज थी, वाली कठोर, साफगोई की जगह उच्छ्रूलकता कर बैठते थे, इसलिए लोग उन्हें खाली ढोल समझते थे (गोदान—प्रेमचंद, ६५)



## खाली हाथ

### दे० खाली जेब

### खिच जाना

(१) प्रतिकूल होना । प्रयोग—लोग तो कैसे खिच जाते, जो नहीं खींच तान होती (मर्म०—हरिऔध, ५६); तुम मुझसे खिची क्यों रहती हो (गवन—प्रेमचंद, १८५)

(२) किसी वृत्त या व्यक्ति का स्वरूप आंखों के सम्मुख आ जाना ।

(३) आकर्षित होना ।

### खिचे खिचे रहना या खिचे रहना

विरक्त रहना, दूर-दूर रहना । प्रयोग—वह मुझसे कुछ अजीब तरह से खिची-खिची रहने लगी (मूले०—भग० वर्मा, ३२१); यह बतलाइए कि इसपर आप मुझसे खिचे-खिचे क्यों रहते हैं (अजय०—देवराज, २४०); वह रमा से केवल खिची न रहती थी, वह कभी कुछ पछता तो, दो चार जली कटी मुना देती (गवन—प्रेमचंद, २७); मुझसे खिची खिची रहती है, जैसे मैंने उसको कोई हानि पहुंचा दी हो (सु० सु०—सुदर्शन, २२८)

### खिचड़ी पकना

गुप्त रूप से सलाह होनी । प्रयोग—वह क्या जानता था इनके बीच में क्या खिचड़ी पक रही है (गोदान—प्रेमचंद, १२४); इसका मानें हुआ खिचड़ी बहुत दिनों से पक रही है (परती०—रेणु, १४५)

### खिचड़ी बाल

काले-सफेद बाल । प्रयोग—उसके ठिगना स्थूल शरीर, गिर के खिचड़ी बाल  $\times \times$  छोटी छोटी घांसें उसके स्वभाव की प्रखरता और तेजी पर परदा सा डाले रहती थी (मन० (१)—प्रेमचंद, २६७); 'क्या क्या?' खिचड़ी बालों वाली दाढ़ी को हिलाकर  $\times \times$  गयासुद्दीन ने पूछा (सुग०—वृ० वर्मा, ६७)

### खिचड़ी भाषा

मिश्रित भाषा । प्रयोग—यही कारण है कि राजकल की खड़ी बोली खिचड़ी बन गई है (पद्म पराग—पद्म० शर्मा, ३१९)

### खिचड़ी होना

(१) बालों का सफेद होना शुरू होना । प्रयोग—गाँडे के

साथ तनकर खड़े, खिचड़ी हो गई दाढ़ी को बट कर ठोड़ी पर बांधे  $\times \times$  सदांर जी ने अपना हिवस्की सोडा का गिलास होठों से हटाया (झूठा० (१)—यशपाल, ३७७)

(२) मिल जाना ।

### खिचरी रखना

मतोमालिन्य रखना । प्रयोग—पिया सों खिचरी क्यों नू राखत (मा० ग्रंथा० (२)—भारतेन्दु, ४५९)

### खिल उठना

(१) शोभान्वित होना । प्रयोग—पहनावा अंग्रेजी था, जो उन पर खूब खिलता था (रंग० (१)—प्रेमचंद, ११)

(२) प्रसन्न होना । प्रयोग—इहि लायक हो बहो नायक हो, सुखदायक हो, पुनि पाय खिलो (धन० कवित्त—घना०, ९९); यों तो मुझे देखते ही खिल उठते थे, दौड़ कर छात्री से लगा लेते थे, आज मुखातिब ही नहीं होते (रंग० (२)—प्रेमचंद, १७५); उसने कुछ खिल कर कहा—मैंने पहले ही यही सोचा था (शेखर (२)—अज्ञेय, १०५)

### खिलखिला उठना,—खिलखिला कर हंसना

ऐसा हंसना जिसमें दांत दिखें और आवाज हो । प्रयोग—शशि पहले चुपचाप मुनती रही, फिर खिल-खिला कर हंस पड़ी (शेखर (२)—अज्ञेय, १५४); सारी क्लास खिलखिला उठी (शेखर (१)—अज्ञेय, ९२); बापमी पर अतुल को क्रोध में लाल पीला देखकर घमाने ली खिलखिला कर हंस पड़ा (ब्रह्म०—दे० स०, ६६); खुल गये दिल खिलखिला कर हंस पड़े (बोल०—हरिऔध, १०५); और तुम, खिलखिलाकर, भीतर हंस रहे हो (क्ला०—पंत, ५९)

### खिलखिला कर हंसना

### दे० खिलखिला उठना

### खिलाना

भुस देना । प्रयोग—मुझे न रकम खोने का तजरबा है, न खिलाने का (कर्म०—प्रेमचंद, २४१); तुम्हारे यहाँ चाता तो कुछ खिला दिया जाता (सिद्धर०—ल० मिश्र, १७)

(समा० मुहा०—खिलाना पिलाना)

### खिलौना बनाना

पूरी तरह बस में करना । प्रयोग—चुन्नीबाल और धिम्-दयाल आदि की कटती कहने में कसर न रखते परंतु अकल मोटी थी इसलिए उन्होंने इन्हें खिलौना बना रक्खा था



(परीक्षा०—प्री० दास, ६५); भट्टिनी को मैं राजनीति का खिलौना नहीं बनने दूंगा (बाण०—ह० प्र० द्वि०, २५७)

### खिल्ली उड़ाना

उपहास करना। प्रयोग—मनोज सारी वस्तुस्थिति की खिल्ली उड़ाता है मन ही मन (दूधगाछ—दे० स०, २९८); होना क्या है? सारा बाजार खिल्ली उड़ाता है (सु० सु०—सुदर्शन, २१०)

### खींच-तान करना

(१) कम-बेशी करके किसी तरह काम चलना। प्रयोग—उनका कहना था—जब रोजगार में कुछ मिलता नहीं, दैनिक कार्यों में खींच-तान करनी पड़ती है × × तो फिर तीजे में क्यों इतनी उदारता की जाय (मान० (१)—प्रेमचंद, १५३)

(२) व्यर्थ विवाद करना। प्रयोग—यही सीधी, सीधी बातों को विचार ही विचार में खेत तानकर ऐसी पेचीदा बना लेते हैं कि उनका सुलझाना मुश्किल पड़ जाता है (परीक्षा०—प्री० दास, ९)

### खींच-तान होना

वेमनस्य होना। प्रयोग—दिन अगर लाग हाट में बीते तो कटे खींच-तान में रातें (चुमते०—हरिऔध, ६९)

### खींच लाना

(१) धाकड़ करना। प्रयोग—अमरकांत को वह घर के काम काज की ओर खींचने का प्रयास करती थी (कर्म०—प्रेमचंद, १३)

(२) अपनी छोर कर लेना। प्रयोग—बोबेरी को खींचने के लिए हमने मन ही मन सोच लिया (सिल्ली—प्रसाद, ४७)

### खींच लेना

कोई योग न देना, विरक्त हो जाना। प्रयोग—समझाने की तो बात क्या है, पर तुमने जिस तरह अपने को संसार से अलग खींच लिया है, इस तरह आदमी बहुत देर तक काम का रहेगा, इसमें मुझे संदेह है (शेखर (२)—अज्ञेय, १५५)

### खींचा तानी करना या होना

एक ही वस्तु को लेने के लिए खींचा-भपटी करनी या होनी। प्रयोग—कहे कबीर भजि सारंगपानी, नही तर हवें हैं खींचा तानी (कबीर ग्रंथा०—कबीर, ११७); छोड़ दे पेचताप की

सादत बीच की खींच-तान कर दें कम (चुमते०—हरिऔध, २७); सो दिनों तक खींचा-तानी चलती रही (अपनी खबर—उग्र, ७५)

### खीस काढ़ना,—निपोरना

(१) डीनता दिखलानी। प्रयोग—फिर खीस काढ़कर (बोले)—पर घाय जानते हैं, हमारी परिस्थिति... केवल पत्र पुष्पम्... (शेखर (२)—अज्ञेय, १५८)

(२) दांत निकाल कर हंसना। प्रयोग—घायीबाद में देता नहीं नकस्कार करता हूँ या खीस निपोरता हूँ (कुल्ली०—निराला, ११५); मूढ़ वे हैं काढ़ते जो खीस हैं (बोल०—हरिऔध, २४३)

(३) मर जाना।

### खीस निपोरना

दे० खीस काढ़ना

### खुचुड़ करना

दोष निकालना। प्रयोग—विद्विद्धापन अगर पसंद नहीं तो खुचुड़ बात बात में न करें (बोल०—हरिऔध, ११२)

### खुदा की मार

दुर्भाग्य। प्रयोग—भाई, इन काफिरों पर खुदा की मार है (राधा० ग्रंथा०—राधा० दास, ६००)

### खुल कर

बिना रुकावट के, अच्छी तरह। प्रयोग—मलिकाइन का हाथ छोटा है। खुलकर जब परीसती ही नहीं तो बेचारा मेहमान क्या खायेगा और क्या छोड़ेगा? (बल०—नागा०, २०); नहीं, भारत की भलाई की बात जरा बस खुलकर सोच रहा हूँ (जय०—जेनेन्द्र, ८७)

### खुल कर कहना

बिना किसी हिचक के सब कुछ कहना, स्पष्ट कहना। प्रयोग—इसका प्रबन्ध करने को उन्होंने मुझसे कहा था तो हम साफ साफ यह नहीं कहना चाहते थे, लेकिन जब तुम समझते ही नहीं तब तुमसे खुलकर यह कहना पड़ रहा है (मूले०—भग० बर्मा, १९९); मुझे मौका नहीं मिला पर एक बार मैं उनसे खुलकर बात कसंगा जरूर (पैतरे—अशक, १०४); लूस कहें और बार बार कहें बात वाजिब सदा कही जावे (चुमते०—हरिऔध, ४१)



### खुलकर खेलना, खुल खेलना

(१) मनमानी करनी। प्रयोग—इच्छा और वासना खुल कर रही है खेल (बुद्ध—वचन, १७५); इन दिनों तो है बिपत खुल खेलती (चुमते—हरिऔध, १)

(२) उच्छ्रंखल होना। प्रयोग—तब ठीक है। अब मेरा मुख देखना। खुल खेलूँगा (सुहाग—अ० ना०, १३९)

### खुल कर बातें होना

स्पष्ट बातें होना। प्रयोग—रही अपमान करने की बात वहां मैं इतना समझता हूँ कि बातें इतनी खुलकर हुई कि प्रायश्चेष्ट को अपने को अपमानित समझना असंभव बात नहीं है (चित्र—भाग० दमा, ९८)

### खुल खेलना

#### दे० खुल कर खेलना

### खुल जाना या खुलना

(१) मन की बात कहनी। प्रयोग—और तुम्हारे सामने जो इतना खुली है, इसका कारण काम नहीं, यथार्थ ही तुम्हें उसने प्यार किया है (लिली—निराला, २८-२९); बोलते बोलते गये खुल हम, खोलते खोलते खुली मूठी (चोखे—हरिऔध, ४८); पूछिए, लेकिन मुझे भय है कि राजा साहब आसानी से न खुलेंगे (रंग० (२)—प्रेमचंद, १३९)

(२) शोभावमान होना। प्रयोग—मुठि सुंदर भाल पे भीहनि बीच गुलाल की केंसी खुली टिकुली (धन० कवित—धना०, १९०); हो भलाई के लिये ही जब बने तब तिलक तुम क्यों बुराई पर तुले। भेद छनियों के खुले तुम से न जब भाल पर तब तम खुले तो क्या खुले (चोखे—हरिऔध, ७५)

(३) संकोच दूर होना।

### खुला भेद

किसी बात का प्रगट रूप। प्रयोग—यद्यपि डाक्टर इफानि अली इस मंडल के मुख पाव पे पर खुला हुआ भेद या कि प्रेमशंकर ही उसके कर्णधार हैं (प्रेमा०—प्रेमचंद, ४३५)

### खुला हाथ होना

मुख खर्च करना। प्रयोग—मेठ अमीचंद का खुला हाथ कौन नहीं जानता (भारती०—रा० रा०, ६०)

### खुला होना

(१) सहज मिल जाने वाला। प्रयोग—मैं राजनेता नहीं हूँ और सदा खुला हूँ। कभी कोई मुझसे मिल सकता है (मान० (३)—प्रेमचंद, १४); नौकरियां सभी दलोंके लोगों के लिए खुली हुई हैं (मेरे०—गुलाब०, २०२)

(२) साफ साफ बात करने वाला।

(३) व्यक्ति या विषय का विचार-विमर्श के लिए निरा-ग्रह होना।

### खुली चोट

स्पष्ट आरोप। प्रयोग—उसमें ऐसा संगोपन कर दीजिए, जिससे कोई खुली चोट किसी पर न रह जाय (पद्म० के पत्र—पद्म० शर्मा, १५)

### खुली तबियत

जिदादिल, मस्त। प्रयोग—पर जिस घर में इंसान बसते हों और वे कुछ खुली तबियत के लोग हों  $\times \times$  वहाँ चीजों का  $\times \times \times$  इधर उधर हो जाना कोई पराधातु बात नहीं (पैतरे—अशक, ४६)

### खुली बात

स्पष्ट बात। प्रयोग—बुल सकें या न खुल सकें खाँसे। क्या खुली बात को भला खोलें (चुमते—हरिऔध, ४५)

### खुली भाषा

स्पष्ट रूप से। प्रयोग—सामु जी  $\times \times$  मेरे पिताजी की बर्बरता की खुली भाषा में आलोचना करने लगी (कुल्लो—निराला, २५)

### खुले आम—खजाने,—मैदान

प्रगट रूप से। प्रयोग—क्या कहें बात बेहयाई की है खुले आम बैठियां बिकनीं (चुमते—हरिऔध, १४९); बड़े-बड़े हुक्काम खुले-खजाने कमीशन लिया करते हैं (मान० (७)—प्रेमचंद, ७०); घरमें खुले खजाने पार घाते हैं (बुद्ध—अ० ना०, ४३९); न्याय, किस्मत, और मन की शक्ति का जो फैसला हो वह खुले मैदान होने दे (बुद्ध—वचन, ९२)

### खुले खजाने

#### दे० खुले आम



खुले दरवाजे न शरमाना

१५४

खून का पानी करना

**खुले दरवाजे न शरमाना**

कोई सज्जा न होनी। प्रयोग—‘भाभी तो’ निलिमा ने कहा—‘खुले दरवाजे नहीं शरमाती। जाओ भइया यह तो पड़ सी, (बोने०—रा० ११०, १७२)

**खुले दिल से**

बिना किसी दुराव या भेद के—बिना किसी पूर्वाग्रह के। प्रयोग—श्रीर महाराणा प्रताप सिंह ने भी उन्हें खुले दिल से गले लगाया (विप०—प्रेमी, १०); सारी बात पर आप लोग खुले दिल से बिचार कर सकते हैं (कठ०—दे० स०, ८१)

**खुले मैदान**

दे० खुले आम

**खुले हाथ**

बिना किसी रोक या दुराव के। प्रयोग—वे खुले दिल न मान क्यों देंगे जो खुले हाथ दान देते हैं (बोल०—हरिऔध, १६७); रानी साहब तो इनाम खुले हाथ देती हैं (झांसी०—वृ० वमा, ३७४); अपने को मिटा देने में मैंने कंजूसी नहीं की—खुले हाथ से दिया (शेखर (२)—अज्ञेय, १६६); बिलाने बिलाने में खुले हाथ खर्च करता था (गहन—प्रेमचंद, ८९)

**खुशामदी टट्ट**

खुशामद करने वाला। प्रयोग—खुशामदी टट्ट कहीं का, बाल में बिलियम को उल्लू बनाना चाहता था (रंग० (१)—प्रेमचंद, ३४८)

**खुशी से जमीन पर पांच न पड़ना,—नाच उठना**

अत्यधिक खुशी होना। प्रयोग—काका ने घांसी और जूनतारा को जाने देखा तो बह खुशी से नाच उठा (ब्रह्म०—दे० स०, ६५); दीपाली की मां के पैर तो जैसे खुशी से धरती पर टिकते ही न थे (कठ०—दे० स०, ४७)

(समा० मुहा०—खुशी का ठिकाना न होना, खुशी के मारे नाचने लगना, — फूट उठना)

**खुशी से नाच उठना**

दे० खुशी से जमीन पर पांच न पड़ना

**खूंट छड़ाना**

पीछा छड़ाना। प्रयोग—गारी देत बहू बेदिन को, बं धाई ह्या घाबति। शाश करति सबनि भी मैं ही कैसेहुं मूट

छुड़ावति (सु० सा०—सूर, २०४५)

**खूंट में बांध रखना**

अपने ही अधिकार में रखना। प्रयोग—खोट कैसे न खूंट में बंधती मन गया है खुटाइयां में सन (चुमते०—हरिऔध, १२८)

**खूँटी तानकर सोना**

निश्चित हो कर सोना। प्रयोग—धरहरी यूनी परयो मंदिर, सूतो मूँटी तानि (कबीर ग्रंथा०—कबीर, १९४)

**खून उबलना,—खौलना,—में आग लगना**

गुस्सा चढ़ना। प्रयोग—स्वर्ण सेन और सूर्यमल्ल का रक्त उबलने लगा (वैशाली० (१)—चतु०, १५६); आपने अपने लड़कों के रोने की आवाज सुनी, और आपका खून उबलने लगा (रंग० (१)—प्रेमचंद, २०८); रक्त खौलने लगता था कि दुष्ट के कान उखाड़ लूं मगर इन महाशय को उसे कभी कुछ कहते नहीं देखा (मान० (१)—प्रेमचंद, ३१२); लौलता है मेरा लोहू क्रोध से मैं हूं भर जाता (वैदेही०—हरिऔध, ३६); अपने गांव के इन बीरों पर अत्याचार होता देखकर शिकारी गांववालों का खून खौलने लगा (ब्रह्म०—दे० स०, २८९); एक किताब के दो पृष्ठ पढ़ते ही उसके खून में आग लग गई (वृ०—अ० ना०, ५३५)

**खून एक करना**

मरना और मारना। प्रयोग—हम आज या तो मातादीन को चमार बनाके छोड़ेंगे या उनका और अपना रक्त एक कर देंगे (गोदान—प्रेमचंद, २५३)

**खून का घूंट पीना,—घूटना**

क्रोध या अपमान को चुपचाप सह लेना। प्रयोग—कुलमन्त्री खून का घूंट पीकर रह गयी (मान० (१)—प्रेमचंद, ६०); इस वक्त तो खून का सा घूंट पीकर रह जाइए (झांसी०—वृ० वमा, ३१२); वह बनिया भी खून घूंट कर रह गया था (अपनी सबर—उग्र, ८५)

**खून का पानी करना**

(१) बहुत परिश्रम करना। प्रयोग—जबानी में दूध किसी ने पीया हो, पर बुझाये में गाय के निग्न अपना खून पानी करने वाली हैं तो मुलावो अम्मा (कला०—उग्र, १५७)  
(२) मरने पर उताव होना।



### खून का प्यासा

(१) जानी दुश्मन । प्रयोग—बारों और लोह के प्यासे भील ही भील दिखाई पड़ते थे (राधा० ग्रंथा०—राधा० दास, १५८); सिंगारसिंह को जब से दयाकृष्ण के इस प्रेमाभिनय की सूचना मिली है, वह उसके खून का प्यासा हो गया है (मान० (७)—प्रेमचंद, ४४)

(२) मारकाट के लिए उत्सुक । प्रयोग—लोह के प्यासे भेड़ियों, तुम जब खबरें थे, तब क्या इसमें बुरे थे (कामना—प्रसाद, ६२)

### खून की कमाई

बहुत परिश्रम से अर्जित धन । प्रयोग—औरों की कमाई पसीने की होती होगी, तुम्हारी कमाई तो खून की है (रंग० (१)—प्रेमचंद ३२)

### खून की नदी बहना या बहाना

बहुत अधिक रक्तपात होना । प्रयोग—त्यागि प्राण बर देहि सब मिलि नदी रक्त की बहिरै (राधा० ग्रंथा०—राधा० दास, ६१२)

### खून की होली खेलना

रक्तपात करना । प्रयोग—मैं बचे हुए शक्तावतों को एकत्रित कर एक बार फिर अबर्दस्त खून की होली खेलूंगा (विप०—प्रेमी, ६८)

### खून के आंसू बहाना,—रोना

मर्मन्तिक पीड़ा होनी । प्रयोग—कभी तुम इस निर्दयता पर खून के आंसू बहाओगी (रंग० (२)—प्रेमचंद, २१४); कितनी ही नेक बीबियां उनकी बंदोस्त खून के आंसू रो रही हैं (सेवा०—प्रेमचंद, १६२)

### खून के आंसू रौना

दे० खून के आंसू बहाना

### खून खच्चर होना, खून खराबा बरपा होना

ऐसी मारपीट जिसमें रक्त बहे या हत्या हो । प्रयोग—मैं कहता हूँ कि अगर धात्र हिन्दुस्तान को स्वराज्य मिल जाय तो वह मारकाट मच जायगी, वह खून खराबा बरपा होगा कि पनाह खुदा की (भूले०—भाग० वर्मा, ४५९); तुमने बहुत अच्छा किया भैया जो उनके साथ न हुए, नहीं खून-खच्चर हो जाता (कर्म०—प्रेमचंद, २९९)  
(समा० मुहा०—खून खराबा होना)

### खून खराबा बरपा होना

दे० खून खच्चर होना

### खून खौलना

दे० खून उबलना

### खून गर्दन पर होना,—सिर पर चढ़ना

खून करने का पाप लगना । प्रयोग—एक अधरम के दण्ड से बचने के लिए गुनाहों का खून तो सिर पर न चढ़ेगा (गदन—प्रेमचंद, २२६); फिर बेगुनाहों का खून किसकी गर्दन पर होगा (गदन—प्रेमचंद, २३८)

(समा० मुहा०—खून सिर पर होना)

### खून घूटना

दे० खून का घूट पीना

### खून चूसना

घोर कष्ट देना; घोर कष्ट देकर रुपया घेंटना । प्रयोग—यह लोग गरीबों का खून चूसने के सिवा और क्या करते हैं (मान० (१)—प्रेमचंद, ११०); तुम खून चूस कर उनका पापों से कोप बढ़ाओ (नूर०—मक्त, ९४)

### खून जलाना

दुख या कष्ट देना या पाना । प्रयोग—घातने अपना खून जलाकर कौन सा तीर मार लिया (मान० (१)—प्रेमचंद, ८१)

### खून ठंडा होना

(१) जोश ठंडा होना । प्रयोग—दिल हुआ ठंडा, लहू ठंडा हुआ देख ठंडे आँख की ठंडक बड़ी (चुमते०—हरिऔध, ६३)

(२) बहुत डर जाना । प्रयोग—इस ठठाने से ऐसी आसुरिक उद्दण्डता × × टपकती थी कि रात को सुनकर लोगों का खून ठंडा हो जाता था (मान० (८)—प्रेमचंद, २०); भोला का खोह सँद हो गया (गोदान—प्रेमचंद, १५८)

(३) बुझापा जाना ।

### खून पसीना एक करना

घोर परिश्रम करना । प्रयोग—तैं तुझे करना अगर है तो तुझे होगा लगाना जोर एड़ी और चोटी का बराबर और करना एक लोह से पसीना (बुद्ध०—वचन, १३०);



खून पानी हो जाना

१५६

खेत पर ओले पड़ना

जिनके लिए तुम अपना खून और पसीना एक कर रहे हो, वे तुम्हारी बात भी न पूछेंगे (रंग० (१)—प्रेमचंद, ३७८); रात दिन खून-पसीना एक करके जो-जान से पड़ने में जुटा रहता (मा—कौशिक, १३०)

**खून पानी हो जाना**

जोश का न रहना । प्रयोग—हो गया पानी जब किसी का लहू पेट कैसे तब भला पानी न हो (बोल०—हरिऔध, २२०)

**खून बहना या बहाना**

(१) रक्तपात होना । प्रयोग—दमन-चक्र यदि चलता तो बहता लोहू (वेदेही०—हरिऔध, ११६)

(२) युद्ध में मारना या मारा जाना । प्रयोग—भजन करने पर भी दिल्ली के सुल्तान ने इतना खून बहा दिया (मृग०—वृ० वर्मा, ३०)

(३) युद्ध करना ।

**खून मुंह लगाना**

किसी वस्तु का चसका लग जाना । प्रयोग—दयानाथ—कमसे कम एक हजार तो वहाँ मिल ही जायेंगे ? जानेद्वारी—खून मुंह लग गया क्या (गवर्न—प्रेमचंद, ७)

**खून में आग लगाना**

दे० खून उबलना

**खून सफेद होना**

कुर बनना; दया-ममता न होनी । प्रयोग—जितका खून सफेद है, उनके बीच में रहना व्यर्थ है (मान० (८)—प्रेमचंद, १५)

**खून सवार होना**

मरने मारने पर उताव होना । प्रयोग—राम की बहू पर खून सवार हो गया (ईस्टा०—मग० वर्मा, ९२)

(समा० मृता०—खून सिर पर सवार होना)

**खून सिर पर चढ़ना**

दे० खून गर्दन पर होना

**खून से हाथ रंगना**

(१) अहित करना । प्रयोग—इस दलाली के लिए हम एक दूसरे के खून से हाथ रंगते हैं (प्रेमा०—प्रेमचंद, ३०५-३०६)

(२) हत्या करना ।

(समा० मृता०—खून से तलवार रंगना)

**खून होना**

(१) नष्ट होना, व्यर्थ जाना । प्रयोग—संवाद की इस विधि में अक्सर अभिनय और उसके प्रभाव का खून हो जाता था (अपनी खबर—उग्र, ३०); जहाँ कहीं न्याय का खून होते देखते, तुरत सभा का ध्यान उसकी ओर आकर्षित करते (प्रेमा०—प्रेमचंद, ४३५)

(२) हत्या होनी ।

**खेत करना**

(१) समथल करना । प्रयोग—गोमि के, खेत के, बांधि सेतु करि, उत्तरिबो उदधि, न बोहिन चहिबो (गीता० (सु)—तुलसी, १४)

(२) उद्य के समय चंद्रमा का पहले पहल प्रकाश फैलाना ।

(३) मार डालना ।

**खेत का धोखा होना**

निष्प्राण होना—मृक होना । प्रयोग—हमें धाशा है कि इतने निखनेसे आप धोखेका तत्व—यदि निरे खेत के धोखे न हों, मनुष्य हों तो—समझ गये होंगे (प्र० पी०—प्र० ना० मि०, ६८); कुँवर चढाई भौहें, अब को बिलोकें सोहें, जहं तहं भे सचेत, खेत के मे धोखे हैं (गीता० (वा)—तुलसी, ९५)

**खेत के दाने चिनना**

अत्यंत दीन होना । प्रयोग—हो भरोसा कुछ न कुछ सबको मदा क्यों न कोई खेतके दाने चिने (बोल०—हरिऔध, ७२)

**खेत छोड़ना**

रणभूमि से भागना । प्रयोग—सूरा तबही परजिये, लड़े पणी के हेत पुरिजा पुरिजा हवै पड़े, तऊ न छाड़ें खेत (कवीर प्रशा०—कवीर, ६९); सूर सुभट डोड खेत न छाड़त मनहु आड छाड़े दल जोरी (सु० सा० (परि०१)—सूर, ५७)

**खेत पर ओले पड़ना**

बनी बनाई बात बिगड़ जानी, मुख नष्ट होना । प्रयोग—संभल कर अंत में इस भांति बोले—कि "आये खेत पर ही ईव ओले" (संकेत—गुप्त, ७३)



### खेत मांडना

युद्ध ठानना। प्रयोग—कबीर मेरे संसा को नहीं, हरि रंग लागा हेत। काम क्रोध संजुभगा, चौड़े मांडया खेत (कबीर ग्रंथा०—कबीर, ६८)

### खेत में पछाड़ना

युद्ध में हारना। प्रयोग—तैसहि भरतहि सेन समेता। सानुज निदरि निपातउ खेता (राम० (अ)—तुलसी, ५९०)

### खेत रखना

(१) समर में विजय प्राप्त करना—परास्त करना। प्रयोग—पहुला हाक हिये लसे, सन की बंदी भाल। राखति खेत खरे खरे खरे-उरोजनु बाल (विहारी रत्ना०—विहारी, २५८) (÷)

(२) खेत की रखवाली करना। प्रयोग—देखिए प्रयोग (१) में (÷)

### खेत रहना या होना

लड़ाई में मारा जाना। प्रयोग—शत्रुओं के कई हजार मनुष्य खेत रहे (राधा० ग्रंथा०—राधा० दास, ५८२); तिरसठ जमन तो खेत रहे ये या कराह रहे थे (गु० कहा०—गुलैरी, ५८); चार सवार गये थे, उनमें से दो वहीं खेत रहे (मृग०—वृ० वर्मा, १६५); मेरे दो सौ वीर देवपुत्र का नाम ले लेकर खेत रहे (बाण०—ह० प्र० दि०, ११०)

### खेत सुहाना

विजय होनी। प्रयोग—एतना कहत छीक भइ बाए। कहेउ सगुनिअन्ह खेत सुहाए (राम० (अ)—तुलसी, ५५२)

### खेती सूखे पर पानी बरसना

काम बिगड़ जाने पर आवश्यकता-पूर्ति होनी। प्रयोग—का बरषा जब कधी मुखाने (राम० (बाल)—तुलसी, २६८)

### खेल बिगड़ जाना

युक्ति सफल न होनी, होता हुआ काम बिगड़ जाना। प्रयोग—हरि-इच्छा भी अवश्य कोई प्रबल वस्तु है नहीं तो क्या मेरे सारे खेल यों बिगड़े जाते (प्रेमा०—प्रेमचंद, ३७९)

### खेल होना

(१) तुच्छ, महत्वहीन, सामान्य होना। प्रयोग—इत काहू सो मेल रहवौ न कछु, उत खेल सी हूँ सब बात टरी (घन० कवित्त—घना०, १५७)

(२) साधारण काम होना।

### खेलना-बोलना

मेलजोल रखना। प्रयोग—मौन रहत भो पर रिस पाए, हरि सो खेलत बोलत है (सु० सा०—सूर, २८७२) (आंखों के लिए प्रयुक्त)

### खेलने खाने के दिन

बेफिक्री या वचपन के दिन। प्रयोग—सभी खेलने खाने के दिन हैं, इसी समय जोत दोगी तो कलेजा मूख जायगा (बल०—नागा०, ४); इसकी तो बचस खेलने खाने और पोवन का मुल लुटने की है (मिखा०—कौशिक, ४)

### खेला-खेला कर मारना

किसी को खूब तंग करके मारना या पूरी तरह परास्त करना। प्रयोग—हतों न खेत खेलाइ खेलाई। तोहि अबहि का करो बड़ाई (राम० (लं)—तुलसी, ९००); वे अगर हाथ का खेलौना हैं तो न उनको खेला खेला मारें (चुमते०—हरिऔध, १५७)

### खेलाना

बहुत तंग करना। प्रयोग—लछिमन मन अस मन दुखावा एहि पापिहि में बहुत खेलावा (राम (लं)—तुलसी, ९४७)

### खेली-खाई

(१) हर प्रकार का अनुभव प्राप्त किए हुई (विशेष कर बुरे अर्थ में प्रयुक्त)। प्रयोग—लछमी तो पुरानी है, खेली खिलाई है (मैला०—रेणु, ७५) (÷)

(२) पुरुष समागम में परिचित। प्रयोग—देखिए प्रयोग (१) में (÷)

### खो जाना

किसी विचार में इतना डूब जाना कि कुछ सुध न रहे। प्रयोग—चोही देर बाद पिता फिर बोले—'तुम भी पागल हो जाओगे—और फिर खो-से गए (शेखर (२)—अज्ञेय, १४०)

### खोए-खोए से, खोये हुए से

अतमने, अपने में ही डूबे हुए। प्रयोग—राजा साहब और बाउन, दोनों खोए हुए से लड़े थे (रंग० (२)—प्रेमचंद, ३३८); वह खोपा हुआ सा उस पोंसले की ओर चल देता



### खोखला स्वर

है जिसमें उसकी सारी भावनाएं सोती हैं (शेखर (१)—अज्ञेय, १६१)

### खोखला स्वर

सपंहीन, फीकी बाली । प्रयोग—गूँज धीरे-धीरे सांत हो जाती, फिर अनुगूँज में हठात् एक खोखला सा स्वर आ जाता (शेखर (२)—अज्ञेय, २०६)

### खोज मारना

(१) रथ के पहियों का निशान मिटाना । प्रयोग—खोज मारि रथ हांकहु साता । जान उपाय बनिहि नहि बाता (राम० (अ)—तुलसी, ४५२)

(२) सब जगह खोज कर लेना ।

### खोज लेना

हाल-वाल पूछना । प्रयोग—सूर हमहि पहुँचाइ मधुपुरी, बहुरि न सोधी लीन्ही (सु० सा०—सूर, ४०९१); खोजहूँ न लीनो फेरि नैन-बान मारिकं (मा० प्र० २)—भारतेन्दु, २८५)

(समा० मुहा०—खोज खबर लेना)

### खोटा सिक्का चलना

धोखा दे सकना । प्रयोग—समझ गये कि XX इस बाजार में सब छोटे सिक्के न चलेंगे (प्रेमा०—प्रेमचंद, ३७०)

### खोटा सिक्का होना

भूटा होना । प्रयोग—उनकी दुष्घाएं छोटे सिक्के सिद्ध हुई (दुष्घाट—दे० स०, २५१)

### खोटी उतरना

झूठी प्रमाणित होना । प्रयोग—आज प्रेम परीक्षा के समय तेरी वह सब बातें खोटी उतरती (मान० (८)—प्रेमचंद, ४४)

### खोद-खोद कर पूछना

धुमाफिरा कर एक ही बात को पूछे जाना चाहे सामने वाला नहीं ही बताना चाहे, पूरी जानकारी करना । प्रयोग—फिर हमने बहुत खोद-खादकर पूछा तो वह साफ मालूम हुआ कि इसी मत से यह मत निकला है (मा० प्र० ३)—भारतेन्दु, ९५६)

### खोपड़ी

बुद्धि । प्रयोग—मूरदाम, आज राजा साहब भी तुम्हारी खोपड़ी को मान गए (रंग० (१)—प्रेमचंद, १३०)

### खोपड़ी खाना

बहुत बकवाद कर परीक्षण करना । प्रयोग—कुछ अजब है खोपड़ी उनकी बनी जो कि खा जाते हैं सबकी खोपड़ी (बोल०—हरिऔध, २२)

### खोपड़ी खुजलाना

(१) मार खाने की इच्छा होनी । प्रयोग—क्यों खिजाते खोजनेवालों को हो खोपड़ी तो है नहीं खुजला रही (बोल०—हरिऔध, २१)

(२) गामत आनी ।

(३) कोई उपाय सोचना ।

### खोपड़ी चाटना

बहुत बोल-बोल कर तंग कर डालना, एक ही बात को बार-बार पूछने पर भी न समझ पाना । प्रयोग—इन डारनों ने तो खोपड़ी चाट वाली (मान० (४)—प्रेमचंद, २६); है अजब चाट लग गई उनको खोपड़ी जो कि चाट जाते हैं (बोल०—हरिऔध, २२)

### खोपड़ी जगाना

तांत्रिक साधना करनी । प्रयोग—हो जगाते खोपड़ी क्यों मरमिटी, छोड़ जीती जागती निज खोपड़ी (बोल०—हरिऔध, २१)

### खोपड़ी पर खड़ा होना

(१) बिल्कुल पास होना । प्रयोग—दरद्वारी तो बाबू साहब की खोपड़ी पर ही खड़ा था (मिसा०—कौशिक, ७)

(२) खूब मुस्तेदी करना ।

(समा० मुहा०—खोपड़ी पर सवार होना)

### खोपड़ी लाल होना

सिर फोड़ देना या फूटना । प्रयोग—किंतु कितनी ही बार दोनों ओर की कुछ खोपड़ियां लाल हुए बिना नहीं रहती थी (सत्यमी०—राहुल, ७३); जब कि होते हो तमक कर लाल तुम लाल हो जाती न तब क्यों खोपड़ी (बोल०—हरिऔध, २०)

(समा० मुहा०—खोपड़ी बजाना,—रंग देना)

### खोलकर

स्पष्ट रूप से । प्रयोग—यह बात कई बार खोलकर लिख भी दी गई थी (पहम० के पत्र—पद्म० शर्मा, ३६)



### खोलकर कहना

स्पष्ट कहना । प्रयोग—सूर बिनती करे, मुनहु नंदनंद तुम, कहा कहीं खोलि के अंतरजामो (सू० सा०—सूर, २१४); तब इक द्विजवर बोलि खोलि निज बात कही सब (नंद० ग्रंथा०—नंद, १७७); तुझे जब तक सारी बातें खोलकर न सुनाऊंगी, तब तक तेरी समझ में मेरी बात नहीं आवेगी (मा—कौशिक, १०); खुल कहें औ खोलकर बातें कहें । सब कहें पर है कितीका कोन डर (बोल०—हरिऔध, १९८)

### खोलना

(१) मन की बात कहनी । प्रयोग—आपने मुझे सी सौ रूप से खोला और बहुत सा टटोला (इशा०—इशा०, ९७)

(२) गुप्त बात कहनी । प्रयोग—महाराज ने उसे बुलाकर पूछा तो मदनबान ने सब बात खोलियां (इशा०—इशा०, १११)

### खौर खोदकर भिड़ना

पूरे साहस से । प्रयोग—पह पाद रखो घोर वहां दुम दवाने से काम नहीं चलेगा । “खौर खोदकर” भिड़ना पड़ेगा (पद्म० के पत्र—पद्म० शर्मा, ४१)

### खोलना या खोलाना

कोप या आवेग से भीतर ही भीतर बहुत बेचैन होना या कर देना । प्रयोग—आंगन की दीवार से पीठ लगाये वह इसी प्रकार खोलता रहा था घोर विवाह की जंजीर नीला के गिदं कठिन से कठिनतर होती गई थी (चेतन—अशु, ४२०); मनियां को घनहानि घोर अपमान-दोनों की ही तड़प खोला रही थी (बुंद०—अ० ना०, २७)

### स्वाब की दुनिया

कल्पना लोक । प्रयोग—लेकिन कुछ स्वाबी दुनिया में रहता जान पड़ता है (मोर०—जग० माथुर, १४)

## ग

### गंगा उठाना, गंगाजली उठाना

हाथ में गंगाजल लेकर शपथ लेना। प्रयोग—मगर यह हम तुम्हारे आगे गंगाजली उठाव के कह सकते हैं कि जो सील और खान्दानी मुभाव, मुरव्वत-मुलाहजा तुम में है वह न नवीनचंद में है और न XX महिपाल जी में (पृ० ८०—अ० ना०, ३९९); अदालत में जाकर गवाही देना क्या तुमने इसी समझ ली है। गंगाजली उठानी पड़ती है X X बेटे के सिर पर हाथ रखना पड़ता है (रंग० (२)—प्रेमचंद, ११९); चाचा, मैं गंगा उठाकर कह सकता हूँ कि तुमने मुझसे रूप मांगे तक नहीं (चित्र०—कौशिक, १०५)

### गंगा जमुना में जब तक जल रहे

चिर काल तक। प्रयोग—सब पिरपिमो असोसद जोरि जोरि के हाथ। गंग जउन जी सहि जल तो लहि अम्बर माय (पद०—जायसी, १११५)

### गंगा जमुनी

दो मित्र वस्तुओं के मेल से बना। प्रयोग—सम्राट गंगा जमुनी काम के सिंहासन पर विराजमान हुए (वेशाली० (२)—चतुरा०, १७७)

### गंगाजल होना

पवित्र या निर्दोष होना। प्रयोग—तुम जो कहति हो, मेरी कन्हैया, गंगा कैसे पानी (सु० सा०—सूर, ९२९); संसार में कीन है जो कहे कि मैं गंगाजल हूँ (रंग० (२)—प्रेमचंद, १५७)

### गंगाजली उठाना

दे० गंगा उठाना

### गंगा नहाना

(१) दाह संस्कार के बाद नहाना। प्रयोग—जखन यह

बताओ कि सूरदास मर गए, तो गंगा नहाने बलागे कि नहीं (रंग० (२)—प्रेमचंद, ४०१)

(२) किसी कठिन कार्य का पूरा होना। प्रयोग—तु यह काम करा दे तो गंगा नहानूँ (झूठा०—यशपाल, ४६५); यह काम हो जाये तो समझे गंगा नहा लिया (सु० सु०—सुदर्शन, १२३)

### गंठ-जोड़ा होना

(१) लगन होना—सम्बन्ध स्थापित करना। प्रयोग—कहैं कबीर तन मन का घोरा, भाव भगति हरि सँ गठ-जोरा (कबीर ग्रंथा०—कबीर, १६०)

(२) विवाह होना। प्रयोग—घापस में जो गठजोड़ हो जाय तो कुछ अनोखी घचरज और असम्भे की बात नहीं (ईशा०—ईशा०, ९४-९५); दो दिलों में जाय जिससे गांठ पड़ भूल गंठ-जोड़ा कभी ऐसा न हो (चुमते०—हरिऔध, १५८)

### गंठ-बंधन करना या होना

विवाह करना या होना, उस निमित्त गांठ बांधना। प्रयोग—मित्र हम गंठबंधन करते हैं, तुम कपूर मंजरी का हाथ पकड़ो (भा० ग्रंथा० (१)—भारतेन्दु, ४०७); मैं हूँ वही जिसका हुआ था पवि-बंधन साथ में (जय०—गुप्त, २५)

### गंडा बांधना

लिप्य बनाना। प्रयोग—गुरु बन कर आया है यहाँ गंडा बांधने का दावा है (भूले०—भग० वर्मा, १६५)

### गंदा काम

अनुचित या बेइमानी का काम। प्रयोग—रमा ने अर्काच प्रकट करते हुए कहा—गंदा काम है, मैं सफाई से काम करना चाहता हूँ (गवन—प्रेमचंद, ४३)



### गंध आना,—खिलना,—रहना

भास होना, मालूम पड़ना । प्रयोग—इक ली जग मांझ सनेही कहाँ, पै कहाँ जो मिलाप की बास खिले (घन० कवित्त—घना०, १०७); XXखाने पीने की खिलावट और जाति पाति के भगदों को तरक्की दे देश में सब घोर फूट का ऐसा बीज बोवें कि जातीयता या कोमिपत की कहीं गन्ध भी न रह जाय (भट्ट० नि०—वा० भट्ट, २३); वह इतनी सरल और स्वाभाविक है कि प्रकाण्ड पाण्डित्य की गन्ध उससे जरा भी नहीं आती (सा० सो०—महा० द्विवेदी, ५९)।

(समा० मुहा०—गंध पाई जानी,—मिलनी)

### गंध खिलना

दे० गंध आना

### गंध रहना

दे० गंध आना

### गंध होना

लेशमात्र होना; तनिक भी आभास मिलना । प्रयोग—घन आनंद जीवन रूप मुजान हूँ वे पावत क्यों दुग प्यास नहीं । अब फूल रहे कुसुमाकर से सु कहाँ पहचान की बास नहीं (घन० कवित्त—घना०, ६३)

### गऊ होना

बहुत सीधा होना । प्रयोग—घरने भाग बखानो कि ऐसी गऊ औरत पा गये हो (गोदान—प्रेमचंद, २८५); गौ बन कर ही उसने स्त्रीत्व गंवाया (कल्याणी—जैनेन्द्र, ९५)

### गगन-भेदी

(१) बहुत उच्च स्वर में । प्रयोग—किन्तु पहली बार ही जब वह स्टेज पर आया तो दर्शकों ने X X गगन भेदी ठहाके से उसका स्वागत किया (पेंतरे—अशक, १७)

(२) बहुत ऊँचा ।

### गच्छा खाना

धोखा खाना । प्रयोग—चोथरी उसे धक्का देकर—नारी जाति पर बल का प्रयोग करके—गच्छा या चुका पा (गोदान—प्रेमचंद, ३०)

(समा० मुहा०—गच्छा खाना)

### गच्छे में डालना

हेरानी में डालना । प्रयोग—दूसरे उग्र शब्द ने हीरा को

गच्छे में डाल दिया (गोदान—प्रेमचंद, ४५)

### गजस्नान कराना

दुर्गति करनी । प्रयोग—खैर, उस पत्र को भी द्विवेदीजी ने गजस्नान करा दिया है (गु० नि०—वा० मु० गु०, ४७३)

### गटक जाना

हड़प जाना । प्रयोग—पै बँना का इन गोरन लों जानती नइवा ? भांसी लों गुटकन चाउत (क्षासी०—वृ० वर्मा, १५२)

### गट-गट सुनना

बिना प्रतिवाद चुपचाप सुनना । प्रयोग—एक बार भी तो उसके मुँह से न निकला, अम्मां तुम क्यों इनका अपमान कर रही हो ? बंठी गट-गट सुनती रही (मान० (१)—प्रेमचंद, १३४)

### गट्टा पकड़ लेना

किसी काम के करने वाले को बीच में ही रोक लेना । प्रयोग—तब करेंगे क्यों न ठट्ठा लोग अब जाय गट्टे के लिये गट्टा पकड़ (चोखे०—हरिऔध, ११२)

### गठरी

अच्छी रकम । प्रयोग—जालपा—कितने बाकी होंगे, कुछ हिसाब-किताब लिखते हो ? रमा०—हाँ, लिखता क्यों नहीं । सात सौ से कुछ कम ही होंगे । जालपा—तब तो पूरी गठरी है (गवन—प्रेमचंद, ९२)

### गठरी उड़ाता

रकम बनाना । प्रयोग—पटवारी संकड़े-हजार की गठरी थोड़े ही उड़ाता है (प्रेमा०—प्रेमचंद, ६)

### गठरी काटना

लाभ करना (अनुचित तरीके से) । प्रयोग—रोज गठरी काट-काट कर रखते हो, उस पर कहते हो रुपये नहीं हैं । (गवन—प्रेमचंद, १०७)

### गठरी बनाना

पैर को छाती के साथ करके गठरी सा बन जाना । प्रयोग—अब तक तो उसने धोती ओढ़कर किसी तरह रातें काटी पर पस के कड़कड़ाते जाड़े लिहाफ या कम्बल के बगैर कैसे कटते । बेचारा रात भर गठरी बना पड़ा रहता (गवन—प्रेमचंद, १५८)

### गठरी बाँधना

(१) दे० गठरी बनना



(२) जाने को तैयार होना—अपना छोटा मोटा सामान बाँच लेना ।

### गठरी मारना

(१) ठगना—अनुचित तरह से लाभ करना । प्रयोग—और भी न जाने कहाँ-कहाँ की गठरी मार लोवा निगोड़ा (बूँद—अ० ना०, ७)

(२) कुश्ती में विपक्षी को इस प्रकार दोहरा कर देना जिसमें उसकी आकृति गठरी सी हो जाए ।

### गठरी हाथ आना

रकम मिलना । प्रयोग—आज भारी गठरी हाथ आणी (राधा० ग्रंथा०—राधा० दास, ६५५)

(समा० मुहा०—गठरी मिलना)

### गड़ जाना

भ्रमना—लज्जित होना । प्रयोग—इही थोड़ी देर पहले मिली थी, परन्तु वह तो कुछ ऐसी गड़ गई कि कुछ कह ही नहीं सकी (झासी०—पृ० २२९); सचमुच चन्द्र मेरे लिए तुम जो कुछ करते रहे हो, जब सोचती हूँ तो गड़ जाती हूँ—कितने अपात्र को तुमने अपनी करुणा दी है (नदी०—अज्ञेय, ५७)

### गड़े मुँदें उखाड़ना

गई बीती बात को फिर से उठाना । प्रयोग—‘रहने देवेंटी’ बूढ़ाने कहा,—‘गड़े मुँदें उखाड़ कर क्या होगा?’ (बीने०—रा० रा०, १४१); जब मैंने कहीं दुकान खोलने का प्रस्ताव किया और दबी जबान से उसके लिए कुछ रुपये की माँग की तो माँ ने लाडली के दिनों के वे गड़े मुँदें उखाड़े कि मुझे वहाँ से भागते ही बना (चेतन—अश्क, १२५); पर आपका अनुरोध है तो कुछ और भी गड़े मुँदें उखाड़ूँगा (पद्म० के पत्र—पद्म० शर्मा, १३)

### गड़-मड़ करना

मिलाना । प्रयोग—कहीं-कहीं उक्त दोनों नमूनों की भाषा को गड़-मड़ करके कविता की है (गु० नि०—व० मु० गु०, ११९)

### गड़वा खोदना

घनिष्ट करने का प्रयत्न करना, बुराई करनी । प्रयोग—जो दूसरों को गड़वा सो देगा उसके लिए कुंआ तैयार है (प्रेमा०—प्रेमचंद, ३१५)

### गड़-गड़ कर बातें करना या बनाना

घनने मन से झूठी-झूठी बातें बनानी । प्रयोग—दासी घेरि रहे हरि, तुम ह्या गड़ि गड़ि कहत बनाई (सू० सा०—सूर, ४५५८); गड़ि गड़ि छोलै भली भाँति जोलै आदर सौ तपति हरन हिय बीच नियरात हैं (क० र०—सेनापति, २९); बातें गड़ गड़ बहक-बहक क्यों बना बड़े से बड़ा (मर्म०—हरिऔध, २५)

### गड़ छोल कर

खुब बना संवार कर । प्रयोग—इनहीं बातनि भए स्याम तन मिलवत ही गड़ि छोलि (सू० सा०—सू० ४३०४); कत हम निरजो चतुर विधाता, कत गड़ि छोलि संवारी (सू० सा०—सूर, ४२५८); सजि प्रतीति बहु बिबि गड़ि छोली (राम० (अ)—तुलसी, ३५७)

### गढ़ा खोदने वाले के लिए कुंआ तैयार होना

जो थोड़ा अहित करे उसका बड़ा अहित होना । प्रयोग—होव बुराई तो बुरो यह कीनों निरधार । लाड खनैंगो और को, ताकी कूप तैयार (पृ० स०—वृन्द, ३७); जो किसी के लिए गढ़ा खोदेगा उसके लिये कुंआ तैयार है (रंग० (२)—प्रेमचंद, १३५)

### गढ़े में गिरना,—पैर पड़ना

पतन होना । प्रयोग—गृह पितृ मातृ स्वामि सिख वालें चलेहुँ कुमग पग परहि न खालें (राम० (अ)—तुलसी, ६७२); मेरी बुद्धि भ्रष्ट हो गई है, मैं आँखें खोलकर गढ़े में गिर रहा हूँ (रंग० (१)—प्रेमचंद, १३९)

(समा०—गढ़े में पड़ना)

### गढ़े में पैर पड़ना

### दे० गढ़े में गिरना

### गत बनाना

(१) दुर्गति करना—गोटना । प्रयोग—गत हमारी बना रहे हो क्यों (चुभते०—हरिऔध, २) (—)

(२) हंसी छट्टे में लज्जित करना । प्रयोग—देखिए प्रयोग (१) में (—)

### गति पाना

मुक्ति पानी । प्रयोग—राम कहाँ दुनियाँ गति पावै, गाँव कहाँ मूल मोठा (कबीर ग्रंथा०—कबीर, १०१)

### गति होना

योग्यता होनीपैठ होनी । प्रयोग—धर्म शास्त्र में उसकी



गद्दी पर बैठना या बैठाना

१६३

गया गुजरा

विशेष गति न थी (सा० सी०—महा० दिवेदी, ४४)

**गद्दी पर बैठना या बैठाना**

सिंहासनावृद्ध होना, उत्तराधिकारी होना वा बनाया जाना । प्रयोग—राजिक भागा और विक्रमादित्य अपने बाप की गद्दी पर बैठा (भा० ग्रं० (३)—भारतेन्दु, १९)

**गधा होना**

महा मूर्ख होना । प्रयोग—हिन्दुस्तान के सुकिया वाले कितने बड़े गधे होते हैं इसको भी तूम अच्छी तरह जानते होगे (भूले०—भग० वर्मा, ४२५); उनकी यही इच्छा है कि मैं × × सब कुछ जानकर भी गधा बना रहूँ (गोदान—प्रेमचंद, १४)

**गप्प उड़ाना,—करना,—मारना,—लड़ाना,—**

**हांकना**

व्यर्थ की बातें करना । प्रयोग—वहाँ उतनी देर कोचवान हुक्का पीएगा या गप्प करेगा (भा० ग्रं० (३)—भारतेन्दु, ८९८); हम XX मास्टर साहबको अनेक तरहका भुलावा और जुल दे कानाफुस्की में भाति-भाति की गप्पें हांक हांक प्रसन्न होते थे (सा० सु०—बा० मट्ट, ४८); दस बीस मिनट लड़कों को बहका दिया XX साबायं घोर बड़े पण्डितजी से गप्प लड़ाई, बस हो गया (पद्म० के पत्र—पद्म० शर्मा, १२२); लोग जहाँ तहाँ वृक्षों की छाया में बैठकर गप्पें हांकने लगे (वैशाली० (१)—चतुर०, ३८); घर पर भी रहते तो अधिकतर लम्पट रईसजादों के साथ गप्पें उड़ाया करते (मान० (१)—प्रेमचंद, २३६); फिर प्रभाकर से गप्प लड़ाने लगे (चोटी०—निराला, ८६); तुम्हीं से गप्प मारने में मैंने अपना प्यारा, दुलारा, खासता, काखता बुढ़ापा हापरे! खो दिया (गंगा०—उग्र, २९)

(समा० मुहा०—गप्प सटाका मारना, गप्प-शप्प हांकना)

**गप्प करना**

**दे० गप्प उड़ाना**

**गप्प मारना**

**दे० गप्प उड़ाना**

**गप्प लड़ाना**

**दे० गप्प उड़ाना**

**गप्प हांकना**

**दे० गप्प उड़ाना**

**गप्पा देना**

चकमा देना । प्रयोग—हुजूर ने भी अच्छा गप्पा दिया और खुदा जानता है, मैं सब समझा था (मा—कौशिक, २६५)

**गम करना**

वा जाना । प्रयोग—चारि वृक्ष छ शाखा वाके पत्र जटा रह भाई । एतक लै गैया गम कीन्हों गैया प्रति हरहाई (कवीर—हि० श० सा०)

**गम खाना**

(१) सब करना । प्रयोग—नारी का धर्म है कि गम खाए (गोदान—प्रेमचंद, ४४); हजारों वाले तो बच्चा गुरु को ब्राह्मण जान गम खाकर रह गए लेकिन एक कोई बनिया ऐसा भी था जिसने पचास रुपये के लिए केस चला × × गुरु को धर पकड़ा था (अपनी सवर,—उग्र, ८५)

(२) प्रतीक्षा करनी ।

(३) समा करना ।

**गम-खोर होना**

गम खा जानेवाला, सब करनेवाला । प्रयोग—मैं तो घर-घर कांप रही थी कि कहीं तुम्हारे ऊपर हाम न चला दे । मगर है बड़ा गमखोर (गदन—प्रेमचंद, २७७)

**गम गलत करना**

दुष्ट को भुला देना । प्रयोग—तो चाचा, लोग बाग अपना गम गलत कर रहे हैं (भूले०—भग० वर्मा, ४४५)

**गया करना**

गया में जाकर निश्चयान करना । प्रयोग—तुमको इसलिये बुलाया है कि मर जाऊँ तो मेरा किरिया-करम करना × × घोर हो सके तो गया कर घाना (रंग० (२)—प्रेमचंद, ३८६)

**गया गुजरा**

दुरवस्था (समय या स्थिति) । प्रयोग—यह मौलिक रसमयी रचना इस बात का प्रमाण है कि गये गुजरे जमाने में भी अच्छी कविता हो सकती है (पद्म पत्र—पद्म० शर्मा, ३०९)



### गया बीता

(१) बुरी दशा को पहुँचा हुआ। प्रयोग—शेखर की माँ का दृढ़ विश्वास था कि उनकी संतान संसार से गयी बीती है (शेखर (१)—अज्ञेय, ११७); मारता कौन मारतों को है पिट गये कब नहीं गये बीते (चुमते०—हरिऔध, ५५)

(२) बुरा, कुच्छ। प्रयोग—मैं इतना गया बीता हूँ कि सुरेश मेरी छाड़ में खेन सेले और मैं समझ तक न पाऊँ? (बीने०—रंग० रा०, १४६)

**गरज का बावला होना.**—मैं अंधा बावला होना अपने स्वार्थ के लिये सब कुछ करने को तैयार। प्रयोग—यहाँ कोई किसी का भाई नहीं, कोई किसी का दोस्त नहीं। सब अपनी गर्ज में अंधे... बावले × × (पैतरे—अशक, ६५); इस जलती धूप में कोई गरज का बावला ही घर से निकल सकता है (रंग० (२)—प्रेमचंद, १७५)

(समा० मुहा०—गरज मंद का बावला होना)

### गरज में बावला होना

दे० गरज का अंधा बावला होना

### गरजना

गुस्से में जोर से बोलना। प्रयोग—ता ऊपर काहें गरजति है, मनु आई चढ़ि घोरै (सू०सा०—सूर, ९९३); एक तो सड़के का तमाचों से मुँह लाल कर दिया, उस पर और गरजते हो (रंग० (१)—प्रेमचंद, ९२); नहीं—कुमारगिरि गरज उठे—अब कुटी की कोई आवश्यकता नहीं (चित्र०—भग० वर्मा, ९७); दादा गर्जे—कैसे ज़ुर्माना हो जायगा, करे ज़ुर्माना (पैतरे—अशक, २०)

### गरजना-बरसना

शोध में जोर-जोर से घनाप-घनाप बरसना। प्रयोग—छिन भरे माँ तुम का लेशा चढ़ी तो गरजे-बरसे लमिहो (बुंद०—अ० ना०, ११२)

### गरदन उठाना

ध्यान देना। प्रयोग—कब न गरदन रहे झुकाते हम धातकी उठ सकी नहीं गरदन (बोल०—हरिऔध, १३७)

### गरदन उठाना

(१) गर्व करना। प्रयोग—बड़ा आदमी कुल्ली को कोई नहीं मिला, जिसे निज समझ कर गर्दन उठाते (कुल्ली०—निराला, १३); मेरी यह दुर्गति इसलिये न है कि घधा हूँ, भीख माँगता हूँ। मसकत की कमाई खाता होता तो मैं भी गरदन उठाकर न चलता, मेरा भी आदर मान न होता (रंग० (१)—प्रेमचंद, ९३)

(२) विरोध करना।

### गरदन उड़ाना,—उतरना

मार डाला जाना। प्रयोग—क्यों न गरदन फसे, नपे, उतरे है नहसत सवार गरदन पर (बोल०—हरिऔध, १३५); क्या हुआ उनकी अगर गरदन उड़ी और की गरदन उड़ाते जो रहे (बोल०—हरिऔध, १३५)

### गरदन उड़ाना

मार डालना या मार डाला जाना। प्रयोग—घबनों का पक्ष लेने वाले हिन्दुओं की तो गरदन उड़ा देने की जी करता है (मैला०—रेणु, १५१) क्या हुआ उनकी अगर गरदन उड़ी और की गर्दन उड़ाते जो रहे (बोल०—हरिऔध, १३५)

(समा० मुहा०—गरदन उतारना)

### गरदन उतरना

दे० गरदन उड़ाना

### गरदन ऊँची करके चलना

सर्वज्ञ, ससम्मान, चलना। प्रयोग—यदि लोगों को सुली छूट दे दी जाय, तो लोग तो थाने को धर्मशाला बना दें। पुलिस दारोगा गरदन ऊँची करके न घूम सकें (ब्रह्म०—दे० स०, २४७)

### गरदन कटवाना या काटना

(१) हानि पहुँचाना या पहुँचाना। प्रयोग—घोही—तो यानी आप मेरी गर्दन कटवाना चाहते हैं (शेखर (२)—अज्ञेय, १९९)  
(२) अपमानित होना या करना।

### गरदन छूटना

किसी दायित्व से छुट्टी पानी। प्रयोग—इसके लिये कोई



उन पर अपराध नहीं लगा सकता, मगर नोलराम की गर्दन इतनी आसानी से न छूट सकती थी (गोदान—प्रेमचंद, १७४)

### गरदन झुकना

नम्र या अधीन होना। प्रयोग—देखि कै लिवस नीची सबन की नारि होति मोहि कै विकच करे मन धन ध्यान हो(क० २०—सेनापति, १५) (÷); महाराज सिधराज चढ़त तुरंग पर घोडा जात नै करि गनीम अतिबल की (भूषण ग्रंथा०—भूषण, १६३)

- (२) शमिन्दा होना। दे० प्रयोग (१) में (÷)
- (३) बेहोश होना।
- (४) मरना।

### गरदन झुकाना

- (१) शर्माना। प्रयोग—जब वे दाम ऊखल सौ बाँधे, वदन नवाइ रहे (सू० सा०—सूर, ४४०५)
- (२) विनीत होना—शरण लेना। प्रयोग—जिपत न नाई नारि चातक घन तजि दूसरेहि। सुरसरिह की बारि, मरत न मांगेउ अरध-गल (दोहा०—तुलसी, ३०५)

### गरदन टूटना

बहुत बोक के कारण गरदन दर्द करना। प्रयोग—गरा बोक तो उतारो, गर्दन टूट गयी (गवन—प्रेमचंद, १७६)

### गरदन टेढ़ी करना

बिमुख होना या उपेक्षा करना। प्रयोग—आंस टेढ़ी ओर टेढ़ी हैं भवें क्यों भला टेढ़ी न वे गरदन करें (बोल०—हरिऔध, १३७)

### गरदन ढलकना

मरना; मृत्यु के समय गरदन का निहाल हो जाना। प्रयोग—चड़ गई आँखें, पलक फिर हो गई। ढल पड़ा आँगू ढलक गरदन पड़ी (बोल०—हरिऔध, १३६)

(समा० मुहा०—गरदन ढलना)

### गरदन ढीली करना

तंग करना, दुर्गति करना, गर्व चूर कर देना। प्रयोग—मैं बुरा घादमी हूँ मुझे दिक मत करो। मैंने इसी जेल में बड़े-बड़ों की गरदने ढीली कर दी हैं (रंग० (२)—प्रेमचंद, १२)

### गरदन दबना

फंसे होना; अपनी स्थिति कमजोर होनी। प्रयोग—धमरकान्त को तसल्ली तो हुई पर अनुग्रह के बोझ से उसकी गरदन दब गयी (कर्म०—प्रेमचंद, ४); बेतरह गरदन हमारी है दबी (बोल०—हरिऔध, १३७)

### गरदन देना

मृत्यु के लिये समर्पित होना। प्रयोग—बहुतन्ह दीन्ह नाइ कै गोवा। उतर न देइ मार पै जीवा (पद०—जायसी, ३८। १०)

### गरदन न उठा सकता

- (१) लज्जित होना। प्रयोग—खन्ना बोले—मालती की तो गर्दन नहीं उठती। (गोदान—प्रेमचंद, १६४)
- (२) किसी अत्याचार को चुपचाप सह जाना।
- (३) बहुत व्यस्त होना।
- (४) बहुत अस्वस्थ होना।

### गरदन नपना

दंडित होना—मार डाला जाना। प्रयोग—गला घोटने वाले की यदि गरदन नपी दिलाती (मर्म०—हरिऔध, ७); कलम जरा भी गर्म पड़ जाय तो गर्दन नापी जाय (मान० (२)—प्रेमचंद, २३०)

### गरदन नापना

- (१) अपमान के साथ निकाल देना। प्रयोग—मैं गर्दन उसकी नापूँगी जो कतरज्योंत दिखलायेगा (नूर०—भक्त, ५३); घरे, कोई है, इसे डण्डे मारकर भगाओ यहाँ से, मारो घस्के। गर्दन नापो गर्दन (वैशाली० (२)—चतुर०, ८८)
- (२) सहित करना। प्रयोग—पहले मालिक की गरदन नापो (चोटी०—निराला, १७); लेकिन कल को म्युनिसिपैलिटी मेरी गर्दन नापे तो मैं किसे पुकारूँगा (गवन—प्रेमचंद, २१९)

### गर्दन नीची करना या होना

शमिन्दा होना। प्रयोग—कत हों रही नारि नीची करि देखति लोचन भूले (सू० सा०—सूर, ३४४४); इस पुस्तक के पढ़ने से आपकी गर्दन नीची होती है या ऊँची? (गु० नि०—वा० मु० गु०, ५४६); किस तरह गर्दन भला



नीची न हो जबकि गरदनिया किसी को दी गई (बोल०—हरिऔध, १३५)

### गरदन पकड़ना

(१) दंड देना । प्रयोग—जगधर ने भू तक न की । जानते हैं न कि जरा भी गरम हुए कि बजरंगी ने गर्दन पकड़ी (रंग० (१)—प्रेमचंद, ९३)

(२) पकड़ कर बात करना या काम करवाना । प्रयोग—मैं भवानी को किसी के गले बांध तो दूँ लेकिन पीछे इन्होंने कहीं हाव लपकाया तो वह तो मेरी गर्दन पड़ेगा (गोदान—प्रेमचंद, २१५)

(३) बंगुल में करना ।

### गरदन पर

जिम्मे । प्रयोग—जवाब तो मेरी गर्दन पर पड़ेगा न । मैं उसका बोझ उठा सकता हूँ (रंग० (१)—प्रेमचंद, ११९)

### गरदन पर खून लेना या होना

हत्या का अपराध अपने ऊपर लेना या होना । प्रयोग—इन्हीं की गर्दन पर इन बंगुनाहों का खून है (प्रेमा०—प्रेमचंद, ३०७)

### गरदन पर चढ़ना,—सवार होना

(१) किसी काम को जल्दी करने के लिये दौड़ा करना । प्रयोग—बाह, मैं बुझा की गर्दन पर जहाँ चढ़ा, सीधे में पाखी परम देगी (तिल्ली—प्रसाद, २७२); बाह रखकर किसी भलाई की क्यों भला हों सवार गर्दन पर (चोखे०—हरिऔध, १६) (+)

(२) जबरदस्ती करना । प्रयोग—इस तरह किसी की गर्दन पर सवार होकर, अपना आत्मसम्मान बेचकर गये तो क्या गये ? (मान०—(७)—प्रेमचंद, २२) देखिए प्रयोग (१) में (+) भी

(३) भला बुरा कहना । प्रयोग—जरा-सा कोई काम बिगड़ जाय तो गरदन पर सवार हो जाते हो (गोदान—प्रेमचंद, ३३); देखिए प्रयोग (१) में (+) भी

(समा० मुहा०—गरदन पर सवार रहना)

### गरदन पर छुरी चलाना,—फिरना,—फेरना

बड़ा नुकसान करना, बहुत कष्ट पहुँचाना । प्रयोग—

मैंने तो देखा है दो टेकनेनिशियन मिल कर बैठ जायेंगे पर दो कलाकार हमेशा एक दूसरे की गर्दन पर छुरी चलाने की सोचेंगे (दूधगाछ—दे० स०, २८३); अरे धभागे युवक तुम्हें लखर नहीं, तू अपने भविष्य की गरदन पर कितनी बेदर्दी से छुरी फेर रहा है ? (मान० (२)—प्रेमचंद, ११); क्यों फिराये आल फिरती ही नहीं क्या छुरी अब भी न गरदन पर फिरी (चुभते०—हरिऔध, ८७)

(समा० मुहा०—गरदन पर छुरी चलना)

### गरदन पर छुरी फिरना या फेरना

दे० गरदन पर छुरी चलाना

### गरदन पर जुआ रखा जाना

दायित्व का बोझ पड़ना । प्रयोग—क्या न सिर पर बोझ भारी है लदा, क्या न गरदन पर गया जुआ रखा (बोल०—हरिऔध, १३५)

(समा० मुहा०—गरदन पर जुआ पड़ना)

### गरदन पर चार आना

दोष या परेशानी घानी । प्रयोग—मैं रुपये दे देता हूँ पर फिर मेरी गरदन पर चार आवेगा तो (मारतो०—रंग० रा०, ६१)

### गरदन पर सवार होना

दे० गरदन पर चढ़ना

### गरदन पर हाथ डालना

गरदनिया देकर निकाला जाना । प्रयोग—तो लगेगी हाथ मलने आवक हाथ गरदन पर धगर डाला गया (चोखे०—हरिऔध, १६)

### गरदन फंसना

किसी के पंजे में आ जाना, मुगीबत में फंसना । प्रयोग—क्यों न गरदन फंसे, नये, उतरे है नहसत सवार गरदन पर (बोल०—हरिऔध, १३५)

### गरदन फिरना

स्व परिवर्तन होना । प्रयोग—आज गरदन बेतरह है नप रही, पर हमारी फिर सकी गरदन कहीं (चुभते०—हरिऔध, ६४)



### गरदन मरोड़ना

गरदन ऐंठकर मार डालना, नाश करना। प्रयोग—जब मरोड़ी न ऐंठ की गरदन मूँछ तब हम मरोड़ते क्या है (चुमते०—हरिऔध, १०८)

(२) दबाव डालना।

### गरदन मारना

अहित करना। प्रयोग—जोहि राखहि रहू, पर रखवारी, सो जानइ अनु गरदनि मारी (राम० (अ)—तुलसी, ५४६); बेतरह गरदन हमारी है दबी मार लें गरदन अगर है मारते (बोल०—हरिऔध, १३७)

### गरदन में हाथ डालना,—देना

(१) गरदनमा देना। प्रयोग—कहार के धृष्टता पूर्ण व्यवहार से उसे यह भय हुआ कि अधिक बातचीत करने से कहीं यह गरदन में हाथ न दे बैठे (मा—कौशिक, १२६)

(२) स्नेह दिखलाना। प्रयोग—बांह गरदन में पड़े तब किस तरह बन गये जब आस की हम किरकिरी (बोल०—हरिऔध, १३७)

(३) अपमान करना।

### गरदन में हाथ देना

दे० गरदन में हाथ डालना

### गरदन से उतार देना

दूर करना, दायित्व से मुक्त होना। प्रयोग—हाकिमों का ऐसा झुका बर्ताव देगकर निर्भीक हरिश्चन्द्र ने घानरेरी मजिस्ट्रेटों का भार उभी दम अपनी गरदन पर से उतार कर फेंक दिया (गु० नि०—बा० मु० गु०, ३१७)

### गरदन हिलाना

ना करना। प्रयोग—ज्ञानकर भी आज तक जाना नहीं हो तुम्हीं गरदन हिलाना जानते (बोल०—हरिऔध, १३६)

### गरदनिया देना

गरदन पकड़ कर निकाल बाहर कर देना। प्रयोग—किस तरह गरदन भला नीची न हो जब कि गरदनिया किसी को दी गई (बोल०—हरिऔध, १३५)

### गरम खबर होना

ऐसी नयी खबर जिसकी बड़ी चर्चा हो। प्रयोग—मगर

मिस मालती से तो आपकी ख़ादी होने वाली थी, बड़ी गर्म खबर थी (गोदान—प्रेमचन्द, ३३१)

### गरम तवा होना

(१) बहुत क्रोध पूर्ण होना। प्रयोग—बहुत रोकने पर भी वह गरमवती के २२ पृष्ठों में फँस गई है और उक्त पृष्ठ एक-एक तस्ता तवा बन गए हैं (गु० नि०—बा० गु० मु०, ४९७)

(२) बहुत गरम होना। प्रयोग—अब न तप्त - तावा थी बनो वसुन्धरा (वेदेही०—हरिऔध, २१७)

### गरम तवे पर तली जाना

घोर कष्ट पाना। प्रयोग—जो अभी कुछ भी न खिल पाई रही क्यों गई तत्ते तवे पर वह तली (बोल०—हरिऔध, १७२)

### गरम बात

(१) उत्तेजना पूर्ण बातें। प्रयोग—कुबेर सिंह × × सहर पहनते थे, गर्म गर्म बातें करते थे (परती०—रेणु, १०६-१०७)

(२) अश्रिय अशुचिकर बात। प्रयोग—इस तरह का बना कलेजा है जो कि सारी मुसीबतें सह ले। बेघड़क आग मूँह उगल लेवे जीभ बातें गरम-गरम कह ले (चोखे०—हरिऔध, ४५)

### गरम लगना

दुखदायी प्रतीत होना। प्रयोग—सौतलता उर कटू न दीसति, सब ध्रज लागत ताली (सू० सा०—सूर, ४५५२)

### गरम हवा लगना

तनिक भी कष्ट होना। प्रयोग—गोकुल बसंत नन्द नन्दन के कबहुँ बगार न लागी ताती (सू० सा०—सूर, ४१०५); ऐसा काम करना चाहिए जिससे उन दोनोंको गरम हवा भी न लग पाये (कठ०—दे० स०, ३०३)

### गरम होना

(१) क्रोध आना। प्रयोग—भली-भांति पहिचाने-जाने साहित्य जहाँ लौ जग जूड़े होत धोरें-धोरें ही गरम (विनय०—तुलसी, २४९); कामतालाब भी गर्म पड़ा—आपको कुछ भी सच करने का अधिकार नहीं है (मान०



(१)—प्रेमचंद, ७१) ; घच्छा-घच्छा गरम मत होओ मेरे दोस्त (नदी०—अज्ञेय, २५) ; रनबास गर्म हो रहा था। राजकुमारी ने अपने पति से शिकायत की (घोटो०—निराला, ८)

(२) तेजी पर होना। प्रयोग—घाजकल हिन्दू-मुसलमान का भगड़ा गरम है (झुठा० (१)—यशपाल, ८९)

### गरमागरम

(१) उत्तेजनापूर्ण। प्रयोग—बात बढ़ते-बढ़ते गरमागरम बहस में परिणत हो गई (जहाज०—इला० जोशी, १२) ; हजारों लाखों लोग इस पम्फलेट को पढ़ेंगे, दो-चार रोज गर्मागर्म चर्चा भी होगी, पर उसके बाद ? (बूंद०—अ० ना०, १५०) ; वही बेगार का प्रश्न छिड़ा हुआ था सूब गर्मागर्म बहस हुई (प्रेमा०—प्रेमचन्द, ४४७)

(२) सबसे ताजा (खबर)।

### गरमा-गरमी

उत्तेजना, भगड़ा। प्रयोग—अलीरजा ने इस गरमागरमी को देखा (मुले०—भगवद्गीता, ४६१)

### गरमा जाना

गुस्सा घाना। प्रयोग—दुनिया का उनको अनुभव है वह कभी नहीं गरमाते हैं (नूर०—भक्त, १०७)

### गरमी आना

(१) उत्साह और रंग घाना। प्रयोग—हमीना और कानपुर वाली की लाग-डांट हो गई और जब लाग-डांट हो जाती है तब महफिल में बड़ी गरमी आ जाती है (ये कोठे०—अ० ना०, ११३)

(२) तीव्रता आनी।

### गरमी निकालना

गर्ब दूर करना। प्रयोग—वह निरंजन की ओर चला, क्योंकि उसकी सब गर्मी निकालने का यही अवसर था (कंकाल—प्रसाद, ७८)

(समा० मुहा०—गरमी उतारना,—छंटना)

### गरमी बरसना

बहुत गरमी होना। प्रयोग—गरमी इतनी बरस रही है कि फाउन्टेनपेन की स्पाही मुककर जमने लगती है (पद्म० के पत्र—पद्म० शर्मा, १०१)

### गरमी से

उत्साह—जोश से। प्रयोग—जिस गर्मी से उसने अपना परिचय अपने-आप दे दिया था, वह चाय के गर्म प्याले के सामने ठंडी हो चली थी (तितली—प्रसाद, २७)

### गरमी होना

(१) धमंड होना। प्रयोग—न जाने कैसे इतने रफ्तार जमा हो गए। बचा को इन्हीं रूपों की गरमी थी (रंग० (१)—प्रेमचन्द, १९८)

(२) जोश-उत्साह होना। प्रयोग—जब हमी में न रह गई गरमी क्या करेंगी गरम गरम आहें (चुभते०—हरिऔध, ६३)

### गरीब की घरवाली का गाँव भर की भावज होना

गरीबी का बेजा फायदा उठाना। प्रयोग—सरकार, गरीब की घर वाली गाँव भर की भावज होती है (रंग० (१)—प्रेमचंद, १२८)

### गरीब की बीबी होना

निरीह, दीन-हीन होना। प्रयोग—मैं गरीब की बीबी था, मुझे ही सबकी भाभी बनना पड़ा (मान० (४)—प्रेमचंद, ९)

### गरीब होना

बड़ा ही सीधा-सादा और भला होना। प्रयोग—मुझे तो वह बड़ा गरीब और बहुत ही विचारशील मालूम होता है (कर्म०—प्रेमचंद, २०)

### गर्द भी न पाना

तुलना में न ठहर सकना, बिलकुल पता न लगा सकना। प्रयोग—यथायं तो यह है कि तुम अपनी रचनाओं की गर्द को भी नहीं पहुँचते (रंग० (२)—प्रेमचंद, १६४)

### गर्द में मिलाना

नाश करना। प्रयोग—मर्दि गर्द मिलवहि दससीमा (शाम० (सु)—तुलसी, ८५१)

### गर्म राख पर बिस्तर होना

दुखदायक या खतरनाक स्थिति होनी। प्रयोग—इस बार आपने अपना बिस्तर गर्म राख पर रखा है और भारत-वासियों को गर्म तबे पर पानीकी बुन्दोंकी भाँति नचाया है (गु० लि०—बा० मु० गु०, २१२)



### गर्म सांस छोड़ना

लंबी निराशा भरी आह लेना । प्रयोग—कुल्ली भावस्थ हो गए ; फिर एक गर्म सांस छोड़ी, कहा—अच्छा चलो ( कुल्ली०—निराला, ५१ )

### गर्भ के हिंडोरे में झूलना

बहुत पमेंड करना । प्रयोग—सूरदास रति पाद पलोदति, हूँ तो जो गरब हिंडोरे झूँ ( सु० सा०—सूर, ३३५९ )

### गर्भ गलना,—गिरना,—चूर होना

गर्भ दूर हो जाना । प्रयोग—सवन हीन मुनि भए अष्टकल नाग गरब भय चूरि (सु० सा०—सूर, ४७०) ; देखो सुन्यो प्रभाउ ज प्रभ को । गिरि मयौ गर्व ज लोच तिहों को (नंद० ग्रंथा०—नंद० २६९) ; पगपान चांदी को चरण पहिरन लागी, सोभा देखि रंभा-रति गर्वहं गरत सो (भा० ग्रंथा० (२)—भारतेन्दु, ८२४)

**गर्भ गारना, चूर चूर करना,—भाड़ देना, नधाना**  
गर्भ मिटाना । प्रयोग—राखे सुखी सकल ब्रजवासी, सुरपति गर्व नवायो (सु० सा०—सूर, १४८६) ; हृद् हिदुवान की बिहद तरवारि राखि कैयो बार दिल्ली के गुमान भारि हारे हैं (भूषण ग्रंथा०—भूषण, २०८) ; नीकी नई केसरि को गारौहं गरब गारै, फीकी रोरि गारि सी निहारै रूप गोरी को (घन० कवित्त—घना०, १८८) ; कहता होगा, जब मैंने राजा महेन्द्र कुमार मिह जैसों को नौचा दिया दिया, उनका गर्व चूर-चूर कर दिया, तो ये लोग किस खेत की मली हैं (रंग० (१)—प्रेमचंद, ३८१)

(समा० मुहा०—गर्भ तोड़ना)

### गर्भ गिरना

#### दे० गर्भ गलना

### गर्भ चूर-चूर करना

#### दे० गर्भ गारना

### गर्भ चूर होना

#### दे० गर्भ गलना

### गर्भ भाड़ देना

#### दे० गर्भ गारना

### गर्भ नधाना

#### दे० गर्भ गारना

### गलचौर करना

खुब गप्प करना—खुब हंस-हंस कर बातें करना । प्रयोग—सब लोग यहां बैठे गलचौर कर रहे हैं, कुछ लश्कर की भी खबर है (प्रेमा०—प्रेमचंद, ५७) ; वे जब बैठक में बैठकर गलचौर करने लगते हैं, तब कभी-कभी उनका पागल-पन सुनने के लोभ से, मैं दरवाजे से सट और छिप कर खड़ी हो जाती हूँ (कला०—उग्र, ८१)

(समा० मुहा०—गलचौर मारना)

### गलत राह चलना

अनुचित या गलत काम में लगे रहना । प्रयोग—मेरे देखते तुम बेराह न चलने पाओगे (मान० (१)—प्रेमचंद, ८७)

### गलती रात

बीतती रात । प्रयोग—घड़ी टिक-टिक करके एक-एक मिनट आगे बढ़ी जा रही थी, गलती रात की ओर (गोली—चतुर०, ५१)

### गलना

- (१) मुक्ति चल पाना । प्रयोग—उन्होंने १३ वर्ष की ही अवस्था में अपना कार्य आप सम्भाल लिया और फिर किसी की कुछ न गलने पाई (राधा० ग्रंथा०—राधा० दास, ३२८)
- (२) दुर्वल होना—दुख पाना । प्रयोग—हाय कौन बेदनि बिरनि मेरे बांट कोनी, निषटि परो न क्यों हैं, ऐसी घिधि हों गरौ (घन० कवित्त—घना०, २७)
- (३) खर्च होना । प्रयोग—बाबू लोगों के घादर सत्कार में उसे बहुत कुछ गलना पड़ता था (गवन—प्रेमचंद, ४६)

### गलबाही डालना

प्रेम में गले में हाथ देना । प्रयोग—बीरी खात, दिव्य गरबाही । डोलत फूलत कुंज न माही (नंद० ग्रंथा०—नंद०, २७७) ; घन्य हैं वो जो ऐसे समय में × × प्रीतम के संग × × बगीचों, पहाड़ों और मैदानों में गलबाही डाले फिरती हैं (भा० ग्रंथा० (१)—भारतेन्दु, ४४५)

### गला उतरना

गरदन कटना—मार शला जाना । प्रयोग—एक की



तो हे उतरती आरती दूसरे का है उतर जाता गला (चोखे०—हरिऔध, १९९)

### गला ऐंठना

(१) हानि पहुंचाना। प्रयोग—कर बुरी बेकार बेजा ऐंठ क्यों जाति का हम ऐंठ देते हैं गला (चुमते०—हरिऔध, ११५)

(२) गला दबा कर मार डालना।

### गला काटना

हानि पहुंचाना। प्रयोग—आज एक ओर तरक्की की बातें सुनने में खाई है, दूसरी ओर पहले से कहीं ज्यादा घमरीयों के हाथों से गरीबों के गले काट रहे हैं (जहाज०—६० जोशी, १४५)

### गला कटवाना

जान देना, मुसीबत में पड़ना। प्रयोग—हेरा रोटी कारने गला कटावे कीन (कबीर ग्रंथा०—कबीर, २५१)

### गला कतरना

अहित करना। प्रयोग—कर कतरख्योंत बेतरह उसमें क्यों भला जाति का गला कतरे (चुमते०—हरिऔध, १०९)

### गला काटना,—रेतना

बहुत हानि पहुंचाना। प्रयोग—इस तरह के होते हैं भाई, जिन्हें भाई का गला काटने में भी हिचक नहीं होती (गोदान—प्रेमचंद, ११०); हे बड़े बाप के अगर बेटे, सम्पत्ता का गला न तो कतरें (मर्म०—हरिऔध, ६६); गरीबों का गला रेत-रेत कर जमीन जया जोड़ने वाले बाप के घर ऐसा देवता किस तरह पैदा हो गया, यह मेरी सम्झ में नहीं आया (बल०—नागा०, ५४); अब भी आप मीके पर चलकर जीव नहीं करते कि ठीक-ठीक तबसीना हो जाय, गरीबों के गले रेत रहे हैं (रंग० (२)—प्रेमचंद, ३१९); श्री पसन्द बनाव की बातें हमें धनवानों का तुम गला रेत रहे (चोखे०—हरिऔध, ५३)

### गला खुलना

मुंह से बात निकलनी, गले की आवाज का साफ होना। प्रयोग—जब कि वह खुल सका न पहले ही तब भला क्यों गला खुले खोले (चोखे०—हरिऔध, १०१)

### गला घोटना

(१) राकना, दवाना। प्रयोग—मुझको भोझना सटका

लाला बजकिशोर की तरफ का है, यह हर बात में मेरा गला घोटते हैं (परीक्शा०—श्री० दास, १०८); गले मिल करें मेल सच्चा फूट का गला घोट दें हम (मर्म०—हरिऔध, ७३); ऐसे अपकचरे जानवाला मनुष्य निस्संदेह मनमाने सांस्कृतिक सुधारों के नाम पर स्वस्थ भारतीय परम्पराओं का गला घोट देगा (बुंद०—अ० ना०, ५७७); वे सारे टीमटाम नाच-नमाजे, जिसकी कल्पना का गला उन्होंने घोट दिया था, बृहद् रूप धारण करके सामने घा गये (नाश करना) (गवर्न—प्रेमचंद, ६७); उसके मध्य भाग में उनके लड़कों की पाठशालाएं थीं और उनके मुकदमे-बाजों के असाड़े होते हैं, जहां न्याय के बहाने गरीबों का गला घोंटा जाता है (गवर्न—प्रेमचंद, ९) (अहित करना)

(२) गला दबाकर हत्या करना।

### गला घोंटने वाला

दबाव डालने वाला। प्रयोग—उन घायों का घमं अब के समान गला घोंटने वाला न था (सा० सु०—वा० भट्ट, ३)

### गला चलना

गले से आवाज निकलनी, गा सकना। प्रयोग—आज जब वह बहुत रहा चलता तब भला क्यों गला न पड़ जाता (चोखे०—हरिऔध, १०१)

### गला चांपना

(१) अहित करना। प्रयोग—जो गला चांप-चांप देते हैं पांव हम चांप रहे हैं उनका (चुमते०—हरिऔध, १०७)

(२) किसी से उसकी इच्छा के विरुद्ध काम लेना।

### गला छुड़ाना

छुटकारा पाना। प्रयोग—वह समझते हैं कि मैं अपना गला छुड़ाना चाहता हूँ (मान० (२)—प्रेमचंद, ८); अकथनीय कह तुम्हें छुड़ाते हैं सब लोग गला (मर्म०—हरिऔध, ३)

### गला छुटना

किसी काम या वस्तु से छुटकारा मिलना। प्रयोग—ला दे दे, गला तो छूटे। कम्मल के लिए कोई दूसरा उपाय नोचूंगा (मान० (१)—प्रेमचंद, १४६); मगर इससे गला छूटे तो कैसे? (अपनी खबर—उग्र, २८-२९); जायगा छूट या न छूटेगा घाज तक तो गला नहीं छूड़ा (चुमते०—हरिऔध, ६९)



### गला छोड़ना

छूटकारा देना । प्रयोग—सोफिया दफ्तर में भी साहब का गला न छोड़ती (रंगो (१)—प्रेमचंद, ३३९) ; यहां तक कि बुढ़ापा भी आपका गला छोड़ देगा (गंगा—उग्र, २७)

### गला तर करना

तरल पेय पीना, सराब पीनी । प्रयोग—ऐसे खुशी के मौके पर गला भी न तर किया जाय (पेंसरे—अशक, ८१)

### गला दबाकर बोलना

धीरे-धीरे बोलना । प्रयोग—बाबू साहेब, जरा गला दाब कर बोलिए (परती—रेणु, ३९५)

### गला दबाना

(१) अन्याय करना, जोर-जुल्म करना । प्रयोग—महाजन गला दबाये था तो क्या करते बेचारे (गोदान—प्रेमचंद, १९१) ; किसी का पेट काट कर हम, किसी का गला दबाते हैं (मर्मो—हरिऔध, ८४)

(२) अनुचित दबाव डालना । प्रयोग—किसी ने कोई देश हितवी काम में आय गला दबाया तो लाचार हो नाक भी सिकोड़ते उसमें भी कुछ लिख देना पड़ा (भट्टो नि०—वा० भट्ट, १४५) ; यह तभी होगा कि लग करके गले हम दबायेंगे न समझी का गला (बोलो—हरिऔध, ३७) ; अपना धरम यह नहीं है कि मित्रों का गला दबायें (गोदान—प्रेमचंद, ९) ; सोभियों, स्वाधियों और खुशामदियों ने उसका गला दबाकर कहीं अपावों की ×× स्तुति कराई है, कहीं द्रव्य न देने वालों की निराधार निन्दा (चित्ता०(१)—शुक्ल, १८५)

(३) रोकना, दबाना । प्रयोग—बनो वीर वीरता दिखाओ । कायरता का गला दबाओ (मर्मो—हरिऔध, १६)

### गला दे देना

न्योछावर होना । प्रयोग—जिनके कोमल कंठ पर गला दे देना साधारण बात थी उन्होंने तीसरी सप्तक की कितनी मर्मभेदी तानें लगाईं, किन्तु वे सर्वप्रसूती आकाश के सोखले में बिलीन होती गई (कामना—प्रसाद, ४६)

### गला पकड़ना या पकड़ा जाना

(१) उलझन में डालना या फंसाना । प्रयोग—है कुदित ने बुरी पकड़ पकड़ी । है गया बेतरह गला पकड़ा

(धुमते०—हरिऔध, ६९)

(२) कैफियत मांगना, जिम्मेवार ठहराना ।

(३) किसी खाई हुई चीज का गले में निपकना या लगना ।

(४) गले से साफ आवाज न निकलनी ।

### गला पड़ना,—बैठना

गले से साफ आवाज न निकलनी । प्रयोग—और फिर मेरा जी भी आज अच्छा नहीं है, गला बैठा हुआ है (भा० ग्रंथा०(१)—भारतेन्दु, ४६०) ; घाट-दस महीने की छोटी-सी बच्चों का रोते-रोते गला पड़ गया था (बुंद०—अ० ना०, ३२०) ; आज जब वह बहुत रहा चलता तब भला क्यों गला न पड़ जाता (चोखे०—हरिऔध, १०१)

### गला फंसना

(१) मुसीबत में पड़ना । प्रयोग—तब हमारा गला फंसगा ही जब कि जाति का गला फंसता (धुमते०—हरिऔध, २८)

(२) किसी ऐसी वस्तु या कार्य का जिम्मे पड़ जाना जिसमें हानि हो ।

(३) कफ से स्वांस लेने में कष्ट होना ।

### गला फंसाना या फांसना,—बंधाना या बांधना

(१) भ्रंश में डालना । प्रयोग—क्यों गले बांधकर गला बांधें क्यों मिलाकर गले, गले मड़ दें (बोलो—हरिऔध, १३२)

(२) जान-बूझकर भ्रंश में पड़ना । प्रयोग—जान बूझकर वसा चलते जंजाब में कोई नहीं फंसाता है अपना गला (देहेही०—हरिऔध, ११३)

(३) बंधन में डालना ।

### गला फटना

आवाज का विकृत होना । प्रयोग—तब भला किस तरह न फट जाता ×× तब भला क्यों गला : न पड़ जाता (चोखे०—हरिऔध, १०१)

### गला फाड़कर

जोर से चिल्लाकर । प्रयोग—माँ को बाहर जाते देखा तो गला फाड़कर रो पड़ी (झुंडा० (२)—यशपाल, ५१७) ; फिर भी, कैसे फाड़-फाड़ अपने गले—वे तीतर नव चञ्चु मार कर लड़ रहे (साकेत—गुप्त, १३५)



### गला फाड़-फाड़ कर कहना

सबको सुना-सुनाकर जोर से कहना । प्रयोग—जब घोर कोई नहीं तो मैं भलेला एक-एक मकान की छत पर चढ़कर गला फाड़-फाड़कर चिल्लाऊँगा कि देल जो दुनिया वालों यह है मुम्हारा की बल्द (जहण्ड०—इ० जोशी, ४४)

### गला फाड़ना

बहुत जोर से चिल्ला-चिल्ला कर बोलना । प्रयोग—देशहित कह-कह के नाटक काइते हो क्यों गला गुं नि०—का० मु० गु०, ६९३); जबरा अपना गला फाड़े डालता था, नील गाये खेत का सफाया किए डालती थीं (मान० (१)—प्रेमचन्द, १५१); देखते घाल फाड़-फाड़ रहे हम गला फाड़-फाड़ चिल्लाये (सुमते०—हरिऔध, ७०)

### गला बंधना

बंधन में पड़ना । प्रयोग—बेतरह है गला बंधा अब भी ऐ न रस्मी कमार बंधी छुटी (सुमते०—हरिऔध, ७१)

### गला बांधना

दे० गला फँसाना

### गला बैठना

दे० गला पड़ना

### गला भर आना

भावान्तिरेक के कारण आवाज का भारी हो जाना । प्रयोग—बिलखी डभकोई चखनु तिय लखि गवन बराइ । मिय गहवरि आएँ मरे राखी मरे लगाइ (बिहारी रजा०—बिहारी, १६६); आनि लगायो हिये सों हियो भरि आपो गरो कहि आपो कछु ना (जय०—पट्टमाकर, ५५); सुमिरत गर भरि आवत मोपे काहो न जाय (भा० प्रशा०(२)—भारतेन्दु, २९६); गणसुद्धीन का गला भर आया और आगे गीली हो गई (मुग०—वृ० वर्मा, ६५); जाह भरे भरि आपो गरो अमुजान भरे अंतिथां भरि आई (मर्म०—हरिऔध, २५); राजनन्दिनी का गला भर आया (वैशाली० (१)—चतुर०, २७२)

### गला भरा आना

भावान्तिरेक के कारण बोल न पाना । प्रयोग—मालती का गला भरा गया और उसने मुँह पेरकर कमाल से आँसू पोछे (गोदान—प्रेमचन्द, १७२); जब कहते-कहते चन्द्र का स्वर कुछ भरा आया, तब उसने x x टेबल लेम्प का

प्रकाश मंद कर दिया और फिर अपनी जगह आकर बैठ गयी (नदी०—अज्ञेय, ४६)

### गला भाँजना

(१) गाने में गले की कारसाजी दिखाने का प्रयत्न करना । प्रयोग—नवसिख छोटियों से कह दो बेकार गला न भाँजे (परती०—रेणु, २६२)

(२) जोर से बोलना । प्रयोग—मानिकपुर का उदयानंद हाट में गला भाँज कर सुना रहा था (परती०—रेणु, ५१२)

### गला भारी होना

(१) आवाज भारी होना । प्रयोग—तब उभारी न जा सकी बोली जब कभी हो गया गला भारी (चोखे०—हरिऔध, १०२)

(२) भावान्तिरेक के कारण स्वर भारी होना । प्रयोग—“यहाँ ऐसी धूप है कि सोच भी नहीं सकते बाद की बात; जिस दिन आई थी—जिस दिन तुम लाये थे उठाकर—” सहसा उसका गला भारी हो आया (नदी०—अज्ञेय, २४२)

### गला मधुर होना

मधुर स्वर होना । प्रयोग—वहाँ सभी हिन्दी बोलती थीं । पर जो मधुरता उसके गले में थी, वह दूसरे में न थी (लिली—निराला, १३९)

(समा० मुहा०—गला मीठा होना)

### गला मरोड़ना

अहित करना । प्रयोग—बिसेसर की एक बार मरम्मत हो जाती तो प्रच्छा होता । गाँव भर का गला मरोड़ता है, वह उसकी सजा है (प्रेमा०—प्रेमचन्द, ५५); तोड़कर ओ मरोड़ कर बातें जाति का क्यों गला मरोड़ें हम (सुमते०—हरिऔध, २७)

### गला रुंधना,—रुकना

(१) भावान्तिरेक के कारण बोल न पाना । प्रयोग—जान प्यारी हो तो अपराधनि सों पूरन हों, कहा नहीं ऐसी गति आवत गरी रुक्यो (घन० कवित्त—घना०, ३२); देश का दुख बलानती देता । किस तरह रुंध गला नहीं जाता (सुमते०—हरिऔध, ७९)

(२) गले में आवाज न निकलनी ।

(समा० मुहा०—गला भिचना)



गला रुकना

दे० गला रुंधना

गला रेतना

दे० गला काटना

**गली-गली**

इधर-उधर, हर जगह। प्रयोग—हम कुल बपुन कलें किनि कुलटा इधर उधर कहायो (भा०ग्रं० (२)—भारतेन्दु, २७८); नहीं तो इन्होंने आज जनेऊ पहिने थे, कल वेदों की ऋचाएं आल्हा की तरह गली-गली बकते फिरते। (झांसी०—वृ०वर्मा, ५१); राजा साहब ने उसकी चामीन पापा को दे दी है बेचारा आजकल गली-गली दुहाई देता फिरता है (रंग० (१)—प्रेमचन्द, ३३६); मैंने भी गली-गली मुने हैं ये शब्द (कनु०—भारती, ७६)

**गली-गली की ठोकरें खाना**

(१) अपमानित होना, लाजित होना। प्रयोग—कभी बारह बजे रात को सोना नसीब होता है कभी रतजगा करना पड़ता है। सारे दिन गली-गली ठोकरें खानी पड़ती हैं (मान० (१)—प्रेमचन्द, २८२); इसकी तो बयस खेलेने खाने और जीवन का सुख लूटने की है—न कि गली-गली ठोकर खाने की (भिला०—कौशिक, ४)

(२) जीविका के लिये इधर उधर भटकना।

(३) सब जगह दिखाई देना।

(४) इधर-उधर व्यर्थ घूमना।

(समा० सुहा०—गली-गली छानना,—फिरना,—मारे-मारे फिरना)

**गली-गली में मिलना**

आसानी से हर जगह मिलना। प्रयोग—ऐसी नारियां घाफको गली-गली में मिलेंगी और मैं तो उन सबसे गयी बीती हूँ (गोदान—प्रेमचन्द, २००)

**गले उतरना या उतारना**

स्वीकार होना या कराना। प्रयोग—पर यह चालीस की नोकरी तो गले से नहीं उतरती (रेशमी०—राम०, वर्मा, १३७); बहुत ही अच्छी काम की बात सारी उतरती नहीं है गले से उतारी (चुभते०—हरिऔध, १८६)

**गले का ढोल**

व्यर्थ की शंभट। प्रयोग—इसको रखने से नाहक शंभट

में पड़ने। गले का ढोल बन जावना (बल०—नागा०, ५२)

(समा० सुहा०—गले का ढोलना)

**गले का हार**

(१) अत्यन्त प्रिय। प्रयोग—श्रव आपकी आज्ञा से और भी घपना जाल फँसाऊँगी और छोटे बड़े सबके गले का हार बन जाऊँगी (भा०ग्रं० (१)—भारतेन्दु, ४८३); जब तक अच्छे थे, तब तक तो तुम उनके गले का हार बनी हुई थी (मान० (१)—प्रेमचन्द, २५३); गले प्यार की गोद में बने गले का हार (सर्व०—हरिऔध, १५३); संसार की अनादि काल से की गई कल्पनाओं ने जगत को बटिल बना दिया भावुकता गले का हार हो गई (कामना—प्रसाद, ४५) (+)

(२) सदा साथ रहने वाला। प्रयोग—वहाँ मारपीट से तो मुक्ति मिल गई, किन्तु नानो सीनेकी बी, इसलिए डांट डपट, तानेमेहने आठों पहर उनके गले का हार रहे (चैतन—अशक, ३२); किसी तरह न जाने दूँगी, जहाँ जाओगे मैं भी चलूँगी तुम्हारे गले का हार बनी रहूँगी (रंग० (२)—प्रेमचन्द, २५९); देखिए प्रयोग (१) में (+) भी

**गले की फांसी छुड़ाना**

किसी भ्रमट से मुक्ति पाना या दिखाना। प्रयोग—हमने तो तुम लोगों के गले की फांसी छुड़ा दी (मान० (८)—प्रेमचन्द, ८४)

**गले की फांसी होना**

संकट का कारण होना। प्रयोग—मैं मैं मेरी जिनि करे, मेरी मूल विनास मेरी पग का पै पड़ा, मेरी गल की पास (कबीर ग्रंथा०—कबीर, २७); जो स्वाभिमान अपने देश के गले की फांसी बनवा हो, उसे भुला ही देना चाहिए (विप०—प्रेमी, १०)

**गले-गले से फिरना**

बहुत मित्र होना। प्रयोग—ऐसे गुरुओं से बाबू प्रेमचन्द लालों की घाँस-आँस पर रहते, गले-गले से फिरते हैं (लिली—निराला, १०९)

**गले पड़ना**

(१) इच्छा के विरुद्ध क्रिये पाना। प्रयोग—जो जो कम किये लालच स्यों ते फिर गरहि पर्यो (कबीर ग्रंथा०—



कबीर, २५४); मुरदाग माहक नहि कोऊ देखियत परे परी (सु० सा०—सूर, ४२५१); या मैं न और को दोष कहु सवि बूक हमारी हमारे परे परी (भा० प्र० (२)—मार्तण्ड, १४१); पर मोड़े हो दिन में उठ मुख का लेख भी न रहोगा, उल्टा परचाताप गले पड़ेगा (प्र० पी०—प्र० मा० मि०, ४२); धमल में अज्ञान में बड़ी गुंजायश होती है। मेरा ज्ञान मेरे गले पड़ा (छपनी सखर—उप, ४१); उहूँ जब कोई न मिला तो चूली डोल की तरह मेरे गले पड़ा (स्क०—प्रसाद, १०६); मैं तो डर रहा था, वही मेरे गले न झा पड़े (मान० (१)—प्रेमचंद, १४४)

(२) तंग करना—पीछे लप जाना। प्रयोग—होठों को धजान, तो न जानकी इलेक बिद्या, मेरे लिए जानि तेरी जानियां मेरे पारंगो (इब्द०—देव, ६६); मैं तो गले बुरे दोनों ही की साधिन हूँ। भले में तुम बाहे मेरी बात मत पूछो, बेहिन बुरे में तो मैं तुम्हारे गले पहुँची ही (गधन—प्रेमचंद, ११४); अतुल चाहता तो बुरी तरह भगत जी के गले पड़ जाता पर वह पुनराप चलाता गया (इब्द०—दे० सा०, १३९)

(३) जबरेल्लो किसी पर धाबित होना। प्रयोग—मेहनत मजुरी करते हुए धर्म अर्पने दिन बिता लेना, किसी के गले पड़ने से बचना है (तिल्ली—प्रसाद, ३६); वह लौटा बेतरह तुम्हारे गले पड़ा है (रंग० (१)—प्रेमचंद, २५)

(समा० मुहा०—गले लग जाना)

**गले पड़ा डोल बजाना**

बिधा होकर करना। प्रयोग—वह गले पड़ा डोल बजाना ही पड़ेगा (पट्टम० के पत्र—पट्टम० शर्मा, ७)

(समा० मुहा०—गले पड़ी बजना)

**गले पर का जुआ**

कोई दाविल या बोन। प्रयोग—न जुआ जो जुता तो क्यों, गले पर का जुआ उतरे ? (सर्मा—हरिऔध, ५९)

**गले पर कुटार देना**

तलवार जारिले मार डालना। प्रयोग—एहि के कंड कुटार न दीन्हा। तो मैं काहू कोपु कर बीन्हा (राम० (बाल)—सुलसी, २५४)

**गले पर खाँडा चलाना,—छुरी चलाना,—देना,—फेरना**

घोर हाथि करना, आपाचार करना, बड़ा दुख देना।

प्रयोग—तबि इज लोग पिता भय जननी कंड बाद गये कातो (सु० सा०—सूर, ४२५९); पीति करि दीन्ही परे छुरी (सु० सा०—सूर, ३५०३); राजबाबा भी नामरी-देवी की सगी बहिन है, उसका निज स्वाथ दुसरी बहिन को सोचना सह्यता के गले पर छुरी फेरना है (प्र० पी०—प्र० मा० मि०, ५७); सबों ने इसके गले पर छुरी ही फेरी (राधा० प्र० सा०—राधा० दास, ४५९); संसार के गले पर खाँडा चलाने जाओ और भगवान का नाम लेते जाओ, तो क्या इस मार्ग में भी मोक्ष मिल जायेगा ? (मुग०—वृ० शर्मा, ४५); ऐसे से तरीकों को तरीक कर तरीकों के गले पर तरीकों के जरिए ही छुरी चलाने हैं (मीला०—रंग, २२०); वह स्वार्थ के निम्ने किसी के गले पर छुरी चला सकता है (गधन—प्रेमचंद, ३१७); बेवतों पर छुरी चला करके क्यों गले पर छुरी चलाने हो (सुमते०—हरिऔध, २७)

(समा० मुहा०—गले पर छुरी रेतना)

**गले पर छुरी चलना**

बहुत बड़ा अप्पाय होना। प्रयोग—फिर जब इतना बड़ा धनवं हो रहा था कि बादभी वह के गले पर छुरी चल रही थी, तो मना तुम कैसे बोलते (गीदान—प्रेमचंद, ३४)

**गले पर छुरी चलाना**

दे० गले पर खाँडा चलाना

**गले पर छुरी देना**

दे० गले पर खाँडा चलाना

**गले पर छुरी फेरना**

दे० गले पर खाँडा चलाना

**गले बांधना,—झड़ना**

जबरजस्ती जिम्मे लगाना। प्रयोग—भीतरी झूठ छात की गांधेXXधों उन्हें जाति के गले बांधे (सुमते०—हरिऔध, ११४); ऐसे ही बुधा गुप्त पोषे हिन्दी का इतिहास कहकर पब्लिक के गले मड़े जाते हैं (पट्टम० के पत्र—पट्टम० शर्मा, ६२); तीन लड़के भगवान ने उसके गले मड़ दिये, मही अभी वह है की दिन की (मान० (१)—प्रेमचंद, १७२); कोई कोई देस लोग बस इतना अधिक धान तैयार करते हैं कि उसे किसी देस के गले मड़ने की स्थिति में दिन रात मरते रहते हैं (विता० (१)—सुलस, ७५)



### मले-बाजी

मले की कुशलता । प्रयोग—माने के बाद अपनी लकड़ी की मले-बाजी पर मुझे राय देनेवाली थी, एकाएक हीमसा जाता रहा (कुल्लू—निराला, ७३)

### मले मड़ना

दे० मले बांधना

### मले में कपड़ा डालकर

अधीनता स्वीकार करके—घायल विनम्र होकर । प्रयोग—जब भी कुष्णचन्द्र उसे दूर से दिखाई दिये तब सब से ऊपर मने पाधों, मले में कपड़ा डाले, धर-धर कांपता था भी कृष्ण के चरखों पर मिरा (प्रेम० सा०—ल० सा०, ७०)

### मले में खड़ी का पाट होना

बहुत भारी या दुखदायी लगना । प्रयोग—वही हमसल सालों बकरी का पाट बनकर मले में पड़ गयी है (पैतरे—अटक, ११०)

### मले में जूआ पड़ना

(१) बिबाह के कारण दामिल धीर बोझ आ पड़ना । प्रयोग—जब तक मले में जूआ नहीं पड़ा है, तभी तक यह कुजेंल है (गवर्न—प्रेमचंद, ६)

(२) किसी काम में लगना ।

(समा० मुता०—मले में जुआ डालना)

### मले में होल डालकर डंका बजाना

स्वयं जोर-जोर से धरना प्रचार करना । प्रयोग—जान लेंगे कि विज्ञान को धरने मले में होल डाल कर अपनी विद्या का डंका बजाने की कोई जरूरत नहीं है (गु० नि०—बा० मु० गु०, ४९९)

### मले में तागा डालना

कंठी या जनेऊ लेकर दीक्षित होना । प्रयोग—हम क्यों लीज है और ये लोग क्यों ऊँचे हैं ? इसलिए कि ये लोग मले में तागा डाल लेते हैं (मान० (१)—प्रेमचंद, १३१)

### मले में लौक पड़ना

बंधन में पड़ना । प्रयोग—तेरे गलहि लौक पग बेरी, तू धर धर रमिग केरी (कबीर प्र०—कबीर, २५५)

### मले में धूक अटकना

कड़ न पाना । प्रयोग—हमला के मले में उधुकाता का

धूक अटकने लगा (हीमे०—रा० रा०, ३५)

### मले में पगड़ी डालना

किसी के मले में पगड़ी डालकर अतिथि का सम्मान करना । प्रयोग—बिन्दो कीन्ह धामि गिबे पागा । ये जग मूर लीज मोहि जागा (पट०—जायसी, ४६१४)

### मले में फाँसी देना

बहुत दुख देना । प्रयोग—आए ऊँची फिर गए धांगल, डारि गए मर फाँसी (मु० सा०—सूर, ४१०६)

### मले में पाश पड़ना,—फाँसी पड़ना

अवरुद्धी जिम्मे आ पड़ना । प्रयोग—हिन्दी-साहित्य सम्मेलन के समापन का पाश देरे मले में पड़ ही गया (पटुम० के पत्र—पटुम० जर्नल, २४२)

(२) घोर बहिर्ग होना । प्रयोग—जब मले फँस गये कुपड़े में क्या मले में तब न लगी फाँसी (सुमते०—हरिऔध, २५)

(समा० मुता०—मले में बंधन पड़ना)

### मले में फाँसी पड़ना

दे० मले में पाश पड़ना

### मले में बांध लेना

(१) धाँवर करना—धार करना । प्रयोग—आपको बेटी बहुत प्यारी है तो उसे मले बांधकर रखिए (मान० (१)—प्रेमचंद, २३१)

(२) किसी वस्तु या काम की जिम्मेदारी ले लेना ।

### मले में बाँह डालना

बिबाह कर देना । प्रयोग—जब राजा ने इस बात से पृथ होकर चिन्तन को पान्थी की आज्ञा दिया, रास्ते में अपने बोर-नवायिका बसाई, जिसने प्रसन्न होकर राजा ने पान्थी के बटने अपनी कन्या की बाँह उसके मले में दानी (भा० प्र०—(३)—मारलेन्द, १४)

### मले में रस होना

सरस माना माना । प्रयोग—दे मेरे भित फलीष है, बदे सगळे बहि है । मले में रस है और कलम में नाद (पैतरे—अटक, १४९)

### मले में हाथ डालना

देखी करना । प्रयोग—जब धले बने से पाना करले नहीं



तब गले में हाथ क्या पड़ते रहे (चोखे०—हरिऔध, १११)

### गले लगाना

(१) भेंटना । प्रयोग—मुनि निरुने नहर के कोई । गरें लागि पदमावति रोई (पद०—जायसी, ४९५)

(२) जबरदस्ती जिम्मे धाना ।

### गले लगाना

(१) भेंटना-मिलना-आतिथन करना । प्रयोग—बिलगो उभकोहे चलनु तिय लखि, गवनु बराइ । गिय गहवरि आएँ गर राखी गरें लगाइ (विहारी रत्न०—विहारी, १६६) ; लाइये मोहि गरें हंसि क उर बीचमें प्यारे हिमल बनाइये (भा० ग्रं० (२)—भारतेन्दु, ८२०) ; बार-बार वचने को गले लगाती घोर प्रसन्न होती (मान० (१)—प्रेमचंद, ३८) ; उसके निकट गया मैं धाय लगाया उसे गले से हाथ(परि०—निराला, १२४)

(२) दूसरे की इच्छा के विरुद्ध उभे देना । प्रयोग—रमा ने देखा कि बिना मांगे एक चीज मिल रही है, जबरदस्ती गले लगायी जा रही है, तो वह दो बार और नहीं-नहीं करके मुनीमजी के साथ अंदर चला गया (गवन—प्रेमचंद, १५९)

(३) स्वीकार करना । प्रयोग—सन् ३० में शेरार बड़ा नया-नया और आकर्षक लगता था, अब तो फिल्म एक्टर से लेकर दुकानदार तक इस नाम को गले लगाये हुए हैं (भीर०—जग० माधुर, १६३) ; बड़े-बड़े महाजनों से रकमें मिलेंगी और वह खुशी से गले लगावेंगे (गवन—प्रेमचंद, ३९) ; पर सुख निमित्त कब किसने दुख को गों गले लगाया (वेदेही०—हरिऔध, १३८) ; × × दुर्भाग्यवशा अब से हमने गलिताय को प्रणाम अंग जानकर काट फेंकने से इन्कार कर गले से लगाना शुरू किया है, सभी से बिध सारे धरीर में व्याप्त हो गया है (अपनी सवर—उग्र, २१)

### गले से गला मिलाना

(१) दो आदमियों का एक साथ माना । प्रयोग—जाति रंग में उले पर्वों को भी कब गले से गला मिला गया (चुमते०—हरिऔध, ११०)(÷)

(२) समर्पन करना । प्रयोग—देखिए (१) में(÷)

### गहने-कपड़े को रोना

गहने कपड़े की इच्छा करना या उसके अभाव में दुखी

होना । प्रयोग—वहाँ तो रोटियाँ चलनी मुश्किल है, गहने-कपड़े को कौन रोने (मान०(७)—प्रेमचंद, ६१)

### गहने धरना

रेहन रखना । प्रयोग—तू हमें एक वर्ष के लिये गहने घर और इनका मनोरथ पूरा करूँ (प्रेम० सा०—ल०ला०, २९२)

### गहरा पेट

सुनकर किसी बात को पी जाना—प्रगट न करना । प्रयोग—घोफ़ोह ! बड़ा गहरा पेट है तुम्हारा (निर्मला—प्रेमचंद, १३६)

### गहरा हाथ मारना,—लगाना

(१) भारी रकम हाथ लगाना । प्रयोग—कहीं गहरा हाथ मारा है (मान० (१)—प्रेमचंद, १३७) ; लाभ गहरा किस तरह तो हो सके हाथ लग पाया अगर गहरा नहीं (चुमते०—हरिऔध, ११२)

(२) हथियार का भरपूर वार जिससे खूब चोट पहुँचे ।

(समा० मुहा०—गहरा हाथ पड़ना)

### गहरा हाथ लगाना

### दे० गहरा हाथ मारना

### गहराई तक जाना

गम्भीरता पूर्वक सोचना या जांचना । प्रयोग—गहरे जाकर देखें तो ये क्या है—तीन बड़े निषेध (शेखर (२)—अज्ञेय, २०६)

### गहरी छटना,—छनना

(१) खूब मेल होना । प्रयोग—मगल घोर टामी में गहरी छनती थी (मान०(२)—प्रेमचंद, २०४)

(२) खूब भाग पीनी । प्रयोग—रोज शामकी चकाचक घुटती और ऐसी गहरी छनती कि पीने के पहले ही पिता झूमते, पीकर मस्त हो जाते (मारली०—रा० रा०, ३५)

### गहरी चाल चलना

बड़ा छल करना । प्रयोग—तो चले चाल किसलिये गहरी बात देवे सम्भाल जो लटकें (चुमते०—हरिऔध, ४३)

### गहरी छनना

### दे० गहरी छटना

### गहरी निगाह

सूक्ष्म दृष्टि—बनी दृष्टि । प्रयोग—जान गहराई गुनाहों की सके काम जब गहरी निगाहों से लिया (चोखे०—



हरिऔध, १३२)

### गहरी पैठ होना

अच्छा ज्ञान एवं अधिकार होना। प्रयोग—मैंने साहित्य सेवा अवश्य की, किन्तु मुझ में गहरी पैठ का अभाव रहा (मेरे०—गुलाब०, १०)

### गहरी बात होना

महत्वपूर्ण होना। प्रयोग—पर वह बातें गहरी थी, ज्वाला प्रसाद को अब यह अनुभव हुआ (भूले०—भग० वर्मा, ४६); जमादार बहुत गहरी बातें हैं (चोटी०—निराला, १५१); तो किसी गंव की न गहराई रही जो न गहरी बात कह गहरे बने (चौसे०—हरिऔध, २६)

### गहरी रकम हाथ लगना

काफी लाभ होना। प्रयोग—मुमकिन, गहरी रकम हाव आये (चोटी०—निराला, ११०)

### गहरे पानी पैठना

यथेष्ट प्रयत्न करना। प्रयोग—अच्छे विज्ञापनों के लिये लोग गहरे पानी पैठकर दूर की कौड़ी लाते हैं (मेरे०—गुलाब०, ६५)

### गहरे पानी होना

गम्भीर या गहराई की स्थिति में होना। प्रयोग—लेकिन वास्तव में तुम उससे बहुत गहरे पानी में हो (रंग० (१)—प्रेमचन्द, १३८)

### गहरे से गहरे

पनिष्ठ। प्रयोग—× × दूसरी ओर बड़ों का बहुत कुछ बढ़पन निकल जाय, गहरे-गहरे साथी बहरे हो जाय या सूना जबाब देने लगे (चिंता० (१)—शुक्ल, ६६)

### गहरे होना

(१) धन बढ़ना। प्रयोग—आजकल तो बड़े गहरों में हो हम पर भी थोड़ी कृपा दृष्टि रखना करो (परीक्षा०—श्री० दास, ११४)

(२) खिलखिल न होना, गम्भीर होना। प्रयोग—मैं चाहता हूँ कि डाक्टर तुम परीक्षा करके देख लो, चाहे जिस तरह मुझे इतमीनान हो जायगा कि वे जो कुछ हैं, कहां तक हैं, कितनी गहरी हैं (रेशमी०—राम० वर्मा, ४५)

### गांठ उलझना

स्थिति और पेचीदा होनी। प्रयोग—परिणाम यह हुआ कि गांठ सुलझने की अपेक्षा और अधिक उलझ गई (चित्र०—कौशिक, ७०)

### गांठ करना

(१) धन्यो तरह याद रखना। प्रयोग—मेरी बात, यह कर गांठ, कायर के प्रहारों से, कभी कोई नहीं मरता (बुद्ध०—बच्चन, ९४)

(२) जम जाना।

(३) इकट्ठा करना।

(४) गांठ में बांधना।

(५) मनमुटाव करना।

### गांठ का, गिरह का

अपने पास का। प्रयोग—इहां नहीं कोई पार दोस्त गांठि गरब न डाम (कबीर ग्रंथा०—कबीर, १६८); सबहीं कीन्ह बेवाहता ओ पर कीन्ह बहोर। बांभन तहां लेइ का गांठि सांठि मुठि घोर (पद०—जायसी, ७१२); हीं तो गयो गुगलहि भेंटन और सरब तदुज गांठी की (सू० सा०—सूर, ४८५७); फौज पड़ाई हुनो गड बैन को गांठिहु के गड-कोट गवाण (भूषण ग्रंथा०—भूषण, १६६); गई कमाई दूर सब छन रहे गांठ को सोखत (भा० ग्रं०—मघरसेन्द, ५४२); सब जानूँ है कि मेरे पास गांठ की पूजी नहीं है (परीक्षा०—श्री० दास, ८९); सब कहो तुमने इन्में अपनी गिरह का पलोचनकया लगाया है? (परीक्षा०—श्री० दास, २२); इसीसे हमारी इच्छा थी कि × × अपनी सामर्थ्य के भीतर कुछ गांठ से भी निकल जाय तो भी इसे निकाले जायेंगे (प्र० पी०—प्र० ना० मि०, १३३); उसमें गांठ की प्रकल घोर मोह पर स्वयं अपना निर्णय करने की शक्ति होनी चाहिए (मेरे०—गुलाब०, ५८)

### गांठ का पूरा

सालदार, पेमेवाला। प्रयोग—सारे जीवन कोई न कोई मतिमन्त, गांठ का पूरा उनके हृत्वे बराबर बढ़ता ही रहा (अपनी खबर—उग्र, ८५); गांठ के पूरे से ही, अपनी जवानी की थोड़ी बेजगाम छोड़ दो (बुद्ध०—प्र० ना०, ८९)



### गांठ काटना

चोरी से पैसा हड़पना, पाकेट से निकाल लेना। प्रयोग—जैसे किसी गांठ काटने वाले की अकिल और चालाकी पर हमें तबज्जुब और कभी-कभी एक प्रकार का दिल-लगाव भी उससे है पर उसकी यह चालाकी चतुराई और अकिल संसार के उपकार के लिए है, कोई इसे न मानेगा (भट्ट० नि०—वा० भट्ट, ३३)

### गांठ के पूरे आंख के अंधे होना

धनी पर भूख होना। प्रयोग—धनर हम तुम सत्तामत रहेंगे तो बहुतेरे गांठ के पूरे आंख के अंधे फसंगे ही (राधा० ग्रंथा०—राधा० दास, ७२०)

### गांठ खाली होना

पान में कुछ न होना। प्रयोग—यदि उसकी गांठ खाली हो, तो कब मिलती है दुलहन ? (बल्ल०—दे० स०, २९)

### गांठ खोलना

अम या दुर्भावना को दूर करना। प्रयोग—ऐसी जे उपजी या जीय बाँ, कुटिल गांठि सब सोलै (कबीर ग्रंथा०—कबीर, २१२); जब मुलभना उन्हें नहीं जाता तब गिरह खोल किस तरह मुलभै (चौखे०—हरिऔध, ४७)

### गांठ जोड़ना

विवाह के समय बर-वधू के दुपट्टों की एक में बांधने की रस्म। प्रयोग—नांनार्ये भांवरि केरी, गांठि जोरि बाँव पति ताई (कबीर ग्रंथा०—कबीर, १६५); हौ जो गई मड मडप भोरी लहवा तु न गांठ गहि जोरी (पद०—जायसी, २४१६); करि होम् बिधवत गांठि जोरी होत नागी भांवरी (राम० वा०—सुलसी, ३३०)

### गांठ पड़ना

(१) सम्बन्ध अग्रिय हो जाना, मनोमानिय होना। प्रयोग—सुल सके गांठ जो नही जी की तो पड़े गांठ क्यों किसी जी में (मर्म०—हरिऔध, ६६); दोनों में क्या बात हुई यह हीन जान सकता है लेकिन दोनों में कोई गांठ पड़ गई है (मान०(१)—प्रेमचन्द, ९६)

(२) कुछ अग्रिय घटना। प्रयोग—हरी की धात्मा में कहाँ गांठ पड़ी है कि वह अतर्क्य होता जाता है, यह कुछ समझ में नहीं आता (सुनीता—जैनेन्द्र, ७८); इसके

जीवन में कहाँ गांठ पड़ी है, यही सोच रहा हूँ (अशोक०—ह० प्र० दि०, १४५)

(३) उलभन होना, रुकावट होनी। प्रयोग—खेखर की बुद्धि में मानो गांठ पड़ गई (शेखर (२)—अज्ञेय, ७०)

### गांठ बांधना

(१) पल पूर्वक रखना। प्रयोग—बांधी गांठि छूटि परिहै कहूँ, फिरि पाछै पछिलाहूँ (सू० सा०—सूर, ४४२७)

(२) दूढ़ धारणा बनाना, बात पकड़ लेना। प्रयोग—मैंने नदी के तटवाली तुम्हारी बातें गांठ बाँध लीं (गोदान—प्रेमचन्द, ३४१); हला कलिंग, मैं अब जाती हूँ, परन्तु एक बात गांठ बांधना (वैशाली० (१)—चतुर०, २९३); पढ़ न पावे गिरह किसी दिल में लं गिरह बांध दित गिरह खोलें (चौखे०—हरिऔध, २९)

### गांठ में पैसा होना.—होना,—गिरह में दाम होना

पान में पैसा होना। प्रयोग—राजें पदुमावति माँ कहा। गांठ नाठि किछु गांठि न रहा (पद०—जायसी, ३४१२७); जब लगि पैसा गांठ में तब लग्यार हजार (कुण्ड०—गिरधर, दास, १२); क्या मुँह लेकर आवें, न गिरहमें दाम है न किसी उम्माके यहाँ तार लगता है (राधा० ग्रंथा०—राधा० दास, ७२०); सोचो जब छत्रपति के उपरांत शम्भूजी मारे गये × × तब ताराबाई की गांठ में क्या रह गया था ? (झासी०—वृ० वर्मा, १६२-१६३); लेकिन धी खाने योग्य पैसे तब अपनी गिरह में थे ही नहीं (अपनी खबर—उग्र, ४७); यहाँ हम-जैसे मजदूरों का कहाँ गुजर है महाराज। गांठ में कुछ हो भी तो (गवन—प्रेमचन्द, ५७)

(समा० महा०—गांठ में दाम होना)

### गांठ में बांधना

(१) मान लेना। प्रयोग—हमारे गुनहि गांठि किन बांधी, हम कह किया बिगार (सू० सा०—सूर, ४१६१) इसे गांठ में बांधते हुए शेखर ने पूछा—वहाँ कैसे आता है ? (शेखर (१)—अज्ञेय, १५४); मेरी बात गिरह बांध लो (कर्म०—प्रेमचन्द, २५४); अपनी पुरानी बारगी बुद्ध परिचाटी की तो गांठ ही में बांध लो (झासी०—वृ० वर्मा, १८५)

(२) सीखना। प्रयोग—वही रानी यदि आज यहाँ जाती तो गांठ में बांध कर यहाँ में कुछ ले जाती (मृग०—वृ० वर्मा, ४१७)



## गांठ में होना

दे० गांठ में पैसा होना

## गांठ रखना

अपने अनुकूल करना या पटा लेना । प्रयोग—सब छादमियों को पहले ही से गांठ रखवा है (रंग० (२)—प्रेमचन्द, ५४)

(समा० मुहा०— गांठ लेना)

## गांठ सुलझाना

स्थिति स्पष्ट होनी, मनोमालिन्य या दुविधा दूर होनी । प्रयोग—परिणाम यह हुआ कि गांठ सुलझने की अपेक्षा और अधिक उलझ गई (चित्र०—कौशिक, ७०)

## गांठसे

पास से । प्रयोग—छपए खत्म हो चुके थे । रुह अपनी गांठ से नहीं मंगा सकता था (कुल्लो०—निराला, ६५)

## गांठना

(१) बश में करना-फँसाना । प्रयोग—ईसाइन है न !

किसी अंगरेज को गांठेगी (रंग० (२)—प्रेमचन्द, १५५)

(२) परवाह करना, कुछ समझना ।

(३) किसी से कुछ वसूल कर लेना ।

## गांस की फांस

वैर-भाव । प्रयोग—बात में है मिठास मिसरी सी, गांस की फांस है कलेजे में (चोखे०—हरिऔध, १६९)

## गा-बजाकर

हंसी खुशी के साथ । प्रयोग—भई यह उन लोगों में नहीं है जो गा-बजाकर काठ में पांव देते हैं (भिक्षा०—कौशिक, २०५)

## गाज गिरना,—पड़ना

आफत आना, ध्वंस होना, वचपात होना । प्रयोग—श्रीधपुरी महं गाज परें । कैं अब राज भरख्य करे (केशव० (२)—केशव, २७४) ; नरनारी सब जपत है घर घर हरि को नाउ । मेरे मुख धोखेहु कहुत, परत गाज ब्रज ठाउ (मति०मक०—मतिराम, २५६); अरी सखी गाज परो ऐसी लोक-लाज पै, मदन मोहन संग जान न पाई (भा० प्र० (२)—भारतेन्दु, ४७); रखेली की तरह रख ले तो गांव के पंच कुछ नहीं कहेंगे ब्याह हो जाय तो

मानों उन पर गाज गिर पड़ेगी (मृग०—बृ० वर्मा, ५४) ; उसी हस्तिवारी के कुतबे पे गाज गिरिहै (बृ० द०—अ० ना०, २२)

## गाज पड़ना

दे० गाज गिरना

## गाज मारना

(१) आफत आना । प्रयोग—देव कहा सुनु बीरे राजा । देवाहि अगुमन मारा गाजा (पद०—जायसी, २१५)

(२) बिजली गिरना ।

## गाड़ी ठेल ले जाना

काम पूरा कर ले जाना । प्रयोग—जांतराम कैसे नामी मितारों के बिना ही अपनी गाड़ी ठेल ले जाता है ? (दूध गाछ—दे० स०, २५५)

## गाड़ी पकड़ना

समय पर रेल में सवार हो जाना । प्रयोग—यही सोच कर मने सुबह की गाड़ी पकड़ी (पैतरे—अशक, १२३)

## गाढ़ा धीरज धरना

बहुत धैर्य रखना । प्रयोग—कह सीता परि धीरज गाढ़ा (राम० (अर)—तुलसी, ७२५)

## गाढ़ा पड़ना

मुसीबत आ पड़ना । प्रयोग—लै नग मोर स मुंद भा बटा । गाड़ परें तो पै परगटा (पद०—जायसी, ३४।१०); जब जब गाड़ परति है हमको, तक करि लेत सहेया (सू० सा०—सूर, २०११); कटु कहिये गाड़े परे मुनि समुझि मुनाई । करहि अनभलेउ को भलो, अपनी भलाई (विनय०—तुलसी, ३५)

## गाढ़ा प्रेम

दृढ़ प्रेम । प्रयोग—देखी प्रीति गाड़ी, पंचे तनसूल ठाढ़ी और जोवन की बाड़ी विन विन घोर होती है (क० र०—सेनापति, ४९)

## गाढ़ा रंग चढ़ना

गहरा प्रभाव होना । प्रयोग—गायत्री पर इस प्रेम भक्ति का रंग घोर भी गाढ़ा चढ़ गया था (प्रेमा०—प्रेमचन्द, २७९)

## गाढ़ा संदेह

बहुत संदेह होना । प्रयोग—बहुरि सखी मुकलकनुत आवी,



पर्यो संदेह जिह गाढ़ी (सू० सा०—सूर, ४०९९)

### गाढ़ा समय

हुँदित । प्रयोग—पचीस रुपये का कागज लिखा तो मुश्किलसे सबह रुपये हाथ लगते थे मगर इस गाढ़े समयमें और क्या किया जाय (गोदान—प्रेमचंद, १०४); मेवाड़ के गाढ़े समय में काम आने वाले बोर मोड़ा व्यर्थ ही मौत के शिकार होंगे (विप०—प्रेमी, ३१)

### गाढ़ी कमाई

बहुत मेहनत से कमाया हुआ धन । प्रयोग—दादा की गाढ़ी कमाईके रुपये क्यों खर्चा करते हो ? (मान० (१)—प्रेमचंद, ७९); अधिकांश गरीबों की गाढ़ी कमाई में से छीना जाता है (विप०—प्रेमी, २१); मैं करता हूँ गाढ़ी कमाई (बुद्ध०—बच्चन, ६७)

(समा० मुहा०—गाढ़े की कमाई)

### गाढ़ी छनना

(१) गहरी दोस्ती होनी । प्रयोग—नीलमणि और कल्याण भगत की नाल एक ही जगह दबाई गई होगी तभी तो उनमें इतनी गाढ़ी छनती है (ब्रह्म०—दे०स०, १९)

(२) खूब गहरी भांग छननी । प्रयोग—भाग भांग रटने रहने से किन्ती समय गाढ़ी न छनेगी (मर्म०—हरिऔध, ५)

### गाढ़ी मेहनत

कठिन परिश्रम । प्रयोग—बिलाइत में बहुत से ऐसे लोग हो गये और अब भी मौजूद हैं जिन्होंने पुरुष में मोची चमार की नोकरी तथा पंशा इलातिगार कर गाढ़ी मेहनत के द्वारा ईमानदार रह जो कुछ लाभ उन्हें हुआ उसी में बराबर उधम करते हुए अंत में ऊँचे से ऊँचे पद पर पहुँचे (भट्ट० नि०—बा० भट्ट, ४०-४१)

### गाढ़े काम आना

मुसीबत के समय सहायक होना । प्रयोग—बोर न लेत, घटत नहि कबहुँ, आवत गाढ़े काम (सू० सा०—सूर, ९२)

### गाढ़े का संगी या साथी

विपत्ति में सहाय देने वाला । प्रयोग—कानु' पुकारों का यह जाऊँ । गाढ़े मौत होइ एहि ठाऊँ (पद०—जायसी, ३४१०); गोविन्द गाढ़े दिन के मौत (सू० सा०—सूर, ३१); क्यों रहीम खोजत नहीं, गाढ़े दिन को मित (रहीम कवि०—

रहीम, १३); गाढ़े दिनको मित बित में क्यों नहि राखहु (राधा० ग्रंथा०—राधा० दास, ५७)

### गाढ़े दिन

विपत्ति के दिन । प्रयोग—गोविन्द गाढ़े दिन के मौत (सू० सा०—सूर, ३१); आरत के हित, नाय घनाय के राम सहाय सही दिन गाढ़े (कवि०—तुलसी, १३५); बाढ़े दिन के मात हो, गाढ़े दिन रघुबीर (रहीम कवि०—रहीम, ९); गाढ़े दिन को मित बित में क्यों नहि राखहु (राधा० ग्रंथा०—राधा० दास, ५७); कभी वह जानना चाहता है कि अलोपी ने गाढ़े दिनके लिये कुछ बचा रखा है या नहीं (अतीत०—महादेवी, ९८)

### गाढ़े पड़ना—में पड़ना

विपत्ति में पड़ना । प्रयोग—एक परे माढ़े, एक डड़त हीं काढ़े एक देखत है ठाढ़े, कहै पावकु भयावनो (कवि०—तुलसी, ५३); ऐसा न कहो जीजी, बड़े गाढ़े में पड़कर आयी हूँ (मान० (१)—प्रेमचंद ११५); पड़ गई जाति गाढ़े में जिससे काइ उस जीभ को न क्यों लेते (सुमते०—हरिऔध, ८५)

### गाढ़े मित्र

घनिष्ठ मित्र । प्रयोग—पर पण्डितजी के मधुर भाषण, सद्व्यवहार और पांडित्यका पादरी साहब पर ऐसा प्रभाव पड़ा कि वह उनके गाढ़े मित्र बन गये (पद्म पराग—पद्म० शर्मा, ४३)

### गाढ़े में पड़ना

### दे० गाढ़े पड़ना

### गात शीतल करना

पूर्ण रूप से शांति पहुँचाना । प्रयोग—कहि कहि कथा क्याम सुन्दर की, सीतल करि सब गात (सू० सा०—सूर, ४५११)

### गात शीतल होना

प्रानन्द होना । प्रयोग—देनि गोवाटहि पूछिऊँ माला । सुनि प्रसंगु भये सीतल गाता (राम०(अ)—तुलसी, ४१४)

### गाना उखड़ जाना

गाने का प्रभावहीन हो जाना । प्रयोग—सुन जिसे पग सुनव से उखड़े क्यों नहीं वह उखड़ गया गाना (बोले०—हरिऔध, १९६)



### गाना जमना

गाने का प्रभावपूर्ण होना जिससे लोग मग्न हो जायें। प्रयोग—ताल घाता ताल पर होवे मगर, जब जमा सब जी जमे गाना जमा (बोल०—हरिऔध, १४२)

### गाल करना

मुँह जोरी करना, मुँह से अंड वंड बकना। प्रयोग—आई हंसति कहति हरि येई बहुत करत हे गाल (सू० सा०—सूर, ३५१६); कत गिख देइ हमहि कोउ माई गालु करव केहि कर वनु पाई (राम०(अ)—तुलसी, ३८४)

### गाल चलना

आत्म प्रशंसा करनी। बड़ी बड़ी बातें करनी। प्रयोग—तब कि चलिहि घस गाल तुम्हारा (राम०(लं)—तुलसी, ८९०)

### गाल चोरना

बोलने न देना। प्रयोग—पाजियों को गाल क्यों दे मारने, सामने दुख फिरकियां फिरती रहें। जिस तरह हो चीर देंगे गाल हम चिर गईं तो उंगलियां चिरती रहें (चुमते०—हरिऔध, ७)

### गाल तमतमा उठना

क्रुद्ध होना। प्रयोग—हो न जावें तमाम हम कैसे आपका गाल तमतमा घाया (चोले०—हरिऔध, ४३)

### गाल फुलाना

(१) कठ कर न बोलना। प्रयोग—दुइ की होइ एक समय भुझाला। हंसव ठाढ़ फलाउव गाला (राम०(अ)—तुलसी, ४०५); दिल में जलन तो थी ही, जरा सा भी मौका मिलते आग भड़क उठती, दो-चार गाली गलौव होती घोर फिर तीन चार मात्र के लिए दोनों ओर के गाल फूल आते (सतमी०—राहुल, २८); पा जिन्हें फूल फल चले, उनसे चाहिये क्या गाल फुला लेना (बोल०—हरिऔध, ७९)  
(२) बड़ बड़ कर बातें करना। प्रयोग—सो मनु मनुज साब हम भाई वचन कहति सब गाल फुलाई (राम०(लं)—तुलसी, ८६९)

### गाल बजाना या मारना

(१) डींग मारना। प्रयोग—व्यर्थ मरहु जनि गाल बजाई मन-मोदकन्हि कि भूज बुलाई (राम०(बाल)—तुलसी, ४६)

२५३); मुइ वृषा जनि मारनि गाला (राम०(लं)—तुलसी, ८९०); केवल उन्हीं की चाह और उन्हीं की बात है जिन्हें झूठी खरखाही दिखाना या लम्बा बोड़ा गाल बजाना आता है (भा० प्र० (१)—भारतेन्दु, २५९); वेद पढ़ कर भी उसके अग्निप्राय को न जानने वाला पुरुष कोरा गाल बजाने वाला कहाता है (दंडाली०(२)—चतुर०, ८७); कोई बहुत गाल बजाता है तो भी कहते हैं—बड़ा कहीं का हन आया (गुलेरी ग्रंथा० (१)—गुलेरी, २१८); पाजियों को गाल क्यों दे मारने (चुमते०—हरिऔध, ७) (—)

(२) भला बुरा कहना। प्रयोग—अपनी भेद तुम्हें नहीं कहे, देखहु जाइ चरित तुम बाक जैसे गाल बजेहे (सू० सा०—सूर, २३४२) द० (—); देखिए प्रयोग १ में (—) भी

(३) जोर गुल करना। प्रयोग—धी दामा विपमादिक स्वाल। बल दिनि मये बजावत गाल (नंद० ग्रंथा०—नंद०, २४७)

### गाल मारना

दे० गाल बजाना

### गाल लाल होना

(१) चेहरा तमतमा जाना—(गोब से)। प्रयोग—जब हुई लाल छाखें तब गाल कैसे न लाललाल बनें (चोले०—हरिऔध, ४३)

(२) लज्जा से गालों पर लालिमा आनी।

### गाली खाना

दुर्वचन, निंदा या गाली सुननी। प्रयोग—इस नई घोर समाज-विषय बातें कहने के निचे इन्हें बड़ी बड़ी गालियां खानी पड़ीं (राधा० ग्रंथा०—राधा० दास, २८४)

### गाली देना

दुर्वचन कहना, भलाबुरा कहना। प्रयोग—एहि बिधि बिलपहि पुर नर नारी देहि कुचालिहि कोटिक गारो (राम०(अ)—तुलसी, ४२०); जब लोगों का कुछ बनता है तो उसको गन्धवाद तो गोड़े लोग देते हैं पर जो कुछ काम बिगड़ता है तो गाली सभी देते हैं (भा० प्र० (३)—भारतेन्दु, ८५९)

### गिन गिन कर पैर रखना

बहुत समझ बुझ कर काम करना। प्रयोग—सोभा की



बिसाति चोरें धरति बहु भाति चतुर है मुख गनि गनि  
इग धारी है (क० र०—तेनापति, ८)

### गिनती गिनना,

महत्व मानना, परवाह करनी। प्रयोग—तब तें गनति  
नहीं यह काहुहि जब तें उन मुंह लाई (सू० सा०—सूर,  
१८८८); खो ये नन भए गरबीले, जब काहुं हम लेखत  
(सू० सा०—सूर, २८५३); कंसहि को गिनती गने जाको  
हमहि कहाहु दिये दान पै बाचिहो, नातरु नहीं निबाहु  
(सू० सा०—सूर, २०७९); बाम देव मारीचहु तो संग,  
प्रबल सकल लल, घर सुबाहु काहु न गने (केशव० (२)—  
केशव, २६३); जाहि चाहि उहिम कियो, गने न निसि मग  
दाभ। कल चिकान्यो जनत सो, रण्यो अजस को लाभ  
(मति० मक०—मतिराम, २०४); अपने कामों में कटो की  
गिनती मत करो—वह गिनने लायक नहीं है (परस—  
जैनेन्द्र, ९७)

### गिनती न होना

बेशुमार होना। प्रयोग—इसी तरह कई छोटी-मोटी  
घासपास की जमींदारी भी उनके हाथ आ गई थी।  
खेतों की तो गिनती न थी (तिल्ली—प्रसाद, १८२)

### गिनती में होना

कुछ महत्व का समझा जाना। प्रयोग— $\times \times$  और  $y$   
पादी लगाई किसने थी? रा०—अब सरकार बापें लगा-  
ईन, हमार काहे मां गिनती? (रेशमी०—राम० वर्मा, १७८);  
मैं तो अब किसी गिनती में नहीं हूँ (निर्मला—प्रेमचंद,  
१००)

(समा० मुहा०—गिनती में आना,—गिना जाना)

### गिनना

#### ३० गिनती गिनना

#### गिनेगिने

घोड़े से। प्रयोग—भारतमित्र घकेला पत्र था और उस  
समय हिन्दी लेखक भी गिने-गिने से (गु० नि०—बा०  
मु० गु०, ३३८)

(समा० मुहा०—गिने-चुने, गिने गिनाए)

#### गिरगिट की तरह रंग बदलना

बहुत जल्दी सम्मति या मिडान्त बदलना। प्रयोग—ज्ञान

के गिरगिटपनके ऐसे-ऐसे शत-शत उदाहरण सहज ही पेश  
किये जा सकते हैं (अपनी खबर—उग्र, ५१); दरोगा जी  
आज पल पल बाद गिरगिट के समान रंग क्यों बदल रहे  
थे (ब्रह्म०—दे० स०, ९५)

(समा० मुहा०—गिरगिटपन)

### गिरता जमाना

खराब धार्मिक स्थिति वाला जमाना। प्रयोग—इस गिरतीके  
जमाने में थोड़ी बहुत किताबें लोग जरूर ही खरीदते हैं  
(बु० द०—अ० ना०, २२०)

### गिरता पड़ता

किसी प्रकार। प्रयोग—वह गिरिस्तो घोर प्रेरितस गिरतो  
पड़ती चलने भी लगी है (सुनीता—जैनेन्द्र, ५)

### गिरती हालत, गिरते दिन

बुरे दिन। प्रयोग—बड़े कष्ट की दशा में पड़कर भी ऐसे  
धीरज के साथ चुपचाप अपने गिरते दिन की दुर्गति भोग  
लेते हैं (मट्ट नि०—बा० मट्ट, २६); अपने गिरते हुए  
दिनों में ऊपरी ठाठ दिखाने की ओर लोगों की मनोवृत्ति  
बढ़ जाती है (विप०—प्रेमी, २१); गिरती हालत के होने पर  
भी ये तो घालिख के मालिक ही ना (बल०—नागा०, ६२)

### गिरते दिन

#### ३० गिरती हालत

### गिरना

(१) पतन होना। प्रयोग—एक बार इनके घाहक भी  
दो डेढ़ हजार के लगभग हो गये थे  $\times \times$  इतने पर भी यह  
पत्र गिरा (गु० नि०—बा० मु० गु०, ३३५); क्या गिरने इसी  
तरह दिन दिन क्या फिरंगे न दिन हमारे अब (चुमते०  
—हरिऔध, १८); मैं डर रहा था कि मैं गिर रहा हूँ  
(चेतन—अश्क, २१२); कम से कम उन पर यह निराशा  
का उन्माद और जन्मभर का सियापा तो नहीं बढ़ा था कि  
हम गिरते ही जायेंगे (गुलेरी ग्रंथ (१)—गुलेरी, १०४-५);  
मैं साफ साबित कर देता कि जो आदमी छोटी छोटी  
रकमों पर गिरता है वह ऐसे बड़े मामले में बेचोस नहीं रह  
सकता (प्रेमा०—प्रेमचंद, २५१) (—)

(२) वृद्ध प्रमाणित होना। प्रयोग—दिग्गज विद्वानों



के साथ पत्र व्यवहार में ग्राम्य समाज के पक्ष को पंडितजी ने गिरने न दिया (पहल पत्राग—पृष्ठ ० शर्मा, ८९)

(३) लालायित होना । प्रयोग—देखिए प्रयोग(१)में (÷)

**गिरह का**

दे० गांठ का

**गिरह में दम होना**

दे० गांठ में पैसा होना

**गिरा हुआ होना**

पतित होना, आदर्श से च्युत होना । प्रयोग—आप सब लोग जानते हैं कि परभृदपाल कितना गिरा हुआ आदमी है (भूले०—भाग० वर्मा, ४८); शायद तुमने गिरे हुए आदमी पर ठोकर मारना मुनासिब न समझा (गहन—प्रेमचंद, २९०); नित बहुत दौड़ धूप जी से कर जो गिरी जानि को उठा देवें (चुमते०—हरिऔध, ५)

**गिराना**

भ्रष्ट करना । प्रयोग—मेरे भीत, तुम किसी को उठाने में असमर्थ, गिराने में ही कमाओ नाम (बुद्ध०—बच्चन, १०५)

**गिरी दशा होना**

हीनावस्था होनी । प्रयोग—मान लीजिए मेरी स्थिति आर्थिक दृष्टि से बहुत गिरी होती (जहाज०—इ० जोशी, ३७५)

**गिलहरी का रंग लाना**

उपयुक्त स्थिति को प्राप्त होना । प्रयोग—अब रंग लाई गिलहरी—घरे भाद, अब तो आही गए हो, सब देख लेना और समझ लेना (मा—कोशिक, १८४)

**गीत गाना**

प्रशंसा करनी । प्रयोग—गालियां हैं आज उनको मिल रही गीत जिनका देवते थे गा रहे (चुमते०—हरिऔध, ८३)

**गीदड़ का शेर बनना**

कायर का बहादुरी दिखाना । प्रयोग—देख शेर गीदड़ का बनना । हंसते हंसते लोट गए हम (बोल०—हरिऔध, १०६)

**गीदड़ भभकी देना**

भूठा भय दिखलाना । प्रयोग—यहां चाहे जो कह लो अदालतमें तुम्हारी गीदड़ भभकी नहीं चल सकती (परीक्षा०

—श्री०दास, ९१); जनता इतनी समझदार तो है नहीं कि इन रहस्यों को समझे । गीदड़ भभकी में आ जायगी (मान० (३)—प्रेमचंद, २९४)

**गीदड़ होना**

कायर होना । प्रयोग—मेरो—'मूठले वाले समझते थे, मुझे गवाह ही न मिले' । एक—'सब गीदड़ हैं गीदड़' (रंग० (२)—प्रेमचंद, १३१); कंप जाते हैं पत्ता खड़के घोरो को बन जाते हैं यम देख शेर गीदड़ का बनना, हंसते हंसते लोट गये हम (बोल०—हरिऔध, १०६)

**गीली आंख**

धनपूर्णा नेत्र । प्रयोग—जो बालिका एक दिन छे दम्भ के कंचुक के लिए लालायित हो गीली आंखोंसे पित्तसे याचना कर चुकी थी, धात जीवन के ऐसे संघर्ष में ब्या पड़ी थी, जिसकी कदाचित ही कोई युक्ती संभावना कर सकती है (वेशाली० (१)—चतुर०, २९)

**गीली कहानी**

करुणापूर्ण जीवन-गाथा । प्रयोग—रानी की सब दिन गीली रही कथा है (चक्र०—दिनकर, २३)

**गुजर जाना**

मृत्यु हो जानी । प्रयोग—जब की बात है, तब पं० भगवान दीन गुजर चुके थे (कुली०—निराला, ३६)

**गुड़ खाकर गुंगा होना**

अनुभव करना पर कह न पाना । प्रयोग—नैनन्ह डरहि मोति ओ गुंगा । जम गुर खाइ रहा होइ गुंगा (पद०—जायसी, ११७)

**गुड़ खाना गुलगुले से परहेज करना**

एक ही प्रकार का एक काम तो करना पर दूसरे संवचना । प्रयोग—इसका अर्थ यह है कि आप गुड़ खाते हैं, गुलगुले से परहेज करते हैं (कर्म०—प्रेमचंद, १०४)

(समा० मुहा०—गुड़ खाना गुलगुले से घिनाना)

**गुड़-गोबर करना**

बना हुआ काम बिगाड़ देना । प्रयोग—यह इम्फास भाई मेरा जो है न, सब गुड़ गोबर करने वाला निकला (परती०—रेणु, ३२२); अपने जी के पीछे तुम सब गुड़ गोबर किए डाल रही हो (मा—कोशिक, ६२)

(समा० मुहा०—गुड़-गोड़ठा करना)



गुड़ गोबर होना

१८४

गुबार निकालना

**गुड़ गोबर होना**

काम या बात बिगड़ जानी। प्रयोग—घोर बार, ऐसा न करना नहीं सब गुड़ गोबर हो जायगा (मा—शैशिक, ३०१)

**गुड़-चीटा होना**

किसी काम या चीज से एकदम बिपटें रहना। प्रयोग—सूरदास जबला हम भोरी-गुड़ चीटी ज्यों पानी (सू० सा०—सूर, ४५७६); और उस वाजवन्ध को देखो, इन बिदेहों के पीछे कैसे गुड़ का चिऊंटा बनकर बिपटा है (देशाली० (१)—चतुर०, १४४)

**गुड़-दूध से नहाना**

ऐसवर्ष में रहना। प्रयोग—घभी तक खाने को नहीं जुटता था, अब गुड़ दूध से नहावेगी (मृग०—सू० वर्मा, २०२)

**गुड़ न तोता होना न मीठा**

कोई असर न होना, व्यर्थ होना। प्रयोग—एक शीशी गोली खा डाली। न गुड़ तोता न मीठा—सब मानिये मेम साहब! आपकी दवा मेरे-जैसे उजड़ों के लिए नहीं (तितली—प्रसाद, २३२४)

**गुड़ से मरे तो जहर न देना**

मिठास में काम बने तो कड़ाई न करना। प्रयोग—जो मधु मरें, न मारिये माहुर देइ सो काउ। जग ब्रति हारे परमधर, हारि जिते रघुराउ (दोहा०—तुलसी, ४३३)

**गुड़ड़ी की डोर तोड़ देना**

कोई सम्बन्ध न रखना। प्रयोग—सूरदास करि काज आपनो गुड़ी डोर ज्यों तोरी (सू० सा०—सूर, ३९७९)  
(समा० मुहा०—गुड़ड़ी की डोर काट देना)

**गुड़ की खान,—के धाम**

बनेक गुणों वाला। प्रयोग—जगदविका रूप गुन खानी (राम० (बाल)—तुलसी, २५४); मायाधीन जान गुन धाम (राम० (बाल)—तुलसी, १३०); तिरौटिया राजवन्ध क्षत्रिय-कुल का अभिमान है तिम पर हमारी कृपा रूप घोर गुन की खान है (विप०—प्रेमी, १५)

**गुण के धाम**

दे० गुण की खान

**गुण गाना**

(१) प्रशंसा करनी। प्रयोग—कबीर मृता क्या करै, गुण

गोविन्दके गाह(कबीर ग्रंथा०—कबीर, ६) (—); रहति रमना नाम रटि-रटि कंठ करि गुन गान (सू० सा०—सूर, ४१९६)  
नेति नेति कहि जामु गुन करहि निरंतर गान (राम० (बाल)—तुलसी, २०); वह भी तो उसी का गुण गाते हैं

(भा० प्र०(१)—भारतेन्दु, २६३)

(२) सद्गुणों का स्मरण करना। प्रयोग—देखिए प्रयोग (१) में (—)

**गुण-ग्राहक होना**

गुण की कद्र करने वाला होना। प्रयोग—जब गुण का ग्राहक मिले, तब गुण लाभ बिकाइ (कबीर-ग्रंथा०—कबीर, ७५); समर्थ सरनागत हितकारी। गुण ग्राहक अवगुण अध हारो (राम० (अ)—तुलसी, ६५५); बिनु गुन लहे न कोइ सहस नर ग्राहक गुन के (कुण्ड०—गिरधरदास, ९); ईयां में गुण ग्राहकता नहीं होती (रंग० (१)—प्रेमचंद, ७६)

**गुत्थी सुलझाना**

(१) समस्या हल करनी। प्रयोग—किसीने शाष्ट्रभाषा के महत्व को समझाया और किसी ने राजनीति की गुत्थी को सुलझाया (पद्म पराग—पद्म० शर्मा); गुत्थियां किस तरह मूज्झ सकती जब रहे हम उलझ उलझ जाते (चुभते०—हरिऔध, १३७)

(२) दुराय या मनोमालिन्य को दूर करना।

**गुदगद्दी होना**

आनंद से सिहरन होनी। प्रयोग—बड़े महंगू के मन में भी गुदगद्दी होने लगी (तितली—प्रसाद, १३७)

**गुनाह बेलज्जत होना**

मूल में बदनाम होना। प्रयोग—घरर आप होखियार है तो उसे लेकर कायदा उठावेंगे, नही डघर-उधर के घबके खावेंगे। आपके ऊपर गुनाह-बेलज्जत की ममज साबिक आवेगी (गशन—प्रेमचंद, २५५)

**गुबार निकालना**

मन की लीज प्रकट करना। प्रयोग—मैं गुस्से में भभक नेता हूँ और चलो, मन का गुबार निकल जाता है (कल्याणी—जेन्नेन्द्र, १२१)

(समा० मुहा०—गुबार उतारना)



### गुरु करना

गुरु बनाना । प्रयोग—सूर कहो गुरु कौन करे अलि कौन सुने मत फीको (सू० सा०—सूर, ४१४८)

### गुरु घंटाल होना

अत्यन्त चालाक होना । प्रयोग—अर्वाचीन राष्ट्रनीति के गुरु घंटाल जिस समय अपनी किसी गहरी चाल से किसी देश की निरपराध जनता का सर्वनाश करते हैं, उस समय वे दया पादि दुर्बलताओं से निरलिप्त, केवल बुद्धि के कठपुतले दिखाई पड़ते हैं (चित्ता०(१)—शुक्ल, १५७)

### गुरु होना

बड़ कर होना । प्रयोग—तुम्हारे लाला साहब के गुरु हैं (सू० सु०—सुदर्शन, १५३)

### गुर्दा होना

हिम्मत होनी । प्रयोग—यह तुम्हीं लोगों का गुर्दा है कि प्रञ्जली भर रुपये तकदीर के भरोसे गिन देते हो (गोदान—प्रेमचंद, ८)

### गुल खिलना

विचित्र घटना घटनी ; बगैडा खड़ा होना । प्रयोग—क्या बात खत्म हो गई है या अभी और कुछ गुल खिलेगा ? (शेखर (२)—अज्ञेय, ४२); ये रियासती मामले हैं, तु देखती रह । क्या-क्या गुल खिलते हैं (गोली—चतु०, २०६); दरोगा पहले रिसवत मांगते थे, मगर जब मैं घर से रुपए लेकर गया, तो वही और ही गुल खिल चुका था (गवन—प्रेमचंद, २३६)

### गुल खिलाना

घनोखा काम करना । प्रयोग—अब मेरी तुनी बोलेगी, नया खिलाऊंगी गुल (नूर०—भक्त, ६२); भूल मत, सोच, गुल खिलाना छोड़ (बोल०—हरिऔध, ८१)

### गुल गपाड़ा होना

(१) व्यर्थ की बातें । प्रयोग—घापकी लम्बी-चोड़ी कूँफों और हू-हुल्लड़ देखकर तो यही प्रतीत होने लगता है कि न जाने कौसी भारी बात आप कहेंगे पर पास जाते ही मालूम हो जाता है कि देहाती गुलगपाड़े से बढ़कर कुछ नहीं है (गु० नि०—वा० मु० गु०, ४५२)

(२) गोर होना ।

### गुलछरें उड़ाना

मौज करना । प्रयोग—हज़र खुश हो जाय और बंदे की आमद हो पारों के गुलछरें उड़ें (प्र०पी०—प्र० ना० मि०, ५८) ; यह तो नहीं होता कि पुरुष तो गुलछरें उड़ाये और स्त्री उसके नाम को रोती रहे (कर्म०—प्रेमचंद, २००); कम्बलत किलों और महलों में बैठे-बैठे गुलछरें उड़ाते हैं (झासी०—वृ० वर्मा, १२९) ; उनकी आँखों में बस करके गुलछरें खूब उड़ाऊँगी (नूर०—भक्त, १०७)

### गुलाब का फूल होना

बहुत सुन्दर और सुकुमार होना । प्रयोग—कहते थे हीरे का टुकड़ा, गुलाब का फूल है (लिली—निराला, ११) (समा० मुहा०—गुलाब होना)

### गुलाबी

न अधिक न न्यून, हल्का । प्रयोग—गुलाबी नशेमें विचारों का तार बंधा (गु० नि०—वा० मु० गु०, २३४); एक मीठी मादकता भरी आशावादिता एक मोहक गुलाबी नशेकी तरह मेरे मनमें और प्राणों में आने लगी (जहाज०—इ० जे० शो, १९); गर्मी समाप्त हो चुकी थी और गुलाबी जाड़ा पड़ने लगा था (इंस्टा०—भग० वर्मा, ४८); फागुन के गुलाबी जाड़े की वह सुनहली संध्या क्या भलाई जा सकती है (अतीत०—महादेवी, ६०)

### गुलाम होना

बन में होना । प्रयोग—नैना भए बजाइ गुलाम (सू० सा०—सूर, २८५७); बेरी भई मति मेरी निहारि के सील-सरूप कृपा-ठकुराइन (घन० कवित्त—घना०, १७३); इतने सोने के लिये संसार का सबसे बड़ा धर्महिमा मेरा जीवन भर का गुलाम बन जाय (इंस्टा०—भग० वर्मा, १९)

### गुस्सा उड़ना

गुस्सा दूर होना । प्रयोग—साहब के सामने आते ही डिप्टी साहब का सारा गुस्सा उड़ गया (रंग० (१)—प्रेमचंद, ३४४)

### गुस्सा उबलना,—बल खाना

क्रोध का आवेग होना । प्रयोग—सत्यधन का गुस्सा उबल रहा था और बल खा रहा था (परस—जैनेन्द्र, ९)

(समा० मुहा०—गुस्सा चढ़ना)



गुस्सा उड़ा होना

१८९

गृहस्थी का चरखा

**गुस्सा उड़ा होना**

क्रोध शांत होना। प्रयोग—गंगाधर राव के क्रोध ने कुछ ठण्ठक पाई (झांसी—पृ० वर्मा, ४९)

(समा० मुद्रा०—गुस्सा उतरना,—निकलना)

**गुस्सा धूँक देना**

क्रोध दूर करना। प्रयोग—धूँक डालो इस गुस्से को, माफ़ी मांगता हूँ (मूलै०—मग० वर्मा, ४४४)

**गुस्सा पी जाना,—मारना**

गुस्से को भीतर ही भीतर दबा जाना। प्रयोग—बिरम विरोध रिसिहि पे होई रिसि मारै तेहि मार न कोई (पट०—जायसी, ५५५); राजा पर इन व्यंग की चोट पड़ गई, पर वे गुस्से को पीने लगे (झांसी—पृ० वर्मा, ५०); बातें क्या सते भी खाकर वे गुस्से को पी जाते हैं (नूर०—मक्त, १०७)

**गुस्सा बल खाना**

दे० गुस्सा उबलना

**गुस्सा बुझ जाना,—हवा हो जाना**

गुस्सा शांत हो जाना। प्रयोग—मुख तन चित्त, बिहमि हरि दीन्हो, रिस तब गई बुझाई (सु० सा०—सूर, २९७); क्या कहकर वहाँ से घामे वे और यहाँ आकर मौज में जा गये ? सारा गुस्सा हवा हो गया (गठन—प्रेमचंद, ३१०)

**गुस्सा मारना**

दे० गुस्सा पी जाना

**गुस्सा हवा हो जाना**

दे० गुस्सा बुझ जाना

**गुस्से में पगना**

बहुत क्रोधित होना। प्रयोग—मुगड़ गूर वह पाई चाहै, तापर यह रिस पाने रो (सु० सा०—सूर, १९०७)

(समा० मुद्रा०—गुस्से में भरा होना)

**गुस्से से जलना**

बहुत अधिक क्रोधित होना। प्रयोग—मिथ्याजी गुस्से में जल रहे हैं, जाननी हो ? (पटली०—रेणु, ४६४)

(समा० मुद्रा०—गुस्से के मारे भूल होना,—लाल होना)

**गुहार लगना**

पुकार पर ध्यान देना। प्रयोग—जान प्यारे लागी न गुहार तो गुहार करि, जूनि है निकसि टेक गहैं पनधारे की (घन० कवित्त—घना०, ३१)

**गूंगा होना**

प्रतिवाद न करने वाला होना। प्रयोग—बह घापकी गूंगी प्रजा का एक बकील है जिसके सिद्धित होकर मुंह खोलने तक घाप कुछ करना नहीं चाहते (गु० नि०—बा० सु० गु०, २१०)

**गूंगे का गुड़ होना**

अनुभूति जो कहीं न जा सके। प्रयोग—अकथ कहांगी प्रेम की कछु कहीं न जाई गूंगे केरी सरकरा, बेटे मुसकाई (कबीर प्र०—कबीर, १३९); गूंगे को गूर कियो सबनि भित्ति, घबलनि को जू भुलावो (सु० सा०—सूर, ४१०९) एक कारवी का कवि यह वाक्य कहके कितनी रसज्ञता का अधिकारी है कि रसिक गरा को गूंगे का गुड़ हो रहा है (प्र० पी०—प्र० ना० मि०, ५६)

**गूंगे को घापी**

अप्रत्याशित किन्तु अति वांछित लाभ होना। प्रयोग—मुख प्रसन्न मन मिटा बिषाद, भा जनु गूंगेहि गिरा प्रसाद (राम० (प्र)—सुलसी, ६६४)

**गूलर का फल फोड़ना**

गुल रहस्य को प्रकट करना। प्रयोग—सूर मु बहुत कहे न रहै रस, गूलर को फल फोरे (सु० सा०—सूर, ४२१५)

(समा० मुद्रा०—गूलर का पेट फाड़ना)

**गूढ़-दृष्टि होना**

खेने की सावसा होनी; आस लगी होनी। प्रयोग—रोक मोबीर पर उनकी गूढ़-दृष्टि थी ही (वैशाली० (१)—चतुर०, ३१३)

**गृहस्थी का चरखा,—की चक्की**

गृहस्थी की संभट। प्रयोग—गृहस्थी के चरखे में पड़कर बड़ों-बड़ों की नीति भी स्फुरित हो जाती है (कर्म०—प्रेमचंद, ४६); मैं चाहता हूँ कि तुम्हारा मित्रास बिगड़े



घीर तुम गृहस्थी की चक्की से दूर रहो (मान० (२)—  
प्रेमचंद, ३२०)

### गृहस्थी की चक्की

दे० गृहस्थी का चरखा

### गृहस्थी चलाना

(१) गृहस्थी की व्यवस्था करनी। प्रयोग—घपने कपड़े  
लसे तक तो जतन से रल नहीं सकती चक्की है गृहस्थी  
चलाने (मान० (१)—प्रेमचंद, ६०)

(२) गृहस्थी का खर्च चलाना।

### गृहस्थी जोड़ना

कमाकर गृहस्थी को भरा पूरा करना। प्रयोग—मैंने  
ही पेट और तन काट कर यह गृहस्थी जोड़ी है (मान०  
(१)—प्रेमचंद, ७१); मैं यह चाहती हूँ कि तुम्हारी माँ  
कमाई, मेरी और तुम्हारी जोड़ी हुई गृहस्थी तीन-तेरह  
न हो (मा—कौशिक, १९)

### गृहस्थी बांधना

गृहस्थी ठेकर रहना—खर्च बगैरह की व्यवस्था करनी।  
प्रयोग—वे अपना अलग कमाते-खाते हैं, अपनी गृहस्थी  
बांध रहे हैं, उन्हें बुरा मानने से मतलब ? (मा—  
कौशिक, २०)

### गेहूँ का रंग

न बहुत गोरा न सांक्ला, तपा हुआ सा रंग। प्रयोग—  
अटल की दृष्टि साकी के सुंदर गेहूँ के चहरे पर गई  
(मृग०—वृ० वर्मा, ८); जिलता गेहूँ का रंग, भारी देह,  
गोपला मुँह, बँठा हुआ गला और रीबीला व्यक्तित्व  
उनकी विशेषता है (ये कोठे०—अ० ना०, १०५)

### गेहूँ के साथ घुन पिसना

बड़ों के साथ छोटी का नाश होना। प्रयोग—मुनि  
बसिठन मन अपनी रोसा। जो पीसत घुन जाग्रहि पीसा  
(पद०—जायसी, २३४); गेहूँ संग घुन पिस बुरे संग दुखित  
भले जन (राधा० प्रथा०—राधा० दास, ३९); ऐसा न हो कि  
गेहूँ के साथ घुन भी पिस जाय (प्रेमा०—प्रेमचंद, २२३)

### गोटी चित्त पड़ना

युक्ति सफल होनी। प्रयोग—गुट्टाजी की गोटी चित्त  
पड़ी (बोने०—रा० रा०, १५८)

### गोटी बैठना,—लाल होना

(१) बोलना। प्रयोग—लाल गोटी हो जाती है, दाँव  
के पड़ पावे पावे (शंख) (मर्म०—हरिश्चंद्र, ८८)(+);  
बड़ी बात बाबों की माया तब भी अपार थी और  
अब भी। बात-बात में अपनी गोटी लाल करते हैं  
(बल०—नागा०, ५४)

(२) युक्ति सफल होनी। प्रयोग—आप एक लाभ के  
स्रोत से सड़े हो गए, अगर गोटी लाल हो जाती तो छात्र  
आप एक लाभ के स्वामी होते (गादान—प्रेमचंद, २३५);  
गोटी बैठ गई ..... सोमा और बामुदेव को कालीचरण  
ने पटिया दिया है (मैला०—रंजु, ३६३); देखिए प्रयोग  
(१) में (+) भी।

### गोटी लाल होना

दे० गोटी बैठना

### गोड़ गिरना

(१) अनुनय विनय करना। प्रयोग—जब मैं करीब  
पाचा के गोड़ गिरी तब सब इन्तकाम हो सका है, इसे  
हिन्दी पढ़ाने का (जहाज०—इ० जोशी, १३०)

(२) प्रणाम करना।

(समा० मुहा०—गोड़ धरना,—पड़ना)

### गोला खाना

(१) लीन होना। प्रयोग—मैं यों ही बँठा-बँठा घपने  
सोच-विचारों में गोले खा रहा था (मा० मा० (१)—  
कि० गो०, १२)

(२) पोसा खाना।

### गोला मारना

(१) एकदम सन्नाटा खींच लेना। प्रयोग—मुखिया,  
भितरिया, जलपट्टिया तो यह मुनकर एकदम गोला मार  
गये (बूँद०—अ० ना०, १६०)

(२) बहुत दिनों के बाद दिलाई पड़ना।

(३) स्वी-प्रसंग करना।

(४) करने का आश्वासन देकर एकदम चुप बैठ जाना।

### गोद का

(१) दस्तक दिया हुआ। प्रयोग—ऐसा लड़का तो कि



### गोद पसार कर

चित्त प्रसन्न हो जाय। यह बात ही न पड़े कि गोद का है कि पेट का (मा—कौशिक, ३५)

(२) छोटा बालक।

### गोद पसार कर

विनय पूर्वक। प्रयोग—इहि कन्या मैं स्याम की, मांगी गोद पसारि (नंद०ग्रंथा०—नंद०, १७०)

### गोद फलना

संतान प्राप्ति होनी। प्रयोग—पुत्री, तू पति-परायणा हो तेरी गोद फले (रंग० (१)—प्रेमचंद, १४९)

### गोद भरना

(१) संतान होनी। प्रयोग—कुछ एक के घर भगवान की कृपा से गोद भर चुकी है (ज्ञान०—यशपाल, १३५)

(२) श्रीभागवती स्त्री के आंचल में नारियल इत्यादि देने की रस्म।

### गोद में डालना

घातिल छोड़ना। प्रयोग—मरती बर नाथ मोहि वाली। गयउ तुम्हारेहि कोछें पाली (समा० (उ)—तुलसी, १०४२)

### गोद लेना

दत्तक लेना। प्रयोग—उन्होंने बे-बोले ही मानों मुझे गोद ले लिया (अपनी लखर—उग्र, १०५); वह एक लड़का गोद लेना चाहते हैं (मा—कौशिक, ४३); जी, लड़की गोद ली है न, उसके हाथ पीले करते हैं (निशि०—वि० प्र०, ३२)

### गोद सूती होना

(१) संतान की मृत्यु होनी। प्रयोग—गोद सूनी हुई मरी पूरी है धरोहर बहुत बड़ा छोटी (बोल०—हरिऔध, ६९)

(२) संतान न होना।

### गोबर गणेश होना

मूर्त होना। प्रयोग—गोबर-गणेश ! तू कुछ कर सकता है ? (स्कंद०—प्रसाद, २९)

(समा० मुहा०—गोबर होना)

### गोबर पाथना

अर्थ का काम करना ; मूर्खता का काम करना।

प्रयोग—ये पग-पग में धर्मचष्ट होने की डर से व्याकुल गोबर ही पावते रहे (मट्ट० नि०—बा०भट्ट, १०५)

### गोरख धंधा होना

उलझी हुई या उलझा लेने वाली। प्रयोग—तुम्हारी व्याख्या का द्राविडी प्राणायाम तो गोरख धंधा हो गया है (पद्म० के पत्र—पद्म० शर्मा, १३१)

### गोल कर देना

(१) त्रिक न करना। प्रयोग—लेकिन दीपाली की चिट्ठी उसके पात पहुँचने का प्रबन्ध किया जा सका या या नहीं, इस सम्बन्ध में बात को गोल किये जा रही थी (कठ०—दे० स०, २९४)

(२) मोरो-मोरी हटा देना।

### गोल पारना

(१) भेँड़ डालना। प्रयोग—स्याए हरि कुसलात धन्य तुम घर-घर पार्यो गोल (सु० सा०—सू०, ४४५५)

(२) गिराह बनाना।

(समा० मुहा०—गोल डालना)

### गोल बात,—मटोल बात

ऐसी बात जो स्पष्ट न हो। प्रयोग—बीबेबी की उखड़ी हुई गोल-मटोल बातें सुनकर वह और भी उद्ध्विग्न हो गई (तिलसी—प्रसाद, १६५); धूर्त है, गोल-गोल बातों में जो धरम का मरम छिपाते हैं (चुमते०—हरिऔध, १२१)

(समा० मुहा०—गोलमोल बात)

### गोल मटोल बात

दे० गोल बात

### गोल-माल करना

(१) मिलावट करना। प्रयोग—तुम करो गोलमाल मत ऐसा (चुमते०—हरिऔध, १२१)

(२) गढ़बढ़ करना।

(३) इधर-उधर हटाना।

### गोली का टप्पा

एक गोली की मार जितना फासला। प्रयोग—हल्कू के खेल से कोई एक गोली के टप्पे पर आमों का एक बाग का (मान० (१)—प्रेमचंद, १४९)



### गोली मारना

बहुत तुच्छ समझना, तुच्छ समझ कर छोड़ देना ।  
प्रयोग—मेरी तो सलाह है, आप एलेक्शन की गोली मारें और अपने सालों पर मुकदमा दापर कर दें (गोदान—प्रेमचंद, २३७); तुम भी मारो गोली, हमको रुपए से मतलब (लिली—निराला, ३०)

### गोहार लगाना

पुकार की सुनवाई होनी । प्रयोग—ना कोई बरज न लाग गोहारी । अस एहि नगर होइ बटवारी (पद०—जायसी, ३५५)

### गौं के टेकी

मतलबी ; स्वार्थी । प्रयोग—एतौ अलि उनही के संगी, अपनी गौं के टेकी (सू० सा०—सूर, ४५१६)  
(समा० मुहा०—गौं के यार)

### गौं ताकना

अवसर की खोज में होना । प्रयोग—देखि लागि मधु कुटिल किराती । जिमि गर्ब तकइ छेउं केहि भांती (राम० (अ)—तुलसी, ३५३)

(समा० मुहा०—गौं देखना)

### ग्रंथ रंगना

ग्रंथ लिखना । प्रयोग—यदि दांतों के सम्बन्ध का वर्णन किया चाहें तो बड़े-बड़े ग्रंथ रंग डालें और पूरा न पढ़ें (प्र० पौ०—प्र० ना० मि०, ७७)

(समा० मुहा०—ग्रन्थ करना)

### ग्राहक पटाना

ग्राहक को राखी कर लेना । प्रयोग—दुकानदार का बेटा भी दुकान पर बैठते ही ग्राहक पटाना सीख जाता है (मेरे०—गुलाब०, ४९)

### ग्राहक टूटना

ग्राहकों का कम हो जाना । प्रयोग—धीरे-धीरे कारखाना टूट गया । जमीन टूट गई, ग्राहक टूट गए और वह भी टूट गया (मान० (५)—प्रेमचंद, ६५); धीरे-धीरे ग्राहक टूटने लगे (जहाज०—इ० जोशी, २५)

### ग्लानि से गलना

अत्यन्त ग्लानि का अनुभव करना । प्रयोग—सब सेबक गन गरहि गलानी (राम० (अ)—तुलसी, ५६३)

## घ

### घट घट में समाना

हर हृदय में स्थित होना, सर्व व्यापक होना। प्रयोग—मात पिता न दारा भाई, जल धल घट घट रह्यो समआई (सु० सा०—सुर, ४७१२)

### घड़ी गिनना

(१) मरने के निकट होना। प्रयोग—सख समीप दोखि केकई मानहुँ मीचु घरी गनि लेई (राम० (अ)—तुलसी, ४०९)

(२) उत्सुकता से घासरा देखना।

### घड़े को ठोंकना

परखना, परीक्षा करना। प्रयोग—मेहताने घड़े को ठोंका—मुझे संदेह है कि हमारे सभापति जी स्वयं ज्ञान-दान की एकता में विश्वास नहीं रखते हैं (गोदान—प्रेमचंद, ६८)

### घड़ों नशा चढ़ना

गहरा प्रभाव होना, जादू सा असर होना। प्रयोग—कम-बलत कौसी प्रेमभरी बातें करती थी कि मुझ पर घड़ों नशा चढ़ जाता था (मान० (२)—प्रेमचंद, ५४)

### घड़ों पानी पड़ जाना

अत्यंत लज्जित होना। प्रयोग—सज्जन पर घड़ों ठहा पानी पड़ रहा था (दुंद०—आ० ना०, ३८३); रानी साहब पर जैसे घड़ों पानी पड़ा (बोटी०—निराला, ८); सैठ साहब पर घड़ों पानी पड़ गया (सु० सु०—सुदर्शन, ६२)

### घनचक्र होना

संवरूप होना। प्रयोग—ज्या दस्त में अतिव घनचक्र

हो जाती है (रंग० (२)—प्रेमचंद, ८३)

### घर

(१) घर के व्यक्ति। प्रयोग—फाटक के पास जाते ही मालूम हुआ, सारा घर सांस सांघे हुए है (कुली०—निराला, ४५); देखना, एक बात का ध्यान रखना, घर लोभी न हो (मा—कौशिक, १३८)

(२) घर का सामान। प्रयोग—तो सारा घर उठाकर दे दीजिए (सु० सु०—सुदर्शन, ९९)

### घर आंगन होना

घर के समान परिचित होना। प्रयोग—मैं तो पच्चीस बार गण हूँ। अब जहाँ मेरे लिए घर आंगन हो गया है (बल०—नागा०, ४८)

### घर उजड़ना

(१) बस्ती गृहस्थी उजड़ जाना। प्रयोग—नारद बचन न मैं परिहरऊँ बसउ भवन उजाड़ नहि डरऊँ (राम० (बाल०)—तुलसी, ९१)

(२) पुत्र की मृत्यु होना। प्रयोग—मेरा तो घर उजड़ गया महतो, कोई एक सौटा पानी देने वाला भी नहीं (गोदान—प्रेमचंद, ८); वह घर उजड़ गया, उस घर का दीपक बुझ गया (प्रेमा०—प्रेमचंद, ७१)

(३) परिवार की हासत बिगड़ जाना।

### घर उजाड़ना

घर की स्थिति बिगाड़ना। प्रयोग—ना जी यह तो हमने



न हो सकेगा जो महाराज जगत परकाश और महारानी कामलता का हम जानबूझ कर घर उजाड़ें (इंशा०—इंशा०, १०९)

### घर करना

(१) प्रिय होना, प्रभाव डालना । प्रयोग—इनलप ने सोचा—उसकी बात घर कर रही है (झांसी०—पू० १११, २४०); एक अजीब उच्छ्वलता मेरे मन में घर किये हुई है (अम्ब—रा० वे०, ५८) (÷)

(२) बसना । प्रयोग—आसा एक जू राम की दूजी आस है रास । पाणी मांनि घर करे, ते भी मरे पियास (कवीर ग्रंथा०—कवीर, १९); बेदिली कैसे न दिल में घर करे पास दिल है पर दिलेरी है नहीं (चुभत्ते०—हरिऔध, ८९); मेरे भीतर जो कुंठा, पराजय और कटुता की भावनाएँ कुछ समय से घर करने लगी थीं वे एक अत्यंत तुच्छ कारण से बादल की तरह फटकर साफ हो गईं (जहाँज०—इ० जोशी, २०); मरने के समय जो गोविन्द स्वामी ने मातंगी से बर्षकार के विवाह का विरोध किया—इससे लोगों में यह शंका और घर कर गई (वैशाली० (१)—चतुर०, १००); देखिए प्रयोग (१) में (÷) भी

(३) ब्याह करना । प्रयोग—घर कीन्हें घर जात है, घर छोड़े घर जाइ । तुलसी घर-बन बीच ही, राम प्रेम पुर छाड़ (दोहा०—तुलसी, २५६); क्या वह कोई दूसरा घर नहीं कर सकती (मान० (७)—प्रेमचंद, २)

(४) घुसने के लिए स्थान निकालना ।

### घर का आदमी

कुटुम्बी या बहुत निकट का आदमी । प्रयोग—तुम घर के आदमी हो, तुम से क्या मोल भाव करना (गोदान—प्रेमचंद, २८)

### घर का चक्कर काटना

घर के आस पास बने रहना । प्रयोग—जब से यह आई है, गांध के लुच्चे घर का चक्कर काटने लगे हैं (बीने०—रा० रा०, २०४)

### घर का दीपक बुझ जाना

निर्वंश हो जाना । प्रयोग—वह घर उजड़ गया, उस घर का दीपक बुझ गया (प्रेमा०—प्रेमचंद, ७१)

### घर का भार आ पड़ना

परिवार के भरण-पोषण का दायित्व आ पड़ना । प्रयोग—पर उसकी मां मर गई और पूरा घर का भार आ पड़ा (दूधगाछ—दे० स०, ७५)

### घर का भेदी

रहस्य जानने वाला । प्रयोग—यह घर के भेदिया ने लंका डाह किया है (परती०—रेणु, ४९५)

### घर का होना न घाट का होना

कहीं का भी न रहना, हर ओर से जाना । प्रयोग—मारे तें रुहेलनि, बिडारे तें बुटेलनि के बहादुरखान हूँ है घाट को न घर को (भूषण ग्रंथा०—भूषण, २२५); क्या कहीं बस यही समझ लो कि इसके कारण मैं न घर की रह गयी, न घाट की (मान० (२)—प्रेमचंद, ३३८)

### घर काटे खाना,—खाये जाना,—फाड़े खाना

ऐसा सूना घर जिसमें रहना मुश्किल हो; घरका अप्रिय लगना । प्रयोग—किस तरह तब कटे सुनों से दिन घर अगर काट काट है खाता (बोल०—हरिऔध, २४४); तुम चले जाओगे भैया, तब तो घर और फाड़ खायगा (मान० (२)—प्रेमचंद, ६५); अभी तो घर काटे खाता है, तू रहेगी तो बिचारी कमला का भी जी बहलेगा (बीने०—रा० रा०, ७३); पर जब नशा ठंडा हुआ तो मुझे वह घर काटने लगा (सेवा०—प्रेमचंद, १५२); दुख हुआ होता जाता है सूना घर घर-घर खाता है (वैदेही०—हरिऔध, १०५)

### घर की चांदनी

घर के सुख-आनन्द का आधार । प्रयोग—पर बेटा, अब तो एक यही लड़की है । जो यह यहां रहेगी तो हमारा घर सन्धेरा पड़ा रहेगा । हमारे घर की चांदनी तो अब यही लड़की है (मिलाना—कौशिक, ९७)

### घर की पूंजी

पास का रुपया । प्रयोग—क्या मैं बोवा जरम ओहि भूँजी । खोद चलेउ परहूँ के पूंजी (पद०—जायसी, ७२)

### घर की मुर्गी दाल बराबर होना,—मुर्गी होना

अपनी बीज की कोई कद न होनी । प्रयोग—खर



पास, यह बात तो तुम मानोगी कि जावेद के लिए अब तुम घर की मुरगी बन गई (कठ०—दे०स०, २४१); मिवां पर की मुर्गी तो दाल बराबर होती है, जायका बाहर की ही मुर्गी में आता है (मा—कौशिक, १७९)

(समा० मुहा०—घर की मुर्गी साग बराबर होना)

**घर की मुर्गी होना**

दे० घर की मुर्गी दाल बराबर होना

**घर की लक्ष्मी होना**

भाग्यवान होना; कुशल भाग्यवती गृहिणी। प्रयोग—कोई इस तरह घर की लक्ष्मी पर हाथ छोड़ता है? (गोदान—प्रेमचन्द, १११)

**घर के भरे पूरे होना**

घन-जन से सम्पन्न होना। प्रयोग—इतने नेता हैं..... घर के भरे पूरे हैं (वीने०—रा० सा०, २५)

**घर के भीतर का कुआँ**

ऐसी वस्तु जिसका उपयोग कोई न कर सके। प्रयोग—सूरदास प्रभु तुम बिन जीवन घर भीतर को कूप (सूर—हि० श० सा०)

**घर के ही बड़े होना**

घर ही में बड़-बड़ कर बातें करनी। प्रयोग—स्वातिनि है घरही की बाड़ी (सु० सा०—सूर, १३९२); द्विज देवता घरहि के बाड़े (राम०(बाल)—तुलसी, २८२)

**घर खाये जाना**

दे० घर काटे खाना

**घर खोद डालना**

बार-बार किसी काम या बात के लिए कही जाना। प्रयोग—जब तक समझ न हुई, उसका घर खोद डाला (गोदान—प्रेमचन्द, २६७)

**घर खोना**

(१) घर की मान सम्पदा का नाश करना। प्रयोग—सूर स्वाम गारी कह दीजे, यह बुधि है घर-खोना (सु० सा०—सूर, २०८८); कबहुं बातनि ही घर खोबनि, कबहुं उठति दे गारिनि (सु०सा०—सूर०, २०९१)

(२) घर की गारी सम्पत्ति नष्ट कर देना।

**घर-घमंडी होना**

बहुत घमंडी होना। प्रयोग—सबमुन जिस भाषा के ठेकेदार आप जैसे घर-घमण्डी हों उस अभागी का बिनाश ही होता है (गु० नि०—वा० मु० गु०, ४३५)

**घर-घर**

हर जगह, हर घर। प्रयोग—काल्हिहि घर-घर डोलते, खाते वही चुराई (सु० सा०—सूर, २०७९); तुम घर-घर मंडरात घति बलि-भुक् से नन्दनाल (केशव(१)—केशव, २२१)

**घर-घर का भौंरा होना**

लोभी व्यक्ति। प्रयोग—हरीचंद घर-घर के भौंरा तुम मतलब के मीत (मा० ग्रं० (२)—भारतेन्दु, ७३)

**घर-घर तक फैलना**

सबको पता हो जाना। प्रयोग—सबेस होते ही यह बात घर-घर फैल जायेगी (गवन—प्रेमचन्द, १२३)

(समा० मुहा०—घर-घर तक पहुंचना)

**घर-घर मिट्टी का चूल्हा होना**

सब की एक सी ही दशा होनी। प्रयोग—सबके घर मिट्टी के चूल्हे हैं। आजकल किसके घर सोना बरसता है? (घरलो०—वि०प्र०, ३६)

(समा० मुहा०—घर-घर चूल्हा हांडी होना)

**घर घाट न पाना**

कोई घोर छोर न समझ पाना। प्रयोग—किसी को कुछ न समझता था पर किसी बात के सोच का घर-घाट न पाया था (ईशा०—ईशा०, ९१)

**घर घाट बसना**

विवाह होना। प्रयोग—घब यह बताओ कि तुम्हारा घर घाट कब बसेगा? (दूधगाछ—दे० स०, ३६८)

**घर घालना**

घर बिगाड़ना, कुल में कलंक लगाना। प्रयोग—इनि घहंकार घणें घर घाले, नाचत कुदत जमपुरि चाले (कबीरग्रंथा०—कबीर, १७७); कहु सेवा विरनाद के घर न घालु बुधि खोइ (पद०—जायसी, ४४१२); सूर स्वाम संग ही संग डोलत, औरनि के घर घालत (सु० सा०—सूर,



२८४९); बिचकेतु कर घर उन घाला (राम० (बाल) तुलसी, ९०); काको घर घालिबे कौ बसे कहुँ घनस्याम, घुघु भयो घुसन प्रात मेरे गृह घाए ही (केशव०—केशव, ४२); डोंग रच रच डकोसले फँला जब उन्होंने कि जाति घर घाले (चुमते०—हरिऔध, ११९); मे लोग भली बनकर सत्तर घर घालती हैं बापने (बुंद०—अ० ना०, ६३)

### घर घुसना होना, घर घुस्सु होना

वह मर्द जो घर में ही बँठा रहे। प्रयोग—दोस्तर ने विनोदपूर्वक कहा—यह क्यों नहीं पूछा कि घर घुसना आदमी किस कमरे में रहता है? (दोस्तर (२)—अज्ञेय, १२३); तीसरा घर घुस्सु है और बिलकुल निषट्ट (गबन—प्रेमचंद, ११०)

(समा० मुहा०—घर-घुस होना)

### घर-घुस्सु होना

दे० घर-घुसना होना

### घर चलना

(१) जीवन निर्वाह होना। प्रयोग—जब भलाई मिली नहीं उसमें किस तरह घर भली तरह चलता (चुमते०—हरिऔध, १८१); तो घर गिरस्ती में चलेमी (कर्म०—प्रेमचंद, ४२) (÷); अब सरकार घर कैसे चले (झोसी०—वृ० वर्मा, ९७) (÷)

(२) घर का काम चलना। प्रयोग—देखिए (१) में (÷)

### घर चलाना

गृहस्थी का खर्च चलाना। प्रयोग—जब से देवकान्त का पिता लम्बी बीमारी में एड़ियाँ रगड़-रगड़ कर चल बसा था, माँ ने अपने हाथों के परिश्रम से ही घर चलाया था (ब्रह्म०—दे० स०, १८७)

### घर छोड़ना

(१) संसार से विरक्त होना वैराग्य लेना। प्रयोग—स्पष्ट ही मालूम होता है कि वह घर छोड़ने की माया बड़ी प्रबल है और संसार का बिरला ही इसका शिकार होने से बच सकता है (अशोक०—ह० प्र० दि०, ३३)

(२) परिवार से सम्बन्ध तोड़ना।

### घर जोड़ना

संगारी बनना। प्रयोग—घर जोड़ने की अभिलाषा ही इस प्रवृत्ति का मूल कारण है (अशोक०—ह० प्र० दि०, ३२)

### घर डालना—में डालना

रखने रखना या बनाना। प्रयोग—यह स्थिर हो गया कि मुरदास ने उसे घर डाल दिया (रंग० (२)—प्रेमचंद, १०८); तो मेहरबान, मेरी धन यह है कि उसे अपने घर में डाल लीजिए (मूले०—भग० वर्मा, ४८८); राजा चाहे जिस जाति की लटकी के साथ व्याह करे, चाहे जितनी स्त्रियों को घर में डाल ले, वह कर सकता है (मृग०—वृ० वर्मा, २१६)

### घर-द्वार देखना

घर के काम काज की देखभाल करना। प्रयोग—अब उन्हें बुलाकर घर में रखो। अपना घर-द्वार देखें (मिसा०—कौशिक, ६५)

### घर पड़ना

(१) किसी स्त्री का किसी पुरुष के साथ उसकी हो कर रहना। प्रयोग—आखिर क्या देखकर मुभागी ने मेरी को छोड़ दिया, और सूर के घर पड़ गई (रंग० (२)—प्रेमचंद, १२१)

(२) किसी वस्तु की लागत मात्र।

### घर फाड़े खाना

दे० घर का काटे खाना

### घर फूँक तमाशा देखना

घर का रुपया पैसा गँवा कर, घर बरबाद करके मोज करना। प्रयोग—हाथी छोड़े भीड़ भटका, देखें सब घर फूँक तमाशा (गु० नि०—बा० मु० गु०, ६९८); मैं भी घर फूँक तमाशा देखने का असंगृहीत सुख अनुभव करने लगा (मेरे०—गुलाब०, २६)

### घर फूँक होना

सब कुछ खर्च कर डालनेवाला। प्रयोग—क्या ऐसा खर्चीला घर-फूँक व्यक्ति, जिसका सम्बन्ध वेदवाचों से जोड़ा जाता है, वह सचमुच भारती का सपूत हो सकता है (भारती०—रा०, रा०, ८)

### घर फूँकना

(१) घर का सब कुछ खर्च कर डालना। प्रयोग—वह



तो घर फूँक कर ही चैन लेगा (भारती०—रा० रा०, ९७)  
(२) घर की प्रतिष्ठा नष्ट करनी।

### घर फोड़ना

परिवार में भगड़ा लगाना। प्रयोग—फोड़ पाये तो रहें घर फोड़ते बैठकर या उँगलियाँ फोड़ा करें (चुमते०—हरिऔध, ८८)

### घर-फोड़ी होना

सड़ाई लगानेवाली। प्रयोग—पुनि घस कवहुँ कहसि घरफोरी तब धरि जीभ कड़ावउं तोरी (राम० (अ)—तुलसी, ३८५)

### घर बसना

घर में स्त्री या बहू आना, विवाह होना। प्रयोग—नारद कर उपदेसु मुनि कहहुबसेउ किमु गेह (राम० (बाल)—तुलसी, ८९); मैंने सोचा, इतनी पढ़ी लिखी स्त्री को लेकर क्या घर बसेगा (गु० नि०—वा०मु० गु०, ५१); कब चलना तब हुआ? जल्दी चलो मेरा भी घर बसे (रंग० (२)—प्रेमचंद, ९५); इससे तो लड़की हुए होते तो अच्छा था, किसी भलेमानस का घर बसता (मिस्त्रा०—कौशिक, ३८)

### घर-बसा होना

उपपत्ति होना। प्रयोग—भोर भएँ घ्राएँ भाँति भाँति मेरे मन भाएँ, ए हो घरबसे आज कौन घर बसे हो? (घन० कवित्त—घना०, १४१)

### घर बनाना,—बसाना

विवाह करके गृहस्थ बनना। प्रयोग—इतने नेता हैं...घरके भरे पूरे हैं। घर न बसाते साधु रहते (दोने०—रा० रा०, २५); अच्छा यदि तू घर न बसायेगा तो मैं मुहल्ले में किस तरह मुँह दिखा सकूँगी (चेतन—अश्क, २२); आखिर घर बनाने का क्याल तुम कब करोगे (कला०—उग्र, २४)

### घर बसाना

#### दे० घर बनाना

### घर बहाना

घर नष्ट करना, मानमर्यादा नष्ट करनी। प्रयोग—संसकीरत छाँटथी, घर बहेयें (राधा० ग्रंथा०—राधा० दास, ५६०)

### घर बाहर

हर जगह। प्रयोग—कैलि गई घर-बाहिर बाल मुनीकें

भईइन काज कनौड़ी (घन० कवित्त—घना०, १४)

### घर बिगड़ना

(१) घर के लोगों का कुमार्ग पर चलना। प्रयोग—किसी का घर बिगड़े, इन्हें क्या—इन्हें तो रंझी मिलती है—भले घर की, जवान और मुफ्त (शेखर—अज्ञेय, १७८)  
(२) घर की स्थिति खराब होनी।

### घर बैठना

(१) बिना किसी उद्यम के होना। प्रयोग—इधर दो-तीन महीने से घर बैठे थे (बल०—नागा०, ७३)  
(२) रमेक होना।  
(३) मकान पंस जाना।

### घर-बैठा करना

विधवा का किसी के साथ रहने लगना। प्रयोग—सास है, उसने घर-बैठा कर लिया है (लिली—निराला, ७८)

### घर बैठे

बिना कुछ किए या कहीं गए। प्रयोग—बहुत दिन मैं में प्रीतम पाये, भाग बड़े घर बैठे आये (कबीर ग्रंथा०—कबीर, ८७); घस कहि अट्टहास सठ कीन्हा, गृह बैठे अहार बिधि दीन्हा (राम० (लं)—तुलसी, ९०६); फेरिये क्यों दुहूँ हाथ सकेरिये जो बिधिना घर बैठे दयो वित (घन० कवित्त—घना०, १९९)

### घर बैठे की शीरनी होना

बहुत आसान होना। प्रयोग—मर्दों के हजार काम! घर बैठे की शीरनी नहीं है जो (दोने०—रा० रा०, १६४)

### घर भरना

लाभ करना या कराना, घत देना या लेना। प्रयोग—कोई बेश्या तो थी नहीं, कि तुम्हें नोच-खसोट कर अपना घर भरना मेरा काम होता (गवन—प्रेमचन्द, ११५); जिनको वीर होने का दावा है वे ×× दूसरों का घर मूसकर अपना घर भर रहे हैं (चुमते०(भू०)—हरिऔध, ३)

### घर मूसना

घर का सामान चुराना। प्रयोग—नाफिल होइ बसत मति सोवै, चोर मुसं घर जाई (कबीर ग्रंथा०—कबीर, ९६); इस तरह मेरा घर मूस कर यह चुड़ैल अपने धोंगड़ों का घर भरती है (रंग० (१)—प्रेमचन्द, ३९६); जिनको वीर



होने का दावा है वे  $\times \times$  दूसरों का घर मूसकर अपना घर भर रहे हैं (चुभते० (भु)—हरिऔध, ३)

### घर में,—चाली

स्त्री, पत्नी । प्रयोग—धर्मानन्दी की घरवाली तो परलोक सिधार गई थी (ब्रह्म०—दे० स०, ३९-४०); मेरे घर में पांच-छः महीने से बीमार है (पहम० के पत्र—पहम० शर्मा, १६३); और क्या समाचार है—आपके घर में अब तबियत कैसी है (भित्ता०—कौशिक, २२९)

(समा० मुहा०—घर बैठा लेना)

### घर में आग लगाना

(१) परिवार में लड़ाई लगाना । प्रयोग—लाग से लगाइए न आप घर ही में आग अब आप ही न पत अपनी उतारिए (मर्म०—हरिऔध, १६४) (÷); ताहिर अली इन बातों पर स्त्री से रुठ जाते । उसे घर में आग लगाने वाली, विष की गांठ कहकर खाते (रंग०(१)—प्रेमचंद, १२१)

(२) गृहस्थी नष्ट करना । प्रयोग—देखिए प्रयोग (१) में (÷)

### घर में चांदना होना

संतान से घर में खुशी होनी । प्रयोग—बहू न तुम्हारी बदीलत हमारे घर में भी चांदना हो जाता, तो अच्छा या (भा—कौशिक, ६९)

### घर में चूल्हा न जलना

(१) घर में खाद्य सामग्री का अभाव होना । प्रयोग—आप न आये तो हमारे घर में चूल्हा भी न जले (कठ०—दे० स०, ६४)

(२) किसी कारण से खाना न बनना ।

### घर में चूहे लोटना

घर में भोजन सामग्री का बिल्कुल अभाव होना ; घोर दरिद्रता । प्रयोग—जिसके घर में चूहे लोटें वह भी इज्जतवाला है (गोदान—प्रेमचंद, ११६)

(समा० मुहा०—घर में चूहे का डंड पेलना)

### घर में डालना

दे० घर डालना

### घर में दिया जलाकर तब मस्जिद में जलाना

अपना हित करके तब दूसरों का हित करना । प्रयोग—पहले घर में दिया जलाकर तब मस्जिद में जलाते । (मान० (१)—प्रेमचंद, १५३)

### घर में दिया जलाने वाला

वंशज । प्रयोग—इक लख पूत सवा लख नाती, ता सबन घरि दीवा न बाती (कबीर ग्रंथा०—कबीर, ११९); बंस में कोई चिल्लू भर पानी देने वाला, घर में दिया जलाने वाला भी नहीं रहता (गोदान—प्रेमचंद, २२४)

### घर में बैठा लेना

रखल रखना । प्रयोग—गोविन्दराम का प्रेम अल्लारखली नाम की एक बेश्या से हो गया था जिसे उन्होंने अपने घर में बिठा लिया था (भूले०—भग० वर्मा, ३६४); उसने अपनी भाभी को घर में बैठा लिया था (झूठा० (२)—यशपाल, ४३५)

### घर में भूँजी भांग न होना

अत्यन्त दरिद्र होना । प्रयोग—घर में भूँजी भांग नहीं है तो भी न हिम्मत पस्त (भा० ग्रंथा०(२)—भारतेन्दु, ३६९); घर में भूनी भांग नहीं, चले ये ब्याह करने (मान०(१)—प्रेमचंद, १७०); जिसके घर में भूँजी भांग नहीं  $\times \times$  उसे में अपना समधी बनाऊँ (भित्ता०—कौशिक, ४३)

### घर रखना

(१) घर की रक्षा करनी । प्रयोग—घर जाली घर उबरे घर राखी घर जाइ (कबीर ग्रंथा०—कबीर, ६४) (÷)  
(२) सांसारिकता में लिप्त रहना । देखिए प्रयोग (१) में (÷)

### घर लुटाना

सम्पत्ति लुटाना । प्रयोग—ये वही महाशय थे जिनके पितामह ने बाबू हर्षचन्द्र की नाबालगी में इनके घर को लुटाया (राधा० ग्रंथा०—राधा० दास, ३५४)

### घर वाली

दे० घर में

### घर वाली बात

कोई दुराव या औपचारिकता न होनी । प्रयोग—देखिए,



मुनीलजी, आपके साथ तो अब घरवाली बात हो गई है  
(कठ०—दे० स०, २१९)

### घर से बाहर पर रखना

- (१) बाहर जाना। प्रयोग—घर से बाहर पांव नहीं रखता (इंशा०—इंशा०, ९६)
- (२) अपनी शक्ति से बाहर काम करना।
- (३) मर्यादा तोड़ना।

(समा० मुहा०—घर से पर निकालना,—बाहर पर निकालना)

### घर से मढ़ी अच्छी होना

गृहस्थाश्रम से संन्यास लेना ही घच्छा होना। प्रयोग—सूरदास प्रभु हरि न मिले तो, घर से भली मढ़ी (सु० सा०—सूर, ३५५७)

### घरबारी होना

विवाह करके घर बसाना। प्रयोग—जब तक विशेषी व्यक्ति या दल समाज से बाहर रहकर मठों और विहारों में अविवाहित जीवन व्यतीत करते रहे तब तक वे सम्मान पाते रहे, पर ज्योंही वे घरबारी हुए कि उनकी सामाजिक मर्यादा अल्पन्त होन हो गई (अशोक०—ह० प्र०टिप्प०, २७)

### घसीटना

- (१) ले जाना—जबरदस्ती ले जाना। प्रयोग—विद्या को भी घसीट लायें तो क्या कहना ! (प्रेमा०—प्रेमचन्द, १८९) ; यों चाहो तो मुझे घसीट कर जहाँ चाहें ले जाओ। घर में डाक्टर नहीं, नर्स नहीं (ज्ञान०—यशपाल, ३४)
- (२) जल्दी-जल्दी में लिखना। प्रयोग—जल्दी-जल्दी में घसीट रहा हूँ कि एक महाशय के हाथ, जो चांदपुर जा रहे हैं, इसे डाक में भेज दूँ (पट्टम० के पत्र—पट्टम० शर्मा, ३३)

### घाघ होना

पुर्त होना। प्रयोग—बलाघार का पुराना घाघ का बड़ी मुश्किल से घच्छीय र घड़ा (निर्मला—प्रेमचन्द, १६८)

### घाट उतारना

- (१) कोई गलत काम या अनुभव कराना। प्रयोग—चुनार ही में एक दो बार सीता बनकर मूर्ते भी बड़े आई ने इस घाट पर उतार रखा था (अपनी खबर—उग्र, २८)

- (२) तबले के बड़े स्वर को नीचा करना।
- (३) नाव से घाट तक पहुँचाना।

### घाट का पत्थर समझना

बुले आम उपयोग की वस्तु समझना। प्रयोग—नीलिमा की आँखें गंभीर थीं परन्तु तरुणों की आँखें घोड़ी के कपड़ों की तरह उसे घाट का पत्थर समझ कर उस पर पछारें ला जाती थीं (बोने०—रा० रा०, ८६)

### घाट-घाट का पानी पीए होना

- (१) हर तरह का भला-बुरा अनुभव किये होना। प्रयोग—उन्ही दिनों एक अंगरेज घूमता-घामता दिल्ली आया। दुनिया देखे हुए घाट-घाट का पानी पीये हुए, पूरा बालाक घोर मस्कार (इंस्टा०—भा० वर्मा, ७८) (÷) तो यह कहिए साहब कि आपने इस छोटी-सी उम्र में ही घाट-घाट का पानी पी रखा है (कठ०—दे० स०, २४) (÷)
- (२) भ्रमण से अनुभव प्राप्त किए होना। प्रयोग—कई सहोने दौरा किया। घाट-घाट का पानी पिया (गुंनि०—वा० मु० गु०, ७१९) ; देखिए प्रयोग (१) में (÷) भी
- (३) इधर-उधर मारे-मारे, करने वाला। प्रयोग—घाट का पानी पीना ही उसे पसन्द था (कठ०—दे० स०, १२६)

### घाट रोकना

घाट से किसी को जाने-जाने न देना। प्रयोग—होहू संजोइल रोकहु घाटा (राम० (अ)—तुलसी, ५५०)

### घाटा बैठना

व्यापार में नुकसान होना। प्रयोग—कह गिरधर कविराय बैठिहै तुमरे घाटा (कुण्ड०—गिरधरदास, ७)

(समा० मुहा०—घाटा आना)

### घात लाकना,—लगाना

मोका देवते रहना। प्रयोग—आए अपनी घात निरखत, खेज जम्बो बनाइ (सु० सा०—सूर, ८६२) ; केति की रात घघाने नहीं, दिन में ही लना पुनि घात लगाई (मति० मक०—मतिराम, ९४)

### घात में आना

- (१) अभिप्राय मिटि के अनुकूल होना। प्रयोग—बहुत



दिवस में कारं लागी, मेरी घात न जावी (सु०सा०—सूर, ९०६)

(२) दाँव पर चढ़ना, हथ्ये लगना ।

(समा० मुहा०—घात पर चढ़ना)

**घात लगाना**

दे० घात तकना

**घाघ पर नमक छिड़कना**

(१) दुख के समय और दुख देना । प्रयोग—जीवन-अपार जान मुनिर्वे पुकार नेकु, घनाकानी देवो दिया घाघ कैसे लोन है (घन०कवित्त—घना०, ४३); रघु ने ठंडी सांस खींचकर कहा—बुलिया, घाघ पर मोन न छिड़क (मान० (१)—प्रेमचंद, १५); दुर्देव को इतने पर भी संतोष न हुआ कि एक और चर्का लगा दिया, घाघ पर नमक छिड़क दिया—पं० ईंदवरी प्रसाद जी शर्मा को भी हमसे छीन लिया (पद्म पराग—पद्म० शर्मा, ३३५)

(२) झल्लाए हुए को और चिढ़ाना ।

**घाघ पर नमक पड़ना**

दुखी को और दुख मिलना । प्रयोग—फूलमती के घाघ पर जैसे मानों नमक पड़ गया (मान० (१)—प्रेमचंद, ७५)

**घाघ पूजना,—पूरा होना,—भरना**

(१) घाघ अच्छा होना । प्रयोग—कृष्ण की घमिल-ताई ( न मिलना ) हृदय के घाघ में भी भर गई है जिससे उसका मूँह नहीं मिलता और वह नहीं पूजता (चित्ता०(१)—शुक्ल, ३६९)

(२) थोड़ा जाति का वेग कम होना । प्रयोग—कथयुतम भग्न हृदय, नहीं भरता है जिसका घाघ (पल्लव—पंत, १८); दूसरा कोई उपाय हमारे लिये नहीं है, हमारे कलेजे का घाघ पूरा नहीं हो सकता (ठेठ०—हरिऔध, ३०)

(३) मनोमालिन्य होना उनके विचार में इस घाघ का भरना दुस्तर था (प्रेमा०—प्रेमचंद, १७९)

**घाघ पूरा होना**

दे० घाघ पूजना

**घाघ भरना**

दे० घाघ पूजना

**घाघ में जहर देना**

घोर अनिष्ट करना । प्रयोग—मनहुँ घाघ महुँ माहुर देई

(राम० (घ)—तुलसी, ४०४)

**घाघ सूखना**

आया का धीरे धीरे दूर होना । प्रयोग—यहाँ जाकर मुझे एक घोर नित्र की याद भी लक्ष्मा रही है । दुर्घटना पुरानीपद गई थी, दिल के जखम कुछ मुख चले थे कि फिर हरे हो गये (पद्म पराग—पद्म० शर्मा, ३३५); जस्मों के घाने से हृदय का घाघ, जो मुख चला था फिर हरा हो गया है (मिस्ता०—कौशिक, १९९)

**घाघ हरा करना**

किसी दुखकी बातका स्मरण कराना । प्रयोग—धीतशोक की याद दिलाकर मुझे घाघ को हरा न कीजिए (मोर०—जग० माधुर, ४२)

**घाघ हरा होजाना**

(१) झूली बात या दुख फिर से तोष होना । प्रयोग—हाँ हरा ! मेरे अपमानित जीवन के घाघ फिर से हरे हुए हैं (परती०—रेणु, ४७३); सूखे हुए जखम हरे होते हैं । पुरानी चोटें ताजा होकर दुखती हैं (पद्म० के पत्र—पद्म० शर्मा, ७३); जस्मों के आने से हृदय का घाघ जो मुख चला था फिर हरा हो गया है (मिस्ता०—कौशिक, १९९)

(२) किसी दुख या पीड़ा के कारण को हटे छोड़ा ही दिन होना ।

(समा० मुहा०—घाघ ताजा होना)

**घास काटना,—छीलना**

तुच्छ, व्यर्थ काम करना । प्रयोग—तुमसौ प्रेम कथा की कहियो, मनौ काटियो घास (सु०सा०—सूर, ४३७७); वह भी सम्पादक ही है, कोई घास नहीं छीलते (मान०(१)—प्रेमचंद ३२३)

(समा० मुहा०—घास खोदना)

**घास खाना**

मूर्ख होना । प्रयोग—बिनोद बिहारी ने कहा—आप तो घास खा गये हैं (मान० (४)—प्रेमचंद, ७६)

**घास छीलना**

दे० घास काटना



### घास होना

तुच्छ होना। प्रयोग—सब या बज के लोग चिकनियाँ, मेरे भाएँ पास (सू० सा०—सूर, ३२५२)

### घिग्घी बंधना

(१) रोते रोते हिचकी आने लगना। प्रयोग—उन लोगों को घिग्घी बंध गई (मृग०—वृ०वर्मा, ३९९); बूढ़ेकी घिग्घी बंध गई (देशाली० (१)—चतुर०, ९)

(२) भय के कारण न बोल पाना। प्रयोग—पिताजी के सामने बोलते तो घिग्घी बंधती है (मिखा०—कौशिक, २०८)

### घिसा होना

अनुभवी। प्रयोग—पहले दिन इसे देखते ही मैं समझ गया था कि यह घिसा हुआ गिरहकट है (जहाज०—इ० जोशी, १६)

### घिसा घिसाई

पुरानो, अनेक बार प्रयोगमें आई हुई। प्रयोग—बरकला को इनघिसी घिसाई कथाओं से बचाओ (दध्यास—दे० स०, ५५)

(समा० मुहा०—घिसी पिटी)

### घी का घड़ा लुढ़कना या लुढ़काना

बहुत नुकसान होना या करना। प्रयोग—मैंने तो समझा डाक्टर साहब और बीसों आदमी हैं, मेरे न रहनेसे ऐसा क्या घी का घड़ा लुढ़का जाता है (कर्म०—प्रेमचंद, ८०); फूट है परमें हमारे पड़ रही है लुढ़कते जा रहे घी के घड़े (चुमते०—हरिऔध, १३३); यहाँ मैं ईदु को कभी कड़ी निगाह से भी नहीं देखती, चाहे घी का घड़ा लुढ़का दे (रंग० (१)—प्रेमचंद, १४२)

### घी की मक्खी होता

(१) तरल मर जाने वाला। प्रयोग—तुलसी विहारो, तुम्हीं पे तुलसी के हित, राखि कहौं ही तो जो पे हूँ वही मक्खी पीप की (विनय०—तुलसी, २६३)

(२) त्याग्य होना।

### घी के चिराग जलाना,—दीए जलाना

प्रसन्नता मनाना, मनोरथ सफल होना या लुप्पी होनी। प्रयोग—कहूँ कैसे बगुदेव देवकी, बरत दीवना घी के (सू० सा०—(परि०१)—सूर, १८५); अरे और तो और हमारे चनेरे × × भाई जो इसी रियासतकी बधोला भोज उड़ा रहे

हैं × × वह भी मुझसे जलते हैं और मर जाऊँ तो घी के चिराग जलाएँ (गोदान—प्रेमचंद, १३-१४); मैं जानता हूँ, बापू ने गांव-बूढ़ा का पद छोड़ दिया तो साधन मीरी के घर घी के दीये जलेंगे (ग्रन्थ०—दे० स०, ३२०); क्यों उमंगता आपका आना सुने किस लिए घा के दिये तो बालता (बोल०—हरिऔध, ५९)

(समा० मुहा०—घी के जलाना)

### घी के दीए जलाना

दे० घी के चिराग जलाना

### घी-दूध की नदी बहाना

बहुत सम्पन्न होना। प्रयोग—बह रहा है सोत दुध का जब वहाँ घी जहाँ घी दूध की बहती नदी (चुमते०—हरिऔध, ८२)

### घुटता गला

भावातिरेक के कारण रुंधा हुआ सा गला। प्रयोग—शेखर ने मुँह फेरकर घुटते गलेसे निकाला—सरस... (शेखर—(१) अश्वमेध, १४३)

### घुटना

(१) भंग पीसी जानी। प्रयोग—रोज शाम को चकाचक घुटती (भारती०—रा० रा०, ३५)

(२) प्रेमपूर्वक बातें होनी। प्रयोग—उसको आशा थी कि जैसे ही बैजू का ध्यान इस ओर बढ़ा कि उसने भीतर बुलाया और खूब घुटेगी दो कलाकारों के बीच में (मृग०—वृ०वर्मा, ४२७)

(३) प्रेम होना।

### घुटना टेक देना

अधीनता स्वीकार करनी। प्रयोग—जब तक मेरे पास यह रिवाजवर है, तुम मेरा क्या कर सकते हो। तुम्हारे सामने तो घुटना न टेकूंगा (मान० (१)—प्रेमचंद, ३२९) वे सामन्त जो अपने स्वार्थ को जनता के विरुद्ध रखकर जीवित रहना चाहते थे, वे तो अंगरेजों के सामने घुटने टेक गये थे (भारती०—रा० रा०, १०); लट गये भी लटपटाते नहीं दम घुटे भी हैं न घुटने टेकते (बोल०—हरिऔध, २३१)

### घुटने तोड़ना

अहित करना। प्रयोग—वही तोड़ता है क्यों घुटने जो घुटनों से लगकर बैठा (बोल०—हरिऔध, २३२)



### घुटने से लगकर बिठाना या बैठना

सामने से दूर न करना या होना वात्सल्य भाव से रखना या रहना । प्रयोग—वही तोड़ता है क्यों घुटने जो घुटनों से लगकर बैठ (बोल०—हरिऔध, २३२); क्यों नहीं बैठने देता है वह घर में या जिसे लगाकर घुटनों से बैठता (बोल०—हरिऔध, २३२)

### घुटनों चलना

(१) प्रारम्भिक अवस्था में होना । प्रयोग—चल सके हम लोग घुटनों मुटुओं अब हमें घुटनों न चलना चाहिए । (बोल०—हरिऔध, २३२) (÷)

(२) बच्चों का चारों हाथ पैर से चलना । प्रयोग—दे० प्रयोग (१) में (÷)

(समा० मुहा०—घुटनों के घल चलना )

### घुटनों में सिर देना

अत्यंत उदास होकर बैठना । प्रयोग—घोंट घोंट कर गला जाति का घुटनों में सिर देना होगा (बोल०—हरिऔध, २३२); चिन्ना सारा दिन घुटनों में सिर दिये बिलख बिलख साईं सच्चे की दुहाई देती रही (ज्ञान०—यशपाल, १०६ )

(समा० मुहा०—घुटनों में सिर देकर बैठना)

### घुटे घुटाये होना या घुटे हुए होना

पक्का चालाक होना । प्रयोग—पार पण्डित, तुम भी बड़े घुटे हुए घादमी हो (भूले०—भग०, २६४); वह भी घुटी हुई है, कैसा पी गई (तिल्ली—प्रसाद, ४६); मगर सराफ भी एक ही घुटा हुआ आदमी था (गवन—प्रेमचन्द, १४)

### घुट्टी में पड़ना, घुट्टी में पड़ना

जन्म से स्वभाव में होना । प्रयोग—घोट घुट्टी में किसी की जो पड़ी वह बंटाने से कभी बंटती नहीं (चोखे०—हरिऔध, १२१); दबने और दवाने का सिद्धान्त हमारी घुट्टी में पड़ता है (घुंटा०—अना०, ९५); पक्षपात तो इन लोगों की घुट्टी में पड़ा हुआ है (रंग० (१)—प्रेमचन्द, १७४)

(समा० मुहा०—(घुंटा में पीकर आना )

### घुड़कियां जमाना

डॉटना । प्रयोग—भाग्य-भाग्य तो कही नहीं सराहते घुड़कियां जमाया करते हैं (गवन—प्रेमचन्द, ७९)

### घुन लगना

(१) चिता आदि के कारण शरीर का कृश होना । प्रयोग—मोहन की बोल गुनं घुनं सीस, मन ही में जने सोन भारी, गुनं गहि बूढ़े सोक- है (घन० कवित्त—घना०, १९३)

(२) अन्दर अन्दर किसी वस्तु का क्षीण होना । प्रयोग—बंस में घुन लगा दिया उमने सौ नई पौष की कमर तोड़ी । जाति को है तबाह कर देती एक बेजोड़ व्याह की जोड़ी (चुभते०—हरिऔध, १५८)

(३) घुन का अनाज या लकड़ी खाना ।

### घुनी बात

निस्सार, खोखली बात । प्रयोग—सार को जो प्यार नहीं करते क्यों न क्वती उन्हें घुनी बातें (चुभते०—हरिऔध, ४५)

### घुल घुल कर बातें करना

खूब मिल-जुल कर बातें करना । प्रयोग—मान लीजिए, दो नागरिक बड़े दोस्त हैं, आपस में घुल घुल कर बातें कर रहे हैं (अम्ब०—रा० वै०, ६९)

### घुल जाना

अत्यंत दुर्बल हो जाना । प्रयोग—दुख पड़े घुल गया बदन सारा (चुभते०—हरिऔध, ३०)

### घुलते जाना

दुर्बल और क्षीण होते जाना । प्रयोग—पति के यह रंग रंग देखकर वसुधा मन ही मन कुदती और घुलती जाती थी (मान०—(१) प्रेमचन्द, १३६)

### घुलना

दुख पाना । प्रयोग—मैंने इस दुनिया में आराम न देखा तकलीफ और दर्द मेरी किस्मत में था घुलना, टुकड़े हो जाना, मेरे नसीब में था (पद्मपराग—पद्म० शर्मा, ३९३)

### घुस पैठ होना

पहुँच होनी । प्रयोग—यह कया जैसी सुनी, वैसी लिख दी है । मालूम नहीं कि यह सही थी या तत्कालीन ने बादशाह को हिन्दुओं के धर्म की तरफ भुका हुआ देखकर



बहाधुर-नैठ होने के वास्ते गड़ली बी. (गुलेरी प्रथा० (१)—  
गुलेरी, १५३)

### घूँघट काड़ना

पर्दा करना। प्रयोग—रह रह रही बहुरिया घूँघट काड़े।  
अंत की बार लहेगी न आई (कवीर प्रथा०—कवीर, ३१९);  
घूँघट काड़ि जो साब सकेलति साजहि लाजति है चित  
काजनि (घन०कवित—घना०, १४३)

(समा०मुहा०—घूँघट करना,—डालना,—निकालना,  
—मारना)

### घूँट पीना

घपने काबोश आदि को जवाब किए रहना। प्रयोग—मैं  
मानों घूँट पीता था हूँ या (राम०—जेनेन्द्र, ४२)

### घुंटी में पड़ना

दे० घुंटी में पड़ना

### घुंसे का जवाब घुंसे से देना

जैसे से तैसा व्यवहार करना। प्रयोग—परि प्रिटेन ने बस  
प्रयोग किया तो मित्रवाले भी घुंसे का जवाब घुंसे से  
देने (घुंटे०—म० ना०, १४१)

### घुरे के दिन फिरना

घुरे या तुच्छ व्यक्ति या वस्तु की हालत में भी परिवर्तन  
आना। प्रयोग—मुझे हैं घुरे के भी कभी न कभी दिन  
फिरते हैं (मुग०—घुं० वर्मा, ३०४); कूड़े से भी आगे पहुंचा  
अपना अद्भुत गिरते-गिरते दिन बारह वर्षों में घुरे के भी  
मुने गये हैं फिरते (साकेत—गुप्त, ३११)

### घुरे को पलट कर होरा खोजना

बुरी और गंदी चीज से सार वस्तु बूझ निकालनी।  
प्रयोग—यों इंसान घोर मूर्ख की एक आदत पुरानी है कि  
दोनों घुरे पलटकर होरा या दाना खोजते हैं (वीने०—  
रा० रा०, १९)

### घेर-घार कर

किसी प्रकार जोर-दबाव डाल कर। प्रयोग—आखिर  
तुमने घेर-घार कर विवाह करा ही दिया (मिस्ता०—  
कोशिक, १९७)

### घोंघा होना

मूख, जड़ होना। प्रयोग—नित्यदेह भी लोग चतुर और

समाने होते वे ही कुछ करते वाली सब लोग घोंघा बने  
रहते (महु० नि०—बाल० महु०, ३०); परन्तु राजा के पड़े  
लिखे नौकर पुराने महात्माओं को जैसा घोंघा समझते  
वे राजा को उससे बढ़कर राजा (चतुरी०—निराला, ७७)

### घोड़ा उड़ाना

घोड़े को तेज दौड़ाना। प्रयोग—वह तांगेवाला कौवालों  
की तान—“जित जित को दिया चाहें” को दुहराता हुआ  
चाबुक लगाता घोड़ेको उड़ा ले जाता (कंकाल—प्रसाद, ३२)

(समा० मुहा०—घोड़ा उठाना)

### घोड़ा फेंकना

सुब केन से घोड़ा दौड़ाना। प्रयोग—उस हिरनी के पीछे  
सबको छोड़ छोड़ कर घोड़ा फेंका (ईशा०—ईशा०, ९१);  
थीर ऐसे ही समय एक मनुष्य एक तिरन के पीछे उन्मत्त  
भावसे घोड़ा फेंके चला जाता था (मान० (८)—प्रेमचंद, ५६);  
दोनों ने घपने जपने अदब फेंके (वैशाली० (१)—चतुर०,  
१४०)

### घोड़ा बेचकर सोना

निश्चित सोना। प्रयोग—घोर सोये तो घोड़ा बेचकर  
मूर्खों से जूत लगाकर (मान० (१)—प्रेमचंद, १५६); छिटके  
ही मैं जैसे घोड़े बेचकर सो गया (जहाज०—इ०जोशी, १५२)

### घोड़े का धान से खुल जाना

बंदन या मर्मादाहीन हो जाना। प्रयोग—बंदा हुआ  
घोड़ा धान से खुल गया, उसे कौन रोक सकता है (गदन—  
प्रेमचंद, ७)

### घोड़े का रोग बंदर के सिर पड़ना

किसी का दोष किसी दूसरे पर पड़ना। प्रयोग—मकु  
एहि मोत्र होइ निवि आई। तुरे रोग हरि माये आई  
(प्रद०—जायसी, ८४)

### घोलकर पी जाना

परबाह न करना, तुच्छ समझना। प्रयोग—अरे तुम  
क्या मनुष्यवा की भी मदिरा के साथ घोलकर पी गये  
हो (कामना—प्रसाद, ९३); भले आदमी क्या आत्म-गौरव  
भी घोल कर पी गए (रंग० (२)—प्रेमचंद, ७८-७९)



## च

### चंग पर चढ़ाना

जोश पैदा करना । प्रयोग—मैंने उसी को चंग पर चढ़ाया (मान० (२)—प्रेमचंद, १२१)

(समा० मुहा०—चंग पर लाना)

### चंगुल में फँसना

काबू या पकड़ में आना । प्रयोग—इक दिन सभी हमारे चंगुल में फँसने (राधा० ग्रंथा०—राधा० दास, ८१२); अब भले आदमी को न जाने क्या सूझी कि घघोर भँवर और बेंकटेश भट्ट के चंगुल में आ फँसा है (बाण०—ह० प्र० द्वि०, २१०)

(समा० मुहा०—चंगुल में आना,—पड़ना)

### चंगुल से बचना

फँसाव से बचना । प्रयोग—इससे × × अनेक चालाक और धोखेबाज लोगों के चंगुल से हम बच जायेंगे (मेरे०—गुलाब०, ४७)

(समा० मुहा०—चंगुल से निकलना)

### चंडू-खाने की गप्प

व्यर्थ की बातें; ऐसी झूठी बातें जिस पर विश्वास न किया जा सके । प्रयोग—असबारी दुनिया की सैर, चलती मछली, चंडूखाने की गप, सभी झूठा है (पद्म० के पत्र—पद्म० शर्मा, १८२)

### चंदन चढ़ाना

घिसा हुआ चंदन लगाना । प्रयोग—चंदन चढ़ाई चार

सुंदर सरीर सब, राखी सुभ्र सोभा सुनि बसन बगाई सी (केशव०—केशव, ११०)

### चंवर दुरना

ऐश्वर्य या प्रतिष्ठा की स्थिति में होना । प्रयोग—छत्र सिपासरा चंवर दुलंता, रागरंग बहु आगी (कबीर ग्रंथा०—कबीर, १८२); छत्र चंवर नित दुरत जोन मुख तहं मनु छुटत हवाई (भा० ग्रंथा०—भारतेन्दु, ५०२)

### चकनाचूर करना या होना

नष्ट करना या होना । प्रयोग—चोट खा वह ठाट चकनाचूर हो । चाट से जिसकी कि चोटी कट गई (चुमते०—हरिप्रोध, ११७)

### चकमा देना

धोखा देना, बहकाना । प्रयोग—मैं चकमा नहीं दे रहा हूँ, बल्लाह (गोदान—प्रेमचंद, १००); हुक्म लेकर दरबार का चकमा दिया गया (चौटी०—निराला, ४९)

### चकाचक घुटना

मोज से भांग घुटनी और पीपी जानी । प्रयोग—रोज शाम को चकाचक घुटती (भारती०—रा० रा०, ३५)

### चकाचू का जाल होना

जटिल, फँसा लेने वाली स्थिति होनी । प्रयोग—जाला बजकिशोर की बातें क्या हैं चकाचू का जाल है (परीक्षा०—श्री० दास, ८)

### चकर आना

तिर चकराना या घूम जाना । प्रयोग—इधर देखो मेरे



रोयें फूट गये हैं.....जैसे सिर में चक्कर आ रहा है  
(सिद्धरं—ल० मिश्र, ३५)

### चक्कर काटना

परिक्लमा करना, मंडराना, घूमना । प्रयोग—बगल में रही कागजों का पुस्तिका दबाए हुए पगला मार्टिन दिन भर पूरिया कचहरी में चक्कर काटता फिरता था (मैला०—रेणु, ८)

### चक्कर में डालना

परेगानी या दुविधा में डालना । प्रयोग—छोटे बच्चे कभी कभी चक्कर में डाल देने वाले सवान कर बैठते हैं (अशोक—ह० प्र० द्वि०, १९१); तुम तो मुझे चक्कर में डाले देती हो बहन (गहन—प्रेमचंद, ३०३)

### चक्कर में पड़ना,—होना

(१) फेर में पड़ना । प्रयोग—इरा तो आजकल संस के चक्कर में है (दृष्टांत—द० स०, १९४)

(२) भ्रमभट या काम में पड़ना । प्रयोग—इस घटना का पता जब गुरु संवादतजी को लगा तो उन्होंने नवनीतजी को धमकाया कि खबरदार, इस चक्कर में सभी से मत पड़ो (पद्म पराग—पद्म० शर्मा, १३४)

(समा० मुहा०—चक्कर में आना,—फँसना)

### चक्की का चैल बनाना

बंधन में रखकर इच्छानुसार काम करवाना । प्रयोग—तुमने मुझे कभी अपने घर को घर न समझने दिया तुम मुझे चक्की का चैल बनाना चाहते हो (कर्म०—प्रेमचंद, १३६)

### चक्की के दो पाटों में पिसना

दोनों ओर से मूसीबत होनी । प्रयोग—चक्की के दो पाट में गरीब लोग ही पीसे जायेंगे (मैला०—रेणु, १५४); ऐन मौके पर अर्मेन दो चक्की के पाटों के बीच में घा गये (गु० कहा०—गुलेरी, ५७)

### चक्की पिसवाना

जेल भिजवाना । प्रयोग—तुम जानते हो, इन धमकियों से ये लोग डर जायेंगे अगर एक-एक से चक्की न पिसवाई, तो कहना कि कोई कहता था (रंग० (१)—प्रेमचंद, २०९)

### चक्की पीसना

(१) कड़ा परिश्रम करना । प्रयोग—चलो भोजन करो और चक्की पीसो—जो तुम्हारे भ्राम्य में लिखा है (गोदान—प्रेमचंद, १८१)

(२) जेल की सजा भुगतनी । प्रयोग—अभी तुम मधुवन के बहकाने में आ गये हो, जब चक्की पीसनी पड़ेगी तब हँकड़ी भूल जावेगी (तितली—प्रसाद, १८०); ऐसा न हो शायद जा जाय और छः महीने तक चक्की पीसनी पड़े (प्रेम०—प्रेमचंद, ५८)

### चक्की में जुतना

अत्यंत परिश्रम करना, काम में लगना । प्रयोग—मां के घाते ही चक्की में जुतना पड़ा (गोदान—प्रेमचंद, १)

### चक्की में पिसना

(१) रात दिन काम में लगे रहना । प्रयोग—इस कलकत्ता महानगरी के समाचार पत्र कुछ दिन चौक चौक पड़ते थे कि आज बड़े लाट अमुक मोड़ पर बेश बदले एक गरीब काले आदमी से बातें कर रहे थे, परसों अमुक आफिस में जाकर काम की चक्की में पिसते हुए क्लर्कों की दया देख रहे थे (गु० मि०—बा० सु० गु०, १२८)

(२) दोनों ओर के दबाव में हैरान होना ।

### चख चख चलना या होना

असंतोष होना या भगड़ा होना । प्रयोग—यद्यपि नये सूट के पैसोंको लेकर घरमें काफी चख चख हुई थी औरXX... (चैतन—अशोक, १२२); काशी में वेश्याएं उन्हें बहुत मानती थीं, एकआध से उनकी चख चख भी चला करती थी (ये कोठे०—अ० ना०, २०९); हिसाब में बहुत मीन मेख निकालने के कारण प्रायः ही रिलीराम की मास्टरजी से चख-चख हो जाती थी (छूठा०—(२) यशपाल, ३५३); पहले तीन-चार रोज़ कुछ चख-चख जरूर हुई (ज्ञान०—यशपाल, ३६)

### चट कर जाना

(१) समाप्त कर देना । प्रयोग—आज हम है चट उसी को कर रहे जो नहीं दिखला सकी जी की कचट (चुमते०—हरिऔध, १५५)

(२) हड़प लेना ।



(३) सा जाना ।

### चटक जाना

रुष्ट होना । प्रयोग—एक ही संग हम तुम सदा रहति है आजु ही चटकि तू भई न्यारी (सू० सा०—सूर, २३४८)

### चटनी बनाना

(१) दुर्गति करनी । प्रयोग—मैं इसकी चटनी बना दूँगी (बोने०—रा० रा०, २०१)

(२) बहुत महीन पीस डालना ।

(३) बहुत मारना ।

(समा० मुहा०—चटनी करना,—कर डालना)

### चटपटी पड़ना

बेचैनी होनी । प्रयोग—तब ते तन मन परी चटपटी, गोंद न दुहन दई री (सू० सा०(परि० १)—सूर, ९९); लगी चटपटी सबके जिय में सबको मुख कुम्हिलायो (राधा० ग्रंथा०—राधा० दास, २३)

### चटाना

घूस देना—काम निकालने के लिए गुप्त रूप से कुछ देना । प्रयोग—रंडी भइयों को तो सेठजी चटाते ही थे मगर उनका घना लगाव अपने एक निकट सम्बन्धी की पत्नी से था (ये कौठे०—अ० ना०, ५३)

### चटोरी जवान होना

चटपटा खाने का लालची होना । प्रयोग—जाय मिठाइयां, आप मुंह सड़ेगा, फोड़े फुन्सियां निकलेंगी, आप ही जवान चटोरी हो जायगी (मान० (१)—प्रेमचंद, ३१)

### चढ़ड़ी गठना

काम बन जाना । प्रयोग—हुजूर का काम हो गया, अब चढ़ड़ी गठ गई (चोटी०—निराला, १९)

### चढ़ आना

(१) चढ़ाई करना, हमला बोल देना । प्रयोग—पातसाहि कह अंस न बोलू । चढ़े तो पर जगत मह बोलू (पद०—जायसी, ४२२); बेगि न मिली जानकी ले के रामचन्द्र चढ़ि आयो (सू० सा०—सूर, ५६२); देहउं उत्तर जो रिपु चढ़ि आवा (राम० (लं)—मुल्सी, ९४९); जुद्ध को आजु भरष्य चढ़े पुनि गुंहुमि की इसहं दिसि छाई (केशव० (२)—केशव, २५०); जब कस सब राजाओं का राज ले चुका तब एक दिन अपना दल ले राजा इन्द्र पर चढ़ चला (प्रेम सा०—

ल० ला०, १०); तब शोणाचार्य ने कौरवों पांडवों को चढ़ा ले जाकर उन्को मुखे बंधवा ली थी (परीक्षा०—श्री० दास, ९२); हे वानर ! × × शासन करने वाला शाइस्ता, शाइस्ता ली बतकर, मैं तुम पर चढ़ आया हूँ (गुलेरी ग्रंथ(१)—गुलेरी, २६८); हगों का सरदार तोरमाण भारतवर्ष पर चढ़ आया है (भोर०—जग० माधुर, १४४); वन रहे थे मानसिंह, सो उनपर भी सेना लेकर चढ़ दीहे (विप०—प्रेमो, २२)

(२) भगड़ा करना । प्रयोग—मोहल्ले के कई लड़के मेरे लड़कों को मार रहे थे । मैंने जल्द उन सबों की गोण-माली कर दी । वस, इतनी सारा सी बात पर लोग चढ़ जाये (रंग० (१)—प्रेमचंद, २०८)

### चढ़ कर

तुलना में खेप या अधिक । प्रयोग—धरम धरम बल भीम पैज पख रूप नकुल अकिल सहदेव ते तू चढ़िके (भूषण ग्रंथा०—भूषण, १५३)

(समा० मुहा०—चढ़ चढ़कर)

### चढ़ बनना

(१) सुयोग मिलना । प्रयोग—नायकराम की चढ़ बनी । दलाली करने लगे (रंग० (२)—प्रेमचंद, ३१७)

(२) पक्ष सुबल होना । प्रयोग—अब तो पण्डित जी की खूब चढ़ बनी (परीक्षा०—श्री० दास, १६)

(३) धावा करना ।

(४) बहुत से लोगों का दल बांध कर किसी काम के लिए आना ।

### चढ़ बैठना

(१) शाकमण करना । प्रयोग—जहांपनाह, चढ़ बैठने का यही मोका है (मृग०—वृ० वर्मा, ४३५)

(२) बहुत खेव करना ।

### चढ़ता यौवन, चढ़ती जवानी

युवावस्था का प्रारम्भ । प्रयोग—जब बूढ़ापे में यह दशा है तो चढ़ते यौवन में न जाने क्या रही होगी (मा० ग्रं० (१)—मारतेन्दु, २४); तब उसकी चढ़ती जवानी थी (मान० (१)—प्रेमचंद, १७१); जिनकी चढ़ती हुई जवानी खोज रही अपनी कुरबानी (चक्र०—दिनकर, ५८)

### चढ़ती आयु

युवावस्था । प्रयोग—चढ़ती आयु में ही जिनका रस स्थिर



हो जाय उस युवक की रसज्ञ कौन कहेगा (सुहाग०—अ० ना०, ८); चढ़ती घाम की लड़कियां जरूर सलवार—कमीज पहने थीं (झुठा० (१)—यशपाल, ६१)

### चढ़ती जवानी दे० चढ़ता यौवन

#### चढ़ा ऊपरी करना

तुलनामें अपने आपकी ऊंची स्थितिमें रखनेका प्रयत्न करना। प्रयोग—पड़ोसियों ने उसका पक्ष किया, सब तो है, आपस में यह चढ़ा-ऊपरी नहीं करना चाहिए (मान० (८)—प्रेमचंद, ७०); उनके साथ चढ़ा ऊपरी करने में अंधेजों ने सरगर्मी दिखाई (सा०सी०—महा०द्विवेदी, ४६)

(समा० मुहा०—चढ़ा ऊपरी लगाना)

#### चढ़ा जाना

(१) सा जाना, पी जाना। प्रयोग—बूटी तैयार हुई, 'बम भोला' कहके सम्मोजीने एक लौटा भर चढ़ाई (मु०नि०—बा० मु० मु०, २३३); घोर इस भावना से प्राण पाने के लिए मृ०शी सिबलाल ने दूसरे बूट में ही गिलसिया वाली शराब चढ़ा ली (भूले०—मंग० वर्मा, १४९); छाछ का छन्ना एक सांस में चढ़ा गया (कठ०—दे० स०, २७१)

(२) शराब पीनी। प्रयोग—किसी दिन कहीं से अधिक चढ़ा घाता तो उस दिन नूफान मचा देता (धरती०—वि० प्र०, १४६)

#### चढ़ा देना

बलिदान करना, उत्सर्ग करना। प्रयोग—देश की इज्जत बचाने के लिए या चढ़ा जिनेने दिए लात है (कुरु०—दिनकर, २)

#### चढ़ा लाना

किसी पर आप्रमण करने के लिए आर्पित करना। प्रयोग—यह क्यों नहीं कहती कि तू ही उसे चढ़ाकर लाई है (रंग० (१)—प्रेमचंद, ३९४)

#### चढ़ावा चढ़ना या चढ़ाना

(१) विवाह में बधू को गहने कपड़े देना। प्रयोग—इसके कुछ दिनों पीछे रमानाथ के साथ देवबाला का ब्याह ठीक हो गया, चढ़ावा भी चढ़ गया (ठेठ०—हरिऔध, १६)

(२) भेंट-पूजा चढ़नी।

#### चतुरई छोलना,—तोलना

चालाकी करना। प्रयोग—बहुनायकी घाजु में चानी, कहा चतुरई तोलत हो (सू० सा०—सूर, ३१७४); जाहू चले गुन प्रगट सूर-प्रभु, कहा चतुरई छोलत हो (सू० सा०—सूर, ३१७४)

#### चतुरई भारना

चतुराई दूर कर देना। प्रयोग—ऐसे वचन कहोंगी इन सों, चतुराई इनकी मैं भारति (सू० सा०—सूर, २३८९)

#### चतुरई तोलना

#### दे० चतुरई छोलना

#### चपत चलाना

घपमान करना। प्रयोग—थी कभी हमसे नहीं जिनकी चली आज दिन वे ही चलाते हैं चपत (चुमते०—हरिऔध, ८०)

#### चपत भाड़ना

चाटा मारना। प्रयोग—तेकड़ों ताड़ भाड़ सब दिन कर है चपत भाड़ना हमें घाता (बोल०—हरिऔध, १६५)

(समा० मुहा०—चपत जमाना,—धरना)

#### चपत पड़ना

(१) ध्यर्ष व्यय होना। प्रयोग—उनके जाने के बाद लालाजी ने अमरकान्त को आड़े हाथों लिया—मुपत में १००) की चपत पड़ी (कर्म०—प्रेमचंद, ६७)

(२) नुकसान होना। प्रयोग—अंधापन ही क्या चोड़ी बिपत थी कि नित ही एक-न-एक चपत पड़ती रहती है (रंग० (१)—प्रेमचंद, २०२)

(समा० मुहा०—चपत लगाना)

#### चपरगट्टू बनाना

बेवकूफ बनाना। प्रयोग—मैंने बड़े बड़े काइए और छटे हुए शोहदों और पुलिस अफसरों को चपरगट्टू बनाया है (गदन—प्रेमचंद, ३०६)

(समा० मुहा०—चपरगट्टू करना)

#### चवाचवा कर बातें करना

एक-एक शब्द धीरे धीरे छोलना, मठार मठार कर बातें करना। प्रयोग—फिर देखूंगी, तुम मूर्ति लेने घाई किसी स्त्री से कैसे चवा चवा कर बातें करते हो (दूधगाछ—दे० स०, ३८७); बच्चे उसे देखकर, 'किला! किला!'—'पुकारने



लगते और मामा चबा चबा कर गालियाँ देने लगता (छूटा० (१)—यशपाल, १२७)

### चबाएँ और चबाना

किए हुए काम को बार बार करना, पिष्ट पेषण करना । प्रयोग—उनके यहाँ भाषा-लातिय है, पिगल की कोई भूल नहीं, खोजने पर भी कोई दोष न मिलेगा, लेकिन उपज का नाम नहीं, मौलिकता का निशान नहीं, वही चबाएँ हुए और चबाते हैं, विचारोत्कण्ड का पता नहीं होता (रंग० (२)—प्रेमचंद, १७०)

### चबाना

(१) ध्वंसी तरह विचार करके समझना (तर्क या विचार करना) । प्रयोग—यह राज के लिए काफी है । इसे (तर्क) चबाएँ, फिर आगे सही (शेखर (२)—अज्ञेय, ७५)  
(२) कुंठित करना । प्रयोग—इयामदुलारी का माधुरी के प्रति अकारण पक्षपात और इन्द्रदेव पर सन्देह, उनके कर्तव्यज्ञान को चबा रहा था (तिल्ली—प्रसाद, १२५)

### चबेना करना

मजदूरों आदि का चना-चबेना से नाजता करना । प्रयोग—अब तो हाथ नहीं चलता । गोला भी छूट गया होगा, चबेना कर लें (मान० (२)—प्रेमचंद, २५९)

### चमक उठना

(१) खूब उत्पत्ति होनी । प्रयोग—तब तो एकदम चमक उठेगा (छूटा० (२)—यशपाल, २५७); तुम्हारी डाक्टरों ऐसी चमकेगी कि तुम्हारे नाम का डंका पिट जायगा (तिल्ली—प्रसाद, १४९)  
(२) आश्चर्य होना । प्रयोग—चाची चमक उठी (कंकाल—प्रसाद, २२७)

### चमकना

(२) घबरा जाना । प्रयोग—पार्लियामेंट के मैदान में उतरे तो चोटी के लीडरों की चोटी पर जा चमके (पद्म-परम—पद्म० शर्मा, ७६)  
(२) चिढ़ कर जाना । प्रयोग—चित्तमणि में एक जगह 'पंच शब्द ब्रजाने वालों को सोना बांटकर फोड़कर' म्लेच्छोंमें मुड़ करते समय बलभी के राजा शिखाशित्य के घोड़े के चमकाए जाने का उल्लेख है (गुलेरी प्रथा (१)—गुलेरी, २३५)

(३) रोव दाव होना ।

(४) नम्र चमकना—स्थानीय उक्ति होना ।

### चमगादड़ भूलना

गूना और खाली । प्रयोग—बड़े मालिकों के बलारोंमें भी चमगादड़ भूलने (मैले०—रेणु, २३१)

### चरका खाना

घोषा होना । प्रयोग—ऐसा चरका उमने कभी न खाया था (मान० (१)—प्रेमचंद, २७९)

### चरका देना

बेवकूफ बनाना, किसी को दूसरी बातों में उलझाकर बहकाना, धोखा देना । प्रयोग—इतने में गाड़ी ने सीटी दी रमा अधीर हो उठा । समझ गया, जमादार ने चरका दिया (गवन—प्रेमचंद, १३३)

(समा० मुहा०—चरका चराना,—पढ़ाना,—बताना)

### चरण चूमना,—परसना

(१) अत्यंत घादर करना । प्रयोग—माम न मुनकर धविवेकों का जग विवेक का चरण परसता (मर्म०—हरिऔध, १२)  
(२) सहज उपलब्ध होना । प्रयोग—सभी सम्पदा तो उगी पावप धमप के चरण चूमेगी (देशाली० (१)—चतुर०, ३५२)

चरण छूना,—मनाना,—रज सिर पर चढ़ाना,—लगाना,—लेना,—घटन करना

चरण छूकर सादर प्रणाम करना । प्रयोग—चरननि लागि करी बरिगाई, प्रेम प्रीति राखी उरभाई (कबीर प्रथा०—कबीर, ८७); चरन लागि करि विनय बिसाला (राम० (बाल)—तुलसी, १९८); बंदउ प्रथम महोमुर चरना (राम० (बाल)—तुलसी, ४); एहि विधि सब संवय करि दूरी । गिर धरि गुर पद पंकज धूरी (राम० (बाल)—तुलसी, ४६); श्री गुरु चरन-सरोज मनावी (नंद० प्रथा०—नंद०, १६७); श्री महाप्रभु को मेरा चरन छूना, पांव लगना या पांव लेना पड़ूँ और जरूर पड़ूँ (पद्म० के पत्र—पद्म० शर्मा, (समा० मुहा०—चरण रज लेना,—स्पर्श करना)

### चरण-जोहारी करना

पैर छूकर प्रणाम करना । प्रयोग—देवि मुख्य सकल कृष्णकृति, कीनी चरन-जोहारी (सू० सा०—सूर, ४४१)



चरण धो-धो कर पीना

२०६

चरसा उड़ा देना

चरण धो-धोकर पीना

अत्यन्त आदर करना । प्रयोग—मैं तो कहती हूँ, जोक्षा तो दूर रही—आप उस नारी के चरण धो-धोकर पीयें (गोदान—प्रेमचंद, १७२)

चरण परसना

दे० चरण चूमना

चरण मनाना

दे० चरण छूना

चरण-रज सिर पर चढ़ाना

दे० चरण छूना

चरण लगना

दे० चरण छूना

चरण लेना

दे० चरण छूना

चरण बंदन करना

दे० चरण छूना

चरणों का दास होना,—की गुलामी करना

पूर्ण अनुगत होना । प्रयोग—करत रहत धन-जन के चरण की गुलामी (भा० प्र०—भारतेन्दु, २७७); मधुप जो करते अनुगत विनय, वने तेरे चरणों के दास (मकुल—सु० कु० चौ०, १)

चरणों की गुलामी करना

दे० चरणों का दास होना

चरणों को धूल होना

(१) पूर्ण अनुगत होना । प्रयोग—जिहि पटि रास रहे भरपूरि, ताकी में चरनन की पूरि (कबीर ग्रंथ—कबीर, १२८)

(२) अत्यन्त तुच्छ होना ।

चरणों के नीचे आंख बिछाना,—में आंख बिछाना

बहुत आदर करना ; पूर्ण अनुगत होना । प्रयोग—अगर कोई स्त्री × × आपकी अपना देवता समझे × × आपके चरणों के नीचे आंखें बिछाये × × तो मैं दावे से कह सकती हूँ, आप उसकी जोक्षा न करेंगे (गोदान—प्रेमचंद, १७२) ; देव कीशाम्बीपति, जब सम्पूर्ण जन पद

मेरे चरणों में आंखें बिछाता है × × तब क्या मैं आपका कुछ भी प्रिय नहीं कर सकती ? (वैशाली०—चतुर्०, ११७)

(समा० मुहा०—चरणों पर न्योछावर होना)

चरणों तक पहुँचना

योग्यता में बहुत घटकर होना—नुतना में बहुत नीचा स्थान होना । प्रयोग—मैं तो उनके चरणों तक ही पहुँचता हूँ (कुल्लो—निराला, १४)

चरणों पर सिर रखना

(१) अत्यन्त आदर करना, अनुगत होना । प्रयोग—मैं तो तेरे चरणों पर सिर रखने को तैयार हूँ (मान०—प्रेमचंद, ३००)

(२) अत्यन्त विनम्रता दिखलाना ।

चरणों में आंख बिछाना

दे० चरणों के नीचे आंख बिछाना

चरणों में चढ़ाना

सेवा में उत्तम करना । प्रयोग—हृदय चरणों में तो मैं चढ़ा ही चुकी हूँ (देवेही०—हरिऔध, ४१)

चरणों में पड़ रहना

सेवा या आश्रय में पड़े रहना । प्रयोग—अब तो आप पर्यो चरनन में (भा० प्र०—भारतेन्दु, ८३०),

चरणों में लोटना

अनुगत होना, अधीन होना । प्रयोग—समस्त भारत हृगों के चरणों में लोट रहा है (स्कन्द०—प्रसाद, १४३)

(समा० मुहा०—चरणों पर लोटना)

चरने जाना

कुछ न दिखाना—समझना । प्रयोग—कुछ न चारा है विचारो क्या करे । जाति की है आंख ही चरने गई (चुमते०—हरिऔध, ५७)

चरबा उतारना

उपहास करना । प्रयोग—जायगा चरबा उतारा क्यों नहीं, छ गद् गद् है आंख में चरबी अगर (बोल०—हरिऔध, ५४)

चरसा उड़ा देना

खाल उधेड़नी, धुंल्लि करनी । प्रयोग—समझेओ, एहि माँ फरक न पड़े, नाहीं चरसा उड़ाव दीन जेहे (मिसा०—कीशिक, १२१)



## चराना

बेवकूफ बनाना । प्रयोग—ताहि कह कैसे कृपानिधि, सकत सूर चराइ ? (सू० सा०—सूर, ५६); मैं उसकी अभी पड़ाऊँगी वह मुझको चली चराने है (नूर०—भक्त, ५३); मैं बातों का बनाना आज दस साल से रेश रहा हूँ । तू मुझे चराती है ? (लिली—निराला, १४)

## चर्चा चलना या चलाना

चर्चा होनी या करनी । प्रयोग—आ दिन ते चलिये की चर्चा चलाई तुम, ता दिन ते बाके तन छाई पियराई है (मति० मक०—मतिराम, १२३)

(समा० मुहा०—चर्चा उठनी,—होनी)

## चर्ची बढ़ना

गर्ब होना । प्रयोग—एक दिन में तुम्हारी चर्ची बड़ गई (चोटी०—निराला, ९७)

## चरीं बूकना

लगती बात कहनी । प्रयोग—शुहदे की बातचीत सुनकर हमारे बनारस के भैया लोगों से कब रहा जाता है, यह भी अपनी चरीं बूकने लगे (भा० प्र० (३)—भारतेन्दु, ८६५)

## चल चलाव लगाना

मृत्यु के निकट होना । प्रयोग—आजकल जो समय है, उसके देखते चालीस के ऊपर पहुँच जाने पर आशुओं का चल-चलाव लग जाता है (मा—कोशिक, १०)

## चल देना

गर जाना । प्रयोग—मुख भोगना लिया होता, तो जवान बेटे चल देते ? (गवन—प्रेमचन्द, १७८)

## चल निकलना

(१) वृद्धि पर होना । प्रयोग—गुना है बिता प्रसाद का कार्य अच्छा चल निकला है (ग्रह०—दे०स०, १०२)

(२) मांग बढ़नी ।

(३) प्रसिद्धि प्राप्त करनी ।

## चल बसना

मृत्यु होना । प्रयोग—सचमुच ता० २२ जनवरी को

संध्या के सात बजे थीमती × × इस संसार की ममता छोड़ चल बसी (राधा० प्रथा०—राधा० दास, १०३); जाति जिससे चल बसा है चाहती आज भी छूटी कुचालों से कहाँ (चुमते०—हरिप्रोष्ठ, १५१); जैसे मिट्टी के बर्तन कुछ मुलाने, कुछ पकाने और कुछ उठाने-रखने में टूटते रहते थे, उसी प्रकार बच्चे भी कुछ जन्म लेते ही, कुछ घुटनों के चल चलते हुए और कुछ टेढ़े-मेढ़े पैरों पर डगमगाकर माता-पिता के काम में सहायता देते हुए चल बसते थे (घनोत्त०—महादेवी, १०१); पर धर्मी वे छः मास के गर्भ में ही थे कि उनके पिता चल बसे (दूधगाछ—दे०स०, १०१)

## चलता आदमी,—पुरजा,—हुआ

बहुत होशियार और चालाक । प्रयोग—मगर तुम लोगों की मुहब्बत कलकत्ते में उस साठ के बनाने से ही समझदार मुसलमान समझ गये जो तुम्हारा एक चलता घफसर मिराजुद्दीन का मुंह काला करने के लिये एक कयासी बकरे की यादगारी के तौर पर बना गया है (गु० नि०—बा० मु० गु०, २४३); दूसरे यूरोप वाले कुछ ऐसे चलते पुरजे व्यवसायी घोर उद्यमशील हैं कि वहाँ काम से कुर्बान बनने वालों के पास घन की कमी रही नहीं जाती (भट्ट नि०—बा० महु); दयाराम चलते-पुर्जे आदमी थे (लिली—निराला, ८३); वह मुंशी ज्वाला सिंह के इजलास के पहलमद थे—बड़े बातूनी, बड़े चलते-पुर्जे (प्रेमा०—प्रेमचन्द, २९); ऐसा चलता हुआ आदमी तो मैंने देखा ही नहीं (मा—कोशिक, २६९)

## चलता काम

ऐसा काम जो बहुत ध्यान या कुशलता से न किया गया हो । प्रयोग—आप धार्मिक परिश्रम न कीजिये । चलता काम कर दीजिये (पद्म० के पत्र—पद्म० शर्मा, १६४)

## चलता पुरजा

दे० चलता आदमी

## चलता बनना

चले जाना । प्रयोग—मकान की रखवाली के लिये जो नौकर था, वह भी चलता बना (पद्मपराग—पद्म० शर्मा, ८१)

(समा० मुहा०—चलता होना)



### चलता शब्द

आम बोल-चाल के शब्द । प्रयोग—हंसी-मजाक के लिये कुछ अरबी-फारसी के चलते शब्द कभी-कभी कितना अच्छा काम देते हैं यह हमलोग बराबर देखते हैं (चिंता० (१)—शुक्ल, १८९)

### चलता सिका होना

मान्य होना । प्रयोग—मोविन्दन का संगीत चलता सिका है (दूधगाछ—दे० स०, ३००)

### चलता हुआ

दे० चलता आदमी

### चलती गाड़ी पर पैर रखे होना

बहुत जल्दी में होना—विलकुल फुसंत न होनी । प्रयोग—मैं मिलने गया तो ऐसे मिला जैसे चलती गाड़ी पर पांव रखे हुए हो (पैतरे—अशक, ६४)

### चलती भाषा

बोलचाल की भाषा । प्रयोग—अतः भाषा बोलचाल की, मुहावरेदार, चलती भाषा हो (मेरे०—गुलाब०, ४८)

### चलती रकम होना

चालू होना, होशियार होना । प्रयोग—वह तो बड़ी चलती रकम है (दूधगाछ—दे० स०, १९५)

### चलती होना

(१) वृद्धि पर होना । प्रयोग—वह अब सलनऊ की सबसे चलती हुई जूते की दुकान थी (गोदान—प्रेमचन्द, ६३)

(२) प्रभाव होना ।

(३) बुरी चाल-चलन वाली—घपना काम निकाल लेने वाली ।

### चलते-फिरते

(१) हर साधारण व्यक्ति । प्रयोग—फिर भी आवश्यक रूप से पड़े जाने वाले पृष्ठों तथा कवरों पर विज्ञापन देना अधिक लाभदायक होगा क्योंकि उनपर चलते-फिरते की सहज में दृष्टि पड़ जाती है (मेरे०—गुलाब०, ६४)

(२) किसी दूसरे काम को करते-करते बीच में सहज हो और कोई काम कर डालना ।

### चलते-फिरते नजर आना

चले जाना, खिसक जाना । प्रयोग—प्रेत मेरे पीछे लगा है और मुझे बहकाता है कि गोप × × पाँच उठाओ आगे बढ़ो और चलते-फिरते दिखलाई दो (भा० ग्रं० (१)—भास्तेन्दु, ५७१); नतीजा यह हुआ कि योरिया-बंधना संभाल महाकविजी उस वकत चलते-फिरते नजर आए (अपनी खबर—उग्र, १५); कहता हूँ, गीधे से अपने योरिए-बकचे लाओ, और चलते-फिरते नजर आओ (रंग० (२)—प्रेमचन्द, ३२०)

### चलते बेल को अरई करना,—औंगी देना

(१) किसी के काम करते रहने पर भी उसे ताकीद करके तंग करना । प्रयोग—जा तो रही हूँ, लेकिन चलते हुए बेल को औंगी न देना चाहिए (गोदान—प्रेमचन्द, २०८)

(२) काम करने वाले को ताकीद करना या उत्तेजित करना । प्रयोग—सुर प्रभु यह जानि पदवी, चलत बेलहि धार (सु०सा०—सुर, १९९)

### चलते बेल को औंगी देना

दे० चलते बेलको अरई करना

### चलना

(१) उन्नति पर होना । प्रयोग—वह चालवाजी और वकालत के समस्त दांव-पेंचों से काम लें तो इससे कहीं अधिक चले (मिसा०—कौशिक, ४४)

(२) बात मानी जानी । प्रयोग—मूलधर हर तैं न हँहै धरहरि, कुंभकरन, प्रहस्त, इन्द्रजीत की कहा चली (क० र०—सेनापति, ९०); हमारी बात में बूढ़ी-पुरानी स्त्रियों की ही चलती है (मृग०—वृ०वर्मा, १३०); चोचलोंकी चली नहीं सब दिन काम का ही जहान है सोजी (सुभते०—हरिऔध, ३६); तुम तो जानते ही हो कि खानान हुसेन और इस मोर की चलती है (भुले०—मग० वर्मा, ३४३)

(३) कोई वज्र होना । प्रयोग—हिन्दू हरबंद चिल्लाते और मिर धुलते हैं उनकी एक नहीं चलती (भट्ट नि०—दा० भट्ट, १०); रघू ने मन में ठान लिया था कि इस



विपत्ति को घर में न आने दुँगा मगर होनहार के सामने उसकी एक न चली (मान० (१)—प्रेमचन्द, ९); विलियों से चली न चूँ की छिपकली से सके न कीड़े पल (चुमते०—हरिऔध, ५४)

(४) प्रयोग में लिया जाना। प्रयोग—दक्षिण में एक सिक्का 'हुन' नामक था जो अभी-अभी तक चलता रहा (गुलेरी ग्रंथ (१)—गुलेरी, २१५)

(५) गुजर होना—निर्वाह होना।

### चला-चली

अंत समय। प्रयोग—बड़े साहब की चलाचली है, चब को संभालने के लिए आपको बुलाया है (कंकाल—प्रसाद, २५०)

(समा० मुहा०—चलाचली को बेला)

### चलाना

किसी के बारे में कुछ कहना। प्रयोग—निमिष एक मधुरा की बाली, जननी जठर न धावे। जे बड़ भागी रहे निरंतर, तिनको कौन चलावे (सू० सा०—सूर, ३७१५); नद जसोदा हूँ की विसर्यो, हमरी कौन चलावे (सू० सा०—सूर, ४०२५); देह की न खबरि सुगेह को चलावे कौन, गात न सोहात न सोहातों परिवारिका (भूषण ग्रंथा०—भूषण, २२५)

### चलाये न चलना

प्रभाव न मानना, विचलित न होना। प्रयोग—मागह बरबहु भाति लोभाए। परम धीर नहि चलाहि चलाए (राम० (बाल)—तुलसी, १५६)

### चलित-वृत्त

दुबल मन, चलायमान व्यक्ति। प्रयोग—यहाँ संसार में रहकर जो एक बात में भी चलित वृत्त है वे अपनी बाकी चाल चलन को भी नहीं सुधरी हुई रख सकते (महु नि०—वा० महु, ३४)

### चलितर उछलना

गलत या बनावटी व्यवहार होना। प्रयोग—हमारे घर में ही क्या कम चलितर उछलते हैं (बुँद०—अ० ना०, ५)

### चले जाना

मर जाना। प्रयोग—यार, दुनिया में घाये, तो कुछ दिन

सैर सपाटे का घानन्द भी उठा लो, नहीं तो एक दिन यों ही हाथ मलते चले जायेंगे (मान० (७)—प्रेमचन्द, ३५); उनके सारे सुख-सपने यही रह गए और उन्हें यहाँ से चले जाना पड़ा (विप०—प्रेमी, २२)

### चसका लगना

बारम्बार किसी चीज की इच्छा होनी, स्वाद पड़ना। प्रयोग—गोपिनके रस को चसको जब लौ न लग्यो तब लौ मन गुंजन (घन० कवित—घना०, २३२); सैर कबीर-दास भाग्यशाली थे, उन्हें रामरस का चसका लग गया और वे दिन-रात इस महारस में बुद बने रहे (कबीर—ह० प्र० द्वि०, ७४); जब मेरे पिता जीवित थे तभी न जाने कैसे मेरे दोनों बड़े भाइयों को रामलीला में पार्ट करने का चसका लग गया था (अपनी खबर—सुप्र, २७); अच्छे साहित्य के पढ़ने का चसका लगाइए (पद्म० कपत्र—पद्म० शर्मा, १५०)

(समा० मुहा०—चसका पड़ना)

### चहन कर खाना

बहुत अच्छी तरह खाना। प्रयोग—लुचईपोद थोड़ा थोड़ा खाइँ। पाछे चहन खाइँ सो जेई (जायसी—हि० श० सा०)

### चहल-कदमी करना

धीरे-धीरे टहलना। प्रयोग—मिस्टर जोशी ने गहरे विचार में घास पर चहल-कदमी करते हुए पुकारा—मुजसा (ज्ञान०—यशपाल, ५०)

### चाँद का टुकड़ा

प्रत्यन्त सुन्दर। प्रयोग—मैं सर्वदा सोचा करती थी कि मेरी बेटी को दूसरा चाँद का टुकड़ा मिले तो मैं सुखी होऊँ (भा०ग्रंथा० (१)—भारतेन्दु, ११); मुनता हूँ बड़ी रूपवती स्त्री है, चाँद का टुकड़ा है अपना है (रंग० (२)—प्रेमचन्द, २०३); प्रजी चाँद का टुकड़ा लो। लड़कों की क्या कमी है (मा—कौशिक, ३५)

### चाँद लगाना

इज्जत या सौन्दर्य बढ़ाना। प्रयोग—क्या नाम, काँपेस को तुम बड़े चाँद लगाओगे (झुठा० (२)—यशपाल, ३०४)

### चाँदी कटना या काटना

घाराम से दिन बीतना, मोटा लाभ होना। प्रयोग—होटल वाला ईरानी घक्कर हमसे छेड़ में कहा करता कि आजकल



आप लोगों की चांदी कटती होगी (ये कोठे०—३० ना०, ३७—३८); क्षत्रिय महाराज की कृपा से खड़ी जवानी हाथ लगी है, अब ठाट से मजे करो, चांदी काटो (गंगा०—उग्र, २९)

### चांदी के टुकड़े

रूपये। प्रयोग—मैं मानता हूँ कि एक सास जाति की औरतों को उस जमाने में जो चन्द चांदी के टुकड़ों के लिए किसी भी मर्द के हाथ अपनी अस्मत् बेचने को एक तरह से मजबूर किया जाता था, वह बात इन्सानियत के एकदम खिलाफ थी (जहाज०—इ०जोशी, १४५)

### चांदी के बटखरों से तौलना

रूपये-पैसे की दृष्टि से विचार करना। प्रयोग—लेकिन 'आज' की बजह से मेरी वह प्रचण्ड पब्लिसिटी हुई, नगर में, प्रदेश में, हिन्दी हृद तक सारे देश में कि ज्ञान मंडल के बरदानों को मैं चांदी के बटखरों से क्यों तोलूँ (अपनी सबर—उग्र, १००)

### चांदी बनाना या होना

खुब धन आना, लाभ ही लाभ होना। प्रयोग—वेत में दशहरा को गंगापुत्रों की चांदी है (प्र० पी०—प्र० ना० मि०—१०४); तब तो चांदी है इन मछलियोंके खूब दाम मिलेंगे (विप्र०—प्रेमी, ४३); एक मर जायगी तो दूसरी फिर धा जायगी, बल्कि नई नवेली तुम्हारी चांदी ही चांदी है (कर्म०—प्रेमचंद, १८०); जब सीधी टाककर के बेचने से चांदी बनती है तब शर्बत मुख्खे और मिठाइयाँ कौन बनाएँ! (मेरे०—गुलाब०, ८१)

### चाकर होना

सेवा में उपस्थित रहनेवाला, अनुबर्ती, आज्ञाकारी। प्रयोग—जो न चित का नित बना चाकर रहा। वान चितवन के नहीं तिस पर चले (चोखे०—हरिश्चंद्र, १४)

### चाट जाना

(१) समाप्त कर देना। प्रयोग—वेरियों को न चाट जब पाया तब रहे होठ चाटते हम क्या (चुमते०—हरिश्चंद्र, १७) (÷)

(२) नष्ट कर देना। प्रयोग—देखिए प्रयोग (१) में (÷)

(३) खूब अच्छी तरह पड़ना। प्रयोग—कोस का एक-एक

शब्द चाट गए थे मगर बेचारे फेल हो गये (मान०(१)—प्रेमचंद, ८४); साहित्य के उस महान् कोष को चाट जाने पर भी वे दीमक की ही भाँति कोरे के कोरे थे (चेतन—अशक, ४२); तू जो इतना बड़ा हो गया अंगरेजी, फार्मी, हिन्दी न जाने क्या क्या चाटें बैठा है—तुझे किताबें रखने का बड़ा सहर है (मिस्त्रा०—कौशिक, २९)

(४) खा जाना, नष्ट कर देना।

### चाट पड़ना

छादत पड़नी, चस्का पड़ना। प्रयोग—शिकारों का वृत्तान्त सुनने की बसुधा को चाट सी पड़ गयी (मान०(१)—प्रेमचंद, २४४); मरे बेसरम हैं उन्हें तो चाट पड़ रही है (भारती०—रा० रा०, ८२)

### चाट लगाना

आदत पड़नी, चस्का लगाना, छादत डालनी। प्रयोग—यह तो खुला जुआ है और बिहारी बाबू आपको चाट लगाने के लिये प्रथम यह सच्चा बाग दिखाते हैं (परीक्षा०—श्री०दास, १३४); पचादि पड़नेकी चाट लगाओ (पद्म०के पत्र—पद्म० शर्मा, १३३); है बुरी चाट लग गई जो को बेतरह है कचट कचट जाता (चुमते०—हरिश्चंद्र, ७४)

### चादर के बाहर पैर फैलाना

(१) घामदनी से अधिक व्यय होना; सामर्थ्य से बाहर काम करना। प्रयोग—वे अपनी सरकार समझकर उसकी बचत करना नहीं चाहते हैं और अपनी सुख सुविधाओं को चादर से बाहर पैर निकाल कर बढ़ाना चाहते हैं (मेरे०—गुलाब०, २०४); फिर वह नये सिरे से जीवन-संश्रम में प्रवेश करेगा, हाथ पाँव बचाकर काम करेगा अपनी चादर के बाहर जो भर भी पाँव न फैलायेगा (गवन—प्रेमचंद, १५८)

(२) मर्वादा का उल्लापन करना।

### चादर चूड़ी रख लेना

विधवा होने से बचा लेना। प्रयोग—घर-घर तुरकानि, हिंदुनी देति असीस सराहि। पतिनु राखि, चादर चुरी तं राखी, जयसाहि (बिहारी रत्ना०—बिहारी, ७१२)

### चादर तान कर सोना

निश्चित हो जाना। प्रयोग—रचनहार कूँ चीन्हि छै, खैवे



कूँ कहा रोइ । दिल मंदिरमें पेयि करि तागि पछेवड़ा सोइ  
(कबीर ग्रंथा०—बौर, ५८)

### चादर देख कर पैर पसारना

अपनी सामर्थ्य के अनुसार कार्य करना । प्रयोग—हम तन हेरि चितै अपनी पट देखि पसारीहि जात (सू० सा०—सूर, ४५११); अपनी पहुँच विचार के करतब करिये और । तेते पांव पसारिये जेती लाम्बी सौर (पू० स०—वृन्द, ५); आदमी अपनी आदत से लाचार है । फिर भी चादर देख कर ही पांव पसारने चाहिये (पद्म० केषत्र—पद्म० शर्मा, ७८); जालवा ने बनावटी कापते हुए कण्ठ से कहा—अपनी चादर देखकर ही पांव फैलाने चाहिए (गदन—प्रेमचन्द, ६९)

### चाबुक जमाना

प्रभावपूर्ण बात करना । प्रयोग—चौधरी ने होरीका आसन पाकर चाबुक जमाया—हमारा तुम्हारा पुराना भाई चारा है महतो, ऐसी बात है भला (गोदान—प्रेमचन्द, २९)

### चाभी घुमाना

परिस्थितिको रुख देना या प्रभावित करना । प्रयोग—देखू गुप्त साम्राज्य के भाग्य की कुंजी यह किधर घुमाती है (स्कंद०—प्रसाद, २७)

### चाभी हाथ में होना

किसी से काम करवाने की क्षमता या अधिकार होना । प्रयोग—हमारी सफलता की चाबी तो डिस्टीब्यूटर के हाथ में रहती है (दूधगाँव—दे० स०, २५५)

### चाम के दाम चलायना

अपनी चलती में अन्याय करना—अंधेर करना । प्रयोग—चाम के दाम चलावत तूम तो, कुबिजा के अधिकारी (सू० सा०—सूर, ४६५४); चाम की ओभ चामपन दिखजा चाम के दाम क्यों चलाती है (बोल०—हरिऔध, ९७)

### चाय पर आना

चाय पीने के लिए निमंत्रित होकर कहीं आना । प्रयोग—डायरक्टर कादिर चाय पर आ रहे हैं (पैतरे—अशरफ, ५८)

### चार

(१) कुछ, थोड़ा । प्रयोग—चार पई इनको मत लीजिय ।

ऐसेहि कैसे बिदा कर दीजिय (केशव० (२)—केशव, ३१०); बार-बार ध्यान दिलाने और प्रार्थना करने पर भी उन्हें पद्म-पराग पर चार पंक्तियाँ लिखकर किसी पत्र में भेजने की फुरसत घाज तक न मिली (पद्म० के पत्र—पद्म० शर्मा, १४३); आपके चार पैसे खाता हूँ, तो आपको आँखों से देखकर गढ़े में न गिरने दूँगा (रंग० (१)—प्रेमचन्द, ३७७); चार आदमी की राय से किए हुए काम का अच्छा होता है अंजाम (बुद्ध०—वचन, ७६) (÷)

(२) सब । प्रयोग—साँवहूँ ताको न होत भलो जो न मानत हैं कही चार जनेकी (जग०—पद्माकर, २३); आज के उत्सव में चार स्त्रियों के सामने क्या पहन कर जाऊँगी ? (कामना—प्रसाद, ८५)

### चार अक्षर पढ़ना

थोड़ा पढ़ना । प्रयोग—चार अक्षर क्या पढ़ गया उसका तो दिमाग ही फिर गया (झुठा० (१)—यशपाल, ४९८); उनके मन में यह अभिलाषा होती है कि मेरा बच्चा चार अक्षर पढ़ जाय (मान० (४)—प्रेमचन्द, ८)

### चार आँख करना या होना

(१) समझ घाना, ज्ञान-वृद्धि होनी । प्रयोग—मैं तो फिर भी घगरेजी की प्रशंसा करूँगा । इसके पढ़ने से आदमी के चार आँखें हो जाती हैं (मा-कौशिक, ३७)

(२) नज़र से नज़र मिलाना ।

### चार आँसू बहाना

शोक करना । प्रयोग—मूहलेकी स्त्रियाँ अढ़ाके पास घाकर चार आँसू बहा जाती (प्रेमा०—प्रेमचन्द, ३६५)

(समा० मुहा०—चार आँसू गिराना)

### चार कदम आगे होना

बढ़कर होना । प्रयोग—मेरी परेलू समस्यायें मेरी कल्पना से भी चार कदम आगे रहती हैं (मेरे०—गुलाब०, ५)

### चार के कंधे पर चढ़ना

शक्याबा में ले जाया जाना ; मर जाना । प्रयोग—



घाँस पर कितनी चढ़े तब किसलिए चल पड़े जब चार कंधों पर चढ़े (बील०—हरिऔध, १४६)

(समा० मुहा०—चारके कंधे पर चलना,—जाना)

### चार-गाल हँसना-बोलना

हंसी-मजाक करना, आनन्द लेना। प्रयोग—बस चुप रहो में तुम्हें खुब समझती हूँ। तुम भी जाकर चार गाल हँस-बोल घाते हो न, क्या इतनी घारी भी न निभाओगे (रंग०(२)—प्रेमचंद, ११६)

### चार चाँद लगना या लगाना

चोगुनी प्रतिष्ठा होनी, चोगुनी शोभा बढनी, महत्व, सौंदर्य या प्रभाव और बढाना। प्रयोग—म्युनिस्मिपिटी के रजिस्टर के अनुसार उस मकान का नंबर इस समय ४२० है जो सही तौर पर बाबू खेदालाल की स्थाति में चार चाँद लगाता है (बुँद०—अ० ना०, ३९); उनके × × मस्तक पर मोभाग्य-चिन्ह उनकी मुष्मा की चार चाँद लगा रहा था (घोली—चतु०, ७३); लग गये चार चाँद जिस मुँह को हम उसे चाँद-सा कहें क्यों कर (चोखे०—हरिऔध, ११७); बंगाली की कीर्ति में अम्बा की कीर्ति चार चाँद लगा देगी, ऐसा मुझे स्पष्ट भास हो रहा है (अम्ब०—रा० बे०, ४४); यह कहना तो कठिन था कि इन पेड़ों ने भोंपड़ी की शोभा बढा दी थी या जोंगड़ी ने इनकी सुन्दरता में चार चाँद लगा दिए थे (ब्रह्म०—दे०स०, १६७)

### चार-चार आठ सुनना

जो कहा जाय उसे मानना। प्रयोग—मेरी तो क्या, वे भी तुम्हारी बातें चार-चार आठ सुनते, बीबी (बीने०—रा० रा०, १०२)

### चार दिन

कुछ दिन, घलकाल। प्रयोग—कबीर कहा गरबियों, इस जीवन की धास। टेसू फूले दिवस चारि, खंखर भये पलास (कबीर ग्रंथा०—कबीर, २१); ऐ रानी मन देसु बिचारी। एहि नैहर रहना दिन चारो (पद०—जायसी, ४२); जीवन बन हे दिवस चारि को, क्यों बदरी की छाही (सू० सा०—सूर, ३३६३); रथ बहाद देसगद बनु किरैहु गये दिन चारि (साम० (प्र)—सुलसी, ४४८); याहि

को कहायो बजरज दिन चारि ही में, करिहे उचारि बज ऐसी रीति नाधि कै (सति० मक०—सतिराम, १३७); दोलत पाइ न कीजिये सपने में अभिमान। बंचस जल दिन चारि को ठाउ न रहत निदान (कुण्ड०—गिरधर दास, ९); चार दिन का होसला यहाँ होता है, फिर तो कोई ध्यान भी नहीं रहता (राधा०ग्रंथा०—राधा०दास, ४१९); यदि सबको पड़क एकबारगी खुल जाय तो एक ओर छोटे मुँह से बड़ी-बड़ी बातें निकलने लगें, चार दिन के मेहमान तरह-तरह की फरमाइशें करने लगे × × (चित्ता० (१)—शुक्ला, ६५-६६); तनुचारियों का बस यहाँ पर चार दिन का मत है (जय०—गुप्त, ५५)

### चार दिन का मेहमान होना

(१) थोड़े दिनों जीने वाला। प्रयोग—चारि दिवस के पाहुने बड़-बड़ रूपहि ठाउ (कबीर ग्रंथा०—कबीर, २५७); क्यों न बोलू, तुम तो दो-चार दिन के मेहमान, हो, जो कुछ पड़ेगी, वह तो हमारे ही सिर पड़ेगी (प्रेमा०—प्रेमचंद, ५०)

(२) थोड़े दिनों रहनेवाला। प्रयोग—नहीं, तो मैं चार दिन की मेहमान, किसी को कुछ कहने का मौका ही क्यों देने लगी? (बीने०—रा० रा०, १०६)

### चार दिन की दिंदी

थोड़े दिनों का सुख। प्रयोग—परन्तु प्राणनाथ, ये दिन सर्वदा न रहेंगे, चार दिन की चाँदनी है (भा० ग्रंथा०(१)—भारतेन्दु, २५); इसके प्रतिरिक्त जिसके लिये घर छोड़ा × × उसको खोकर घब गांव में क्या मुँह लेकर जाऊँ। अपने पराये सब कहेंगे—बस चार दिन की चाँदनी हो गई; आतिर फिर घर ही की याद आई (भिला०—कौशिक, ४७)

### चार पैसा कमाना

कमाई करना। प्रयोग—सारी बात तो चार पैसे कमा सकने की है (दुष्गाछ—दे०स०, ४६); रामानन्दजी ब्राह्मण वृत्ति से चार पैसे कमाते थे (अपनी सवर—उग्र, ९४); लेकिन उनके आते ही उन्हें चार पैसे कमाने की फिक कंसी सिर पर सवार हो गई थी (गवन—प्रेमचंद, ६)

### चार पैसा होना

थोड़ा धन होना। प्रयोग—इसी कमाई में खुदाने कुछ



ऐसी बरकत दी कि  $\times \times$  चार पैसे हाथ में हुए  
(कर्म०—प्रेमचन्द, ३५)

### चार बातें कहना

भला बुरा कहना । प्रयोग—उन्हें चार बातें तुम कह दो  
या अपने ही सिर को धुन लो (बाल०—हरिऔध, १०५)  
(समा० मुहा०—चार बातें सुनाना)

### चार सौ बीस होना

बहुत धूर्त होना । प्रयोग—मुझे कोई लालची भले ही  
समझे  $\times \times$  स्वार्थी और चार सौ बीस भी हूँ किसी सीमा  
तक, पर मैं देशद्रोही बिल्कुल नहीं हूँ (ब्रम्ह०—दे० स०,  
४०४)

### चार सौ बीसी

धोखा-छल । प्रयोग—कानपुर वाली के भाई भी मुझे  
समझाने आये, कहा कि  $\times \times$  अगर तुम उसे खुश करके  
पटा लोगी तो तुम्हारे साथ निकाह भी हो जायगा । मैं  
इस चार सौ बीसी में आ गई (ये कोठे०—अ० ना०,  
१६६) ; पापके ऊपर चार सौ बीसी का दावा ठोकना है  
(बुट०अ०ना०, १५१)

### चारपाई पकड़ लेना

बहुत बीमार होना । प्रयोग—उसकी प्रेमिका उसके विरह  
में चारपाई पकड़ लेगी (चेतन—अश्क, २४५) ; इधर जब  
मे निर्मला ने चारपाई पकड़ ली है, रुमिनी के हृदय में  
दया का सोता-सा खुल गया है (निर्मला—प्रेमचन्द, २०४)

### चारा न होना

कोई युक्ति न रह जानी । प्रयोग—तो अब बहुत देखिये,  
मुनिबं, कहा करम सौ चारो (सू०सा०—सूर, ४१३७) ;  
मसक विरंचि, विरंचि मसक सम, करहु प्रभाउ तुम्हारे ।  
यह सामरथ अछल मोहि त्यागहु, नाथ तहां कछु चारो  
(विनय०—तुलसी, ९४) ; वह बने आस छोड़ बेचारा पाव  
जिसके रहा न चारा है (सुमते०—हरिऔध, ५)

### चारा फेंकना

फांसने के लिये युक्ति लगाना । प्रयोग—पहले  
धमकियां दिखा रह थे, जब देखा इससे काम न चलता, तो  
यह चारा फेंका (गोदान—प्रेमचन्द, १८१)

### चारों ओर

हर जगह, सब ओर । प्रयोग—नगर संवारहु चारिहु  
पार्सा (राम०(बाल)—तुलसी, २९२) ; कैसे करि जीजे,  
बस कीजे कहा, महा सोच, चारों ओर चलत पवान  
लघु-गुर में (घन० कवित्त—घना०, १८६)

### चारों खाने चित्त गिरना

पूर्णतः हारना । प्रयोग—चारों खाने चित्त गिरा है जितेन्द्र,  
राजनीतिक लेंगे खाकर (परती०—रेणु, ४०९)

(समा० मुहा०—चारों खाने पढ़ना,—शाने पढ़ना)

### चारों खाने चित्त गिराना,—मारना

बुरी तरह परास्त करना (कुत्तों में या किसी दूसरी  
युक्ति में) । प्रयोग—लेकिन पेंतरे देखना हाशिम भाई के ।  
कैसे चारों खाने चित्त गिराता है इन सबको (पेंतरे—  
अश्क, ९७) ; क्यों उस्ताद, मारा चारों खाने चित्त  
(मा—कौशिक, १२९)

### चारों खाने चित्त मारना

दे० चारों खाने चित्त गिराना

### चारों फल पाना

धर्म, धन, काम, मोक्ष चारों की प्राप्ति होनी ।  
प्रयोग—कृपासिंधु मुनि दरसन तोरे । चारि पदारथ  
करतल मोरे (राम०(बाल)—तुलसी, १७४)

### चारों हाथ-पांव से दीड़े आना

बड़े उत्साह या तत्परता से आना । प्रयोग—किसी  
इंस्टिट्यूशन की तरफ से बुलाओ  $\times \times$  फिर देखो, चारों  
हाथ-पांव से दीड़े आते हैं या नहीं (कर्म०—प्रेमचन्द, ३१०)

### चाल चलना

(१) छल करना । प्रयोग—इन लोगों ने मुझे भोग-  
विलास में फँसाने के लिए कम चालें नहीं चली (गोदान—  
प्रेमचन्द, १४) ; चाल चलनी ही पड़ती है, करें क्या  
मतलब के प्यासे (मर्म०—हरिऔध, ८८)

(२) युक्ति सफल होनी । प्रयोग—जहाँ खुदा की नहीं  
गली दाल, वहाँ बुद्ध की क्या चलती चाल (बुद्ध०—  
वचन, १७३)

(३) आवरण करना । प्रयोग—बैसी मुख तँ नीकमें



तैसी चाले बाल (कबीरग्रंथा०—कबीर, ३८); चले न ऐसी चाल सखत जग घांस चढ़े जेहि (राधा० ग्रंथा०—राधा० दास, ५३)

### बाल पट पड़ना

- (१) युक्ति न लगनी । प्रयोग—मगर आपके दुर्भाग्य से वह बाल पट पड़ गयी (गोदान—प्रेमचंद, २३५)
- (२) अच्छे दिनों का न रहना ।

### बाशनी देना

पुट देना । प्रयोग—रंगीन मित्राज पण्डितजी ने अपना फिसाना अंगरेजी की बाशनी देकर एगिवाई डंग पर लिखा (गु० नि०—बा० मु० गु०, २६२)

### बाह का रंग

प्रेम का भाव । प्रयोग—बाह के रंग मैं भीज्यो हियो, बिछुरे-मिले प्रीतम साति न माने, (घन० कवित—घना०, १)

### बाहनेवाला

प्रेम करने वाला । प्रयोग—प्यारे मेरे पीछे कोई ऐसा बाहने वाला न मिलेगा (भा० पंथा० (१)—भारतेन्दु, ४४७)

### बिता का टांगे रखना

बराबर बिता बनी रहनी । प्रयोग—नित न टांगे रहे उसे बिता जी बिना ही टांगे टंगा न रहे (चोखे०—हरिऔध, १८२)

### बिता खाये जाना

चितित होना । प्रयोग—घबड़ल काफिर है कि उसे एक ही बिता खाये जा रही है (ब्रह्म०—दे० स०, २१)

(समा० मुहा०—बिता घेरना)

### बिता मारे डालना

बहुत चितित होना । प्रयोग—कृण भी हो गया था । वह बिता और भी मारे डालती थी (मान०(१)—प्रेमचंद, १७)

(समा० मुहा०—बिता माथे सवार होना,—लगना)

### बिता में डूबना—उतराना

किसी दुविधा के कारण चितित रहना । प्रयोग—उपर स्त्री का रोग प्रसाध्य होता जाता था । बिना किसी कुशल डाक्टर को दिखाये काम न चल सकता था ।

वह इसी बिता में डूब-उतरा रहा था कि विलायती कपड़े का एक गाहक मिल गया जो एक-मुस्त दस रुपये का मान लेना चाहता था (मान०(१)—प्रेमचंद, २८८)

### बिता सागर में गोते खाना

अत्यन्त बिता-मग्न होना । प्रयोग—तारा द्वारकादास के पास बंठी बिता सागर में गोते खा रही थी (सु० सु०—सुदर्शन, १०५); “हूँ” कहकर ब्रजमोहन लाल फिर बिता-सागर में गोते खाने लगे (मा—कौशिक, २०)

(समा० मुहा०—बिता सागर में गोते लगाना)

### बिउंटियां लगना

- (१) किसी अप्रिय बात से तिलमिलाहट होनी । प्रयोग—राजा के बिउंटी लगी परन्तु उसने उपेक्षा की (मृग०—वृ० वर्मा, ३०९)
- (२) गर्मी से शरीर में चुनचुनी होनी ।

### चिकना घड़ा होना

ऐसा आदमी जिस पर कहने-सुनने का कोई प्रसर न हो । प्रयोग—क्यों बनता है मनुज गवाकर पानी चिकना घड़ा (मर्म०—हरिऔध, २५)

### चिकना स्वर

भावसून्य स्वर । प्रयोग—सम्पादक ने धान्त और चिकने स्वर में कहा—साहित्य तो बड़ी साधना चाहता है (शेखर(२)—अज्ञेय, १५८)

### चिकनियां होना

बने-उने होना । प्रयोग—सब या ब्रज के लोग चिकनियां, मेरे भाए धान (सु० सा०—सुर, २२८२)

### चिकनी-चुपड़ी बातें करना

बनावटी स्नेह से भरी बातें । प्रयोग—मैं चिकनी चुपड़ी बातें और दुष्ट अंतःकरण नहीं पसंद करता (भा०ग्रंथा०—(१)—भारतेन्दु, ५६८); उसे विश्वास था कि मैं उससे चिकनी-चुपड़ी बातें करके रात्री कर लूंगा (गवन—प्रेमचंद, ९४); शिवसागर के न्यायाधीश की चिकनी चुपड़ी बातें भी उन्हें उनके मार्ग से नहीं हटा सकी थी (ब्रह्म०—दे० स०, ३८३); बात चिकनी कण्ठ भरी कह कर जब कि वह जाति पर बला लावे (चुमते०—हरिऔध, ८४)



### चिट लगना

बदनाम होना। प्रयोग—यह बात भाग चलने की अच्छी नहीं। इसमें एक बाप दादे को चिट लग जाती है (हंशा०—हंशा०, १००)

### चिटक जाना

भगड़ा हो जाना, मनोमालिन्य होना। प्रयोग—हो मकेगा काम तो कोई नहीं बात हित की मुन चिटक जाया करे (चुभते०—हरिऔध, ८७); धाजकल माधवी से चिटक गई है तो कन्नगी को उभारने आई हो? (सुहाग०—अना०, २००)

### चिट्ठा बंटना

भुगतान होना। प्रयोग—मजदूरों का चिट्ठा एक महीने में नहीं बटा इसलिये वह मेरी इज्जत लिया चाहते हैं (परीक्षा०—श्री०दास, ९६)

### चिट्ठा भरना

धमदि की रकम लिखना। प्रयोग—माघ महाजन लोग इसमें चिट्ठा भरते थे (राधा० ग्रंथा०—राधा० दास, ३२०)

### चिड़िया उड़ जाना,—हाथ से निकल जाना

फंसा घादमी कब्जे से हट जाना। प्रयोग—अब क्या करना होगा, खां माहब। चिड़िया हाथ से निकल गई (गवन—प्रेमचंद, २२१); कुछ करो, परन्तु अब कोई लाभ न होगा अब तो चिड़िया उड़ गई (मा—कोशिक, ३३७)

### चिड़िया हाथ से निकल जाना

#### दे० चिड़िया उड़ जाना

### चिड़िया का पूत नहीं

कोई भी न होना। प्रयोग—देखा, तो वहां चिड़िया का पूत भी न था, घर में भाड़ फिरी हुई थी (रंग०(२)—प्रेमचंद, ३२३)

### चिड़िया से दूध निकालना

असंभव काम करना। प्रयोग—यहां के न्यायालयों से न्याय की आशा रखना चिड़िया से दूध निकालना है (रंग०(१)—प्रेमचंद, ३०९)

### चित पट करना

(१) हेरान करना। प्रयोग—बेबसों को लपेट चित पट कर पालना पेट मुंह पिटाता है (चोखे०—हरिऔध, २३)

(२) गिरका उछालकर बात का निर्णय करना।

### चित पड़ना या पट पड़ना

कोई बात धनुकल या प्रतिकूल होनी। प्रयोग—मैं इस बारे में कुछ नहीं कह सकता बहजी। हाकिम का वास्ता। न जाने चित पड़े या पट (गवन—प्रेमचंद, २६९)

### चितवन डालना

देखना। प्रयोग—चिरपरिचित चितवन डाल, सहज मुखड़ा मरोर (अना०—निराला, ८८)

### चितवन घाण चलना

मोहक दृष्टि से देखा जाना या उसका जसर होना। प्रयोग—जो न चित का बना चाकर रहा बात चितवन के नहीं जिस पर चले (चोखे०—हरिऔध, १४)

### चितवन घाण लगाना

तिरछी नजरों से देखकर मोहित करना। प्रयोग—चितवन बान लगाए मधुकर दुहुं निकसि गए ओर (सू० सा०—सूर, ४२५२)

(समा० महा०—चितवन का बार करना,—घाण चलाना)

### चिता पर चढ़ना

(१) मरना। प्रयोग—वे बेताये क्यों नहीं हैं चेतते, जो चिता पर आजकल में चढ़ेंगे (चुभते०—हरिऔध, १६०)

(२) बहुत सतरनाक काम करना।

(३) सती होना।

(समा० महा०—चिता में बैठना)

विशेष—‘चित’ एवं ‘चित्त’ दोनों रूपों को परस्पर एक दूसरे के अन्तर्गत मानें।

### चित अटकना

मन का कहीं और लग जाना। प्रयोग—चले ये हरि मिलन की बीबें अटकयो चीनु (कबीर ग्रंथा०—कबीर, २६१)

### चित (में) आना

(१) स्मरण होना। प्रयोग—गुरब जनम कथा चित आई (राम० (बाल)—तुलसी, १२०)

(२) ध्यान में आना।

### चित उचाट होना

मन का अस्थिर होना, किसी काम में मन का न लगना। प्रयोग—चितहि उचाटि भेलि गए राबल मन हरि हरि



जु लए (५० सा०—सूर, २५४)

### चित उतारना

मन प्रतिकूल या विमुख होना । प्रयोग—तोहि देखे पिउ पल्लू काया । उतरा चित फेरि करु काया (पद०—जोयसी, ३०७)

### चित कठोर होना

निर्दय होना । प्रयोग—ऊधो जब चित भए कठोर (सू०सा०—सूर, ४२५२)

### चित कर देना

परास्त कर देना । प्रयोग—तब भला कैसे ठिकाने चित रहे जब हमें चित की पुतलियां चित करें (चुमते०—हरिऔध, १४७)

### चित करना

बाद करना । प्रयोग—जद्यपि व्रज अनाथ करि छाड़्यो, तदपि बार इक चित करि रहियो (सू० सा०—सूर, १९०)

### चित खींचना

(१) मन को मोहित करना । प्रयोग—कोई घण्टी मुरत जो नेत्र को मुहावनी मानुम हुई तो कहते हैं इसकी रूप माधुरी चित को खींच लेती है (सा० सू०—बा० मट्ट, ९६)

(२) मन हटा लेना ।

### चित चढ़ना

(१) मन को ठीक लग जाना । प्रयोग—तब चित चढ़े उ जो संकर कहेऊ (राम०(बाल)।—तुलसी, ७६)

(२) मन में बस जाना ।

(३) किसी काम या बात को करने की धुन सवार होनी ।

### चित चाक पर चढ़ा होना

मन अस्थिर होना, मन भ्रमित होना । प्रयोग—बो करं साज बजावें को चीनहि बाको कछु चित चाक चढ़यो सो (केशव ग्रंथा०—केशव, ५०); चाह-बढ़यो चितचाक-बढ़यो सो फिरे तित ही इत नेकु न धीजे (घन० कवित्त—घना०, २०७)

### चित चिढ़टना

लपट होना, लगन लगनी । प्रयोग—जब लपि लगन जोति नहि पलटै, भविनामी मू चित नही चिढ़टै (कवीर ग्रंथा०—कवीर, १५७)

### चित चुराना

मन मोहना—मोहित करना । प्रयोग—स्याम गौर मूहु बयस किसोरा लोचन मुखद बिस्व चित चोरा (राम० (बाल)।—तुलसी, २२५); रवि-विरचि मुख-भौह-छबि सैं चलति चित चुराइ (सू०सा०—सूर, ५६); चित तो तुमहि चोरि है लियो (मंद० ग्रंथा०—मंद०, २७६); माखन के चोर मधु-चोर दधि-दूध चोर देखें नाहि देखत ही चित चोर लेत है (केशव० (१)—केशव, ८८); तोरे लेत रति-दुति, मोरे लेत मति-मति छोरे लेत लोह-लाज, चोरे लेत चित को (शब्द०—देव, ६५); चार्यो चित चोपनि, चितोनि मैं चिन्हारि करि, चाह सी जनाय हाय मोहि के मनो लियो (घन० कवित्त—घना०, ६९); लाज भरी चितवन चित चोरति जब मसुकाई जभांत (भा० ग्रंथा० (१)—भारतेन्दु, ८); बटिल रत्नमय विकास के निभ, चुरा-चुरा चित हंस रह्यो धी (वैदेही०—हरिऔध, ८१)

### चित चूर होना

मन का बहुत दुखी होना । प्रयोग—चूर भयो चित पूरि परेखनि एहो कठोर ! अजो दुख पीसत (घन० कवित्त—घना०, ६६)

(समा० मुहा०—चित चूर-चूर होना)

### चित चेतना

मन में विचार करना । प्रयोग—काकी भूल गई मन लाड़, सो देखहु चित चेतनी (सू० सा०—सूर, ४४७९)

### चित चेतना होना

मनोवाक्षा पूर्ण होनी । प्रयोग—कनक सिपासन सीपसमेता बंठहि रामु होइ चित चेतना (राम० अयो)।—तुलसी, ३८२)

### चित चोर होना

मन को बस में करने वाला । प्रयोग—स्याम-मुभग-मरोज-धानन, चारु चित के चोर (सू० सा०—सूर, १९९९); कोऊ उठै तान गाय, ग्रान-वान पैठि जाय हाय चित-चांच, पै न पाऊँ चित चोर को (घन० कवित्त—घना०, ४६)

### चित छीलना

मन को कष्ट देना । प्रयोग—घन आनन्द जान मझा कपटो चित काहें परेखनि छोलिये री (घन० कवित्त—घना०, १५७)



चित्त (चित) टूटना

२१७

चित्त (चित) विकना

**चित्त टूटना**

मनोमालिन्य होना । प्रयोग—मनोज बाबू से तुम्हारा चित्त टूट गया है क्या ? (सिद्धरं—लं मिश्र, ४९)

**चित्त डुलाना**

मनको दूसरी ओर लगाना । प्रयोग—ऐसे मूर कमल-लोचन त, चित्त नहिं धनन डुलार्ब (हो) (सुं सां—सूर, ३५३)

**चित्त धिराना**

मन स्थिर होना । प्रयोग—धुनि दादुर मोर पपीहन की मुनि के धुनि चित्त विरातो नहीं (इशक—बोधा, ६)

**चित्त देना**

मन लगाना । प्रयोग—बिपे विकार बहुत रुचि मानी, माया मोह चित दीन्हां (कवीर ग्रंथां—कवीर, १७१); काम, क्रोध, मद, लोभ, मोह तजि अनत नहीं चित दीनी (सुं सां—सूर, १२९); पुनि पुनि चितइ चरन चित दीन्हां (रामं (कि)—तुलसी, ७६७); जो यह लीला गावे चित दे सुन सुनारं (नंदं ग्रंथां—नंदं, १९); धन-आनंद जान ! सुनो चित दे हित-रीति दई तुम तो तजि के (धनं कवित्त—धनां, ५९); सो सौ सोहि खाइ चित्त एको नहिं दीजं (कुण्ड—गिरधर दास, ६); तू अडा समेत आनन्द से चित दे सुन (प्रेम सां—लं लां, ६); नींद न लेत अरुसि रहे दोऊ केलि-कथा चित दीने (भां ग्रंथां—भारतेन्दु, ६१); मम दुख सुनता है चित दे के नहीं तू (प्रियं—हरिऔध, २२५)

**चित्त धरना**

मन में निश्चित करना, ध्यान करना । प्रयोग—धब कहौ ध्रुव बर देन अवतार । राजा सुनो ताहि चित धार (सुं सां—सूर, ४०३); बिनती रिरिपराज की चित धरो । चहुं भंगन के धब व्याह करो (केशव—केशव, २५३)

**चित्त पर (में) चढ़ना**

अनुरक्त होना—किसी का ध्यान मनमें बसा होना । प्रयोग—के गुमान गुन रूप को तेन ठान गुरुमान मनमोहन चित चढ़ि रह्यो तो सी किती न आत (जगं—पद्माकर, ५२);

गुरति करो तो बिसरे जो होहि जान प्यारे, वे तो चित नदें, रंग-मुरति महा रहे (धनं कवित्त—धनां, ९०); बड़ाप है बेदनि, सांच कही, धन आनंद जान चढ़े चित जो न (धनं कवित्त—धनां, ८५) (÷)

(२) मन में घाना । प्रयोग—शब्द बचन से जयं कवि चढ़े सामुहे चित । ते दोउ बाचक शाय्य है, अभिधावति निमित्त (शब्द—देव, २); वाके गुन जब चित चढ़े बरसत नयन अपार (कुण्ड—गिरधर दास, १०); चढ़ सक तो चढ़े किसी चित पर हम किसी की निगाह पर न चढ़े (चोखं—हरिऔध, २१); देखिए प्रयोग (१) में (÷) भी

(३) मन में दृढ़ धारणा होना ।

**चित्त फटना**

दुर्व्यवहार से दुखी या उदासीन हो जाना । प्रयोग—हठरत उमर चित्-उत्पन्न को मंगूर की यह करनूत बहुत बुरी लगी और इनसे उनका चित्त कुछ ऐसा फटा कि उन्हें अपने से बचक कर दिया (पद्मपराग—पद्मं शर्मा, १७१); थड़ा की ओर से भी उनका चित्त फटता जाता था (प्रेमां—प्रेमचन्द, १२५)

**चित्त बंटना**

(१) कई कामों में मन लगना । प्रयोग—वे दिन भले होते अहो तब तो बंट गये ठौर-ठौर चित जब तो (नंदं ग्रंथां—नंदं, १८७)

(२) चित्त एकाग्र न होना ।

**चित्त बसना**

मन लगा होना, अनुरक्ति होनी । प्रयोग—बाह भरयो बंचल हमारी चित नीलबधू तेरी चाल बंचल चितोनी में बसत है (जगं—पद्माकर, ३१); कैसे भुलें कुंवर जिनमें चित हो जा बसा है (प्रियं—हरिऔध, १९७)

**चित्त बांधना**

प्रेम करना । प्रयोग—कंत सुहाग कि पाइज सांधा । पावे सोइ जो जोहि चित बांधा (पदं—जायसी, ८८)

**चित्त विकना**

मन का चणीभूत होना । प्रयोग—इक सायक, इक बाप बपल अति, चितवत चित विकत (सुं सां—सूर, २७३०)



चित्त (चित) भी अपना पट्ट भी अपना होना

२१८

चित्त(चित) लगाना

**चित्त भी अपना पट्ट भी अपना होना**

हर तरह से अपना लाभ होना । प्रयोग—बाह ! बाह !  
चित्त भी मेरा और पट्ट भी मेरा (मृग०—वृ० वर्मा, ४१०)

**चित्त में चुभना**

(१) मन पर गहरा असर होना । प्रयोग—चित्त चुभि  
रहो मदन-मोहन की, चितवनि महु मुमकानि  
(सू० सा०—सूर, ४४८४); चंचल चितोनी, चित्त चुभी,  
चित्तचोर बारी मोरबारी बेसरि, मुकेशरि की आइ बह  
(शब्द०—देव, २३); सुन्दर बदन पर कोरि मदन बारी,  
चित्त चुभि चितवनि लोचन बिसाल की (घन० कवित्त  
—घना०, १५२); बस यह बोचले की बातें चित्त में चुभ  
गई (परीक्षा०—श्री० दास, १५५)

(२) मन को पीड़ा होना ।

**चित्त में धरना**

(१) धन में ध्यान रखना । प्रयोग—तन-मन-धन  
आत्मा निवेदन, सो उन चितहि धरी (सू० सा०—  
सूर, ४२७२)

(२) प्रेम करना । प्रयोग—गाढ़े दिन को मित्त चित्त  
में क्यों नहि राखहु (राधा० ग्रंथा०—राधा० दास, ५७)

**चित्त में न समाना**

मन पर असर न होना । प्रयोग—मधुर बचन जे तुम  
कहो, ते हम चित न समाहि (सू० सा०—सूर, ४१४०)

**चित्त में पैटना,—पोई होना,—बसना,—समाना**

मन में बराबर ध्यान बना रहना । प्रयोग—मातति  
होइ जमि चित्त पडौ । ओम पुष्ट कोइ भाव न पीछी  
(पद०—जायसी, ४१२०); कुतल कुटिल मुकुट कुण्डल  
छवि, रही जो चित्त में पोइ (सू० सा०—सूर, ४१४२);  
मोहन मुरति सावरी चित्त में रही समाइ (सू० सा०—  
सूर, ४१४०); भूता जाता बह स्वजन है चित्त में जो बसा  
हो (प्रिय०—हरिऔध, १९७)

**चित्त में पोई होना**

दे० चित्त में पैटना

चित्त में बसना

दे० चित्त में पैटना

**चित्त में रखना**

(१) बुरा मानना । प्रयोग—सुत अपराध करे दिन केते  
जननी के चित रहे न तेते (कबीर ग्रंथा०—कबीर, १२३)

(२) ध्यान में रखना ।

**चित्त में शूल होना**

ईर्ष्या होनी । प्रयोग—मौत उदित, हित उदित है, नित  
बैरिन के चित शूल (गीता० (बा)—तुलसी, २२)

**चित्त में समाना**

दे० चित्त में पैटना

**चित्त मैला करना**

मन में दुर्भावना घाना । प्रयोग—कबीर भूलि बिगाड़िया,  
तू ना करि मंडा चित्त (कबीर ग्रंथा०—कबीर, ८४)

**चित्त रखना**

प्रेम करना, मन लगाना । प्रयोग—जो चित राखहि  
एक स्थो ते सुख पावहि नीत (कबीर ग्रंथा०—कबीर, २६१);  
हरि चरनन चित राखी गोइ (सू० सा०—सूर, ३४)

**चित्त लगाना**

(१) प्रेम होना । प्रयोग—हमारा भर्म गया भय भोगा ।  
जब राम नाम चितु लागा (कबीर ग्रंथा०—कबीर, २९८)  
(+); देखि रूप तोर आगर लागि रहा चित मोर  
(पद०—जायसी, ३४२); सूर भृंग जे कमल के बिरही,  
चंगक बन लागत चित थोरे (सू० सा०—सूर, ४४७२)(+);  
रघुपति पद सरोज चितु राचा (राम० (बाल)—तुलसी,  
२६६); धन दारा घर मुनन में, रहत लगाए चित्त  
(रहीम कवि०—रहीम, १३); लेकिन उनसे मेरा चित्त लगा  
कब ? (सिद्ध०—ल० मिश्र, ४९)

(२) मन का स्थिर होना । प्रयोग—देखिए प्रयोग (१)  
में (+)

**चित्त लगाना**

ध्यान देना । प्रयोग—कहं मधनी, कहं माठ है, चित  
कहां लगायो (सू० सा०—सूर, १३३४); कोई किसी स्त्री से  
बा पुत्र से उसको सुन्दर देखकर चित्त लगाना और  
उससे मिलने के अनेक धन करना इसीको प्रेम कहते हैं  
(भा० ग्रंथा० (१)—भारतेन्दु, ४२७); कब उपयोग उपाय



अतिहि दुद चित लगाए (राधा० ग्रंथा०—राधा०दास, ३१)

### चित्र लाना

मन लगाना । प्रयोग—चरण कंवल चित लाइये, राम नाम गुन गाइ (कबीर ग्रंथा०—कबीर, ८९); तुम कछो सप्त दिवस मम आइ । कहौ हरिकथा, सुनौ चित लाइ (सु० सा०—सूर, ३४४); थोरेहि मह सब कहव बुभाई सुनहु तात मति मन चित लाइ (राम० (अर)—तुलसी, ७०८); नंद दास की आस, श्री जमुना पूरन करी तात घरी घरी चित लखौ (नंद० ग्रंथा०—नंद०, २८३)

### चित्त लेना

(१) आकर्षित करना । प्रयोग—देखे नहीं कबहुँ भरि पाविनि प्रार्जुहि कैसे चलै चित लीन (केशव० (१)—केशव, ५७)

(२) मन की याह लेना ।

### चित्त (में) समा रहना

ध्यान लगा होना । प्रयोग—चरन कमल चित रह्यो समाई (कबीर ग्रंथा०—कबीर, २६९)

### चित्त से उतरना या उतारना

(१) भूल जाना । प्रयोग—सखी अब इन बातों से और भी दुख बढ़ेगा, इससे चित से यह बातें उतार दे (मा०ग्रंथा०(१)—भारतेन्दु, ३५); किन्तु यतः संसार की रीति है कि जब कोई जानी बूझी बात को भी चित से उतार देता है तो उसके हितैषियोंको उचित होता है कि सावधान कर दें (प्र० पी०—प्र०ना० मि०, ९०); बात यह चित से कभी उतरे नहीं है उतरते फूल चढ़ने के लिये (चुमते०—हरिऔध, ९)

(२) नीचा जंचना, प्रिय न लगना ।

### चित्त से न टलना

हर समय ध्यान बना रहना । प्रयोग—सूर चित तें टरत नाही राधिका की प्रीति (सु० सा०—सूर, ४०४१)

### चित्त होना

प्रेम होना । प्रयोग—वे बहु-नायक रस के लोभी उनको

चित्त अनेक लियन में (मा० ग्रंथा० (२)—भारतेन्दु, ६३७)

### चित्र अवरेखी होना

एकदम स्थिर हो जाना, कोई गति न होनी । प्रयोग—आइ समीप राम छवि देखी, रहि जनु कुंअरि चित्र अवरेखी (राम० (बाल)—तुलसी, २७१)

### चित्र खींच देना

स्थिति का दृढ़ वर्णन करना । प्रयोग—वर्तमान समय की सम्मोहिनी सभ्यता की छीछालेदार का जो सुंदर चित्र उन्होंने "महाराष्ट्र-पर्यवेक्षणम्" नामक लेख में खींचा है, वह देखने ही योग्य है (पट्टमपराग—पट्टम० शर्मा, ६८); वस्तुतः कथ के बहाने कवि ने इस दलोक में माता-पिता का संतान के प्रति जो स्नेह होता है, उसीका चित्र खींचा है (निशि०—वि० प्र०, ७१)

### चित्र लिखे से

कोई गति न होनी, स्थिर हो जाना । प्रयोग—लिखी चित्र सी सूर मु ह्वै रहि, इकटक पल विसराइ (सु० सा०—सूर, १२३९); राम बिलोके लोग सब चित्र लिखे से देखि (राम० (बाल)—तुलसी, २६७); चित्र लिखी सी रही दई यह कजा भई अब (नंद० ग्रंथा०—नंद०, १७५); मोहन मित्र को चित्र लखे भई चित्र हो सी ती विवित्र बहा है (जग०—पट्टमाकर, ४७); गुरुजन के भव संग गई नहि, रहि गई मनहुँ चित्र लिखि काढ़ी (मा० ग्रंथा० (२)—भारतेन्दु, ४७); भूलि तन दसा रही चित्र पुतरा सी मोहित (राधा० ग्रंथा०—राधा० दास, ६६)

### चिनगारी भड़ना

उत्तेजनापूर्ण बातें कहनी । प्रयोग—मेरी लेखनी से चिनगारियां भड़ते देख दिवंगत श्री शचीन्द्रनाथजी सान्याल × × ने ललक कर मेरा संग्रह किया था (अपनी खबर—उग्र, ११२)

### चिपक जाना

साप न छोड़ना । प्रयोग—और मुझे डर कि कादिर साहब आ गये तो यह हज़रत ऐसे चिपक जायेंगे कि मेरा बात तक करना मुश्किल कर देंगे (पैतरे—अशक, ६४)

### चिपटे रहना या चिपटना

लिप्त रहना, साप लगे रहना । प्रयोग—जिन्होंने



विराग गुल हो जाना

२२०

चूटकियों पर (में) उड़ा देना

आश्रमण के समय गहनों में बीज छिपाकर रख दिया था वे लौट घाने पर खेती पर बिपट गये (मुगं—पुं०मं, २)

**विराग गुल हो जाना**

मरणात्मक हो जाना ; बंध लुप्त हो जाना । प्रयोग—जाज बह रंगमंच पर न घाती तो गन्धर्व परिवारों के विराग गुल हो जाते (गोदान—प्रेमचन्द, ३२०)

**विराग-जले**

शाम का समय । प्रयोग—विराग जलते-जलते जानवरों का बाजार लग गया (कर्म—प्रेमचन्द, ३६५)

**विराग ठंडा करना**

विराग बुझाना । प्रयोग—फूलों की तेज पर धा कर दे विराग ठंडा (इंशा—इंशा, ५६)

(समा० मुहा०—विराग बुझाना)

**चिलचिलाती दोपहरी,—धूप**

तेज धूप । प्रयोग—चिलचिलाती दोपहरी थी और मधुरा साह को भगावे लिये जाता था (मान० (३)—प्रेमचन्द, ५३); क्यों कड़वे चिलचिलाती धूप में वे सहमे किस तरह आँखें कड़ी (बोल०—हरिऔध, २३); चिलचिलाती धूप का यह देश । बल्लभ कोमल तुम्हारा नेत्र (चाह०—दिनकर, ९४)

**चिलचिलाती धूप**

दे० चिलचिलाती दोपहरी

**चिलम जगाना**

वीने के लिये चिलम तैयार करना । प्रयोग—जब चिलम जगती रही तब ज्ञान की बीज न्यायी क्योंच जगती कम रहे (सुमति०—हरिऔध, १२५)

**ची करना**

कुछ भी कहना या विरोध करना । प्रयोग—पिताजी के सामने ची करने की हिम्मत नहीं थी (गुं कहा०—गुलेरी, ११)

**ची-चपड़ करना**

प्रतिवाद करना, कुछ कहना । प्रयोग—ताहिर अली गोचने लगे कौन चमार सबसे मोटा है, जिसे आज खान न दूँ, तो ची-चपड़ न करे (रिंग० (२)—प्रेमचन्द, २२४)

क्या मजाल ! अगर जरा भी ची चपड़ करे, तो, × × खूब हो जाय (मा—कौशिक, ३९२)

**ची बोलना**

हार मान लेना । प्रयोग—डिबेदीबी ने पहले ही हमले में हरिचन्द्र को बह धरकर फेंका है कि सब हिन्दी वाले भी ची बोल जायेंगे (गुं नि०—बा० मु० गु०, ४३४); दोनों धपसे दिल में कहेंगे, बड़ी जवां मदीं दिखाने चले ये पचास कदम में ची बोल गये (गोदान—प्रेमचन्द, ९९)

**चीटी की चाल**

मंद चाल । प्रयोग—कापते हुए हजासे स्वर में 'बाना ची' कहकर पुस्तक स्लेट और पेंसिल ले, वह चीटी की ची चाल से नीचे चला (चेतन—अशक, ३९)

**चीटी को पर निकलना**

ऐसा काम करना जिससे मृत्यु हो या मरने के निकट होना । प्रयोग—देखो काल कोनक, पिपीलिकनि पंख साधो, भाग मेरे लोगनि के भई चित-बही है (गीता०(सु)—तुलसी, २४)

**चील के घोंसले से मांस छीनना**

दुष्कर कार्य करना । प्रयोग—वैसे अब तक तो पुनिम विभाग में वह चील के घोंसले से भी मांस बूँद लाने में मरु माना जाता था (ब्रह्म०—दे० स०, २४५)

**खगली खाना**

पीठ पीछे शिक्षावत करनी । प्रयोग—एक देवि कौन ने स्वामिनी सौ खगली खाई (भा०ग्रंथा०(१)—भारतेन्दु, ४४७)

(समा० मुहा०—खगली लगाना)

**खुचका आम होना**

दुबला, मुखा हुआ-या घादमी । प्रयोग—पटवारी की देह क्यों नहीं फूल जाती, खुचके आम बने हुए है (प्रेमा०—प्रेमचन्द, ६)

**खूटकियाँ लेना**

(१) हँसी करना । प्रयोग—खूटकियाँ चाल-दाल की के ले । दे बसों की गड़ी हुई गाली (मर्म०—हरिऔध, ६७)  
(२) लगने वाली बात कहनी ।

**खूटकियों पर (में) उड़ा देना**

(१) बल्लभ तुम्हें समझना । प्रयोग—हम लोगों की



चूटकियों पर मुहिम सर होना

२२१

चुनौती देना

बात तो अब वह चूटकियों में उड़ा देता है (भूले०—मग० वार्ता, १३९); नटखटों की चाट, जी की चोट की क्या उड़ाना चूटकियों पर चाहिए (चुमते०—हरिऔध, ३०)

(२) टिकने न देना। प्रयोग—ऐसे सैकड़ों मुकद्दमें धापके पुन्य प्रताप में चूटकियों में उड़ा सकता है (परीक्षा०—श्री० दास, ९३); मैंने बोड़ा-ना अध्ययन किया होता तो गियनाथ को चूटकियों पर उड़ा देता (प्रेमा०—प्रेमचंद, ३१७)

**चूटकियों पर मुहिम सर होना**

आसानी से जीत होनी। प्रयोग—आ टिकाने है धगर रहता नहीं चूटकियों पर तो मुहिम होनी न सर (चुमते०—हरिऔध, ३६)

**चूटकियों में**

आसानी से, झटपट। प्रयोग—ऐसी मिलें मैं चूटकियों में भोल सकता हूँ (गोदान—प्रेमचंद, २९५); देखता हूँ, चूटकी का काम है घोर विद्वानन्द समाप्त दीखें पर प्रश्न है, क्यों ऐसा हो? (जय०—जैनेन्द्र, १०७); जो बात उसे घमण्ड मालूम हुई, उसे जानना ने चूटकियों में पूरा कर दिखाया (गहन—प्रेमचंद, २५२)

**चूटकी देना**

(१) निशा देनी। प्रयोग—मैंने उमर भर ब्राह्मण, नाई, कमौन और कबीर को चूटकी देकर, दस आदमी को जिलाकर लाया है (झुठा० (१)—दशपाल, ४८७)

(२) चूटकी बजाना।

**चूटकी बजाते**

(१) चटपट; देखते-देखते; बात की बात में। प्रयोग—कनी मूरमें है न जीबट मचाते बलायें उड़ाते हैं चूटकी बजाते (चुमते०—हरिऔध, १८८); यदि उसकी माँ ने मेरी बातचीत हो सकती तो मैं उसे चूटकी बजाते राखी कर लेती (मा—कौशिक, ६४) (—)

(२) अल्पज्ञ सहज ही, बिना प्रयास। प्रयोग—गरीबसे गरीब को धनी बना देना उसकी चूटकी बजाने भर की बात है (मैला०—रेणु, ३१५); देखिए प्रयोग (१) में (—) भी

**चूटकी भर**

बहुत बोड़ा, बरा-ना। प्रयोग—भिजूक को एक डार पर

भरपेट कहां मिलता है। उसे तो चूटकी ही मिलेगी (गोदान—प्रेमचंद, ४६)

**चूटकी भरना**

(१) चुनौती या लगती बात कहनी। प्रयोग—हम बनेंगे क्यों, बनी तो तुम क्यों हम भरेंगे दम, तुम्हीं चूटकी भरें (ढोल०—हरिऔध, १५२)

(२) चूटकी काटना।

**चूटकी मांगना**

निशा मांगना। प्रयोग—क्यों न चूटकी मांग करके ही जिये हम भला चूटकी बजाये किमनिये (ढोल०—हरिऔध, १५८)

**चूटकी लेना**

(१) मजाक उड़ाना। प्रयोग—तुम तो दानवीसता पर हम रहे थे—माँ ने चूटकी ली—क्या तुम भी कभी निशारी के हाथ पर चार पैमे रखते हो? (दुष्गाछ—दे० स०, ७३); लेकिन स्टेज पर प्रसिद्धि मचला ही विजय पाता था क्योंकि उसे नाचना, गाना, बजाना तथा जनता की चूटकियां लेना लाया जाता था (अपनी सहर—सप्र, ५६)

(२) चुनौती या लगती बात कहनी। प्रयोग—मनुष्यों के विचार और धारणा के वैषम्य पर चूटकी ली है (पट्टम० के पत्र—पट्ट० शर्मा, १२५); देवीजी ने चूटकी ली—तो रूप में उससे बहुत अच्छा लक्ष मिल सकता है (मान० (४)—प्रेमचंद, ६१)

**चूटिया हाथ में देना**

बरा में या अधीन कर देना। प्रयोग—परिस्थिति ने हमारी चूटिया उसके हाथ में दे रखी थी (मान० (७)—प्रेमचंद, २३)

**चूटिया हाथ में होना**

बरा में होना। प्रयोग—आपके हाथ में सबों की चूटिया है (मैला०—रेणु, २२१)

**चुनौती देना**

प्रतिद्वन्दी को लक्ष्यकारना। प्रयोग—आके कर रावन कहूँ यनी चुनौती दीमि (राम० (अ१)—तुलसी, ७१२)



### चुपड़ी और दो-दो होना

भरपूर लाभ होना। प्रयोग—नकलची इतिहास लेखकों ने × × पन्द्रह बीस दिनों में एक वृहद् इतिहास ग्रंथ तैयार करके बेचारे प्रकाशक के मरचे मड़ दिया। कुछ टके मिल गये और वे इतिहास लेखक की श्रेणी में जा बैठे। चुपड़ी और दो-दो (पद्म०के पत्र—पद्म०शर्मा, २४८)

### चुभती हुई आँख से देखना

मर्मभेदी दृष्टि से देखना। प्रयोग—सिगा ने उसे चुभती हुई आँखों से देखकर कहा—मैं तुमसे पूछने आया हूँ कि माधुरी कहाँ है ? (मान०(५)—प्रेमचंद, ५२)

### चुभती हुई कहना

तीखी बात कहनी। प्रयोग—उसके बाद जगदम्बा सहाय की प्रगतिशील बेटी ने उसे चुभती हुई दो-बार बातें सुनाई (बु०८०—अ० ना०, ८८)

### चुभना

गहरा घसर करना। प्रयोग—भिक्षुणी की कहानी भोली कलगीके मन में चुभ गई (सुहाग०—अ० ना०, ११७)

### चुल्लुओं रोना

बहुत अधिक रोना। प्रयोग—हाथ है घोना पड़ा मरजाद से, घाज हमको चुल्लुओं रोना पड़ा (बोल०—हरिऔध, १६१)

### चुल्लुओं लह पीना

बहुत सताना। प्रयोग—है यही काढ़ना कलेजे का है यहा चुल्लुओं लह पीना (बोल०—हरिऔध, १६०)

### चुल्लू भर पानी को भी न पूछना

बिलकुल काम न आना। प्रयोग—अभी इस तरह पाल-बोस रहे हो कि एक दिन काम आएगा, मगर देख लेना, जो चुल्लू भर पानी को भी पछे (रंग०(१)—प्रेमचंद, २६)

### चुल्लू भर पानी देना

जलाजलि देना। प्रयोग—बंस में कोई चुल्लू-भर पानी देनेवाला, घर में दिया जलाने वाला भी नहीं रहता (गोदान—प्रेमचंद, २२४); भर सके तो क्या जला दम भर सके। दे सके जल भी न चुल्लू भर अगर (बोल०—

### हरिऔध, १६०)

### चुल्लू भर पानी में डूब मरना

बहुत लज्जित होना। प्रयोग—मुँह में कालिस लगी कि नहीं ? या अभी कुछ कसर बाकी है ? डूब मरो सबके सब जाकर चुल्लू भर पानी में (मान०(१)—प्रेमचंद, ६२); तिलगना वाले ने ही वेदों के भाष्य दिये हैं, नहीं तो डूब मरे होते चुल्लू भर पानी में तुम गौड़ प्रदेश के सब शाहवाण (मृग०—वृ० वमां, ३६)

(समा० मुहा०—चुल्लू भर पानी में डूबना)

### चुल्लू में उल्लू होना

थोड़े ही में उबल पड़ना; थोड़े ही नशे में मतवाला हो जाना। प्रयोग—क्यों न अपने घाप उल्लूपत खुले घाप चुल्लू में हूँ उल्लू अगर (बोल०—हरिऔध, १६०)

### चूँ करना

कुछ कहना, प्रतिवाद करना। प्रयोग—स्वा मजाल है जो मेरे सामने कोई चूँ भी कर सके (राधाव्यंथा०—राधा० दास, ५८४); उनकी शक्ती हुकूमत में किसी को चूँ करने या दम मारने की मजाल न थी (पद्म पराग—पद्म० शर्मा, ४२७); वह जो कुछ करता या कहता या वही कानून या किसी को उसमें चूँ करने की ताकत नहीं थी (मान०(१)—प्रेमचंद, १८५)

(समा० मुहा०—चूँ-चकार करना)

### चूँ तक (भी) न करना

कुछ भी न कहना, जरा भी प्रतिवाद न करना। प्रयोग—मजे में सदर में डक्का दौड़ता फिरता हूँ। कोई साला चूँ नहीं कर सकता (मान०(४)—प्रेमचंद, ३१); जिन महात्मा ने देवताओं के हजार प्रार्थना करने पर भी कुछ परवा न करके, जरा से अपराध पर 'मदन' को भस्मावशेष 'घनंग' बना दिया, वही उस दृष्ट चूँ के महापराध पर चूँ तक न करे (पद्म पराग—पद्म० शर्मा, १६); जब कड़ी मारें पड़ी दिल हिल गया पर न कर चूँ भी कभी पाया यहाँ (परि०—निराला, १००)

### चूक पड़ना

भल हो जाना। प्रयोग—है हरिजन से चूक परी, जे कछ



आहि तुम्हारी हरि (कबीर ग्रंथा०—कबीर, १३५); बहुतें चूक परी अनजानत, कहा सब के पछिताने (सु० सा०—सूर, ४०९०)

### चूड़ियां पहन लेना

(१) पुरुष का कायर होना । प्रयोग—जम लई, दे पछाड़ जम को भी ले पहन हाथ में न हम चूड़ी (चुमते०—हरिऔध, ९७)

(२) स्त्री का किसी के घर बैठ जाना ।

### चूड़ियां मैली होना

लाज लगनी ; डर लगना । प्रयोग—'तू कबहरी जायगी ?' जमुनी—'क्या कहूँगी, जब मरदों की वहां जाते चूड़ियां मैली होती हैं, तो घोरत हो जायगी (रंग० (२)—प्रेमचन्द, ११६)

### चूतर पोंछना

खुशामद करनी, हर तरह की सेवा करनी । प्रयोग—कांशेसी मिनिस्टर के चूतड़ पोंछ कर प्रेस दबा लिया अब आँखें दिखाता है (छूठा० (२)—यशपाल, ३६४)

### चूना

टपक पड़ना, प्रगट होना । प्रयोग—उन पर जनता की थड़ा चू पड़ो (सुग—वृ० वर्मा, २९५)

### चूना लगाना

वेचकफ बनाना, धोखा देना । प्रयोग—मैं चूना तुम्हें लगाऊँगी तू करनी का फल पायेगी (नूर०—भक्त, ५४); ठेकेदार और चूनेवाले ने मिलकर अवश्य चूना लगाया (मेरे०—गुलाब०, २२)

### चूने की डिबिया से बाहर निकलना

अनुभव प्राप्त करना, जानकारी करनी । प्रयोग—पहले चूने की डिबिया से बाहर तो निकल आते, तभी बड़बड़ कर सोलते (दूधगाछ—दे० स०, २६७)

### चूर कर देना

(१) नष्ट कर देना । प्रयोग—जीवन की मूरि जाहि मान्यी तिन चूरि करी, खरी बिपरीति दई हेरि हौ गई हिराय (धन०कवित्त—धना०, २२२); खूद डारी धरनि सरत जल पूरि डारे चूर करि डारे मुख विरही तियाज के (ठाकुर०—ठाकुर, १९); आपस की फूट से बची खुची जो कुछ ताकत रह भी गई थी उसे विदेशिय विजेताओं ने जाकर चूर चूर

कर डाला (भट्ट नि०—वा० भट्ट, ६१); देवि ! आज तुमने मेरी साधना चूर चूर कर दी (चित्र०—भा० वर्मा, २६)

(२) हिम्मत पस्त कर देना या चका डालना । प्रयोग—धगर सचमुच दुःख उसने जाना होता—दुःख कैसे तोड़कर चूर चूर करके रख देता है तो उसकी जबान एंठ जाती (नदी०—अज्ञेय, ४३)

### चूर चूर हो जाना या चूर होना

(१) अत्यधिक घक जाना । प्रयोग—फिर नियुक्त करने वाले अफसर की कृपा से वे चूर भी ऐसे होते वे कि फुरसत होने पर बित पड़े रहने के अतिरिक्त कुछ न करते (दीखर (२)—अज्ञेय, ३६); हम पहले से भी घके मांटे थे ही, उस रोज तो और भी चूर-चूर हो गये (बल०—नागा०, १४३।४४); उसकी बेह रतजगी यात्रा से चूर-चूर हो रही थी (सु० सु०—सुदर्शन, २०)

(२) नाष्ट होना । प्रयोग—चाहते हम जिसे रहे उसकी हो गई चूर चाहते मारी (चुमते०—हरिऔध, १५६)

### चूर रहना या होना

(१) अत्यंत व्यस्त होना । प्रयोग—फुरसत मिली भी तो दिन रात इस फिकिर में चूर चूर रहते हैं कि क्यों कर बिहिस्त की राह पावें (भट्ट नि०—वा० भट्ट, १२६)

(२) अत्यंत प्रभावित होना ।

### चूल न बैठना

बात ठीक न होनी, पार न पड़ना, पूरा न होना । प्रयोग—बंगालियों की बढ़ती से जली इस नतीजे पर आये कि बिना प्रंगरेजी के चूल न बैठेगी (चोटो०—निराला, १६); जगधर को रूपों की नित्य चिंता रहती थी । परिवार बड़ा होने के कारण किसी तरह चूल न बैठती थी, पर मैं एक-न-एक चीज घटी ही रहती थी (रंग० (१)—प्रेमचन्द, १८८)

### चूल मिलाना—से चूल मिलाना

ठीक ठीक हिसाब बँटाना । प्रयोग—मैं ऐसी चूल मिलाऊँगी कि भाप न कोई पायेगा (नूर०—भक्त, ५३); चूल से चूल है मिला देते रंगते रंग से बदलते हैं (चुमते०—हरिऔध, १२८)



### चूल से चूल मिलाना

#### दे० चूल मिलाना

#### चूल्हा अगोरना

खिलाने के लिए प्रतीक्षा करनी। प्रयोग—यह भी कोई नियम है कि जब तक एक न बज जाय, जगह से न उठो। कब तक कोई चूल्हा अगोरना रहे (गोदान—प्रेमचंद, १७९)

#### चूल्हा गरम होना

खाना बनना। प्रयोग—हो सके तब किस तरह चूल्हा गरम, जब कि मूठी ही गरम होती नहीं (बोलो—हरिऔध, १६४)

#### चूल्हा चक्की

गृहस्थी का काम। प्रयोग—घोरत बेचारी रात-दिन चूल्हे-चक्की में जुती रहे फिर भी वह निकम्मी ही समझी जाती है (प्रेमा०—प्रेमचंद, ४३२)

#### चूल्हा चेतना

खाना बनने के लिए चूल्हे में आग जलाई जानी। प्रयोग—तब कुछ पैसे मिलते, तब हमारे घर चूल्हा चेतता, मुह निवाले लगते (अपनी खबर—उग्र, ३७)

#### चूल्हा ठंडा करना या होना

चूल्हे की आग बुझाना या बुझना। प्रयोग—आशा थी बहू ने रोटी बना रखी होगी, मगर देखा तो यहाँ चूल्हा ठंडा पड़ा हुआ था (मान० (१)—प्रेमचंद, ६); मुरे, क्या आज चूल्हा नहीं ठंडा किया था? (रंग० (१)—प्रेमचंद, १९४)

#### चूल्हा तोड़ना

गृहस्थी बिगाड़ना। प्रयोग—पर क्या हम चूल्हे तोड़ते हैं? (बोने०—रा० रा०, ३९)

#### चूल्हा फूँकना

खाना बनाना। प्रयोग—मैं तुम्हारे लिए एक मुचड़ रसोई-दारिन ठीक कर दूँगी, तब फिर तुम्हें चूल्हा फूँकने की तकलीफ न उठानी पड़ेगी (मा० मा० (२)—कि०गो०, ८४)

#### चूल्हा फूटना

बंटबारा होना। प्रयोग—बर्नल माहव ने न जाने

कितने नाते रिस्तेदार और मेलजोल के घरों में चूल्हे फूटने से बचाया है (बूँद०—अ० ना०, २५९)

(समा० मुहा०—चूल्हा अलग होना)

#### चूल्हे में जाना,—पड़ना

नष्ट होना, जहन्नुम में जाना। प्रयोग—चूल्हे और भाड़ में जाय यह चाहत (इशा०—इशा०, १०९); चूल तू भी चूल्हे में जा और जोगी भी (मा० ग्रंथा० (१)—भारतेन्दु, २४); सब तरह की सूझ चूल्हे में पड़े (चुमते०—हरि-औध, ११७); जिस पुरुष जाति में शशि जैसी स्त्री की कद्र नहीं होगी, वह पड़ चूल्हे में (शेखर (२)—अज्ञेय, ७०)

#### चूल्हे में डालना

नष्ट करना, छोड़ देना। प्रयोग—घर्षी दो, टिकट लगाओ, पचावतन खो चूल्हे में डारो (झासी०—व० वर्मा, १५०)

#### चूल्हे में पड़ना

#### दे० चूल्हे में जाना

#### चूल्हे से आग भागना

घर में खाना न बनना। प्रयोग—जिस घर में क्लेश रहे चूल्हे से भागती है आग, घड़े से बीड़ता है पानी (दूधगाछ—दे० स०, ३८७)

#### चूस लेना

सार खींच लेना, पैसा खींच लेना। प्रयोग—यह आपको चूसकर, निम्सल बनाकर, जयपुर का पल्ला पकड़ेगा (विप०—प्रेमी, ९७)

#### चूहों का दंड पेलना

भोजन का सम्भाव होना। प्रयोग—पर चुनार में अक्सर चूहे दंड ही पेलना करते थे या ज़रमानी से भिक्षा मिल जाती थी, या मेरी आई किमी की मजूरी कर कूट-पीसकर खाती थी (अपनी खबर—उग्र, २६)

#### चेतना को छूना

चेतना को प्रभावित करना। प्रयोग—वह बात आज हमारी चेतना को छू चुकी है (दूधगाछ—दे० स०, ४०९)

#### चेरी होना

अनुगामिनी होना। प्रयोग—कया जो कहे घाड़ पिय केरी।



पावरि होउ जनम भरि चेरी (पद०—जायसी, ३१२);  
सूरदास-स्वामी जस प्रगट्यौ, जानी जनम जनम की चेरी  
(सू० सा०—सूर, २५२); खाति ही मेरी पं चेरी भई लखि  
फेरी फिरै न मुजान की चेरी (घन० कवित्त—घना०,  
२०१); टाट कैसे नहीं उलट जाता जब बुरी चाट के बने  
चेरे (चुमते०—हरिऔध, १२६)

### चेला मूड़ना

(१) बेवकूफ बनाना। प्रयोग—आपाही को चेला मूड़ने  
वाले गोसाइयों के दिन फिरते हैं (प्र० पी०—प्र०ना०मि०,  
१०४)

(२) चेला बनाना। प्रयोग—हजरत निजामुद्दीन सूफी-  
सम्प्रदाय के पक्के मुबल्लिग फकीर ये X X मुरीद बनाना या  
चेले मूड़ना इनका धार्मिक व्यवसाय था (पदम पराग  
—पद्म० शर्मा, १९१)

### चेहरा उतरना

लज्जा, चिन्ता, रोग, शोक के कारण चेहरे का निस्तेज  
होना, उदास होना। प्रयोग—गोमती का चेहरा उतर  
गया—तो मिल चुके ? (गोदान—प्रेमचन्द, १८०); रेखा  
उसे देखती रही। उसका चेहरा उतर गया (नदी०  
—अज्ञेय, १२६); मने जब यह सुना, तो क्षण भर के लिए  
मेरा चेहरा उतर गया (बाण०—ह० प्र० द्वि०, ४)

### चेहरा खिचा होना

क्रोध, चिन्ता आदि से मुख पर खिचाव आना। प्रयोग—  
देखर को देखते ही वे खिचे हुए चेहरे कुछ डीले पड़े,  
माँ की आँखों में आंसू आ गये और रिता एकदम से लौट  
कर ऊपर चले गये (शेखर (१)—अज्ञेय, १०७)

### चेहरा खिल उठना या खिला होना

चेहरे पर प्रसन्नता का भाव आना। प्रयोग—आज उनका  
चेहरा कुछ खिला हुआ था (मान० (८)—प्रेमचन्द, २७);  
तब तो सदा से सीगुना मुख शीघ्र उनका खिल गया  
(जय०—गुप्त, ८५)

### चेहरा ढीला होना

चेहरे के क्रोध आदि भाव का दूर होना। प्रयोग—देखर  
को देखते ही वे खिचे हुए चेहरे कुछ डीले पड़े, माँ की

आँखों में आंसू आ गए और रिता एकदम लौटकर ऊपर  
चले गये (शेखर० (१)—अज्ञेय, १०७)

### चेहरा पीला पड़ना

लज्जा, भय आदि के कारण चेहरे का रंग पीला पड़  
जाना। प्रयोग—घोकारनाथ का चेहरा जर्द पड़ गया  
(गोदान—प्रेमचन्द, ६८); मोती का चेहरा पीला पड़  
गया (झाँसी०—वृ० ठर्मा, २८१)

### चेहरा फक हो जाना

भय आदि के कारण मुख का कांतिहीन होना। प्रयोग—  
निन्नी का चेहरा लाल हो गया और लावी का फक  
(मृग०—वृ० ठर्मा, २०४); इतना सुनते ही रामनाथ का  
चेहरा फक हो गया (मिलान—कौशिक, ४०)

### चेहरा स्पाह पड़ना

दुःख, चिन्ता, अप्रत्याशित अपमान, भेद सुलने आदि के  
कारण मुँह का फक हो जाना। प्रयोग—उस स्थान पर  
हठात् कमला को देखकर नीलिमा का मुँह एकदम स्पाह  
सा पड़ गया (वीने०—१० रा०, १७१); बनकन्या का  
चेहरा स्पाह पड़ गया (वृ० ठ०—अ० ना०, २०८)

### चेहरा हरा होना

(१) स्वास्थ्य लाभसे चेहरा पर ताजगी आनी। प्रयोग—क्यों  
महाराज जब से मैं आया हूँ मेरा चेहरा कुछ हरा हुआ  
है ? (गवर्न—प्रेमचन्द १८२)

(२) प्रसन्न होना।

### चेहरे का कहना

चेहरे से साफ प्रगट होना। प्रयोग—तुम फिर झूठ बोल  
रहे हो, चेहरा कहे देता है (मान० (७)—प्रेमचन्द, ४७)

### चेहरे का चिराग बुझ जाना,—रंग उड़ जाना

भय के कारण कांतिहीन होना। प्रयोग—केदार के  
चेहरे का रंग उड़ गया (मान० (१)—प्रेमचन्द, १३);  
मुलिया, भितरिया, जलघडिया सबके चेहरों के चिराग बुझ  
गये (वृ० ठ०—अ० ना०, १६०); यह सुनते ही दोनों दासियों  
के चेहरे का रंग उड़ गया (मिलान—कौशिक, १३६)

### चेहरे का रंग उड़ जाना

३० चेहरे का चिराग बुझ जाना



चेहरे का रंग फक हो जाना

२२६

चोंचला बघारना

**चेहरे का रंग फक हो जाना**

अप्रत्याशित घटना के कारण हृत्प्रभ हो जाना । प्रयोग—बाबू ने साबुतो को देखा तो उनके चेहरे का रंग फक हो गया ( सु० सु०—सुदर्शन, २१४)

**चेहरे पर जनानापन बरसना**

चेहरे से स्पर्श लगना । प्रयोग—किसी के चेहरे को देखकर कोई कहता है कि इनके चेहरे पर जनानापन बरस रहा है ( सा० सु०—६१० मट्ट, १४)

**चेहरे पर तस्वीर उतरना**

चेहरे से भाव प्रकट होना । प्रयोग—इसी तरह पन देख चोर माह, लोभी, कदम के मन में जुदे-जुदे भाव उदय होते हैं जिनकी तस्वीर प्रत्येक के चेहरे पर उतर जाती है (सा० सु०—३१० मट्ट, १५)

**चेहरे पर धूल उड़ना**

मुख मलीन होना । प्रयोग—मैं जाता हीन-हीन मलीन रूप में पहने—धूल उड़नी चेहरे पर (अपनी सवर—उग्र, ९८)

(समा० मुहा०—चेहरे पर धूल उधियाना)

**चेहरे पर बारह बजना**

चेहरा घबराया हुआ होना । प्रयोग—लीला देखकर मन ही मन मुस्करातो है—चेहरे पर बारह बज गये ? (परतो०—रेणु, २७०)

**चेहरे पर राख पुत जाना**

प्रतिकूल बात के कारण चेहरा स्याह हो जाना । प्रयोग—बाकर के चेहरे पर घबानक राख पुत गई (परतो०—रेणु, ३४८)

**चेहरे पर शिकन न आना**

कोई भी दुःख, लज्जा इत्यादि के चिन्ह चेहरे पर न आने देना । प्रयोग—इनका मुपरिण्डेंडेंट इन्हें गालियाँ देता है लेकिन क्या मजाल है कि उनके चेहरे पर शिकन तक आ जाय (भूले०—मा० वमा, २६४)

**चेहरे पर स्याही फिरना**

बलक लगना, अपमान होना । प्रयोग—जिन विकायतों

का आधार लिया गया था, उनमें राजा का हाथ न था फलतः चेहरे पर सियाही न फिरी (चोटो०—निराला, ४९)

(समा० मुहा०—चेहरे पर स्याही पुतना)

**चेहरे पर हवाई उड़ना**

चेहरे पर घबराहट के चिन्ह आना । प्रयोग—पंचों के मुँह पर हवाईयाँ उड़ रही हैं (मैला०—रेणु, ११७); सभी के चेहरों पर हवाईयाँ उड़ने लगी (मान० (२)—प्रेमचन्द, २३७)

**चेहरे से टपकना**

चेहरे से प्रकट होना । प्रयोग—वह आत्माभिमान जो उस समय भी उनके मुख से टपक रहा था, क्या करुणा के हृदय में कभी विस्मृत हो सकता था (मान० (१)—प्रेमचन्द, ३८)

**चैन की बंसी बजाना**

खूब मौज से दिन बिताना । प्रयोग—चार-पाँच हजार बहुत होते हैं । अपने घर सेठ की तरह बंटा हुआ चैन की बंसी बजाऊंगा (रंग० (१)—प्रेमचन्द, ९४); रुपये ले और चैन की बंसी बजा (सु० सु०—सुदर्शन, ४६)

(समा० मुहा०—चैन की छनना)

**चैन से कटना**

मुख से समय बोलना । प्रयोग—तब भी तुम्हारी तो चैन से कटती है (कामना—प्रसाद, ५५)

**चोंच खोलना**

खोलना । प्रयोग—सबके पहले लाला माहव उठे और बन्दगी करके यों चोंच खोली (मा० प्र० (३)—भारतेंदु, ८६१)

**चोंच होना**

महा बुद्ध होना । प्रयोग—ब्रजकिशोर—पूरे चोंच ही रहे । उसे नौकर रक्खा, उसकी कन्या के आशिके जार बने बंटे हो (मिखा०—कौशिक, ४०)

**चोंचला बघारना**

दतराना । प्रयोग—बस, बस ! बहुत चोंचले न बघारो (मा—कौशिक, ३४४)



### चोट करना,—चलाना,—बिताना

प्रहार करना, शब्दों या कार्य से प्रहार करना । प्रयोग—पूछट झोट बितें घनमानन्द, चोट बितें अंगुठाहि दिखायें (घन० कवित्त—घना०, १९०); उनसे मेरी कई साल से दुश्मनी है । तब से वह मुझ पर बराबर चोट करते चले आते हैं (गु० नि०—वा० मु० गु०, ५०३); पिल्ली ने एक चोट की—रानी मृगनयनी क्या खालियर में वैसे ही कपड़े पहने होगी, जैसे गाँव में पहनती थी ? (मृग०—वृ० वर्मा, २३६); हाँ, दिल एक सच्चे शायर का है । हर गेट्स चोट करता है (लिली—निराला, ११९); मत कटीली बन कलेजा काट नू ऐ चूटीली आज मत चोटें चला (बोल०—हरिऔध, ५६)

### चोट चलना

आपस में कहा-सुनी या मनोमालिन्य होना । प्रयोग—जाति के पाँचवें सवारों में घौर उनमें जिन्हें कहें बरतार देखकर चोट बेतरह चलती चोट है लग रही कलेजे पर (चुमते०—हरिऔध, ७३)

### चोट चलाना

#### दे० चोट करना

### चोट पर चढ़ाना

बड़ावा देना । प्रयोग—लुत्तो ने इसी बीच सरबन बाबू को चोट पर चढ़ाया (परती०—रेणु, ३२५)

### चोट बिताना

#### दे० चोट करना

### चोटियाँ नोचो जानी

प्रपमान, दुर्गति होनी । प्रयोग—नोच को तो बिठा लिया मिर पर ऊँच की चोटियाँ गई नोचो (चुमते०—हरिऔध, ६२)

### चोटी कट जाना या कटवाना

इज्जत नष्ट होनी । प्रयोग—चोट खा वह ठाट पकनाचूर हो, चाट से जिसकी कि चोटी कट गई (चुमते०—हरिऔध, ११७); जब चटोरे बन कटा चोटी सके किस तरह तब लाज चोटी की रखें (बोल०—हरिऔध, ६)

### चोटी का पसीना एड़ी तक आना

कठिन परिश्रम पहना । प्रयोग—हम लोग दाने-दाने को मूहताज है × × चोटी का पसीना एड़ी तक आता है तब भी गुजर नहीं होता (गोदान—प्रेमचन्द, १९)

### (समा० मुहा०—चोटी का पसीना एड़ी पर आना)

### चोटी का होना

सर्वोत्तम होना । प्रयोग—हिन्दी के कुछ प्रसिद्ध एवं चोटी के आलोचकों का मत है कि हिन्दी का रीतिकालीन साहित्य × × पूर्व-मध्यकालीन राधा-कृष्ण प्रधान भक्ति की लहर का स्वाभाविक परिणाम है (कबीर—ह० प्र० द्वि०, ५); ओंकारनाथ के जीवन में यह पहला अवसर था कि उन्हें चोटी के छादमियों में इतना सम्मान मिले (गोदान—प्रेमचन्द, ६५); पालिटिक्स के मैदान में उतरे तो चोटी के लोडरों की चोटी पर जा चमके (पद्मपराग—पद्म० शर्मा, ७६)

### चोटी की बात

श्रेष्ठ बात । प्रयोग—चोंचलों से नाथ रीभेगा न तब है गई यह बात चोटी की कही (बोल०—हरिऔध, ६)

### चोटी की लाज रखना

ब्राह्मणत्व या श्रेष्ठ वर्ण का गर्व बनाये रखना । प्रयोग—जब चटोरे बन कटा चोटी सके किस तरह तब लाज चोटी की रखें (बोल०—हरिऔध, ६)

### चोटी खड़ी होना

साहस या क्रोध का आवेग होना । प्रयोग—खोलता जिनकी रगों का है लह है दिलेरी बांट में जिनके पड़ी । डांट मुनकर मुरमापन मे भरी कब न उनकी हो गई चोटी खड़ी (बोल०—हरिऔध, ६)

### चोटी पैरों के नीचे दबना

लाचार होना, बेवस होना । प्रयोग—जिसे दुश्मनों के भय के मारे रात को नींद न आती हो × × जिसकी चोटी दूसरों के पैरों के नीचे दबी हो × × उसे मैं मुखी नहीं कहता (गोदान—प्रेमचन्द, १५)

### (समा० मुहा०—चोटी दबना)



### चोटी हाथ में होना

दबाव में होना । प्रयोग—अगर रुपये न दिये तो ऐसी खबर लूंगा कि याद करेंगे । उनकी चोटी मेरे हाथ में है (गोदान—प्रेमचन्द, १५१); अपनी चोटी हाथ आ जाने से नंदी मनिया के बस में होकर सुधील बनने लगी (बुंदू—अ० ना०, १६५)

### चोर का दिल आधा होना

चोर के मन में डर होना । प्रयोग—जकर दबा लेते ; मगर चोर का दिल आधा होता है (मान०(४)—प्रेमचन्द, ९२)

### चोर की दाढ़ी में तिनका होना

कोई धपराप करने वाले का अपनी ओर से ही शक्ति होना । प्रयोग—बजकिधोर हँसकर बोले—चोर की दाढ़ी में तिनका (मिल्ला—कौशिक, १५६); पर कोई दोस्त बुरा मानकर अपने बिल-चोर की दाढ़ी में तिनका न डुंढे (कला०—उग्र, १४१)

### चोर के घर छिछोर पैटना

घृत से घृतता करनी । प्रयोग—मेरी बंदी मिल गई । चोर के घर में छिछोर पैटा (रंग० (१)—प्रेमचन्द, ३५९)

(समा० मूला०—चोर के घर मोर पैटना,—पर मोर पड़ना)

### चोर के बदले साथ को दंड देना

दोषों के बदले निदोष को दंड देना । प्रयोग—चोरनि छाड़ि छाड़ि के दांडी उलटो घन को स्वामी (मा० ग्रं० (२)—भास्तेन्दु, ५७५)

### चोर-चोर मौसेरे भाई होना

सब एक से होना । प्रयोग—घाप क्यों न बधाई देंगे, चोर-चोर मौसेरे भाई जो होते हैं (गोदान—प्रेमचन्द, १६९)

### चोर बाजार

चोरी से, छिपे-छिपे सौदा होना । प्रयोग—जहां उसमें छिपाकर बेचने की भावना आई वह वही चोर बाजार की नीज बन जाती है (मैरे०—गुलाब०, ७९)

### चोर से चोरी करने को और साथ से जागते रहने को कहना

दोनों ओर होना, दोनों पक्षों को उकसाना । प्रयोग—

जा मैं बिद्या नारदी, बिगरन देर न लाग, पैस चोर भुसि स्वान को, कहत धनी सों जाग (बु०स०—बुन्द, १०३)

### चोरी उधारना

चोरी या भेद को प्रगट कर देना । प्रयोग—चोरि न देहि उधारि के, धोमुन न कहिहें घानि (सू० सा०—सूर, ३५४६)

### चोला तर होना,—मस्त होना

तबियत खुश हो जानी । प्रयोग—सिंहासन के ठीक सामने ऐसा कोहारा लगाया है कि उसमें से गुलाब जल की फुहारें निकलती हैं । मेरा तो चोला मस्त हो गया (मान०(१)—प्रेमचन्द, १५६); पीते ही चोला तर हो जाता है, आँखें खुल जाती हैं (गोदान—प्रेमचन्द, २२०)

### चोला बदलना

(१) विचारों में एकदम परिवर्तन होना । प्रयोग—सारा गांव यही कहता था कि होरी पर बरखाद कर देगा लेकिन सिर पर बोझ पड़ते ही मने ऐसा चोला बदला कि लोग देखते रह गये (गोदान—प्रेमचन्द, २७)

(२) एक वेष को त्याग कर दूसरा वेष धारण करना ।

(३) मृत्यु को प्राप्त होना ।

### चोला मस्त होना

दे० चोला तर होना

### चोली दामन का साथ

बहुत अधिक साथ या घनिष्टता । प्रयोग—अब हमारा उनका चोली दामन का साथ है (राधा० प्रशा०—राधा० दास, ७००); पन्ना रूपवती स्त्री थी और रूप धीर गर्व में चोली-दामन का नाता है (मान० (१)—प्रेमचन्द, १)

### चौक पुरना

गृह कार्य के अवसर पर आटा रोजी आदि के द्वारा जमीन पर बैठने का स्थान सजाना । प्रयोग—बीबी सोबी बतुर सम चौकें चार पुराने (राम० (बाल)—तुलसी, ३००); मैं चौक पुरने लगा (कुल्ली०—निराला, १४४)

### चौकड़ी भरना

(१) चारों पैरों से तेजी से भागना । प्रयोग—यह वह भरते थे चौकड़ी एण की सी । मृग-मृग समता की तो



न थे ताव जाते (प्रिय०—हरिऔध, १५७); कभी चौकड़ी भरते मृग से भू पर चरण नहीं धरते (पल्लव—पंत, ७७)  
(२) आनन्द से इधर-उधर दौड़ना। प्रयोग—कभी पड़ोस का कोई दरिद्र बालक नया कुरता पहनकर आंगन में चौकड़ी भरता दिखाई देता (अतीत०—महादेवी, १२)

### चौकड़ी भुला देना

सारी हेकड़ी भुला देना। प्रयोग—इनकी सारी चौकड़ी भुला देगी (मान०(१)—प्रेमचन्द, ६०)

### चौकड़ी भूल जाना

अकल काम न करना, सिटपिटा जाना। प्रयोग—मेरे दाता ने चाहा तो वह ताव-भाव और राव-चाव और कूद-फाद लपट-झपट दिखाऊँ, जो देखते ही आपके ध्यान का घोड़ा जो बिजली से भी बहुत चंचल अचपलाहट में है हिरन के रूप में अपनी चौकड़ी भूल जाय (इंशा०—इंशा०, ९०); मटर × × यकायक इस रख को देखकर चौकड़ी भूलने लगा (मृग०—वृ० वर्मा, १६६); क्या हुआ चौकड़ी अगर भूले लख उछल-कूद और छल करना (चोखे०—हरिऔध, ७६); यह तो उस अज्ञात राजा की बड़ाई हुई कि जहाँ पर श्री शर्म गुप्त के से पराक्रमी राजा को लसों से हार, चौकड़ी भूल, अपनी रानी उनके हाथ में सौंप चला आना पड़ा था (गुलेरी ग्रंथ० (१)—गुलेरी, २१४)

### चौकन्ना होना

सतकं होना। प्रयोग—यह देखते ही चाणक्य चौकन्ना हो गया (मा० ग्रं० (१)—भारतेन्दु, १६७); यूसुफ चौकन्ने हुए (चोटी०—निराला, १०७)

### चौकन्ने कानों सुनना

सावधानी से, ध्यान से सुनना। प्रयोग—चौकन्ने कानों सुना और घाँवें फाड़-फाड़ देखा (ज्ञान०—यशपाल, १००)

### चौकस रहना

सावधान रहना। प्रयोग—तो उससे बहुत चौकस रहना चाहिए (मा० ग्रं० (१)—भारतेन्दु, २६); इयाराम चारों ओर से चौकस रहते थे (लिली—निराला, ५३)

### चौका अलग करना

(१) दुराव करना। प्रयोग—रान को कहती थी, जब शीला ने कहा था कि बक में रूपों का व्याज मिलेगा, कि लाना घायेंगे तो उनको संग लेकर हरिद्वार जाऊँगी, और अब यों चौका अलग कर रही हो (बीने०—शं०रा०, १६१)

(२) बंटवारा करना।

### चौका देना

जल से धोकर पवित्र करना। प्रयोग—साच मील का चौक दीजें, भाव भगति की सेवा कीजें (कवीर ग्रंथ०—कवीर, २४५)

### चौका लगाना

सत्त्वानाश करना। प्रयोग—‘भला शयनघर के प्रबन्ध करने वाले प्रमोदक ने क्या किया है?’ ‘उसने सब चौका लगा दिया’ (मा० ग्रं० (१)—भारतेन्दु, १६७); काहे तू चौका लगाय जयचंदबा (मा० ग्रं० (२)—भारतेन्दु, ५०२); मेरे समुर ने सब पे चौका लगा दिया था (वृ०—अ० ना०, ३७७)

### चौकी देना

(१) रखवाली करना, पहरा देना। प्रयोग—महाराज ! हमारे तो यही काम है कि इमशान में जाय चौकी दें (प्रेम सा०—ल० ला०, २९२)

(२) आदर सत्कार करना।

### चौकी पड़ना

(१) पड़ाव पड़ना। प्रयोग—मांडू का मुलतान मटवर पर चढ़ आया है। चौकियाँ पड़ती जा रही हैं (मृग०—वृ० वर्मा, २४१)

(२) पहरा पड़ना।

### चौकी बैठाना

पहरे के लिये सिपाही नियुक्त करना। प्रयोग—चारों ओर दैत्यों की चौकी बँटा दी (प्रेम सा०—ल० ला०, १६)

### चौखट पर माथा नवाना,—रगड़ना

किसी का घायर करना—सेवक-मा होना। प्रयोग—बड़े बड़े महापति उसकी चौखट पर माथा रगड़ने लगे



चौगुना होना

२३०

चौरासी लाख योनि में भटकना

(मान० (८)—प्रेमचन्द, ५१); ऐसा बिरला ही कोई आसामी था, जिसने उनकी चौखट पर मस्तक न नवाया हो (प्रेमा०—प्रेमचन्द, ४८)

**चौखट पर माथा रगड़ना**

दे० चौखट पर माथा नवाना

**चौगुना होना**

(१) अधिक बढ़ना । प्रयोग—क्यों ठमगें जाय दस गुनी न हो चाव कैसे चित न चौगुना करे (चुमते०—हरिऔध, १२)

(२) हिम्मत बढ़नी ।

**चौथ के चांद की तरह छोड़ना**

कभी न देखना । प्रयोग—सो पर नारि लिलार मोसाई ।

तजउ चउथि के चंद कि नाई (राम०(सु)—तुलसी, ८३४)

**चौथापन**

बुढ़ापा । प्रयोग—होइ न बिषय बिराम भवन बसत भा चौथपन (राम०(बाल)—तुलसी, १५४)

**चौदह पुस्तों में**

लम्बे घरसे में ; कभी भी । प्रयोग—मेरे चौदह पुस्तों में कभी कोई पाने नहीं गया आज में जाऊ ? (जहाज०—इ० जोशी, १७)

**चौरासी लाख योनि में भटकना**

जन्म-मृत्यु के बंधन में पड़े रहना । प्रयोग—तिल मुख कारनि दुख घस मेरु, चौरासी लख लीया फेरु (कबीर ग्रंथा०—कबीर, २३२)



### छंगा बना फिरना

भला बनना । प्रयोग—माना कि चौधरी भगवान दीन का काम बेजा था लेकिन उनके सामने कहते, नहीं, जब तक वह जिए, इन्हीं लड़कों की ( अंग-विशेष का उल्लेख कर कहा ) धो-धो कर पीते रहे, अब सब छगे बने फिरते हो (कृष्णी०—निराला, ४३)

### छंटनी करना या छांटना

काम करने वालों में से कुछ को निकाल देना । प्रयोग—प्रगर खजाने में उमी वक्त चोरी हो गई हो तो छांट दिए जाओगे या बचोगे ? (चोटो०—निराला, ९७)

### छंटा हुआ

चुना हुआ, धूर्त । प्रयोग—यहां तो जितने हैं, एक से एक छंटे हैं (मान० (१)—प्रेमचन्द, १३१); छंटे वकील ने उड़ाते हुए कहा × × (परस—जेनेन्द्र, ९)

### छंटे गुर्गे

बहुत बड़ा धूर्त । प्रयोग—जहां किसी मातहत ने जबरत से ज्यादा लिदमत और खुशामद की मैं समझ जाता हूँ कि यह छंटा हुआ गुर्गा है (कर्म०—प्रेमचंद, ३१६)

### छक रहना

तृप्त होना, खुश होना । प्रयोग—छछुछा दहै छक्कपति पासा, छकि किन रहहु छाड़ि किन घासा (कबीर ग्रंथा०—कबीर, ३११); वह छवि छाकि रहे दोउ लोचन बहिया गहि झूलन की (भ्र० सा०—सूर, १३९); बहके सब निय

## छ

की कहव, ठीर कुठीर लखै न । छिनि घोरं, छिन औरसे, ए छवि छांकै नैन (विहारी रत्ना०—विहारी, ९); तैसिय तै चितयो हंसि, वे सु रहे छकि, नैनन की छवि, सो छुनि (शब्द०—देव, ३३); भलकं अति सुंदर आनन गौर छके दूग राजत काननि छुर्व (घन० कवित्त—घना०, २); पर देख अर्जुन को निकट उत्साह से वह पा छका (जय०—गुप्त, ७७)

### छका छुड़ाना

हिम्मत पस्त कर देना । प्रयोग—आज तोमरों के छक्के छुटा दूगा (मृग०—वृ० वर्मा, २९१); घरे भाई, तुमने तो आज वह भाषण दिया कि बड़े-बड़े पड़े-लिखों के छक्के छुड़ा दिए (जहाज०—इ० जोशी, २३४); व्यापार-मंडल ने मेरे प्रस्ताव को स्वीकार करके गवर्नमेंट के छक्के छुड़ा दिए (रंग० (१)—प्रेमचंद, ४२०)

### छका छूटना

(१) बूढ़ि काम न करना । प्रयोग—किसानों ने यह घोषणा सुनी, तो छक्के छूट गये (कर्म०—प्रेमचंद, ३६५); पढ़कर प्रेमकुमार के छक्के छूट गए (लिली—निराला, १२७)

(२) हिम्मत हारना । प्रयोग—आलमगीरी मजजिद के बगलवाली सीढ़ियों की चढ़ाई चढ़ते-चढ़ते मेरे तो छक्के छूट गए (मा० मा०—कि० गो०, १५६); दूसरे दिन जैसा पढ़ हुआ उससे रोड की सेना के छक्के छूट गए (आँसी०—वृ० वर्मा, ३९९)



### छक्का-पंजा

धुंता । प्रयोग—वह बिल्कुल है सीधा-सादा छून गया है छक्का पंजा (बोल०—हरिऔध, १६२); सीधो घभी, समझती सब हैं सब का छक्का-पंजा (नूर०—भक्त, ६१); सीधा-सादा करीब आदमी या  $\times \times$  छक्का-पंजा न जानता या (मान० (४)—प्रेमचन्द, १८८)

### छक्का-पंजा भूलना

(१) होशियारी न लगनी । प्रयोग—अजी होती ऐसी मन्नाजी कि  $\times \times$  लोग छक्का-पंजा सब भूल जायं (राधा० प्रथा०—राधा०, दास, ९४-९५) (÷)

(२) बुद्धि का काम न करना । प्रयोग—देखिए प्रयोग (१) में (÷)

### छक्का हाथ मारना

कोई बड़ा काम कर लेना ; सकलता पानी । प्रयोग—बीरभद्वर बाबू ! बस समझ लीजिए इस काम में भी छक्का हाथ मार दिया (परती०—रेणु, १२१)

### छटकना

कतराना, दूर-दूर रहना । प्रयोग—यार ! क्यों छटक रहे हो ? (राधा०—प्र० स०, १०७)

### छठी का दूध याद आना

बहुत हैरानी होनी । प्रयोग—दो दिन में खाने के लाले पड़ते ही छठी का दूध याद न आ जाय तो कहना (बोने०—रा० रा०, ७८); बीबी रानी माधुरी की तरेर-भरी आँखें देखकर ही छठी का दूध याद आता है (तिलली—प्रसाद, ५४); वह होते तो ऐसी फटकार सुनाते कि छठी का दूध याद आ जाता (गबन—प्रेमचन्द, २७७)

### छठी का दूध याद कराना

(१) बहुत परेशान करना । प्रयोग—एक-एक कर तीनों हप्तेरो में मैंने उसको छठी का दूध याद कराया (परती० रेणु, ४१५-४१६)

(२) कठिन काम लेना ।

(समा० मुहा०—छठी का दूध निकालना)

### छठी में न पड़ना

(१) भाग्य में न होना । प्रयोग—पड़िवो पर्यो न छठी छ मत, रिगु जजुर घघर्वन साम को (दिनय०—तुलसी, १५५)

(२) स्वभाव में न होना ।

### छठें आठवें का सम्बन्ध होना

भगडा होना । प्रयोग—छठ-आठ मोहि कान्ह कुंवर सौ, तिनको कहति प्रीति तोसो है (सू०सा०—सूर, २३३५)

### छठें कान में पड़ना

तीसरे व्यक्ति का सुनना । प्रयोग—छठें श्रवण यह परत कहानी नास तुम्हार सरव मम बानी (राम० (बाल)—तुलसी, १७५)

### छत-फाड़ ठहाका

जोरों की हसी । प्रयोग—वह बड़े जोश से बोलता हुआ जबान चूक जाने से कह गया—शसियां नहीं बीसियों, बीसियों नहीं हजारों, हजारों नहीं करोड़ों, करोड़ों नहीं लाखों..... कि हाल का मौन एक छत-फाड़ ठहाके से भंग हो गया (पैतरे—अशक, २४-२५)

### छत्तीसका अंकेन रिश्ता होना,—का सम्बन्ध होना

दुश्मनी होनी, विरोध भाव होना । प्रयोग—झूठ से मूक से छत्तीस का अंकेन रिश्ता है (बोने०—रा०रा०, १५९); इसीलिए जड़ाय से मेरा छत्तीस का सम्बन्ध रहा (कुल्लो—निराला, ७८); मैं फिल्मी दुनिया में नाम पाना चाहता हूँ और मेरी बीबी को फिल्मी दुनिया में छत्तीस का भी नाता नहीं (पैतरे—अशक, ४८-४९)

### छत्तीस का सम्बन्ध होना

दे० छत्तीस का अंकेन रिश्ता होना

### छत्तीस होना

विकट होना, विमुख होना । प्रयोग—मगर दोनों जैसे छत्तीस बने हुए थे । न बोलते थे, न ताकते थे (गोदान—प्रेमचन्द, २२५);  $\times \times$  घर की जोर से करीब-करीब छत्तीस रहकर, अचानक घर में एक जीता-जागता बिलौना या भभूती के जीवन में नया आकर्षण आया (बुं०—प्र० ना०, १६६)



### छत्तीसी होना

छली, घूँत होना । प्रयोग—यह छिनाल बड़ी छत्तीसी है, इसको तुमने समझा है क्या ? (मा०ग्रं०(१)—भारतेन्दु, ३१); हरेक से जलना, हरेक का घरा घेतना, यही इनका काम.....छत्तीसी कहीं की (बुँद०—अ०ना०, २६); ये सब उसी छत्तीसी के गुन हैं, उसीने लाड़-प्यार दिखा-दिखाकर उसको खराब कर दिया है (मा—कौशिक, २०१)

### छत्र-छाया

संरक्षण । प्रयोग—गान्गा, चेन्नम्मा, आदि अपने आत्मीय गुरुजनों की छत्र-छाया (उसे) प्राप्त की (सुहाग०—अ० ना०, १७१)

### छनना

(१) बातचीत होनी । प्रयोग—यह बाहर निकले, तो नायकराम ने पूछा—कैसी छनी ? (रंग० (२)—प्रेमचन्द, २०४)  
(२) खूब मेल-जोल होना ।

### छप्पन-छुरी होना

(१) छल-कपट वाली । प्रयोग—सामने कैसी भीठी बोली बोलती है ? और, मन में छप्पन छुरी (परती०—रेणु, ४९५)  
(२) रूप-नौदयं और साज-धुंगार से तीव्र प्रहार करने वाली ।

### छप्पर पर रख देना

छोड़ देना । प्रयोग—ईमानदार रहकर थोड़ी-आमदनी से हम किसी तरह बड़ी कठिनाई से अपना दिन काटते हैं तो यह उससे अच्छा है कि हम ईमानदारी को छप्पर पर रख बेईमान हो बहुत रुपया चटोर गुलछर उड़ावें (भट्ट नि०—वा० भट्ट, ४३)

### छप्पर फाड़ कर देना

अप्रत्याशित ढंग से देना । प्रयोग—अब यह देता है तो छप्पर फाड़कर देता है (कठ०—दे० स०, २२०); सुदा देता है तो छप्पर फाड़कर देता है (रंग० (१)—प्रेमचन्द, १७२)

### छरहरा खदून

ऐसा खरीर जो न मोटा हो खीर न दुबला । प्रयोग—जुबति आनन्द भरी, भई जुरि कै खरी, नई छरहरी मुठि बंस गोरी (सू० सा०—सूर, २३६९); घाय १५ से कुछ ऊपर खरीर छररा (झांसी०—पुं० दर्मा, ६२); डिप्टी सुपरेंटेंडेंट लम्बा छरहरा जवान था, बहुत ही विचारशील और अल्प भाषी (गवत—प्रेमचन्द, २१४)

### छल-छंद करना

छल-कपट करना । प्रयोग—‘हरिऔध’ छलछंद छोड़ो तो बदल जाते (मर्म०—हरिऔध, १६४)

### छल-छंद का छछंदर छू लेना,—छूना

छल-कपट का भाव मन में आना । प्रयोग—बार-बार किसलिए उसे छल-छंद छछंदर छू ले ? (मर्म०—हरिऔध, २); पटी कपट से कभी न उसकी उसे न छूता है छलछंद (मर्म०—हरिऔध, १५)

### छल-छंद छूना

दे० छलछंद का छछंदर छूना

### छल न छू जाना

छल का लेशमात्र भी न होना । प्रयोग—सरल सुभाउ छुअत छल नाही (राम० (बाल)—तुलसी, २४४)

### छल से सानी हुई

अत्यन्त कपटपूर्ण । प्रयोग—बोले मधुर बचन छल सानी (राम०(बाल)—तुलसी १०१)

### छलका पड़ना

प्रगट होना । प्रयोग—अधरानि में आधिय बात परे लइकानि की आनि परे छलके (घन० कवित्त—घना०, १२०); नल-सिस आनन्द-उमंग की तरंग बड़ि अंग अंग आली छाबि छलकयो करति है (घन० कवित्त—घना०, १८५)

### छलके दूध से लाभ उठाना

बर्बाद होती हुई वस्तु या काम से भी फायदा उठाना । प्रयोग—बाबू सालिगराम ने छलके हुए दूध से मुनाफा उठाया है (बुँद०—अ० ना०, १३०)



**छांटना**

- (१) ज्ञान अपारना—किसी बात में सेबी लगाना ।  
 प्रयोग—संनकीरन छांटवी, घर बहो, जलने पार के बिट्टी  
 बिजिले (राधा० उदा०—राधा० दास, ५६०)
- (२) लकड़ी, लड़ी इत्यादि को छोटा काट कर लाल का  
 करना ।
- (३) काम करने वालों में से कुछ को निकाल देना ।

**छाह करना,—देना**

छाहारा या आभय देना । प्रयोग—सोई सोकुल सोरारन  
 सोह, सोम करे अब छाहि (सु० सा०—सु०, ३५७५); बरि  
 बरि छाई बरिहै, करती है तुलसीदास दासवि पर छाई  
 (गोदा० (३)—तुलसी, १३); सोमेराप ने छाह न दी होरी,  
 तो बीज भी मांगती (गोदान—डैनबट, २०)

**छाह की तरह साथ रहना**

हर समय साथ रहना । प्रयोग—सुर स्याम स्याम-स  
 ऐसे प्रवी संग छाह रहाने (सु० सा०—सु०, ३५३५); चाह  
 मई छिरी या छिा मेरे को, छाह मई छिरी चाह के पीर  
 (अम०—देव, १४)

**छाह में गहना,—बसना,—बैठना**

आधित होना, नीचे होना । प्रयोग—कई कबीर जाके बेदे  
 नहीं, बिज अब बेदे हरि की छाही (कबीर उदा०—कबीर,  
 १०४)। नुम-ना कबी सवार में सोई नहीं और सब तुम्हारी  
 छाह तले बसने है (सु० सा०—सु० सा०, १२); मेरी चाह  
 गरी स्यामी ने, मेने उनकी छाह गरी (गोदा०—तुल, ४३)

**छाह देना**

दे० छाह करना

**छाह न छु पाना**

पास तक न पहुँच पाना । प्रयोग—अब सके छुट वरी  
 छिछोरारन मुच अब छाह नु नहीं पानी (कुम्भी०—  
 हरिऔध, ११६)

**छाह न छुने देना**

पास न छटकने देना । प्रयोग—हकि हवि सागत हो, छाही

न छागत हो, यावि यावि स्वागत हो सार्वे हु के सान नु  
 (अन० कवित्त—अन०, ५५)

**छाह में बसना**

दे० छाह गहना

**छाह में बैठना**

दे० छाह गहना

**छाए रहना**

(१) बने रहना ; रहना । प्रयोग—छाही मपुन एके  
 मन लवकी, नु ही गहा में छाए हो (सु० सा०—सु०,  
 ३३१५); बीजे बीवि जागत बिधान की, बिचारत हो  
 छाए न पाव बेग कही कित छाए हो (कन०—सोनापति,  
 १५)

(२) प्रभाव होना ।

(३) मन में ध्यान बना रहना ।

**छाती उछलना**

आवाजिरेक होना । प्रयोग—देखकर लड़ेन लाल को  
 x x प्यार से छाती उछलती ही रही (चोरी०—  
 हरिऔध, ६)

**छाती उटना,—उभरना**

बोकावस्था के आसमन स्वस्व रिषयो के स्तनों का  
 उभरना । प्रयोग—जो उभरले भाव है बी में बुरे देव  
 करके छानिया उभरी हुई (बोल०—हरिऔध, १०२);  
 जो न हो पादम-मरी जालें तो न देम उठी-उठी छाती  
 (बोल०—हरिऔध, १५०)

**छाती उभरना**

दे० छाती उटना

**छाती उमड़ जाना**

प्रेम या कलहा के आधिक्य से व्याकुल होना । प्रयोग—  
 कोन मुल पानी नहीं भी प्यार कर, नून मूल छाती उमड़  
 जाती रही (बोल०—हरिऔध, १५२)

**छाती ऊँची बनना या होना**

सीरव या गर्व होना । प्रयोग—इस उबानी की उमंगों  
 से उभर कोन-बी छाती हुई ऊँची नहीं (बोल०—हरिऔध,  
 १५०); बेड ऊँची और ऊँचा पर बिने वरी बना ऊँची



बने छाती नहीं (बोल०—हरिऔध, १५३)

### छाती कटोर होना

कटोर हृदय का भाव व्यक्त । प्रयोग—कुल्लिख कटोर बिहुर मोड़ छाती (राम० (बाल)—तुलसी, १२६)

### छाती कड़ी करना

हृदय को कटोर करना । प्रयोग—बोले राख कटिल कर छाती (राम० (बाल)—तुलसी, ४०१)

### छाती कांपना

मयभील होना । प्रयोग—झिजहर पर जब झिरझर टाटी, पन गरजत कर्न मेरी छाती (कबीर ग्रंथा०—कबीर, १५१); देखि मरिहानि की कम्पति है छाती ऐसी, सम्पति सहित देत जायकनि दान है (मति० मक०—मतिराम, २००)

### छाती का कांटा होना

बहुत दुखदायी होना । प्रयोग—गरनु भ्रातिवर तो छाती का कांटा वा (मृग०—बु० वर्मा, ४०६)

### छाती का बोझ

(१) बहुत दुखप्रद । प्रयोग—घाय हम हलके बहुत ही हो गए बोझ छाती का नहीं हलका हुआ (बोल०—हरिऔध, १७७) (—)

(२) बड़ा दायित्व । प्रयोग—देखिए प्रयोग(१) में (—)

(समा० मृहा०—छाती का पथर)

### छाती का हाड़ तोड़कर

घायल परिचय में । प्रयोग—मैंने इसी छाती का हाड़ तोड़कर जोता-बोता है (तितली—प्रसाद, १५०)

(समा० मृहा०—छाती काड़कर)

### छाती कुल्लिख होना

हृदय कटोर होना । प्रयोग—ऊँची कुल्लिख भई वह छाती (सु० शा०—सूर, ४२५९)

### छाती कुटना

दुःख करना । प्रयोग—कुटते क्यों न तब किरे छाती कुटते आज बाह भी टूटी (कुमारी—हरिऔध, ७७)

### छाती के कियारु खुलना

(१) ज्ञान होना । प्रयोग—जब खुला जान साँस भी

न खुली खुल कियारे सके न छाती के (बोल०—हरिऔध, १५३)

(२) बहुत घामपन होना । प्रयोग—इन्हीं जान पदी में मेरे  $\times \times$  झुटी कदम में दा चमेनी इस दबने सुटने लगे जो देखने वाली की छातियों के केराड़ खुल जाएँ (ईशा०—ईशा०, १२१)

(३) दिल खोलकर बोलें करना । प्रयोग—सोमने सले अगर खोले खुले तो कियारे छातियों के खोल दे (खोले—हरिऔध, १७)

(४) छाती फटना ।

(५) कट से बीमार निकलनी ।

### छाती गज भर की होना

घमण्डाल और गर्व होना । प्रयोग—होरी की छाती गज भर की हो गयी (लोदान—प्रेमकन्द, ९); न खिला कोन दिल निरह खोले कीर छाती हुई न गज भर की (बोल०—हरिऔध, १५२); कहीं कोई तुम्हारी लारीक कर देगा है तो मेरी छाती गज भर की हो जाती हैवी (बु०)—ज० न०, ४९५)

### छाती चूर-चूर होना

बहुत दुःख होना । प्रयोग—जाज भरपूर चोट खाकर हो गई चूर चूर वह छाती (बोल०—हरिऔध, ११४)

### छाती छरछराना

जी में पीड़ा होनी । प्रयोग—देखकर नरक जाति की छिपली छरछराली घनर नहीं छाती (कुमारी—हरिऔध, ६४)

### छाती छलनी कर देना

बहुत दुःख पहुँचाना । प्रयोग—घेर-घेर छाती क्यों है छलनी नहीं बनाता (मर्म०—हरिऔध, १२०)

(समा० मृहा०—छाती छलनी कर देना)

छाती छलनी होना,—छिड़ना,—मैं भँभरी बनना मन को बहुत पीड़ा पहुँचनी, दुःख सहते-सहते पल हो जाना । प्रयोग—बिचुरे किन जाति मिले हूँ न होति,



छिरी छतिपा अकुनामि-सुरी (छन० कवित्त—धना०, १००); छात्र छुवाछल-बिता से छिदे कोन हो छाती हुई छलनी नहीं (सुभते०—हरिऔध, ११५); किन्तु अब नहीं। छाती में भँभरिया बन गई है (दिल्ली—प्रसाद, २८०) (समा० मुहा०—छाती छलनी होना,—में भँभरी पड़ना)

### छाती छिलना

दे० छाती छलनी होना

### छाती छिलना

मन की कष्ट होना। प्रयोग—क्यों मिटे छलछात के झगड़े जब छिने दिल छिनी नहीं छाती (सुभते०—हरिऔध, ११६)

### छाती जलना,—दहना,—सुलगना

(१) चोक से हृदय संतप्त होना, संताप होना। प्रयोग—काम पावक बरति छाती सोन नाचो आनि (सु० सा०—सूर, ४६०१); राजू राम कहूँ जेहि तेहि भाँतो। नाहि त जरिहि जवम भरि छाती (राम० (अ)—सुलसी, ४०४); नेह भरी बतिपा कहिके नित सौतिल की छतिपा दहिबो करे (जग०—पद्माकर, १२/(-)); बिरह-जनल दहकत नित छाती (मा०प्रदा०(१)—भारतेन्दु, ३८६); उन दिन की स्मृति से छाती अब भी जलने लगती है (कुह०—दिनकर, ३१)

(२) ईर्ष्या होनी। प्रयोग—धवा जनल इन सुखमद छाती (राम०(बाल)—सुलसी, १०१); जात से पारिविक फटकर हमारी बेटी ने मातृरी पाय किया है। परजात धावों की छाती जलती है (परसी०—नेपु, २०४); देखिए प्रयोग (१) में (-) भी

(३) शोध की अपेक्षा होनी। प्रयोग—बहद न हावु बहद रिग छाती (राम० (बाल)—सुलसी, २८५)

### छाती जलाना

दुख देना, जुझाना, संताप देना। प्रयोग—सूर न होहि स्वाम के मुख की, जाहु न जायहु छाती (सु० सा०—सूर, ४२८३); वाद-विवाद बिपावु बड़ादके छाती पराई की जावनी जारे (सवि०—सुलसी, १६८)

### छाती जुझाना,—ठंडी पड़ना या होना,—शीतल होना,—सिराना

छाति मिलनी। प्रयोग—सोह करो ज्यो मिटे हृद को बाहु, परे उर सौरक (सु० सा०—सूर, ४५४३); तोहि देखि सीतल भद छाती (राम० (सु)—सुलसी, ८२३); दुइ बरदान भूप सन पाती। मांगहु धावु जुझावहु छाती (राम० (अ)—सुलसी, ३९२); नृ पें बिलुरे छिल, ऐसी तिया, छतिपा सियराइ कहो केहि भाति (शब्द०—दे०, १०३); तिन्हें यो सिराति छाती तोहि नें लगति ताती, तेरे बाँटे बायो है जङ्गारनि पर कोटिबो (छन० कवित्त—धना०, ३४); धरे, आज किस बेरीकी छाती ठंडी गई रे? (मा०प्रदा०(१)—भारतेन्दु, ३१०); जो हमारा क्यों जलाता है, वही या जिसे छाती जूझ जाती रही (बोसे०—हरिऔध, १९४); जब नरवर के किले में इनका झगड़ा फहरावे × × तभी मेरी छाती जुझाएगी, मेरी छातमा भी (सुग०—दु० ठमा, १०१); उसे सुखी देखकर मेरी छाती ठंडी रहेगी (चित्र०—कौशिक, ६०); वे माने इतनी ही बतिपा छतिपा मोर तिरेंहे (ठेठ०—हरिऔध, १३)

### छाती टुकड़े-टुकड़े होना,—टूक-टूक होना,—दो टूक होना

दुख से अत्यन्त व्यापित होना। प्रयोग—देख टुकड़ा जाति का छिलते अगर संकड़ों टुकड़े हुई छाती नहीं (सुभते०—हरिऔध, ८८); आज तुम्हारी ओर से मुँह केले हुए छाती दो टूक हुई जा रही है (लिली—निराला, ९४); क्यों न देख इन व्यवहारी को टूक-टूक फिर हो छाती (मुकुल—सु० कु० चौ०, ६४)

### छाती टूक टूक होना

दे० छाती टुकड़े-टुकड़े होना

### छाती टूटना

बहुत दुख होना। प्रयोग—देखकर कटता कलेजा जाति का फूटती है आज छाती टूटती (सुभते०—हरिऔध, ७८)

### छाती ठंडी करना

(१) शांति और सन्तोष पाना। प्रयोग—या तो निरसुट नद की जैसी जियर पर मिलीविधा मुख की पवित्र



भजना पहराती देखकर अपनी छाती ठंडी करने से बचवा XX  
... (राधा० प्रश्ना०—राधा० दास, ६५१); दुख जगिन उसमें  
दहकती ही रही कर सके छाती कभी ठंडी न हम  
(बोल०—हरिऔध, १५१)

(२) मन की धमिलाया पूरी करनी।

**छाती ठंडी पड़ना**

दे० छाती जुड़ाना

**छाती ठंडी होना**

दे० छाती जुड़ाना

**छाती टुकना**

(१) हिम्मत होनी। प्रयोग—इन्का मन कमजोर है  
इसमें इन्की छाती अब तक नहीं टुकती (परीक्षा०  
—श्री० दास, ११६)(+)

(२) चित्त में दृढ़ता आनी। प्रयोग—देखिए प्रयोग (१)  
में (+)

**छाती ठोंककर कहना**

बड़ी दृढ़तापूर्वक कहना। प्रयोग—क्यों इतनी छाती ठोंक  
और हाथ उठा उठाकर लोगों को विश्वास दिया (भा०  
प्रश्ना०(१)—भारतेन्दु, ४४९); विशेषतः जो छाती ठोंक-ठोंक  
ताली बजवा-बजवा कागजों के तख्ते रंग रंग कर देस हित  
के गीत गाते फिरते हैं वह और भी देशी वस्तु का व्यवहार  
करना अपनी जान से बर्बाद समझते हैं (प्र० पी०—प्र०  
ना० मि०, ११३); दूसरा चाहे कहे या मत कहे हम कहें  
यह क्यों न छाती ठोंक कर (बोल०—हरिऔध, १५२);  
जमर ने छाती ठोंक कर कहा—जिस रास्ते तुम जा रहे  
हो वह XX सर्वनाम का रास्ता है (कर्म०—प्रेमचन्द, २९४)

**छाती ठोंकना**

(१) मुकाबला करना। प्रयोग—भाग को तो जोरते  
हो हम रहे पाज छाती ठोंक कर भी देस लें (चुमती०—  
हरिऔध, ९९)

(२) साहस दिखाना।

**छाती तनी रहना**

समर्थ रहना। प्रयोग—आप तन करके हमें तन बिन न  
दे जो तनी है तो रहे छाती तनी (धोसे०—हरिऔध, ४९)

**छाती तान कर खड़ा होना**

साहसपूर्वक सामना करना। प्रयोग—इन सबके सामने  
मैं छाती तान कर खड़ा हो सकता हूँ (पट्टन पराग—  
पट्टम० शर्मा, ४०६); दूर घमं कहते हैं छाती तान तीर  
खाने को (कुक्क०—दिनकर, ५२)

**छाती दरकना,—फटना,—बिहरना**

(१) दुख से हृदय व्यापित होना। प्रयोग—बन  
बिलोकि बिहरत नहि छाती (राम० (लं)—तुलसी,  
५५६); गरजनि तरजनि अनु घनु भांती। फूटै कान  
अरु फाटै छाती (नंद० प्रश्ना०—नंद०, १६५); चित्त  
तरखनु, निमत न बननु बसि परीस के बास। छाती फाटी  
जाति मुनि टाटी-छोट उसास (बिहारी रत्ना०—बिहारी,  
२६२); तुम बिन छिन छिन कैसे कटे। पलक छोट  
भये छाती कटे (प्रेम सा०—ल० ला०, १०२); इस  
पुण्यकीर्ति उदार मनुष्य की उदारता और अभावनाय  
और संवर्धित वस्तु की यह दुर्दशा देखकर मेरी छाती फट  
गई (भा० प्रश्ना० (३)—भारतेन्दु, ११५); मुनि कर  
पीतम प्यारे की मेरी जंजियां भरि आईं बिरह से दरकी  
सखि छाती (भा० प्रश्ना० (२)—भारतेन्दु, ५०६); जाके  
इक इक मुलुन मुमिरि फाटति है छाती (प्र० पी०—प्र०  
ना० मि०, १०६); वही तो, परन्तु प्रिय, कुलीनारा छोड़ते  
मेरी छाती फटती है (देशजली० (१)—चतुर्ग, १३५);  
घभी कई दिन हुये, धाई हुई की उसकी दशा देखकर  
छाती फटती थी (मान० (१)—प्रेमचन्द, ९६); मांसे  
बिहस कुरराज की जोकालें छाती फट गई (जब०—गुप्त,  
५०); देख दर-दर खीन खन फिरते उसे कम नहीं छाती  
दरक जाती रही (बोल०—हरिऔध, १००)

(२) ईर्ष्या होनी। प्रयोग—भूपन जबत सरजा की सैन  
छिति पर छाती दरकति है खरी अखिल सन की  
(भूपन प्रश्ना०—भूपन, १६३)(+); अगर हमारी बड़ती  
देखकर किसी की छाती फटती है तो फट जाय, मुझे  
परवाह नहीं (गोदान—प्रेमचन्द, ४३); दूसरों की छाती  
क्यों फटती है—मेरे समझ में नहीं छाती बात (परती०—  
रेनु, ५५)

(३) डर लगना। प्रयोग—देखिए प्रयोग (२) में (+)



छाती दहना

२३८

छाती पर कोदों दलना

छाती दहना

दे० छाती जलना

छाती दहलना

हर लगना । प्रयोग—मगर वहां तुम न जाओगे क्योंकि वहां जाते तुम्हारी छाती दहलती है (मान० (१)—प्रेमचंद, ३००)

छाती दूनी होना

गवं या प्रसन्नता होनी । प्रयोग—बात ही ऐसी हुई है कि छाती दुगुनी हो जाय (गोदान—प्रेमचंद, १२२) ; जिसे देल छाती दूनी होती उमंग में आते (मर्म०—हरिऔध, १५०) ; आप ऐसा कहते हैं तो हमारी छाती दूनी हो जाती है (चोटो०—निशाला, ११२)

छाती देना

(१) भरोसा करना, प्रश्रय देना । प्रयोग—अब तो इस बच्चे पर छाती दो, यही तुम्हारी नाब को पार लगायेगा (वीने०—रा०रा०, ७१)

(२) स्तन पिलाना ।

छाती दो टूक होना

दे० छाती टुकड़े-टुकड़े होना

छाती धक् धक् करना

भयभीत होना । प्रयोग—गंगा की छाती धक् धक् करने लगी (मान० (१)—प्रेमचंद, १३१)

छाती धड़कना.—धुंकर-पुंकर करना

हर लगना । प्रयोग—हा हा कान्हू उदभान, अबही होइगी जान, पुंकर-पुंकर छाती सुखन हर ते (सू० सा० (परि० १)—सूर, ७२); कहुँ मोर बोले री घनको गरज मुनि दामिनी दमकें छतिया धरकें (मा० प्र० (२)—भारतेन्दु, १२३) ; तब किसलिए अधमता करते नहीं धड़कती छाती (मर्म०—हरिऔध, ३०) ; कुंवर साहब शांत थे पर बमुंथा की छाती धड़क रही थी (मान० (१)—प्रेमचंद, २४५)

छाती धुंकर-पुंकर करना

दे० छाती धड़कना

छाती निकाल कर चलना

पकड़ कर चलना । प्रयोग—याम जिनके कमाल कोई है वे न छाती निकाल हैं चलते (बोल०—हरिऔध, १७९)

छाती निकाल कर रख देना

(१) किसी के लिये बड़ा से बड़ा त्याग का काम करना । प्रयोग—बाकी हमारे हाथ में जस नहीं है निगोड़ा—चाहे हम अपनी छाती निकाल के रख दें (बुंद०—अ० ना०, १५५)

(२) सच्चा अनुभव घोर इच्छा प्रगट कर देनी ।

(३) दिल की बात कह देनी ।

छाती पत्थर को करना

दुख सहने के लिये हृदय कठोर करना । प्रयोग—तो बनें क्यों न आप पत्थर हम कर न छाती सके अगर पत्थर (बोल०—हरिऔध, १७७)

छाती पत्थर-सी होना

निर्दय और कठोर होना । प्रयोग—किस लिए बाल-बूब तो न जमी ओ न पत्थर समान छाती है (चौखे०—हरिऔध, १२७)

छाती पर कुलिस रखना

हृदय कठोर करना । प्रयोग—रघुकुल तिलक चले एहि भांती । देख उँ ठाड़ कुलिस धरि छाती (राम० (अ)—तुलसी, ५१६)

छाती पर कोदों दलना,—नमक मलना,—मूँग दलना

दुख पहुँचाने वाला काम करना । प्रयोग—नाचें मोर कुलाहत कीर्जे । इन्द्र की छाती लौन सौ मीर्जे (नंद० प्र० (१)—नंद०, १६९); लड़के पर न जाने क्या कर-करा दिया, अब छाती पर मूँग दलने छापी है (मान० (२)—प्रेमचंद, १३३); जिन कन्नगी की छाती पर उसने मूँग दले हैं वह अब उसकी अपनी छाती पर न मूँग दल पायेगी (सुहाग०—अ० ना०, १७२) ; जब दलाते हैं हमीं दिल याम तो लोग कोदों क्यों न छाती पर दलें (चुमते०—हरिऔध, ६५) ; मुल न होगा मगर छाती पर कोई मूँग भी तो न दलेगा (सू० सू०—सुदर्शन, २२४)



### छाती पर घूसा मार कर चल देना

प्रसमय में सबको विलगता छोड़ मर जाना । प्रयोग—  
ऐसे ही वे चले गए थे । ऐसे ही यह भी छाती में घूसा  
मार कर चला गया है (बीने०—रा० रा०, ६३)

### छाती पर चढ़ बैठना

जबरदस्ती करना । प्रयोग—'कहां जाऊँ' यह प्रश्न प्रधान  
बनकर पहले ही क्षण मेरी छाती पर चढ़कर बैठ गया  
(जहाज०—६० जोशी, १०) ; नहीं तो मुम जानते हो,  
घाज ये सब मनुष्य की छाती पर चढ़ बैठे हैं (धरती०—  
वि० प्र०, ३८)

### छाती पर चढ़ना

(१) कष्ट देने के लिये तैयार रहना । प्रयोग—वैने  
नैन तेरे से न हेरे मैं अनेरे कहूँ, पाती बड़े काती लिए  
छाती पे रहूँ चढ़े (घन० कवित्त—घना०, १२७)

(२) कोई काम करवाने के लिए बार-बार घाना ।

### छाती पर छुरी चलना

मन को बहुत कष्ट होना । प्रयोग—उस दिन की स्मृति  
से छाती अब भी जलने लगती है । भीतर कहीं छुरी  
कोई उर पर चलने लगती है (कुरु०—दिनकर, ५१)

### छाती पर नमक मलना

#### दे० छाती पर कोदों दलना

#### छाती पर पत्थर रखना

दुख सहने के लिए हृदय कठोर करना । प्रयोग—मैं तो  
दियो छाती पवि, लघो कलिकाल दवि, सांगति सहत,  
परबस को न सहैगो (विनय०—तुलसी, २५९) ; दयानन्द  
हरिचंद अलखधारी केशव कर । दुख भूत्यों उमों त्यों  
करि, छाती परि पाथर (प्र० पी०—प्र० ना० मि०, १७५) ;  
हाथ मलमल कब न रह जाना पड़ा कब गया पत्थर न  
छाती पर रखा (बोल०—हरिऔध, १८०) ; छाती पर  
पत्थर रखकर पत्नी संग भला ही जाता हो (नूर०—  
मक्त, १५)

### छाती पर पाप पड़ना

पाप लगना । प्रयोग—ओ बड़ा रिस-वेग अपने आप तो  
भूत सिर पर पाप छाती पर चढ़ा (बोल०—हरिऔध,  
१७८)

### छाती पर बैठाना

जबरदस्ती किसी को दुख का कारण बनाना । प्रयोग—  
चाहती है कि उसे मौत बनाकर छाती पर बैठा दे  
(मान० (१)—प्रेमचन्द, १७२)

### छाती पर भूँग दलना

#### दे० छाती पर कोदों दलना

#### छाती पर लिखा होना

मन पर अमिट प्रभाव होना । प्रयोग—वे बतियाँ छतिपां  
लिखी राखी, जे नन्दलाल कही (सू० सा०—सूर, ४०१३)

### छाती पर सवार रहना या होना

किसी काम को करने के लिए कड़ी ताकीद करना ।  
प्रयोग—मालिक इस तरह रहे तो काम करने में जो  
लगता है । यह नहीं कि हरदम छाती पर सवार  
(मान० (१)—प्रेमचन्द, ३०४)

### छाती पर साँप लोटना

(१) ईर्ष्या होनी, जलन होनी । प्रयोग—मेरी ओर  
मदन मोहन की मित्रता देखकर उसकी छाती पर साँप  
लोटता है (परीक्षा०—श्री०दास, १५९-१६०) ; जब से  
आप मिनिस्टर हुए हैं, उनकी छाती पर साँप लोटता है  
(गोदान—प्रेमचन्द, ३२४)

(२) दुख से कलेजा दहल जाना, मानसिक व्याधा होनी ।  
प्रयोग—जिस वक्त उसका वह तेजी के साथ निकल जाना  
खयाल करता हूँ छाती पर साँप लोट जाता है  
(राधा० प्रश्ना०—राधा०दास, ६१९) (÷) ; उसी दिन से उनकी  
छाती पर साँप लोटता रहता था (मान० (६)—प्रेमचन्द,  
२०)

(३) व्याकुलता होनी । प्रयोग—कभी गाँव में आ जाती  
हूँ तो रस भरी आँखों से देखने लगते हैं जैसे सबकी छाती  
पर साँप लोटने लगता है (मान० (१)—प्रेमचन्द, १३१) ;  
देखिए प्रयोग (२) में (÷) भी

### छाती पर से बोझ उतरना

चित्ता से मुक्त होना । प्रयोग—यह बड़ा घातक हुआ,  
मानों घाज मेरी छाती पर से एक बोझा उतर गया  
(मा० प्रश्ना० (१)—भारतेन्दु, २८)

(समा० मुहा०—छाती पर से पहाड़ उतरना)



### छाती पर हाथ रखना

सिंहाना ; हाथ-हाथ करना ; व्याकुल होना । प्रयोग—  
दोनों धनिया को देखकर छाती पर हाथ रख लेते थे  
(गोदान—प्रेमचंद, ३००)

### छाती पीटना

दुःख का आवेश प्रकट करना । प्रयोग—नारि वृन्द कर  
पीटहि छाती (राम० (लं)—तुलसी, ९१०); घमीना ने  
छाती पीट ली । यह कैसा बेसमझ लड़का है कि दो पहर  
बुझा, कुछ खाया न पीया । लापा क्या चिमटा (मान०  
(१)—प्रेमचंद, ३७); उसकी बूढ़ी माँ और स्त्री यह सब  
सुनकर छाती पीटने लगी होगी (गहन—प्रेमचंद, २७४);  
पेट कटता देख जब रो पीटकर लोंग पीटा हो करेने  
छातिपां (चुमते०—हरिऔध, ३१)

### छाती फटना

#### दे० छाती दरकना

#### छाती फाड़कर काम करना

बड़े परिश्रम से काम करना या कमाना । प्रयोग—  
मेरा बौहर छाती फाड़कर काम करे और पन्ना रानी बनी  
बैठो रहे (मान० (१)—प्रेमचंद, ५); अब सारी आयु छाती  
फाड़कर काम करने का क्या तुने ठेका ले लिया है  
(सु० सु०—सुदर्शन, ४६)

#### छाती फाड़कर रोना

बड़ी कष्टा से रोना । प्रयोग—जाती बार वह छाती  
फाड़कर रोई—मुझ बभागिन को छाती से लगा कर  
(गोली—चतुर०, १३४)

(समा० मुहा०—छाती फाड़ कर चिड़ाना)

#### छाती फाड़ना

(१) अत्यन्त कष्ट पाना । प्रयोग—सज्जन की शारी  
× × अपना पर मुट्ठा देल दिन-रात अपनी छाती  
फाड़ा करती थी (बुँद०—अ० ना०, ८९)

(२) बहुत परिश्रम करना ।

#### छाती फुलाना

गर्व करना । प्रयोग—वे शिकार और ब्रुहा, मदिरा

और बिलामिता के दास होकर गर्व से छाती फुलावे घूमते  
हैं (कामना—प्रसाद, ४४); जो नहीं फूला समाता फूल फल  
है वही छाती फुलाना जानता (बोल०—हरिऔध, १८२)

#### छाती फूल उठना

(१) प्रसन्नता होनी । प्रयोग—यशदाजी इन्कार तो कर  
रहे थे, पर छाती फूली जाती थी (मान० (१)—प्रेमचंद,  
१८७) (÷); और अपने बेटे की बीर-घटना सुनकर तो  
तुम्हारी छाती हर्ष से फूल उठी होगी । क्यों ?  
(सु० सु०—सुदर्शन, २९३) (÷)

(२) गर्व होना । प्रयोग—देखिए प्रयोग (१) में (÷)

#### छाती बिहरना

#### दे० छाती दरकना

#### छाती भर आना

(१) भावातिरेक होना । प्रयोग—पुलक वात आई  
भरि छाती (राम० (बाल)—तुलसी, २९४) (÷); देखकर  
लाल को किलक हँसते × × कौन छाती भला न भर  
साई (चोले०—हरिऔध, ४) (÷ १)

(२) हृदय का भावातिरेक से गदगद होना । प्रयोग—  
देखिए प्रयोग (१) में (÷)

(३) स्तनों में दूध आना । प्रयोग—देखिए प्रयोग (१)  
में (÷ १)

#### छाती मजबूत होनी

हिम्मत होनी । प्रयोग—मेरी छाती इतनी मजबूत  
नहीं है (गहन—प्रेमचंद, २८१)

#### छाती में कांटा बिछना

मन में पीड़ा होनी, कसक होनी । प्रयोग—तब भला  
जी ज़ाय क्यों छितरा नहीं जब कि छाती में रहें कांटे  
छिटे (चुमते०—हरिऔध, ७२)

#### छाती में छाले पड़ना

जी दुखी होना । प्रयोग—दिल भला जिसका नहीं है  
छिल गया कौन छाती में नहीं छाले पड़े (बोल०—  
हरिऔध, १८३)



### छाती में छुरी भोंकना

अति अहित करना । प्रयोग—वे पतित है पेट पापी के लिये छातियों में भोंक दें जो छुरियां (घोखे०—हरिऔध, १७)

### छाती में छेद करना

मन को बहुत कष्ट पहुँचाना । प्रयोग—बंद आगे भेद कँसो, छेद सी छाती किए (सू० सा०—सूर, ४४८३); लगती बातें कह करता है वह न किसी छाती में छेद (मर्म०—हरिऔध, १५)

### छाती में छेद पड़ना या होना

कष्ट या अपमान से मन दुखी हो जाना । प्रयोग—ऊधो के संदेसनि छाती होन बहुत है बेह (सू० सा०—सूर, ४६२४); छेद छाती में घखुतों के हुए जो घखुता जी गया छितरा नहीं (चुमते०—हरिऔध, ११६)

### छाती में झंझरी बनना

दे० छाती छलनी होना

### छाती में तलवार उतर जाना

छाती में तलवार भोंक दी जानी । प्रयोग—वह उतर चित से न पायेगी तभी जाय जब तलवार छाती में उतर (बोल०—हरिऔध, १८४)

### छाती में लिख रखना

हमेशा याद रखना । प्रयोग—वै बतियां छतियां लिखि राखी जे नंदलाल कही (सू० सा०—सूर, ४०१३)

### छाती लाना

छाती से लगाना । प्रयोग—निरखत जंक श्याम सुंदर के बार-बार लावति छाती (सू० सा०—सूर, ४१०५)

### छाती शीतल होना

दे० छाती जुड़ाना

### छाती सिराना

दे० छाती जुड़ाना

### छाती सुलगना

दे० छाती जलना

### छाती सूख जाना

स्तनों में दूध न रह जाना । प्रयोग—वह लटकी पेट-पाँछती थी । छाती बिल्कुल सूख गयी थी, लेकिन भगवान की लीला है और क्या (गोदान—प्रेमचंद, २८३)

### छाती से लगाकर रखना,—से लगाना

बहुत प्यार करना,—बहुत चाहना । प्रयोग—क्यों बलि बलि कहि छतिपन लाई । इसा देखि छति संभ्रम पाई (नंद० ग्रंथा०—नंद०, ११०); छाती से लगा लो कौन छूत इनमें है लगी (मर्म०—हरिऔध, १६४); अब तो जो तुम पहुँच जाओ तो तुम्हें छाती से लगा लें (मिखा०—कौशिक, ६१); यों तो मुझे देखते ही मिल उठते थे, दोड़कर छाती से लगा लेते थे, आज मुलातिब ही नहीं होते (रंग० (१)—प्रेमचंद, १७५); पुत्र में कितनी ही वृद्धियां क्यों न हों माता उसे अपनी छाती से लगा लेती है क्योंकि मातृस्नेह सभी कर्मियों को भर देता है (कबीर—ह० प्र० द्वि०, १७६)

### छाती से लगाना

दे० छाती से लगाकर रखना

### छान डालना,—मारना

(१) घूम घाना । प्रयोग—कामकरने वाला हो तो ऐसा हो । थोड़े ही दिनों में उसने सारा मुल्क छान डाला (रंग० (२)—प्रेमचंद, २७०)

(२) खूब मन लगाकर खोजना । प्रयोग—जोगी महेन्द्र और उसके नव्वे लाख श्रुतीतों ने सारे वनके वन छान मारे (इंशा०—इंशा०, ११७); मनमोहन प्यारे तेरे लिये जोगिन वन वन-वन छान फिरी (मा० ग्रंथा०—मारतेन्दु, ४६०); लोगों ने सारा शहर छान मारा लेकिन एक भी जाँख ऐसी नबर न पायी जो मद से लाल हो (मान० (३)—प्रेमचंद, १४५); एक-एक पर एक-एक कोठे को देखने लगी; कोने-सत्ते तक उसने छान डाले (सुहाग०—अ० ना०, १८०); मैं सारा बाग छान घायी, पेड़ों पर झँक कर देखा, फुम न जाने कहाँ चले गये हो (गदन—प्रेमचंद, १२४); लेकिन उन्होंने एक-एक दुकान छान-मारी, लाख तलाश करने पर भी वह किताब कहीं नबर न आई (कठ०—दे० स०, ३९२)

### छान-परताल करना,—धीन करना

खोज करना । प्रयोग—नकलची इतिहास लेखकों



ने उन्हीं के आधार पर बिना अधिक छानबीन किये मक्खी पर मक्खी मारना शुरू कर दिया (पद्म० के पत्र—पद्म०शर्मा, २४८); कदाचित् इसीलिए कल बुलाया है, खूब छान-परताल करके तब राम रेंगे (प्रेमा०—प्रेमचंद, ७३); मैं जिस काम को करता हूँ, पहले उसकी छानबीन कर लेता हूँ (मा—कौशिक, २२)

### छानबीन करना

दे० छान-परताल करना

### छानना

गराब पीनी, भंग छाननी। प्रयोग—हो तुम भी निरे बछिया के ताऊ आज ज्यादा छान गये थे? (गवन—प्रेमचंद, ९९); अम्बर ने गहरी छाननी यह, भू पर दुगुनी डाली (यशो०—गुप्त, ४४)

### छान मारना

दे० छान डालना

### छाना

रहना। प्रयोग—कहा भयो जो लोग कहत हैं, काहू द्वारिका छावो (सू०सा०—सूर, ४९१४); चितकूट रघुनंदन छाये। समाचार मुनि मुनि मुनि आये (राम०(अ)—तुलसी, ४९८)

### छाप डालना

प्रभाव डालना। प्रयोग—अब तक साहर में कोई ऐसा साधु, सात्विक पुरुष न था जो उनपर अपनी छाप डाल सके (प्रेमा०—प्रेमचंद, ३८७)

### छापा पड़ना

घबानक आक्रमण होना। प्रयोग—आँस पर छापा पड़ा, चाहे छिनी सब सुखों पर दे दिया दुख-पुट गया (बोल०—हरिऔध, २०२)

### छापा मारना

एकाएक हमला करना। प्रयोग—उस दिन आपकी सेना को पोट के बाहर निकलकर अंगरेजी सेना पर छापा मारना था (छाँसी०—पु०वर्मा, ४३४); उन्ही दिनों एक दिन छापा मारकर बनार की पुलिस ने सदुपुर मुहल्ले के जुआरियों और उनके संगियों को रंगे हाथ गिरफ्तार कर लिया (अपनी खबर—उग्र, २५)

### छाया की तरह साथ रहना

हर समय साथ रहना। प्रयोग—भाजाद मिस्तरी का काम जानता था परन्तु पुलिस छाया की तरह उसके पीछे लगी रहती थी (छूठा०(२)—पशपाल, ४२५)

### छाया भी न छू पाना

तनिक भी न निकट पहुँच पाना। प्रयोग—तो मति मोरि भरत महिमा ही कहै काहू छलि छुअति न छाँहो (राम०(अ)—तुलसी, ६४६)

### छाया मिटना

प्रभाव दूर होना। प्रयोग—सज्ज न छाया मिटति तुम्हारी, तामु गरित मुनू भम रज हारी (राम०(बाल)—तुलसी, १५३)

### छाये घर में आग लगाना

बने बनाये काम को बिगाड़ना, धनष्ट करना। प्रयोग—एहि पापनिहि बूझि का परेऊ। छाई भवन पर पावकु धरेऊ (राम०(अ)—तुलसी, ४१५)

### छार लगाना

सन्धास लेना। प्रयोग—पह दुख भयो सूरके प्रभु सौ कहत लगैवन छार (सू०सा०—सूर, ४१६१)

### छिछली भावना

क्षुद्र या बुरे विचार। प्रयोग—क्षुपि विश्वामित्र के प्रति भानुप्रताप जी की छिछली भावना भाँपते ही वह अवध-वासी महात्मा मारे रोष के स्वयमेव क्रोधो कौशिक बन उठे (अपनी खबर—उग्र, ७०)

### छिद् जाना

व्यथित होना। प्रयोग—वह बचन बान से कहीं तीला बेधता है बिना बिषे ही जो छिद् उठे जो उसे नहीं सुनकर कान में छेद ही नहीं है तो (चुमते०—हरिऔध, १०२)

### छिद्रान्वेषण करना

गोज गोज कर बुराई निकालनी। प्रयोग—ज्ञान शंकर तो सदैव उनका छिद्रान्वेषण किया करते (प्रेमा०—प्रेमचंद, १२५); जहाँ एक ओर दलबन्दी में आकर सरकारी कार्यों में कोई न कोई छिद्रान्वेषण कर उसपर प्रशन्नता प्रकट करने की प्रवृत्ति पाई जाती है वहाँ अधिकारी वर्ग में ऐसे समा-



लोचकों के प्रति 'राजा करे तो ग्याय' की उपेक्षा वृत्ति बढ़ती जाती है (पेरे०—गुलाब०, १९८)

### छिनाल का अंग होना

ऐसी वस्तु जिसे देखकर लज्जा हो। प्रयोग—विश्वास तो मानो छिनाल का अंग हो रहा था, देखते सुनते लज्जा आती थी कि हाय ये कैसे आय है, किससे उत्पन्न है (भा०ग्रंथा०—(३)—भारतेन्दु, ८३७)

### छिपे रुस्तम होना

ऐसा मनुष्य जिसमें गुण अप्रकट रूप से हो। प्रयोग—मुझे पहले से मालूम होता तो तुम्हें इस घर में घुसने न देती तुम तो छिपे रुस्तम निकले (मान०(७)—प्रेमचंद, ४८); यह भी छिपा रुस्तम है, इसी ने तेरा दिमाग बिगाड़ा है (निशि०—वि०प्र०, १७८)

### छिया-छिया होना

निन्दा होनी। प्रयोग—पिया पिया बासो दिया छिया छिया जग होतु (मति०मक०—मतिराम, २०१)

### छींकना

अपशकुन करना या मनाना। प्रयोग—छींकनेवाले करें तो क्या करें। छींकते हैं छींक ही आती नहीं (चुमते०—हरिऔध, ३२)

### छींटा आना

तनिक भी अहित होना या आलोचना होनी। प्रयोग—मैं सब बातें ऐसी खूबसूरती में तय कर दूंगा कि आप पर छींटा भी न आने पायेगा (प्रेमा०—प्रेमचंद, २७१)

### छींटा उड़ाना,—कशी करना,—कसना,—जमाना,—फेंकना

निंदा या बुराई करनी; कब्रियां कसनी। प्रयोग—आपका उस महान आत्मा पर छोटे उड़ाना छोटे मुंह बड़ी बात है (कर्म०—प्रेमचंद, २५१); उड़ाये बिना बुरे छोटे, कहां पर पिचकारी छुटी (मर्म०—हरिऔध, ७७); एक-दूसरी पर छोटे उड़ाने के उनके स्वभाव से नीलमणि को क्या लेना-देना था? (ब्रह्म०—दे०स०, ४७); जब से कल्याणी के भाई की शादी में उनके और महिपाल के संबंध को लेकर छींटाकशी हुई X X तब से XXवे बेहद बिहविड़ा उठी है (बंद०—अ० ना०, ५०६); वैयक्तिक चरित्र पर भी कहीं छींटाकशी हुई

(मेरे०—गुलाब०, २०९); डाइरेक्टर—श्रीदयसुर अवन्त देसाई और उनकी हाथीवृद्ध-कट पत्नी तबंशी पर छोटे कसने में लोगों को मजा आ रहा है (दूधगाछ—दे०स०, २५१); एक कल में लासी रहेगी, सुमन मोहनी भी घाया करेगी और छोटे भी कसा करेगी (मुग०—वृ०वर्मा, ३४२); करवरी, १९४६ की नाविक क्रांति की घटना पर X X काप्रेसी और सींगी नेताओं की सहानुभूति के अभाव के प्रति कुछ छोटे फेंक दिये थे (झुठा०(१)—यशपाल, ४९); मुन्ना ने छींटा जमाया—“एक थोड़ा फेर रही हूँ” (चोटो०—निराला, ३८)

### (गमा० मुहा०—छींटा डालना)

### छींटा-कशी करना

### दे० छींटा उड़ाना

### छींटा कसना

### दे० छींटा उड़ाना

### छींटा जमाना

### दे० छींटा उड़ाना

### छींटा देना

किसी बात की और पुष्टि करनी। प्रयोग—“आपकी इस उदारता से आपका नाम विक्रम और हातम की तरह दूर दूर तक फैल गया है और बहुत लोग आपके दर्शनों की अभिलाषा रखते हैं” मुन्शी चुन्नीलाल ने छींटा दिया (परोक्षा०—श्री०दास, २१)

### छींटा पड़ना

(१) हलकी बर्षा होनी। प्रयोग—थोड़े दिन पहले एक छींटा हो गया था इससे चारों तरफ हरियाली छा गई (परोक्षा०—श्री०दास, १०९)

(२) थोड़ा घसर होना। प्रयोग—जो न जी में छोट परहित की पड़ी तो हुआ क्या छोट माचे को बना (चुमते०—हरिऔध, १२१)

### छींटा फेंकना

### दे० छींटा कसना

### छी छी करना

पूणा करनी। प्रयोग—उनके कर्म प्रायः इतने बुरे, इतने



प्रसन्न हुआ करते हैं कि दूसरे उन्हें बुरा समझ कर ही नहीं रह जाते, छिः छिः करके ही संतोष नहीं कर लेते, मरम्मत करने के लिए भी तैयार हो जाते हैं (चिता० (१)—शुक्ल, ६१)

### छीछालेदर करना

(१) हंसी उड़ानी, दुर्गति करनी। प्रयोग—लेकिन मैं इतना नीचे नहीं चिर सकता कि पैसे के लिए छीछालेदर करता फिरूँ (भारती०—रा०रा०, ९४)

(२) गोल खोलना।

(३) काम बिगाड़ना।

(नगा० मुहा०—छीछालेदर उड़ाना)

### छीछालेदर होना

काम का बिगड़ना, हंसी उड़ाई जानी; दुर्गति होनी। प्रयोग—ऐसी छीछालेदर उसके घर में कभी न हुई थी (मान० (१)—प्रेमचंद, ६१); वर्तमान समय की सम्मोहिनी सभ्यता की छीछालेदर का जो सुन्दर चित्र उन्होंने 'महारण्य पयंवेक्षणम्' नामक लेख में खींचा है वह देखने ही गोम्य है (पद्म पराग—पद्म० शर्मा, ६८)

### छुई-मुई होना

(१) उरा-सी बात या विषय पर विचित्रता में धबड़ा जाने वाली—नष्ट होने वाली। प्रयोग—हिन्दू-धर्म एक कच्चा घागा, छुई-मुई का पौदा या मकड़ी का जाला बना हुआ था कि उरा किसी ने छुपा, अंगुली उठाई और फूंक मारी नहीं कि वह टूट गया और मुरझा गया (पद्म पराग, —पद्म० शर्मा, १४)

(२) खड़ा जाना। प्रयोग—मीनाजी छुई-मुई-सी हो गई (कठ०—दे०स०, ३९)

### छुरी खलाना

छिपे-छिपे किसी का अहित करना। प्रयोग—छेड़ने वाले ही छेड़ें, पर चलायें हम कभी छुरी न (मर्म०—हरिऔध, ९१); वारों, चपों बिपत के मारे हुए दुखियों पर यह कीचड़ फेंक रहे हो, ये छुरियाँ चला रहे हो? (रंग०(९)—प्रेमचंद, ३९८)

### छुरी फेरना

(१) बहुत हानि पहुँचानी। प्रयोग—कितलिये हम फेर दें उन पर छुरी जो कि मूढ़ से बोल भी सकती नहीं (चुभते०—हरिऔध, १५५); दोनों उस गरीब लड़की के ऊपर छुरी फेरना चाहते हो (निर्मला,—प्रेमचंद, २९)

(२) मारना।

### छू न जाना

(१) बिलकुल न होना। प्रयोग—भय तो उसे छू तक नहीं गया था (सतमी०—राहुल, १०१); देवतापन जिन्हें नहीं छूता है उन्हें धर्म देवता करता (चुभते०—हरिऔध, १८१); न जाने इन सबों को कोई कहाँ तक समझाये अबल छू तक नहीं गयी (निर्मला—प्रेमचंद, २३)

(२) कोई असर न होना। प्रयोग—उसने कुछ बापा-पिया नहीं और इसके लिये गालियाँ सुनीं, जो उसे छू नहीं गईं (शेखर(१)—अज्ञेय, १७५)

### छू मन्तर हो जाना

भाग जाना, अदृश्य हो जाना। प्रयोग—उसका सारा विराग सारी उदासीनता मानो छू मन्तर हो गई थी (गवन—प्रेमचंद, ८)

### छू लेना

कोई असर होना। प्रयोग—मेरे चित को चंचलमति छू ले नहीं (वेदेही०—हरिऔध, १५९); लालाजी की रचना रसजों को स्पर्श न कर पायी (अपनी खबर—उम, १०४); बुधा को शायद यह बात छू गई (व्याग०—जैनेन्द्र, १७)

### छूछा लगना

सारहीन प्रतीत होना। प्रयोग—जितने तरह के अभिमान हैं उनमें कुल का अभिमान हमें बड़ा छूछा मालूम होता है (मष्ट नि०—वा० भट्ट, १८)

### छूटा सांड होना

ऐसा व्यक्ति जिस पर किसी प्रकार का बंधन न हो। प्रयोग—उधर राजा की स्त्री मर गई XX और भी छूटा सांड हो गया (मान० (४)—प्रेमचंद, १५४); लड़के गांव में भी हैं, मगर उनमें कुछ लिहाज है, कुछ घदब है, कुछ डर है। ये सब तो छूटे सांड हैं (गोदान—प्रेमचंद, २६०)



### छूते सोना होना

काम करते लाभ ही लाभ होना । प्रयोग—जिसको मैंने छू दिया हुआ वह सोना (चक्र०—दिनकर, ४४)

### छूना

प्रयोग में लाना । प्रयोग—तब सब लोग सभी हिन्दुस्तानी वस्तुएं काम में लाते थे अब बीन-अंग्रेजी के प्रागे हिन्दुस्तानी को छूना है (सधा० ग्रंथा०—राधा० दास, ५५६)

### छेड़ करना

चिढ़ाना । प्रयोग—होटलवाला ईरानी प्रक्सर हमसे छेड़ में कहा करता कि आजकल आप लोगों की चांदी कटती होगी (ये कोठे०—अ० ना०, ३७/३८)

### छेड़ना

(१) पर-स्त्री से अश्लील कुरुचिपूर्ण व्यवहार करना । प्रयोग—वही खड़े रहो । हमको क्यों छेड़ते हो (मृग०—व० वर्मा, १५३)

(२) कोई बाजा बजाना ।

(३) प्रारम्भ करना—कहना ।

### छेद डालना

बहुत तंग करना ; दुख देना । प्रयोग—भामी जीने न दंगी । छेद-छेद कर मार डालेंगी (सेवा०—प्रेमचंद, ५३)

### छैल चिकनियां

बन-ठनकर रहनेवाला । प्रयोग—सेठजी जवान और बड़े छैल-चिकनियां थे (ये कोठे०—अ० ना०, ५२)

### छोटा आदमी

नीच जाति या मामूली काम करने वाला आदमी । प्रयोग—कैसे छोटे नरनु तें सरत बडनु के काम मइयो दमामो जातु क्यों, कहि चूहे के चाम (विहारी रत्ना०—विहारी, १३१) ; ऐसे ही लोगों का सहारा पाकर कभी-कभी छोटे आदमी मुंशीजी के मुंह लग जाते थे (मान० (८)—प्रेमचंद, १७) ; छोटे लोग इन ऊंचे फलटों के दहवों में रहते हैं, जहां चढ़ते-चढ़ते कमर टूट जाती है (पैतरे—अशक, १४०)

### छोटा गिनना

तुच्छ समझना । प्रयोग—बोली कतुर सखी मृदु बानी । तेजवंत लघु गनिअ न रानी (राम० (वाल)—तुलसी, २६३) (समा० मृदु०—छोटा करना,—मानना,—समझना)

### छोटा बनाना

तुच्छ समझना । प्रयोग—लेकिन आप इनके लिये कृतज्ञ मत होइए, आप इस तरह अपने को छोटा मत बनाइए (शेखर (१)—अज्ञेय, २२३)

### छोटा भाग्य होना

अभाग्य होना, कम मौभाग्यवाला होना । प्रयोग—भाग छोटा अभिलाषु बड़ करत एक विस्वाम (राम० (वाल)—तुलसी, १४)

### छोटा होना

(१) तुच्छ होना । प्रयोग—इन विलोकि लघु लागहि बिगुल बिबुच-वन-बाग (गीता० (अ)—तुलसी, ४७) ; शेखर को लगा कि वह छोटा हो गया है या उसके सामने वाला व्यक्ति कुछ ऊंचा उठ गया है (शेखर (२)—अज्ञेय, ६३)

(२) संकुचित होना । प्रयोग—मूँके हंसता देख फिर छोटे पड़े (कुल्लू०—मिराला, १३) ; घोर तुम पुरुष हो... इतने छोटे हृदय और इतनी छोटी आज्ञा के बल पर... (सिंदूर०—ल० मिश्र, ११३)

### छोटोपन

क्षुद्रता । प्रयोग—छोटोपन यह आइ है, कैसे मोटी बात । खेरी के मुंह में दिवो ज्यों पेठा न समात (पु० स०—सुन्द, ९५)

### छोटी जाति

सूद जाति । प्रयोग—एक दिन उसे घर से आज्ञा मिली कि वह यदि पड़ोस वाले घर में चला भी जाय तो वहां कुछ खाये-पीये नहीं × × क्योंकि वे छोटी जात के हैं (शेखर (१)—अज्ञेय, ६०)

### छोटी बात

मामूली बात । प्रयोग—अति लघु बात लागि दुखु पावा (राम० (अ) तुलसी, ४१४)

### छोटी हाज़िरी

नाश्ता । प्रयोग—प्रातःकाल था । लोग जलपान करके या छोटी हाज़िरी छाकर मेज पर से उठे थे (रंग० (१)—प्रेमचन्द, ४०)

### छोटे मुंह बड़ी बात

असमर्थ या कम हैसियत वाले व्यक्ति का कोई बड़ा काम करना । प्रयोग—उनकी रचनाओं को समझना मेरे लिये छोटा मुंह बड़ी बात थी (मान० (१)—प्रेमचन्द, ७८)

### छोटे मुंह बड़ी बात कहना

अपनी योग्यता या स्थिति से अधिक बात करना, किसी बड़े को अपमानित करना । प्रयोग—छोटे मुंह बड़ी बात, कही किन जापु शम्हारे (सू० सा०—सूर, २०७९); छोटे बदन कहत बड़ि वाता । छमव तात ललि वाम बिधाता (राम० (अ)—तुलसी, ६५०); लपु आनन उत्तर देत बड़े

लरिहै मरिहै करिहै कछु साको (कवि०—तुलसी, १८); यदि सबकी घड़क एकवारगी खुल जाय तो एक ओर छोटे मुंह से बड़ी-बड़ी बातें निकलने लगें, चार दिन के मेहमान तरह-तरह की फरमाइशें करने लगें (चिता० (१)—शुक्ल, ६५-६६); मांगते हैं स्वराज हम, लेकिन है बड़ी बात और मुंह छोटा (बोल०—हरिऔध, ११०)

### छोड़ने जाना

किसी को स्टेशन अथवा दरवाजे तक पहुंचाने जाना । प्रयोग—मैं भाई साहब के एक मित्र के साथ चला जाऊंगा । वही मुझे छोड़ भी जाएंगे (पैतरे—अशक, २०)

### छौकना

अपनी बात कहना । प्रयोग—तुम बहुत संतपना छौकते हो, किसी दिन मुझे तुम्हारा यह संतपना देखना है (मा—कौशिक, २९९)



## ज

### जंग लगना

बेकाम होता जाना । प्रयोग—मैं महसूस करता हूँ कि मेरी जिन्दगी पर रोज-ब-रोज जंग लगता जा रहा है (कर्म०—प्रेमचंद, ९५)

### जंगल में रोना

व्यथ विलाप करना । प्रयोग—अनसुनी ही की गई सारी धाज जंगल में हमें रोना पड़े (बोल०—हरिऔध, ७१)

### जंगली होना

असभ्य होना । प्रयोग—सब न जाने कहां के जंगली हैं कि और सब चीजें तो लाये, चन्द्रहार न लाये जो सब गहनों का राजा है (गवन—प्रेमचंद, ११)

### जकड़ा होना

फंसा होना । प्रयोग—जो रहे ताकते परावा मुंह तो दुखों से न किसलिये जकड़ें (चुभते०—हरिऔध, ८)

### जग-जाल मिटना

संसार भार से मुक्ति पाना । प्रयोग—करत चरित धरि मनुज तनु, सुनत मिटहि जग जाल (राम० अ)—तुलसी, ४५९)

### जग में लीक होना

प्रतिष्ठित, अनुकरणीय होना । प्रयोग—नीति निपुन जिन्ह कइ जग लीका । घर तुम्हार तिन्ह कर मनु नीका (राम० अ)—तुलसी, ४९५)

### जग-हंसाई कराना

ऐसा काम करना जिससे समाज में उपहास का विषय बना

जाय । प्रयोग—समूझि बूझि मन माहि काहे को लोग हंसावो (सु० सा० परि० १)—सूर, ३८)

### जग-हंसाई होना

समाज में उपहास का विषय होना । प्रयोग—जगत हंसाई होय बहुरि मन में पछनैहो (कुण्ड०—गिरधरदास, १५); इक हाव लगी मेरे जग बीच हंसाई (भा० ग्रंथा० (२)—भारतेन्दु, १९५); कभी-कभी ऐसी दुधंदना हो ही जाती है, पर इसमें कौसी जग-हंसाई और कौसी नक-कटाई (मान० (१)—प्रेमचंद, ६३)

### जगह छोड़ना

डिगना । प्रयोग—जम गये छोड़ता जगह क्यों है क्यों नहीं गड़ पहाड़ लौ पाता । दूसरों के उलाड़ देने से पांव क्यों है उलड़ उलड़ जाता (चुभते०—हरिऔध, ९)

### जगह-जगह

(१) हर स्थान पर । प्रयोग—चर्चा की मेरी डाँव-डाँव (बुद्ध०—वचन, ५४)

(२) थोड़ी थोड़ी दूर पर ।

### जगह तोड़ना

कोई पद या नौकरी की जगह ही हटा देना । प्रयोग—जैसे अब की हमने पुलिस विभाग में ५ लाख काट दिया । सगर यह कभी बड़े बड़े हाकिमों के भले या तलब में नहीं किया गया । बिचारा चौकीदार, कांस्टेबल, पानेदार का तलब पटावेगा, जगह तोड़ेगा (रंग० (२)—प्रेमचंद, १४२)



### जगह दिलाता

काम या नौकरी देनी । प्रयोग—कोई ऐसा भलेमानस न दीखता था जो सब कुछ बिना कहे ही समझ जाय, और उसे कोई अच्छी सी जगह दिला दे (गहन—प्रेमचंद, २८); आप वहां ज्योंही यह ही० ओ० दिखावेंगे, वह आपको कोई बहुत अच्छी जगह दे देगा (गहन—प्रेमचंद, २८३)

### जगह देना

#### दे० जगह दिलाता

(समा० मुहा०—जगह मिलना)

### जगह होना

\*मुजायरा होना । प्रयोग—जब जालपा इस शोक-ताप से फूटती जा रही थी, रमा को कर्ज लेने में संकोच करने की जगह थी (गहन—प्रेमचंद, ५४)

### जगा देना

(१) अज्ञान में पड़े लोगों को सचेत और उत्तेजित करना । प्रयोग—बहुत दीना लग लटिया तोड़िन हिंदुन का कहें जगाय नहीं देखो (भा० ग्रंथा० (३)—भारतेन्दु, ८६३); हमारे देश बांधव लोगों की भी नींद कुछ खपिक आती है । जब तक जगाये न जाय, वे भी कहीं इधर देखने लगे थे (राधा० ग्रंथा०—राधा० दास, ८१); चीनी जाति के मिश्रित युवक भी अपने देशवासियों को जगाने का प्रयत्न कर रहे हैं (सा० सा०—महा० द्विवेदी, १२४); अंत में वे इस नतीजे पर पहुँचे कि मुख्य कार्य यही हो सकता है कि मोरवानों को जगाया जाय (शेखर (१)—अज्ञेय, २०८)

(२) दन्ता पंदा कर देनी ।

### जगा रहना

बना रहना । प्रयोग—जगि सोबनि में जगिये रहे चाह वह बरपाय उई रतिवा (घन० कवित्त—घना०, ११२)

### जटर में धरना

गर्भ धारण करना । प्रयोग—आदिदेव प्रभु दीनदयाला, जटर धरेउ बेहि कपिल कृपाला (राम० (बाल)—तुलसी, १५४)

### जड़ उखाड़ना,—खोदना,—मारना

(१) ऐसा नाट करना कि फिर न पनप सके । प्रयोग—

जरि तुम्हारि चह सबति उखारी (राम० (अ)—तुलसी, ३८८); अभी मैंने तेरी आशा की जड़ न खोद डाली तो मेरा नाम नहीं (भा० ग्रंथा० (१)—भारतेन्दु, ४७२); इसलिये गंगाप्रसाद को ही ऐसा समझा गया जो कानपुर में इस आन्दोलन की जड़ खोद सकेगा (भूले०—भग० वर्मा, ५०६); बंगाल के स्थायी बन्दोबस्त की जड़ मारने के लिये यह चाल चली गई है (चौटो०—निराला, १०)

(२) अहित करना । प्रयोग—घोर के लोग निश्चितता से बैचाली में बैठकर गणतन्त्र की जड़ उखाड़ने के सब प्रयत्न करते रहेंगे (वैशाली० (१)—चतु०, २५); मैं तो कहों का न रहा और जब तुम भी मेरी जड़ खोद रहे थे (गोदान—प्रेमचंद, १५६); कैसे वह फल-फूल सकेगा जो जड़ घपनी घाप सने (मर्म०—हारेऔध, १४८)

(समा० मुहा०—जड़ ढीली करना)

### जड़ कटना

कोई स्थिति न रह जानी । प्रयोग—पर आशा की वहां जड़ ही कट गई (लिलो—निराला, ६८)

### जड़ काटना

ऐसा अहित करना ताकि फिर पनप न सके । प्रयोग—परन्तु वह जानता था कि बहुत से व्यक्ति घोर अंधक भय के कारण ऊपर ऊपर से मिले हुए भीतर ही भीतर उसकी जड़ें काटने में लगे हुए थे (देवकी०—रा० रा०, २७); कहना चाहिए, सदैव मेरी जड़ काटने पर आमादा रहता था (गोली—चतु०, १९०); सभी से इस आन्दोलन की जड़ काट देनी चाहिए (प्रेमा०—प्रेमचंद, ४३६)

### जड़ खोदना

#### दे० जड़ उखाड़ना

### जड़ जमाना

दृढ़ या स्थायी होना । प्रयोग—जब भारतवर्ष में मुसलमानों की जड़ ऐसी जम गई है कि इसे निर्मूल करना कठिन ही नहीं बरंच असंभव है (राधा० ग्रंथा०—राधा० दास, ७००)

(समा० मुहा०—जड़ पकड़ना)

### जड़ जमाना

(१) स्थिति दृढ़ करनी । प्रयोग—निर्वासित कर घाव राम की, अपनी जड़ें जमा लुगी (पंच०—गुप्त, १०); ग्राम पंचायत के माफत गांव में पूरी तरह जड़ जमाकर लुगी



विधान मन्त्रा के लिए नाम पेज करेगा (परलो०—ऐणु, ४२२); दूसरों की जड़ जमाने के लिए क्यों बहककर आप अपनी जड़ खनें (चुमते०—हरिऔध, १३३)

(२) गहरा असर होना । प्रयोग—तुम्हें दीक्षा देने में मुझे इसलिए संकोच होता है कि तुममें दर्शन के विद्वत् सिद्धान्तों ने जड़ जमा रखी है (चित्र०—भग० वर्मा, ५१)

### जड़ देना

इधर की बात उधर करनी—शिकायत करनी । प्रयोग—मगर देखो यार कहीं मुर्शी जी से जड़ मत देना नहीं लेने के देने पड़ जायेंगे (मान० (८)—प्रेमचंद, ८४); कहीं बाबूजी या माताजी से कुछ जड़ न दे—यही भय है (मिलान—कौशिक, १६)

### जड़ पकड़ लेना

(१) स्थायी रूप से जोर पकड़ना । प्रयोग—कदाचित् लुकमान सरीखे कोई नये हकीम या वैद्य पेश हो इसकी दवा निकाले भी तो इसने ऐसा जड़ पकड़ लिया है कि कैसी ही अमृत तुल्य घोरघ दी जाय कभी दूर होनेवाली नहीं है (भट्ट नि०—बा० भट्ट, १७७); उन्हें एक-दूसरे से भिड़ते रहने में ही किरंगी का राज्य जड़ पकड़ता गया (ब्रह्म०—दे० स०, ७२)

(२) स्थान बना लेना, वृक्ष का जमीन में अच्छी तरह लग जाना ।

### जड़ पर कुल्हाड़ी चलाना

आधार को नष्ट करने की चेष्टा करना । प्रयोग—इसी से तथागत ने इस वर्ण व्यवस्था की जड़ पर प्रथम कुठाराघात किया है (तेशाली० (१)—चतुर०, १६३-१६४)

### जड़-पेड़ से, जड़ से

समूल, पूरी तरह । प्रयोग—जिस संस्था को हम जड़ से काटना चाहते हैं, उसी से बिपटे रहना तो आपको शोभा नहीं देता (कर्म०—प्रेमचंद, १०४); हमारे देश में जाति का इतना जोर है कि × × बहुत से मत मतान्तर ऐसे फले जिसने इसे जड़-पेड़ से उखाड़ना चाहा × × पर यह जाति पिशाची अभी तक जैसी धी बेंसी बनी हुई है (भट्ट नि०—बा० भट्ट, ४४)

(ममा० महा०—जड़ मूल से)

### जड़ मार देना

मूल कारण नष्ट कर देना । प्रयोग—दवा है, दोनों की जड़ें मार दी जायें, पर यह सहज-साध्य नहीं (चतुरी०—निराला, ११)

### जड़ मारना

दे० जड़ उखाड़ना

### जड़ से

दे० जड़-पेड़ से

### जड़ हिल जाना

कमजोरी जानी । प्रयोग—जिस बात से आप अपना प्रयोजन सिद्ध करना चाहते हैं उसकी जड़ हिल रही है (सा० सी०—महा० द्विवेदी, ७१)

### जड़ हिला देना

दृढ़ता को कम कर देना, स्थिति कमजोर कर देना । प्रयोग—यदि आपने मेरा अनुरोध न माना तो आप रियासत में ऐसा बिप्लव मचा देंगे जो रियासत की जड़ हिला देगा (रंग० (२)—प्रेमचंद, १९६)

### जड़ होना

(१) मूल कारण होना । प्रयोग—स्वेतांक, जानते हो यह एक बड़ा त्याग है और इन सबकी जड़ मैं हूँ (चित्र०—भग० वर्मा, १८३); इस पर दोनों सहमत हुए थे कि औरत दुनिया की सब मुसीबतों की जड़ है (नदी०—अज्ञेय, २२३); मैं ही तो इस सारे तूफान की जड़ हूँ (रंग० (१)—प्रेमचंद, २२०)

(२) चेतनाशून्य होना—स्तब्ध रह जाना । प्रयोग—फिर भी इधर मेरा चित्त जड़ होता जा रहा है (वाण०—ह० प्र० द्वि०, १६५); किसलिए आज हो गये जड़ हैं (चुमते०—हरिऔध, ८८)

(३) मूल होना ।

### जनघासा देना

बारात में जाए व्यक्तियों के ठहरने के स्थान की व्यवस्था करनी । प्रयोग—अति आदर मान से अगोनी कर जनघासा दिया (प्रेम सा०—ल० सा०, ११)



### जनाना होना

पौरुषहीन होना । प्रयोग—झजी सब जनाने हो गये हैं (झासी०—पृ० १५२)

### जन्म गंधाना

जीवन व्यर्थ नष्ट करना । प्रयोग—कैसे तू हरि को दास कहावो, करि बहुत भेषर जनम गंधावो (कबीर ग्रंथा०—कबीर, १८२) ; जान देव हरि तजि भजे, सो जनम गंधावे (सू० सा०—सूर, ३५२)

### जन्म जन्म की

संवेदा से । प्रयोग—हो प्रभु जन्म जन्म की पेरी (सू० सा०—सूर, ४७९०)

### जन्म जाना

जीवन यों ही बीत जाना । प्रयोग—भवति विनु विरधे जन्म गयो (कबीर ग्रंथा०—कबीर, २९४) ; मूलन कदब, तमास, बकुल, बट, परमत जन्म गए (सू० सा०—सूर, ४१२४)

### जन्म बिगाड़ना या बिगाड़ना

जीवन में कुछ भी अगच्छा न कर पाना, सब नष्ट होना । प्रयोग—बेटा, मन्दू लो मेरा जन्म ही बिगाड़ गया (मिस्त्रा०—कौशिक, ६२)

### जन्म भरना

जीवन बिताना । प्रयोग—नैहर जन्म भरव बह बाई (राम० (अ)—तुलसी, ३९१)

### जन्म लेना

अस्तित्व में आना । प्रयोग—इसके पीछे ही, “नेशनल कापिट” का जन्म हुआ (राधा० ग्रंथा०—राधा० दास, ३८६)

### जन्म लेने का फल मिलना

जीवन सार्थक होना । प्रयोग—हम लो जातु जन्म फल पावा (राम० (बाल)—तुलसी, २५३)

### जन्म सफल होना

जीवन सार्थक होना, जीवन में कुछ उपयोगी कर पाना । प्रयोग—हनुमत जन्म सफल करि माना । चलेउ हृदई धरि रुपाविधाना (राम० (कि)—तुलसी, ७८२)

### जन्म हारना

(१) किसी के निर्मित जीवन का संकल्प कर देना । प्रयोग—अब मैं जन्म संभू हित हारा । को गुन वृषन करे बिचारा (राम० (बाल)—तुलसी, ९१)

(२) व्यर्थ जन्म खोना । प्रयोग—एक हरि के नांव विन, गए जन्म सब हारि (कबीर ग्रंथा०—कबीर, २०)

### जब तक गंगा की धारा है

अंत काल तक । प्रयोग—अबत होउ ग्रहिवात तुम्हारा जब तगि संग जमुन जब धारा (राम० (अ)—तुलसी, ४३७) ; जब तक गंगा समुद्र में पानी है, आपका सोहाग अबत रहे (मा० ग्रंथा० (१)—मोक्षेन्द्र, २७०)

### जबड़े में फंसना

बंगल में फंसना । प्रयोग—उनका वही होगा जो कुल्हों के जबड़ों में फंसे लाखों भारतीयों का हो रहा है (बीने०—रा० रा०, ५४)

### जबान कांटा होना

प्यास से मुँह सूखना । प्रयोग—कांटा हुई जबान प्यास से सास फूँकता है जाता (नूर०—मकत १२)

### जबान काटना

(१) दाँतों से जीभ दबाकर आश्चर्य प्रगट करना । प्रयोग—उत्तने पूछा—‘जमादार का नाम क्या है ?’ रमा ने जबान दाँतों से काट ली । नाम तो पूछा ही नहीं (ग़दर—प्रेमचन्द, १३३)

(२) बोलती बन्द कर देना ।

### जबान की करतनी या कैंची चलना

बहुत बोलना । प्रयोग—बीच-बीच में रतन नापित की जबान भी कैंची की तरह चलती रहती है (ब्रह्म०—दे० स०, २१) ; देखा तूने, कैसे कैंची की तरह जबान चल रही थी (मिश्रि०—वि० प्र०, १८१)

### जबान की सफाई

सुपरी भाषा या उच्चारण । प्रयोग—मैं तुम्हारी जबान की सफाई पर जान देता हूँ (अमी०—प्रेमचन्द, ४)

### जबान के कड़वे

कटु वचन बोलने वाले । प्रयोग—वह जबान के कड़वे



जबर है पर दिक् काटे नहीं है (झुंठा० (२)—यशपाल, ५५४)

### जबान के तेज होना

कटु बोलने वाला, मुहफट। प्रयोग—बात यह है कि उसकी घरवाली जबान की बड़ी तेज थी (गोदान—प्रेमचन्द, २०)

### जबान के शेर

बोलने में बहुत तेज। प्रयोग—यद्यपि तो यह है कि तुम अपनी रचनाओं की गर्द को भी नहीं पहुँचते। बस, जबान के शेर हो (रंग० (२)—प्रेमचन्द, १६४)

### जबान खुलना

(१) बोलना। प्रयोग—उसके सामने बड़े-बड़े सेनापतियों, मंत्रियों और बादशाहों की जबान न खुलती थी (मान० (१)—प्रेमचन्द, १५५) (÷); तुम्हारे ही लिए तो उठता है मेरा कलम खुलती है मेरी जबान (बुद्ध०—वचन, २७); पट्टा बात बेलाग कहता है कि एक बार मुनकर फिर किसी की जबान नहीं खुलती (रंग० (१)—प्रेमचन्द, ३७) (÷)

(२) जवाब सवाल करने की समझ आनी। प्रयोग—देखिए प्रयोग (१) में (÷)

### जबान खोलना

(१) स्वयं कहना। प्रयोग—जिस आदमी ने कभी जबान नहीं खोली X X वह आज एकाएक इतना अभिमानी हो जाय, यह उनको चौंका देने के लिये काफी था (मान० (१)—प्रेमचन्द, १४०); जहाँ देखकर मुझे नहीं जबान खोलता (सो०—वचन, १९३)

(२) विरोध करना। प्रयोग—मौली का पहले ही अपमान हो चुका था, आज्ञा मिल चुकी थी कि जबान खोलने पर मट्टा झालकर सर घुटाकर गंधे पर चढ़ाकर निकाल दी जायगी (चोटो०—निराला, ६५); वे हमारे साथ जग्याय भी करें तो भी हम जबान न खोलेंगे (रंग० (१)—प्रेमचन्द, ३११)

(३) माँगना।

### जबान खलना या खलाना

(१) पृष्टता पूर्वक उत्तर देना। प्रयोग—सर्माती

नहीं, उत्तर में जबान चलाती है (कर्म०—प्रेमचन्द, १२९)

(२) कहना। प्रयोग—मानुप्रताप साधन करना चाहते पर पत्नी के आगे उनकी एक न चलती—सिबाय जबान के (अपनी सब—उग्र, ७५)

### जबान चूकना

भूल से कुछ का कुछ कह जाना। प्रयोग—वह बड़े जोश से बोलता हुआ, जबान चूक जाने से कह गया ... (पिटरे—अशक, २४)

### जबान डोलाना

(१) विरोध करना। प्रयोग—पर क्या इमकान कि हम उन रीतों में किंचित हेरफेर करने में जरा जबान डोला सकें (मट्ट नि०—बा० मट्ट, १३७)

(२) मुँह से शब्द निकालना।

### जबान देना

वचन देना। प्रयोग—लेकिन मैं अपनी जबान देता हूँ कि मेरी तरफ से प्रफ़्तवान पर कोई बेजा दबाव नहीं पड़ेगा (मुले०—भाग० ठमर, १७४); मैं निश्चय कर चुका हूँ, जबान भी दे चुका हूँ, अब तुम्हारी धारि कर दूँगा (तिलो—निराला, १३); जब तक मैं लौटकर न जाऊँ, किसी को जबान न दीजिएगा (रंग० (२)—प्रेमचन्द, ४२)

(समा० मुहा०—जबान हारना)

### जबान धरना,—पकड़ना

(१) बोलने न देना—कहने से रोकना। प्रयोग—महिषास ने फोरन ही तीखे पड़कर उसकी जबान पकड़ी (बुद्ध०—अ० ना०, ३६)

(२) किसी कही हुई मामूली सी बात या भूल की ओर इशारा करना। प्रयोग—ओहो तुम तो जबान पकड़ते ही कुत्ता ! क्षमा करो, उनकी धाज्जा से नहीं, तुम अपनी इच्छा से जाएँ वे (मान० (७)—प्रेमचन्द, ४९); यों ही बात हँसी में कह दी, बस जबान धर ली (नुर०—भक्त, ५५)

(समा० मुहा०—जबान रोकना)

### जबान पकड़ना

दे० जबान धरना



### जबान पत्थर की होना

कुछ न कह पाना । प्रयोग—दिल तो कुछ और भी कहने को भी छटपटा रहा था परन्तु जबान पत्थर की हो रही थी (ज्ञान०—यशपाल, ११३)

### जबान पर चढ़ना,—नाचना,—मंडराना

हर समय कहा या स्मरण किया जाना । प्रयोग—आज एक अवदस्त परिवर्तन तो मैं यह पाती हूँ कि हर कामो-खास की जबान पर यह बात चढ़ गई है कि इस मुनाफा-खोरी का अंत करने के लिए कम्युनिज्म आण्डा (बूँद०—अ० ना०, ४९१); तालपत्र, भोजपत्र आदि का आशय छूट जाने पर भी वह बहुत दिनों तक लोगों की जिह्वा पर नाचती रहती है (चिंता० (१)—शुक्ल, १७९); लेकिन गांव का पुराना नाम कच्चा पक्का तो अब भी लोगों की जबान पर चढ़ा हुआ है (कठ०—द० स०, २४५); पता नहीं क्यों आज ऐसे सवाल जबान पर मंडरा रहे हैं (भीर०—जग० माधुर, ७३); लेख में ऐसे कटाक्ष थे कि उसके कितने ही वाक्य लोगों की जबान पर चढ़ गये (प्रेम०—प्रेमचन्द, १११)

### जबान पर (में) ताले पड़ना

(१) कुछ बोलने का साहस न होना । प्रयोग—बोलता क्यों नहीं, कमीने ? × × जबान में ताला क्यों लग गया (जहाज०—इ० जोशी, १७२)

(२) न बोल पाना । प्रयोग—आपके यहाँ घाते ही इसकी जबान में ताला पड़ गया (चतुरी०—निराला, ३०)

जबान पर (में) ताले लगाना,—मुहर लगाना  
बोलने से रोकना । प्रयोग—कोई हमारी जबान पर ताला न लगा सके, इसके लिए हमें दिन-रात जुझना पड़ेगा (ब्रह्म०—द० स०, ३६३); अगर वह जानता कि उन हीरों का यह फल होगा तो वह जबान पर मुहर लगा लेता (गबन—प्रेमचन्द, २७)

### जबान पर न लाना या न होना

न कहना । प्रयोग—लाज बिराज रही अंधियान में प्रात में कान्ह जबान में नाही (जग०—पद्माकर, ६)

### जबान पर नाचना

दे० जबान पर चढ़ना

### जबान पर मंडराना

दे० जबान पर चढ़ना

### जबान पर मुहर लगाना

दे० जबान पर ताले लगाना

### जबान पर लाना

(१) कहना । प्रयोग—कुसारी घपने जी की बात को जिह्वा पर कब ला सकती है (भा० ग्रंथा० (१)—भारतेन्दु, ६०३); भाई-बहिन दोनों एक दूसरे की कच्ची मोलें जानते थे मगर जबान पर नहीं ला सकते थे (बूँद०—अ० ना०, १६५); किंतु लज्जाशीला होने के कारण वह जिह्वा पर यह बात नहीं लाती (सौ०—द० स०, ९२-९३)

(२) चलना ।

### जबान फेरना

बात न माननी । प्रयोग—दस पांच रुपये की बात-होती तो आपकी जबान न फेरता (गबन—प्रेमचन्द, ६७)

### जबान बन्द कर देना

(१) चुप कर देना । प्रयोग—तो आप किसी की जबान नहीं बंद कर सकती (गोदान—प्रेमचन्द, १७२); मिस्टर स्वार्क को चुप करके गवर्नमेन्ट को खुश किया जा सकता था, पर प्रजा की जबान इतनी आसानी से न बंद की जा सकती थी (रंग० (२)—प्रेमचंद, १९४); क्यों रे...हमारे महाराज रिवाया का जबान बन्द करते हैं (चतुरी०—निराला, ३६)

(२) बातों में डरा देना ।

### जबान बंद होना

बोलने साधक न रहना । प्रयोग—उसको देखते ही हरदयाल की जबान बंद हो गई (परीक्षा०—श्री०दास, २९); जुगनू का मुँह उस लालिमा में बिलकुल जरा सा निकल आया, जबान बंद हो गयी (मान० (१)—प्रेमचंद, २७९)

### जबान बुरी होना

कटु बोलने वाला, अपशब्द कहने वाला । प्रयोग—इसकी जबान बुरी है, दिल नहीं (बूँद०—अ० ना०, २०९)

### जबान लड़ाना

जवाब सवाल करना । प्रयोग—हम लोगों से इस तरह जबान लड़ाते हैं (मूले०—मग० वर्मा, १९१); गांधीजी यही



तो आजादी दिलाय गये है—ऊँच-नीच बिलाले देखो—  
बस जवान लड़ायेगा (बुँदो—अ० ना०, ४०)

### जवान सम्हाल कर बोलना

मर्यादा के अनुकूल बातचीत करनी। प्रयोग—जनाब  
जवान सम्हाल कर बोलिये (परीक्षा०—अ० दास, ९०);  
क्यों बे जवान संभाल के नहीं बोलता ? (सलमी०—राहुल,  
१००)

### जवान हिलना या हिलाना

(१) पहना, विरोध करना या होना। प्रयोग—बस, कुशल  
इसी में है कि कर्मचारी जिस कल बैठाएँ उसी कल  
बैठिए, शिकायत न कीजिए, जवान न हिलाइए (रंग० (१)—  
प्रेमचंद, २९९); आँखों से देखती हो कि धी का घड़ा लुटका  
जाता है पर जवान नहीं हिलाती (प्रेमा०—प्रेमचंद, २५)

(२) मुँह से शब्द निकलना या निकालना।

### जवान होना

मातृभाषा। प्रयोग—ब्रजभाषा या अवधी जो घरकी जवान  
थी, खड़ी बोली के व्याकरण से भिन्न है (कुल्ली०—निराला,  
७७)

### जवानी जमा खर्च

मुँह से दुनियाँ भर की बात किये जाना। प्रयोग—पर  
जवानी जमाखर्च करने घोर कागज के घोड़े दौड़ाने में  
यह बड़ा धुरंधर था (परीक्षा०—अ० दास, ६०-६१)

### जमकर

(१) दृढ़तापूर्वक। प्रयोग—जम लड़े, दे पछाड़ जमको भी,  
ले पहन हाथ में न हम चूड़ी (चुमते०—हरिऔध, ९७)  
(२) अच्छी तरह। प्रयोग—पर ज्यों ही कि पंडित जी उठते,  
सब लोग फिर जमकर बैठ जाते और घण्टों तक मुनते रहते  
(पद्यपराग—पद्म० शर्मा, ४२)

### जम जाना

(१) ठिक जाना। प्रयोग—कहीं ये लोग यहाँ जम गए  
तो नगरकी यथापि स्थिति अवश्य ही प्रकट हो जायगी (रंग०  
(२)—प्रेमचंद, ७)  
(२) दृढ़ होना। प्रयोग—जम गये काम कर दिलायेगे  
(चुमते०—हरिऔध, १३)

### जमघट बना रहना

बहुत से लोगों का जुटना। प्रयोग—मुनारों के दरवाजे पर  
सारे दिन और साधी रात तक गाहकों का जमघट बना  
रहता था (मान० (८)—प्रेमचंद, ११)

(समा० मुहा०—जमघट जुटना,—लगाना)

### जमा-मार

धन दवाने वाला। प्रयोग—बाजार में तो सब उनकी रती  
भर भी साख न रही थी, जमामार प्रसिद्ध हो गए थे  
(रंग० (२)—प्रेमचंद, २१९)

### जमा मारना

धन दबालेना। प्रयोग—मुझ पर—अपने बाप पर—तौहमत  
लगाते हैं कि मैं शीला का पैसा खाता हूँ मैंने रूपरतन  
की जमा मार ली है (बुँदो—अ० ना०, १९५); मारते हैं  
जमा पराई सब (चुमते०—हरिऔध, ५६)

### जमाना

मारना। प्रयोग—अरे यार कुछ न पूछो, एक तो चोट  
लगी, दूसरे खानबाबा के भाव की लगे जमाने (राधा०  
ग्रंथा०—राधा० दास, ७६७)

### जमाना बीत जाना,—लद जाना

पक्ष गौरव की स्थिति न रह जानी। प्रयोग—प्रिंस  
द्वारकानाथ ठाकुर का जमाना बीत चुका था  
(चोटी०—निराला, १०); प्रिंसों का लद चुका था  
जमाना (बुद्ध०—बच्चन, ६७); मगर वह जमाने तो लद  
गए सब तो किसी तरह गुजर करना है (मा—कौशिक,  
३०९)

### जमाना लद जाना

### दे० जमाना बीत जाना

### जमाने का धूक चाटना

नीच से नीच काम करने को तैयार रहना। प्रयोग—  
जिसको जति में इसान हलक में उंगली डाल कर कै  
करता है, और जिसके घभाव में वह अपनी आत्मा को  
आँतों की तरह मरोड़कर दिखा-दिखाकर जमाने के धूक  
चाटता है—वह पैसा (बौने०—रा० रा०, ७५)



### जमाने की आँखें देखे हुए

जमाने का रबैया देखते हुए । प्रयोग—जमाने की आँखें देखे हुए कर्मचारी, सेठ स्वरत्न के समाजवाद और त्याग को भली भाँति समझते थे (बुट्टो—अ० ना०, १९३)

### जमाने की मार

पुग का कुप्रभाव । प्रयोग—जमाने की मार है जमाने के साथ चलना पड़ता है (दूधगाछ—दे० स०, २९६)

### जमाने की हवा लगना

पुग की विचारधारा का प्रभाव पड़ना । प्रयोग—कब को टेरतु दीन रट, होत न स्वाम सहाइ । तुमहूँ लागी जगत-गुरु, जग-नाइक, जग-बाइ (बिहारी रत्ना०—बिहारी, ७१)

### जमीन आसमान एक करना

(१) घोर उद्योग करना । प्रयोग—जो लोग उर्दू खस-बारों की तरफदारी में जमीन आसमान एक किये डालते हैं घोर हिन्दी का नाम सुनते ही खुदकुशी को तैयार होते हैं, वह एकबार अपने असबारों की हालत पर निगाह डालें (गु० नि०—बा० मु० गु०, २७६); एक छोटी सी डिस्पेन्सरी की मंजूरी के लिये आसमान जमीन एक करता रहा (मैला०—रेणु, ७)

(२) खूब शोर-गुल, भगड़ा आदि करना ।

### जमीन आसमान का फरक होना

बहुत अन्तर होना । प्रयोग—दोनों भाइयों के स्वभाव में जमीन आसमान का अन्तर था (भूले०—भग० वर्मा, ४१९); “क्यों ? क्या फर्क पड़ गया ?” “घरती आकाश का” (झांसी०—वृ०, वर्मा, १५३)

### जमीन आसमान के कुलावे मिलाना

(१) दूर-दूर की कल्पना करनी । प्रयोग—बड़े-बड़े आलिमों को एक बे सिर पैर की बात की ताईद में जमी और आसमान के कुलावे मिलाते देखता हूँ (सेवा०—प्रेमचंद, १६४)

(२) घोर उद्योग करना । प्रयोग—वकीलों की जाल ऐसी ही होती है कि वह प्रथम घरती आकाश के कुलावे मिलाकर अपनी योग्यता जताते हैं फिर दूसरे को तरह-

तरह का डर दिखाकर अपना आधीन बनाते हैं (परीक्षा०—श्री० दास, १०८)

### जमीन चाटना,—चूमना

(१) नीचे गिरना । प्रयोग—बाटलो की ठोकर से देवनन्दन पृथ्वी चूमने लगा, तब वह चाय पीने चला गया (तिलली—प्रसाद, ५९); अबे, मैं कहता हूँ, मुँह में लगाम लगा, नहीं तो उरा-सी देर में जमीन चाटता दिखाई देगा (धूम०—उ० भट्ट, ४४)

(२) पूर्णतः पराजित होना ।

### जमीन चूमना

### दे० जमीन चाटना

### जमीन तैयार करना

पुठ-भूमि तैयार करना । प्रयोग—मेहता हंसे—“उसी के लिए तो जमीन तैयार कर रहा हूँ” (गोदान—प्रेमचंद, १६९)

### जमीन देखना

(१) शर्म से निगाहें नीची कर लेनी । प्रयोग—होत अबार गवन अब कीज, घरती कहा निहारत (सु० सा०—सूर, ३१६३)

(२) हारना ।

### जमीन नापना

यहाँ से वहाँ जाना । प्रयोग—ये जसिस्टेंट जो सिर गाड़ी पर पहिया किये सेट से मेक-अप रूम की जमीन नापा करते हैं  $\times \times$  उन्हें वेतन कितना मिलता है (दूधगाछ—दे० स०, ३१४)

### जमीन पर गिरा देना

पराजित कर देना । प्रयोग—कुबलया चानूर भुष्टिक, दिए घरति गिराइ (सु० सा०—सूर, ४१०३)

### जमीन पर पैर न पड़ना

(१) बड़ा गवं होना । प्रयोग—जन्महीन कुल बड़े भाग्य प्रभूता पाई सो । नृप धरं न पांव भूलि गए आपु रहे जो (राधा० प्रस्ता०—राधा० दास, ३७); कोई उसे रस-भरी आँखों से देख लेता है तो उसका मन कितना प्रसन्न हो जाता है, जमीन पर पांव नहीं पड़ते (मान० (१)—प्रेमचंद, १५१); घरती पर पड़ते नहीं थे मेरे पांव (बुद्ध०—वचन, ५४)



(२) बहुत प्रसन्न होना । प्रयोग—मैंने पूछा भी कि क्या है जो साज जमीन पर कदम नहीं पड़ रहे हैं (चतुरी०—निराला, १८)

(३) दुश्चिन्ता के मारे बड़ न पाना । प्रयोग—सोच विकल मन परइ न पाऊ (राम० (अ)—तुलसी, ४०८)

**जमीन पर सिर धरना,—लाना**

(१) सादर वंदना करनी । प्रयोग—केहरि लक गवन गज हरे । मुर नर देलि माथ भुईं धरे (पद०—जायसी, ३६); राजा बहुत मुण तपि लाइ लाइ भुईं माथ (पद०—जायसी, १०१५); हीरामन भुईं धरा लिनाटू । तुम्ह रानी जुग-जुग मुख पाटू (पद०—जायसी, २४१८); प्रनवउँ सबहि धरनि धरि सीसा (राम० (बाल)—तुलसी, २८)

(२) विनम्रतापूर्वक कुछ करना । प्रयोग—आणु लिहें रहेहु निति हाथा । सेवा करेहु लाइ भुईं माथा (पद०—जायसी, ३२८)

(समा० मुहा०—जमीन पर सिर रखना)

**जमीन पर सिर लाना**

दे० जमीन पर सिर धरना

**जमीन में गड़ जाना**

अत्यंत लज्जित होना । प्रयोग—दूल्हाजू जमीन में गड़ सा गया (झांसी०—वृ० वर्मा, ४२६)

(समा० मुहा०—जमीन में समा जाना)

**जय सीताराम होना**

कुछ न होना, बहुत मामूली होना । प्रयोग—हम लोगों की जजमानी यूँ ही जय सीताराम थी (अपनी खबर—उग्र, २०)

**जल उठना**

(१) कुड़ जाना । प्रयोग—बजरंगी जलकर बोला—अपनी चेर कैसी सूझ रही है (रंग० (२)—प्रेमचंद, १३५)

(२) कोपित होना । प्रयोग—तब वह इस'दया'का ध्यान करके जल उठता, और सोचता, मैं नरक में जाऊँ तो इनका क्या (शेखर (१)—अज्ञेय, २०१); भैंरो मुनते ही जल उठता, कभी जली-कटी बातों से और कभी डंडे से स्त्री की खबर लेता (रंग० (१)—प्रेमचंद, १८१)

**जलकर भस्म होना**

(१) बहुत दुखी होना । प्रयोग—जल जल किसका है खर होना कलेजा निकल निकल आहें क्यों किसे बेधती हैं (प्रिय०—हरिऔध, ४२)

(२) बहुत कुड़ जाना ।

**जल-जलकर**

कुड़कर । प्रयोग—वह सारे कटुवचन जो उसने जल-जल कर उन्हें कहे थे, इस समय मैंकों बिच्छुओं के समान डंक मार रहे थे (गवन—प्रेमचंद, १९६)

**जल जाना**

(१) नष्ट हो जाना । प्रयोग—जरि जाव ऐसा जीवना, राजा राम मू प्रीति न होई (कबीर ग्रंथा०—कबीर, १२८); जेहि जाचत जाचकता जरि जाइ, जो जारति जले जहानहि रे (कवि०—तुलसी, १२२); जर जाघो रो लाज, मेरी ऐसी कौन काज, आबत कमल-नैन नीकें देखन न दीने (नंद० ग्रंथा०—नंद०, ३०४); सब तरह की गूँझ चूल्हे में पड़े, जांव जल उनकी कमाई के टके (चुमते०—हरिऔध, ११७)

(२) कुड़ जाना । प्रयोग—बूझा भीतर से जल गई (चोटी०—निराला, ७०)

**जल-घर कर अंगीठी होना**

विरह की तीव्र पीड़ा से अत्यंत व्याकुल होना । प्रयोग—सूरदाम प्रभु तुम्हरे दरस बिनु, जरि बरि भई अंगीठी (सू० सा०—सूर, ४२९०)

**जल भुन जाना**

(१) क्रोध या ईर्ष्या के कारण बहुत कुपित हो जाना । प्रयोग—बाहान ने जल भुनकर कहा..... (ईशा०—ईशा०, ९९); राक्षस ने दूर ही से चाणक्य को देखकर जलभुन कर कहा... (राधा० ग्रंथा०—राधा०दास, २६९); लग गये पांच क्यों गये जलभुन । लग गई क्यों जाग लात लगे (चुमते०—हरिऔध, ४६)

(२) कुड़ जाना । प्रयोग—सज्जन मन-ही-मन जल-भुन रहा था (बूंद०—अ० ना०, ३९८); किशोरी ने यह दंग देखा । वह जल-भुन गई (कंकाल—प्रसाद, १६९)

(समा० मुहा०—जल-घर जाना,—भरना)

**जलता घर छोड़कर घूरा बुझाना**

मूर्खता का कार्य करना, आवश्यक छोड़कर अनावश्यक



काम करना । प्रयोग—यग तर जरत न जानें मूरख, पर तजि घर बुझावें (सू० सा०—सूर, ३५६)

### जलता हुआ

कोव से घाग बबूला व्यक्ति । प्रयोग—बलि राजा आवा तेहि घारी । जरत बुझाई दूनी नारी (पद०—जायसी, ३३:१३)

### जलती आग

आपद्जनक स्थिति । प्रयोग—लोभ ने उन्हें भेड़ियों से भी भयानक बना रक्खा है । वे जलती-बलती आग में दौड़ने के लिए उत्सुक हैं (कामना—प्रसाद, ३७)

### जलती आग में कूद पड़ना

जान बूझकर विपत्ति का काम करना । प्रयोग—दुर्बोधन जैसे स्वार्थान्ध कपट-कुशल और जीते जूझारों के दरबार में ऐसे अवसर पर दूत बनकर जाना, जान से हाथ धोना, वह-कती हुई आग में कूदना था (पद्मपराग—पद्म० शर्मा, ५)

### जलती हुई दृष्टि

कोषपूर्ण दृष्टि । प्रयोग—किन्तु उन्होंने कोई उत्तर न दिया, यों ही जलती हुई दृष्टि से भाभी की दिशा में देखते रहे (बाहर०—देव०, ४३)

### जलते हुए घर में हाथ सेंकना

किसी का अहित होता हो तो उससे अपना लाभ बना लेना—किसी की स्थिति का नाजायज फायदा उठाना । प्रयोग—होरी किसान था और किसी के जलते हुए घर में हाथ सेंकना उसने सीखा ही न था (गोदान—प्रेमचन्द, ११)

### जलते हृदय पर पानी के छींटे देना

दुखी को मान्यता देना । प्रयोग—गा गा करके भाव-भरे नाना-भजन तपे-हृदय पर भी तर-छोटे डालती (वेदेही०—हरिऔध, १६३)

### जलना

(१) डाह करना । प्रयोग—खलन हृदयं प्रति ताप बिसेषी मदा जरहिपर संगति देखी (राम०(अ)—तुलसी, १०६४) इधर राजा साहब का हृदय अपने सामने के एक छोकरे की उन्नति से जला हुआ था (राधा० प्रशा०—राधा० दास,

३६७); समरकन्द में एक प्राणी भी ऐसा नहीं जो उससे जलता हो (मान० (१)—प्रेमचन्द, १९२); यहाँ एक दूसरे को देख कर जलते थे (कुल्लो०—निराला, १२०)

(२) बहुत क्रोध होना । प्रयोग—मुनत बचन रावन पर जरा जरत महानल अनु घृत परा (राम०(लं)—तुलसी, ८९०); तब भला क्या सुधर सकेंगे हम जब कि सुनते सुधार नाम जले (ब्रमते०—हरिऔध, ४६); मनु जल उठी । बोली, मुझसे छबीली मत कहा करो (झासी०—वृ० वर्मा, २४)

(३) बहुत दुखी होना । प्रयोग—इक हम जरति बिभावन आए, मानी सिखें पठए (सू० सा०—सूर, ४४११); क्यों पन आनन्द मोत मुजान ! कहा घणियां बरिबोई करेगी । (घन० कवित्त—घना०, ११९); लड़की XXमूफट्ट लोह लट्ट के पाले पड़कर जनम भर जला करे (ठेठ०—हरिऔध, ९)

### जलना-मरना

दुख-मुख भोगना । प्रयोग—मुझे किसानों के साथ जलना-मरना है । मुझ से बढ़कर दूसरा उनका हितेच्छु नहीं हो सकता (गोदान—प्रेमचन्द, १७७)

### जलांजलि देना

(१) एकदम त्याग देना । प्रयोग—कामी X X लाज और शरमको जलांजलि देकर हजारों चेष्टाएं उससे मिलने की करता है (सा० सु०—वा०भट्ट, १४)

(२) तपंगु करना ।

### जलाकर भस्म कर देना

समूल नाश कर देना । प्रयोग—घनव चढ़ाई कहा तब जारि करउं पुर छार (राम०(कि)—तुलसी, ७७८); बेबसी में पड़ बहुत दुख सह चुकी कर चुकी मुख को जलाकर राख तू (चोखे०—हरिऔध, ७९)

### जला हृदय

(१) कुदा हुआ हृदय । प्रयोग—आला सिंह समझ गये कि यह जले हुए दिल के फसले हैं (प्रेमा०—प्रेमचन्द, १९)  
(२) दुखी हृदय । प्रयोग—कवि करामतकर दिखता है ज्ञान जल जल रहे कलेजे में (चोखे०—हरिऔध, ९)

### जलाना

(१) दुख देना । प्रयोग—देखो माई इहि कुबिजा हम



जारी (सू० सा०—सूर, ४२५८) ; विनु समूहों निज घप परिपाक । जारिउं जावें जननि कहि काकू (राम० (अ)—तुलसी, ६२०) ; वेश्या दूसरों को जलाने के लिए जन्म लेती है । आप जलने के लिये नहीं, यह पाद राज (सुहाग०—अ० ना०, ८१) ; उफ़, मैंने तुम पर कितने दुल्लु किये, कैसे-कैसे सितम डाये, कैसा जलाया, कुड़ाया (पद्मपराग—पद्म०शर्मा, ३९९) ; रोटी खाने का अब समय हुआ है न ! तुम कितना जलाते हो ? (तिलली—प्रसाद, ५५) (÷)

(२) कुड़ाना । प्रयोग—घोर दोनों भावजें हैं कि रात-दिन उसे जलाती रहती है (गोदान—प्रेमचन्द, २४-२५) देखिए प्रयोग (१) में (÷) भी

### जलाने लायक

बुरा, त्याज्य । प्रयोग—जारे जोग सुभाउ हमारा । अनभल देखि न जाइ तुम्हारा (राम० (अ)—तुलसी, ३८७)

### जलापे के बोल काढ़ना

ईर्ष्यापूर्ण वचन कहना । प्रयोग—कोई कोई चंचल चपल जिज्ञासु बालाएँ चोरी-छिपे देखती हैं और फिर आपस में मिलकर विजयिनी वेश्या के लिये जलापे के बोल काढ़ती हैं (सुहाग०—अ० ना०, २४)

### जली-कटी बोलना,—सुनाना, जली-भुनी सुनाना

(१) लगती हुई बात कहना । प्रयोग—घाज नारद भगवान ऐसी जलीकटी क्यों बोलते थे ? (मा० ग्रंथा० (१)—भारतेन्दु, २६८) ; अब मैं भी जली भुनी मुना डालती हूँ (दूधगाछ—दे०स०, ८५) ; जब आए तब जली कटी सुनाई तुमने (भूले०—मग० वर्मा, २३६) ; सुना-सुनाकर जली-कटी वह तोड़ रहा है नाता (मर्म०—हरिऔध, १५०) ; इन लेखों में "विद्योदय" के सम्पादक को भी खूब जली-कटी सुनाई गई है (पद्मपराग—पद्म० शर्मा, ६९) ; वह रमा से केवल लिची न रहती थी, वह कभी कुछ पूछता तो दो-चार जली-कटी मुना देती (गवन—प्रेमचन्द, २७) ; प्यार और स्नेह का उत्तर देती है जली-कटी बात और ताने के रूप में (ज्ञान०—यशपाल, १०७)

(२) व्यंगपूर्ण बात कहना ।

(समा० मुहा०—जलीकटी कहना,—पर आना,—यात सुनाना)

### जली-कटी सुनाना

दे० जली-कटी बोलना

### जली-भुनी सुनाना

दे० जली-कटी बोलना

### जले को जलाना

(१) दुली व्यक्ति को घोर दुख देना । प्रयोग—इक हम जरी, जरे पर जारत, बोलि विगुन कोन (सू० सा०—सूर, ४५२२)

(२) कुड़ते हुए व्यक्ति को और कुड़ाना ।

### जले दिल के फफोले

कुड़े हुए व्यक्ति के उद्गार । प्रयोग—ज्वालासिंह समझ गये कि यह जले हुए दिल के फफोले हैं (प्रेमा०—प्रेमचन्द, १९)

### जले दिल के फफोले फोड़ना

मन का आक्रोश निकालना । प्रयोग—शेष में भरे हुए घर आये और बिद्या पर जले दिल के फफोड़े फोड़े (प्रेमा०—प्रेमचन्द, १७०-१७१)

### जले पर नमक (लोन) छिड़कना,—देना

किसी दुली या व्यक्ति मनुष्य को और दुख देना । प्रयोग—ऊँची जो त्रिय जानि कै, देत जरे पर लोन (सू० सा०—सूर, ४१४०) ; अति कटु वचन कहति कैसेयी मानहु लोन जरे पर देई (राम० (अ)—तुलसी, ४००) ; कभी-कभी ऐसी दुषंटना हो ही जाती है, पर इसमें कौन जग-हंसाई घोर कैसे नक-कटाई । तुम खाहमखाह जले पर नमक छिड़कती हो (मान० (१)—प्रेमचन्द, ६३) ; मानसिंह भभक उठा × × "सौगात जले पर नमक छिड़कने के समान है" (मृग०—व० वर्मा, ३६९)

(समा० मुहा०—जले पर नमक लगाना)

### जले पर नमक देना

दे० जले पर नमक छिड़कना

### जले-भुने

कुड़े हुए । प्रयोग—मुलिवा मंके से ही जली-भुनी घायी



की (मान० (१)—प्रेमचन्द, ५) ; किसी जले-भुने कवि ने कह मारा हो तो यह कोई नहीं कह सकता कि कविता में भी आप की पूछ है (प्र० पौ०—प्र० ना० मि०, ४६) ; क्या अब, कवि जला-भूना कोई है कहेजा जला-जला देता (चोखे—हरिऔध, ८)

### जवानी उठना

जवानी आना । प्रयोग—एक दुनिया से उठा है चाहता और है उठती जवानी एक की (चुमते—हरिऔध, १६१)

(समा० मुहा०—जवानी उभरना,—चढ़ना)

### जवाब तलब करना

सफाई मांगना । प्रयोग—वह जब भी चाहती, उन्हें बुलाकर उनसे जवाब तलब करती थीं (गौली—चतुर०, १४२)

### जवाब देना

(१) अशक्य हो जाना । प्रयोग—माता घोर पत्नी मर चुकी थीं (गुलेरी ग्रंथा (१)—गुलेरी, २७७) ; जब कोई राम भक्त पुत्र-कलत्र, भाई-बंधु का राग छोड़ने, कर्म पथ से मुह मोड़ने और जगत से नाता तोड़ने का उपदेश देता है, तब मेरी समझ जवाब देने लगती है (चिंता० (१)—शुक्ल, ९१) ; टांग जोड़ दी जाती है, लेकिन सिपाही को ज्यों ही लड़ा किया जाता है, टांग जवाब दे देती है (मान० (१)—प्रेमचंद, ३६)

(२) नौकरी से बरखास्त करना । प्रयोग—महलाने धुवाने के लिये एक लौड़ा था, उसे भी जवाब दे दिया गया (मान० (१)—प्रेमचंद, २०३) ; हुजूर अगर मुझ पर मुबद्दा करते हों तो मुझे जवाब दे दें (सिद्दा०—ल० मिश्र, ६)

(३) रोगी को अच्छा करने में असमर्थता प्रगट करनी । प्रयोग—बड़े भाई साहब को डाक्टरों ने जवाब दे दिया था (इंस्टा०—मंग० वर्मा, ३४-३५) ; हाय ! हाय ! वैद्यों ने जवाब दिया, हकीमों ने जवाब दिया (प्रेमा०—प्रेमचंद, २०४)

### जवाब मिलना

नौकरी से बरखास्त किया जाना । प्रयोग—फिर अब

तो मुझे जवाब मिल रहा है । देखिए, भगवान कहां ले जाते हैं (मान०—प्रेमचंद, ३२९) ; मुझे प्रेम की नौकरी से जवाब मिल गया है (भोर०—जग० माधुर, ९४)

### जवाब होना

बराबर का होना । प्रयोग—यहां से नाटक कुछ इस तरह मोड़ लेता × × है कि उसका जवाब नहीं (पैतरे—अशक, २७) ; घोर गाने में तो घासपास के कई मुहल्लों में उसका जवाब न था (रंग० (१)—प्रेमचंद, २७)

### जहन्नुम में जाना या पड़ना

(१) मरना होना । प्रयोग—क्यों इतनी छाती ठोंक XX लोगों को विश्वास दिया ? आप ही सब मरते चाहे जहन्नुम में पड़ते (भा० ग्रंथा० (१)—भारतेन्दु, ४४९)

(२) कोई सम्बन्ध न होना ।

### जहर उगलना

मर्मभेदी कटु वाक्य कहना । प्रयोग—क्यों न उगलें भला जहर दिन-रात, क्या करें आस्तीन के हैं सांप (मर्म०—हरिऔध, ९८) ; उसने सज्जन की नई योजनाओं के विरुद्ध एक छोटी-सी पुस्तिका लिखकर खूब जहर उगला (बुद०—अ० ना०, ५७६) ; पर जो कुछ कहो, नरमी और हमदर्दी के साथ यह नहीं कि जहर उगलने लगे, कलेजे को चालनी बना डालो (रंग० (१)—प्रेमचंद, २०९)

### जहर का घूंट पीना

किसी अत्यन्त कोच दिलाने वाली बात को सुनकर चुप रह जाना, सह लेना । प्रयोग—राजकुमारी उसे जहर के घंट की तरह पी गई (तितली—प्रसाद, १८६)

(समा० मुहा०—जहर का घूंट उतारना)

### जहर का बुताया

(१) जहर में डुबाया हुआ । प्रयोग—भीड़ की कमान तान गूँज अंजन छाकि के । काम जहर सौ बभाई मार्यो मोहि ताकि के (भा० ग्रंथा० (२)—भारतेन्दु, २८५)

(२) घति कुटिल ।

### जहर का बुताया छुरा

बहुत दुखदायी । प्रयोग—अमृत-भरे देखत कमलन से



विष के बुते छुरे (भा० ग्रंथा० (२)—भारतेन्दु, ४२३)

(समा० मुहा०—जहर का बुझाया बाण)

**जहर चढ़ना**

(१) क्रोध आना । प्रयोग—मेरी शिकायत सुनकर उसे और भी जहर चढ़ गया (सु० सु०—सुदर्शन, ७९)

(२) जहर का प्रभाव होना ।

**जहर देना**

जहर मिला देना । प्रयोग—वे सप विष वालक बच सीन्हें । मोत महीपति माहुर दीन्हें (राम० (अ)—तुलसी, ५२९)

**जहर बोना**

(१) घनिष्ट करना । प्रयोग—मैं कहती हूँ, तुम उनके सर्वनाश का सामान किए जाते हो, उनके लिये जहर बोये जाते हो (मान० (२)—प्रेमचंद, ४१)

(२) लड़ाई लगवाना ।

(३) बुरी बात या काम करना ।

**जहर लगना**

बहुत अप्रिय जान पड़ना । प्रयोग—मैं क्या जानता था कि मेरा इतना कहना जहर होना (राधा० ग्रंथा०—राधा० दास, ११५) ; मैं जानता हूँ, तुम्हें मेरी बातें जहर लग रही हैं (मान० (८)—प्रेमचंद, ८७)

**जहाँ-तहाँ**

(१) हर जगह । प्रयोग—सुनु महोस अस नीति जहँ-तहँ नाम न कहहि नृप (राम० (बोल)—तुलसी, १७४)

(२) थोड़ी-थोड़ी दूर पर, इधर-उधर ।

**जहाज का काग होना,—पक्षी होना**

ऐसा व्यक्ति जिसे घूम-फिर कर एक ही आश्रय लेना पड़े । प्रयोग—तैना भए बोहितके काग (सु० सा०—सूर, २९३०) ; भटक फिर्यो बोहित के लग ली पुनि हरि हो प जायो (सु० सा०—सूर, ४३६२) ; नाहिन मोहि घोर कतहुँ कछु, जैसे काग जहाजके (गीता० (सु०)—तुलसी, २९) ; ताही सो जहाज-पक्षी-सम गयो ग्रहो मन होई (भा० ग्रंथा० (२)—भारतेन्दु, २८३)

**जहाज का पक्षी होना**

दे० जहाज का काग होना

**जांच का भरोसा**

शक्ति का भरोसा । प्रयोग—भाग को उसने कभी कोसा नहीं जांच का अपना भरोसा है जिमे (बोल०—हरिऔध, २३१)

**जांच की कमाई**

मेहनत की कमाई । प्रयोग—नाम कर काम का बना देना काम है जांच की कमाई का (चुमते०—हरिऔध, ३८)

**जांच में होना**

उद्योग या परिश्रम में प्राप्त होना । प्रयोग—है जवाहिर न जाहरी के घर जांच में है भरे जवाहिर सब (चुमते०—हरिऔध, ३८)

**जाग उठना**

मन में आना, उत्पन्न होना । प्रयोग—आनन्द के घन हो मुजान कान गोलि कहौ, आरस जग्यो है कंस सोई है कृपा हरक (घन० कवित्त—घना०, १७९) ; उसकी सब जिज्ञासाएं पुनः जाग उठीं (शेखर० (२)—अज्ञेय, ७२) ; इस ऋतु में महिलाओं की बाल-स्मृतियां भी जाग उठती हैं (गवन—प्रेमचंद, १)

**जाग पड़ना**

(१) चोर आदि के आने पर रात में घर के लोगों का जाग पड़ना । प्रयोग—सारे गांव में जाग पड़ गयी (गोदान—प्रेमचंद, ४३)

(२) चेतनता प्राप्त करनी ।

**जागता हुआ**

(१) साक्षात् । प्रयोग—संसार में सफलता का सबसे जागता हुआ मंत्र अपना उद्योग, अध्यवसाय और दृढ़ता है (प्रेमा०—प्रेमचंद, १३७)

(२) चमकता हुआ ।

**जागना**

सचेत या सावधान होना । प्रयोग—मुनि सो बात राजा मन जागा (पद०—जायसी, ११७) ; जगाने पर भी नहीं जगी (मर्म०—हरिऔध, १४७) ; उधर मासुली जाग उठी है, इधर हम भी कब सो रहे हैं (ब्रह्म०—दे० स०, २९९)



### जात दिखाना

वास्तविक रूप प्रकट करना। प्रयोग—“लाला साहब अपने सरल स्वभाव से कुछ नहीं कहते इस वास्ते आप चाहे जो कहते चले जाय परन्तु कोई तेज स्वभाव का मनुष्य होता तो आप इस तरह हरिण न कहने पाते”—मास्टर शिम्बूदयाल ने अपनी जात दिखाई (परोक्षा०—श्री० दास, १३७)

### जाता रहना

- (१) मृत्यु को प्राप्त होना। प्रयोग—लड़की आठ महीने की होकर जाती रही (बुंद०—अ० ना०, १२)
- (२) दूर होना, रोग से छुटकारा पाना।

### जाति गंवाना

जाति-व्युत्त होना। प्रयोग—कहत कबीर मुनहु मेरी माई, इन मुडियन मेरी जात गंवाई (कबीर ग्रंथा०—कबीर, ३१७)

### जाति से बाहर करना

जाति से निकाल देना। प्रयोग—बाली हम ऐसा करें तो जाति बाहर कर दिये जाय—भाई विरादरी में हुक्का पानी बंद हो जाय (मिस्रा०—कौशिक, १२७)

(समा० मुहा०—जाति से खारिज करना)

### जादू उतरना

प्रभाव दूर होना। प्रयोग—वह न्याय और धर्म, हानि लाभ अहिंसा और त्याग सब कुछ समझा कर भी आत्मानन्द के झुके हुए जादू को उतार न सका (कर्म०—प्रेमचंद, २९५)

### जादू चढ़ना,—चलना

घमर पड़ना। प्रयोग—एक रात आई पूनम, जब पड़ा गीत का जादू (दुधगाछ—दे० स०, २५०); विशेषकर हमारी शिक्षित बहनों पर वह जादू बड़ी तेजी से चढ़ रहा है (गोदान—प्रेमचंद, १६५); लोगों पर सच्चा जादू चला (चाँटो०—निराला, ३५)

### जादू चलना

दे० जादू चढ़ना

### जादू डालना

बड़ा में करना। प्रयोग—‘संगम फिल्मज’ के बॉस (Boss) पर जानते हो कैसा जादू डाल रखा है उसने ? (पैतरे—अशक, ११०)

(समा० मुहा०—जादू चलना)

### जादू सिर पर चढ़कर बोलना

गहरा असर होना। प्रयोग—जादू वह बखान सीस चढ़ि कै कबुलाये (राधा० ग्रंथा०—राधा०दास, ४९); न जानते होते तो क्या हडसन साहब की बेंटी बिपन गुप्त के बेटे नीरद से विवाह करती ? जादू वह जो सिर चढ़कर बोले (ब्रह्म०—दे० स०, ३६०); इसको ही कहते हैं कहने वाले जादू वह जो सिरपर चढ़कर बोले (बोल०—हरिऔध, ११)

### जादू होना

(१) प्रभाव होना। प्रयोग—क्या हुआ जो बात में जादू नहीं हो किसी की छांव में जादू अगर (बोल०—हरिऔध, ५०) (+)

(२) सहज ही धाकूट कर लेना। प्रयोग—देखिए प्रयोग (१) में (+)

### जान एक कर देना

मरना-मारना। प्रयोग—मुझे जो इस पर से निकलने को कहेगा, उसकी ओर अपनी जान एक कर दूंगी (चित्र०—कौशिक, ७२)

### जान का गाहक होना

भयंकर सबु होना—सदैव पीछे लगने वाला होना। प्रयोग—इस दावे के सबूत में कुछ झूठे-सच्चे गवाह भी पेश कर दिये और वकील को ऐसा मारा कि वह जान का गाहक हो गया (पद्मपराग—पद्म०शर्मा, १७६); यह बेचारे अपनी रंगम साहब से मजबूर है। वह शायद इनके जान की गाहक हो रही है (गबन—प्रेमचंद, २५४)

(समा० मुहा०—जान को लागू होना)

### जान की बाजी लगाना

किसी काम को पूरा करने के लिये प्राणों तक की परवाह न करना। प्रयोग—शुद्ध आंदोलन में पहले तो जान की बाजी लगा दी (पद्मपराग—पद्म०शर्मा, ७६)



### जान के लाले पड़ना

प्राण बचना कठिन दिखाई पड़ना ; जो पर आ बचना ।  
प्रयोग—परन्तु देखो, बोलना मत । नहीं तो दोनों की  
जान के लाले पड़ जायेंगे (मान० (८)—प्रेमचंद, ६१)

### जान को आ पड़ना

बड़ी दुर्गति होनी, विपत्ति आनी । प्रयोग—अर्जुन की  
जान की आ पड़ी (चतुरी०—निराला, १३)

### जान को आना

बहुत कठोर दंड देना । प्रयोग—बाबूजी, दारोगा साहब  
हमारी जान को आ जायेंगे (शेखर (२)—अज्ञेय, ६२)

### जान खाना

परेशान करना । प्रयोग—मैं ऐसी मेहरिया लेकर  
क्या कहूँगा, जो गहनों के लिये मेरी जान खाती रहे  
(मान० (१)—प्रेमचंद, १२९)

### जान गाढ़े में डालना,—चोटी पर आना

मुसीबत में होना । प्रयोग—बमादार की जान चोटी  
पर आ गई (चोटी०—निराला, ७८) ; एक-एक गहने के लिये  
तो घाप महीनों छूटती हैं, उन्हें लेकर कौन अपनी  
जान गाढ़े में डाले ? (प्रेमा०—प्रेमचंद, ३८४)

(समा० मुहा०—जान गाढ़े में पड़ना)

### जान चोटी पर आना

दे० जान गाढ़े में पड़ना

### जान छुड़ाना

प्राण बचाना, किसी भ्रमट से छुटकारा पाना, संकट  
टलना । प्रयोग—ठकुरसोहाती और भूठी प्रशंसा कर  
किसी तरह अपनी जान छुड़ाते हैं (भट्ट नि०—दा०  
भट्ट, १३९)

(समा० मुहा०—जान बचाना)

### जान डालना

(१) किसी इबती या जाती हुई संस्था, व्यक्ति या  
परिस्थिति को फिर से उत्तेजना से भर देना । प्रयोग—  
उसने उर्दू साहित्य में एक नयी जान डालने की चेष्टा

की या (गु० नि०—दा० मु० गु०, २९४) ; डालते थे जान  
जो बेजान में आज वे हैं जानवर जाते गिने (चुमते०—  
हरिऔध, २३)

(२) किसी चित्र आदि को अधिक सजीव बना देना ।  
प्रयोग—चुनिका लेकर बैठते हैं तो रंगों में जान डाल देते  
हैं (कठ०—दे० स०, ९५) ; कला की दृष्टि से नाटक  
बेसा सफल न था पर बलराज के अभिनय और निर्देशन ने  
उसमें जान डाल दी थी (पैतरे—अशक, २४) ; साधारण  
में साधारण विषय भी लेते तो उसमें जान डाल देते  
(सु० सु०—सुदर्शन, ११८)

### जान तोड़कर मेहनत करना

बहुत परिश्रम करना । प्रयोग—इस तरह जान तोड़  
कर मेहनत करने की शक्ति में अपने में न पाता था  
(मान० (१)—प्रेमचंद, ८०)

### जान तोड़ना

मरना । प्रयोग—सांडरस सड़क पर जान तोड़ रहा था  
(कठ०—दे० स०, १८८)

### जान दिख देना

बहुत लातायित होना । प्रयोग—उनके घर वाले भी तो  
चमारियों और कहारियों पर जान देते फिरते हैं (मान०  
(१)—प्रेमचंद, ३०१)

### जान देना

(१) बहुत परिश्रम करना । प्रयोग—काकी, अब तो मैं  
चार पैसे कमाने लगा, अब तू क्यों जान देती है ? (गवन  
—प्रेमचंद, २१०)

(२) किसी वस्तु के लिये अत्यन्त व्याकुल होना ।  
प्रयोग—यदि ऐसे विशालयों से पैसे पर जान देनेवाले  
× × छात्र निकलते हैं तो आश्चर्य क्या है ? (कर्म०—  
प्रेमचंद, १) ; हाँ, ये लोग शिकार के बड़े शौकीन होते हैं  
और मुजर पर तो जान देते हैं (मिखा०—कौशिक, १२२)

(३) अत्यन्त प्यार करना । प्रयोग—बेलम्मा पेरिय-  
नायकी से कहने बोल्बोली थी, पर माधवी पर जान  
देती थी (सुहाग०—दा० ना०, १५) ; वह स्त्री भी इतने  
लिए जान देती थी (ये कोठे०—अ० ना०, ५१) ; सारा



तेहरान साहजादे पर जान देना था (मान०(३)—प्रेमचंद, १५७)

(५) किसी कार्य के करने में अपनी जान गंवाना ।

### जान नाखून में समाना

बहुत डर लगना । प्रयोग—हमारे मित्रों के सिर में जरा-सा दबे होता था, तो हमारी जान नाखून में समा जाती थी (रंग०(१)—प्रेमचंद, १६७)

(समा० मुहा०—जान नहीं में समाना)

### जान पड़ना

नवीन उत्साह आना । प्रयोग—उसके आने से मुहल्ले के नारी जीवन में जान-सी पड़ गयी (गहन—प्रेमचंद, ७०)

### जान पर आ बनना

अत्यन्त कष्ट होना । प्रयोग—भीतर जाने के साथ इतनी गर्मी मालूम थी कि जान पर आ बनी (कुझी०—निराला, २१); कुछ बनाये नहीं बनी अब तक जान पर था बनी बचा न सके (चुमते०—हरिऔध, २)

(समा० मुहा०—जान पर आ पड़ना,—नौबत आना)

### जान पर खेल जाना

जान की परवाह किए बिना काम करना । प्रयोग—फिर वह क्यों दबे और क्यों न जान पर खेलकर तैमूर के प्रति उसके मन में जो घृणा है, उसे प्रकट कर दे (मान० (१)—प्रेमचंद, १८३); प्रत्येक मनुष्य अपनी जाति, अपने धर्म और देश के लिये जान पर खेल सकता है (विप०—प्रेमी, ४८); लगा लगाकर दांव जान पर खेलना (वैदेही०—हरिऔध, २३७); हाँ और क्या—यही सोचकर मैं जान पर खेल गया (मिसा०—कौशिक, १६२)

### जान पर बन आना

गंकाटपूर्ण स्थिति होनी । प्रयोग—तुम्हें क्या, तुम तो गहलियों के साथ विहार करोगी, मेरी सबर तक न लोगी और यहां मेरी जान पर बन आयेगी (गहन—प्रेमचंद, ३२)

### जान फूँकना

नव जागृति पैदा करना । प्रयोग—कार्यकर्ता उत्साह से नई काया में जान फूँकने लगे (चोटो०—निराला, ११)

### जान बग़शाना

छुटकारा देना । प्रयोग—कैसे हिन्दोस्ता घब जान इनकी बग़शान दो । देख लो रंजिश से सब इनका बदन पीला हुआ (मा० ग्रंथा० (३)—मारलेन्दु, ८६७)

### जान बवाल में डालना

भ्रम में पड़ना । प्रयोग—क्यों अपनी जान बवाल में डालती हो । घममा का स्वभाव तो जानती हो (रंग० (१)—प्रेमचंद, ५०)

### जान बसना

बहुत प्रेम होना । प्रयोग—अपने पशु-पक्षियों में उनकी जान बसती थी (कर्म०—प्रेमचंद, १९)

### जान बूझकर आग में कूदना,—मक्खी निगलना

अपना ग्रहित जान-बूझकर करना । प्रयोग—माँ के इस निर्दय प्रश्न पर झुझलाकर बोली—जब मौत आती है तो आदमी मर जाता है । जान बूझकर आग में नहीं कूदा जाता (कर्म०—प्रेमचंद, २१); नहीं, जान-बूझ कर मक्खी नहीं निगली जाती × × स्वार्थ के बश में होकर मैं अपने मित्र की संतान के साथ यह अन्याय नहीं कर सकता (निर्मला—प्रेमचंद, २३)

(समा० मुहा०—जान बूझकर कुर्ष में पड़ना)

### जान बूझकर मक्खी निगलना

दे० जान बूझकर आग में कूदना

### जान भारी होना

जीवन से मोह न होना । प्रयोग—मैंने कहा जान थोड़ी ही भारी पड़ी है (मा० ग्रंथा०(१)—मारलेन्दु, ५२५); किसी को जान इतनी भारी नहीं होती (कर्म०—प्रेमचंद, १७०)

### जान मुसीबत में डालना

परेशानकारी स्थिति में डालना । प्रयोग—आप ही मुझ पर असाधारण का जामा सादकर मेरी जान मुसीबत में डाल रहे हैं (शेखर(२)—अज्ञा, १५३)

### जान में जान आना

संतोष मिलना, धैर्य बंधना । प्रयोग—“आत्म-निरूपण”



करने के नाम तो आपकी जान में जान आ जाती थी (पद्मपराग—पद्म०शर्मा, ३५)

### जान लड़ाना

किसी काम को बड़े परिश्रम से करना । प्रयोग—यह तो हम जानते हैं कि आप हमारे काम के लिए जान लड़ा देते हैं (मा—कौशिक, ३७४); मैं तो तुम्हारा मन बहलाने के लिये जान लड़ाये दे रही हूँ, तुम सुध नहीं होते (ज्ञान०—यशपाल, ४७)

(समा० मुहा०—जान भिड़ाना)

### जान लेकर भागना

अत्यन्त भयभीत होकर बेतहाशा भाग खड़े होना । प्रयोग—बालक सब ले जीव पराने (राम०(बाल)—तुलसी, १०६); तब जितने उसके साथी और टहलये थे सबके सब पोटें-मोटें लादियां छोड़ अपना जीव ले भागे (प्रेम सा०—ल० ला०, १०९); फिर भी, कई जान लेकर जूते छोड़कर भाग गये (अपनी खबर—उग्र, २५); मि० सेवक जान लेकर गोरखों के कैंप की तरफ भागे (रंग० (२)—प्रेमचंद, ३६५)

### जान सुई की नोक पर होना

संकटापन्न होना । प्रयोग—उसकी जान इस वक्त सुई की नोक पर थी, एक हाथ भी चूका खीर प्राण गये (मान० (३)—प्रेमचंद, ८४)

### जान सूली पर चढ़ी होना

बहुत मुसीबत में होना । प्रयोग—मालगुजारी दाखिल करके चुपके घर चले आते हैं । नहीं तो हरदम जान सूली पर चढ़ी रहती थी (प्रेमा०—प्रेमचन्द, ४४६)

### जान से हाथ धोना

प्राण गंवाना, मारा जाना । प्रयोग—कदाचित् उनके मन में भी यही धारणा रही हो कि उसी अनाचारिणी के कारण उनके पुत्र को जीवन से हाथ धोना पड़ा है (अतीत०—महादेवी, ८६); दुर्घोषन जैसे स्वार्थान्ध कपट-कुसल और 'जोते जुझारी' के दरबार में ऐसे घबराहट पर दूत बन कर जाना, जान से हाथ धोना या (पद्मपराग—पद्म० शर्मा, ५)

### जान हथेली पर लिए रहना,—हाथ पर लिए रहना

किसी काम के लिए अपनी जान की परवाह न करना । प्रयोग—देवकान्त को तो अपनी माँ से मिलने के लिए ही अपनी जान हथेली पर रख कर जाना चाहिए (ब्रह्म०—दे० स०, १९१); अपनी जान को हथेली पर रखकर वे लोग क्या चाहते हैं ? (सुनीता—जैनेन्द्र, १४८); जिसके लिये जान हथेली पर लिए फिरता हूँ, वही मेरा सम्बन्ध है (रंग० (२)—प्रेमचंद, ६८); किसी दिन तब महाविस्फोट कोई फूटता है, मनुज ने जान हाथों में मनुज पर दृढ़ता है (कुरु०—दिनकर, ३९)

### जान हाथ पर लिए रहना

#### दे० जान हथेली पर लिए रहना

#### जान होना

मुख्य कर्ताधर्ता या आधार । प्रयोग—और नगाड़ा, वह तो नौटंकी की जान है (पैतरे—अशक, १३)

### जानवर होना

जड़ मूल होना । प्रयोग—डालते थे जान जो बेजान में आज वे हैं जानवर जाते गिने (चुमते०—हरिऔध, २३)

### जाना

(१) नुकसान होना, नष्ट होना, मर जाना । प्रयोग—तुम्हारी माँ के जाने के बाद मैं तो और भी कमजोर हो गया, जैसे हाथ-पैर टूट गये (रेशमी०—राम० वर्मा, ८०)

(२) बुरे मार्ग पर चलना । प्रयोग—मातु पिता गुरु विप्र न मानहि । आपु गए घर पालहि जानहि (राम०(३)—तुलसी, १०६६)

(३) किसी के अनुरूप बनना । प्रयोग—वह उन्हीं पर जायगा, जैसे वे हैं, वैसा ही वह भी उठेगा (मा—कौशिक, ८८)

(४) विश्वास करना (किसी की बात पर जाना )

### जामे से बाहर होना

बहुत गुस्सा होना । प्रयोग—मगर राम को बुरा लगता × × यहाँ तक कि एक दिन वह जामे से बाहर हो गया (मान० (१)—प्रेमचंद, २५१); जामे वाले गरमी के मारे जामे के बाहर हुंजाते थे (भा०ग्रंथा० (३)—भास्तेन्दु, ९३९)



ज़ार ज़ार आँसू बहाना

२६४

जितनी चादर उतना पैर फैलाना

ज़ार ज़ार आँसू बहाना

फूट-फूट कर रोना । प्रयोग—बाहर तो मुझे फिरके में शामिल होकर इस तुर्की के ज़िन्दागी के लिए ज़ार-ज़ार आँसू बहाने पड़ते हैं (मूलो—भग० वर्मा, ४५५)

(समा० मुहा०—ज़ार ज़ार रोना, बेज़ार होना)

ज़ाल फैलाना,—बिछाना

किसी को फंसाने के लिये षडयन्त्र करना । प्रयोग—यह घापकी घाज़ा से और भी अपना जाल फैलाऊँगी (भा० ग्रंथो—मारलेन्दु, ४५३); फैलाये कितने ही जाल गली नहीं पर मेरी दाल (गु० नि०—बा० मु० गु०, ७२१); तुम लोगों ने नगर बनाकर धोके की दृष्टियों और जालों का भी प्रस्तार किया है (कामना—प्रसाद, ६५); जाल का जाल जब बिछाते हैं तब न क्यों बात-बात में उलझें (चोखे—हरिऔध, ४७)

ज़ाल बिछाना

दे० जाल फैलाना

ज़ाल से मुक्त होना

प्रभाव या अधिकार से मुक्त होना । प्रयोग—भारतवर्ष पराधीनता के जाल से मुक्त हो गया है (अशोक—ह० प्र० दि०, १५१)

ज़ासूस लेना

मेद लेना, चुपचाप पता लगाना । प्रयोग—और बेर कबहुँ नहि देख्यो, हरि ज़ासूसी आयो (सु० सा०—सुर, ४४९१)

ज़ाहिल लट्ट होना

बेजानकार होना । प्रयोग—ज़ाहिल लट्ट बैठ गए फैसला सुनाने (दूधगाँव—दे०स०, २६८)

ज़िन्दगी कटना या काटना

जीवन के दिन बिताना या बीतना । प्रयोग—अपने सूबे में किसी अच्छी-सी जगह पर पहुँच जाओगे, आराम से ज़िन्दगी काटोगे (ग़ज़न—प्रेमचन्द, २७९)

ज़िन्दगी के दिन पूरे करना

दिन काटना, जीवन बिताना, मरने को होना । प्रयोग—उठ जाओगे जग से जीवनके पूरे दिन कर पाओगे (मर्म०—

हरिऔध, १३८); अब तो ज़िन्दगी के दिन पूरे कर रहा हूँ (निर्मला—प्रेमचन्द, १४९)

(समा० मुहा०—ज़िन्दगी के दिन भरना)

ज़िन्दगी देखना

ज़िन्दगी में अनुभव प्राप्त करना । प्रयोग—मैंने भी देखी है ज़िन्दगी (बुद्ध०—वचन, ५६)

ज़िन्दगी भारी होना

जीवन कष्ट पूर्ण होना । प्रयोग—निश्चय हम जीवन हमारा आज भारी हो गया (जय०—गुप्त, २७)

ज़िन्दगी होना

तबियतदार होना । प्रयोग—ओ गुड, प्रो० केदार कापे-चुलेशन्स ! तुममें ज़िन्दगी है, तबीयत है (रैशमो—राम० वर्मा, ४०)

ज़िन्दा-दिली के पुतले

हँसोड़, उदार या मनोरंजक होना । प्रयोग—शर्माजी हास्यरस की मूर्ति और ज़िन्दादिली के पुतले थे (पद्म पराग—पद्म० शर्मा, ३३५)

(समा० मुहा०—ज़िन्दा-दिल होना)

ज़िगर पर आरा चलना

मन को बहुत कष्ट होना । प्रयोग—पर जब से मैंने यह खबर सुनी है, मेरे ज़िगर में जैसे आरा सा चल रहा है (कर्म०—प्रेमचन्द, ९३)

जितना पानी पिलावे, उतना पीना

जैसा कहे वैसा करना । प्रयोग—पह चाहता है कि तुम इसकी मुठ्ठी में रहो, जितना पानी पिलावे, उतना ही पियो (चित्र०—कौशिक, १४)

जितना बड़ा मुँह उतना बड़ा कौर होना

जितनी आवश्यकता हो उतना होना । प्रयोग—सुकल चौधरी उदार पुरुष थे परन्तु जितना बड़ा मुँह था, उतना बड़ा घास न था (मान० (८)—प्रेमचन्द, २१)

जितनी चादर उतना पैर फैलाना

सामर्थ्य के अनुसार काम करना । प्रयोग—जितनी चादर होती है, उतने ही पाँव फैलावे जाते हैं—कोई कहाँ तक दे ? (मा—कौशिक १४२)



जिस कल बैठाएँ, बैठना

२६५

जी ऊपर तले होना

**जिस कल बैठाएँ बैठना**

जो कहें बैसा ही करना । प्रयोग—बस कुशल इसी में है कि कर्मचारी जिस कल बैठाएँ, उसी कल बैठीएँ (रंग० (१)—प्रेमचंद, २९९)

**जिस गांव में न जाना, उसका रास्ता न पूछना**

जो काम न करना हो उसमें रुचि न रखना । प्रयोग—बिना प्रयोजन भूलि हूँ, ठट्टिये नाहि डाट जैवों नहि जो गाँव को, ताकी पूछ न बाट (सू० स०—वृन्द, ९६); जिस गाँव नहीं जाना उसका रास्ता पूछना क्या जरूर (परीक्षा०—श्री० दास, २२); सभी देवता आज कल दिल्ली में ही बसते हैं क्या ? जिस ग्राम नहीं जाना, उसका पथ क्या पूछना ? (दूधगाछ—दे०स०, ३४४)

**जिस पत्तल में खाना उसी में छेद करना**

अपने हितकारी का अहित करना । प्रयोग—नीचे समझती है कि मैं जिस पत्तल में खाता हूँ, उसी में छेद करूँगा (मा० मा० (१)—कि० गो०, ६९); यह एहसान फरामोशों का सम्प्रदाय है, जिस पत्तल में खाता है उसी में छेद करता है (मान० (२)—प्रेमचंद, २६); ये कान्य-कुञ्ज-कुलांगार खा कर पत्तल में करे छेद (अना०—निराला, १२९)

(समा० मुहा०—जिस हाँड़ी में खाना उसीमें छेद करना)

**जिह्वाग्र होना**

कंठाग्र होना, हर समय याद रहना । प्रयोग—उन दिनों रामायण के विविध अंश मेरे कंठाग्र, जिह्वाग्र रहा करते थे (अपनी खबर—उग्र, २९)

**जी आना**

प्रेम होना । प्रयोग—मेरा जी उस पर आ गया है (इंशा०—इंशा०, ९३); क्यों किसी पर किसी का जी आ गया (बोल०—हरिऔध, २०५)

**जी उचाट होना**

काम में जी न लगना । प्रयोग—यह हमारी उचाट का फल जी अगर है उचाट-उचाट जाता (बोल०—हरिऔध, २००)

**जी उठना**

(१) उत्साह होना । प्रयोग—गाने के लिए प्रभाकर का जी उठ नहीं रहा था । फिर भी रस्म पूरी करनी थी (बोटी०—निराला, ८८)

(२) विरक्ति होनी ।

**जी उड़ना**

(१) जी बग में न होना । प्रयोग—जियरा उड़्यों सो डोले हियरा धक्योई करे, पियराई छाई तन, पियराई दो दहौ (घन० कवित्त—घना०, ३६); तो उड़ेंगे फूँक से दुलदे नहीं जी हमारा है उड़ा रहता अगर (चुमते०—हरिऔध, ३६)

(२) भय या आशंका से चित्त व्याकुल होना । प्रयोग—भूयन भनत महाबोर बलकन लाग्यो सारी पातसाही के उड़ाये गये जियरे (भूयन ग्रंथा०—भूयन, २१५); देख भुट्टे की तरह गरदन उड़ी हाथ का तोता उड़ा जी उड़ गया (बोल०—हरिऔध, २०६)

**जी उमगना**

हृदयका द्रवित हो जाना । प्रयोग—जबहि मुरति आवति वा मुख की जिय उमगत तनु नाही (सू० सा०—सूर, ४९९५)

**जी उमड़ना**

(१) बहुत उत्सुकता होनी । प्रयोग—मुशकन्द, इस खत के मजमून को जानने के लिए जी उमड़ा खाता है (राधा० ग्रंथा०—राधा० दास, ७६८)

(२) भीतर-भीतर बहुत दुःख होना ।

**जी उलट जाना**

(१) होश-हवास ठीक न रहना । प्रयोग—जाय लट वह अगर गया है लट जी हमारा उलट गया कैसे (चुमते०—हरिऔध, १३५) (÷)

(२) मन बदल जाना । प्रयोग—देखिए प्रयोग (१) में (÷)

**जी ऊपर तले होना**

(१) उद्विग्नता होनी । प्रयोग—चिन्ता और अभि-लाषा से उसका हृदय नीचे ऊपर हो रहा था (कंकाल—प्रसाद, १६)

(२) मिवली जाना ।



### जी कचटना या कचोटना

जी का दुख पाना । प्रयोग—है बुरी बात लग गई जी को बेतरह है कचट-कचट जाता (सुभते०—हरिऔध, ७४) चोट सा चाव चूर-चूर हुआ क्यों नहीं जी कचोटता मेरा (बोल०—हरिऔध, २००)

### जी कट जाना

भीतर ही भीतर क्षुब्ध होकर रह जाता । प्रयोग—इस बात पर कि सत्या सम्भोगी नहीं, उसका जी कट कर रह गया (सुनीता—जैनेन्द्र, १६३)

### जी कड़ा करना

हृदय मजबूत करना, साहस करना । प्रयोग—खैर अब जी कड़ा करके लाती हूँ (राधा० ग्रंथा०—राधा० दास, ५६५); इसे कड़ा जी करके शुरू से आखिर तक एक बार पढ़ जाइये तो बड़ी बात है (पद्म० के पत्र—पद्म० शर्मा, १७८); अन्त में हृदय कड़ा करके जागे बड़ी धीर डार पर पहुँचकर उसने एक घादमी से पूछा "बाबूजी हैं?" (मिस्त्रा०—कौशिक १३); नन्दराम—नहीं, जी को कड़ा बनाऊँगा (मिस्त्रा०—कौशिक, ७२)

### जी कांपना

भयभीत होना । प्रयोग—पहले काम मृगध मति कीया, ता भ कपे मेरा जीया (कबीर ग्रंथा०—कबीर, २०७); कांपता बात बात में है जो फल बुरे है इसीलिए चलते (सुभते०—हरिऔध, ९)

### जी का कांटा कढ़ना

मन की पीड़ा, कसक मिटनी । प्रयोग—आज भी जी का नहीं कांटा कड़ा । है खटकता घाँस का कांटा न कम (सुभते०—हरिऔध, ६७)

(समा० मुहा०—जी का कांटा निकलना)

### जी का गुबार निकालना,—फफोला फोड़ना

मन के असन्तोष या आशोष को कह डालना । प्रयोग—वे सब की सब एक साथ अपने-अपने जी के गुबार निकालने लगे (ये कोठे०—अ० ना०, ९१); उस पुरानी प्रतिष्ठा की याद कर ये तीनों प्रतिष्ठित लक्ष्मणी बेम्हार्ण अपने जी के फफोले फोड़ने लगे (ये कोठे०—अ० ना०, ११२); इन्ही बसत दोनों नई है तो जी के फफोले ही फोड़ ले सोढ़े से (पुट०—अ० ना०, १६०)

### जी का ग्राहक

(१) परेशान करने वाला । प्रयोग—जोरे नये नाते नेह फोकट फीके । देह के दाहक, ग्राहक जी के (विनय०—सुलसी, १७६)

(२) प्राण लेने पर उत्तार ।

### जी का जवाल होना

भारी मुसीबत होनी । प्रयोग—स्वारथ अगम परमारथ की कहा चली, पेट की कठिन अगुजीय को जवाह है (कवि०—सुलसी, १४३)

### जी का फफोला फोड़ना

### दे० जी का गुबार निकालना

### जी का बुखार उतारना

बोध, शोक या दुख आदि के वेग को रो-धो कर शांत करना । प्रयोग—खेलावन किसके ऊपर अपने दिल का बुखार उतारे, समझ नहीं पा रहा था (मैला०—रेणु, ४०)

(समा० मुहा०—जी का बुखार निकलना)

### जी का बोझ हलका होना

किसी चिन्ता से मुक्ति पानी । प्रयोग—भाप हम हो गये बहुत हलके बोझ जी का हुआ नहीं हलका (बोल०—हरिऔध, २००)

(समा० मुहा०—जी का भार हलका होना)

### जी का शूल मिटना

मन की कसक, कष्ट दूर होना । प्रयोग—मोहि छाड़ि तुम और उधारे, मिटे शूल क्यों जी को (सू० सा०—सूर, १३८)

### जी की आग

ईर्ष्या । प्रयोग—जो कि जी की आग से जलता रहा मिल सकी है कब उसे ठण्डक कहीं (बोल०—हरिऔध, ३९)

### जी को कसक मिटाना

मन का कष्ट दूर होना । प्रयोग—भेंटि अंक भरि लेहि कसक सब जाइ दिण कड़ि (राधा० ग्रंथा०—राधा० दास, ६२९)

### जी की कसर निकालना

(१) मन के आशोष को व्यक्त करना । प्रयोग—हम कसर है निकालते जी से वे कसर है निकालते जी की (बोले०—हरिऔध, १८२) (÷)



(२) मन के दुर्भाव को दूर करना । प्रयोग—देखिए (१) में (÷)

### जी की कहना

मन का भेद या शंका कह देनी । प्रयोग—ऐसा कोई ना मिले, जायूँ कहीं निसंक । जायूँ हिरदै की कहुँ, सो फिरि माँदै कंक (कबीर ग्रंथा०—कबीर, ६६)

### जी की गांठ

दुर्भावना । प्रयोग—काठ बना देती है जी को जी में गांठ पड़ी (मस०—हरिऔध, १३६)

### जी की जलन

मन का क्लेश । प्रयोग—देखे बिनु रघुनाथ पद जिय के जरनि न जाई (राम० (अ)—तुलसी, ५४३)

### जी की जलन बुझाना या बुझना

(१) जी का दुख दूर करना या होना । प्रयोग—नैन-सैन संभाषन कीन्हो, प्यारी की उर-तपनि मिटाई (सु० सा०—सूर, १३१९)

(२) जी की कुड़न मिटना या मिटाना ।

### जी की वासना पूजना

इच्छा पूर्ण होनी । प्रयोग—पूजी सकल वासना जी की (राम० (बाल)—तुलसी, ३५८)

### जी की भड़ास निकालना

मन का उबा रोष निकालना । प्रयोग—कन्या से मिल कर लौटने के बाद से मञ्जन ने चित्रा की अनेक तरीकों से परेशान किया, यों अपने जी की भड़ास निकली (बुँद—अ० ना०, ३७२)

### जी के धनी होना

उदार और सहृदय होना । प्रयोग—हम धनी जी के रहें सब दिन बने हाथ में चाहे हमारे हो न धन (चौखे०—हरिऔध, १२६)

### जी को भरोसा आना

जी को ढाँढ़स बंधना । प्रयोग—अभय भई भरोस जिय आवा (राम० (बाल)—तुलसी, १९७)

### जी खट्टा करना या होना

मन फिर जाना, विनन होना । प्रयोग—चिड़ गये जी हम

बिड़ा देवें न जी । जी हुए खट्टा न खट्टा जी करें (बोल०—हरिऔध, १९८); तबेरे महिपाल ने कहनी न कहनी मुनाई, उससे जी खट्टा हुआ (बुँद०—अ० ना०, ८८); जब तुम न मिले, तो मेरा जी खट्टा हो गया (मान० (२)—प्रेमचन्द, १२०); घाजकल 'मूरसागर' घप्राप्य हो रहा है । पहले मुद्रिय जो दो एक संस्करण कहीं-कहीं पाये भी जाते हैं तो उनमें कपेपको की घोर अशुद्धियों की इतनी भरमार मिलती है कि × × जी खट्टा और मजा किर-किरा हो जाता है (पद्म पराग—पद्म० शर्मा, ३८४)

### जी खपाना

किसी काम में जी जान से लग जाना । प्रयोग—खप नहीं सकती खपाए बेदिली सिर खपाया अब खपावेंगे न जी (बोल०—हरिऔध, २०६)

### जी खिलना

प्रसन्न होना । प्रयोग—जी हमारा बहुत गया कुम्हला जी कहां से खिला हुआ ले लें (चुमते०—हरिऔध, ६२)

### जी खोलकर

(१) बड़े उत्साह से । प्रयोग—जो मिलेजी खोलकर, उनके पहाँ चाहता है जी कि सिर के बल चले (चौखे०—हरिऔध, १२) (÷)

(२) बिना किसी संकोच के, बेधड़क, जितना जी चाहे । प्रयोग—जी खोलकर इस अनर्थ के विरुद्ध आंदोलन करने को जी चाहता है (पद्म० के पत्र—पद्म० शर्मा, ५२); देखिए प्रयोग (१) में (÷) भी

### जी गिरना

हतोत्साह या दुखी होना । प्रयोग—उसी समय गुलाम गौस खाँ को रानी ने अपनी तौल भर चाँदी का तोड़ा पुरस्कार में दिया । अब लातता ने मुना उसका जा गिर गया (झाँसी०—बुँ० वर्मा, ३६८)

### जी चलना या चलाना

(१) हिम्मत पढ़नी, शक्ति होनी या करनी । प्रयोग—बाल चलना भूल अब हमको गया क्यों चलाने जी अगर चलता नहीं (बोल०—हरिऔध, २०६)

(२) जी चाहना, इच्छा होनी या करनी ।



### जी चुराना

काम करने में मन न लगना; होना-हवाली करनी। प्रयोग—मैं पढ़ने से जी नहीं चुराता लेकिन इस दशा में मेरा पढ़ना नहीं हो सकता (कर्म०—प्रेमचंद, १४); जिसे देता हूँ, वही उसके चस्के में पड़ जाता है और फिर परिश्रम से कटता और जी चुराता है (परस—जेनेन्द्र, १४१)

(समा० मुहा०—जी छुपाना)

### जी छितराना

मन को कष्ट होना। प्रयोग—छेद छाती में अछूतों के हुए जो अछूता जी गया छितरा नहीं (चुमते०—हरिऔध, ११६)

### जी छिलना

मन को कष्ट होना। प्रयोग—जी हिलाने से हिले किसके नहीं छीलने से जी नहीं किसके छिले (बोल०—हरिऔध, २०५)

### जी छोटा करना या होना

(१) मन उदास करना या होना। प्रयोग—महाराज ने आज्ञा की कि तुम जी छोटा न करो (राधा० प्रथा०—राधा० दास, ३२८); वरुण सरदार लोग कड़ाई में हारते हारते टूट गए थे और उनका जी छोटा हो गया था परन्तु ..... (राधा० प्रथा०—राधा० दास, ६४८); जन क्यों जी छोटा करता है (मर्म०—हरिऔध, २५)

(२) मन संकुचित करना या होना।

### जी छोड़कर भागना,—लेकर भागना

बेतहाश भागना। प्रयोग—जी जेहि देख निदोखहि लागा। सेवक दरहि जीव ले भागा (पद०—जायसी, २५२१); भागने में घगर भलाई है। क्यों भला जी न छोड़कर भागू (चुमते०—हरिऔध, ४३)

### जी जमाना या जमाना

किसी काम को करने की इच्छा होनी; मन को स्थिर और एकत्र करना। प्रयोग—जी जमा काम पर नहीं जिसका काम बह-कर कभी नहीं पाती (बोल०—हरिऔध, १९९); थोड़ी देर बाद वह तबरीक ले गये, मृत छुट्टी

मिली। मैंने जी जमाकर फिर लिखना शुरू किया (पद्य पराग—पद्म० शर्मा, ४१९)

### जी जलना

ईर्ष्या या दुख से मन को कष्ट होना। प्रयोग—तब नित चढ़ेउ जो संकर कहेऊ। प्रभु अपमानु समुझि उर दहेऊ (राम० (बाल)—तुलसी, ७६); मारे ईर्ष्या-द्वेष के पण्डितजी पर उनका जी जल रहा है (गु० लि०—वा० मु० गु०, ५०२); अब पूस आयो रुस आयो सुनत जिय औरहु जर्यो (राधा० प्रथा०—राधा० दास, १६); कुलटा के मुंह से सतियों की सी बात सुनकर किसका जी न जलेगा (गोदान—प्रेमचंद, १६६); पर हृदय न जाने दग्ध क्यों हो रहा है सब जगत हमें है शून्य होता दिखाता (प्रिय०—हरिऔध, ४१)

### जी जलाना

हृदय को कष्ट देना। प्रयोग—मोठे-मोठे बोल बोलि, ठगी पहिलें तो तब, अब जिय जारत, कहो धौं कौन न्याय है (घन० कवित्त—घना०, ५); जाव प्यारे तुम हमसे न बोलो जिय न जलाओ सदाई (भा० प्रथा० (२)—भारतेन्दु, ४२१); कहकर कटु बातें जी न भूले जलाया (प्रिय०—हरिऔध, ४१)

### जी जान लगाना

कोई प्रयत्न वाकी न छोड़ना। प्रयोग—कर कर आस किसानों ने जी जान लगाकर बोए थे (राधा० प्रथा०—राधा० दास, ९०)

(समा मुहा०—जी जान लड़ाना)

### जी जान से

बड़ी लगन से। प्रयोग—जी कुछ सामने आता था, उसमें जी जान से लग जाते थे (गोदान—प्रेमचंद, ९४); हम लड़ेंगे और लड़ते रहेंगे क्यों न वे जो जानसे हमसे लड़ें (चुमते०—हरिऔध, ११)

### जी जान होम करना

बहुत प्रयत्न करना। प्रयोग—सम्पादक का पहला गुरू यह होना चाहिए कि × × जिस विषय की वह चर्चा करे जी जान होम कर करे (सा० सी०—महा० द्विवेदी, १०७)

### जी जुड़ाना,—ठंडा होना

(१) मन शान्त होना। प्रयोग—बात ठंडी सुन जी ठंडा हुआ (बोल०—हरिऔध, २०४); तब दरमान करि बहुर



जी टंगा रहना या होना

२६९

जी धंसा जाना

जुड़ाने प्राण । हरे भये पुनि हिय के सुखे धान (गुं नि०—वा० मु० गु०, ६७४) (÷)

(२) इच्छा पूरी होनी । प्रयोग—देखिए प्रयोग (१) में (÷)

**जी टंगा रहना या होना**

चित्त में चिन्ता या ध्यान रहना, चित्त व्याकुल रहना । प्रयोग—जी हमारा था बहुत दिन से टंगा आज धाँखें भी हमारी टंग गई (चौखे०—हरिऔध, ३३)

**जी टटोलना**

मन के भाव का अंदाज लगाना । प्रयोग—फिर मेरा जी टटोलनेके लिए फेरवट के साथ बात करके व्यर्थ क्यों समय नष्ट करते हो (भा० ग्रं० (१)—भारतेन्दु, ५५६)

**जी टूटना**

हतोत्साह होना । प्रयोग—मेरा जी इतना टूट गया है कि अब एकदम ठहरने का सामर्थ्य नहीं रखता (भा० ग्रं० (१)—भारतेन्दु, ५९०); परन्तु अपने देश के लोग उसकी तरफ आँख उठाकर भी नहीं देखते, इसी जी टूटा जाता है (परीक्षा०—श्री०दास, ९८)

**जी टेढ़ा होना**

कृष्ट या भ्रसन्नुष्ट होना । प्रयोग—जो किसी का जी नहीं टेढ़ा हुआ धाँख टेढ़ी किस तरह तो हो गई (बोल०—हरिऔध, ४४)

**जी ठंडा होना**

दे० जी जुड़ाना

**जी डाँवाडोल करना**

विचलित करना, उद्ध्विग्न करना । प्रयोग—ज्ञान दे सिर पर न सारी उलझनें जी हमारा कर न डाँवाडोल दे (चुभते०—हरिऔध, १)

**जी डूबना**

(१) मरणासन्न होना । प्रयोग—अभी एक क्षण पहले महतो ने पानी माँगा था पर जब तक वह पानी लावे, उसका जी डूब गया और हाथ-पांव उड़े हो गये (मान० (१)—प्रेमचंद, २५३)

(२) चित्त व्याकुल होना ।

**जी तोड़ या जी तोड़कर**

धर्यन्त परिश्रम से । प्रयोग—आज से फूलमती का यही नियम हो गया कि जी तोड़कर घर का काम करना और अंतरंग नीति से अलग रहना (मान० (१)—प्रेमचंद, ७४); उसके घाव से बहुत खून निकल चुका था और उसको दिल तोड़ परिश्रम करना पड़ा था (झाँसी०—वृ० वर्मा, ४२९); महिपाल जी तोड़कर मेहनत करने लगा (वृ०—आ० ना०, १९१)

**जी तोड़ना**

उत्साह कम करना, दुखी करना । प्रयोग—छोटी जाति के लोगों को तिरस्कार करके उनका जी मत तोड़िये (भा० ग्रं० (३)—भारतेन्दु, ९०१)

**जी दब जाना**

निस्त्साह होना । प्रयोग—देखिये दब न जाय जी मेरा गुन दबी जोभ की दबी बातें (चौखे०—हरिऔध, ४५)

**जी दहलना**

डर से कांपना । प्रयोग—आज तक दुख-सवाल हल न हुआ जी दहल ले अगर दहलता है (बोल०—हरिऔध, २००)

**जी देना**

(१) बलि देना । प्रयोग—माटी के करि देवी देवा तिसु आगे जीउ देही (कबीर ग्रंथा०—कबीर, २९१)

(२) अत्यन्त प्रेम करना । प्रयोग—कब रहे लेते हमारा जी न तुम हम तुम्हें कब जी नहीं देते रहे (चौखे०—हरिऔध, ५३)

(३) मरना ।

(४) मन लगाना; ध्यान देना ।

**जी दौड़ना या दौड़ाना**

मन चलना या चलाना । प्रयोग—देख लेवें लोग दौड़ाकर उसे दौड़ने पर जी बहुत है दौड़ता (चुभते०—हरिऔध, ३७)

**जी धंसा जाना,—बैठा जाना**

बहुत दुखी होना; भय या दुख के कारण व्याकुल होना ।



प्रयोग—ज्यादह देर लगाना ठीक नहीं। मन धंसता जा रहा है (परस—जेनेन्द्र, २९); आंस तो फूट क्यों नहीं जाती किए लिए बैठ जी नहीं जाता (चुमते—हरिऔध, ५९); बात जी में आपके धंसती नहीं पर हमारा जी धंसा है जा रहा (बोल—हरिऔध, २०३)

### जी धक्-धक् करना

भय होना, आशंका होनी। प्रयोग—धाक सारी पुल में है मिल रही जी हमारा क्यों करे धक् धक् नहीं (बोल—हरिऔध, २०१)

### जी धड़कना

भय या आशंका से चित्त स्थिर न रहना, कलेजा धक्-धक् करना। प्रयोग—जियरा उड़यो सौ डोलै हियरा धक्-धक् करै, पियराई छाई तन, सियराई दो रहौ (धन० कवित—घना० ३६); है सितम आज बेधड़क होते जी हमारा बहुत धड़कता है (बोल—हरिऔध, २०४)

### जी न भरना

तृप्ति न होनी। प्रयोग—मैं धक्बर की कविता के लिये बेताब रहने लगा, कहीं एक मिसरा भी उनका मिल जाता तो उसे नोट कर लेता, बार बार पढ़ता और जी न भरता (पद्म पराग—पद्म० शर्मा, २६९); जालवा माता के गले में चन्द्रहार की शोभा देखकर मन ही मन सोचने लगी—गहनों से इनका जी अब तक न भरा (गयन—प्रेमचंद, १३) (समा० महा०—जी न भ्रमाना)

### जी न लगना

उबना, अगति होनी। प्रयोग—कहु न लगत जिय घाट बाट घर फिर-फिर लेत उसास री, मैं पिय प्यारे बिन (भा० प्रश्ना०—भारतेन्दु, ४०१)

### जी निकाल लेना

मन को बहुत व्यथित देना। प्रयोग—कहा कछिये सजनी रजनी गति, चंद कहे कि जिये गहि काई (धन० कवित—घना० ९६)

### जी निढाल होना

चित्त का स्थिर न होना—चित्त ठिकाने न होना। प्रयोग—रो उठे डाल डाल कर आंगू देव जी का निढाल

होना हम (बोल—हरिऔध, २०१)

### जी पकना

लगातार दुःख, दुर्व्यवहार से मन का बहुत दुगो हो जाना। प्रयोग—देख मनमानी बहुत जी पक गया (चुमते—हरिऔध, १४)

### जी पत्थर करना या होना

जी कड़ा करना या होना। प्रयोग—बहुते दिनन्ह आवै जौ पीऊ। धनि न मिलै धनि पाहुन जीऊ (पद०—जायसी, ३५/८)

### जी पर आ बनना

प्राण संकट में होना। प्रयोग—इन सके काम या न काम बने पर कभी आ बने नहीं जी पर (बोल—हरिऔध, २०१)

### जी पर खेलना

जान को आफत में डालना। प्रयोग—बहुतन्ह अस जीउ पर खेला। तूं जोगी केहि माहं अकेला (पद०—जायसी, २३१७); तुम्हारे ही वास्ते तो जी पर खेलकर यहाँ उतरे हैं (भा० प्र० (१)—भारतेन्दु, ५२५); ऐसा न होवे, जो देव वाला अपने जी पर खेले (ठेठ०—हरिऔध, १४)

### जी पोढ़ा करना

जी कड़ा करना, दांडस रखना। प्रयोग—तीखे हेरि चीर गहि पोड़ा। कंत न हेर कीन्ह जिय पोड़ा (पद०—जायसी, ५२७)

### जी फड़कना

उत्साह पाना। प्रयोग—सुन फड़कती बात क्यों फड़के न जी (बोल—हरिऔध, २०६)

### जी फिरना

चित्त उबट जाना—विरक्त हो जाना। प्रयोग—क्यों किसी से जी किसीका फिर गया (बोल—हरिऔध, २०५)

### जी फिसलना

मन चलना। प्रयोग—जाय कैसे नहीं फिसल कोई जी अगर है फिसल फिसल जाता (बोल—हरिऔध, १९९)

### जी फीका करना

उदास होना। प्रयोग—जी करे फीका न फीकी बात कह (बोल—हरिऔध, १९९)



### जी बढ़ना या बढ़ाना

(१) गवं होना । प्रयोग—धे अभी कल रगड़ते नाक वे, भाव इतना किस तरह जी बढ़ गया (बोल०—हरिऔध, १५)

(२) इच्छा या प्रेरणा होनी या करनी । प्रयोग—जी रहा ईसाइयों का जब बड़ा तब भला पंजा बढ़ाते क्यों न वे (चुभते०—हरिऔध, १३७)

### जी बिखरना

(१) चित्त ठीक न रहना । प्रयोग—दूर होती तमाम कोर कसर सर हुए जो न जी बिखर जाता (बोल०—हरिऔध, २०१)

(२) मूर्च्छा आनी ।

### जी बुझाऊ

हृत्प्रेसाहित करने वाली । प्रयोग—ऐसी जी बुझाऊ बातें सोचते हुए आप देव महाभिषकजी को भूल ही गये (गंगा०—उग्र, १३)

### जी बैठना

दे० जी धंसा जाना

### जी भर आना

दुःख होना । प्रयोग—सखी हम सबन को जीव भरपो घावें है (भा० ग्रंथा० (१)—भारतेन्दु, ४५०); बिट्टी पढ़कर जी भर आया (गु० नि०—वा० मु० गु०, २७६); माँ की मृत्यु के बाद पहली बार उस माँ बिहीन ठाकुर-घर से आकर सज्जन का जी भर घाया (बुंद०—अ० ना०, १७१); सत्यनारायणजी का फोटो देखकर जी भर घाया (पद्म० के पत्र—पद्म० शर्मा, ५९); जाति की देखकर भरी घावें जी रहा कौन सा न भर आता (चुभते०—हरिऔध, ७९)

### जी भरकर

(१) यथेष्ट । प्रयोग—धनि न नैन भरि देखा पीऊ । पिय न मिला धनि सौं भरि जीऊ (पद०—जायसी, ५२५); भर सका जी अगर नहीं सब भी कोस लें क्यों न आप जी भर कर (बोल०—हरिऔध, २०३)

(२) मनमाना ।

### जी भर जाना

(१) जी सन्तुष्ट होना, तृप्ति होनी । प्रयोग—भर सका जी अगर नहीं सब भी कोस लें क्यों न आप जी भरकर (बोल०—हरिऔध, २०३)

(२) मन का आविगपूर्ण होना—कल्याण होना । प्रयोग—जी भर गया, गई भर आखें, धम से गये पैर भी भर (नूर०—मक्त, १४)

(३) हैरान आ जाना—बरदाश्त न कर पाना । प्रयोग—कल उसकी सास ही ने तो कहा था—मेरा जी तुमसे भर गया (मान० (१)—प्रेमचन्द, १३४)

(४) दूसरे का संदेह दूर करना—छटका मिटाना ।

### जी भरना

(१) तसल्ली होनी । प्रयोग—अरी मदनवान जो तू भी उसके साथ होती तो हमारा जी भरता (इंशा०—इंशा०, १११); पर बहुत जब तक घर अच्छा न मिले, तब तक जी भी तो नहीं भरता (मा—कौशिक, १३७) (÷)

(२) संतोष होना; अच्छा लगना । प्रयोग—अगर मन का काम न मिला तो कारीगर का जी नहीं भरता (कुली०—निराला, ११५); जब तक हम जी भर उभर पाते नहीं किस तरह तब जी बिना उभरे भरे (चुभते०—हरिऔध, १२); देखिए प्रयोग (१) में (÷) भी

### जी भारी होना

(१) चिन्तित होना । प्रयोग—दुख मिले मन हुआ दुखी मेरा तन हुआ भारी जी हुआ भारी (बोल०—हरिऔध, २०१) (÷)

(२) तबीयत खराब होना । प्रयोग—देखिए प्रयोग (१) में (÷)

### जी मचल जाना

बेतरह मन आ जाना । प्रयोग—तो मचलने न हम उसे दें जी अगर है मचल मचल जाता (बोल०—हरिऔध, १९९)

### जी मरोड़ना

मन में कष्ट होना, ममोचना । प्रयोग—बटाशंकर का जी मरोड़ गाकर रह गया (छोटो०—निराला, ६३)



### जी मालिश होना

मिचलाना । प्रयोग—गंध ही से उसका जी मालिश करने लगा (मान० (२)—प्रेमचन्द, ३९); अब जरी हुक्का तो पिलवा दो, नाश्ता करने के बाद एक चिलमभी नहीं पी । जी मालिश कर रहा है (मा—कौशिक, २८९)

### जी मिलना

(१) मित्रता होनी । प्रयोग—वह बेचारे मेरा बड़ा आदर करते हैं, पर अपना जी उनसे नहीं मिलता (रंग० (१)—प्रेमचन्द, ४०६)

(२) अनुकूल प्रकृति का होना ।

### जी में ऊना मानना

जी छोटा करना । प्रयोग—जनि जननी मानहु जिय उना (राम० (सु)—तुलसी, ८०९)

### जी में कसर होना

दुर्भाव होना । प्रयोग—आप जी में घर करें तब किस तरह जब कसर जी में हमारे हो भरी (बोल०—हरिऔध, २०३)

### जी में गड़ना,—पैठना,—बैठना

(१) हृदय में चुभना । प्रयोग—गोरे-गोरे गोलनि की हंसि-हंसि बोलन की, कोमल कपोलन की, जी में गड़ी गढ़ वह (शब्द०—देव, २३) (÷) (÷१); यह बात जो जी में गढ़ गई है (इंशा०—इंशा०, १०७) (÷१)

(२) प्रिय होना । प्रयोग—जब कि प्यारे गड़े तुम्हीं जी में । तब भला दूसरा गड़े कैसे (बोल०—हरिऔध, ५७); जी हमारा किस लिये रखते नहीं चाहते जी में अगर हैं बैठना (बोल०—हरिऔध, २०३); बात जी में चाहिए रखना नहीं चाहते जी में अगर हैं पैठना (बोल०—हरिऔध, २०३)

(३) प्रभाव पड़ना । प्रयोग—देखिए प्रयोग (१) में (÷)

(४) हमेशा के लिये याद रहना । प्रयोग—देखिए प्रयोग (१) में (÷१)

(५) मन में निश्चय होना । प्रयोग—जो हेतु उनके

जाने का उस समय बताया गया उससे संतोष न हुआ बात जी में बंटी नहीं (पद्यपराग—पद्मशर्मा, १०५)

(समा० मुद्रा०—जी में खुभना)

### जी में गांठ पड़ना

वैमनस्य होना । प्रयोग—किस लिए गांठों रहें मतलब गांठ पड़ जाय क्यों किसी जी में (बोल०—हरिऔध, २०५)

### जी में घर करना,—जगह करना

(१) सदैव ध्यान में रहना । प्रयोग—क्या कहें दुख है बड़ा, बातें भली कर सकी, जो आपके जी में न घर (बोल०—हरिऔध, २७) (÷); कबिता चाहे छोटी हो एक ही पंक्ति हो, पर अच्छी हो, जी में जगह कर ले (पद्म० के पत्र—पद्म० शर्मा, २२०) (÷)

(२) अच्छी तरह मन में जम जाना । प्रयोग—देखिए प्रयोग (१) में (÷)

(३) प्रिय होना । प्रयोग—हरिचन्द्र के ललित लेखों ने लोगों के जी में ऐसी जगह कर ली थी कि कवि वचन सुधा के हर नम्वर के लिये लोगों को टकटकी लगाए रहना पड़ता था (गुंनि०—बा० मु० गु०, ३१६); आप जी में घर करें तब किस तरह जब कसर जी में हमारे हो भरी (बोल०—हरिऔध, २०३); अतएव यद्यपि बिन में हैं पांडवों ने घर किये पर देह के व्यापार सारे हैं तुम्हारे ही लिये (जय०—गुप्त, ६८)

### जी में जगह करना

दे० जी में घर करना

### जी में जमना

मन में विश्वास होना, जमना । प्रयोग—तब भला वह किस तरह जी में जमे । जब बताई बात ही बेजड़ गई (चुभते०—हरिऔध, ३५); यह बात उसके जी में जम गई (गुं० कहा०—गुलेरी, ४४)

### जी में जी आना

धबराहट दूर होनी, घासका दूर होने पर राहत मिलनी । प्रयोग—तब नंद जसोदा ने आनन्द कर बहुत सा दान-पुण्य किया × × और सब वज्रवासियों के भी जी में जी आया (प्रेम सा०—ल० ला०, ४९); × × कान लगाने पर भी



गड़ी में कोई चढ़न-पहल नहीं सुनायी पड़ी तब जी में जी आया (सू०—सू० ४६०); कुछ ही बेर में बांदनी भी निकली। अब उस जानेवाले के जी में जी आया, कुछ धीरज हुआ (ठेठ०—हरिऔध, २८)

### जी में धरना

मन में खयाल करना। प्रयोग—कुल अभिमान हटकि हठि गली तँ जिय में कछु और धरी (सू० सा०—सूर, १४२४)

### जी में पैटना या बैठना

#### दे० जी में गड़ना

#### जी में फफोले पड़ना

मन को पीड़ा होनी। प्रयोग—घाप जी में जल रहे हैं तो जलें क्यों फफोले और के जी में पड़ें (चौखे०—हरिऔध, ५३)

### जी में बन आना

मन में इच्छा होनी। प्रयोग—अब तो जिय ऐसी बनि घाई, कही कोई किहुँ भाती (सू० सा०—सूर, ४३९०)

### जी में बात धंसना

किसी बात पर विश्वास करना या स्वीकार करना। प्रयोग—बात जी में आपके धंसती नहीं पर हमारा जी धंसा है जा रहा (बोल०—हरिऔध, २०३)

### जी में भेद बढ़ाना

दुराव करना। प्रयोग—बाली ताहि मारि गृह पावा देखि मोहि जिय भेद बढ़ावा (राम० (कि)—तुलसी, ७६२)

### जी में मान लेना

बुरा मानना। प्रयोग—छित इक परस भए उखलसो, बहुत मानि जिय लीन्ही (सू० सा०—सूर, ४३८४)

### जी में लेना

बुरा मान लेना। प्रयोग—बारक कहै उलूल बांधे, बहे कान्ह जिय लीन्ही (भ० सा०—सूर, २६७)

### जी में शूल होना

जी में किसी बात का कांटे की तरह चुभना। प्रयोग—

बारक जाइवी मिलि मायो। को जाने तन छूटि जाइयो, मूल रहै जिय सायो (सू० सा०—सूर, ३८५०)

### जी में सूई चुभाना

मर्म भेदी बात कहनी। प्रयोग—कहा सोमित्रिने—मा चुप हुई क्यों? चुभाती बिस में हो यों सुई क्यों? (साकेत—गुप्त, ५५)

### जी रखना या रहना

इच्छा पूरी करनी—प्रसन्न करना या होना। प्रयोग—ध्रुव आप पद लीजिए जिसमें बेटे का जी रह जाय सो कीजिए (ईशा०—ईशा०, ९८); जी हमारा किसलिये रखते नहीं चाहते जी में अगर है बैठना (बोल०—हरिऔध, २०३)

### जी लगना

मनोरंजन होना अच्छा लगना। प्रयोग—दो-तीन दिन रह कर कुल्लो की पाठशाला और पत्नी को देखकर मैं लगनऊ चला आया। लेकिन जी नहीं लगा (कुल्ली०—निराला, १८८)

### जी लगाना

(१) पूरा ध्यान लगाना। प्रयोग—जी लगा यह पाठ हम पढ़ते रहें कट गये हैं बाल बढ़ने के लिये (चुभते०—हरिऔध, ९)

(२) प्रेम करना।

(३) प्रतीक्षा करनी।

### जी लड़ाना

(१) प्राणों की बाजी लगा देना। प्रयोग—जब नहीं लाड़ प्यार के दिन हैं जी लड़ाये लड़ा सके जी जी (चुभते०—हरिऔध, ३६) (÷)

(२) पूरे मन से कोई काम करना। प्रयोग—देखिए प्रयोग (१) में (÷)

### जी ललकना

लालापित होना। प्रयोग—कौन ऐसा मनुष्य है जिसे अपनी प्रशंसा सुनने को जी न खलक उठता हो (भट्ट नि०—बा० भट्ट, १३८)



### जी लहराना

(१) इच्छा होनी। प्रयोग—इयानाय का जी तो लहराया कि लगे हाथ उसे भी ले लो X X पर जोगेश्वरी इस पर राजी न हुई (गहन—प्रेमचन्द, ७)

(२) आनन्द होना।

### जी लाना

प्रेम करना। प्रयोग—मैं तुम्हें ही जिउ लावा दूँ मैं नन्ह महं वास (पद०—जायसी, ३११५)

### जी लुटना

मन मोहित हो जाना। प्रयोग—पर लुटेरे हैं तरस खाते नहीं, लूट में जी तक हमारा लुट गया (बोल०—हरिऔध, २०२)

### जी लेकर भागना

दे० जी छोड़कर भागना

### जी लेना

(१) प्राण लेने के समान कष्ट देना। प्रयोग—जिपरा मोही लेहुने, बिरह तपाइ-तपाइ (कबीर ग्रंथा०—कबीर, (८)(५); सो रानी संसार मनि दखिना कंगन दीन्ह। घाछरि रूप देखाइकं परि गहनें जिउ लोन्ह (पद०—जायसी, ३९४); नव रहे लेते हमारा जी न तुम हम तुम्हें कब जी नहीं देते रहे (बोल०—हरिऔध, ५३)

(२) प्राण लेना। प्रयोग—देखिए प्रयोग (१) में (÷)

(३) रहस्य या जाना।

### जी लोटपोट होना

(१) बहुत खुशी होनी। प्रयोग—रमा की आँखें खुल गयीं, जी लोट पोट हो गया (गहन—प्रेमचन्द, ५७)

(२) मन में बड़ी तीव्र इच्छा होनी। प्रयोग—इतने में जो एक हिरनी उसके सामने घाई तो उसका जी लोट पोट हो गया (इंशा०—इंशा०, ९१)

### जी शूली पर टंगा होना

मन में बहुत दुःखिता होनी। प्रयोग—पर मुझे भय है कि प्रायका जी तो सूनी पर टंगा है (भा० ग्रं० (१)—भारतेन्दु, ६०४)

### जी सन जाना

मन का पूरी तरह लिप्त होना। प्रयोग—कर थके सैकड़ों जतन, पर जी जाति हित में कभी नहीं सनता (चुम्बते०—हरिऔध, ६०)

### जी सूख जाना

(१) अत्यन्त निराशा होनी। प्रयोग—बूढ़ि बूढ़ि तरें झोधि-थाह मनआनन्द यौ जीव सूख्यो जाय ज्यों ज्यों भोजत सरवरी (धन० कवित्त—धना०, २१०)

(२) अत्यन्त भयभीत होना।

### जी से उतर जाना

दृष्टि से गिर जाना, भला न जंमना। प्रयोग—चेक निकलने के बाद रफीक के जी से वह बिलकुल उतर गई (ये कोठे०—अ० ना०, ३३); जब कि तुम हो उतर गये जी से आँख से तो उतर न क्यों जाते (बोल०—हरिऔध, ४०)

### जो से जाना

मर जाना। प्रयोग—जो रहा है बीत जी है जानता क्या कहें जी से हमें जाना पड़ा (बोल०—हरिऔध, २०२)

### जी हरा होना

आनन्दित होना। प्रयोग—बारहदरी में बैठकर चहर और फुझारों की शोभा देखने में जी कैसा हरा हो जाता है ? (परोक्पा०—श्री० दास, ११०)

### जी हलका होना

(१) मन का बोझ दूर होना। प्रयोग—नस्ते X X आँसू बहाकर थोड़ी देर के लिए अपना जी कुछ हलका कर लेती थी (मिसा०—कौशिक, १९०)

(२) शारीरिक विकार दूर होने से तबियत में हल्कापन आना।

### जी हाथ में रखना या रहना

(१) मन को बस में रखना। प्रयोग—जिसका जी हाथ में न हो उसे ऐसी बातों में भ्रमती है (इंशा०—इंशा०, ११०); वह करें जो कर नहीं बोई गया जी करे तो हाथ में जी को रखें (बोल०—हरिऔध, १९७)



(२) किसी के विचारों को अपने प्रति अच्छा रखना ।

(समा० महा०—जी हाथ में लेना)

### जी हारना

(१) प्रेम करना, हृदय खोलावर कर देना । प्रयोग—जीव विचारों पर्यो प्रति सोचनि हारि रह्यो मू पड़ा फिरि हारै (धन० कवित्त—धना०, १४५)

(२) हिम्मत पस्त होनी ।

(३) दिल ऊब जाना ।

### जी हिलना या हिलाना

मन का करुणा या भय से उद्दिग्भ होना या करना । प्रयोग—तो न देखे हिला किसी जी को लोग दाखी हिला हिला करके (बोल०—हरिऔध, १२६)

### जी होना

प्रेम होना, अच्छा लगना । प्रयोग—दिस्टि न आवै आपन पीऊ । पुरुष पराए ऊपर जीऊ (पद०—जायसी, ४०११)

### जीट उड़ाना

डोंग मारना । प्रयोग—रमानाथ ने जवानों के स्वभाव के अनुसार जानपा से खूब जीट उड़ाई थी (मदन—प्रेमचन्द, १६)

### जीते जी नाम न लेना

जीवन भर कोई सम्बन्ध न रखना । प्रयोग—सूरदास प्रभु की री सजनी, जनम न लँहौ नाउं (सू० सा०—सूर, ३०४९)

### जीते जी मर जाना

(१) अनुभूति शून्य, मृतक-सदृश हो जाना । प्रयोग—जीवत मृतक हूँ रहै, तजै जगत की घास । तब हरि सेवा आपण करै, मति दुख पावै दास (कबीर ग्रंथा०—कबीर, ६४)

(२) जीवन में ही मृत्यु से बढ़कर कष्ट भोगना ।

### जी पेंठ जाना

(१) बोलने की शक्ति न रहनी । प्रयोग—पता नहीं और किसी को भी वह सात्वना दे सकता है या नहीं, पर पिता से ऐसी बात करते तो उसकी जीभ पेंठ जाती है

(शेखर० (२)—अज्ञेय, १४३); जो नहीं जीभ पेंठ जाती तो पेंठ दें जीभ, पेंठते क्यों है (बोल०—हरिऔध, ९७)

(२) प्यास आदि के कारण मुँह सूखना ।

### जीभ कांटा होना

जीभ सूख जानी । प्रयोग—जब कि बोना पसन्द है कांटा, हो गई जीभ नू तभी कांटा (बोल०—हरिऔध, ९९)

### जीभ काटना,—काढ़ लेना,—खिचवा लेना,—निकाल लेना

ऐसा दण्ड देना कि बोलती बन्द हो जाए । प्रयोग—पुनि अस कबहुं कहसि घरफोरी । तब फिर जीभ कड़ावटं तोरी (राम०(अ)—तुलसी, ३८५); जाति की नाक काट गई जिससे काट उस जीभ को न क्यों हम लें (चुमते०—हरिऔध, ८४); पड़ गई जाति गाढ़ में जिससे काड़ उस जीभ को न क्यों लेते (चुमते०—हरिऔध, ८५); सोच ली जाय जीभ क्यों उनकी गालियाँ जो कि जी जले ही दें (चुमते०—हरिऔध, १४); पेट की चापलूसियों में पड़ गालियाँ जो कि जाति को दें चाहिए तो बिना रुके हिवके जीभ उनकी निकाल ही लें (चुमते०—हरिऔध, ८४)

(समा० महा०—जीभ निकाल लेना)

### जीभ काढ़ लेना

दे० जीभ काटना

### जीभ खिचवा लेना

दे० जीभ काटना

### जीभ खुलना या खोलना

(१) बोलना । प्रयोग—बादुर मोर कोकिला बोले । हते अलोप जीभ सब खोले (पद०—जायसी, ३५४४); या पै खोले जीह जीन सो मूरख कूर संवार (भा० ग्रं० (२)—भारतेन्दु, १३५); मियाँ साहब जीभ खोलते हुए भय लगता है (सु० सु०—सुदर्शन, १५२)

(२) माँगना । प्रयोग—सरदार साहब पेट माँगता है तब जीभ खुलती है, नहीं तो हम ऐसे बेमैरत कभी न पे (सु० सु०—सुदर्शन, १४)

### जीभ चटकारना

सुस्वाद भोजन के बाद वह भाव बना रहना कि और



मिले । प्रयोग—लाल फूलोंकी ली, —मेरी लालसा—जीभ चटकारती है (कलौ०—पंत, ८७)

### जीभ चटोरी होना

बाजार की, इधर उधर की चटपटी चीजें खाने वाला । प्रयोग—हर चटोरपन बहुत पड़ चाट में क्यों चटोरी जीभ पर चौपट करे (बोल०—हरिऔध, ९७)

### जीभ चलना या चलाना

घुंघटापूर्वक बोलना । प्रयोग—घब लगे जाय मुंह चलाने क्यों जीभ तो कम नहीं रही चलती (बोल०—हरिऔध, ४५)  
(२) चटोरपन की इच्छा होनी ।

### जीभ तालू से न लगना

(१) एकदम चुप न रहना, बोले जाना । प्रयोग—रसना तालू लौं नहिं लावल, पीवं पीवं पुकारत (सू० सा०—सूर, २९५०)  
(२) बच्चे का एकदम रोए जाना ।

### जीभ दबा लेना

चुप्पी साधना । प्रयोग—तब मुने नाम ही सुपारों का लोग क्यों जीभ हें दबा लेते (चुमते०—हरिऔध, ४७)

### जीभ निकलना

(१) लातच करनी । प्रयोग—जीभ निकली भली नहीं लगती पेट निकला पसंद कब आया (बोल०—हरिऔध, २१५)  
(२) बड़ा कष्ट पाना ।

### जीभ निकाल लेना

दे० जीभ काटना

### जीभ पकड़ना

बोलने से रोकना । प्रयोग—गहि न जाति रखना पाहु की, कहो जाहि जोइ नूमे (गीता० (अ)—तुलसी, ६२)

### जीभ पतली होना

घनाप-लगाप बोलनेवाला । प्रयोग—बुम्हारी जीभ बहुत पतली हो गई है, कृष्ण (पत्ती०—रेणु, ४९५)

### जीभ पनिया जाना

लालची होना । प्रयोग—भूछ खाई हुई जीभ बूढ़ों की पनिया जानी है (पत्ती०—रेणु, ३८)

### जीभ पर सरस्वती बसना

(१) सदा सत्य बोलना । प्रयोग—सबमें प्रसिद्ध था कि उनकी जीभ पर सरस्वती बिराजती है (मान०(८)—प्रेमचंद, १६)  
(२) आयुर्विद या बड़ा विद्वान कवि होना ।

### जीभ पीपल का पत्ता होना

अस्थिर जवान वाला । प्रयोग—तब बनी हम बात के होंगे नहीं जीभ पत्ता जब कि पीपल का बनी (बोल०—हरिऔध, ९८)

### जीभ में ताला पड़ना

कुछ न बोल पाना । प्रयोग—तुम छपना काम करो, कहने के लिए दुनिया है किसी की जीभमें ताला पड़ा है ? (लिली—निराला, ९३)

(समा० मुहा०— जीभ में ताला लगना)

### जीभ लड़ाना

(१) तर्क-वितर्क करना । प्रयोग—इन दोनों में न तो हाथा-बाही हुई है और न गिर फुटव्वल, केवल जीभ को लड़ते रहे (सूग०—वृ०वर्मा, ४५)

(२) बकबक करना ।

### जीभ लपलपाना

चलने की इच्छा करनी । प्रयोग—क्यों न गिर जाय है अगर गिरना किस लिये जीभ लपलपाती है (बोल०—हरिऔध, ९७)

### जीभ संभालकर बोलना

सम्पत्तापूर्वक बातें करनी, अनाप-सनाप बकना । प्रयोग—जीभ संभालि न बोलत हो मुंह चाहत क्यों अब खापो खपरे (घन० कवित्त—घना०, १९९); जाति को है संभाल लेना तो जीभ को हम संभालकर बोलें (चुमते०—हरिऔध, ४५)

### जीभ हिलाना

कुछ बोलना । प्रयोग—पिताजी तो तैयार में और खब भी हैं, केवल मेरे जीभ हिलाने की देर है (मिसा०—कोशिक, १७७)



### जीवट के होना

प्रेमपूर्ण व्यक्ति होना, हिम्मत न हारने वाला। प्रयोग—  
प्रेमवर्धकर साहस और जीवट के आवामी थे (प्रेमा०—प्रेमचंद, १२५)

### जीवन का बोझा होना

जीवन की मुसीबतों को सहना। प्रयोग—दसमें सहज-  
गति है, अहंकार नहीं, वैसे जीवन का बोझा डोले हुए  
किसकी कमर नहीं झुकती (वीने०—रा० रा०, २०७)

### जीवन का स्वप्न उड़ जाना

मन की इच्छा न पूरी होनी। प्रयोग—उनके जीवन का  
स्वप्न उड़ा चला जा रहा था (मान० (७)—प्रेमचंद, ३६)

### जीवन काटना

जैसे-तैसे जीवन के दिन बिताना। प्रयोग—वया संसार  
में कोई ऐसी जगह नहीं है × × जहाँ वह संसार से  
अलग-अलग सबसे मुह मोड़कर अपना जीवन काट सके  
(गवन—प्रेमचंद, १३२)

### जीवन का कार्य समाप्त होना

मर जाना। प्रयोग—इनका जीवन कार्य समाप्त हुआ  
(गुलरी ग्रंथ (१)—गुलेरी, २७८)

(समा० मुहा०—जीवन का दीपक बुझना)

### जीवन की संध्या होना

जीवन का अन्त निकट होना। प्रयोग—देवा, चेहरा  
एक दिव्य आभा से पूर्ण है, लेकिन देह पहले से दुबली,  
जैसे कुल्ली समझ गए हैं, जीवन की संध्या (कुल्ली०—  
निराला, १२२)

### जीवन चलना

जीवन के दिन बीतना। प्रयोग—यही स्वभाव बना  
रहा तो कैसे चलेगा जीवन ? (दूधगाछ—दे० स०, २५४)

### जीवन भार होना

जीवन से उदासीन होना, जीवन दुःखमय होना। प्रयोग—  
और अमरकान्त ऐसा चिरन्तन हो रहा था, मानों जीवन  
उसे भार हो रहा हो (कम०—प्रेमचंद, १२)

(समा० मुहा०—जीवन भारी होना)

### जीविका चलना या चलाना

आवश्यकता की पूर्ति होनी या करनी, जीवनयापन  
करना। प्रयोग—य लोग कमशः विपुल हिन्दुत्व की  
ओर भुके घा रहे हैं और जीविका चलाने के लिए उन्होंने  
कपड़ा बुनना, चूना बेचना, और अन्वय व्यवसाय आरंभ  
किये हैं (कवीर—ह० प्र० दि०, ८)

### जुआ हारना

घपना दांव खोना। प्रयोग—जुआ हारि समुझी मन  
रानी। जुआ दीन्ह राजा कहं जानी (पद०—जायसी, ८१९)

### जुए को कंधे से उतारना

स्वतन्त्र हो जाना। प्रयोग—वह कोशल के प्रभुत्व का  
जुआ उतार फेंकना चाहता है (वैशाली० (१)—चतुर०, ३४५)

### जुड़ाना

(१) शांत पड़ना, क्रोध शांत होना। प्रयोग—राम  
बचन मुनि कछुक जुड़ाने (राम०(वाल)—तुलसी, २८३)

(२) दुःख दूर होना, आनन्द मिलना। प्रयोग—रामहि  
देखि बरात जुड़ानी (राम०(वाल)—तुलसी, ३११); इतने  
में जहाँ से सखी-सहेली × × सब दीदी हुई आई, समा-  
चार मुनि बहुत जुड़ाई (स० ग्रंथा०—स० मिश्र, १५); जिनसे  
ये प्रणवी प्राण प्राण पाते हैं। जी भर कर उनको देख  
जुड़ा जाते हैं (साकेत—गुप्त, २०६)

### जुम्मा-जुम्मा आठ दिन दुनिया में आए होना

घननुभव। प्रयोग—अभी घाघको मालूम ही क्या है ?  
जुम्मा-जुम्मा आठ रोज तो आपको दुनिया में आए हुए  
(मा—कोशिक, १५९)

(समा० मुहा०—जुम्मा जुम्मा आठ दिन की  
पैदाइश)

### जुलाहे का गुस्सा डाढ़ी पर उतारना

क्रिन्नी का क्रोध किसी अन्य पर उतारना। प्रयोग—अम्मा  
जुलाहे का गुस्सा डाढ़ी पर न उतारो (गोदान—प्रेमचंद, २३१)



जू न रेंगना

२७८

जूती की नोक पर मारना

जू न रेंगना

कोई घसर न होना। प्रयोग—आज पांच सेर की बिक्री में भी कहीं जू नही रेंगती (तिलो—प्रसाद, ७)

जूड़ी आना

(१) डर जाना। प्रयोग—तो मरे दूब नाम मुन रन का है हमें आ गई अगर जूड़ी (चुभतै०—हरिऔध, ९७)

(२) क्रोध होना।

(३) मलेरिया बुखार आना।

जूता काटना

जूते से पैर में छाला पड़ना। प्रयोग—हैं दवे पांव के तले तो क्या-क्या हमें काटते जूते नहीं (चुभतै०—हरिऔध, ११६)

जूता खाना

(१) जूतों की मार खाना। प्रयोग—मैंने कोई अनुचित कर्म किया होता तो आपकी जूतियां खाकर भी सिर न उठाता मगर मैंने कोई अनुचित कर्म नहीं किया (मान० (१)—प्रेमचंद, २११) (÷)

(२) बुरा भला सुनना, तिरस्कृत होना। प्रयोग—चल वे चल, राज के प्रबन्ध के दिन गए, जूती खाने के दिन आए (भा० ग्रंथा० (१)—भारतेन्दु ८८); साँव कहें ते पनही खावें। झूटे बहु बिधि पदवी पावें (भा० ग्रं० (१)—भारतेन्दु, ६००); देखिए प्रयोग (१) में (÷) भी

जूता चलना

(१) लड़ाई-झगड़ा होना। प्रयोग—आए दिन स्त्री-पुरुष में जूते चलते रहते हैं (मान० (२)—प्रेमचंद, ११३); गोकुल तथा ध्याम नाव में भी जूता चल जायगा (मा—कौशिक, ३६८)

(२) जूते से मार-पीट होनी।

जूता चलवाना

लड़ाई करवाना। प्रयोग—देखना, तीनों में कैसा जूता चलवाता है (मा—कौशिक, ३७५)

जूता जाने पर भी धट्टा बना रहना

पूर्व स्थिति का कुछ न कुछ घसर बना रहना। प्रयोग—

लोग अभी तक यही समझते थे कि होरी के पास दवे हुए रुपये हैं × × जूते जाने पर भी उसके पट्टे बने रहते हैं (गोदान—प्रेमचंद, १०३)

जूता दिखाना

अपमान करना। प्रयोग—कल मेरे हाथ में रुपये देखेंगे, तो वे ही जो आज मुझे जूता दिखाते हैं, मेरी जूती को तेल चुपड़गे (वीने०—रा० रा०, १५१)

जूतियां उठाना,—सीधी करना

नीची से नीची सेवा करनी, खुशामद करनी। प्रयोग—साले बड़े-बड़े यूसुफ अशोक कुमार और पृथ्वीराज बने एक्स्ट्रा मण्डलायरी की जूतियां सीधी करते हैं (पैतरे—अशक, १३२); या तो बिलायत की सैर करेगा, या यहाँ अंगरेजों के साथ शिकार खेलेगा, सारे दिन उन्हीं की जूतियां सीधी करेगा (रंग० (१)—प्रेमचंद, २९९); टके के लिए वेदवाधों की जूतियां उठाता है, उस पर लज्जा नहीं आती (सैदा०—प्रेमचंद, ३४)

जूतियां सीधी करना

दे० जूतियां उठाना

जूतियों के कारण,—तुफैल से

कृपा से। प्रयोग—जिन राणा की जूतियों के कारण भामाशा-भामाशा बना है, वही राणा पैस-पैसे को मुहताज हों (राधा० ग्रंथा०—राधा०दास, ७७७); हुजूर, गो कि हम गरीब हैं, मगर आपकी जूतियों के तुफैलसे हमेशा रइसों की हीमोहवत (संगति) रही है (मा—कौशिक, १९९); हुजूर की जूतियों की बडीलत चैन करते हैं (मा—कौशिक, ३७३-३७४)

जूतियों के तुफैल से

दे० जूतियों के कारण

जूती की नोक बराबर

अत्यन्त तुच्छ। प्रयोग—मैं खन्ना को जूतियों की नोक के बराबर भी नहीं समझती (गोदान—प्रेमचंद, १७१)

जूती की नोक पर मारना

तुच्छ समझना, परवाह न करना। प्रयोग—अगर तुम्हें हमारी कदर नहीं तो हम इन सब सालों को अपनी फटी चप्पल की नोक पर मारते हैं (बुँद०—अ० ना०, ४०४)



(समा० मुहा०—जूती पर रखना)

जूती के बराबर न होना

अत्यंत तुच्छ होना। प्रयोग—मैं तो उनकी जूतियों के बराबर भी नहीं (कर्म०—प्रेमचंद, १७४)

जूती को तेल चुपड़ना

खुशामद करनी। प्रयोग—कल मेरे हाथ में रुपया देखेंगे तो वे ही जो आज मुझे जूता दिखाते हैं, मेरी जूती को तेल चुपड़ेंगे (वीने०—रा० रा० १५१)

जूती चटकारना

(१) मारा-मारा फिरना। प्रयोग—कबलत कल तक जूतियां चटखाते थे, आज मिनिस्टर हो गए (बूँद०—अ० ना०, ४०); जूते चटखाता आया था, यहाँ महीनों हमारे साथ फुटपाथों पर सोता रहा (पैतरे—अशक, ५६)

(२) खुशामद करते फिरना। प्रयोग—क्या लड़कियाँ उन लोगों को पसन्द करती हैं जो उनके पीछे जूते चटकारते फिरते हैं? (शेखर (१)—अज्ञेय, २१९)

(समा० मुहा०—जूते फटफटाना)

जूती-पैजार होना

लड़ाई-भगड़ा, मारपीट होनी। प्रयोग—इससे क्या फायदा कि लोग पी-पीकर बदमस्त हो जायँ और आपस में जूती पैजार होने लगे? (रंग० (२)—प्रेमचंद, ४३१)

जूते बरसाना

जूतों से खूब पिटाई करनी। प्रयोग—मजा यह कि राधाकिशन बाबू आएंगे, तो वह अलग मुझ पर जूता बरसाएंगे (मा—कौशिक, ३५२)

जूतों से खबर लेना,—पूजा करना

जूते मारना। प्रयोग—किसी बदमाश से कह दूँगा इजलास पर बचा की जूतों से खबर ले (मान० (३)—प्रेमचंद १९७); मालिक को पता लगता तो वे × × जूतों से पीठ की पूजा करते (बल०—नागा०, ३४)

(समा० मुहा०—जूतों से घात करना, जूते लगाना)

जूतों से पूजा करना

दे० जूतों से खबर लेना

जेब

पास का पैसा। प्रयोग—उनकी जेब मेरे लिए है (कठ०—दे० स०, ५५)

जेब कट जाना

(१) पैसा खर्च हो जाना। प्रयोग—इसका खास सबब था बनार आते ही बड़े भाई साहब का पुनः जुआ-बंगोड़ी जमात में जुड़ जाना, जिससे सीसा कटते जरा भी देर न लगी (अपनी खबर—उग्र, ६१); नाई की दुकान पर जाने में उनकी शान घटती है और अच्छे नाई को घर पर बुलाने में जेब कटती है (मेरे०—गुलाब०, ३४)

(२) जेब से रुपया-पैसा चुरा लिया जाना।

जेब खाली होना

पास में रुपया-पैसा न होना। प्रयोग—अरे रशीद भाई, आज कुछ जेब खाली है (पैतरे—अशक, १०५)

जेब गरम होना

(१) खूब लाभ होना। प्रयोग—अगर देव ने स्वदेशी को अपना लिया, तो आपकी दुकान पर "मेड इन इंग्लैंड" के ठप्पे वाला माल कैसे बिकेगा और आपकी जेब कैसे गरम होगी (कठ०—दे० स०, २२-२३)

(२) घुस मिलना।

जेब में पड़े रहना

बश में होना। प्रयोग—तुम्हारे जैसे एक हजार बुद्ध उसकी जेब में हैं (गोदान—प्रेमचंद, १९५)

जेल काटना,—की रोटियाँ खाना,—को हवा खाना

जेल में सजा भुगतना। प्रयोग—क्या बड़ापे में जेल की रोटियाँ तोड़ोगे? (गढ़न—प्रेमचंद, १५०); यही नहीं, उसे जेल की हवा खानी पड़ी (सा०सी०—महा०द्विषदा, १२९); अभी साल की जेल काट कर आया है, भले घर में कोई घुसने नहीं दे (शेखर० (२)—अज्ञेय, १७५); ओरों की तो मैं नहीं कहता, लेकिन मेरा बस चले, तो उसके हाथ-पैर तोड़ दूँ, चाहे जेल ही क्यों न काटना पड़े (रंग० (१)—प्रेमचंद, २१९); खूब खातिर करना उसके



खूब बकं घोर फिर दाराम से जेल काटे (ज्ञान०—यशपाल, ११०)

### जेल को रोटियां तोड़ना

दे० जेल काटना

जेल की हवा खाना

दे० जेल काटना

जंकार करना

गुस्सागान करना । प्रयोग—जगि कोटि जाको दरबार, मधुप कोटि करे जंकार (कबीर ग्रंथा०—कबीर, २०३)

जैसा योना वैसा काटना

जैसी करनी वैसा फल पाना । प्रयोग—काली काल तत्काल है, बुरा करी जिनि कोइ । अनबावें लौहा दाहिणी, बोंवें मु लुगाता होइ (कबीर ग्रंथा०—कबीर, ५६); जैसोइ बोइयें तैसोइ लुनिगे, कर्मन भोग घमाने (सु० सा०—सूर, ६१); करि कुम्प विधि, परबस कीन्हा बबा सो लुनिग, लहिअ जो दीन्हा (राम०(अ)—तुलसी, ३८६)

जैसा मुंह वैसा धप्पड़ होना

जैसा व्यक्ति हो उसके साथ वैसा व्यवहार करना । प्रयोग—जैसा मुंह वैसा धप्पड़ जोड़ तोड़ टटोल लेते हैं (इंशा०—इंशा०, ९५)

जैसा मुंह वैसा बीड़ा मिलना

जैसा करना वैसा पाना । प्रयोग—जैसे मुंह होता है, वैसे ही बीड़े मिलते हैं (मान० (१)—प्रेमचंद, १५५)

जैसा सूखा साधन वैसा, हरा भादों

हर स्थिति एक सी होनी । प्रयोग—मुझे क्या करना है ? जैसा सूखा साधन वैसा हरा भादों (प्रेमा०—प्रेमचंद, ३१९)

(समा० मुहा०—जैसा साधन वैसा भादों)

जैसे से तैसा करना या होना

जो वैसा हो उसके साथ वैसा व्यवहार करना । प्रयोग—लेहू भया ! गहि सीसन तें दधि की मटकी घब कामि करी कित जैसे सो तैसे भए ही बने घन आनन्द भाय घरी जित की नित (घन० कवित्त—घना०, १९९)

(समा० मुहा०—जैसे को तैसा देना)

जैसे जाना वैसे ही लौट आना

तुरन्त लौट आना । प्रयोग—वे भी पर पर नहीं मिले, जैसा गया वैसा ही लौट आया (रैश्मो०—राम० वर्मा, ३९)

जोंक की तरह चिपक जाना

हर समय साथ लगे रहना, पिन्ड न छोड़ना । प्रयोग—अपने मन का काम होता है तब तो जोंक की तरह चिपट जाता हूँ (शेखर० (२)—अज्ञेय, ४२)

(समा० मुहा०—जोंक की तरह पीछे लगना,— होकर लिपटना)

जो कहा जाय सो थोड़ा

वर्णनातीत होना । प्रयोग—मंगल मूल राम सुत जायू । जो कछु कहिय घोर सब तायू (राम०(अ)—तुलसी, ३७३)

जोग जागना

योग की अनुभूति होनी । प्रयोग—पिजर प्रेम प्रकासिया, जाग्या जोग अनंत (कबीर ग्रंथा०—कबीर, १३)

जोड़-जोड़ कर

थोड़ा-थोड़ा करके । प्रयोग—ज्यूं मापी मधू सवि करि, जोरि जोरि घन कीनो (कबीर ग्रंथा०—कबीर, १७०)

जोड़ तोड़ का होना

मुकाबले में बराबरी का होना । प्रयोग—जैसा मुंह वैसा धप्पड़ जोड़ तोड़ टटोल लेते हैं (इंशा०—इंशा०, ९५)

जोड़ तोड़ लगाना

(१) टीका टिप्पणी करना । प्रयोग—बाबुदेव महाराज जरा फासले से चौकी पर बैठे उनके इलाकों पर अपने जोड़ तोड़ लगाते जाते थे (गोली—चतुर्०, २०१)

(२) दांव पेंच करना, उपाय करना । प्रयोग—उस बेचारी ने मुझे रखने के लिए जोड़ तोड़ भी बहुत लगाये (मिसा०—कौशिक, १००)

जोड़ा करना

संभोग करना । प्रयोग—वे मुकन्या के पास आए और उससे जोड़ा करना चाहा (गुलेरी ग्रंथ (१)—गुलेरी, १७)



### जोड़ा फूटना

विधवा या विधुर होना । प्रयोग—फूट जोड़ा गया जनम भर का । क्यों न वह फूट-फूट कर रोती (बोलो—हरिऔध, ६९)

### जोड़ी से हाथ फेरना

मुगदर की जोड़ी में कसरत करनी । प्रयोग—दोनों इस जोड़ी से पांच-पांच सौ हाथ फेरते थे (गदन—प्रेमचन्द १७८)

### जोत देना

काम में लगा देना । प्रयोग—अभी खेलने खाने के दिन हैं, इसी समय जोत होगी तो कलेजा सूख जायगा (बल्लो—नागा०, ४)

### जोत से जोत मिलाना

ब्रह्म में मिल जाना (आत्मा का) । प्रयोग—तिस जोतिहि जोति मिलाऊंगा, तो मैं बहुरि न भौ जलि पाऊंगा (कवीर प्रबंध०—कवीर, ९८)

### जोर डालना

बधाव डालना । प्रयोग—मैंने उनसे कहा भी कि इपटा के लोग घपना लिखा नाटक खेलेंगे । मेरा धम बेकार जायगा, पर उन्होंने बड़ा जोर दिया (पैतरे—अशक २७); इस बार उनसे इस यात्रा पर आप पुस्तक लिखवाइये × × इसके लिये उन पर अभी से पूरी ताकत से जोर दालिए (पद्म० के पत्र—पद्म० शर्मा १४७)

### जोर पकड़ना

प्रगति में तीव्रता आनी ; जागे बढ़ना । प्रयोग—“काहे रे घुमरू, मंदिर जोर पकड़ रहा है” (मुल्ले०—भाग० वर्मा, १६५)

(समा० मुहा०—जोर बांधना)

### जोर मारना

(१) प्रभावपूर्ण होना । प्रयोग—कभी-कभी यदि उसमें प्राचीन संस्कार जोर मार जाते हैं तो वह विघ्नेश्वर के पांच पंक्तों का स्मरण करते हुए × × अपनी यात्रा को मंगलमय बनाता है (मेरे०—गुलाब०, ११८)

(२) बहुत प्रयत्न करना ।

(समा० मुहा०—जोर लगाना)

### जोश ठण्डा पड़ना

उमंग कम हो जानी, उत्साह खीला होना । प्रयोग—मेरा प्रश्न सुनते ही उस कंदी का जोश ठंडा पड़ गया (ईस्टा०—भाग० वर्मा, २९)

### जो भर

थोड़ा-सा । प्रयोग—पर उसका रहन-सहन फैशन के अंध भक्तों से जो भर घटकर न था (मान० (१)—प्रेमचंद, ४६); अंध अधापन से दिव की, न दिवता कम होगी जो भर (बैदेही०—हरिऔध, ३७)

### जोहर खुलना

गुण प्रकट होना । प्रयोग—कभी कभी नहीं, अक्सर संकट पड़ने पर ही आदमी के जोहर खुलते हैं (मान० (२)—प्रेमचन्द, २८); रवींद्र भाई के जोहर तो हायल में खुलते हैं (पैतरे—अशक, १००)

### जोहर दिखाना

पराक्रम करना । प्रयोग—पड़े भीड़ जोहर उन्होंने दिखाये (चुमते०—हरिऔध, १८८)

### ज्ञान छाँटना

जबरदस्ती अपनी विद्वत्ता दिखाना । प्रयोग—तुमसे कहा संबंध ब्रह्म से क्यों छाँटत हो ज्ञान (भा० प्रबंध० (२)—भारतेन्दु, १३८); छाँटना सत्यानासी की जड़ है (प्र० पी०—प्र० ना० मि०, ६३)

(समा० मुहा०—ज्ञान भाड़ना)

### ज्योंतार बैठना

अतिथियों का पंगत में खाने को बैठना । प्रयोग—बिबिध पाति बैठी जेवनारा (राम० (बाल)—तुलसी, १११)

### ज्वर चढ़ना

(१) गुस्सा आना । प्रयोग—सतसई की टीका मिली इसे देखकर तो मुझे भी ज्वर चढ़ता है (पद्म० के पत्र—पद्म० शर्मा, २०४)

(२) जोश चढ़ना ।

(३) बुलार आना ।



## झ

### झंभी कौड़ी

तनिक सा धन । प्रयोग—हीले हवाले में इतने बरस निकल गये, नंदों के हाथ झंभी कौड़ी भी न आई (बूंद०—अ० ना०, १९)

### झंझोड़ना, झकझोरना

(१) तर्क वितर्क करके सही-सही घोर स्पष्ट बात कबूल करवाना । प्रयोग—विश्वभारती में हिन्दी को समुचित स्थान दिलाने के लिए आन्दोलन करना पड़ेगा विश्व भारती के विद्यार्थियों को झंझोड़ना पड़ेगा (पट्टम० कैपत्र—पट्टम० शर्मा, १५०)

(२) मानसिक उथल-पुथल कर देना । प्रयोग—महादेव प्रसाद सेठ के उस अहिंसक धारा ने मेरे प्राणों को कंपा, हिला, झकझोर कर रख दिया (अपनी खबर—उग्र, १४)

### झंडा उठाना

आन्दोलन प्रारम्भ करना । प्रयोग—जया मटियाबुज ने हमला बोल दिया है या किसी नये आन्दोलन का झंडा उठा लिया है जो पक्षों का उत्तर देते भी नहीं बनता (पक्ष० के पत्र—पट्टम० शर्मा, १११)

### झण्डा खड़ा करना

आन्दोलन करना । प्रयोग—मैंने ही गांधीजी का झंडा खड़ा किया (रंग० (२)—प्रेमचंद, ३५८)

### झंडा गाड़ना

(१) प्रचार करना । प्रयोग—बड़े ही अच्छे अवसर पर

द्विवेदीजी ने सरस्वती की उक्त संस्था में "भाषा और व्याकरण" लिख कर अपनी हिन्दी दानी के झण्डे गाड़ दिये हैं (गु० नि०—दा० मु० गु०, ४३३); तो तुम जिम्मेदारी के नाम पर अपनी तमाम मासुकाशों से इतक लड़ाओगे घोर एक पत्नीव्रत का झण्डा भी गाड़ोगे (बूंद०—अ० ना०, ५१२); क्यों झंडे मिलाप के गाड़े (दोल०—हरिऔध, ५८)

(२) पूर्ण रूप से अपना अधिकार जमाना ।

(३) अधिकार के विन्दस्वरूप झंडा गाड़ना ।

(समा० मुहा०—झंडा फहराना)

### झंडे के नीचे

अधीन होना, हुकूमत मानना । प्रयोग—सभी तुम्हारे पक्ष के नीचे आये थे न प्रत्यय से (कुरु०—दिनकर, ४४)

### झकझोरना

### दे० झंझोड़ना

### झूठ (झक) मारकर

हेरान आकर, लाचार होकर । प्रयोग—नीर पिलावत क्या फिर, सापर घर-घर बागि । जो विधावत होइगा, सो पीवेगा झूठ मारि (कबीर ग्रंथा०—कबीर, ६१); विवाह के पदवात् महीनों बोलचाल न रही । झक मारकर मुझको मनाना पड़ा (मान० (१)—प्रेमचंद, ३२१); कि झूठमार कर करनी होगी तुमको फिर मुझपर अनुरक्ति (पंच०—गुप्त, ५७)



### भल (भल) मारना

(१) व्यर्थ का समय नष्ट करना । प्रयोग—यकरी टेक कबीर भगति की, काजी रहे भल मारी (कबीर ग्रंथा०—कबीर, १०७); सम्यक द्विज करमनि करि मेरे ते हम हैं भल मारत परे (नंद० ग्रंथा०—नंद०, २३३)(+); चुपचाप हिन्दुस्थान को पीठ दिखाओ और अपनी विजायत में भल-मारो (झासी०—वृ०वर्मा, ३४१)(+); कोई पृच्छा नहीं तो लोग पड़ते क्या भल मारने को है ? (मा—कोशिक, १६४) (+)

(२) व्यर्थ का काम करना । प्रयोग—सूर अपनी अल पावें, जाहि घर भल मारि (सू० सा०—सूर, २१७३); वही हमारे जाति का इतिहास भल मार के हमारे प्रतिकूल हो गया (भट्ट नि०—बा० भट्ट, ६१); देखिए प्रयोग (१) में (+) भी

### भलमारी करना

बेकार का काम करना । प्रयोग—मैं बेचारी बुढ़ापे की मारी दिन भर भलमारी करूँ घोर आप मौजे मारें (गंगा०—उग्र, ४७)

### भगड़ा भांटा

लड़ाई भगड़ा । प्रयोग—अब तो सारा अपने पीछे भगड़ा भांटा लग गया (इंशा०—इंशा०, ११३)

(समा० मुहा०—भगड़ा भंभट,—टंटा)

### भड़ जाना

दूर हो जाना । प्रयोग—बुजुर्गी मुँह से भड़ गयी है, यह मने पिछली बार ही कहा था (नदी०—अज्ञेय, २६५-६६)

### भड़ी लगना

(१) पानी का निरंतर बरसते रहना । प्रयोग—दस दिन रहे बान नम छाई । मानहुँ मवा मेघ भरि लाई (राम० (लं)—तुलसी, ९४२); सावन की भड़ी लगी हुई थी (मान०(१)—प्रेमचंद, ७६); ५ बजे से भड़ी लगी है घोर जब १२ बजने को है (पट्टम० के पत्र—पट्टम० शर्मा, १९२)

(२) बात का सिलसिला न समाप्त होना । प्रयोग—उन्होंने संस्कृत की भड़ी लगा दी (प्रेमा०—प्रेमचंद, २५३)

(३) निरंतर प्रवाहित होना । प्रयोग—रति मुभाइ जिमी

सब जागी, बंभूत धारा होइ कर जागी (कबीर ग्रंथा०—कबीर, २३४)

### भपट होना, भड़प होना

कहामुनी होनी—भगड़ा होना । प्रयोग—बंदिका कुल्ली को देख-देख कर आइमा रहा था कि एक भपट होने पर आसमान दिखा सकेगा या नहीं (कुल्ली०—निराला, ४५); ब्रह्मभोज के दिन उनकी लाला प्रभाशंकर से खासी भपट हो गयी (प्रेमा०—प्रेमचंद, ३६७); कभी-कभी दोनों की भड़प हो जाती थी (गोली—चतुर०, १५२)

### भपट होना

### दे० भड़प होना

### भाई आना

सर में चक्कर घाना । प्रयोग—भरतहि देखि मानु उठि धाई, मुकछित अवनि परी अंद धाई (राम० (अ)—तुलसी, ५२६)

### भांकने भी न आना

(१) धोड़ी देर के लिए भी न घाना । प्रयोग—हो, हमें मिस्टर लाल से इस बात की सख्त शिकायत है कि पड़ोस में रहते हैं और कभी हमारे यहाँ भांकते भी नहीं (वृ०—अ०ना०, ७३)

(२) कोई खबर न लेनी । प्रयोग—वे कुतूहल मर गये कहाँ, जो नहीं भांकने तक आते (नूर०—मल्ल, ४) (+); अमीर लोग कुलों की भांति दुल्हारे जायेंगे कोई भांकने तक न पाएगा (रंग० (१)—प्रेमचंद, ७६) (+)

(३) कोई सम्बन्ध न रखना । प्रयोग—देखिए प्रयोग (२) में (+)

### भांघ-भांघ होना

कहा-मुनी होनी । प्रयोग—अपने पक्ष के समर्थन और पर पक्ष के खण्डन में उनमें तुल्य भांघ-भांघ होती थी (मान० (४)—प्रेमचंद, २९७)

### भांसा देना

(१) घोखे में डालना । प्रयोग—करे पाटिया बस्तर-मोचन दे देके सब भांसी (मा० ग्रं०—(१) भारतेन्दु, ३३३); दिने बहुत लोगों को भांसे, फंसता नहीं कोई भी फांसे



(गुं नि०—बा० मु० गु०, ७११); होरी ने भांसा दिया—  
 सभी तो कुछ ठीक नहीं है भाई (गोदान—प्रेमचंद, १५६)  
 (समा० मुहा०—भांसा पट्टी देना,—पट्टी पढ़ाना,—  
 पढ़ाना,—बताना,—बुत्ता देना)

### भाड़ डालना

भला बुरा कहना, डांटना । प्रयोग—दीपाली अलग मुँह  
 पर भाड़ डालेगी (कठ०—दे० स०, २५९)

(समा० मुहा०—भाड़ना,—फटकारना)

### भाड़-फटकार कर चल देना

सब कुछ छोड़ कर चल देना । प्रयोग—मस्ती फक्कड़ाना  
 स्वभाव और सब कुछ को भाड़-फटकार कर चल देने  
 वाले तेज ने कबीर को हिन्दी साहित्य का पड़ितीय व्यक्ति  
 बना दिया (कबीर—ह० प्र० द्वि०, २१७)

### भाड़ फूँक करना

मन्त्रों द्वारा भूत-प्रेत के प्रभाव को हटाना । प्रयोग—  
 काम कुछ भाड़ फूँक से न चला सोन राई उतार स्पेल  
 यकी (बोल०—हरिऔध, ६५)

### भाड़ू भाड़ना

भाड़ू से मारना । प्रयोग—एक बार तो मनेक जाड़ू  
 उन्होंने मुँह पर जाड़ू भी डाले थे (अपनी सवर—उग्र, ३६)

### भाड़ू फिरना

सब नष्ट हो जाना, कुछ न बचना । प्रयोग—देखो, तो  
 वहाँ बिड़िया का पुन भी न था, घर में जाड़ू फिरी हुई थी,  
 एक टूटी हाड़ी भी न मिली (रंग० (२)—प्रेमचंद, ३२३)

### भाड़ू फेरना

(१) नष्ट भष्ट करना । प्रयोग—एक सपूत बह होता  
 है कि घर की सम्पत्ति बढ़ाता है, मैं ऐसा कपूत हो जाऊँ  
 कि बाप-दादों की कमाई पर भाड़ू फेर दूँ (गोदान—  
 प्रेमचंद, २६०)

(२) सब चुरा ले जाना ।

### भाड़ू मारना

निरादर करना । प्रयोग—अरे ! सवाही के मुँह पर  
 भाड़ू मारो (सैला०—रंगू, २१६)

### भाड़ू लेकर पीछे पड़ना

बहुत तंग करना । प्रयोग—सभी एक घड़ी पहले जिसकी  
 प्रशंसा करते नहीं थकता था, वह सब भाड़ू लेकर उसके  
 पीछे पड़ गया है (धूम०—उ० भट्ट, ४३)

### भीकना भीकना

अपनी दुःख-गाथा गानी । प्रयोग—रानी केतकी ने  
 अपनी बीती सब कही और मदन बान वही प्रगला  
 भीकना भीका की (ईशा०—ईशा०, ११२)

### भुक जाना

(१) हार मानना । प्रयोग—बार-बार हारने पर भी वह  
 भुके नहीं (अशोक०—ह० प्र० द्वि०, ९)

(२) विनम्र होना । प्रयोग—रेखा को भुकना पड़े, वह  
 समय आयेगा, अपने आप आयेगा, जरूर आयेगा (नदी०—  
 अज्ञेय, १७०)

(३) मर जाना ।

### भुक पड़ना

(१) बोच करना । प्रयोग—भुकरत कहा मों पर बज-  
 नारी, सुनहु न सूरज दास (सू० सा०—सूर, ४८६१)

(२) श्रेष्ठता को स्वीकार कर मत होना ।

### भुकना

(१) आकृष्ट होना । प्रयोग—सतः आँखें पसार के देखो  
 कि तुम्हारे जीवन काल में पड़ी-लिखी सृष्टिवाले पंच किस  
 ओर झुक रहे हैं (प्र० पी०—प्र० ना० मि०, १५६); परन्तु  
 जब सम्जन उसके प्रणय का पावक बना और वह मन से  
 उसके प्रति झुक गई तब से सम्जन के साथ-साथ उसके  
 इस वैभव के प्रति भी उसका लोभ अनजाने में बढ़ गया  
 था (वृ०—अ० ना०, ४५३); उसने तो मुनील कोमेरी तरफ  
 झुकाने में पूरी तरह हाथ बटाया (कठ०—दे० स०, २४१);  
 वह ऐसे हाथों में गया है, जो उसे हमारी ओर झुकने ही  
 न देंगे (मा—कौशिक, ८५)

(२) नम्र या दीन होना । प्रयोग—भली भई घर ते  
 छूट्यो, हस्यो मोग परि खेत काके-काके नवत हम, अपन  
 पेट के हेत (रहीम कवि०—रहीम, १६); किम तरह से आप  
 झुक जायें भला जब भुकाये भी नहीं गर्दन झुकी (चुमते०—  
 हरिऔध, १२५) (÷)



झुटपुटा होना

२८५

भौड़ होना

(३) हार माननी । प्रयोग—पर जागेश्वरी ने विद्या-हठ से काम लिया और इस शक्ति के सामने पुरुष को झुकना पड़ा (ग्वन—प्रेमचंद, ४-५); देखिए प्रयोग (२) में  $(\div)$  भी

**झूटपुटा होना**

थोड़ा-थोड़ा अन्धेरा होना । प्रयोग—थोड़ी देर में सूरज डूबा, कुछ झुटपुटा सा हो गया (ठंडा—हरिऔध, १)

**झूठी गंगा में तैरना**

झूठ में पड़ना, झूठ बोलना । प्रयोग—डाक्टर साहब इतने बड़े आदमी और ऐसे बड़े विद्वान कैसे झूठी गंगा में तैरने लगे, इसका मुझे सचरज है (प्रेमा—प्रेमचंद, २५५)

**झूम उठना या झूमना**

मस्त हो उठना । प्रयोग—झुंडनि आईं झूमिके गावति मीठी गारी (सू० सा० परि० (१)—सूर, १२९)

**झोंक में**

आवेश में । प्रयोग—आप परोपकार की झोंक में सीमा

का उल्लंघन कर जाते हैं (पट्टम० के पत्र—पट्टम० शर्मा, ७८)

**झोल की बात**

अस्पष्ट, गड़बड़ बात । प्रयोग—दूसरों के लिए बिके जो हैं वे करेंगे न झोल की बातें (चुभते—हरिऔध, १२४)

**झोल में पड़ना**

गड़बड़ या झंझट में पड़ना । प्रयोग—मेरी तो राय है कि तुम उनसे जाकर ठीक-ठाक कर लो । इस झोल में न पड़ो (मा—कौशिक, ५९)

**झोली फैलाना**

मिठा मांगनी । प्रयोग—जनम-जनम घनते नहीं जाचों फिर नहीं मांगों झोली जू (नंद० ग्रंथा०—नंद०, २९१)

(समा० मुहा०—झोली उठाना,—डालना)

**झौड़ होना**

कहामुनी होनी । प्रयोग—एक दिन दोनों की इसी बात पर झौड़ हो गई (कर्म०—प्रेमचंद, १६)



## ट

### टकटकी बंधना,—बांधना,—लगना

(१) दृष्टि का किसी ओर स्थिर हो जाना। प्रयोग—भएउ चेत चेतन तब जागा। वकत न घाब टकटका नागा (पद्म०—जायसी, ३८५); कबहुँ टकी लग जाइ, कबहुँ जावत मुरझाई (मन्द० ग्रंथा०—मन्द०, १७६) (+); वह फटा हुई आँसों से स्वामी की घोर टकटकी बांधे खड़ी थी (मान० (१)—प्रेमचन्द, ३९); और की खोट देखती बेला टकटकी बांध देते हैं (चोखे०—हरिऔध, १२); सब लोग धोड़ों की ओर टकटकी लगाए थे (जहाज०—इ० जोशी, २०८)

(२) उत्सुकतापूर्वक प्रतीक्षा करनी। प्रयोग—हरिश्चन्द्र के ललित लेखों ने लोगों के जी में ऐसी जगह कर ली थी कि कविवचन मुद्रा के हर नम्बर के लिए लोगों की टकटकी लगाए रहना पड़ता था (गु० नि०—वा० मु० गु०, ३१६); देखिए प्रयोग (१) में (+) भी

### टकटकी बांधना

दे० टकटकी बंधना

### टकटकी लगना

दे० टकटकी बंधना

### टकसाली

शशालिक, प्रचलित। प्रयोग—हिन्दी-कविता पर भी उनका अच्छा अधिकार है, उनकी भाषा टकसाली है (पद्मपराम—पद्म० शर्मा, ३१३)

### टका सा जवाब देना

कोरा जवाब देना (नकारात्मक)। प्रयोग—तभी तो उसने खान ममदोट को टके सा जवाब दे दिया (झुठा० (१)—यशपाल, १२२); यहाँ तक कि मैं भी उनके पास जाकर कुछ पूछने लगूँ तो टका सा जवाब देते हैं (कठ०—दे० स०, ४०); औरों को मूढ़ पर स्फुर दिए जाते हैं, जेवर बनवाए जाते हैं, लेकिन घर के खर्च को कभी कुछ मांगो तो टका-सा जवाब मिलता है, मेरे पास कहाँ ? (रंग० (१)—प्रेमचन्द, ३७८); क्यों टका सा जवाब उसको दें। जिस किसी से सदा टका ऐंठें (चोखे०—हरिऔध, २२)

### टकिहाई होना

टके की होनी, तुच्छ होनी। प्रयोग—कोई टकिहाई तो नहीं, तमोजदार रंटी है (मा—कौशिक, १२२)

### टके का होना

बहुत मामूली या तुच्छ होना। प्रयोग—वह ठहरा टके का मजदूर, मैं एक बड़ा अफसर (मान० (१)—प्रेमचन्द, १६५); तुम लोग इन टके वाली धोरतों के मोह में अपना पैसा घोर समय नष्ट करते हो (झासी०—वृ० वर्मा, २४०)

### टके को न पूछना

कोई प्रतिष्ठा न होनी। प्रयोग—अच्छे-अच्छे पढ़े-लिखे को कोई टके को नहीं पूछता (मा—कौशिक, १६४)



### टके टके को मुंह ताकना

बहुत गरीब होना । प्रयोग—टके-टके को मुंह तकते हैं फिरते मारे-मारे हैं (नूर०—भक्त, ४)

### टके सीधे करना

रुपया कमाना या वसूलना । प्रयोग—सेठों का क्या ? तुकों को कुछ दे लेकर वहीं के वहीं पड़े रहेंगे । वर्तन बेचेंगे और टके सीधे करेंगे (मृग०—वृ० वर्मा, २४३)

### टकैत

टके की, मामूली । प्रयोग—हम ऐसी वैसी टकैत चोड़े ही हैं (ज्ञान०—यशपाल, १२१)

### टक्कर खाना

(१) मारे-मारे फिरना । प्रयोग—यहां जगह-जगह टक्कर खाना पड़ता है (परस—जैनेन्द्र, ८९)

(२) धक्का लगना ।

(३) कोशिश करनी ।

(४) मुकाबिला करना ।

### टक्कर लेना

मुकाबला करना, भिड़ना, सामना करना । प्रयोग—शिव से भिड़ने जाकर एकबार यह पिट चुके थे, विष्णु से डरते थे और बुद्धदेव से भी टक्कर लेकर लौट आए थे (अशोक०—ह० प्र० द्वि०, ९); रोज का दस्ता घूमता भटकता, टक्कर लेता देता मऊरानीपुर हो कर निकला (झांसी०—वृ० वर्मा, ४३१); नवीन युग के कवियों में तो किसी को मुझ से टक्कर लेने का दावा ही नहीं सकता (रंग० (२)—प्रेमचंद, १७०)

### टकर होना

मुकाबला होना, झगड़ युद्ध होना । प्रयोग—संभव है कि चंद्रगुप्त से उनकी टक्कर हुई हो (गुलेरी ग्रंथ (१)—गुलेरी, २१५)

### टगी लगना

टकटकी लगनी, एकटक देखते हुए प्रतीक्षा करना । प्रयोग—टगी लगी तिहारियें, मु आप त्यों तिहारियें, समीप हूँ बिहारियें, उमंग-रंग भीजियें (धन० कवित्त—धना०, ९४)

### टटोलना

(१) मन का भाव परलना । प्रयोग—सापने मुझे सी-सी रूप से खोला और बहुत सा टटोला (इंशा०—इंशा०, ९७); अंग्रेजी सेना के हिन्दू-मुसलमान सिपाहियों की भी टटोलूंगा (झांसी०—वृ० वर्मा, १४१)

(२) उलट-पलट कर देखना, खोजना । प्रयोग—सम्पदा-काचार्य पंडित रुद्रदत्तजी की जीवनी के लिए जैसा कि मैंने काई लिखा है, “भारतमित्र” आदि पत्रों की पुरानी फाइलें टटोलनी पड़ेंगी (पद्म० के पत्र—पद्म० शर्मा, ५३)

### टट्टी की आड़

निर्वल का आश्रय । प्रयोग—उसे ज्ञात हो गया कि बिना किसी आड़ के मैं इन भोकों से नहीं बच सकती । सूरदास की आड़ केवल टट्टी की आड़ थी (रंग० (२)—प्रेमचंद, ३०६)

### टट्टी की आड़ शिकार खेलना

किसी के विरुद्ध छिपकर कोई चाल चलना, छिपकर बुरा काम करना । प्रयोग—मेरी ही टट्टी रचि खेलत नित शिकार भगवान (भा० ग्रं० (१)—भारतेन्दु, ४७८); टट्टी के आड़ से शिकार करने वालों घुर्तों की बन पड़ी (मट्ट नि०—बा० मट्ट, ११०); वह टट्टी की आड़ से शिकार खेलने वाले जीव थे (गोदान—प्रेमचंद, २७०); शुद्ध सांसारिक शृंगार को भी परमार्थ प्रेम बतलाकर टट्टी की आड़ में शिकार खेलना सूफियों के बाएं हाथ का खेल है (पद्मपराग—पद्म० शर्मा, २०३)

### टट्टी की ओट होना

कोई आश्रय या आधार होना । प्रयोग—टट्टी की ओट बनी रहे, परमात्मा साथ रहता है (बीने०—रा० रा०, १८७)

### टर्रा होना

सड़ाका होना, टेढ़ा बोलनेवाला । प्रयोग—इस लाट प्यार से मधुरा बरा टर्रा हो गया था (मान० (३)—प्रेमचंद, ८२)

### टस से मस न होना

तनिक भी न डिगना, अपनी धारणा से न डिगना । प्रयोग—राखाल काका के कहने पर भी वे टस-से-मस न हुए (बल्ल०—द० स०, ११३)



### टमुए बहाना

दिशाने के लिए रोना । प्रयोग—वह तुम्हारे किराक में टिसवे बहाती है (गुं नि०—बा० मु० गु०, २४८); उस वक्त तो यह भी भैया-भैया करती थी × × उसकी विपत्ति क्या मुनकर टेसवे बहाती थी (मान० (४)—प्रेमचंद, ५५); तो फिर यह स्त्रियों की भाति टमुए बहाना छोड़ो (भिसा०—कौशिक, २०४)

### टहला देना

किसी को बहाने में टरका देना । प्रयोग—इन्हें टहला क्यों नहीं देती (मान० (४)—प्रेमचंद, १०४); बेगम को यार लोगों ने कहीं टहला दिया (मा—कौशिक, ३७५)

### टांकना

लिख लेना । प्रयोग—अगर होरी ने रुपये दिए हैं तो कहीं न कहीं टांके गये होंगे (गोदान—प्रेमचंद, २२८); नकलची इतिहास लेखकों ने उन्हीं के आधार पर बिना अधिक छान-बीन किये मक्खी मारना शुरू कर दिया । अपने ज्ञान-पहचान के जो इष्ट—मित्र या भक्त शिष्य मिले उनको भी टांक दिया (पद्म० के पत्र—पद्म० शर्मा, २४८); सैया, जरा खाज का सर्वा तो टांक दो (गहन—प्रेमचंद, १७७)

### टांग अड़ाना

(१) बिना अधिकार के योग देना । प्रयोग—कवि भी मे और हर विषय में टांग घड़ाते थे (गोली—चतुर०, २००); मेरे बड़े भाई × × वैद्यक और ज्योतिष में भी टांग घड़ाने की योग्यता रखते थे (अपनी सवर—उग्र, १९)  
(२) फिजूल इकल देना, बिछन डालना । प्रयोग—अपनी सर्वज्ञता बताने के लिये जानें बिना जानें हर काम में पांव अड़ाते थे (परीक्षा०—श्री० दास, ६५); तू जो बात नहीं समझती, उसमें टांग क्यों अड़ाती है (गोदान—प्रेमचंद, ५); तत्काल प्रत्येक काम में टांग अड़ाकर शक्ति को बाध कर देता कि वह हारकर छोड़ दे (शेखर (२)—अज्ञेय, २१२)

(समा० मुहा०—टांग मारना)

### टांग के रास्ते निकलना

हार या अधीनता मान लेनी । प्रयोग—अगर कोई भाई का साल मेरे दूब में एक बूंद पानी निकाल दे, तो उसकी

टांग की राह निकल जाऊँ (रंग० (१)—प्रेमचंद, ३२)

(समा० मुहा०—टांग के तले से निकलना)

### टांग खींचना,—पकड़ कर खींचना

बदनाम करना, गिराने की कोशिश करना । प्रयोग—अरे, दुनिया का कायदा है कि बड़ने वाले की टांग पकड़ कर पीछे धसीटती है (बूँद०—अ० ना०, १९६); इन लोगों का तो काम ही यही है कि चांगे जाने वाले की टांग खींची जाय (कठ०—दे० स०, ९६)

### टांग घसीटना

(१) टांग खींचना । प्रयोग—क्या नाम प...पेपर इसी-लिये है कि हमारी टांग घसीटी जाये ? (झुठा० (२)—यशपाल, ५४७)

(२) बिना काम इधर-इधर मारे-मारे फिरना ।

### टांग तोड़ना

(१) दुर्गति करनी । प्रयोग—संस्कृत की तोड़ी टांग । घोट पीस के छानो भांग ( गुं नि०—बा० मु० गु०, ७२२)

(२) घोर परिधम करना ।

### टांग पकड़कर खींचना

दे० टांग खींचना

### टांग पकड़ना

परास्त करने का प्रयत्न करना । प्रयोग—ताई ने भड़क कर फिर टांग पकड़ी, बोली—घरे जा, जिसे मालूम न हो उसके आगे कहियो (बूँद०—अ० ना०, ७)

### टांग फैलाकर सोना

(१) मुल से दिन बिताना । प्रयोग—मैं आपकी गालियां मुनने नहीं आई हूँ, यह लीजिए अपना घर, सूब टांगें फैलाकर सोइए (रंग० (२)—प्रेमचंद, ४२५)

(२) निश्चित होकर सोना ।

(समा० मुहा०—टांग पसार कर सोना)

### टांग-टांग मचाना

जोर करना, बकवास करनी । प्रयोग—उनकी ऐसी भी गुप्त भाषा थी कि एहीटरो की आत्मागन को तुम्हारी किसी "काररवाई" का समाचार तब तक न मिले जब



तक कि रिपोर्ट हम न पढ़ लें नहीं ये व्यर्थ चाहे कोई सुने चाहे न सुने अपनी टांग-टांग मचा ही देंगे (भा० प्र० (३) —भारतेन्दु, ८३५)

### टाट उलट देना

दीवाला निकाल देना, लेन-देन का व्यवहार बंद कर देना। इसी प्रकार वणिज लोगो को भी अब पूँजी घटती है आप वर्ष पाँच दस का जो तप्पर टाट उलटती है (गु० नि०—वा० मु० गु०, ६२८); यों अगर टाट उलट देते तो कोई बात न थी (मान० (३)—प्रेमचंद, ७०); उसका विचार किनी भी दिन ब्राह्मण का संकेत पाते ही बैंगाली के सब सेट्टियों के टाट उलटवाने का है (बैंगाली० (२)—चतुर०, ११०); टाट कैसे नहीं उलट जाता जब बुरी चाट के बने चरे (चुमते०—हरिऔध, १२६)

### टाट पर रेशम को सिलाई

प्रसंगत मेल। प्रयोग—तुम्हारी कृपा मुलभ सोउ मोरे। मित्रनि मुहावनि टाट पटोरे (राम० (वाल)—तुलसी, २३)

### टाट बाहर करना या होना

जाति बाहर कर देना या कर दिया जाना। प्रयोग—लड़की की सगाई न हो पायेगी, टाट बाहर कर दिया जाऊँगा (मान० (४)—प्रेमचंद, १९९)

### टापते रह जाना

मुँह देखते रह जाना। प्रयोग—अभी ना जाऊँ तो रोटी भी रसोईदार इधर-उधर फेंक देगा। फिर दिन भर टापता रह जाऊँगा (तितली—प्रसाद, ५३); समालोचना का पहला चांस खुद ने ले लिया। चतुर्वेदी जो टापते ही रह गये (पद्म० के पत्र—पद्म० शर्मा, ४६)

### टिकट कटाना

(१) टिकट खरीदना। प्रयोग—टिकट कटा लिए थे, मनीमत हुई (कुल्ली०—निराला, २१); एक राह चलते आदमी से 'दुपइया'—इक्का मंगवाकर स्टेशन पहुँचे और टिकट कटाकर दिल्ली की राह ली (पद्मपराग—पद्म० शर्मा, ८२)

(२) मर जाना।

### टिटकारी देना

ध्यांग करना, उपहास करना। प्रयोग—आलोचना में केवल उनकी तारीफों ही के दोल नहीं बजाये गये हैं, बरन् उनकी भूलें दिखाई दे × × उनकी टिटकारियाँ दी हैं (गु० नि०—वा० मु० गु०, ४२९)

### टिट्टी के रोके आंधी न रुकना

धनमय का शक्तिशाली से टक्कर लेकर जीत न सकना। प्रयोग—जिस बात को सारा गांव कहेगा, उसे एक तुम न कहोगे, तो क्या विगड़ जायगा। टिट्टी के रोके आंधी नहीं रुक सकती (रंग० (२)—प्रेमचंद, ११८)

### टिमटिमाता दिया

समाप्त या नष्ट होने के निकट। प्रयोग—सिनेमा का तूफान प्रबल वेग से बढ़ा आ रहा था। रंगमंच के उन टिमटिमाते दीपों को कब वह अपने साथ बहा ले जाय, इसका कोई ठिकाना न था (पैलेरे—अशक, ९)

### टिर-पिर करना

गोलमाल करना। प्रयोग—किसी ने जरा भी टिर-पिर की और मैंने अदालत में दावा वापस किया (मान० (३)—प्रेमचंद, १३०)

(समा० मुहा० टिर-फिर करना, टिर-फिस करना)

### टिर निकल जाना

घमंड दूर हो जाना। प्रयोग—घन के मदोन्मत्तों का कुल रूपया निकल जाने से × × उनके कुलीनता की टिरें बिलकुल छार में मिल गई (मट्ट नि०—वा० मु०, १३)

### टीका कटाना

(१) उत्तराधिकार पाना। प्रयोग—तुम्हें सब कहह बड़ावन टीका (राम० (अ)—तुलसी, ५४२)

(२) उत्तरदायित्व लेना।

### टीका करना

(१) व्याख्या करनी। प्रयोग—पढ़ते समय वे जो टीका करते थे, उनमें भी कविता में एक अपूर्वता आ जाती थी (कुष्ठ—९० पु० बरुशी, १०)

(२) आलोचना करनी। प्रयोग—यह आश्रम एक कुल



के समान है, जहाँ के प्रत्येक व्यक्ति को दूसरे के उचित और अनुचित कार्यों में टीका करने का ही नहीं, परन्तु हस्तक्षेप तक करने का अधिकार है (चित्र०—मंग० वर्मा, १७०); मेरे विषय में आपको टीका करने का कोई अधिकार नहीं है (कर्म०—प्रेमचन्द, २५०)

(३) राजगद्दी पर बैठने के पूर्व तिलक करना। प्रयोग—करहु हरपि शिव रामहि टीका (राम०—तुलसी, ३७६)

(४) विवाह की एक रस्म। प्रयोग—तुम्हें कृपा करि करो, सात मेरे की टीकी (नंद० ग्रंथा०—नंद०, १७०)

### टीका चढ़ना

विवाह की पहली रस्म। प्रयोग—जहाँ तक मेरा धन-माल है, कि वसंतपंचमी पर टीका चढ़ जायगा और गमिणी में विवाह हो जायगा (मिला०—कौशिक, १५८)

### टीका-टिप्पणी करना

आलोचना करनी। प्रयोग—इस घटना के सम्बन्ध में लोग टीका-टिप्पणी कर रहे थे (मान०—प्रेमचन्द, ४४); दूसरों पर टीका-टिप्पणी करना सहज है (ब्रह्म०—दे० स०, ३७३)

### टीका देना

(१) राजगद्दी देना। प्रयोग—देहु एक वर भरतहि टीका (राम०—तुलसी, ३९९); टीका दीन्ह पुत्र कह आपु लोन्ह सिब साज (पद०—जायसी, १९२)

(२) किसी कार्य को करने का अधिकार या सुनी छूट दे देनी। प्रयोग—हरीचंद अठलानि-बने को दियो तुमहि बिधि टीकी (मा० ग्रं०—मारतेन्दु, २७३)

(३) तिलक लगाना।

### टीका पाना

उत्तराधिकार पाना। प्रयोग—जैहि पितु देइ सो पावई टीका (राम०—तुलसी, ५३६)

### टीका भेजना

विवाह के पूर्व घर के तिलक के लिए सामान भेजना। प्रयोग—इतनी बात सुनते ही देवक ने एक ब्राह्मण को बुलाया, नृम जन्म ठहराय सूरसेन के घर टीका दिया (प्रेम सा०—ल० ला०, ११); ग्योत करके विपद बुलाते हैं लोग उनके यहाँ पठा टीका (चुमते०—हरिऔध, १६४)

### टीका लगाना

फँसने वाले लोगों की रोक-बाम के लिए दवा की सुई देना या लेना। प्रयोग—जो न मन के रोग का टीका बना तो हुषा फिर लान क्या टीका लगा (चुमते०—हरिऔध, ११९)

### टीका होना

खेपटम होना। प्रयोग—बछरा धेनु चरावत वन में, कान्ह सबनि की टीकी (सु० सा०—सूर, ४१७४); हमारे भाग मुहाव बिराजत प्राणनाथ मुख टीकी (राधा० ग्रंथा०—राधा० दास, २५)

### टीप का बन्द लगाना

किसी बात की पूर्ति करनी। प्रयोग—छोटो ने भाई से अनुचित संबंध जोड़कर कुछ कहा और सास ने टीप का बंद लगाया (परती०—रेणु, ५)

### टीप-टाप होना

पूजा होनी। प्रयोग—उधर हनुमान जी के मंदिर में टीप-टाप होकर हनुमान जी पर प्रसाद चढ़ने लगा (मूले०—मंग० वर्मा, १६२)

### टीप लगाना

(१) समर्पण में कुछ कहना। प्रयोग—और उसी समय ठाकुर बरजोर सिंह ने अपने बहनोई की बात पर एक टीप लगाई (मूले०—मंग० वर्मा, ३८)

(२) ऊपर का स्वर लगाना।

### टीमटाम

ऊपरी दिखावा। प्रयोग—एक हजार तो टीमटाम के लिए चाहिए, जोड़े और गहने के लिए अलग (गदन—प्रेमचन्द, ५)

### टुकड़-खोर होना

दूसरों के लिए अन्न पर पलने वाला। प्रयोग—इनकी लड़कियाँ राजपूत ठाकुर और राजाजी की रखेलियाँ, उपायलियाँ और भोग दासियाँ थीं और लड़के टुकड़-खोर गुलाम दास(गोली—चतुर०, १८-१९)

### टुकड़-गद्दाई

अर्थात् मुच्छ होना। प्रयोग—मैं उन टुकड़ गद्दे किसानों से दबता किन्? (प्रेमा०—प्रेमचन्द, २२५)



### टुकड़ा खाना,—तोड़ना

(१) किसी के आश्रित होकर रहना । प्रयोग—जाला बिज-किशोर आपके घर के टुकड़े खा-खाकर बड़े हुए पे यह दिन भूल गए (परीक्षा०—श्री० दास, १०५-५); मैं तो आपके यहाँ टुकड़े तोड़ती हूँ (मा० मा० (१)—कि० गौ०, ८२); वे इसीलिए उसे बार-बार नाना-मामाके टुकड़े तोड़ने का ताना कसते (बु० द०—अ० ना०, ५९६); सब कुछ कमाओ घमाओ या यों ही पड़ें टुकड़े तोड़ते रहोगे ? (मा—कौशिक, १६४)

(२) खाना । प्रयोग—मैं घर पर बिना आप पाव धी के टुकड़ा न तोड़ता था (मिस्त्रा०—कौशिक, ४६)

### टुकड़ा छिनना

रोजी छिननी । प्रयोग—देख टुकड़ा जाति का छिनते घरर सँकड़ों टुकड़े हुई छाती नहीं (बुभते०—हरिऔध, ८८)

### टुकड़ा तुड़धाना

आश्रित बनाना । प्रयोग—पना तो हूँ पर देख लेना कि उससे टुकड़ा न तुड़वाऊँ तो मैं तहसीलदार नहीं (लितली—प्रसाद, १७९)

### टुकड़ा तोड़ना

#### दे० टुकड़ा खाना

#### टुकड़ा मांगना

भीख मांगना । प्रयोग—मांगते रहते हैं टुकड़े, पेट जूठा सा भरते हैं (मर्म०—हरिऔध, ८९)

### टुकड़े के लिए तरसना,—लालायित होना

खाने-पीने के सामान का अभाव होना । प्रयोग—बड़े पैमाने पर ऐश नहीं की तो दरिद्र होकर टुकड़ों को भी तो नहीं तरसा (नदी०—अज्ञेय, ४४); उसे बताते देख टुकड़े के लिये आज कलेजा टुकड़े-टुकड़े हो गया (बोल०—हरिऔध, १८७)

### टुकड़े के लिए लालायित होना

#### दे० टुकड़े के लिए तरसना

#### टुकड़े टुकड़े होना

नष्ट होना, तहस-नहस होना । प्रयोग—टुकड़े टुकड़े

होते लखकर जाति को जो न कलेजा टुकड़े-टुकड़े हो गया (बोल०—हरिऔध, १८७)

### टुकड़ों का पाला

किसी पर आश्रित होकर पला हुआ । प्रयोग—वह तो सबसे कहता है कि मेरे टुकड़ों में पला हुआ कुला घाज जमींदार का तहसीलदार बन गया (लितली—प्रसाद, १७९)

### टुकड़ों पर पड़ी होना,—पलना

दूसरों के अधीन होना, दूसरे की रोटी पर पलने वाला । प्रयोग—सौत भई अब सगी तुम्हारी हम तो भई हूँ पराई । पड़ी टुकड़े पर आई (मा० ग्रंथ०—भारतेंद्र, ४२८); तो इस पर मैं मैं तुम्हारे टुकड़ों पर पड़ी हुई हूँ ? (मान० (१)—प्रेमचन्द, ७२); आपके टुकड़ों पर पलने वाले आपके मुँह पर आपका घपमान कर रहे हैं, और आप हँस रहे हैं (मुले०—मग० वर्मा, १६)

### (समा० मुहा०—टुकड़ों पर जीना)

### टुकड़ों पर पलना

#### दे० टुकड़ों पर पड़ी होना

### टुकुर-टुकुर ताकना

निरीह-सा मुँह ताकना । प्रयोग—जो धन दौलत हमने एक-एक पैसा करके X X इकट्ठी की है X X वही तुम्हारे पीछे बरात की फुलवारी के समान लुट जाय और मैं बँठी टुकुर टुकुर देखा करूँ, वह सब भला मुँह से कैसे देखा जायगा ? (मा—कौशिक, १९)

### टुट-पूजिया होना

(१) मामूली अधिक निर्धनता होना । प्रयोग—साहू X X वह नहीं चाहता कि वह टुटपूजिया समझा जाय (मिरे०—गुलाब०, ५१)

(२) सामान्य, मामूली । प्रयोग—मैं पूछती हूँ, आखिर आप टुटपूजियों की दुकान पर जाते हो क्यों हैं ? (मान० (१)—प्रेमचन्द, ३१०); किसी टुटपूजिए गीतकार से दस-दस, बीस-बीस में लिखवाकर अपने नाम से जड़ दिये होंगे (पैतरे—अशक, ६४)



### टूक टूक करना

नष्ट कर देना, तोड़ डालना। प्रयोग—तुम्हें इस युवक के सपने टूक-टूक करने से आनन्द मिला (भो०—जगन्नाथ, २४)

### टूटकर

आपस या प्रेम से। प्रयोग—चिरिनि परेवा आव जस घाइ परहु पिय टूटि (पद०—जायसी, ३०१३); एक मिनट भी न गुजरने पाया था कि रानीजी एक शाल ओढ़े हुए द्वार पर आ गई, और उससे टूटकर गले मिली (रंग० (२)—प्रेमचंद, २६७); सोना उठकर आंगन में आ गई थी मगर विल्लो ने टूटकर गले नहीं मिली (गोदान—प्रेमचंद, ३०४)

(२) जलपिक परिमाण में।

### टूट जाना

(१) विच्छेद हो जाना। प्रयोग—कबीर हरि चरगों चल्या माया मोह से टूटि (कबीर ग्रंथा०—कबीर, ७६) (÷); टूटे मुजन मनाइए जो टूटे तो बार (रहीम कवि०—रहीम, ११); टूट में जाय पड़ नहीं कोई टूटकर भी कपर न टूट सके (सुमति०—हरिश्चंद्र, ३७) (÷ १)

(२) समाप्त हो जाना, नष्ट हो जाना। प्रयोग—सेवा कर जो जियनि तोहि पावी नाहि तो फेरि भाग होइ जावी (पद०—जायसी, ४२४); आपस की फूट हो ते सारे हिंदु-वान टूटे, टूटो कुल रावन धनीति प्रति करतें (भुषण ग्रंथा०—भुषण, २२२); पिछली कुछ एक पटनाओं ने सेसर को कुछ विचलित कर दिया था, उसके जो कुछ एक स्थिर विश्वास थे, उसकी जो निष्ठाएं थी वे टूट सी गई थी (सेसर (१)—अज्ञेय, ६७); देखिए प्रयोग (१) में (÷ १) भी

(३) किसी तरह का लगाव न बाकी रहना। प्रयोग—पर दूसरे वच्चे के × × बाद वह मिरस्ती से टूट गया था (नदी०—अज्ञेय, ४३-४४); देखिए प्रयोग (१) में (÷)

(४) मानसिक या शारीरिक दुर्बलता आनी। प्रयोग—सरदार लोग लड़ाई में हारते हारते टूट गए थे (राधा० ग्रंथा०—राधा०दास, ६४८); बेल से वे चारे बिना टूट गये (प्रेमा०—प्रेमचंद, ३१४); मैं टूट गयी हूँ, भुवन, मेरे जीवन, जैसे पहले कभी नहीं टूटी थी (नदी०—अज्ञेय, २३७);

लेकिन उसे अनुभव हो रहा था कि कहीं से वह टूट गया है (मूले०—भग० वर्मा, ४९६)

(५) खर्च होना।

(६) नुन/वा जाना।

### टूट पड़ना

(१) जल्दी जल्दी या जाना। प्रयोग—चल कर घाल पर बैठो तो पकौड़ियां देखते ही टूट न पड़ो तो कहना (कर्म०—प्रेमचंद, ४४)

(२) बुरी तरह मारना या बिगड़ना। प्रयोग—क्या तुमने यह समझा था, मैं दफ्तर से लौटकर घाऊंगा ही नहीं × × बस सड़के पर टूट पड़ो (मान० (१)—प्रेमचंद, २१३)

(३) एकाएक किसी पर हमला कर देना। प्रयोग—जो घमुरदम उनके निकट गया तो दोनों बीर ललकार के ऐसे टूटे कि जैसे हाथियों के घूंघ पर सिंह टूटे (प्रेम सा०—ल० ला०, १४७); एक दिन दिल्ली में राज्य दरबार से लाटते समय एक मस्जिद हाथी × × इन पर टूटा (राधा० ग्रंथा०—राधा०दास, १८७); हां, बीरपाल है तो एक ही संतान न जाने कब, किधर से, कितने आदमियों के साथ टूट पड़े (रंग० (२)—प्रेमचंद, ६८); कुली गाड़ियों पर टूट पड़े (मूले०—भग० वर्मा, २८४)

(४) गुस्सा होना। प्रयोग—माता कभी मुझे कुछ कहती तो पिताजी उन पर टूट पड़ते (मान० (३)—प्रेमचंद, १६); मैं सामने हुआ, मुझ पर टूट पड़ती है (त्याग०—जेनेन्द्र, १४)

(५) एक दम अनुरक्त हो जाना। प्रयोग—ऐसे टूटि परी उन ऊपर, तुमही कीन्ही बैरी (सू० सा०—सूर, २७०५)

(६) कमी होनी। प्रयोग—पानी की टूट पड़ी। ३, ४ घंटे लोगों को प्यासा रहना पड़ा (झांसी०—यु० वर्मा, ३७९)

(७) बहुत भीड़ होनी। प्रयोग—इन मेलों में हजारों कोस के आदमी टूट पड़ते हैं (मट्ट नि०—रा० मट्ट, १२४); सभी उसके पास गाइक पर गाइक टूटते थे (बुंद०—अ० ना०, ४०); कम्बल बहुत पटिया से, पतले और हलके, पर जमता एक पर एक टूटी पड़ती थी (गहन—प्रेमचंद, १४८); मुझे नहीं मालूम था कि लोग एक के बाद दूसरे उन्हीं के चिये टूट रहे हैं (कुझो०—निराला, ७१)



(८) लकड़ी या पत्थर का वह कमजोर स्थान जहाँ से उसके टूट जाने का भय हो।

### टूट में पड़ना

घाटे या नुकसान में पड़ना। प्रयोग—घटे कीमति बोधा जो माल फिर बज्र के व्यवहार में टूट ठई (इश्क—बोधा, ४); टूट में जाय पड़ नहीं कोई टूट कर भी कमर न टूट सके (चुमते—हरिऔध, ३७)

### टूट होना

भगड़ा होना। प्रयोग—नाकर छट्ट बल तेरा टूट होगी नहीं पड़-पड़ फूट में न भाग अब फूटेगा (मर्म—हरिऔध, १५८)

### टूटना

एक दल से हटकर दूसरे दल में मिल जाना। प्रयोग—सबों ने ऐसी गुट कर रखी है कि कोई टूटता ही नहीं (गदन—प्रेमचंद, २१४)

### टूटा दिल

(१) परस्पर प्रेम-सम्बन्ध के नष्ट हो जाने से विन्न हृदय। प्रयोग—पड़ गई गाँठ जब जुड़ा तब क्या टूट करके जुड़ा न दिल टूटा (चोखे—हरिऔध, १२७)

(२) निराश या दुखी हृदय।

### टूटी फूटी

असंबद्ध, प्रशुद्ध। प्रयोग—× × अधिकांश लोग टूटी फूटी हिन्दी बोल भी लेते हैं (राधाग्रंथ—राधा दास, ७४)

### टूटी दशा,—फूटी दशा

(१) बिगड़ी हालत। प्रयोग—हमें अति उचित है कि इसी घटिका से अपनी टूटी फूटी दशा सुधारने में जुट जाय (५० पौ०—५० ना० मि०, ८६)

(२) गरीबी। प्रयोग—इस टूटी दशा में भी हमलों का जितना सच घमं सम्बन्धी कामों में होता है उतना और-और बातों से नहीं (मट्ट नि०—वा० मट्ट, १२१)

### टूटी फूटी दशा

दे० टूटी दशा

### टूटे-टूटे, टूटे-फूटे शब्दों में, टूटे-टूटे स्वर में

अस्पष्ट या असंबद्ध स्वर, अटकते हुए स्वर में। प्रयोग—एलिम को देखकर वे प्रसन्न हुए। बोलने की चेष्टा की। टूटे टूटे बोले (शांसी०—वृ० वर्मा, १३२); उसका स्वर बहुत धीमा और दुबल था, पर टूटा नहीं, स्पष्ट (नदी०—अज्ञेय, २३२); बड़बड़ाहट में दस अनर्गल सी लगने वाली बातों में एक वह बात भी टूटे-फूटे शब्दों में कई बार निकली (वृ०—प्र० ना०, ४८५)

### टूटे फूटे शब्दों में

दे० टूटे-टूटे

### टूटे स्वर में

दे० टूटे-टूटे

### टेंटे करना

बकवास करना, हुरजत करना। प्रयोग—इससे आत्मा राम उनका धन्यवाद करके धाव की टेंटे समाप्त करता है (गु० नि०—वा० मु० गु०, ४८८)

### टेंट में होना

पास में होना। प्रयोग—बेटक साह हरहि मन जो लागि गय है फंट (पट०—जायसी, २१४); कौड़ियाँ ऐसे हमारे क्यों लुटें वे रहे कैसे किसी की टेंट में (चुमते—हरिऔध, ३२)

### टेंट से

पास से। प्रयोग—हैं पकड़ते कौड़ियों की दांत से टेंट से पैसे कभी बढ़ते नहीं (बोल०—हरिऔध, १६७)

### टेक गहना,—चलाना,—पकड़ना

हठ करना, अपनी बात पर दृढ़ रहना। प्रयोग—पकरी टेक कबीर भक्ति की काजी रहे भय मारी (कबीर प्रथा०—कबीर, १०७); बड़ी भई नहि गई लरिकाई। वारे हो के डंग आज लौ सदा धांपनी टेक चलाई (सु० सा०—सूर, २३३६); वे तो भक्ति की टेक गहे हुए वे घोर काजी भय मार के भी उनको उस मार्ग से विचलित नहीं कर सकता (कबीर—ह० प्र० दि०, १३५)



## टेक चलाना

### २० टेक गहना

#### टेक छोड़ना

प्रण छोड़ देना, जिद छोड़नी। प्रयोग—हारि मानि उठि चल्पो दीन हूँ छाड़ि अपनी टेक (सू० सा०—सूर, ४७४५)

#### टेक टेकना

प्रतिज्ञा करनी। प्रयोग—सकड़ को टारि टेक जो टेकी (राम० (अ)—तुलसी, ६१४)

#### टेक पकड़ना

### २० टेक गहना

#### टेढ़ा करना

बुरा बनाना। प्रयोग—श्री मर बक न कीन्ह केहि प्रभुता बधिर न काहि (राम० (उ)—तुलसी, १०९६)

#### टेढ़ा पड़ना या होना

- (१) संकट आ पड़ना। प्रयोग—धनिबहि टेढ़ी परत होत जो तनिक तवाही (राधा० प्रथा०—राधा० दास, ५१)
- (२) उप रूप धारण करना, अकड़ना।

#### टेढ़ा मामला

चिताजनक या पेचीदा बात। प्रयोग—इसका मतलब यह है कि मामला बहुत टेढ़ा है (विष०—प्रेमो, ५०); रुपये रानी जो के पास नहीं, यह टेढ़ा है (चोटो०—निराला, १२६)

#### टेढ़ा होना

- (१) दुष्ट प्रकृतिवाना होना। प्रयोग—गृहज टेढ़ बनुरह न लोही (राम० (बाल)—तुलसी, २८३); तो न टेढ़े के लिए टेढ़े बने बात बननी हो अगर बातें गढ़ें (बोल०—हरिऔध, ६७); मुँसी दीन-दयाल उन आदमियों में से थे, जो सीधों के साथ सीधे होते हैं, पर टेढ़ों के साथ टेढ़े ही नहीं, घँताने हो जाते हैं (गबन—प्रेमचंद, ६); इलाके भर के बदमाश और टेढ़े लोगों की किहुरिस्त सहूलदार पहले ही बना कर रखते थे (मिला०—नेजु, १७४)
- (२) झूट होना। प्रयोग—देव टेढ़े क्यों न होंगे जो उन्हें देखते हैं लोग टेढ़ी आँख से (बुमते०—हरिऔध, १०९);

टेढ़े पड़ने का कोई घोर कारण हो तो अच्छा हो लूँ, फिर पूछ लूँगा (सुकुल०—निराला, ८१)

#### टेढ़ी आँखों से देखना,—नजर से देखना

कोप से देखना, अच्छी भावना न होनी, अनुकूल न होना। प्रयोग—उन दुष्टों को यह बिदित करा दिया कि राजपूतों की ओर टेढ़ी दृष्टि से देखना कंसा होता है (राधा० प्रथा०—राधा० दास, ५८२); उर्दू के तरफदार हिन्दी वालों को घोर हिन्दी के पलवाले उर्दू वालों को कुछ-कुछ टेढ़ी दृष्टि से देखते हैं, पर वास्तव में उर्दू-हिन्दी का बड़ा मेल है (गु० नि०—बा० मु० गु०, २५५); एक तरफ राजगृह के सम्राट विम्बसार उसे विषम लोचन से देखते हैं (लैशाली० (१)—चतुर्द०, २५-२६); मेरे जीते जी तुम्हें कोई टेढ़ी आँख से देख भी न सकेगा (मान० (१)—प्रेमचंद, ११३); देव टेढ़े क्यों न होंगे जो उन्हें देखते हैं लोग टेढ़ी आँख से (बुमते०—हरिऔध, १०९)

#### (समा० मुहा०—टेढ़ी आँख करना)

#### टेढ़ी खीर होना

कठिन काम होना। प्रयोग—X X ओर जान पड़ा कि चित्तोर लेना कंसी टेढ़ी खीर है (राधा० प्रथा०—राधा० दास, ६७७); मगर उस जमाने के हुनरों की नकल करने की तरफ ख्याल नहीं दीड़ते क्यों कि वह टेढ़ी खीर है (गु० नि०—बा० मु० गु०, २४८); जिस समाज में ६४ वर्ष का व्यक्ति १४ वर्ष की पत्नी चाहता है वहाँ ३२ वर्ष की ब्रिटों के पुनर्विवाह की समस्या सुलझा लेना टेढ़ी खीर थी (अतीत०—महादेवी, ५८); इस बालाक मेहर का सचमुच कसकाना या टेढ़ी खीर (मू०—भवत, ७७)

#### टेढ़ी बाल चलना

गलत काम करना, बुराई करना। प्रयोग—किसलिए वे चलें न टेढ़ी बाल क्यों न फुफकार उठे दिल कांप (मर्म०—हरिऔध, ९८)

#### टेढ़ी नजर से देखना

### २० टेढ़ी आँख से देखना

#### टेढ़ी निगाह

रोषपूर्ण दृष्टि। प्रयोग—उसे किसी की टेढ़ी निगाह भी सहन नहीं है (सीदा०—प्रेमचंद, २९२)



### टेढ़ी बात

अप्रिय, कटु बात । प्रयोग—बात सीधी किस तरह से तब कहे । बांट में जब बात टेढ़ी हो पड़ी (चुमते—हरिऔध, ८६)

### टेढ़ी भुकुटि करना

बेगना होना, नाराज होना । प्रयोग—घरन नयन भुकुटी कुटिल, बिलबत नृपन्ह सकीप (राम० (वाल)—तुलसी, ४७४); जिनकी टेढ़ी भुकुटी ललित भाजत जग के भय (राधा० ग्रंथा०—राधा० दास, ६७६)

### टेढ़ी समस्या

ऐसी समस्या जिसका समाधान सहज संभव न हो । प्रयोग—आप भी अपनी जादत से लाचार है, कुछ न कुछ किए ही जाते हैं पर समस्या टेढ़ी है (पद्म० के पत्र—पद्म० शर्मा, ६१)

### टेढ़ी सीधी सुनाना

भला बुरा कहना । प्रयोग—हमारा पड़ोसी कई दिनों से निलय आकर हमें दो-चार टेढ़ी-सीधी सुना जाता है (चित्ता० (१)—शुक्ल, १३२)

### टेढ़े-टेढ़े चलना,—जाना,—फिरना

मंज करना इतराना । प्रयोग—चलत कत टेढ़ी-टेढ़ी रे (कबीर ग्रंथा०—कबीर, १९३); कबहुँ कमला चपल पाइ कै,

टेढ़े-टेढ़े जात (सू० सा०—सूर, ३६५); कियो जु, बिबुब उठाइ कै, कंफित कर भरतार । टेढ़ीमें टेढ़ी फिरति टेढ़े तिलक निहार (विहारी रत्ना०—विहारी, ५१८)

### टेढ़े-टेढ़े जाना

दे० टेढ़े-टेढ़े चलना

### टेढ़े-टेढ़े फिरना

दे० टेढ़े-टेढ़े चलना

### टेनी मारना

डंडी मारना, तौल में चालाकी से कम सीलना । प्रयोग—मैं ही कौन दिन-भर पुनः किया करता हूँ । दमड़ी-छदाम कीड़ियों के लिए टेनी मारता हूँ (रंग० (१)—प्रेमचंद, १९९)

### टेसू बनना या होना

साज शृंगार करना । प्रयोग—यदि हम अमीर हैं तो संकड़ों रुपया केवल अपना टिमाक बनाने में लगा देंगे, टेसू बने बैठे रहेंगे, इससे तो यह रुपया किसी देश हितकारी काम में लगाते तो अच्छा था (प्र० पी०—प्र० ना० मि०, ८५)

### टोना करना या लगाना

(१) मंत्र के प्रभाव से वश में कर लेना या होना । प्रयोग—तोर रूप देखेउं मुठि लोना । जनु जोगी तू मेलेसि टोना (पद्म०—जायसी, २७२५)  
(२) तब-मंत्र से किसी के बुरे का प्रयत्न करना या होना ।



## ठ

### ठंठ गिनना

तुच्छ समझना । प्रयोग—लाल पढ़ें, लड़वारि की बातें, हौं ठंठ गिनौगी न नंद बबा को (शब्द०—देव, ६७)

### ठंडक

शांति । प्रयोग—जो कि जी की आग से जलता रहा मिल सकी है कब उसे ठंडक कही (बोल०—हरिऔध, ३९)

### ठंडा-ठंडा

उत्तेजना रहित । प्रयोग—शापद निरपेक्ष, ठण्डी बहस—बह विवाद या बहस जिसे हम विमृष्ट रूप में वैज्ञानिक और बौद्धिक कहेंगे—पुस्तकों की ही सोभा देती है (अजय०—देवराज, ३२); बड़े ठंडे दिल से कहते हैं यह आप (परख—जेनेन्द्र, ४२)

### ठंडा करना

(१) जोष समाप्त करना, दबा देना । प्रयोग—पू० पी० में किरवई ने कैसे साकसारों को ठण्डा कर दिया ? (झुठा० (१)—यशपाल, २६९); अश्वारोही सैनिक X X सावधानी से देख रहे थे और जिस किसी समय अपने तीक्ष्ण फलक कुत्तों से विद्रोह को ठंडा कर देने के लिए तैयार थे (वाण०—ह० प्र० द्वि०, २०८); ठण्डाई के लतीफे ने काजी को ठंडा कर दिया (पद्मपराग—पद्म० शर्मा, २३३)

(२) शांत करना । प्रयोग—बुद्धि स्वभावके ठंडा करने के लिए बहुत से उपाय बताती है किन्तु समय पर क्रोध की गर्मी को कब रोक सकती है (मा० प्र० (१)—भारतेन्दु, ५५८);

आपकी भलमनसी और सराफत ने मेरा गुस्सा ठंडा कर दिया (रंग० (१)—प्रेमचंद, २६८)

(३) मार डालना । प्रयोग—दो-चार घादमियों को तो मैं सहज ही ठण्डा कर सकता हूँ (ब्रह्म०—दे० स०, २६१)

(४) गोटा इत्यादि को आग में जलाकर चांदी निकाल लेना ।

### ठंडा पड़ना

(१) उत्तेजना शांत होनी, आवेग कम हो जाना । प्रयोग—शर्माजी का सारा उत्साह, सारा अनुराग ठंडा पड़ गया (मान० (१)—प्रेमचंद, ३२७); बल के साथ तेज भी उनका ठंडा पड़ गया था (झासी०—पु० वर्मा, ११९); परिणाम यह होता है कि विवाह होने के कुछ परचातु जब दोनों के हृदयों की प्रासक्ति ठंडी पड़ जाती है, तो परस्पर लड़ाई-भगड़े होने लगते हैं और तत्काल तक नौबत पहुंच जाती है (भिक्षा०—कौशिक, ३६)

(२) क्रोध कम होना । प्रयोग—साहब कुछ ठंडे पड़े । (कर्म०—प्रेमचंद, ६७); वे दोनों ठंडी पड़ कर सोचने लगी (मृग०—पु० वर्मा, २०४)

### ठंडा रखना

आराम चैन से रखना—उत्तेजना रहित रहना । प्रयोग—मस्तिष्क को ठंडा रखो और निर्भय आगे बढ़ो (गैशाली० (१)—चतुर्धर, १८४)



### ठंडा स्वभाव

सहज ही उत्तेजित न होने वाला स्वभाव । प्रयोग—चन्देरी का सूबेदार ठण्डी प्रकृति का आदमी या (मृग०—पृ० वर्मा, २६३)

### ठंडा स्वर

उत्तेजना रहित स्वर । प्रयोग—रेखा ने धीमे, किन्तु साफ और ठंडे स्वर में पूछा—यह सब आप मुझे क्यों बताते हैं ? (नदी०—अज्ञेय, ४७)

### ठंडा होना

(१) मर जाना । प्रयोग—उत्तर अभी, नहीं तो ऐसा पत्थर खींच कर मारूंगा कि वहीं ठंडे हो जाओगे (मान० (१)—प्रेमचन्द, १४३)

(२) उत्तेजना रहित होना, शांत होना । प्रयोग—राजा रिसि न होइ अस राता । मुनि होइ जूड़ न जरि कहूँ बाता (पद०—जायसी ४२२); भली भाँति पहिचाने-जाने साहिब जहाँ लो जग, जूड़े होत धोरे, धोरे ही गरम (विनय०—तुलसी, २४९); यों मुन घनार का निश्चय शकवर भी कुछ ठंडा हो बोला—हताश मत हो तुम बच सकती हो यदि चाहो (नूर०—भक्त, ३१); कहकर बह हँसी, फिर बोली—बह ठंडे हैं और मृदु (जय०—जनेन्द्र, १५६); थोड़ी देर में रोज का पूर्वीय मोर्चा भी ठंडा हो गया (झाँसी०—पृ० वर्मा, ३५६)

(३) नपुंसक होना ।

### ठंडी आग में जलना

विरहाम्नि से व्यथित होना । प्रयोग—झियरा उड़्यो सो डोले झियरा धनवीर करे, पियराई छाई तन, सियराई दो दहौ (घन० कवित्त—घना०, ३६)

### ठंडी आह कड़ना,—आहें भरना

दुःख करना । प्रयोग—हो चले हम बेतरह ठंडे मगर आह ठंडी तो नहीं अब भी कड़ी (चुम्पते०—हरिऔध, ६३); दिखाते जड़ भी तो अपनाव अनिल भी भरती ठण्डी आह (पञ्चव—पंत, १९)

(समा० मुहा०—ठंडी सांस लेना)

### ठंडी आहें भरना

दे० ठंडी आह कड़ना

### ठंडी सांस खींचना,—भरना,—लेना

आह भरना । प्रयोग—इनके मुँह का डोल X X जो कांपना धीरे ठंडी सांस भरना और निडाल गिरे पड़ना इनको सच्चा करता है (इंशा०—इंशा०, ९३); रघू ने ठण्डी सांस खींच कर कहा—मुझिया, घाव पर नोन न छिड़क (मान० (१)—प्रेमचन्द, १५); कुर्सी पर बैठते हुए उन्होंने कहा—बाबू साहब ! उफ बाबू साहब !—इसके बाद वह लगातार ठंडी सांस भरने लगे (इंस्टा०—भाग० वर्मा, २५); मान लो, पुत्र से कोई लाभ नहीं, पर तुम भी तो पुत्र के लिए ठंडी सांस भरते रहो (मा—कौशिक १६); और आज कितनी दुर्बल हूँ—लेती ठंडी सांस (अना०—निराला, ६५)

### ठंडी सांस भरना

दे० ठंडी सांस खींचना

### ठण्डी सांस लेना

दे० ठंडी सांस खींचना

### ठंडे-ठंडे

(१) सुबह-सुबह—सूर्य की गर्मी बढ़ने के पहले । प्रयोग—करने लगे पुनः तैयारी ठंडे ठंडे बढ़ने की (नूर०—भक्त, १२); ठाकुर, अब सवारी सिकारी का इंतजाम करो, जिसमें हम लोग कल सबेरे, ठंडे-ठंडे निकल जाय (रंग० (२)—प्रेमचन्द, ९५)

(२) बिना विरोध या प्रतिवाद के, चुपचाप हँसी खुशी से । प्रयोग—अजी तुम जो इस रूप के साथ बेधड़क चले आए हो । ठंडे ठंडे चले जाओ (इंशा०—इंशा०, ९२)

### ठंडे दिमाग से,—दिल से

शांति पूर्वक—उत्तेजना रहित । प्रयोग—हमें इतिहास को ठंडे दिमाग से समझना चाहिए (अशोक०—ह० प्र० द्वि०, ३१); मैंने इस प्रश्न पर ठंडे दिल से विचार किया है और इस भतीजे पर पहुँचा हूँ कि हमें इस घापड़म को स्वीकार कर लेना चाहिये (मान० (१)—प्रेमचन्द, २२८); मैंने बहुत ठंडे दिल से कहा—इसमें माने की कौन सी बात है ? (कुल्लू०—निराला, ५८); X X अब ठंडे हृदय से विचार



ठंडे दिल से

२६८

ठट्टा उड़ाना

करने पर जात हो रहा है कि हमें इतनी निर्दयता से दमन न करता चाहिए था (रंग० (२)—प्रेमचन्द, १९५)

ठंडे दिल से

दे० ठंडे दिमाग से

ठक रहना या होना

आश्चर्य नकित रह जाना । प्रयोग—हो, जमुनी ने अभी मुझ से कहा । मैं तो सुनते ही ठक रह गया (रंग० (१)—प्रेमचंद, २१८)

ठकुर-सोहाती कहना

चापलूसी करनी । प्रयोग—हमहूँ कहति अब ठकुर सोहाती (राम० (अ)—तुलसी, ३८६); क्योंकि हम यह ब्राह्मण नहीं हैं कि केवल दक्षिणा के लिये ही ठकुर मुहाती बातें करें (५० पौ०—५० ना० मि० १३०); उन्हें ऐसे लोगों से ही काम नहीं पड़ा जो सत्य सुनना न चाहते थे, पर ऐसे लोगों से भी जो ठकुर मुहाती सुनाने पर भी देने के नाम मुरली मनोहर ने (गुलरी ग्रंथा (१)—गुलरी, २७५)

ठग का बीरा देना

झूठी बातों द्वारा बहका देना । प्रयोग—भल भूतिहु ठग के बीराण (राम० (बाल)—तुलसी, ९०)

ठग के लड्डू खाना

पागल होना, नासमझी करना, होश हवास में न रहना । प्रयोग—खाइ रहा ठग लड्डू संत मत बुधि सोइ । भा पीराहर बनवण्ड ना हंसि आव न रोइ (पद०—जायसी, २७२); मुख के निधान पाये, द्विप के विधान नाये ठग कैसे लड्डू खाये, प्रेममधु खाके हैं (गीता० (बाल)—तुलसी, ६४)

ठग-मुरी खाना

मतवाला होना । प्रयोग—सूर कहुँ ठग मुरी खाई, व्याकुल होतल ऐसै (सू० सा०—सूर, २९७७); इक ठक सब नृप लखें मनो ठगमुरी खाई (नन्द० ग्रंथा०—नन्द०, १८३)

ठग-विद्या

सब कपट । प्रयोग—तुम्हारी ठग विद्या हम अच्छी तरह जानते हैं (परीक्षा०—श्री० दास, ९०)

ठगा सा

आश्चर्य में स्तब्ध, भौचक्का । प्रयोग—यह मन बोहि थके कऊवा जूँ, रह्यो ठग्यो सौ बैस (कवीर ग्रंथा०—कवीर, १३१); गोपी रही ठगी सी ठाढ़ी, कहा ठगौरी लाइ (सू० सा०—सूर, ३५९०); किकिनि ललाम लगाम ललित बिनोकि मुर मर मुनि ठगे (राम० (बाल)—तुलसी, ३१८); कह “धन्य-धन्य” पुकार कर सब रह गये गुण पर ठगे (प्रिय०—गुप्त, ७७)

ठगौरी डालना,—लाना

बाढ़ करना । प्रयोग—हरि ठग जग को ठगौरी लाई (कवीर ग्रंथा०—कवीर, २७९); सहज सुभाइ ठगौरी डारी, सीस, फिरत घरगानी (सू० सा०—सूर, २८४०); गोपी रही ठगी सौ ठाढ़ी, कहा ठगौरी लाइ (सू० सा०—सूर, ३५९०); ऋषि नृप-सीस ठगौरी सी डारी (गीता० (बा)—तुलसी, १००); मुधि बुधि नव मुरली हरी प्रेम-ठगौरी लाइ (नन्द० ग्रंथा०—नन्द०, १५३); ए हो ब्रजठाकुर ठगौरी डारि कोन्ही तब बीरी, बिन काज अब ताकी लाज मरिये (जग०—पट्टमाकर, २३)

ठगौरी पड़ना,—लगना

बाढ़ हो जाना । प्रयोग—हरि ठग जग को ठगौरी लाइ (कवीर ग्रंथा०—कवीर, ११६); जागहुँ लाई काहुँ ठगौरी बिन पुकार बिन बांधे पोरी (पद०—जायसी, ३८८); दसन चमक अपरनि प्रकनाई, देखत परी ठगौरि (सू० सा०—सूर, १२८८); तब तैं रूप ठगौरी लागी, जग समान पल बितवत (सू० सा०—सूर, १३४८)

ठगौरी लगना

दे० ठगौरी पड़ना

ठगौरी लाना

दे० ठगौरी डालना

ठट्ट लगना

जमा होना । प्रयोग—पनघटों पर पनहारियों के ठट्ट के ठट्ट लगे हुए हैं (प्रेम सा०—श० ला०, २६३)

(समा० मुहा०—ठट्ट लगना)

ठट्टा उड़ाना

मजाक उड़ाना । प्रयोग—जब वह मेरे पीछे भेगा ठट्टा



उड़ाते हैं तो मेरे मित्र कहाँ रहे ? (परीक्षा०—श्री० दास, ११५); पराये की विपत्ति पर उठ्ठा उठाना बड़े लोगों का काम नहीं है (सौ०—ब्र० स०, १३)

(समा० मुहा०—उठ्ठा मारना)

### उठ्ठा करना

मजाक उड़ाना । प्रयोग—तब करेंगे क्यों न उठ्ठा लोग जब जाय गृह के लिये गृहा पकड़ (चोखे०—हरिऔध, ११२)

### उठ्ठा मारना, ठठाकर हंसना, ठहाका मारकर हंसना

खूब जोर से हंसना । प्रयोग—दुई कि होइ एक समय भुआला । हंसब ठठाइ फुलाउब गाला (राम० (अ)—तुलसी, ४०५); मनहर उसे देखते ही जोर से ठ्ठा मार कर हंसा (मान० (२)—प्रेमचंद, १२६); देवीदीन ने ठ्ठा मारकर कहा—भैया, इससे सहज तो कोई काम नहीं (गवन—प्रेमचंद, १६५); हंसा ठहाका मार मनोहर, 'तुम श्री' कट्टर पंथी ? लानत, (स्वर्णधूलि—पंत, ६)

(समा० मुहा०—उठ्ठा लगाना)

### उठ्ठे में उड़ा देना

कोई महत्व न देना । प्रयोग—मुलदेव ने मेरी बातों को उठ्ठे में उड़ा दिया (राधा०—ब्र० स०, ९९)

### ठठाकर हंसना

दे० ठ्ठा मार कर हंसना

ठहाका मार कर हंसना

दे० ठ्ठा मार कर हंसना

### ठन जाना

सड़ाई शुरू हो जानी । प्रयोग—ठीक हो सकेगे शठ कैसे कटि कस जो उनसे न ठनेगी (मर्म०—हरिऔध, ५); तो फिर घरवाली से ठन गई होगी (गवन—प्रेमचंद, १६३)

### ठमका कद

न बहुत नम्बी न नाटी (यों नाटी की ओर ही अधिक) । प्रयोग—आयू बीस-इक्कीस । रंग गेहूँ आ । कद ठमका (ये कोठे०—अ० ना०, १३३)

### उठराना

(१) दाम तै करना । प्रयोग—अठारह, अठारह रूपे में कैसे ठेरा लाये ? (परीक्षा०—श्री० दास, १९)

(२) ठिकाना ।

(३) कारण मानना ।

### उसका होना

पसंद होना । प्रयोग—बदलतों की बदल बदल रंगत धर्म बद को सुधार लेता है । दूर करता ठसक ठसक की है ऐंठ का कान ऐंठ देता है (चुमते०—हरिऔध, १७६)

### उहरी हुई

शांत-स्थिर स्वभाव की । प्रयोग—बीस-बाइस की लड़की सी लगती है पर कितनी बड़ी अफसर है, कैंसी गंभीर, उहरी हुई है, इंग कैसे दाता लोगें, जैसे, बड़ी, बुद्धियाँ जैसे हैं (झुठा० (२)—यशपाल, ४५३)

### ठाट ठाटना

तैयारी करनी । प्रयोग—होह संजोइल रोकहु घाटा ठाटहु सकल मर के ठाटा (राम० (अ)—तुलसी, ५५०); बिना प्रयोजन झूलिहुँ ठटिए नाहि ठाट । जैबों नहि जो गांव को, ताकी पूछ न बाट (ब्र० स०—वृंद, ९६)

### ठिकाने लगाना

(१) मार डालना, नष्ट करना । प्रयोग—तुम्हारा मामला है वरना उस हरामजादी को मैंने कब का ठिकाने लगा दिया होता (मूले०—भग० वर्मा, ३४९)

(२) ठीक जगह पर पहुँचाना ।

(३) अन्तिम संस्कार ठीक-ठीक करना ।

(४) दुस्त करना ।

(समा० मुहा०—ठिकाने पहुँचाना)

### ठीक उतरना

किसी काम का ठीक-ठीक पूरा हो जाना । प्रयोग—हमारे घबोह घुनवाले सब तरह ठीक जो उतरते थे (चुमते०—हरिऔध, १६)

### ठीका लेना

(१) दायित्व लेना । प्रयोग—मैं तुम्हारी जिन्दगी भर का ठीका लिए बँटी हूँ क्या ? (मान० (१)—प्रेमचंद, १३४);



नीचपन नंगापन निटुरपन का है जिन्होंने कि ले लिया  
ठीका (चुमते०—हरिऔध, १६४)

(२) किसी काम को रूप लेकर करने का जिम्मा लेना ।

### ठीकेदार होना

उत्तरदायी होना, हिमायती होना । प्रयोग—सचमुच जिस  
भाषा के ठोकेदार आप जैसे घर घमंडी हों उस अभाषी का  
विनाश ही होता है (गु० मि०—बा० मु० गु०, ४३५); वेद  
विदित यह रम्य न छोड़ो वेदों के ठोकेदारों (मधु०—वचन,  
पद, ५५); तुमलोग जो समाज के ठोकेदार हो × × ऐसी  
भूटी × × व्यवस्था का जाल फैलाये बैठे हो (जहाज०—  
इ० जोशी, ४४)

### ठीया ठिकाने लगाना

ठीक व्यवस्था करनी । प्रयोग—आप अभी यहाँ इन बालकों  
को ठीया-ठिकाने लगाएँ (गोली—चतुर०, ३१३)

### टूट खसूची

जिसमें कोई विकास या सुधारकी भावना न हो । प्रयोग—  
मेरे वैवाहिक भी निरे टूट खसूची होते हैं (पद्म० के पत्र—  
पद्म० शर्मा, १३२)

(समा० मुहा०—टूट होना)

### टुक जाना

(१) तुकसान उठाना, खर्च हो जाना । प्रयोग—इस  
समय हमारी दस लाख गंगाजी में हैं कहीं एक भी तुको तो  
दस हजार की टुकी (राधा० प्रकाश०—राधा० दास, ३२१)

(२) पिट जाना ।

### टुकरा देना

(१) छोड़ देना । प्रयोग—मुझ में गोविन्दन से जारी  
चतुराई भी होती, तो साबद इस ने मुझे टुकरा दिया  
होता (दूधगाछ—दे० स०, २२५)

(२) अस्वीकार करना ।

### टेंगा दिखाना

(१) तुच्छ समझना, बेवकूफ बनाना । प्रयोग—यह तो  
नटनागर की घाट में शामिल है कि जिसको चाहे  
धाम पर बड़ा दे, जिसको चाहे टेंगा दिखा दे (कठ०—दे०  
स०, ३७३)

(२) नकार जाना ।

### टेंगा सिर पर लेना

दबकार कुछ करना । प्रयोग—अब जिन्दगी में कौन सा  
सुख है कि किसी का टेंगा सिर पर लूँ (प्रेमा०—प्रेमचंद,  
१९३)

### टेंगे के नीचे होना

बश में रहना । प्रयोग—अब किस रियासत की जनता  
सामन्तों के टेंगे के नीचे रहेंगी (कला०—उग्र, ९१)

### टेंगे पर नाचना,—मारना

(१) कुछ न समझना । प्रयोग—पति को सदा टेंगे पर  
नचाती है (बूँद०—अ० ना०, ४३९) (÷); हम तो सदा  
से ही सबको टेंगे पर मारते रहे (मा—कौशिक, ३९५)

(२) मनमानी करवाना । प्रयोग—देखिए प्रयोग (१)  
में (÷)

(समा० मुहा०—टेंगे पर होना)

### टेंगे पर मारना

दे० टेंगे पर नचाता

### टेंस लगाना

दुख होना या आपात पहुँचना । प्रयोग—मनुष्य जब  
मनुष्य समझ जायगा, उस दिन घुग-घुग से संचित संस्कारों  
को बड़ी टेंस लगेगी, भयंकर प्रतिक्रिया होगी (अशोक०—  
ह० प० द्वि०, २०)

### ठोक ठठा कर,—पीट कर

(१) किसी तरह राखी करके, जबरदस्ती । प्रयोग—  
पुस्तक कोई हो, कैसी हो, जरूरी केवल यह था कि वह  
ऐसी हो कि पढ़ने में रुचि न हो, मन को ठोक पीट कर  
पढ़ी जा सके (शेखर (१)—अज्ञेय, १४९); ठोक पीट कर  
लोगों ने मुझे लेखक-राज बना ही दिया (मेरे०—गुलाब०,  
२५)

(२) अच्छी तरह जांचकर । प्रयोग—जिता का यह धर्म  
है महाराज ! भले प्रकार आगामी का सोचकर ठोक ठठाकर  
तब अपनी बेटी का घर चुने (गंगा०—उग्र, ४३)

### ठोक पीट कर

दे० ठोक ठठा कर



### ठोंक पीटकर बैद्य बनाना

किसी तरह प्रयत्न करके किसी लायक बनाना । प्रयोग—  
चार लोग ठोंक पीटकर बैद्य बना रहे हैं (पट्टम० के पत्र—  
पद्म० शर्मा, २३)

(समा० मुहा०—ठोंक पीटकर हकीम बनाना)

### ठोंक बजाकर

प्रकृष्टी तरह जांचकर । प्रयोग—हरि विन अपना को  
नहीं देखे ठोंक बजाइ (कवीर ग्रंथा०—कवीर, ६१); ठोंक  
बजाइ लख गजराज, कहाँ लीं कही केहि सो रद काड़े  
आरत के हित, नाथु अनाथ के रामु सहाय सही दिन गाड़े  
(कवि०—तुलसी, १३५); ठोंक बजाइ नगारी दे के हों पिय  
बसहि भई री, (मा० ग्रं० (२)—भारतेन्दु, ५८५); अब वह  
चारों घोर ठोंक बजाकर × × घागे बढ़ना चाहता है  
(परस—जैनेन्द्र, ७६); ठोंक बजाकर अपनी घावों से  
देखले, आरती (ब्रह्म०—दे० स०, ५८)

### ठोंकना

(१) मारना । प्रयोग—अरे चाचा ! उमे तो मैंने ही ठोंक  
दिया (तितली—प्रसाद, २७३); राजाराम ने डपटकर  
कहा—उठ, नहीं तो ठोंकता हूँ अभी (चोटी०—निराला,  
७५)

(२) खाना बनाना । प्रयोग—भैया, अब बाल-बच्चों को  
बुला लो, कब तक हाथ से ठोंकते रहोगे (गीदान—प्रेमचन्द,  
२०६); कभी मिसेज सुकुल घाती थीं, कभी अकेले ठोंकते  
खाते थे (सुकुल०—निराला, २९)

### ठोंकना बजाना

जांचना, परखना । प्रयोग—कोई काहू को नहीं सब देखी  
ठोंक बजाइ (कवीर ग्रंथा०—कवीर, २६०); नन्द ब्रज लीजें  
ठोंक बजाइ (सू० सा०—सूर, ३७८६)

### ठोंकर खाकर जानना

दुष्परिणाम भोग लेने पर समझ घानी । प्रयोग—यह राज  
मैंने बरसों ठोंकरें खाने के बाद जाना है (पैतरे—  
अशक, ८०)

(समा० मुहा०—ठोंकर खाकर सीखना,—सम्ललना)

### ठोंकर खाते फिरना

(१) मारे-मारे फिरना । प्रयोग—तुमने इनके सिर हाथ न  
रखा होता तो × × न जाने किसके द्वार पर ठोंकरें  
खाते होते (मान० (१)—प्रेमचन्द, ११)

(२) मल करने पर भी काम का कोई डोल न बैठना ।

### ठोंकर खाना

(१) किसी भूलके कारण दुख सहना । प्रयोग—ऐसी सिद्धि  
छोड़ि मन मूरख काहे ठोंकर खाता (मा० ग्रंथा० (१)—  
भारतेन्दु, ४८३); प्रयोग—इसी तरह बिन्दी की बीमारी में  
पड़कर उर्दू न जाननेवालों की बड़ी ठोंकरें खानी पड़ती हैं  
(गु०नि—वा०मु०गु०, १५०) (+); अगर तुम पत्तियों की पुकार  
सुनते रहे या बादल के टुकड़ों घोर गीतों के स्वरो पर  
मोहित होते रहे तो बुरी तरह ठोंकर खाओगे (भोर०—  
जग० माधुर, १७); वह बुरी राह चलेगा तो आप ठोंकर  
खायेगा (प्रेमा०—प्रेमचन्द, १०२)

(२) कष्ट सहना, परेशान होना । प्रयोग—ठोंकरें देख जाति  
को खाते ठोंकरी आँख पर अगर रख लें (चुमते०—हरिऔध,  
४४); हाँ ये तो, पर इसके भाग्य में ठोंकर खाना लिखा  
था (मान० (१)—प्रेमचन्द, ७७); पूरव में मैंने इस कदर  
ठोंकरें खाई थीं कि मैं यहाँ से भागा (पट्टमपराग—पट्टम०  
शर्मा, ४०४); सो मैंने बनारस में निराधार ठोंकरें खाने से  
बेहतर अपने घर की लातों को समझा (अपनी खबर—  
उग्र, ९५)

(३) पूरी न होनी । प्रयोग—भाइयों के लाजल-पालन पर  
उनकी आवश्यकताएँ ठोंकर खाती रहती थीं (रत्न० (१)—  
प्रेमचन्द १२०)

(४) धोखे में आना ।

(५) लात खाना । प्रयोग—देखिए प्रयोग (१) में (+)

### ठोंकर मारना

अपमानित करके निकाल देना, अपमान करना । प्रयोग—  
हाट बाजार में या सड़क पर लोगों को ठोंकर मारते  
नारायण दरोगा को तनिक भी संकोच नहीं होता  
(ब्रह्म०—दे० स०, ११५)

(समा० मुहा०—ठोंकर मार कर निकाल देना)



### ठौर, ठौर-ठांच, ठौर-ठिकाना

आशय, स्थान । प्रयोग—घनेक जुग जे पुग्नि करै, नहीं राम बिनु ठाउं (कबीर ग्रन्था०—कबीर, ६); पाकी यहाँ ठौर नाही है, लें राखी जहं बँन (सू० सा०—सुर, ४१३६); कहाँ जाउं, कासों कहाँ, और ठौर न मेरे (विनय०—तुलसी १४९); मति दोरि धकी, न लहै ठिक ठौर, समोही के मोह मिटास ठगी (घन० कवित्त—घना०, ६); तो ऐमे बिना मतलब, बिना कोई ठौर ठिकाने कहाँ

मारे मारे फिरोमे—यही बने रहो न (भिसा०—कौशिक, ४७); जब स्वामी जी को पता चला कि मेरा कहीं कोई ठौर-ठिकाना नहीं है तब वह परम आनन्दपूर्वक मुस्कराए (जहाज०—६० जोशी, ५३८)

ठौर ठांच

दे० ठौर

ठौर ठिकाना

दे० ठौर



## ड

### डंक मारना

कष्ट देना । प्रयोग—वह सारे कटुवचन जो उसने जल-जल कर उन्हें कहे थे, इस समय सैकड़ों विच्छुधों के समान डंक मार रहे थे (गवर्न—प्रेमचन्द, १९६)।

### डंका पिटना,—बजाना

- (१) चर्चा होनी, प्रचार होना । प्रयोग—दान डंक बाजद दरबारा । कीर्तिमई समूह पारा (पद०—जायसी, ११७)
- (२) रोव दाव होना । प्रयोग—तमाम दुनिया में आपका डंका पिटा है (कुली०—निराला, १२४)
- (३) राज्य होना ।

### डंका पीटना,—बजाना

(१) प्रचार करना । प्रयोग—चाहते हैं, अपनी सर्वज्ञता का डंका बजाना (गु० नि०—वा० मु० गु०, ४२९); पाप लोग, साम्यवाद का डंका बजाते फिरते हैं (रत्न० (१)—प्रेमचन्द, ३१६); कोई गेरुया वस्त्र लपेटे धर्म का डंका पीटा दिखाई देता है, कोई देश-हिंस्रपिता का लम्बा चोंगा पहने देशोद्धार की पुकार करता पाया जाता है (चित्ता० (१)—शुक्ल, २५)

(२) नगाड़ा बजाकर विजय की घोषणा करनी ।

(समा० महा०—डंका देना)

### डंका बजाना

### दे० डंका पिटना

### डंका बजाना

### दे० डंका पीटना

### डंके की चोट

(१) सबको मुनाकर, निर्भय कहना । प्रयोग—परन्तु साथ ही बुरी बातों की निन्दा डंके की चोट कर देते थे (राधा० ग्रन्था०—राधा० दास, ३७२); मने ही सबसे पहले डंके की चोट यह जाहिर किया था कि अगर हिन्दुस्तान की कौमिलों में अंग्रेज रिआया के कायम मुकाम लोगों को शामिल करते तो कभी गदर न होता (गु० नि०—वा० मु० गु०, २५१); और ये लोग अधिकाधिक उत्साह से डंके की चोट सीधी बात को भी उल्टी करके, जटिल करके, धक्का-मार बना के कहते गये (कबीर—ह० प्र० द्वि०, ८१)

(२) घोषणा करके । प्रयोग—भारत में हर एक रस्म डंके की चोट अदा होती है (गवर्न—प्रेमचंद, ९)

### डंड पेलना

बिना काम पड़े रहना । प्रयोग—जिधर देखिए यार लोगों ने अखाड़े बना रखे हैं, कि उनमें लशामदी, स्वार्थी और मक्कार पड़े डंड पेलते हैं (पद्म० कैपत्र—पद्म० शर्मा, ३१)

### डंडा दिखाना

मारने की धमकी देनी । प्रयोग—लेकिन चपरासी एक न मुनता था × × गालियां देता था, डंडा दिखाता था (प्रेमा०—प्रेमचंद, ५५); हम बाह्यण हैं, हमसे दासपायं कर लो । डंडा न दिखाओ (स्कंद०—प्रसाद, ३७)



### डंडी तोलना

बनियागीरी करनी। प्रयोग—हल की मुठिया पर हाथ रखने वाले किसान तलवार की मुठिया पकड़ने के लिए मजबूत हो गए थे, डंडी तोलने वाले भाले तोलते थे (मान० (३)—प्रेमचंद, १४४)

### डंडा मारना, डंडी मारना

कम तोलना। प्रयोग—डांडी भारत बिरह की, चित-चित्ता घटि जात (रहोम कवि०—रहोम, ५६); ऐसी डंडी मारती है कि कोई परख ही नहीं सकता (प्रेमा०—प्रेमचंद, २३६)

### डंडे के जोर से,—सिर से

जबरदस्ती, मार का भय दिखाकर। प्रयोग—हाँ, वह डंडे के जोर से काम लेता है न (गोदान—प्रेमचंद, २२); राजा जनता के भेड़िया धमाल को डंडे के सिर से हांकते रहते हैं (शांसी०—वृ० घर्मा, १७३); डंडे मूसडे डंडे के बल माल भले ही चाब ले, पर भूल से जिनकी आंखें नाच रही हैं, उनको वे कानी कौड़ी भी देने के रवादार नहीं (चुमते० (म)—हरिऔध, ३)

### डंडे के सिर से

दे० डंडे के जोर से

### डकार जाना

भोज या रकम हड़प कर जाना। प्रयोग—मेरी सारी की सारी मजदूरी साफ डकार गये (गोदान—प्रेमचंद, ३२४); बंटवारे के बाद अपने हिस्से के × × हाथे जाने किस मुसाहिब के घर दिखे, जो डकार गया (भारती०—रा०रा०, ११५)

### डग भरना

कदम बढ़ाना। प्रयोग—व्यों नहीं बिड़िंगे भरें डग हम। पाँव क्यों जाय टगमगा मेरा (चुमते०—हरिऔध, ९)

### डग मारना

कदम बढ़ाना, लम्बे पैर रखना। प्रयोग—मारि डग जब फिरि चली सुंदरि, बेनी करे सुअंग (सु० सा०—सूर, ३५१३)

(२) किसी वस्तु का अपने स्थान पर ठीक तरह से न बैठने के कारण हिलना।

### डर खाना

डरना, डर मानना। प्रयोग—बै ती फिरे उतर अस पावा। बिनबा सुजे हिएँ डर खावा (पद०—जायसी, ३१९)

### डांट पिलाना

डांटना। प्रयोग—मुनील ने आँखों ही आँखों में डांट पिलाई (कड०—दे० सा०, १४५)

(समा० मुहा०—डांट बताना,—लगाना)

### डांड पड़ना

नुकसान हुई वस्तु का दाम चुकाने को बाध्य होना। प्रयोग—खेती में साढ़े बारह का पूरोपूर डांड पड़ गया (लिली—निराला, ६५)

(समा० मुहा०—डांड लगाना)

### डांड भरना

क्षति-पूर्ति करनी। प्रयोग—तड़का प्रलग हाथ से गया, दो गो रुपया डांड प्रलग भरना पड़ा (गोदान—प्रेमचंद, १५६)

### डांडी मारना

दे० डंडी मारना

### डांवाडोल होना

विचलित होना। प्रयोग—सूँ नहीं सुरभ उरभि नेह-गुरभनि, मुरभि मुरभि निस दिन डांवाडोल है (घन० कवित्त—घना०, २१); तभी से संस्था डांवाडोल हो रही है, जान बनती है या जाती है (रंग० (२)—प्रेमचंद, २७१); मैं चढ़ी हूँ × × जिसकी एक तीखी कोर से गुप्त-साम्राज्य डांवाडोल हो रहा है (स्कंद०—प्रसाद, ११६); पान्था की स्थिति मानादहन की चालों से पहले ही डांवाडोल हो चुकी थी (सुहाग०—अ० ना०, ११५)

### डाक गाड़ी बनना या होना

बहुत जल्दी जल्दी बोलना या कोई काम करना या होना। प्रयोग—डाक्टर का हाथ नौ दिन में अढ़ाई कोस की स्पीड से चल रहा था और जवान डाक गाड़ी बनी हुई थी (बूट०—अ० ना०, ११९)

(समा० मुहा०—डाक गाड़ी छोड़ देना)



**डाल भुक्ता**

अनुकूल होना । प्रयोग—पिता की छाया में बैठो, कभी तो डाल भुकेगी (दूधगाछ—६० स०, ४५)

**डाल-डाल पात-पात**

इधर-उधर, हर जगह । प्रयोग—जिस अग्रमान से बचने के लिये डाल-डाल, पात-पात भागता फिरता था वह हो ही गया (गवन—प्रेमचंद, ११४)

**डाली देना**

बड़े सफसर को पल आदि की भेंट देनी । प्रयोग—हुक्ताम को डालियां न द, तो बागी समझा जाऊँ (गोदान—प्रेमचंद, १७७); एक बार बड़े दिनों में मैंने कलक्टर साहब को डाली दी (रेशमी—राम० वर्मा, ८५)

(समा० महा०—डाली लगाना)

**डींग उड़ाना,—मारना,—हांकना**

घातम-प्रशंसा में बड़ी-बड़ी बातें करनी । प्रयोग—अब भी क्या इसलाम के त्रामी बन के डींगे मारोगे ? (गु० नि०—वा० मु० गु०, ६३०); औरों को भूटा बतलाना, अपने सब की डींग उड़ाना (गु० नि०—वा० मु० गु०, ६३०); हम लोगों के पूर्वज बड़े थे, ऐसी डींग हांकने से केवल काम नहीं चल सकता (राधा०—ब्र० स०, १०६); जाति के काम जब नहीं आते डींग हम मारते रहे तब क्या (सुमते०—हरिऔध, ८५); डींग हांकते रहते हैं पर भीतर से हैं पोले (मर्म०—हरिऔध, १२८); वह पछताता रहा था कि मैंने क्यों जालपा से डींगें मारी (गवन—प्रेमचंद, १८); मैं उस पक्ष का कुछ अंश इस अभिप्राय से यहाँ उद्धृत करना चाहता हूँ कि मित्रता का दम भरनेवाले और बात-बात पर सहृदयता की डींग मारनेवाले हम लोग उसे पर्व, सोचें और हो सके तो कुछ शिक्षा भी ग्रहण करें (पद्मपराम—पद्म०शर्मा, १२६)

(समा० महा०—डींग की लेना)

**डींग का तार न टूटना**

बहुत डींग मारना । प्रयोग—पूछता बात तक नहीं कोई पर नहीं तार डींग का टूटा (सुमते०—हरिऔध, ९४)

**डींग मारना**

दे० डींग उड़ाना

**डींग हांकना**

दे० डींग उड़ाना

**डूबा देना या डूबाना**

(१) कहीं का भी न रखना, धहित करना । प्रयोग—अब जो मुझे डूबाएगा, उसे मैं भी साथ ही ले डूवूँगी (सुहाग०—अ० ना०, ४६); तो फिर क्यों बिना काम-गुल हिलाए चले आए ? अपने साथ मुझे भी डूबाया (रंग०—२)—प्रेमचंद, ८३)

(२) बदनाम करना, प्रतिष्ठा को क्षति पहुंचाना । प्रयोग—हथियार न उठाती तो क्या करती ? अपनी जान तो देती ? पुरखों को डूबा देती ? (मृग—६० वर्मा, १६०)

**डुंगर की ओट में पहाड़ छिपना**

छोटी चीज की आड़ में बड़ी चीज छिपनी । प्रयोग—सरदास प्रभु दुरत दुराए, डुंगरनि ओट सुमेर (सू० सा०—सूर, १०७६)

**डूबकर**

पूरी तरह लिप्त या तल्लीन होकर । प्रयोग—तुमने अक्सर मुझ में डूब-डूब कर कहा है (कनु०—भारती, ३२)

**डूब जाना**

(१) निमग्न हो जाना । प्रयोग—वासनाओं से प्रेरित होकर मनुष्य ईश्वरीय नियमों का उल्लंघन करता है और उनमें डूब कर मनुष्य अपने को और अपने रक्षिता ग्रह को भूल जाता है (चित्र०—भा० वर्मा, २०); भाभी, अच्छा रहता है और फिर जाने क्या हो जाता है इसे । कुछ ऐसा डूब जाता है कि पता ही नहीं चलता (देवकी०—रा० रा०, ३-४); डूबा देता है मुझे सदेह, सूर-सागर वह स्नेह (पद्मव—पंत, ८३)

(२) नष्ट हो जाना । प्रयोग—हमारी तो उसने बहुत सहायता की सोनह दुस्तर का कर्ज दिलवा दिया, नहीं तो सबमुच डूब जाते (सुता०—२)—यशपाल, ५२०)

**डूब मरने की बात**

घातान्त बच्चा की बात । प्रयोग—यदि कृष्णा का विवाह



राजवंश की प्रतिष्ठा के अनुकूल न हुआ तो हमारे लिए यह डूब मरने की बात होगी (विप०—प्रेमी, ११)

### दूबती किस्ती पार लगाना

विलकुल बिगड़े काम को बना लेना। प्रयोग—बिता प्रसाद ने बहुतों की दूबती नाव पार लगाई है (बहु०—दे० सं०, १९१); जिस देवी वक्ति ने समय-समय पर वैदिक धर्म की दूबती नैया को पार लगाया है उसी का चमत्कार फिर संसार को वक्ति करने के लिये प्रकट हुआ (पद्म पराग—पद्म० शर्मा, १४)

### डूबना

(१) भ्रष्ट होना, बर्बाद हो जाना। प्रयोग—देवता हैं कि जाति दूबेगी है जमा नित हो रहा जंगू (सुभते०—हरिऔध, १५३)  
(२) लिप्त होना, लीन होना। प्रयोग—एक-एक शब्द बेहयावी घोर बेशर्मी में डूबा हुआ था (प्रेमा०—प्रेमचंद, १२९); धी अद्वितीय, धतुलनीय में आश्चर्य में डूबा अवाह तुम्हीं में डूबा हूँ (कला०—पंत, ५९)

### डूबना उतराना

चिन्ता में पड़ जाना। प्रयोग—उन्होंने इस मुलाकात की चर्चा माता से भी न की, मन ही मन डूबने-उतराने लगे (रंग० (२)—प्रेमचंद, ३५२)

### डेढ़ ईंट की मसजिद अलग बनाना, डेढ़ चावल की खिचड़ी अलग पकाना

सबसे भिन्न मत होना, सबसे भलग काम करना। प्रयोग—जगमोहन को ही लो। अपनी डेढ़ ईंट की मसजिद चुन ही लेता है (कठ०—दे० सं०, ३७५); यह निश्चयपूर्वक सत्य समझिए कि यदि डेढ़ चावल की खिचड़ी हम लोग पकाते रहें तो हमारे राज्य डेढ़ पीढ़ी भी जीवित नहीं रह सकते (विप०—प्रेमी, ९७)

### डेढ़ चावल की खिचड़ी अलग पकाना

### दे० डेढ़ ईंट की मसजिद अलग बनाना

### डेढ़ पसली का

सामान्य, छोटा, दुर्बल। प्रयोग—महात्मा गांधी को ही देख लो, डेढ़ पसली के बादमी से मगर सारी दुनिया को भंगुनी पर नचावे फिरते थे (मेर०—गुलाब०, ९७)

(समा० मुहा०—डेढ़ हड्डी का)

### डेरा उठाना

अस्थावी निवास को छोड़कर घागें बड़ जाना। प्रयोग—मातु नहानी जानि सब डेरा चले लबाइ (राम० (अ)—तुलसी, ५५८)

### डेरा करना,—डालना

सामान फैलाकर ठिकना, ठहरना। प्रयोग—इहि ब्रजको उप-देसन आवी, कत जु रह्यो करि डेरो (सु०सा०—सुर, ४४९६); जहं तहं लोगन्ह डेरा कीन्हा (राम० (अ)—तुलसी, ५५८) जो तब जादि जो सब गीण ग्याल घागे गये थे उन्होंने जा मपुरा के बाहर डेरो किये (प्रेम सा०—लालाल, १०५); डालते किछ लोक में डेरा नहीं डर गये कोई नहीं कुछ बोलता (चोले०—हरिऔध, १५१) (+); या यहां पर गंधर्वों ने डेरा डाला था और अब उनके चले जाने पर भी विलास की उन्मादक सुगन्ध चारों घोर व्याप्त है (गंगा०—उग्र, ४१) (+)  
(२) बसना। प्रयोग—तुलसीदास यह पास मिटे जब हृदय करहु तुम डेरो (विनय०—तुलसी, २३९); देखिए प्रयोग (१) में (+)

(३) सेना का अस्थावी पड़ाव। प्रयोग—हारने पर भी अंगरेजों ने कलकत्ते की छाया नहीं छोड़ी। पलता में डेरा डाला (राधा० प्रस्ता०—राधा० दास, ३०९)

### डेरा कूच होना

भूख होनी। प्रयोग—ऐसी भुल गई है कि देखते डर लगता है। मुझे देना तो धीरे से बोली—पंडाजी, अब डेरा कूच है (रंग० (२)—प्रेमचंद, ५३)

(समा० मुहा०—डेरा कूच करना)

### डेरा जमाना

(१) अस्थावी रूप से ठहरना। प्रयोग—घल्ल में यह निश्चय हुआ कि किसी पेड़ के नीचे डेरा जमाना चाहिए (मान० (८)—प्रेमचंद, ८०)

(२) बस जाना।

### डेरा डालना

दे० डेरा करना



### डोरा पड़ना

बसेरा करना, ठहरना। प्रयोग—नास मेरे डबरे-उपर जागे है दुखों का पड़ा हुआ डोरा (चुमते०—हरिऔध, ३)

### डोरा होना

निवास होना, रहना। प्रयोग—उय बहुत ही बुरे बसेरे में है जहाँ बर फूट का डोरा (चुमते०—हरिऔध, ७२)

### डोंगा डुबाना

बर्बादी करनी। प्रयोग—घाप तो मरा डोंगा ही डुबाये देते हैं मिस्टर खन्ना (गोदान—प्रेमचंद, २३७)

### डोरा डालना

प्रेम मूत्र में बड़ा करना, फाँसना। प्रयोग—गाँव की नीच जाति की बहू बेटियों पर डोरा डाला करता था (गोदान—प्रेमचंद, ३२७); सो में देवना ही रहा, मंत्रमुग्ध, लेकिन ऐश्वर्यों ने डोरे डाल, भक्ति भावना में बहका, परदे के पीछे नजदीक से रामजी के दर्शन करने के बहाने अन्दर ले जा महन्त जी से उसका संयोग करा दिया (अपनी सहर—उग्र, ६४); मुनने में जाया कि उस समय की एक सुप्रसिद्ध फ़िल्म स्टार ने सन्तोने जवान भले-भोले सेठजी पर डोरे डाल रखे हैं (ये कोठे०—अ० ना०, १८)

### डोरी हिलाना

इशारा करना, इशारे पर काम कराना। प्रयोग—इस देश के हाकिम घापकी ताल पर नाचते थे, राजा महाराजा डोरी हिलाने से सामने हाथ बांध हाज़िर होते थे (गुंनि०—वा० मु० गु०, २१३)

### डोल-डाल से हो आना

पासाना हो घबरा। प्रयोग—घोड़ी देर बठ के बीजक बांधो, हम डोल-डाल से हो घाबें (मैला०—रेणु, ३५)

### डोलना

(१) विचलित होना। प्रयोग—बरन कमल जाकें रिदे बसे सो जन वषों डोले देव (कबीर ग्रंथा०—कबीर, २८४); फिर फिर रोई न कोई डोला। आधी राति बिहंगम डोला (पट०—जयसी, ३११); सम इम निषय, नीति नहि डोलहि। परस वचन कबहुं नहि डोलहि (राम० (उ)—तुलसी, १०६४)

(२) घुमना। प्रयोग—काहिहि घर-घर डोलते खाते दही घुराह (सु० सा०—सूर, २०७९)

### डोलों से उतरते ही

विवाह के तुरन्त बाद। प्रयोग—डोली से उतरते ही सारा काम मिर पर उठा लिया (गोदान—प्रेमचंद, २७)

### डौंड़ी फिरफाना या फेरना

मुनादी करनी, सबसे कहते फिरना। प्रयोग—यह मुन कंस ने X X नगर में यों डौंड़ी फेर दी कि कोई पज, दान, धर्म, तप और राम का नाम न करने पावे (प्रेम सा०—ल० ला०, ९); डौंड़ी फेरन के समय निज बल जब प्रगटाय। मेरो दल के लोग कों दीनों तुरत हराय (मा० ग्रंथा० (१)—भारतेंद्र, १८६)

(समा० मुहा०—डौंड़ी देना)

### डौंड़ी बजना

(१) घोषणा होनी। प्रयोग—हाय दर्द ! न बिसासी मुने कछु, है जग बाजति नेह की डौंड़ी (धन० कवित्त—घना०, १४)

(२) जयजयकार होनी। प्रयोग—नौड़ीकी डौंड़ी जग बाजी, बड़यो स्वाम घनुराग (सु० सा०—सूर, ४२७०)

(३) आनन्द होना।

### डौल होना

युक्ति बैठनी, व्यवस्था होनी। प्रयोग—मूरदास ने घरदल हिलाकर कहा—कही है डौल ? (रंग० (१)—प्रेमचंद, १०)  
(समा० मुहा०—डौल बैठना)

### ड्योड़ी बंद होना

घर में पैर न रखने देना। प्रयोग—जब पकड़े जाते तब दुर्बलि करके इनके अनुज बाबू गोकुलचन्द्र ड्योड़ी बन्द कर देते (राधा० ग्रंथा०—राधा० दास, ४१०); तुम इनकी ड्योड़ी बन्द न करो (भारती०—राधा०, ८१)

(समा० मुहा०—ड्योड़ी पर पैर न रखने देना)

### ड्योड़ी लगना

दरवाजे पर नौकीदार बैठना। प्रयोग—अब तो आपके वहाँ ड्योड़ियाँ लगने लगी—क्या ठीक है (मा—कौशिक १७८)



## ढ

### ढंग करना

- (१) अटपटांग काम करना । प्रयोग—सूर स्याम इन-भीतर  
जुबलतिनि, ये ढंग करत मुरारि (सू० सा०—सूर, २१४५)  
(२) काम करने का उपाय निकालना ।  
(समा० मुहा०—ढंग निकालना)

### ढक्का बजाकर

घोषणा करके, सरे आम । प्रयोग—घोरगनाह सों गाहि को  
मंद सस्यौ तिवसाहि बजाय के ढक्का (भूषण ग्रंथा०—  
भूषण, १५१)

### ढरना

अनुरक्त या घनकूल होना । प्रयोग—जैसे हीं उनि मुंह लगाई  
तैसेही ये ढरी (सू० सा०—सूर, ३०२२); ताही कौ मुहाग  
सबही तैं बहुभाग जासौ करि अनुराग रस-रीति सौ ढरत  
हो (क० र०—सैनापति, ४२); ऐं गरि हम पर बहुत ढरे ।  
जातें या बन के दूम करे (मंद० ग्रंथा०—मंद०, २३९)

### ढरें पर आना

किसी बिगड़े काम का ठीक हो चलना, सुधरना । प्रयोग—  
बीच में समर कुछ ढरें पर आता हुआ जान पड़ता था  
(कर्म०—प्रेमचंद, १९१)

(समा० मुहा०—ढरें पर चल निकलना)

### ढरें पर झुकना

किसी तरीके की ओर विशेष आग्रह होना । प्रयोग—अब  
जहां के अनेक लोग जिस ढरें पर झुके होते हैं तब थोड़े से  
लोगों का उसके विरुद्ध पदार्पण करना XX अपने जीवन को  
कटक मज करना है (प्रे० पी०—प्र० ना० मि०, १५३)

### ढल चलना

प्रोढ़ावस्था घानी, उत्साह न रहना । प्रयोग—घब में ढल  
चला हूं, क्यों कि मन चक गया है (वीने०—रा०रा०, २०६)

### ढलती उमर—जघानी

प्रोढ़ावस्था । प्रयोग—क्या गावेगी तजमनियां अब ?  
वतती बंस में जगानी का गला कहां से गावेगी ? (परती०  
रेणु, २६६); यदि कभी ये मेरी मांग पूरी नहीं कर सके  
हैं X X तो X X इसलिए कि उनकी आमदनी सीमित  
है और इतनी हुई अवस्था में उन्हें कुछ बनाकर रखने की  
भी चिंता है (वाहर०—देव०, १११)

### ढलती जघानी

दे० ढलती उमर

### ढलना

(१) उतार पर होना । प्रयोग—दुपहर ढलते नौकर बिस्तर-  
बाक्स लेकर भेज दिया गया (कुम्भी०—निराला, १५); रात  
ढल चली है, घंघेरा घभी नहीं ढला (बुद्ध०—वचन, ४७)



(२) किसी अनुसूच बन जाना । प्रयोग—कितनी डरि मो वह डार सही जिहि मो तन आसिन डोरत है (घन० कवित्त—घना०, ५१) ; यदि कुड़ंग में डले हो सका कान न उसका गड़ा (मर्म०—हरिऔध, २५)

### डह जाना

नष्ट हो जाना । प्रयोग—वे सामन्त उलड़ गये, साम्राज्य डह गये और मदनोत्सव की घूमघाम भी मिट गई (अशोक०—ह० प्र० द्वि०, १३)

### ढांक संवार कर रखना

यत्न पूर्वक रखना । प्रयोग—यह उपदेश आपनी ऊँची राखी ढाँपि सवारी (सू० सा०—सूर, ४४१५)

### ढाई माशे का आदमी

बहुत दुबला-पतला व्यक्ति । प्रयोग—नन्हे वंश एक हल्के फुल्के कोई ढाई माशे के आदमी वे (गौली—चतुर०, २००)

### ढाक के वही तीन पात होना

(१) सदा एक सा । प्रयोग—यह दुनिया है एक तमाशा, ताओ कूदो हो-ही हा-हा । बहती गंगा धो लो हाथ । वही ढाक के तीनों पात (गु० नि०—बा० मु० गु०, ६९९) ; हमले करते करते रात होने को आई, पर अन्त में वही ढाक के तीन पात (मुग०—वृ० वार्ता, ४५८)

(२) छोटा परिवार होना ।

### ढाड़ मार कर रोना

बिल्ला कर रोना । प्रयोग—साधो न मिला, यह देखकर देवकी ढाड़ें मारकर रोने लगी (मान० (८)—प्रेमचंद, १०) ; क्यों भला काम लें न ढाड़ से क्यों लगे ढाड़ मार कर रोने (चुभलै०—हरिऔध, ४१) ; रोई बिल्लाकर फिर ढाड़ मार मार कर जैसे माँ-बाप मरे हों घर (अना०—निराला, १७७)

### ढाल होना

रक्षक होना । प्रयोग—इस भय से बचने के लिए मोतम की शरण हो एक ढाल है (वैशाली० (१)—चतुर०, ३४५)

### ढालना

अनुसूच बनाना । प्रयोग—सोच नहीं पाती कि कैसे उसे अपने कुल के संस्कारों में ढाल पाऊँगी (सुहाग०—अ० ना०, १६४) जीवन बहुत समझदार है । हर परिस्थिति में अपने को ढाल सकती है (कठ०—दे० स०, २८८)

### ढिँडोरा देना, पीटना

(१) सबसे कहते फिरना । प्रयोग—अपना दूख दर्द अपने पास ही रखना चाहिए दुनिया में उसका ढिँडोरा पीटने से क्या लाभ ? (मुँडे०—मग० वार्ता, २२१) ; संवार आदम्बर का उपासक है । संस्थाओं में काम करनेवाले लोगों में यह रोग और भी अधिक है क्योंकि उनकी दुकानदारी ही आदम्बर से चलती है । ढिँडोरा सादगी का पीटते हैं और काम... (पट्टम० कैपत्र—पट्टम० शर्मा, १२२) ; अपने मन में चाहे जो विचार रखो, जिन बातों को जो चाहे मानो, जिनको जो चाहे न मानो, पर इस तरह ढिँडोरा पीटने से क्या फायदा (रंग० (१)—प्रेमचंद, ४७)

(२) पोषणा करनी । प्रयोग—वहाँ का राज ले नगर में ढिँडोरा दे उसने अपना घाना बैठाया (प्रेम सा०—ल० ला०, १५५)

(समा० मुँडा०—ढिँडोरा बजाना)

### ढिँडोरा पिट जाना

बारों धोर प्रचार होना । प्रयोग—इसमें सन्देह नहीं बड़प्पन का ढिँडोरा दूर-दूर तक पिट जाता है (मट्ट नि०—बा० मट्ट, ८९)

### ढिँडोरा पीटना

### दे० ढिँडोरा देना

### डील करना

काम में देरी करना, सुस्ती करनी । प्रयोग—बेर मेरी कौी डील कीन्ही, मूर बनिहारी (सू० सा०—सूर, १७६) ; सुस्ती कही है सोची खेल बार-बार सोची डील किये नाम-महिमा की नाव धोरिही (विनय०—सुलसी, २५८) ;



तुल गई डोल सील लेने को सूझ तब भी सबील पर न  
तुली (चुभते०—हरिऔध, ५८)

### डोल डालना,—देना

चोड़ी छूट देनी, निपन्त्रण में कमी होनी। प्रयोग—रवों  
ह्यों नीच चढ़त सिर ऊपर, ज्यों ज्यों सील बस डोल दई  
हे (विनय०—तुलसी, १३९); इधर कुछ दिनों से बाहर ने  
अपने कामोंमें काफ़ी डोल देनी आरम्भ की थी (शेखर(२)—  
अज्ञेय, ७३); आप खुद ही डोल डाले हुए हैं (गवन—  
प्रेमचंद, ८८); तुम चाहो तो कल ही सिर पर पैर लेकर  
भाग जाय। तुमने डोल दे दी है (परती०—रेणु, ४०)

(समा० मुहा०—डौली छोड़ना)

### डोल देना

३० डोल डालना

### डोला काम करना

सुस्ती से काम करना। प्रयोग—यह उप सम्पादक बड़ा  
डोला काम करता है (बौने०—रा० रा०, १२१)

### डोला पड़ना या होना

(१) दबाव कम होना। प्रयोग—तुम जरा भी डोलो पड़ो  
घोर काम बिगड़ा (गवन—प्रेमचंद, १२)

(२) क्रोध आदि का कम होना। प्रयोग—पहिले तो आप  
भी बिगड़े, पीछे डोले हुए, बोले अच्छा जो आपके धरम में  
घावे दे दीजिए (भार० ग्रंथा० (३)—भारतेन्दु, ९४६)

(३) पहली की सी स्थिति न रह जानी। प्रयोग—यकनों  
को संस्कृत सिखाना पहले घोर पाप समझा जाता था, पर  
अब इस तरह का ख्याल कुछ डोला पड़ गया (सा० सी०—  
महा० द्विवेदी, ४४); पीछे से पत्र डोला पड़ गया। अन्त को  
बन्द करना पड़ा (गु० नि०—वा० मु० गु०, ३३५)

(४) काम में सुस्ती आनी। प्रयोग—घानुर न हूँ री  
अति घानुर बिचार यकि और सब डोले रूप ही के एक  
घानुरी (धन० कवित्त—धना०, १७७); हिन्दू कहीं डोले तो  
नहीं पड़ मचे (पद्म० के पत्र—पद्म० शर्मा, ४); मैदान को  
गफ़ाई करने वाले मजदूर जरा डोले पड़-पड़ जा रहे थे  
(झांसी०—वृ० वर्मा, १७१)

(५) कड़ाई या चौकसी में कमी होनी। प्रयोग—जब  
राजा ही डोला है तब सामन्त क्या कर सकेंगे ? (मुग०—  
वृ० वर्मा, ३४५)

### डोले घबन

उदासीनतापूर्ण वाणी। प्रयोग—अन्तर गठीले मुख डोले  
बैठ बोलो, सुन्दर सुजान ठऊ प्राननि खरे लगो (धन०  
कवित्त—धना०, १५८)

### डुलकना

धाकूट या अनुकूल होना। प्रयोग—देखा न मांजी को  
कैसा अपनी जोर डुलका लिया (तितली—प्रसाद, ४६)

### डेर हो जाना

(१) मर जाना। प्रयोग—सीट क्या पड़ेगा, वहीं डेर हो  
जायगा (मोदान—प्रेमचंद, ९३); बीमारी में पीसोगी बाई,  
तो डेर हो जाओगी (मुग०—वृ० वर्मा, ३७५)

(२) एक दम मुर्दा-सा पड़ जाना—गहरी नींद में सो जाना।  
प्रयोग—इसी से सांभ सकाल सा पी चुकने के बाद भैया  
लोग अपने-अपने बिस्तरे पर डेर हो जाते थे (वल०—  
नागा०, ९८)

### डोल की पोल

भीतरी पोल। प्रयोग—जब नहीं ठीक-ठीक बोल सकी,  
डोल की पोल क्यों न तब सुलती (चोखे०—हरिऔध, १०४)

### डोल के अन्दर पोल

खोखला बादमी, झूठी स्थिति। प्रयोग—पर देखा तो कुछ  
नहीं। वस, डोल के अन्दर पोल (गु० नि०—वा० मु० गु०,  
४५२); मुंह से बकने को तो बड़े बड़े सिद्धान्त और ऊँचे-  
ऊँचे विचार बक जायेंगे, पर डोल के अन्दर पोल ही रहेगी  
(चित्र०—कौशिक, ८८)

### डोल देना,—पीटना,—बजाना

चारों ओर कहते फिरना। प्रयोग—तब डोल दै दै बदनाम  
कियो अब कौन की लाज लजावरी री (ठाकुर०—ठाकुर  
१८); प्रत्येक उम्मेदवार अपनी-अपनी डोल पीट रहा था  
(प्रेमा०—प्रेमचंद, ४३४); इस प्रतिकूल स्थिति में भी आपने



बहुत कुछ कर डाला। साहित्य-सेवा भी कुछ कम नहीं की, पर डोल नहीं पीटा (पद्म० के पत्र—पद्म० शर्मा, ५९); एक तो हमें अपनी तरफ से यह डोल नहीं पीटना कि तबायफ है (ये कीटे०—अ० ना०, ८९); फिर इसका खास तौर पर डोल बजाने की क्या जरूरत थी? (दूधगाछ—दे० स०, २६३)

### डोल पीटकर.—बजाकर

सबकी जानकारी में, खुले आम। प्रयोग—जनु हीरा हरि लियो हाथ नै, डोल बजाइ ठगी (सू० सा०—सूर, ३८८३); रहिमान क्याह बिगाधि है, सकहु तौ जाहु बचाइ। पांयन बेरी परत है, डोल बजाइ बजाइ (रहीम कवि०—रहीम, २६); लोगों ने सलाह दी, एक हल तोड़ दो और खेतों को उठा दो पर प्यारी का गर्व में डोल बजाकर अपनी पराजय स्वीकार न कर सकता था (मान० (१)—प्रेमचंद, १२५); कोई कहे या न कहे पर जानते सब हैं। तुम्हारी घाँसों, उनकी घाँस डोल पीटकर कहती हैं (मृग०—वृ० वर्मा, ५५)

### डोल पीटना

#### दे० डोल देना

### डोल बजाना

प्रशंसा होनी, घम होनी। प्रयोग—जहाँ गोविन्दन जैसे बहुरूपिये ठग बिठा बला सकते हैं, वहाँ एक सच्चे, खरे कामाधेन का डोल क्यों नहीं बज सकता (दूधगाछ—दे० स०, २८१)

### डोल बजाकर

#### दे० डोल पीटकर

### डोल बजाना

(१) प्रचार करना। प्रयोग—नरगिस का लेख “बड़े घाटिस्ट बड़ी रकमें” छापकर उन्होंने अपनी पत्रिका का डोल बजा दिया (दूधगाछ—दे० स०, ३०८)

(२) खुशी मनाना।

(३) दे० डोल देना।



## त

### तंगदस्त होना,—हाथ होना

पास में पैरों की कमी होनी । प्रयोग—यह भी उसने कहा कि बाबू के तंग दस्त रहने के कारण वह आम मोल नहीं ले सकता (लिले—भिराला, ६४) ; स्वर्क या और तंग हाथ भी (बौने०—रा० रा०, १५५) ; उन्हें हमेशा तंगदस्त ही देना (मान० (४)—प्रेमचंद, ५३)  
(सगा० मुहा०—तंगदस्ती होना)

### तंगदिल होना

कंजूस या छोटे दिल का होना । प्रयोग—क्या कहें हम तंगदिल तो थे नहीं, तंग तंगी हाथ की है कर रही (चोखे०—हरिऔध, १५०)

### तंग-हाथ होना

#### दे० तंगदस्त होना

### तंग होना

(१) आमदनी कम होनी । प्रयोग—सठ्ठ्राइन नीयत तो कभी खराब नहीं की × × हाँ आजकल तंग हो गया हूँ, जो चाहे कह लो (गोदान—प्रेमचंद, १५७)

(२) कसा होना ।

(३) डेरान आना ।

### तंगी उठाना,—में पड़ना या होना

खर्च के रुपये की तरुलीक होनी । प्रयोग—इनके बेटे पोतों को भी तंगी उठाने की कुछ जरूरत न थी (परीक्षा०—श्री० दास, १४२) ; क्या कहें हम तंगदिल तो थे नहीं, तंग तंगी हाथ की है कर रही (चोखे०—हरिऔध, १५०) ; जबकि तुमसे लोग तंगी में पड़े तो तुम्हारा देख चौड़ापन लिया (बोल०—हरिऔध, २२)

### तंगी में पड़ना या होना

#### दे० तंगी उठाना

### तकदीर का पलटा खाना

भाग्य फिरना । प्रयोग—रतन की तकदीर ने पलटा खाया या (गहन—प्रेमचंद, २६१)

### तकदीर खुलना

अच्छे दिन आना, सौभाग्य के दिन । प्रयोग—पढ़ने में तेज थी, बजीफा मिल गया, विलायत चली गयी, सब तकदीर खुल गयी (मान० (१)—प्रेमचंद, २७०)

### तकदीर खोटी होना

बुरे दिन होना, दुर्भाग्य होना । प्रयोग—हाँ, अपनी तकदीर ही खोटी हुई, तो कोई क्या करेगा (रंग० (१)—प्रेमचंद, २६)



### तकदीर ठोंकना

भाग्य को रोना । प्रयोग—लेकिन यहाँ ऐसी पुलिस कहीं है, तकदीर ठोंक करबंटे रहो और क्या ? (मान० (७)—प्रेमचंद, ६४)

### तकता उलटना

(१) बना बनाया काम बिगड़ जाना । प्रयोग—जब निबल हो बने सबल संगी तब पलटते न किस तरह तखते (चुमते०—हरिऔध, ५३)

(२) परास्त करना । प्रयोग—विदेशी सरकार का तकता उलटने के लिए तो बहुत कुछ करना होता है (ब्रह्म०—दे० स०, २६४)

### तत्तो थंभो करना

झगड़े शान्त करना । प्रयोग—घब अगर उसने बहुत तत्तो थंभो किया तो साल छः महीने और काम चलेगा (मान० (१)—प्रेमचंद, ६) ; उन्होंने दोनों को तत्तोथंभो करने की बहुत चेष्टा की किन्तु कोई लाभ न हुआ (मा—कौशिक, ९५)

### तनकर

गर्व के साथ, अकड़कर । प्रयोग—ब्राह्मण ने कंसा रंग समाज पर बांध रखा था । भीख लेता था तनकर (अपनी सबर—उग्र, ६२) ; दबकर, भुक्कर, तनकर, या ऐंठकर जैसे भी हो अपना मतलब पूरा करने में ओस्ताद थी (बल०—नागा०, ११२) ; मि० क्लार्क के अधिकार पर इतना अभिमान । तनकर बोली..... (रंग० (१)—प्रेमचंद, ३३७)

### तन करना

भृंगार करना, घारण करना । प्रयोग—अंजन, अभरन, चीर चाह वह नेकु घातु तन कीजै (सू० सा०—सूर, ४३००)

### तन कसना

साधना द्वारा शरीर को बल में करने का प्रयत्न करना । प्रयोग—करहि जोग जप तप मन कसही (राम० (अ)—तुलसी, ४९७)

### तन का ताप बुझाना

मनोवांछा पूरी करनी ; कष्ट दूर होना । प्रयोग—पूरा मिल्या तबै सुग उपरयो, तन की तपति बुझानी (कबीर ग्रंथा०—कबीर, १११) ; मूरदास स्वामी के मिलिबै, तन की

तपति बुझाई (सू० सा०—सूर, ४२९४) ; मिलि जो गिरीतम बिछुरै काया अगिति जराइ कै गो मिलै तन तपति बुझै कै मोहि मूए बुझाई (पद०—जायसी, २६।२३)

तन की दशा भूल जाना, — सुधि न होना, तन न रहना, — भूल जाना, — मन भूल जाना

देह ज्ञान भूल जाना, आत्म-विस्मृत होना । प्रयोग—जबहि मुरति आवति वा गुल की, त्रिय उमगत तन नाही (सू० सा०—सूर, ४७७५) ; करत सिगार बिबस भई सुंदरि, अंगनि गई भुलाइ (सू० सा०—सूर, १६१४) ; साधुवाद कृति सार जानि कोउ तन मन कत बिसरात (सू० सा०—सूर, ४३३०) ; चकित भई बिचार करत यह बिसरि गई सुधि गात (सू० सा०—सूर, २२२९) ; तिय छवि निरखत नागरी, अंग दसा भुलानी (सू० सा०—सूर, ३२३३) ; मगन प्रेम तन सुधि नहि तेही (राम० (सु)—तुलसी, ८१०) ; कौसल्यादि राम महताही । प्रेमबिबस तन दसा बिसारी (राम० (बाल)—तुलसी, ३५३)

तन की सुधि न होना

दे० तन की दशा भूल जाना

तन गलाना,—गारना

शरीर दुबल बनाना, कष्ट सहना । प्रयोग—प्रबल पावस सरद शीघम, कियो तप तन गारि (सू० सा०—सूर, १८७८) ; या सके तन गला गला जिनको गाल उनका भला मल्ले कैने (चोखे०—हरिऔध, १०)

तन गारना

दे० तन गलाना

तन छोजना

दुबल होना । प्रयोग—दिन-दिन तन छीजै जरा जनावै, केत गहै काल मिरदंग बजावै (कबीर ग्रंथा०—कबीर, १६४) ; वायस-घजा सब की मिलबनि, पाही दुख तन छीजै (सू० सा०—सूर, ४५३०)

तन छूटना,—जाना

मृत्यु होनी । प्रयोग—ता मन को सोजहु रे भाई, तन छूटे मन कहाँ समाई (कबीर ग्रंथा०—कबीर, ९९) ; कबीर यहु तन जात है, सबे तो ठाहर जाइ (कबीर ग्रंथा०—कबीर,



२४); यह तनु छूटत बहु दुख होइ । ता तैं सोच रहै नहि कोइ (सू० सा०—सूर, ३४२); पुनि न सोच तनु रहउ कि जाऊ (राम० (अ)—तुलसी, ३७५); कैसे है तेरो हियो हरि भेरेहि छोरो नहीं तनु छूटत मेरो (केशव०—केशव, १७२)

### तन जाना

(१) मित्राज दिखाना, छुट होना । प्रयोग—तुम चले आये तो मैंने सोचा, तुमने ठीक ही कहा । मैं नाहक तुमसे तन बँटा (गोदान—प्रेमचंद, १४१); शुरु में मेरी माता यानी बड़ी मौसी राजेश्वरीबाई मुझसे एक बार बिना बात-की-बात पर इतनी तन गईं, इतनी तन गईं कि मेरा जीना डूबर हो गया (ये कोठे०—अ० ना०, १८०); उनसे अच्छी बोलती है, बहुत तनकर भी नहीं रहती (परल—जेनेन्द्र, १२८)

(२) मर जाना । प्रयोग—दे० तन छूटना

### तन जीतना

शरीर पर अधिकार करना । प्रयोग—बिना स्वाम सुंदर के सजनी मदन दूत तन जीते (सू० सा०—सूर, ४३१३)

### तन साना

शरीर को कष्ट देना । प्रयोग—नाथ बियोग ताप तन ताए (राम० (अ)—तुलसी, ५८५)

### तन तोड़ना

(१) बहुत परिश्रम करना । प्रयोग—दुसरों को जाराम पहुँचाने के लिए वह तन तोड़कर मेहनत कर सकती है (बूँद०—अ० ना०, १०४)

(२) लड़ाई लड़ना ।

(३) अंगड़ाई लेना ।

### तन त्यागना

मृत्यु को प्राप्त होना । प्रयोग—पर अकालु लगि तन परिहरही (राम० (बाल)—तुलसी, ८)

### तन देना

(१) प्राप्त देना । प्रयोग—नाद रोमि तन देत मृग, नर बन हेत समेत (रहीम कवि०—रहीम, १४)

(२) परिश्रम करना ।

(३) ध्यान देना, मन लगाना ।

### तन धरना

भगवान का अवतार लेना । प्रयोग—सोइ जय गाइ भगत भव तरहीं, कृपासिपु जन हित तनु धरही (राम० (बाल)—तुलसी, १३५); धरम गिलानि होति जबही जब तब तब तुम तनु धारत (राधा० ग्रंथा०—राधा० दास, ६१)

### तन न रहना

दे० तन की दशा भूल जाना

### तन भूल जाना

दे० तन की दशा भूल जाना

### तन मन भूल जाना

दे० तन की दशा भूल जाना

### तन मन सौंपना

आत्मसमर्पण करना । प्रयोग—जाकौ तन मन सौंपिया सो कबहुँ छाड़ि न जाइ (कबीर ग्रंथा०—कबीर, ६८)

### तन में आग लग जाना

बहुत रोष होना । प्रयोग—पर सुने पूज्या की निन्दा आग तन में है लग जाती (वैदेही०—हरिऔध, ३६)

### तन रखना

जीवित रहना । प्रयोग—अब या तनहि राखि कह कीजै (सू० सा०—सूर, ३९८०); सो तनु राखि करव मैं काहा । जेहि न प्रेम पनु मोर निवाहा (राम० (अ)—तुलसी, ५१८)

### तन सौंधना

साधना करनी, यातना सहनी । प्रयोग—कहैं रस-रीति कहा तन-सौंधना, मुनि-मुनि लाज मरी (सू० सा०—सूर, ४१६९)

(समा० मुहा०—तन तपाना )

### तनातनी होना

बेमनस्य होना । प्रयोग—नजीर ने दीन भाव से कहा कि पुत्र की उमर तनातनी हो गई है (चौटी०—निराला, ११३)

### तने रहना

अकड़ में होना, बिगड़े रहना । प्रयोग—न जाने क्यों तू उनसे तनी रहती है (कर्म०—प्रेमचंद, २०); मोचने



लगे, अब देखता हूँ तारा कैसे तनी रहती है ? (सु० सु०—सुदर्शन, १०३)

### तपन बुझाना

क्रोध या विरह आदि को शांत करना । प्रयोग—तपन बुझाएँ को हिय सिपराएँ को रंभा तें सरस तेरे तन को परस है (क० १०—सेनापति, ७)

### तपना

(१) प्रताप होना, पद या पैसे आदि का बड़ा घमंड होना । प्रयोग—तब तुम मिनिस्टर नहीं—महज एम०एल० ए० पे, लेकिन तब भी तपना तुमने प्रायः मिनिस्ट्रों की तरह ही शुरू कर दिया था (अपनी खबर—उग्र, १२८)

(२) क्रोध करना । प्रयोग—कनक तप उठा, बोला—तुम लोग तो मूर्ख हो मूर्ख (वृ०—अ० ना०, १८)

### तबला ठनकना

गाना-बजाना होना । प्रयोग—अभी कलहो हम ओ रस्ते रात के आबत रहे तो तबला ठनकत रहा (भा० ग्रं० (१)—भारतेन्दु, ३२६); हाँ, नचनिये भी हैं, घाबकल तो तबले का बोलवाला है ... × × रात को ठनकेगा (चोटी—निराला, ६०)

(समा मुहा०—तबला खनकना)

### तबीयत का राह न देना

मन को अच्छा न लगना, किसी काम को करने की इच्छा न होनी । प्रयोग—मुझे इस समय कुछ नहीं सूझ रहा । तबीयत राह न देती कि क्या लिखू ? (पद्म० के पत्र—पद्म० शर्मा, ९)

### तबीयत का साफ होना

छल-कपट-दुर्भाव-हीन व्यक्ति । प्रयोग—छादमी तबीयत के साफ और जैन्टिलमैन मालूम हुए (पद्म० के पत्र—पद्म० शर्मा, ८०)

### तबीयत गिरना

हालत और खराब होनी, दुर्बलता घानी । प्रयोग—रात में बुआ की तबीयत गिरी-गिरी हो रही थी (स्याम०—जैनेन्द्र, २२)

### तबीयत दिक् होना

बीमार होना । प्रयोग—ओकरे तबयित सरकार, कल्लि से कुछ दिक् है (रेशमी०—राम० वर्मा, १७७)

### तबीयत लहराना

प्रसन्न होना । प्रयोग—गायत्री पुनर्कित हो गयी × × उसकी तबीयत लहराने लगी (प्रेमा०—प्रेमचंद, ३५३)

### तबीयत साफ होना

स्वास्थ्य ठीक होना । प्रयोग—वैसे तबीयत पहले की नितबत तो अच्छी है । पर साफ नहीं (पद्म० के पत्र—पद्म० शर्मा, १४१); दो-तीन रोज रात को हरातर रही × × अब भी तबीयत अच्छी तरह साफ नहीं हुई (मा—कौशिक, २८६)

### तबीयत हट जाना

अरुचि होनी, विरक्ति होनी । प्रयोग—पंद्रह साल पहले जब उनका इकलौता लड़का मरा था, उनकी तबीयत दुनिया से हट गई थी (भूले०—मग० वर्मा, ४२)

### तबीयत हरी होना

प्रसन्न होना । प्रयोग—न देखे हों तो देख आना भैया तबीयत हरी हो जायगी (बल०—नागा०, ७०)

### तबेले की बला बंदर के सिर जाना

किसी की बला किसी के ऊपर जाना । प्रयोग—ऐसी दशा में मुकदमा उठा लेने के सिवा और क्या किया जा सकता था । तबेले की बला बंदर के सिर गयी (गवन—प्रेमचंद, ३१४); किस तरह बंदर बिचारा जानता । है तबेले की बला बंदर के सिर (बोल०—हरिऔध, १५)

### तम हरने वाला

अज्ञान को दूर करने वाला । प्रयोग—नख दुति भगत हृदय तम हरना (राम० (वा)—तुलसी, १२०)

### तमक उठना

कोपित हो जाना । प्रयोग—सो मुनि तमकि उठी कँकेई (राम० (अ)—तुलसी, ४४५); एक सज्जन तमक कर उठे कि जाओ, उनसे ही लिखा लाओ (पद्म पराग—पद्म० शर्मा, ८८)

### तमतमाया चेहरा

क्रोध या अरु से लाल हुआ चेहरा । प्रयोग—स्वामी जी का चेहरा तमतमा उठा था (जहाज०—इ० जोशी, ५३५)

### तमाचा खाना

अपमानित होना या हानि उठाना । प्रयोग—जब कि बेडंग बह रहा चलता । तब तमाचे न किम लिये लाता (बोल०—हरिऔध, ८९)



### तमाचा चलाना,—जडना

मारना, चांटा मारना । प्रयोग—बाल बलमे से कभी चूके नहीं चाह है तो लो तमाचे भी चला (चोले०—हरिऔध, ४९); किताब वाले ने जब अपनी आशंका प्रकट की और खरी-खरी बातें मुझे सुना डालीं तब अपनी उस खरी हुई हालत में भी मेरे मन में पहली प्रतिक्रिया यह हुई कि उसके मुंह पर एक तमाचा जड़ दूँ (जहाज०—६० जोशी, ४९); किस लिये घाज हो गये जड़ हैं क्या तमाचे जड़े गये हैं कम (चुमते०—हरिऔध, ८८)

(समा० मुहा०—तमाचा लगाना )

### तमाचा जडना

#### दे० तमाचा चलाना

#### तर माल उड़ाना

सुस्वादु पीष्टिक भोजन करना । प्रयोग—बाग-बगीचा बेचकर मजे से तर माल उड़ाओ (गोदान—प्रेमचंद, १३१)

#### तर होना

(१) सरस होना । प्रयोग—जब कभी बात तर कही न गई हो सके किस तरह कलेजा तर (चोले०—हरिऔध, ४९) (÷)

(२) तुल्य होना । प्रयोग—देखिए प्रयोग (१) में (÷)

(३) ठंडा होना ।

(४) मालदार होना ।

#### तरस खाना

दयाद्वं होना, दया करनी । प्रयोग—काम उसका है तरस खाना नहीं चाहिये वह हो लहू से तरबतर (बोल०—हरिऔध, १८४)

#### तरह देना

अनसुनी करना, ख्याल न करना ; बच जाना । प्रयोग—इन तरह सो तरह दिये बनि आवें साईं (कुण्ड०—गिरधर दास, ६); एरी या बज में बसि कै तरह दिये हो बने काज (सा० प्रश्ना० (२)—भास्कर, ३६२); मैं जितना ही तरह देता हूँ, उतना ही यह मिर खड़ी जाती है (गोदान—प्रेमचंद, १११); बार पर बार कर रही जब भी तब बना किस तरह तरह देते (चुमते०—हरिऔध, ८५)

(समा० मुहा०—तरह खाना)

### तरी होना

(१) प्रसन्नता । प्रयोग—जभी-जभी तितली से उसके हृदय की बातें हो चुकी थीं । उसकी तरी छाती में भरी थी (तितली—प्रसाद, ३९)

(२) पास में रूपा होना ।

(३) ठंडक होना ।

(४) दीवाल इत्यादि में जल का रिस कर जाना ।

### तरेर कर देखना

बड़े गुस्से से देखना । प्रयोग—इस पर बहादुर योगेश बाबू ने जिस धूना भरी दृष्टि से मेरी तरफ तरेर कर ताका था, वह आज भी मुझे भूली नहीं है (अपनी खबर—उग्र, ११३-११४)

### तलब जाना

(१) बुलाना । प्रयोग—घाबें तलब बांधि ले चालें, बहुरि न करिहै फेरा (कबीर ग्रंथा०—कबीर, ११७)

(२) आधिकारिक रूप से मांगना ।

(समा० मुहा०—तलब करना)

### तलब मर जाना

इच्छा या आवश्यकता न रह जानी । प्रयोग—अरे लाओ । ऐसे ही चलेगा । घण्टे में बनाकर लाओगी ट्रे में और तलब ही तब तक मर जायगी (पैतरे—अशक, ५३)

### तलबेली पड़ना,—लगना

बेचनी होनी । प्रयोग—फिरि फिरि अजिरहि भयनही, तलबेली लागी (सू० सा०—सूर, २५८४); परी तलबेली तन मन में छबीली राख, छिति पर छनक छनक पाव घाट में (मति० मक०—मतिराम, १२४)

### तलबेली लगना

#### दे० तलबेली पड़ना

#### तलवा चाटना

लुभावद करनी । प्रयोग—जभी तो यह महानाव भी उसके तलवे चाटते हैं (गोदान—प्रेमचंद, १९७); मर्यादा खोकर तलवा में नहीं किसी का चाटूंगी (नूर०—भक्त, ८८); कब तलक चलवे रहते देस में कब तलक हम चाटते तलवे रहे (चुमते०—हरिऔध, ४)

### तलवा छलनी होना

चलते चलते पैर में घाव हो जाना । प्रयोग—छिल गये



तलवा धो-धो कर पीना

३१७

तलवार पर मखमल का गिलाफ चढ़ा होना

छाले पड़े छिद्र-छिद्र गये बन गये तलवे अगर छवनी नहीं  
(बोल०—हरिऔध, २४७)

**तलवा धो-धो कर पीना**

(१) अत्यंत सेवा सुश्रूषा करनी—आदर करना। प्रयोग—  
गल रहा है पाप मल धुल रहा है। क्यों भला धो धो न  
हम तलवे पिये (चुभते०—हरिऔध, ६)

(२) सुशामद करनी।

**तलवा सहलाना**

(१) सुशामद करनी। प्रयोग—तुम तो जेल में पड़े थे,  
मैंने साल भर जेलानी के तलए, सहला-सहला कर, उसकी  
चाकरी करके यह रिझा करवाया (झूठा० (१)—यशपाल,  
१५८); × × मैं भी तुम्हारी हिन्दुस्तानी स्त्री की तरह  
× × तुम्हारे तलवे सहलाऊंगी (मान० (२)—प्रेमचंद, १२४)  
(÷); अगर अपनी जरूरत आ पड़े तो दूसरों के तलवे  
सहलाते फिरने (गबन—प्रेमचंद, ११८); लात पर है लात लगती  
रही छूट तलवे का न सहलाना सका (चुभते०—हरिऔध, ९१)

(२) बहुत सेवा करनी। प्रयोग—जो कि सहलाते सदा  
तलवा रहे हाथ क्यों तलवार ले उन पर तुले (चोखे०—  
हरिऔध, १७९); देखिए प्रयोग (१) में (÷) भी।

**तलवार उठाने वाला**

युद्ध करने वाला। प्रयोग—हो चुका बिदा तलवार उठाने  
वाला (कुरु०—दिनकर, ७२)

**तलवार का धनी**

तलवार चलाने में निपुण। प्रयोग—मुझे यह पता न था  
कि तुम तलवार के धनी हो (सु० सु०—सुदर्शन, ३४)

**तलवार का पानी पीना**

(१) युद्ध करना। प्रयोग—× × अगर इस राजपूत की  
तलवार का पानी पीना है तो तलवार निकाल (गोली—  
चतुर०, १०३)

(२) तलवार द्वारा मारा जाना।

**तलवार की धार पर चढ़ना,—पर चलना,—  
पर तलवे टिकना**

अत्यंत कठिन कार्य करना या होना। प्रयोग—एहि कर  
नाम सुमिर संसार। बिष बड़िहहि पतिव्रत अमिपारा।  
(राम० (बाल)—तुलसी, ७९); यह प्रेम को पन्थ कराल महा  
तलवार की धार पे पावनो है (इश्क०—बोध, १); कर न  
दे तलबेलियां बेकार तो धार पर तलवार की तलवे टिकें  
80

(चुभते०—हरिऔध, ३८)

**तलवार की धार पर चलना**

दे० तलवार की धार पर चढ़ना

**तलवार की धार पर तलवे टिकाना**

दे० तलवार की धार पर चढ़ना

**तलवार की धार होना**

कठिन या दुःखदायी होना। प्रयोग—कह गिरिधर कवि-  
राय वचन बाड़े की धारा (कुण्ड०—गिरिधरदास, ३)

**तलवार के घाट उतरना या उतारना**

तलवार के प्रहार से मारना या मार खाता जाना।  
प्रयोग—उस घनेले सिपाही ने फिर कई गोरों की तलवार  
के घाट उतारा (झांसी०—वृ० वमा, ४११); उठकर पानी  
मांग न पाये घाट उतर तलवारों के (मु०—मल्ल, १६)

**तलवार खिंची रहना**

लड़ाई छिड़ी रहनी। प्रयोग—जब कोई नहीं मिलता तो  
आपस में ही तलवारे खिंचती हूं (दिप०—प्रेमी, १३)

**तलवार चमकाना**

लड़ने को प्रस्तुत होना। प्रयोग—जो न तलवार को सकें  
चमका तो सगे जंगलियां न चमकाने (चुभते०—हरिऔध,  
८८)

**तलवार चलना**

तलवार द्वारा वार होना। प्रयोग—वार करने को उठें तो  
हाथ क्यों कित गले पर क्यों चले तलवार तो (बोल०—  
हरिऔध, १३२)

**तलवार तोलना**

वार करने के लिए तलवार को मापना। प्रयोग—तोल  
तुमने क्यों न अपने को लिया हाथ तुम तलवार क्या हो  
तोलते (चोखे०—हरिऔध, १७८)

**तलवार पर पानी चढ़ाना**

लड़ने को तैयार होना। प्रयोग—बाहिए हमें कि तदबीर  
भोर तलवार पर पानी चढ़ावें खूब (परि०—निराला, २३०)

**तलवार पर मखमल का गिलाफ चढ़ा होना**

ऊपर से भला पर भीतर से बुरा होना। प्रयोग—मगर  
बुड़िया से मिलते तो बहुत सरकार का भाव दिखाते।  
तलवार पर मखमल का गिलाफ चढ़ा हुआ था (सु०  
सु०—सुदर्शन, ४८)



तलवार म्यान से बाहर रहना या होना

३१८

तह तक पहुँचना

**तलवार म्यान से बाहर रहना या होना**

तलवार या जगड़ने को प्रस्तुत रहना । प्रयोग—हरदम उसकी तलवार म्यान से बाहर रहती है (कर्म०—प्रेमचंद, १२१)

**तलवार सिर पर नाचना**

मृत्यु निकट होनी, तलवार से मार डालना । प्रयोग—घाज यह तलवार उसके सिर पर नाचेगी (अम्ब०—रा० पे०, ६६)

**तलवे को आग माथे तक पहुँचना**

बहुत क्रोध या ईर्ष्या होनी । प्रयोग—पर जब यह बात उनके पड़ोसियों ने सुनी तब उनके तलवों की आग मस्तक तक जा पहुँची (सा० सी०—महा० द्विवेदी, ४०)

**तलवों के नीचे आँखें बिछाना**

बहुत स्नेह, आदर या प्रेम करना । प्रयोग—उस गाँव में ऐसे लोग मौजूद थे, जो उसके तलवों के नीचे आँखें बिछाते थे (मान० (१)—प्रेमचंद, २९६)

**तलवों के नीचे पड़ी होना,—तले पड़ी होना**

(१) बहुतायत से उपलब्ध होनी । प्रयोग—सकल विभव थे आनन मदा दिलोस्ते रत्नराजि भी तलवों के नीचे पड़ी (वेदेही०—हरिऔध, १६७)

(२) दीन होना, तुच्छ होकर रहना । प्रयोग—सेज पर जो फूल की भी लेटते थे रहे हैं लेट तलवों के तले (चुमते०—हरिऔध, ८३)

**तलवों के बराबर भी नहीं**

अत्यंत तुच्छ । प्रयोग—हसन में तो वह तुम्हारी बीबी के तलवों के बराबर भी नहीं (कर्म०—प्रेमचंद, ८५)

**तलवों तले चाँदनी सा बिछा रहना**

पूरी तरह वश में होना, खुशामद में होना । प्रयोग—नगर के महाश्वेष्ट का इकलौता लाडला मेरी लाडली के तलवों तले चाँदनी सा बिछा रहता है (सुहाग०—अ० ना०, ३०)

**तलवों तले पड़ी होना**

दे० तलवों के नीचे पड़ी होना

**तलवों से आग लगना**

अत्यंत क्रोधित होना । प्रयोग—चिनगियाँ क्यों न आँग से छिटकों आग लग जाय क्यों न तलवों से (बोल०—हरिऔध, २४८)

**तलवों से लग कर सिर में जाकर बुझना**

गुस्से से भरा हुआ, गुस्से की आग से जलना । प्रयोग—आग है वह क्यों लगाई जा रही जो कि तलवों से लगे सिर में बुझे (बोल०—हरिऔध, २४८)

(समा० मुहा०—तलवों से लगकर सिर से निकलना)

**तलवों से लगना**

(१) बहुत बुरी लगना । प्रयोग—क्यों न तलवों से हमें अब भी लगी दिन रहे तालू उठाने के नहीं (चुमते०—हरिऔध, ९६)

(२) कुटना ।

**तचा सा मुंह होना**

(१) क्रोधित या असंतुष्ट रहना । प्रयोग—दूसरों को देख फलते फलते मुंह बना जिसका रहा सब दिन तचा (बोल०—हरिऔध, १५)

(२) बहुत काला होना ।

**तचे की बूँद सा छनक जाना,—बूँद होना**

(१) देर तक न टिकने वाला, तुरन्त नष्ट हो जाना । प्रयोग—धब नहीं बचें क्रोध नृप कीन्हो, जैहै छनकि तचा ज्यों पानी (सु० सा०—सूर, ३५५०); उधर तो मेघपति अपना दल लिये क्रोध कर-कर मूसलाधार जल बरसाता या इधर पर्वत पं गिर छनाक तचे की बूँद हो जाता था (प्रेम सा०—ल० ला०, ६८)

(२) जिससे कुछ भी क्षति न हो ।

**तचे की बूँद होना**

दे० तचे की बूँद सा छनक जाना

**तहकर रखना**

जाने भी दीजिए, व्यर्थ बात मत कीजिए—इस भाव में कहना । प्रयोग—रखिये तहकर । चार दिन में भूल जाइयेगा । फिर ऐसे मुँह फेर लीजियेगा जैसे कभी की पहचान न रही हो (सुकुल०—निराला, ८२-८३)

**तह तक पहुँचना**

असली बात समझ जाना । प्रयोग—आदमी जहीन है मुक-दमा सामने आया और उसकी तह तक पहुँच गये (मान० (७)—प्रेमचंद, १)

(समा० मुहा०—तह को पहुँचना)



### तहसील का चपरासी होना

बसूली की तारीख है X X हरेक मास्टर तहसील का चपरासी बना बैठा हुआ है (कर्म०—प्रेमचंद, २)

### तांता टूटना

क्रम टूटना । प्रयोग—घाने जाने वालों का तांता दिन भर न टूटता था (रंग० (२)—प्रेमचंद, ३४६)

### तांता बंधना,—लगना

लम्बा क्रम होना । प्रयोग—शहर से कबहरी तक आद-मियों का तांता लगा हुआ था (मान० (५)—प्रेमचंद, ४३) तांता सदा बना रहता था घर में जिन मेहमानों का (नूर०—मक्त, ४) ; सड़क पर मोटरों का तांता बधा हुआ था (गवन—प्रेमचंद, २७५)

### तांता लगना

#### दे०—तांता बंधना

#### तांवरी आना

बुझार घाना । प्रयोग—जब तें हरि संदेश तुम्हारी, सुनत तांवरी पायी (सू० सा०—सूर, ४७५९)

### ताक कर

निशाना साध कर । प्रयोग—फेंट गुलाल भराइ के (री) डारत नैननि ताकि (सू० सा०—सूर, ३४९२); तकि तकि तीर महीस चलावा (राम० (बाल)—सुलसी, १६७); तीर तदवीर हाथ में लेकर क्यों उन्हें तो न ताक कर मारें (चुमते०—हरिऔध, ११)

### ताक भांक करना

छिपे-छिपे देखना या छिपे-छिपे बुरी नजरों से देखना । प्रयोग—शायद वह भी ताक-भांक वाली आली थी (अपनीखबर—उग्र, ६४); गली में वीरसिंह और मेवाराय से कुछ ताक-भांक तो करती थी पर तब डरती थी (झुठा० (२)—यशपाल, ३४१); मैंने X X कोई पाप नहीं किया, कोई चोरी नहीं की, और न घाप के पुत्र की तरह ताक-भांककर कायरता दिखायी है (मोर०—जग० माधुर, १२१); क्यों न हो भांक ही जवानी की है कभी ताक-भांकटीक नहीं (चोखे०—हरिऔध, २२)

### ताक पर बैठना

गर्भ जाना । प्रयोग—सूरदास ऊधो की बतियां, सब उड़ि बैठी ताक (सू० सा०—सूर, ४५५५)

### ताक पर रखना

(१) छोड़ देना । प्रयोग—मूहल्ले के हरेक घर में एक-न-एक ऐसा जवान पैदा हो चुका था जो पुरानी मर्यादाओं

और धर्म को ताक पर रख कर उच्छृंखल आचरण में रत रहा करता था (अपनी खबर—उग्र, २०); घरन्तु परन्तु को अब उठा कर ताक पर रख दीजिए (मिसा०—कौशिक, १५५); ताक पर रख सभी भलमर्तियां कब किसी को ताक रखना है भला (बोल०—हरिऔध, ६५)

(२) उपेक्षा करना । प्रयोग—अजय जी कहते हैं कि जब हम मूयों की बात करें तो हमें कार्य कारण के सवालों को ताक पर रख देना चाहिए (अजय०—देवराज, ५३); शान्ताराम जैसे संभोर और उच्च स्तर के डाइरेक्टर ने भी पैसा कमाने के लिए अपनी कला को ताक पर रख दिया (दुधगाछ—दे० स०, २६९)

(३) पड़ा रहने देना, काम में न लाना ।

(समा० मुहा०—ताक पर धरना)

### ताक में बैठना

धति पहुँचाने का मौका दूँडते रहना । प्रयोग—जो रहे ताकते हमारा मुँह हम उन्हीं की न ताक में बैठें (चोखे०—हरिऔध, २२)

### ताक में रहना

मौका दूँडते रहना । प्रयोग—तुम गो माही ताक रहत ही करत फिरत मग केरा (भा० ग्रं० (२)—भारतेन्दु, ५७); वह कुछ छोटे-मोटे काम की ताक में था जिससे मन भी लगा रहे और कुछ आय भी हो (नदी०—अज्ञेय, ६१); जिन दामियों की पहले उसके सामने न चलती थी, वे ताक पर थी कि मौका मिले बदला चुका लें (लिली—निराला, १४१); हम भले ही ताक में उसकी रहें वह किसी की ताक में कैसे रहे (बोल०—हरिऔध, ६५)

### ताक रखना,—लगाना

घात में रहना, मौका देखते रहना । प्रयोग—लोभी लंपट लोलूप चारा । जे ताकहि पर धन पर दारा (राम० (अ)—सुलसी, ५३०); लोग ताक लगाये बैठे थे कि भूगी अब गयी (मान० (२)—प्रेमचंद, २०२); ताक पर रख सभी भलमर्तियां कब किसी को ताक रखना है भला (बोल०—हरिऔध, ६५)

### ताक लगाना

#### दे० ताक रखना

### ताकना

(१) कुदृष्टि से देखना । प्रयोग—जो दुष्ट किसी मेहरिया



की ओर ताके उसे गोली मार देना चाहिए (गोदान—प्रेमचन्द, ८); ताक में बँड राह ताकते हैं ताकना भाँकना नहीं छूटा (बोल०—हरिऔध, ६८)

(२) कुछ याचना करने जाना। प्रयोग—दाऊ मेरी गाँठ में कुछ नहीं है। गरीब हूँ। किसी बड़े घर को ताक लो (मुग०—वृ० वर्मा, ३७३)

(३) घात में रहना।

(४) दे० ताक रखना

**ताड़ का तिल करना**

बड़ी बात को छोटी मानना। प्रयोग—अरी, मैंने तो ताड़ का तिल बनाया है (मुग०—वृ० वर्मा, ५५)

**ताड़-भाड़ सहना**

डाँट-फटकार या अपमान सहना। प्रयोग—सँकड़ों ताड़-भाड़ सहते हैं X X फिर भी सिर पर सवार रहते हैं (बोल०—हरिऔध, ११)

**ताड़-ताड़ कर**

लक्ष्य बना कर। प्रयोग—मगर क्या तुम वहाँ भी ताड़ ताड़ कर बोलती आओ? (सु० सु०—सुदर्शन, १९०)

**तान उड़ाना,—तोड़ना,—लड़ाना**

गीत गाना। प्रयोग—क्यों कि यदि ऐसा होता तो वह यों 'चेकटेश्वर' में उसकी तारीफ की तान न उड़ाई (गु० नि०—बा० मु० गु०, ५६२); सिर हिलाती बशा-बजा बाने तोड़ती तान पैतरे देती (सम०—हरिऔध, ८२); बाहर निकलो तो आँखें खोलकर देखो कि खेत कैसे लहलहा रहे हैं X X चरबाहे तान लड़ा रहे हैं (चित्ता० (१)—शुक्ल, ७८)

**तानकर**

बलपूर्वक, जोर से, खींच कर। प्रयोग—भीहू की कमान तान गुन-गुन छानि के। काम अहर सो बुभाई मारुओ मोहि ताकि है (मा० ग्रं० (२)—मारतेन्दु, २८५)

**तानकर सोना**

आराम से सोना, निश्चिन्त रहना। प्रयोग—को इँछा पुरख दुख घोवा। जेहि मनि घाणु सो तनि-तनि घोवा (पद०—जायसी, २०१०); सुपनी X X दिन भर डट के काम करती और रात भर तान के सोती (बल०—नागा०, १५६); भेद वह जो कि भेद सो देवे जान पोया न तान कर गूते

(चोखे०—हरिऔध, ३)

**तान तोड़ना**

(१) अपनी बात कहनी। प्रयोग—अतुल अलग तान तोड़ता है—आदमी के चरण जहाँ भी पड़ते हैं, उस माटी के स्वभाव को तो जान ही लेते हैं (ब्रह्म०—दे० स०, २७)

(२) गीत गाना।

(३) किसी पर घालेप करना।

(४) दे० तान उड़ाना

**तान मारना**

गाने में तानों का प्रयोग करना, गाना। प्रयोग—बस बाना X X सोना, बात बाना, तान मारना और मस्त रहना (मा० ग्रं० (१)—मारतेन्दु, ४८१)

(समा० मुहा०—तान मारना,—लेना)

**तान लड़ाना**

दे०—तान उड़ाना

**ताना कसना,—भाड़ना,—देना,—मारना**

व्यंग करना। प्रयोग—'हरीचंद' बदनाम भई मैं तो ताना मारत सब संग की सलियाँ (मा० ग्रं० (२)—मारतेन्दु, १८२); उस समय के बोलने वालों पर ताने नहीं भाड़ते (गु० नि०—बा० मु० गु०, ४६७); तेरी तो यह दशा है—इस कल की छोकरी को ताने देता है (मिल्ला०—कौशिक, २९); वे इसलिए उसे बार-बार नाना-मामा के टुकड़े तोड़ने का ताना कसते (वृ० दे०—अ० ना०, ५९६); लिली ने कई बार अपने डैडी को ताना दिया कि अब 'मेक इत इंग्लैन्ड' का घादरं कहीं चला गया (ब्रह्म०—दे० स०, ७८)

(समा० मुहा०—ताना छोड़ना)

**ताना भाड़ना**

दे० ताना कसना

**ताना देना**

दे० ताना कसना

**ताना-बाना उधेड़ देना**

बात को व्यर्थ कर देना। प्रयोग—वह पंटों तक लखनपुर वालों की उद्दण्डता और दुर्जनता का घाल्ला माते रहे लेकिन इफानि सली ने दस ही मिनट में उनका तारा ताना बाना उधेड़ कर रग दिया (प्रेमा०—प्रेमचन्द, ३९४)



## ताना मारना

### दे० ताना कसना

### ताना मेहना सुनना

कटुबचन, ताने सहना । प्रयोग—बला से लोग हंसेंगे, आजाद तो हो जाऊँगी । किसी के ताने मेहने न सुनने पड़ेंगे (रंग० (१)—प्रेमचन्द, ५२)

### तानों से छेदना

बहुत तानों से व्यथित कर देना । प्रयोग—कभी एक-आध चीज वस्तु बनवा लेती हूँ तो वह घाँवों में गड़ने लगती है । तानों से छेदने लगता है (गदन—प्रेमचन्द, १७८)

### ताप आना

(१) ओष आना । प्रयोग—ऊधो बांधे फिरत सीस पर, बाँवत आवे ताप (सू० सा०—सूर, ४१०७)

(२) बुलार आना ।

### ताप बढ़ाना

विरह भाव बढ़ाना । प्रयोग—भोरहि बोलि कोइलिछा बढ़वति ताप (रहीम कवि०—रहीम, ३६)

### तार उतरना

स्वर से नीचे के स्वर में बजना । प्रयोग—कहाँ गमक मृदंगों में तार उतरे तितार के हैं (मर्म०—हरिऔध, ७५)

### तार कुतार होना

(१) काम बिगड़ना । प्रयोग—डेढ़ महीने से उसकी आम-दनी का तार-कुतार हो गया है (बुँद०—अ० ना०, १०२)

(२) मरणासन्न होना ।

### तार-तार करना या होना

(१) कपड़े का सूत-सूत अलग-अलग करना या हो जाना, फट जाना । प्रयोग—तार-तार कम्बल फटी हुई मिजई × × इतने शत्रुओं के सम्मुख पाने का नींद में साहस न था (गोदान—प्रेमचन्द, १२१); तीसरी ही धुलाई में नये कपड़े को काटकर तार-तार कर देता है (जहाज०—इ० जोशी, २४८);

(२) संबंधा नष्ट कर देना या होना । प्रयोग—पर अपने विभिन्न क्रोध में वे इन दरिद्रों के जीवन की बची-बची लज्जा को भी तार-तार करके फेके बिना नहीं रहते (अतीत०—महादेवी, ५१)

### तार तार रोना

बहुत रोना । प्रयोग—उमे बार-बार अपने माथे से छूपाते

हुए वे उसी तरह तार-तार आँसू रोती रहीं (कल्याणी—जेनेन्द्र, ९७)

### तार न जानना

कोई जानकारी न होनी । प्रयोग—उसे स्वतंत्र रूप से काम लेने का कभी अवसर न मिला था × × सेती का तार भी न जानता था (मान० (१)—प्रेमचन्द, १२१)

### तार न टूटना

समाप्त न होना, कम भंग होना । प्रयोग—गूझता बात तक नहीं कोई पर नहीं तार रँग का टूटा (चुमते०—हरिऔध, ९४)

### तार बंधना

कम या लड़ी बंध जाना । प्रयोग—गुलाबी नसे में बिचारों का तार बन्धा (गु० नि०—वा०मु० गु०, २३४); तार बंधता न आँसुओं का है पात्र भी हिचकियाँ नहीं लगती (चुमते०—हरिऔध, ६३)

### तार लग जाना या लगना

(१) व्योत बैठना । प्रयोग—यदि वह मर भी जाता तो जब तक जीता रहता तब तक तो सुख होता, पर हा ! यह काहे को होने वाला था, ब्राह्मणों का कहीं से तार लगता (राधा० ग्रंथा०—राधा० दास, ५६२)

(२) किसी वस्तु की अत्यंत इच्छा होनी ।

### तारना

संसार से मुक्त करना । प्रयोग—कोउ बिधि अबकी तार देहु मोहि नाहीं तो प्रन जात (भा०ग्रंथा० (२)—भारतेन्दु, ५७९); हम लोगों ने संसार को तार हीदिया (राधा० ग्रंथा०—राधा० दास, ६३४)

### तारीफ के पुल बांधना

बेहद प्रशंसा करनी । प्रयोग—फिरभी आप भाई भतीजों की तारीफ के पुल बांधते हैं तो मेरे शरीर में आग लग जाती है (मान० (१)—प्रेमचन्द, ३१७)

(समा० महा०—तारोफ करते मुंह सूखना)

### तारे गिनते रात बिताता

बेचैनी से रात काटनी । प्रयोग—सूरदास प्रभु तुम्हारे दरस बिनु, रँनि गनत गढ़ तारे (सू० सा०—सूर, ३८७०); मोक्षत मलय सनेह-बिबस निशि, नृपहि गनत गये तारे



(गोला०(८१)—तुलसी, ६); तारे गिनते रात बीतती, नींद न आती लगे लगन (मर्म०—हरिऔध, १४४)

(समा० मुहा०—तारे गिनना)

**तारे न चलना**

दृष्टि एकदम स्थिर हो जानी। प्रयोग—देखि लोग सब भए मुखारे। एकटक लोचन चलत न तारे (राम० (बाल)—तुलसी, २५१)

**ताल कटना**

प्रतिकूल स्थिति होनी। प्रयोग—राजा साहब को ताल कटती हुई सी जान पड़ी (चोटी०—निराला, ९५)

**ताल ठोक कर खड़ा होना**

(१) साहसपूर्वक किसी काम को करना। प्रयोग—आखिर एक दिन उसने समाज के सामने ताल ठोक कर खड़े हो जाने का निश्चय कर ही लिया (गान—प्रेमचंद, ७२) (+)

(२) घालेप को सहने को प्रस्तुत होना। प्रयोग—देखिए प्रयोग (१) में (+)

(३) बंद कर लड़ने को प्रस्तुत होना।

**ताल ठोकना**

(१) चुनौती देना। प्रयोग—मुझेवर भी ऐसे थे कि ताल ठोक कर सामने आ जाते थे (गोदान—प्रेमचंद, ९४); बाल बाल बिने ताल खलना, बिलोप होय लरै ताल ठोकि क्यों पुजैया अहे पीर के (मर्म०—हरिऔध, १५९)

(२) मुकाबिला करना। प्रयोग—कौसिल का मोह अब उन्हें न था लेकिन इस चुनौती के सामने ताल ठोकने के सिवा और कोई राह ही न थी (गोदान—प्रेमचंद, २३४)

**ताल पर नाचना**

इसारों पर चलना। प्रयोग—इस देश के हाकिम आपकी ताल पर नाचते थे (गु० नि०—बा० मु० गु०, २१३)

**ताल मिलाकर चलना**

साथ साथ आगे बढ़ना। प्रयोग—मेरा मन बार बार ग्लानि और जोम के साथ जानना चाहता है कि साहित्यिक कहे जाने वाले लोग, जिनका काम ही विद्वान को सरस स्निग्ध और उदार बनाना है × × विज्ञान की इस बढ़ती हुई शक्ति के साथ क्या ताल मिलाकर चल सकते हैं (अशोक—ह० प्र० दि०, १५५)

(समा० मुहा०—ताल से ताल मिलाकर चलना)

**ताला जड़ना,—ठोंकना**

ताला बंद करना। प्रयोग—अपने कपड़े और बिस्तरे, सिलेट-पिनसिल निकाल कर बाहर रक्ता। मकान में ठोंक दिया ताला। चला घाया मोहन बाबू के साथ (बल०—नागा०, ६०); या मुल जो आग उगलता है आकर जड़ दे उस पर ताले (चक्र०—दिनकर, १८१)

(समा० मुहा०—ताला चढ़ाना,—जकड़ना,—जोड़ना,—भेड़ना)

**ताला ठोंकना**

**दे० ताला जड़ना**

**ताली एक हाथ से न बजना,—दो हाथ से बजना**  
एक के करने से ही भगड़ा न होना। प्रयोग—मालती उद्दिग्ध होकर बोली—ताली हमेशा दो हथेलियों से बजती है, यह घाप भूल जाते हैं (गोदान—प्रेमचंद, १७०); हाजिए आप लाल पीले मत कब बजी एक हाथ से ताली (बोल०—हरिऔध, १६६)

**ताली दो हाथ से बजना**

**दे० ताली एक हाथ से न बजना**

**ताली पिट जाना,—बज जाना,—लग जाना**

(१) उपहास होना। प्रयोग—उनके महाराज को मैं रख लूंगा, कोचमन को तुम रख लेना। बचा को पानी भी न मिले। जिधर से निकले उधर तालियाँ बजें (कर्म०—प्रेमचंद, ६३); किसी की पत जिससे उतरे, न बज पाये ऐसी ताली (मर्म०—हरिऔध, ७३); जायें क्या, अपने ऊपर तालियाँ लगवायें (प्रेमा०—प्रेमचंद, १४); पीट दें तो क्यों किसी को पीट दें पिट गई ताली बला से पिट गई (बोल०—हरिऔध, १६६)

(२) प्रशंसा होनी। प्रयोग—सज उठी फूल से सजी पगड़ी बज उठी धूमधाम से ताली (चुमते०—हरिऔध, १३८)

**ताली पीटना,—बजाना**

(१) हँसी या उपहास करना। प्रयोग—कहीं भोला बदल गए या किसी कारण से गाय न दी तो सारा गांव तालियाँ पीटने लगेगा, थले थे गाय लेने (गोदान—प्रेमचंद, २८); जब वह सभा भवन से बाहर निकले, तो जनता ने × × तालियाँ बजाईं, कि बेचारे बड़ी मुश्किल से अपनी मोटर



तक पहुँच सके (रंग० (२)—प्रेमचंद, ४२२)

(२) प्रसन्नता प्रगट करनी।

**ताली बज जाना**

दे० ताली पिट जाना

तालो बजाना

दे० ताली पीटना

तालो लग जाना

दे० तालो पिट जाना

तालू उठाने के दिन

बचपन के दिन। प्रयोग—हम रहेंगे वैसे कब तक बने घोस से भी प्यास जाती है कहीं, क्यों न तलबों से हमें अब भी लगी दिन रहे तालू उठाने के नहीं (चुमते०—हरिऔध, ९६)

**तालू चटकना**

प्यास के कारण मुँह सूखा जाना। प्रयोग—प्यास जब थी बेतरह चटकी हुई किस तरह तालू न तब जाता चटक (बोल०—हरिऔध, १००)

**तालू में दाँत जमना**

बुरे दिन आना। प्रयोग—जो चले हो जाति का मुँह मूँदने दाँत तालू में तुम्हारे तो जमा (चुमते०—हरिऔध, ९५)

**तालू से जीभ लगना**

चुप रहना। प्रयोग—बोलते जब बोलने वाले रहे किस तरह तब जीभ तालू से लगे (बोल०—हरिऔध, १०१)

**ताव खाना**

(१) गुस्सा होना। प्रयोग—भव धनु भंजि निदरि भूपति भूगुनाथ खाइ गये ताउ। छमि अपराध, छमाइ पाय परि, इती न अतत समाउ (विनय०—तुलसी, १००)

(२) ललकारे जाने पर जोश में आना। प्रयोग—मृगल खां ताव खाने पर बहुत अच्छा गाते हैं (झासी०—वृ० वर्मा, ७२)

**ताव पर आना**

(१) जोश में आना। प्रयोग—उन्होंने सुअर की उठाने का प्रयत्न किया, परन्तु न बन पड़ा। तिन्नी ताव पर आ गयी (मृग०—वृ० वर्मा, ६०)

(२) अभिमान मिले क्रोध में आना।

(३) शेखी की भोंक होनी।

**ताव पेंच खाना**

क्रोध करना। प्रयोग—उसी प्रकार ताव-पेंच खाते हुए लौटकर मुखदेई से बोले.....(चित्र०—कौशिक, ७९)

**तिकड़म भिड़ाना**

कोई चालाकी की युक्ति करनी। प्रयोग—बुदा कमम, डायरेक्टर डेसाई के यहाँ तिकड़म भिड़ाया है (पैतरे—अशक, १०७)

(समा० मुहा०—तिकड़म रचना)

**तिकड़म लड़ना**

युक्ति सफल होनी। प्रयोग—बुदा कमम, डेसाई के यहाँ तिकड़म भिड़ाया है, लड़ गया तो नहर बहा देंगे स्वाच की (पैतरे—अशक, १०७)

**तिगनी का नाच नचाना**

खुद दुर्गति करनी, हैरान करना। प्रयोग—मैं भी वह तिगनी का नाच नचाऊँ कि उन्न भर पाद करें (मा—कौशिक, ३९२); आप चुपचाप देखती जाइए। कैसा तिगनी का नाच नचाती हैं (मान० (१)—प्रेमचंद, २७०)

**तिजोरी में होना**

विलकुल अपने अधिकार या बश में होना। प्रयोग—तिजोरी में रखी हुई है बिस्वा की मुनियागिरी। (परती०—रेणु, ४४२)

**तिड़ी भूल जाना**

होश हवास न रहना। प्रयोग—सामने हमारा रक्षक हमारा राजा सदा है और तुम सब तिड़ी भूल गई (मृग०—वृ० वर्मा, १७८)

**तितल्ली होना**

तड़क-भड़क साज सज्जा में रहने वाली स्त्री। प्रयोग—पश्चिम में इनका पड़पन्च सफल हो गया और देवियां तितलियां बन गई (गोदान—प्रेमचंद, १६८)

**तिनक जाना**

(१) बिगड़ जाना। प्रयोग—मालती ने तिनक कर कड़ा—दुनिया को दूसरों को बदनाम करने में मजा आता है (गोदान—प्रेमचंद, १७१) (÷)

(२) सुझना जाना। प्रयोग—देखिए प्रयोग (१) में (÷)

**तिनका खड़कना**

तिनक भी आवाज होनी। प्रयोग—बारहि बार बिलोकत



झरहि चौकि परं तिनके सरके हूँ (मति० मक०—  
मतिराम, ११४)

### तिनका तोड़ करना

नाता तोड़ना । प्रयोग—ऐसे जानि जपो जग-जीवन, जम  
सुं तिनका तोरो रे (कवीर ग्रंथा०—कवीर, ११५) ;  
तिनका-नोर करहु जनि हम सौ, एक बात की लाज निव-  
हियौ (सु० सा०—सूर, ४६८४)

### तिनका तोड़ना

(१) नजर उतारने के लिए तिनका तोड़ कर टोटका करना ।  
प्रयोग—का पर नैन चलावति आवति, जाति न तिनका  
तोरे (सु० सा०—सूर, ९३८) ; धनानंद प्यारी सुजान  
लखे डरि डीठि हितु तिन तोरति है (धन० कवित्त—  
धना०, १६३)

(२) मामूली काम भी करना । प्रयोग—मां-बाप के लाड़  
प्यार में पली इकलौती लड़की है । हाथ से तिनका उसने  
कभी तोड़ा नहीं (चेतन—अश्क, ३०)

### तिनका भी न उठाना

कोई काम न करना । प्रयोग—भगवान ने मुझे समाई दी  
होती तो मैं तुझे तिनका तक न उठाने देता (मान० (१)—  
प्रेमचन्द, ९)

### तिनका भी न हिलाघा पाना

कोई भी काम न करवा पाना । प्रयोग—नलक नीचे नीचे  
चाहे जो कुछ कर लें पर तारा को कोई दस लाख का  
लालन दे कर भी तिनका नहीं हिला सकता (झुठा०  
(२)—यशपाल, ५२०) ; लेकिन आप जानते ही हैं कि रेजिडेंट  
साहब की इच्छा के विरुद्ध हम एक तिनका तक नहीं हिला  
सकते (रंग० (१)—प्रेमचन्द, ३१६)

### तिनका सा

जरा सा । प्रयोग—नैन मिलें उर के पुर पंठते लाज लुटी  
न छुटी तिनका सौ (धन० कवित्त—धना०, १२३)

### तिनका सा तोड़ना

एकदम नाता तोड़ देना, बिना परिश्रम तोड़ देना । प्रयोग—  
सुत पति नेह जगत यह जोर्यो । बज तमनिन तिनका सौ  
तोर्यो (सु० सा०—सूर, २८३४)

(समा० महा०—तिनका सा नाता तोड़ना)

### तिनके की ओट में पहाड़ छिपाना

छिपाने का असफल प्रयत्न करना, छोड़े में बड़ी बात  
छिपाना । प्रयोग—सगुन सुमेर प्रगट देखियत, तुम तुन की  
ओट दुरावत (सु० सा०—सूर, ४२२९) ; मैं तुन सों  
गन्यो तीनहु लोकनि तू तुन घोट पहार छपाव (मति०  
मक०—मतिराम, १९५)

### तिनके की मार भी न सहना

तनिक सी मार भी न सहना । प्रयोग—दुतारे तिनके की  
मार भी नहीं सह सकते (रंग० (१)—प्रेमचन्द, ९३)

### तिनके चुनवाना

(१) मोह लेना, परास्त कर देना । प्रयोग—यह दुष्ट प्रेम  
बड़े-बड़े बीरों को तिनके चुनवा देता है (मिसा०—  
कोशिक, २०४)

(२) पागल बना देना ।

### तिनके से घटकर

अत्यंत तुच्छ । प्रयोग—विधि-मरजाद लोक की लज्जा,  
तुनहूँ तै पटि मान (सु० सा०—सूर, १६५०)

### तिरछी आँख

क्रोधपूर्ण । प्रयोग—जो न तिरछी आँख से तिरछे रहे  
कुछ न पाया तिलक तिरछे दिये (चुमते०—हरिऔध, १२१)

### तिरछी आँखों से देखना, तिरछे देखना

(१) क्रोध से देखना । प्रयोग—बोली न बोल कुछ सतराय  
पै भौहें बड़ाप तकी तिरछोही (मति० मक०—मतिराम,  
९७) ; उस उम्र में भी समझने की शक्ति रखते थे कि दोनों  
घरों में मनमुटाव होने पर कैसे तिरछी आँखों से घरवाले  
उसकी घोर देखते हैं (सतमी०—राहुल, १०५)

(२) घनिष्ट करना । प्रयोग—लेकिन जब तक जीती हूँ,  
तुम्हारी घोर कोई तिरछी आँखों से देख नहीं सकता  
(मान० (१)—प्रेमचन्द, ६९)

(३) कटाज करना । प्रयोग—जुदाकी कसम । मेरी तरफ  
तिरछी नजर से न देखो (परीक्षा०—श्री० दास, १५५)

### तिरछी चितवन या नजर

(१) बिना निर फिराये हुए वस्तुकी ओर दृष्टि । प्रयोग—  
तुलसी कटि तुन परे धनु बान, अचानक दिष्टि परी तिर-  
(छोहें (कठि०—तुलसी, ३५)

(२) कटाव, प्रेमपूर्ण दृष्टि । प्रयोग—नैन धन्यारे तिरछी



चितोनि में हेरि गिरं रति प्रोतम को सर (घन० कवित्त—घना०, १४३); तनिको सुधि तन को नहि जब तें लागी हरि की तिरछी नजरिया (भा० ग्रं० (२)—भारतेन्दु, ४३९)

(३) रोषपूर्ण दृष्टि । प्रयोग—हर हमें तिरछी निगाहों का नहीं देखिये सब बल न तेवर पर पड़े (बोखे०—हरिऔध, ४२)

### तिरछे देखना

दे० तिरछी आँखों देखना

### तिरछे होना

(१) अनुकूल होना । प्रयोग—विपति काल सुमिरत, तिहि ओमर आनि तिरछी होई (सू० सा०—सूर, १०)

(२) प्रतिकूल होना । प्रयोग—जो न तिरछी आँख में तिरछे रहे कुछ न पाया तो तिलक तिरछे दिये (चुमते०—हरिऔध, १२१)

### तिरिया चरित्तर करना,—खेलना

स्त्रियों का ढोंग करना । प्रयोग—दीन बचन कह बहु बिधि रानी । सुनि कुबरी तिय माया ठानी (राम० (अ)—तुलसी, ३९१); बल बैठ लड़ाई करने आया है । मुझे तिरिया चरित्तर मत खेल (रंग० (१)—प्रेमचन्द, ३९४)

(समा० मुहा०—त्रिया चरित्र करना)

### तिरिया चरित्तर खेलना

दे० तिरिया चरित्तर करना

तिल का ताड़ बताना या बनाना,—पहाड़ बनाना किसी छोटी बात को बहुत बड़ा देना । प्रयोग—तुम्हारी आँखें ही पीटती होल ओ तिल का ताड़ बना देती है (सूग०—वृ० वर्मा, ५५); तुम नहीं जानते भाई ऐसी बातों में तिल का ताड़ बनते देर नहीं लगती (कल्याणी—जैनेन्द्र, ५०); ओ आत्मव्यथा के गायक विश्व वेदना के पहाड़ को तिल की ओट कर, अपने क्षुद्र तिल से दुग का पहाड़ बनाकर विश्व हृदय पर रखना चाहते हो (कला०—पंत, ८१)

(समा० मुहा०—तिल का ताड़ करना,—बढ़ाना,—पहाड़ करना)

### तिल का पहाड़ बनाना

दे० तिल का ताड़ बनाना

### तिल की ओट पहाड़ करना

सामान्य छोटी वस्तु या व्यक्ति में बड़ी बात छिपी होनी । प्रयोग—तुम तिल थे लेकिन तिल छोटे में थे पहाड़ (सो०—वचन, २३९)

### तिल के समान करना

टुकड़े-टुकड़े कर देना । प्रयोग—तिन्ह के घायुध तिल सम करि काटे रघुबीर (राम० (अ)—तुलसी, ७१६)

### तिल-तिल

पूरा-पूरा, सब, अच्छी तरह । प्रयोग—इनको गुन-घोगुन हरि आये तिल-तिल भेद जनावे (सू० सा०—सूर, २८५); राजा काका को यह कहानी तिल-तिल याद थी (ब्रह्म०—दे० स०, ९८)

### तिल-तिल कर

घोड़ा-घोड़ा कर । प्रयोग—कल्प समान रेनि हठि बाड़ी । तिल-तिल मरि जुग-जुग बर गाड़ी (पद०—जायसी, १८१); तनु तिल-तिल करि, बारि राम पर लेहो रोग बना-इहो (गीता०(बा)—तुलसी, २१); होति है करक प्रति बड़ी न मिराति राति तिल-तिल बाई पीर पूरी बिरहीन की (क० र०—सेनापति, १६); मुझे तिल-तिल कर बेचना चाहते हो—सो वह तो हो रहा है (कल्याणी—जैनेन्द्र, ४३)

### तिल-तिल पर

जरा-जरा देर पर । प्रयोग—रानी जो, तिल-तिल पर पूछती होंगी (रंग० (२)—प्रेमचन्द, ५८)

### तिल भर

जरा सा, थोड़ा सा । प्रयोग—सर्व रसांद्रण में किया, हरि सा क्षीर न कोई । तिल इक पट में संचरे, तो सब तन कंचन होइ (कबीर ग्रंथा०—कबीर, १७); रहउ चड़ाउब तोरव भाई । तिल भरि भूमि न सके छड़ाई (राम० (बाल)—तुलसी, २५९); हाल में तिल भर भी जगह न थी (मान० (४)—प्रेमचन्द, ११५); पर उनमें मेरे या मेरे ही जैसे निःसम्बल, जीवन संघर्ष में पके-हारे, पुग-पुग



से भटकते हुए पथिकों के लिए कहीं तिलभर भी स्थान नहीं था (जहाज०—इ० जोशी, १०)

### तिल धरने की जगह न होना

(१) जरा सी भी जगह खाली न होनी। प्रयोग—अदालत के कमरे ठसाठस भर गये थे। तिल रखने की जगह न थी (मान० (८)—प्रेमचन्द, ४३); उत्सव के दिन हाल में तिल धरने की जगह न थी (सु० सु०—सुदर्शन, १७६)

(२) कुछ कहने या करने की गुंजाइश न होनी। प्रयोग—“तुम हंसते क्यों हो?”—नाराज होकर प्रेमकुमार ने पूछा। “इसलिए कि तुम जो कुछ कह रहे हो, इसमें कहीं तिल रखने की भी जगह नहीं।” (लिली—निराला, ११५)

### तिल मात्र

तनिक भी। प्रयोग—बाह्य आचारों में तो तिल-मात्र परिवर्तन भी नहीं सहन किया जाता (बाण०—ह० प्र० द्विव०, १८४-१८५)

### तिलक करना या होना

राजगद्दी पर बैठाना या बैठना। प्रयोग—जस कहि राम तिलक तेहि सारा (राम० (सु०)—तुलसी, ८४५); नाथ जबहि कोसलपुरी होइहि तिलक तुम्हार (राम० (ल०)—तुलसी, १००४)

### तिलक चढ़ना या चढ़ाना

विवाह की एक रस्म। प्रयोग—क्या किसी खोह में पड़ी पाकर लड़कियां लोग हँ उठा लाते। जो बड़े ही कपूत लड़कों से हैं तिनक बेधड़क चढ़ा जाते (चुमते०—हरिऔध, १६४)

### तिलमिला उठना

किसी कटुवात से हृदय छटपटा उठना। प्रयोग—दो दिन पहले गौरा से भेंट होने पर गौरा के चेहरे पर भी कुछ वैसा ही भाव उभरे दिखा पा और उससे वह तिलमिला गया था (नदी०—अज्ञेय, १६९); सध्यापक × × लड़कों की शोर मचाते देखकर तिलमिलाना है (पैतरे—अश्क, २१)

### तिलांजलि देना

(१) एक दम त्याग देना, सम्बन्ध तोड़ देना। प्रयोग—

अंत में बाप्पा × × वीर धर्म को तिलांजलि देकर उन्हें मार लन्ही सामन्तों की सहायता से सिंहासन पर आप बैठ गए (राधा० सु०—राधा० दास, १६६); अब तो हमने अपना × × सच्चा गुरु पाया है और इस शुभ दिन के आनन्द में आज हमें × × अपने दम्भ को तिलांजलि दे देना चाहिए (गोदान—प्रेमचन्द, ६७); इसमें बही पड़ सकता है जो मां, बाप, घर, द्वार, लाज शरम सब को तिलांजलि दे दे (मिखा०—कौशिक, १६३)

(२) हिन्दू धर्म के अनुसार मृतक को तिल-जल से अर्घ्य देना। प्रयोग—एहि बिधि दाह किया सब कौन्ही। बिधिवत न्हाइ तिलांजलि दीन्ही (राम० (अ)—तुलसी, ५३२)

### तीखा बचन

कटु बचन। प्रयोग—समरकान्त तीखे शब्दों में बोले—“घन न रहेगा लाला तो भील मांगोये” (कर्म०—प्रेमचन्द, ११); भूल कर चाहिए नहीं कहना बात कड़वी, कड़ी, बुरी, तीखी (चोखे०—हरिऔध, २५)

### तीखे देखना

कटाक्ष करना। प्रयोग—तीखे हेरि चीर गहि ओढ़ा। कत न हेर कोन्ह जिय पोढ़ा (पद०—जायसी, ५२४)

### तीन कौड़ी के

अल्पन्त तुच्छ, जिसका कोई मूल्य न हो, उपेक्षित। प्रयोग—हामिद के मंदिरसे मैं तो तीन बड़े-बड़े लड़के हैं, बिल्कुल तीन कौड़ी के (मान० (१)—प्रेमचन्द, २५); वह बनेगा तीन कौड़ी का न क्यों जिस किसी के हाथ में पैसा न हो (चोखे०—हरिऔध, १३५)

### तीन खाना तेरह की भूख बनी रहना

कभी संतुष्ट न होना। प्रयोग—अब तो वह समय लगा है कि तीन खाद्य तेरह की भूख सभी को बनी रहती है (प्र० पी०—प्र० ना० मि०, १५८)

### तीन तेरह करना

(१) इधर-उधर करना। प्रयोग—अपरस सोलहा छूत रजि, भोजन प्रीति छुड़ाव। किए तीन तेरह सब, चौका-चोका लाव (भा० प्र० (१)—भारतेन्दु, ४७५)

(२) बर्बाद करना।



### तीन तेरह बकना

द्वार उधर की बाने करनी । प्रयोग—मैंने दोपहर को पूछा तो तीन तेरह बकने लगा था (चित्र०—कौशिक, १०५)

### तीन तेरह होना

तितर-वितर होना, अलग-अलग होना, नष्ट होना । प्रयोग— $\times \times$  उसी के विपरीत हम देखते हैं कि राज-मैत्रिक वन्दन न होने से बहुत जल्द हमारी जाति तीन तेरह हो गई (भट्ट नि०—वा० भट्ट, ६०-६१) ; विभिन्न स्थितियों से यदि उनकी संतानें न होती तो क्या उनका घर यों तीन तेरह होता ? (बुँद०—अ० ना०, २१४) ; भविष्य की कितनी ही मधुर आशाएँ सहसा जैसे आनेवाले पतझड़ के झपटे में पड़कर पत्तियों की तरह बिखर कर तीन तेरह हो गई (तितली—प्रसाद, २१६) ; मैं यह चाहती हूँ कि तुम्हारी गाड़ी कमाई, मेरी और तुम्हारी जोड़ी हुई गृहस्थी तीन तेरह न हो (मा—कौशिक, १९)

### तीन पांच करना

चालाकी करना, गड़बड़ करना । प्रयोग—मैंने भी कह दिया है कि अगर वो बूढ़ा तीन पांच करेगा, उसकी धीर इनकी फोटू दाखिल करके कहूँगा कि साहब इन्होंने लड़की भगाई थी, यह फोटू उसका सबूत है (ये कौठे०—अ० ना०, १५६) ; तीन पांच जो करे उसे नौ दो ग्यारह करवाऊँ (नूत०—भक्त, ६२)

### तीन बुलाए तेरह आना

कम व्यक्तियों को निमन्त्रित करना पर बहुतों का टपक पड़ना । प्रयोग—तीन बुलाए तेरह घाव निज-निज बिपता रोह सुनावें (मा० ग्रं० (२)—भारतेन्दु, ८१०)

### तीन लोक से न्यारी मधुरा बसाना

सबसे अलग होना । प्रयोग—ऐसे लोग चीन-दुनिया से बेखबर रहकर तीनों लोकों से न्यारी घापी मधुरा बसाया करते हैं (मेरे०—गुलाब०, १)

### तीनों त्रिभुवन सूझना

पूर्ण ज्ञान प्राप्त होना । प्रयोग—कहै कबीर या पद को बर्न, ताकू तोन्यू त्रिभुवन सूझै (कबीर ग्रंथा०—कबीर, ९२)

### तीर की तरह

(१) बहुत तीव्र गति से । प्रयोग—उनका यह कथन

समाप्त भी न हो पाया था कि भाड़ी के भीतर से एक जंगली सूअर तीर की तरह निकला (मिखा०—कौशिक, १३५)

(२) अत्यन्त कटु या अश्रिय । प्रयोग—ज्यों देन सिख सीलु सराही । बचन बान सम लागहि ताही (राम०

(अ)—तुलसी, ४१८)

### तीर खाना

तीर का आपात सहना । प्रयोग—दूर धर्म कहते हैं छाती तान तीर खाने को (कुरु०—दिनकर, ५२)

### तीर घाट मीर घाट

बहुत दूर होना । प्रयोग—जन्मपत्री की विधि के अनुग्रह से जब तक स्त्री-पुरुष जीएँ एक तीर घाट एक मीर घाट रहें  $\times \times$  यह उपद्रव इन लोगों से नहीं सहे गये (भा० ग्रं० (३)—भारतेन्दु, ८३६)

### तीर छोड़ना

(१) मुक्ति भिड़ाना, रंग हंग जमाना । प्रयोग—युरोहित जी ने यह अन्तिम तीर छोड़ा था (मा—कौशिक, ५९)

(२) व्यस्य करना । प्रयोग—बड़ी रानी ने एक तीर और छोड़ा “ऐसी सोया करोगी तो गहने बराबर खोपेंगे” (मृग०—बुँ० वर्मा, ३६८)

(समा० मुहा०—तीर खलाना या फेंकना)

तीर ठिकाने पर बैठना,—निशाने पर लगना,—बैठना

बात का ठीक एवं वांछित असर होना । प्रयोग—छिनकी ने मुंशी शिवलाल के भाव ताड़ लिये, उसे मालूम हो गया कि तीर ठिकाने पर बैठा है (मूले०—भा० वर्मा, २५) ; लाकी चुप रही । कई क्षण । पिल्लो ने सोचा तीर जा बैठा (मृग०—बुँ० वर्मा, २४१) ; घासीराम ने देखा, तीर निशाने पर लगा (मा—कौशिक, ५०)

### तीर निशाने पर लगना

दे० तीर ठिकाने पर बैठना

### तीर बैठना

दे० तीर ठिकाने पर बैठना

### तीर-मार खा होना

अपने को बहादुर या साहसी समझना । प्रयोग—बड़ी



तीरमारखां हो । सभा में खड़ा हो कर दे तो पसीना आ जाए (सु० सु०—सुदर्शन, १९०)

### तीर मारना

सफलता प्राप्त करनी या बड़ा महत्वपूर्ण काम करना । घापने घपना खून जलाकर कौन सा तीर मार लिया ? (मान०(१)—प्रेमचंद, ८१)

### तीर हाथ से निकल जाना

स्थिति बस के बाहर होनी, चूक हो जानी । प्रयोग—भारें, अब तो तीर हमारे हाथ से निकल गया (प्रेमा०—प्रेमचंद, १६) (समा० मुहा०—तीर हाथ से छूट चुकना)

### तीसमार खां बनना या होना

अपने आप को बहुत बहादुर समझना । प्रयोग—रस्ती को सांप बनाकर पीटो और तीसमार खां बनो (गोदान—प्रेमचंद, ७६) ; यानी यह जो आज बड़े तीसमार खां बनते हैं पांडेय बचन शर्मा उस दरअसल जोरू हैं राम की (अपनी सखर—उग्र, ४१)

### तुंबा-फेरी करना या होना

उलट-गुलट कर देना, इधर-उधर कर देना । प्रयोग—यह तुंबा-फेरी किस लिए हो रही है, यह न तुम जानते हो, न हम (चोटो—निराला, ९८)

### तुम डाल-डाल हम पात-पात

अपेक्षायुक्त अधिक पहुंच होनी या होशियार होना । प्रयोग—बह डाल-डाल, मैं पात-पात, वह मुझसे पार न पायेगी (नूर०—भक्त, ५३)

### तुर्की-ब-तुर्की जवाब देना

मूढ़ तोड़ जवाब देना । प्रयोग—इस पर हमसे न रहा गया तो फिर हमने भी तुर्की-ब-तुर्की जवाब दिया (मूले०—भग० वर्मा, १९५); लेकिन वह डांट की परवाह न करे और तुर्की-ब-तुर्की जवाब दे तो मेरे पास ऐसा कौन सा साधन है, जिससे मैं उसे ताड़ना दे सकूँ (मान० (२)—प्रेमचंद, २७६)

### तुरा यह

उस पर भी इतना घोर, सबके उपरांत इतना भी । प्रयोग—धन्य । यह उस पर तुरा ! इच्छा न होने की एक ही कही (मा—कौशिक, २१)

### तुशं होना

रुष्ट होना । प्रयोग—रमा ने कुछ तुशं होकर कहा—इस वक्त तो रहने दोजिए, दरोगा जो (गवन—प्रेमचंद, २९२)

### तुशं होना

(१) नाराज होना । प्रयोग—यहां तक कि जो लोग स्वयं इस मैदान में कदम बढ़ाते हैं, अपनी आलोचना होते देखकर वहीं तुशं हो जाते हैं (गु० नि०—वा०मु०गु०, ४२७)  
(२) तीखे मिजाज वाला होना ।

### तुली होना

डूढ़ होना, उखत होना । प्रयोग—बसों दिखाने में अंगूठा दीन को घाप की रुचि घाज दिन यों है तुली (चुमते०—हरिऔध, ४)

### तू-तुकार करना या होना, तू-तू में-में होना

अशिष्ट शब्दों में विवाद करना या होना । प्रयोग—गालियां तो क्या (वे) किसी से तू-तुकार भी न करते (मान० (२)—प्रेमचंद, २६); इस पर हमारी तू-तू में-में और बड़ी (कठ०—दे०स०, ३८०) ; मुझे तो यह इस तरह की तू-तू में-में बहुत बुरी मालूम होती है (पद्म० के पत्र—पद्म०शर्मा, ६६); मित्रियों में तू-तू में-में होती थी, किन्तु भाइयों पर इसका असर न पड़ता था (प्रेमा०—प्रेमचंद, ९)

(समा० मुहा०—तू-तड़ाक)

### तू-तू में-में होना

दे० तू-तुकार करना या होना

### तूती बोलना

खूब चलती होनी, खूब प्रभाव होना । प्रयोग—अब मेरी तूती बोलेगी, नया खिलाऊंगी गुल (नूर०—भक्त, ६२); महाराज के बाद या कहना चाहिए कि सबसे अधिक रियासत में उन्हीं की तूती बोलती थी (गोली—चतुर०, १३५); रमानाथ की तूती बोलने लगी (गवन—प्रेमचंद, ४४)

### तुफान आना

(१) कोई चलन या प्रवाह का वेग से घाना । प्रयोग—सिनेमा का तुफान प्रबल वेग से बढ़ा आ रहा था (पैसरे—अशक, ९)

(२) मुगीबल आना ।



**तूफान उठाना,—खड़ा करना या होना**

भगड़ा-भभट्ट करना, हलचल या आदोलन खड़ा करना । प्रयोग—अमर को इसके इलाके में यह तूफान न उठाना चाहिए था (कर्म०—प्रेमचंद, ३१४) ; अगर वह इतनी आसानी से दबने लगे तो जरा जरा सी बात पर तूफान खड़े हो जायेंगे (कर्म०—प्रेमचंद, ३६७)

**तूफान खड़ा करना या होना**

**दे० तूफान उठाना**

**तूफानी होना**

(१) तेज होना, तीखा व्यक्ति होना । प्रयोग—बुढ़ा कभी तूफानी ही रहा होगा (शेखर० (२)—अज्ञेय, ७६)  
(२) उत्तेजनापूर्ण, भयंकर । प्रयोग—सन् १९२०-२२ के तूफानी दिन थे (निशि०—वि०प्र०, ३८)

**तूल खींचना,—पकड़ना**

किसी बात का बहुत बढ़ जाना । प्रयोग—ए छोटी-छोटी बात बहुत बड़ा तूल पकड़ सकती है (भुल्ले०—मग०वर्मा, ४७८) ; एक बार यदुवंशियों ने खली चुनौती दे दी—बात तूल पकड़ने वाली थी (मैला०—रेणु, ९) ; पर यह न मगझे थे कि मामला इतना तूल खींचेगा (मान० (२)—प्रेमचंद, १७०)

**तूल देना**

सामान्य सी बात को बहुत बढ़ाना-बढ़ाना । प्रयोग—किसी बात को उसने तूल भी नहीं दिया (गु०नि०—वा०मु०गु०, ४३०) ; अमर ने वहस को तूल देना उचित न समझा (कर्म०—प्रेमचंद, २८३) ; लेकिन उसे तूल न दें । अपनी ही बदनामी है (बोने०—रा०रा०, २०३)

(समा० मुहा०—तूल तवाल करना)

**तूल पकड़ना**

**दे० तूल खींचना**

**तृण को घज़ और घज़ को तृण बनाना**

निबंल को बलवान और बलवान को निबंल बना देना । प्रयोग—तृण तें कुलिस कुलिस तृण करई (राम० (लं)—तुलसी, ९००)

**तृण गिनना,—समान गिनना,—समान न गिनना**

अत्यंत तुच्छ समझना । प्रयोग—तृण समान बंचोकहि

83

O.P.—185

गनहीं (राम० (सु)—तुलसी, ८५०) ; दान सबै गनै घन तुन सौं कुबैर हू को, तनक सुमेध महादानि ऊंचे मन को (मलि० मक०—मतिराम, १५५) ; वह न गिनत बिनहू सौं जा हित धरत सबै ब्रज नाथ (भा० ग्रं० (२)—भारतेन्दु, ४०३) ; प्राणिमात्र के दुख को भवपरिताप को-तृण गिनता है मानव निज सुख के लिये (वेदेही०—हरिऔध, ४९)

(समा० मुहा०—तृण समान न समझना,—समान समझना)

**तृण जल**

खाना-पीना, जीविका । प्रयोग—चलो कहीं ऐसी ठीर जावें जहां तृणजल का सुख पावें (प्रेम सा०—ल० लाल, ३६)

**तृण तोड़ना**

(१) किसी सुन्दर वस्तु को नज़र से बचाने के लिए तिनके का टुकड़ा करना । प्रयोग—स्याम गौर सुन्दर दोउ जोरी । निरखहि छवि जननी तून तोरो (राम० (बाल)—तुलसी, २०७) ; भूलत में लोट-पोट होत दोंऊ रंग भरे, निरखि छवि नंददास बनि बलि तून तोरे (नंद० ग्रंथा०—नंद०, ३२५) ; हरीचंद यह छवि लखि प्रमुदित तून तोरत ब्रज वाम (भा० ग्रं० (२)—भारतेन्दु, ५२) ; बहु विनोदित थीं ब्रज बालिका तरुणियां सब थीं तृण तोड़नी (प्रिय०—हरिऔध, ६)

(२) संबंध तोड़ना । प्रयोग—(ऊधो) नंद को गोपाल मोसौं मयो तून ज्यौ तोरि (सु० सा०—सूर, ४६३७) ; राम बिलोकि बंधु कर जोरें देह नेह सब सन तृण तोरें (राम० (अ)—तुलसी, ४३७)

(३) प्रतिज्ञा करनी । प्रयोग—लछिमन कहा तोहि सो बरई । जो तून तोरि काज परिहरई (राम० (अर)—तुलसी, ७१२)

**तृण-मात्र**

तनिक भी । प्रयोग—जो तृण-मात्रहु न्याव करो प्रभु करि शास्त्रन पै नेह (भा० ग्रं० (२)—भारतेन्दु, ५४१)

**तृणवत्**

(१) अत्यंत तुच्छ । प्रयोग—तनु तिय तनय धाम धनु धरनी । मत्पसंद कहूँ तून सम बरनी (राम० (अ)—तुलसी, ४०५)

(२) कुछ भी नहीं ।



**तृणवत् तजना, —सम तजना**

(१) सर्वथा तज देना । प्रयोग—कोई परमार्थ को ही परम पुरुषार्थ मान कर घर-बार-तृण सा छोड़ देता है (भा० प्र० (१)—भारतेन्दु, ४१६) (÷) ; निज के दुल तृण सम तजति लखि कोउ प्रजा मलीन (राधा० प्र०—राधा० दास, ७) (÷)

(२) तुच्छ समझ कर के छोड़ देना । प्रयोग—बिछुरत दीन दयाल प्रिय तनु तूम इव परिहरेउ (राम० (वा)—तुलसी, २६) ; दे० प्रयोग (१) में (÷) भी

**तृण सम तजना**

दे० तृणवत् तजना

तृण समान गिनना

दे० तृण गिनना

तृण समान न गिनना

दे० तृण गिनना

**तृषा बुझना**

(१) तृप्ति होनी । प्रयोग—उत तुम देखे और भाति में सकल तृषा जु बुझायी (सू० सा०—सूर, ४७६९)

(२) इच्छा पूरी होनी

**तृष्णा मरना**

इच्छाओं का अंत होना । प्रयोग—जो लमि ऊपर छार न परई । तब लमि नाहि जो तिसना मरई (पद०—जायसी, ५७४)

(समा० मुहा०—तृष्णा जाना, —शांत होना)

**तेज गला होना**

आवाज तेज या गुस्से में होनी । प्रयोग—इसने इस साल आम भी नहीं लिए, इसके पास एक रुपया भी न था—तेज गले से बंकिम ने कहा (शिली—निराला, ६९)

**तेज निगाह से देखना**

रुष्ट होना, क्रोध पूर्ण दृष्टि से देखना । प्रयोग—खुद इसका दिल गवाह है कि आज तक मैंने इसे कभी तेज निगाह से भी नहीं देखा (रंग० (२)—प्रेमचंद, ४१४)

**तेज पड़ना या होना**

नाराज होना । प्रयोग—आप क्या तेज होते हैं मैं खुद

तुण का तरफदार नहीं हूँ (परीक्षा०—श्री० दास, १०६) ; काढ़ी जरा तेज पड़ा (मृग०—वृ० वर्मा, ७०)

**तेजी आना या रहना**

दाम में या लादोलन में तीव्रता आनी । प्रयोग—अगर दस दिन यही तेजी रही, तो रतन से मुह चुराने की नीबत न आयेगी (गवर्न—प्रेमचंद, ९४)

**तेल की धार में होकर देखना**

झलना, रुष्ट होना । प्रयोग—उसने अन्नदाता से भी शिकायत की, पर उन्होंने भी कान नहीं दिया । इसी से वह सदा मुझे तेल की धार में देखता था (गोली—चतु०, १९०)

**तेल निकालना**

(१) बहुत मेहनत करानी । प्रयोग—क्यों न खो देंगे आंग का तिल वे । आंग का तेल जो निकालेंगे (चोखे—हरिऔध, १४)

(२) सार-सार ले लेना ।

**तेली का बेल होना**

हर समय काम में लगा रहने वाला व्यक्ति । प्रयोग—जान जब तक सका नहीं तब तक, था बना जीव बेल तेली का (चोखे—हरिऔध, १३२)

**तेवर अच्छे न होना**

गुस्से में होना । प्रयोग—क्यों बुरे तेवर किसी के हैं बुरे घापके तेवर अगर अच्छे नहीं (बोल०—हरिऔध, ६७)

**तेवर चढ़ना, —पर चल पड़ना, —बदलना**

क्रोधित होना । प्रयोग—उनके बाप-दादे × × टुक जो तेवरी चढ़ी देखते थे बहुत डरते थे (ईशा०—ईशा०, ९८) डर हमें तिरछी निगाहों का नहीं देखिये अब बल न तेवर पर पड़े (चोखे—हरिऔध, ४२) ; काम जो तेवर बिना बदले चले, तो चढ़ा तेवर न लें तेवर चढ़ा (बोल०—हरिऔध, ६७) ; भले ही घासें बंद रहें, पर न हम तेवर बदलें कभी (मर्म०—हरिऔध, ९१) ; मैं सीधे-सीधे कहता हूँ तो तेवर बदलते हो (प्रेमा०—प्रेमचंद, ८) ; केवल पहाड़ उभर कर बड़े भारी और तीखे हो आते हैं, जैसे आकाश के तेवर चढ़ गये



तेवर पर बल पड़ना

३३१

तोल में ओछा ठहरना या होना

हो, पनी काली भोई उभर-सिकुड़ कर और भी कानी हो गयी हों (नदी०—अज्ञेय, १९८)

(समा० मुहा०—तेवर बिगड़ना)

तेवर पर बल पड़ना

दे० तेवर चढ़ना

तेवर बदलना

दे० तेवर चढ़ना

तेवर सहना

क्रोध सहना। प्रयोग—जो पड़े सिर पर, रहें सहते उसे पर न औरों के घुरे तेवर सहें (चुमते०—हरिऔध, १५)

तेहा चढ़ना

गुस्सा आना। प्रयोग—छिन भरे मां तुमका तेहा चढ़ी तो गरज-बरस लगिहो (बुंद०—अ० ना०, ११२)

तोड़ करना

तै करना। प्रयोग—अच्छा बीस पर तोड़ करिए। बहुत खरा माल है। कैसा मोरा रंग है (वेशाली० (१)—चतुर०, ३५८)

तोड़-जोड़ करना

मोल-भाव करना। प्रयोग—मैं जाता हूँ अपने बस पहले तोड़-जोड़ मैं कसर नहीं रखूंगा (परीक्षा०—श्री० दास, १५)

तोड़ देना

(१) काम में न लाना—हटा देना। प्रयोग—लोगों ने सलाह दी, एक हल तोड़ दो और खेतों को उठा दो (मान० (१)—प्रेमचंद, १२५)

(२) मानसिक रूप से दुर्बल कर देना। प्रयोग—क्या जेल का जीवन मुझे तोड़ रहा है (शेखर (२)—अज्ञेय, ६१)

(३) जख्म दुर्बल कर देना।

तोड़ लेना

वहका कर अपनी ओर कर लेना। प्रयोग—कोई असामियों को फोड़ता है, कोई मेरे नौकरों को तोड़ता है (प्रेमा०—प्रेमचंद, ८८)

तोड़वाली बात

भेद-भाव पैदा करने वाली बात। प्रयोग—अंगरेजी शासन के प्रारम्भ से ऐसी तोड़वाली बातों का महत्व है (चोटी०—निराला, १७)

तोताचश्म होना

बेमुरख्त होना। प्रयोग—मुझसे उनको बहुत अच्छा लाम हुआ होगा परन्तु इसमय वे सब “तोताचश्म” हो गए (परीक्षा०—श्री० दास, ९०)

तोते की तरह आँखें फेरना,—बदलना

(१) बहुत बेमुरख्त होना। प्रयोग—पहले तो देवता बन जायेगे जैसे सारी शराफत इन्हीं पर खतम है, फिर तोतों की तरह आँखें फेर लेंगे (कर्म०—प्रेमचंद, १९७); परन्तु अब जब वह भय जाता रहा, तोते की तरह आँखें बदल ली (मा—कौशिक, १४३)

(२) बेशील होना।

तोते की तरह आँखें बदलना

दे० तोते की तरह आँखें फेरना

तोते की तरह पढ़ाना

एक-एक बात पढ़ाना—सिखाना, बार-बार सिखाना। प्रयोग—मैंने महीनों इसे तोते की भाँति पढ़ाया, उसका यह कल (प्रेमा०—प्रेमचंद, १५१); स्त्री जन का विश्वास न करना, राजा रघु ने चन्द्रावती को लड़कई से आज तक सुग्गा सा पढ़ाया (स० ग्रंथा०—स० मिश्र, ९१)

(समा० मुहा०—तोते की तरह रटाना)

तोबा तिल्ला करना

रोते चिल्लाते या दीनता दिखाते तोबा करना। प्रयोग—विजेता जुआरी सुन्दर स्त्री पाने का लोभ लिए प्रतीक्षा में बैठा रहा कि तब तक पब्लिक की हाँक गुहार पड़ गई, तोबा तिल्ला भव गया (ये कोठे०—अ० ना०, ४६)

(समा० मुहा०—तोबातिल्ला मचाना)

तोर-मोर करना

घापस में कहा-सुनी करनी, अपना-पराया करना। प्रयोग—दूसरे तोर मोर क्यों न करें, क्यों नहीं हाथ तुम अलग रहते (चुमते०—हरिऔध, १६८)

तोरई छोकना

बीच में कूद कर कुछ बोलना, बात को और रंग देना। प्रयोग—गांव वाला बोला—वैसे ही तोरई छोकता है, मुझको बात कर लेने दे (मृग०—वृ० वर्मा, १६०)

तोल में ओछा ठहरना या होना

जांच करने पर निम्न कोटि का ठहरना। प्रयोग—आवत



ही माकी पहिचान्यौ, निपटहि ओछो तौल (सू० सा०—सूर, ४४८८)

### तौल-तौल कर

बहुत संभाल-संभाल कर । प्रयोग—बेशक सही फर्मा रहे है × × एक-एक लफ्ज, तौल कर लिखना होता है (झूठा० (१)—यशपाल, ४३); बहुत तौल-तौल कर मुह से शब्द निकालते थे (सेवा०—प्रेमचन्द, १०१)

### तौलना

परीक्षा लेना, अंदाज लगाना । प्रयोग—क्यों न बल को तौल लें, होगा बुरा, बात जी में बे-ठिकाने की ठने (चमते०—हरिऔध, ८६); उस रचना को देख एक दिन धक्कर का मन डोला फिर बहाव पर उर्दू की ताकत को उनने तोला (चक्र०—दिनकर, २३७)

### त्यौरी चढ़ना,—पर (में) बल पड़ना

(१) कोष घाना । प्रयोग—पर किसी ने सलीम को सलाम नहीं किया, सब की त्यौरियां चढ़ी हुई थीं (कर्म०—प्रेमचंद, ३५१); बाई जी के चेहरे पर बरफ की सो सफेदी छा गई, बालाजी की त्यौरियां चढ़ गईं (ये कोठे०—झ० ना०, १५३); सच्चे खिलाड़ी कभी रोते नहीं, बाजी पर बाजी हारते हैं × × पर मैदान में डटे रहते हैं, उनकी त्यौरियों पर बल नहीं पड़ते (रंग० (१)—प्रेमचंद, २०३)

### त्यौरी चढ़ाना,—ठानना,—पर (में) बल आना

क्रोधित होना । प्रयोग—नाउं सुनत ही हूं गयो तनु और मनु और दबे नहीं चित बड़ि रह्यो अब चढ़ाएँ त्यौर (बिहारी रत्ना०—बिहारी, ५९९); आवत गुसलखाने ऐसे कुछ त्यौर ठाने, जानो अबरंगू के प्रानन को लेवा है (भूपण ग्रंथा०—भूपण, १४२); जो अभिमानी धनिकों की दुतकार सुनकर त्यौरी पर बल नहीं घाने देते × × जो अपने परिजनों का कष्ट कन्दन सुनकर भी रुपये गिनने में लगे रहते हैं वे अपमरे होकर जीते हैं (चिता० (१)—शुक्ल, ८५); मुलिया ने त्यौरियां चढ़ाकर कहा—पैसे घर में नहीं हैं (मान० (१)—प्रेमचंद, ७)

### (समा० मुहा०—त्यौरी बदलना,—पर (में) बल डालना )

#### त्यौरी ठानना

दे० त्यौरी चढ़ाना

त्यौरी पर (में) बल आना

दे० त्यौरी चढ़ाना

त्यौरी पर (में) बल पड़ना

दे० त्यौरी चढ़ना

#### त्रय ताप-नसावन

सब कष्टों को हरने वाला । प्रयोग—जामु नाम त्रय ताप नसावन (राम० (सु)—तुलसी, ८३५)



## थ

### थक कर चूर होना

बहुत थक जाना । प्रयोग—सारी देह थक कर चूर-चूर हो रही थी × × पर वह संकल्प से सारी बाधाओं को दबाये आगे बढ़ती जाती थी (मान० (१)—प्रेमचंद, २३९)

### थपेड़े खाना

भ्रमट में पड़ना, विपत्ति सहनी । प्रयोग—कब पड़े हम नहीं बसेड़े में, कब थपेड़े रहे नहीं खाते (बोल०—हरिऔध, १६५)

### थप्पड़ खाना,—मारना,—लगाना

(१) प्रच्छा सबक मिलना या देना (व्यंग्य) । प्रयोग—मैं जो समझा कर कहता हूँ, दुनिया में वही थप्पड़ साकर सीखेगा (परख—जैनेन्द्र, ९१)

(२) अपमान होना या करना । प्रयोग—उसे लगा जैसे किसी ने उसे थप्पड़ मारा है (शेखर (२)—अज्ञेय, १०५) अब मधुवन को जैसे थप्पड़ लगा (तितली—पसाद, १६७)

### थप्पड़ मारना

दे० थप्पड़ खाना

### थप्पड़ लगाना

दे० थप्पड़ खाना

### थर-थर कांपना,—थरथराना

प्रत्यन्त भय से शरीर में कंपन होना । प्रयोग—चर-चर

कांपहि पुर नर नारी (राम० (वा)—तुलसी, २२४); वलि वह वन में थे तो गरजते केशरी भा चरचर कंपता तो मत्त मार्तण भी था (बोल०—हरिऔध, १५७); दोनों रमा से चर-चर कांपते थे (गवन—प्रेमचंद, २१); मुचलका का नाम सुनते ही सब लोग चरचरा रहे हैं (प्रेमा०—प्रेमचंद, १००)

(समा० मुहा०—थरथर करना)

### थरथराना

दे० थर थर कांपना

### थराना

भय से घातकित हो उठना । प्रयोग—जिसके घर में भूनी भांग नहीं, जो मेरा खेतिहर है, जो मेरे सामने बात करते हुए चराना है—उसे मैं अपना समझी बनाऊँ (मिस्त्रा०—कोशिक, ४३); बड़े-बड़े प्रतापी भूपति तुम्हारी आँखों के सामने राख में मिल गए, जिनके सिंहाद से दिकपाल चराने थे (रंग० (२)—प्रेमचंद, ३४३)

### थल-थल पिल-पिल होना

मृदापे के कारण बदन का डोला-डोला होना । प्रयोग—मोटे लेकिन बल-बल पिल-पिल नहीं (पैतरै—अश्क, ४७) (समा० मुहा०—थलथल होना)



### धाना बँठाना

पुलिस का पहरा बँठाना । प्रयोग—वहाँ का राज ले नगर में हंडोरा दे उसने अपना धाना बँठाया (प्रेम सा०—ल० ला०, १५५)

### धाली बजाना

(१) पुत्र प्राप्ति कर पाली बजाकर आनन्द प्रगट करना । प्रयोग—शापद वालो भी न बजायी गई हो, नौबत और सहनाई तो दूर की बात (अपनी सवर—उग्र, १७)

(२) पाली बजाकर मंत्र के बल से विष खींचना ।

### धाह न होना

घंदाज न होना । प्रयोग—मुझे श्रीमती जी की विद्या की धाह नहीं थी (बोटो०—निराला, ६९)

### धाह पाना

(१) स्थिति का ठीक-ठीक अंदाज लगाना । प्रयोग—यथा अघाह धाह नहि पावा (कबीर ग्रंथा०—कबीर, ३११); जाको कहूँ धाह नहि पैंवे, अगम अंधार अगाधै (सु०सा०—सूर, ४५१३)

(२) सहारा पाना । प्रयोग—जनक लहेउ मुखु सोचु बिहाई, पैरत बके धाह जनु पाई (राम० (बा)—तुलसी, २७०)

### धाह लेना

(१) जानकारी प्राप्त करनी । प्रयोग—बर्षों के अध्वयन और अनुभव के बाद भी पूर्ण ज्ञान की धाह नहीं ले सका हूँ (चित्र०—भग० वर्मा, १९)

(२) दिल की बात मालूम करनी ।

(३) किसी गुप्त बात का पता लगाना ।

### धूकवाना

अपमानित करवाना । प्रयोग—जिसमें राजा को भी धूकवायो, सारी प्रजा कहे कि राजा का साला अपमर्सी है (मृग०—धु० वर्मा, २१३); हम भले ही किसी निपर घट को धूक लें, और से न धूकवावें (बोल०—हरिऔध, १२०)

### धुड़ी धुड़ी करना या होना

निंदा करनी, धिक्कारना । प्रयोग—तुमसे सब कहती हूँ बेटा, चारपाई से उठती तक नहीं, सब धोरतें धुड़ी-धुड़ी करती है (मान० (२)—प्रेमचंद, २७२); उनकी पवित्र

धारमा को तुमने यों कलंकित किया । शहर में धुड़ी धुड़ी हो रही है (मान० (१)—प्रेमचंद, ६२); आज तक भी जड़ी न जोड़े से है इसी से धुड़ी धुड़ी होती (चुमते०—हरिऔध, ८७)

(समा० मुहा०—धुड़ी धुड़ी मचना)

### धू-धू करना

निंदा करनी, नापसंद करना । प्रयोग—धूक मुंह से तू निकल जाता न जो लोग धू-धू तो कभी करते नहीं (बोल०—हरिऔध, १२१)

### धूक कर चाटना

(१) पूरी तरह विनत हो कर अपनी गलती माननी । प्रयोग—वह तो इन लोगों को जेहल भेजवा रहे थे लेकिन इन लोगों ने हाथ पांव जोड़े, धूक कर चाटा तब जाके उन्होंने छोड़ा (गोदान—प्रेमचंद, १८१)

(२) विवश होकर वह काम करना जिसे पहले प्रस्वीकार किया हो ।

### धूक चाटना

हर तरह का गंदा काम या बुरे से बुरा काम करने को तैयार रहना—अपमानित होना । प्रयोग—चटोरों की चाटें हैं बुरी, धूक चाटा हो करते हैं (मर्म०—हरिऔध, ८९); जिसके यहाँ मेरा निरबाह नहीं हुआ, उसके यहाँ अगर तू रहती है तो अपनी धूक चाट कर ही रहती है (बल०—नागा०, ११२); लोग कैसे धूकते मुंह पर न तब जब पराया धूक हम हैं चाटते (बोल०—हरिऔध, १२०)

### धूक देना या धूकना

(१) निरस्कार कर देना । प्रयोग—संसार उसे धूके तो क्या और लड़कों को धूके तो क्या, बदनामी तो उसी की है (मान० (१)—प्रेमचंद, ७३); धूके मुझ पर प्रेमीक्य भले ही धूके (साकेत—गुप्त, २३२); मैं तो उनके नाम पर धूकती हूँ (पुं०—अ० ना०, ३२)

(२) नापसंद करना ।

### धूक सूख जाना

बहुत डर जाना । प्रयोग—जमादार का धूक सूख गया (चोटी०—निराला, ६४)



### धुक से चुहिया जिलाना

अनुपयुक्त साधन से कुछ करना । प्रयोग—बमार ने सब रुपए जमीन पर पटक दिए और बोला—आप धुक से चुहिया जिलाते हैं । मैं आपसे उधार नहीं मांगता, खैरात नहीं मांगता, अपने रुपए मांगता हूँ (रंग० (२)—प्रेमचंद, २२६)

### धुकने भी न आना

संबंधा तिरस्कृत करके छोड़ देना । प्रयोग—जो मैं अपने बाप का बेटा हूँ, तो घर में कभी आकर धुकूंगा भी नहीं (चित्र०—कौशिक, ७२)

### थैली

रुपए । प्रयोग—तो थानेदार साहब के लिए थैली कहाँ से लाता (प्रेमा०—प्रेमचंद, २०)

### थैली खोलना

(१) थैली में से निकाल कर रुपया देना । प्रयोग—मैं भी देखता हूँ कि कौन तुम्हें थैलियाँ खोले देता है (सु० सु०—सुदर्शन, ५७) (÷)

(२) बे-रोक खर्च करना । प्रयोग—अब घानिअ व्यवहारिया बोली । तुरत देउ में पैली खोली (राम० (बाल)—तुलसी, २८१) ; दे० प्रयोग(१) में (÷) भी

### थोथी बात होना

(१) बेकार बात होनी । प्रयोग—जब थोथी बातों में बहुत सा रुपया खर्च हो जाता है तो जरूरी कामों के लिये पीछे से जरूर तकलीफ़ उठानी पड़ती है (परोक्षा०—श्री० दास, २)

(२) झूठी बात होना ।



### दंगल मारना

दंगल में जीतना। प्रयोग—तुमने जब दंगल मारे थे तब मारे थे। अब तुम वह नहीं हो। आजकल भेंगे की इहाई है (रंग०(१)—प्रेमचंद, ३८)

### दंड-प्रणाम करना

सावर या साष्टांग प्रणाम करना। प्रयोग—पितु समेत कहि-कहि निज नामा। लगे करन सब दंड प्रनामा (राम० (बाल)—तुलसी, २७५)

### दंत-कटाकट

भगड़ा-विरोध। प्रयोग—हमारा दांत जिम घोर लगा है वह लगा रहेगा, औरों की दंतकटाकट से हमको क्या? (प्र० पी०—प्र० ना० मि०, ७७)

### दर्ई का खोया

अभागा। प्रयोग—सूर इतने पै समझत नाही, निपट दर्ई को लोयो (सू० सा०—सूर, ४१५८)

### दकियानूसी

सकीर्ण मनोवृत्तिवाला, पुराणपंथी। प्रयोग—गुस्सा तो मुझे बहुत आता है इनके दकियानूसी खयालों पर (भोर०—जग० माधुर, १०८); तुम पश्चिम के रंग में रंग में हूँ दकियानूसी भारत (स्वर्णधूलि—पंत, ६)

### दक्षिण होना

घनुकूल होना। प्रयोग—पीम की दक्षिण जानि न दूखत चोगुनों बाउ बड़े लली की (मा० ग्रं० (२)—मारलेन्दु, १६२)

### दगा खाना

घोसे में पड़ना। प्रयोग—सोवत कहा चेत रे रावन, सब क्यों खात दगा (सू० सा०—सूर, ५५८)

### दफ्तर देखना

हिसाब देखना। प्रयोग—जोरी करि जिवहै करै कहते हैं ज हलाल। जब दफ्तर देखेगा दर्ई, तब हूँगा कौण हवाल (कवीर ग्रंथा०—कवीर, ४२)

### दबंग होना

रोव-दाव-वाला। प्रयोग—होसले और दबदबे वाला क्या नहीं है दबंग बन पाता (चुमते०—हरिऔध, ३१)

### दब जाना

(१) बहुत एहसान मानना। प्रयोग—जयदेव और भी दब गया (झुठा० (१)—यशपाल, ४१)

(२) गुम खा जाना। प्रयोग—इन्हीं सब बातों से दब गये और क्या कह सकती हूँ (झुठा० (२)—यशपाल, ५२८)

(३) विनम्र होना। प्रयोग—घोर घाप दब जाहि 'दास' जे अहं श्रेष्ठ नर (राधा० ग्रंथा०—राधा० दास, ५१)

(४) जोर कम पड़ जाना।

### दबदबा होना

बड़ा रोव-दाव होना। प्रयोग—क्या देखता हूँ? क्या यही वह है जिसका लिक्का घोर दबदबा है (जय०—



जैनेन्द्र, १२३); अब कहां दबदबा हमारा है आज है बात बात में दबते (चुमते—हरिऔध, १९)

### दबना

(१) हारना, नीचे होकर काम करना। प्रयोग—सहज सुखवि देखें दब जाहि सबे बाम, बिन ही सिगार और बानिक बिराजे बनि (धन० कवित्त—धना०, १९२); मास जेठानि सों दबती रहै लीने रहै रुख ज्यों ननदी को (भा० ग्रं० (२)—भारतेन्दु, १६२); हम कोई धुनि जूलाहे हैं ? यों सबसे दबते फिरें, तो इज्जत कैसे रहे (रंग० (१)—प्रेमचंद, १७०); किन्तु विभक्त हो जाने पर हम सबको दबना पड़ रहा है (विप०—प्रेमी, ९७); लेकिन दबते नहीं ये महादेव सेठ (अपनी सबर—उग्र, १४)

(२) उपकृत होता। प्रयोग—हम उसके नीचे नहीं दबे वही कुछ हमारे नीचे दब रहा है (परीक्षा—प्री० दास, १०८)

(३) शांत होना, नम्र होना। प्रयोग—बूढ़े बाबूजी जितना ही दबते थे, उतना ही पंडितजी बिगड़ते थे (मान० (१)—प्रेमचंद, २३०)

### दबा क्रोध

भीतरी क्रोध जो प्रगट न हो। प्रयोग—मां एकबार दबे क्रोध से उसकी ओर देखती है (शेखर (१)—अज्ञेय, १६०)

### दबा देना

कोई चर्चा न करनी, चुप रहना, किसी बात को प्रगट न होने देना। प्रयोग—जमादार, सिर्फ इस कोठे का धान उस कोठे गया है, दबा जाओ (चोटी—निराला, ११९)

### दबाना

(१) अनुचित प्रभाव डालना। प्रयोग—घाप मुझे अत्यंत दबाते हैं इसीलिए अब अधिक अस्वीकार करना निश्चलता है (भा० ग्रंथा० (१)—भारतेन्दु, ६३९); तुम जितना कहो, उतना देने को तैयार हूँ। तुम्हें दबाना नहीं चाहती (गबन—प्रेमचंद, १४८); कभी-कभी जब गवाह बदलने लगता है या कलई खोलने पर उत्तार हो जाता है, पुलिस-वाले उसके घरवालों को दबाते हैं (गबन—प्रेमचंद, २७०);

× × बाहक यह न समझे कि दूकानदार बेईमान है या ८५

जान पहिचान में दबाना चाहता है (मेरे—गुलाब०, ५३)

(२) अपने वश में रखना, किसी की उग्रता को दबाना। प्रयोग—मधुवन को अगर तुम नहीं दबाते, तो तुम्हारी तहसीलदारी हो चुकी (तितली—प्रसाद, १४५)

### दबी आंखों से देखना

चोरी-चोरी कनखी से देखना। प्रयोग—दोनों एक-दूसरे की ओर दबी आंखों से देखते थे (रंग० (१)—प्रेमचंद, १५७)

### दबी जवान से कहना,—जीभ से कहना, दबे कंठ से कहना

(१) साफ-साफ न कहना, ऐसे कहना जिससे केवल ध्वनि व्यक्त हो। प्रयोग—अकस्मात् एक अस्पष्ट चीत्कार से वह चौंक उठा। जैसे गहरी वेदना से कोई दबे कंठ से चिल्ला उठा हो (वैशाली० (१)—चतुर०, ७७)

(२) भय या संकोच से कहना। प्रयोग—वह सहमकर कुछ पीछे हो गया, दबी हुई जवानसे उसने कहा—मुन्दरी ! मुझसे दीक्षित होने के अर्थ पर भी तुमने कभी विचार किया है (चित्र०—मग० वमा, ५०); जब मैंने कहीं दुकान खोलने का प्रस्ताव किया और दबी जवान से उसके लिए कुछ रुपए की मांग की तो मां ने लांडरी के दिनों के वे गड़े मुँह उलाड़े कि मुझे वहाँ में भागते ही बना (चेतन—अशक, १२५); डिप्टी साहब ने दबी जवान से शंका की (रंग० (१)—प्रेमचंद, ३४५); जब खुले घाम कह नहीं सकते कुछ दबी जीभ से कहा तब क्या (चुमते—हरिऔध, १०३)

(समा० मुहा०—दबी आवाज से कहना)

### दबी जीभ से कहना

दे० दबी जवान से कहना

### दबी बिल्ली का चूहे से कान कटाना

परिस्थिति की प्रतिकूलता के कारण अशक्त या दुर्बल व्यक्ति का भी हावो होना। प्रयोग—यह मैं समझती हूँ, बेटी लेकिन दबी बिल्ली चूहों से कान कटाती है (विप०—प्रेमी, १४)

### दबे कंठ से

दे० दबी जवान से



### दबे पांव या पैर

(१) ऐसे चुपचाप जाना कि आवाज न हो। प्रयोग—यह देखते ही बिन बोले बाले दबे पांवों फिर मन ही मन प्रसन्न हो असीस देती सूट मारे वह अपने घर चली गई (प्रेम सा०—ल० ला०, २४५); गंगी दबे पांव कुर् के जगत पर चढ़ी (मान० (१)—प्रेमचंद, १३२); देखो यह हरी-हरी घास रक्त से लाल रंगी जाकर भयानक हो उठी है, यहाँ का पवन भाराकांत होकर दबे-पांव चलने लगा है (कामना—प्रसाद, ३४); जब उसके समवेदना के वाक्यों से पिता का हृदय पिघल गया और वे माता के संस्मरण कहने लगे, खोलर दबे पांव उठकर बाहर चला गया (शेखर (२)—अज्ञेय, १४३); अब सदा एक देश दूसरे देशों का चुपचाप दबे पांव घन हरण करने की ताक में लगा रहता है (चिंता० (१)—शुक्ल, ७४)

(२) चोरी-चोरी, चुपचाप।

### दबे स्वर में

धीमी आवाज से। प्रयोग—फिर दबे स्वर में उन्होंने कहा—यह करने में तुम्हारी भलाई ही है, यह तो तुम समझते ही हो (मूले०—भग० वर्मा, १५२); युवक और युवती में बातचीत शुरू हुई। पहले बहुत धीमे और दबे स्वर में (ज्ञान०—यशपाल, १३४)

### दबैल होना

बस में होना, दबना। प्रयोग—घब घर की दशा देखिए तो यदि कोऊ भीर बड़ा बड़ा हुआ, और इनका दबैल न हुआ तो तो जीम से चिट्ठी का निष्काका चाटने तक की स्वतन्त्रता नहीं (प्र० पी०—प्र० ना० मि०, १६०)

### दम अटकना

सांस रुकना, विशेषतः मरने के समय सांस रुकना। प्रयोग—छोट तन पीजड़ा समय आये उह एकाएक हंस जावेगा। आंस टंग जावेगी बिना टंगे दम अटक कर घटक न पावेगा (बोल०—हरिऔध, ११७)

(समा० मुहा०—दम खिचना)

### दम उखड़ना

परास्त होना। प्रयोग—मेरा दम उखड़ गया। यह इतनी

है, बंगाल से पाए संस्कार के प्रकाश में मैं न देख पाया था (कुली०—निराला, ७१७२)

(२) परिधम पड़ने के कारण सांस न ले पाना। प्रयोग—सूरे का दम उखड़ जाता है, उसका दम नहीं उखड़ता (रंग० (१)—प्रेमचंद, २९); खांसती है, खांसते-खांसते दम उखड़ जाता है (धूम०—उ० महु, ११)

(३) सांस रुकना, विशेष कर मरने के समय।

### दम का जलूसा होना

सामर्थ्य का भरोसा होना। प्रयोग—बाहू मुरदास, बाहू ! अब तुम्हारे ही दमका जलूसा है (रंग० (१)—प्रेमचंद, २५)

### दम के दम

घोड़ी देर में ही। प्रयोग—कठिन से कठिन काम को भी दम के दम में हम कर देंगे (बोल०—हरिऔध, ११४)

### दम खींचना

(१) किसी के कहे हुए काम को मुनकर महट्टिया जाना। प्रयोग—मूह न ताकें, क्यों दबें, सच्ची कहे क्यों किसी के दम दिये दम खींच लें (बोल०—हरिऔध, ११५)

(२) दबाव रोकना।

### दम घोटना

गला दबाकर मार डालना। प्रयोग—ओट में बैठकर न ओट करें दम किसी का न घोट दें हम (बोल०—हरिऔध, ११५) (÷)

(२) संवेदा नष्ट कर देना। प्रयोग—नास्तिकता का काला आवरण जहाँ अल्पना का दम घोट चुका है, वहाँ मनुष्य के लिए ईश्वर को जान सकना असंभव हो जाता है (चित्र०—भग० वर्मा, ४५); देखिए प्रयोग (१) में (÷) भी (३) बहुत कष्ट देना।

(समा० मुहा०—दम घोटकर मारना)

### दम चुराना

जी चुराना। प्रयोग—क्यों मिला धूल में दिया दम-खम दम चुराकर बचे बचे तो क्या (बोल०—हरिऔध, ११५)

### दम भांसा देना

घोसा देना, बहकाना। प्रयोग—दे सकें तो हमें मदद दें दे चुके बारबार दम भांसा (बोल०—हरिऔध, ११४)



### दम भांसे में आना

किसी के मुलावे में आना । प्रयोग—किसी छात्र प्रशंसक के दम-भांसे में न आ जाया करो (पट्टम० के पत्र—पट्टम० शर्मा, ४८)

### दम टूटना

(१) शक्ति जाती रहनी । प्रयोग—काम छेडा छूटता छोड़े नहीं, टूटता है दम रहे तो टूटता (चुमते०—हरिऔध, ११)(÷)

(२) मर जाना । प्रयोग—देखिए प्रयोग (१) में (÷)

### दम तोड़ना

(१) मरना—अंतिम सांस लेना । प्रयोग—तोड़ नाता तमाम दुनिया से, दम किसी रोज तोड़ना होगा (बोल०—हरिऔध, ११७); कितने ही सैनिक दम तोड़ते होंगे और इस रक्तधारा में तिरछी हुई मैं राक्षसी-सी सांस ले रही हूँ (ध्रुव०—प्रसाद, ५१-५२)

(२) हिम्मत हारना । प्रयोग—आज पांच सेर की बिंदी में भी कहीं जू नहीं रेंगती, जैसे—सब धीरे धीरे दम तोड़ रहे हैं (तिल्ली—प्रसाद, ७)

(३) समाप्त हो जाना ।

### दम दिलासा देना

(१) पट्टी पढ़ाना । प्रयोग—तब भला क्यों न दम दिलासा दें, जब कि दिल में नहीं दिलेरी है (बोल०—हरिऔध, १९३)

(२) आशा बंधाना ।

### दम दिलासे में आना

किसी के फुसलावे में आ जाना । प्रयोग—जब मिला तब मिल मिलाने से सका कब भला दिन दम दिलासा से मिला (बोल०—हरिऔध, ११५)

### दम देना

(१) धोला देना—भूटी धावा देनी । प्रयोग—काम साथे कभीनापन न करे दाम लेवें मगर न दम देवें (बोले०—हरिऔध, २७)

(२) भरना, उकसाना । प्रयोग—आजकल दोनों महिलाएं

उन्हें दम दे रही हैं कि लखनपुर का आधा हिस्सा अपने नाम करा लो (प्रेम०—प्रेमचंद, १५२)

(३) चाभी भरना ।

### दम न होना

(१) बिलकुल शक्ति न होनी । प्रयोग—दम मुनाने में नहीं जिनके रहा है नहीं उसकी मुनी जाती कहीं (चुमते०—हरिऔध, ११०)

(२) जान न होनी ।

### दम निकलना

(१) प्राणान्त होना । प्रयोग—एक रोज पिता को कुछ बुझा जाया, दो-तीन दिन बाद उनका दम निकल गया (किली—निराला, ८८-८९)

(२) भरी हुई हवा का निकल जाना ।

(३) घोर कष्ट होना ।

(४) शक्ति का ह्रास होना ।

### दम-पुचारा देना

बहका देना । प्रयोग—मैंने उते ऐसे दम-पुचारे दिए कि उसने सब बातें बता दी (मा—कौशिक, २८९)

### दम फूलना

अधिक परिश्रम के कारण सांस जल्दी जल्दी लेना, हाफना; दमा के रोग का दौरा होना । प्रयोग—घरी मैं तो पीछे भागा था । मुझसे पुछ—मेरा तो दम फूल गया (मारतो०—रा० रा०, ५१); फूलने दम लगे न दम फूले दम निकल जाय पर न दम लेवें (बोल०—हरिऔध, ११६)

### दम भर जाना

सांस न ले पाना, बक जाना । प्रयोग—तब भला तुम दम बढ़ाने क्या चले वे तरह जब दम तुम्हारा भर गया (बोल०—हरिऔध, ११५)

### दम भर में

तुरंत, जरा देर में । प्रयोग—जो कि दमदार वे बड़े उनको धूल में धा मिला दिया दम में (चुमते०—हरिऔध, १६)

### दम भरना

(१) गर्व करना, दावा करना । प्रयोग—कोई मजाजी



इसक में अपने मतलब का दम भरते हैं (भा० प्रश्ना० (२)—भारतेन्दु, ५७२); वे जो हमारे महान्-महान् नेता लोग हैं—जो दुनिया को आजाद करने का दम भरते हैं इन्हें जरा मालूम तो हो कि उनकी जनता की असली तस्वीर क्या है (बूट—अन्ना०, १३५); कांग्रेस के नेता देश-भक्त होने के साथ-साथ परोपकारी होने का भी दम भरते हैं (इंस्टा०—मग० वर्मा, ३८); धूर्त, कायर, रंगा हुआ सियार, राष्ट्रीयता का दम भरता है, जाति की सेवा करेगा (रंग० (२)—प्रेमचंद, २४६)

(२) हां में हां मिलानी । प्रयोग—जो राजा मानिकचंद अंगरेजों के खून के प्यासे थे वे केवल अमीचंद के उद्योग से अंगरेजों का दम भरने लगे (राधा० प्रश्ना०—राधा० दास, ३१०); अब केवल महाराज रह गये । उन्हें मणिभूषण ने भंग पिला-पिला कर ऐसा मिलाया कि वह उन्हीं का दम भरने लगे (गवर्न—प्रेमचंद, २००)

(३) परिश्रम के कारण थक जाना ।

### दम मारना

घोड़ा बिधाम करना—घोड़ा ठहरना । प्रयोग—उनकी शक्ती हुकूमत में किसी को चुं करने, या दम मारने की मजाल न थी (पद्म पराग—पद्म० शर्मा, ४२६); है हमारी जाति का दम घुट रहा हम भला दम किस तरह से मार लें (चुमते०—हरिऔध, २६)

(२) गांजा पीना ।

### दम में दम रहना या होना

शरीर में प्राण होना । प्रयोग—काम रहते मत बुरे काम से लोगों जब तक दम में दम है (बोल०—हरिऔध, ११६)

### दम लगाना

चिलम पीना । प्रयोग—नाक में दम क्यों रहे हमको न तब जब कि दम पर दम लगाते दम रहे (चुमते०—हरिऔध १२५)

### दम लेना

शांति मिलनी—संतोष होना । प्रयोग—घाखिर खलीफा ने 'फ़जल' का कांटा छाकर ही छोड़ा—कण्टकोद्धार करके न्यायमार्ग को निष्कांटक बनाकर ही दम लिया (पद्म पराग—पद्म० शर्मा, १६०)

(२) बिधाम लेना—जरा ठहरना । प्रयोग—जाति का जब तक न बेदमपन टले चाहिये हम लोग तब तक दम न लें (बोल०—हरिऔध, ११४); ८ महीने बाद अभी परसों घाकर बैठा हूँ । अभी दम नहीं लिया इस पर भी पूछते हो पर पर कब तक रहोगे (पद्म० के पत्र—पद्म० शर्मा, १२२)

### दम साधना

(१) किसी काम को सुन कर चुप्पी साध जाना, मौन होना । प्रयोग—जाति का काम साधती बेला दम निकल जाय पर न दम साधें (चुमते०—हरिऔध, २६)

(२) दवाव रोकना ।

### दम सूखना

बहुत डर के कारण सांस तक न ले पाना । प्रयोग—तब न दमदार चाहिये बनना दम गया सूख देखते हुल जब (बोल०—हरिऔध, ११५)

### दम होना

शक्ति होनी, सामर्थ्य होना । प्रयोग—पहले इजाफ़ा लगान बोवा पीछे पांच रुपए मांगते थे । अपने पास इतना दम न था । खेत छोड़ दिए (लिली—निराला, ६४-६५); देस की घोर जाति की हमरदियां है अगर कुछ दम करें तो दम-बदम (बोल०—हरिऔध, ११४)

### दमड़ी की हंडिया खोकर कुत्ते को जात पहचानना

घोड़े में ही व्यक्ति की नीयत एवं स्तर जान लेना । प्रयोग—दमड़ी की हंडिया खोकर कुत्ते की जात तो पहचान ली जायगी (गवर्न—प्रेमचंद, २०६-२०७)

### दमन-चक्र चलना

अत्याचार करना या होना । प्रयोग—दमन चक्र यदि चलता तो बढ़ता लहू (बेदेही०—हरिऔध, ११६)

### दमामा देना

बुलावा देना; नगाड़े की बोट कर घाने की सूचना देनी । प्रयोग—मनु जजाल न छोड़ई जम दिया दमामा आइ (कवीर प्रश्ना०—कवीर, २४९)

### दमामा पीटना

प्रचार करना । प्रयोग—बह हमारे पड़ोसी की इज्जत



धूल में मिलाने की घमकी दे रहा था, अपने उपकारों के दमामे पीट रहा था (ये कोठे०—अ० ना०, २७)

### दमामा बजना

गुद की घोषणा होनी। प्रयोग—गगन दमामा बाजिया परबो निसाने घाउ (कबीर ग्रंथा०—कबीर, २६३)

### दर-दर की ठोकर खानी,—की धूल फांकना,—की होना,—फिरना

हर तरफ से धिक्कारे जाना, दुर्दशाग्रस्त होना। प्रयोग—ये रहीम दर-दर फिर, मागि मधुकारी खाहि (रहीम कवि०—रहीम, १९); जब नशा उतर जायेगा ठोकर दर दर खाओगी (नूर०—भक्त, ३३); मैंने ही तुम्हारा उद्धार किया × × आज दर दर की तुम होती (कल्याणी—जैनेन्द्र, ७०); अनेक नेताओं से मिली। दर-दर की धूल फांकी। सब की हा-हा खाई पर बेकार (गोली—चतुर०, ३१६); जिस मोती बाई के लिए राजा पलक-पावड़े बिछाते थे, वह बिचारी दर-दर फिर रही है (शासी—वृ० वर्मा, ११२)

(समा० मुहा०—दर-दर मारा-मारा फिरना)

### दर-दर को धूल फांकना

### दे० दर-दर की ठोकर खाना

### दर-दर की होना

### दे० दर-दर की ठोकर खाना

### दर-दर तिनके चुनना

दर-दर की ठोकर खानी, दीन-हीन दशा को प्राप्त होना। प्रयोग—मधि लीने सब सहज प्राकृतिक गुण भारतवासिन के। रहि गए सीठी छाछ सदृश ये दर दर चुनते तिनके (राधा० ग्रंथा०—राधा० दास, ८)

### दर-दर फिरना

### दे० दर-दर की ठोकर खाना

### दर पर आना

याचना करनी या करने जाना। प्रयोग—आपके दर पर पहुंच करके प्रभो है बड़ा ही दीन भूला जा रहा (बोल०—हरिऔध, १३७)

### दरवार में खड़े होना

सेवा में हाज़िर रहना। प्रयोग—साधू के ठाढ़ी दरबारि।

सरनि तेरी मोकी निस्तारि (कबीर ग्रंथा०—कबीर, २८४)

### दरवाज़ा खटखटाना

(१) कुछ मांगने के लिए कहीं जाना। प्रयोग—हां, पहले मैं तुम्हारे त्याग की ही परीक्षा करूंगी, फिर दूसरों के किबाड़ खटखटाऊंगी (तिल्लो—प्रसाद, २११)

(२) विनती करने जाना। प्रयोग—राजा के लड़की-दामादन के लिए ए० जी० जी० का द्वार खटखटाया (गोली—चतुर०, २०९)

### दरवाज़ा भांकना

(१) कुछ मांगने जाना। प्रयोग—जब घरवालों ने × × उन्हें नौकरी चाकरी करने के लिए कोंबना शुरू किया, तब वह प्रार्थना-पत्र जेब में डालकर दफ्तरों के द्वार भांकने लगे (चित्र०—कोशिक, ५३) (÷)

(२) किसी के यहां जाना। प्रयोग—हुई अजोष्या सब फिरिउं सरग दुवारी भांकि (पद०—जायसी, ५०४) सूरदास प्रभु के बिछुरे तें, कोउ न भांकन अवत द्वार (सू० सा०—सूर, ३७५८); हम तो मर भी जाते हैं, तो कोई दुधार पर भांकने नहीं आता, कंघा देना तो बड़ी बात है (मान० (१)—प्रेमचंद, १३०); देखिए प्रयोग (१) में (÷) भी

### दरवाज़ा बंद होना

(१) आने जाने का सम्बन्ध न होना। प्रयोग—उसने कहा—तो फिर यह समझ लूं कि मेरे लिए आपका द्वार बंद है (चित्र०—भग० वर्मा, ११)

(२) कोई याशा न होनी।

### दरवाज़ा लगाना

दरवाज़ा बंद करना। प्रयोग—आनी, दरवाज़ा लगा दे (पैतरे—अश्क, ७८)

### दरवाज़े का मुंह न देखना

दरवाज़े तक न जाना। प्रयोग—एक बार मुझे ज्वर



धाने लगा था। इस लड़के ने तीन महीने तक द्वार का मुह नहीं देखा (रंग० (१)—प्रेमचंद, १४३)

### दरवाजे जाना

(१) किसी के यहाँ जाना। प्रयोग—गए वृषभानु की पोरी, लाल रंग होरी (सू० सा०—सूर, ३४८३)

(२) किसी के यहाँ कुछ मांगने जाना। प्रयोग—तुम तजि और कौन पं जाऊँ ? काकें द्वार जाइ सिर नाऊँ पर-हूय कहाँ बिकाऊँ (सू० सा०—सूर, १६४); कोउ रहीम जनि काहु के द्वार गए पछिताय (रहीम कवि०—रहीम, ५)

### दरवाजे-दरवाजे

घर-घर। प्रयोग—दोरिपे दरदरनि निदरि लाज देखिबे को, पोरि पोरि याहि रौरि माची बज-पुर में। कंसे करि जीजे, बसि कीजे कहा, महासोच, चारणो ओर चलत चबाव लघुनूर में (घन० कवित्त—घना०, १८६)

### दरवाजे पर आंख मड़ाए होना

किसी के आने की प्रतीक्षा करनी। प्रयोग—हर वक्त दरवाजे पर आंखें मड़ाए बैठी रहती है (धरती०—वि० प्र०, २१)

### दरवाजे पर आना

(१) पास आना, किसी के यहाँ आना। प्रयोग—उलटि बहा गंगा कर पानी। सेवक बार न आवे रानी (पद०—जायसी, ५११)

(२) अपने पास आना। प्रयोग—जिसका घर है, उसके सो दरवाजे पर आता है काम (दूधगाछ—दे० स०, २५७)

### दरवाजे पर खड़ा रहना

हर समय उपस्थित रहना। प्रयोग—मूरदास भगवंत भजन बिनु, जम के दूत सारे हैं द्वारे (सू० सा०—सूर, ३४६)

### दरवाजे पर नज़र देना

दरवाजे की ओर ताकना। प्रयोग—चितवत चौकि तरुनिआ, दे दिग-द्वार (रहीम कवि०—रहीम, ४५)

### दरवाजे पर नाक रगड़ना

खुब सुनामद करनी। प्रयोग—वह इस बात से खुश होता है कि आप दिन में तीन बार उसके द्वार पर नाक रगड़ें (प्रेमा०—प्रेमचंद, १८)

### दरवाजे पर पड़ा रहना

प्रापित होना। प्रयोग—हरि कीजनि चिनती यहै तुम सौ बार हजार। जिहि तिहि भाति डर्यो रह्यो पर्वो रह्यो दरबार (विहारी रत्ना०—विहारी, २४१); तुम तौ उदार दीन हीन अति पर्वो द्वार सुनिये पुकार याहि की लौ तरसायहौ (घन० कवित्त—घना०, ७); मेरा डोर कहाँ, ठिकाना कहाँ; सो, बरमों मैं कमलापति ही के द्वार पर पड़ा रहता (अपनी खबर—उग्र, ९९)

### दरवाजे पर हाथी भूमना

बहुत घनवान होना। प्रयोग—यूरोप में होते तो आज इनके द्वार पर हाथी भूमता होता (मान० (४)—प्रेमचंद, ७७); जिसके दर पर भूम रहे ये हाथी ओर न मिल सकता था जिसके घन का (बोल०—हरिऔध, २८)

### दरार पड़ना

मनोमालिन्य होना। प्रयोग—वे अपने भाव, समाज में तो प्रकट नहीं कर सके, पर मन में एक दरार पड़ गई (कंकाल—प्रसाद, ६२)

### दरार भर जाना

(१) चूटि या दुर्वलता दूर होनी। प्रयोग—उसकी कमजोरियों की दरारें भविष्य में भर जायगी, ऐसा विचार रखता था (चतुरी०—निराला, ११)

(२) मनोमालिन्य दूर होना।

### दरारवाला घर

ऐसा परिवार जिसमें मनोमालिन्य शुरू हो गया हो। प्रयोग—गुरुधुज भा का सबसे ज़िगरी दोस्त चिस्वा भी दरार पड़ी दीवारों वाले घर में ही है (परती०—रेणु, ३९०)

### दर्द खाना

दया करनी, दर्द सहन करना। प्रयोग—मछली के लिए हम कहाँ से दर्द लायेंगे (दूधगाछ—दे० स०, ४०८)

### दर्प-मर्दन करना

घमंड दूर करना। प्रयोग—न्याय रक्षा का ध्येय उसे लेशमात्र ध्यान न था केवल इन्दु का दर्प-मर्दन करना चाहती थी (रंग० (२)—प्रेमचंद, ३३९)



### दल जोड़ना

अपने पक्ष वालों को जुटाकर; मदल-बल। प्रयोग—आनंद के घन प्रान जीवन मुजान बिना, जानि के अकेली सब घेरी दल जोरि लै (घन० कवित्त—घना०, ५०); जन में करणा को जगा निज कृत्य से जो निज जोड़ रहा दल था (कुरु०—दिनकर, ७७)

### दलदल में गर्दन तक डूबा होना,—पैर रखना

(१) मूर्च्छित या दिक्कत में पड़ना। प्रयोग—कीना—तुम भी तो जानबूझ कर दलदल में पाँव रल रही हो (मान० (१)—प्रेमचंद, २७३)

(२) ऐसे फंसे होना कि सहज छुटकारा न मिले। प्रयोग—स्टंट फिल्मों की दलदल में मैं गर्दन तक डूब गया हूँ (पैतरे—अशक, ६९)

(३) जल्दी खतम या तय न होना, खटाई में पड़ना।

(समा० मुहा०—दलदल में फंसेना)

### दलदल में पैर रखना

### दे० दलदल में गर्दन तक डूबा होना

### दलदल से निकलना

विपत्ति से मुक्त होना। प्रयोग—जाति हित गाड़ी न दलदल से कड़ी चाहिये था जो न करना वह किया (चुभते०—हरिऔध, ६४)

(समा० मुहा०—दलदल से उबरना)

### दलदल होना

मुसीबत की स्थिति होनी। प्रयोग—तुम देख नहीं रही, मेरी सारी काबलीयत स्टंट फिल्मों की दलदल में खत्म हुई जा रही है (पैतरे—अशक, ५५)

### दल-बादल खड़ा होना

विशाल तंबू या रावटी पड़ना। प्रयोग—श्री मन्महाराज-धिराज काशिराज की कोठी में इस 'लेबी' के हेतु एक डेरा दल बादल खड़ा किया गया था (भा० ग्रंथा०(३)—भारतेन्दु, ९३५)

### दलाली खाना

दलाली के रूप लेना। प्रयोग—तो उस जमीन का मालिक

तो आपके सामने बैठ जा है वो कुछ कहना है, उमी से क्यों नहीं कहते? मुझे बीच में दलाली नहीं खानी है (रंग० (१)—प्रेमचंद, ३५)

### दबा होना

उपाय होना। प्रयोग—दबा है दोनों की जड़े मार दी जायें पर यह सहज साध्य नहीं (चतुरी०—निराला, ११)

### दस दिन

घोड़े दिन। प्रयोग—कबीर मौबत आपणी, दिन दस लेहु बजाइ (कबीर ग्रंथा०—कबीर, २०); वै दिना गए भूति तोकों, दिवस दस की बात (सू० सा०—सूर, ३७६७)

### दस-नवरी होना

धूर्त-बोर होना। प्रयोग—मैं इसे जानता हूँ। रात में कभी पार्क में कभी फुटपाथ पर लेटा रहता है। पक्का दस नवरी है (जहाज०—इ० जोशी, १६)

### दस-पांच लोग

घोड़े घोड़े लोग। प्रयोग—मिलि दस पांच राम पहि जाही (राम० (अ)—तुलसी, ३९९); दै दस पांच रूप्यन को जग कोउ नरेस उदार कहायो (भूषण ग्रंथा०—भूषण, १६२)

### दसों दिशाओं में

चारों ओर, हर ओर। प्रयोग—स्याम भजन बिनु सुख नहीं, जो दस दिशि धावै (सू० सा०—सूर, ३५२)

### दस्तन्दाजी करना

अबरदस्ती टांग घड़ाना। प्रयोग—लाला ब्रह्मकिशोर XX अपने अधिकार से बढ़कर किसी काम में दस्तन्दाजी नहीं करते (परोक्षा०—शी० दास, १७२); असल में वह अपने प्राइवेट अफेयर्स में राम की भी दस्तन्दाजी नहीं चाहते थे (अपनी खबर—उग्र, ११७)

### दहाड़ मार कर रोना

बिल्ला बिल्ला कर रोना। प्रयोग—अच्छी खासी घूप भी चढ़ गयी और बीरसिंह न आया तो कर्तारो और पीतो दहाड़ मार कर रोने लगीं (झुठा० (१)—यशपाल, ३४६)

### दही-दही हांक लगाना

अपना माल बेचने के लिए अत्यंत आतुर होना। प्रयोग—



लावा बरसों तक दही-दही हांक लगाते रहे, पर कोई सेंट भी न पूछता था (प्रेमा०—प्रेमचंद, ७०)

(समा० मुहा०—दही-दही करना)

**दांत-काटी रोटी होना, दांत काटी होना**

अत्यंत घनिष्ठ दोस्ती, गहरी मित्रता होना। प्रयोग—मि० क्लार्कसे तो उनकी दांत काटी रोटी थी (रंग० (२)—प्रेमचंद, ६७); मगर हुजूर, उनमें तो दांत-काटी है, लड़ाई कराना, मुश्किल है (मा—औशिक, ३७३)

(समा० मुहा०—दांत-काटी रोटी खाना)

**दांत-काटी होना**

दे० दांत काटी रोटी होना

**दांत काटना, —निकालना, —निकोसना, —निपोरना**

(१) चिनच करना, दांत निपोर कर दीनता प्रगट करना। प्रयोग—द्वार द्वार दीनता कही, काढ़ि रद, परि पाहू (विनय०—तुलसी, २७५); दांत निकाल पेट दिखलाकर परम प्रपंची बने, कब होगी हे ग्लानि उसे घात से आंसू छूने (मर्म०—हरिऔध, १२३); ठाकुर साहब दांत निकाल कर बोले—हमारे ऐसे भाग्य कहां जो घाप लोगों की सेवा करने को मिले (मिखा०—औशिक, १२०); फिर बगीलों के यहां जाकर दांत निपोरती, निदगिदाती (कला०—उग्र, ८४)

(२) दांत दिखलाना।

(३) ध्वंस हंसना।

**दांत किटकिटाना**

कोध करना। प्रयोग—सर्वोदय आश्रम के लज्जानी तारा बाबू ने दांत किटकिटा कर कहा था—क्या समझ लिया है (पस्ती०—रेणु, ३२३); यह कहूंगा एक क्या सौ बार में कटकटाते दांत हो तुम जिसलिये (बोल०—हरिऔध, ९१)

**दांत खट्टे करना**

खुब छकाना—ऐसा छकाना कि उसे मालूम हो जाय कि किसी ने काम पड़ा था, परास्त करना; पस्त करना। प्रयोग—मनोज ने इरा को हिरोइन बनाकर जयन्त के दांत खट्टे करनेकी पूरी कोशिश की थी (दूधगाछ—दे० स०

२९८); हां, वही बुढ़िया अच्छे अच्छों के दांत खट्टे कर रही है (कर्म०—प्रेमचंद, ३३१); हमारी खिड़की के सामने अंगरेजों का कोई मोर्चा नहीं पड़ता, नहीं तो दांत खट्टे कर देता (झांसी०—वृ० वर्मा, ३६९)

**दांत खट्टे कराना या होना**

परास्त होना। प्रयोग—मजा तो जब ही है कि शत्रु अपनी कटूक्ति का भी ऐसा उत्तर सुने कि दांत खट्टे कराके भागे (गु० नि०—वा० मु० गु०, ५११); अफगानों के दांत हो गये खट्टे लड़कर बीरो से (नूर०—मक्त, १६); देख कर मुझको खटाई में पड़ा आपके क्यों दांत खट्टे हो गये (चौखे०—हरिऔध, १८४)

**दांत खिसियायान पट्टी में निकलना**

खिसिया कर दांत निकाल देना। प्रयोग—कार्यकर्ता के दांत खिसियायान पट्टी में निकल आए (बोने०—रा० रा०, ७)

**दांत चवाना**

कांथ से दांत पोसना, कोध प्रगट करना। प्रयोग—दांत चबात चले जमपुर तै, धाम हमारे की (सू० सा०—सूर, १५१)

**दांत टूटना**

बुढ़ापा घाना। प्रयोग—दांत टूटे पर न रंगीनी गई। बाल को रंगते रंगते ही रहे (बोल०—हरिऔध, ५४)

**दांत तोड़ना**

परास्त करना, हैरान करना। प्रयोग—मैं तब दसन तोरिखे लायक आयमु मोहि न दीन्ह रघुनायक (राम० (लं)—तुलसी, ८९७); अलादीन के दांत तोड़ि निज धर्म बनायो (राधा० ग्रंथ०—राधा० दास, ६७४); हम किसी के दांत देते तोड़ क्या है दवाते दूब दांतों के तले (बोल०—हरिऔध, ९३)

**दांत देना, —लगाना**

(१) लेने की गहरी चाह रखनी। प्रयोग—सब प्रकार के वीर रस में भी सावधानी से शत्रु की सैन्य अथवा दुःखियों के दैन्य अथवा मस्कीति की चाट पर दांत लगा रहता है (प्र० पी०—प्र० ना० मि०, ७४); तुम जो एक मित्र की स्त्री पर दांत लगाये हुए हो x x तुम्हारे हाथों



अगर मुँह स्वयं भी मिकता हो तो उसे ठुकरा दूँ (माल०—२)—प्रेमचंद, ५१। दूसरों की अटूट सम्पत्त पर दांत क्यों बेतरह लगाते हो (चोखे०—हरिऔध, १५५); मजदूरों के कौर छिने हैं जिन पर उनका लगा दमन है (चक्र०—दिनकर, ६४); कोड़ियों पर किस लिए हम दांत दें (चुभते०—हरिऔध, ४१)

(२) बदला लेने का विचार रखना।

(समा० मुहा०—दांत गड़ाना,—रखना)

दांत निकालना

दे० दांत काढ़ना

दांत निकोसना

दे० दांत काढ़ना

दांत निपोरना

दे० दांत काढ़ना

दांत पीस कर रह जाना

लाचारी से क्रोध को सह जाना। प्रयोग—उस रात शेखर ने वह किया जो जेल के अन्य कैदियों को करते सुनकर वह भुभुलाहट से दांत पीस कर रह जाता था (शेखर (२)—अज्ञेय, ६१); सज्जन दांत पीस कर रह गया (बूँद०—अ० ना०, २४२)

दांत पीसना

(१) दांत पर दांत रखकर हिलाना—दांत किटकिटाना। प्रयोग—रिस में भी दांत पीसे जाते हैं (प्र० पो०—प्र० ना० मि०, ७४)

(२) क्रोध करना। प्रयोग—मेरा चाहे जितना नुकसान हो जाय परन्तु हरकिशोर के पल्ले फूटी कोड़ी न पड़ने पावे—लाला मदन मोहन दांत पीस कर कहने लगे (परीक्षा०—श्री० दास, १२७); उन्होंने दांत पीसते हुए कहा—देखूंगा मुम्हें (शेखर०(१)—अज्ञेय, ९३); पुलिसवाले खूब दांत पीसते खूब नाचे-कूदेगे, शायद मुझे कच्चा ही खा जाय (गवन—प्रेमचंद, २७९)

दांत फाड़ देना

आश्चर्यसे मुँह खोलकर देखते रह जाना। प्रयोग—‘कृष्ण!’ श्रुतायुध ने आश्चर्य से दांत फाड़ दिये और फिर कहा—‘कृष्ण! तू!!’ (देवकी०—रा० रा०, १०१)

दांत बजना

(१) बहुत डर लगना। प्रयोग—बेतरह भी मैं समा डर क्यों गया इस तरह क्यों दांत बजने लग गये (बोल०—हरिऔध, ९१)

(२) सर्दी के कारण दांत किटकिटाना।

दांत बँट जाना,—लग जाना

मरणासन्न होना। प्रयोग—मुँह खुला जिसका न औरों के लिए दांत उसका बँट क्यों जाता नहीं (चोखे०—हरिऔध, १५४); वे घड़ी दो एक के मेहमान हैं सुन रहा हूँ दांत उनके लग गये (बोल०—हरिऔध, ९३)

(३) दांत ऐसा जम जाना कि मुँह जन्दी न खुले।

दांत लग जाना

दे० दांत बँट जाना

दांत लगाना

दे० दांत देना

दांत साफ करना

जा जाना। प्रयोग—इस जंगल के बाघ चित्तालिया पर दांत साफ करते ही थे, प्रायः ऐसा होता था कि X X ... (ब्रह्म०—दे० स०, ४४)

दांत से दांत बजना

कठिन शीत पड़ना। प्रयोग—विकट ठंड भी X X दीन दरिद्रोंके दांतसे दांत बजानेवाली (शांसी०—बु० वर्मा, १३७)

दांत होना

(१) लेने या हड़ाने की इच्छा होनी। प्रयोग—अनुज, उस राजारव का हो घंत हन्त! जिस पर केकयी के दांत (साकेत—गृध्र, १५५); मेरे पास एक छोटे से कमरे को भी नहीं देल सकते। क्या इस पर भी दांत है (प्रेमा०—प्रेमचंद, ३५)

(२) आक्षेप होना।



### दांता-किलकिल होना

(१) कहा-मुनी होगी । प्रयोग—इनसे मुख ही क्या है, और रात-दिन की दांता-किलकिल लगी रहती है (मा—कौशिक, ४०); एक दिन की हो तो भुगती जाए, यह तो रोज-रोज की दांता-किलकिल है (धाती०—वि० प्र०, ३९)

(२) व्यर्थ की बकवाद । प्रयोग—कोई हमारे लेख देख दांतों तले उंगली दबाके सूझ-बूझ की तारीफ करे X X या अरतिमतावश यह कह दे कि कहां की दांता-किलकिल लगाई है तो इन बातों की हमें परवा नहीं है (प्र० पी०—प्र० ना० मि०, ७६-७७)

(समा० मुहा०—दांता-किटकिट होना)

### दांता या दांती लगना

दांत बैठ जाना । प्रयोग—दरोगा साहब को दांती लग गई (मैला०—रैणु, ३५७)

(समा० मुहा०—दांत बैठ जाना)

### दांतों के बीच जीभ को तरह रहना

चारों ओर की विपत्तियों के बीच सम्भल कर रहना । प्रयोग—अतः इस दंत क्या को केवल इतने उपदेश पर समाप्त करते हैं कि आज हमारे देश के दिन गिरे हुए हैं अतः हमें योग्य है कि जैसे बल्लि दांतों के बीच जीभ रहती है वैसे रहें (प्र० पी०—प्र० ना० मि०, ७८)

### दांतों तले उंगली दवाना,—जीभ दवाना

(१) आश्चर्य करना, दंग रह जाना । प्रयोग—उसे मुन कर दांतों तले उंगली दवानी पड़ती है (चित्र०—मग० वर्मा, १०४) ; कोई हमारे लेख देख दांतों तले उंगली दबा के सूझ-बूझ की तारीफ करे X X या अरतिमतावश यह कह दे कि कहां की दांता-किलकिल लगाई है तो इन बातों की हमें परवा नहीं है (प्र० पी०—प्र० ना० मि०, ७६-७७); मुनता हूँ ऐसी घुड़सवार है कि पुरुष दांतों तले उंगली दबाते हैं (शासी०—वृ० वर्मा, १७२) ; ऐसी बेइमानी की कि लोग मुनकर दांतों तले जीभ दबाते हैं (परती०—रैणु, १६६) ; चाप एक मुक्ती को किसी युवक के साथ एकान्त में या बिचरते देखकर दांतों तले उंगली दबाते हैं (गवर्न—प्रेमचंद, १०३) (÷)

(२) संदेह करना । प्रयोग—दे० प्रयोग (१) में (÷)

(३) खेद प्रगट करना ।

### दांतों तले जीभ दवाना

दे० दांतों तले उंगली दवाना

दांतों तले तिनका दवाना,—तिनका पकड़ना,—

तिनका रखना,—तिनका लेना,—दूध दवाना

(१) अधीनता स्वीकार करनी । प्रयोग—मुनु सिख कंत,, दंत तून धरि कै, स्यौ परिवार निधारी (सू० सा०—सूर, ५५९) ; दसन गहहु तून कंठ कुठारी (राम० (लं)—तुलसी, ८८१) ; बर तो बड़ायो कछौ काहु को न मान्यो अब, दांतिनि तिनका कै कृपान गहौ कर मैं (मति० मक०—मतिराम, १८९) ; हाथ जोर मिर नाइ कै, दांत तरे तून राखि परम नम्र हूँ कहत हैं, दीन बचन अति भाखि (मा० प्र० (२)—भारतेन्दु, ६३३) ; अतः इस दंत-कथा को केवल इतने उपदेश पर समाप्त करते हैं कि आज हमारे देश के दिन गिरे हुए हैं अतः X X अपने देशकी भलाई के लिए किसी के आगे दांतों में तिनका दवाने में लज्जित न हो (प्र० पी०—प्र० ना० मि०, ७८) ; रख सकेंगे दाब वे कैसे भला दाब ले जो दूध दांतों के तले (चुमते०—हरिऔध, ६१)

(२) दया के लिए बहुत विनती करनी । प्रयोग—हाहा-करि दसननि तून धरि धरि लोचन नीर बहाऊँ री (सू० सा०—सूर, २७२१)

### दांतों तले तिनका पकड़ना

दे० दांतों तले तिनका दवाना

दांतों तले तिनका रखना

दे० दांतों तले तिनका दवाना

दांतों तले तिनका लेना

दे० दांतों तले तिनका दवाना

दांतों तले दूध दवाना

दे० दांतों तले तिनका दवाना

### दांतों पसीना आना

धोर परिश्रम करना । प्रयोग—परमात्मा करे कि हर हिन्दू-मुसलमान का देशहित के लिए चाब के साथ दांतों



पसीना धाता रहे (प्र० पी०—प्र० ना० मि०, ७६) ; पर झूरी के सले गया को पर तक गोईं ले जाने में दांतों पसीना आ गया (मान० (२)—प्रेमचंद, १५०) ; एक मुत्थी भी नहीं सुलभी अभी किसलिये दांतों पसीना आ गया (बोल०—हरिऔध, ९३)

### दांतों में उंगली देना

(१) आश्चर्य करना । प्रयोग—देख उन पर दांत हम को पीसते कौन दांतों में न उंगली दे चला (चुभते०—हरिऔध, १०४) (÷)

(२) खेद प्रगट करना । प्रयोग—देखिए प्रयोग (१) में (÷)

### दांतों में पानी लगाना

दांत खराब होने पर पानी पीने से दांत में पीड़ा होनी । प्रयोग—लग सका और दांत में न कभी हिल गये दांत में लगा पानी (बोल०—हरिऔध, ९२)

### दांतों से कौड़ियां पकड़ना,—पैसा पकड़ना

बहुत कंजूस होना । प्रयोग—मुझे एक-एक पैसा दांतों से पकड़ना चाहिए था (गवन—प्रेमचंद, १०७) ; कौड़ियों को हो पकड़ते दांत से चाहिये ऐसा न जाना बन तुम्हें (चोखे०—हरिऔध, १८५)

### दांतों से जीभ दवाना

भयभीत होना । प्रयोग—तन पसेउ कदली जिमि कांपी कुबरी दसन जीभ तब चांपी (राम० (अ)—तुलसी, ३९०)

(समा० मुहा०—दांतों से जीभ काटना)

### दांतों से पैसा पकड़ना

### दे० दांतों से कौड़ियां पकड़ना

### दांव के पासे पड़ना

गुक्ति का अनुकूल होना । प्रयोग—लाल गोटो हो जाती है, दांव के पड़ पाये पासे (मर्म०—हरिऔध, ८८)

### दांव खेलना

चाल चलनी, होशियारी करनी । प्रयोग—एक दांव ईश्वर ने और खेला (शेखर (१)—अज्ञेय, ९०) ; यही जब कानूनी दांव-बैच खेल कर जमीन पर कब्जा कर लगे × × तो सीधे हो जाग्रो (रंग० (१)—प्रेमचंद, ९९)

### दांव घात देखना, दांव ताकना

चाल चलने का मौका देखना । प्रयोग—दांव लकें, रस का छर्कें, बिचकें मति पै मति चोपनि धावें (घन० कविस—घना०, १९०) ; इधर मेरे बड़े साढ़ू ने अपनी दांव घात देखकर कुछ ऐसा रंग जमाया कि मेरा सब परिश्रम विफल हो गया (सौ०—प्र०स०, १२२)

(समा० मुहा०—दांव देखना)

### दांव चलना

गुक्ति काम दे जानी । प्रयोग—दीनों पर उपदेश का भी दांव चल जाता है, मोटों को कोई उपदेश नहीं करता (रंग० (१)—प्रेमचंद, ९६)

### दांव ताकना

### दे० दांव-घात देखना

### दांव पड़ना

मौका मिलना । प्रयोग—आलापहु, गावहु, कै नाचहु दांव पर लै मारि (सु० सा० (परि०१)—सूर, १६६)

### दांव पर चढ़ना

चाल या धोखे में आजाना । प्रयोग—वे बोले कि अभी तक दांव पर नहीं चढ़ी (ये कोठे०—प्र० ना०, १५६)

### दांव पाना

घात में पाना । प्रयोग—पुलित हमारे ऊपर बहुत दिनों से दांव लगाये थी, कोई दांव न पाती थी (रंग० (२)—प्रेमचंद, १८४)

### दांव लगाना

अनुकूल संयोग मिलना, मौका मिलना । प्रयोग—अपनी अपनी ठौर पर, सब को लागे दांव । जल में गाड़ी नाव पर, बल गाड़ी पर नाव (वृ० स०—वृन्द, ७३)

### दांव लेना

(१) बदला लेना । प्रयोग—दाउं हम नहि लैन पायो, बमन लेती लाल (सु० सा०—सूर, ३४९४)

(२) स्थान ले लेना, जीत होनी । प्रयोग—और सकल नागरि नारिनि को, दासी दाउं लियो (सु० सा०—सूर, ४२५६)

(३) बारी पानी ।



### दाँव सारना

बाजी जीत जानी, युक्ति कारगर हो, जानी। प्रयोग—  
तुम अलि जानी हर्गहि धति भोरी, सारी चाहत दाउं  
(सू० सा०—सूर, ४६१९)

(समा० मुहा०—दाँव सारना)

### दाँव-पेंच का आदमी

चालबाज। प्रयोग—मिस्टर तंखा दाँव-पेंच के आदमी पे  
(गोदान—प्रेमचंद, ९४)

### दाँव बन आना

साम की स्थिति होनी। प्रयोग—रोझि-परबस पर बस  
न चलत कछु, ऐसे ही मैं होरी को रंगीलो बन्धी दावँरी  
(घन० कवित्त—घना०, १८७)

### दाई से पेट छिपाना

जिससे छिपाये न छिपे उससे छिपाने का प्रयत्न करना।  
प्रयोग—दाई आगे पेट दुरावति, बाकी वृद्धि आजू मैं  
जानी (सू० सा०—सूर, २३४१); “मेरी छुटको, दाई से  
पेट छिपाती हो” मर्नी × × हम दी (झुठा० (२)—  
यशपाल, ३८३); सज्जन, दाई से पेट छिपाने की कोशिश  
करना बेकार है (बुंद०—अना०, ५९१); क्यों न अपना  
मुंह छिपाते हम फिरें कब छिपाये पेट दाई से छिपा  
(बोल०—हरिऔध, २१६)

### दाग देना

(१) अत्येष्टि-क्रिया करनी। प्रयोग—मंवरदार को दाग  
दिया—उनके हैं कोई, नहीं जानती (कुली०—निराला, १३९)

(२) गरम छद्म से दागना।

(३) निशान लगाना।

(४) कलंकित करना।

(५) गोली चलानी।

### दाग धोना

कलंक मिटाना। प्रयोग—अपने अतीत को मिटाने के लिए,  
अपने पिछले दागों को धो डालने के लिए, उसके पास इसके  
सिखा और क्या साधन था (गहन—प्रेमचंद, ३२९)

### दाग-बेल पड़ना

शरंभ करना या होना। प्रयोग—गृध्वी चीण्टजं को  
दाग बेल तभी पड़ गयी थी जब मैं बंबई में था (पैतरे—  
अशक, ३१); “कहिण मुनीजी, इमारत बनने लगी?”  
साहिर—“जी हाँ, कल दाग बेल पड़ेगी” (रंग० (१)—  
प्रेमचंद, ३४१)

(समा० मुहा०—दाग बेल गेरना,—लगना,—लगाना)

### दाग लगना

कलंक लगना। प्रयोग—चरित्र में कहीं पर किसी तरह  
का दाग न लगने पावे इस बात की चौकसी का नाम चरित्र  
पालन है (सा० सू०—वा० महु, ६६); नाम पर जो दाग  
लगता है कभी धुलता नहीं (बुद्ध०—वचन, ९२); बदनामी  
किस बात की? उनके कुल में कोई दाग तो है नहीं, खरे  
ठाकुर हैं (मिसा०—कौशिक, ४३)

### दाग लगाना

(१) कलंक लगाना। प्रयोग—उन्होंने आजकल के जमाना-  
साज लीडरों की तरह ‘सर्वप्रियता’ या ‘हरदिल अजीजी’ में  
फंस कर अपने करारपत्रको दाग नहीं लगाया (पट्टमपराग—  
पट्टम० शर्मा, ८); खानदान में दाग लगा दिया। बुजुर्गों  
की आवक साक में मिला दी (रंग० (२)—प्रेमचंद, २३२)

(२) निशान लगाना।

### दाढ़ी पकना

बुजुर्ग होना—बूढ़ होना। प्रयोग—जो न पाये विचार  
ही पक तो क्या करेगी पकी हुई दाढ़ी (चोखे०—हरिऔध,  
१२२)

### दाद देना

(१) ईसाक करना। प्रयोग—दीजे दादि देखि, ना तो,  
बलि मही मोद-मंगल रिताई है (विनय०—तुलसी, १३९)

(२) प्रशंसा करनी। प्रयोग—दलावलपुर के उस महान  
अभिनेता के इस अद्वितीय अभिनय की दाद दर्शकों ने उस  
शोक के क्षण में भी, दो बार हंस कर दी (पैतरे—अशक,  
१७); आपने बहुत बड़ा दाद दे डाली (पट्टम० के पत्र—  
पट्टम० शर्मा, ११)

(३) सहमति प्रगट करनी।



## दाना

अच्छा, श्रेष्ठ । प्रयोग—बीस बाइस की लड़की सी लगती है पर कितनी बड़ी अफसर है, कैसी संभार, ठहरी हुई है, इंग कैसे दाना लोगों जैसे, बड़ी बड़ियों जैसे है (झुठा० (२) —यशपाल, ४५३)

## दाना-पानी उठ जाना

आश्चर्य छट जाना । प्रयोग—यब इस मुहल्ले में मुझ जैसे अंधे अपाहिज आदमी का निबाह नहीं हो सकता × × अब यहाँसे दाना पानी उठता है (रंग० (१)—प्रेमचंद, ३९८)

## दाना बिखेरना

फुलाने के लिए एक एक युक्ति करनी । प्रयोग—और में समझ रही थी, अभी वह दाने बिखेर रहा है (मान० (२)—प्रेमचंद, ३१४)

(समा० मुहा०—दाना फेंकना)

## दाने-दाने को तरसना,—मुहताज होना

भोजन का अभाव होना, अत्यंत दरिद्र होना । प्रयोग—जवाब देने, मैं तो दाने दाने को मुहताज हो रहा हूँ (वीने०—रा० रा०, २०४) ; यही पन्ना है जो तुम्हें दाने-दाने को तरसाती थी (मान० (१)—प्रेमचंद, ६) ; घोर घर में अबलाएँ और बच्चे दाने-दाने को मोहताज हो गए (अपनी खबर—उग्र, २६)

## दाने-दाने को मुहताज होना

दे० दाने-दाने को तरसना

## दाब में आना

वश में होना । प्रयोग—किस लिये नाक तब दबाते हैं । दाब में देह जब नहीं आती (बोल०—हरिऔध, ७३)

(समा० मुहा०—दाब में रहना,—होना)

## दाब में रखना

वश में रखना । प्रयोग—रख सकेंगे दाब वे कैसे भला । दाब लें जो दूब दांतों के तले (चुमते०—हरिऔध, ६१)

(समा० मुहा०—दाब में लाना)

## दाम उठना

दाम मिलना । प्रयोग—यहाँ वैशाली में ऐसी सुन्दर लड़कियों के खूब दाम उठते हैं (वैशाली० (१)—चतुर०, ९)

## दाम चढ़ना या चढ़ाना

मूल्य में बृद्धि होनी । प्रयोग—हिन्दू माल खरीदते हैं तो मुसलमान दाम चढ़ा देते हैं (झुठा० (१)—यशपाल, ६४) ; लोहे लकड़ का दाम भी तो चढ़ गया है (प्रेमा०—प्रेमचंद, ५१)

(समा० मुहा०—दाम ऊँचा होना)

## दाम लगाना

मूल्य निर्धारित करना । प्रयोग—आप ××बोले मैं कुछ जवहिरी नहीं हूँ ××मुपरेंटेंट साहब साँझ को आकर दाम लगावेंगे (मा० ग्रंथा० (३)—भारतेन्दु, ९४६)

## दामन न छोड़ना

साध न छोड़ना । प्रयोग—जब तक वह दुल्हार न देगा उसका दामन न छोड़ेंगे (कर्म०—प्रेमचंद, ३५)

## दामन पकड़ना

शरणा में जाना, साध न छोड़ना । प्रयोग—हरीचंद अब तो तेरो दामन पकड़ो गाढ़े हाथ (भा० ग्रं० (२)—भारतेन्दु, ४०२) ; बाबू प्रियनाथ ने बनारस म्यूनिसिपैलिटी का दामन पकड़ा (प्रेमा०—प्रेमचंद, ४३४)

## दामन में दाग लगाना

कलंकित होना । प्रयोग—तुम्हारे गोरे अफसर एक गोरे हाकिम की सुशामद को तुमसे अजीब समझकर एक कान्स्टबल पर तुम्हें निसार करते हैं और तुम्हारे सेक्रेटरी ट्रस्टी अपनी बकादारी के दामन पर दाग नहीं लगने देना चाहते (गु० नि०—वा० मु० गु०, २५४)

## दामन से लगना

शरणा में जाना । प्रयोग—हुजूर, मैं भी तो आप ही के दामन से लगा हुआ हूँ (रंग० (१)—प्रेमचंद, ११९)



### दायाँ हाथ

(१) प्रमुख कर्ता-भर्ता । प्रयोग—पुलिस इस काम में अंग्रेज का दायाँ हाथ है (ब्रह्म०—दे० स०, २४७)

(२) सच्चा सहायक ।

### दाल गलना

युक्ति चलनी, प्रयोजन सिद्ध होना । प्रयोग—यदि इस पर भी वह न माने तो स्पष्ट है कि शत्रुता के आगे धर्म की दाल नहीं गलती (मा० ग्रं० (१)—भारतेन्दु, ६३१); इन महात्माओं ने अपने मुख गह्वर में छिपाकर इसको परंपरा तक ऐसा रखा कि किसी की दाल गलने न पाई (राधा० ग्रंथा०—राधा० दास, ४५९); फैलाये कितने ही जाल । गली नहीं पर मेरी दाल (गु० नि०—वा० मु० गु०, ७२१); तो मानती से ब्याह कर लो न । अभी क्या विवहा है, अगर वहाँ दाल गले (गोदान—प्रेमचंद, १९५); समझ लिया खूब जब, दाल है गली नहीं, अफ़जल खां के द्वारा (परि०—निराला, २२१)

### दाल भात की तरह कबूलना

बहुत आसानी से कबूलना । प्रयोग—दाल भात की तरह कबूल कर लिया जितन ने (परती०—रेणु, २१५)

### दाल भात में कुछ काला होना

कुछ सटके या सदेह की बात होनी । प्रयोग—कुछ दाल में काला है (ईशा०—ईशा०, ९६); रामनाथ के जाने की बात सुनकर कौसी चौकी, अवश्य दालमें काला है (मिखा०—कीशिक, १५०); × × उसके घरवालों ने उसे रोका क्योंकि वे समझ गये थे कि दाल में कुछ काला है (ब्रह्म०—दे० स०, ४०४); नबाब ने कहा—कुछ दाल में काला है (झासी०—पुं० वर्मा, २००); उसे दाल में काला ही काला दिखाई पड़ने लगा (अपनी खबर—उग्र, ८१)

### दाल में मक्खी पड़ना

मन में आशंका होनी, असंगुन होना, बिघ्न पड़ना । प्रयोग—मगर मेरी दाल में मक्खी पड़ गयी (मान०—प्रेमचंद, २६३)

### दाल भात में मूसर चंद

दो घादमियों के बीच में जबरदस्ती जाना । प्रयोग—तुम

दाल भात में मूसरचंद बनकर कौन आ गए (विप०—प्रेमी, २२); उसके घर पर बीणा ले जाकर दाल भात में मूसर चंद बनना उसको अच्छा नहीं लगा (मृग०—पुं० वर्मा, ४२६)

(समा० मुहा०—दाल भात में ऊँट को टांग)

### दास के दास होना

अनुयायी हो जाना, प्रशंसक हो जाना । प्रयोग—कबीर बेरा संत का दासनि का परदास (कबीर ग्रंथा०—कबीर, ६५)

(समा० मुहा०—दास हो जाना)

### दासता की बेड़ी पहनना

दासता स्वीकार करनी । प्रयोग—को पहिरें दासत्व शृंखला निज पग मांही (राधा० ग्रंथा०—राधा० दास, ७७३)

### दाह होना

ईर्ष्या, विरह या क्रोध होना । प्रयोग—कंकयमुता हृदय अति दाहू (राम० (अ)—तुलसी, ३९४)

### दाहिना-बायाँ जानना

अच्छा-बुरा समझना । प्रयोग—काह करौं सखि मूध सुभाऊ दाहिने बायें न जानउंकाऊ (राम० (अ)—तुलसी, ३९०)

### दाहिना हाथ होना

बड़ा भारी सहायक होना । प्रयोग—अपना अपमान भूल कर वे महाराणा के दाहिने हाथ बने (विप०—प्रेमी, १०); शांतिकुमार और अमरकान्त उसकी दाहिनी ओर बायीं भुजाएं थे (कर्म०—प्रेमचंद, ५६); अब तो वह रियासत के दाहिने हाथ बने हुए थे (रंग० (२)—प्रेमचंद, ६६)

### दाहिनी आँख फरकना

दाहिनी आँख में विशेष स्पंदन होना जो पुरुषों के लिये शुभ और स्त्रियों के लिए अशुभ सूचक होता है । प्रयोग—दाहिनी आँख नित फरकइ मोरी (राम० (अ)—तुलसी, ३९०)

### दाहिने बायें छींक होना

अपशकुन होना । प्रयोग—हो सगुन या काम असगुन से पड़े दाहिने हो या कि बायें छींक हो (चुमते०—हरिऔध, ३३)

### दाहिने बायें दोनों ओर चलना

स्थिर राय न होनी । प्रयोग—मालकिन, तुम दाहिने-



बायें दोनों ओर चलती हो (मान० (१)—प्रेमचन्द, १२६)

### दाहिने बायें होना

अनुकूल या प्रतिकूल होना। प्रयोग—बहुरि बंदि सल गन सतिभाए। जे बिनु काज दाहिनेहु बाए (राम० (बाल)—तुलसी, ८)

### दाहिने होना

अनुकूल होना, सहायक होना। प्रयोग—नाम लेत दाहिनी होत मन, वाम विधाता वाम को (विनय०—तुलसी, १५६); जाको जासों मन लग्यो, सो तिहि आवे दाँप। भाल भस्म बिष मुंड शिव तोह शिवा सहाय (वृ० स०—वृन्द, २३)

### दिखाने का दांत होना

बाह्य दिखावा। प्रयोग—व्यायाम तो केवल दिखाने के दांत हैं (गोदान—प्रेमचन्द, २४३)

### दिग्बिजय करना

सबको वश में करना। प्रयोग—आपु अंचे अंचवाई सप्त सुर कीन्हें दिग बिजई (सू० सा०—सूर, १८९३)

### दिन कटना या काटना,—गुजरना,—धकेलना,—पूरे करना,—भरना

किसी तरह जिन्दगी के दिन बीतना या बिताना। प्रयोग—जस तूं पंखि होहुं दिन भरऊं (पद०—जायसी, ३१५); बड़ी रैन तनक से दिना। क्यों भरिए पिय प्यारे बिना (नंद०ग्रन्था०—नंद, ११५); मिलन न पैये, बिन मिलै अकुलैये अति, सेनापति ऐसे कैसे दिन भरियतहै (क० र०—सेनापति, ४३); दान न कान सुन्यो कवहुं कहै को कौन दयो सु लयो किन। टोड़िक हूँ घन घनंद झटत काटत क्यों नहीं दीनता सों दिन (घन० कवित्त—घना०, १९५); रहिये लटपट काटि दिन बर घामे मा सोय (कुण्ड०—गिरधरदास, १४); कंसो कहा कीज कछ सापनो करी न होइ जाके जैसे दिन ताहि तैसे भरन देव (ठाकुर०—ठाकुर, १३); जब असुरों से बार-बार हारता है, तब भाग के कही जा छिपकर अपने दिन काटता है (प्रेम सा०—ल० ला०, ६३); बिनु पीतम गर लये कौन विधि जीवन के दिन भरौ (भा० ग्रंथा० (२)—भारतेन्दु, ४०२); जेठ में दूनी भयो दिन कटत कोऊ विधि नहीं

(साधा० ग्रंथा०—साधा० दास, १०); परन्तु सब पछिये तो निरे खेल कूद में दिन काटना मनुष्यत्व या मनुष्य शब्द के अर्थ पर आक्षेप करना है (सा० सु०—वा० मट्ट, २८); और दिन तो कट ही जायगा (शेखर (२)—अज्ञेय, २१२); वहाँ फूस के छोटे छोटे भाँपड़े डाले हुए फिर से लौटे हुए कुछ निवासी विपद के दिन काट रहे थे (मृग०—वृ० वर्मा, ४२); अब तो दिनों को धकेलना है (बौने०—रा० रा०, ७३); मैं तो इस घर को भूल नहीं सकता। यों जीवन के दिन पूरे करने के लिए चाहें जहाँ पड़ा रहूँ (भिसा०—कौशिक, ९५)

### दिन किनारे लगना

अंत निकट होना। प्रयोग—जिस दिन ऐसा विचित्र परिवर्तन मेरे स्वभाव में दिखाई दे तो समझ जाइए कि 'दिन किनारे था लगे हैं' (पद्म० के पत्र—पद्म० शर्मा, ३०)

### दिनको दिन और रात को रात न समझना

अपने सुख या विधाम को परवाह छोड़ कर काम में लगे रहना। प्रयोग—आज साल-भर से उसने रतन की सेवा शुश्रूषा में दिन को दिन और रात को रात न समझा था (गवन—प्रेमचंद, ३२४); ब्रजमोहन को मैंने इतने दुख उठाकर पाठा, उसके कारण दिन को दिन और रात को रात नहीं समझा (चित्र०—कौशिक, ६६)

### (समा० मुहा०—दिन रात एक कर देना)

### दिन खराब आना या होना,—खोटा होना

गरीबी आनी या दुर्दिन होना या आना। प्रयोग—इनके बाप दादे तो अच्छे पैसे वाले थे, लेकिन अब दिन खराब आ गये (रेशमी०—राम० वर्मा, १२६); सर्वे उपाय निरर्थक होयें दिन खोटे हैं जब (राधा० ग्रंथा०—राधा० दास, ३८)

### दिन खोटा होना

### दे० दिन खराब आना

### दिन खोना

समय व्यर्थ नष्ट करना। प्रयोग—मुनहु सूर ऐसेहि दिन खोवति, काज नहीं तेरे धामहि (सू० सा०—सूर, १३३६); नहि काम कोउ करनो हमें बस व्यर्थ दिन खोवत रहें (राधा० ग्रंथा०—राधा० दास, १५)

### (समा० मुहा०—दिन गंवाना)



### दिन गिरना

बुरे दिन जाना । प्रयोग—अतः इस दंत कथा को केवल इतने × × पर समाप्त करते हैं कि आज हमारे देश के दिन गिरे हुए हैं (२० पी०—२० ना० मि०, ७८)

### दिन गुजरना

#### दे० दिन कटना

#### दिन चढ़ना

(१) प्रातःकाल हुए देर होनी । प्रयोग—ब्रह्म, हम लोगों की बातों में इतना दिन चढ़ आया (भा० ग्रं०—भारतेन्दु, ६९९); ओ हो ! हम लोगों की बातों में इतना दिन चढ़ आया (राधा० ग्रंथा०—राधा० दास, ८०८); जब दिन चढ़ आया तब वहाँ से जरा हटकर निशानाबाजी करने लगी (झांसी०—पु० वर्मा, ३२९); हमें तो प्यास लग रही है । घभी तो दिन भी नहीं चढ़ा (कामना—प्रसाद, ३); अरे ठहर, इतना दिन चढ़ आया, दो बँतिले खान का अवकाश भी नहीं मिला मुझे (सुहाग०—अ० ना०, ७२)

(२) स्त्री का गर्भवती होना । प्रयोग—जमना—मुझे दिन चढ़ा है (भा० मा० (१)—कि० गो०, ९४); विवाह के कुछ वर्ष बाद एक बार ताई के दिन चढ़े थे (पु० द०—अ० ना०, १२)

#### दिन चमकना

भाग्योदय होना । प्रयोग—तारा पहले सोचा करती थी कि जब मेरे दिन चमकेंगे तब मैं इन लोगों की भी घाने साथ रखूंगी (मान० (२)—प्रेमचंद, ५०)

#### दिन चला जाना

समय बीतना । प्रयोग—दिन चलि गए क्या बड़ बाढ़ा (राम० (बाल)—तुलसी, २८१)

#### दिन जाना

(१) दिन बीतना । प्रयोग—है न मैबर सघन घन, खूब घना पहराइ । ता मुख बे भिष्या भली, हरि सुमिरत दिन जाइ (कबीर ग्रंथा०—कबीर, ५३); दिवस जाल नहि लागिहि बारा (राम० (अ)—तुलसी, ४३०)

(२) अच्छे दिन न रहना । प्रयोग—अब घायों के दिन गए (वेशाली० (१)—चतुर्ग, १५३)

(३) बहुत दिन बीत जाना । प्रयोग—मुँह मुड़ावत दिन गए, पजहूँ न मिलिया राम (कबीर ग्रंथा०—कबीर, ५८)

### दिन ढलना,—मुंदना

शाम होनी । प्रयोग—दिन जल्दी-जल्दी ढल रहा था घोर सामने से संध्या फुटी के साथ पाँव बढ़ाये चली आती थी (गु० नि०—वा० मु० गु०, २३३); दिन ढलने लगा था (नदी०—अज्ञेय, १२८); ज्यों त्यों करके दिन मुँदा, रात घाई (पहम पराग—पद्म० शर्मा, २७०)

(समा० मुहा०—दिन ढरकना)

#### दिन ढले

संध्या के समय । प्रयोग—वह सब सब भी है × × दिन ढले आम के नये बोरों का चारों घोर अपना माया-जाल फेंकना (कनु०—भारती, ६८)

#### दिन दहाड़े

दिन के समय खुल्लमखुल्ला । प्रयोग—दिन दहाड़े, राजधानी के राज मार्ग में उसकी रत्नराशि लूट ली गई (पहम पराग—पद्म० शर्मा, ७७); दिन-दहाड़े खून कीजिए पर पुलिस की पूजा कर दीजिए, आप बेदाग छूट जायेंगे (रंग० (१)—प्रेमचंद, २९८)

### दिन-दिन चढ़ना,—सघाया होना, दिन दूना बढ़ना या होना

बहुत जल्दी जल्दी घोर बहुत अधिक बढ़ना, खूब उन्नति पर होना । प्रयोग—रूप सवाई दिन-दिन चढ़ा । विधि सख्त जग ऊपर गढ़ा (पद०—जायसी, ११६); घस कस कहहु मानि मन ऊना, सुखु सोहागु तुम्ह कहु दिन दूना (राम० (अ)—तुलसी, ३९१); दिन दिन दुति दूनी बढ़े, बरनि कहे कबि कोइ (केशव० (१)—केशव, १०); दिन दिन दूने दुख देत हा हा री (भा० ग्रं० (१)—भारतेन्दु, ४७०); पदत बहुत तेजहीन तेजमान होत, बाड़े दिन दूनों तेज कौरति कुमारी को (राधा० ग्रंथा०—राधा० दास, ६४)

(समा० मुहा०—दिन दूना रात चौगुना बढ़ना या होना)

#### दिन-दिन सघाया होना

#### दे० दिन-दिन चढ़ना

#### दिन दूना बढ़ना

#### दे० दिन दिन चढ़ना

#### दिन धकेलना

#### दे० दिन कटना



### दिन पतला पड़ना

(१) घुरे दिन होना । प्रयोग—हमारे दिन पतले हैं, न जाने कब नया हो जाय (गोदान—प्रेमचंद, १०९); कभी यों न पतले हुए दिन किसी के कभी यों हुए रंग किसी के न कीकें (चुमते—हरिऔध, १८५)

(२) निर्घन होना ।

### दिन पलटना,—फिरना,—लौटना

घच्छे दिन आना । प्रयोग—घहा, भगवान ने फिर दिन फेरे क्या (मा० ग्रं० (१)—भारतेन्दु, ३६); जबहि यामु कछु दिन फिरत तबहि सकत नहि देख (राधा० ग्रंथा०—राधा० दास, ७); वनत न लागे देर जब पलटे दिन अपने (राधा० ग्रंथा०—राधा० दास, ३८); कहावत है कि बारह वर्ष के पीछे घुरे के दिन भी फिरते हैं (गु० नि०—बा०मु०गु०, ४३३); फिर नहीं ब्रज के दिन वे फिर (प्रिय०—हरिऔध, २०); जादोराय के दिन भी फिरें (मान०—प्रेमचंद, ११); तुम्हारे दिन, बलचनमा की मां अब लौटने ही वाले हैं (वल०—नागा०, १५)

(समा० मुहा०—दिन बदलना,—बहुरना)

### दिन पूरा होना

(१) मृत्यु समीप होनी । प्रयोग—डाक्टर साल्वर आदि मिलकर दवा करते थे पर एक ने भी काम न किया, क्यों कि उनके दिन पूरे हो गए थे (साधा० ग्रंथा०—राधा० दास, २९३); बिहारी, नहीं, दर्द बहुत है । दिन हो गए पूरे (परस—जैनेन्द्र, १३६)

(२) अवधि समाप्त होनी ।

(३) गर्भवती स्त्री के प्रसव का दिन निकट होना ।

### दिन पूरे करना

दे० दिन कटना

### दिन फिरना

दे० दिन पलटना

### दिन बीतता न जानना,—दिनरात बीतता न जानना

(१) सुख में समय कटना । प्रयोग—गोकुल वसंत हंसत खेलेत मोहि चौस न जान्यो जात (सू० सा०—सूर, ३७४२); प्रेममगन कोसल्या निसि दिस जात न जान (राम० वा)—तुलसी, २१०)

(२) व्यस्तता में समय बीतना ।

### दिन भरना

दे० दिन कटना

### दिन मुंदना

दे० दिन ढलना

### दिन में तारे दिखाई पड़ना

होश गुम होना, बहुत परेशानी में पड़ना । प्रयोग—रूप के आगे सब सिर झुका देते हैं जो रात-दिन ईश्वर पर व्याख्यान दिया करते हैं, उन्हें भी इसके बिना दिन में तारे दिखाई पड़ने लगते हैं (मा—कोशिक, ४४)

### दिन रात

हर समय । प्रयोग—कोई-कोई देश सोभवश इतना अधिक माल तैयार करते हैं कि उसे किसी देश के गले मढ़ने की किक में दिन रात मरते रहते हैं (चिंता० (१)—शुक्ल, ७४)

### दिन रात बीतता न जानना

दे० दिन बीतता न जानना

### दिन लट्ट जाना

(१) घच्छे दिनों का शेष हो जाना । प्रयोग—सपाने कहने लगे कि अब मासातुवान के घराने के दिन लट्ट गए (सुहाग०—अ० मा०, १३३); लट्ट गये वे दिन जब कि बीच बाबू तेरा राय राज करते थे (परली०—रेणु, १४७)

(२) स्थिति बदल जानी । प्रयोग—अब वह दिन लट्ट गये जब देबियां इन चकमों में घा जाती थीं (गोदान—प्रेमचंद, १६३); गोली-गुलाम का कलेजा तो छोटा नहीं है । वे दिन लट्ट गये (गोली—चतुर०, ३०५-६)

### दिन लौटना

दे० दिन पलटना



### दिनों का फेर

समय बदलने का प्रभाव (प्रतिकूल स्थिति के लिए अधिक-तर प्रयुक्त) । प्रयोग—छछु गजगति के आहटनि छिनछिन छीजत सेर । विष्णु विकास विकसत कमल कछु दिनन के फेर (जग०—पद्माकर, ३); रहिमन चुपहूँ बैटिए, देखि दिनन का फेर (रहीम कवि०—रहीम, २१); दिनन को फेर मोहि, तुम-मन फेरि डार्यो, अहो घन आनन्द न जानौ कैंती रीतिहै (घन० कवि०—घना०, ३३); क्या दिनों का फेर हम इसको कहें या कि है दिखता रही रंगत बिपत (चुभते०—हरिऔध, ८०)

### दिमाग आसमान पर चढ़ना,—जाना, दिमाग चढ़ना

बहुत अभिमान होना । प्रयोग—जरा इन्हें बुला लिया और लुशामद के दो चार शब्द सुना दिये XX बस आपका मित्राज आसमानपर जा पहुँचा (मान० (१)—प्रेमचन्द, ३१०); तब मुखूका मित्राज आसमान पर चढ़ जाता था (मान० (८)—प्रेमचन्द, ३०); तुम लोगों के दिमाग चढ़ गए हैं (शूटा० (१)—यशपाल, १५५); फिर दिमाग चढ़ गया तो पहचानेगा भी नहीं (पैतरे—अइक, १२६)

(समा० मुहा०—दिमाग आसमानपर होना, दिमाग न पाया जाना, दिमाग न मिलना)

दिमाग आसमान पर जाना  
दे० दिमाग आसमान पर चढ़ना

### दिमाग उलझना

स्पष्ट रूप से कुछ सोच न पाना । प्रयोग—कमला का दिमाग उलझ सा गया (दोने०—रा० रा०, ११६)

### दिमाग का गूदा चट हो जाना

सोपड़ी खाली हो जानी, तंग आ जाना । प्रयोग—घभी गारा काम इसे मिसाना पड़ेगा । समयभते-समभते दिमाग का गूदा चट हो जायगा (बल०—नागा०, ५)

### दिमाग की आँधी

मानसिक उथल-पुथल, उत्तेजना, दुविधा । प्रयोग—लाखी के दिमागकी घाँधी कुछ हलकी पड़ी (मृग०—वृ० वर्मा, २४०)

### दिमाग खपाना,—पच्ची करना,—लड़ाना

बहुत सोच विचार करना । प्रयोग—जिसे चित्रकार × × रंग की डरा सी भाँट में प्रकट कर दिखाता है उसी का प्रकट करना कवि के लिए इतना दुरूह है कि बेहद दिमाग पच्ची करने पर दो चार सत्कवियों ही के काव्य में यह खूबी पाई जाती है (सा० सु०—वा० मट्ट, २१); हम लोग अपना दिमाग खपा कर देश की उन्नति के लिए पार्टिकल लिखते हैं (परीक्षा०—श्री० दास, ९८); अगर तबारीज चलत हो सकती है तो मुल्ता ने मुझको जो कुछ पड़ाया है, वह सब दिमागपच्ची ही रही (मृग०—वृ० वर्मा, ३०५); लेकिन इस मामले पर इतना दिमाग लड़ाने की क्या जरूरत है वह मेरी समझ में नहीं आया (अजय०—देवराज, ५३); पुलिस तो लाल बुझकड़ है । जरा दिमाग लड़ाइये (गवन—प्रेमचन्द, २२१)

(समा० मुहा०—दिमाग मारना,—लगाना)

### दिमाग खाली करना

परेशान करना । तर्क कर-करके हैरान कर डालना । प्रयोग—कंबकत ने दिमाग खाली कर दिया (राधा० ग्रन्था०—राधा० दास, ५८७)

### दिमाग चक्कर खाना

दिमाग का घबरा जाना । प्रयोग—दरजनो तो जेम्स हुए हैं, दरजनो विलियम, कोडियो चार्ल्स । दिमाग चक्कर खाने लगता है (मान० (१)—प्रेमचन्द, ८२); उनका मस्तिष्क चक्कर खाने लगा (ज्ञान०—यशपाल, १२४)

### दिमाग चढ़ना

दे० दिमाग आसमान पर चढ़ना

### दिमाग चाटना

(१) हैरान कर डालना—दिमाग खाली कर डालना । प्रयोग—रेखागणितके प्रवर्तक उकलैडिस (यूक्लिड) ज्यामिति की हर एक शकल में बिन्दु और रेखा की कल्पना करते-करते हमारे मुकुमारमति इन दिनोंके छात्रों का दिमाग ही चाट गये (सा० सु०—वा० मट्ट, ९२)

(२) व्यर्थ की बातें करना । बहुत बकवाद करना ।

(समा० मुहा०—दिमाग खाना)



### दिमाग ठंडा होना

(१) क्रोध शांत होना । प्रयोग—बत्तों युद्ध करने वही तुम्हारा दिमाग ठण्डा होगा (गंगा०—उग्र, ७७) (÷)

(२) घानन्द मिलना—वृत्ति मिलनी । प्रयोग—जिसके पूर्ण से होवे साकी दिमाग ठण्डा (ईशा०—ईशा०, ५६), देखिये प्रयोग (१) में (÷) भी

### दिमाग पच्ची करना

दे० दिमाग खपाना

### दिमाग फिर जाना

(१) प्रमाद होना । प्रयोग—चार अक्षर क्या पढ़ गया उसका तो दिमाग ही फिर गया (झुठा०—यशपाल, ४९८); ठरा सा म्युनिगिर्पलिटी का अखिलपार क्या मिल गया, सबों के दिमाग फिर गए (रंग० (१)—प्रेमचंद, १७४)

(२) विचार बदल जाना ।

### दिमाग बड़ जाना

घमंड होना । प्रयोग—बड़े दिमाग बड़े हुए हैं इस बुद्ध सिंह के (मूले०—भग० वर्मा, १७०); मालकिन ने मुझसे कई बार पुछवाया कि अब शंभू की मां के दिमाग बहुत बड़ गए क्या ? (मा—कौशिक, १००)

### दिमाग लड़ाना

दे० दिमाग खपाना

### दिल आना

प्रेम हो जाना, इच्छा हो जानी । प्रयोग—किसी पर किसी का दिल आ जाय तो उसे कौन रोक लेगा (बूंद०—अ० ना०, ४६९)

(समा० मुहा०—दिल अटकना)

### दिल उछल पड़ना

(१) बड़ी प्रसन्नता होनी । प्रयोग—एकाएक उसे चाल सूझी, उसका दिल उछल पड़ा (गवन—प्रेमचंद, १८-१९); सोमलियों के बारे में उस रोज जितना कुछ मुझे मालूम हुआ, सभी उतने ही से मेरा दिल उछलने लगा भैया (बल०—नागा०, १६४)

(२) पबराहट होनी—कलेजा उछलना । प्रयोग—जब किसी करबट लेती, तो लोगों के दिल उछल-उछल कर

ओठों तक आ जाते (गवन—प्रेमचंद, ३२६); यह करुण दृश्य तो नहीं देखा जाता, बच्चों का विलाप नहीं सुना जाता, दिल उछल रहा है, कलेजा मुंह को आता है (पद्म पराग—पद्म० शर्मा, ३७)

### दिल उठना

खुशी होनी । प्रयोग—दिल भरा एक, एक दिल उमगा, दिल उठा एक, एक दिल बंठा (बोल०—हरिऔध, १९६)

### दिल उड़ा-उड़ा फिरना

मन अस्थिर होना । प्रयोग—चाहिए दिल उड़ा-उड़ा न फिरे दिल पकड़ लें अगर पकड़ पावें (चौखे०—हरिऔध, १९)

### दिल उमड़ पड़ना

हृदय का करुणाद्रं होना । प्रयोग—घापकी यह हकीकत सुनकर मेरा दिल आप से आप उमड़ा आता है (परीक्षा०—श्री० दास, ११); लेख लिखते समय किसी दिन घण्टों आत्म-विस्मृति की-सी दशा में बंठा रहा हूँ, दिल उमड़-उमड़ आया है (पद्म० के पत्र—पद्म० शर्मा, ६९); जाति को कब हरा-भरा पाकर, दिल हमारा उमड़-उमड़ उमड़ा (चुभते०—हरिऔध, १०६)

### दिल उलटना

(१) जी घबराना । प्रयोग—लाट या अब गया बहुत ही लट । बल पड़े दिल उलट गया मेरा (चुभते०—हरिऔध, ७४)

(२) घृणा होनी ।

(३) मन न लगना ।

### दिल ओठों तक आना

बहुत घबराहट होनी । प्रयोग—जब किसी करबट लेती तो लोगों के दिल उछल उछल कर ओठों तक आ जाते (गवन—प्रेमचंद, ३२६)

### दिल कचोटना

मन में किसी बात के लिए टीस उठनी । प्रयोग—घमीना का दिल कचोट रहा है (मान० (१)—प्रेमचंद, २४)

### दिल कच्चा करना

घबराना, मन में कमजोरी लानी । प्रयोग—दिल इतना



## दिल कड़वा करना

कच्चा कर लेगी तो कैसे काम चलेगा (गोदान—प्रेमचन्द, २०९)

## दिल कड़वा करना

दुर्भाव लाना । प्रयोग—हम किसी से किसलिए कड़वे बने बात कड़वी कह न दिल कड़वा करें (बोलो—हरिऔध, १८९)

## दिल कस में होना

मन बधमें होना । प्रयोग—किस तरह सब वह कसर से उच सके जब किसी का रह सका कस में न दिल (बोलो—हरिऔध, १९०)

## दिल का कांटा

मन का आक्रोश या दुःख । प्रयोग—काड़ कांटा न जो सकें दिल का तो किसी की न पाव हम काड़ें (सुभले—हरिऔध, ४३)

## दिल का गुबार

क्रोध । प्रयोग—सच कहता हूँ आपकी भलमनसी और सराफत ने मेरा गुस्ता ठण्डा कर दिया । नहीं तो, मेरे दिल में न जाने कितना गुबार भरा हुआ था (रंगो (१)—प्रेमचन्द, २२८)

## दिल का गुबार निकलना या निकालना,—बुखार निकलना या निकालना

मन का क्रोध निकलना या निकालना । प्रयोग—तब की टट्टियाँ भी थी, पंखा भी, लेकिन गर्मी जैसा किसी के सम-झाने बुझाने की परवाह नहीं करना चाहती, अपने दिल का बुखार निकाल कर ही रहेगी (मानो—(७) प्रेमचन्द, ५६) ; निकल गया है दिल का गुबार (बुद्धो—वचन, १००) ; वह स्पष्ट रूप से कोई आपत्ति नहीं कर सकती । हाँ, दूसरों पर रखकर श्लेष रूप से उसे सुना-सुनाकर दिल का गुबार निकालती रहती थी (गवन—प्रेमचन्द, १५०) ; इस रीति से उसके दिल का गुबार निकल जाना था (सु० सु०—सुदर्शन, १०४)

(समा०मुहा०—दिलका बुखार उतरना या उतारना)

## दिल का घाव

मार्मिक पीड़ा । प्रयोग—छ महीने बीतते-बीतते उनके दिल के सारे घाव भर गए (सतमी०—राहुल, ९६) ; यहां आकर मुझे एक और मित्र की याद भी तड़पा रही है ।

दुर्घटना पुरानी पड़ गई थी, दिल के जहम कुछ सूख चले थे कि फिर वे हरे हो गये (पद्म० के पत्र—पद्म० शर्मा, ३३५)

## दिल का घाव भरना

किसी मर्मोन्तक पीड़ा का धीरे-धीरे कम होना । प्रयोग—छ महीने बीतते-बीतते उनके दिल के सारे घाव भर गये (सतमी०—राहुल, ९६)

## दिल का घाव हरा रहना

मन की पीड़ा सदा बनी रहनी । प्रयोग—मगर उनके दिल के घाव हमेशा हरे थे (सु० सु०—सुदर्शन, ३७९)

## दिल का बुखार निकलना या निकालना

दे० दिल का गुबार निकलना या निकालना

## दिल का बोझ उतरना,—हल्का होना

किसी चिन्ता से निवृत्ति पाना । प्रयोग—मेरे दिल का बोझ उतर गया (मानो (१)—प्रेमचन्द, ९३) ; मेरे जितने पत्र आपके पास हैं उन्हें जला दीजिए या सर्वसाधारण को—जिन्हें आप सुनाना पसन्द करें—सुना दीजिए जिससे आपके दिल का बोझ हल्का हो जाय (पद्म० के पत्र—पद्म० शर्मा, ७६)

## दिल काला होना

दुष्ट व्यक्ति, नीयत-बराब घादमी । प्रयोग—ग़लीम का हृदय अभी इतना काला न हुआ था कि उस पर कोई रंग ही न चढ़ता (कर्म०—प्रेमचन्द, ३४८) ; साप काला पला उसी में है काल से है कराल दिल काला (चोखे—हरिऔध, ३०)

## दिल की आग

मनका कष्ट या क्रोध । प्रयोग—आज कितने दिनों से कालेज जाती हूँ, तो एक बार तुम्हें अवश्य देखती हूँ । नहीं देखती तो, दिल की आग नहीं बुझती (लिली—निराला, ११३) ; कुछ हो, दिलकी आग तो ठंडी हो गई (रंगो (१)—प्रेमचन्द, १९०)

## दिल की आग बुझना

मन का कष्ट या क्रोध मिटना । प्रयोग—आज कितने दिनों से कालेज जाती हूँ, तो एक बार तुम्हें अवश्य देखती



हैं। नहीं देखती, तो दिल की आग नहीं बुझती (लिली—निराला, ११३)

### दिल की कली खिलना

खूब खुशी होनी। प्रयोग—जैसे मेरे दिल की कली खिल गई (गोली—चतुरा, ८६); खिल सकेंगी तब तरह दिलकी कली (बोलो—हरिऔध, ८८)

### दिल की गांठ,—गिरह

(१) मन मुटाव। प्रयोग—खुल सके गांठ जो नहीं जी की तो पड़े गांठ क्यों किसी जी में (सर्मो—हरिऔध, ६६)

(२) मन की दुविधा, विता।

(समा० मुहा०—दिल की घुंडो)

### दिल की गिरह

दे० दिलकी गांठ

### दिल की बात दिल में रहना

(१) मन की बात न कह पाना। प्रयोग—तब किबाड़े किस तरह दिल के खुले बात दिल की जब किसी दिल में रही (बोलो—हरिऔध, १८८)

(२) इच्छा पूरी न होनी।

### दिल की लगना

प्रेम होना। प्रयोग—फिर जब दिल की लगती है, तब दिल के खुदा रास्ता भी बंदे को बता देते हैं (लिली—निराला, ११४); जिनके दिल की लगी हो, उनके लिए दूरी कोई चीज नहीं है (सु० सु०—सुदर्शन, २२)

### दिल की हवस निकलना

मन का रोष दूर होना। प्रयोग—नहीं इसे खूब गानियां दे लेने दो, जिसमें इसकी दिल की हवस निकल जाय (प्रेमा०—प्रेमचंद, ५९)

### दिल कुड़ना

मन में जलन होनी। प्रयोग—दिल कुड़ेगा न क्यों कुड़ाने से (बोलो—हरिऔध, १८८)

### दिल के काले होना

दुष्ट-प्रकृति होना, छोटा व्यक्तित्व होना। प्रयोग—यह

लोग दिल के बहुत काले होते हैं (झुठा० (२)—यशपाल, २१५)

### दिल के फफोले

मन की पीड़ा। प्रयोग—क्या कहें दिल के फफोलों की टपक टपक मुड़ का तो सका टांका नहीं (चुमते०—हरिऔध, ६१)

### दिल के फफोले टूटना,—फोड़ना

दिल की कुड़न निकलनी या निकालना; भली बुरी मुता कर जी ठंडा होना या करना। प्रयोग—हैं फफोले पर फफोले पड़े रहे टूटते दिल से फफोले हैं नहीं (चुमते०—हरिऔध, ७४); हमने 'बोलबाल' में दिलके फफोले फोड़े हैं, वे उसमें चौपदे की मूरत में फूटे हैं (चुमते०, मु०)—हरिऔध, ६); कहानी कहने चले हो, या दिल के फफोले फोड़ने (गु० कहा०—गुलेरी, २०)

(समा० मुहा०—दिल के फफोले फूटना)

### दिल के फफोले फोड़ना

दे० दिल के फफोले टूटना

### दिल के मजबूत होना

साहसी या दृढ़ होना। प्रयोग—लेकिन इसमें तो संदेह नहीं कि वे दिल के बहुत मजबूत थे (सतमी०—राहुल, ८०)

### दिल के साफ होना

मन में छल कपट न होना। प्रयोग—जो तुम्हारी हंसी खुशी में है साथ, वे हैं दिल के साफ (बुद्ध०—वचन, ८३)

### दिल खटकना,—में खटक होना

(१) संदेह में पड़ना। प्रयोग—यूमुफ ताड़ न पाये, दिल में खटक न थी (चोटो०—निराला, ८५); दिल हमारा ही खटकता है नहीं कौन दिल खटका नहीं खटका हुए (बोलो—हरिऔध, १९५) (÷)

(२) बंद होना। प्रयोग—देखिए प्रयोग (१) में (÷)

### दिल खिल उठना

हृदय प्रसन्न होना। प्रयोग—उसके साथ दो बातें करके



दिल खिल जाता है (दूधगाछ- २० स०, २९०); किसलिये दिल उठे किसी का खिल (बोल०—हरिऔध, १९५)

### दिल खींचना

मन को आकृष्ट करना। प्रयोग—क्यों न दिल खींच ले उपज आला जो कि उपजी कमाल भी कुछ ले (चोखे०—हरिऔध, ६)

### दिल खुला रखना

(१) मन में मौज रखना। प्रयोग—दिल इसी तरह खुला रखना करो। कोई दिलदार मिल जाय इस वक्त तो ? (चोटी०—निराला, ७०)

(२) कोई दुराव न करना।

### दिल खोलकर

(१) बड़े उत्साह से। प्रयोग—बह तो दिल खोलकर धरमान निकालेगी (मान० (१)—प्रेमचंद, ९४); खोल दिल जो गले न मिल पावे तो मिलादे न मान मिट्टी में (मर्म०—हरिऔध, ६६) (÷)

(२) बिना किसी हिचक के, बिना दुराव के। प्रयोग—बरसो हो गये, मैंने गोविन्दी से दिल खोल कर बात भी नहीं की (गोदान—प्रेमचंद, २४०); सम्पादकाचार्य पं० सूर्यदत्तजी और पं० गणपति शर्माजी आदि ने लेखन-शैली की दिल खोलकर दाद दी (पद्म पराग—पद्म० शर्मा, ८८) देखिए प्रयोग (१) में (÷) भी

### दिल खोलना

मन की सब बात कह देना। प्रयोग—ऐसे पुरुष तो बहुत होंगे जो स्त्री से अपना दिल खोलते हों (गवन—प्रेमचंद, १५४)

(समा० मुहा०—दिल खोलकर रख देना)

### दिल गवाही देना

ठोक जचना। प्रयोग—हम किसी की करें गवाही क्यों जब गवाही न दे हमारा दिल (बोल०—हरिऔध, १९५)

### दिल-बला

रसिक। प्रयोग—दिल बहक जाय दिल बलों का जो तो न बरसो उमड़ युमड़ बादल (चुमते०—हरिऔध, १३५)

### दिल चुराना,—छीन लेना

किसी के मन को आकर्षित करना। प्रयोग—फूल खिला क्यों लुभा न दिल लेगा चोर दिल का न क्यों चुरा ले दिल (चोखे०—हरिऔध, ३६); घायल मन भर सोचने देवे हमें, सब गया छिन, अब न लेवे छीन दिल (चोखे०—हरिऔध, ५१)

### दिल चूर चूर होना

दिल को बहुत कष्ट होना। प्रयोग—सा बुरी चोट दुख चपेटों की हो गया चूर चूर दिल मेरा (चुमते०—हरिऔध, ७४)

### दिल छिलना

मन को कष्ट होना। प्रयोग—एक माँ के दिल सिवा है कौन दिल जाय जो छिल, पूत का तलवा छिले (चोखे०—हरिऔध, ६)

### दिल छीन लेना

दे० दिल चुराना

### दिल छीलना

मन को कष्ट पहुँचाना। प्रयोग—जो रहे छीलते पराया दिल क्यों न वे छल-भरे छली होंगे (चुमते०—हरिऔध, १८१)

### दिल छू लेना

अत्यंत मनभावन होना। प्रयोग—फिर भी कमाल ! सारी गुजल दिल को छूने वाली (अपनी सबर—उध, ६८); चीज ऐसी होनी चाहिए कि दिल को छू जाय, पकड़ ले (शूठा० (१)—यशपाल, ४२)

### दिल छोटा करना या होना

दिल उदास करना या होना। प्रयोग—अरे राम-राम ! लाइले भाई का दिल छोटा हो जाता कि नहीं (गोदान—प्रेमचंद, ३४); दिल छोटा क्यों किया और यह बिता क्यों है बड़ी हुई (नूर०—मक्त, २)

### दिल-जमई करना या होना

(१) आश्वासन देना या होना। प्रयोग—अच्छा इस रुपये के लिये ये हमारी दिल-जमई क्या कर देंगे (परीक्षा०—श्री०दास, १२); प्रश्नकर्ता की अभी पूरी-पूरी दिल जमई न हुई थी (सुकुल०—निराला, ६४); क्यों जमे दिल जब दिल-



जमई हुई (बोल०—हरिऔध, १८९)

(२) सज करना या होना ।

(३) संतुष्ट करना या होना ।

**दिल जलना**

(१) कुढ़न होनी । प्रयोग—दुख मिले क्यों न और को दुख दे, दिल जले क्यों न दिल जलाने से (चोखे०—हरिऔध, ३०)

(२) दुख होना । प्रयोग—हुजूर, मेरा तो दिल जल रहा है (मा—कोशिक, ३८०)

**दिल जलाना**

(१) मन को दुख पहुंचाना । प्रयोग—दुख मिले क्यों न और को दुख दे, दिल जले क्यों न दिल जलाने से (चोखे०—हरिऔध, ३०) (÷)

(२) चिढ़ाना या कुढ़ाना । प्रयोग—देखिए प्रयोग (१) में (÷)

**दिल जुड़ना**

प्रेम होना । प्रयोग—पड़ गई गांठ जब जुड़ा तब क्या टूट करके जुड़ा न दिल टूटा (चोखे०—हरिऔध, १२७)

**दिलजोई करना**

संतोष या सल्लाही देना । प्रयोग—जान बाबा को उधर उनकी दिलजोई करनी इधर हम लोगों की खबरगोरी करनी (राधा० ग्रंथा०—राधा० दास, ७६७); मा के गहनों पर हाथ साफ करके चारों भाई उसकी दिलजोई करने लगे थे (मान० (१)—प्रेमचंद ७०)

**दिल जोड़ना**

प्रेम करना या कराना । प्रयोग—हृद्दी जोड़नेवाले कहीं दिल जोड़ सकते हैं (रेशमी०—राम० वर्मा, १०९)

**दिल टटोलना**

मन की बात जानने की कोशिश करनी । प्रयोग—भेद दिल का उन्हें नहीं मिलता, हे नहीं जो टटोल दिल पाते (चुमते०—हरिऔध, ४२)

(समा० मुहा०—दिल देखना)

**दिल टुकड़े-टुकड़े होना**

दुःख के कारण मन का बहुत ही खिन्न होना । प्रयोग—उसे इस हालत में देखकर मेरा दिल टुकड़े टुकड़े हो गया (गबन—प्रेमचंद, २९०)

(समा० मुहा०—दिल टूक-टूक होना)

**दिल टूटना**

( ) हतोत्साह होना । प्रयोग—उसे × × ऐसा काम करना नामंजूर था जिससे जालपा का दिल टूट जाये (गबन—प्रेमचंद, ६९) (÷); अनेक घुड़सवारों के दिल टूटने लगे (शासी०—वृ० वर्मा, २८२); छपनेके बाद पता चला कि मेरा दिल टूट नहीं इसलिये हरिहरनाथजी ने क्या उपाय किया था (अपनी खबर—उग्र, १०८) (÷)

(२) बहुत दुखी होना । प्रयोग—माता पिताके दिल टूट गये थे और उनके स्वप्नों की दूसरी खेप भी नष्ट हो गयी थी (नदो०—अज्ञेय, ११९); गांव में हर कोई अनुल के विरुद्ध हो रहा है, घर में भी तुम उसे प्यार-दुलार नहीं दोगे, तो उसका दिल टूट जायगा (ब्रह्म०—दे० स०, ११८); मूरदास चला गया होगा । यह हाल सुनेगा तो उस गरीब का दिल टूट जायेगा (रंग०(१)—प्रेमचंद, ४१२); पड़ गई गांठ जब जुड़ा तब क्या टूट करके जुड़ा न दिल टूटा (चोखे०—हरिऔध, १२७); देखिए प्रयोग (१) में (÷) भी

(३) दो व्यक्तियों में मनोमालिन्ग्य होना ।

**दिल ठंडा होना**

(१) उत्साह हीन होना । प्रयोग—दिल हुआ ठंडा लहू ठंडा हुआ देख ठंडे आल की ठंडक बड़ी (चुमते०—हरिऔध, ६३)

(२) शांति मिलनी ।

**दिल ठिकाने होना**

दिल में शांति, संतोष या धैर्य होना; चित्त स्थिर होना । प्रयोग—तब कहीं बात क्यों ठिकाने की है ठिकाने न जब कि दिल मेरा (चुमते०—हरिऔध, १११)

**दिल तड़पना**

(१) व्याकुल होना । प्रयोग—रह गए हम तड़प करके



दिल तोड़ कर

३६०

दिल पकना

देख कर दिल तड़प गया मेरा (बोल०—हरिऔध, १९१)

(२) किसी बात की बड़ी प्रबल इच्छा होनी।

**दिल तोड़ कर**

बहुत अधिक प्रयत्न से। प्रयोग—उन्होंने संवत्स कर लिया था कि अपील में अभियुक्तों को छुड़ाने के लिए दिल तोड़ कर प्रयत्न करना (प्रेम०—प्रेमचंद, ३८७)

**दिल तोड़ने वाली बात**

जी को दुख पहुंचाने वाली बात। प्रयोग—वही भोला-भाला शील-स्नेह का पुतला था क्यों ऐसी दिल तोड़ने वाली बातें कर रहा था (गोदान—प्रेमचंद, २३०)

**दिल धाम लेना**

दिल में अत्यन्त दुख होना, जी मसोस कर रह जाना। प्रयोग—मैंने उसे देखकर दिल धाम लिया (मान०—प्रेमचंद, ९०); आज बी अल्लाहवरी दिल न धाम ले, तभी कहना (मा—कौशिक, १२०); अब याद आती है तो दिल धाम कर रह जाता हूँ (पद्मराग—पद्म० शर्मा, २७८)

**दिल दबना**

दिल कमजोर होना। प्रयोग—हम किसी की न दाव में आये दिल दबे कौन दब नहीं जाता (चुमते०—हरिऔध, ३१)

**दिल दलकना**

पीड़ा होनी। प्रयोग—अब बहुत ही दलक रहा है दिल हो गई आज दसगुनी दलक (चुमते०—हरिऔध, १)

**दिल दूना होना**

साहस बढ़ना। प्रयोग—दिलचलों के सामने बन दिल-चले दूत की ले दिल अगर दूना हुआ (बोले०—हरिऔध, १८)

**दिल देना**

प्राप्तिक होना, प्रेम करना। प्रयोग—दिल चाहत है दिल देदे को दिलदार तो कोऊ दिखानो नहीं (मा० ग्रं०—भारतेन्दु, ८२१); सभी ने दिल दे दिया (सीटी०—निराला, ३५); मिल रहे हैं ओ रहे हैं वे मिला दे रहे मिल ओ दिल है ले रहे (बोले०—हरिऔध, ३६)

**दिल दौड़ना या दौड़ाना**

मन चलना या चलाना। प्रयोग—गरनु बुद्धिमान अपनी

जल्दगी चीजों के सिवाय किसी पर दिल नहीं दौड़ाते (परीक्षा०—श्री० दास, २); क्या निगाहें भी नहीं हैं दौड़ती दौड़ता है दिल न दौड़ाये अगर? (चुमते०—हरिऔध, ३१)

**दिल धड़कना**

भयभीत होना। प्रयोग—आज भी क्यों है धड़क गुलती नहीं दिल धड़कते तो बहुत दिन हो गये (चुमते०—हरिऔध, ९८)

(समा० मूहा०—दिलधक्-धक् करना,—धसकना)

**दिल नरम पड़ना**

पहले की दुर्भावना या कठोरता में कमी होनी। प्रयोग—सभी के दिल उसकी तरफ से नरम पड़ गए (रंग०—प्रेमचंद, ३१०)

**दिल निकाल कर रख देना**

बड़ी हार्दिकता से बातें करनी। प्रयोग—पहले पांच रुपया महीना और खाना उत्पाद को देते थे, वो सिखाते क्या थे वस दिल निकाल कर रख देते थे और अब तो पचास रुपया देकर भी वो बात नहीं धाती, वह हुनर नहीं मिलता (ये कोठे०—ग्रं० ना०, १०१); दिल निकाल कर रख देना चाहिये, वही उसके वशीकरण का मुख्य मंत्र है (निर्मला—प्रेमचंद, ४१)

**दिल पकड़ लेना**

दिल वश में रखना। प्रयोग—चाहिये दिल उड़ा उड़ा न फिरे दिल पकड़ ले अगर पकड़ पावे (बोले०—हरिऔध, १९)

(समा० मूहा०—दिल पकड़ कर बैठ जाना)

**दिल पकड़े फिरना**

दुखी रहना। प्रयोग—जब समय ने है पकड़ पकड़ी बुरी, तब न दिल पकड़े फिरे तो क्या करें (चुमते०—हरिऔध, ११२)

(समा० मूहा०—दिल पर हाथ रखे फिरना)

**दिल पकना**

लगातार दुःख या दुर्व्यवहार से जी का बहुत दुखी होना।



प्रयोग—बाल ही है पका नहीं मेरा देखते देखते पका दिल भी (चुमते—हरिऔध, ६६); बाल काले हैं पर दिल पक गया है (कला—उग्र, १०५)

### दिल पत्थर का होना

हृदय कठोर होना। प्रयोग—मामा, खुदा ने आप का दिल न जाने किस पत्थर का बनाया है (रंग—प्रेमचंद, ७०)

### दिल पर चोट करना या होना

दुखी करना या होना। प्रयोग—पर दिल पर चोट लगती है तो मुँह से आह निकलती ही है (कर्म—प्रेमचंद, १५२); दोनों का मरसिया XX पढ़कर दिल पर चोट लगती है (पद्म पराग—पद्म शर्मा, १९९)

### दिल पर पत्थर रखना

बहुत दुख सहने को मन को दृढ़ करना। प्रयोग—दिल पर पत्थर रखकर फिर अपनी कोठरी में चली आयी (मान—प्रेमचंद, ६०)

### दिल पसीजना,—पिघलना

दयाद्र होना। प्रयोग—गांववालों को यह देखकर संतोष हुआ कि नारायण का दिल अब इतना पिघल गया है (ब्रह्म—दे० स०, २९३); किसी का दिल पसाजता X X तो वह एक मूली या एक गट्टा उन्हें भी थमा देता (सितमो—राहुल, २); वर्षा की आराधना कीजिए तो शायद देव का दिल पसीज जाय (पद्म के पत्र—पद्म शर्मा, ४८); आवाज में सोज़ पा, जो सुनने वाले के दिल को पिघला देता था (पद्म पराग—पद्म शर्मा, १००)

### दिल पानी करना

करुणा करना या जोश, क्रोध आदि को मिटा देना। प्रयोग—चाहूँ तो कलम ले के दिल सबका कर्ह पानी। (गुंनि—वा०मु०गु०, ६७२)

### दिल पिघलना

दे० दिल पसीजना

### दिल फटना

(१) दिल में अत्यंत करुणा होनी। प्रयोग—उसकी

भोली बातें सुनकर माता का दिल धीरे भी फटा जा या (मान—प्रेमचंद, २४९); आँख होती अगर न फूट गई, देख कर फूट क्यों न दिल फटता (चुमते—हरिऔध, १०८)

(२) किसी से विरक्ति होनी।

### दिल फिरना

विरक्ति होनी। प्रयोग—क्या हम लोगों के नसीब के साथ आप लोगों का दिल भी फिर गया? (राधा—श्याम—राधा दास, ७१९); जिसका दिल खुदा से फिर गया, उसे भूट बोलने का क्या डर है? (रंग—प्रेमचंद, ६७); बाहिये तो फेर लेवें फिर उसे फेरने से दिल अगर है फिर गया (बोल—हरिऔध, १९३)

### दिल फीका होना

उत्साह हीन या विम्वन होना। प्रयोग—बात फीकी सुन पड़े, फीके हुए रंग फीका देख दिल फीका हुआ (बोल—हरिऔध, १९६)

### दिल-फेंक होना

सहज ही अनुरक्त हो जाने वाला, मन-बन्ना। प्रयोग—डूब कर निकलने वाले दोस्त पूछना चाहते हैं कि साठ के हो गए आज तक जनाब दिल-फेंक ही हैं? (अपनी सबर—उग्र, ६७); एक नए पुलिस सुपरिंटेंडेंट आए थे, नौजवान और दिल-फेंक (गोली—चतुर, १९८)

### दिल फेरना

मन को बदल देना। प्रयोग—बाहिये तो फेर लेवें फिर उसे फेरने से दिल अगर है फिर गया (बोल—हरिऔध, १९३)

### दिल बंधना

प्रेम होना। प्रयोग—जिन दिल बंधी एक मूं, ते मुख सोवें नचोत (कबीर ग्रंथा—कबीर, २०)

### दिल बढ़ना

प्रोत्साहन मिलना। प्रयोग—इससे उन्हें परमानन्द की प्राप्ति होगी, दिल बढ़ेगा और साथ ही कई पत्नी खून भी। (पद्म के पत्र—पद्म शर्मा, ८४); बड़ करे क्यों न काम हम बड़ बड़ जाय बड़ दिल अगर बढ़ाने से (चुमते—हरिऔध, १००)



### दिल बाँसों उछलना,—हाथों उछलना

(१) पबराहट होनी । प्रयोग—वह यहाँ भी नहीं आये, रास्ते में भी नहीं मिले तो फिर गये कहाँ ? उसका दिल बाँसों उछलने लगा (गवन—प्रेमचंद, १३९); रह रह कर प्राण व्याकुल हो जाता था । दिल हाथों उछल पड़ता था (सौं०—४० स०, १८३)

(२) बहुत लुप्त होना ।

### दिल बाग-बाग होना

बहुत प्रसन्न होना । प्रयोग—ओह, उनकी यह बात सुन कर मेरा दिल बाग बाग हो गया (भूले०—भा०वर्मा, ५३३); बाग बाग उनका दिल होता सख निज सेती बारी (नूर०—मक्त, ११५)

### दिल बुझना

चित्त में किसी प्रकार की उमंग या उत्साह न रह जाना । प्रयोग—क्यों मुरझाई हुई प्रिये हो, कैसे बुझा हुआ है दिल (नूर०—मक्त, १); पर बुझे दिल को बुझावे किस तरह (बोल०—हरिऔध, १९१)

### दिल बैठना

(१) दुःख के दबावे के कारण दिल का दूबा जाना । प्रयोग—आशा और निराशा की द्विविध तरंगों में बिनय का दिल बैठ जाता था (रंग० (२)—प्रेमचंद, ९६); मुभागी चांदनीचोकमें पहुँची तब उसका दिल बैठ गया (सु० सु०—सुदर्शन, ५०)

(२) बहुत डरना । प्रयोग—घाज उस भयंकर प्रयत्नको सामने अति देखकर प्यारी का दिल बैठ जाता था (मान० (१)—प्रेमचंद, १२३); मच्छर की घावाज कान में आई दिल बैठ, मक्खी नजर घाई और हाथ पाँव फूले (मान० (१)—प्रेमचंद, २५३); खोदावस्त का दिल बैठ गया (चोटी०—निराला, ८२)

### दिल बोझ से दबना

मन शक्ति या दुखी होना । प्रयोग—इंदु स्टेशन की तरफ चली; पर ज्यों-ज्यों आगे बढ़ती थी उसका दिल एक बोझ से दबा जाता था (रंग० (१)—प्रेमचंद, २७२)

### दिल बोलना

मन का विश्वासपूर्वक सोचना । प्रयोग—मेरा दिल बोलता है कि तू इसके लिए सबसे काबिल आदमी साबित होगे

(जहाज०—इ० जोशी, १२९)

### दिल भटकना

अस्थिर मानसिक स्थिति होनी । प्रयोग—क्यों न तो हम भटक भटक जाते दिल भटकता रहा घर मेरा (बोल०—हरिऔध, १८९)

### दिल भर आना

दयाई होना, दुखी होना । प्रयोग—उसका दिल भी रह रह कर भर जाता था (परती०—रेणु, ५१६); बेटी, तुम्हारे कमरे की ओर ताकने की हिम्मत नहीं पड़ती, दिल भर भर जाता है (रंग० (२)—प्रेमचंद, २६८); आँख भर देख जाति की भूले दिल भला कौन सा न भर घाया (बोल०—हरिऔध, १९२)

### दिल भरना

मन को संतोष दिलाना या होना । प्रयोग—लोगों से बेगार लेते उनका दिल कभी नहीं भरता था (बहु०—६० स०, १४०)

### दिल भारी करना या होना

दिल दुखी करना या होना । प्रयोग—पाद सुखों की घामू लाती, दुख की, दिल भारी कर जाती (सो०—वच्चन, १२०)

### दिल मजबूत करना

मन को मजबूत करना, हिम्मत करनी । प्रयोग—घाविर उन्होंने दिल मजबूत किया और जान पर खेल कर बोले (गोदान—प्रेमचंद, ७१)

(समा० मुहा०—दिल पोढ़ा करना)

### दिल मलना

मनमें कष्ट होना । प्रयोग—बेतरह क्यों न दिल रहे मलता दुख दुखी चित्त किस तरह हो कम (चुमते०—हरिऔध, ८३)

### दिल मसल देना

(१) मन की बात को वहीं कुचल कर समाप्त कर देना । प्रयोग—अथवा कालापन कलपाता है उसे या दुख का दल दिल को देता है मसल (मर्म०—हरिऔध, ५६)

(२) मन को बहुत कष्ट पहुँचाना ।

### दिल मसोसना

(१) मन के कष्ट को किसी प्रकार दबाए रहना ।



प्रयोग—सुनने वाले जो अब तक किसी प्रकार जन्तु किसे दिल मसोसे बैठे सुन रहे थे, एक बार ही चीख उठे (पद्म पराग—पद्म० शर्मा, ३७); आस पर ओस पड़ भले ही ले क्या करेगा मसोस करके दिल (बोल०—हरिऔध, १९१)

(२) मन की इच्छा को मन में ही दबा कर रह जाना ।

(समा० मुहा०—दिल मसोस कर रह जाना)

### दिल मिलना

(१) मर्तव्य होना, सद्भावना होनी । प्रयोग—राल उनकी है कहीं गलती नहीं क्या दिलाते हैं नहीं वो दिल मिले (बोल०—हरिऔध, १८९)

(२) प्रेम होना । प्रयोग—राम नाम सू दिल मिली जन हम पड़ी बिराड़ (कवीर ग्रंथा०—कवीर, ५८); अगले दिन नारायण को पता चला कि सताग मीरी की बेटी गोपी से जादू का दिल मिला हुआ है (ब्रह्म०—दे० स०, २५७)

### दिल मिलाना

(१) प्रेम करना । प्रयोग—अगर तुम पहले शो में आए तो गलती की । भला, पहले शो में भी कहीं दिल मिलाने वाले मिल सकते हैं (लिली—निराला, १२५)

(२) सुल कर बात चीत करना । प्रयोग—पर ये गांव की घोरतें—उंह उनसे दिल नहीं मिलाया जा सकता (परख—जेनेन्द्र, १२८)

### दिल में आग लगना या लगाना,—सुलगना

बहुत क्रोध या कुड़न होनी या पैदा करनी । प्रयोग—पर उसके दिल में फिरगी के बिगड़ जो आग सुलग रही थी, उसे देवकान्त ने भड़का दिया था (ब्रह्म०—दे० स०, २५९); राज्य में तो यह अशान्ति फैली हुई थी, विद्रोह की आग दिलों में सुलग रही थी (मान० (३)—प्रेमचंद, १५९); एक आग दिल में लगी थी—मैंने हिन्दी नहीं पढ़ी (कुली०—निराला, ७६); यह बादल, यह बरखा, बिजली, दिल में आग लगाये (पैतरे—अशक, ७९)

### दिल में आग सुलगना

दे० दिल में आग लगना

### दिल में ऐंठ कर रह जाना

मन मसोसना । प्रयोग—राजा साहब इस व्यंग्य से दिल में ऐंठ कर रह गए (रंग० (१)—प्रेमचंद, २९१)

### दिल में कट कर रह जाना

किसी बात का जवाब न देते बनना, मन में ही कुड़ कर या लज्जित हो रहने को बाध्य होना । प्रयोग—और बेचारे मेहता दिल में कटकर रह जाते थे (लज्जित) (गोदान—प्रेमचंद, २९२)

### दिल में कसर होना

कहीं दुर्भाव होना । प्रयोग—क्यों भरा सौदा किसी दिल में रहे चाहिये दिल में कसर रहना नहीं (बोल०—हरिऔध, १९०)

### दिल में कांटा सा चुभना

अप्रिय होना, अति दुखदायी होना । प्रयोग—आपका अपमान इन्जिंसप के हूर नागरिक के दिल में कांटे सा चुभ रहा है (अम्ब०—रा० वे०, ६४)

(समा० मुहा०—दिल में कांटा सा खटकना)

### दिल में खटक होना

दे० दिल खटकना

### दिल में घर करना

(१) मन में बराबर ध्यान बना रहना—प्रिय लगना । प्रयोग—जमना ने तो उसके दिल में घर ही कर लिया था (सु०सु०—सुदर्शन, १०९); उसने उनके दिलों में घर कर लिया (प्रेमा०—प्रेमचंद, ४३३)

(२) मन में विश्वास जम जाना । प्रयोग—कलाकार लाजिमी तौर पर चरित्रहीन होता है, यह तक कुछ लोगों के दिल में घर कर गया (बूट०—अ० ना०, ९)

### दिल में चोर होना

(१) मनमें दुविधा होनी । प्रयोग—लेकिन तुम्हारे दिल में अब भी चोर है । तुम अब भी मुझसे किसी-किसी बात में पर्दा रखते हो (गवन—प्रेमचंद, ९१)

(२) कपट करना । प्रयोग—चोर क्या चोर का बचा है वह चोर दिलमें अगर किसी होवे (चोखे०—हरिऔध, १२८)



### दिल में जगह देना

प्रेम करना—प्रेमगान बनाना । प्रयोग—दिल में जिसने मुझे जगह दी बाँधों पर बिठलाऊँ (मुर०—भवत, ६२)

### दिल में दर्द होना

मानसिक वेदना होनी । प्रयोग—वे जानते हैं कि आर्य-जाति के लिये और फिर भारतवर्ष के लिये उनके दिल में कितना दर्द था (पद्म पराग—पद्म० शर्मा, २४)

### दिल में फफोले पड़ना

मन में बहुत दुःख होना । प्रयोग—बहुत ही बुरे स्वांग भर भर, फफोले क्यों दिल में डालें (मर्म०—हरिऔध, ७३)

### दिल में वसना

प्रेम होना । प्रयोग—जाकी दिल में हरि बने, सो नर कल्प कांड (कबीर ग्रंथा०—कबीर, ५९)

(समा० मुहा०—दिल में समाना)

### दिल में बैठना

(१) मन में किसी बात का अच्छी तरह समझ आना । प्रयोग—जो न होती बात उठती बैठती बात दिल में बैठ जाती किस तरह (बोल०—हरिऔध, १९६)

(२) मन में स्थायी स्थान बना लेना—अच्छी लगनी । प्रयोग—यह पहली कविता ही नज़्म पर चढ़ कर दिल में बैठ गई (पद्म पराग—पद्म० शर्मा, २६९)

### दिल में भाला चुभना

बहुत दुःख होना । प्रयोग—उनकी यह शकल मुरत पाद घाती है तो दिल में भाले से चुभ जाते हैं (सु० सु०—सुदर्शन, २)

### दिल में मेल आना

सद्भाव में अंतर पड़ना । प्रयोग—लड़ाई सभी के यहाँ होती है, पर ऐसी नहीं कि दिल में मेल आ जाए (सु० सु०—सुदर्शन, १०२)

### दिल लगाना या लगाना

(१) प्रेम होना या करना । प्रयोग—मौत अच्छी है पर दिल का लगाना नहीं अच्छा (भा०प्र०(१)—भारतेन्दु, ४८०); तुम को मालूम न होगा उन्होंने ज़रूर कहीं न कहीं दिल

लगाया होगा (कर्म०—प्रेमचंद, ३३७); एक बजह तो यह हो सकती है कि कहीं दूसरी जगह दिल लगाया हो (मा—कौशिक, २७९); दिल उसी से तो नहीं लगा हुआ ? (झुठा० (२)—यशपाल, ४८१)

(२) मन लगाना या लगाना । प्रयोग—क्या करें लोग बाग के हित में लाय से दिल अगर नहीं लगता (चुभते०—हरिऔध, ७९)

### दिल लेना

(१) प्रेम पाना । प्रयोग—तुम ने दिल दे दिया । यह दिल मर्द को न दो । लेने लगोगी तो मालूम होगा कि वह तुम्हारा नहीं (चोटी०—निराला, १२७); मिल रहे हैं ओ रहे हैं वे मिला दे रहे दिल ओ दिल हैं ले रहे (चोखे०—हरिऔध, ३६)

(२) प्रेम में पड़ना ।

(३) मन का भेद जानना ।

### दिल साफ करना या होना

मन का दुर्भाव दूर करना या होना । प्रयोग—कर सकें तो साफ दिल अपना करें साफ दिल में है कसर रहती नहीं (बोल०—हरिऔध, १९४); दयाकृष्ण ने पूछा—मेरी तरफ से तो तुम्हारा दिल साफ हो गया ? (मान० (२)—प्रेमचंद, ५५)

### दिल से

(१) भी लगाकर, अच्छी तरह ध्यान देकर । प्रयोग—कविता चाहे छोटी हो एक ही पंक्ति हो, पर अच्छी हो, जो में जगह कर ले और यह तभी होगा जब कविता परिधम और दिल से लिखी जायगी (पद्म० के पत्र—पद्म० शर्मा, २२०-२१)

(२) अपने मन से, घानो इच्छा से ।

### दिल से आवाज़ आना

मन में इच्छा या प्रेरणा होनी । प्रयोग—पर दिल से बराबर यही आवाज़ घाती थी कि लिखो और यही लिखो (पद्म० के पत्र—पद्म० शर्मा, ६९)



### दिल से निकाल डालना

भूल जाना । प्रयोग—उन्हें दिल से निकाल डालना सहज नहीं है (मान०७)—प्रेमचन्द, १८)

(समा० मूहा०—दिल से निकाल देना)

### दिल से मलाल निकाल देना

मन से दुर्भावना दूर करनी । प्रयोग—जब आप ने इतनी दया की है तो दिल से मलाल भी निकाल डालिए (रंग० (१)—प्रेमचन्द, २२५)

### दिल हरा होना

जी प्रसन्न होना । प्रयोग—जरा पीयो, आँखें खुल जायगी दिल हरा हो जायगा (मान०२)—प्रेमचन्द, ४०)

### दिल हलका करना

जी के बोझ से छुटकारा पाना । प्रयोग—कह तो सकते हैं, कह कर ही कुछ दिल हलका कर लेते हैं (सो०—वचन, ५६)

### दिल हाथ में रखना

मन वश में रखना । प्रयोग—घोर के हाथ में न दिल दे दें दिल सदा हाथ में रखें अपने (चोखे०—हरिऔध, २९)

(समा० मूहा०—दिल हाथ में लेना)

### दिल हाथ से जाना

दिल वश में न रहना । प्रयोग—हाय हाय ! इसको देखकर मेरा दिल बिलकुल हाथ से जाता रहा (मा० प्र० (१)—भारतेन्दु, ५४४)

### दिल हाथों उछलना

दे० दिल बाँसों उछलना

### दिल हिल उठना

(१) भय या आतंक होना । प्रयोग—हिल गये दिल भी न, हिलना चाहिये जाय हिल क्यों पेट का पानी हिले (चुमते०—हरिऔध, ३७)

(२) कसगा या दुख से भर जाना । प्रयोग—जिसकी मुथ घाते मेरा दिल हिला घाँस भर आई (वेदेही०—हरिऔध, ७८); जब कड़ी मारें पड़ी, दिल हिल गया (परि०—निराला, १००)

O.P.—185

### दिल हिला देना

मन में खलवानी मचा देना, बेचैन कर देना, आतंकित कर देना । प्रयोग—सोनपाही का विलाप शव के चारों ओर बैठे लोगों के दिल हिला रहा था (ग्रह्म०—दे० स०, १८४)

### दिलदार, दिलवाला

रमिक । प्रयोग—कोई दिलदार मिल जाय इस वक्त तो ? (चौटी०—निराला, ७०); आजकल कोई दिलवाला नौजवान जूता पहनता है क्या ? (पैतरे—अशक, १३५)

### दिलवाला

दे० दिलदार

### दिलो जान से

मन से । प्रयोग—जान बेजान में पड़े कैसे जब दिलोजानसे नहीं लपटे (चुमते०—हरिऔध, १०५)

### दिहड़ी दूर है

फल प्राप्ति कठिन और दूर है । प्रयोग—जो पुस्तक लिखनी है उसकी सामग्री-सम्पादन में ही अभी लगा हूँ । दिल्ली अभी दूर है फिर भी वस्तु पर पहुँचना जरूरी है । (पद्म० के पत्र—पद्म० शर्मा, २५)

### दिवाला कढ़ना,—निकलना,—पिटना

दिवाला होना । प्रयोग—साहूकारों के घब तो प्रतिवर्ष दिवाले कड़ते हैं (गुं नि०—वा० मु० गु०, ६२९); घोर अगर घाज लाळा समरकांत का दिवाला पिट जाय ? (कर्म०—प्रेमचन्द, २१); बीस को हम कैप्टन या केमल के सिगरेट पिलायें और बीस बार खुद पीयें तो अपना तो दिवाला पिट जाय (पैतरे—अशक, १३०); मनावें तब क्यों दिवाली निकलता जब हो दिवाला ? (मर्म०—हरिऔध, ९९) (÷)

(२) कुछ सोप न रहना । प्रयोग—देखिए प्रयोग (१) में (÷)

### दिवाला निकलना

दे० दिवाला कढ़ना

### दिवाला निकालना

दिवालिवा बन जाना—झरु चुकाने में असमर्थ होना । प्रयोग—बहु समझे कि जल्द यह पत्र बंद हो जायगा और



मातृक दिवाला निकाल कर भागेगा, पर बात और ही हुई (गु० नि०—डा० मु० गु०, ४३); यह सब रमा का माहम है, उसी ने सारे सब बढ़ा बढ़ा कर मेरा दिवाला निकाल दिया (गहन—प्रेमचंद, १४)

(समा० मुहा०—दिवाला मारना)

दिवाला पिटना

दे० दिवाला कटना

दिशा फिरना,—मैदान जाना

साखाना होने के लिए घर से बाहर जाना। प्रयोग—दिशा मैदान जाने के समय भी लोग पीछा नहीं छोड़ते हैं (मैला०—रेणु, १०४-५); मुझे उसी हालत में छोड़कर चुन्नी दीसा फिरने गया (बल०—नागा०, ८२)

(समा० मुहा०—दिशा जाना,—होना)

दिशा मैदान जाना

दे० दिशा फिरना

दिशाएँ दहल जाना

चारों ओर भय घोर घातक छा जाना। प्रयोग—भूषण भनत साहित्य ने सिवराज एते मान तेरी धाक आगे दिसा दहलति है (भूषण ग्रंथा०—भूषण, १४८)

(समा० मुहा०—दिशाएँ हिल जाना)

दीठ उठना

सामना कर पाना। प्रयोग—फेरिये घाप दीठ मत अपनी उठ सकेगी न दीठ दीठ फिरे (बोल०—हरिऔध, ६६)

दीठ उतरना

बुरी दृष्टि का प्रभाव दूर होना। प्रयोग—हम उतारे कई रहे करते पर उतारे उतर न दीठ सकी (बोल०—हरिऔध, ६५)

दीठ खराद पर चढ़ना

तोखी नजर से देखना, अप्रिय लगना। प्रयोग—बड़ी महारानी घोर वे सात ठो जो और हैं, उनकी दीठ खराद पर चढ़ जायगी (मृग०—वृ० वर्मा, ३१४)

दीठ मड़ाना

(१) टकटकी बांध कर देखना। प्रयोग—दीठ हमने मड़ा

देखा दीठ तो चूक चूक जाती है (बोल०—हरिऔध, ६६)

(२) नजर पर चढ़ा लेना।

(समा० मुहा०—दीठ जमाना)

दीठ चूकना

(१) न देख सकना। प्रयोग—दीठ हमने मड़ा मड़ा

देखा, दीठ तो चूक चूक जाती है (बोल०—हरिऔध, ६६)

(२) निगरानी में समावधानी होनी।

दीठ छिपाना,—बचाना

(१) सामने पड़ने से बचना। प्रयोग—क्यों छिपायें न दीठ हम घपनी क्या करें दीठ दी नहीं जाती (बोल०—हरिऔध, ६७)

(२) चोरी-चोरी। प्रयोग—सखिन की दीठ को बचाई के निहारत है, आनन्द-प्रवाह बीच पावत न याह को (मति० मक०—मतिराम, १३५)

(समा० मुहा०—दीठ चुराना)

दीठ जुड़ना

देखा-देखी होनी। प्रयोग—कब जुड़ी दीठ साथ दीठ नहीं दीठ से दीठ कब नहीं लड़ती (बोल०—हरिऔध, ६६)

दीठ ठहरना

किमी की ओर एकटक देखना। प्रयोग—दामिनि, कामिनि दमक सी, बरनि कौन वे जाइ। दीठ नहीं ठहरादये, दीठिन ही ठहराइ (मति० मक०—मतिराम, २३२)

दीठ देना

देखना। प्रयोग—क्यों छिपायें न दीठ हम घपनी क्या करें दीठ दी नहीं जाती (बोल०—हरिऔध, ६७)

दीठ पड़ना

दिखाई पड़ना। प्रयोग—प्रोचक दीठि परे रघुनायक। जानकि के जिय के मुखदायक (केशव० (२)—केशव, ३८६); कहुं काहुं पे दीठि न परि जाय (राधा० ग्रंथा०—राधा० दास, ७०९)

दीठ फिरना

(१) कृपा-दृष्टि होनी, अनुकूल होना। प्रयोग—हो गये



फेर में पड़े बरसों आपकी दीठ घाज भी न फिरी (चुमले०—हरिऔध, २)

(२) प्रेम न रहना ।

**दीठ फेरना**

कृपा-दृष्टि न रहनी; दूसरी ओर देखना । प्रयोग—फेरिये आप दीठ मत अपनी उठ सकेगी न दीठ दीठ फिरे (बोल०—हरिऔध)

**दीठ बचाना**

दे० दीठ छिपाना

**दीठ मरोरना**

विमुख होना । प्रयोग—जो अपना हितकारी महा तिन सौ कहूँ डीठि मरोरियतु है (ठाकुर०—ठाकुर, २४)

**दीठ में ठहराना**

(१) स्मृति में बना रहना । प्रयोग—दामिनि कामिनि दमक सी, बरनि कौन व जाइ डीठि नहीं ठहराईय डीठिन ही ठहराइ (मति मक०—मतिराम, २३२)

(२) बहुत प्रभावित करना ।

(समा० मुहा०—दीठ में समाना)

**दीठ लगना**

(१) प्रेम होना । प्रयोग—दीठ हम तो रहे बचाते ही दीठ को दीठ लग गई कैसे (बोल०—हरिऔध, ६६)

(२) नजर लगना । प्रयोग—दीठ न लगे डीठौना देकर काजल ले कर तुझे लगाऊँ (यशो०—गुप्त, ६९)

**दीठ लड़ना या लड़ाना**

देखादेखी होनी या करनी । प्रयोग—कब जुड़ी दीठ साव दीठ नहीं दीठ ते दीठ कब नहीं लड़ती (बोल०—हरिऔध, ६६)

**दीदा-दिलेर होना**

निलंज्व होना । प्रयोग—मैं हत्यारिन हूँ, मदमाती हूँ, दीदा-दिलेर हूँ; तुम सवंगुणागरी हो, सीता हो, सावित्री हो (मान० (२)—प्रेमचंद, ३१२)

(समा० मुहा०—दीदा दलेल होना)

**दीदा फाड़ कर देखना**

एकटक देखना—बहुत ध्यान से सब ओर देखना । प्रयोग—

फाटे दीदे मैं फिरी, नजरि न आवे कोइ जिहि घटि मेरा साइयाँ सो क्यूँ छाँनाँ होइ (कवीर ग्रंथ०—कवीर, ५२); दीदे फाड़ फाड़ देख रहे थे, जैसे मेरे बच्चे को निमल ही जायेंगे (भारती०—रा० रा०, २६)

**दीदे फेंकना**

इशक लड़ाना । प्रयोग—दीदे फेंकती होगी, मुझसे पारसा बनती है (बोने०—रा० रा०, २०१)

**दीन की हाय मोटी होना**

गरीब के सताने का बुरा फल मिलना । प्रयोग—जमुनी मूरदास का रोना देखकर सहम गई थी, जानती थी दीन की हाय कितना मोटी होती है (रंग० (१)—प्रेमचंद, ९३)

**दीपक बुझना**

निवृंश होना । प्रयोग—बुझा दीप भांसी का तब डल-होडी मन में हरपाया (मुकुल—सु० कु० चौ०, ५०)

**दीया बढाना**

दीया बुझाना । प्रयोग—अंग अंग नम जगमगत दीप-मिल्ला सी देह । दिया बढाएँ हूँ रहे बड़ी उज्यारी गेह (विहारी रत्ना०—विहारी, ६९); जो रहीम गति दीप की, कुल कपूत की सोइ । बारे उजियारी लगें, बड़े अधेरो होइ (रहीम कवि०—रहीम, ९); जो रहीम गति दीप की कुल कपूत की सोय × × बड़े अधेरो होय नेह गुन देय जलाई (राधा० ग्रंथ०—राधा० दास, ३६)

(समा० मुहा०—दीया ठंडा करना)

**दीया लेकर दूँदना**

चारों ओर हैरान होकर दूँदना, बड़ी छान-बीन से खोजना प्रयोग—प्यारे फिर दिया लेकर मुझको खोजोगे (भा० ग्रं०—(१)—भारतेन्दु, ४४७); अब इस साठ वर्ष की वय में यदि निरुपगत करूँ, कि हाय रे मैं सारा जीवन शूट का शूट हो रहा तो मुझ सा मतिमंद टाच साइट लेकर दूँदने पर भी दुनियाँ में नहीं मिलेगा (अपनी सवर—उग्र, २२)

**दीये की बत्ती टालने को न कहना**

छोटा भी काम करने को न कहना । प्रयोग—जिबनि मूरि जिमि जोगवत रहऊँ, दीप बाति नहि टारन कहऊँ (राम० (अ)—तुलसी, ४२८)



### दीवार उठाना और डहाना

नाना प्रकार की कल्पना करना घोर छोड़ना । प्रयोग—तीनों पहरो के सिपाही जो मोर्चे पर नहीं थे, तरह तरह की दीवार उठाते और डहाते रहे (चोटो—निराला, ९६)

### दीवार को कान होना

बहुत गुप्त रूप से कही गई बात के भी मुन लिए जाने की सम्भावना होनी । प्रयोग—चुप हो जाओ दोनों । दीवारों के भी कान होते हैं (बौने—रा० रा०, १७७); सुना नहीं, दीवार के भी कान होते हैं (बहम—दे० स०, ११७) प्रत्येक भित्ति के किबाड़ों के कान होते हैं, समझ लेना चाहिये, देख लेना चाहिये (स्कंद०—प्रसाद, ५६)

### दीवार टूट जाना

विरोध का दूर होना । प्रयोग—घाघस में वह जलन और जशाति न थी । बीच की दीवार टूट गयी थी (गोदान—प्रेमचंद, ३०५)

(समा० मुहा०—दीवार गिर पड़ना)

### दीवार तोड़ना

शकाबट दूर करनी । प्रयोग—सहता में पधराई निजाल की दीवार तोड़ो (कला०—पंत, ५९)

### दीवार रखना

मर्यादा बनाए रहना । प्रयोग—साहि के सपूत सिक्खान समसेर तेरी, दिल्लीदल शक्ति के दिवान राणी दुनी में (मृप्य ग्रंथा०—मृप्य, २०९)

### दीवार से कहना

ऐसे व्यक्ति से कहना जिस पर कोई असर न हो । प्रयोग—पर तससे मन के गहरे अनुभव व्यक्त करना भी दीवार से कहना मान उसने कभी अपना आपा नहीं खोला (सुहाग०—अ० ना०, १२०)

### दीवार होना

शकाबट होनी । प्रयोग—एक घोर वह पाती थी कि उसके कौतुक जगत के बीच में एक दीवार है, दूसरी घोर वह देखती थी कि स्वयं उसके स्नेह सम्पन्न परिपक्व रूप घोर उसके कौतुक वेष्टित शिशुरूप के बीच में भी एक दीवार खड़ी थी (नदी०—अज्ञेय, ११९)

### दुन्दुभी बजना या बजाना

(१) हर्ष प्रगट करना । प्रयोग—तब देखते दुन्दुभी बजाई (राम० बाल—तुलसी, १००)

(२) प्रचार करना—घोषणा करना । प्रयोग—और जो लोग बोल सकते हैं, जो अपनी पवित्रता की दुन्दुभी बजाते हैं, वे सब के सब साधु होते हैं न ? (भूष०—प्रसाद, ५७)

(३) जय घोषणा होनी । प्रयोग—घने दुन्दुभी बजती रहती नहीं यधर्मानन दिखलाता (मर्म०—हरिश्चोद, ११)

(समा० मुहा०—दुन्दुभी देना)

### दुकान चल निकलना

(१) दुकान में व्यवसाय-वृद्धि होनी । प्रयोग—उन्होंने चम्बरलेन रोड पर दुकान खोल ली है । चल निकलने की पूरी धाधा है (चेतन—अश्क, १७७)

(२) दुकान में नफा होना ।

(समा० मुहा०—दुकान चलना)

### दुकान बंद करना

दुकान बंद करनी । प्रयोग—घाघ यह समझे कि आठ नौ बजे तक अपनी दुकान-बुकान बड़ाकर लोग घा पाते हैं (ये कोठे—अ० ना०, १०४); अपनी दुकान बड़ा कर और साना आदि खाकर बे रिहसलों में आते (पैतरे—अश्क, १५); दूसरे दिन सांझ को बाबू प्रेमचंदकर एक्के पर सवार होकर आये । मे दुकान बड़ा रहा था (प्रेमा०—प्रेमचंद, २३४)

### दुख का घूंट पीना

दुःख को चुपचाप सह जाना । प्रयोग—दुःख की घूंट पीकर वह सदा के लिए प्यासी रह गई (बौने—रा० रा०, ६४)

### दुख का पहाड़ टूटना,—के समुद्र में पड़ना,—सागर में डूबना

घोर दुःख पड़ना । प्रयोग—जनम न पीन सहे सुकुमारा । तेहि सो परा दुख समुद्र घपारा (पद०—जायसी, ३४११); धर मूर्खि परत नहि जानी । दुख सागर-भांझ समानी (सू० सा०—सूर, १५००); तावेंती पर दुःख का पहाड़ टूट पड़ा (सु० सु०—सुदर्शन, २४५)

(समा० मुहा०—दुःख का बादल टूटना)



### दुःख काटना,—दलना

दुःख दूर करना । प्रयोग—इक दुख राम राइ काटहु मेरा (कबीर ग्रंथा०—कबीर, २९०); सुन्दर मुजान प्रात प्यारे महा कोमल हूँ दीन के हृद को देया दुखनि कहा जरी (घन० कवित्त—घना०, २२७); अब सके काट ही न दुख अपना तब रहे होठ काटते हम क्या (चुमते०—हरिऔध, ९७)

### दुःख की खान होना

दुःख का मूल होना । प्रयोग—अवगुन मूल मूल प्रद प्रमदा सब दुख खानि (राम० (अर) तुलसी—७५०)

### दुःख की घटा

अपार दुःख । प्रयोग—देख कर घाती उमड़ती दुख-घटा, घाँस में आँसू उमड़ आता नहीं (चुमते०—हरिऔध, १०)

### दुःख के बादल सर पर मंडराना

दुःख की सम्भावना होनी । प्रयोग—ऐसा प्रतीत हो रहा है कि मानों हम दोनों के जीवन पर दुःख के बादल मंडरा रहे हैं (चित्र०—मग० वर्मा, ३५); सदा पास बादल दुखों के घिरेंगे (चुमते०—हरिऔध, १९२)

### दुःख के बीज बोना

दुःख का कारण पैदा करना । प्रयोग—मूरदास प्रभु धृति धर्म दिग, दुख के बीज बग (सु० सा०—सूर, ४१२५)

### दुःख के समुद्र में पड़ना

दे० दुख का पहाड़ टूटना

### दुःख के सागर में डूबना

दे० दुख का पहाड़ टूटना

### दुःख का दहना

दुःख दूर करना । प्रयोग—तेरे सकल दुखनि को दहौ (सु० सा०—सूर, ४०६)

### दुःख दलना

दे० दुख काटना

### दुःख देखना

कष्ट सहना, तकलीफ उठानी । प्रयोग—बार-बार कह चुकी हूँ, देख, ऐसे दुख देखेगी (परस—जेनेन्द्र, ५५)

### दुःख बंटाना

सहानुभूति करनी—कष्ट या संकट के समय साव देना । प्रयोग—एक नागरलवा बेचारी थी, जितना बूझ पाती दुख बटा लेती (सुहाग०—अ० ना०, १२०)

### दुःख भरना

कष्ट या संकट के दिन काटना । प्रयोग—जाइ परो हमरो का करिहै, आग करे आपे दुख भरिहै (कबीर ग्रंथा०—कबीर, १३४); अब एह जीवन बादि जो मरना । भयत पहार जरम दुख भरना (पद०—जायसी, ४९५) कही कबहुं हमारी मुचि करत । हम ती उन बिनु बहु दुख भरत (सु० सा०—सूर, ४८१८); हे महाराज, कम तो इस जनीति से मयूरा में राज करने लगा श्री उपसेन दुख भरने (प्रेम सा०—ल० ला०, ११)

### दुःख भागना

दुःख दूर होना । प्रयोग—मुनतहि सीता कर दुख भागा (राम० (सु)—तुलसी, ८०८)

### दुःख मंडराना

दुःख का चारों ओर से घेरना । प्रयोग—कब मुसीबत न सामने घाई कब भवा दुख रहे न मंडराते (बोल०—हरिऔध, १६५)

### दुःख में गारना

दुःख में डूबे रहना । प्रयोग—इतनी बात अलि कहियो हरि सी, कब लगि यह मन दुख में गारें (सु० सा०—सूर, ४६७९)

### दुःख में जलना,—पगेहोना,—बाचलेहोना

अत्यन्त शोकाकुल होना । प्रयोग—कोसलपति गति मुनि जनकीरा । मैं सब लोग सोक बस वीरा (राम० (अ)—तुलसी, ६२८); ता मुख हेतु दहत दुख दाहन, छिन छिन जरत जुड़ात हियोरी (सु० सा०—सूर, २४८४); सहित बरिख दुख जरें जो कोई । परी एक मुख बिसरें सोई (पद०—जायसी, ३५१); हरीचंद, पूछे किन उन सी कब लौ पा दुख जरी (भा० ग्रं० (२)—मारतेन्दु, ४०२); हा ! मीमांसा इस दुख पगे प्रश्न की क्यों कहूँ मैं ? (प्रिय०—हरिऔध, १९२)



### दुख में जलाना,—पीसना

कष्ट पहुँचाना। प्रयोग—चूर बसो चित्त परि परेननि एहो कठोर ! अजौ दुख पीसत (घन० कवित्त—घना०, ६६); चित्त-बाह निबाह की बात रही हित कं नित ही दुख दाह दयो (घन० कवित्त—घना०, ११४)

### दुधड़ी साधना

शुभ मङ्गल निकालना। प्रयोग—बेटे राम उगी समय दुधड़ी साथ दो हो दिन बाद सौटने का बायदा कर मिर्जा-पुर को खाना हो गए (अपनी खबर—उग्र, ८०)

### दुचित्ता होना

(१) मन एकाग्र न होना। प्रयोग—जीने की में आशा करता हूँ किन्तु मरने पर भी मैं तय्यार हूँ। दुचित्त होना क्या ठीक है ? (राधा०—अ० स०, १५८)

(२) मन में चित्ता या संदेह होना। प्रयोग—जोरि कर कमल निहोरि कहै कौसिक सो आयमु भो राम को सो मेरे दुचित्तई है (गीता० (बाल)—तुलसी, ८६)

### दुध-मुँहा

अत्यन्त भोला और नादान। प्रयोग—सूय दूध मुख करिअ न कोहू (राम० (बाल)—तुलसी, २८२); दुधमुँहा बालक जब तक अज्ञ है कैसा प्रसन्न रहता है (मट्ट नि०—वा० मट्ट, १७७); अगर वह बच्चों के बालकोचित्त तोतले ढंग से बात करे तो उसे दुधमुँहा कहा जाता है (शेखर (१)—अज्ञेय, १४४-१४५); एक बेमुँह की किसी दुधमुँहो पर यों बिपत-खाना न तुमको चाहिये (बोल०—हरिऔध, ४)

(२) बहुत कम उम्र के, दूध पीते। प्रयोग—हिन्दुओं में तो दुधमुँहे बालको तक का विवाह हो जाता है (मान० (१)—प्रेमचंद, २७२)

### दुनिया उजड़ना

सर्वस्व नष्ट हो जाना। प्रयोग—उसकी बोली में जरा भी हेर फेर हुआ कि सहदेव की इज्जत घूल में मिल जायेगी और उसके बाप की दुनिया भी उजड़ जायेगी (मैला०—रेणु, १३८); परन्तु देवी ! मेरी दुनिया तो उजड़ चुकी है (मो०—जग० माधुर, ६१)

### दुनिया की हवा लगना

सांसारिक अनुभव होना। प्रयोग—उसे कभी दुनिया की

हवा नहीं लगने दी (मान० (७)—प्रेमचंद, ३७)

### दुनिया के ऊपर होना

असाधारण होना, ऐसा रूप, भाव या स्थिति होनी जो सब में न हो। प्रयोग—भूपन भनत महाराज सिव-राज बड़े बानी दुनी ऊपर कहाए कौन हेत हो (भूपण ग्रंथा०—मृपण, १५८)

### दुनिया देखना

अनुभव प्राप्त करना या होना। प्रयोग—वह घूमकर दुनिया देख घायी है तो यहाँ पर बंटे दुनिया देख चुकी हूँ (मान० (१)—प्रेमचंद, २७०); मैंने दुनिया कम नहीं देखी है (वाण०—ह० प्र० द्विप०, १३); मैंने भी देखी है ज़िदगी दुनिया भी ली देख (बुद्ध०—वचन, ५६)

### दुनिया देखे होना

अनुभवी होना। प्रयोग—दिल में कहते होंगे यह तो सटिया गया है पर यहाँ दुनिया देखे हुए है (रंग० (१)—प्रेमचंद, ३४६); हीरो जी ने दुनिया देखी है (इंस्टा०—भग० वर्मा, ७६)

### दुनिया सर पर उठाना

बहुत ज़िद करके सब को हैरान करना। प्रयोग—यह वही बेसमझ बच्चा है, जो दो सप्ताह पहले मिठाइयों के लिए दुनिया सिर पर उठा लेता था (मान० (८)—प्रेमचंद, ८)

### दुनिया से उठ जाना

(१) मृत्यु होनी। प्रयोग—एक दुनिया से उठा है चाहता और है उठती जवानी एक की (चमत्ते०—हरिऔध, १६१)

(२) रिवाज का एकदम लुप्त हो जाना।

### दुनिया से कूच कर जाना,—बेड़ा पार होना

मृत्यु होनी। प्रयोग—हाँ वह इस दुनियासे कूच कर गए हैं (विप०—प्रेमी, २४); हंसते-हंसते इस दुनिया से भट उसका बेड़ा पार लगे (मी० ग्रंथा० (२)—भारतेन्दु, ५६५)

(समा० मुद्रा०—दुनिया से नाता तोड़ना,—चल बसना)

### दुनिया से बेड़ा पार होना

३० दुनिया से कूच कर जाना



### दुनियादार होना

(१) सांसारिकता में लिप्त होना। प्रयोग—जो दुनियादार है और जिनकी वृत्तियाँ बहिर्मुखी हैं, वे उस रंग की लीला को अनुभव ही नहीं करते, अपने रास्ते चले जाते हैं (कबीर—ह० प्र० द्वि०, १७८)

(२) व्यवहार-कुशल होना।

### दुनियादारी

सामान्य लोक व्यवहार की बातें। प्रयोग—परन्तु निरी फिलासफी की बातों से भी तो दुनियादारी का काम नहीं चल सकता (परीक्षा०—श्री० दास, ३)

### दुबले होना

(१) रिक्त होना—रहित होना। प्रयोग—कोऊ कृपा बल-दूवरो हूँ करि क्यों नहि साधन के सब साथी (घन० कवित्त—घना०, १७८)

(२) चितित होना।

### दुम के पीछे लगे रहना

हर समय साथ लगे रहना। प्रयोग—साहब शिकार खेलने आये या दौरे पर मेरा कर्तव्य है कि उनकी दुम के पीछे लगा रहूँ (गोदान—प्रेमचंद, १५)

(समा० मुहा०—दुम के पीछे फिरना)

### दुम भाड़ कर चल देना

चुपचाप चले जाना। प्रयोग—मिस्टर तला दावपेंच के आदमी थे, सौदा पटाने में × × गला दवाने में, दुम भाड़कर निकल जाने में सिद्धहस्त (गोदान—प्रेमचंद, ९४)

(समा० मुहा०—दुम दबाकर चल देना)

### दुम दबाकर भागना

डरपोक कुत्ते की तरह डरकर भागना। प्रयोग—यही हालत रही तो बहुत से निर्माता दुम दबाकर भाग जायेंगे (दूधगाछ—दे० स०, २५५); पासीराम शर्मा के लोगों के बोध के सामने दुम दबाकर अपने घर में जा छिपा (झूठा०—यशपाल, १०४); तुम्हारी छुरी की चमक और तुम्हारे तेवर देखकर ही उसकी रुह फना हो जायेगी। सीधा दुम दबाकर भागेगा (गबन—प्रेमचंद, २३१)

### दुम दबा जाना

(१) डर कर चले जाना। प्रयोग—असौडे के कवि सम्मेलन में तुम्हें डरकर ही घाना पड़ेगा। यह पाद रखो और वहाँ 'दुम-दवाने' से काम नहीं चलेगा (पद्म० के पत्र—पद्म० शर्मा, ४१)

(२) डर कर काम बीच में छोड़ देना। प्रयोग—जब काम करने का अवसर आता था तो लोग दुम दबा लेते थे (मान० (३)—प्रेमचंद, ८९)

### दुम दबा बैठना

चुपचाप भयभीत होकर बैठ जाना। प्रयोग—आपके पास जमीन नहीं, जापदाद नहीं × × लेकिन आप भी दुम दबाये बैठे रहते हैं (गोदान—प्रेमचंद, १७८)

### दुम बनना या होना

किसी के साथ अपने को भी रखना। प्रयोग—आप बड़े ईमानदार की दुम बने हैं? डोगिया कहीं का! (गबन—प्रेमचंद, ११८)

### दुम हिलाना

कुत्ते की तरह किसी के आपीन या आज्ञाकारी होना। प्रयोग—केवल अप्सरों के सामने दुम हिला-हिला कर किसी तरह उनके कृपा-पात्र बने रहना और उनकी सहायता से अपनी प्रजा पर आतंक जमाना ही हमारा उद्यम है (गोदान—प्रेमचंद, १५); जाने जायेंगे, दारोगा के आगे-पीछे दुम हिलाएँगे—कुत्तों की तरह भौकेंगे, पर कुछ कर नहीं सकते (चतुरी०—निराला, ६७)

### दुरदुर करना, दुरदुराना

तिरस्कार पूर्वक हटाना, कुत्ते की तरह भगाना। प्रयोग—तो तो करे त बाहुओं, दुरि दुरि करे तो जाउ। ज्यू हरि राखें तू रहौ, जो देवे सो जाउ (कबीर ग्रंथा०—कबीर, २०); भगवान मेरा जाने हम लोग अकूतों को किस दुरी तरह दुरदुराते हैं (निशि०—वि० प्र०, ११६)

(समा० मुहा०—दुर-दुर फिट-फिट करना)

### दुर-दुर-मारी होना

सब घोर से तिरस्कृत होना। प्रयोग—जब तक दादा-



दादी रहे, इन्हें कोई कुछ न कह सका। उनके बाद दुरदुर मारी हो गई (बूटो—अ० ना०, १२)

### दुरदुराना

दे० दुर दुर करना

दुर्भाग्य के कोड़े खाना

बहुत बुरी घबस्वा में दिन बिताना। प्रयोग—और इसी लिए दुर्भाग्य के कोड़े खाकर भी मैं बदल न सकी। (सुहाग०—अ० ना०, १६४)

दुलका दीड़ना

धीरे-धीरे मध्यम गति से दीड़ना। प्रयोग— $\times \times$  के पीछे पीछे लट्टू लिए दुलकी दीड़ते आते हैं (चतुरी०—निराला, ३६)

दुलत्तियां भाड़ना

(१) बिना मतलब तिरस्कार या प्रहार करना। प्रयोग—भाड़ता है अगर दुलती तो क्यों न दो बात हम उसे देवे (बोल०—हरिऔध, २३४)

(२) दोनों बातों से मारना।

(ममा० मुहा०—दुलत्तियां छांटना,—फेंकना)

दुलार रखना

आदर-स्नेह करना। प्रयोग—राधा मोर दुलार मोसार्ई (राम० अ)—तुलसी, ६५७)

दुश्मनी मोल लेना

जानबूझ कर दुश्मनी ठानना। प्रयोग—मैं आप को इन लोगों से दुश्मनी मोल लेने की सलाह किसी भी हालत में नहीं देता (मूले०—मग० वर्मा, ४५३)

दुहाई देना

अपने बचाव के लिये किसी का नाम लेकर पुकारना। प्रयोग—आजन्म नीच घरानियों के जो रहे धधिराज हैं  $\times \times$  देते अहो! मदम की बे भी दुहाई आज है (जय०—गुप्त, ७८); राजासाहब ने उसकी जमीन पापा को दे दी है। बेचारा आजकल गली गली दुहाई देता फिरता है (रंग० (१)—प्रेमचंद, ३३६)

दुहाई फिरना

बारों और बर्षों या प्रचार होना; राजा होने की पोषणा होनी। प्रयोग—मूरदास प्रभु भक्त बछल की, ब्रज में फिरी दुहाई (सू० सा०—सूर, ३७१६); जब प्रतापरवि भवउ

नप फिरी दोहाई देत (राम० बाल)—तुलसी, १६३); तामें मेन नृपाई पाई। निक बोली जनु फिरत दुहाई (नंद० ग्रंथा०—नंद०, १२२); प्रेम-दुहाई फिरी घन-आनंद बाधि लिये कुल नेम गुहासी (घन० कवित्त—घना०, १२४); जो दोहाई न धर्म की फिरती तो बिपत पर बिपत बढी जाती (चुमते०—हरिऔध, १७५)

दुहाई बोलना

जय-जयकार करना। प्रयोग—बोलो भाई राम की दुहाई (कबीर ग्रंथा०—कबीर, १११)

दुहाई होना

श्रेष्ठता मानी जानी। प्रयोग—तुमने जब दंगल मारे थे, तब मारे थे। अब तुम बड़ नहीं हो। आजकल भैरो की दुहाई है (रंग० (१)—प्रेमचंद, ३८)

दूध और पानी अलग करना या होना

दूध का दूध और पानी का पानी करना या होना

(१) निष्पक्ष निर्णय करना या होना। प्रयोग—गरीबों का गला काटना दूसरी बात है। दूध का दूध और पानी का पानी करना दूसरी बात (गोदान—प्रेमचंद, ११६); सरकार तश्कीकात कर रही है। वक्त पर दूध और पानी छलन कर देगी (घोटी०—निराला, २७); अदालत में जब दूध का दूध और पानी का पानी किया जायगा तब वक्ते जल्द बेदाग छूट जायेंगे (कला०—उग्र, ८५)

(२) वास्तविकता प्रगट होनी। प्रयोग—हम जातहि वह उचरि परंगी, दूध दूध, पानी सो पानी (सू० सा०—सूर, २३४१); नीर धीर छानइ दरबारा। दूध पानि सो करइ निनारा (पद०—जायसी, ११५)

दूध कांजी की तरह

वह मेल जिसका परिणाम ग्रहितकर हो। प्रयोग—कुछ न फल है दूध कांजी का मिले जो मिले तो दूध जल जैसा मिले (चुमते०—हरिऔध, ५०)

दूध का दूध और पानी का पानी करना या होना

दे० दूध और पानी अलग करना या होना

दूध का धोया

(१) बिलकुल सदा, जिसमें कोई खोट नहीं हो। प्रयोग—



कम से कम अपने लिए तो मैं यह कदापि नहीं कह सकता कि उस समय तक मैं परम सच्चरित्र दूध का धोया ही था (ये कोठे०—अ० ना०, २७); दिखाई देने से क्या हुआ, अब भी उसका मन दूध का धोया है (तिल्ली—प्रसाद, ७); वस, तांगे वाले ही सबको लूटे खाते हैं, और जितने अमले-मुलाजिम हैं, सब दूध के धोए हुए हैं (रंग० (२)—प्रेमचंद, २०९)

(२) अत्यंत स्वच्छ, शुद्ध । प्रयोग—हर वस्तु मनोरम बनकर हो साके दूध की धोई (नूर०—भक्त, ८०)

### दूध का पानी पानी का दूध करना

न्याय को अन्याय और अन्याय को न्याय करना । प्रयोग—न्यायालय कानून की बारीकियों में नहीं पड़ता, जिसमें उलझकर, जिनकी पेचीदगियों में फँसकर, हम अक्सर पथभ्रष्ट हो जाया करते हैं, अक्सर दूध का पानी और पानी का दूध कर बैठते हैं (गवर्न—प्रेमचंद, ३२१)

### दूध की कुल्लियां करना

खूब सुख-वैभव में रहना । प्रयोग—माता और पुत्र सदा दरिद्रता से सड़ते ही रहे जब कि नम्बूदी पिता के घर दूधों कुल्ले किये जाते थे (ये कोठे०—अ० ना०, ६४); संसार में सभी बालक दूध की कुल्लियां नहीं करते (निर्मला—प्रेमचंद, १८१)

### दूध की बू मुंह से न छूटना

लड़कपन टफका पड़ना, बहुत भोला होना । प्रयोग—पर बेचारी आरती के मुंह से तो अभी दूध की बू भी नहीं छूटी (गवर्न०—दे० स०, ९१)

(समा० मुहा०—दूध की बू मुंह से आना)

### दूध की मक्खी

गुच्छ, उपेक्षणीय । प्रयोग—रेव संवाद कहते बलु भाषी, भामिनि भइत दूध कइ माली (समा० (अ)—तुलसी, ३८९); लेकिन जब वह देखता, और लोग मूर्खों पर ताब दे रहे हैं, केवल मैं ही दूध की मक्खी बना दिया गया हूँ, तो उसके अंतस्तल से एक लंबी ठंडी आह निकल आती (मान० (१)—प्रेमचंद, १३८)

### दूध की मक्खी की तरह निकाल फेंकना

उपेक्षा पूर्वक अलग कर देना । प्रयोग—सूर काढ़ि डार्यो ब्रज तें ज्यों, दूध मांझ तें माली (सू० सा०—सूर, ४७६८); कितने कमीने जो बड़े बन बैठे हैं मानियों में से दूध की मक्खी की भांति निकाल दिए जाते (भा० प्र० (१)—भारतेन्दु, ५९४); हाँ, जो लोग इनके सम्बन्धी हैं XX वे कोट पतलून घादि देख के न चौकेंगे, किन्तु यदि इनके भोजन की खबर पा जाय तो क्षण भर में दूध की सी मक्खी निकाल बाहर करें (प्र० पी०—प्र० ना० मि०, १६२); कहीं ऐसा न हो कि लड़की के दहेज के लिए पहलवान ने दस हजार की जो रकम छलम रख छोड़ी है, उसे हथियाकर लड़की को बाद में दूध की मक्खी की तरह अलग फेंक देने की बात किसी बदमाश ने न सोची हो (जहाज०—इ० जोशी, १६०)

### दूध के जले का मट्टा फूंक फूंक कर पीना

किसी बड़े नुकसान या बुरे फल के बाद मामूली काम में भी सावधानी बरतनी । प्रयोग—रीझि-बूझि सबकी प्रतीति-श्रीति यही डार, दूध को जर्यो पियत फूँकि फूँकि मसो हों (विनय०—तुलसी, २६०); तब से बेचारे बहुत संभल कर चलते थे । फूंक फूंक कर पांव रखते, दूध के जले थे, छाँछ भी फूंक फूंक कर पीते थे (गवर्न—प्रेमचंद, २); अन्तमें उस बेचारे ने 'दूध का जला मट्टा भी फूंक फूंक कर पीता है' के अनुसार एक बूढ़ी विधवा भाभी को अपने घर की लक्ष्मी बनाकर निश्चितता की सांस ली (अतीत०—महादेवी, ४५)

### दूध के दांत न टूटना

(१) बचपन बना रहना, कम-उम्र होना । प्रयोग—अभी दूध के दांत नहीं टूटे, मुभागी ने धोसू को गोदलेलाया है सो आज वह उसी से शिल्ली करता है (रंग० (२)—प्रेमचंद, २७८); दूध का दांत है नहीं टूटा क्यों भला दांत पीस पत सोते (बोल०—हरिऔध, ९२) (÷)

(२) अननुभव की होना । प्रयोग—देखिए प्रयोग (१) में (÷)



दूध के फेन को बड़ से तोड़ना

१७४

दूर की कौड़ी खाना

**दूध के फेन को घस से तोड़ना**

घल्लत कोमल व्यक्तियों पर कठोर विपत्ति डालना । प्रयोग—सौध मातु कह विधि वृषि बांकी जो पय फेन घोर पवि टांकी (राम० (अ)—तुलसी, ६३९)

**दूध-पी से नहलाना**

बहुत धनवि-सत्कार करना । प्रयोग—सागीर सामन्त ने दूध-पी से हमें स्नान सा करा दिया (बाण०—८० प्र० द्वि०, १५५)

**दूध देनेवाली गाय की लात खाना**

जिससे लाभ हो उसकी भिड़कियाँ सह लेना । प्रयोग—वह डरा से रुठ जाते तो सो-सो तरह से मनाया करती । दूध देने वाली गाय की लातें भी खानी पड़ती हैं (सु० सु०—सुदर्शन, १७१)

**दूध पानी की तरह, दूध में पानी की तरह**

एकसाथ होना । प्रयोग—घब कैसे निवारि जाति है, मिली दूध ज्यों पानी (सु० सा०—सुर, २२७५); जहा ! कैसा विलक्षण प्रेम है × × भीकृष्ण से जल में दूध की भाँति मिल रही है (भा० प्र० (१)—भास्तेन्दु, ४१९); उन लोगों ने धर्मनीति घोर समावनीति को दूध पानी की भाँति मिला दिया है (भा० प्र० (३)—भास्तेन्दु, ९००); कुछ न कह है दूध काँजी सा मिले, जो मिले तो दूध जल जैसा मिले (चुमते०—हरिऔध, ५०)

(समा० मुहा०—**दूध पानी का संग**)

**दूध-पीता बच्चा**

शिशु । प्रयोग—इन दूध पीते बालकनि रोटी हित रोहत विरवि (राधा०ग्रन्था०—राधा० दास, ७६६) (÷); बेटियाँ ब्याह दूध पीते से बन सकेंगे न दूध के योगे (चुमते०—हरिऔध, १५९)

(२) नादान । प्रयोग—तो फिर गाँव-बूढ़ा होकर भी दूध पीते बच्चे बन जा रहे हो (बह्म०—६० स०, ९३); देविण प्रयोग (१) में (÷) भी

(३) वह बच्चा जो अभी माँ का दूध पीता हो । प्रयोग—उनके चार सड़के घोर एक दूध पीती लड़की थी (कुशी०—निराला, ७९)

**दूध में पानी की तरह**

दे० **दूध पानी की तरह**

**दूधों नहाओ पूतों फलों**

धन और संतान की वृद्धि हो । प्रयोग—दूधों नहावे और वह पूतों फला करे (ईशा०—ईशा०, ८६)

**दूधों नहाना**

मुख से बोलन बिताना । प्रयोग—रटत-रटत लट्ठो, जाति-पाति-भाति पट्ठो जूठनि को लालची नहीं न दूध नहो हो (विनय०—तुलसी, २६०); मेरे पास इतनी लक्ष्मी थी बेटी, कि यदि भाग्य खोया होता तो प्राजीवन दूधों नहाती (सुहाग०—अ० मा०, ४०)

**दूनकी लेना,—हांकना**

वींग की बातें करनी, बहुत बड़-बड़ कर बातें करनी । प्रयोग—अपनी स्वामिभक्ति मैत्री की हाँका करते थे जो दून (नूर०—मक्त, १११); दिलचलों के सामने वन दिलचले दून की ले दिल अगर दूना हुआ (चोखे०—हरिऔध, १८)

**दूनकी सूफना**

सामर्थ्य के बाहर की बात सोचनी । प्रयोग—तुम्हारा पेट भरा है तुम्हें दूनकी सूफती है (भा० प्र० (३)—भास्तेन्दु, ८९७)

**दूनकी हांकना**

दे० **दूनकी लेना**

**दूर करना**

जलग करना, न रहने देना, मिटाना । प्रयोग—कबीर पड़िबा दूर करि, जावि पड़ा संवार (कबीर ग्रंथा०—कबीर, ३८)

**दूर की कौड़ी**

बड़ी विविध या बड़ी बात । प्रयोग—योरपीय कला-समीक्षा की यह बड़ी ऊँची उड़ान या दूर की कौड़ी समझी गई है (विला० (१)—शुक्ल, १६४)

**दूर की कौड़ी खाना**

दूर की सोचना । प्रयोग—सबमूष २३ साल हो गये,



## दूर की बात होना

३७५

दूसरा द्वार न होना

इतनी भारी भूल किसी से न पकड़ी गई थी। आप दूर की कौड़ी लाए हैं (गु० नि०—बा० मु० गु०, ४५३); वतमान को सम्बोधित करते हुए कवि ने दूर की कौड़ी ढूंढ लाने की कोशिश की है (ब्रह्म०—दे० स०, ३४०); मैं कभी कल्पना भी न कर सकता था कि वह इतनी दूर की कौड़ी लायेंगे (प्रेमा०—प्रेमचंद, १७८)

## दूर की बात होना

मुश्किल बात, बाद में आने वाली स्थिति। प्रयोग—हो गया दूर नाति का सब दुख दूर की बात है गई सोची (चुमते०—हरिओध, ६२)

## दूरकी लेना,—हांकना

दीग हांकनी, बड़ी बड़ी बातें करनी। प्रयोग—अभी ऐसी दूर की ले रहे हो, कल को नामजद हो जाओ, तो वह बातें भूल जायें (प्रेमा०—प्रेमचंद, १९); दूर की लगे बकेंगे वहक कर काम के हित जी हुआ वैं ही नहीं (चुमते०—हरिओध, ८६); और दूर की नहीं हांकते पर फिर भी कवि हैं (ईस्टा०—मय० वर्मा, २२)

## दूर की सूफना

दूर की कल्पना होनी। प्रयोग—याफल को भी दूर की सुभी (कठ०—दे० स०, ९८)

## दूर की हांकना

दे० दूर की लेना

## दूर के डोल सुहावने होना

दूर की वस्तु में रोष न जान पड़ना। प्रयोग—चलू दूर भट्ट ही वृथा मटकी लगे दूर के डोल सुहावने री (ठाकुर०—ठाकुर, २०)

## दूर-देश

परलोक। प्रयोग—औसर सम्हारो न तो जन जायबे के संग दूरि देस जायबे को प्यारी नियराति है (घन० कवित्त—घना०, १०६)

## दूर घहाना

दूर कर देना। प्रयोग—दुष्ट तकं सब दूरि बहाई (राम० (अ)—सुलसी, १०७२)

## दूर से प्रणाम करना,—सलाम करना

कोई सम्बन्ध न रखना, बचकर रहना। प्रयोग—मैं ऐसे मेहमान से दूर से ही प्रणाम कर्कंगा (प्रेमा०—प्रेमचंद, ४४) ऐसी समझ को दूर से सलाम कीजिए (मान० (४)—प्रेमचंद, २००)

(समा० मुहा०—दूर से हाथ जोड़ना)

## दूर से सलाम करना

दे० दूर से प्रणाम करना

## दूर हटना

(१) मनोमालिन्य के फलस्वरूप निकटता का न रहना। प्रयोग—बीजयुग्म ने अनुभव किया कि चित्रलेखा उससे दूर हटती जा रही है और वह चित्रलेखा से (चित्र०—भग० वर्मा, ७२)

(२) हट जाना, अलग होना।

(समा० मुहा०—दूर होना)

## दूषण देना,—लगाना

किसी को दोषी ठहराना। प्रयोग—बहु भांति विविहि लगाइ दूषन नयन बारि बिमोचहीं (राम० (बाल)—सुलसी, १०९); सोचहि दूषन देवहि देहो (राम० (बाल)—सुलसी, १८३)

## दूषण लगाना

दे० दूषण देना

## दूसरा द्वार देखना

दूसरे का सहारा खोजना। प्रयोग—तो हम द्वार देखते दूजो होते जहां दयाल (मा० ग्रं० (२)—भारतेन्दु, ५७८)

(समा० मुहा०—दूसरा घर देखना)

## दूसरा द्वार न होना,—स्थान न होना

घन्य जायब न होना। प्रयोग—ऊधो हमहि सीस कट देहो, हरि बिनु घनत न ठांव रे (सु० सा०—सूर, ४२३४); दूबरें को दूसरों न द्वार राम दया घाम राबरीऐ गति बल-विभव बिहीन की (कवि०—सुलसी, २१९); पाल्पी प्यार को निहारो नीके तुम हो निहारो, हाहा जनि टारो पाहि द्वार दूसरो न हो (घन० कवित्त—घना०, २१२); नेही-निर-



दूसरा स्थान न होना

३७६

दृग जोड़ना

मोर एक तुम ही लौ मेरी दोर नाहीं और ठीर, काहि सांकरे संभारिये (घन० कवित्त—घना०, २२५)

**दूसरा स्थान न होना**

दे० दूसरा द्वार न होना

**दूसरे की पत्तल से कौर छीनना**

दूसरे का हिस्सा हड़प जाना । प्रयोग—पर यह तो दूसरे के पत्तल से घास छीनना हुआ (शेखर (२)—अज्ञेय, १२७)

(समा० मुहा०—दूसरे के मुंह का कौर छीनना)

**दूसरों का जीवन बनाना**

दूसरों की उन्नति करवाना । प्रयोग—सारी आयु दूसरों का जीवन बनाने में समाप्त कर दी किन्तु आय मुधा सरोवर सोझने चले तो मिली नमक की भील (विष्णु—प्रेमी, १९)

**दूसरों का मुंह ताकना**

दूसरों से सहायता पाने की आशा करनी । प्रयोग—काम करके कुछ उपार्जन करना शर्म की बात नहीं । दूसरों का मुंह ताकना शर्म की बात है (कर्म०—प्रेमचंद, १६)

(समा० मुहा०—दूसरों का मुंह देखना)

**दूसरों की ताली पर नाचना, —के ताल पर नाचना**  
दूसरों से प्रेरित होकर कोई काम करना । प्रयोग—तुम्हारी भलमनसी का लोग बखान करने लगे, तो जब तुम सोचते हो कि ऐसा काम करूँ, जिसमें और बड़ाई हो । इस तरह दूसरों की ताली पर नाचना न चाहिए (रंग० (२)—प्रेमचंद, १५३); वह दूसरों की ताल पर नाचता है और मशीन के साथ काम करता हुआ स्वयं मशीनबत् हो जाता है (मेरे०—गुलाब०, ७०-७१)

**दूसरों के घर में आग लगाकर हाथ सेंकना**

दूसरों का अपकार कर के अपना लाभ करना । प्रयोग—मेरे डाक्टर साहब को खूब जानता हूँ, वह उन लोगों में है जो दूसरों के घर में आग लगाकर अपना हाथ सेंकते हैं (कर्म०—प्रेमचंद, १०५-६)

**दूसरों के ताल पर नाचना**

दे० दूसरों की ताली पर नाचना

**दूसरों के लिए कुआं खोदना**

दूसरों का अनिष्ट करना । प्रयोग—जो कोउ पर हित कूप खनावे, परं सु कूपहि माहीं (सू० सा०—सूर, ४३०५)

**दूसरों के लिए कुआं खोदने वाले का खुद कुआं में पड़ना**

अनिष्ट करने वाले का अनिष्ट होना । प्रयोग—जो कोउ पर हित कूप खनावे परं सु कूपहि माहीं (सू० सा०—सूर, ४३०५)

**दूसरों के लिए गड्ढा खोदने वाले के लिए कुआं तैयार होना**

दूसरे का बौद्धा अहित करने वाले का बड़ा अहित होना । प्रयोग—जो दूसरे को गड्ढा खोदेगा, उसके लिए कुआं तैयार है (प्रेमा०—प्रेमचंद, ३१५)

**दूसरों के सिर ठीकरा फोड़ना**

दूसरों को दोषी ठहराना । प्रयोग—दूसरों को उबार लेते हैं एक दो बीर बिपद में गिर । पर बहुत लोग पाक बनते हैं ठीकरा फोड़ दूसरों के सिर (चुमते०—हरिऔध, १०)

**दूसरों के हाथ बिक जाना**

किसी के पूर्ण अनुगत होना । प्रयोग—तब न बेकार जायगे वन क्यों जब बिके हाथ दूसरे के हैं (चुमते०—हरिऔध, १०५)

**दूसरों के हाथ चोटी होना**

दूसरों के बच में होना । प्रयोग—है न खोटी बात इससे दूसरी हाथ में जो घोर के चोटी रहे (बोल०—हरिऔध, ७)

**दृग छकना**

देखकर पूर्ण तृप्ति होनी । प्रयोग—दृग छकत है छवि ताकत ही मृगनेनी जब मधुपान छके (घन० कवित्त—घना०, १३०)

**दृग जोड़ना, दृष्टि जोड़ना**

घाँस मिलाना, एकटक देखना । प्रयोग—काहें सकुचत दृष्टि न जोड़त, मोहन रूप बिहारी (सू० सा०—सूर, ३१०४); पति के संग नारी, सब मुखकारी, तिन में रार्माहि दृग जोरी । जहं तहं चहुँ घोरनि, मिली चकोरनि ज्यों चाहति



चंद चकोरी (केशव०(२)—केशव, २४५); जिहि देखे लाछन लगै, तासो दृष्टि न जोर (वृ० स०—वृ०, ३५)

### दृष्टि उठाना

देखना । प्रयोग—हम किसी की प्रेम रस पूर्ण दृष्टि को इधर उठने न देंगे (रंग० (१)—प्रेमचंद, ३१५)

### दृष्टि ऊंची करना

महान और श्रेष्ठ विचार लाना या कार्य करना । प्रयोग—अपना उद्देश्य महान करो, अपनी दृष्टि ऊंची करो (अम्ब०—रा० वै०, ४२)

### दृष्टि गड़ना

एकटक देखना । प्रयोग—शशि किसी ओर नहीं देख रही थी, ठीक सामने ही उसकी दृष्टि गड़ी थी (शेखर (२)—अज्ञेय, १६४)

### दृष्टि जोड़ना

दे० दृग जोड़ना

### दृष्टि भांचरी होना

कम दिखना । प्रयोग—कबहुं कहति ब्रजनाथ बन गए जोवत मग भई दृष्टि भांचरी (सू० सा०—सूर, ३९१)

### दृष्टि डालना

(१) देख जाना—पड़ लेना । प्रयोग—ऐसे शब्दों की सूची १२६ पृष्ठ तक ही है, उसके आगे के फ़ारमों में अंत तक एक दृष्टि और डाल जाओ (पद्म० के पत्र—पद्म० शर्मा, १२५)

(२) देखना, विचार करना ।

### दृष्टि डोलना

दृष्टि घूमना, किसी ओर ध्यान जाना । प्रयोग—आता-कानी आरसी निहारिबो करोगे की लौ, कहा मो चकित दसा त्यों न दीठि डोलिहै (घन० कवित्त—घना०, ५९)

### दृष्टि तानना

अच्छी तरह देखना । प्रयोग—रूप घरे घुनि लौ घन आनंद सूक्ति बूझ को दीठि मुतानी । सोचन लेत सगाय के संग अनंग अधर्म की मूरति मानो । है किधो नाहि लगी अलगी सो लखी न परे कवि क्यो हूं प्रमानो । तो

कटि-भेदहि किकिनि जानति तेरी सौ एरी मुजान हो जानी (घन० कवित्त—घना०, १२१)

### दृष्टि-तार बांधना

उन्मुख होना । प्रयोग—इतने घनदेखें देखिबेई जोग इसा भई तें तो अनाकानी ही सौ बांध्यो दीठि-तार है (घन० कवित्त—घना०, १०३)

### दृष्टि देना, फेंकना

देखना, ध्यान देना । प्रयोग—पाद परें हूं तें प्रीतम त्यों कहि 'कैसव' क्यों हूं न में दृग-दीनी (केशव० (१)—केशव, ४१); दाता जयसिंह दोष बाते तो न दीनी कहूँ बंरिन कौ पीठि घोर दीठि परनारी को (जग०—पद्माकर, ९५); महानामन् ने परिषद के बाहर-भीतर दृष्टि फेंककर आँख नीची कर ली (वैशाली० (१)—चतुर०, १७)

### दृष्टि दौड़ना या दौड़ाना

(१) दूर तक की सोचना, ध्यान जाना या ध्यान देना । प्रयोग—असामान्य का ओर लोगों की दृष्टि भी अधिक दौड़ती है और टकटकी भी अधिक लगती है (चिंता० (१)—शुक्ल, २६३)

(२) दूर तक देखा जाना या देखना । प्रयोग—अपनी पीसी सतेज घ्रांखों पर क्षीण सांवले हाथ की छाया कर दूर-दूर तक दृष्टि को दाढ़ाता रहता (अतीत०—महादेवी, ७४)

### दृष्टि फेंकना

दे० दृष्टि देना

### दृष्टि फेरना

(१) ध्यान प्राकृष्ट करना । प्रयोग—इतना कह कर जननि आपकी, केवल दृष्टि इधर है फेरी (वैदेही०—हरिप्रोद्य, ६७)

(२) कृपा करना । प्रयोग—भगवान् कभी तो हमारी ओर दृष्टि फेरेंगे (मा—कौशिक, २०)

### दृष्टि-बंध खेलना

नजरबंद करना, जादू के प्रभाव से जादूगर की जो इच्छा हो वही सब दर्शकों को दिखलाई पड़ना । प्रयोग—राघो



दृष्टि में आना

३७८

देवताओं की आंख पड़ना

काल्हि दिस्टि बंध खेला (पद०—जायसी, ३५३)

(समा० मुहा०—दृष्टि बंधक करना, दृष्टि बांधना)

दृष्टि में आना

(१) जंचना, अच्छा जान पड़ना। प्रयोग—मालति होइ अमि चित्त पईठी। घोर पुहुप कोइ आव न डीठी (पद०—जायसी, ४१२०)

(२) ध्यान में आना।

दृष्टि में खटकना

बुरा लगना, अप्रिय होना। प्रयोग—अब केवल इन लोगों की दृष्टि में इमाम हुसैन बचे थे कि रात दिन खटकते थे (मा० ग्रंथा० (३)—भारतेन्दु, ४०५)

दृष्टि लगना या लगाना

किसी ओर एकटक देखना। प्रयोग—चकमक अनी देखि कै चाइ दिस्टि तनि लाग (पद०—जायसी, ४३५)

दे मारना

दे देना, हरा देना। प्रयोग—किस लिये कमहिम्मतो से काम ले बैरियों को क्यों नहीं दे मारते (सुमते०—हरिऔध, ९९)

देखकर मक्खी निगलना

जानकारी में कोई बुरा काम करना। प्रयोग—अब मैं देखकर कैसे मक्खी निगल लूं? (झुठा०(२)—यशपाल, ३५५); देखकर मक्खी नहीं निगली जाती (सु० सु०—सुदर्शन, ९४)

देख न सकना

बर्दाश्त न कर सकना। प्रयोग—अपने अलंकार ओहि भावा देखि न सकें सिंगार परावा (पद०—जायसी, ४०१२); सबति सुभाउ सकइ नहि देखी (राम० (अ)—तुलसी, ३५५)

देख लेना

समझ लेना, संभाल लेना, शक्ति माप लेनी। प्रयोग—देख लगे घाना पुलिस को भी (परली०—रेणु, ४५७); तुम घोखेबाज हो, ठग हो, मक्कार हो। पर मैं तुम्हें देख ही लूंगा (कुछ—५० पु० वल्ली, ४६)

देखते बनना

सुन्दर लगना। प्रयोग—बहु विनोद, बहु लीला रचना,

देखें हो बनि आवें (सु० सा०—सूर, ४७६५)

देखा नहीं जाना

सहन न होना। प्रयोग—घनभल देखि न जाइ तुम्हारा (राम० (अ)—तुलसी, ३५७)

देगची का एक चावल टटोल कर सब जान लेना

एक नमूने से पूरे का अंदाज लगा लेना। प्रयोग—पर यहां पर तो देगची के एक चावल को टटोल कर भी उनके इस भूट की कलाई खुल जाती है (ये कोठे०—अ० ना०, ११९)

देने के नाम मुरली मनोहर होना

भाव दिखाना पर देना नहीं। प्रयोग—उन्हें ऐसे लोगों से ही काम नहीं पड़ा जो सत्य सुनना न चाहते थे पर ऐसे लोगों से भी जो ठकुरमुहातों मुनाने पर भी देने के नाम मुरलीमनोहर थे (गुलेरी ग्रंथा० (१)—गुलेरी, ५७५)

देवता कूच कर जाना

होश-हवास जाता रहना, किसी कारण से ठक् हो जाना। प्रयोग—दीवान तो दीवान उन प्वादों के घाने से मेरे देवता भी कूच कर गए थे (मा० मा० (१)—कि० गो०, १३३); तुम्हें देखकर मेरे देवता कूच कर जाते हैं (स्कंद०—प्रसाद, २९); बावू के देवता कूच कर गये (सु० सु०—सुदर्शन, १९५)

देवता मनाना

देवता से बिनती करना, देवता को प्रसन्न करना, मनोती मानना। प्रयोग—पुनि तुम्ह जाहु वसंत लै पूजि मनावहु देव (पद०—जायसी, १५६); पहिले से अधिक परिश्रम करते थे तो भी दिन रात देवी-देवता मनाते बीतता था (प्र० पी०—प्र० ना० मि०, ६९); प्रति दिन कितने ही देवता भी मनाती (प्रिय०—हरिऔध, ६२)

देवताओं की आंख पड़ना

देवताओं को अच्छा लग जाना अर्थात् मृत्यु होनी। प्रयोग—सुभागी ग्यारह साल की बालिका होकर भी घर के काम में इतनी चतुर और खेती बारी के काम में इतनी निपुण थी कि उसकी मां लक्ष्मी दित्त में हरती रहती थी कि कहीं लड़की पर देवताओं की आंख न पड़ जाय (मान० (१)—प्रेसबंद, २४९)



### देश-निकाला देना

अपने राज्य की सीमा से निर्वाचित कर देना । प्रयोग—  
कहु केहि रकहि करौ नरेसू कहु केहि नृपहि निकासी देसू  
(राम० (अ)—तुलसी, ३९६)

(समा० मुद्दा०—देश से निकालना)

देह की खबर न होना,—दशा गंधाना,—न संभलना  
तन बदन की सुष न होना—बेसुष । प्रयोग—मुकुर छाह  
निरखि देह की दसा गवाई (सू० सा०—सूर, २८१०);  
तुलसिदास प्रभु हरं सबन्हि के मन, तन रही न संभार  
(गीता० (अ)—तुलसी, २९); देह की न खबरि सुगेह की  
चलावै कौन गात न सोहात न सोहाती परिवारिका  
(भूषण ग्रंथा०—भूषण, २२५)

### देह की दशा गंधाना

दे० देह की खबर न होना

### देह को लगना

शरीर को पुष्ट बनाने में सहायक होना । प्रयोग—खाने  
दे बह । यही तो उमर है, सब देह को लगता है (वीने०—  
रा० रा०, ३२)

### देह चुराना

सिपटी सी रहना । प्रयोग—अब तक ऐसा ही एक  
आदमी उसका पिता था, जिसके सामने वह सिर झुकाकर  
देह चुराकर निकलती थी, अब उनकी अवस्था का एक  
आदमी उसका पति था (निर्मला—प्रेमचंद, ४०-४१)

### देह छूटना,—छोड़ना,—तजना,—त्यागना

मृत्यु होनी । प्रयोग—मेरी देह छूटत जम पटए, जितक  
दूर घर मौ (सू० सा०—सूर, १५१); तो मैं बिनय करउं  
कर जोरी । छूटउ बेगि देह यह मोरी (राम० (बाल)—  
तुलसी, ७३); तजिहउं तुरत देह तेहि हेतु (राम० (बाल)—  
तुलसी, ७७); मम कर तीरथ छाड़िहि देहा (राम० (अ)—  
तुलसी, ७३०); छाड़िगी देह जु देखें बिना अहौ देह न कान्ह  
कहैं ह्व दिखाई (केशव० (१)—केशव, ८८); सखि कहियो  
वा निदुर सों रही छूटिबें देह (मति० मक०—मतिराम,  
२१३); तीसरे दिन उम साधू ने देह तेयाग दिया (मैला०—  
रेणु, ४९)

### देह छोड़ना

दे० देह छूटना

### देह टूटना

ज्वर या यकान आदि के कारण बदन में दरं होना ।  
प्रयोग—नौकरी में जहां पांच छः घण्टे हुए कि देह टूटने  
लगी, जम्हाइयां घाने लगीं (गवन—प्रेमचंद, २७०)

### देह डलना

शरीर में चुस्ती न रह जाना, बुढ़ापे के चिन्ह मज्जर घाना ।  
प्रयोग—उसकी ही उम्र अभी क्या थी । छत्तीसवां ही  
साल तो था पर × × सारी देह डल गयी थी (गोदान—  
प्रेमचंद, ५)

### देह तजना

दे० देह छूटना

### देह त्यागना

दे० देह छूटना

### देह धरना

जन्म लेना, अवतार लेना । प्रयोग—वै दिन कब आवेंगे  
माइ । जा कारनि हम देह धरी है मिलिबौ अंग लगाइ  
(कबीर ग्रंथा०—कबीर, १९१); नंद जसोदा बचन बंधायो ।  
ता कारन देही परि छापी (सू० सा०—सूर, २२३७); नाम  
एकतनु हेतु तेहि देह न धरी बहोरी (राम० (बाल)—तुलसी,  
१७३)

### देह न संभलना

दे० देह की खबर न होना

### देह पाना

किसी योनि में जन्म लेना । प्रयोग—तामस असुर देह  
तिन्ह पाई (राम० (बा)—तुलसी, १३५)

### देह बिसारना,—भूलना

तन बदन की सुष न रहना । प्रयोग—सती जलन कूं  
नीकली पीव का सुमिर सनेह । सबद मुनत जीव निकल्या,  
भूलि गई सब देह (कबीर ग्रंथा०—कबीर, ७१); दास तुलसी  
नेह बिबस बिसरी देह, जान नहि आगु तेहि कान धौ को  
ही (गीता० (अ)—तुलसी, १८); 'नंददास' के प्रभु नंद-  
नवन, कुंवरि निरखि देह, गेह भूलै (नंद०ग्रंथा०—नंद, २९२)



## देह भूलना

### दे० देह विस्तारना

#### देह में आग लगना

क्रोध जाना। प्रयोग—मेरे मुँह पर भाइयों का बगान न किया करो, उनका नाम सुनकर मेरी देह में आग लग जाती है (गोदान—प्रेमचंद, ३९)

#### देह रखना

जीवित रहना। प्रयोग—राखों देह नाप केहि खाँगे (राम० अ)—तुलसी, ७३४)

#### देह लहरना

बहुत क्रोध से शरीर कांपना। प्रयोग—हम लोगों को इस गांव में बसने दीजिएगा या नहीं? सुनकर देह लहरने लगती है (परती०—रैणु, १५३)

#### देव फिरना,—रुठना

भाग्य प्रतिकूल होना। प्रयोग—अबहूँ सो देव मोहि पर रुठा (राम० लं)—तुलसी, ९७५; सति जब देव फिर जाता है तो क्या क्या नहीं होता (मा० प्र० १)—भारतेन्दु, ५४)

#### देव रुठना

#### दे० देव फिरना

#### दो अंगुल ऊँचा होना,—बढ़ा होना

कुछ बढ़कर होना। प्रयोग—उनकी पत्नी उनसे भी दो अंगुल ऊँची थी (मान० ३)—प्रेमचंद, ७३); वह भी शरारत का पुतला था, पीसू से भी दो अंगुल बड़ा हुआ (रंग० १)—प्रेमचंद, ९०)

#### दो अंगुल बढ़ा होना

#### दे० दो अंगुल ऊँचा होना

#### दो आँख से देखना

भेद-भाव करना। प्रयोग—मैंने सन् १८८८ ई० में इण्डियन नेशनल काँग्रेस से मूखालिकत करके हिन्दू-मुसल-मानों को दो आँखों से देखने का सवाल पैदा किया (गु० नि०—दा० मु० गु०, २५३)

#### दो आँख बहाना

(१) दुःख प्रगट करना। प्रयोग—यहाँ आकर मुझे एक और मित्र की याद भी लड़पा रही है। दुष्येता पुरानी पढ़ गई थी, दिन के उल्टे मुख चले थे कि फिर हरे हो गये

उनके लिए भी दो आँख बहा लूँ तो आगे बढ़ूँ (पद्म पराग—पद्म० शर्मा, ३३५)

(२) थोड़ा रो लेना।

(समा० मुहा०—दो आँख गिराना,—डालना)

#### दो कदम देना

प्रवृत्त होना। प्रयोग—हित की कनौड़ी लौड़ी मई ये अनंदघन, फिरें क्यों पिछौड़ी नेह-मग दग द्वै गई (घन० कवित्त—घना०, १६०)

(समा० मुहा०—दो कदम आगे बढ़ना,—चलना)

#### दो कौड़ी का

अत्यन्त तुच्छ, किसी काम का नहीं। प्रयोग—जिसका व्याह नहीं हुआ, सरकार, उसकी जिंदगानी दो कौड़ी की (रंग० १)—प्रेमचंद, ४२६); यहाँ साला दो-दो कौड़ी का आदमी बड़ा बोल सुनाता है (बौने०—रा० रा०, १९४); मैं क्या सिफारिश करूँगा, दो कौड़ी का आदमी (गबन—प्रेमचंद, २१६)

(समा० मुहा०—दो कौड़ी का भो नहीं)

#### दो गाल बात करना

कुछ बातें करनी। प्रयोग—आप तो गाल चीर देंगे ही क्यों न दो गाल और बतिया लें (गोल०—हरिश्चंद्र, ८०)

#### दो गाल हंस-बोल लेना

थोड़ा हंस-बोल लेना। प्रयोग—यह क्यों नहीं कहते कि इसी बहाने दो गाल हंसने बोलने गया था (गोदान—प्रेमचंद, २६२)

#### दो-चार

कुछ थोड़े। प्रयोग—देस भला परिलोक विराना, जन दोर चारि नरे पूछो साध सयांना (कबीर ग्रंथा०—कबीर, १६७); क्यों न बोलूँ, तुम तो दो-चार दिन के मेहमान हो, जो कुछ पड़ेगी वह तो हमारे ही गिर पड़ेगी (प्रेमा०—प्रेमचंद, ५०)

#### दो चार होना

सामना करना। प्रयोग—देवरानी घोर जेठानी के इकट्ठे रहने से चेतन को नित्य किसी न किसी नयी समस्या से दो चार होना पड़ता (चेतन—प्र५६, २५५)



दो चित्ता मन होना

३८१

दो नौकाओं पर बैठ कर नदी पार करना

### दो-चित्ता मन होना

मन एकाग्र न होना । प्रयोग—मनुष्य का मन जब XX किसी प्रकार की चित्ता से दो चित्ता रहता है तब उसकी मुखच्छवि तमसाच्छन्न रहती है (सा० सु०—वा० भट्ट, १); भों भों करि कै कान फोरि चित दुचित करावै (राधा० प्रथा०—राधा० दास, ५०)

### दो जीभ वाली

दुरंगी बात करने वाली । प्रयोग—द्विजिह्वे, रस में विष मत घोल (साकेत—गुप्त, ३०); कर दिखायें उसे कहें जो हम जीभ मुंह में कभी नहीं दो हो (चुमते०—हरिऔध, १४२)

### दो टप्पी बात

दो-तरफ़ी बात । प्रयोग—इस प्रकार चुकलजी कभी स्पष्ट उत्तर न देते थे सदैव दुटप्पी बात कहते थे (चित्र०—कीशिक, ५७)

### दो टूक बात करना

(१) थोड़े में स्पष्ट बात करना । प्रयोग—जकरी बात करती भी तो बस, दो टूक (झुठा०<sup>१</sup>(१)—यशपाल, ९१); बात दो टूक थी और मुलभी हुई (अजय०—देवराज, २५३); सब की सलाह है कि तुम एकबार मनीजर के पास जाकर दो टूक बातें कर लो (मान० (२)—प्रेमचंद, २५४); बिना भूमिका के बात इस तरह दो टूक सामने डाल दी गई तो वह अचकचाया (परस—जैनेन्द्र, ३५)

(२) बेरुखी से बात करना ।

(समा० मुहा०—दो टप्पी बात करना,—टूकी बात करना)

### दो दांत वाला

बहुत नादान, भोला । प्रयोग—यह भी लिखा था—मेरी दो दांत की लड़की, उसके सामने दूसरे विवाह की बात (कुल्ली०—निराला, १७)

### दो दिन का

बहुत थोड़े समय का, कुछ दिन का । प्रयोग—सूर दिना हैं यज्ञ जन मुख दै, साद चरन पुनि गैहों (सू० सा०—९६)

O. P.—185

सूर, ४०४५); दोई दिन भीतर बिगोई मुनि आगरे सों कोई दिन जैहै गढ़ोई खालियर को (भूषण ग्रंथा०—भूषण, २२५)

### दो दिन का सपना

थोड़े दिनों का खेल-तमाशा । प्रयोग—सब फोस्ट साटक है तुलसी अपनोन बछु सपनो दिन ई (कवि०—तुलसी, १२५)

(समा० मुहा०—दो दिन का मेला)

### दो-दो चोंचें होना

आपस में कहा-मुनी होनी । प्रयोग—निरंजन से दिन में एकाध बार इस विषय को ले कर दो-दो चोंच हो जाना अनिवार्य हो गया (कंकाल—प्रसाद, १६९)

### दो-दो बातें करना

कुछ बातें करना । प्रयोग—भला अपने इस व्याकुल प्रेमी की दो-दो बातें तो सुन ली होती (राधा० ग्रंथा०—राधा० दास, ७०५); मैं अभी उनसे दो-दो बातें करके लौट आई हूँ (कर्म०—प्रेमचंद, ३४३)

### दो-दो हाथ दिखाना

अपनी शक्ति का परिचय देना । प्रयोग—गुण्डों के साथ हम भी गुण्डे बन सकते हैं, हम भी दो-दो हाथ दिखा सकते हैं (कठ०—दे० स०, २५२)

### दो-दो हाथ होना

मारपीट होनी या मुकाबला होना, तर्क वितर्क होना । प्रयोग—मैं बिना पुस्तकों की सहायता के ही उनसे अभी शास्त्रार्थ में दो-दो हाथ करने को तैयार हूँ (मृग०—वृ० दर्मा, २५२)

### दो-धारी तलवार

हर स्थिति में बुरा करने वाली । प्रयोग—निर्मला उनकी दो धारी तलवार से कांपती रहती थी (निर्मला—प्रेमचंद, ४३)

### दो नौकाओं पर बैठ कर नदी पार करना

विरोधी पक्षों का अवलम्बन करके सफलता प्राप्त करने का प्रयास करना । प्रयोग—आप दो नौकाओं पर बैठकर



नदी पार करना चाहते हैं, यह असम्भव है (रंग० (२)—प्रेमचंद, २३१)

### दो बूंद आंसू डालना

घोड़ा भी दुःख प्रगट करना । प्रयोग—घांसुओं से वह नहा कैसे सके जो नहीं दो बूंद आंसू डालता (बोल०—हरिऔध, ६०)

(समा० मुहा०—दो बूंद आंसू गिराना,—टपकाना)

### दो-मुँहा साँप

दोनों छोर से अहित करने वाला । प्रयोग—राजा साहब पर दो मुँहें साँप की फबती डाक्टर महोदय को लोट-पोट कर देती थी (प्रेमा०—प्रेमचंद, १११)

### दो-रंगी चाल

दोनों तरफ चलना, कहना कुछ करना कुछ । प्रयोग—मन में कहा, आप मेरे साथ दो रंगी चाल चल रहे हैं (प्रेमा०—प्रेमचंद, ९४)

### दो-रुखा होना

घबचि दिखलाना, दो-तर्फी बात करना । प्रयोग—“आप सही बात कहिए”—मित्र कुछ दो रुखे होकर बोले (कुम्भी०—निराला, ११६)

### दो-रुखी चाल

बोलेंबाजी । प्रयोग—कम से कम मैं तो यह दो-रुखी चाल न चल सकता (रंग० (१)—प्रेमचंद, ४१२)

### दो रुचियों की छाती जुड़ना

दो भिन्न रुचिवालों का एक मत होना । प्रयोग—भारतीय स्त्री का कर्तव्य वह सब है जो पति को प्रिय लगे वना दो रुचियों की छाती जुड़ती भी नहीं (वीने०—रंग० (१), ३७)

### दो रोटियाँ होना

अलग-अलग होकर खाना अलग-अलग बनना । प्रयोग—जानती नहीं, दो रोटियाँ होते ही दो मन हो जाते हैं (मान० (१)—प्रेमचंद, १०)

### दो रोटियों का ठिकाना होना

भरण-पोषण की सामान्य व्यवस्था हो जानी । प्रयोग—मैं निरंतर इस चेष्टा में रहा कि कहीं किसी प्रकार की

कोई नौकरी मिल जाय और दो रोटियों का ठिकाना लग जाय (जहाज—इ० जोशी, १०)

### दो रोटि कमाना

सामान्य भरण-पोषण के लायक कमाना । प्रयोग—उसकी माँ चाहती थी कि वह अपने हाथ दो रोटि कमा लेने के योग्य बन जाय (कंकाल—प्रसाद, २३१)

### दो शब्द कहना

कुछ थोड़ी बात कहनी । प्रयोग—लोग फिर भी आग्रह करते रहे कि रानी गोडशाली अपने मुख से दो शब्द अवश्य कहें (ब्रह्म०—दे० स०, ४४२)

### दो सिर होना

(१) जवर्दस्ती मृत्यु को बुलाने वाला काम करना । प्रयोग—दूध माय केहि रतिनाथ जेहि कहुं कोपि कर धनु सरु धरा (राम० (बाल)—तुलसी, ९५)

(२) दो तरह की बातें करना ।

### दो हाथ बढ़कर

(१) बढ़कर, अधिक । प्रयोग—तू तो अमर से भी दो हाथ आगे बढ़ी जाती है (कर्म०—प्रेमचंद, २१२)

(२) और अधिक धूर्त होना या घेतान होना ।

### दोनों आम मीठा होना

दोनों तरह से लाभ होना । प्रयोग—बेचारा लेखक मारा जाता है । प्रकाशक के तो दोनों आम मीठे हैं (मेरे०—गुलाब०, ८२)

### दोनों चूल् बराबर करना

आमदनी के अनुसार खर्च करना । प्रयोग—लेकिन मित्रों के आतिथ्य सत्कार ही तक रहता तो शायद ताहिर अली किसी तरह खींचतान कर दोनों चूल् बराबर कर लेते (रंग० (२)—प्रेमचंद, २२०)

### दोनों भुजा उठाकर

सबके सम्मुख धोषणा करके । प्रयोग—सत्य कहूँ दोउ भुजा उठाई (राम० (बाल)—तुलसी, १७४)

### दोनों हाथ कट जाना

एकदम अशक्त-असमर्थ हो जाना । प्रयोग—जायदाद



बची रहेगी, तो हम इस हीनावस्था में भी अपने दुखी भाइयों के कुछ काम आ सकेंगे। अगर वह भी निकल गई, तो हमारे दोनों हाथ कट जायेंगे (रंग० (२)—प्रेमचंद, ४३९)

### दोनों हाथ लड़्डू

हर तरह से अनुकूल स्थिति या लाभ होना। प्रयोग—दुहं हाथ मुद मोदक मोरे (राम० (अ)—तुलसी, ५५०); हम लोगों के तो दोनों हाथ लड़्डू हैं (राधा० प्रथा०—राधा० दास, ५९७); आपके तो दोनों हाथ लड़्डू हैं (दुधगाछ—दे० स०, ९६)

### दोनों हाथ सकेरना

खूब बटोरना। प्रयोग—फेरियं क्यो दुहं हाथ सकेरियं जो बिधिना घर बैठे दयो बित (घन० कवित्त—घना०, १९९)

(समा० मुहा०—दोनों हाथ से बटोरना)

### दोनों हाथों (से) लूटना

अच्छी तरह लूटना। प्रयोग—ये लोग प्रजा को दोनों हाथों से लूट रहे हैं (रंग० (१)—प्रेमचंद, २९८)

### दोनों हाथों से

सहयं। प्रयोग—अली बहादुर ने बड़े भीठे स्वर में जवाब दिया—दोनों हाथों से जनाव (झांसी०—वृ० वर्मा, १४४); प्रेम से यदि वह मुझे एक छात्रा भी दे दें, तो मैं दोनों हाथों से लू (गहन—प्रेमचंद, ४१); तो बना दिल सब दिनों दूना रहे दान दोनों हाथ दस मूना करें (चोखे०—हरिऔध, १७३)

### दोपहर ढलना

दोपहर बीतनी। प्रयोग—दूसरे दिन जब दुपहर डले शीला के घर से कमला लौटी और मुन्नु उसकी साड़ी का छोर छोड़कर मटकूर सा बैठ कर रोटी खाने लगा तो वह बोली—(बीने०—रा० रा०, १६७)

### दोप चढ़ाना

दोपी ठहराना। प्रयोग—नेकु ढरं सुधरं सब काज अकान इतो अपलोक चढ़यं (घन० कवित्त—घना०, २००)

(समा० मुहा०—दोप मढ़ना,—लादना)

### दोप गुण न गिनना

बुरा न मानना। प्रयोग—कौशिक कहा छमिअ अपराध। बाल दोप गुण गनहि न साधू (राम० (बाल)—तुलसी, २८१)

(समा० मुहा०—दोप न धरना)

### दोस्ती गांठना

दोस्ती का सम्बन्ध बनाना। प्रयोग—दोस्ती गांठें ऐसों से, जिनके घर में खाने का ठिकाना नहीं (मान० (१)—प्रेमचंद, ३११); तुम्हारी मर्जी हो तो तुम भी किसी से दोस्ती गांठ लो (बूँद०—अ० ना०, २२९); मैंने छुट्टन मियां से दोस्ती गांठी है (मा—कौशिक, २६१)

(समा० मुहा०—दोस्ती जोड़ना)

### दोहरा बदन

कुछ स्थूलता लिए शरीर। प्रयोग—वह दोहरे बदन को, प्रतिभाशाली महिला की (मान० (१)—प्रेमचंद, २६१)

### दौड़-धूप करना

बहुत प्रयास करना। प्रयोग—तुमने दौड़धूप की थी, तब कहीं जा के चीजें आई थीं (मान० (७)—प्रेमचंद, ६३); वह बच्चों के यहां से जब तक घोपधि ला-लाकर रोगी को देता जाता है और इधर उधर दौड़धूप करता जाता है तब तक उसके चित्त में जो संतोष रहता है × × यह उसे कदापि न प्राप्त होता, यदि वह रोता हुआ बैठा रहता (चिंता० (१)—शुक्ल, १४); सुदरी, इतनी दौड़धूप करने पर तो प्रेम का आनंद नहीं रहता (कामना—प्रसाद, ९३)

(समा० मुहा०—दौड़-धूप मचाना,—लगाना)

### दौड़ में पीछे रह जाना

स्पर्धा में पीछे पड़ जाना। प्रयोग—दौड़ में हम हैं बहुत पीछे पड़े (चुमते०—हरिऔध, ५७)

### दौड़ लगाना

किसी काम के लिये बारबार जाना—बहुत प्रयत्न करना। प्रयोग—साहब ने बड़ी दौड़ लगाई। सरकार पर भी मंत्र चला दिया (रंग० (२)—प्रेमचंद, ३०४)

(समा० मुहा०—दौड़ मारना)



### दौड़ होना

पहुँच होनी, धाव्य होना। प्रयोग—सूनत न घोर कोई निरभय ठौर राम देव सिरमौर, तो लौ दौड़ मेरे मनकी (क० १०—सेनापति, १०१); नेही-निरमौर एक तुम ही लौ मेरी दौर नाही घोर ठौर काहि सांकरै संभारिये (घन० कवित्त—घन०, २२५)

### दौड़े आना

(१) सहज उपलब्ध होना। प्रयोग—साव दो साल में जब आवासीय सफलता होगी घोर वार्षिक लाभ होने लगेगा तो पूँजी साफ ही आप दौड़ी आवेगी (रंग० (१)—प्रेमचंद, ७९)

(२) तुरंत आना।

### द्रष्टि होना

दया छाने के कारण पूर्व कठोरता का कम होना; अनुकूल होना। प्रयोग—बेहि दीन पिघारे बंद पुकारे इवउ सो भी भगवाना (राम० (बाल)—तुलसी, १९६); लोक बेद साज करि कीजेन सखाई एती, द्रष्टि पियारे नेकु दया उपनाइ के (भा० ग्रंथा० (२)—भारतेन्दु, ५२५)

### द्राचिड़ी प्राणायाम करना

सीधे काम को धुमा फिरा कर करना। प्रयोग—तुम्हारी व्याख्या का द्राचिड़ी प्राणायाम तो पूरा गोरखधंधा हो गया है (पट्टम० के पत्र—पट्टम० शर्मा, १३१); अतएव आप अपने नियम के फंदे में डालकर लोगों से नयी, नयियाँ, नयियों की, नयियों ने इत्यादि रूप लिखाने का द्राचिड़ी प्राणायाम न कराइये (सा० सी०—महा० द्विवेदी, ७३)

(समा० महा०—द्राचिड़ी प्राणायाम खींचना)

### द्रौपदी का चौर

कमी न समाप्त होने वाली वस्तु; बहुत लंबी। प्रयोग—सब सिंगार सुंदर सजे, बेठी मेज बिछाई, भयो द्रौपदी को

बसन, बासर नहि न बिहाइ (मति० मक०—मतिराम, २०४); प्रीतम पियारे नंदलाला बिनु हाथ यह सावन की रात किसी द्रौपदी की सारी है (भा० ग्रंथा० (२)—भारतेन्दु, १५९)

### द्वार खुलना

(१) उपाय या मार्ग निकलना। प्रयोग—जो मानसिंह इनके मामा, जिनके अनुग्रह से इनकी उन्नति का द्वार खुल गया  $\times \times \dots$  (राधा० ग्रंथा०—राधा० दास, १६६)

(२) काम मिलना। प्रयोग—बच्चा के लिए कोई न कोई द्वार खुलेगा ही (गबन—प्रेमचंद, ६)

### द्वार पर खड़े होना

किसी भावी परिस्थिति के निकट होना। प्रयोग—जानते हो तुम जिनगी के द्वार पर खड़े हो (भोर०—जग० माधुर, १७)

### द्वार पर झांकना

सहायता के लिए जाना। प्रयोग—धर्म-कर्म वाले बाह्य तो उसके द्वार पर झांकते भी नहीं (गबन—प्रेमचंद, १६१)

### द्वार लगाना

(१) दरवाजा बंद होना। प्रयोग—मैं कई दिन से देखता हूँ ऊषा के मंदिर का द्वार दिन रात लगा रहता है (प्रेम सा०—सा० सा०, २४६)

(२) दरवाजे से सटना।

(३) द्वार तक पहुँच जाना।

### द्वार होना

उपाय होना, मार्ग होना। प्रयोग—इतिहास तथा जीवन चरित्र का पठन-पाठन तो मानो खान वाले मुज्तन पुरुषों से परिचय करा देने का एक उत्तम द्वार है (मट्ट नि०—बा० मट्ट, ३७)



## ध

### धका खाना

(१) अपमानित होना, कामयाब न होना, कटु अनुभव होना। प्रयोग—धब कुछ दिन धक्के खाने से उसकी धक्कल धपने आप ठिकाने आ जायगी (परीक्षा०—पी० दास, १०७); इसे जितना आमान समझ रहे हो, उतना घासान नहीं है। अच्छे-अच्छे धक्के खा रहे हैं (गवन—प्रेमचंद, ३३); उनकी सादगी सभा सोसाइटियों में उनके प्रति अशिष्ट व्यवहार का कारण बन जाती थी। इसकी बदौलत उन्हें कभी कभी धक्के तक खाने पड़ते थे (पट्टपराम—पद्म० शर्मा, ११६)

(२) धमकल होना-दुर्बल होना। प्रयोग—वृष्टियों का पड़ना उस समय धक्का सा खा गया (देवकी०—रा० रा०, २३)

### धक्का लगना

नुकसान पहुँचना, आपात लगना। प्रयोग—उस अवस्था में रंगभूमि की ख्याति को धक्का लगने का भी धन्देसा है (कठ०—दे०स०, ८१); अगर स्वायं को गहरा धक्का न लगा होता तो ये जमींदार स्वदेशी-आंदोलन में कदापि शरीक न हुए होते (चोटी०—निराला, १२)

### धजियां उड़ना या उड़ाना

(१) खूब दुर्गति होनी या करनी। प्रयोग—कला की धजियां उड़ी थीं, साहब (कठ०—दे० स०, ८७); धजियां

मुख की धड़ल्ले से उड़ा धांधली-धुन में बंधे उसमें धंसा (बोल०—हरिऔध, २१२); वे सहज ही में आधुनिक काल के लेखकों की कुलविपुल प्रणाली की धजियां उड़ा सकते हैं (कुछ—प० पु० बरूही, ७२); धजियां उड़ते दहलते जो नहीं सिर उतरते किसलिये वे सी करें (चुमते०—हरिऔध, ७)

(२) टुकड़े टुकड़े करना, बिदीर्ण करना।

### धड़क खुलना

भय या हिचक दूर होनी। प्रयोग—यदि सबकी धड़क एक बारगी खुल जाय तो एक घोर छोटे मुह से बड़ी बड़ी बातें निकलने लगें, चार दिन के मेहमान तरह तरह की करमाइशें करने लगें... (चित्ता० (१)—शुक्ल, ६५); आज भी क्यों है धड़क खुलती नहीं दिल धड़कते तो बहुत दिन हो गये (चुमते०—हरिऔध, ५८)

### धड़ाके से

(१) निस्संकोच भाव से। प्रयोग—जो हमारी बुराई मूर्खता या मुन्धता के प्रमाण या चुके रहते हैं, उनके सामने हम उसी धड़ाके के साथ नहीं जाते, जिस धड़ाके के साथ औरों के सामने जाते हैं (चित्ता० (१)—शुक्ल, ५६)

(२) जल्दी से, चटपट।



### धत्ता बताना

चन्ता करना, हटाना, भगाना । प्रयोग—है इनमें यह शक्ति नहीं जो ये बतलावें धत्ता (मर्म०—हरिप्रोध, १५); सो चालाकीसे उन्हें धत्ता बतानी पड़ी (पैतरे—अश्क, ६४); आप तो अपने भाई हो ठहरे, माहब को धत्ता क्यों नहीं बताने ? (रंग० (१)—प्रेमचंद, १०१)

### धत्ता होना

भागना, हटना । प्रयोग—एक ओर से तो बली भूत बहका रहा है कि अपना बोरिया बंधना बाधो, धत्ता हो (मा० प्र० (१)—भारतेन्दु, ५७१)

### धन जोड़ना

सम्पत्ति एकत्रित करना । प्रयोग—गोट कपट करि यह धन जोड़वो लें धरती में माहवो (कबीर प्र०—कबीर, ११७); लगा जोड़ने अपना धन औरों की आंस बचा कर (कुरु०—दिनकर, ११३)

### धन बरसना या बरसाना

धन की बहुत अधिकता होनी या कर देनी । प्रयोग—तेरे व्यापार ने बिदेसों में धन बरसा दिया है (रिशमो०—राम० वर्मा, १८१)

### धनुष चढ़ाना

धनुष की प्रत्यंघा बढ़ाना । प्रयोग—धनुष चढ़ाई कहा तब तारि करतं पुर छार (राम० (कि)—तुलसी, ७७८)

### धन्ना सेठ होना

अपने आप को बहुत बड़ा समझने वाला या बहुत पैसे वाला । प्रयोग—तुम्हारे दादा ऐसे कोई बड़े धन्ना सेठ न थे (मान० (१)—प्रेमचंद, ७१)

(समा० मुहा०—धन्ना सेठ के नाती)

### धन्ना सेठी बघारना

अपने आप को बहुत बड़ा और श्रेष्ठ मानना । प्रयोग—रात को दूसरों के घर की कुड़ियां सटखटाता है और धन्ना सेठी भी बघारता है (तिल्ली—प्रसाद, १६६)

### धब्बा आना,—लगाना

कलंक लगना, कीर्ति मल्ट होनी । प्रयोग—उसके नारीत्व पर धब्बा आता था । बोली—मैं किसी के दिल का

हाल क्या जानूँ, अम्मा (कर्म०—प्रेमचंद, २०); अबकी बार अंगरेजों के बगले पर दिये नहीं जलाये गये, क्योंकि अंगरेजों ने सोचा इस सम्पर्क से ईसाइयत को धब्बा लग जाने का अंदेश है (शांसी०—वृ० वर्मा, २२३); बेमुझे इतने न बन जावें कभी जो बुरा धब्बा हमें देवे लगा (चुमते०—हरिप्रोध, १३५)

### धब्बा लगाना

दे० धब्बा आना

### धमा चौकड़ी मचाना या होना

ऊधम करना । प्रयोग—नवयुवकों की धमा चौकड़ी एक दूसरे को गाली गलौज × × इन सब की गुंजाइश भले घर में नहीं होती (इस्टा०—भाग० वर्मा, ४५); तू आज घाने पर भी यही धमाचौकड़ी मचा रहा है (तिल्ली—प्रसाद, ४९); कर धमा चौकड़ी भली हचि से क्यों मचा दे धमार गा ऊधम (चुमते०—हरिप्रोध, १३४)

(समा० मुहा०—धमा चौकड़ी करना,—जमाना)

### धर दवाना

पूरी तरह वश में कर लेना । प्रयोग—पर न जाने कब दिन की भटकन की प्रतिक्रिया ने उसे धर दबाया और वह सो गया (शेखर० (२)—अज्ञेय, २३७)

### धरती आकाश एक करना

सुब उद्योग करना । प्रयोग—धर तुम मेरा हाथ बटाओ तो मैं धरती आकाश एक कर दूंगा (सैवा०—प्रेमचंद, ११९)

### धरती छोड़ना

मर जाना । प्रयोग—बहुत दिन तक लोगों ने देवचन्दन को दूसरों की भलाई के लिये घूमते देखा था, पर पीछे उनको भी धरती छोड़नी पड़ी (ठठ०—हरिप्रोध, ६७)

### धरती पर पैर न पड़ना,—न रखना,—सीधे न रखना

बहुत गर्व होना । प्रयोग—यन आनंद रूप गकर भरी धरती पर सीधे न पाव परे (धन० कवित्त—धना०, १९३); वह रांड तो मारे घमण्ड के धरती पर पांव ही नहीं रखती



(गोदान—प्रेमचंद, २९७): पड़किसकर तो धरती पर पांव न पड़ेगा फिर ? (वीने०—रा० रा०, ११३)

### धरती पर पैर न रखना

(१) बहुत लाड़ प्यार मुख मुविधा में पलना । प्रयोग—पल भरि पलग ते भूमि न धरत पाव तेई खान पान छोड़ि बन बिललाती है (भूषण ग्रंथा०—भूषण, २१२)

(२) बहुत गवं होना । प्रयोग—दे० धरती पर पैर न पड़ना

### धरती पर पैर सीधे न रखना

दे० धरती पर पैर न पड़ना

### धरती पर रहने वाले का आकाश चाटने का प्रयत्न करना

असंभव काम करने की चेष्टा करनी, छोटे व्यक्ति का बड़ा काम करने की इच्छा रखना । प्रयोग—बह बड़ राज इन्द्र कर पाटा । धरती पर सरग को चाटा (पद०—जायसी, २३४)

### धरती से उठ जाना

मरना । प्रयोग—इन गीतों के नायक-नायिकाओं को पहचानने वाले लोग अब प्रायः धरती से उठ गए हैं (ये कीठे०—अ० ना०, ५५)

(समा० मुहा०—धरती से उठा लेना)

### धरना देना

अपनी मांग पूरी करवाने के लिए कहीं जमकर बैठ जाना । प्रयोग—यह भी कहते हैं कि एक बार जोधपुर के राजा उदयसिंह जी मथुरा में लक्ष्मी से मिलने गए पर लक्ष्मी जी ने तीन दिन तक उनसे मुलाकात नहीं की क्योंकि उन्होंने मारवाड़ के शासन-गांव (चारणों को दिए हुए) बला कर लिये थे जिसके बास्ते बहुत से चारण आउने में धरना देकर मर गए थे (गुलेरी ग्रंथा० (१)—गुलेरी, २५३)

### धर्म का टीका होना

सब धर्मों में श्रेष्ठ होना । प्रयोग—तात जाउं बलि कीन्हेंहु नीका, पितु आयसु सब धरमक टीका (राम० (अ)—तुलसी, ४२४)

### धर्म का मार्ग

धर्मपूर्ण व्यवहार के सिद्धान्त । प्रयोग—कतह पठित पढ़ि पुरानू । धरम पंथ कर करहि बखानू (पद०—जायसी, २१५)

### धर्म बिगाड़ना

अनैतिक कार्य करना । प्रयोग—दिहातों की लड़कियां, बहुत मजबूरी करने आएंगी और यहां पैसे के लोभ में अपना धर्म बिगाड़ेंगी (रंग० (१)—प्रेमचंद, १२९)

### धर्म रखना,—से न डोलना

कर्तव्यच्युत न होना । प्रयोग—ईश्वर राखा धरम हमारा । जेहमि तैं समेत परिवारा (राम० (बाल)—तुलसी, १८२); जे सपनेहु निज धरम न डोले (राम० (अ)—तुलसी, ५४७)

### धर्म लेना

बलपूर्वक व्यवहार करना । प्रयोग—हे धर्म देवता तुम साक्षी रहना, देखो यह सब मुझे अकेली पाकर मेरा धर्म लिवा चाहते हैं (मा०ग्रंथा० (१)—भारतेन्दु, ३१)

### धर्म से न डोलना

दे० धर्म रखना

### धाक जमना,—बंधना,—बैठना,—होना

खूब रोब-दाब होना, धातक छाना । प्रयोग—उसके कटु वाक्य और तीव्र आलोचना की सारे गांव में धाक बंधी हुई है (मान० (८)—प्रेमचंद, ११); कई जनपदों में भी उसकी धाक थी (वैदेही०—हरिऔध, १४९); × × स्वामी विवेकानन्द की प्रति मानवीय शक्ति की धाक सारे संसार पर जम चुकी थी (चोटी०—निराला, १०); मोहल्ले में भी उसकी धाक फिर बैठ गई (रंग० (२)—प्रेमचंद, १५६); सूरमापन धनर न धाक रखे चाहिये तो बलें न धमकाने (बुभते०—हरिऔध, ८८)

(समा० मुहा०—धाक पड़ना,—रखना)

### धाक बंधना

दे० धाक जमना

### धाक बांधना,—बैठाना

रोब जमाना । प्रयोग—धाक अपनी बांध जग में रहे । एक भंडे के तले वे हो खड़े (बुभते०—हरिऔध, १३३);



केवल एक लेख ने उनकी धाक बिठा दी (प्रेमा०—प्रेमचन्द, १११)

(समा० मुहा०—धाक जमाना)

**धाक बैठना**

दे० धाक जमाना

**धाक बैठाना**

दे० धाक जमाना

**धाक होना**

दे० धाक जमाना

**धाड़ मार कर रोना**

बहुत जोर-जोर से रोना । प्रयोग—मुझ हुआ ससि रोई इफारा । टूटि आंसु नखतन्ह के मारा (पद०—जायसी, ३५/१०); बंसी को उस हालत में देखकर मैं धाड़ मार कर रो पड़ा (जहाज०—६० जोशी, २७); धाड़ मार कर बिलख रो पड़ी रानी भोली (साकेत—गुप्त, ४१०); यह कहते-कहते वह धाड़ मार मार रोने लगा (रंग० (२)—प्रेमचन्द, ३४०)

**धाना धूपना**

कठोर परिश्रम करना । प्रयोग—इस पर भी ऐसे लोगों की संख्या इस देश में अब बहुत नहीं है जो धाए धूपे बिना अपना तथा अपने कुटुम्ब का पालन कर सकते हों (प्र० पी०—प्र० ना० मि०, १५९)

**धारा-प्रवाह**

(१) अनवरत । प्रयोग—क्या सामाजिक, क्या धार्मिक, क्या देशी, क्या विदेशी सभी विषयों पर वे बड़ी सुगमता से अंग्रेजी में धाराप्रवाह बोलते चले जाते थे (चेतन—अशक, १९)

(२) बातों का अनवरत क्रम । प्रयोग—बाबा का धारा-प्रवाह जब धमा तब कुछ देर तक शून्य दृष्टि से मेरी ओर देखते रहे (जहाज०—६० जोशी, १४७)

**धींगा-धींगी करना**

छीना-छपटी करनी, मारपीट करनी । प्रयोग—तो भाई, अब तक यह धींगा-धींगी चलती है चलने दो (प्रेमा०—प्रेमचन्द, २९१)

(समा० मुहा०—धींगा मुश्टी करना,—मस्तो करना)

**धीरज को निगलना**

धीरज न रहने देना । प्रयोग—अमिले रहिबे तै मिले तें कहा, यहि पीर मिलाप मैं धीर मिले (घन० कवित्त—घना०, १०७)

(समा० मुहा०—धीरज छूटना)

**धीरज बंधना**

हिम्मत आनी, आस्वाप्त होना । प्रयोग—भो समद बिप जल भर्या मन नहीं बांधे धीर (कबीर ग्रंथा०—कबीर, ७९)

**धीरज बंधना या बांधना**

धैर्य दिलाना या करना । प्रयोग—धूनी पाई धिति भई सति गुरु बंधी धीर (कबीर ग्रंथा०—कबीर, २५५)

**धीरता भागना**

धीरता न रह जानी, अधीर होना । प्रयोग—सीप बिलोकि धीरता भागी (राम० (बाल)—तुलसी, ३४७)

**धुआं घोटना**

प्राणायाम करना, सांस रोक कर साधना करना । प्रयोग—कहत तिनसौ धूम घूटन, नाहि बालन प्रीति (सु० सा०—सुर, ४३०९)

**धुएं का हाथी होना**

दिखावटी होना, तथ्यहीन होना । प्रयोग—देखत भले, काज के ओसर होत धूम के हाथी (सु० सा०—सुर, ४५५४)

**धुक-धुकी धरकना**

आशंका के कारण हृदय का व्याकुल होना । प्रयोग—सुरगन सभय धुकधुकी धरकी (राम० (अ)—तुलसी, ६००)

(समा० मुहा०—धुकधुकी धड़कना,—बंधना)

**धुन लगना,—सवार होना,—होना**

किसी काम को करने की ओर से लगन होनी । प्रयोग—सकड़ी के कारखाने की धुन सवार है (मूले०—मग० वर्मा, १३८); अब इस उम्र में व्याह करने की धुन सवार हुई है (पद्म० के पत्र—पद्म० शर्मा, १६८-१६९); उन्हें अपने कारखाने की ऐसी धुन सवार है कि वह इस विषय में मेरे मुह से एक शब्द सुनना भी पसन्द न करेंगे (रंग० (१)—प्रेमचन्द,



धुन सवार होना

३८२

धुन उड़ना

३३४); मेम साहब को जेलों को देखने की धुन है (रंग० (२)—प्रेमचंद, १२); वे कभी बात में नहीं घाते-लग गई है जिन्हें कि सच्ची धुन (चुमते०—हरिऔध, १०); या फिर एजुकेशन लाइन ले सकते हो अगर सेवा करने की धुन है (शेखर (२)—अज्ञेय, १३६)

(समा० मुहा०—धुन समाना,—चढ़ना,—बंधना)

**धुन सवार होना**

दे० धुन लगना

**धुन होना**

दे० धुन लगना

**धुरें उड़ाना**

(१) बहुत अधिक मारना, दुर्गति करनी। प्रयोग—जब युगों के अपेड़ों ने इस महान नगरी के धुरें उड़ा दिये होंगे, तब भी इसकी मिट्टी के दर्शन के लिये जम्बूद्वीप के कोने कोने से लोग आवेंगे (अम्ब०—रा० बे०, ४३); हम अपूरे बुरे धुरे पकड़े धर्म के हैं उड़ा रहे धुरें (चुमते०—हरिऔध, १३३); × × पर आप ऐसी ऐसी तकना, बितकना और कुतकनायें करते हैं और ऐसी ऐसी आलोचनायें × × लिखकर इन लोगों के धुरें उड़ाते हैं कि पंडित प्रभा संसार के सारे संस्कृत पंडितों की आंखों में चकाचौंध पैदा कर देती है (सा० सी०—महा० द्विवेदी, १०३)

(२) टुकड़े टुकड़े कर डालना।

**धूनी रमाना**

धूनी जलाकर साधना में लीन होना। प्रयोग—मोफिया न मिली तो जाऊंगा ही नहीं। यही धूनी रमाऊंगा (रंग० (२)—प्रेमचंद, ८५); घर रहे घर सुध नहीं घर की रही अब लगे ठगने रमा करके धुई (चुमते०—हरिऔध, १२४)

**धूप चढ़ना**

धूप का कुछ तेज होना। प्रयोग—अच्छी खासी धूप भी चढ़ गयी और बीरतिह न घाया तो कर्तारो और पीतो दहाड़ मार कर रोने लगी (झुठा०(१)—यशपाल, ३४६); भोक में चाबलवाली गली बुड़ते बुड़ते अच्छी खासी धूप चढ़ आई (ज्ञान०—यशपाल, १२६-२७); चढ़ रही थी धूप,

गमियों के दिन, दिवा का समतमाता रूप (अना०—निराला, ७९)

**धूपमें चूड़ा न सफेद करना,—वाल न पकाना—न सफेद करना,**

बिना अनुभव के जीवन न बिताना, अनुभवही होना। प्रयोग—जुगनू मैं तो उसकी सूरत देखते ही साइ गयी थी। धूप में वाल नहीं सुफेद किये हैं (मान० (१)—प्रेमचंद, २७४); बुढ़िया—आंखों से नहीं पड़ती बेटा अक्ल से पड़ती हूं, धूप में चूड़े नहीं सुफेद किये हैं (मान०(३)—प्रेमचंद, २९); तो हुए चूड़े बने पक्के नहीं धूप में ही वाल उनके हैं पके (बोल०—हरिऔध, २)

**धूप में वाल न पकाना**

दे० धूप में चूड़ा न सफेद करना

**धूप में वाल न सफेद करना**

दे० धूपमें चूड़ा न सफेद करना

**धूप लेना**

धूप का सेवन करना। प्रयोग—चोड़ी देर में भलकारी इसी चबूतरे के पास पड़ूँगी और धूप लेने लगी (झासी०—वृ० वर्मा, ३२९)

(समा० मुहा०—धूप खाना,—सैंकना)

**धूम मच जाना या होना**

(१) बड़ी ख्याति होनी। प्रयोग—नगर में नये तिर्रे से उसकी धूम मची (सुहाग०—अ० ना०, १२२); थोड़े ही दिनों में 'यकवर' की कविता की धूम मची (पद्मपराग—पद्म० शर्मा, २६९); देवते हमारा मुंह जोड़ते थे, स्वर्ग में हमारी धूम थी (चुमते०(म०)—हरिऔध, १)

(२) चारों ओर चलन होना। प्रयोग—रंगरत्नियों की जहां पर धूम थी आंगुष्ठों की है वहीं धारा वहां (चुमते०—हरिऔध, ६४)

**धूल उड़ना**

बरबादी होनी, तबाही आनी, चेहरे पर रौनक न होना। प्रयोग—रंग बिगड़ा ही जाता है, धूल उड़ती ही रहती है (मर्म०—हरिऔध, ७८)



### धूल उड़ाते फिरना

मारे-मारे फिरना। प्रयोग—कण जो हावी पर सवार फिरते थे धाव में वे पांव बल-बल की धूल उड़ाते फिरते हैं (भा० प्र० (१)—मार्तण्ड, ४९५)

### धूल करना

नष्ट कर देना। प्रयोग—कानन उजारि, धूलुमारि, धारि, धूरि कीन्ही, नगक प्रजार्पों, सो बिलोखयो बलु कीस को (कवि०—तुलसी, ७९)

### धूल खाना—छानना

(१) ध्वंस करबाद करना। प्रयोग—सुनि सीता पति सील मुभाउ। मोद न मन, तन पुनक, नयन जल सो नर खेहर साउ (विनय०—तुलसी, १००)

(२) मारा-मारा फिरना। प्रयोग—मैं तो पड़ी कटूगो कि ऐसा सोने का धर छोड़कर उन्होंने बल की धूल ही खानी (यशो०—गुप्त, ७३)

### धूल छानना

दे० धूल खाना

### धूल झाड़ के चल देना

मार खाने पर बिना प्रतिकार के चुपचाप चले जाना। प्रयोग—अत्यंत सीधी भाषा में वे ऐसी गहरी चोट करते हैं कि मार खानेवाला केवल धूल झाड़ कर चम देने के सिवा और कोई रास्ता हो नहीं पाता (कबीर०—४० प्र० दि०, २१६)

### धूल फांकना

मारा-मारा फिरना। प्रयोग—मो नहीं, देस-विदेस की धूल फांकता घूम रहा है यह लक्ष्मी (मूले०—भग० ठमा, १३८); तब से बराबर ज़िन्दगी की सड़क पर चल रहा है। धूल फांकता हुआ (भोर०—जग० माझर, ७८); धूल उनकी है उड़ाई जा रही धूल में मिल धूल वे हैं फांकते (चुभते०—हरिऔध, २१)

### धूल फेंकना

बदनाम करना। प्रयोग—जाति पर धूल फेंकते हैं क्यों तम को धूल में मिलाते हैं? (मर्म०—हरिऔध, ६८)

### धूल में पड़ी होना

अप्यक्त नृच्छ होना। प्रयोग—मैं धूल में पड़ी हुई थी।

धाव लोगों ने मुझे धावाग पर चढ़ा दिया (कर्म०—प्रेमचंद, ७७)

### धूल में मिलना या मिलाना

नष्ट होना या करना। प्रयोग—कछु मारेसि कछु मरेसि कछु मिलएसि धरि धूरि (राम० (सु)—तुलसी, ८१४) 'नद' इन्द्र तें को बहो दीनी धूरि मिलाइ (नंद० संथा०—नंद, २७०); धावमचकारी मुसलमानों ने यहाँ के मंदिरों और देवालयों के साथ जैसी कूरता का बरताव किया, उसमें यहाँ की बची बचाई विद्या का भी धूल में मिल जाना सहज बात थी (गु० नि०—बा० मु० गु०, ११२); उदयपुर काँर धूर सकल गड़ धूर मिलाओ (राधा० प्रथा०—राधा० दास, ७२५); हमारी मर्णादा को धूल में मिलाना चाहती है (रंग० (१)—प्रेमचंद, ३६६); घरमान घास्मान तक के ये मगर जमीन का शिकंजा उन्हें निचोड़ कर धूल में मिलाये देता था (वीने०—रा० रा०, १५५); जब से धर की स्वामिनी हुई, तभी से मानो उसकी तपस्वियों का धारम्भ हुआ और सारी लालसाएं एक-एक कर के धूल में मिल गयी (गहन—प्रेमचंद, ६३)

### धूल में (की) रस्सी बटना

घनहोनी बात के पीछे पड़ना, केवल धूर्तता में काम निकालना। प्रयोग—फूल जैसी के लिये भी काठ बन। कब सके हम धूल में रस्सी न बट (चुभते०—हरिऔध, १५५)

### धूल में लठु मारना

अर्थ काम करना। प्रयोग—यह धूल में लठु मारा जा रहा है (धूम०—उ० मट्ट, ३४)

### धूल में खानना

(१) किसी बुरे या नृच्छ काम में किसी को जोड़ना। प्रयोग—स्वयमेव राज्य का मुख्य जानते हो तुम, क्यों उगी धूल में मुझे खानते हो तुम? (साकेत—गुप्त, २४५)

(२) कलंकित करना।

### धूल समझना

अप्यक्त नृच्छ समझना; किसी गिनती में न जाना। प्रयोग—तुम जो कहीं सत्य सब बातें, हमारे लेखे धूरि (सु० सा०—सूर, २४१)



धूल से भरा होना

३६१

धोय जमाना

**धूल से भरा होना**

निंदा विरसकार होना, निरी हालत में होना। प्रयोग—  
फूल जिन पर था बरसता सब दिनों इन दिनों वे धूल से  
हैं भर रहे (चुमत्ते—हरिऔध, २२)

**धूल होना**

(१) तुच्छ होना, व्यर्थ होना। प्रयोग—ज्यो परसे नहि  
स्याम सुजान तो पूरि समान है अंगनि धोइवो (घन० कवित  
—घना०, १७१); सबे बड़ाई धूल, मागिबे को घाई मन  
(राधा० ग्रंथा०—राधा० टास, ५७) (÷)

(२) नष्ट हो जाना। प्रयोग—अंतर्मुख होकर वह एक  
विशेष प्रकार का कवि चाहे हो जाय, जो वह करना  
चाहता है वह सब धूल हो जायगा (शेखर (२)—अष्टमेय,  
१३०); देखिए प्रयोग (१) में (÷) भी

**धोकर पी जाना**

एकदम ध्यान न देना, अवहेलना करनी। प्रयोग—  
क्यों नमार, धर्म को धोकर पी गया? (लिली—निराला,  
७६)

**धो डालना,—देना**

दूर करना। प्रयोग—आप इस बहम को धो डालिए कि  
मे आप से नाराज हूँ (पट्टम० के पत्र—पट्टम० शर्मा, ३०);  
तब वह इस संकोच को धो डालने के लिए छवि के और  
निकट घाने का यत्न करता (शेखर० (२)—अष्टमेय,  
२०५); तुमने अपराध किया पर तुमने जिसके प्रति अपराध  
किया था, उससे अपना अपराध कहकर अपने अपराध को  
धो दिया (चित्र०—भग० शर्मा, २५); ये फुहारें मानों  
नितापों को हृदय से धो डालती हैं (गवन—प्रेमचंद, १)

**धो देना**

दे० धो डालना

**धोखा खाना**

ठगा जाना, भ्रम में पड़ना। प्रयोग—न जाने आगे  
क्या क्या विपत्तियाँ झेलनी पड़ेगी। किस किस के हाथों  
धोखा खाना पड़ेगा (गवन—प्रेमचंद, १३४-३५)

**धोखे का पुतला**

बड़ा धोखेबाज। प्रयोग—शुद्ध निर्विकार कहलाने पर भी

माना प्रकार की धोखा किया करता है वह धोखे का  
पुतला नहीं है तो क्या है? (प्र० पी०—प्र० ना० मि०, ६२)

**धोखे की टट्टी**

भ्रम में डालने वाली चीज, दिशाऊ चीज। प्रयोग—  
इस रीति से यदि हम कहें कि ईश्वर भी धोखे से अलग  
नहीं है तो अव्यक्त न होना क्योंकि ऐसी दशा में यदि वह  
धोखा खाता नहीं तो धोखे से काम अवश्य होता है जिसे  
दूसरे शब्दों में कह सकते हैं कि भावा का प्रबंध फैलाता है  
वा धोखे की टट्टी खड़ी करता है (प्र० पी०—प्र० ना० मि०,  
६२); क्या तेरी वह प्रीति, वह विरह वेदना X X सब  
धोखे की टट्टी थी? (मान०(५)—प्रेमचंद, ४४); परमेश्वर  
कुछ नहीं है, परलोक नहीं है, वेद धोखे की टट्टी है (देशाली०  
(१)—चतुर०, १६२); सुपुत्र को बसीभूत करने के पहले  
चाहिये एक धोखे की टट्टी (स्कंद०—प्रसाद, ५२)

**धोती ढीली होना**

हर जाना—हिम्मत हार जानी। प्रयोग—टोले के लोगों  
को तो जानते ही हो। तुरत धोती ढीली हो जायगी  
(परती०—रेणु, ७१)

(समा० मुहा०—धोती खोल देना,—ढील देना,—  
ढीली कर देना)

**धोती बिगड़ना**

अत्यंत भय से मतमूच छूट जाना। प्रयोग—सूरत देख  
तो तो धोती बिगड़ जाय—शेर मारना हमी खेल नहीं है  
(मित्रा०—कौशिक, ११८)

**धोबी का कुत्ता**

व्यर्थ इधर-उधर फिरनेवाला, निकम्मा। प्रयोग—गुलसी  
बनी है राम रावरें बनाएँ, ना तो धोबी कँसो कूकण, न पर  
को, न घाट को (काठि०—गुलसी, १४२)

**धौंस जमाना**

रुखाव लगाना। प्रयोग—मुझ पर कुछ एहसान नहीं  
करती फिर मुझपर धौंस क्यों जमाती है? (मान० (१)—  
प्रेमचंद, १०); अहोम राजाओं ने अपनी धौंस जमा कर यहाँ  
कुछ अवमिया लोगों को भी ला बनाया (ग्रह्म०—दे० स०,  
७१)



### धौंस सहना

रोष में आ जाना; प्रभावित हो जाना। प्रयोग—मैं बिगड़ जाऊँ तो बला से, पर किसी की धौंस तो न सहूँगा (प्रेमा०—प्रेमचंद, १२)

(समा० मुहा०—धौंस में आ जाना,—पट्टी में आना)

### धौंसा बजना

स्वाति होनी, चारों ओर चर्चा होनी। प्रयोग—उन दिनों स्वामी दयानन्द सरस्वती का धौंसा बजता था (गुलेरी ग्रंथा० (१)—गुलेरी०, २८१)

### धौल धप्पा होना

हंसी-हंसी में मारपीट होनी। प्रयोग—हंसी-दिग्लगी धौल-धप्पा सभी कुछ होता था (प्रेमा०—प्रेमचंद, १५५)

### धौल मारना,—लगाना

धप्पड़ मारना। प्रयोग—और तान कर चटाख से एक धौल मारिये (इंशा०—इंशा०, ८१); क्या उसको किसी ने एक दो धौल लगाई? (भा० ग्रं०—भारतेन्दु, २६)

(समा० मुहा०—धौल कसना,—जमाना)

### धौल लगाना

दे० धौल मारना

### ध्यान छूटना

समाधि भंग होनी या चित्त की एकाग्रता न रहनी। प्रयोग—मुनत श्रवण छूटहि मुनि ध्याना (राम० (बाल)—तुलसी, ७४)

### ध्यान धरना

समाधि लगाना या स्मरण करना। प्रयोग—ऐसा ध्यान धरौ नरहरी, सबद घनाहद च्यवन करी (कबीर ग्रंथा०—कबीर, १९८); जेहि हमि गावहि वेद बूध जाहि धरहि मुनि ध्यान (राम० (बाल)—तुलसी, १३१)

### ध्यान पर चढ़ना

(१) मन में स्थान कर लेना, याद रहना। प्रयोग—इतने में धमराइयाँ ध्यान चढ़ी (इंशा०—इंशा०, ९१); बहुत महाराजों के कुबरो से बातें जाई पर किसी पर इनका ध्यान न चड़ा (इंशा०—इंशा०, ९४); छोटी-छोटी बातों को भी ध्यान में चड़ाये रखना, मेहनत से मुंह न मोड़ना X X ये बातें कुछ ऐसी भारी नहीं हैं कि चुस्त और चालाक रोजगारियों में बहुत कदर के लायक हों (भट्ट नि०—बा० भट्ट, ४१)

(२) उचित लगना। प्रयोग—धब भी जो मेरा कहा तुम्हारे ध्यान चढ़े तो गए हुए दिन फिर सकते हैं (इंशा०—इंशा०, ११३)

### ध्यान लगाना

(१) स्मरण करना। प्रयोग—उज्जल देवि न धोजिए बग जबू मांई ध्यान। धौरे वंठि नपेटसी, यू ले बूड़े ग्यान (कबीर ग्रंथा०—कबीर, ४९); सनकादिक शुक नारद शारद ध्यान लगावै (गु० नि०—बा० मु० गु०, ५७७)

(२) मनोयोग से।

### ध्रुव सत्य होना

शाश्वत सत्य। प्रयोग—यह नहीं मुना जाता कि जीवन सबसे अधिक प्यारा उसको होता है, जो मरना जानता है, पर है यह भी ध्रुव सत्य (शैलर (१)—अज्ञेय, १२५)

### ध्वजा फहराना

बोलबाला होना। प्रयोग—अब वहाँ छत्र की, कपट की, फूट की। नटखटी की है रही फहरा धुजा (चुमत्तै०—हरिप्रौढ, ८३)

### ध्वजा होना

सबसे श्रेष्ठ होना। प्रयोग—सोभन दीरघ बाहु विराजत देव सिंहात अदेव ति लाजत। वैरिन को अहिराज बखानहु है हितकारिन की धुज मानहु (केशव० (२)—केशव, २६०)



## न

### नंगा भोरी लेना

नंगा करके तलाशी लेना । प्रयोग—दादा, मेरी नंगा भोली ले लो, जो मेरे पास घेला भी हो (रंग० (२)—प्रेमचंद, ३८६)

### नंगी आखों देखना

बिना किसी आवरण के, खुली । प्रयोग—खुली धूप में नंगी आँखों से चीजों को देखने की आदत डालिए (भोर०—जग० माधुर, १६)

### नंगी तलवार का बीच होना

जबरदस्त शत्रुता होनी । प्रयोग—उनके और राजा के बीच में अब नंगी तलवार का बीच घा (रंग० (२)—प्रेमचंद, ३४६)

### नंगे आना नंगे जाना

खाली हाथ जन्म लेना और मृत्यु को प्राप्त होना । प्रयोग—नांगे आवत नांगे जाना, कोई न रहिहै राजा राना (कबीर ग्रंथा०—कबीर, ३००)

### नंगे हाथ जाना

मृत्यु के समय कुछ साथ न ले जाना । प्रयोग—नांगे हाथ ते गए, जिनके लाख करोड़ (कबीर ग्रंथा०—कबीर, २४)

### नंगों के देश में धोबी का काम न होना

अनावश्यक या अनुपयोगी होना । प्रयोग—खालसा अखबार

में रेजर ब्लेड्स और सिगरेटों के विज्ञापन देने से लाभ न होगा और न वैष्णवों के अखबारों में चोकलेट, टाफी, जेम और जेली के विज्ञापन अपना खर्चा निकाल सकेंगे । नंगों के देश में धोबी क्या करेगा (मेरे०—गुलाब०, ६३)

### नंबर एक का

सबसे पहला या सबसे अधिक । प्रयोग—नंबर वन पेंतरे-बाज है हासिम भाई (पेंतरे—अशक, ९७)

### न इधर के रहे न उधर के, न घर के न घाट के

दोनों ओर से नुकसान में रहना । प्रयोग—इतकी भई न उतकी सजनी, भ्रमत-भ्रमत में भई घनाव (सू० सा०—सूर, २९३५); तुलसी बनी है राम रावरें बनाएँ ना तो धोबी कैसे कूकण, न घर को न घाट को (कवि०—तुलसी, १४२)

### न गिनना

कुछ न समझना । प्रयोग—धार्वाहि गनहि न अवघट घाटा (राम० (लं)—तुलसी, ९०७)

### न घर का न घाट का

दे० न इधर के रहे न उधर के

### न दिन चैत न रात नींद

हर समय चिंता बनी रहनी । प्रयोग—जब तें कुमत गुना में स्वामिनि भूल न वासर नींद न जामिनि (राम० (प्र)—तुलसी, ३९१)



### नककटा, नकटों का सरताज

मान मर्वादा लो देने वाला या अपमानित व्यक्ति । प्रयोग—नाक पर बैठने न दे मक्खी नक कटे नाक ही कटावने (बोल०—हरिऔध, ७३); क्यों लगे धध्वे न वह पोता किये मान नकटे का नहीं होता कहीं (बोल०—हरिऔध, ७४); मैं कौम की भलाई चाहता था, अब खुद ही नकटों का सरताज हो रहा हूँ (लिली—निराला, १७)

### नकचढ़ी होना

नाक भी सिकोड़नेवाली, उपेक्षा प्रकट करने वाली । प्रयोग—ठोक-बजाकर अपनी छाखों से देख ले, आरती । नकचड़ीवने से भी काम नहीं चलेगा (ब्रह्म०—दे० स०, ५८)

### नकटों का सरताज

दे० नककटा

### नकनकी बजवा देना

हेरान कर डालना । प्रयोग—शालिग्राम की वो नकनकी बजवा दूंगा कि माद करेगे बेटा (बुट०—अ० ना०, ३५४)

### नकाब उलटना

वास्तविक रूप दिखला देना । प्रयोग—गली-मली में उसका नकाब उलट कर दिखलावेगा कुबेर सिंह (परती०—रेणु, ४८०)

(समा० मुहा०—नकाब उठाना)

### नकुआ जाना

तंग आ जाना । प्रयोग—दूबने को कहीं नकुआ न मिला नकुआओं से गये बहुत नकुआ (बोल०—हरिऔध, ७४)

(समा० मुहा०—नकिया जाना)

### नकेल हाथ में रखना या होना

नियंत्रण अपने हाथ में रखना या होना । प्रयोग—स्त्रियों के मेल-मिल से इन महाशय की नकेल मेरे हाथों में आ जायगी (प्रेमा०—प्रेमचंद, १५७)

### नकार खाने में तृती की आचाज़ होना

बड़ों के सामने महत्व हीन होना; बड़ों के सामने छोटी की बात न सुनना । प्रयोग—उस नकारखाने में तृती की आचाज़ कौन सुनता या काकी ? (कर्म०—प्रेमचंद, २९९)

### नक्कू बनना

(१) झगुआ होना, जिस कार्य को करने में लोग हिनकते हों उसे प्रारम्भ करना । प्रयोग—भाई करोम सव जने अपने अपने मन हो की, मुझे क्यों नक्कू बनाते हो ? जो सब की मत होगी, वही मेरी होगी (रंग० (२)—प्रेमचंद, ३१३-१४)

(२) बदनाम होना । प्रयोग—बाबू साहब आपने ठीक कहा पर हम तो ऐसा करके नक्कू नहीं बन सकते (राधा० ग्रंथा०—राधा० दास, ५५८); सौ पचास में दो-एक ऐसे हुये भी जिन्होंने लोकेश्वरणा को तात मार बड़े साहस के साथ उन्नित कर्तव्य पर कमर बांध सन्नद्ध हुये तो अल्पज्ञ प्रविचे-कियों में नक्कू बनते हैं (भट्ट नि०—वा० भट्ट, ९४) अब चार दिन के लिए बिरादरी में नक्कू क्यों बनू (गबन—प्रेमचंद, २३७); अब लिखने पढ़ने से क्या होगा सिवा नक्कू बनने के (पद्म० के पत्र—पद्म० शर्मा, १७९)

### नख शिख से, नख से शिख तक

सिर से पैर तक । प्रयोग—हसत देख नखमिख रित व्यापी (राम० (बाल)—तुलसी, २८३); नखते सिख लौ मृदु माधुरी बाकियं भौहें बिलोकनि बांकी (जग०—पद्मनाकर, ४७); पलानंद पं ब्रज गोरिनको नखते सिख लौ चर चाप रह्यो (घन० कवित्त—घना०, ४६)

(समा० मुहा०—नखशिख)

### नख से शिख तक

दे० नख शिख से

### नगाड़ा बजना

स्पष्ट कहना—खुले घाम घोषणा करती । प्रयोग—ठोकि बजाइ नगारो दे कैं हौ पिय-वसतिहि भई री (भा०ग्रंथा० (२)—भारतेन्दु, ५८५); है मुसीबत का नगारा बज रहा पांव पर रख पांव हम हे सो रहे (चुमते०—हरिऔध, १०७)

### नवाना

(१) तंग करना । प्रयोग—नाचत जाकें डर त्रिभुवन तिहि नैकहुं मान नचावै (सु० सा०—सूर, ३४४४); जेहि बहू बार नचावा मोही । सोइ व्यापी बिहंगपति तोही (राम० (३)—तुलसी, १०८५)



(२) मनमानी करवाना । प्रयोग—पुरुष हमेशा से नाचता आया है स्त्रियां नचाती आयी हैं (नदी०—अज्ञेय, १७९); है जिसे पैसा नचा पाता नहीं था सका ऐसा न आखों के तले (चोखे०—हरिऔध, १४)

### नचानेवाला

पूर्णतः बल में रखने वाला । प्रयोग—जगू पेखन तुम्ह देगनिहारे । विधि हरि संभू नचावनिहारे (राम० अ)—तुलसी, ४९१)

### नजर अटकना

अच्छा लगना—प्रेम होना । प्रयोग—बनारस में वेदपाएँ अब भी इशारों से बातें करती हैं । मान लो किसी धाई जी की किसी रईस पर नजर अटक गई है तो वह मजाक-मजाक में उससे कह देगी कि जरे हम तोहें साथ जाव, यानी तुम्हें अपने प्रेमाकर्षण में हम बांध ही लेंगी (यै कोठे०—अ० ना०, २०३)

### नजर गड़ना या गड़ाना

(१) प्राप्ति की इच्छा होनी, प्रिय होना । प्रयोग—क्या तुम्हारी नजर उन पर गड़ी है (मा० मा० (१)—कि० गो०, ८१)

(२) एकटक देखना । प्रयोग—तदमा अपनी कुर्सी पर बैठ गई । मंगजीन खोल उसी तरह पन्नों में नजर गड़ा दी (लिलो—निराला, १२)

(समा० मुहा०—नजर जमाना)

### नजर चार होना

दृष्टि मिलनी । प्रयोग—इसी बीच दोनों नजरें चार हो गई (बल०—नागा०, १८३)

### नजर चुराना

(१) सामना न करना । प्रयोग—समाज की नजरें चुराकर भी यह सम्बन्ध स्थायी रक्खा जा सकता है (बुंद०—अ० ना०, ५०३) (÷)

(२) छिप कर कुछ करना । प्रयोग—देखिए प्रयोग (१) में (÷)

### नजर टकराना

परस्पर आँखें मिलना—एक साथ एक दूसरे को देखना ।

प्रयोग—मैं सकपका गया, क्योंकि उस समय, संयोगवश मैं उसी दिशा में देख रहा था, दोनों की दृष्टियाँ टकरा गई (अज्ञेय०—देवराज, ५५)

### नजर डालना

(१) प्रेम या बुरे भाव से देखना । प्रयोग—सम्राट उस पर नजर डालना चाहते हैं क्या ? (भोर०—जग० माथुर, ३९)

(२) देखना ।

### नजर दीड़ाना

(१) खोज-बुद्ध करना, निगरानी करनी । प्रयोग—मजदूर किसान बन बैठे और किसान जायदाद की तलाशमें नजरें दीड़ाने लगे (मान०(८)—प्रेमचंद, ११)

(२) दूर तक देखना ।

### नजर न उठना

सामना करने का साहस न होना—सज्जाजनक स्थिति में होना । प्रयोग—इन्होंने मुझे नजर उठाने लायक नहीं रक्खा (बुंद०—अ० ना०, २७८)

### नजर पड़ना

दिखाई देना, प्राप्त होना । प्रयोग—आपा या संसार में देण्य की बहु रूप । कहे कबीरा संत ही, पड़ि गया नजरि अनूप (कबीर ग्रंथा०—कबीर, १४)

### नजर पर चढ़ना

(१) पसंद आ जाना, भला मालूम पड़ना । प्रयोग—इसी प्रकार अफसर की नजर में चढ़ा जाता है (निशि०—वि० प्र०, २९); यह पहली कविता ही नजर पर चढ़कर दिल में बैठ गई (पद्म पराग—पद्म० शर्मा, २६९)

(२) किसी चीज़ को लेने की नीयत रखना । प्रयोग—हरखू के सेत गाँववालों की नजर पर चड़े हुए थे (मान० (८)—प्रेमचंद, ६७)

(३) हर समय ध्यान पर रहना ।

(समा० मुहा०—नजर पर छा जाना)



### नजर फेंकना

(१) साधारण तौर पर देख लेना। प्रयोग—हाकिम बार-बार नजर फेंक कर देख लेते हैं (परती०—रेणु, २१२)

(२) दूर तक देखना। प्रयोग—सोम ने एक ऊँचे स्थान पर चढ़ कर चारों ओर दृष्टि फेंकी (वैशाली० (१)—चतुर०, २६९-७०)

### नजरबंद करना

कड़ पहरों में रखना। प्रयोग—तो उन बाबू साहब को नजरबन्द किया जायगा, हुजूर ? (कर्म०—प्रेमचंद, ३१२); इसके लिए जरूरत समझी जाय तो उन्हें कहीं नजरबन्द कर दिया जाय (पद्म० के पत्र—पद्म० शर्मा, १४७)

(समा० मुहा०—नजर बंद रखना)

### नजर बचाना

दृष्टि से बचना; चोरी चोरी; छिपना। प्रयोग—साजि सेज भूषन बसन सब की नजर बचाइ रही नौः मिसि पौढ़ि क दुग हुबार सों लाइ (जग०—पद्माकर, २९); यादव टोली के लोग एक एक कर, नजर बचाकर नौ दो ग्यारह हो चुके थे (मैला०—रेणु, ४)

### नजर बदल जाना

स्व या नीयत में अंतर पड़ना। प्रयोग—तवायफ की ओलाह कहते ही आपकी नजरे उनकी घोर में बदल जाएगी (ये कोठे०—अ० ना०, ९५)

### नजरबाजी करना

छिप कर बुरी नजर से देखना। प्रयोग—ये हजारों घातमी जो तड़के गंगास्नान करने जाते हैं, वहां नजरबाजी के सिवा और क्या करते हैं (रंग० (१)—प्रेमचंद, १९०)

### नजर भर कर देखना

इच्छा भर देखना; अच्छी तरह देखना। प्रयोग—कभी कभी नजर भर कर देखने लगती है कि कितने गाहक चाय पी रहे हैं (ब्रह्म०—द० स०, ३४-३५); मैंने अभी अभी पहनाया कि नजर भर देख न पाया—कैसा सुन्दर घाया (अना०—निराला, ३४)

### नजर भरना

देखकर संतुष्ट होना। प्रयोग—अब तो तुम्हें देखकर

नजरे भरता हूं अपनी (बुंद०—अ० ना०, ४५५)

### नजर मारना

(१) निरखी बितबन से देखना। प्रयोग—दुन से उतरते ही मेरे संगी ने पहले नारियल वाली ही को नजर मारी (कला०—उग्र, १२०)

(२) इसारा करना। प्रयोग—इतना कहकर बाबू मुस-कुराये और नजर मारकर एक नाटे-गोरे आदमी का ध्यान मेरी घोर लोचा (बल०—नागा०, १७१)

### नजर मिलना या मिलाना

सामना करना या होना। प्रयोग—बकबर साहब उस वक्त एक सज्जन से बातें कर रहे थे। थोड़ी देर बाद नजर मिली (पद्म पराग—पद्म० शर्मा, २९७); उपाजी, माफ करना। प्रमोद जी से ही पहले नजर मिल गई (रेश्मी०—राम० वर्मा, १५९)

### नजर में गिरना या गिराना

प्रतिष्ठा में कमी आनी। प्रयोग—उसे मालूम होता था कि मैं सबको नजर में गिर गया हूँ (मान० (५)—प्रेमचंद, ७०) मैं अपनी ही दृष्टि में कुछ गिर गया (वाण०—ह० प्र० द्वि०, १०९)

### नजर मैली होना

(१) कुदृष्टि से देखना। प्रयोग—उनको नजर बड़ी मैली है (मैला०—रेणु, १४५)

### नजर रखना

(१) कुदृष्टि से देखना। प्रयोग—घोर फिर मैं × × न किसी की बूटियों पर बुरी नजर रखता हूँ, न हजारों लाखों आदमियों के शोषण द्वारा अपनी आर्थिक चर्बी बढ़ा-बढ़ा कर मोटा होना चाहता हूँ (जहाज०—इ० जोशी, २३८)

(२) ध्यान रखना।

(३) मेहरबानी करना।

### नजर लगना

(१) कुदृष्टि लगना। प्रयोग—माई मेरिहि दीछि न लागै



तार्त मसि बिदा दियो भू पर (सू० सा०—सूर, ७१०); लौने मुहुं दीठि न लगै यों कहि रीनी ईठि दूनी जू लागन लगी, दिवै डिठोना दीठि (विहारी रत्ना०—विहारी, २८); एक कहै हनै दीठि लगी पर भेद न कोऊ लहै दुलही को (जग०—पद्माकर, २४); हर दीठि के नोठि न देखि सकौ मु यनोवियै रीझि पै रीझि खिजौ (घन० कविस—घना०, १४९); नंद महारि आंचल की ओट किए खिला रही थी इसलिये कि मत किसी की दीठि लगे (प्रेम सा०—ल० ला०, ३३)

(२) किसी वस्तु को पाने की इच्छा होनी। प्रयोग—छाँके पर तेरी बहुत दीठ। मत लकरी सोटा पर तेरी पीठ (कबीर ग्रंथा०—कबीर, ३२९)

(३) प्रेम होना। प्रयोग—चकी जकी सी हूँ रही कूँ बोलति नोठि कहूँ दीठि लागी, लगी कं काहूँ की दीठि (विहारी रत्ना०—विहारी, ६३६)

#### नजर लगाना, लाना

बुरी दृष्टि से देखना। प्रयोग—दीठि लगावति कान्हू की, जरै बरै ये आवि (सू० सा०—सूर, २१०९); अति मुकुमारि कूबरी रीझै, मति कोउ लावै दीठ (सू० सा०—सूर, ४४९१); ऐ नौज काकी, भला कोई अपने लइके को नजर लगायेगा (मान० (१)—प्रेमचंद, १७९); नजर लगाओगे क्या (बूद०—अ० ना०, ४८५); तो बुरी दीठ किस तरह लगती (चुमते०—हरिऔध, ५८)

#### नजर लड़ना या लड़ाना

प्रेम होना या करना। प्रयोग—सेठानी की नजरें अपने बरेली वाले ननदोई से लड़ गई (ये कोठे०—अ० ना०, ५३)

#### नजर लाना

दे० नजर लगाना

#### नजर होना

(१) ध्यान या आकर्षण का केन्द्र होना। प्रयोग—मदं, औरतों, बच्चों, बूढ़ों—सभी की नजर है बस मुझ पर (बूद०—बच्चन, ६६)

(२) भेंट होनी। प्रयोग—छपी हुई चापिया दीमकी की नजर हो गई (पद्म० के पत्र—पद्म० शर्मा, १२८)

(३) कृपा-दृष्टि होनी। प्रयोग—नेक नजरि हम ऊपरि नाही, क्या कमिबलत हमारे (कबीर ग्रंथा०—कबीर, १९७)

(४) कुदृष्टि लगना।

#### नजरों में खटकना

अप्रिय लगना। प्रयोग—मैं तो आठो पहर आँखों के सामने रहूँगा, नित्य उनकी नजरों में खटकता रहूँगा (रंग० (१)—प्रेमचंद, ११९)

#### नदी बहना या बहाना

प्रचुर मात्रा में होना या देना। प्रयोग—रानी जी मिसेज सेवक के गले लिपट गई और कृतज्ञतापूर्ण शब्दों का दरिया बहा दिया (रंग० (१)—प्रेमचंद, ७४)

#### ननुनच

होना। प्रयोग—जमना ने जरा भी ननु-नच ना किया और पड़ा उठाकर पानी लेने चली गई (सू० सु०—सुदर्शन, ८४)

#### नन्हा सा मुँह निकल आना

ललितता जाना। प्रयोग—राजा साहब इस व्यंग्य से दिल में ऐंठकर रह गए। नन्हा सा मुँह निकल आया (रंग० (१)—प्रेमचंद, २९१)

#### नपा तुला

जितने की आवश्यकता हो उतना ही। प्रयोग—जिस प्रकार एक अपराधी किसी न्यायकर्ता के घागे लड़ा होकर अपने चरित्र का उत्तरदाता होता है और फिर न्यायकर्ता के मुख से फर्द जुर्म के रूप में अपने चरित्र की नपी-तुली और निष्पक्ष आलोचना सुनता है, उसी प्रकार मैं भी अपने को 'तू' के स्थान में रखकर उसकी आलोचना करूँ (शेखर (१)—अज्ञेय, ४२)

#### नपी तुली बात कहना

बिलकुल ठीक बात कहना, केवल उतना ही कहना जितना आवश्यक हो। प्रयोग—काम तो ठीक करके लाती थीं,



नफा उड़ाना

लेकिन बातचीत में हमेशा नये तुले शब्द (रेशमी०—राम० वर्मा, ४४)

नफा उड़ाना,—खाना

लाभ होना । प्रयोग—तही दीजें भूल पूरे, नफो तुम कलु खाहु (सु० सा०—सूर, ४१३५); जो दांव घात समझता है वह नफा उड़ाता है (कर्म०—प्रेमचंद, ४२)

नफा खाना

दे० नफा उड़ाना

नब्ब टटोलना,—पहचानना

पाहू लेना, मन की बात जानना । प्रयोग—मुखदा ने फिर नब्ब टटोली—मंदे गुन-सहर, पड़ना-लिखना नहीं देखते (कर्म०—प्रेमचंद, ३३७); मुझे इससे तसल्ली मिली कि एक आदमी तो दिन की नब्ब पहचाननेवाला मिला (पद्म० के पत्र—पद्म० शर्मा, ११४)

नब्ब पहचानना

दे० नब्ब टटोलना

नम दुह कर दूध चाहना

असंभव बात करनी या चाहनी । प्रयोग—लोभी जमु वह चार गुमानो । नम दुहि दूध बहुत ए प्रानी (राम० (अर) तुलसी, ७११)

नमक खाना

पालित होना, किसी का दिया खाना, एहसान-मंद होना । प्रयोग—दीजिये न पीठि, इत कीजिये दया की दीठि, सेनापति पान्यो हे तिहारे एक लोन कौं (क० र०—सेनापति, १०६); हम लोगोंने उनका निमक खाया है इससे एक बरस कुछ बदला न लेने (राधा० ग्रंथा०—राधा० दास, १६६) खैरखाही इसलिये करता हूं कि उनका नमक खाता हूं (रंग०(१)—प्रेमचंद, ३६); हमने उनका नमक खाया है—यह ध्यान रखना (मिस्त्रा०—कौशिक, १९४); छाकर नमक राज का संभव नहीं भूल यों जावेंगे (नूर०—मरु, १०९)

नमक-ख्वार होना

नमक खाए होना, बफादार होना । प्रयोग—मैं आपका पुस्तनी नमकख्वार हूं इसलिए इतना कहता हूं (भारती०—१० ११०, ६८)

नमक छिड़कना

अधिक कष्ट देना । प्रयोग—तुम्हारी किटकियां मुनकर मुझे जितना मानसिक कष्ट हुआ और हो रहा है वही मेरे लिये असाध्य था । उसपर तुमने इस समय और भी नमक छिड़क दिया (रंग० (२)—प्रेमचंद, २१४)

नमक तेल का ठिकाना न होना

बहुत गरीबी होनी । प्रयोग—वहां तो नमक तेल का भी ठिकाना नहीं है (सिंदूर०—ल० मिश्र, २०)

नमक पानी बदा होना

किसी स्थान या व्यक्ति के पास या आश्रित होकर रहना बदा होना । प्रयोग—देखिये, आपका नमक-पानी बदा होगा तो अच्छा हो ही जाऊंगा (मिस्त्रा०—कौशिक, २०)

नमक बजाना

अपने पालक या स्वामी के उपकार का बदला चुकाना । प्रयोग—कहते हैं, हमारा निमक खाते हो, निमक को बजाना (झांसी०—वृ० वर्मा, २४२)

(समा० मुहा०—नमक अदा करना,—काहक अदा करना)

नमक मानना

उपकार मानना । प्रयोग—जैसे लोन हमारी मान्यो, कहा कही, कहि काहि सुनाऊं (अग्र्य) (सु० सा०—सूर, २८७७)

नमक मिचं मिलाना,—लगाना,—लपेटना

किसी बात को बहुत बढ़ा-चढ़ाकर कहना, वास्तव से अधिक कहना । प्रयोग—देखिए कानून में कोई दलील वैसी ही झूठी और बेसिर पंर की क्यों न हो यदि उसी को साधु भाषा में नमक मिचं लगाकर कहिए तो उसका सब अवगुण छिप जाता है (मा० ग्रंथा० (१)—भारतेन्दु, ६०५-६); सबकी जीभ पर यही चर्चा थी । खूब नमक-मिरच लपेटा जाता था (मान० (८)—प्रेमचंद, ४४); आवश्यकतानुसार यथार्थ घटना में नमक-मिचं भी लगाता जाता था (रंग० (१)—प्रेमचंद, २०४); बदले में वह पुराणों की गाथायें कुछ अपना नमक-मिचं मिला कर सुनाया करता था (मृग०—वृ० वर्मा, २६)

नमक मिचं लगाना

बढ़ाया-चढ़ाया जाना । प्रयोग—नमक मिचं लगाने पर



बात चटपटी हो जाती है (चुभते० (मु०)—हरिऔध, १)  
(समा० मुहा०—नमक मिचं मिलना)

नमक मिचं लगाना

दे० नमक मिचं मिलाना

नमक मिचं लपेटना

दे० नमक मिचं मिलाना

नमक लगाना

बहुत बुरा लगाना । प्रयोग—मुनत रुखि भै रानी हिए, लोन  
अस लाग (पद०—जायसी, ८१२)

नमक-हराम,—हरामी होना

अकृतज्ञ होना । प्रयोग—जो तन दिवो ताहि बिसरायो  
ऐसो नोन हरामी (सु० सा०—सूर, १४८); प्रभु में सेवक  
निमक हराम (भा० ग्रंथा० (२)—भारतेन्दु, ५४२); नाम पाकर  
नमक हराम न हों नाम बेचें न नाम के भूखे (चुभते०—  
हरिऔध, १४१)

नमक-हरामी करना

पालक या स्वामी के साथ विश्वासघात करना । प्रयोग—  
नहीं पंडाजी, खुदा मेरी नीयत पाक रखे, मुझ से नमक  
हरामी न होगी (रंग० (१)—प्रेमचंद, १०२)

नमकीन होना

सलोनी या लुभावनी होना । प्रयोग—सोभा-मदन बदन  
अस लोनी । कोटि मदन छवि करि नहि होनी (नंद० ग्रंथा०  
—नंद, १४३); × × दुनिया की सारी नेमतों को आप  
तिलाञ्जलि देने पर तैयार हैं उस जुलाहे की नमकीन × ×  
छोकरी के लिए (कर्म०—प्रेमचंद, ९४)

नमस्कार करना

छोड़ देना । प्रयोग—मां की इच्छा थी कि परमात्मा ने  
जब उनको सुअवसर दिया है तो उन्हें उसका पूरा लाभ  
उठाकर स्टेट को सदैव के लिए नमस्कार कर देना चाहिए  
(चेतन—अशक, ४७)

नयन अधाना

देखकर तृप्त होना । प्रयोग—परत न पलक चकोर चंद  
लौ अवलोकत लोचन न घघात (सु० सा०—सूर ४७९७)

नयन की कोर

तिरछी नजर । प्रयोग—भन हरि छिपी तनक चितवनि में  
चपल नयन की कोर (सु० सा०—सूर, ४३५२)

नयन की कोर जोहना

कृपाकांक्षी होना । प्रयोग—जामु नयन की कोर सदा  
जोहत ब्रह्मा हर (राधा० ग्रंथा०—राधा० दास, १८)

नयन के अतिथि करना

देखने का सौभाग्य देना । प्रयोग—जो जानें कहि मुकुत सयानी ।  
नयन अतिथि कीन्हें विवि श्रानी (राम० (बाल)—तुलसी, ३४४)

नयन जुड़ाना

आंखों का तुल्य होना । प्रयोग—प्रभु बिलोकि मुनि नयन  
जुड़ाने (राम० (बाल)—तुलसी, १४४)

नयन-पट रोकना

एकटक देखना । प्रयोग—छवि समुद्र हरि रूप बिलोकी ।  
एकटक रहे नयन पट रोकी (राम० (बाल)—तुलसी, १५९)

नयन-फल

दर्शन-मुख । प्रयोग—एहि बिधि सबहि नयन फल देता ।  
गए कुंजर सब राज निकेता (राम० (बाल)—तुलसी, ३४४)

नयन घाण चलाना

कटाक्ष करना । प्रयोग—बातें करती है वे सब खड़ी खड़ी  
चलते हैं नयनों के सघे बान (अना०—निराला, १३८)

नयन से पनारी बहना

आंखों के प्रवाह का न रुकना । प्रयोग—जब जब मोहि  
घोष मुधि घावत, नैननि बहत पनारी (सु० सा०—सूर, ४८९२)

(समा० मुहा०—नयन से भरी लगना)

नया रंग खिलना

कोई नयी बात होनी । प्रयोग—उपाय तो क्या, कुछ नया  
रंग बिल रहा है जिसकी बाबत कभी सोचा ही न था  
(भुले०—भग० वर्मा, ३५४)

नया शिकार फंसना

नया घासामी फंदे में जाना । प्रयोग—कोई नया शिकार



नयी ज्योति देना

४००

नरम होना

फंसा होगा, मगर मुझ से भागकर जावगी कहाँ (मान०  
(७)—प्रेमचंद, ५४)

(समा० मुहा०—नया पंछी फंसना)

नयी ज्योति देना

नव ज्ञान देना । प्रयोग—संसार को नयी ज्योति देने की जिम्मेदारी आज हमारे तत्त्व साहित्यकारों के कंधे पर आ पड़ी है (अशोक०—ह० प्र० द्वि०, ४६)

(समा० मुहा०—नयी रोशनी देना)

नये सिरे से

फिर से, प्रारम्भ से । प्रयोग—बिना किसी भिन्नक के यहाँ कहें कि मैं उन्हें रचनाओं को किसी प्रकार प्रगतिवादी मानने को तैयार नहीं हूँ जिनमें संसार को नये सिरे से उत्तम रूप में इतने का दृढ़ संकल्प न हो (अशोक०—ह० प्र० द्वि०, ४३)

नरक का कुंड

पापमय, कष्टदायक । प्रयोग—नारी कुंड नरक का बिरला खंभे बाग (कबीर ग्रंथा०—कबीर, ४०)

नरक के कुपं में पड़ना, नरक में पड़ना

घोर घालना सहनी । प्रयोग—तुम अपने मुँह काड़े धुवाँ । चाहति परा नरक के कुंवा (पद०—जायसी, ४७७); अपनी जाति और देश को दुखों के दुर्बह भार में दबा देकर उन्हें यह अच्छा न मालूम हुआ कि स्वयं तो मुक्त हो जाय और उनकी जाति यों ही अनन्तकाल तक नरक में पड़ी तड़पती रहे (पद्म पराग—पद्म० शर्मा, २५)

नरक के समान होना

बहुत दुःखदायी होना । प्रयोग—तुम्हें बिना राम सकल मुख साजा, नरक गरिब दुहू रात समाजा (राम० (अ)—तुलसी, ६४८)

नरक में दिल बीतना

बहुत बुरी दशा में दिन बीतना । प्रयोग—पिछले दो महीने उनके नरक में बीते थे और घर सदा सदा के लिए उनके नरक का प्रबन्ध हो रहा था (मूले०—भग०वर्मा, २१०)

नरक में पड़ना

दे० नरक के कुपं में पड़ना

नरक होना

(१) गंदा होना । प्रयोग—सच तो यह है कि वेश्या-जीवन के नरक को उस रात पहली बार देखा (ये कोठे०—अ० ना०, ३१) (÷)

(२) दुःखदायी होना । प्रयोग—नर-नारी सब नरक है, जब लग देह सकाम कहै कबीर ते रात्र के, जे सुमिरै निहकाम (कबीर ग्रंथा०—कबीर, ३९); यह घर मुझे नरक के समान लगता है पर तुझ जैसे भूत के कारण थोड़ा बहुत जी बहल जाता है (भा० ग्रंथा०—भारतेन्दु, ५७९); जून मास में घर की कोठड़ी गरमी से नरक बन जाती थी (झुठा० (१)—यशपाल, ५६); देखिए प्रयोग (१) में (÷)

(३) नरक भोगने की सजा मिलनी ।

नरद कच्ची करना

हरा देना । प्रयोग—तुरत डारिये मार नरद कच्ची कर दोजें (कुण्ड०—गिरिधर दास, ८)

नरम-गरम होना

गुस्सा होना, कुछ कहना-मुनना । प्रयोग—जरा भी नरम-गरम हुए मुँह से लाम-काफ निकाली और मेने गरदन दबायी (प्रेमा०—प्रेमचंद, २१०)

नरम चारा

साधारण । प्रयोग—लेकिन राजा साहब को इतना जरूर दिखा देना चाहता हूँ कि अमरपाल सिंह नरम चारा नहीं है (गोदान—प्रेमचंद, २३७)

नरम-दिल

सहृदय । प्रयोग—संगदिल से मिला नरम दिल क्या (चुभते०—हरिऔध, ५५)

नरम पड़ना

दूदना में कमी होनी, क्रोध या असंतोष कम होना । प्रयोग—लाला हरकिशोर ने कुछ नरम पड़ कर कहा... (परीक्षा०—श्री० दास, ९०); अबकी भाई साहब बहुत कुछ नरम पड़ गये थे (मान० (१)—प्रेमचंद, ८४)

नरम होना

(१) क्रोध या कड़ाई में कमी होनी । प्रयोग—चाचा



साहब ने जरा नम होकर कहा—मैं अपनी बात दे चुका हूँ क्या तुम्हें इसका कुछ खयाल नहीं ? (मान० (२)—प्रेमचंद, १०६)

(२) उन्मीस होना या कुछ घटिया होना ।

**नरमी करना,—वरतना**

कठोरता से व्यवहार न करना, सहृदयता का व्यवहार । प्रयोग—इसमें तो नरमी नहीं वरती जा सकती (ब्रह्म०—दे० स०, १०६); तुम्हारे साथ तो फिर भी बड़ी नमी कर रहा हूँ (गर्वन—प्रेमचंद, ११८)

**नरमी-गरमी**

उप एव शांत । प्रयोग—नरमी-गरमी, डांट-डपट किये बिना नहीं चल सकता (प्रेमा०—प्रेमचंद, १०३)

**नरमी वरतना**

दे० नरमी करना

**नवाय के नाती होना**

बड़े घमंड वाले, बड़े आदमी । प्रयोग—अपने अलाव पर बैठ कर हुक्का हाथ में ले लेता है, तब मालूम पड़ता है कि नवाय का नाती है (तिलली—प्रसाद, १७२)

(समा० मुहा०—नवाय होना)

**नशा उखड़ना,—उतरना,—ठंडा होना**

(१) धुन दूर होनी । प्रयोग—कभी न उतरे उसका नशा जिसके सिर इसका भूत चढ़े (भा० ग्रं० (२)—भारतेन्दु, ५६५)

(२) किसी भ्रम, जोश या आवेश का समाप्त होना । प्रयोग—विजय का नशा उखड़ गया (कंकाल—प्रसाद, १७७); दूल्हा-दुलहन बने रहने का नशा उतरते तो देर नहीं लगती (कठ०—दे० स०, २०३); पर जब नशा ठंडा हुआ तो मुझे वह घर काटने लगा (सेवा०—प्रेमचंद, १५२)

(समा० मुहा०—नशा टूटना)

**नशा उतरना**

दे० नशा उखड़ना

**नशा उतारना**

घमंड दूर करना । प्रयोग—मनोहर तो ऐसा सितपिटा

गया मानों सैकड़ों जूते पड़े हों । इस खटाई ने सबके नशे उतार दिये (प्रेमा०—प्रेमचंद, ५९)

(समा० मुहा०—नशा भाड़ना)

**नशा किरकिरा होना**

(१) जोश, आवेश, उत्साह के वेग का रुक जाना । प्रयोग—माई लाई ! अब के आपके भाषण ने नशा किरकिरा कर दिया (गुं नि०—वा० मु० गुं, १९८)

(२) किसी अप्रिय बात के कारण नशे का मज्जा धीव म विगड़ जाना ।

**नशा चढ़ना**

असर होना । प्रयोग—पहले तो उन्हें आपने खूब पड़ा और फिर कुछ उनका ऐसा नशा चढ़ा कि जिन बातों को सारे सूफी संवसाधारण के सामने सुनाना उचित नहीं समझते थे, वह उन्हें बाजार में खड़े हो-होकर लोगों को सुनाने लगे (पद्म पराग—पद्म० शर्मा, १७१)

(२) धुन चढ़नी ।

**नशा ठंडा होना**

दे० नशा उखड़ना

**नशा-पानी करना**

मादक द्रव्यों का सेवन करना । प्रयोग—भोजन मेरे सिर करता है, जो कुछ पाता है, नम-पानी में उड़ा देता है (रंग० (२)—प्रेमचंद, २७७)

**नशा मिट्टी होना**

बड़प्पन का अहंकार दूर होना । प्रयोग—वह अपने से बड़े लोगों की घोर नशा मिट्टी हो जाने के भय से देखने का साहस नहीं करता (चिन्ता० (१)—शुक्ल, ११६)

**नशा हिरन होना**

(१) किसी घसंभावित घटना आदि के कारण नशे का बिलकुल उतर जाना, होश गुम होना । प्रयोग—पंचों ने राय साहब का वह फैसला सुना तो नशा हिरन हो गया (गोदान—प्रेमचंद, १७४); महारानी प्राप्ति का चढ़ता नशा हिरन हो गया था (देवकी०—रा० रा०, ७०)

(२) धुन दूर होनी ।



### नशे में डूबा

(१) किसी धुन का सिर पर ऐसा सवार होना जो जल्दी दूर न हो। प्रयोग—यह मुझे कोल्हू का बेल बनाना चाहते हैं। घाटों पहर तम्बाकू ही के नशे में डूबा पड़ा रह, अधिकारियों की चौकट पर मस्तक रगड़ (रंग० (१)—प्रेमचंद, २०६)

(२) शराब, मांग आदि का अत्यधिक नशा होना।

(समा० मुहा०—नशे में चूर)

### नस ठीक कर देना

अच्छा सबक सिखाना। प्रयोग—मृते तो तहसीलदार ही की नस ठीक करने की इच्छा थी (तिली—प्रसाद, १०५)

### नस-नस का पता होना, नस-नस पहचानना

खूब अच्छी तरह से जानना, रोयें-रोयें से परिचित होना। प्रयोग—सब मेरी गुलामी करने को तैयार रहते हैं, उमिर भर, बल्कि उस जन्म में भी, लेकिन मैं उन सबों की नस पहचानती हूँ (गोदान—प्रेमचंद, ४८); मैं औरतों की नस-नस पहचानता हूँ (मान० (३)—प्रेमचंद, २६); यह चकमे किसी और को बताइये, यहाँ आपकी नस-नस का पता है (मिखा०—कौशिक, ३८)

### नस-नस ढीली होना

(१) तनाव कम होना, शंका दूर होनी। प्रयोग—तिजोरी के गाड़ जाने पर सिपाहियों की नसें ढीली पड़ी (चोटी०—निराला, १४१)

(२) बहुत थकान होनी।

### नस-नस पहचानना

दे० नस-नस का पता होना

### नस-नस में

पूरी तरह से, सारे शरीर में। प्रयोग—रहा झूठा कुलाभिमान सो उनके नस-नस में भरा हुआ है (भट्ट नि०—बा० भट्ट, ४७); लोगों की नस-नस में गुलामी समाई हुई है (रंग० (१)—प्रेमचंद, ७९)

### नस-नस में बिजली दीड़ जाना

किसी उत्तेजना का शरीर को छा लेना। प्रयोग—जान

पड़ा मुझे बिजली ने डंक मारा। नस-नस में बिजली दीड़ गई (सौ०—इ० स०, २३)

### नस-नस से बाकिफ होना

खूब अच्छी तरह पहचानना। प्रयोग—अनुभवी लष्करन X X आलसी सकर्मक आजकल के बाबू-युवकों की नस-नस से बाकिफ हो चुके (लिली—निराला, ९१)

### नसीब का खेल होना

भाग्य में जो हो। प्रयोग—अभागी हो, तो राजा के घर में भी रोवेगी। यह सब नसीबों का खेल है (मान० (१)—प्रेमचंद, ६४)

### नसीब के मारे, नसीब-जले

अभागा मनुष्य। प्रयोग—गोरखे की घटना तो प्रतीक रूप में ही सामने आई थी, मगर बम्बई में उस समय ऐसे हजारों नसीब के मारे पड़े थे (ये कोठे०—अ० ना०, २४); अब तो मुझ नसीब-जली का सहारा तू ही है (मां—कौशिक, २३७)

(समा० मुहा०—नसीब के खोटे)

### नसीब जल जाना,—फिरना,—फूटा होना

भाग्य खराब होना। प्रयोग—क्या हम लोगों के नसीब के साथ आप लोगों का दिल भी फिर गया? (राधा० ग्रंथा०—राधा० दास, ७१९); बड़ कहती होगी—मेरे पास रहने नहीं, मेरा नसीब जल गया (गवन—प्रेमचंद, १३७); बेल पण्डित, हमारा नसीब फूटा है (भुले०—मग० वर्मा, २६१)

(समा० मुहा०—नसीब खोटा होना,—सो जाना)

### नसीब-जले

दे० नसीब के मारे

### नसीब फिरना

दे० नसीब जल जाना

### नसीब फूटना

दे० नसीब जल जाना

### नह उंगली का दुखना न सहा जाना

तनिक भी तकलीफ न सही जानी। प्रयोग—जिसकी नह-



ऊंगली का दुखना मुझ से सहा न जाता (मर्म०—हरिऔध, १५०)

### नह गिर जाना

(१) काम करने योग्य न रहना । प्रयोग—हार हिम्मत न छोड़ देंगे हम नह नहीं गिर गया हमारा है (चुमते०—हरिऔध, ८)

(२) अपाहिज या कोड़ी हो जाना ।

### नह में कील ठोकना

बहुत कष्ट देना । प्रयोग—कर सकें तो सदा करें हित हम कील नख में कभी नहीं ठोकें (बोल०—हरिऔध, २१७)

### नहर बहा देना

बहुतायत कर देना । प्रयोग—खुदा कसम, डायरेक्टर डेसाई के यहां तिकड़म भिड़ाया है । लड़ गया तो नहर बहा देंगे स्वाच की (पैतरे—अशक, १०७)

### नहलाना

पूरी तरह लिप्त कर देना । प्रयोग—निज हृदय माधुरी में जग को नहलाओ (स्वर्णधूलि—पंत, १४५)

### नहाते समय घाल भी न खसना

तनिक भी अनिष्ट न होना । प्रयोग—सूर धमीस जादू दहो, जनि न्हातहु बार खसैं (सु० सा०—सूर, ३७८८)

### नहारू के लिए गाय मारना

तुच्छ आवश्यकता के लिए बड़ा नुकसान करना । प्रयोग—फिर पछतैहसि अंत अभागी । मारसि गाई नहारू लानी (राम० (अ)—तुलसी, ४०६)

### ना-मुलायम बात

कटु वचन । प्रयोग—खिदमतगारों की तो हस्ती ही क्या है, हमसे कोई रईसजादा तक तो कभी नामुलायम बात कह नहीं सकता (मा—कौशिक, १९९)

### नाक-आंख

रूप-आकार । प्रयोग—डिगरी हो, बंधी नौकरी या जाय-दाद हो × × रंग मोरा और नाक आंख भले हों (शेखर (२)—अज्ञेय, ७०)

### नाक उड़ना,—उतरना

इज्जत जानी । प्रयोग—नाक उड़ जाय या उतर जावे नक-चढ़े नाक है चड़ा लेते (बोल०—हरिऔध, ७३)

### नाक उतरना

दे० नाक उड़ना

### नाक ऊंची रहना या होना

इज्जत रहनी या होनी । प्रयोग—(मुंशीजी) बोले—बामनों की नाक ऊंची रही, अब पे साले चनियाे क्या कर लेंगे ? (बीने०—रा० रा०, ४)

### नाक कट जाना,—कतर जाना

इज्जत चली जानी । प्रयोग—कियो घात डोरि धमीरन उमराउ परि, गई कटि नाक सिगरेई दिल्ली दल की (भूषण ग्रंथा०—भूषण, १६३); जब कि करतूत से गये कतरा । नाक कैसे न तब कतर जाती (बोल०—हरिऔध, ७३); प्रत्यक्ष कौरव पक्ष की तब नासिका-सी कट गई (जय०—गुप्त, ८७); ब्राह्मण ठाकुर थोड़े ही थी कि नाक कट जायगी (मान० (१)—प्रेमचंद, २); और अधिक सिपाही मंगाने में नाक सी कटती थी (झांसी०—पृ० वर्मा, २७८)

### नाक कटवाना

बेइज्जती करवाना । प्रयोग—यही सब बातें नाक कटाने की हैं (मान० (१)—प्रेमचंद, ६१); हम चली आई रीत को छोड़ अपनी नाक कैसे कटा लें (झुठा० (१)—यशपाल, ७); मैं उसकी लटकी से ध्याह करके अपनी नाक कटवाऊंगा । (मिसा०—कौशिक, ४३)

### नाक-कटाई

बेइज्जती । प्रयोग—कभी-कभी ऐसी दुर्घटना हो ही जाती है, पर इसमें कैसे जग-हंसाई और नक-कटाई (मान० (१)—प्रेमचंद, ६३)

### नाक कतर जाना

दे० नाक कट जाना

### नाक काटना,—कान काटना

परास्त करना, बेइज्जत करना, अपमान करना । प्रयोग—स्वाधीनता की नाक काटनेवाली इस जाति पाति की कुरीति



देख यही मन में घाता है कि... (भट्ट नि०—बा० भट्ट, ४८); जब लगाई गई गले से तो, काटती क्यों न नकटाई (सम०—हरिऔध, ९५); भोमट के समय जितने सरकारी गवाह बने थे, सबों के नाक कान काट लिये थे चलिस्तर ने (मैला०—रेणु, १५५); सखी लड़की ब्राह्मण लड़के से शादी करेगी—ब्राह्मण लड़का मनु की नाक काटेगा (शेखर (२)—अज्ञेय, १५१)

(२) कड़ा दड़ देना ।

नाक-कान काटना

दे० नाक काटना

नाक की सीध में

एकदम सीधे रास्ते । प्रयोग—मुझ तेजी के साथ नाक की सीध भागता हुआ चला गया (मिस्त्रा०—कौशिक, १३५-६) × × बड़े बड़े शहरों में × × इसके बाले × × निराशा और शोभ के अवतार बने नाक की सीध में भले जाते हैं ... (गु० कहा०—गुलेरी, ४८)

नाक के नीचे

प्रत्यक्ष, उपस्थिति में । प्रयोग—अगर शान्तनु की स्त्री ने अपने नाक बच्चे मार डाले, उसकी नाक के नीचे × × तब तो निस्संदेह शान्तनु पापी है... (गंगा०—सुप्र, २७)

नाक के बाल नचाना

खुब हैरान करना—इच्छानुसार नाक नचाना । प्रयोग—भरि मन हिये हरि मुनि सम्हार सदै करि नाक नचाय राखी (धन० कवित्त—धना०, ४६)

नाक के बाल होना

बहुत घनिष्ठ या प्रिय होना, महत्व पाना । प्रयोग—तब करेगा न नाक में दम क्यों नाक का बाल जब बना कोई (बोल०—हरिऔध, ७५); यही कारण था कि नास जी महाराज की नाक का बाल बना हुआ था (गोली—चतुर०, १४०)

नाक घुसाना,—डालना

अवधिकार हस्तक्षेप करना । प्रयोग—श्रीम मिनिस्टर के मुंह लगी है । हर जगह नाक डालती है (झुठा० (२)—यशपाल, ३३८); किसी के धरम में नाक घुसाना अशुद्ध नहीं है (मैला०—रेणु, ११५)

(समा० मुहा०—नाक घुसेड़ना)

नाक चढ़ना या चढ़ाना

(१) नफ़रत करना या असंतोष प्रकट करना । प्रयोग—अमल-कमल-दल सेज बिछैये । ऊपर कोमल बसन डमये । तापर सोबत नाक चढ़ाये । सो वह मुकुमारता कहाये (नंद० ग्रंथा०—नंद०, १०९); जदनि लौंग ललितौ, तऊ तून पहिरि इक जांक । सदा सांक बढ़िये रहै रहै चढ़ी सी नाक (बिहारी रत्ना०—बिहारी, ६८५ (÷)); पैटन प्राण खरी घनखोली मु नाक चढ़ाई डोलत टेंटी (धन० कवित्त—धना०, १३३); सिर हिलाकर, मुंह धुंकाकर, नाक भी चढ़ाकर, घांखें फिराकर लगे कहने... (ईशा०—ईशा०, ८९); नाक उड़ जाय या उतर जाये तब-चढ़े नाक हैं चढ़ा लेते (बोल०—हरिऔध, ७३)

(२) रोष करना । प्रयोग—देखिए प्रयोग (१) में (÷)

नाक छिदना

अपमान, दुर्गति होनी । प्रयोग—देखकर नाक जाति की छिदती । छरछराती मगर नहीं छायी (चुभते०—हरिऔध, ६५)

नाक जाना

इज्जत जानी । प्रयोग—बल प्रताप वीरता बड़ाई । नाक पिनाकहि संग सिधाई (राम० (बाल)—तुलसी, २७३)

नाक डालना

दे० नाक घुसाना

नाक तक

एकदम भरा हुआ । प्रयोग—समुरों की हावत अब बहुत खराब हो रही थी । उनके नाक तक खराब ठूस गई थी (देशाल० (१)—चतुर०, १९८)

नाक दबाना

अर्थात्, असंतोष प्रकट करना । प्रयोग—किसलिये नाक तब दबाते हैं दाब में देह जब नहीं घाती (बोल०—हरिऔध, ७३)

नाक पकड़ कर घुमाना

इच्छानुसार काम करवाना । प्रयोग—हमेसा से खीची के गुलाम रहे, जिस तरफ चाहती है, नाक पकड़ कर घुमा देती है (रंग० (२)—प्रेमचंद, ४१६)



### नाक पर गुस्सा रखा रहना

साधारण सी बातों पर फौरन कोप सा जाना। प्रयोग—गुस्सा उसकी नाक पर रहता था, बात-बात पर मजदूरों को गालियाँ देना, डांटना और पीटना उसकी आदत थी (मान० (१)—प्रेमचंद, ३०२)

### नाक पर मक्खी न बैठने देना

(१) अपने ही गवं में डूबे रहना। प्रयोग—मैंने तो कह दिया, भैया वह नाक पर मक्खी भी नहीं बैठने देती, गालियों से बात करती है (गोदान—प्रेमचंद, २०); आरती का विचार था कि जूनतारा उसे झट अपने मन की बात बता देगी पर जूनतारा तो नाक पर मक्खी नहीं बैठने देना चाहती है (ब्रह्म—दे० स०, ५७)

(२) खरा होना।

(३) साफ होना।

### नाक पर रख देना

मांगते ही तुरन्त दे देना। प्रयोग—दूसरों को देती, मूढ़ की जगह मूल भी गायब हो जाता, हमने लिया है तो हाथ में रुपये आते ही नाक पर रख देंगे (गोदान—प्रेमचंद, २९८); अरे बेटा, हम लोगों में ऐसा ही होय है। हजार नाक पर मारे तब फेरे दिए सभी ने (धरती०—वि० प्र०, १५४)

### नाक फटना

बहुत दुर्गन्ध के कारण हैरान आ जाना। प्रयोग—शहर की उन अंधेरी, तंग गलियों में × × जहाँ दुर्गन्ध के मारे नाक फटती थी, भारत की कम कमाऊ संतान × × प्राण दे रही थी (कर्म०—प्रेमचंद, २१६); सील और बदव से नाक फटी जाती थी (गवर्न—प्रेमचंद, ३०१)

### नाक बचना

इज्जत रह जानी। प्रयोग—नैयर के विश्लेषण और तर्कों से तो परिवार की नाक नहीं बच सकती थी (झूठा० (२)—यशपाल, ५७४)

### नाक बचाना

इज्जत बचानी। प्रयोग—नाक जब है सिकोड़ते हित सुन किस तरह नाक तो बचावेंगे (बोल०—हरिऔध, ७३)

### नाक भी चढ़ाना,—सिकोड़ना

अर्थात् या अप्रसन्नता प्रगट करनी; घिनाना या चिढ़ाना; ना-पसंद करना। प्रयोग—हमारे पाठक × × नाक भी सिकोड़ रही कहेंगे आज हमने कहाँ का राहों का सा चर्चा ओटना प्रारंभ किया (मट्ट नि०—वा० मट्ट, १३४); मेरे भाई बंद अब भी नाक भी सिकोड़ेंगे (कर्म०—प्रेमचंद, ७५); हम लोग तुम्हारे साथ यहाँ तक आये तुम जरा दूर चलने में भी नाक-भी सिकोड़ते हो (मिस्री०—कौशिक, १३२) तो हम क्या करें ?—जूनतारा ने नाक-भी चढ़ाई (ब्रह्म०—दे० स०, २२०)

### नाक भी सिकोड़ना

### दे० नाक भी चढ़ाना

### नाक मलना

तंग करना। प्रयोग—मोम की नाक, मोम दिल होवें नाक मल मल करें न नाकों दम (बोल०—हरिऔध, ७३)

### नाक मारना

(१) तुच्छ समझना। प्रयोग—पुरी बड़ा आदमी हो गया है। उसने कहीं नाक मार दी तो क्या होगा ? (झूठा० (२)—यशपाल, ५०७) (÷)

(२) उपेक्षा करनी। प्रयोग—देखिए प्रयोग (१) में (÷)

### नाक मिट्टी में घिस-घिस कर मर जाना

बहुत प्रयत्न करना पर असफल रहना। प्रयोग—घरे मिया, घर में एक टुकड़ा गा दू तो नाक मिट्टी में घिस-घिस कर मर जाओगे, न समझ में आयेगा, न कुछ पल्ले पड़ेगा (दूधगाछ—दे० स०, २६८)

### नाक में दम आना या होना

जी ऊब जाना, परेशान होना। प्रयोग—नाक संवारत आये हो नाकहि, नाहि पिनाकिहि नेकु निहोरो (कवि०—तुलसी, २०१); उस रानी की तारीफ मुनते-मुनते तो नाकों में दम आ गया (राधा० ग्रंथा०—राधा० दास, ५८४); कभी तीरथ, कभी कुछ कभी कुछ, मेरा तो × × नाक में दम आ गया (गवर्न—प्रेमचंद, १७७); यहाँ मित्रों के मारे नाकों दम रहता है, धाकर बैठ जाते हैं तो उठने का नाम भी



नहीं लेते (मान० (१)—प्रेमचंद, २८४); बेगार के बारे दिसांगमुख का नाक में दम आ गया है (ब्रह्म०—दे० स०, २२४)

### नाक में दम करना

बहुत परेशान करना। प्रयोग—पतंगे कमबख्त अलहदा नाक में दम कर रहे थे (पद्म पराग—पद्म० शर्मा, २७१); इन जंतानों ने मेरी नाक में दम कर रखा है (गवर्न—प्रेमचंद, १०४); इंग्लैंड के प्रकाशक इतने प्रबल और शक्तिमान हैं कि टाइम्स जैसे पत्र की भी वे नाकोदम कर सकते हैं (सा० सी०—महा० द्विवेदी, ९४)

### नाक में नकेल डालना

पूरी तरह बस में करना। प्रयोग—अंत को आंखों पर पट्टी बांध कर कानों में ठीठे ठोककर, नाक में नकेल डालकर आदमी को जिधर तिधर घसीटे फिरता है (गु० नि०—बा० मु० गु०, २०१)

### नाक में नकेल न होना

कोई रोक टोक या बंधन न होना। प्रयोग—उसकी नाक में नकेल थोड़े ही है। इसापन है, उसे किसी का डर-लिहाज थोड़े ही है (झुठा० (२)—यशपाल, ४८३)

### नाक रखना

मर्यादा बनाए रखना, इज्जत का खयाल रखना। प्रयोग—मदारोलाल ने अपनी सज्जनता दिखायी तो मुझे भी तो अपनी नाक रखनी है (मान० (१)—प्रेमचंद, ९४); राजा से कुछ नहीं लूंगा, अपने पुरखों की नाक रक्खूंगा (मृग०—वृ० वर्मा, २०५); वे मुने जो कि नाक कुल की है रह सकी नाक, नाक रखने से (बोल०—हरिऔध, ७३)

### नाक रगड़ कर रह जाना

सूखामद करते-करते हैरान हो जाना; चेंष्टा करने पर भी असफल रह जाना। प्रयोग—बहु नाक रगड़कर रह जाय तब भी वह सौदा होकर रहेगा (मान० (४)—प्रेमचंद, ८१)

### नाक रगड़ना

बहुत पिड़पिड़ाना, मिन्नत करनी। प्रयोग—जो रहीम पगतर परे, रगड़ नाक अरु सीस (रहीम कवि०—रहीम, १०); मिर भुलाकर नाक रगड़ता है उस अपने बनाने वाले

के सामने जिसने हम सब को बनाया (ईशा०—ईशा०, ८७) उसको रुपये की गर्ज होगी तो वह नाक रगड़ता आप चला आवेगा (परीक्षा०—श्री० दास, १०८); नाक रगड़े मिटे नहीं रगड़े (चुमते०—हरिऔध, ३२); घरे छोटी इनके बस की नहीं है, जब तक यह नाक रगड़ कर उसे पूरी तरह न मनावें (मूले०—मग० वर्मा, ३०६)

### नाक रगड़वाना

बिगड़ता प्रगट करवाना। प्रयोग—हे उन्हें चाव ही न भगड़ों का पांव जो प्यार-पंच में डाले वे रखेंगे न काम रगड़ों से नाक ही क्यों न हम रगड़वा ले (चोखे०—हरिऔध, १३६)

### नाक रहना

इज्जत बनी रहनी। प्रयोग—वे मुने जो कि नाक कुल की है रह सकी नाक नाक रखने से (बोल०—हरिऔध, ७३)

### नाक सिकोड़ना

(१) उदासीनता प्रगट करनी। प्रयोग—फिर नारी की आर्थिक स्वतंत्रता पर नाक सिकोड़ने का क्या मतलब ? (दूधगाछ—दे० स०, २७९) (÷) (÷१)

(२) अर्चन या पूजा प्रगट करनी। प्रयोग—तनिक कहीं खूल जाय तो यू यू कर सब नाक सिकोड़ेंगे (भा० प्रशा० (२)—मारतेन्दु, ५५४); अचछे चित्र की प्रशंसा करते हैं, बुरे चित्र पर नाक सिकोड़ लेते हैं (सु० सु०—सुदर्शन, १६३) (÷१); एक ने मुंह बनाया और दूसरे ने नाक सिकोड़ी (इस्ता०—मग० वर्मा, ५९) (÷१); मीना की सहेलियों ने नाक सिकोड़ी (कठ०—दे० स०, ४७) (÷१); देखिये प्रयोग (१) में (÷) भी

(३) अवहेलना करना या तुच्छ समझना। प्रयोग—श्रुति बड़ि मोरि डिठाई खोरी। मुनि अप नरकहु नाक निकोरी (राम (वाल)—तुलसी, ३९); देखिये प्रयोग (१) एवं (२) में (÷१) भी

### नाक से आगे न देख पाना

बहुत ही सीमित-संकुचित दृष्टि होनी। प्रयोग—स्त्रियां अपनी नाक से आगे नहीं देख सकती। उन्हें बड़ि होती है पास तक की (कल्याणी—जेनेन्द्र, ४०)



### नाक होना

(१) खेष्ट होना । प्रयोग—मेवाड़ सारे राजपूताने की नाक है (विष०—प्रेमी, ४७); राजाबहादुर लखनऊ के रईसों की नाक है (बूँद०—अ० ना०, ११); चीसू को वह शहर के पहलवानों की नाक बनाना चाहता था (रंग० (१)—प्रेमचंद, १६२)

(२) इज्जत होनी । प्रयोग—नाक बिरादरी में सबकी होती है (बीने०—रा० रा०, १४३)

(३) प्रतिष्ठा होनी ।

### नाका छेकना,—बंद करना

आने-जाने का मार्ग रोकना । प्रयोग—इस सितम संगीन सांसत से कहीं आज तक कोई छिका नाका नहीं (चुभते०—हरिऔध, ६१); आज वहां जाना दुस्साहस है । मुना नहीं, सारे नाके बंद कर दिए गए हैं (रंग० (२)—प्रेमचंद; ३५९); करतबीकी देख नाका बंदियां छक गई सी है निकल पाती नहीं । छीकने वाले करें तो बया करें छीकते हैं छोक ही पाती नहीं (चुभते०—हरिऔध, ३३)

(समा० मुहा०—नाका बांधना)

### नाका बंद करना

#### दे० नाका छेकना

### नाकों आना

हेरान हो जाना—बहुत तंग हो जाना । प्रयोग—जमुमति लालहि कहति, लाल ! हों नाकें आई (नंद० ग्रंथा०—नंद०, १७१)

### नाकों चने चबवाना,—बिनवाना

खूब तंग करना, हेरान करना । प्रयोग—इसमुख-बिबस तिलोक लोकपति बिकल बिनाए नाक चना है (गीता० (३)—तुलसी, १३); अब तुम देखना रियासत को वह कंसा नाकों चने चबवाती है (रंग० (२)—प्रेमचंद, १८९); हमारी मोना पराये घर जाकर भी वह एक्किंग करेगी कि एकबार तो सास-ननद को नाकों चने चबवा देगी (कठ०—दे० स०, ४०); कैकेयी मंभली होते हुए भी पट्ट महादेवी को नाकों चन चबवा सकती थी (ये कोठे०—अ० ना०, ६१)

### नाकों चने बिनवाना

#### दे० नाकों चने चबवाना

### नाकों दम होना

खूब तंग होना, हेरान होना । प्रयोग—‘है नकेल से नाकों में दम’ कहते मानो रो रो कर (नूर०—भक्त, १२)

### नाखून दुखना

तनिक भी कष्ट होना । प्रयोग—जाय दुख तो जी हमारा जाय दुख देखिये उनकी न नह उंगली दुखे (चोखे०—हरिऔध, १३६)

### नाग को जगाना

खतरनाक व्यक्ति या स्थिति को छेड़ना । प्रयोग—मैंने ही सत्याग्रह का झंडा लड़ा किया, नाग को जगाया, सिंह के मुंह में उंगली डाली (रंग० (२)—प्रेमचंद, ३५८)

### नाच उठना

(१) प्रसन्न हो उठना । प्रयोग—भकबर का ‘दीवान’ पाकर दिले-दीवाना खुशी से मस्ताना हो नाचने लगा (पद्म पराग—पद्म० शर्मा, २६९)

(२) बहुत उत्तेजित होना । प्रयोग—इसकी खबर पाकर वह क्रोधसे नाच उठता है (बिता० (१)—शुक्ल, १४३)

### नाच नचाना

जैसा चाहना वैसा काम कराना । प्रयोग—तौनि लोक पूरा पेलना, नाच नचावे एक जना (कबीर ग्रंथा०—कबीर, १५४); गिरिधर को भपन बस कोन्हें, नाना नाच नचावे री (सू० सा०—सूर, १८५६); अंग विभग, अनंग-भरे दंग भौह नचाय नचावत नाचनि (घन० कवित्त—घना०, २००); ... हनुमान ने × × ईद्र के दमन करने वाले रावण को खूब नाच नचाया था (गुलरी ग्रंथा० (१)—गुलरी, २६८); सच यह है कि बहुतों को मैंने भी बेतरह तबाह कर दिया, जो नाच बाहा उन्हें नचाया (पद्म पराग—पद्म० शर्मा, ३९८)

(२) दिक करना । प्रयोग—जह कहुं किरत निसाचर पावहि धेरि सकल बहु नाच नचावहि (राम० (लं)—तुलसी, ८६५); पियारे बहु विधि नाच नचावो (भा० ग्रं० (२)—भारतेन्दु, २७८); तू मेहर बड़ी चालाक बनी तूभको मैं नाच नचा दनी (नूर०—भक्त, ५२); मुट्ठी भर अंग्रजों को



हम नाच नचा देंगे (मैला०—रेणु, १७०); नाच सौ सौ बह नचाता है तुम्हें उगलियों पर तुम नचाते हो जिये (बोल०—हरिऔध, १५२)

### नाच नाचना

किसी की इच्छानुसार काम करना। प्रयोग—नाच हमने न कोन सा नाचा कब तमाचा न खा लिया मुह पर (बुमते०—हरिऔध, ६०)

### नाचना

किसी की इच्छानुसार काम करना। प्रयोग—नारि जिस नर सकल गोसाईं नाचति नट मकंद की नाई (राम० (उ)—तुलसी, ११२७); पुरुष हमेशा नाचता थाया है, स्त्रियां नचाती आयी हैं (नदी०—अज्ञेय, १७९); अब तो जो नाच नचायोमें, नाचना ही पड़ेगा (ईस्टा०—भग० वर्मा, ९६)

### नाचना कूदना

बोरे गुस्से का आतंजर करना। प्रयोग—गुलिसवाले खूब घात पीसेंगे, खूब नाचें कूदेंगे, शायद मुझे कच्चा ही खा जाय (गवर्न—प्रेमचंद, २७९)

### नाज़ उठाना

नखरे सहना। प्रयोग—अगर मैं तुम्हें इतना नीच, इदय-हीन, इतना बिलासांच समझती तो इस तरह तुम्हारे नाज़ न उठाती (मान० (७)—प्रेमचंद, ३७)

### नाड़ी गिरी होना

नाड़ी की गति एवं शक्ति विधिल होनी, हालात ढीले होना। प्रयोग—इस समय तो नाड़ी बहुत गिरी हुई मालूम होती है (चित्र०—कौशिक, ८१)

### नाड़ी पहचानना

परिस्थिति या मनःस्थिति को घच्छी तरह समझना। प्रयोग—इसके अतिरिक्त नगर में अपने प्रभाव की नाड़ी पहचानने के लिए उनके गुलबर् नागरिक जीवन के सभी क्षेत्रों में व्याप्त थे (सुहाग०—अ० ना०, २८); पर अब मालूम हो गया कि कलम घिसना और बात है, मनुष्य की नाड़ी पहचानना और बात (मान० (४)—प्रेमचंद, ५५)

### नाड़ी फड़कना

जोश घाना। प्रयोग—बलब बिलात बिलखात बीजापुर-

पति फिरत फिरगिन की नारो फरकति है (भूषण प्रथा०—(भूषण, २१०)

### नाता जोड़ना

सम्बन्ध जोड़ना या स्थापित करना। प्रयोग—जब नहीं मेव जोल है भाता किरलिये जोड़ते फिरे नाते (बोल०—हरिऔध, ४४)

### नाता टूटना

सम्बन्ध न रखना। प्रयोग—तब तँ मुह सौ नाता टूट्यो, जेसँ कांचो मूत री (सू० सा०—सूर, ७५४)

### नाता तोड़ना

सम्बन्ध न रखना। प्रयोग—दिन-दिन तोरन लागे नातो (सू० सा०—सूर, ४५५२); मुना-मुनाकर जली कटी बह तोड़ रहा है नाता (मर्म०—हरिऔध, १५०)

### नादिरशाही हुक्म

ऐसा हुक्म जिसका पालन करना अनिवार्य हो। प्रयोग—नादिरशाही हुक्म है कि जितनी जल्द हो सके, यह जत्था हरममरा से दूर हटा दिया जाय (रंग० (१)—प्रेमचंद, ३१६)

### नानी का घर होना

घाराम की जगह होनी। प्रयोग—इस प्रकार कोमिल में कब नानी जी का घर बन जाता (गु० नि०—बा० मु० गु०, ६३०)

### नानी के नाम रोना

बहुत दुखी होना। प्रयोग—उस वक्त कैसे प्रसन्न थे XX अब नानी के नाम रोओ (मान० (४)—प्रेमचंद, २८७)

### नानी मर जाना

(१) होश हवास गुम होना या हिम्मत पस्त होनी। प्रयोग—अब भी जिस समय वह यह समाचार सुनेगा तो नानी मर जावगी (मा—कौशिक, ३५६); पड़-पड़ कर मेरी लिखावट लोगों की मरे नानी (गु० नि०—बा० मु० गु०, ६७२); साने को रेंड सेर, काम करने को नानी मरती है (मान० (१)—प्रेमचंद, ११६)

(२) अत्यंत अवभीत होना। प्रयोग—आप एक बार कह दें तो सबों की नानी मर जावे (मैला०—रेणु, २२१); उसे देखते ही मेरी नानी मर गयी (गवर्न—प्रेमचंद, १६४)



### नाम-तौल करना

ठीक-ठीक जांच या परख करनी। प्रयोग—ज्यों-ज्यों मैं अपने जीवन की कहानी को सोचता हूँ, उसकी एक-एक बात को नाप तौल कर, उसकी विवेचना कर एक विद्रोही के जीवन में उसके महत्व पर विचार करता हूँ, ज्यों-ज्यों उसके प्रति मेरा आदर भाव बढ़ता जाता है (शेखर (१)—अक्षेय, ३८)

### नामी लगा

कम उम्रवाला, अनजान, अननुभवी। प्रयोग—नामी लगी हुई छोड़ी वैसी बात बोलेंगी भला? (परती०—रेणु, ४६९)

### नाम उछालना

(१) नाम का प्रचार करना। प्रयोग—इस अवसर पर वह दूसरों से चंदा वसूल करने के लिए तुम्हारा नाम उछालता फिरेगा (रंग० (२)—प्रेमचंद, १४३-४४)

(२) बदनामी करना—चारों तरफ निंदा करनी।

### नाम उजागर करना

खुब ख्याति होनी। प्रयोग—बाप दादा का नाम तो खूब उजागर कर चुकी, अब क्या करने पर लगी है? (गोदान—प्रेमचंद, २२५)

### नाम कटना

किसी की सूची या रजिस्टर से नाम पृथक् किया जाना। प्रयोग—या तो फीस दीजिए या नाम कटाइए (कर्म०—प्रेमचंद, १)

### नाम कमाना

ख्याति प्राप्त करनी। प्रयोग—जो कुछ नाम कमा डाला है उसको मत बदनाम करो (गु० नि०—बा० मु० गु०, ६२१); सभालो, बिगड़ी बात बनाओ। भले काम कर नाम कमाओ (मर्म०—हरिऔध, १६); व्याख्यान भी खूब देती थी और अभिनय कला में तो उन्होंने लंदन में नाम कमा लिया था (मान० (१)—प्रेमचंद, २६८); उन्होंने संगीत में नाम कमाया ही परन्तु इसके अतिरिक्त कंकोवेवाजी में भी सरनाम रही (ये कोठे०—अ० ना०, १००-८); सबिए, इतना नाम कमाकर वे वैसे ही होमली बने हुए हैं (रेशमी०—राम० वर्मा, ३४)

(समा० मुठा०—नाम करना)

### नाम का जूता पहनना

किसी दूसरे के नाम का फायदा उठाना, नाम से। प्रयोग—जीर वह भी मामूलीपन के चारों ओर फँसे काटो पर शहीद के नाम का जूता पहन कर चढ़ गया था, नाम पंदा करने के लिए (बीने०—रा० रा०, ८८)

### नाम का डंका पिट जाना

खूब पस फेंकना। प्रयोग—तुम्हारी डाक्टरी ऐसी चमकेगी कि तुम्हारे नाम का डंका पिट जायगा (तिल्ली—प्रसाद, १४९)

### नाम की धूम पड़ना,—मचना या होना

ख्याति होनी। प्रयोग—जिन दिनों स्वामीदयानन्द जी के नाम की बड़ी धूम-धाम पड़ी थी, उन दिनों मुरादाबाद में मुन्शी इन्द्रमणी के नाम की भी बड़ी धूम मची थी (गु० नि०—बा० मु० गु०, १२)

### नाम की धूम मचना या होना

दे० नाम की धूम पड़ना

### नाम की प्यास

ख्याति की इच्छा। प्रयोग—नाम की यह प्यास मिट्टी में मिले जो कि बुझ पाई न बातों के पिये (चुमते०—हरिऔध, ६२)

### नाम की माला जपना या जपी जाना

स्मरण करना या किया जाना। प्रयोग—रात को लौटी हो, और सबेरे घर-घर तुम्हारे नाम की माला जपी जा रही है (निशी०—वि० प्र०, २२८)

### नाम के

जिसमें वास्तविकता न हो, दिखावटी। प्रयोग—नाम के उन साधुओं के सामने × × किस तरह से आप भूक जायें भला (चुमते०—हरिऔध, १२५)

### नाम के भूखे

कीर्ति या पस पाने के बड़े इच्छुक। प्रयोग—नाम के तो रहे बहुत भूखे काम की बात कान कर न सके (चुमते०—हरिऔध, १०२)



### नाम के पीछे—लिये

(१) छोड़ा सा। प्रयोग—नाम के ही कुछ गुनाहों के लिए है गला चोंटा नहीं जाता कहीं (बोल०—हरिऔध, ३७)

(२) स्थाति के लिए। प्रयोग—वे करें हित न तो अहित न करें हों न बदनाम नाम के पीछे (चुमते०—हरिऔध, १४२)

(३) कहने सुनने के लिए।

(समा० मुहा०—नामको)

### नाम के लिये

दे० नाम के पीछे

### नाम को धूकना

पूरा करनी या धिक्कारना। प्रयोग—जब हक मुझे मिलेगा, दुनिया मेरे नाम को धूकेगी (मारती०—रा० रा०, १०६)

(समा० मुहा०—नाम पर धूकना)

### नाम को न रहना

तनिक भी न होना। प्रयोग—नाम के साथ वे लिखें देवी जो रखें नामको न देवीपन (चुमते०—हरिऔध, १४८)

### नाम को बढ़ा लगाना या लगाना

बदनामो होनी या करनी। प्रयोग—उसके नाम को बढ़ा नहीं लगाना चाहिए (भूले०—भग० वर्मा, १५९); मैं इसनाम के नाम को बढ़ा न लगाऊंगा (मान० (३)—प्रेमचंद, २०८)

### नाम को रोना

(१) किसी निकट सम्बन्धी के पुनर्कर्म पर दुखी होना। प्रयोग—यह तो नहीं होता कि पुरुष तो गुलछरें उड़ाये और स्त्री उसके नाम को रोती रहे (कर्म०—प्रेमचंद, २००)

(२) किसी के लिए रोना।

(३) स्थाति के लिये लायावित होना।

### नाम गंध न जानना

तनिक भी जानकारी न होनी। प्रयोग—या क्या जाने भाई, मैं तो धर्म-साधना का नाम गंध भी नहीं जानता (बाण०—ह० प्र० द्वि०, २१०)

(समा० मुहा०—नाम न जानना)

### नाम चमकना या चमकाना

खूब स्थाति होनी या करनी। प्रयोग—उस जमाने में कानपुर की गानेवालों में उसका नाम तेजी से चमकने लगा था (ये कोठे०—अ० ना०, ११३); मैं तो पहले ही जानता था कि तू अपने बाप का नाम चमकाएगा (मा—कौशिक ३५५)

### नाम चलना

(१) वंश चलना। प्रयोग—जब यह है कि चाचा का नाम तो चलता रहेगा—रिवाजत बनी रहेगी (मिखा०—कौशिक, ६५) (÷)

(२) यादगार बनी रहनी। प्रयोग—जो कहीं संतान दुश्चरित्र निकल गई तो नाम चलने के बदले और उल्टा डूब जाता है (मा—कौशिक, १५); देखिये प्रयोग (१) में (÷) भी

### नाम छेकना

किसी के नाम लिखी रकम को बेबाक करना। प्रयोग—तुम्हारे नाम वही में साढ़े पांच मन लिखा हुआ है × × दे दो तो तुम्हारा नाम छेक दू (मान० (४)—प्रेमचंद, १९१)

### नाम जपना

(१) ईश्वर या देवता का नाम स्मरण करना। प्रयोग—गिरिजा जानु नाम जपि मुनि काटाहि भव पास (राम० (लं)—तुलसी, ९४३)

(२) बार बार नाम लेना; भरोसे रहना।

### नाम टांकना

वही आदि में किसी के नाम रकम डालनी या जमा करनी। प्रयोग—बुढ़िया ने डरते डरते कहा—तो लाओ दे दो बेटा, मेरा नाम टांक लेना, पठानिन (कर्म०—प्रेमचंद, ३६)

### नाम दुबाना,—धराना,—घोरना

मान-प्रतिष्ठा को नष्ट करना; मान-प्रतिष्ठा के अनुकूल कार्य न करना। प्रयोग—हारि दियो गुरु लोगनि को डर गांव चबाय से गांव धराये (मति० मक०—मतिराम, १९१); जब ली अस्तित्व प्रताप को क्षत्रिय नाम न बोरिहो (राधा० ग्रंथा०—राधा० दास, ७७४); तुम कभी नाम न धराओगे (राधा० ग्रंथा०—राधा० दास, ६१२); हम सब नै



तो राजपूत को नाम डूबायो (राधा० ग्रंथा०—राधा० दास, ७२५); बाप दादों का नाम तो नहीं डूबाया जाता (रंग० (१)—प्रेमचंद, ९८); धारती दिसांगमुख का नाम डूबावेनी (ब्रह्म०—दे० स०, ११२)

### नाम डूबना

(१) बेइज्जत होना। प्रयोग—जो कहीं संतान दुश्चरित्र निकल गई तो नाम चलने के बदले और उल्टा डूब जाता है (मा—कौशिक, १५)

(२) अस्तित्व समाप्त हो जाना; नामों निशान न रह जाना। प्रयोग—यही अभिलाखा थी कि XX मरने के पीछे अपनी कुछ निशानी रहती नहीं तो कौन जानेगा कि प्रधा कौन था X X जमीन निकल गई तो नाम डूब जायगा (रंग० (१)—प्रेमचंद, १२३-२४)

### नाम तक न रहने देना

बिल्कुल नष्ट करना। प्रयोग—जाओ और गोबर्द्धन पर्वत समेत ब्रज मंडल को बरस बहाओ, ऐसा कि कहीं गिरि का चिह्न और ब्रजवासियों का नाम न रहे (प्रेम सा०—ल० ला०, ६७)

### नाम तक न लेना

(१) कोई सरोकार न रखना। प्रयोग—देह दहै न रहै मुधि गेह की भूलि हू नेह को नांव न लोखै (घन० कवित्त—घना०, २०७)

(२) बिल्कुल न चाहना। प्रयोग—वह तो जेवरों का नाम तक नहीं लेती (गवत—प्रेमचंद, ४९)

### नाम धरना

(१) बदनाम करना। प्रयोग—कबीर गुर गरया मित्या रलि गया आटे लूण। जाति पाति कुल सब मिट, नांव धरोगे कोण (कबीर ग्रंथा०—कबीर, २); धव गांव रे नांव रे कोऊ धरो हम सांवरे रंग रगी सो रगी (ठाकुर०—ठाकुर, ३४); मोहि अपने काम सो काम खली कुल के कुल नाम धरो तो धरो (भा० प्र० (२)—भारतेन्दु, १७१); कुल चोरिन सब कहत गांव में ओर नाम का धरिहै (राधा० ग्रंथा०—राधा० दास, ६४); लोगनाम धरने कि खर्च से डर गये (छुटा० (१)—यशपाल, ७)

(२) नामकरण करना। प्रयोग—गुन बिहून का पेखिये काकर धरिये नांव (कबीर ग्रंथा०—कबीर, २३९); ताते होति है छाया जाइ। लीजै सरिकनि नाम धराइ (नंद० ग्रंथा०—नंद०, २१२); नांव धरे जग में घन आनंद नांव सझारो तो नावं सही क्यों (घन० कवित्त—घना०, १०२)

### नाम धराई होना

बदनामो होनी। प्रयोग—मिलिबो बड़ी दूर रह्यो 'हरिचंद' दई इक नाम धराई हूँ (भा० प्र० (२)—भारतेन्दु, १४८); आज इस सूर्यवंश को नामधराई न हो (राधा० ग्रंथा०—राधा० दास, ६२५)

### नाम धराना

#### दे० नाम डूबाना

#### नाम न लेना

(१) कभी याद भी न करना, चर्चा न करनी। प्रयोग—जोवन रूप दुराइ धर्यो है, ताको लेति न नाम (सू० सा०—सूर, २०९९); क्या भीख ? खरे राम राम ! बाबा, भीख मांगने का नाम मत लेना (मिस्त्रा०—कौशिक, १९)

(२) दूर रहना, बचना।

#### नाम न होना

(१) तनिक भी न होना। प्रयोग—भर गया पोर पोर में घोगुन नाम हम में न रह गया गुन का (चुभते०—हरिऔध, १०७)

(२) गिनती न होनी, गण न होना।

#### नाम पड़ना

(१) नामकरण होना। प्रयोग—जल-धल ब्यापी-सदा अंतरजामी उदार, जगत में नावं जानराय राखी परि रे (घन० कवित्त—घना०, ६२)

(२) बकाया लिखा जाना या होना।

### नाम पर जान देना

(१) बहुत थढ़ा या प्रेम करना। प्रयोग—आज तीन-चौथाई दुनिया जिस महात्मा के नाम पर जान देती है X X उससे यदि तेरा मन विमुख हो रहा है तो वह तेरा दुर्भाग्य और तेरी दुर्बुद्धि है (रंग० (१)—प्रेमचंद, ४४)

(२) किसी के लिए मरना।



नाम पर (में) धब्बा लगना या लगाना

४१२

नाम मिटना या मिटा देना

(२) किसी के प्रेम में मर जाने की भी परवाह न करना ।

(समा० मुहा०—नाम पर मिटना)

**नाम पर (में) धब्बा लगना या लगाना,—बड़ा लगाना या लगाना**

यश पर लांछन लगाना या लगाना, बदनामी करनी या होनी । प्रयोग—जो लोग जलन के मारे औरों का नुक्सान करके उन्हें अपनी बराबर का बनाया चाहते हैं वह मनुष्य के नाम को धब्बा लगाते हैं (परीक्षा०—श्री० दास, १६२); रसीला को माफ़ कर देते तो उनके नाम पर बड़ा लग जाता (सु० सु०—सुदर्शन, १५९); किसी के घर जाकर काम काज करने में बड़ों के नाम में बड़ा लगता (ठेठ०—हरिऔध, ३७)

**नाम पर धब्बा होना**

कलंकित होना । प्रयोग—जो आजकल रिषि मुनियों का जमाना पोढ़े ही है; अच्छा वह, जिसके नाम पर कोई धब्बा न हो (नदी०—अज्ञेय, ५३)

**नाम पर बड़ा लगाना या लगाना**

दे० नाम पर धब्बा लगाना या लगाना

**नाम पर बिकना**

किसी के वश में पूरी तरह होना । प्रयोग—जाप रहे समुरारि नारि के नाम बिकानो (कुण्ड०—गिरधर दास, ३)

**नाम पर मरना**

(१) नाम होने के लिए व्याकुल होना । प्रयोग—हां आप शुरू से ही नाम पर मरते थे, इसीलिए मुझे भी चाहते थे (बूँद०—अ० ना०, १९८)

(२) किसी व्यक्ति से बहुत प्रेम होना ।

**नाम पाना,—पैदा करना,—फैलना**

प्रसिद्धि प्राप्त करनी । प्रयोग—और वह भी मामूलीपन के चारों ओर फैले कांटों पर ग़हीब के नाम का जूता पहन कर चढ़ गया था, नाम पैदा करने के लिए (बीने०—री० रा०, ८८); उनका बड़ा नाम फैल रहा था (सुहाग०—अ० ना०, १२६); इनके तीन बेटे थे, अहमद खलीफा, मुहम्मद हमन खाँ और बाकर अली खाँ । इन्होंने धब्बा नाम पैदा किया (दे कोठे०—अ० ना०, १०७); मैं कित्ती

दुनिया में नाम पाना चाहता हूँ (पैतरे—अश्क, ४८); नाम पाकर नमक हराम न हों नाम बेंचे न नाम के भूखे (चुभते०—हरिऔध, १४१); इन प्रांतों में पुस्तक प्रकाशन का व्यवसाय करके मुंशी नवल किशोर ने बड़ा नाम पाया (सा० सी०—महा० द्विवेदी, ९६)

(समा० मुहा०—नाम बढ़ाना,—रोशन होना)

**नाम पैदा करना**

दे० नाम पाना

**नाम फैलना**

दे० नाम पाना

**नाम बढ़ाना**

कीर्ति बढ़ाना । प्रयोग—पिता ने × × आशीर्वाद दिया—तु हमारे नाम को बढ़ावेगा (राधा० प्रथा०—राधा० दास, ३५२)

**नाम बेचना**

मर्दावा या प्रतिष्ठा के प्रतिकूल काम करना । प्रयोग—नाम बेचिहों तुमरो करि करि उलटी अघ के काम (भा० प्रथा०—भारतेन्दु, ५४२); जिस आदमी ने मेरा अपमान किया, गली-गली मेरा नाम बेचता फिरा, उसे तुम मुंह लगाती हो, क्या यह उचित है ? (मान० (२)—प्रेमचंद, ३११); नाम पाकर नमक हराम न हों नाम बेंचे न नाम के भूखे (चुभते०—हरिऔध, १४१)

**नाम बोरना**

दे० नाम डुबाना

**नाम भी नहीं**

बिलकुल नहीं । प्रयोग—कर दिया लहर बहर छिन भर में रहा न दुख का नाम कहीं (राधा० प्रथा०—राधा० दास, २२)

**नाम मिटना या मिटा देना**

समूल नष्ट होना या कर देना । प्रयोग—इन्द्रहि पेलि करी गिरि पूजा, मलिल बरसि ब्रज-नाठ मिटावहि । (सु० सा०—सूर, १४७४); संसार से उत्पीड़न का नाम मिटा दो (इंस्टा०—भग० वमा, ५७)



(२) स्मारक या कीर्ति का लोप हो जाना ।

(समा० मुहा०—नाम उठ जाना या उठा जाना)

**नाम रख लेना**

(१) सम्मान बनाए रखना । प्रयोग—बाहू रे छोड़ा !  
नाम रख लिया गांव का (मेला०—रेणु, १००)

(२) नाम निश्चित करना, नाम-करार करना ।

**नाम रटना**

हर समय स्मरण करते रहना । प्रयोग—रहति रखना नाम  
रटि-रटि, कंठ करि गुन गान (सु०सा०—सूर, ४१९६)

**नाम रह जाना**

मान मर्यादा रह जाना, पशु बना रहना । प्रयोग—  
मनमोहन नावं रहे सु करो, पन की पटिहै वह जो  
चटिहै (घन० कवित्त—घना०, १०८)

**नाम रोशन करना या होना**

खूब ख्याति होनी । प्रयोग—क्या इसी कल्ल खून और जुल्म  
की मियाही से तू दुनिया में अपना नाम रोशन करेगा ?  
(मान० (१)—प्रेमचंद, १५४)

**नाम लेकर**

(१) स्मरण कर के । प्रयोग—पहिलेहि तेहिक नाउं सह  
कथा कहौ अवगाहू (पद०—जायसी, १११)

(२) नाम के प्रभाव से ।

**नाम लेना**

सुमिरन करना । प्रयोग—हरि जो कृपा करै लिव लावै,  
लाहा हरि हरि नाम लियो (कबीर ग्रंथा०—कबीर, ३०९)

**नाम-लेवा**

(१) प्रशंसा करने वाले । प्रयोग—दुनिया में हमारे नाम-  
लेवा थे, देस देस में हमारी धाक थी (चुमते०(मु०)—  
हरिऔध, १)

(२) वंशज ।

**नाम लेवा पानी देवा न रहना**

वंश में कोई न रहना । प्रयोग—जिस जिसने आप से  
झोह किया, तिस तिस का जगत् में नाम लेवा पानी देवा  
कोई न रहा (प्रेम सा०—ल० ला०, २२०)

(समा० मुहा०—नाम-लेवा न रहना)

**नाम सम्हालना**

अपने नाम या कीर्ति को बनाए रखना । प्रयोग—  
नावं धरे जग में घनआनंद, नावं सम्हारौ तो नावं सही  
क्यों (घन० कवित्त—घना०, १०२)

**नाम सहना**

बदनाम होना । प्रयोग—नावं धरे जग में घनआनंद, नावं  
सम्हारौ तो नावं सही क्यों (घन० कवित्त—घना०, १०२)

**नाम हंसाना**

बदनामी करवानी । प्रयोग—नाम अपना हम हंसाते  
क्यों रहें है हंसी खोड़ी नहीं अब तक हुई (चुमते०—हरिऔध,  
१६३)

**नामों निशान न होना**

कुछ भी न होना । प्रयोग—खेती का नाम-निशान तक न  
बचा वा (मृग०—वृ० वर्मा, १)

**नामों निशा मिटा देना**

समूल नष्ट कर देना । प्रयोग—धमंड ने उसका नाम  
निशान तक मिटा दिया (मान० (१)—प्रेमचंद, ८१)

**नारद होना**

इधर की बात उधर लगाने वाला व्यक्ति । प्रयोग—वह  
इस गांव के नारद थे, यहां की वहां, वहां की यहां, यही  
उनका व्यवसाय था (गोदान—प्रेमचंद, १२८)

**नारदी बिधा**

इधर की उधर लगाने वाली आदत । प्रयोग—जा में बिधा  
नारदी, बिगरेन देर न लाग, पैस चौर भूसि खान को,  
कहत घनी सों जाग (वृ० स०—वृन्द, १०३)

**नाल एक ही जगह दबी होना**

बहुत घनिष्ठता होनी । प्रयोग—नील मणि और कल्याण  
भगत की नाल एक ही जगह दबाई गई होगी (ब्रह्म०—  
दे० स०, १९)

**नालिश ठोंकना**

मुकदमा दाखल करना । प्रयोग—एक आदमी ने टाइम्स  
के ऊपर मान हानि की नालिश ठोंक दी (सा० सी०—  
महा० दिग्वेदी, १३२)

(समा० मुहा०—नालिश दाग देना)



### नाव चलना

गृहस्थी का सर्वे वर्ष चलना, काम जागे बढ़ना। प्रयोग—तुम विविध आदमी हो, न खुद मांगोगे, न मुझे मांगने दोगे, तो आखिर यह नाव कैसे चलेगी? (मदन—प्रेमचंद, १९)

### नाव डूबना

अहित होना, नष्ट होना। प्रयोग—बहिन तब तो मेरी नाव डूब गयी। जो कुछ होना था हो चुका (प्रेमा०—प्रेमचंद, ३५९)

### नाव पार लगाना

(१) सहारा देना। प्रयोग—घब तो इस बच्चे पर छाती दो, यही तुम्हारी नाव को पार लगाएगा (बौने०—रा० रा०, ७१); जो करे पार और की नावें हैं भंवर के पाले बही पड़े पाल (सुमते०—हरिऔध, १२२)

(२) मुक्ति देना।

(३) किसी कार्य को पूरा करना।

(समा० मुहा०—नाव किनारे लगाना)

### नाव भंवर से निकलना या निकालना

संकट की स्थिति से छूटना या छड़ाना। प्रयोग—इस समय घाप ही की सहायता से हमारी नाव इस भंवर से निकल सकती है (चित्र०—कौशिक, १९)

### नाव मंझधार में पड़ना

विपत्ति की स्थिति होनी। प्रयोग—बचा लेवेंगे जो ये दोड़, जाति की नाव पड़ी मंझधार (मर्म०—हरिऔध, ११२)

(समा० मुहा०—नाव बीच भंवर में पड़ना)

### निकट आना या होना

पनिष्ठ बनना या होना। प्रयोग—तब वह इस तंकोच की धो डालने के लिए शशि के और निकट आने का यत्न करता (शेखर (२)—अज्ञेय, २०५)

### निकल जाना

किसी पुरुष के साथ अनुचित संबंध कर के घर छोड़

कर चली जाना। प्रयोग—हम में से किसी पर डिग्री हो जाय × × किसी की विधवा बहू निकल जाय × × तो उसके घोर सभी भाई उस पर हथेले (गोदान—प्रेमचंद, १३)

(२) न रह जाना, कम हो जाना।

(समा० मुहा०—निकल भागना)

### निकाल लाना या निकालना

(१) किसी स्त्री को भगा लाना। प्रयोग—किसी की बहू बेटों को निवाल ले जाना कोई हंसी-ठट्ठा है। (रंग० (२)—प्रेमचंद, १२०)

(२) किसी को घर से निकाल देना। प्रयोग—कुलवंति निकारहि नारि सती (राम० (अ)—तुलसी, ११३०)

### निगाह उठाना

(१) कामना करनी, पाने की इच्छा करनी। प्रयोग—घर गिरहरी × × रुपया-पैसा, कंचा-कौड़ी, लत्ता-कपड़ा-दौलत का चाहे अंवार लगा हो, लेकिन बेटों के लिये उस घोर निगाह उठाना भी गुनाह समझा जाता है (बल०—नागा०, ४१)

(२) साहस करना।

### निगाह चार होना

सामना होना, नजर मिलनी। प्रयोग—रवीन्द्र से उनकी निगाहें चार होती हैं (पेंतरे—अशक, ९३); श्याम बाबू और उसकी निगाहें चार हुई (मा—कौशिक, १०५)

### निगाह चुराना

सामना करने से कतराना। प्रयोग—बंजू निगाहें चुरा रहा था (मृग०—५० वर्ष, २५७)

### निगाह टेढ़ी होना

असंतुष्ट या रुष्ट होना। प्रयोग—क्या सरकार, क्या हाकिम, सभी की निगाह हमारे ऊपर टेढ़ी है (प्रेमा०—प्रेमचंद, १९७)



### निगाह डालना

(१) देखना । प्रयोग—चारों तरफ निगाह डालते हुए घर ही आप बड़बड़ाते हैं (भोर०—जग० माधुर, ६८)

(२) बुरी नजर से देखना । प्रयोग—घर बह कोठे पर खड़ी है, तो अवश्य ही किसी पर निगाह डाल रही होगी (निर्मला—प्रेमचंद, ४३)

### निगाह देखना

कृपा चाहते रहना । प्रयोग—देखते ही सदा निगाह रहे पर कहां आपको निगाह पड़ी (बोल०—हरिऔध, ६५)

### निगाह दौड़ना या दौड़ाना

(१) चारों ओर देखा जाना या देखना । प्रयोग—मुसीम ने बाहर जाकर इधर-उधर निगाह दौड़ाई, अमरकान्त का कहीं पता न था (कर्म०—प्रेमचंद, ३); पान-तम्बाकू का एक लाभ यह भी होता है कि उसके लिए भी कुछ काल तक ग्राहक जम जाता है और उसे दुकान में रक्खी हुई वस्तुओं पर निगाह दौड़ाने का अवसर मिल जाता है (मेरे०—गुलाब०, ५१)

(२) दूर तक देखना या सोच-विचार होना या करना । प्रयोग—ब्योपार के माल पर कितनी रकम लगती है, माल कितना मौजूद है, किस समय बेचने में फायदा होगा, इन बातों पर कोई निगाह दौड़ाता है ? (परीक्षा०—श्री० दास, १३६); क्या निगाहें भी नहीं हैं दौड़तीं, दौड़ती हैं दिल न दौड़ाये अगर (चुमते०—हरिऔध, ३१)

### निगाह पड़ना

(१) कृपा होनी । प्रयोग—देखते ही सदा निगाह रहे पर कहां आपको निगाह पड़ी (बोल०—हरिऔध, ६५)

(२) नजर जानी ।

### निगाह पर आना

जानकारी में आना, सामने उपस्थित होना, छिप न पाना । प्रयोग—वे राजा की निगाह पर आएंगे (चोटी०—निराला, १०३)

### निगाह पर (में) चढ़ना

(१) अप्रिय लगना । प्रयोग—चढ़ सकें तो चढ़ें किसी बिल पर हम किसी की निगाह पर न चढ़ें (चोखे०—

हरिऔध, २१); पुलिसवालों की निगाह पर चढ़ जाऊंगा, अधिकारी वगैरे तम जायेंगे, तो इस बंदी को बाट ही क्यों न दू (प्रेमा०—प्रेमचंद, ३१९)

(२) प्रिय लगना । प्रयोग—जब गये जब निगाह में मेरी क्यों नहीं तब निगाह पर चढ़ते (बोल०—हरिऔध, ६७); बंदी जान के सामने कोई दूसरी निगाह में नहीं चढ़ती (मा—कौशिक, २२२)

### निगाह फिरना

रुज में परिवर्तन होना । प्रयोग—आज एक हफ्ते से देख रही हूं, तुम्हारी निगाहफिरी हुई है (मान० (३)—प्रेमचंद, १७१)

### निगाह फैलना

जानकारी होनी । प्रयोग—नई परिस्थितियाँ मिलीं, नये दोस्त मिले निगाह फैलती गई, और जिन लोगों की स्वाहिसें मुँह खोलकर सामने आईं (त्याग—जेनेन्द्र, ४६); आज फैले हुए जहाँ में है हम कहां तक निगाह फैलावे (चोखे०—हरिऔध, २)

### निगाह बचाना

(१) चोरी-चोरी । प्रयोग—मैं मानिक की निगाह बचा कर एक कौड़ी लेता भी हराम समझता हूँ (रंग० (१)—प्रेमचंद, १०२)

(२) सामना होने से बचाना । प्रयोग—हम बचाये बच सकेंगे आप के आप मत अपनी निगाहें ले बचा (चुमते०—हरिऔध, २)

### निगाह बदलना

(१) नाराज होना । प्रयोग—हलक से कहता हूँ, कि जरा सी निगाह बदल जाय तो आप का कहीं पता न लगे (गहन—प्रेमचंद, २८४)

(२) रुज बदलना ।

### निगाह में गिर जाना,—से उतर जाना

पूर्व प्रतिष्ठित मर्यादा में कमी होनी । प्रयोग—गांव और पुलिस निगाह में दोनों गिर गये (चोटी०—निराला, ४७); फिर सोचा ऐसा कहने से ही मैं बुद्ध महाशय की निगाहों से उतर जाऊँ (गु० कहा०—गुलेरी, १५)

(समा० मुहा०—निगाह में नीचे होना)



### निगाह में जचना

अच्छा लगना। प्रयोग—जब गये तब निगाह में मेरी क्यों नहीं तब निगाह पर चढ़ने (बोल०—हरिऔध, ६७)

### निगाह में पढ़ना

दिखाई पढ़ना या ध्यान में आना। प्रयोग—काम करते रहने के अतिरिक्त उन्हें और किसी बात से मतलब न था। न किसी की निगाह में पढ़ना चाहती थी (स्याम०—जैनेन्द्र, १४)

### निगाह मोटी कर लेना

किसी की तरफ से धन हट जाना। प्रयोग—मेरी तरफ से जरा भी निगाह मोटी करे तो आन-को-आन में उसे इस उन्मास में गिरा सकता हूँ (प्रेमा०—प्रेमचंद, २९९)

### निगाह रखना

(१) देख रख रखना। प्रयोग—सबलों के सत्याचार ही पर उनकी खास निगाह रहती थी (रंग० (२)—प्रेमचंद, २३९); पास करना अगर पसन्द नहीं चाहें गाहे निगाह तो रखिये (सुमती०—हरिऔध, २) (+)

(२) कृपा रखना। प्रयोग—इस बंगले में पहले जो मेम साहब रहती थी, वह मुझ पर बड़ी निगाह रखती थी (मान० (१)—प्रेमचंद, २७१); देखिए प्रयोग (१) में (+) भी

(३) मृत्युकन की परख होनी।

### निगाह रहना

ध्यान रहना। प्रयोग—अपने प्रेस की पुस्तकों के विज्ञापन आपके नेत्र-नवान हैं क्योंकि उनकी तरफ आपकी हमेशा निगाह रहती है (सा० सी०—महा० द्विवेदी, १०२)

### निगाह लड़ना

देखा-देखी और अनुरक्ति होनी। प्रयोग—साथ कोई रहे लड़ाता, पर बे-जड़े क्यों निगाह लड़ पाती (बोल०—हरिऔध, ६६)

### निगाह से

आँखों के इशारे से। प्रयोग—तब तक कुल्फी सैंकड़ों मरनबे निगाह से घुंमे उड़ाते रहे (कुल्लू०—निजामा, ४७)

### निगाह से उतर जाना

### दे० निगाह में गिर जाना

### निगाह होना

(१) कृपा होनी। प्रयोग—क्यों भला फँसती निगाह नहीं आपकी जो निगाह हो जाती (बोल०—हरिऔध, ६५)

“क्या यहाँ लावटेने नहीं है?” × × “सरकार हमलोगों की कौन सुनता है”, अब हज़ूर की निगाह हो गई है, तो लग ही जायगी (रंग० (१)—प्रेमचंद, ३३१)

(२) लेने की इच्छा होनी। प्रयोग—क्या एकाध पर आपकी भी निगाह है? (संभा०—उग्र, ६०)

(३) परख होनी।

(४) चौकसी होनी।

### निगाहों का अच्छा न होना

बदचलन होना। प्रयोग—मैंने सुना है, तैमूर निगाहों का घन्झा घाँसी नहीं है (मान० (१)—प्रेमचंद, १९०)

### निगाहों के नीचे आना

जचना। प्रयोग—आपके दर्पणों के बाद मेरी निगाहों के नीचे कोई दूसरा भगवान आता नहीं (कला०—उग्र, १४३)

### नित्य-क्रिया

शौच, स्नान, ध्यान आदि नित्य कर्म। प्रयोग—नित्य किया करि मूक पड़ जाये (शाम० (बाल)—तुलसी, २४७)

### निद्रा देवी की शरण लेना

सो जाना। प्रयोग—बीजगुप्त ने परिचारिका को श्वेतांग के शयन-गृह का प्रबन्ध कर देने की आज्ञा देकर निद्रा देवी की शरण ली (चित्र०—भग० वर्मा, १५)

### निधि होना

अधिकता होनी। प्रयोग—जब जब देखिये नई सी पुनि देखिये थी, जानि परी जान प्यारी निकाई की निधि है (धन० कवित्त—धना०, १४१)

### निबटना

(१) मुकाबला करना। प्रयोग—प्रकृत यह है कि बहुत पुराने जमाने में धार्य लोगों को अनेक जातियों से निबटना पड़ा था (अशोक०—ह० प्र० दि, १२); चलो, चुपके से घर



बेटो, जो आगे आयेगी, देखी जायगी। अब तो साहब ही से निबटना है (रंग० (१)—प्रेमचंद, १०२)

(२) छुट्टी पाना।

(३) शौच जाना।

### निवाह करना

(१) सहायक होना, सहारा देना। प्रयोग—हम बिरहिनी नारि, हरि चित् नौन करे निवाह (सू० सा०—सूर, ४१३५)

(२) सहना।

### निवाह देना या होना

किसी के साथ गुजर हो जाना। प्रयोग—लेकिन दो-चार महोनों में ही मानो को मालूम हो गया कि इस घर में बहुत दिनों तक उसका निवाह न होगा (मान० (१)—प्रेमचंद, २०३)

### निबुआ नोन चटा देना या चाटना

कुछ भी न देना या न पाना। प्रयोग—उसने तो रूप कमाण तुम नौदू नोन चाटकर रह गये (कर्म०—प्रेमचंद, ४२); जब इन्दर भगवान को ही नून नेवू चटा रहे है तहसीलदार साहेब, तो आत्मी उनके हज़ूर में क्या है (मैला०—रेणु, ३९१)

### निशान बजाना

गुड़-बाघ द्वारा गुड़ की घोषणा करना। प्रयोग—पेरेंहि नगर निशान बजाई (राम० (बाल)—तुलसी, १८४)

### निशान लगाना

ठीक अवसर पर सटीक बात करनी। प्रयोग—महावत ने अवसर पाकर निशान लगाया—और सरकार यह बात मैं अपनी ओर से नहीं, लोगों की ओर से कह रहा हूँ (प्रह्ला०—दे० स०, २५४)

### निष्कंटक करना या होना

सब अड़चनों का दूर करना या होना। प्रयोग—करि निष्कंटक या भारत को प्रेममुषा बरसाओ (राधा० प्र०—राधा० दास, ५५२)

### निहत्ये

बिना अस्त्र-शस्त्र के। प्रयोग—क्यों पराया मान हविषाते

फिरें क्यों निहत्ये पर उठाये हाथ हम (बोल०—हरिऔध, १६८)

### नींद आना

घमान में पड़े रहना। प्रयोग—हमारे देश बांचव सोनों को भी नींद कुछ अधिक आती है (राधा० प्र०—राधा० दास, ८१)

### नींद उड़ जाना

नींद न जानी। प्रयोग—बरकी और बिलोनों के सालब में उनकी नींद उड़ गयी थी (परीक्षा०—श्री० दास, १५३)

### नींद घुलना,—पड़ना

नींद लगनी। प्रयोग—निस दिन तोहि क्यू नींद पस्त है, चितवत नाहो ताहि (कबीर प्र०—कबीर, १९४); तेहि निस नींद परी नहि काहू (राम० (प्र)—तुलसी, ४०७); इर न टरे, नींद न परे, हरे न काल-विपाकु। छिनकु छाकि उछके न फिरि, सरे बिषमु छावि-छाकु (बिहारी रत्ना०—बिहारी, ३१८); प्यास मरे दून नीर भरे, नहि नींद परेउ न जगै न जगाऊँ (अष्ट०—देव, ६); उन बालकों की आँखों में नींद घुल रही थी (परीक्षा०—श्री० दास, १५१)

### नींद टूटना

(१) अज्ञान दूर होना। प्रयोग—नींद नहीं टूटी जब तक, फूटी किस्मत का है रोना (नूर०—मल्ल, ६)  
(२) बहुत दिनों की उपेक्षित या भूली बात का याद होना। प्रयोग—इस पर हमारी फिल्म फेडरेशन खाफ इंडिया की नींद टूटी और उन्होंने जलसा किया (दूधगाछ—दे० स०, ३०४); टूट कर नींद नहीं टूटी, न सोले आँखें खुल पाई (कर्म०—हरिऔध, ८६)

(३) सोते से जाग जाना।

### नींद पड़ना

दे० नींद घुलना

### नींद भर सोना

(१) निश्चित होकर सोना। प्रयोग—सूरदास जो चरन-सरन रह्यो, सो जन निपट नींद भरि सोयी (सू० सा०—सूर, ५४)

(२) दृष्टा भर सोना।



### नींद भूल भूल जाना

बहुत बेचैन, बेकल होना। प्रयोग—बारबार विचारत मन में, नींद भूल बिमरी (सू० सा०—सूर, ६६६)

### नींद लेना

सोना। प्रयोग—नींद न नींदहरनि सब जागा (पद०—जायसी, ५५१)

(समा० मुहा०—नींद मारना)

### नीचा दिखाना या देखना

तुच्छ बनना या बनाना, अपमानित करना या होना। प्रयोग—तो क्या मैं हरकिशोर की जिव पर उसकी टोपियों से लेता और दस बीस रुपये के बास्तों हर-गोविन्द को नीचा देखने देता? (परीक्षा०—श्री० दास, ११९); नागिन मृगा से नहीं पर उसके ध्यान से बहुत डरती थी, तो भी उसे विश्वास था कि मैं बोलने में उसे जरूर नीचा दिखा सकती हूँ (मान० (९)—प्रेमचंद, २१); साधन मीरी की हाँ-में-हाँ मिलाकर वह नीलमणि को नीचा दिखाने पर तुला हुआ था (वृहत्—दे० स०, ७०); पढ़ गया जब कि देखना नीचा तब भला किस तरह न वह खलता (चुमते०—हरिऔध, १४)

(समा० मुहा०—नीचा खाना)

### नीचे गिरना या गिराना,—लाना

(१) मान-मर्दादा गबानी, पतित होना या करना। प्रयोग—उसने मुझे नीचे गिराया (इंस्टा०—मग० शर्मा, १०); वह राज्याभिषेक है। तुम उन्हें कोई ऐसी बेसी बात करके नीचे नहीं ला सकते (जय०—जैनेन्द्र, ९८); किसी को ऊपर बढ़ाने या नीचे गिराने के अभिप्राय से न मैंने कभी किसी की प्रशंसा की है न निंदा (पद० के पत्र—पद० शर्मा, १३१); नींव बन साथे बहुत नीची किये हम गिराने जानि को नीचे रहे (चुमते०—हरिऔध, १३२)

(२) परास्त करना।

### नीचे लाना

दे० नीचे गिरना

### नीचे होकर रहना

दब कर रहना, नम्र बनकर रहना। प्रयोग—बार बार कह चुकी हूँ, ऐसे दुख देखेगी। दुनिया से नीचा होकर रहना अच्छा (परस—जैनेन्द्र, ५५)

### नीम लगाकर आम खाना

बुरा काम करके भला फल पाने की भाशा करनी। प्रयोग—जो मन जाके सोइ फल पावे। नीम लगाइ आम को आवे (सू० सा०—सूर, १५४२)

### नीयत डंवाडोल होना

नीयत खराब होनी। प्रयोग—जब तुमने बास का हासिल मुझ से पूछा तो तुम्हारी नीयत डंवाडोल हो गई (गुलेरी ग्रंथ (१)—गुलेरी, १९६)

### नीर-क्षीर विवेक करना

सत्य-असत्य का विश्लेषण करना। प्रयोग—कहै कबीर मोई जन तेरा, खीर नीर का करे नबेरा (कबीर ग्रंथा०—कबीर, २०४)

### नील का खेत

दोष या कलक की जगह। प्रयोग—सेवा नहि भगवन्त चरण की, भवन नील का खेत (सू० सा०—सूर, ३५८)

### नींव डालना,—देना

आधार खड़ा करना, स्थापना करनी। प्रयोग—दीन्हिसि सबल विपति के नेई (राम० (अ)—तुलसी, ३९९); तो भलाई क्या हुई रगड़े बड़े नींव भगड़े की घर डाली गई (चुमते०—हरिऔध, १३८); उन्होंने बंगाल की एशियाटिक सोसायटी की नींव डाली थी (सा० सी०—महा० द्विवेदी, ६८)

(समा० मुहा०—नींव रखना,—जमाना)

### नींव देना

दे० नींव डालना

### नींव पड़ना

सूत्रपात होना, आधार खड़ा होना। प्रयोग—यद्यपि हिन्दी की नींव बहुत दिनों से पड़ गई थी, पर इसका जन्मकाल



साहजहाँ के समय से माना जाता है (गु० नि०—बा० मु० गु०, १०५); जब बच्चे को सम्बन्ध ज्ञान कुछ कुछ होने लगता है तभी दुःख के उस भेद की नींव पड़ जाती है जिसे करुणा कहते हैं (चिन्ता० (१)—शुक्ल, ४४)

### नुकीला स्वर

सीखा मन पर आघात करने वाला स्वर । प्रयोग—गोविन्दी ने नुकीले स्वर में कहा—तो मालती से व्याह कर लो न (गोदान—प्रेमचंद, १९५)

### नूर का तड़का

बहुत सबेरे, पी फटते । प्रयोग—जमुनी नूर के तड़के गरम दूध लेकर आती और उसे अपने हाथों से पिना जाती (रंग० (२)—प्रेमचंद, ३१०-३११)

### नेकी कर कुएं में डालना,—दरिया में डालना

नेकी कर के भूल जाना । प्रयोग—नोहरी उन औरतों में न थी जो नेकी करके दरिया में डाल देती है (गोदान—प्रेमचंद, २९७); बड़ों की सीख, नेकी कर, कुएं में डाल (पुद्ग०—दत्तचन, ८६)

### नेकी कर दरिया में डालना

### दे० नेकी कर कुएं में डालना

### नेम-उपवास करना

नियम-संयम से जीवन बिताना । प्रयोग—राम दरस लगि लोग सब करत नेम उपवास (राम० (अ)—तुलसी, ६७९)

### नेवता फिरना, न्योता फिरना

नेवता दिया जाना, घर घर जाकर निमंत्रित करना । प्रयोग—लगन धरी ओ रचा बिआह । सिपल नेवत फिरा सब काहू (पद०—जायसी, २६१); विरादरी में नाई का नेवता फिरता या (राधा० ग्रंथा०—राधा० दास, ३१६)

### नेह जोड़ना

प्रेम करना । प्रयोग—पाव लागि बेरी धनि हा हा । चूरा नेह जोर रे नाहा (पद०—जायसी, ३०१७); कठिन निरदं नंद के सुत, जोरि तोर्यो नेह (सू० सा०—सूर, ४५०३)

### नेह टूटना

प्रेम संबंध न रहना । प्रयोग—भूठे कू साचा मिले, तब ही

तुटे नेह (कबीर ग्रंथा०—कबीर, ४३); पाव लागि बेरी धनि हा हा । चूरा नेह जोर रे नाहा (पद०—जायसी, ३०१७)

### नेह तोड़ना

प्रेम सम्बन्ध को तोड़ देना । प्रयोग—जरे सरीर अंग नहीं मोरौ, प्राण जाइ तो नेह न तोरौ (कबीर ग्रंथा०—कबीर, २०१); कठिन निरदं नंद के सुत जोरि तोर्यो नेह (सू० सा०—सूर, ४५०३); तोरि जगत सों नेह मोरि मुख जग के मुख सों (राधा० ग्रंथा०—राधा० दास, ६)

### नैन आकाश पर चढ़ाना

बहुत गर्व करना । प्रयोग—ज्यौ निधनी धन पाइ अचानक नैन आकाश चढ़ायो (सू० सा०—सूर, १८८४)

### नैन उलझना

प्रेम होना । प्रयोग—देखि रूप अद्भुत तेरो, रहे नैन उरभाइ (सू० सा०—सूर, १९९०)

### नैन चलाना, नैनवान मारना

कटाक्ष करना । प्रयोग—का पर नैन चलावति आवति, जाति न तिनका तोर (सू० सा०—सूर, ९३८); खोजू न लीनो फेरि नैन वान मारि के (भा० ग्रंथा० (३)—भारतेन्दु, २८५)

### (समा० मुहा०—नैन के वान चलाना)

### नैन जुड़ाना,—सिराना

आँखों को आनन्द मिलना । प्रयोग—रोबत कत बलि जाउं तुम्हारी देखौ पौ भरि नैन जुड़ावत (सू० सा०—सूर, ८०६); आए मेरे नैन सिराए सीतल जल ते पीजे (भा० ग्रंथा० (३)—भारतेन्दु, ६२)

### नैन जोड़ना

(१) दृष्टि मिलाना । प्रयोग—बीचहि भेंट भई जुवतिनि हरि, नैनन जोरत गई लजाई (सू० सा०—सूर, २०४३); नैन जोरि मुख मोरि हमि, नैसुक नेह जनाइ । घागि लैन घाई हिये, मेरे गई लगाइ (मति० मक०—मतिराम, २०४)

### (२) प्रेम करना ।

### नैन टपकना,—डरना,—डोरना

आँखों से आँसू गिरना । प्रयोग—यह कहत शोउ नैन डराने



नंद-वरनि दुल पाइ (सू० सा०—सूर, ११४७); सूर प्रभु के चरित सखियनि, कहति लोचन होरि (सू० सा०—सूर, २०६०); कछु पिय सों खटपट भई टप टप टपकत नैन (राधा० ग्रंथा०—राधा० दास, ७०६)

नैन डरना

दे० नैन टपकना

नैन होरना

दे० नैन टपकना

नैन नीचे होना

लम्बित होना । प्रयोग—ज्यों ज्यों ऊंचे होत हैं, उरज बाल के ऐन सब सौतिन के होत हैं, त्यों त्यों नीचे नैन । (मति० मक०—मतिराम, २६५)

नैन पटल दूर होना

अज्ञान दूर होना । प्रयोग—हरमन देखत यह कल भया नैना पटल दूरि हूँ गया (कबीर ग्रंथा०—कबीर, २१९)

नैन घाण मारना

दे० नैन चलाना

नैन भर आना या लाना

घावों में जल भर घाना । प्रयोग—पुनी ऊरी कहत बनत न, नैन भरि-भरि लेत (सू० सा०—सूर, ४०५३); भरि भरि आवे नैन, बितुन परे चेत, मुख न आवे चेत तन को दसा कुछ और भई रो (नंद० ग्रंथा०—नंद, २९७)

नैन भुला जाना

आँखों का लुब्ध हो जाना । प्रयोग—हरि मुख निरखत नैन भुलाने (सू० सा०—सूर, २४१६)

नैन मिलना

दृष्टियों का प्रेमपूर्ण आदान-प्रदान । प्रयोग—नैन मिले उर के पुर पंछे लाज लुटी न लुटी तिनका सी (घन० कवित्त—घना०, १२३)

नैन सिराना

दे० नैन जुड़ाना

नैन से झड़ी लगना,—निर्झर लगना

आँसुओं की झड़ी लगनी, बहुत रोना । प्रयोग—नैना नीझर

लाइया, रहत बहै निस जाम (कबीर ग्रंथा०—कबीर, ९); जलद निकासी रैन दिन, रहै नैन भरि लागि (मति० मक०—मतिराम, २१३)

नैन से निर्झर लगना

दे० नैन से झड़ी लगना

नैन में छाप रहना,—वसना,—समाना

हर समय ध्यान में बना रहना । प्रयोग—तेज पुन्व पारस घणों, नैनू रहा समाइ (कबीर ग्रंथा०—कबीर, १५); कहा करी सुन्दर मूरति, इन नैननि मांझ समानी (सू० सा०—सूर, २२७५); बसेरी नैननि में षट इन्दु (सू० सा०—सूर, २७८९); नंद नंदन कामनायक रहे नैननि छाई (सू० सा०—सूर, २४६३); नैना नैननि मांझ समाने (सू० सा०—सूर, २९१५)

नैनो में वसना

दे० नैनो में छाप रहना

नैनो में समाना

दे० नैनो में छाप रहना

नैनो में स्थान देना

अत्यन्त प्रिय बनाना । प्रयोग—मैं तुम्हें ही जिव लावा दे नैननू मह बास (पद०—जायसी, ३११५)

नोक-भोंक होना

कहा सुनी होगी, झगड़ा होना । प्रयोग—मृभर्त तो सैकड़ों बार ऐसी नोक भोंक हो चुकी है (परीक्षा०—श्री० दास, ११४); भाइयों और रंठियों की बड़ी नोक भोंक चलती थी (ये कोठे०—अ० ना०, १९८); दोनों महिलाओं में इसी तरह नोक भोंक होती रही (रंग० (१)—प्रेमचंद, २६०); अतएव प्रायः ऐसे व्यक्तियों से बालटिपों की नोक-भोंक हो जाती थी (शेखर (२)—अज्ञेय, ४०)

(समा० मुहा०—नोक-भोंक की होना )

नोच-खसोट करना

छीन भपट कर ले जाना । प्रयोग—हिन्दू जाति किर्तनव्य विमूढ़ बनी हुई अचेत अवस्था में पड़ी थी, विधर्मी सब ओर से नोच-खसोट रहे थे (पद्म पराम—पद्म० शर्मा,



२०); मैं वेदना नहीं, कि तुम्हें नोच खसोट कर अपना रास्ता लूँ (गवन—प्रेमचंद, ४८)

### नोचना, नोचे खाना

तंग करना । प्रयोग—राह चलत भिखमंगे नोचे बात करे दाता सौ (भा० प्र० (१)—भारतेन्दु, ३३४); जिधर जाओ उधर लोग नोचने दौड़ते हैं । न जाने कितना कर्ज ले रखा है (गवन—प्रेमचंद, १४६); कारिन्दे असामियों को नोचे खाते थे (प्रेमा०—प्रेमचंद, १४२)

### नोचे खाना

#### दे० नोचना

#### नोन-तेल-लकड़ी की चिन्ता

घर गृहस्थी भरण पोषण की चिन्ता । प्रयोग—प्रब्र वैसी हसी एक बार भी आवे तो नोन, तेल, लकड़ी की चिन्ता के कारण दुःख दुर्भर हृदय के दुःख का बोझ कितना हल्का हो जाय (सा० सु०—वा० मृदु, ५०); “मैं इस समय मज्जाक के ‘मूड ( मोज )’ में नहीं हूँ” “हो भी कैसे सकते हो, नोन तेल लकड़ी की चिन्ता जो सवार हो गई” (मिखा०—कौशिक, २०५)

#### नौ दिनमें अढ़ाई कोस चलना

बहुत धीरे-धीरे काम करना । प्रयोग—डाक्टर का हाथ नौ दिन में अढ़ाई कोस की स्पीड से चल रहा था (बूँद०—अ० ना०, ११९); जिस पर लोगोंकी अधड़ा होती है उसके लिए व्यवहार के सब सीधे घोर सुगम मार्ग बन्द हो जाते हैं—उसे या तो कांटों पर या ढाई कोस नौ दिन में चलना पड़ता है (चिन्ता० (१)—शुक्ल, २७)

#### नौ-दो-ग्यारह होना

देखते देखते भाग जाना । प्रयोग—एक घोर से तो बली भूत बहका रहा है कि × × साहस को दूढ़ करो घोर नौ

दो ग्यारह हो जाओ (भा० प्र० (१)—भारतेन्दु, ५७१); जब तक सिपाही इकट्ठे हों, तब तक स्त्री वेशधारी छोकरे मार्ग को स्वच्छ पा कर नौ दो ग्यारह हो गए (मृग०—वृ० वर्मा, ४४१-४४२); यादव टोली के लोग एक एक कर नजर बचा कर नौ दो ग्यारह हो चुके थे (मैला०—रेनु, ४)

#### नौ नगद न तेरह उधार

घोड़ा ही लाभ हो पर तुरन्त हो । प्रयोग—किन्तु भाई साहब ! नौ नगद चाहिए, तेरह उधार नहीं (मेरे०—गुलाब०, २३)

#### नौ मूड़का होना

कितना भी प्रयत्न करना । प्रयोग—अभी तो नहीं गाऊंगा चाहे कोई नौ मूड़का क्यों न हो जाय—बैजू बोला (मृग०—वृ० वर्मा, ४१३)

#### नौबत को पढ़चना

हालत होनी । प्रयोग—अन्त में हिन्दोस्थान से कुछ ऐसी कहा सुनी हुई कि बदमजगी तक नौबत पढ़ंची (गु० नि०—वा० मु० गु०, ३३४)

#### नौबत झड़ना

शुभ अवसर पर नौबत बजनी । प्रयोग—सिंह पौर पर नौबत झड़ रही थी (गोली—चतुर०, ८७)

#### (समा० मुहा०—नौबत बजना)

#### नौबत बजाना

शुशी प्रगट करनी । प्रयोग—कबीर नौबत आपणी, दिन दस लेहु बजाइ (कबीर ग्रंथा०—कबीर, २०)

#### न्योता फिरना

#### दे० नेवता फिरना



## प

### पंखा डुलाना

पंखे से हवा करना । प्रयोग—विद्या घन उद्यम बिना, कहो जू पावे कौन, बिना डुलाये ना मिले, ज्यों पंखा की पीन (सू० सा०—दृन्द, ६)

(समा० मुहा०—पंखा करना,—भलना)

### पंगु हो जाना

कुछ करने लायक न रहना । प्रयोग—नंद-नंदन रूप पर गति मति भई तनु पंग (सू० सा०—सूर, २३७७)

### पंच की भीख

सर्व साधारण की कृपा, सबका आशीर्वाद । प्रयोग—पंच की भीख सूर बल-मोहन, कहति जसोमति माइ (सू० सा०—सूर, १०७३)

### पंच मुहाता करना

सबको भला लगने वाला काम करना । प्रयोग—मैं मेरो कबहुं नहि कीजे, कीजे पंच मुहातो (सू० सा०—सूर, ३०२)

### पंचायत करना

(१) दूसरों की चर्चा करना, भलाई बुराई करना । प्रयोग—पर बहुत से ठिलुट अपना मन बहलाने के लिए औरों की पंचायत ले बैठते हैं (परीक्षा०—श्री० दास, १९९)

(२) भगड़ाते करना ।

### पंछी का पर भी न मार सकना

किसी की भी पहुंच न होना । प्रयोग—प्रविष्ट होने पर

घर की इयोड़ियों में ताला डाल दिया जाता था । क्या मजाल कि कोई पंछी भी वहां पर मार सके (गोली—चतुर०, १४४)

### पंजा चलाना

पंजे से प्रहार करना । प्रयोग—मिल सका जिसको कि पंजा ही नहीं वह भला पंजा चलावे किस तरह (बोल०—हरिओध, १६३)

### पंजा बढ़ाना

हड़पने या वश में करने की कोशिश करना । प्रयोग—जी रहा ईसाइयों का जब बड़ा तब भला पंजा बढ़ाते क्यों न वे (सुभते०—हरिओध, १३६)

(समा० मुहा०—पंजा फैलाना)

### पंजा लड़ाना,—लेना

मुकाबला करना । प्रयोग—भैरवी भैरी तेरी भ्रमा तभी बजेगी मृत्यु लड़ाएगी जब तूझ से पंजा (परि०—निराला, १५०); तुम्हारे हाथ दुबल हैं, उनसे जिससे तुम पंजा लेने जा रहे हो, चरंर मरंर हो उठेंगे, नष्ट हो जायेंगे (कला०—उग्र, ७८-७९)

(समा० मुहा०—पंजा करना,—मिलना)

### पंजा लेना

दे० पंजा लड़ाना



### पंजे भाड़कर पीछे पड़ना

बहुत तंग करने पर उताऊ होना । प्रयोग—सारी कौंसिल पंजे भाड़कर मेरे पीछे पड़ गई (मान० (४)—प्रेमचंद, ९)

### पंजे में आना,—पड़ना

काबू में आना । प्रयोग—इसी कारण ×× वह देश×× सदा विदेशीय नेताओं का शिकार बना, उनके पंजे में पड़ा रहा (भट्ट नि०—बा० भट्ट, ६१); इंस्पेक्टर ने दरोगा की ओर देखकर आँख मारी, मानो कह रहे हों, घा गया पंजे में (गवन—प्रेमचंद, २८५)

(समा० मुहा०—पंजे में होना)

### पंजे में करना,—लाना

बश में करना । प्रयोग—मैंने तुम्हें एक नहीं, अनेक ऐसे अवसर दिए कि कोई दूसरा आदमी उन्हें न छोड़ता, लेकिन तुम्हें मैं अपने पंजे में न ला सकी (मान० (७)—प्रेमचंद, ४७); हित-लालक से भरी लगावट ने कर लिया है किसे न पंजे में (चोखे—हरिऔध, १६)

### पंजे में पड़ना

दे० पंजे में आना

### पंजे में लाना

दे० पंजे में करना

### पंजे से छुड़ाना

(१) किसी विपत्ति से बचाना । प्रयोग—यदि ऐसा है तो मैंने अपने स्वामी के चित्त को भला आपत्ति के पंजे से कैसे थोड़े व्यय में छुड़ा पाया (भा० प्र० (१)—भारतेन्दु, ६१७); पावनता भरते थे मानस-भाव में पातक रत को पातक पंजे से छुड़ा (वेदेही०—हरिऔध, ४६)

(२) किसी के कब्जे से छुड़ाना ।

### पंजे से छूटना

कब्जे से छूटकारा पाना । प्रयोग—घातप के पंजे से छूटकर सुख की सांस सकल तरफ़र से ले रहे (वेदेही०—हरिऔध, २१८)

### पंजों के बल चलना

(१) बहुत धीरे धीरे दबाकर चलना । प्रयोग—वो जैसे

आई थी वैसे ही पंजों के बल चली गई (पैतरे—अशक, १२२)

(२) बहुत तेज चलना ।

(३) अभिमान करना ।

### पंजों से मुँह धोना

मुँह पर पंजे रगड़ना । प्रयोग—कभी किसी कोने में बैठ कर पंजों से मुँह धोती हुई बिल्ली, ×× कभी तमाशा दिखाने वालों के टोपी लगाए हुए बंदर, ओढ़नी धोड़े हुए बंदरिया, नाचनेवाला रीछ, आदि स्कूल की एकरसता दूर करते ही रहते थे (अतीत०—महादेवी, २६-२७)

### पंडित होना

(१) कुशल होना । प्रयोग—बंक विसाल रंगीले रमास छबीले कटाछि कलानि मैं पंडित (घन० कवित्त—घना०, १२०)

(२) डोंग रचनेवाला होना ।

(३) नेक चरित्र होना ।

(४) विद्वान होना ।

### पंथ चलाना

(१) उचित काम का मार्ग दर्शन कराना । प्रयोग—कबीर वार्या नाथ परि, कीया राई लूण जिमहि चलावे पंथ तु, तिमहि भुलावे कौन (कबीर ग्रंथा०—कबीर, ६२)

(२) किसी मत का प्रारंभ और प्रचार करना ।

### पंथ जोहना,—देखना,—निहारना

प्रतीक्षा करना । प्रयोग—अपड़ियां भाई पड़ी, पंथ निहारि निहारि (कबीर ग्रंथा०—कबीर, ९); जरिऊं बिरह अस दीपक जाती । पंथ जोखत भइउं सीपसेवासी (पट०—जायसी, २७२६); चितवत पंथ रहेउं दिन राती (राम० (अ)—तुलसी, ६९६); लाखनि भाति भरे अभिलाखनि के पल पावडे पंथ निहारि (घन० कवित्त—घना०, २१०); दो ही आँखें सहस बन के देखती पंथ को थीं (प्रिय०—हरिऔध, ६०); और पंथ जोहती विनीत कहीं आसपास हाथ जोड़ मृत्यु रही लड़ी शास्ति मानकर (कुरु०—दिनकर, ८)

### पंथ दिखाना

(१) रास्ता बताना । प्रयोग—नाथ साथ रहि पंथ देखाई



करि दिन चारि चरन सेवकाई (राम० (अ)—तुलसी, ४६९)

(२) उचित काम करने का मार्ग दर्शन कराना ।

**पंथ देखना**

दे० पंथ जोहना

पंथ निहारना

दे० पंथ जोहना

**पंथ लगना**

(१) तंग करने के लिए पीछे पड़ना । प्रयोग—किन्नर सिद्ध मनुज सुर नागा । हठि सबही के पंथहिलागा (राम० (बाल)—तुलसी, १९०)

(२) अनुगामी या अनुयायी होना ।

देखिए : रास्ता भी ।

**पसेरी में पांच सेर की भूल करना**

बहुत बड़ी भूल करना । प्रयोग—बम्बई भागकर तुमने पसेरी में पांच सेर की भूल की थी (दूधगाछ—दे० स०, ४५)

**पकड़ छूटना**

अधिकार या बल न रहना । प्रयोग—इससे ब्यापार पर तुम्हारी पकड़ छूट जायगी (शेखर० (२)—अज्ञेय, १५५)

**पकड़ना**

स्वीकार करना, सहमत होना, समझना । प्रयोग—किंतु उसके मन ने इसे पकड़ने से इन्कार कर दिया (शेखर० (२)—अज्ञेय, २२)

**पका आम होना**

बूढ़ीली आ जाना । प्रयोग—वर्षों कुड़े जी न देख कर उसको घोंस उस पर न जाय क्यों काँड़ी लाल थी पूछ लालसाओं से जिस पके घाम की पक्की दाढ़ी (बोल०—हरिऔध, १२७)

**पका पोड़ा करना**

(१) निन्दित करना । प्रयोग—इतमें में जिसे पसन्द करो उसके लिए पक्का-पोड़ा कर लिया जावे (मिस्त्रा०—कौशिक, १८९)

(२) अपने पक्ष में दृढ़ कर लेना । प्रयोग—बस, इधर तो

ज्वाला मिह को पट्टी पढ़ाई, उधर गांव वालों को पक्का पोड़ा कर दिया (प्रेमा०—प्रेमचंद, १७८)

**पका होना**

(१) पूर्ण आस्था या विश्वास रखने वाला । प्रयोग—पन-तन ताकी ओ हो काचो सो तो चाहि पाकी, जानन्द के धन प्रीतियाको न बिगारिये (धन० कवित्त—धना०, २२५)

(२) दृढ़ होना । प्रयोग—उस समय मेरे विचार इतने पक्के न थे (प्रेमा०—प्रेमचंद, १५३)

(३) कुशल होना ।

**पक्की-कच्ची बात**

हर तरह की सच्ची वृत्ति या विश्वस्त-अविश्वस्त बात । प्रयोग—पीर अली ने रोज को भांसी की पक्की और कच्ची सब बातें सुनाई (झांसी०—वृ० वर्मा, ३४२)

**पक्की कर लेना**

(१) विवाह के लिये प्रतिश्रुत होने की पहली रस्म । प्रयोग—तुम्हारे के बाप से भी कह दो कि पक्की करने की साइत दिखावे (राधा० ग्रंथा०—राधा० दास, ५५९)

(२) तै कर लेना ।

**पक्की बात कहना**

अनुभव और जानकारी की बात कहनी । प्रयोग—अगर वह वक्कों के बालकोचित तोतलें डंग से बात करे तो उसे दुबमुंहा कहा जाता है और बड़ों की सी पक्की बात कहे तो उद्धत समझा जाता है (शेखर (१)—अज्ञेय, १४५)

**पक्की रसोई**

घी में पका हुआ भोजन । प्रयोग—बाबू जी, रसोई कैसी बनवाई जाय—कच्ची या पक्की ? (मिस्त्रा०—कौशिक, १२६)

**पक्ष करना**

किसी की घोर में बोलना (उसके हित के लिये), तरफ-दारी करनी । प्रयोग—पड़ोसियों ने उसका पक्ष किया—सब तो है, घापस में यह चढ़ा-ऊपरी नहीं करना चाहिए (मान० (८)—प्रेमचंद, ७०)

(समा० मुद्रा०—पक्ष खींचना)



### पखेरू का पंख न मारना

किसी का भी आना जाना न होना । प्रयोग—उनको छोड़ मेरे घर में पखेरू पंख भी नहीं मारता (ठेठ०—हरिऔध, ३८)

### पग-पग

हर स्थान । प्रयोग—बन बेहड़ गिरि कंदर खोड़ा सब हमार प्रभु पग-पग जोड़ा (राम० (अ)—तुलसी, ५००); नग नग ऊपर निसान झारि जगमगे पग-पग ऊपर दुहाई सिव-राज की (मृपण ग्रंथा०—मृपण, २१९)

### पग-पग पर, पद-पद पर

(१) बहुत पास-पास । प्रयोग—पैग पैग पर कुम्भा बावरी साजी बँठक घी पांवरी (पद०—जायसी, २६)

(२) हर स्थिति में । प्रयोग—असाधु व्यक्तियों का सा अशान्तिमय जीवन और किसी का नहीं है क्योंकि हर एक काम में पद-पद पर उसे भय बना रहता है (मट्ट नि०—दा० मट्ट, ७२); जीवन दायित्व का खेल है, पग-पग पर समझौता है (परस—जैनेन्द्र, ८९); दीनानाथ तुम इतने रुष्ट क्यों हो गए ! क्यों मुझे पग-पग पर जलील कर रहे हो (मिलान—कौशिक, १४८); वे पद-पद पर विद्याधियों के अशुद्ध पाठ को मुधारा करती थीं (वैशाली० (२)—चतुरा०, ८३)

देखिये पैर भी ।

### पगड़ी उतरना — नीची होना

दुर्दशा या बेइज्जती होनी । प्रयोग—तू छोटे-छोटे आदमियों से लड़ती फिरती है, किसकी पगड़ी नीची होती है, बता ! (गोदान—प्रेमचंद, ३१); उतरती जाती है पगड़ी, आबरू धाँचे सहती है (मर्म०—हरिऔध, ७८); गांव की पगड़ी उतर गई । तुम बैठे भक्ति करते रहो । (ब्रह्म०—दे० स० ९०)

(समा० मुहा०—पगड़ी उछालना)

### पगड़ी उछालना

बेइज्जती करना, उपहास करना । प्रयोग—किसी के बारे में हूए बाप दादों की पगड़ी उछालना—राम, राम ! (अम्ब०

—११० दे०, ६६); खोलकर टिल गले मिले कैसे, पगड़ियाँ क्यों नहीं उछालते ? (मर्म०—हरिऔध, ६७)

(समा० मुहा०—पगड़ी उतार लेना)

### पगड़ी देना

मकान आदि लेते समय मकान मालिक को नजराना देना । प्रयोग—बन्दई में ऐसे फ्लैट के लिये तीन हजार से पाँच हजार तक पगड़ी ली दी जाती है (पैतरे—अदक, ४५)

### पगड़ी नीची होना

दे० पगड़ी उतरना

### पगड़ी पर हाथ डालना

इज्जत को नुकसान पहुँचाना । प्रयोग—यह तो सरकार पगड़ी पर हाथ डालने का मामला है (ब्रह्म०—दे० स०, १०७)

### पगड़ी बाँधना

(१) उत्तराधिकार मिलना । प्रयोग—मुन्नी के पिता का जितना नाम था X X क्या यह तुम नहीं जानते । वह पगड़ी मेरे ही सिर तो बंधी है (मान० (१)—प्रेमचंद, ९५)  
(२) उच्च पद या स्थान प्राप्त होना । प्रतिष्ठा मिलनी ।

### पगड़ी बांधना

(१) धांधल देना । प्रयोग—पापतर घाए तिन्हें निडर बसापवे की, कोट बांधियतु मानो पाग बांधियतु है (मृपण ग्रंथा०—मृपण, १४८)

(२) बड़ी पदवी देना ।

(३) गौरव पाना ।

(४) उत्तराधिकार देना ।

### पगना

(१) पूरी तरह घालिप्त होना । प्रयोग—विषय-भोग ही में गिर रह्यो (सू० सा०—सूर, ४०६); रूप के भार न होति है सोही लखीहये कीं मुजान को भूयो लखिये दाँति । सागी बई निसि, पागी तही पलकी गति भूयो (घन० कवित्त—घना०, १२१); सब कहाँ सबकी लगन है लग सबी प्यार में पग जो न पग देखे भले (सुमते०—हरिऔध, ६)

(२) बड़े प्रेमपूर्वक बातचीत करनी ।



### पच मरना

किसी काम के लिए बहुत अधिक परिश्रम करना, हैरान होना। प्रयोग—ऊँचा चिरण अकासि फल, पंचो मृग मृरि। बहुत समय पचि रहे, फल निरमल परि दूरि (कबीर ग्रंथा०—कबीर, ६९); बड़ाह पचि मृग ध्यान करि, अतहू भति पहिधान्यो (सू० सा०—सूर, ४३१४); चले कि जल बिनु नाव कोटि जलन पचि पचि मरिअ (राम० अ)—तुलसी, १११०)

### पचड़ा ले बैठना

(१) वर्षा जिसमें विशेष कष्ट न हो। प्रयोग—मित्र ! तुम घाज कौनसा पचड़ा लेकर बैठे हो ? (राधा० ग्रंथा०—राधा० दास, ६६८); उन्हें प्रसन्न करने के लिए हम क्या नहीं करते मगर पचड़ा मुताने लगू तो शायद तुम्हें विश्वास न घामे (गोदान—प्रेमचंद, १५)

(२) निहा करनी।

### पचाना

अच्छी तरह हृदयंगम करना, समझना। प्रयोग—शेखर ने अपने को साधारण विद्यार्थी-जीवन से कुछ खींच कर पिछले कुछ महीनों के अनुभवों का पचाना किया (शेखर (२)—अज्ञेय, ३३)

### पछाड़ खा खाकर रोना

घोर विलाप करना। प्रयोग—पिता का मरना ..... आई का पछाड़ खा-खा कर रोना मुझे मजे में पड़ है (अपनी खबर—उग्र, ३४)

### पछाड़ खाना

अत्यंत दुःख के कारण गिर-गिर पड़ना। प्रयोग—परति पछार खाइ छिन ही छिन, अति धातुर हूँ दीन (सू० सा०—सूर, ४६००); लक्ष्मी पछाड़ खाती थी, तुलसी गिर पीरते थे (मान० (१)—प्रेमचंद, २४९)

### पट पड़ना

स्थिति अनुकूल होनी। प्रयोग—घोर घटल की भी पट पड़ेगी। राजा का साला कहलावेगा (मृग०—वृ० कर्मा, २०८)

### पटकना

(१) किसी काम के लिए बहुत हाय-ड्राय करनी। प्रयोग—

हैं पटकते कल्प कल्प उठते पाद कर राज पाद खोना हम (चुमते०—हरिऔध, १६)

(२) हराना।

(३) जबरदस्ती गले डालना।

### पटकनिया खाना पटका जाना

(१) असफल होकर अनुभव प्राप्त करना। प्रयोग—लुट गये बिट उठे गये पटके आंस के भी बिलट गये कोये (चुमते०—हरिऔध, १०८) (÷); अकाली का लहू ही ऐसा होता है। आप पटकी खाए बिना मानता कौन है ? (शेखर (२)—अज्ञेय, १४४)

(२) विरोध में डारना। प्रयोग—किंतु अब देखते हैं कि जंगीवाट के मुकाबिले में आपने पटकनी खाई, मिर के बल नीचे धा रहे (गु० नि०—६१० मु० गु०, २१३)

(३) अपमानित किया जाना। प्रयोग—देखिए प्रयोग (१) में (÷)

(४) कुश्ती में पटका जाना।

### पटका जाना

### दे० पटकनिया खाना

### पटना

(१) निभना। प्रयोग—महाराज इसकी और इसके स्वामी की जरा भी नहीं पटती (भा० ग्रं० (१)—भारतेन्दु, ५७५); परन्तु एक मध्य संतोष से मेरी पटेगी ? (कामना—प्रसाद, १)

(२) अपने अनुकूल होना।

### पटरा हो जाना

बहुत नुकसान होना। प्रयोग—घाकर घर देखता क्या है कि सब पटरा हो गया है (गु० कहा०—गुलेरी, २५)

(समा० मुहा०—पटरा बैठना)

### पटरीखाना—बैठना

मन मिलना, मन होना, पटना। प्रयोग—सच्ची बात मुह पर कहते हैं, इगोजिए किसी से पटरी नहीं खाती (परती०—रेणु, ८७); जब हमारी-तुम्हारी पटरी बैठ जायगी, तभी तुम्हें मानुम होगा, अस्वीयत क्या है (काटी०—मिराला,



५७): बैठ पटरी सकी न कपटी में कब पटी नटखटी-भरे मन से (चोखे—हरिऔध, १३९)

(समा० मुहा०—पटरी जमाना)

### पटरी पर लाना

ठीक रास्ते पर लाना, सुधारना । प्रयोग—सारे ज्ञान मंडल को कानाफूसी एक तरफ रख, अपना काम छोड़, पटरी तक बड़ मेरी कहानियों को व्याकरण की पटरी पर लाते, गलत बयानियां सुधारते (अपनी खबर—उग्र, १०८-९)

### पटरी बैठना

६० पटरी खाना

### पटरी बैठाना

(१) काम के लिए युक्ति निकालनी । प्रयोग—क्यों बिठा लो तभी नहीं पटरी, जब बड़ा बर पा न थी पटती (बोल—हरिऔध, २१) (÷)

(२) प्रेम सम्बन्ध बनाना । प्रयोग—देखिए प्रयोग (१) में (÷)

(समा० मुहा०—पटरी जमाना)

### पटा-फेर

विवाह में हो कर दो जाने वाली मुक्तावे की रस्म । प्रयोग—छोरी गांठ पटाफेर दियो । कुलदेवी को तब पूजियो (प्रेम सा०—ल० ला०, १८२)

### पटिया पारना, पट्टी पारना—संवारना, पाटा पारना

दोनों ओर चिपटा कर के बाल बनाना, बनाव सिंगार करना । प्रयोग—कं पत्रावलि पाटी पारी (पद०—जायसी, ४१५); मुड़ली पटिया पारी चाहे, कोड़ी लावे केसरि (सू० सा०—सूर, ४१६८); होश सम्हाला नहीं कि पट्टी पार लो, चुस्त कपड़ा पहना घोर गजल गुनगुनाए (मा० प्र० (२)—भारतेन्दु, ९०२); तेल और पानी से पट्टी है संवारी चिर पर (मा० प्र० (२)—भारतेन्दु, ७९०)

(समा० मुहा०—पटिया काढ़ना)

### पटिया लेना

अपने अनुकूल बना लेना । प्रयोग—एक बार मिल तो

जाये ! वह पटिया लेगा (मेला०—रेणु, ३६२)

(समा० मुहा०—पट्टा लेना)

### पट्टा लिखना

लिखा पट्टी करके कोई जापदाद किसी को देना । प्रयोग—मकान दिया है, तो क्या कोई मेरे नाम का पट्टा लिख दिया है (भा—कौशिक, ८७)

### पट्टा लिखा लेना

पक्का कर लेना, निश्चित-पड़त से बांध लेना । प्रयोग—दरोगा ने नशीली आंखों से देखकर कहा—क्या आपने पट्टा लिखा लिया है ? (तदन—प्रेमचंद, २९२)

### पट्टा सिर से बांधना

कोई गौरव देना या आरोप लगाना । प्रयोग—घाज जब किसी की आलोचना करने चलते हैं, तो संसार का सब ज्ञान आपकी रेकाब पकड़े साथ-साथ ढोड़ता है और दूसरा आपकी बात पर कुछ कहे तो चट “ज्ञानलवदुर्विदग्ध” का पट्टा उसके माथे से बांध दिया जाता है, इसका क्या कारण ? (गु० नि०—वा० मु० गु०, ५०४)

(समा० मुहा०—पट्टा बांधना)

### पट्टी पढ़ना

(१) जानना । प्रयोग—मैं करना रहूँ न जानूँ, यह पट्टी नहीं है पट्टी (नूर०—मक्त, ९५)

(२) छलछंद सीखना ।

### पट्टी पढ़ाना, पाटी पढ़ाना, पाठ पढ़ाना

(१) पढ़ाव को राख, देनी बुरी राख देनी । प्रयोग—मीत मुजान अनौति की पाटी, इत पै न जानि मैं कोने पढ़ाई (घन० रुद्रिस्त—घना०, ६); किनु मेरे श्रोत्रियों ने उमे कुछ ऐसी पट्टी पढ़ाई कि उसने मेरा संदेशा स्वीकार न किया (मान० (२)—प्रेमचंद, १८०); बजौर गांव में जाकर लोगों को पट्टी पढ़ा रहा है (कठ०—दे० स०, ३६३)

(२) बहकाना, बेवकूफ बनाना (अपने स्वार्थके लिये) । प्रयोग—सुरदास प्रभु नई चतुरई मुरली पढ़ये पाठ (सू० सा०—सूर, १९०६); मैंने उसको X X बड़ी बड़ी पट्टियाँ पढ़ाई तब उसने सागत में दो दो रुपये कम लेकर आपके नाम से ये टोपियें दीं हैं (परिष्ठा०—श्री० दास, १९); उसने घब्रुल कादिर को भी यह पट्टी पढ़ानी शुरू कर दी (प्रह्ला०—दे० स०,



१०५); यह पट्टियां तुम उन स्त्रियों को पढ़ाओ जो तुम्हारे हृदयकण्ठ न जानती हों (कर्म०—प्रेमचंद, १५०); तुम्होंने तो मुझे पट्टी पढ़ा-पढ़ाकर निष्ठुर बना दिया है (भिला०—कौशिक, २२९); जान पड़ता है मानइहन चेष्टियाँ और उनकी यशोमती पुत्री ने यह पाठ पढ़ाकर आपको यहा भेजा है (सुहाग०—अ० ना०, १३२)

### पट्टी पारना

#### १० पट्टिया पारना

#### पट्टी पुजना

विचारभ होना। प्रयोग—मेरी पट्टी पुज चुकी थी और मैं 'घा' पर उंगली रख कर घादमी के स्थान में घाम, जालमारी, आज घादि के द्वारा मन की बात कह लेती थी (अतीत०—महादेवी, १५-१९); जब इषाम् बाबू पांच-छ बरस के हुए तब उनकी पट्टी पुजाई गई (मा—कौशिक, ९६)

#### पट्टी में आना

बहकावे में आना। प्रयोग—बेचारा सीधा आदमी आ गया पट्टी में (मान० (२)—प्रेमचंद, २६५)

#### पट्टी संचारना

#### १० पट्टिया पारना

#### पट्टीदार होना

साभेदार होना। प्रयोग—जिनको गोद में खेलाया वही अब मेरे पट्टीदार होंगे (मान० (१)—प्रेमचंद, १५); इसके बाद हमारे पट्टीदार भाई विन्ध्येश्वरी पोते का परिश्रमी, प्रसन्न परिवार (अपनी खबर—उग्र, २०)

#### पढ़ना

(१) विपत्ति या मुसीबत घानी। प्रयोग—जब आ गयी हो, तो रहो। जैसी कुछ पड़ेगी, देखी जायगी (मान० (२)—प्रेमचंद, ३४३)

(२) रूप आकृति एक ही होनी। प्रयोग—लज्जाने क्यों हो, गोद में ले लो × × बिलकुल तुमको पढ़ा है (गोदान—प्रेमचंद, ३४६)

(३) प्रयोजन होना।

#### पढ़ाव मारना

मजिल में करना। प्रयोग—चिल्लाकर बोली—देखो

किनारा घा गया। पढ़ाव मार लिया (झांसी—५० वर्षा, २५४)

(२) पात्रियों को लूट लेना।

(३) बड़ी हिम्मत का काम करना।

#### पड़िया के ताऊ होना

भोले-भाले बट्टा होना। प्रयोग—एक तो खुद ही यह सब पड़िया के ताऊ उस पर चटकी बजी खुशामद हुई × × बस हाथों के खाए कैच हो गए (भा० ग्रं० (१)—भारतेन्दु, ४७६)

#### पढ़कर सिर पर डालना

जादू करना। प्रयोग—सूर स्वाम मोहिनी लगाई कुछ पढ़ि कै सिर डारी (सू० सा०—सूर, ३०१९)

#### पढ़-पत्थर होना

बिलकुल अनपढ़ होना। प्रयोग—एक कुछ पढ़ी-लिखी थी। दूसरी एकदम पढ़-पत्थर (गोली—चतुर०, १४५)

#### पढ़ना

(१) वस्तु स्थिति को समझना-जानना। प्रयोग—घालिर भीतर से मोती की आवाज आती है—'शेखर।' शेखर उसमें पढ़ लेना चाहता है कि वह अपराधी ठहराया जा चुका है या जवाब के लिए बुलाया जा रहा है या बरी है (शेखर (२)—अज्ञेय, १५६)

(२) सीखे होना। प्रयोग—सूरदास प्रभु मिली अंतर गति दुहुनि पढ़ी एक चतुराई (सू० सा०—सूर, १५०४); कहाँ ऐसी चतुराई, पढ़ी आप जदुराई। आंगुरी पकरि पहना को पकरत हो (क० र०—सेनापति, ४१); लाल पड़े लड़वारि की बातें हो ठंड गनौगी न नंद बबा की (शब्द०—देव, ६७) रूप-गुन-मद-उतमद नेह-तेह भरे छल-बल-जातुरी बटक-चातुरी पड़े (धन० कवित्त—धना०, १२६)

#### पढ़ाना

(१) उन्दी सीधी बातें समझा देना, बहकाना। प्रयोग—लज्जति न भूष कपट चतुराई। कोटि कुटिल मनि गुरु पढ़ाई (राम० (अ)—तुलसी, ३९७); लेकिन इस हरामजादे जाफर अली ने जो जो उसे पढ़ा दिया है, वही पढ़ता रहा (मूले०—भग० दर्मा, ३४३)



(२) सील देना, आदत डालनी । प्रयोग—नंद-वरनि सुत भलो पढ़ापो (सू० सा०—सूर, ९५८); नतीजा यह होता था कि बड़ों द्वारा कुत्तप बना हुआ स्वल्प बेहिक, रूप की निहायत नगी परिभाषा भोले संगियों को पढ़ाता था (अपनी खबर—उग्र, ६३); मुझे इस तरह पढ़ाने की जरूरत नहीं है (सू० सू०—सुदर्शन, १२३)

### पत उठ जाना

(१) विश्वास न रह जाना । प्रयोग—हरपति वचन कठोर कहत थलि, मति बिनु पति उठि जात (सू० सा०—सूर, ४१५१)

(२) इज्जत न रह जानी ।

### पत उतारना,—लेना

बेइज्जत करना । प्रयोग—उतारें पत क्यों ओरों की बिगड़े क्यों बाते सारी ? (मर्म०—हरिऔध, ६८); कान के कच्चे कहें कच्ची नहीं कान के पतले न पत लेते रहें (बोल०—हरिऔध, ७७)

### पत खोना,—जाना, पत-पानी जाना

इज्जत खोना या न रह जाना । प्रयोग—हम अपतह अपनी पति सोई । हमरें खोज परहु मति कोई (कबीर ग्रंथा०—कबीर, २८७); पति उतरति, देखौ परी है बिपति अति द्रोपदी पुकारें सेनापति अहुनाइकें (क० र०—सेनापति, ११०) लुट गई मरजाद पत पानी गया (चुभते०—हरिऔध, ११७); जब कि कस ली पत गंवाने पर कमर पत उतरने का रहा तब कोन डर (चुभते०—हरिऔध, ९२)

(समा० मुहा०—पत उतर जाना,—गंधाना, पत-पानी खोना गंधाना)

### पत जाना

दे० पत खोना

### पत-पानी जाना

दे० पत खोना

### पत पानी रह जाना

इज्जत बनी रह जानी । प्रयोग—आंख का रहता न पत

पानी बना आंख में आंख अगर आता नहीं (बोल०—हरिऔध, ६२)

### पत रखना

इज्जत बचानी । प्रयोग—बिनती एक राम मुनि सोरी, जब न बचाइ राखि पति मोरी (कबीर ग्रंथा०—कबीर, ११३); सूर सबें तुम भईं बाबरी, पाकी पति कह राखत (सू० सा०—सूर, ४१४१)

### पत लेना

दे० पत उतारना

### पतन के गह्वर में गिरना

घोर पतन होना । प्रयोग—घृणा और ईप ते जो बढ़ता है वह शीघ्र ही पतन के गह्वर में गिर पड़ता है (अशोक०—ह० प्र० द्वि०, ४८)

### पतला कान

भट किसी की बात पर विश्वास कर लेने वाला । प्रयोग—गवर्नमेन्ट का ऐसा अनुचित व्यवहार घोर हाकिमों का ऐसा पतला कान समझ कर बाबू हरिश्चन्द्रजी ने धानरेरी मजिस्ट्रेटों और म्युनिसिपल कमिश्नरी आदि से इस्तीफा दे दिया (राधा० ग्रंथा०—राधा० दास, ५००)

### पतिव्रत रखना

सच्चा एकनिष्ठ प्रेम करना । प्रयोग—नंदनंदन सौ पतिव्रत राख्यो, नाहिन दरस बियो (सू० सा०—सूर, ४१८०)

### पते की बात

(१) मथार्य बातें—महत्वपूर्ण बातें । प्रयोग—हाय यह तो सभी बातें पते की कहती है (मा० ग्रं० (१)—भारतेन्दु, ४६०); वास्तव में कहीं कहीं नीरद ने अपनी पुस्तक में ब्रह्मपुत्र के मुख से बड़ी पते की बातें कहलवाई हैं (ब्रह्म०—दे० स०, २३५); वह ने बात तो पते की कह दी । इसका जवाब सोचकर देना (गवर्न—प्रेमचंद, २३८)

(२) भेद प्रगट करने वाली बातें ।

### पतल गरमाना

ज्योनार में खाने जाना । प्रयोग—चुम्नी के दोनों भाई



और बड़क खुद बाल-बच्चों को साथ ले कर पत्ता घरमाने गये थे (बल०—मागा०, ८४)

### पत्ता पड़ना

भोजन के लिये पत्तों पर सामग्री परोसी जानी। प्रयोग—सादर सगे परन पनबारे (राम० (बल०)—तुलसी, ३३८)

(समा० मुहा०—पत्ता डालना,—लगाना)

### पत्ता कट जाना

एकदम अलग हो जाना या कर दिया जाना, कोई सरोकार न रहने देना। प्रयोग—(बेठन) मिलता भी है या मांगने पर पत्ता ही कट जाता है? (दुधगाछ—दे० स०, ३१४); जब फिल्म रीलीज होगी तो देखना कि सबका पत्ता कट गया (पैतरे—अशक, १०३); कह रहे थे कि बड़े बाबू बड़े दुष्ट हैं। किसी तरह उनका पत्ता कटना चाहिए (निशि०—वि० प्र०, १२३)

### पत्ता काटना

एकदम अलग कर देना। प्रयोग—जब तक किरंगी का पत्ता नहीं काट दिया जाता, न रानी गूढ़ाली जेल से छूट सकती है और न देवकान्त ही दिमांगमूल लौट सकता है (बल०—दे० स०, ३३२); मिरे से पत्ता ही काट दे मेरा तो कोई अब नही (पैतरे—अशक, ६४)

### पत्ता खड़कना,—डोलना

कुछ खटका या अपाका होनी। प्रयोग—हरा सा पत्ता भी खड़कता तो काल खड़े करके चोकाईया भरता हुआ निकल भागता (गोदान—प्रेमचंद ९६); सदन डिग कहीं जो रोला पत्र भी था, निज श्रवण उठाती थी, सम्पत्कठिता हो (शिथ०—हरिऔध, ६२); कंग जाते हैं पत्ता खड़के औरों को बन जाते हैं यम (बोल०—हरिऔध, १०६)

### पत्ता चाटना

(१) बाजार की चीजें या चाट खाना। प्रयोग—निहास देई मिथों से मु-मु सी-सी करती जा रही थी परन्तु एक-एक करके चार पत्ते चाट गयी (झुठा० (१)—यशपाल, १५८); बाजार जाता है, मगर क्या मजाल है जो कभी पत्ता चाटे (धरती०—वि० प्र०, १२९)

(२) जूठा खाना।

### पत्ता डोलना

दे० पत्ता खड़कना

### पत्ता न खड़कना,—न हिलना

(१) हवा बिलकुल बंद होनी। प्रयोग—मैं आपको बिस्वाम दिलाता हूँ कि पत्ता तक न हिलेगा (रंग० (२)—प्रेमचंद, १५१)

(२) सब ओर एकरम नीरखता होनी, कोई गति न होनी। प्रयोग—सागे हैं कपाट सेनापति रंग मंदिर के परदा परे न खरकत कहू पात है (क० र०—सेनापति, ५८)

### पत्ता न तोड़ने देना

कुछ भी न करने देना। प्रयोग—मना करने पर भी बहू काम करने से बाज नहीं आती, मुझे पत्ता नहीं तोड़ने देती (धूम०—उ० मट्ट, १३०)

### पत्ता न हिल सकता

कुछ भी न हो पाना। प्रयोग—बिनु तुव धनुशासन इक पातहुँ डोलि सकत नहि प्यारे (राधा० ग्रंथा०—राधा० दास, ७); किसकी महत्ता थी कि जिसने आज प्रण को पूर्ति की? दिल जाय पत्ता तो कहो सत्ता बिना इस मूर्ति की (जय०—गुप्त, ९०); क्या मजाल की घर में उनकी इच्छा के बिरेड एक पत्ती भी हिल जाय (मान० (३)—प्रेमचंद, ७३)

### पत्ता न हिलना

दे० पत्ता न खड़कना

### पत्ता-पत्ता

हर कोई, हर व्यक्ति या वस्तु। प्रयोग—सजग हुआ साकेत पुरी का पत्ता-पत्ता (साकेत—गुप्त, ४१५)

### पत्ते को देखना जड़ न देखना

ऊपरी टीमटाम देखना, बात के मूल तक न पहुँचना। प्रयोग—पालनि तकत मन भूले, किरें फूले बूधा, घाली, बनमाली जू के फल की कहा कहै (धन० कवित्त—धना०, ९८)

### पत्ते पर अपना मांस बिकवाना

कुछ वस्तु के बदले मूल्यवान या महत्वपूर्ण वस्तु देनी। प्रयोग—जब उसके मन का यह हाल है तो कौन कहे केशव के साथ ही जिन्दगी भर निवाह करेगी। जिस तरह आज उससे प्रेम है, उसी तरह कल दूसरे से हो सकता है। तो क्या पत्ते पर अपना मांस बिकवाना चाहते हो? (मान० (१)—प्रेमचंद, २२८)



पत्ते पर बैठ कर पेड़ काटना

४३१

पत्थर लुढ़काना

**पत्ते पर बैठ कर पेड़ काटना**

स्वयं अपना अहित करना। प्रयोग—पालव बैठि पेड़एहि काटा। सुख महुँ सोक ठाटु घरि आटा (राम० (अ)—तुलसी, ४१६)

**पत्ते बाज़ होना**

धूल होना, चालाक होना। प्रयोग—कुछ प्रोद्गुनर भी पत्तेबाज़ हैं (दूधगाछ—दौ० स०, ३२२)

**पत्थर का कलेजा**

ऐसा हृदय जिसमें दया, करुणा आदि कोमल वृत्तियों को स्थान न हो। प्रयोग—बिरह सहन को हम सिरजी हैं, पाहन हृदय हमार (सू० सा०—सूर, ४४२६); दुःख न होता तो पत्थर से भी अधिक कड़े कलेजे वाले को कौन पिघला कर पानी कर सकता है (मट्ट नि०—बा० मट्ट, २९); उनके शवों को देखकर नगर के पत्थर से पत्थर दिल भी पानी हो गए (ये कोठे०—अ० ना०, ५५); पर मैंने पत्थर का कलेजा करके उसे विदा कर दिया (गोली—चतुर०, १३४)

(समा० मुहा०—पत्थर का दिल या हृदय)

**पत्थर का पिघलना, पत्थर के कलेजे का पानी होना**

कठोर हृदय का दयालु बनना। प्रयोग—क्यों आहें भर-भर करके पत्थर को भी पिघलाऊं (वैदेही०—हरिऔध, ७८); रेजा रेजा सिर का भेजा हो गया देख कलेजा पत्थर का पानी हुआ (बोल०—हरिऔध, १८७)

(समा० मुहा०—पत्थर का पानी होना, पत्थर का कलेजा पिघलना)

**पत्थर की लकीर**

सदा सबंदा बनी रहनेवाली, अमिट। प्रयोग—जाके गति है हनुमान की। ताकी पंज पूजि आई, यह रेखा कुलिस पपान की (विनय०—तुलसी, ३०); राजा साहब ने जा बात कह दी उसे तुम पत्थर की लकीर समझो (रंग० (१)—प्रेमचंद, २२०)

**पत्थर के कलेजे का पानी होना**

दे० पत्थर का पिघलना

**पत्थर को मोम बनाना**

कठोर व्यक्ति को भी नम्र बनाना। प्रयोग—सुशामर वह चीख है कि पत्थर को मोम बनाती है, बेल को दुह के दूध निकालती है (प्र० पी०—प्र० ना० मि०, ५९)

**पत्थर तले का हाथ होना**

ऐसी स्थिति में होना कि जिससे निकला न जा सके। प्रयोग—सूरदास के प्रभु तन मेरो, ज्यों रूपो हाथ पाथर तर को (सू० सा०—सूर, २५३४)

**पत्थर पड़ना**

(१) चोट होना, नष्ट होना। प्रयोग—पत्थर पड़े ऐसे स्वर्ग पर (राधा० ग्रंथा०—राधा० दास, १२०); जहाँ अभि-एक सम्बद्ध छा रहे थे, मयूरों से सभी मुद पा रहे थे। वहाँ परिणाम में पत्थर पड़े यों, खड़े ही रह गये सब से खड़े ज्यों (साकेत—गुप्त, ५२); तो तुम्हारी बूम मिट्टी में मिली ओ तुम्हारी सूझ पर पत्थर पड़ा (बोल०—हरिऔध, १९)

(२) ओले पड़ना।

**पत्थर पर दूध जमना**

(१) जहाँ कुछ मिलने या होने की आशा न हो, वहाँ भी होना। प्रयोग—नाम के जमाने में तो पत्थर पर भी घास उग रही थी। जिसने कभी न कमाया था उसने भी कुछ कमा लिया (झुठा० (१)—यशपाल, २४)

(२) घनहोनी बात या असंभव काम होना।

**पत्थर बनना**

(१) मति-शून्य हो जाना, निश्चल होना। प्रयोग—कत्वाणी तो जैसे इस पर पत्थर बन आई थी (कल्याणी—जैनेन्द्र, ७४)

(२) कठोर बनना।

**पत्थर लुढ़काना**

(१) बड़ी रुकावट खड़ी करनी। प्रयोग—भैया, मिस साहब ने तो मेरे सामने पत्थर लुढ़का दिया (रंग० (२)—प्रेमचंद, ३६३)

(२) किसी की तबाही चाहना।



### पत्थर हो जाना

(१) मन्न रह जाना, कुछ कह-बोल न पाना । प्रयोग—  
रेखा पत्थर हो गयी (नदी०—अज्ञेय, ११४); तारी पत्थर  
बनीं सुन रही थी (झा० (२)—यशपाल, १२६)

(२) कठोर-दिल होना । प्रयोग—मैंने तुम्हारे जैसा वेददं  
आदमी कभी न देखा, बिलकुल पत्थर हो (गोदान—  
प्रेमचंद, ७९); हो गये काठ, बन गये पत्थर धामते धामते  
कलेता हम (सुभते०—हरिऔध, ७८)

(३) चूपी साधनी ।

### पथ पर चलना,—लगना

(१) किसी के द्वारा दिखलाये तरीके से काम करना ।  
प्रयोग—मैं गांधी को मानता हूँ, मैं उसके बताए पथ पर  
चलूंगा (शेखर (१)—अज्ञेय, १२१); तुम्हारे पथ पर मैं  
चल सकूंगा ? (कामना—प्रसाद, ८)

(२) किसी मत को मानना । प्रयोग—कोई ब्रह्मचर्य पथ  
लामे, कोई दिग्गम्बर आर्क्षहि नामे (पद०—जायसी, २६)

### पथ पर लगना

दे० पथ पर चलना

### पथराना

(३) दुर्गंत करना । प्रयोग—आपको तो मालूम ही हुआ  
होगा, वरोगा जी ने मुझे आज खूब पवरा (प्रेमा०—  
प्रेमचंद, १०६)

(२) निस्तेज हो जाना (आँखें) ।

### पद-चिन्हों पर चलना

किसी के दिखाए मार्ग पर बढ़ना । प्रयोग—तुम भी शायद  
प्रकाश जी के पद-चिन्हों पर चलना चाहते हो (पैतरे—  
अशक, ९३); मुझे आपकी सेवा में रखने से उनका उद्देश्य  
यही होगा कि मैं आपके ही पद-चिन्ह पर चलूँ (प्रेमा०—  
प्रेमचंद, ३८५)

(समा० म्हा०—पद-चिन्हों का अनुकरण करना,  
पदानुसरण करना)

### पद-दलित होना

(१) तुच्छ समझा जाना । प्रयोग—मेरे जीवित रहते  
आर्य समुद्रगुप्त के स्वर्गीय एवं को इस तरह पद-दलित  
होना न पड़ेगा (धृ०—प्रसाद, २८)

(२) किसी के द्वारा सताया या पराजित किया जाना ।

### पद-पद पर

दे० पग-पग पर

### पद रज सिर पर चढ़ाना

वरण छकर सादर प्रणाम करना । प्रयोग—जो तुम  
भीतेहु मूनि की नाई पद रज सिर निमु धरत गुसाई  
(राम०(बाल)—तुलसी, २८७)

### पनाह ताकना

शरण माहना । प्रयोग—भूपन जे पूरव पछांह नरनाह ते  
वै, ताकत पनाह दिल्लीपति मिरताज की (भूपण ग्रंथा०—  
भूपण, १४७)

### पन्ने उलटना,—लौटाना

पुस्तक पढ़ना, सरसरी नजर से देखना (पुस्तक) । प्रयोग—  
इन्द्रनाथ धूप में बैठे एक मातृक पत्रिका के पन्ने उलटते  
हुए मुस्करा रहे थे (सु० सु०—सुदर्शन, ११९); “सज्जाद-  
सम्बुल” के पन्ने क्या आपने कभी लौटाये हैं ? (कुछ—प०  
पु० बख्शी, ५७)

### पन्ने रंगना

लिखना । प्रयोग—इस मातृक स्नेह कपी अनमोल मोती  
की तारीफ में पेज के पेज रंगते जाय तो भी हम घोर छोर  
तक नहीं पहुँच सकते (सा० सु०—बा० मट्ट, ६१); यद्यपि  
वह कल्पना के मधुर रंग से नहीं, केवल परिचित अनुमति  
के तिव्र रस से ही पन्ने रंग रहा है × × (शेखर (२)—  
अज्ञेय, २०); मेरी रचनाओं का इतना महत्व नहीं कि  
उनके बारे में अधिक पन्ने रंगूँ (मोर०—जग० माथुर, १७३)

### पन्ने लौटाना

दे० पन्ने उलटना

### परम्परा होना

परम्परा पर चले चलना । प्रयोग—अशोक स्तम्भ का हर  
फूल घोर हर डल इस विचित्र परिणति की परम्परा बोये  
आ रहा है (अशोक०—ह० प्र० द्वि०, १५)

### पर कतर जाना

शक्ति या बल का आधार न रह जाना, अशक्त हो जाना ।



प्रयोग—जो रहे आसमान पर उड़ते पात्र उनके कतर गये हे पर (चुभते०—हरिओध, १९)

(समा० मुहा०—पर कट जाना,—टूटना)

### परकैच कवूतर

बेसहारा या शक्तिहीन व्यक्ति । प्रयोग—और परकैच कवूतर की तरह वह इन्हें अपना बसवर्ती रखते थे (परीक्षा०—श्री० दास, ६५)

(समा० मुहा०—पर-कटा कवूतर)

### पर भाड़ कर अलग हो जाना

एकदम अलग हो जाना । प्रयोग—ज्योंही जरा सपाने हुए, पर भाड़कर निकल जायेंगे (मान० (१)—प्रेमचंद, ५); पंख आते ही, पट्टे चले, पर भाड़कर, गुरु को दक्षिणा में अंगूठा दिखा, अपनी राह लगते हैं (कला०—उग्र, २१)

### पर निकलना,—लगना

(१) स्वयं कुछ करने लायक होता । प्रयोग—जब तक पर नहीं निकलते हैं, रगड़ को घेरे हुए हैं (मान० (१)—प्रेमचंद, ५); चन्द्र ने तीखी दृष्टि से गोरा की ओर देखा, मानो कह रहा हो 'अच्छा तुम्हें भी पंख लगे?' (नदी०—अज्ञेय, १७९)

(२) बातचीत-व्यवहार में मुखर होना; खुलना ।

(३) न रहने का लक्षण उत्पन्न होना, बहकने या बुरे रास्ते पर जाने का रंग-रंग दिखाई देना ।

(समा० मुहा०—पर जमना,—फूटना)

### पर-पुरजे निकालना

(१) साज-सामान निकालना । प्रयोग—नाई ने भी इस समय पर-पुरजे निकाले थे । वह सफेद धोती, सफेद कुर्ता पहने था और गुलाबी साफा बांधे था (मिसा०—कौशिक, ७५)

(२) चालाकी आना । प्रयोग—इसके दोस्तने इसे दिल्ली से बुलाया था । वहां रेडियो में कहीं भोज मार रहा था । यहां पहुंचते ही इसने पर-पुरजे निकालने शुरू किए (पेंतरे—अशक, ९७)

### पर फड़फड़ाना

किसी काम को करने या बंधन-मुक्त होने के लिए बहुत

प्रयत्न करना । प्रयोग—बहुत पर फड़फड़ाये पर सब व्यर्थ (वैशाली० (२)—चतुर०, ३२०)

### पर मारना

(१) मुकाबिला करना । प्रयोग—दीपावली का कोई मुकाबिला नहीं उसके सामने तो कोई पर नहीं मार सकता (कठ०—दे० स०, ९२)

(२) उड़ना, पहुंच होनी । प्रयोग—मार सकते हैं परिन्दे भी नहीं पर जिस तक । बिड़िया-वाले के यहाँ सब व परी आती है (मा० ग्रं० (२)—मारतेन्दु, ७९०); श्री अंधकार के सुनहले पर्वत, जिसने सभी पंख मारना नहीं सीखा × × (कला०—पंत, १२८)

### पर लग जाना

(१) जल्दी उड़ना, जल्दी चलना । प्रयोग—मेरी बाणी को लग गए थे पर (बुद्ध०—बच्चन, ५४); दस्तम के जैसे पर लग गये ऐसा भागा (चोटी०—निराला, १३८)

(२) बोली में आना ।

(३) तरक्की होना, फैलना ।

### पर लगना

दे० पर निकलना

### पर-लोक बिगड़ना या बिगाड़ना

ऐसे कार्य करना जिससे सद्गति न हो । प्रयोग—नाहिन डर बिगरिहि परलोकू (राम० (अ)—तुलसी, ५७१)

### पर-लोक सिधारना

मरना । प्रयोग—धर्मानन्दी की परवाली तो परलोक सिधार गई थी (ब्रह्म०—दे० स०, ३९-४०)

### परछाईं न पड़ना

तनिक भी घसर न होना । प्रयोग—भू पर, मानों, पड़ी आज तक कभी न दुख की परछाईं (चक्र०—दिनकर, १४०)

### परदा खुलना

वास्तविकता प्रगट होनी । प्रयोग—रामनाथ—रोना-घोना मच जायेगा और इसके साथ घर का परदा भी खुल जायगा (गहन—प्रेमचंद, १६); खुल रहा है दिन व दिन परदा मगर आँख का परदा नहीं अब भी खुला (चुभते०—हरिओध, ५७)



### परदा खोलना

छिनी बात प्रगट करना—भेद उद्घाटन करना । प्रयोग—इस लिए जब राजा एक युवक ने प्राणों का मोह छोड़ कर उसकी कीर्ति का परदा खोल दिया तो उसकी चेतना जैसे जाग उठी (मान० (१)—प्रेमचंद, १८५); आप ही अपने हाथों से न हम परदा अपना खोलें (मर्म०—हरिऔध, ७३)

(समा० मुहा०—परदा उठाना,—फाश करना)

### परदा ढका रहना

वास्तविक स्थिति प्रगट न होनी । प्रयोग—इन्हें वहाँ ठहरा दूंगा, खाना भिजवा दंगा, परदा ढका रह जायगा (रंग० (२)—प्रेमचंद, ४६)

### परदा दूर होना,—फाश होना

रहस्य का प्रगट होना । प्रयोग—मेरे ख्याल में औरतों का रकीक दिल तमः के फन्दे से फांसना आसान था । वह परदा आज दूर हुआ (राधा० ग्रंथा०—राधा० दास, ६९१); परदाफाश हुआ । बच गए (चीटी०—निराला, ११८)

(समा० मुहा०—परदा हटना)

### परदा न होना

कोई दुराव या संकोच न होना । प्रयोग—अब तक प्रकाश और चम्पा के बीच कोई परदा न था (मान० (२)—प्रेमचंद, ६६)

### परदाफाश होना

दे० परदा दूर होना

### परदा रखना या होना

(१) छिपाव रखना—दुराव रखना । प्रयोग—मुनहुँ सूर हमसौ कह परदा, हम करि दीन्ही साँट सई (सु० सा०—सूर, २३४६); देलो, तुमने मुझसे कभी परदा नहीं रखा । इस समय भी स्पष्ट हो कहना (मान० (१)—प्रेमचंद, ४२); कुमार मेरे बिस्बावपात्र शिष्य है, बत्स ! उनसे परदा रखने की आवश्यकता नहीं (बाल०—ह० प्र० द्वि०, ५८); इसी तरह तुम और घमर भाई भाई हो; तुमसे क्या परदा है (कर्म०—प्रेमचंद, १३५)

(२) स्त्रियों का सामने न होना ।

### परदे की ओट से शिकार करना

(१) छिपकर किसी के विरुद्ध कार्य करना; बुरा काम करना । प्रयोग—मेरी दृष्टि में वह वेश्याओं से भी गयी बीती है क्योंकि वह परदे के झाड़ से शिकार खेलती है (गोदान—प्रेमचंद, १९२)

(२) छिप कर किसी पर चार करना ।

### परदेश में छाना,—लेना

दूसरे गांव या शहर में बसना । प्रयोग—तू सपूत मनि ताकरि घर परदेस न लेहि (पद०—जायसी, ३११०); जो पति छाय रहे परदेसा, धीर करै, नहि सहे कलेसा (गु० नि०—बा० मु० गु०, ६७६)

### परदेश लेना

दे० परदेश में छाना

### परनाले का पत्थर चौबारे में लगाना

तुच्छ व्यक्ति को सम्मान का स्थान मिलना । प्रयोग—अगर फिरा हुआ न होता तो तेरे जैसी कमजात को कैसे ब्याह लाता ? परनाले का पत्थर चौबारे में लग गया (सु० सु०—सुदर्शन, २५१-५२)

### परम गति पाना,—पद के अधिकारी होना,—पद पाना

मोक्ष पाना, मृत्यु को प्राप्त होना । प्रयोग—कहै कबीर परम पद पाया, नहि जाऊँ, नहि जाऊँ (कबीर ग्रंथा०—कबीर, १५४); सुमरै क्यों न परम गति पाई (कबीर ग्रंथा०—कबीर, ३००); जीवन मुक्त मूर सो जग मैं, घंत परम पद पावै (सु० सा०—सूर, ३४४४); परति चरन रज अचर मुखारी, गए परम पद के अधिकारी (राम० (अ)—तुलसी, ५०३); कासी मरत परम पद लहहो (राम० (बाल)—तुलसी, ६०)

### परम पद के अधिकारी होना

दे० परम गति पाना

### परम पद देना

मुक्ति देना । प्रयोग—रन हति राम परम पद दयऊ (राम० (बाल)—तुलसी, १३७)



### परम पद पाना

#### दे० परम गति पाना

#### परायी पीड़ा पाना,—लगना

दूसरों के दुःख को समझना । प्रयोग—तामों दुख कहिए हो बीरा । जेहि मुनि के लागे पर पीरा (पद०—जायसी, ३११२); कण्ठामय रघुनाथ गोसाई, बेगि पाइछहि पीर पराई (राम० (अ)—तुलसी, ४५१)

#### परायो पीड़ा लगना

#### दे० परायी पीड़ा पाना

#### पराये हाथों होना

दूसरे के वश में होना । प्रयोग—तन भले ही हाथ में हो और के पर पराये हाथ में होवे न मन (चौखे०—हरिऔध, १२६)

(समा० मुहा०—पराये बंधन के नीचे)

#### परिन्दों के पर कतर देना

अशक्त कर देना । प्रयोग—पर कतर हें दिये परिन्दों के हाथ हो तुम उठे नहीं किस पर (बोल०—हरिऔध, १७२)

#### परिपाटी पर चलना

परम्परा के अनुसार काम करना । प्रयोग—पहिली परिपाटी चली, नई चलें क्यों जानु (सू० सा०—सूर, २०७९)

#### परिवार चलाना

गृहस्थी का भरण-पोषण करना । प्रयोग—मो सपूत परिवार चलावे, ये तो लोभी चिक इनहीं (सू० सा०—सूर, २८५९)

#### परिवार टूटना

परिवार के लोगों का अलग-अलग हो जाना । प्रयोग—यह दुनिया शिव प्रतापों से भरी है जिनके इशारों पर स्त्रियां गिरती हैं, जिनके प्रभाव से परिवार टूटते हैं, जिनके कहने से हत्याएं होती हैं (भूले०—भग० वर्मा, ३२९)

#### परोसा थाल होना

आमान काम होना । प्रयोग—एक बार हिसाब किताब देख लें तो घाबें खुल जायें, मालूम हो जाय कि जमींदारी परोसा थाल नहीं है (प्रेमा०—प्रेमचंद, १३४)

#### परोसी थाली सामने से चली जाना

किसी वस्तु का मिलते-मिलते हाथ से निकल जाना । प्रयोग—लेकिन घाप ही समझ लीजिए, अपने सामने से परोसी थाली कैसे जाने दें (भूले०—भग० वर्मा, ४१२)

(समा० मुहा०—परोसी थाली सामने से छिन जाना)

#### पर्वत को तिल की ओट करना,—राई बनाना या होना

बड़ो बात को तुच्छ करना या समझना । प्रयोग—जो आत्म व्यथा के गायक विश्व वेदना के पहाड़ को तिल की ओट कर, अपने सूद्र तिल से दुख का पहाड़ बनाकर विश्व हृदय पर रखना चाहते हो ? (कला०—पंत, ८९); सोने का सुमेरु भी उनके निकट हुआ था राई (यशो०—गुप्त, ३३)

(समा० मुहा०—पहाड़ को तिल बनाना)

#### पर्वत को धूल और धूल को पर्वत बनाना

छोटे को बड़ा और बड़े को छोटा बनाना । प्रयोग—गति तुलसीस की लखें न कोउ, जो करत पब्वय तें छार, छारें पब्वय पलक ही (कवि०—तुलसी, १६४)

#### पर्वत को राई बनाना या होना

#### दे० पर्वत को तिल की ओट करना

#### पल-पल युग के समान बीतना

समय किसी प्रकार न बीत पाना । प्रयोग—वे दिन दसा बीति गइ लेखे, पल-पल युग सम जात (सू० सा०—सूर, ४२३२)

(समा० मुहा०—पलपल भारी होना,—लगना)

#### पलक उठना या उठाना

ध्यान देना । प्रयोग—वे न तब भी पलक उठावेंगे हम पलक पर अगर ललक रल लें (चौखे०—हरिऔध, २१); देख हम जिसकी भलक है जो रहे क्यों उसी की है नहीं उठती पलक (बोल०—हरिऔध, १८०)

#### पलक की ओट

नजर से दूर । प्रयोग—पलक ओट भावत नहि मोकी, कहा कहौ तोहि बात (सू० सा०—सूर, ८३७); तुम बिन छिन छिन कैसे कटें । पलक ओट भये छाती फटें (प्रेम सा०—ल० ला०,



१०२); आँख से दूर तब करें कैसे जब पलक ओट सह नहीं सकते (बोखे०—हरिऔध, ३५)

### पलक के समान बीत जाना

अत्यंत कम समय में कोई काम हो जाना या समय बीत जाना। प्रयोग—राम भरत गुन मनस संप्रती। निनि दंपतिहि पलक सम बीती (राम० (अ)—तुलसी, ६४७)

### पलक खोलना

ध्यान देना, आँख खोलकर देखना। प्रयोग—इन दिनों तो हे बिपत खुल खेलती तू भला भव भी पलक तो खोल दे (धुमते०—हरिऔध, १)

### पलक भपकते

अत्यंत अल्प समय में—बात कहते। प्रयोग—और दो वर्ष तो पलक भपकते बीत जावेंगे (चेतन—अशक, २४)

(समा० मुहा०—पलक गिरते)

### पलक भपकना

(१) नींद आनी। प्रयोग—चार दिन तक पलक नहीं भंगी (गु० कहा०—गुलेरी, ५०)

(२) लज्जा होनी। प्रयोग—जिसकी पलक न भपकना छोड़ दिया, उससे कौन जीते (बोने०—रा० रा०, १९३)

(३) भय के कारण दहशत होनी।

### पलक डालना.—पांवड़े बिछाना

किसी का अत्यंत प्रेम से स्वागत करना। प्रयोग—जिस मोती बाई के लिए राजा पलक पांवड़े बिछाते थे, वह बिचारी दर-दर फिर रही है (झासी०—दू० वमा, ११२); पल-पल जिस प्यारे के लिये हूँ बिछाती पुनक्ति पलकों के पांवड़े प्यार-द्वारा (प्रिय०—हरिऔध, २३४); जो पलक पर चाहता रखना नहीं तो पलक के पांवड़े क्यों डालता (बोल०—हरिऔध, ५९)

(समा० मुहा०—पलक बिछाना)

### पलक न पड़ना.—न लाना

एक टक देखना। प्रयोग—परत न पलक चकोर चंद ली, अबलोकत लोचन न अथात (सु० सा०—सूर, ४७९७); मनहुं चकोरी चार बंदों निज निज सीढ़, चंद की निरन पीधे

पलकों न लावती (कवि०—तुलसी, १३)

### पलक न लगना

(१) नींद न आनी। प्रयोग—पलकें न लगें, पुर लोगन की गुर लोगन की अलिवाँ ललकें (शब्द०—देव, ८६)

(२) एकटक देखना। प्रयोग—साव, तुम्हारे रूप की, कहो, रीति यह कौन। जासों लागत पलक दुग लागत पलक पनो न (विहारी स्तना०—विहारी, ३९८); पलकें न सगें, देखि ललकें तरुन मन भलकें कपोल, रही धलकें बिचरि के (क० १०—मैनापति, ३५)

### पलक न लाना

दे० पलक न पड़ना

### पलक पांवड़े बिछाना

दे० पलक डालना

### पलक मारते

तुरंत। प्रयोग—तब क्यों आँख नहीं खुलती है, होश क्यों नहीं आता। जब कि पलक मारते काल का, रंग पलट है जाता (मर्म०—हरिऔध, ३०); किसे ज्ञात था, पलक मारते हो आँख के धुएँ के बादल सा यह संसार आँखों से ओझल हो जाएगा (कला०—पंत, ५८); यह सब कुछ पलक मारने में हो गया (रंग० (१)—प्रेमचंद, २१५)

(समा० मुहा०—पलक न मारते)

### पलक मारना

(१) पलक भपकाना या गिराना। प्रयोग—गुनि सो बात राजा मन जागा। पलक न मार पेम चित लागा (पद०—जायसी, ११७); ताराएँ पलक मारना भूल गई हैं (कला०—पंत, १४०)

(२) आँखों से संकेत करना।

### पलक लगना

आँख मूंदना, पलक भपकना, नींद आनी। प्रयोग—निसि बासर इकटक ही राखे, पलक लगाइ न जाने (सु० सा०—सूर, २७४४)

### पलक-बाजी

छिपकर दृष्टि-विनिमय। प्रयोग—तब न मुरमा घुलाव के



आँख पर चरणामृत लगावे ही जे में पलकवाजी खूब चले,  
हां एक पलक एहरो (मा० प्र० (१)—भारतेन्दु, ३२८)

### पलकें बिछी होना

हृदय से स्वागत करना। प्रयोग—ऊबता हूँ उबारने वाले  
प्राइये हैं बिछी हुई पलकें (चुमते०—हरिऔध, १)

### पलकें भारी होना

नींद घानी। प्रयोग—घालिर उनकी पलकें भारी हो आईं  
(धरती०—वि० प्र०, ७९)

### पलकों का दगा देना

नींद न घानी। प्रयोग—सूरदास याही तें जड़ भए, पलक-  
निहू हठि दगा दई (सू० सा०—सूर, ३६१४)

### पलकों पर पानी फिरना

रोना घाना। प्रयोग—रोषाहि रोष भरे दूग तेरे, फिरत  
पलक पर पानी (सू० सा०—सूर, ९६१)

### पलकों पर रखना,—लेना

अत्यंत आदर करना। प्रयोग—जिसकी हृदय-बल्लभा तुम  
हो, जो तुमको पलकों पर रखता (वेदेही०—हरिऔध, ७०);  
और उसे क्या कम मुल है। मालिक पलकों पर रखे हैं  
(धरती०—वि० प्र०, १२९); लालसा लाख बार होती है हम  
पलक पर उन्हें ललक ले लें (चुमते०—हरिऔध, ६)

(समा० मुहा०—पलकों पर बिठाना)

### पलकों पर लेना

दे० पलकों पर रखना

### पलकों से पांथ भाड़ना

बहुत आदर करना। प्रयोग—क्यों बिठा लें उन्हें न घांछों  
पर क्यों पलक से, न पांथ हम भाड़ें (बील०—हरिऔध, ५८)

### पलट जाना

मुकर जाना। प्रयोग—इस समय मुझे सबसे बड़ी चिंता  
अपनी बात खोने की है। लोग कहेंगे, बात कहकर पलट  
गई (रंग० (१)—प्रेमचंद, १३६)

### पलड़ा भारी होना, पल्ला बड़ा होना,—भारी होना

तुलना में स्थिति ओष्ठ होनी। प्रयोग—ऊददान उसके भी

तगड़े तगड़े से और छर्मोंम बानो का पलड़ा भी कुछ कम  
भारी न था (ये कोठे०—प्र० ना०, १४४); डामा का पलड़ा  
तो सिनेमा से कहीं ज्यादा भारी होना चाहिये (कठे०—  
दे० सं०, १२३); उठ, भाई, तुल सका न तुम से राम खड़ा  
है, तेरा पलड़ा बड़ा भूमि पर आज पड़ा है (साकेत—गुप्त,  
४४३); जिस तरह लखनऊ वालों ने दिल्ली की जवान से  
अपनी जवान की शान बढ़ाने के लिये घरकी फारसी के  
बड़े बड़े शब्द भर कर अपनी उर्दू का पल्ला भारी कर  
लिया था वही बात हिन्दी से उर्दू को जुदा करने में काम  
में लाई गई (पट्टम पराग—पट्टम० शर्मा, ३२९); अन्त में थड़ा  
का पल्ला भारी रहा (प्रेमा०—प्रेमचंद, ३७५)

(समा० मुहा०—पलड़ा ऊंचा होना,—भुकना)

### पलीता देना

भाग लगाना। प्रयोग—कहै कबीर मूढ़ दिया पलीता,  
सो फल बिरलै देखी (कबीर ग्रंथा०—कबीर, ९१)

### पलेथन लगाना

ऊपर से खर्च होना। प्रयोग—सब कहो तुमने इसमें अपनी  
गिरह का पलेथन क्या लगाया है? (परीक्षा०—प्री० टांस,  
२२); सेली-तमोलो ने भी देखा कि यहाँ मिलता-जुलता  
कुछ नहीं दीखता, उन्टे और पलेथन लगने का भय है  
(प्रेमा०—प्रेमचंद, २०८)

### पल्ला भाड़ कर अलग होना,—भाड़ देना

एकदम अलग हो जाना। प्रयोग—उस निगोड़ी का क्या,  
वह तो पल्ला भाड़कर अलग हो जायगी (मा—कौशिक,  
२३६); वह अगर ताल्लुक छोड़ेंगे भी तो आहिस्ता आहिस्ता  
इस तरह एकदम से पल्ला नहीं भाड़ देंगे (मा—कौशिक,  
२८२)

### पल्ला भाड़ देना

दे० पल्ला भाड़ कर अलग होना

### पल्ला पकड़ना

साध पकड़ना। प्रयोग—मामह, उद्भट प्रादि कुछ प्राचीन  
आचार्यों ने वैनिश्र का पल्ला पकड़ अलंकारों को प्रधानता  
दी (चिंता० (१)—शुक्ल, १८२); जब से हमने उसे छोड़ा



घोर मुल को प्राप्त करने की चेष्टा की तभी से दुख ने हमारा पल्ला पकड़ा (मिस्त्रा०—कीशिक, २२७); सिवा तुम्हारे और मैं किसका पल्ला पकड़ूँ ? (मा० मा० (१)—कि० गो०, २७)

### पल्ला पार होना

काम बन जाना । प्रयोग—अगर एक महीने भी यह धौंसत रहे तो पल्ला पार है (गवन—प्रेमचंद, ९४)

### पल्ला बड़ा होना

दे० पलड़ा भारी होना

### पल्ला भारी होना

दे० पलड़ा भारी होना

### पल्ला हलका होना

गुस्स कम होना । प्रयोग—एक उड़क शब्द ने धनिया का पल्ला हलका कर दिया था (गोदान—प्रेमचंद, ४५)

### पल्ले पड़ना

(१) विवाह होना । प्रयोग—घर तो धल्लाह से यही हुआ है कि मेरे जीते जी यह किसी भले घादमी के पल्ले पड़ जाय (कर्म०—प्रेमचंद, ३८)

(२) जिम्मे धाना, प्राप्त होना । प्रयोग—बधादवा घोर इनाम के रूप में भाई साहब के पल्ले लगे (अपनी सबर—उग्र, ३१); लड़नेवालों के कुछ भी नहीं पड़ता पल्ले (बुद्ध०—वत्सन, ४५)

(३) समझ में धाना ।

### पल्ले बांधना

जिम्मे किया जाना । प्रयोग—विधाता ने मेरी अभिलाषाओं और मसूखों का सर्वनाश करने के लिये तुम्हें मेरे पल्ले बांध दिया है ? (रंग० (२)—प्रेमचंद, १४६)

### पवन का भूसा होना

तुच्छ होना, न टिक पाना । प्रयोग—तेरी कहो पवन को भुल गयी, बहो जात ज्यों आधी (सु० सा०—सूर, ४१५८)

### पशु होना

मूल होना, पशु-समान होना, निर्देय होना । प्रयोग—इन सबों का केवल राजवंश में जन्म तो है पर वास्तव में वे पशु हैं (मा० प्र० (१)—भारतेन्दु, १)

### पसली ढीली करना या होना

सूब मारना या मार खाना । प्रयोग—तो भला हो नीब ढीला किस तरह की गई पसली अगर ढीली नहीं (बोल०—हरिऔध, २२७)

### पसली फड़कना

(१) मनमें उल्हास होना, जोश आना । प्रयोग—तो रहे हम बहुत फड़के क्या जो न पसली फड़क उठी मेरी (बोल०—हरिऔध, २२६)

(२) पबडाना ।

### पसीजना

दवालु होना, कठोरता में कमी होनी । प्रयोग—गोरा बादिल दुबो पसीजे रोबत रहिर सोय पां भीजे (पद०—जायसी, ५११४); 'देव' जु देवी सों दानव माया, बताइ दई निजटी सु पसीजी (शब्द०—देव, ५९); कुछ तू भी पसीज सोच में डूब (इशा०—इशा०, १०६); गरमी के दिन ठहरे, बड़ा पर्व ठहरा, नहाने को कौन न आवेगा ? और कहाँ तक न पसीजेगा (प्र० पा०—प्र० ना० मि०, १०४); वह निठुर बनेगी कैसे, जो रहो सर्वद पसीजी (वैदेही०—हरिऔध, ७४); किसानों ने बहुतेरे जप तप किये × × लेकिन इन्द्रदेव किसी तरह न पसीजे (मान० (८)—प्रेमचंद, ५)

### पसीना छूटना

अत्यंत भयभीत होना । प्रयोग—देखत कपि बाहुदंड तन प्रस्वेद छूटे (सु० सा०—सूर, ५४१); दून्हाजू के पसीना छूट गया । निकल भागने को जी चाहा, परन्तु वहाँ बाल बराबर भी सांस न थी (झासी०—पू० वर्मा, ३८१)

(समा० मुहा०—पसीना आना)

### पसीना बहाना

अधिक परिश्रम करना । प्रयोग—और क्या करेगा ? ×× बिछा दूँ साब ! .....और यह पसीना किसलिए बहाया है ? (मोर०—जग० माधुर, १०३); किस ऊसर भूमि में इन्होंने कितना पसीना बहा कर हल खजाया (गुलेरी प्रश्ना० (१)—गुलेरी, २७७-२७८)



### पसीने की कमाई,—रोटी

परिश्रम से कमाया हुआ धन । प्रयोग—दूधरे निःश्वस्य में तुम्हारा सहयोग और संरक्षण और आवश्यकता होने पर तुम्हारे हाथों का परिश्रम और तुम्हारे पसीने की रोटी (शेखर (२)—अज्ञेय, ७७); अब भी अपने पसीने की कमाई खाते हैं, तब भी अपने पसीने की कमाई खावेंगे (गोदान—प्रेमचंद, १३२)

### पसीने की जगह खून बहाना

जो थोड़ा उपकार करे उसके बदले में बहुत उपकार करना । प्रयोग—और वह तुम्हारे साथी क्या हो गये जो तुम्हें आठों पहर घेरे रहते थे और तुम्हारे पसीने की जगह खून बहाने को तैयार रहते थे (मान० (१)—प्रेमचंद, ४०); है पसीना जाति का गिरता जहां वे वहां अपना गिराते हैं लड़ (चुमते—हरिऔध, १३२)

### पसीने की रोटी

#### दे० पसीने की कमाई

#### पसीने की वस्तु

बड़ी मेहनत वाला काम । प्रयोग—घोर खेतों पसीने की वस्तु है (मान० (१)—प्रेमचंद, १६)

#### पसीने-पसीने होना

भय, घबराहट या शारीरिक परिश्रम के कारण पसीना हो आना । प्रयोग—कला पसीने-पसीने हो गई (मृग०—पृ० ० रमा, ३६९); बुआ पसीने-पसीने हो गई (चोटों—निराला, ७)

#### पस्त होना

बहुत थक जाना, क्लान्त होना, हार जाना । प्रयोग—कुल्सी पस्त, जैसे खता हो गये (कुल्सी—निराला, ६४)

#### पहराघनी देना

कपड़ों की भेंट देना । प्रयोग—कवि विचारि पहिरावनि दीन्ही (राम० (बाल)—तुलसी, ३६०)

#### पहलो सीढ़ी

किसी कार्य का पहला कदम । प्रयोग—इसलिये स्त्रियों का चरित्रवती होना कुलीनता की पहली सीढ़ी है (मठ नि०—बा० मठ, १९)

#### पहलू बचाना

(१) बचाना । प्रयोग—मारवाड़ी बोलों में “पगुलो चौलो छै” ईश्वर का नाम लेकर रुड़ि के बन्दों से पहलू बचाते हुए, धर्मप्राण मूर्तियों का बदल मतलब रखते हुए प्रस्ताव पेश कर दीजिए (पद्म० के पत्र—पट्टम० शर्मा, २)

(२) आँख बचाना ।

(३) जी बचाना ।

#### पहाड़ ऐसा दिन

बहुत लंबा दिन जो किसी प्रकार न बीते । प्रयोग—पहाड़ जैसे दिन बीतते ही न थे (ककाल—प्रसाद, ५६)

#### पहाड़ खड़ा करना

विस्तृत रूप उपस्थित करना । प्रयोग—देखर बाहवा या × × जो वस्तुयां उपस्थित करे उन्हें पुष्ट करने के लिए इतिहास, मनोवैज्ञानिक और जीव-विज्ञान विशेष कर मानव शास्त्र से प्रमाणों का ऐसा पहाड़ खड़ा कर दे कि उसकी एक-एक वस्तु अकाट्य हो जाय (शेखर (२)—अज्ञेय, १४५)

#### पहाड़ खड़ा होना

बड़ी रुकावट होनी । प्रयोग—भाग्य बड़ने में हमारे रास्ते में एक बड़ा भारी पहाड़ खड़ा हुआ है (मठ नि०—बा० मठ, १३७)

#### पहाड़ सा

(१) दीर्घकालीन । प्रयोग—बड़े तपत पहाड़ से दिना (नंद० ग्रंथा०—नंद०, १२३); ऐसे पहाड़ से हक भरे दिन बिताने के बाद उसका प्रियतम आया (सुहाग०—अ० ना०, १२२); गरमी का बड़ा दिन पहाड़ की तरह टलता न था (पट्टम पराग—पट्टम० शर्मा, २७०)

(२) विशाल, बहुत बड़ा । प्रयोग—जो दुख कठिन न सहा पहाड़ । सो अंगवा मानुस सिर भारू (पट्ट०—जायसी, ४७८); उन दुखयारियों से पूछो जिनकी अभी पहाड़ सी उमर पड़ी है (प्रेमा०—प्रेमचंद, २६१); करके पहाड़ का पाप मोन रह जाऊ ? (साकेत—गुप्त, २३१)

#### पहाड़ से टक्कर लेना

जबरदस्त से मुकाबिला करना । प्रयोग—तुलसी-मुपाकर



के पड़नेवालों को पहले तुलसी के दोहे समझने के लिये मिर खपाना पड़ेगा और पीछे सुधाकर जी महाराज की कुण्डलियों का अर्थ लगाने में पहाड़ से टकराना पड़ेगा (गुं नि०—ठा० मु० गु०, ५३३)

### पहाड़ हो जाना

(१) बहुत लबा हो जाना। प्रयोग—एक पल है पहाड़ हो जाता देखने के लिये न कबो डलके (धोल०—हरिऔध, ५९) (÷)

(२) दुःखदायी होना, भारी मालूम पड़ना। प्रयोग—अब एह जीवन बाढ़ि जो मरना। भएउ पहार जनम दुख भरना (पद०—जायसी, ४९५); एकघंटा भी किताब लेकर बैठना पहाड़ या (मान० (१)—प्रेमचंद, ७८); अरे सबेरे क्या, रात में कोई गाड़ी आती हो तो रात हो को चले—अब तो मुझे एक-एक क्षण पहाड़ हो रहा है (भिला०—कौशिक, ६६); देखिए प्रयोग (१) में (÷) भी

### पहुंच होना

पहुंचने की क्षमता होनी, प्रभाव होना। प्रयोग—बी० ए० तक अंग्रेजी शिक्षा प्राप्त करने के कारण उसकी सरकार में अच्छी पहुंच थी (मूले०—भाग० दर्मा, ३३१); स्वराज हो जाने पर भी श्री द्वारकादास की पहुंच गो भारत के राष्ट्रपति और प्रधान मंत्री तक नहीं रही फिर भी उनका दबाव कम नहीं हुआ (बुट०—अ० ना०, ११)

### पहुंचा पेलना

लेने के लिए उठावले होना, हाथ मारना। प्रयोग—मुनो महाराज, हम बांभन नहीं हैं, जो कुरमी-काछी, तेली-तमोली, सबकी पूरियों में पहुंचा पेल दें (लिली—निराला, ७३)

### पहुंचा हुआ होना

(१) ईश्वर के निकट पहुंचा हुआ, सिद्ध; जिसे सब कुछ मालूम हो। प्रयोग—उड़िया स्वामी एक बहुत पहुंचे हुए सहृदय विद्वान् साधु हैं (पट्टम० के पत्र—पट्टम० शर्मा, २४१)

(२) सुराट।

### पहुनाई डानना

जातिप्य करना। प्रयोग—जिन मंदिर लें गई रुक्मिणी,

पहुनाई बिधि ठानी (सू० सा०—सूर, ४९०९)

(समा० मुहा०—पहुनाई करना)

### पांच का

सब का, जन-साधारण का। प्रयोग—बीर सो रिस मारै भन गया। सोइ विगार पांच भल कहा (पद०—जायसी, ३८१); जो पांचहि मत लाग गीका (राम० अ)—तुलसी, ३७६); सोह को सोचु तकोनु न पांच को डोलत साहु भए करि चोरी (केशव ग्रं०—केशव, ७)

### पांच की सात लगाना

घोड़े को बहुत बढ़ाकर शिक्कायत करना। प्रयोग—पांच की सात लगायो, झूठी-झूठी के बनायो, सांची जो तनक होइ तो लो सब सहिये (सू० सा०—सूर, २३५२)

### पांच को सात सुनाना

जो थोड़ा कुछ कहें उससे अधिक कहना। प्रयोग—हम पांच की सात सुनाइहू जू हहा लैहो कहा लिसियाइये में (ठाकुर०—ठाकुर, १५)

### पांच पलक में

तुरंत। प्रयोग—परम कृपाल, रामचंद भुवपाल, विभीषन दिगपाल की जो पांचई पलक में (क० र०—सेनापति, ८५)

### पांच सात न आना

कोई बुद्धि काम न आनी। प्रयोग—चकित भए नारि नर ठाड़ पांच न आवै सात (सू० सा०—सूर, ३५७५)

### पांच सात भूल जाना

चालाकी भूल जानी। प्रयोग—सूर श्याम के सघुर बचन मुनि भूल्यो मोहि पांच ओ सात (सू० सा०—सूर, २७२६)

### पांचवें सवारों में होना

औरी के साथ अपना नाम भी लगा देना। प्रयोग—जाति के पांचवें सवारों में और उनमें जिन्हें कहें बरतर चलती चोट है समा रही कलेजे पर (चुमते०—हरिऔध, ७३); ठोक पीट कर लोगों ने मुझे लेखकराज ही बना दिया और मैं स्वयं भी अपने को पांचवें सवारों में गिनने लग गया (मेरे०—गुलाब, २५)



पाँचों उंगली भी में होना

४४१

पान देना

**पाँचों उंगली भी में होना,—पाँचों धी में होना**

सब तरह का लाभ या आराम होना, खूब बन जाना । प्रयोग—मेरी तो पाँचों धी में है अच्छी मेरी बन घाई है (नूर०—मक्त, १०७); देश के सेवक बन कर तुम अपनी उंगलियाँ भी में रखना चाहते हो (रंग० (१)—प्रेमचंद, ८२) पर समझ लेवें किसी की भी सदा रह सकी धी में न पाँचों उंगलियाँ (चुमते०—हरिऔध, १५१); वहाँ के लेखकों, प्रकाशकों और पुस्तक विक्रेताओं की हमेशा पाँचों धी में रहती हैं (सा० सी०—महा० दि०, ६२)

(समा० मुहा०—पाँचों उंगली तर होना)

**पाँचों धी में होना**

दे० पाँचों उंगली धी में होना

पाँच : देखिए 'पैर' के मुहावरें

**पाँचड़ा पड़ना**

समारोह में चलने के लिए कपड़ा बिछाया जाना । प्रयोग—परत पाँचड़े बसन अनूपा (राम० (बाल)—तुलसी, ३३७)

**पाँचड़े बिछाना**

बहुत आदर करना—खातिर करनी । प्रयोग—नटों ने बहुत आवभगत की । अर्धदिन और पिल्ली ने पाँचड़े से बिछा दिये (मृग०—वृ० वर्मा, १२५)

**पाण्दार होना**

महत्वपूर्ण होना । प्रयोग—अगर कारण कोई उन्हें पाण्दार मालूम हुआ तो उसके पाए उखाड़ कर तब दम लेती हैं (कुल्लो०—निराला, १३४)

**पागल होना**

किसी धुन में मस्त होना । प्रयोग—सोने के लिए सब पागल हैं (कामना—प्रसाद, ५९)

**पाटी पढ़ना या पढ़ाना**

दे० पट्टी पढ़ाना

**पाटी पारना**

दे० पट्टिया पारना

**पाठ पढ़ाना**

नसोहत पाना । प्रयोग—बहुत है जेहि ते उवरै कहि 'किसव' काहे न पाठ पढ़ाई (केशव ग्रंथ० (२)—केशव, ३५६); श्री लगा यह पाठ हम पढ़ते रहे कट गये हैं बाल बढ़ने के लिये (चुमते०—हरिऔध, ९)

(समा० मुहा०—पाठ सीखना)

**पाठ पढ़ाना**

दे० पट्टी पढ़ाना

**पाणि-ग्रहण करना या होना**

विवाह करना या होना । प्रयोग—पाणिग्रहण जब कीन्ह महेशा (राम० (बाल)—तुलसी, ११४); इसी समय बड़ी धूमधाम से इनका पाणिग्रहण हो गया (पद्म पराग—पद्म० शर्मा, ५५)

**पात-पात**

हर जगह । प्रयोग—पात-पात बूँदावन बूँदों कीज गली सब हेरी (सू० सा०—सूर, ४१८६); बन-बन पात-पात करि खोजत प्यारी प्यारी रट नाचे (मा० ग्रं० (२)—भारतेन्दु, ५९७)

**पाताल तक जाना**

बहुत नीचे चले जाना । प्रयोग—जन का महीना पा, कुओं का पानी पाताल तक चला गया था (प्रेमा०—प्रेमचंद, १९०)

**पाद-पीठ बनना**

रोड़े जाना । प्रयोग—वीर वे ही नहीं हैं जिनके सर पर सफलता का मुकुट चढ़ता है, वे भी वीर होते हैं जो भगड़ते-भगड़ते मर और प्रतिकूल विधि के पादपीठ बन जाते हैं (गुलेरी ग्रं० (१)—गुलेरी, २७८)

**पान की तरह फेंके जाना**

बहुत सेवा-यत्न होना । प्रयोग—अम्मा को पान की तरह फेंकती रहती थी (गोदान—प्रेमचंद, २७)

**पान देना**

किसी काम को करने का दायित्व देना । प्रयोग—पद्मभूत साहिब सिंगार मनोहर, अमुर कंस दे पान पठाई (सू० सा०—सूर, ६६८)



### पान-पत्ता

(१) सामान्य खातिर । प्रयोग—पान पत्ता के लिए बीर-महर बाबू तैयार हैं (परती०—रेणु, ३२२)

(२) तुच्छ पूजा या भेंट ।

### पान पत्ते तक सोमित होना

सामान्य मित्रता या लेन-देन का नाता होना । प्रयोग—स्त्रियों में बड़ा स्नेह होता है । पुरुषों की भांति उनकी मित्रता केवल पान पत्ते तक ही समाप्त नहीं हो जाती (गवर्न—प्रेमचंद, १४१)

### पान-पानी बंद होना

बात से बाहर किया जाना; खान-पान का व्यवहार बंद होना । प्रयोग—इनके यहाँ का पान-पानी गांव तथा स्वेंड के चारों ओर बात-की-बात में बंद हो गया (कुल्ली०—निराला, ३७)

### पान-फूल के आधार पर रहना

बहुत सुकुमार होना । प्रयोग—अति मुरूप औ घति सुकुमारा । पान फूल के रहहि अधारा (पद०—जायसी, २१५)

### पान-फूल लेकर पूजना

बड़ा घादर करना । प्रयोग—खूब समझ लो कि वहाँ तुम पान फूल से पूजे न जाओगे (कर्म०—प्रेमचंद, २९४)

### पान फूल समझना

बहुत घादर सम्मान समझना । प्रयोग—उन लोगों के कटु वाक्यों को फूल पान समझ लिया, मुन्नी को उपदेश देने लगी (प्रेमा०—प्रेमचंद, २९-३०)

### पान फेरना

पान ऊपर-नीचे करना ताकि सड़े नहीं । प्रयोग—सूखत जानि सिबाजू के तेज ते पान से फेरत धीरंग सूबा (मृषण ग्रंथा०—मृषण, २१९)

### पानी उतरना

(१) इच्छित जानी । अपमानित होना । प्रयोग—इतने आदमियों के सामने उसका पानी उतर गया (मान० (१)—प्रेमचंद, २१५); रानी साहबा का पानी उतर गया (चीटी०—निराला, ७)

(२) बहुत खरा हो जाने पर लोहे को गरम करके उसका खरापन मिटाना ।

(३) शरीर के किसी अंग विशेष में जल भर जाना ।

### पानी उतरवाना

बेइच्छित होना । प्रयोग—अगर अपनी कुशल चाहते हो तो इन्हीं पैरों जहाँ से आये हो वहाँ लौट जाओ, उसके सामने जाकर क्यों अपना पानी उतरवाओगे (गवर्न—प्रेमचंद, २७५)

### पानी उतारना

अपमानित करना-इच्छित उतारनी । प्रयोग—उसने कुछ आने पैसों के लिए एक प्रतिष्ठित आदमी का पानी उतार लिया (मान० (८)—प्रेमचंद, १७); उस आदमी का पानी उतारा गया—यह बहुत बुरा हुआ (झांसी०—पुं० वर्मा, ७५); लोग पानी गंवा गंवा अपना क्यों किसी का उतार लें पानी (मर्म०—हरिऔध, ६६)

### पानी कर देना

किसी के चित्त को ठंडा कर देना, गुस्सा उतार देना, नरम बना देना । प्रयोग—वे आँखें बन्द हृदय को भी पानी कर देती हैं (विप०—प्रेमी, ८८)

### पानी का बुलबुला होना

झग-झंगुर वस्तु होती । प्रयोग—यह तन जन का बुद-बुदा, बिनसत नाही धार (कबीर ग्रंथा०—कबीर, ७३); उनकी लड़ाई पानी के बुलबुले थे, जो इधर बनते हैं उधर टूट जाते हैं (सु० सु०—सुदर्शन, १४७); नाव क्यों भारत भू को भूले ? अहह ! किसलिये उसके सुख बनते हैं बारि-बबूले ? (मर्म०—हरिऔध, २)

(समा० मुहा०—पानी का बताराशा होना)

### पानी की चुपरी होना

तत्वहीन या महत्वहीन होना । प्रयोग—तो लगि सब पानी की चुपरी, जो लगि अस्थित दोहू (सु० सा०—सूर, ४१५७)

### पानी की तरह बहाना

अंधाधुंध खच करना, उड़ाना, लुटाना । प्रयोग—फिर क्या था धन पानी की भांति बहने लगा (राधा० ग्रं०—राधा० दास, ३६३); उपचारों में सदा निरत थे, सब कुछ



किया कराया तुझ पर खोलावर धन करके पानी तुल्य बहाया (नूर०—भक्त, १२५); मगर मैंने सुना है कि वह काइयों के पहा जाता है और पानी की तरह से रुपया बहाता है (ये कोठे०—अ० ना०, १५३)

### पानी की तरह साफ होना

एकदम स्पष्ट होना । प्रयोग—बात पानी की तरह साफ हो गई (कुञ्जी०—निराला, ५४)

### पानी के मोल

बहुत सस्ता । प्रयोग—पानी के दाम मेरा मुड़ चला गया (तिल्ली—प्रसाद, १८५)

(समा० मुहा०—पानी के भाव)

### पानी को भी न पूछना

(१) कोई महत्व न देना—तनिक भी आदर-सत्कार न करना । प्रयोग—देखो तुम्हारे प्यारे लाल की क्या दशा हो रही है । कोई उसे पानी को भी नहीं पूछता (मान० (१)—प्रेमचंद, १४१)

(२) सेवा न करना । प्रयोग—और कोई पानी तलक को पूछने वाला नहीं—बड़े सूरमा का काम है बुढ़ापा काटना (बुँद०—अ० ना०, ११९)

### पानी खोना

इच्छत कम करवाना । प्रयोग—सम्मा ईश्वर के लिये चुप रहो । क्यों अपना पानी आप खो रही हो ? (मान० (१)—प्रेमचंद, १७२); क्यों बनता है मनुज गँवा कर पानी चिकना घड़ा (मर्म०—हरिऔध, २५); अपनी में पानी मत खोमो, चुपके से अब चलो निकल (नूर०—भक्त, ५)

### पानी बढ़ना

(१) सौन्दर्य घाना । प्रयोग—है मेहरनिसा सुन्दरी पर दिन दिन पानी बढ़ता जाता (नूर०—भक्त, ४४)

(२) वस्तिक्रिया या एनिमा के जरिये पेट में पानी बढ़ाना ।

(३) नदी में बाढ़ आनी ।

### पानी खीरना

साधारण काम होना । प्रयोग—अगर वहाँ भाषण करना, प्रश्न करना, बहस करना काम है, तो आप हमारा जितना

बड़ाई करना चाहता है, करे; पर मैं उसे काम नहीं समझता, यह तो पानी खीरना है (रंग० (२)—प्रेमचंद, १४१)

### पानी छुना

आवदस्त लेना । प्रयोग—चुन्नी इतने में दीसा फिर कर पोखर में पानी छुने गया (वल०—नागा०, ८२)

### पानी दिखाना

जानवरों के सामने पानी रखना । प्रयोग—किसी ने चारे का एक तुल भी न डाला । हाँ, एकबार पानी दिखा दिया जाता था (मान० (२)—प्रेमचंद, १५९)

### पानी देखना

शक्ति या इच्छत का प्रमाण पाना । प्रयोग—ले आओ अपनी डाल तमवार । मैं अपनी लाता हूँ । फिर देख लो भाँसी का पानी (झाँसी०—वृ० वर्मा, १५३); महाराज कंस देख आज ब्रज का पानी देख (देवकी०—रा० रा०, १४७)

### पानी देना

(१) तर्पण करना । प्रयोग—अगर कभी मुधि आये तो चुल्लूभर पानी देना (कर्म०—प्रेमचंद, १८३)

(२) छुरी इत्यादि पर ताव देना ।

(३) पानी से खेत भरना ।

### पानी देने वाला

वंशधर । प्रयोग—संबत मध्य नास तब होऊ । जलदाता न रहिहि कुल कोऊ (राम० (बाल)—तुलसी, १८३); कोई उसे एक चिल्लू पानी देने वाला भी न बचा (मान० (१)—प्रेमचंद, ८१); हमारे पीछे हमें कोई पानी देने वाला भी तो होना चाहिए (मा—कौशिक, २०)

(समा० मुहा०—पानी-देवा नाम-लेधा)

### पानी न पचना

बहुत बेचैनी होनी । प्रयोग—बंदिताइन को पानी नहीं पचता (भट्ट नि०—बा० भट्ट, १३६)

### पानी न मांगना

तुरंत मर जाना । प्रयोग—और गंडासिंह को जानते हो । उसका मारा पानी भी नहीं मांगता (गोदान—प्रेमचंद, ११८)



### पानी पड़ जाना,—फिर जाना

(१) नष्ट हो जाना। प्रयोग—सैकड़ों रुपए पर पानी फिर गया (मान० (१)—प्रेमचंद, ६२); कितनों की चिरबांझि घाणा पर पानी फिर जाता है (सौ०—इ० स०, ४); धीबंद अपनी सारी कल्पनाओं पर पानी फिरते देख कर किशोरी की ही बापलूमी करने लगा (कंकाल—प्रसाद, १८३)

(२) हुआ काम बिगड़ जाना—व्यर्थ जाना। प्रयोग—जाति सेवा ऊसर की खेती है वहाँ बड़े से बड़ा ऊहाहार जो मिल सकता है वह है गौरव और पसा; पर वह भी स्वाधी नहीं, इतना अस्थिर कि क्षण में जीवन भर की कमाई पर पानी फिर सकता है (मान० (१)—प्रेमचंद, ४६); ऐक्टरों ने यदि दृष्ट्या पार्टन किया तो आपके सारे परिधम पर पानी पड़ जायगा (मान० (४)—प्रेमचंद, ८३); जब तुम देखोगे कि बिदेह जलक के सारे प्रयासों पर पानी फिर जायगा (देशाली० (१)—चतुर०, ३४५)

### पानी पर जाना

जोश जाना। प्रयोग—वे लोग सरीब हो, पर स्वाभिमानी होते हैं। पानी पर जा जायें तो खून खराबा हो जावे (कला०—उग्र, १२१)

### पानी पर चढ़ाना

(१) जोश दिलाना, बहकाना। प्रयोग—इस प्रकार सब मित्रों ने मिलकर चन्मल को ऐसा पानी पर चढ़ाया कि उन्होंने यह ठान ली कि चाहे जो कुछ हो, परन्तु धब मुनीम जी के सामन में नहीं रहेंगे (चित्र०—कौशिक, १४)

### पानी पर दीवार उठाना

असंभव काम करना। प्रयोग—मन हठ पर न मुनद मिनावा बहुत बारि पर भीति उठावा (राम० (बाल)—सुलसी, ८९)

### पानी पान को पूछना

सामान्य लातिरदारी करना। प्रयोग—लगभग तीसरे पहर तक वह अनेकी चिचकारी में बंटी रही, कोई पानी-पान की बातें पूछने तक न आया (सुहाग०—इ० ना०, २२७)

### पानी पाना

तर्पण पाना। प्रयोग—तुम्हें जित् पात्रि न पावें दसरथ जावे जायि (पद०—आयसी, ३१४)

### पानी-पानी करना

लजित करना। प्रयोग—आज की रूप पीवन खंडिता खेलमा के × × व्यंग बाण अनेक महाजनों को मन ही मन पानी-पानी कर देते थे (सुहाग०—इ० ना०, ६१); सरकार को पानी-पानी कर देती है (मैला०—रेणु, १७०)

### पानी होना

(१) लज्जा से कट जाना। प्रयोग—हमें निश्चय है कि घाप पानीदार होंगे तो इस बात के उठते ही पानी-पानी हो जायेंगे (प्र० पी०—इ० ना० मि०, ४५); इतने विद्याल हृदय को देखकर कमला तो लज्जा के कारण पानी-पानी हो गई (वीनै०—१० रा, १६३); तब फिर कट्टी सत्य को पानी-पानी हुआ छोड़कर चली गई (पारल—जैनेन्द्र, १४०)  
(२) डीमा या निबंल पड़ना। प्रयोग—पुरुष का निश्चय स्त्री के सामने पानी-पानी हो गया (सु० सु०—सुदर्शन, १७०)

### पानी पीकर घर पूछना,—जाति पूछना

काम कर लेने के बाद उसके बारे में खोज-पूछ करनी। प्रयोग—अपनाक्ते सोच बिचारि तब जलपान के पूछनी जात नहीं (मि० ग्र० (१)—भारतैन्दु, ४२९); जो कहिये सो कोजिये, पहिले करि निर्धार, पानी पी घर पूछवै, नाहिन मलो बिचार (दु० स०—दुन्द, ९७)

### पानी पीकर जाति पूछना

### दे० पानी पीकर घर पूछना

### पानी पी-पी कर कोसना

बहुत बुरी तरह कोसना। प्रयोग—दिन भर दोह-धूप कर शाम को घर घाते तो स्त्री की घाई हाथों लेते—और कोसो लड़के को, पानी पी-पी कर कोसो (मान० (१)—प्रेमचंद, २१२)

### पानी पाना

भ्रमण इत्यादि के कारण प्रभावित होना। प्रयोग—मैं तो राजा के साथ बिनापत का पानी पी आई थी (गोली—चतुर०, १६७)

### पानी फिर जाना

### दे० पानी पड़ जाना

### पानी फेरना

नष्ट करना—मटिवामेट कर देना। प्रयोग—मैंने सन्



१८८८ ई० में इण्डियन नेशनल कांग्रेस में मूखालिफ्त करके हिन्दू मुसलमानों को दो आँखों से देखने का खयाल पैदा किया और अपने ऊँही सच्चे और पुराने खयालत पर पानी फेरा जिनका दावेदार कांग्रेस में पहले मैं खुद था (गु० नि०—बा० मु० गु०, २५३); रोती छोड़ी प्यारी रानी उम्मीदों पर फेरा पानी (गु० नि०—बा० मु० गु०, ७१३); मेरी इतनी होशियारी पर पानी फेर गई (राधा० प्रेमा०—राधा० दास, ६२०); तुमने तो सारी उम्मीद पर पानी फेर दिया (जहाज०—इ० जोशी, ९५); मैं तो इतनी विनम्रों से उगे यहाँ साईं और तुम सारे किए-धरे पर पानी फेर देते हो (रंग० (१)—प्रेमचंद, ३५३)

### पानी बदलना

स्वास्थ्य-सुधार के लिये स्थान-परिवर्तन करना । प्रयोग—आप जब चाहें, पानी बदल कर आएँ (कुल्लू०—निराला, ७३)

### पानी बिलमना

असर होना; किसी को बहुत देर तक कोई बात समझाने पर असर होना । प्रयोग—पिल्ली ने सोचा पानी बिलमा (मृग०—पु० वमा, २३५)

### पानी भरना

(१) स्पर्धा या तुलना में हीन होना । प्रयोग—यहाँ तो भगवान की दया से नित्य ऐसी ऐसी सूरतें देखने में आती हैं कि मिस साहुब उनके सामने पानी भरें (रंग० (२)—प्रेमचंद, ८५)

(२) पूरी तरह अनुगत हो जाना । प्रयोग—उसकी यह आकांक्षा पूरी हुई तो फूली न समावगी और जो कहीं रानी की पदवी मिल गयी तो वह मेरा पानी भरेंगी (प्रेमा०—प्रेमचंद, ११७)

### पानी भरी खाल

प्रनित्य या लणभंगुर शरीर । प्रयोग—तुलसी तो भलो पै तुम्हारे ही किए कृपास, कौन न बिलंब, बलि, पानी भरी खाल है (कवि०—तुलसी, १४१)

### पानी मधना

व्यर्थ प्रयत्न करना । प्रयोग—नेह कथे सठ नीर मधे हठ

के कठघरे को नेम निवाहे (घन० कवि०—घना०, ११९)

### पानी में का नमक होना

सर्वथा मिल जाना । प्रयोग—भो मन मोहन रूप मिलि पानी में की छोन (विहारी रत्ना०—विहारी, १८)

### पानी में गिर जाना

नष्ट हो जाना, व्यर्थ जाना । प्रयोग—सारा मिहनत पानी में गिर गया (गबन—प्रेमचंद, ३१२); कहीं ये सपने भी तो पानी में नहीं गिर पड़े (निर्मला—प्रेमचंद, ३४)

### पानी में डाल देना

व्यर्थ खो देना । प्रयोग—साफ बेड़ सो पानी में डाल दिये (कर्म०—प्रेमचंद, ४१)

### पानी में बसकर मगर से बैर करना

जहाँ रहना हो वहाँ के सबल व्यक्ति से भगड़ा करना । प्रयोग—इस मैदान में उनका सामना करना पानी में मगर से लड़ना था (मान० (८)—प्रेमचंद, १७)

### पानी रखना

प्रतिष्ठा बचा लेनी । प्रयोग—रहिमन पानी राखिए, जिन पानी सब सून (रहीम कवि०—रहीम, २२); बलिये बाल मुबान राखिये अपने पानी (कुण्ड०—गिरधर दास, २९); दें न निज पानिय रंवा पानिय रखें पाँच रोपे पर न रोपे हाथ हम (बोल०—हरिऔध, १७४)

### पानी लगना

(१) जलवायु अस्वास्थ्यकर होनी । प्रयोग—जागइ अति पहार कर पानी (राम० (अ)—तुलसी, ४३१); बाबू का देश अच्छा नहीं है, वहाँ जो जाता है उसे पानी लग जाता है (राधा०—ग० स०, ५१); कहते हैं वहाँ पानी बहुत लगता है (प्रेमा०—प्रेमचंद, २३६)

(२) दाँत खराब होने के कारण पानी लगने से पीड़ा होनी । प्रयोग—लग सका और दाँत में न कभी हिल गये दाँत में लगा पानी (चौसे०—हरिऔध, ५९)

(३) असर होना । प्रयोग—मुझे मालूम हो गया कि सहर का पानी तुम्हें भी लगा (सेवा०—प्रेमचंद, ४५); जंगल की पेना को सहर का पानी लग गया, अब भी न बोले (सु० सु०—सुदर्शन, ११४)



- (४) वृष्टि होनी, झड़ी लगनी। प्रयोग—नावरि मोरी भोभरी हो आष परी मंभधार। निसि अधिपारी पानी लागत उलटो बहत बयार (भा० ग्रं० (२)—भारतेन्दु, ५९०)  
(५) पाना रुककर एकवित होना।

### पानी होना

- (१) चेहरे का कांतियुक्त होना। प्रयोग—पानिप अपार पनपानि उकति ओछी, जतन-जुगति ओन्ह कौन पे नपति है (घन० कवित्त—घना०, १४०)  
(२) कोव का एकदम शांत हो जाना। प्रयोग—मेने समभा या, वह अपनी बात पर अड़े रहेंगे, पर सब कायर निकले। एक ही धमकी में पानी हो गये (प्रेमा०—प्रेमचंद, ९९)  
(३) दयाई होना, नरम पड़ना। प्रयोग—हते रखवार आगि गुलतानी देखि अंकोर भए जस पानी (पद०—जायसी, ५३३); उनके शबों को देखकर नगर के पत्थर से पत्थर दिल भी पानी हो गए (यै कोठे०—अ० ना०, ५५); ये बरिष्क बड़े लुप्ते हैं भते, सुंदरी और नवयुवती स्त्रियों को देखते हो पानी हो जाते हैं, सोदा ठीक से हो जाता है (वेशाली० (२)—चतुर०, १६८)  
(४) ठंडा हो जाना।  
(५) मशीन आदि का बहुत आसानी से चलना।  
(६) शांत हो जाना।

### पानीदार होना

- (१) इच्छतदार होना। प्रयोग—हमें निश्चय है कि आप पानीदार होने लगे तो इस बात के उठते ही पानी-पानी हो जायेंगे (प्र० पी०—प्र० ना० मि०, ४५); मेने देख लिया है कि बुन्देलखंड पानीदार देश है (क्षासी०—पू० वर्मा, ७५)  
(२) धोखे होना। प्रयोग—लीछत ईछत बान बखान मो पैनी दसानि ले सान चढ़ावत प्रानन प्यारे, भरे प्रति पानिप, मायल पायल चोप चटावत (घन० कवित्त—घना०, ११४) (÷)  
(३) तेज, सानदार होना। प्रयोग—वह चमकता था, मगर पा कब लिये तनवार पानीदार (सो०—वचन, २५४); देखिए प्रयोग (२) में (÷) भी  
(४) मोती का आवदार होना।

### पाप कमाना

पाप कर्म करना। प्रयोग—कुटुंब कारणि पाप कमावे, तू जार्ण घर मेरा (कवीर ग्रंथा०—कवीर, १२०)

### पाप की गठरी

संचित पाप। प्रयोग—पर सबसे बड़ी बात तो पापों की गठरी उतारना है, फिर हरि की कृपा होते देर नहीं लगती (ब्रह्म०—दे० स०, २४३)

### पाप गलना

पाप दूर होना। प्रयोग—गल रहा है पाप मल है धुल रहा। क्यों भसा धो धो न हम तलवे पिये (चुभते०—हरिऔध, ६)

### पाप जगाना

पाप के भाव का उदय कराना। प्रयोग—बीलिनावन का जाना कुछ कर्मचारियों के मनमें पाप जगा गया (सुहाग०—अ० ना०, १३३)

### पाप जागना

(१) पाप कर्म के परिणाम स्वरूप प्राप्त कुफल। प्रयोग—जाना जाता सखि यह नहीं कौन सा पाप जागा (प्रिय०—हरिऔध, ९२)  
(२) पाप का भाव जाना।

### पाप मिटना

- (१) पाप दूर होना। प्रयोग—कह मुनि पाप मिटिहि किमि मेरे (राम० (बाल)—तुलसी, १५०)  
(२) अभ्रष्ट-परेशानों दूर होनी।  
(समा० मुहा०—पाप कटना)

### पापड़ बेलना

बहुत तरह के काम कर चुकना। प्रयोग—फिर कैसे हमारा काम शुरू हुआ, क्या पापड़ बेले, इसकी लंबी कहानी है (दूधगाछ—दे० स०, २५९); क्या नाकों में दम होते भी तू पापड़ बेलेगा? (सर्म०—हरिऔध, १४२)

### पापा मजबूत होना

स्थिति दृढ़ होनी। प्रयोग—सिकन्दर और सिकन्दर के मुल्लों, सरदारों ने सोचा, अब हुआ दिल्ली की सल्तनत का पापा मजबूत (मृग०—पू० वर्मा, ४०६)



### पाये का आदमी होना

निष्ठावान, स्थिर व्यक्ति । प्रयोग—मो पाये का आदमी है । इसके अंदर आग जितनी भी है, सच्ची है (बूँदो—अ० ना०, २९८)

### पार उतरना

भवसागर से पार होना । प्रयोग—बुल्ल पकड़े भेद की, उतरा चाहे पार (कबीर ग्रंथा०—कबीर, ३७)

### पार उतारना

(१) उद्धार करना, संसार से मुक्ति दिलाना । प्रयोग—सीता-राम मूर संगम बिनु कौन उतारें पार ? (सू० सा०—सूर, ५२२)

(२) ठिकाने लगाना ।

(३) पूरा करना ।

(समा० मुहा०—पार लंघाना)

### पार पड़ना

(१) सहन होना । प्रयोग—सेनापति स्याम हम धन है तिहारी, हमें मिली, बिन मिले, सीत पार न परत है (क० र०—सेनापति, ६९)

(२) पूरा होना ।

### पार पाना

(१) अंत तक पहुंचना, सीमा घांकना । प्रयोग—जा कहूँ अइस होहि कंडहारा । तुरत बेगि सो पावइ पारा (पद०—जायसी, ११८); हरि-गुन कथा अपार, पार नहि पाइये (सू० सा०—सूर, ३९२); रघुबीर चरित अपार बारिधि पार कबि कौने लह्यो (राम० बाल)—तुलसी, ३६८

(२) तुलना या मुकाबले में ठहर पाना । प्रयोग—शंकर ही का ता सुयोग्य पंडित उनसे पार पा सकता था (सा० सु०—बा० भट्ट, ११५); इनका संगठन इतना बलशाली है कि सीधे रास्ते इनसे पार पाना असम्भव है (विप०—प्रेमी, ३९); वह डाल डाल, मैं पात पात, वह मुझसे पार न पायेगी (नूर०—भक्त, ५३); लोक व्यवहार की दृष्टि से अनिष्ट से बचने के लिए इष्ट यही है कि हम दुष्टों का हाथ धामें और दुष्टों का मुंह—उनकी बंदना करके हम पार नहीं पा सकते (चिंता० (१)—शुक्ल, ६३)

(३) कोई काम कर सकना । प्रयोग—राम गति पार न पाये कोई (कबीर ग्रंथा०—कबीर, १९५); मोसो कहति स्याम तूम एके, यह मुनि के परमात । एक अंग की पार न पावत, चकित होइ भरमात (सू० सा०—सूर, २४६४); जी अपने प्रबुधन सब कहऊँ । बाढ़इ कथा पार नहि सहऊँ (राम० बाल)—तुलसी, १९)

### पार लगना

(१) काम ठीक से पूरा होना । प्रयोग—हमारी गांठ में तो कुछ नहीं है, पर गांववालों की कृपा से पार लग जायेंगे (मृग०—बूँद वर्मा, २०५)

(२) नदी आदि के दूसरे किनारे पहुंच पाना ।

### पारा गरम होना,—चढ़ना

क्रोध होना । प्रयोग—राधेलाल की पत्नी का पारा काफी चढ़ गया (भूले०—मग० वर्मा, १३५); लाले की बह का पारा और चढ़ा (बूँदो—अ० ना०, २२); जनाब रेजिडेन्ट साहब बहादुर का पारा जब गर्म होता था X X तब लालजी खवास ही का दम-बल था कि वह उस मुश्किल को आसान करे (गोली—चतुर०, १३६)

### पारा चढ़ना

दे० पारा गरम होना

### पारा चढ़ाना

नाराज करना । प्रयोग—उधर बड़ई सरदार ने ताई के पास जाकर उनका पारा चढ़ा दिया (बूँदो—अ० ना०, ९)

### पाराचार उमड़ना

बहुतायत होनी । प्रयोग—गीत-बाद्य के साथ प्रीत भोज हुए । उत्साह का पारावार उमड़ा (मेरे०—गुलाब०, १९८)

### पालसन का दिब्बा

लुशामद । प्रयोग—बस पहुंच गया पालसन का दिब्बा (पैतरे—अश्रक, ५३-५४)

### पाला पड़ना

(१) नष्ट हो जाना । प्रयोग—समझ पर पाला कैसे पड़ा (मर्म०—हरिऔध, २५); हरा भरा रहता मदिरालय, जग पर पड़ जाए पाला (मधु०—बच्चन, पद २५); कन्या उत्पन्न



होने के पश्चात् हमारे सुखमय जीवन पर पाला पड़ गया (चित्र०—कौशिक, १०८)

(२) व्यवहार या मुकाबले का मौका पड़ना। प्रयोग—आजु करो खलु काल हवाले। परेहु कठिन रावन के पाले (राम० लं०—तुलसी, ९६६); मन तो मनमोहन संग गो तन लाज मनोज के पाले पर्यो (जग०—पद्मकर, २१); आजु भोरहि भोर खरी निखरी गोरी साह गाड़े छैल के पाले परी (मा० ग्रं०—२)—भारतेन्दु, ३९७; इस वीरुष के पड़े चमर-पुर में भी लाले, किनु मर्यं, तू पड़ा आज राक्षस के पाले (साकेत—गुप्त, ४३९); अभी उन्हें किसी बाह्य से पाला नहीं पड़ा (गोदान—प्रेमचंद, १७४); आज पड़ा या पाला उनको बड़े घने रणधीरों से (नूर०—भक्त, १६)

(समा० मुहा०—पाला मारना)

#### पाला मारना

(१) बाजी जीतना, विजय होनी। प्रयोग—घाज तो लाला तुमने बड़ा भारी पाला मारा (कर्म०—प्रेमचंद, १५६); जो सदा मारते रहे पाला, वे पड़े टालटूल के पाले (चुमते०—हरिऔध, २०); समझ चल बसो, विचारों का दिवाला निकल गया × × सूझ को पाला मार गया (चुमते० (मु०)—हरिऔध, ४)

(समा० मुहा०—पाला जीतना)

#### पास न फटकना

समीप न जाना, कोई लगाव न रखना। प्रयोग—समाज में ऐसे-ऐसे कुसंस्कार और निन्दित रीतियाँ चल पड़ी हैं कि आत्मनिर्भरता पास तक नहीं फटकने पाती (सा० सु०—बो० भट्ट, ८०); यदि इतना न हो सके तो उसे पास न फटकने दो तो भी भविष्य के लिए हानि और कष्ट से बच जाओगे (प्र० पो०—प्र० ना० मि०, ६७); रोज ही क्रिकेट और हाकी मेंच होते। मैं पास नहीं फटकता (मान० (१)—प्रेमचंद, ७९); ××र क्षेत्र के बीच देखते हैं तो सुख समृद्धि और सम्पन्नता की दशा में दिन रात घेरें रहनेवाले × × विपत्ति और दुर्दिन में पास नहीं फटकते (चिंता० (१)—शुक्ल, १५५); बीमारी उनके पास फटकती न थी (सतमा०—राहुल, ७२); पास तब कैसे फटक पाती समझ

जब कि जी नासमझियों में ही सने (चुमते०—हरिऔध, १२९)

#### पासा पलटना

स्थिति पलट जानी। प्रयोग—बस पासा वहीं से पलट गया था (देवकी०—रा० रा०, २३); मैं घाब ही पासा पलट सकती हूँ। जो झूठा ऊपर उठ रहा है, उसे एक ही भटके में पृथ्वी चूमने के लिए बिघड़ कर सकती हूँ (स्कंद०—प्रसाद, ११५)

#### पासा सीधा पड़ना

भाग्य अनुकूल होना। प्रयोग—सखि-बचन मुनि कौसिला ललि मुठर पास डरनि (गीता० (वा)—तुलसी, २८)

(समा० मुहा०—पासा पड़ना)

#### पिंजड़े का पक्षी बनना

बंधन में डालना। प्रयोग—जब आप स्वतंत्रता को ऐसा अच्छा पदार्थ समझते हैं तो घाप लाला साहब को इच्छा-नुसार काम करने से रोककर क्यों पिंजड़े का पक्षी बनाया चाहते हैं? (परीक्षा०—श्री० दास, १२१)

#### पिंड छुड़ाना

अनचाहे व्यक्ति या स्थिति से छुटकारा पाने का प्रयत्न करना। प्रयोग—किसी दूसरे दिन आने का वचन देकर उसने पिंड छुड़ाया (गवन—प्रेमचंद, १६०)

#### पिंड छूटना

छुटकारा पाना या होना। प्रयोग—पिंड छूटा कभी न लालच से (लाम के समय लोभ कब न बड़ा (बोल०—हरिऔध, १०३)

#### पिंडा पारना

प्राप्त करना। प्रयोग—बालक-गण निज पितु को तबही पिंडा पारिहै (राधा० प्रश्ना०—राधा० दास, ६७३)

#### पिए हुए होना

शराब के नशे में होना। प्रयोग—वस्तुतः वह पिए हुई थी (वाण०—ह० प्र० द्वि०, २२); मालूम होता है, जहाँगोर उस दिन कुछ ज्यादा पिए हुए थे (पद्म पराग—पद्म० शर्मा, २१०)



**पिघल उठना, पिघल कर पानी हो जाना, पिघल जाना या पिघलाना**

दयाद्व' होना या कर देना, पूर्व क्रोध का कम होना । प्रयोग—जहां हमारे हृदय में प्रेमाग्नि धधकी वहीं हमारा प्रभु हम पर पिघल उठा (प्र० पं०—प्र० ना० मि०, १३६); मैं कुछ ऐसा चित्त का दुबल  $\times \times$  थोड़े ही हूँ जो मिर हिला कर खेद बरूँ, आहें भरुँ और प्रायों के समझाने बुझाने में साकर पिघल जाऊँ (मा० प्र० (१)—भारतेन्दु, ६१५); दुःख न होता तो पत्थर से भी अधिक कड़े कलेजे वाले को कौन पिघलाकर पानी कर सकता (भट्ट मि०—वा० भट्ट, २९); उसे क्रोध जलद आता था, पर जलद ही पिघल भी जाती थी (रंग० (१)—प्रेमचंद, ९३); जो बड़े बेपीर को पिघला सके  $\times \times$  हम सके ऐसा कहाँ प्रायुँ गिरा (चुमते०—हरिऔध, ७७); क्यों वह डाक्टर को देख कर पिघल गई ? (मैला०—रेणु, ४८)

**पिघल कर पानी होना**

दे० पिघल उठना

**पिघल जाना या पिघलना**

दे० पिघल उठना

**पिचकारी चलना या चलाना**

पिचकारी से कोई तरल पदार्थ छोड़ना । प्रयोग—रंग जिसमें सुधार का हो, चले ऐसी पिचकारी (मर्म०—हरिऔध, ७२)

(समा० मुहा०—पिचकारी छूटना या छोड़ना)

**पिछलग्गू होना**

अनुगत होना, पीछे चलनेवाला होना । प्रयोग—हो सब कबिन्हू केर पिछलग्ग (पद०—जायसी, १२३); हम राजनीति में किसी के पिछलग्गू नहीं रहे (मेरे०—गुलाब०, २०१)

**पिछला प्रहर**

रात्रि का अंतिम प्रहर । प्रयोग—पिछले पहर भूप नित जागा (राम० (अ)—सुलसी, ४०७)

**पिट जाना**

मर ला जाना, हार जाना । प्रयोग—लुट गये पिट उठे

गये पटके आंस के भी विलट गये कोये (चुमते०—हरिऔध, १०८)

**पिटा देना**

तंग करना, किसी काम को करने का वादा करके फिर न करना, किसी को आसरे में रखकर काम न करना । प्रयोग—बेतरह जब पिटा लिया उसको कौन मुंह से भला हसे बोले (चुमते०—हरिऔध, ६२)

**पिटा हुआ**

बार बार किया हुआ या कहा हुआ । प्रयोग—उसका अंतिम प्रमाण कोई जीवित सत्य नहीं है, केवल एक रेखा है, एक निर्जीव घोर पिटी हुई लीक (शेखर (२)—अज्ञेय, २०६); पुराना पिटा हुआ तस्किरा—इतना पिटा हुआ कि सिनेमा वाले भी उसके डायलाग बना लेते हैं (बूँद०—प्र० ना०, २१८)

**पिट्टू होना**

शुशामदो होना । प्रयोग—मैं भी देखूंगी, लाला धनीराम और उनके पिट्टू कितने पानी में हैं (कर्म०—प्रेमचंद, २५९); मिलटरी के जो मर्सीनरी लोग  $\times \times$  अंग्रेजों के पिट्टू बने रहे उन्होंने आई० एन० ए० वालों को भरोसे के अयोग्य बना दिया (छूठा० (२)—यशपाल, ३९७)

**पिड़ी बोल जाना**

पस्त होना, हिम्मत हार जाना । प्रयोग—संस्कृत में जो कुछ होता है उसका यदि शतांश भी हिंदी में होने लगे तो आप घड़ी भर में पिड़ी बोल जायें और हाथ से कलम रख दें (सा० सी०—महा० द्विवेदी, ७६)

**पित्त खीलना,—जलना**

कोधित होना । प्रयोग—ज्यों ज्यों निठुर बचन मुनिपत हैं जलत हमारे पीते (सु० सा०—सुर, ४३१३); इस बात पर सबसे ज्यादा रोशन बिस्वा का पित्त खोला (परती०—रेणु, ३२७)

(समा० मुहा०—पित्त उबलना)

**पित्त जलना**

दे० पित्त खीलना



### पिता पानी करना

(१) बहुत परिश्रम करना, जान लड़ाकर काम करना। प्रयोग—मैंने तब बालक नर नारी पिता पानी करते हैं (गुं नि०—बा० मु० गु०, ६२६)

(२) हिम्मत पस्त कर देना। प्रयोग—सखि, तूमे विश्वास मानो कि मेरे इसी चेहरे ने बड़े से बड़े वीरों का पिता पानी कर दिया है (भा० ग्रं० (१)—भारतेन्दु, ५६९); इस ललकार ने सभी के पिते पानी कर दिये (गोदान—प्रेमचंद, १२७)

### पिल पड़ना

किसी काम में एकदम पूरे जोश से जुट पड़ना। प्रयोग—बार सबबार कर पड़े पिल हम कूर को सूर साधना सिखना (चुमते०—हरिऔध, ९९)

### पिल पिल कर

भिड़ कर। प्रयोग—इधर उधर के सुरवीर पिल पिल के हाव मारते हैं धो कायर खेल छोड़ कर अपना जी ले भागते हैं (प्रेम सा०—ल० ला०, १७५)

### पिस जाना

(१) काम करते-करते थक जाना। प्रयोग—अनुशासन के लिए दिन रात पिसते हुए शेर ने एक दिन उसके विरुद्ध घोर अपराध किया (शेर (२)—अज्ञेय, ३५); दिन भर शहर में पिसते थे। पहर रात गये घर पहुँचते थे और जो कुछ रुखा-सूखा मिल जाता था खा कर पड़े रहते थे (गोदान—प्रेमचंद, १४४); क्या टलेगे न पीसने वाले क्या सदा ही पिसा करेंगे हम (चुमते०—हरिऔध, १८) (÷); दैनिक पत्र का जीवन भी कोई जीवन है। इसमें पिसते हुए आदमी स्वस्थ रह भी कैसे सकता है? (चेतन—अश्व, २७१)

(२) नष्ट होना, शेष होना। प्रयोग—हैं पिसी जा रही उमंगें सब, लुट गई राग-रंग की कानें (मर्म०—हरिऔध, ८०)

(३) कष्ट पाना। प्रयोग—जान घनघानंद यों दुसह दुहेली दसा बीच परि परि प्राण पिसे चपि चपि रे (घन० कवित—घना०, ६२); देखिए प्रयोग (१) में (÷) भी

(४) आवश्यक दबाव में पड़ना।

### पिसना पीसना

परिश्रम में लगे रहना। प्रयोग—रात दिन पीसना पीसा करता है जब देखो हजरत काम में मशगूल है (राधा० ग्रंथा०—राधा० दास, ७१९)

### पी जाना

चुपचाप सहन कर जाना, प्रगट न होने देना। प्रयोग—इसके बाद सरस्वती की बात में बिल्कुल ही पी गया (मा० मा० (१)—कि० गो०, १२०); मुसलमान नबाब घोर जन क्या इन चिनोत्री को यों ही पी जायेंगे? (क्षासी०—वृ० वर्मा, ११७); लेकिन यह भी पी जाना होगा—भगड़े का न अवसर है, न यह स्थान है (नदी०—अज्ञेय, १६९/७०)

### पीछा छुड़ाना या छूटना

(१) सप्रिय या इच्छा विरुद्ध सम्बन्ध का घन्त कर देना या होना। प्रयोग—एक बार कोई उनसे मुखातिब हो जाय, फिर पीछा छुड़ाना कठिन है (गुं नि०—बा० मु० गु०, ४४६); महरबानी करके वह कुल रूपे यहाँ भेज दीजिये जिसे मेरा पीछा छूटे (परीक्षा०—श्री० दास, ९६); छूट तो पीछा सका दुख से कहां तो मुसीबत है कहां पीछे हटना (चुमते०—हरिऔध, ११३)

(२) पीछे पड़े व्यक्ति से जी छुड़ाना या छूटना।

### पीछा न छोड़ना

(१) तंग करना। प्रयोग—जब तक तुम राह पर नहीं आती रानी तुम्हारा पीछा नहीं छोड़ेंगी (चोटी०—निराला, ५७); इसी तरह वह बार-बार टालती रही, लेकिन मैंने पीछा न छोड़ा (गवन—प्रेमचंद, ३०४)

(२) हर समय साथ लगे रहना।

### पीछा पकड़ना,—लेना

आश्रय का आकांक्षी बनना। प्रयोग—प्रभु, मैं पीछी लियो तुम्हारी (सु० सा०—सूर, २१८); इसी से कहते हैं कि पंच का पीछा पकड़े बिना किसी का निर्बाह नहीं (प्र० पी०—प्र० ना० मि०, १५२)

### पीछा लेना

दे० पीछा पकड़ना



## पीछे

अनुसार, आधार पर, नाम पर। प्रयोग—उसकी स्त्री का नाम मनु, मनायी अथवा मानवी मिलता है। उसी के पीछे मनुष्य और मानव कहलाते हैं (गुलेरी ग्रंथा० (१)—गुलेरी, ९)

## पीछे पड़ना,—लगना

(१) अत्यंत आग्रह करना। प्रयोग—बीया त्रिधा पापणी ताम्रं प्रीति न जोडि, पैडी चडि पाछा पड़े, लागे मोटी खोडि (कवीर ग्रंथा०—कवीर, ३३); बलिदान मोती बाई के पीछे पड़ गई (झांसी०—पृ० वर्मा, ३४७); तु जा अपना काम देल। मेरे पीछे क्यों पड़ता है? (मान० (१)—प्रेमचंद, १७७)

(२) जी जान से काम में जुट जाना। प्रयोग—किसी चीज के पीछे लगे, तो इन पंडित जी की भांति लगे (गुं नि०—धा० मु० गु०, ३३)

(३) मोक्षा या संधि ढूँढ़कर किसी की बुराई करनी। प्रयोग—ये भूडी गोपी झूठी बोलें। मेरे पीछे लागी डोलें (प्रेम सा०—ल० ला०, ३१); पर न जाने क्यों घोर लोगों को क्या हो गया जो बेसबब मेरे पीछे पड़ रहे हैं? (परोबा०—श्री० दास, ९०); परन्तु अब चितौर बचता नहीं दीखता, क्योंकि वह दुष्ट बेतरह पीछे पड़ा है (राधा० ग्रंथा०—राधा० दास, ६२१); तुम क्या जानो, हत्यारा सिंगार किस बुरी तरह तुम्हारे पीछे पड़ा हुआ है (मान० (७)—प्रेमचंद, ४६); जो लोग मंसूर के पीछे पड़े थे वे फिर में रहे और बूढ़ भाल कर मंसूर की कोई ऐसी रचना निकाल लाये, जिसमें कुछ बातें इस्लाम धर्म के विरुद्ध थीं (पद्म पराग—पद्म० शर्मा, १७६)

(४) अनुरक्त होना। प्रयोग—नैन परे हरि पाछे री (सु० सा०—सूर, २८५४); तब तो × × भद्रवाहा ने ठीक ही कहा था कि रंगवेणी और चित्रगंधा इसके पीछे लगी हैं (देवकी०—रा० रा०, १३)

## पीछे पीछे डोलना

पीछे लगे रहना, साथ रहना। प्रयोग—पीछे, पीछे डोलत है, सामुहें हँ बोलत है, सोलत है घुपट, मुन प्रानन पुरवोत है (शब्द०—देव, ६१)

(समा० मुहा०—पीछे पीछे नाचना)

## पीछे पैर देना

निश्चय से डिगना। प्रयोग—पाछे पांव न दीजिये प्रांगे होइ सो होइ (कवीर ग्रंथा०—कवीर, २६१)

## पीछे फिरना

किसी काम को प्रारंभ करके फिर विमुख होना। प्रयोग—हित की कनौड़ी लौड़ी भई ये अनंदधन, फिर क्यों पिछौड़ी नेह-मग डग ई गई (घन० कवित्त—घना०, १६०)

(समा० मुहा०—पीछे लौटना)

## पीछे लगना

(१) पीछे-पीछे घूमना, पीछा करना। प्रयोग—भक्त-विरह-कातर कस्तामय डोलत पाछे लागे (सु० सा०—सूर, ८)(+); बाल किलकारी कैं-कैं, तारी दै-दै गारी देल, पाछे लागे, बाजत निसान डोल तूर है (कवि०—तुलसी, ४२)

(२) दुश्मनक वस्तु का साथ होना। प्रयोग—देखिए प्रयोग (१) में (+)

(३) साथ रहना।

(४) दे० पीछे पड़ना

## पीछे-लगा

पीछा करने वाला। प्रयोग—पीछे लगा आदमी आंख बचाकर चला (चोटी०—निराला, ८५)

## पीछे हटना

(१) किसी काम के करने से विमुख होना। प्रयोग—मनुष्य शारीरिक कष्ट से ही पीछे हटनेवाला प्राणी नहीं है (विता० (१)—शुक्ल, ७); जब मैं तुमको अपने दिल की बात बतला रहा हूँ फिर तुम क्यों इतना पीछे हटना चाहते हो (रेशमी०—राम० वर्मा, ४६)

(२) हार कर पीछे लौटना।

(३) निश्चय से डिगना।

## पीछे होना

(१) अनुयायी होना। प्रयोग—‘हिन्दू-पंच’ भी इस मैदान में उसके पीछे-पीछे है (पद्म पराग—पद्म० शर्मा, ३७६)

(२) पटकर होना।



### पीटना

(१) कमा लेना । प्रयोग—यों उनकी स्थिति बुरी न थी, दो डाई सौ रुपए महीने बकालत से पीट लेते थे (मान० ३)  
—प्रेमचंद, ३९)

(२) पछताना ।

### पीटना ले बैठना

किसी दुख को बार-बार कहना । प्रयोग—निदान आगे की कोई बात भी नहीं होती केवल एक पीटना ले बैठना है (राधा० प्रथा०—राधा० दास, ५५७)

### पीठ

प्रतिकूलता, विमुखता । प्रयोग—जान की पीठि लखे पन आनद आनन आन तें होत उचाटी (घन० कवित्त—घना०, १३१)

### पीठ करना

प्रतिकूल होना । प्रयोग—एक कहे, बाम बिधि दाहिनी हमको भयो, उत कीन्ही पीठि, इत को मुडीठि भई है (गोत० (अ)—तुलसी, ३४); मुहूर्तों वह पीठ मल मल पा पला पीठ मेरी ओर कर, बैठे न क्यों (बोल०—हरिऔध, २२८)

### पीठ का कच्चा

सवारी में कष्ट देने वाला (घोड़ा) । प्रयोग—है न घोड़ा पीठ का कच्चा भला (बोल०—हरिऔध, २२७)

### पीठ का सच्चा

पक्का, आरामदेह (घोड़ा) । प्रयोग—तो गिरगा एक सच्चा भी नहीं पीठ का सच्चा अगर घोड़ा रहे (बोल०—हरिऔध, २२७)

### पीठ की खाल उधेड़ना

दुर्गति करना । प्रयोग—खीन करके उधेड़ बन में पड़ पीठ की खाल क्यों उधेड़े हम (बोल०—हरिऔध, २२७)

### पीठ की रीढ़ होना

घाघार होना । प्रयोग—उन्हें आपकी पीठ की रीढ़ कहना चाहिये (सा० सी०—महा० द्विपदी, १०२)

### पीठ चारपाई से लग जाना

बीमारी के कारण पर्यंत दुबला या कमजोर हो जाना ।

प्रयोग—तब चले हैं लौ लगाने राम से पीठ जब है चारपाई से लगो (बोल०—हरिऔध, २२९)

### पीठ टूट जाना

भारी बोझ उठाने के कारण पीठ में पीड़ा होनी । प्रयोग—उठि न सकत गर पीठ टूट गई अब इतनी गरआई (मा० प्रथा० (२)—भारतेन्दु, ५४२)

### पीठ ठोकना

प्रशंसा करनी, शाबाशी, देनी, उत्साहित करना । प्रयोग—उन्होंने सबकी पीठ ठोकी (इशा०—इशा०, १०४); इस पर आपकी उसकी पीठ ठोकना चाहिए न कि उससे नाराज होना (गु० नि०—बा० मु० गु०, ५०८); मिसेज टंडन ने पीठ ठोकी—मैंने समझा दिया भाई, आगे तुम जानो तुम्हारा काम जाने (मान० (१)—प्रेमचंद, २७०); लड़गा तो मैं, आप केवल मेरी पीठ ठोकते जाइएगा (रंग० (१)—प्रेमचंद ३६८) लाल संकट हो, अभी चलना होगा—नारायण ने दोनों युवकों की पीठ ठोकते हुए कहा (ब्रह्म०—दे० स०, २९२); उनके जाने के बाद यहाँ खूब कहकहे उड़े, और सूरदास की खूब पीठ ठोकी (रंग० (१)—प्रेमचंद, १८९); जो चाहता है × × आपकी पीठ ठोकू, हाथ चूमू और चरण छूऊ (पद्म० के पत्र—पद्म० शर्मा, ११५)

### पीठ दिखाकर जाना

(१) चली जाना । प्रयोग—सबही त्यों समुहाति छिनु, चलति सबनु दे पीठि । वाही त्यों ठहराति यह, कविलनवी लौं दीठि (बिहारी रत्ना०—बिहारी, ३०)

(२) स्नेह तोड़कर चले जाना, विमुख होना ।

### पीठ दिखाना

पुछ या मुकाबलेसे भाग जाना । प्रयोग—सौहे भाल छाव हिय पे चिरि देइ न पीठि (पद०—जायसी, ३४।२०); सूरदास रण-भूमि विजय बिनु, जियत न पीठि दिखौऊ (सु० सा०—सूर, २७०); ये वे हो नराधम है जो तुम लोगों को दो बेर पीठ दिखा चुके हैं (राधा० प्रथा०—राधा० दास, ६२५); उसने दुश्मन को पीठ दिखाई है (सु० सु०—सुदर्शन, २९२); तभी तो है कि जब कानून की तरफ से बार घाता है तो तुम्हें पीठ दिखानी होती है (कल्याणी—जनेन्द्र, ८२); चूपचाप



हिन्दुरायान को पीठ दिखाओ और अपनी बिलायत में भ्रष्ट मारो (झासी०—वृ० वर्मा, ३४१)

### पीठ देना

(१) विदा होना । प्रयोग—ऐसा तुम्हारा क्या अपराध किया है जो हमें पीठ दिये जाते हो (प्रेम सा०—ल० ला०, १०२) (÷)

(२) विमुख होना । प्रयोग—भवे भलेहि पुरुषन्ह के डीठी । जिन्ह जाना तिन्ह दीन्हि न पीठी (पद०—जायसी, १२६); सूर सागर ऐसे स्वामी को देहि पीठि सो अभाग (सू० सा०—सूर, ८); तुलसी जाके होइगी, अंतर बाहिर दीठि, सो कि कुपालुहि देइगो, केवट-पालहि पीठि (दोहा०—तुलसी, ४९); आपु दियो मनु फेरि लै, पलटै दीनी पीठि । कोन चाल यह रावरी, लाल सुकायत डीठि (विहारी रत्ना०—विहारी, २९०); दीजियै न पीठि, इत कीजियै दया की दीठि, सेना-पति पाल्यो है तिहारे एक लोन को (क० र०—सेनापति, १०६); जान उजियारे गुन-भारे अंत मोहि प्यारे, अबहुँ ब्रमोही बैठे, पीठि पहिचानि दै (घन० कवित्त—घना०, ४२); रज को पीठ दिए रहो । बुद्धिमानी इसा का नाम है (कल्याणी—जैनेन्द्र, २). देखिए प्रयोग (१) में (÷) भी

(३) भाग जाना, पीठ दिखाना । प्रयोग—पीठि देहि नहि बान्हि लागे । चापत जाहि पगहि पग आगे (पद०—जायसी, ४३९); सीतल भई चक्र की ज्वाला, हरि हंसि दीन्हो पीठि (सू० सा०—सूर, २७४); दाता जयसिंह दोय बात तो न दीनी कहूँ बैरिन को पीठ और डीठि परनारी को (जग०—पद्माकर, ९५); परन्तु बीर बालक ने पीठ देना सीखा ही न था (राधा० ग्रंथा०—राधा० दास, १८७)

(४) नजर बचाना । प्रयोग—मुभ सिगार साजे सबै दै सखीन को पीठि चले मधखुले द्वार लौ खुली मधखुली डीठि (जग०—पद्माकर, ३०)

(५) किसी की ओर पीठ करना । प्रयोग—दीठि मिले मुरि पीठि दई, हिय-हेतु की बात सकै कहि को है (घन० कवित्त—घना०, १६४)

(६) लेट कर आराम करना ।

### पीठ नपाना या नापना

मार खाना या मारना । प्रयोग—है अगर चाह भाप लेने की भाप तो पीठ नाप लें मेरी (चोखे०—हरिऔध, ५४); पीठ देवें न प्रेमपथ में पड़ चाहिए पीठ तक नपा देवें (दोल०—हरिऔध, २२८)

### पीठ पर खड़ा होना.—पर होना

सहायक होना । प्रयोग—लुत्तो और बीरभदर बाबू उनकी पीठ पर हैं (परलो०—रेणु, १४९); दारोगा जी, तुम समझते होगे कि इन गरीबों की पीठ पर कोई नहीं है (मान० (४)—प्रेमचंद, १४१); घाज कोई मेरी पीठ पर खड़ा हो जाता तो मेरो मुँहे कलाकर यों मूँछों पर साब देता हुआ न बला जाता (रंग० (१)—प्रेमचंद, ९४); पीठ कैसे लग नहीं जाती भला, है हमारी पीठ पर कोई नहीं (चुमते०—हरिऔध, ७६)

### पीठ पर चायुक होना

पूरी तरह वश में होना । प्रयोग—पानी पवन अग्नि ओ माटी । सबकी पीठि तोरि है सांटी (पद०—जायसी, ३४११)

### पीठ पर बल होना

कोई सशक्त सहायक होना । प्रयोग—बोधन के भीतर निर्भयता थी, मुल्लों की पीठ पर बल (मृग०—वृ० वर्मा, ४०३)

### पीठ पर सवार होना

हर समय साथ लगे रहना । प्रयोग—अभी ऐसा योग तो तुमने साथ नहीं पाया है कि वे पीठ पर सवार रहें और तुम ध्यानन्द के साथ डूबते सूर्य का दर्शन करती रहो (मृग०—वृ० वर्मा, ३१६)

### पीठ पर हाथ फेरना

स्नेह या दुतार करना । प्रयोग—अगर मैं अपने सेवक की डाँट-फटकार करूँ, और तुम उसकी पीठ पर हाथ फेरो, तो इसके सिवा और क्या समझ सकता हूँ कि तुम मुझे कलंकित करना चाहती हो (रंग० (२)—प्रेमचंद, १४७)



### पीठ पर हाथ रखना

सहायक या रखक होना । प्रयोग—जोग कहते हैं, जिसने बाबू ने उसकी पीठ पर हाथ रखा है (पत्नी—रेणु, ३२१) भाई, जिसकी पीठ पर परमेश्वर का हाथ हो, उसके लिए कुछ भी कठिन नहीं (सुंनु—सुर्जन, ३३)

### पीठ पर होना

#### दे० पीठ पर खड़ा होना

#### पीठ पीछे

अनुपस्थिति में, परोक्ष में, । प्रयोग—पीठ-पीछे आदमी जो चाहे वैसे हमारे मुंह पर कोई कुछ कहे तो उसकी मुँहें उखाड़ लूँ (गोदान—प्रेमचंद, २५०); उनका निर्णय सुन उनके पीठ-पीछे में सुन्न रह गया (अपनी लखर—उग्र, १०८); अधिकांश ने मुंह पर उचित ही कहा, परन्तु पीठ पीछे बात पढ़ने पर बोले..... (मा—कौशिक, ७२)

#### पीठ फेर कर बैठना

अवहेलना करनी । प्रयोग—जो निपटन सरपन के घर जाई, सामे बैठा पीठ फिराई (कबीर ग्रंथा—कबीर, ३०२); बात क्यों उससे बिठाए बैठती फेर करके पीठ ओ है बैठता (चोखे—हरिश्चंद्र, ५३)

#### पीठ फेरना

पीठ दिखाना, हारना । प्रयोग—प्रभु गरजे धिक भीरु ! पीठ जो मुझसे फेरे (साकेत—गुप्त, ४३५)

(२) विमुख होना । प्रयोग—ऊंचे, नीचे, बीच के, धनिक रंक राजा राय, हठनि बजाइ करि जीठि पीठि दई है (कवि—तुलसी, २१८); बचन देकर रेज्यत से पीठ फेर ली जाती है (चोटी—निराला, ४६); धर्म की ओर फेर करके पीठ दे तिलक पालता रहा जो पेट (चुभरी—हरिश्चंद्र, १२१)

(३) अर्पण या प्रणिष्ठा प्रगट करनी ।

(४) बिदा होना, जला जाना ।

#### पीठ बचाकर साथ देना

इस हद तक हाँ साथ देना कि अपना अहित न हो । प्रयोग—अगर स्वार्थ को गहरा पक्का न लगा होता तो ये जमींदार स्वदेशी आन्दोलन में कभी सरीक न हुए होते ।

इन्होंने साथ भी पीठ बचाकर दिया था (चोटी—निराला, १२)

### पीठ मलना या मीजना

सुखामद या सेवा करनी । प्रयोग—मूर्तों वह पीठ मल मल या पता पीठ मेरी घोर कर बैठे न क्यों (बोल—हरिश्चंद्र, २२८); है कभी हाथ मीज मीज जिये । है कभी पीठ मीज मीज पले (बोल—हरिश्चंद्र, २२८)

### पीठ मीजना

#### दे० पीठ मलना

#### पीठ में छुरा भोंकना

विशवासघात करना । प्रयोग—तुमने पिछले साल नाबिक बिरोह के अवसर पर भी कावेस की पीठ में छुरी मारी थी (झुठा—(१)—यशपाल, १३६)

### पीठ में धूल लगाना,—मिट्टी लगाना

नीचा देखना । प्रयोग—तेरे ही कारण मेरी पीठ में धूल लग रही है (मान—(१)—प्रेमचंद, १५); मिट्टी लगी पीठ में तेरे अब क्या जोर दिखाना (नुर—भक्त, ६२)

### पीठ में धूल लगाना

नीचा दिखाना । प्रयोग—कभी किसी माई के लाल ने मेरी पीठ में धूल नहीं लगाई, तो क्या बात थी (रंग—(२)—प्रेमचंद, २७७)

### पीठ में मिट्टी लगाना

#### दे० पीठ में धूल लगाना

#### पीठ मोड़ना

घूमकर जाने लगना । प्रयोग—अबोही मुझ पीठ मोड़ता, प्रेम मालिक उसे रोककर धिमल बाबू से पूछता (कठ—दे० स०, २११)

### पीठ लगाना

(१) परास्त होना, नीचा देखना । प्रयोग—सबे किसी की पीठ जो विपुल पुलकित होता है (मर्म—हरिश्चंद्र, १४०)

(२) पीठ पर पाव हो जाना, पीठ पक जानी ।



### पीठ लगा देना

पछाड़ देना। प्रयोग—लाग है हो गई बलाओं से क्यों लगायें न पीठ से मेरी (बोल०—हरिऔध, २२८)

### पीठ लगाना

लेटना, सोना या आराम करना। प्रयोग—कुबर उदेभान अपने घोड़े को पीठ लगाकर अपने लोगों से मिल के अपने घर पहुँचे (ईशा०—ईशा०, ९५)

### पीठ सहलाना

स्नेह करना, तारीफ करनी। प्रयोग—देखो आज एक ताजा मजल कही है। पीठ सहला देन (कर्म०—प्रेमचंद, ४)

### पोतल के नथ पर गुमान करना

मामूली वस्तु पर गर्व करना। प्रयोग—यहाँ तक कि वह अपनी लड़कियों को प्यार करते हुए मकुचाती थी कि लोग कहेंगे कि पोतल के नथ पर इतना गुमान करती है (मान० (३)—प्रेमचंद, ११८)

### पीना

मदिरा-न्यान करना। प्रयोग—भटकते हुए उसे दो तीन पत्रकार-बंधु मिल गये और उनके साथ वह फिर पीने बैठ गया (नदी०—अज्ञेय, १८८); जरा रंग बंध जाय फिर तो इकट्ठे बैठ पिये लावगे (पैतरे—अश्व, १२८)

### पीपल के पत्ते की तरह कांपना

बहुत भयभीत होना। प्रयोग—जस मन गुनइ राउ नहि बोला। पीपर पात सरिस मनु होता (राम० (अ)—तुलसी, ४१४)

### पीपल के बन को दाहिना देना

अनुकूल शकुन लेना। प्रयोग—अनुचित अति उत्साह कहाँ लागि, दीर्घ पीपर को बन दाहिन (सू० सा०—सूर, २१०६)

### पीला पड़ना या होना

(१) खून की कमी के कारण चेहरा कांतिहीन होना। प्रयोग—जियरा उड़यो सो होले हियरा धक्कोई करे, पिपराई छाई तन, तिपराई हो रहों (घन०कवित्त—घना०, ३६)

(२) भय या लज्जा से चेहरे पर सफेदी घाना। प्रयोग—जमादार उदें पड़े (चौटी०—निराला, १५३); शुक्ल जी को अधिक लज्जित न कीजिए। बेचारे पहले ही पीले पड़ गये हैं (पट्टम० के पत्र—पट्टम० शर्मा, १८५)

### पीस कर पी जाना

समूल नष्ट कर देना। प्रयोग—जब तुम्हारा राज हो जायगा, तब तो तुम गरीबों को पीस कर पी जाओगे (गवन—प्रेमचंद, १७२)

### पीसना

(१) परिश्रम करना या करवाना। प्रयोग—जम्मा और दादा को दिनका तक नहीं उठाने देती और मुझे पीसना चाहती है (मान० (१)—प्रेमचंद, २५१)

(२) बहुत कष्ट देना, चूर-चूर किये देना। प्रयोग—मीहि राखे मुगल मरोहि राखे पातसाह, बेरी पीसि राखे बरदान राख्यो कर में (भूपण ग्रंथा०—भूपण, २०९); बाल रमै मधु मास छकी यह क्वलिया पापिनि पीसई दारति (इशक०—बोधा, ८); राज-चक्र सब को पीसता है, पिसने दो (प्र०—प्रसाद, १४); मैं उसे पीसने में तुम्हारी मदद नहीं करूँगा (रंग०(२)—प्रेमचंद, ११८); अधिकार हाथ में घाते ही दायित्व ने उदारता को पीस डाला, क्योंकि निम्न वर्ग की असंख्य जनता उस अधिकार संसर्ग से दूर थी (झांसी०—पृ० वर्मा, १६९); परिस्थिति का चक्र बड़े-बड़ों को पीस देता है (विप०—प्रेमी, १४)(÷)

(३) बहुत भारी धपकार करना। प्रयोग—देखिए प्रयोग (२) में (÷)

(४) प्रयत्नशील होना।

### पीसे को पीसना

हुए काम को दुबारा करना। प्रयोग—बेगार टालने को तबियत नहीं चाहती घोर पीसे को पीसना क्या? पहले टीकाकारों की अपेक्षा कुछ भी नूतनता रहे, तब तो टीक, नहीं तो टीका की आवश्यकता क्या? (पट्टम० के पत्र—पट्टम० शर्मा, २३०)



### पीसे जाना

कष्ट पाना । प्रयोग—मैं भाग्य के विधान से पीसी जा रही हूँ (तित्तली—प्रसाद, २४१)

### पुकार कर कहना या पुकार करना

(१) विनती करनी । प्रयोग—रोपणहारे भी मुण, मुण जलाबरा हार । हा हा करते से मुण, कासनि करौ पुकार (कबीर ग्रंथा०—कबीर, ७६); कासु पुकारौ का पहे जाऊँ । गाई मीन होइ एहि ठाऊँ (पद०—जायसी, ३४११०); मूर सोइ धनु अंतरजामी, कासौ कहै पुकारी (सू० सा०—सूर, ४३०५); रहे तहाँ बहु भट रखवारे कछु मारेसि कछु जाइ पुकारे (राम०—सु०—तुलसी, ८१३); मानौ की न मानौ, करो सोई जोई जिय जानौ, हम तो पुकार एक तोही सौ करत है (क० १०—सैनापति, ९८); सब जितने उसके साथी और दहलुये में सब के सब × × कंस के पास जाय पुकारे (प्रेम सा०—ल० ला०, १०९)

(२) निश्चित रूप से, दृढ़ता से, या स्पष्ट रूप से कही बात । प्रयोग—कहत कबीर जीति के हारि, बहु बिधि कछो पुकारि पुकारि (कबीर ग्रंथा०—कबीर, २८३); सत्य बचन नृप कहत पुकारे (सू० सा०—सूर, ३५४०); यह सपना मैं कहउ पुकारी (राम०—सु०—तुलसी, ८०६)

### पुकार पड़ना या होना

(१) जोर-जोर से खुले आम कहा जाना । प्रयोग—परी पुकार डार गृह-गृह तैं, मुनो सबी इक जोमी आयी (सू० सा०—सूर, ४१३१); कासमीर बलस बुसारे लौ परी पुकार, धाम धाम धूमधाम रूप साम परी है (भूपल ग्रंथा०—भूपल, २१३)

(२) मांग होनी, पुकारा जाना ।

### पुकार लगना

भगवान तक विनती पहुँचनी । प्रयोग—कैसे कहि कहि कृषिये, ना सोइये असार । रात दिवस के कृकण, (मत) कबहुँ लगे पुकार (कबीर ग्रंथा०—कबीर, ६); माइ द्विजराज तिय काज न पुकार लागे, भोगवै नरक धोर धोर को अमपशानि (केशव०—(२)—केशव, २९८)

### पुकार सुनना

विनती पर ध्यान देना । प्रयोग—तुम तो उदार दीन हीन आनि पर्यो डार, सुनिय पुकार याहि को लौ तरसाय हो (घन० कवित्त—घना०, ७)

### पुकारना

(१) ललकारना । प्रयोग—घरं राति पुर डार पुकारा । बाली रिपु बल सहै न पारा (राम०—(किं)—तुलसी, ७६१)

(२) दे० पुकार कर कहना

### पुट्टे पर हाथ न रखने देना

पास न आने देना, बश में न रहना । प्रयोग—वह ऐसे थोड़े पर सवार थी कि जिसे नित्य फेरना लाजिम था, दस पाँच दिन बंधा रहा तो फिर पुट्टे पर हाथ ही न धरने देगा (कर्म०—प्रेमचंद, १८)

### पुण्य करना और कुप में डाल देना

नेकी के बदले में कुछ न चाहना; नेकी करके भूल जाना । प्रयोग—तेरे ऊपर जो इतना धन व्यय किया है उसे समझ लूँगी कि पुण्य किया और कुप में डाल दिया (सुहाग०—अ० ना०, ६६)

### पुतला होना

(१) अनुरूप आकार या आधार होना । प्रयोग—होगलों के बने रहें पुतले । हार हिम्मत कभी न हम हारे (चुभते०—हरिऔध, ४२)

(२) अवोध होना ।

### पुतली का तारा

अत्यंत प्रिय होना । प्रयोग—जब तैं मुजान प्रान प्यारे पुतलीमिनारे, जानिन बसे हा सब मुनो जग जोहिये (घन० कवित्त—घना०, २२१)

### पुरजा दुरुस्त करना

सारी स्थिति को ठीक करना । प्रयोग—हमे इस पुराने राष्ट्र के अनेक पुजे दुरुस्त करने पड़ेगे (अशोक०—ह० प्र० दि०, १५१)

### पुरजे-पुरजे करना

(१) टुकड़े-टुकड़े करना । प्रयोग—बंदीधर ने पत्र को



फाड़कर पुजे-पुजे कर डाला (मान० (१)—प्रेमचंद, २१४)

(२) खूब मार पड़नी।

(समा० मुहा०—पुरजे-पुरजे उड़ाना)

**पुरजे-पुरजे होना**

(१) टुकड़े टुकड़े होना। प्रयोग—पुरजे हो वह किताब जिसमें तेरा पार बयान न हो (मा० ग्रंथा० (२)—भारतेन्दु, ५६८)

(२) जीर्ण-शीर्ण होना। प्रयोग—सूरा तबही पराधिये, लड़े धरणी के हेत पुरजा पुरजा हूँ पड़े, तऊ न छाँड़े खेत (कबीर ग्रंथा०—कबीर, ६९)

**पुरानी राह पर चलना**

पुराने ढंग से ही काम करना। प्रयोग—जा रहा मानव चला अब भी पुरानी राह (कुरु०—दिनकर, ८७)

**पुरानी लकीर पीटना**

परम्परा का पालन करना। प्रयोग—असामियों से टका वसूल नहीं होता, तो इन पुरानी लकीरों को पीटकर क्यों अपनी जान संकट में डाली जाय (मान० (१)—प्रेमचंद, १५४); सब बूढ़े मूर्ख और पुरानी लकीर पीटनेवाले कहे जाते हैं (कामना—प्रसाद, ४४)

(समा० मुहा०—पुरानी लकीर न छोड़ना,—लीक पर चलना)

**पुरुषार्थ थकना**

शक्ति कम होनी। प्रयोग—थाके हस्त, चरनगति थाकी, अरु थाक्यो पुरुषार्थ (सू० सा०—सूर, २८७)

**पुल बांधना**

बहुत अधिकता कर देनी; कम न टूटने देना। प्रयोग—सब जगह बात रह नहीं सकती बात का बांध दें भले ही पुल (चोखे०—हरिऔध, ५८); तुमने प्रशंसा के पुल बांधे। मैं तुम्हारी बातों में घा गया (दूधगाछ—दे० स०, २५४)

**पूछ पकड़ना**

आश्रय लेना। प्रयोग—आखिर मैंने भूक मार कर उनकी पूछ पकड़ी (गोदान—प्रेमचंद, २३५)

**पूँजी टूटना**

मूल धन में घटी होनी। प्रयोग—बनिज खुटानी पूँजी टूटि, पादू दह दिसि गयो कूटि (कबीर ग्रंथा०—कबीर, २१५); बैठेउ खोद जरी ओ बूटी। माभ न आवत मूर भी टूटी (पद०—जायसी, २७२)

**पूँजी डूबना**

किसी काम में लगा धन डूब जाना। प्रयोग—घोर संकट का समय है, कहीं पूँजी न डूब जाय (पद्म० के पत्र—पद्म० शर्मा, १७)

**पूछ होना**

(१) मान प्रतिष्ठा होनी। प्रयोग—बड़े बड़े दरबारों में उनकी पूछ पैठार होती है (प्र० पी०—प्र० ना० मि०, १०६); मानता है न कौन मन की बात है कहां पर न मनचलों की पूछ (मर्म०—हरिऔध, ९६); सड़ी बोली के धुर दूर में कुछ दिनों तक कविता में ब्रजभाषा की पूछ रही (पद्म पराग—पद्म० शर्मा, ३१९)

(२) मांग होनी। प्रयोग—यह और बात है कि “मुकुदेव” की आठ-दस साल बाद पब्लिक में कुछ पूछ हो रही है पर बाजार भाव तो दूसरा ही है (दूधगाछ—दे० स०, २९६)

**पूछना**

सम्मान करना, महत्व देना। प्रयोग—किन्तु वे सामर्थ्यवान होकर हमें न पूछें × × तो हमारे कलेजे पर साँप खोटने लगता है (मान० (४)—प्रेमचंद, २०७); कोई पूछता नहीं, तो लोग पड़ते क्या भूक मारने को है (मा—कौशिक, १६४),

**पूजा करना**

(१) भक्ति पूर्वक आदर करना। प्रयोग—ललि सुबेध जग बंचक जेऊ बेध प्रताप पूजघड़ि तेऊ (राम० (बाल)—तुलसी, ४६); देवि, मैंने सदा तुम्हारी पूजा की है (चित्र०—भग० वर्मा, ६४)

(२) घूस देना। प्रयोग—कारिन्दा साहब की पूजा भी करनी ही होगी (गोदान—प्रेमचंद, २७)



(३) मारना । प्रयोग—करन देहु इनकी मोहि पूजा चोरी प्रगटत नाम (सू० सा०—सूर, ९९४); जो अब न मनबो तो हम तोरी खूब पूजा करबे (राधा० ग्रंथा०—राधा० दास, ५६०); अजी मैंने औरतों को चट्टियों से अपने मर्दों को पूजा करते देखा है (बुंद०—अ० ना०, १३४)

### पूजा चढ़ाना,—देना

(१) पुस देना । प्रयोग—अब जब तक हमारी पूजा न दोने तब तक न छूटोने (मा० ग्रं० (१)—भारतेन्दु, ५); इस तलाशी का संकट उसके गिर से टल जाय, पूजा चाहे कितनी ही चढ़ानी पड़े (गोदान—प्रेमचंद, ११५)

(२) भक्ति पूर्बक घावर करना ।

### पूजा देना

दे० पूजा चढ़ाना

### पूजा होना

(१) बहुत आदर होना । प्रयोग—हर डाक से धन्यवाओं की एक बाढ़-सी आ जाती और लेखिकाओं में उनकी पूजा होने लगी (मान० (१)—प्रेमचंद, ३२३)

(२) डांट फटकार या मार पड़ना । प्रयोग—अनभ्यास से उत्पन्न भूलों के लिए भाषियों के द्वारा कुछ विशेष पूजा भी मिलने लगी (अतीत०—महादेवी, ५७)

### पूत के पांच पालने में नज़र आना

छूटपन से ही चरित्र का पता लगना । प्रयोग—नहीं होवें पर पूत के पांच पालने में नज़र आ जावे हैं (धरती०—वि० प्र०, २८)

### पूरा आना

(१) विरोध में जीत पाना । प्रयोग—जो नर ताल तदपि घति मूरा, तिन्हहि विरोधि न आइहि पूरा (राम० (अ)—तुलसी, ७२४)

(२) काम पूरा होना । प्रयोग—कहहि सचिव सठ ठकुर-सोहाती नाथ न पूर घाव एहि भांती (राम० (ल)—तुलसी, ८६९)

(३) पर्याप्त होना ।

### पूरा उतरना

(१) खरा और सही होना । प्रयोग—खेद है कि सभी

मार्क्सवादी इस बात में पूरे नहीं उतरते (अशोक०—ह० प्र० द्वि०, ४५); जो बात शेक्सपीयर कवियों और प्रेमिकाओं में बारें में कह गया है, वह तो वाकई ड्रामा लिखनेवालों पर भी पूरी उतरती है (कठ०—दे० स०, १५१); व्याकरण की शिक्षा पूरी करने से पहले "जुही की कली" लिखी थी, जो व्याकरण की दृष्टि से बाद को पूरी उतरी (कुम्भी०—निराला, ७७); मेरी भविष्यवाणी अधरगः पूरी उतरी (मिसा०—कोशिक, २३०)

(२) कम न होना, ठीक होना ।

### पूरा दिन होना

बच्चा पैदा होने का समय निकट होना । प्रयोग—अधिक खोज-खबर लगाने पर पता चला कि उसको दिन पूरे लग रहे थे और उसे इसकी बिता भी थी (त्याग०—जैनेन्द्र, ७७)

### पूरा पड़ना

यथेष्ट होना । प्रयोग—पन्द्रह बीस रुपए में क्या होता है हुजूर, इतना तो हमारे लिए ही पूरा नहीं पड़ता (मान० (७)—प्रेमचंद, ३२)

### पूरा पाना

सिद्धि पानी । प्रयोग—नाच्यो नाच लच्छ नोरासी, कबहुं न पूरी पायी (सू० सा०—सूर, २०५)

### पृथ्वी का रसातल में जाना

घोर अनिष्ट होना । प्रयोग—मोहि राजु हठि देखहु जबही । रसा रसातल जाइहि तबही (राम० (अ)—तुलसी, ५४०)

### पृथ्वी कांपना,—डोलना

सबका घातकित होना । प्रयोग—चलत दसानन डोलति धवनी (राम० (वाल)—तुलसी, १९०); बापा तिनके बंध जामु मय पृथ्वी कापी (राधा० ग्रंथा०—राधा० दास, ६७४)

### पृथ्वी डोलना

दे० पृथ्वी कांपना

### पृथ्वी पर आना

जन्म लेना । प्रयोग—जेई नहि मीस प्रेम पंथ पावा । सो पृथ्वी महं काहे को घावा (पद०—जायसी, ९७)



### पृथ्वी से उठ जाना

मृत्यु को प्राप्त होना। प्रयोग—दो ही चार वर्ष में तुमको पृथ्वी से उठ जाना है (गु० नि०—वा० मु० गु०, ६३१)

### पेंग बढ़ना

होसला बढ़ना। प्रयोग—इतने दिनों तक सबर किए बैठ रहा कि अब भी वह सुभागी को निकाल दे  $\times \times$  पर देखता हूँ, तो दिन-दिन उसकी पेंग बढ़ती ही जाती है (रंग० (२)—प्रेमचंद, ११५)

### पेच-ताव खाना

क्रोधित होना। प्रयोग—यह बरजस्ता जवाब सुनकर घोरगजेंब पेच-ताव खाकर रह गया (पद्म पराग—पद्म० शर्मा, २३२)

### पेच में आना या होना,—पड़ना

धोखे या पड़यंत्र में आना। प्रयोग—सोचत जनक पोच पेच परि गई है (गोता०(वा)—तुलसी, ८६); तो न क्यों जाति पेच में पड़ती जो रुची पेचपाच की बातें (चुमते०—हरिऔध, ६८); किन्तु अभी तक यह पेच में नहीं आती। मेरी बात नहीं सुनती (राधा०—ब्र० स०, ९९)

### पेच में पड़ना

दे० पेच में आना

### पेचदार बात, पेचपाच की बात

बात जो स्पष्ट न हो, धोखे की बात। प्रयोग—नन्हा माहड इन विचित्र टूरिस्टों की पेचदार बातें समझ नहीं रहा था (कठ०—दे० स०, ६४); तो न क्यों जाति पेच में पड़ती जो रुची पेचपाच की बातें (चुमते०—हरिऔध, ६८)

### पेचपाच की आदत

भ्रष्ट घोर गड़बड़ करने की आदत। प्रयोग—छोड़ दे पेचपाच की आदत बीच का लीचतान कर दें कम (चुमते०—हरिऔध, २७)

### पेचपाच की बात

दे० पेचदार बात

### पेट

गर्भ। प्रयोग—रात बहुत पेट लिए घूमती है (वृ०—अ० ना०, २१)

### पेट ऐँटना

(१) किसी बात के लिए मन में चेँबनी होती। प्रयोग—ज्यों-ज्यों देर हो रही थी, कुल्ली का पेट ऐँठ रहा था (कुल्ली०—निराला, ४६); चैन उसको तब भला कैसे मिले जब किसी का पेट होवे ऐँठता (बोल०—हरिऔध, १८४)

(२) पेट में दर्द होना।

### पेट और तन काटना

बचत के लिए खाने पहनने में कमी करनी। प्रयोग—मैंने ही पेट और तन काटकर यह गृहस्थी जोड़ी है (मान० (१)—प्रेमचंद, ७१)

### पेट कटना

रोजी मारी जानी, अपना अंश छिन जाना। प्रयोग—पेट कटता देख जब रो पीट कर लोग पीटा हो करेंगे छातिपां (चुमते०—हरिऔध, ३१)

### पेट का

(१) मन का। प्रयोग—मैं घापसे कुछ भी न छिपाऊँगा—मैं अपने पेट का सब पाप बताने को तैयार हूँ (मिसा०—कौशिक, १५४)

(२) जन्म दिया हुआ। प्रयोग—ऐसा लड़का लो कि चित्त प्रसन्न हो जाय। यह जान ही न पड़े कि गोद का है या पेट का (मा—कौशिक, ३५)

### पेट का उपाय,—चक्कर,—धन्धा

जीविका का उपाय। प्रयोग—जग परबोधि होत नर शाली, करते उदर उपाय (कबीर ग्रंथा०—कबीर, १४४); बहुत लोग यह कहेंगे कि हमको पेट के धन्धे के मारे छुट्टी ही नहीं रहती बाबा, हम क्या उन्नति करें? (भा० ग्रंथा० (३)—भारतेन्दु, ८९७); अब गुल्ली डंडा क्या खेलेगा सरकार, अब तो पेट के धंधे से छुट्टी नहीं मिलती (मान० (१)—प्रेमचंद, १६५); भ्रष्टों में डाल हांवाडोल कर पेट के धंधे किए अंधे रहे (चुमते०—हरिऔध, ११२); इसलिए मैं भी पेट के चक्कर में घाँस खाया हूँ (वृ०—अ० ना०, १२५)



### पेट का कुत्ता

खाने के लिये जीने वाला । प्रयोग—आ, न बुत्ते में किसी के भी सकें पेट के कुत्ते किया पों पों करे (दोलो—हरिऔध, २२०)

### पेट का गुलाम

आजीविका के लिए सब कुछ करने को तैयार । प्रयोग—हम सपने हूँ मैं नहीं पेट के बने गुलाम (प्र० पी०—प्र० ना० मि०, २०८)

### पेट का चक्कर

दे० पेट का उपाय

### पेट का डर

जीविका जाने का भय । प्रयोग—इन्हें अपने पेट का डर है (बुट०—अ० ना०, १६०)

### पेट का धंधा

दे० पेट का उपाय

### पेट का पानी न पचना

अत्यंत उत्कंठा होनी, रहा न जाना । प्रयोग—नहीं चाचा, यह तो बतलाना ही पड़ेगा नहीं, तो मेरे पेट का पानी नहीं पचेगा (भूले०—भग० दर्मा, ५२५)

### पेट का पानी हिल जाना

बहुत परिश्रम और संभट होनी । प्रयोग—हिल गये दिल भी न, हिलना चाहिए । जाय हिल क्यों पेट का पानी हिले (सुमते०—हरिऔध, ३७)

### पेट का भूत

भूत । प्रयोग—यहां तक कि अब घर में कोई ऐसी चीज न बची, जिससे दो-चार महीने पेट का भूत सिर से टाला जाता (मान० (१)—प्रेमचंद, २८८)

### पेट का हलका

जिसके पेट में बात न पचे । प्रयोग—प्रभु, तुम बड़े पेट के हलके हो । यह कहने से क्या फायदा कि मिस साहब ने जमीन दिलवाई है (रंग० (१)—प्रेमचंद, ३५८-३५९); जाति हित का सवाल कोई भी कर सके हल न पेट के हलके (सुमते०—हरिऔध, ४५)

### पेट काटना

(१) जीविका-निर्वाह के आवश्यक खर्च में बचत करनी । प्रयोग—दिलीपकुमार और नरगिस के दर्शनों के लिए अपने बच्चों का पेट काटते हैं (दुधगाछ—दे० सो०, ३१३); अपनी मजदूरी घोर पेट काटकर भरो इस भिखमंगे का पेट (मुग०—वृ० दर्मा, ३८); वह धन जो भोजन में खर्च होना चाहिए बाल-बच्चों का पेट काटकर गहनों की भेंट कर दिया जाता है (गहन—प्रेमचंद, ५१); अनेक पाप, अपराध, छलछाद करके जो कुछ पेट काटकर देवता के लिए दिया जाता है, क्या वह भी ऐसे ही कामों के लिए है? (तिल्ली—प्रसाद, १८६); जो धन-दौलत हमने  $\times \times$  पेट काट-काटकर इकट्ठी की है  $\times \times$  वही तुम्हारे पीछे बारात की फुलवारी के समान लुट जाय, और मैं बंटी टुकुर-टुकुर देखा करूँ; यह सब भला मुझसे कैसे देखा जायगा (मा—कोशिक, १९)

(२) रोजी छीन लेनी । प्रयोग—दूसरों का पेट काटना पाप है (बौने०—रा० रा०, १०); किसी का पेट काटकर हम, किसी का गला दबाते हैं (मर्म०—हरिऔध, ८४)

### पेट की आंत भीतर सिमट जाना

कोष या आदचय होना । प्रयोग—धनिया के पेट की आंतें भीतर सिमट गईं (गोदान—प्रेमचंद, १५६)

### पेट की आग,—ज्वाला

भूख । प्रयोग—हां, हमारे पेट की ज्वाला हमें बहकाती है (विष०—प्रेमी, ४५); आग है लग गई कमाई में पेट की आग बुझ सके कैसे (सुमते०—हरिऔध, ७५)

### पेट की आग बुझाना,—ज्वाला शांत करना

श्रुधा शांत करनी । प्रयोग—एक दुकान से मिठाई और नमकीन लेकर बड़ी बेच पर बंटे-बंटे उन्होंने पेट की आग बुझा ली (कठ०—दे० सो०, ३०५); काम है सूझ बुझ का करते पेट की आग जो बुझाते हैं (चोखे०—हरिऔध, ३१); पेट की ज्वाला बुझाने के लिए उन्हें दोड़ धूप नहीं करनी पड़ती (सा० सो०—महा० द्विवेदी, ९१)

### पेट की कठिनाई,—चिन्ता

खाने-पचने की चिन्ता । प्रयोग—स्वारथ अगम, परमारथ की कहा चली, पेट की कठिन जगु जीव को जवार है



(कवि०—तुलसी, १४३); × × इस पर मां बोली थी कि घभी से पेट की फिकिर नहीं करेगा तो आगे बहतरा हो जायेगा (बल०—नागा०, ४); जो घादमी अपने पेट की फिक नहीं कर सकता, उसका विवाह करना मुझे तो घधमं सा मालूम होता है (गदन—प्रेमचंद, ५); अभी घपने ही पेट की चिंता है, तब एक अंधी की और चिंता हो जायगी (रंग० (१)—प्रेमचंद, १०-११)

### पेट की चिंता

#### दे० पेट की कठिनाई

#### पेट की ज्वाला

#### दे० पेट की आग

#### पेट की ज्वाला शांत करना

#### दे० पेट की आग बुझाना

#### पेट की थाह लेना, पेट की पाना

मन की गुप्त बात का अंदाज पाना या लेना। प्रयोग—हिलिमिलि भांति भांति हेत करि देख्यो तऊ-चेतकी चबा-इन के पेट की न पाई मैं (ठाकुर०—ठाकुर, ५); सुभागी ने नमझा—मुझे भांसा दे रहा है। मेरे पेट की थाह लेने के लिए यह जाल फंका है (रंग० (१)—प्रेमचंद, २०१)

#### (समा० मुहा०—पेट की थाह पाना)

#### पेट को पड़ना

खाने की चिंता होनी। प्रयोग—मुह पिटाए भी पिटा उसका नहीं क्यों न पेटू को पड़ेगी पेट की (बोल०—हरिऔध, २१९)

#### पेट की पाना

#### दे० पेट की थाह लेना

#### पेट की बात

गुप्त बात। प्रयोग—एक ही शब्द की भिन्न-भिन्न अनेक ध्वनियां हुई—“मालिक को सब मालूम है”—“जैसे पेट की बात ताड़ लेते हैं” (लिलो—निराला, ६९); पेट की बात जानना है तो पेट में पैठ क्यों नहीं जाते (चुभते०—हरिऔध, ४२)

#### पेट के गहरे

(१) बहुत चालाक। प्रयोग—अंधे पेट के बड़े गहरे होते

हैं, इन्हें बड़ी दूर की सूझती है (रंग० (१)—प्रेमचंद, १०४)

(२) बात को सुनकर अपने तई ही रखनेवाले।

#### पेट के पतले

(१) किसी बात को गुप्त रखने में असमर्थ। प्रयोग—घर जो होती है होहु मु सिर पर, पेट पातरें नहिं बचें सर (नंद० ग्रंथा०—नंद०, १३१)

(२) धन रोक रखने में असमर्थ होता। प्रयोग—अपने बेटों के लिए ही वह पेट की पतली हो सो बात नहीं, वह आतंक के लिए प्रसिद्ध थी फिर भी वह किसी से दूर नहीं थी (धरती०—वि० प्र०, १५५)

#### पेट के लाले पड़ना

खाने भर को भी न होना। प्रयोग—मुझे बराबर पेट के लाले रहे (चतुरी०—निराला, ३८)

#### पेट के लिये

जीविका के लिये। प्रयोग—इही उदर के कारणे जग जांच्यो निसं जाम (कबीर ग्रंथा०—कबीर, ३५); पाइ नर रतन, भयो राम सौ रत न बर, कंचन रतन पेट काज के हरे हरे (क० र०—सेनापति, ११८); पेट लागि बैराट घर, तपत रसोई भीम (रहीम कवि०—रहीम, ९); पेट लागि बैराट घर तपत रसोई भीम (राधा० ग्रंथा०—राधा० दास, ५९); जिम निज पापी पेट हेत सब आरज गोरव नादा (प्र० पी०—प्र० ना० मि०, १७१); जन कत पापी पेट हित, पाप करत न घघात (मम०—हरिऔध, २६); पेट के लिये ही लड़ते हैं भाई भाई (परि०—निराला, २२१)

#### पेट खलाना

अत्यन्त दीनता दिखानी; भूख होने का संकेत करना। प्रयोग—पेट अपना कभी खलाते हैं या कभी पीठ है दिखा देते (बोल०—हरिऔध, २२९)

#### पेट गड़ना

पेट में शूल उठना, दर्द होना। प्रयोग—काम गड़ने का किया जब जायगा पेट कोई तब गड़ेगा क्यों नहीं (बोल०—हरिऔध, २१५)

#### पेट गदराना

बचना होने के समय पेट बड़ना। प्रयोग—भूल गदराया



पेट गिरना या गिराना

४६२

पेट पर छुरी चलाना

हुआ जोवन गया, देखकर के पेट गदराया हुआ (बोल०—हरिऔध, २२१)

**पेट गिरना या गिराना**

गर्भपात होना या कराना। प्रयोग—हैं गिराकर पेट दिन दिन गिर रहे (बोल०—हरिऔध, २१८); आज सिर पीट पीट कर रोई गिर गये पेट पेटवाली का (बोल०—हरिऔध, २२१)

**पेट गुड़गुड़ाना**

वायु के कारण पेट में शब्द होना। प्रयोग—क्या बड़ी गड़बड़ नहीं हो जायगी गुड़गुड़ाता पेट जो गड़ता रहे (बोल०—हरिऔध, २१५)

**पेट चलना**

(१) भरण-पोषण लायक मिल जाना। प्रयोग—खेती से पेट चल जाय यही बहुत है। गाड़ कर कोई क्या रखेगा (गोदान—प्रेमचंद, ३६१); तब चलाये राज कैसे चल सके, अब चलाये पेट भी चलता नहीं (चुमते०—हरिऔध, ९०)  
(२) पतले दस्त घाना। प्रयोग—दूसरे ही दिन मठ के एक साधू का पेट मुंह चलने लगा (मैला०—रेणु, ४९)

**पेट छंटना**

तोंद कम होनी। प्रयोग—जब छंटा तब छंटा कैसे काया पेट छंटता नहीं छंटाने से (बोल०—हरिऔध, २१५)

**पेट छूटना**

(१) पतले दस्त होना। प्रयोग—एक सा सब छूटना होता नहीं छूटने से पेट छूटा पेट कब (चुमते०—हरिऔध, ११६)  
(२)

(२) जोषिका की समस्या से मुक्त होना। प्रयोग—देखिए प्रयोग (१) में (÷)

**पेट जलना या जलाना**

(१) अत्यंत भूख लगनी या भूखें रहना। प्रयोग—जब उसका पेट जलगा, तब वह घाप उठकर भायगी (मा० मा० (१)—कि० गो०, १३७); सहे आप दुस पेट जरावे जिमीदार का पोत भरै (सधा० ग्रंथा०—सधा० दास, २०); है न वह अन दूर कर दे जो जलन पेट जलता है हमारा तो जले

(बोल०—हरिऔध, २१७); जब पेट जलने लगता है तब तो आ-घाकर नाक रगड़ती है (बोल०—नागा०, २३)

(२) कोच जाना।

**पेट जारी रहना**

बारबार पालाना होना। प्रयोग—हम कसर की चपेट में पड़ते पेट जारी अगर नहीं होता (बोल०—हरिऔध, २१५)

(समा० मुहा०—पेट भरना,—पतला होना,—बिगड़ना)

**पेट धामे फिरना,—पकड़े फिरना**

भूख घूमना, पेट के लिये मांगते घूमना। प्रयोग—रात दिन पेट धाम कर अपना दीड़ते पेट के लिये हम हैं (चुमते०—हरिऔध, ७५); जो रहे अकड़े जगत के सामने बाज वे हैं पेट पकड़े फिर रहे (चुमते०—हरिऔध, ८१)

**पेट दिखाना**

पेट दिखाकर भूख होने का संकेत करना। प्रयोग—रह गये हैं न देखने वाले पेट अपना किसे दिखायें हम (चुमते०—हरिऔध, ७५); दीन धनी प्राधीन है, शीश नवावत बाहि। मान भंग की भूमि यह, पेट दिखावत ताहि (व० स०—वृन्द, १४८)

**पेट देना**

अपने मन की बात बतलानी। प्रयोग—अपनी पेट दियो तें उनको, नाक बुद्धि तिय सर्व काहेरी (सु० सा०—सुर, २७०८); भेद खोलें पर न खुलने भेद दे पेट लेवें पर न देवें पेट हम (बोल०—हरिऔध, २२०)

**पेट पकड़ना**

परेशान होना, व्याकुल होना। प्रयोग—निहालचंद मोदी अभी पांच हजार के लिये पेट पकड़े गया है (परीक्षा—श्री० दास, १८३)

**पेट पकड़े फिरना**

दे० पेट धामे फिरना

**पेट पर छुरी चलाना,—लात मारना**

रोजी छीन लेनी। प्रयोग—हमारे पेट पर लात मारते हैं तुम्हारे दामन साहब (दूधगाछ—दे० स०, ३०७); सरकार



पेट पर छुरी चलावेगी और हम चुपचाप भंडा बोते रहेंगे ?  
(परती०—रेणु, ४९९)

### पेट पर पट्टी बांधना

भोजन के अभाव में भूखे रहना । प्रयोग—दूसरे लोग अपने पेट पर पट्टी बांधकर इनके लिये दस लाख रोजाना कहां तक देते रहें ? (झुठा० (२)—यशपाल, ३३३); जो खाता है सो पेट पर पट्टी बांध कर खाता है (भारती०—रा० रा०, १०९)

(समा० महा०—पेट पर पत्थर बांधना)

### पेट पर लात मारना

दे० पेट पर छुरी चलाना

### पेट पलना

जीविका का जुगाड़ होना । प्रयोग—है जहां पर पेट भी पलता नहीं किस तरह मुख से वहां कोई जिये (चुभते०—हरिऔध, ७०)

### पेट पाटना

खाना, पेट भरना । प्रयोग—पाटते जो समुद्र थे उनको है पड़ी पेट पाटने ही की (चुभते०—हरिऔध, ८१)

### पेट पानी होना

पतले दस्त होना । प्रयोग—हो गया पानी किसी का जब लहू पेट कैसे तब भला पानी न हो (बोल०—हरिऔध, २२०)

### पेट पालना

किसी प्रकार निर्वाह करना । प्रयोग—आखेट इत्यादि से अपना पेट येन केन पाल लेते हैं (भट्ट नि०—बा० भट्ट, ४९); ईश्वर की दया से मैं अभी जवान हूँ; हट्टा कट्टा हूँ; और अपना पेट पाल सकता हूँ (भिला०—कौशिक, ४८); आपने बड़ी ईमानदारी की तो कौन से झंटे गाड़ दिये । सारी जिन्दगी पेट पालते रहे (गबन—प्रेमचंद, ५३); उड़ा कर माल दूसरों का, भूल कर भी न पेट पालें (मर्म०—हरिऔध, ९०); है तो छोटे ही पर अपने खेल-तमाशे दिलाते रहेंगे और पेट पालते रहेंगे (मृग०—बु० वर्मा, ११०)

### पेट पीठ एक होना,—से लगना

भूल या अस्वस्थता के कारण बहुत दुर्बल हो जाना ।

प्रयोग—नस गई मूल घंस गई आँखें, पेट है पीठ से सटा जाता (चुभते०—हरिऔध, ८०); पाट हम पेट भी नहीं पाते किस तरह पेट पीठ एक न हो (बोल०—हरिऔध, २१७); आज है जा रही दुही पोटी पेट है पीठ से लगा जाता (बोल०—हरिऔध, २१८)

### पेट पीठ से लगना

दे० पेट पीठ एक होना

### पेट-पूजा करना

भोजन करना । प्रयोग—बड़ा पाष है । पेट-पूजा के लिए कैसे-कैसे रूपक रचना जानता है (जहाज०—इ० जोशी, ४८१)

### पेट-पोंछना

अंतिम संतान । प्रयोग—इसे मत मार यह पेट-पोंछना है मेरी (प्रेम सा०—ल० ला०, २०); वही लड़की पेट-पोंछनी थी (गोदान—प्रेमचंद, २८३); मुबंश उसका कोरपच्छू लड़का है (परती०—रेणु, २४७)

### पेट फाड़कर खाना

ज्यादा खाना । प्रयोग—ईश्वर सेवक × × झुमता रहे थे कि इसमें शकर क्यों इतनी भौंक दी गई है । शकर कोई नियामत नहीं कि पेट फाड़कर खाई जाय (रंग० (१)—प्रेमचंद, ४०-४१)

### पेट फूलना

(१) कोई बात कहने या जानने के लिए बेचैन होना; बेचैन होना । प्रयोग—पेट न फूलत बिनु कहे, कहत न सागड़ डेर । मुमति बिचारे बोलिये, समझि कुफेर सुफेर (दोहा०—तुलसी, ४३७); यदि वे दूसरों को कोई ऐसा कार्य हाथ में लेते देखते हैं जिसमें समाज के साधुवाद की संभावना होती है तो इनका पेट फूलने लगता है (चित्ता० (१)—शुक्ल, २९); दूसरे का पेट फूला देख कर दूसरे का पेट क्यों है फूलता (बोल०—हरिऔध, २१३)

(२) बहुत हंसने के कारण पेट में कष्ट होना । प्रयोग—पेट जाये फूल इतना क्यों हंस (बोल०—हरिऔध, २१६)

(३) अधिक भोजन या वायुविकार के कारण पेट में कष्ट



## पेट बड़ा होना

होना । प्रयोग—रात खाना दो कौर ज्यादा खा गया था, सो पेट फूल गया (गबन—प्रेमचंद, १७९)

## पेट बड़ा होना

(१) मांग था लालच होनी । प्रयोग—लेकिन यहाँ तो जो जितने ऊँचे ओहदे पर है, उसका पेट भी उतना ही बड़ा है (रंगो (१)—प्रेमचंद, ३००)

(२) अधिक धारण करने की क्षमता होनी ।

## पेट बांधना

भूखे रहना । प्रयोग—कचहरी में जिले भर के किसान, पेट बांध कर पड़े हुए हैं (मेला०—रेणु, २२१); सज्जनता के नाते लोग आधे बेतन पर काम कर सकते थे, लेकिन पेट बांध कर काम करना कब मुमकिन था (मान० (४)—प्रेमचंद, ५९)

## पेट भर कर

इच्छा भर । प्रयोग—सिर पटक घास पेट भर रोई गिर गये पेट पेटवाली का (बोल०—हरिऔध, २२१)

## पेट भरना

(१) इच्छा पूर्ति होनी, किसी वस्तु की इच्छा बाकी न रह जानी । प्रयोग—सर अपसर समझ नहीं, पेट भरना मुँ काज (कबीर ग्रंथा०—कबीर, ५१); अपनोड पेट भरत है निसि दिन, और न लैन न दैन (सु० सा०—सूर, २८८५); अब भी एक-एक पहना बनवाती रहती है । न जानें कब उसका पेट भरेगा (गबन—प्रेमचंद, १३६); दो हजार रुपया तेरे सेठ को पगड़ी दी, अभी उसका पेट नहीं भरिया (पैतरे—अशक, १२०)

(२) भोजन से तृप्त होना । प्रयोग—वहाँ और लोगों के पेट भरने के साथ चोर बाजार वालों का भी पेट भरना पड़ता है (मेरे०—गुलाब०, ७९) (÷)

(३) जीविका चलानी । प्रयोग—यह सब करना पड़ता है X X दस आदमियों का इससे पेट भरता है (भारती०—रा० रा०, ९०); काट किसी का पेट, उदर जो है अपना भरता (मर्म०—हरिऔध, १४०)

(४) घूस देना । प्रयोग—देखिए प्रयोग (२) में (÷)

## पेट भाड़ होना

बहुत खानेवाला । प्रयोग—पेट उनका भाड़ हो पर जाय भर पेट जलता हो किसी का तो जले (बोल०—हरिऔध, २१८)

## (समा० मुहा०—पेट भरसाई होना)

## पेट भारी होना

(१) खाना न पचने के कारण पेट भरा-भरा लगना । प्रयोग—पेट कुछ भारी मालूम देता ? (रेशमी०—राम० वर्मा, ९५); जब भरे पर भरा गया है वह तब भला क्यों न पेट भारी हो (बोल०—हरिऔध, २१५)

(२) किसी का खाना भारी या महंगा लगना । प्रयोग—यहाँ कौन लड़के रो रहे हैं, एक मेरा ही पेट उसे भारी है न ? (रंग० (१)—प्रेमचंद, २००)

## पेट मारना

किसी की रोड़ी पर घाघात करना । प्रयोग—क्यों छुरी मिल न जाय सोने की पेट है मारता नहीं कोई (बोल०—हरिऔध, २१४)

## पेट मुँह चलना

दस्त और उलटी होनी । प्रयोग—दूसरे ही दिन मठ के एक साधू का पेट-मुँह चलने लगा (मेला०—रेणु, ४९)

## पेट में आग लगाना

बहुत भूख लगनी । प्रयोग—बल नहीं है, क्यों बलाघों से बचें, पेट में है आग बलती तो बले (बोल०—हरिऔध, २१७)

## पेट में कसर होना

(१) खुलकर दस्त न होना । प्रयोग—हम कसर की चपेट में पड़ते, पेट जारी अगर नहीं होता (बोल०—हरिऔध, २१५)

(२) मन में दुर्भाव होना । प्रयोग—तो न हम बैठते पकड़ कर सर पेट तुझ में न जो कसर होती (चोखे०—हरिऔध, ११५)

## पेट में खलबली मचाना

(१) भीतर से जी बहुत खबड़ाना या खिन्न होना । प्रयोग—परन्तु जस्मों के लिए यह प्रसंग बड़ा जहदिकर



पेट में चूहा कूदना

४६५

पेट में पानी न हजम होना

होता। उसके पेट में खलबली मच जाती थी और आमु बहाकर थोड़ी देर के लिए अपना जी कुछ हलका कर लेती थी (मिखा०—कोशिक, १९०)

(२) किसी काम को करने या जानने की घातुरता होनी। प्रयोग—दौड़ में सब जातिवा आगे बढ़ें। पेट में सब के पड़ी है खलबली (बुभते०—हरिऔध, ६७); मेरे पेट में खलबली मची हुई है, कहते हो जल्दी क्या है? (निर्मला—प्रेमचंद, १९७)

(समा० मुहा०—पेट में बुलबुला उठना,—उथल पुथल मच जाना)

पेट में चूहा कूदना,—दौड़ना

(१) किसी बात को जानने की उत्सुकता होनी। प्रयोग—मुझे सब भी विश्वास न आया पर मारे कुतूहल के पेट में चूहे दौड़ रहे थे (मान० (४)—प्रेमचंद, २९०) (÷)

(२) जोरों की भूख लगनी। प्रयोग—है बुरा हाल भूख से मेरा पेट में कूद रहे चूहे (बुभते०—हरिऔध, ८२)

(३) खलबली मचनी। प्रयोग—महाजनों ने जो ऊख कटते देखी तो पेट में चूहे दौड़े (गोदान—प्रेमचंद, १८७); चासीराम ने जब से लाभ का नाम सुन लिया था, तभी से उनके पेट में चूहे कूदने लगे थे (मा—कोशिक, ४३); देखिये प्रयोग (१) में (÷) भी

पेट में चूहा दौड़ना

दे० पेट में चूहा कूदना

पेट में छुलुंदर छुलुवाना

कोई बात जानने की बहुत उत्सुकता होनी। प्रयोग—कोई जनिजति आई गांव में कि पेट में छुलुंदर छुलुवाने लगता है (परती०—१७, ३८०)

पेट में छुरी भोंकना

किसी का अहित करना; जीविका छीननी। प्रयोग—भर सके पेट तो रहे भरते, किसलिये पेट में छुरी भोंके (बोल०—हरिऔध, २१७)

पेट में जाना

किसी वस्तु का हजम हो जाना। प्रयोग—वही तो बची है

—और तो सब घाप लोगों के पेट में चला गया (तिसली—प्रसाद, ३७)

पेट में जी न होना

बहुत डर जाना। प्रयोग—होले मड़ मड़पति सब कापे जीउ न पेट हाथ हिय चापे (पद०—जायसी, ४२१२)

पेट में डालना

(१) खा जाना। प्रयोग—भूल में साग पात क्यों देखें जो सकें डाल पेट में डालें (चोखे०—हरिऔध, २०)

(२) सुनकर चुप रहना, दूसरों से न कहना। प्रयोग—फिर यह कैसे संभव था कि बहू मोहन के विषय में कुछ सुने और पेट में डाल ले (मान० (१)—प्रेमचंद, १७१); बात जो भेद डाल दे उसको जो सकें डाल पेट में डालें (बुभते०—हरिऔध, ४२)

पेट में पड़ना

गर्भ में घाना, जन्म पाना। प्रयोग—गोद भर, बित घाय के जाय धरौ गहि मोद सों माय के आगे। पेट परे को लखें फल ज्यों, निपजें हौ सपूत मुभागनि आगे (घन० कवित्त—घना०, १९९)

पेट में पांव होना

चालबाज होना। प्रयोग—है जहां पांव पांव है ही बां, पेट में पांव क्यों किसी के हो (बोल०—हरिऔध, २१३)

पेट में पानी न पचना,—न हजम होना

(१) बात को अपने तक किसी प्रकार गुप्त न रख सकना। प्रयोग—हां कहीं बुढ़िया से न कह देना, नहीं तो उसके पेट में पानी न पचेगा (गहन—प्रेमचंद, १६५); बुढ़िया कल फिर घायेगी, उसके पेट में पानी न हजम होगा (मान० (१)—प्रेमचंद, २७४) (÷)

(२) मन में बहुत खलबली मचनी। प्रयोग—पेट में बात पच सके कैसे पच सका पेट का नहीं पानी (बोल०—हरिऔध, २१३); देखिये प्रयोग (१) में (÷) भी

पेट में पानी न हजम होना

दे० पेट में पानी न पचना



पेट में पानी पड़ना

४६६

पेट लेना

### पेट में पानी पड़ना

मन में संदेह होना वा साटका होना । प्रयोग—पर राजा की तरफ से सदा के लिए पेट में पानी पड़ गया (चोटी०—निराला, ८८)

### पेट में पानी होना

मन में खलबली होनी । प्रयोग—सजाइवी खोदाबक्सा, मुन्ना और जटाशंकर के पेट में पानी था (चोटी०—निराला, ११७)

भेद लेना । प्रयोग—पेट की बात जानना है तो पेट में पंठ क्यों नहीं जाते (चुमते०—हरिऔध, ४२)

### पेट में बल पड़ना

पेट में दब होना (हंसी के कारण) । प्रयोग—मैंने जब से यह खबर अपने दोस्त नवाब अब्दुल्लाह सा से सुनी है तब से हंसते-हंसते मेरे पेट में बल पड़-पड़ जाते हैं (गु० मि०—बा० मु० गु०, २४०); सरदार जी की बातें सुनते-सुनते दीपाली के पेट में बल पड़ गये थे (कठ०—दे० स०, ११७); बल उन्हीं के पेट में पड़ जायगा है अगर हंसना हंसोइों को हुंसे (बोल०—हरिऔध, १०६)

### पेट में बात की गंध न पचना,—बात न पचना,—बात न रहना

बात को अपने तक ही न रख पाना । प्रयोग—यह बात मेरे पेट में नहीं पच सकती (इंशा०—इंशा०, ११०); स्त्री से कठिन बात का भेद कहना उचित नहीं क्योंकि इसके पेट में बात नहीं रहती (प्रेम सा०—ल० ला०, १९१); चूरन खावे एडिटर जात । जिनके पेट पचै नहीं बात (मा० ग्रंथा० (१)—भारतेंद्र, ६६३); तेरे पेट में बात पचती नहीं कुछ सुन पायेगी तो गांवभर में बिड़ोरा पीटती किरानी (गोदान—प्रेमचंद, १०९); ज्ञान बाबू को धैर्य कहाँ ? पेट में बात की गंध तक न पचती थी (मान० (१)—प्रेमचंद, २६३); पेट में बात पच सके कैसे पच सका पेट का नहीं पानी (बोल०—हरिऔध, २१३); ओ मनुजात, तेरे पेट में पचती नहीं बात ? (बुद्ध०—वचन, १०२); मगर मुंशी जी से न

कहिएगा, उनके पेट में बात नहीं रहती (सुकुल०—निराला, ३४)

(समा० मुहा०—पेट में बात न खपना)

### पेट में बात न पचना

दे० पेट में बात की गंध न पचना

### पेट में बात न रहना

दे० पेट में बात की गंध न पचना

### पेट में बुलबुला उठना

किसी बात को जानने की उत्कंठा होनी । प्रयोग—जुगन उसी वक्त मिसेज टंडन के घर पहुँची । उसके पेट में बुल-बुले उठ रहे थे, पर मिसेज टंडन सो गयी थी (मान० (१)—प्रेमचंद, २७६)

### पेट में रखना

अपने तक ही रखना । प्रयोग—घोछे नर के पेट में रहे न मोटी बात (वृ० स०—वृन्द, १३४); काटिये पेट मत किना का भी पेट की बात पेट में रखिये (बोल०—हरिऔध, २२०)

### पेट में समाना

(१) स्वीकार होना । प्रयोग—जिन पं तै लै घाए ऊधी गिनहि के पेट समंहे (सु० सा०—सुर, ४२८२)

(२) छल से किसी वस्तु को ले लेना ।

### पेट में होना

(१) मन में होना । प्रयोग—मुनाता है मुंह मोठी बात पेट में रहता है कुल और (मर्म०—हरिऔध, ११२)

(२) जानकारी होनी । प्रयोग—ये स्मारक न जाने कितनी बातें अपने पेट में लिए कहीं खड़े, कहीं बँडे, कहीं पड़े हैं (जिता० (१)—शुक्ल, २६२); ले उगलवा मात पकड़ें पेट हम पेट में है तो रहे क्यों पेट में (चुमते०—हरिऔध, ३२)

### पेट रहना

गम रहना । प्रयोग—एक है सोचती बिपत आई क्यों रहे पेट रह सकेगी पत (बोल०—हरिऔध, २२१)

### पेट लेना

मन का भेद जान लेना । प्रयोग—भेद खोलें पर न खुलने भेद दें । पेट लेवे पर न देवे पेट हम (बोल०—हरिऔध, २२०)



पेटवाली

४६७

पैज पड़ जाना

**पेटवाली**

गर्भवती । प्रयोग—साज सिर पीट कर रोई गिर गये पेट पेटवाली का (बोल०—हरिऔध, २२१)

**पेट से मारना**

रोड़ी छीन लेनी । प्रयोग—जमादार गरीब घादमी हूँ, पेट से न मारिएगा (चोटो०—निराला, ६२)

(समा० मुहा०—पेट में लात मारना)

**पेट से होना**

गर्भवती होना । प्रयोग—जब उसे हर बार खोना ही पड़ा पेट से होना न होना एक है (बोल०—हरिऔध, २१५)

**पेट होना**

गर्भ होना । प्रयोग—पेट उसे भी था पर हिसार की बनियाइन की तरह सजूरपुर की जाटिन दुर्बल नहीं (कला०—उग्र, ६१)

**पेड़ काट पत्ता सींचना**

मूल आधार नष्ट करके वस्तु बनाए रखने की इच्छा करनी; असफल काम करना । प्रयोग—पेड़ काटि तें पालउ सींचा, मीन जिअन हित बारि उलींचा (राम० (अ)—तुलसी, ५२४)

(समा० मुहा०—पेट काट कर डाल सींचना)

**पेशानी पर बल पड़ना**

चित्ता या खिन्नता प्रगट होनी । प्रयोग—पड़े बलाओं में जिस पेशानी पर कभी न बल पाया (बैदेही०—हरिऔध, ५७)

**पैंग बढ़ाना**

(१) भूले को तेज करना । प्रयोग—रिमनिम रिमनिम बरखा रुत की, सलियां पैंग बढ़ायें (पैतरे—अशक, ७९)

(२) जान पहचान बढ़ाना ।

**पैड़ा देखना**

सहारा चाहना । प्रयोग—आपु ही कृपाल पालो राम भुवपाल और दूसरो न तो सौ, पैड़ी देखत हों कोन को ? (क० र०—सेनापति, १०६)

**पैड़ी बढ़ना**

पर में जाना । प्रयोग—ब्रौया जियाँ पापणी, तामू प्रीति

न जोड़ि, पैड़ी बढ़ि पाछा पड़े, लाग मोटी खोड़ि (कबीर ग्रंथा०—कबीर, ३३)

**पैड़ें पड़ना**

पीछे पड़ना; बारबार तंग करना । प्रयोग—पैड़े परे पापी ये कलापी निवधौस ज्योही बातक ! बातक खो ही तू हूँ कान फोरि लें (घन० कवित्त—घना०, ५०)

(समा० मुहा०—पैड़ा मारना)

**पैतरा काटना**

घपना बचाव करना; प्रहार बचा जाना । प्रयोग—भुवन अचकचा गया । पैतरा काटता हुआ बोला “पहले तो डाक्टर कहना आवश्यक नहीं है” (नदी०—अज्ञेय, ३३)

**पैतरा दिखाना**

नयी-नयी युक्ति दिखाना । प्रयोग—लेकिन पैतरे देखना हाणिम भाई के (पैतरे—अशक, ९७)

**पैतरा बदलना**

(१) लड़ने को प्रस्तुत होना । प्रयोग—स्वाधीनता का मूल्य रक्त है । जब हममें उसके देने की शक्ति हो नहीं है, तो व्यर्थ में कमर क्यों बांधें, पैतरे क्यों बदलें (रंग० (१)—प्रेमचंद, ४१७)

(२) एक के बाद दूसरी युक्ति का प्रयोग करना । प्रयोग—हम धबरायें कि कहीं सचमुच ही दादा जी स्कूल न चले जायें, पैतरा बदल कर मेने कहा—आपके डर से जुमाना न करेंगे तो मन में खार जाये बैठे रहेंगे (पैतरे—अशक, २०)

**पैतरा भरना**

घागे बढ़कर दांव लेना । प्रयोग—हैं उतरते प्रकड़ अलाड़े में, पैतरा पांव भर नहीं पाता (चुमते०—हरिऔध, ११३)

**पैतरे बाज होना**

बड़ा चालाक होना । प्रयोग—नंबर बन पैतरेबाज हैं हाणिम भाई (पैतरे—अशक, ९७)

**पैज पड़ जाना**

जिद होना । प्रयोग—जान घनजानन्द सौ मोहि तुम्हें पैज



### पैडल फेंकना

परी, जानियेगी टेक टरे कौन धौ मलोलिहै (घन० कवित्त—घना०, ५९)

### पैडल फेंकना

किसी पैडल को चलाना। प्रयोग—धीरे धीरे कुछ गुन-गुनाता वह पैडल फेंकता चला जा रहा था (नदी०—अज्ञेय, ४१)

(समा० मुहा०—पैडल मारना)

### पैदा करना

कमाना। प्रयोग—अब बिना कुछ पैदा किए काम नहीं चलेगा (मा—कौशिक, १६३)

### पैर अड़ाना

किसी बात में व्यर्थ सम्मिलित होना; फिजूल खर्च देना। प्रयोग—वही गिर गया पांव जिसने अड़पा (चुमते०—हरिऔध, १८९)

### पैर आंख से लगाना

आदर करना। प्रयोग—नित बहुत दौड़ घूंप जी से कर। जो गिरी जाति को उठा दें। चाहिए पांव चाहे से उनका। चूम लें आंख से लगा लें (चुमते०—हरिऔध, ५)

### पैर उखड़ना या उखाड़ना

(१) ठहर न सकना। प्रयोग—निश्चय पानी में घुस पड़ा, पर लहरे तेज थी, पांव उखड़ गये (कर्म०—प्रेमचंद, १४४); दूसरों के उखाड़ देने से पांव क्यों है उखड़ उखड़ जाता (चुमते०—हरिऔध, ९)

(२) लड़ने के लिए सामने खड़े न रह सकना। प्रयोग—पेशवा के दरतों के पैर उखड़ चुके थे (झासी०—पृ० धर्मा, ३९४); इस आग के रहस्य के बारे में अनुमान है कि राजगढ़ की घटना के बाद से मुसलमानों के पांव उखड़ रहे हैं (झूठा० (१)—यशपाल, ३०५); मालती के पांव उखड़ते हुए मोलूम हुए, वह बंदूक संभालती हुई उनसे चिमट गयी (मोदान—प्रेमचंद, ७९); जाड़े के पांव उखड़ रहे थे (झूठा० (२)—यशपाल, ३४३)

(समा० मुहा०—पैर न टिक सकना,—न ठहरना)

### पैर उठना या उठाना

(१) जाने के लिए तैयार होना या जाना। प्रयोग—जो

चरण तुम्हारे वेणुवादन की लय पर तुम्हारे नील जलज-तन की परिजमा देकर नाचते रहे वे फिर घर की ओर उठ कैसे पाये (कनु०—भारती, १९); बुआ उसकी बात पर आ चुकी थी, एक सत्य एक न-जाना दबाव एक तड़प थी जिससे उनके पैर उठे (चौटी०—निराला, १३३-१३४); पैठने को जाति हित के पैठ में ए हमारे पांव उठ पाये कहां (चुमते०—हरिऔध, ११३)

(२) काम की घोर भुकाव होना या करना; युक्ति करना। प्रयोग—प्रभात और मुकन ने रात के सन्नाटे में मणिवर से सलाह की—“अब क्या पग उठाया जाय ?” (ब्रह्म०—दे० स०, २५९); उधर हमारे पैर तभी उठ सकते हैं जब हमें कुछ राज मिल जायगा (चौटी०—निराला, २४); आंख उठती दीन दुलियों पर रहे पांव गिरतों के उठाने को उठे (चोखे०—हरिऔध, २०)

### पैर उठाकर चलना,—उठाना

(१) चलने के लिए कदम उठाना। प्रयोग—दूसरे दिन गया ने बेलों को हल में जोता; पर इन दोनों ने जैसे कदम उठाने की कसम खा ली थी (मान० (२)—प्रेमचंद, १५३); वह सकेगा उठा पहाड़ नहीं पांव भी जो उठा नहीं पाता (बोल०—हरिऔध, २३६)

(२) जल्दी-जल्दी पैर आगे रखना। प्रयोग—क्यों ठिकाने न चाल पहुंचाती पांव जो हम उठा उठा चलते (बोल०—हरिऔध, २३८)

(३) दे० पैर उठाना।

(समा० मुहा०—पर उठाकर जाना)

### पैर उठाना

दे० पैर उठना और पैर उठाकर चलना

### पैर ऊँचे नीचे पड़ना

दुराचरण करना, अनुचित काम करना। प्रयोग—अगर विवाह में विलम्ब हुआ घोर कन्या के पांव कहीं ऊँचे-नीचे पड़ गये तो फिर कुटुम्ब की नाक कट गयी (मान० (३)—प्रेमचंद, ३८); कितने ही मेरे पांव पड़े ऊँचे-नीचे (सो०—वचन, २९८)







### पैर कड़ना

(१) किसी काम को करने को उद्यत होना। प्रयोग—  
देश-जाति-हित साधन-रत रह जिनके प्रगति पांव हैं कड़ते  
(मर्म०—हरिऔध, ८)

(२) अभिचारी होना।

(समा० महा०—पैर निकलना)

### पैर के तलवे चाटना

सुशामद करनी। प्रयोग—एक से एक विद्वान को, एक  
से एक पुण्यात्मा को मैं खरीद सकता हूँ, उससे अपने पैर  
के तलवे चटवा सकता हूँ (इंस्टा०—भग० दर्मा, १८)

### पैर के नीचे की मिट्टी

वास्तविकता, यथार्थ। प्रयोग—साहित्य के उपासक अपने  
पैर के नीचे की मिट्टी की उपेक्षा नहीं कर सकते (अशोक०  
—४० प्र० द्वि०, १८४)

### पैर खींचना

(१) विमूल होना। प्रयोग—है खचाखच मची हुई तो  
क्या खींच लें पांव हम न खाल खिंचे (चुमते०—हरिऔध, १२)

(२) किसी काम से विरत करना-बदनाम करना। प्रयोग—  
पट बुरी खींचतान पक्षों में है हमी पांव खींचने वाले  
(चुमते०—हरिऔध, १०७)

### पैर गड़ना या गाड़ना,—जमना या जमाना

(१) स्थित दृढ़ होनी या करनी। प्रयोग—जम गये,  
छोड़ता जगह क्यों है क्यों नहीं गड़ पहाड़ लौ पाता।  
दूसरों के उखाड़ देने से पांव क्यों है उखड़ उखड़ जाता  
(चुमते०—हरिऔध, ९); यह तो कहता है, अभी साल भर  
तो काम पर लगे हुआ है। पांव जम जायें और कुछ  
तरक्की भी हो जायें..... (झूठा० (१)—यशपाल, १०५);  
जिन राष्ट्रों के सिर पर दुश्मनों के पैर जमे हुए थे वे धूल  
भाड़कर फिर विजयी राष्ट्रों के दल में घा खड़े हुए हैं  
(अशोक०—४० प्र० द्वि०, १९); छोटी चित्त वी, परन्तु  
उनके पैर जम-जम कर किले की ओर गये थे (झासी०—  
१०० वर्षा, ५५); इसका यह उपाय नहीं कि हम एक और  
बाहरी शक्ति को यहां पैर जमाने दें (विप०—प्रेमी ९);

एक बार ऐसी भरोसे की वस्तु तैयार कर लेने पर जो कि  
बाजार में कम्पिटेशन के होते हुए भी अंगद की भांति  
दृढ़ता के साथ घपना पैर जमा लेगी, वह दिग्विजय की  
तैयारी कर लेता है (मेरे०—गुलाब०, ६१)

(२) कहीं टिक कर रहना। प्रयोग—जब से कुल्सी की  
हालत संगीन हुई तब से उनकी स्त्री के वहां एक क्षण पैर  
नहीं जमते (कुली०—निराला, १३५)

### पैर गहना,—पकड़ना

(१) विनय एवं दीनता से कहना। प्रयोग—बार बार  
गहि चरन संकोची चली बिचारि बिबूध मति पोथी (राम०  
(अयो)—तुलसी, ३८३); उठि दोरे नृप सुनत ही जाइ  
गहे तब पाद (केशव० (२)—केशव, २३५); जिय नेकु बिचारि  
कैं देह बताय तहा पिय ! दूरितें पाय गहौ (घन० कवित्त—  
घना०, ५२); संगीन देखते ही मुंह फाड़ देते हैं और पैर  
पकड़ने लगते हैं (गु० कहा०—गुलेरी, ५०); सब के पांव  
पकड़ता है वह कह बातें दुख भरी (मर्म०—हरिऔध,  
१२२); किसी परमहंस के पांव क्यों नहीं पकड़ते ? बेड़ा पार  
हो जाय (सु० सु०—सुदर्शन, २५); जा, जाकर अपने मालिक  
के ही पांव पकड़, वह तुझे माफ़ कर देंगे (बल०—नागा०,  
९८)

(२) जाने से रोकना।

(३) पैर छू कर नमस्कार करना।

### पैर गाड़ना

(१) जम जाना। प्रयोग—दौड़ कर के जाति हित मैदान  
में पांव कंसे वह भला सकता गड़ा (चुमते०—हरिऔध, ९०)

(२) अपनी बात पर अटल रहना।

### पैर चांपना

(१) सुशामद करनी। प्रयोग—जो गला चांप चांप देते हैं  
पांव हम चांप हैं रहे उनका (चुमते०—हरिऔध, १०७)

(२) सेवा करनी।

### पैर चाटना

सुशामद करनी; दीन रहना। प्रयोग—पांव को चाट चाट  
जो जीये, है अंगूठा हमें चटाते वे (बोल०—हरिऔध, १५२)



## पैर चूमना

४७१

पैर ठहरना

### पैर चूमना

(१) अधीन होना। प्रयोग—मेल को हम लगा रहे हैं लात, फूट के पांव हम रहे हैं चूम (मर्म०—हरिऔध, ९७) (÷)

(२) बहुतायत होनी। प्रयोग—माता-पिता के छोटे से कच्चे आनन्दहीन घर को छोड़कर वह एक विशाल भवन में घायी थी जहां सम्पत्ति उसके पैरों को चूमती हुई जान पड़ती थी (मान० (१)—प्रेमचंद, २३५)

(३) आदर करना; वश में होना। प्रयोग—घों में तुम्हारा सम्मान करता हूँ, सदा करूँगा, तुम्हारे पैर चूमूँगा (नदी०—अज्ञेय, ९२); देखिए प्रयोग (१) में (÷) भी।

(४) खुशामद करनी। प्रयोग—जब किसी का पांव है हम चूमते, हाथ बांधे सामने जब हैं खड़े (बोले०—हरिऔध, २८)

### पैर छलनी होना

चलते-चलते बहुत कष्ट होना; पैर छिन्न जाना। प्रयोग—छलनी पैर हुआ जाता है कितना और रहा चलना (नूर०—भक्त, १२); कोस काले चल कलेजा हिल गया पांव कांटों से छिले छलनी बना (चुमते०—हरिऔध, ७६)

(समा० मुहा०—पैर चलनी होना)

### पैर छानना

पैर पकड़ना; विनती करनी। प्रयोग—मेरी दादी कांपते हाथों मालिक के पैर छाने हुये है (बल०—नागा०, ३)

### पैर जमना या जमाना

दे० पैर गड़ना

पैर जमीन पर न पड़ना,—धरती पर न पड़ना,—सीधे न रखना

(१) बहुत लुप्त होना। प्रयोग—उसका पति जब समुराल आता है, शन्नो के पांव जमीन पर नहीं पड़ते (मान० (७)—प्रेमचंद, १४); उनके पांव धरती पर न पड़ते थे (चेतन—अश्क, ४८); राज-मा घाज कर रहे हैं वे XX किस तरह पांव रख सकें सीधे (बोल०—हरिऔध, २४४); मुभागी

फूली न समाती थी। उसके पांव पृथ्वी पर न पड़ते थे (सु० सु०—सुदर्शन, ५०-५१)

(२) बहुत घमंड करना। प्रयोग—गर्व के मारे उसके पांव जमीन पर न पड़ते थे (मान० (३)—प्रेमचंद, १७)

(समा० मुहा०—पैर जमीन पर न पड़ना, पैर सीधे न पड़ना)

### पैर टलना

विचलित होना; मुकाबला करने से पीछे हटना। प्रयोग—क्यों न टल जाय चांद औ मूरज मूर का पांव टल नहीं पाता (बोल०—हरिऔध, २४१)

### पैर टालना

जड़ हिलानी; हटाना। प्रयोग—दुख न भोगें उखाड़ दें उसको है घगर जम गया हिला डालें। लाभ क्या टालटूल से होगा जो सकें टाल पांव को टालें (चुमते०—हरिऔध, ३२)

### पैर टिकना या टिकाना

(१) कहीं स्थिर होकर रहना। प्रयोग—पाव न टिके पपीलका, लोगनि सादे बेल (कबीर ग्रंथा०—कबीर, ३१)

(२) स्थिति बनी रह जानी। प्रयोग—वहीं जमाना पांव जहां पर वह सकता हो टिक (मर्म०—हरिऔध, १४२)

### पैर टूटना

पैरों में दरं होना। प्रयोग—जब खड़े-खड़े बड़ी देर हुई और पैर टूटने लगे XX तब राय नारायण दास घानरेरी मजिस्ट्रेट होनदार की भांति बोल उठे “सिट डोन” (बैठ जाओ) (भा० ग्रं० (२)—भारतेन्दु, ९३९)

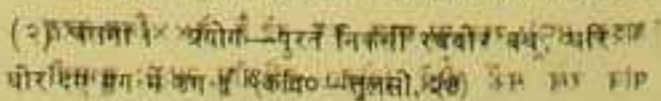
### पैर टेकना

पैर पकड़ कर आश्रय चाहना। प्रयोग—मुकल लागि पग टेकेउं तोरा। मुवा क सेंबर तू भा मोरा (पद०—जायसी, २११४)

### पैर ठहरना

खड़े रह पाना। प्रयोग—किस तरह पांव तो ठहर पावें, है कहीं के कहीं अगर रखते (बोल०—हरिऔध, २३७)







पैर धरती पर न पड़ना

(३) आना । प्रयोग—कबहुं फिर पांउ न देंहौ इहां भजि जैंहौं तहां जहां सूधी सहौ (जग०—पद्माकर ३१); तब जाओ तुम ! इधर भूल कर भी पैर न देना (वैशाली० (१)—चतुर०, ४३)

**पैर धरती पर न पड़ना**

दे० पांच ज़मीन पर न पड़ना

**पैर धरना**

(१) आना । प्रयोग—मकु तेहि मारग होइ परौ कंत धरं जहं पाउ (पद०—जायसी, ३०१२); मेरिये कुमति और कहा कहौ केशोदास लागति है लाल लाज इहां पाई धारे की (केशव०—केशव, ८०); पीछे डारि अधमन हम दीनो दूनी मन तुम्है नुम नाथ इत पाउ न धरत हो (क० १०—सेनापति, ८)

(२) दीनता से विनय करनी ।

(३) पैर छू कर प्रणाम करना ।

**पैर धुलघाना**

आदर करवाना । प्रयोग—धो सके हैं धगर न मन का मैल चाहिये तो न पांव धुलवावें (बोल०—हरिऔध, २४३)

**पैर धो-धोकर पीना,—पखारकर पीना**

बहुत आदर या खुशामद करनी । प्रयोग—अबकी ऐसी मेहरिया ला दूंगा कि उसके पैर धो-धो कर पिओगे (मान० (१)—प्रेमचंद, १४४); हाथ धो वे आज पीछे हैं पड़े, जो हमारा पांव धो पीते रहे (बुभते०—हरिऔध, ८२); पांव की धूल झाड़ पलकों से पांव उनका पखार कर पी लें (बोल०—हरिऔध, २४०)

**पैर धोने लायक न होना**

तुलना में अत्यन्त तुच्छ होना । प्रयोग—तेरे तो उनके पैर धोने लायक भी नहीं हैं (धरती०—वि० प्र०, ३६); मगर पाले पड़ी एक खसट के ओ तुम्हारा पैर धोने लायक भी नहीं (सेवा०—प्रेमचंद, ५४)

**पैर न रखना**

(१) किसी कार्य की ओर प्रवृत्ति न होनी । प्रयोग—रघुबंसिंह कर सहज सुभाऊ । मनु कुपंष पगु धरद न काऊ (राम० (बाल)—तुलसी, २३९)

४७३

पैर (पैरों) पड़ना

(२) स्थान-विशेष पर न जाना ।

**पैर निकालना**

(१) आचरण-भ्रष्ट होना । प्रयोग—अब उसने पैर निकाले हैं, बातों में मुझे उड़ाती है (नूर०—भक्त, ५३)

(२) किसी काम की शुरुआत करनी । प्रयोग—लेकिन उपदेश की सीमा के बाहर व्यवहार-क्षेत्र में किसी ने पांव निकाला और समाज ने उसकी गरदन पकड़ी (कर्म०—प्रेमचंद, ९१); हम निकालें पांव, पावें जो निकल । हाथ दिखलावें, दिखावें हाथ क्यों (बोल०—हरिऔध, १७२)

(३) जाना । प्रयोग—जवान लड़का बहू के रूप में फंसकर बाहर पैर नहीं निकालता (लिली—निराला, ९१)

**पैर पकड़ कर सेवा करना**

सादर सेवा करनी । प्रयोग—दरब लेइ तो मानौं सेव करो गहि पाउ (पद०—जायसी, ४२१३)

**पैर पकड़ना**

दे० पैर गहना

**पैर पखारकर पीना**

दे० पैर धो-धोकर पीना

**पैर पटकना**

(१) दखल देना । प्रयोग—इतना स्याल रखिये कि किसी के राज में अपना पैर नहीं पटकना चाहिए (आंसी०—वृ० वर्मा, ३८३)

(२) क्रोध में पैर पटकना ।

(३) प्रयत्न करना ।

(४) पछता कर रह जाना ।

**पैर (पैरों) पड़ना,—पर गिरना,—लगना**

(१) प्रणाम करने के लिए चरण छूना । प्रयोग—जा कारण मैं डूँडता, सनमुख मिलिया घाद । धन मैली पिव उजना, सागि न सकौ पाइ (कबीर ग्रंथा०—कबीर, १५); भरि सेंदुर आगें होइ खरी । परसि देव ओ पाएन्ह परी (पद०—जायसी, २०१९); मारत हूं पा परिअ तुम्हारें (राम० (बाल)—तुलसी, २७९); पूजा करि पाईं परि बिगसे (नंद०



ग्रंथा०—नंद, १६५); प्रथम अज्ञान एक चढ़ि के विमान  
भारुषी, वृक्षत हौ गंगा तोहि पर पर पाइ हौ (जग०—  
पद्माकर, ९५) (÷); वे चली चली नन्द रानी के निकट  
आय पावों पड़ बोली—जो तुम × × (प्रेम सा०—स०  
सा०, ३१); उनके पर का घर मुरजी के पांव पर गिरा  
(इशा०—इशा०, १०३)

(२) बिनती करना। प्रयोग—पाव लागि पैरी धनि  
हाहा। चरा नेह जोर रे नाहा (पद०—जायसी, ३०१७);  
सो कछु जतन करी पा लागी, मिटै हिये की मूल (सु० सा०  
—सूर, ४३०४); इतनी सुनत विभीषन बोले, बंध पाइ परी  
(सु० सा०—सूर, ५४२); मैं पा परत कहइ जगदंबा। तुम्ह  
गृह गवनहु भयउ बिलम्बा (राम० (बाल)—तुलसी, ९२);  
पाइनि लागत, सोधो चढावत पान खवावत हौ निमि जागे  
(केशव० (१)—केशव, ७७); पाइ परे हूँ ते प्रीतम क्यों कहि  
'केसव' क्यों हूँ न मैं दुग दीनी (केशव० (१)—केशव, ४१);  
जो रहीम पगतर परै, रगरि नाक बर सीस (रहीम कवि०  
—रहीम, १०); तेरो कह्यो करि-करि, जीव रह्यो जरि-जरि,  
हारी पांव परि-परि, सो न कोन्हों ते संभार (शब्द०—देव,  
१५); पातें घन आनंद मुजान प्यारी रोभि भीवि, उमगि  
उमगि बेर बेर तेरे पा परी (घन० कवित—घना०, १५५);  
गोप-मुता कहै गौरि गोसाइनि पाव परी बिनती मुनि सीजै  
(मति० मक०—मतिराम, ९८); तू मेरे साथ चल, पर तेरे  
पांव पड़ती हूँ कोई मुनने न पाए (इशा०—इशा०, ९४);  
द्विज प्रिया तोरे पय्या पड़त है, पंचा मां एहका छाय  
नाही देखी (भा० ग्रंथा० (३)—भारतेन्दु, ८६३); परन्तु ज्यों  
हो उन्होंने धूर्तों की धूर्तता समझी चट पितृध्व के पावों पर  
जा निरे (राधा० ग्रंथा०—राधा० दास, ३१५); तुम्हें भाइयों  
का डर हो तो, तो जाकर उनके पैरों पर निरो (गोदान—  
प्रेमचंद, ४२-४३); भूल न रस छे इन फूलन को पैया लागत  
तेरी (ठेठ०—हरिऔध, १२); अगर बचा पकड़ जायें तो  
प्रवालत में बंधे-बंधे फिरेंगे। तब तो बकील साहब के ही  
पैरों पड़ने (मान० (१)—प्रेमचंद, ३३); हम-तुम गली-गली  
कोने-कोने पर्यटन करेंगे, पैर पड़ेंगे, लोगों की जगहोंगे  
(स्कंद०—प्रसाद, १३५); देखिए प्रयोग (१) में (÷) भी  
(समा० मुहा०—पैर छूना)

### पैर पत्थर हो जाना

किसी दुविधा के कारण पैर न बढ़ना। प्रयोग—पड़ोसिन  
दिन में कई बार द्वार तक आती, हमारे कमरे के दरवाजे  
तक घाते-आते उसके पैर पत्थर हो जाते (ये कीठे०—अ०  
ना०, २१)

### पैर (पैरों) पर गिरना

#### दे० पैर पड़ना

#### पैर पर पगड़ी रखना

बहुत विनम्र होकर अनुनय करना। प्रयोग—जो तुम्हारी  
न पत रहेगी मिर, पांव पर डालते फिरे पगड़ी (घोखे०—  
हरिऔध, ७०)

### पैर पर पैर रख कर सोना

(१) निश्चित होकर पड़े रहना। प्रयोग—है मुसीबत  
का नगारा बज रहा पांव पर रख पांव हम है सो रहे  
(चुमते०—हरिऔध, १०७) (÷)

(२) गाफल होना। प्रयोग—देखिए प्रयोग (१) में (÷)  
(समा० मुहा०—पैर पर पैर रख कर बैठना)

### पैर पर माथा रगड़ना

बिनती करनी। प्रयोग—नाक रगड़े मिट नहीं रगड़े माथ  
क्या पांव पर रगड़ करते (चुमते०—हरिऔध, ३२)

### पैर पर सिर रखना

(१) नमन करना। प्रयोग—संवत सोरह सैं एकतीसा।  
करत कथा हरिपद धरि सीसा (राम० (बाल)—तुलसी, ४६)  
(२) अनुनय-विनय करनी।

### पैर पलोटना

सुशामद करनी; सहत्व देना। प्रयोग—लोटते पांव के  
तले जो ब पांव उनका पलोटते है हम (चुमते०—हरिऔध,  
८३)

### पैर पसार कर पड़े रहना

निष्क्रिय रहना। प्रयोग—गोट पसारि परघो दोउ नोकें  
अब कैसे कह होईमि (सु० सा०—सूर, ३३३)

### पैर पसार कर सोना

निश्चित रहना। प्रयोग—प्रीति राम नाम सों, प्रतीति राम



नाम की, प्रसाद रामनाम के पसारि पांव सूतिही (कवि०—तुलसी, १४४)

### पैर पसारना,—फैलाना

(१) थोड़ा चाहते-चाहते बहुत चाहने लगना । प्रयोग—चाहिए था कि जैसे-जैसे हाथ में रुपए आते, एक-एक काम पूरा करता जाता । बहुत पांव फैलाने का यही फल है (रंग० (१)—प्रेमचंद, १९५)

(२) बड़ जाना; अधिकार क्षेत्र बढाना । प्रयोग—इस फेंच कम्पनी का भी आंतरिक अभिप्राय भारत को धीरे धीरे अपनी मट्टी में कर लेने का था । और अगर अ भी इसी इरादे से पैर फैला रहे थे (सा० सी०—महा० द्विवेदी, ४८); इस वंमनस्य ने यहाँ तक पैर फैलाए कि बनवारी लाल और ब्रजमोहन लाल में भी मनोमालिन्य हो गया (मा—कौशिक, ९५); फैलते देख पांव औरों के वे भला क्यों नहीं अकड़ जाते (चुमते०—हरिऔध, ११४); हो पसरने के लिये जगह जितनी क्यों न उतनी ही पसारें पांव हम (बोल०—हरिऔध, २३६); डलहौजी ने पैर पसारे अब तो पलट गयी काया (मुकुल—सु०कु०चौ०, ५१)

(३) धाराम से पड़े रहना ।

(४) आठम्बर बढाना ।

### पैर पीछे न रखना,—न हटाना

(१) काम से पीछे न हटना । प्रयोग—उचित कामों के करने में कभी पीछे कदम न हटावेंगे और कोई लालच × × आपको सत्य और सन्मार्ग से न डिगा सकेगा (गु० नि०—बा० मु० गु०, २२९); उनको अबसर कुअबसर पड़े, पुरुषों की सहायता करने में पीछे पैर न देने की सीख देना, घर की सफाई, स्वच्छता इत्यादि बनाये रखना, काफी काम है (झासी०—वृ० वर्मा, ७८); पवि का प्रबल प्रहार हुए भी पांव नहीं पीछे है धरता (मर्म०—हरिऔध, १४४)

(२) मुकाबले में पीछे न हटना । प्रयोग—जीवत पांव पाछे न धरही (राम०(अ)—तुलसी, ५५२); कब सके बीर पांव पीछे रख सैकड़ों छीक क्यों न पीछे हो (चुमते०—हरिऔध, ३३)

(३) अपने विचारों या निर्णय पर दृढ़ रहना या न हटना ।

### पैर पीछे न हटाना

दे० पैर पीछे न रखना

### पैर पीटना

(१) छटपटाना । प्रयोग—पीटनेवाले न माने लीक के पीटते हैं पांव तो पीटा करे (बोल०—हरिऔध, २४५)

(२) अधिक प्रयत्न करना ।

### पैर पूजना

(१) आदर करना, गुणामद करनी । प्रयोग—वे अब अपनी सदागिन का पैर पूजती है (परसी०—रेणु ३९५); है अगर पांव पूजना ही तो पूजने जोग पांव ही पूजे (चोखे०—हरिऔध, २१)

(२) विवाह की एक रस्म ।

### पैर फिसलना,—रपटना

गलती होना; आचरण-अष्ट होना । प्रयोग—है कपट-पथ अगर नहीं अटपट पांव तो फिर रपट गया कैसे (बोल०—हरिऔध, २४६); कम न फिसलन वहां मिली उसको पांव कैसे नहीं फिसल जाता (बोल०—हरिऔध, २४६)

### पैर फैलाना

दे० पांच पसारना

### पैर बंध जाना

आगे न बढ़ सकना । प्रयोग—महिपाल के पांव फिर बंधने लगे (बृ०—अ० ना०, २१७); उसके पैर बंध गये (सुनीता—जेनेन्द्र, ९९)

### पैर बढाना

(१) जल्दी-जल्दी चलना । प्रयोग—अरी नेक पांव बड़ाए चल (राधा० प्रथा०—राधा० दास, ७०९); दिन जल्दी-जल्दी डल रहा था और सामने से संध्या कुर्तों के साथ पांव बड़ाए चली आती थी (गु० नि०—बा० मु० गु०, २३३); पर, अमर कात उस पवित्र की भांति जिसने दिन विश्राम में काट दिया हो, अब अपने स्वान पर पहुंचने के लिए दूने वेग से कदम बढ़ाए चला जाता था (कर्म०—प्रेमचंद, ८)

(२) रास्ते पर बढना या अनुसरण करना ।



पैर बांध देना ।

४७६

पैर में सिर देना

**पैर बांध देना**

कोई काम करने से रोकना । प्रयोग—बेबसी ने पांव बांध दिये (सु० सु०—सुदर्शन, १४६)

**पैर बाहर निकलना या निकालना**

व्यभिचारिणी होना । प्रयोग—सोग बाहर उसे निकाल चुके पांव बाहर निकल गया जिसका (बोल०—हरिऔध, २४४)

**पैर बिचलना**

(१) पय-भ्रष्ट होना । प्रयोग—चल सका जब न जाति-हित पय पर पांव कैसे न तब बिचल जाता (बोल०—हरिऔध, २४७)

(२) निश्चय से हटना ।

**पैर भर जाना**

पैर पकना । प्रयोग—जी भर गया गई भर आँखें, श्रम से गये पैर भी भर (नूर०—भक्त, १४); राह भारी हुए भर आया जी, भर गये पांव, आंग भर आई (चुभते०—हरिऔध, ११३)

**पैर भारी होना**

(१) गर्भ रहना । प्रयोग—पांव भारी है, कहीं डर-डरा जाय तो और आफत हो (गोदान—प्रेमचंद, १२४); कठिन बड़ा था गिरि पर चढ़ना उसका, जो मुकुमारी हो भारी पैर, दुःख की मारी, पयश्रम से जो हारी हो (नूर०—भक्त, १५)

(२) अशुभ आगमन होना । प्रयोग—रसभरी छवि भरी बहू प्यारी पांव भारी हुए हुई भारी (बोल०—हरिऔध, २४४)

**पैर मन-मन भर के होना,—सौ सौ मन के होना**

भय या आशंका से आगे न बढ़ पाना । प्रयोग—चैतसिंह पर निगाह पड़ी तो दोनों के प्राण मूल गये, पांव मन-मन भर के हो गये (मान० (१)—प्रेमचंद, ३०३); पांवों को वे संभल बल के साथ ही वे उठाते तो भी वे ये न उठ सकते हो गये ये मनो के (प्रिय०—हरिऔध, ७४); पैर सौ-सौ मन के हो रहे थे, जैसे उनमें पारा भर दिया हो (गोली—चतुर०, ७१); उसके पांव मन मन भर के हो रहे थे (चेतन—

अशक, ३९); गड़ गये, सौ सौ मनो के बन गये । अड़ गये, है राह पर घाये कहां । पैठने को जातिहित के पैठ में ए हमारे पांव उठ पाये कहां (चुभते०—हरिऔध, ११३); मैं निराश होकर घर को लौटा, पर पांव मन-मन के भारी हो रहे थे (सु० सु०—सुदर्शन, ७)

**पैर में कांटे गड़ना**

कष्ट होना । प्रयोग—बुरी राहें कब छोड़ी गईं, बहुत कांटे पांवों में गड़े (मर्म०—हरिऔध, ८३)

**पैर में चक्कर होना**

हर वक्त चलनेवाला होना, कहीं न टिकनेवाला । प्रयोग—पर तुम्हीं तो कहा करती थीं मां, कि मेरे पैर में चक्कर है (दूधगाछ—दे० स०, ४५); अपने मतलब के लिए सनामी करने जाता हूँ । पांव में सनीचर नहीं है घोर न सनामी करने में कोई बड़ा सुख मिलता है (गोदान—प्रेमचंद, १७)

(समा० मुहा०—पैर में घन चक्कर होना)

**पैर में बेड़ी पड़ना**

बंधन या जंजाल में फँसना । प्रयोग—जाति-हित बीड़ा उठा घागे बड़े । भाग है, जो पांव में बेड़ी पड़े (चुभते०—हरिऔध, १२)

**पैर में मेंहदी लगी होना**

किसी काम को न करने का बहाना बनाना या न जाना । प्रयोग—उत ऊतर-पाय लगी मेंहदी सु कहां लगी धीरज हाथ रहे (घन० कवित्त—घना०, २२८); हाथ में मेरे जमाया है दही । है हमारे पांव में मेंहदी लगी (बोल०—हरिऔध, २३८)

**पैर में शनीचर होना**

दे० पैर में चक्कर होना

**पैर में सिर देना**

(१) अधीनता स्वीकार करनी । प्रयोग—मौत सर पर सवार हो जाये पांव में सिर कभी न देंगे हम (बोल०—हरिऔध, २४२)

(२) घाबर करना ।



### पैर रखना

(१) आना या जाना । प्रयोग—पुनि तहँ रतन सेनि पगु धारा (पद०—जायसी, २६।१९); धनि मम गृह, धनि भाग हमारे । जौ तुम चरन कृपा करि धारे (सू० सा०—सूर, ३४३); रंगभूमि जब सिप पगु धारी (राम० (बाल)—तुलसी, २५६); मोहि भरोसो भयो तिहारो । बेग नाथ मथुरा पग धारी (प्रेम सा०—ल० ला०, १०५); बीसवीं शताब्दी ने न जाने कैंसी कुसाइत में पैर रखा है कि शताब्दी के उलट फेर के साथ ही साथ हम लोगों के भाग्य का भी उलट फेर कर दिया (राधा० ग्रंथा०—राधा० दास, १०३); जान पड़ता है कि मुसलमानों के इस देश में पांव रखने के समय यहाँ चारों ओर अंधेरा छाया हुआ था (गु० नि०—बा० मु० गु०, १११); यही नहीं, घास पास के गांवों से भी सायद ही किसी ने प्रान्त से बाहर पैर रखा हो (सतमी०—राहुल, २२); पर भीतर पैर रखते ही उनके होश उड़ गये (चोटी०—निराला, ६)

(२) प्रवृत्ति होनी । प्रयोग—वह जाने माने मार्ग को छोड़कर अनजान रास्ते पर पांव रखते डरही बी (कर्म०—प्रेमचंद, १३); यों स्वार्थ साधन के लिए मत पाप-पथ में पद धरो (जय०—गुप्त, १८)

(३) ध्वंस होना, ध्वंसा को प्राप्त होना । प्रयोग—पन्द्रह बरस भर के उनमें सोलहवें में पांव रखा था (इशा०—इशा०, ९१); परन्तु जवानी में पैर धरते ही हमें यह पता लगा कि हम दोनों एक दूसरे के बिना संसार में नहीं रह सकते (मिखा०—कौशिक, ४२)

(४) घासीन होना ।

### पैर रखने की जगह न होना

बहुत भीड़ होनी । प्रयोग—भीड़ के मारे पैर धरने की जगह नहीं है (भा० ग्रंथा० (१)—भातेन्दु, २८७)

### पैर रगड़ना

खुशामद करनी; दीन होना । प्रयोग—दो रगड़ ओ रगड़ सको खल को, पांव क्या हो रगड़ रगड़ मरते (बुभते०—हरिऔध, ३२)

### पैर रपटना

#### दे० पांच फिसलना

#### पैर रह जाना

पैरों का बहुत थक जाना । प्रयोग—ज्यों बना प्यार-पंथ-राही वह, राह में पांव रह गया तिसका (बोल०—हरिऔध, २३७)

### पैर रोप कर

दुद्धता पूर्वक । प्रयोग—छूट न राम कृपा बिनु, नाथ कहउं पद रोपि (राम० (उ)—तुलसी, १०९७); यह कहि कोपि कै कपोस पाउं रोपि करि, सेनापति बीर विरभानो बैरि-दल में (क० र०—सेनापति, ८९); सेज संवारि, मुधारि सबें घंग, आंगन के मग में पग रोपें (शब्द०—देव, ४१)

### पैर रोपना

(१) प्रण करना । प्रयोग—पाउ रोपि सबें मिलि मोहि घाला । प्रनतपाल पन जापन पाला (राम० (अ)—तुलसी, ६२५)

(२) मुकाबला करना; डटे रहना । प्रयोग—सूर बीर गाढ़ा पग रोप्या, इह बिधि माया त्यागी (कबीर ग्रंथा०—कबीर, १८९); दे न निज पानिप गंवा पानिप रखें पांव रोपें पर न रोपें हाथ हम (बोल०—हरिऔध, १७४)

(३) स्थिर होना ।

### पैर (पैरों) लगना

#### दे० पैर पड़ना

#### पैर लटपटाना

पैर ठीक-ठीक न पड़ना; डगमगाना । प्रयोग—लट गई देह राह है जटपट पांव कैसे न लटपटा जाता (बोल०—हरिऔध, २३९)

#### पैर लड़खड़ाना

#### दे० पैर डगमगाना

### पैर समेटना,—सिकोड़ना

अपनी इच्छाओं या आवश्यकताओं को कम करना ।



प्रयोग—वे समेटे सिमिट नहीं पाते पांव सेवें समेट हम कैसे (सुभले०—हरिऔध, ११३); चाहता हूं निकोड़ लेना मैं पांव मेरे सिकुड़ नहीं पाते (सुभले०—हरिऔध, ११४)

**पैर सम्हाल कर रखना**

संभाल कर काम करना। प्रयोग—जो भले चाहते भलाई है पांव वे हैं, संभल संभल रखते (बोल०—हरिऔध, २३९)

**पैर सहलाना**

चापलूसी करनी। प्रयोग—और लोग पुलिस को मिला लेते हैं धानेदार के पांव सहलाते हैं (मान० (४)—प्रेमचंद, १३५); सांसलें नित नई-नई सह है सहस पांव का न सहलाना (सुभले०—हरिऔध, ८०)

**पैर सिकोड़ना**

दे० पैर समेटना

**पैर सिर पर रखना**

दीन बनना; खुशामद करनी। प्रयोग—सिर रहे, चाहे बला ही जाय सिर, पांव पर सिर क्यों किसी के हम रखें (बोल०—हरिऔध, २४०)

**पैर सीधे न पड़ना या न रखना**

दे० पैर ज़मीन पर न पड़ना

**पैर से जा लगाना**

(१) पैर छूना। प्रयोग—वह सिर घुमने लगी और मतवाली होकर साधु के पैरों जा लगी (मान० (८)—प्रेमचंद, ५१)

(२) दीनता दिखानी।

**पैर से ठुकराना**

खुच्छ समझ कर उपेक्षा करनी। प्रयोग—जिस घलेकजेंडर ने XX कितने ही देशों की साम्राज्यजिप्ता के कारण पद-दलित किया, वह उस बुद्धदेव की महत्ता को कैसे समझ सकता है, जिन्होंने एक साम्राज्य को पैरों से ठुकराकर वन का आश्रय लिया (कुछ—५० पु० दल्लो, १५९)

**पैर से बांध कर रखना**

बराबर अपने पास रखना; बड़ी चौकसी रखनी। प्रयोग—

जो रखे वह रखे हमें न जंचा पांव से पांव बांध कर रखना (बोल०—हरिऔध, २४२)

**पैर सौ-सौ मन के होना**

दे० पैर मन मन भर के होना

**पैर सौर से बाहर निकलना**

सामर्थ्य से बाहर होना। प्रयोग—घच्छे मकानों का किराया इतना अधिक था कि इसके प्रतिमास अदा करने में मेरे पांव सौर से बाहर निकल जाते (मेरे०—गुलाब०, १८)

**पैर हवा में पड़ना**

बहुत खुश होना। प्रयोग—जिस समय मुंशी शिवलाल कलक्टर के चेम्बर से बाहर निकले, उनके पैर हवा में पड़ रहे थे (भूले०—मंग० वर्मा, ८)

**पैर हिलना**

विचलित होना। प्रयोग—पांव मेरे हिलें नहीं बा भी ये बसेड़े जहां घनेक मंचे (बोल०—हरिऔध, १)

**पैरों की धूलि चाटना**

खुशामद करनी। प्रयोग—ऐसी रानी बनोगी कि जात-पात वाले पैरों की धूल चाटते-चाटते निहोरे करेंगे (मृग०—वृ० वर्मा, २८०)

**पैरों के नीचे की ज़मीन खिसकजाना,—निकल**

**जाना,—मिट्टी खिसकना,—से मिट्टी खिसकना,—**

**तले की ज़मीन निकल जाना,—ज़मीन हिल जाना**

(१) किसी अप्रत्याशित घटना से हक्का-बक्का हो जाना।

प्रयोग—रमा के पैरों से मिट्टी खिसक गयी (सबन—प्रेमचंद, १०१); उसके पैर तले से ज़मीन सी निकल गयी, कलेजा धक् से हो गया (मान० (३)—प्रेमचंद, १४७); रावत के पैरों

तले की ज़मीन निकल गई (ज्ञान०—यशपाल, १३१); पर

पहले डंडे की चोट को घाभा रानी ने झपट कर अपने शरीर

पर ले लिया तो पुलिस के भी पांव के नीचे की मिट्टी खिसक

गई थी (मैला०—रेणु, १६६); घदासत के घादमियों का

प्रयोजन जान कर पुरी के पांव तले की धरती हिल

गयी (झुठा० (२)—यशपाल, ३६३); उते विमय हुआ



पैरों के नीचे की ज़मीन निकल जाना

४७९

पैरों तले होना

दुकान कहाँ गई ! ज़रा और आगे बढ़ा तो राख का ढेर दिखाई दिया । पाँव तले से मिट्टी निकल गई (रंग० (२)—प्रेमचंद, १३४); चिरनामा देखते ही ज्ञानदाकर के पाँव तले की ज़मीन सरक गई (प्रेमा०—प्रेमचंद, ३५०); देव कुलों का लोप न केने पाँव तले की घरती सरके (बोल०—हरिऔध, २३९)

(२) किसी आधार या सहारे का टूट जाना । प्रयोग—जो कुछ था, जैसे उसके नीचे से घरती खिसकी जा रही है (नदी०—अज्ञेय, ८२)

पैरों के नीचे की ज़मीन निकल जाना

दे० पैरों के नीचे से ज़मीन खिसक जाना

पैरों के नीचे की मिट्टी खिसक जाना

दे० पैरों के नीचे की ज़मीन खिसक जाना

पैरों के नीचे रखना या रहना

अधीन करना या होना । प्रयोग—मोगल-सिंहासन के—घोरंग के पैरों के नीचे तुम रखोगे (परि०—निराशा, २१७)

पैरों के नीचे से मिट्टी खिसकना

दे० पैरों के नीचे की ज़मीन खिसक जाना

पैरों तले की ज़मीन निकल जाना

दे० पैरों के नीचे की ज़मीन खिसक जाना

पैरों तले की ज़मीन हिल जाना

दे० पैरों के नीचे की ज़मीन खिसक जाना

पैरों तले कुचल देना,—रौंदना

(१) नष्ट करना । प्रयोग—जन सम्मति से राज्य करने की जो व्यवस्था हम लोगों ने खुद की है उसे पैरों तले कुचलना बुरा मालूम होता है (रंग० (१)—प्रेमचंद, ४०४); तू सती थी, मैंने पैरों तले रौंदा (प्रेमा०—प्रेमचंद, ३४४) (÷)

(२) घोर अपमान करना । प्रयोग—देखिए प्रयोग (१) में (÷)

पैरों तले गंगा बहना

बहुत समृद्ध होना, भाग्यशाली होना । प्रयोग—तुम्हारे बाप के पास तो लाखों की सम्पत्ति है, क्यों नहीं उसमें से थोड़ी

सी हमें दे देते, वह तो कभी बात नहीं पूछते और तुम्हारे पैरों तले गंगा बहती है (प्रेमा०—प्रेमचंद, ३९)

पैरों तले गरदन दबना,—चोटी दबना,—दबे होना  
अधीन होना; दबाव में होना । प्रयोग—जब दूसरों के पाँवों तले अपनी गरदन दबी हुई है तो उन पाँवों को सहलाने में ही कुशल है (गोदान—प्रेमचंद, ५); है दबे पाँव के तले तो क्या क्या हमें काटते नहीं जूते (चुमते०—हरिऔध, ११६); चोट पर चोट तब न क्यों होगी जब दबी पाँव के तले चोटी (चुमते०—हरिऔध, ११४)

पैरों तले घास न जमने देना

तनिक भी विलम्ब न करना । प्रयोग—मिस्टर जॉन सेबक पैरों-तले घास न जमने देना चाहते थे । दूसरे ही दिन उन्होंने एक बैरिस्टर से शायनापत्र लिखवाया और कुंघर साहब को दिखाया (रंग० (२)—प्रेमचंद, २९५)

पैरों तले चोटी दबना

दे० पैरों तले गरदन दबना

पैरों तले दबे होना

दे० पैरों तले गरदन दबना

पैरों तले पड़ा होना

उपेक्षित होना । प्रयोग—लोक हित पाँवों तले जब था पड़ा काँस में पोखी दबा तब क्या पले (बोल०—हरिऔध, १७५)

पैरों तले रौंदना

दे० पैरों तले कुचल देना

पैरों तले लोटना

बस में होना; तुच्छ होना । प्रयोग—साहसी के हाथ में ही सिडि है लोटता है लाख पाँवों के तले (चुमते०—हरिऔध, ८)

पैरों तले होना

अधीन होना; तुच्छ होना । प्रयोग—एक दीप का आबू तोरे सब संसार पाब तर मोरे (पद०—जायसी, ३१९)



पैर पर खड़े होना

४८०

पैरों से कुचल डालना या कुचला जाना

**पैरों पर खड़े होना**

प्राप्त-निर्भर होना । प्रयोग—वे विवाहित थे और अपने को स्वतंत्र करने के लिए उन्होंने यही सोचा था कि स्त्री को कुछ शिक्षा देकर अपने पांवों पर खड़ा कर दिया जाय (सतमी०—राहुल, ९३); बंदक की कमाई से अपने पैरों खड़े होने की आशा निष्फल हुई (गुलेरी प्रथ (१)—गुलेरी, २७७)

**पैरों पर गिरना,—भुंकना**

महत्त्व को स्वीकार करके आदर करना; अधीन हो जाना । प्रयोग—फिर विजय अभिमान को निकलो, सारा संसार तुम्हारे पैरों पर घायल भुंकेगा (अम्ब०—रा० वै०, ४२); सब मुकुट और ताज हमारे पैरों पर गिरेंगे (शांसी०—वृ० वर्मा, १२९)

**पैरों पर भुंकना**

दे० पैरों पर गिरना

**पैरों पर नाक रगड़ना,—सिर घिसना,—सिर रगड़ना**

पथ अनुगत होना; जी हुजुरी में लगे होना; विरोधी करना । प्रयोग—हित चायनि च्वे चित चाहत नै नित पायन ऊपर सीस घसी (घन० कवित्त—घना०, १५३); तू समझती है वह तेरे रूपा पर मुग्ध होकर तेरे पैरों पर सिर रगड़ेगा (कर्म०—प्रेमचंद, २०); नहीं तो अब तक मोहनदास तुम्हारे पैरों पर नाक रगड़ता (कंकाल—प्रसाद, ५७); फिर उन्हीं ज़िमींदार दयाराम महाराज के पैरों नाक रगड़नी पड़ी (लिली—निराला, ६५)

**पैरों पर लोटना**

(१) विनीत होना; सेवा में रहना । प्रयोग—पाटलिपुत्र का जन-समुदाय बिभ्रलेखा के पैरों पर लोटा करता था (चित्र०—भग० वर्मा, १०); 'देव' दिगपालिनी की, देवी मुख-वाइन ते, राधा ठकुरानी के, पाइनि पै लोट ही (शब्द०—देव, ३); मेरा गर्व उसके पैरों में लोटने लगा है (कामना—प्रसाद, २०)

(२) प्रचुर मात्रा में सहज उपलब्ध होना । प्रयोग—घन

वैभव और व्यक्ति मेरे पैरों पर लोटते रहे हैं (इंस्टा०—भग० वर्मा, १६)

(३) वश में होना । प्रयोग—भय नहीं खाता कभी जन्म और मृत्यु मेरे पैरों पर लोटते हैं (अना०—निराला, ९५)

**पैरों पर सिर घिसना**

दे० पैरों पर नाक रगड़ना

**पैरों पर सिर रगड़ना**

दे० पैरों पर नाक रगड़ना

**पैरों में डाल देना**

दया या आश्रय का आकांक्षी बनना । प्रयोग—ऐसी दसा जग छावो अधेर बिना हित-मूरति कोन संभारे । है तिन ही की कृपा घन आनन्द हाथ गहै पिय-पायनि पारे । (घन० कवित्त—घना०, १५१); "जी इनकी मा ने XX कह दिया है कि इन्को आपके पांवों में डालकर कह देना कि मुझे आपके त्रिचित होकर चले जाने का हाल मुन्कर बड़ी चिता हो रही है" (परीक्षा०—श्री० दास, १५२)

**पैरों में पर लगाना**

बहुत तेज भागना । प्रयोग—हामिद के पैरों में तो जैसे पर लग गये हैं (मान० (१)—प्रेमचंद, २५)

**पैरों में बेड़ियां डाल देना**

बंधन में डाल देना । प्रयोग—मे विवाह पर रजामन्द न था, अपने पैरों में बेड़ियां न डालना चाहता था (मान० (७)—प्रेमचंद, २२)

**पैरों में बेड़ियां पड़ जाना**

बंधन बन जाना । प्रयोग—रहिमत व्याह विवाधि है सकहु तो जाहु बचाइ । पायन बेरी परत है, डोल बजाइ बजाइ (रहीम कवि०—रहीम, २६); पायनि पारि लई घन आनन्द चायनि बावरी प्रीति की बेरी (घन० कवित्त—घना०, २०१)

**पैरों में मन लगाना**

श्रद्धा भक्ति होनी । प्रयोग—लोक को त्याग कियो सबहीं प्रभु पायन में मन लागि रहा है (इश्क०—बोधा, १२)

**पैरों से कुचल डालना या कुचला जाना**

बहुत दुर्गति करनी या होनी । प्रयोग—मेरे हिय की



कसक यवन हित आज पाप दरि (राधा० ग्रंथा०—राधा० दास, ७६०); उसने निश्चय किया, मन को पैरों से कुचल डालूंगी उसका निशान मिटा दूंगी (रंग० (१)—प्रेमचंद, ३१९); मक्कारों को उठने दो पैरों से मैं कुचलूँ (नूर०—भक्त, ९५); जाति भीत और अस्त है और उसका घममें असहाय अवस्था में पैरों से कुचला जा रहा है (स्कंद०—प्रसाद, १३१)

### पैरों से ठुकराना

तुच्छ मानना; ध्वजा करनी। प्रयोग—राजाओं, नव्वाबों को भी उसने पैरों ठुकराया (मुकुल—सु० कु० चौ०, ५१)

### पैरों से मसलना

नाश करना; दुर्गति करनी। प्रयोग—छीबते ही जा रहे हो हिन्दुओं भाइयों को पांव से अपने मसल (धुमते०—हरिऔध, २४)

### पैसा खाना

(१) घूस लेना। प्रयोग—परस्तु छोटे अफसर जो इन लोगों से पैसा खाते पीते हैं × × वहां से उस पाप दुश्मको गायब करा दे तो हम तुम क्या कर लेंगे रामजी? (बूंद०—अ० ना०, ५२४)

(२) किसी के सहारे जीवनयापन करना। प्रयोग—आपके चार पैसे खाता हूँ तो आपको आंखों से देखकर गड़े में न गिरने दूंगा (रंग० (१)—प्रेमचंद, ३७७); मुझ पर तोहमत लगाते हैं कि मैं शीला का पैसा खाता हूँ (बूंद०—अ० ना० १९५)

(३) पैसा हड़प जाना।

### पैसा खींचना,—घसीटना

अनुचित रीति से किसी का धन लेना। प्रयोग—सद्भाव दिखाकर पहले परिचय खींचे जायें—सात बनाई जाय फिर उस परिचय और सात में से पैसे खींचे जायें—यह क्या है? (कल्याणी—जैनेन्द्र, ४०); यह इल्हाम गलत है कि हम लोगों से पैसा घसीटते हैं (ये कोठे०—अ० ना०, १०१)

### पैसा घसीटना

दे० पैसा खींचना

### पैसा चाटना

खसने लेना; अनुचित रीति से पैसा खाना। प्रयोग—ऐसे व्यक्ति पर यदि कोई भरी सभा में यह लांछन लगाए कि वह किसी सेठ या मालदार औरत का पैसा चाटकर लाल बूंद हो गया है तो उसे स्वाभाविक रूप से बड़ी तकलीफ होगी (बूंद०—अ० ना०, १९५)

### पैसा-जोड़ कौड़ी-पकड़ होना

धन इकट्ठा करने वाला कंजूस व्यक्ति। प्रयोग—त्यागी बैरागी होकर भी भागवत दास पैसा-जोड़ ये, कौड़ी-पकड़ (अपनी सवर—उग्र, ५३)

### पैसा फूंकना

धन बर्बाद करना। प्रयोग—तो फिर आप बीमार रहिए × × पैसा फूंकिए और डाक्टरों की फीस दीजिए (रेशमी०—राम० वर्मा, १०१-१०२)

### पैसा बनाना

कमाई करनी; लाभ करना। प्रयोग—तुमने बहुत पैसे बना लिये। बहुत धामदनी होती है, तो खर्च भी होना चाहिए (ब्रह्म०—दे० स०, २४२)

### पैसे का राज्य होना

धन ही सर्वोपरि होना। प्रयोग—जब चारों ओर पैसे का राज्य हो तब उसके आकर्षण को काट सकना कठिन है (अशोक०—ह० प्र० द्वि०, ३३)

### पैसे की गर्मी होना

धन के कारण गर्व होना। प्रयोग—किन लोगों को पैसे की गर्मी हो गई है (मेला०—रेणु, १७४)

### पैसे को ठीकरी समझना

पैसे की परवाह न करना। प्रयोग—वह परले सिरे के लोभी थे, लड़का पैसे को ठीकरा समझता था (कर्म०—प्रेमचंद, ६) (सभा० मुहा०—पैसा न समझना)

### पैसे को दांत से पकड़ना

बहुत कंजूसी करनी। प्रयोग—लेकिन मैंने कभी पैसे को दांत से नहीं पकड़ा (मान० (७)—प्रेमचंद, ३४); तभी वे लोग एक-पैसा दांत से पकड़ कर चलते हैं (भारती०—रा० रा०, ७६)



पैसे खड़े करना

४८२

पौ बारह होना

### पैसे खड़े करना

पैसा कमा लेना, बसूल कर लेना। प्रयोग—कितने ही ब्राह्मण जो जमींदार हैं, घर से खाली हाथ मुकदमे लड़ने चलते हैं, दिन-भर कन्या के विवाह के बहाने या किसी संबंधी की मृत्यु का हीला करके भील मांगते हैं, शाम को नाज बेच कर पैसे खड़े कर लेते हैं (रंग० (१)—प्रेमचंद, १२)

### पैसे-पैसे को मोहताज

अत्यंत दरिद्र। प्रयोग—जिन राणा की जूतियों के कारण भामाशा भामाशा बना है वही राणा पैसे-पैसे को मुहताज हों (राधा० ग्रंथा०—राधा० दास, ७७७); जो कुछ दादा भोजते हैं उसे हम बीस-बाईस तक खर्च कर डालते हैं और फिर पैसे-पैसे को मुहताज हो जाते हैं (मान० (१)—प्रेमचंद, ८६)

(समा० मुहा०—पैसे-पैसे को तरसना)

### पोटी दुह ली जानी

नष्ट कर दिया जाना, खोखला बना दिया जाना। प्रयोग—जब भरम की दूह ली पोटी गईं लाज पोटी की नहीं जब रख सके (चुमते०—हरिऔध, ११७)

### पोड़ा असामी

घनवान। प्रयोग—बिश्वास मानिए बड़ा पोड़ा आदमी है और बला का मक्खीपूत (मान० (४)—प्रेमचंद, २०६)

### पोधी के बेटन

जड़, मूल, भोला। प्रयोग—राम-राम, तू भला कबो भूट बोलबो, तू तो निरे पोधी के बेटन हो (मा० ग्रंथा० (१)—भारतेन्दु, ३३५)

### पोप लीला होना

भूठा दिखावा होना, पाखंड होना। प्रयोग—यह दर्शन देने की प्रथा, यह पूजा कराने की प्रथा यह सब पोप लीला है (मूले०—मग० वर्मा, ३५३)

### पोर-पोर में

अंग-अंग में; नस-नस में। प्रयोग—छुटाई पोरहि पोर भरी (मा० ग्रंथा० (२)—भारतेन्दु, २७३); भर गया पोर पोर में आगुन नाम हम में न रह गया गुन का (चुमते०—हरिऔध, १०७)

### पोल खुल जाना

भंडा फूट जाना। प्रयोग—वह हमेशा इस बात से शक्ति रहा करता है कि घब मेरी पोल खुली तब खुली (भट्ट नि०—वा० भट्ट, ७९)

### पोल खोलना

भंडा फोड़ करना। प्रयोग—रही हमारी जो कुछ पोल। पारों ने सब ढाली खोल (गु० नि०—वा० मु० गु०, ७२१); धूर्त और नृशंस व्यक्ति की पोल खोलना, शब्दों के कोड़े लगाना आज से हजार बरस बाद भी विहित समझा जायगा (पद्म० के पत्र—पद्म० शर्मा, ८१); जिस जिस जगह अर्जुन सिंह ने जस्सो का विवाह सम्बन्ध करना चाहा वहीं उनके शत्रुओं ने नन्दराम के पिछले जीवन की पोल खोल कर उन्हें भड़का दिया (मिखा०—कीशिक, २२२)

### पौ फटना

तड़का होना। प्रयोग—राले आप ऊपर मुजान घनआनंद पं पड़ के फटत क्यो रे हियं फटि ना गयो (घन० कवित्त—घना०, २१२); पौ फटी है निकल रहा मूरज (चुमते०—हरिऔध, ५६); प्रातःकाल की पौ फटी (मृग०—वृ० वर्मा, ४६९); जहां पौ फटने के पहले फालसई नीलिमाओं के कुंज में X X शांति मोन सोई है (कला०—पंत, ६२)

### पौ बारह कटना,—होना

(१) खूब लाभ होना। प्रयोग—बाद में रांची, हजारी-बाग की तरफ किसी राजा के यहां मैनेजरी हाथ लगी। जब तक वहां रहे, पौ बारह कटी (वल०—नागा०, ७३)

(२) जीत का दांव पड़ना; बन आना; लाभ का अवसर मिलना। प्रयोग—यह जानो तुम—यहां तो सदा पौ बारह है (राधा० ग्रंथा०—राधा० दास, ७०६); कुशल खेम के बाद धावक ने मेरी पीठ घपघपाते हुए कहा—जो गुरु, पौ बारह है तुम्हारे (वाण०—ह० प्र० द्वि०, २८२); पन्ना की बातें सुनकर मूलिया समझ गयी कि घब अपने पौ बारह हैं (मान० (१)—प्रेमचंद, ११)

### पौ बारह होना

दे० पौ बारह कटना



पीने सोलह आना

४८३

प्यासी होना

**पीने सोलह आना**

बहुत अधिक अंशों में; पूर्णता में कुछ ही कमी होनी। प्रयोग—एक तो आपने बाजपेयी को हिंसक प्रवृत्ति के दौरात्म्य से जो दारागंज-निवासी साहित्य सेवियों के लिये सतरे का इशारा किया है वह बड़ा मजेदार है, गंभीर हास्य है पर जैसा मठल्लू आदमी उसे समझे इसमें पीनह-सोलह आने शक है (पद्म० के पत्र—पद्म० शर्मा, ११३)

**पीरा जाना**

जाना; अधिकार समाप्त होना। प्रयोग—तुम लोगों के उद्योग से यह दिन देखने में आया कि इस पवित्र स्थान से हिंदू द्वेपी यवनों का पीरा गया (राधा० ग्रंथा०—राधा० दास, ७८३); जाओ, किसी तरह अपना पीरा तो ले जाओ (रंग० (२)—प्रेमचंद, ४२५)

**प्यादे से फरजी होना**

छोट पद से उठकर बड़ा पद पाना। प्रयोग—मैं प्यादे से बजीर नहीं हुई हूँ (रंग० (१)—प्रेमचंद, ३३७)

**प्यार-पगी**

प्रेमपूर्ण। प्रयोग—मोहि लियो हंसि हेरि छबीले कही प्रति प्यार पगी बतियां जब (घन० कवित्त—घना०, १५९)

**प्यार पसीजना**

प्यार उमड़ता। प्रयोग—मेरे मन में तुम दोनों बहिनों के लिए इतना प्यार पसीज उठा है × × कि चाहती हूँ कि एक-एक दोनों ले जाओ और पहिनो (मृग०—वृ० वर्मा, १२७)

**प्याला ढालना**

शराब पीनी। प्रयोग—क्या पीना, निर्द्वन्द्व न जब तक ढाला प्यालों पर प्याला (मधु०—वचन, पट ६७)

**प्याला भर जाना,—लबरेज होना,—लबालब होना**

अंतिम स्थिति को पहुंचना। प्रयोग—अब उसका प्याला लबरेज हो गया (राधा० ग्रंथा०—राधा० दास, ७१६); पर अभी उसके अपमान का प्याला नहीं भरा है (शैलर० (१)—अज्ञेय, १५८); दवांशकर और भी शेर हुए × × यहां तक कि प्याला लबालब हो गया (प्रेमा०—प्रेमचंद, २५);

भर लबालब गया सितम-प्याला खुल हमारा न सका अब भी लब (चुमते०—हरिऔध, ९६)

**प्याला लबरेज होना**

दे० प्याला भर जाना

**प्याला लबालब होना**

दे० प्याला भर जाना

**प्यास चटकना**

तेज प्यास लगनी। प्रयोग—प्यास जब थो बेतरह चटकी हुई किस तरह तालू न तब जाता चटक (बोल०—हरिऔध, १००)

**प्यास बुझना,—मिटना**

(१) इच्छा पूर्ण होनी। प्रयोग—इतना तो कह दो—मिटो तुम्हारे इस जीवन की प्यास ? (अना०—निराला, ६५)

(२) प्यास का न रहना। प्रयोग—जोग सिखाए क्यों मन मानें, क्यों जु ओस कन प्यास बुझाई (सु० सा०—सूर, ४५३८)

**प्यास मिटना**

दे० प्यास बुझना

**प्यास से (प्यासे) मरना**

अत्यंत व्याकुल होना। प्रयोग—सूर हरि के रूप कारन मरत लोचन प्यास (सु० सा०—सूर, ३८४६)

**प्यासी आँख**

किसी को देखने के लिए आकुल आँख। प्रयोग—हरत मनोहर मीन छवि प्रेम पिआसे नैन (राम० (बाल)—तुलसी, ३३५); मुझे किसी स्त्री की ओर प्यासी आँखों से नहीं देखना है, और न तो कपड़ों के आडम्बर में अपनी नीचता छिपाना है (कामना—प्रसाद, ६८); उसकी बातों को सुनकर देवनन्दन ने पहले प्यासी आँखों से उसको देखा, पीछे कहा × × (ठेठ०—हरिऔध, २)

**प्यासी होना**

तीव्र इच्छावाली होना। प्रयोग—अंलिपां हरि दरसन की प्यासी (सु० सा०—सूर, ४१७६)



### प्रकाश डालना

विषय को स्पष्ट करना; भेद प्रगट करना। प्रयोग—हमारे कोश की दशा सोचनीय है, अर्थ-सचिव इस पर प्रकाश डाल सकते हैं (वैशाली० (२)—चतुर०, १११); जो मनुष्य घोखा देकर मनुष्य को भ्रम में डाल रहा हो, उस मनुष्य की वास्तविकता पर प्रकाश डालना कर्तव्य है (चित्र०—भग० वर्मा, ६०)

### प्रकाश भर जाना

कीर्ति छा जानी। प्रयोग—राजा राममोहन राय की प्रतिभा का प्रकाश भर चुका था (चोटी०—निराला, १०)

### प्रकृति पड़ना

आदत पड़ जानी। प्रयोग—परी जू प्रकृति प्रगट दरसन की, देख्योइ रूप चहत (सु० सा०—सूर, ४१९२)

### प्रजा-पालन करना

प्रजा की देख-रेख करना। प्रयोग—पालेहु प्रजा करम मन बानी (राम० (अ)—तुलसी, ५१५)

### प्रण पालना,—रखना

प्रतिज्ञा पूरी करना। प्रयोग—प्रनत पाल पन आपन पाला (राम० (अ)—तुलसी, ६२५); भूपति मरन प्रेम पनु राखी (राम० (अ)—तुलसी, ६२०)

### प्रण रखना

दे० प्रण पालना

### प्रण रोपना

प्रण करना। प्रयोग—भुजा उठाइ कहउ पन रोपी (राम० (अ)—तुलसी, ६५६)

### प्रणाम करना

दूर रहना; छोड़ना। प्रयोग—तुम्हें व्याख्यान की समाप्ति पर उठकर कहना होगा कि परदा कुरी प्रया है, और आज से इसे प्रणाम करती हूँ (सु० सु०—सुदर्शन, १९०)

### प्रथम रेख होना,—लीक होना

पहले गिनती होनी। प्रयोग—निम्न मह प्रथम रेख जग मोरी (राम० (बाल)—तुलसी, १९); भट मह प्रथम लीक जग जामू (राम० (बाल)—तुलसी, १८८)

### प्रथम लीक होना

दे० प्रथम रेख होना

### प्रताप जागना,—तपना

प्रताप होना। प्रयोग—प्रबल प्रताप दीप सात हू तपत जाकौ तिन लोक तिमिर के दलन दलत है (क० र०—सेनापति, २४); अब फिर से उनका प्रताप जाग रहा है (भुले०—भग० वर्मा, १६५)

### प्रताप तपना

दे० प्रताप जागना

### प्रतीति खाना

विश्वास करना। प्रयोग—दयाम मुख लैही परतीति (सु० सा०—सूर, ४६०८)

### प्रभु को प्यारा हो जाना

मृत्यु को प्राप्त होना। प्रयोग—मेरे एक दर्जन बहन भाई थे जिनमें अधिकतर पैदा होते ही या साल दो साल के होते होते प्रभु के प्यारे हो गये थे (अपनी खबर—उग्र, १७)

### प्रलय मचाना

बहुत उत्पात करना। प्रयोग—मृत्यु के दूत पुलिस × × कहो क्षण भर में प्रलय मचाव दें (मट्ट नि०—बा० भट्ट, १०)

### प्रशंसा करते न थकना

बहुत प्रशंसा करनी। प्रयोग—बहु स्वामी दर्शनानंद, जिनकी अपूर्व प्रतिभा, शास्त्रार्थ-गटुता और विलक्षण युक्तिवाद की प्रशंसा आप हजार बार करते नहीं थकते थे × × (पट्टम पराग—पट्टम० शर्मा, ३५)

(समा० मुहा०—प्रशंसा करते मुंह सूखना)

### प्रश्न उठ खड़ा होना

समस्या उपस्थित होनी। प्रयोग—असहयोग आंदोलन की तात्कालिक सहर अपने उत्कर्ष पर थी, और चाहे जहाँ, जैसी सभा हो, उसमें राजनीतिक प्रश्नों का उठ खड़ा होना अनिवार्य हो गया था (शेखर० (२)—अज्ञेय, २०७)

### प्रश्नों की भाँड़ी लगाना

बहुत से प्रश्न खड़े होना। प्रयोग—गली में प्रश्नों की भाँड़ी



प्राण ओटना

४८५

प्राण जाना

लग गई (झूठा० (१)—यशपाल, ३५)

(समा० मुहा०—प्रश्नों को भीड़ लगाना)

प्राण ओटना

कष्ट पाना, प्रयत्न करना। प्रयोग—तुम्हीं सबके लिये तो हम अपना प्राण छोड़ रहे हैं (मृग०—वृ० वर्मा, ४६१)

प्राण ओठों तक आना,—कंठगत होना,—मुंह तक आना

(१) प्राण निकलने पर होना, मृत्यु निकट आनी। प्रयोग—प्राण हमारे बिन हरि प्यारे रहे अघरन आय (सू० सा०—सूर, ३६८); अब जो मेरा जो होठो पर आ गया (ईशा०—ईशा०, ९७) (÷); अघर लगे है आनि करि के पयान प्राण, चाहत चलन ये संदेसो लै मुजान को (घन० कवित्त—घना०, २०९)

(२) अत्यंत संकट या कष्ट की स्थिति होनी। प्रयोग—प्राण कंठगत भयेउ भुआलू (राम० (अ)—तुलसी, ५१७); हाय हाय ! इसकी बातों से तो प्राण मुंह को चले आते हैं (भा० ग्रंथा० (१)—भारतेन्दु, ३१०); भले पसारै हाथ लगै जब प्राण अघर तर (राधा० ग्रंथा०—राधा० दास, ४५); वहां मुझे ढँढते-ढूँढते रामा के प्राण कंठगत हो रहे थे (अलीत०—महादेवी, १६); देखिए प्रयोग (१) में (÷) भी

(३) भयभीत होना। प्रयोग—तब शेखर के प्राण मुंह को आ जाते हैं कि कहीं बहिन भी उसका मजाक करते हुए हस न दे (शेखर (१)—अज्ञेय, १३९)

प्राण कंठगत होना

दे० प्राण ओठों तक आना

प्राण की नाई

प्राण की तरह, अत्यंत प्रेम से। प्रयोग—रखिहउं ताहि प्राण की नाई (राम० (सु)—तुलसी, ८४०)

प्राण के ग्राहक होना

(१) दिक करने वाला। प्रयोग—वह समझती है, सारा घर मेरी उपेक्षा कर रहा है। सबके सब मेरे प्राण के ग्राहक हो रहे हैं (गवन—प्रेमचंद, २७)

(२) प्राण लेनेवाला; मारे डालने की ताक में रहनेवाला।

प्राण खिंचना

प्राण निकलना। प्रयोग—उसे लगता था कि उसके प्राण खिंच रहे हैं (सुहाण०—अ० ना०, २०६)

प्राण चढ़ाना

किसी निमित्त प्राण त्यागना। प्रयोग—जिन चूड़ावतों ने मेवाड़ के मान की रक्षा के लिये सदा हंसते-हंसते प्राण चढ़ाए हैं, × × उनके दो एक सरपारों की कुबुद्धि का दण्ड सम्पूर्ण शाखा को देना उचित नहीं होगा (विष्णु—प्रेमी, ३१)

प्राण छिड़कना

बहुत स्नेह करना। प्रयोग—यह भावना कितनी वेदना-पूर्ण थी कि वही बालिका, जिस पर माता-पिता प्राण छिड़कते रहते थे, विवाह होते ही इतनी विषमप्रस्त हो जाए (मान० (२)—प्रेमचंद, १७)

प्राण छूटना

(१) प्राणांत होना। प्रयोग—सूरदास प्रभु प्राण न छूटत पवधि आस मैं लीन (सू० सा०—सूर, ४४१६); भूषण प्रसीमें तोहि करत कसीसे पुनि बाननि के साथ छूटे प्राण तुरकन के (भूषण ग्रंथा०—भूषण, १४८)

(२) छुटकारा मिलना।

(समा० मुहा०—प्राण जाना,—निकलना)

प्राण छोड़ना,—त्यागना

मृत्यु को प्राप्त होना। प्रयोग—राम राम कहि छाड़ेसि प्राणा (राम० (लं)—तुलसी, ९२५); हीन भए जल मीन अधीन, कहा कछु मो अकुलानि-समाने नीर सनेही को लाय कलंक निरास हूँ कायर त्यागत प्राण (घन० कवित्त—घना०, ५)

(समा० मुहा०—प्राण तजना,—पयान करना,—पखेरू उड़ जाना)

प्राण जाना

बहुत दुःख पहुँचाना। प्रयोग—इत तो प्राण जात है तुम बिनु तुम न लखत दुख जी को (भा० ग्रंथा० (२)—भारतेन्दु, २७३)



(२) बहुत अच्छा लगना, प्रिय होना। प्रयोग—रंगों पर उसके प्राण जाते ही ये, उस पर मैंने × × अपने नन्हें हाथों से उसके लिए उतनी लंबी चौड़ी ओड़नी काढ़ी थी (अतौत०—महादेवी, ३२)

(३) मरना।

#### प्राण जुड़ाना

जी को मुख पहुँचाना। प्रयोग—हाँ सखि ! घामो, बांह खोल हम लगकर गले, जुड़ा ले प्राण (पल्लव—पंत, ६०)

#### प्राण त्यागना

##### दे० प्राण छोड़ना

##### प्राण देना

(१) किसी को बहुत अधिक चाहना, विह्वल होना। प्रयोग—प्राण दिए हम जगत जानत, मुख सदैव कुबिजा लिए (सु० सा०—सूर, ४४८३); वह स्वच्छंद प्रकृति के विनोद प्रिय सहृदय उदार और मिश्रों पर प्राण देने वाले घादमी थे (मान० (१)—प्रेमचंद, ८८); साधु सन्यासी तक पैसों पर प्राण देते हैं (कर्म०—प्रेमचंद, ११)

(२) बहुत कष्ट पाना। प्रयोग—जब उन्हें मेरी रत्तीभर परवाह नहीं है, तो मैं ही क्यों उनकी फिक्र में प्राण दूँ (मान० (१)—प्रेमचंद, २३९)

##### प्राण नहीं में समाना

(१) अत्यन्त बेकली होनी। प्रयोग—वह डरा मामूली सी ढेर में धर आते हैं तो प्राण नहीं में समा जाते हैं (मान० (१)—प्रेमचंद, ३२१)

(२) अत्यन्त भयभीत होना। प्रयोग—मल्लेरिया कैला हुआ था। बच्चे को जबर आया। दीनानाथ के प्राण नहीं में समा गये (मान० (२)—प्रेमचंद, १९६-७)

(समा० मुहा०—प्राण नहीं में आना)

##### प्राण निकलना

(१) निस्तेज होना या सार न रह जाना। प्रयोग—पर पीछे हरिचन्द्र जी ने इसमें निलना छोड़ दिया। इससे पत्र का प्राण निकल गया (गु० नि०—बा० मु० गु०, ३१७)

##### प्राण निकाल लेना

मर्मन्तिक प्रभाव डालना। प्रयोग—काननि हूँ प्राणनि निकासि लेत एरी बोर ! ऐसी कछु गावत मधुर बंती-सुर में (घन० कवित्त—घना०, १८६)

(समा० मुहा०—प्राण ले लेना)

##### प्राण पक जाना

जी बहुत दुखी हो जाना। प्रयोग—परान पक गए हैं ई घर के सोमन के बरताव से (मूले०—मग० वर्मा, २०६)

##### प्राण पिघलना

दयार्द्र होना। प्रयोग—पिघल पड़ते हैं प्राण, उबल चलती है दूग जल-धार (पल्लव—पंत, २१)

##### प्राण-प्यारा होना

अत्यन्त प्रिय होना। प्रयोग—कंत उमा मम प्राण पियारी (राम० (बाल)—तुलसी, ८३)

##### प्राण फूंकना

जीवन प्रदान करना; किसी बुझती हुई संस्था या आंदोलन में पुनः जोश भरना। प्रयोग—चाहता हूँ ×× बैजू के द्वारा संगीत में नया प्राण फूंक दूँ (मृग०—वृ० वर्मा, ३४६)

(समा० मुहा०—प्राण डालना)

##### प्राण बसना

गहरा लगाव होना। प्रयोग—तेरे मनोरथ चाव तेरेई दरस पव तेरिये सपव प्राण तोहि मैं बसत है (क० र०—सेनापति, ३६); मोरे रंग का, लांबा, छरहरा दाँकीन, युवक था जिसके प्राण खेल में बसते थे (कर्म०—प्रेमचंद, ३)

##### प्राण मुँह तक आना

##### दे० प्राण ओठों तक आना

प्राण मुट्टी में लिए रहना,—हाथ में लिए रहना मृत्यु की परवाह न करनी। प्रयोग—पीछे विन गोपियों से कहियो जिन्होंने मेरे काज छोड़ी है लोक वेद की लाज × × और अवध की घास किये प्राण मुट्टी में लिए हैं कि तुम कंत भाव छोड़ हरि को भगवान जान भजो (प्रेम सा०—ल० ला०, १२९); प्राण हाथ ही लिए रहै प्रीतम हित अपने (राधा० प्रथा०—राधा० दास, ४९); वह सोचकर



प्राणों को मुट्ठी में लिये हुए नाव पर बैठ जाती है (निर्मला—प्रेमचंद, ७)

(समा० मुहा०—प्राण हथेली पर लिए रहना)

**प्राण लगा रखना या रहना**

अत्यंत प्रेम करना या होना, मन लगा रहना। प्रयोग—नयन पुतरि करि प्रीति बढ़ाई। राखेउं प्रान जानकिहि लाई (राम० (अ)—तुलसी, ४२७); तुम्हें प्रान लगे लुम प्रानन हूं मनमोहन सोहन मानियं जू (घन० कवित्त—घना०, १२०)

**प्राण सूखना**

अत्यन्त भयभीत होना। प्रयोग—उनके प्राण अब भी सूख जाते थे कि जोध के आवेश में कोई पागलपन न कर बैठे (मान० (७)—प्रेमचंद, २१)

**प्राण हरना**

मार डालना; बहुत संताप या दुःख देना। प्रयोग—सहसबाहू के हरे प्राण, जरजोधन चाल्यो खैं मान (कबीर ग्रंथा०—कबीर, २०३); एकहि बान प्रान हरि लीन्हा (राम० (बाल)—तुलसी, २१८)

(समा० मुहा०—प्राण लेना)

**प्राण हरा होना**

खुशी होनी। प्रयोग—बारें कुशल हुई कि भादों में वर्षा हो गयी और किसानों के प्राण हरे हुए (गोदान—प्रेमचंद, १५५)

**प्राण हाथ में लिए रहना**

दे० प्राण मुट्ठी में लिए रहना

**प्राण होना**

(१) अत्यन्त प्यारा होना। प्रयोग—हीरामनि तू प्रान परेवा। घोख न लाग करत तोहि सेवा (पद०—जायसी, ३११०); गोकुल कान्हू कमल दल लोचन, हरि सबहिनि के प्राण (सु० सा०—सूर, ३५८८); सखी, तू मेरी प्राण है (भा० ग्रंथा० (१)—भारतेन्दु, ४२०); महाराज, ब्रजो को महिमा और ब्रजवासियों का प्रेम मूढते कुछ कहा नहीं जाता, उनके तो तुम्हीं हो प्रान (प्रेम सा०—ल० ला०, १३९)  
(२) सर्वस्व होना। प्रयोग—हमारे मंडल को तो मानो आप प्राण हैं (हंद०—अ० ना०, ५२८)

**प्राणों की पुतली होना,—के प्राण होना**

अत्यन्त प्रिय होना। प्रयोग—तू परम प्रिय तुम्ह सबही के। प्रान प्रान के जीवन जी के (राम० (अ)—तुलसी, ४२५); अब आज जैसे उसने देखा उसके प्राणों की पुतली यह बालिका जीवन में आगे बढ़ रही है (विशाली०—चतुर०, ६)

**प्राणों की हंसी**

ऐसा मजाक जो दुःखदायी हो जाय। प्रयोग—देखि आज वा सुबल की कौन गति कराऊं, बड़ी डीठ भयो है, प्रानन की हासी कौन काम की (भा० ग्रंथा० (१)—भारतेन्दु, ४४१)

**प्राणों के प्राण होना**

दे० प्राणों की पुतली होना

**प्राणों के साथ होना**

अपने समान महत्वपूर्ण होना। प्रयोग—आप निश्चित रहियें। यहां उनको किसी बात का कष्ट नहीं होगा। बाबू रामनाथ जी मेरे प्राणों के साथ हैं (भिरा०—कौशिक, १४२)

**प्राणों पर खेलना**

मृत्यु की भी परवाह न करनी। प्रयोग—XX कंस यदि ब्राह्मणों पर हाथ उठायेगा तो मैं कल ही मधुरा के धंधकों और वृष्णि बिशोहियों के साथ उसका सर्वनाश करने को प्राणों पर खेल जाऊंगा (देवकी—रा० रा०, ९३)

**प्राणों से भी प्यारा,—बढ़ कर**

बहुत प्यारी। प्रयोग—प्रान तैं अधिक राम प्रिय मोरे (राम० (अ)—तुलसी, ३८६); मोहिनी की सानि है सुभाग ही हंसनि जाकी साहिलो लमनि ताकी प्राननि तैं प्यारिये (घन० कवित्त—घना०, १४०); कोसलपुर वासी नर नारि बृद्ध अरु बाल। प्रानहु ते प्रिय लागत सब कहूँ राम कृपान (राम० (बाल)—तुलसी, २१३); मैं सखी तरह जान्ता हूं कि वे मुझको प्राण से भी अधिक समझते हैं (परीक्षा०—श्री० दास, १९)

**प्राणों से भी बढ़ कर**

दे० प्राणों से भी प्यारा



### प्राणों से हाथ धोना

मरना । प्रयोग—जब तक अत्याचारियों के इस जल्ये का मूलोच्छेद न कर दूंगी, चैन न मूंगी, चाहे इस घनुष्ठान में मुझे प्राणों ही से क्यों न हाथ धोना पड़े (रंग० (२)—प्रेमचंद, ९४)

### प्रातः किया करना

शोच इत्यादि कर्मों से निवृत्त होना । प्रयोग—प्रात किया करि मे गुरु पाहीं (राम० (बाल)—तुलसी, ३४०)

### प्रीति की बेल बोलना

प्रेम करना । प्रयोग—यब ताकी उपचार करे किन प्रीति की बेल बई री (सु० सा०—(परि० १) सूर, ९९)

(समा० मुहा०—प्रीति लगाना)

### प्रेत लगाना

भूत का प्रकोप होना । प्रयोग—बेतन परा न एको चेतू । सबन्हि कहा एहि साग परेतू (पद०—जायसी, ३८७); सोचनि ही पचिये घन आनंद, हेत पग्यो किधो प्रेत लग्यो है (घन० कवित्त—घना०, १५)

### प्रेम उपजना

प्रेम होना । प्रयोग—कहू कबीर प्रेम नहि उपज्यो, बांध्यो जमपुरी जासी (कबीर ग्रंथा०—कबीर, १०१)

### प्रेम की चोट

प्रेम का क्षतर । प्रयोग—सूरदास जाने बहै जिहि प्रेम की चोटा (सु० सा० (परि० १)—सूर, ७१)

### प्रेम की डोर में बंधना,—बेड़ी पड़ना

प्रेम के बन्धो भूत होना । प्रयोग—सूरदास प्रभु की मन सजनी बंध्यो राग की डोरि (सु० सा०—सूर, १२७५); पापनि बारि लई घनआनंद चापनि बाबरी प्रीति की बेड़ी (घन० कवित्त—घना०, २०१); हम भगवान से प्रायना करती है तुम दोनों सबदा इसी फूल की माला की भाति घापस में प्रेम के डोर में बंधे रहो (भा० ग्रंथा० (१)—भारतेन्दु, २०)

### प्रेम की बेड़ी पड़ना

दे० प्रेम की डोर में बंधना

### प्रेम के प्यासे होना

प्रेम की तीव्र इच्छा रखनी । प्रयोग—हरत मनोहर मीन छवि प्रेम पिआसे नैन (राम० (बाल)—तुलसी, ३३५)

### प्रेम जोड़ना,—ठानना

प्रेम करना । प्रयोग—सबकुं बूझत मैं फिरो, रहण कहै नहीं कोइ । प्रीति न जोड़ी राम सु, रहन कहीं पै होइ (कबीर ग्रंथा०—कबीर, ३१); अब हरि कोन सौ रति जोरी (सु० सा०—सूर, ३९७९); प्रभु तन चितइ प्रेम तन ठाना (राम० (बाल) तुलसी, २६६); पावक साखी देइ करि जोरी प्रीति दुआइ (राम० (कि)—तुलसी, ७६०); कबहुं प्रीति न जोरिये, जोरि तोरिये नाहि (सु० सा०—सुन्द, १३०); तुमतो सब जानत नेह मन्हा अब प्रीति कहूँ फिर जोरिए ना (भा० ग्रंथा० (२)—भारतेन्दु, ८२१)

### प्रेम ठानना

दे० प्रेम जोड़ना

### प्रेम तोड़ना

प्रेम-सम्बन्ध न रखना । प्रयोग—जो तन चीरहि घग न मोरों पिड परं तो प्रीति न तोरों (कबीर ग्रंथा०—कबीर, २७४); सूरदास मनमोहन पिय तैं तोरि सनेह बिधाते दीनो (सु० सा०—सूर, ४१४९); कबहुं प्रीति न जोरिये जोरि तोरिये नाहि (सु० सा०—सुन्द, १३७)

### प्रेम में पगना,—लिपटे रहना

प्रेम में बंधना, प्रेम करना । प्रयोग—मिलवहु जाइ अहां नट नागर रहत प्रेम लपटाने (सु० सा०—सूर, ४५५८); कहे पदमाकर पगी घों पति प्रेम ही में पदमनि तो सी तिया तू ही पक्षियतु है (जग०—पद्माकर, ३); सोचनि ही पचिये घन आनंद हेत पग्यो किधो प्रेत लग्यो है (घन० कवित्त—घना०, १५)

(समा० मुहा०—प्रेम-डोर में बंधना)

### प्रेम में पगी हुई,—लिपटी हुई,—रस में सनी हुई

अत्यन्त प्रेमपूर्ण । प्रयोग—बोली सती मनोहर बानी । भग संकोच प्रेम रस सानी (राम० (बाल)—तुलसी, ७४); मुनि केबट के बैन प्रेम लपेटे अटपटे (राम० (अ)—तुलसी, ४६६); प्रीति पगी अखियानि दिवाय के हाथ अनीत मु दीठि खिये (घन० कवित्त—घना०, १९)

### प्रेम में लिपटी हुई

दे० प्रेम में पगी हुई



प्रेम में लिपटे रहना

४८३

प्रेम से दग्ध होना

प्रेम में लिपटे रहना

पूत्रि प्रेम लड़ाई के (राम० (बाल)—तुलसी, ३३३)

दे० प्रेम में पगना

प्रेम सुख से फूले होना

प्रेम रस में सनी हुई

प्रेम से परिपूर्ण होना । प्रयोग—परमानन्द प्रेम सुख फूले  
(राम० (बाल)—तुलसी, २०५)

दे० प्रेम में पगी हुई

प्रेम से दग्ध होना

प्रेम लड़ाना

प्रेम से पीड़ित होना । प्रयोग—प्रेम सों दाया धनि वह जीऊ  
(पद०—जायसी, १५३)

बहुत प्रेम करना । प्रयोग—प्रमुदित महा मुनि बृन्द बंदे



## फ

### फंदे में पड़ना

(१) किसी के धोखे में या बहकावे में घाना । प्रयोग—  
कबीर माया पापणी, फंदे में बँटी जाति । सब जग तो फंदे  
पड़या गया कबीरा काटि (कबीर ग्रंथा०—कबीर, ३२)

(२) काबू में आना । प्रयोग—मेरे फंदे कबहुँ तो परिहो  
मजरा लवहीं रहे (सु० सा०—सुर, २३१८)

(समा० महा०—फंदे में आना,—फंसेना)

### फंस जाना

(१) किसी स्त्री या पुरुष का अवैध सम्बन्ध होना ।  
प्रयोग—बया वह सधमच दीवान ही के साथ फंसी हुई  
है (मा० मा०—कि० गौ०, ८१-८२); नोखे की स्त्री राम-  
लखन सिंह के बेटे से फंसी हुई है (मैला०—रेणु, २१८-९)

(२) धोखे या बहकावे में आना । प्रयोग—दुनजार पही  
या कि कोई ईंट और चूने वाले फंस जाव और दम बीस  
हजार का दस्तावेज निखा लें, तो मुद में ईंट और चूना  
भी मिल जाव (मान० (७)—प्रेमचंद २५); अब तो सारा  
संसार फंस गया है (चोटी०—निराला, १२६)

(३) बंधना, उलझना । प्रयोग—घबड़ा चलिए जब तो  
फंस ही गये—जहाँ ले चलोगे चलना पड़ेगा (मिस्रा०—  
कोशिक, १३४)

### फंसेना

किसी बुरी नियत से किसी को घपने चंगुल में करना ।  
प्रयोग—आज कल वह एक तीसरे को फंसा रही है  
(ये कीठे०—अ० ना०, १५२); बया नाम, सीधे क्यों नहीं  
कहते कि उसे छोड़कर दूसरी को फंसा रहे थे (झठा० (२)—  
यशपाल, ३०४)

### फकड़ होना

(१) मस्त या लापरवाह होना । प्रयोग—आजीवन फकड़

की जिन्दगी बितानेवाला बाणभट्ट आज घपने को इतना  
पराधीन क्यों समझ रहा है ? (बाण०—ह० प्र० द्वि०, ८९)

(२) जो मंहु में घाए, वह बकनेवाला ।

### फट जाना

पक्क होना, भिन्न रास्ता पकड़ना । प्रयोग—पर प्रयाग  
की चौथी कांग्रेस के समय छोटे नाट कानबिन साहब को  
हवा में धर कर ऊँचोने समलभानों को रिस्कों में फट  
कर चलने की सलाह दी (गो० मि०—ना० मा० ग०, २८०);  
कारनवों में फटे रहे जब हम भाग कैसे न फट लख जाता  
(समले०—इण्डिअन, ४८)

### फट पड़ना

(१) किसी वस्तु का अधिक परिमाण में होना । प्रयोग—  
जदि उसकी जानियों की ओर जो दुधर थोड़ी देर में उसके  
ऊपर फट पड़ी है ध्यान दिया जाय तो वही इतने बड़े  
बागवारी की कमर मोड़ देने के लिए बहल है (मा० ग्रंथा०  
(१)—भारतेन्दु, ६२४)

(२) नाराज होकर बकना । प्रयोग—बीच-बीच में  
असंगत भाव से घटबहाकर जाने धस्फट भाव से क्या  
कहती रहती है, फिर एकाएक फट पड़ती है (व्याग०—  
जैनेन्द्र, १४)

(३) बहुत भीड़ होनी । प्रयोग—सारा शहर देखने को  
फट पड़ता था (प्रेमा०—प्रेमचंद, २५४)

(४) आनंदित होना, मग्न होना ।

(५) घबानक जा पहुँचना ।

### फटक पछोर कर देखना

जल्दी तरह जाँच करनी । प्रयोग—तुम मधुकर निरगुन  
निजु नीके, देखे फटक पछोरे (सु० सा०—सुर, ४३८१)



### फटकना

(१) पास जाना। प्रयोग—माई काई नगर हो में हूँ पर विषयम्भू उसके द्वार तक नहीं फटक सकता है (गुं नि०—वा० मु० गु०, २०५); उनके महल में महीनों बरसों भी नहीं फटकते थे (गोली—चतुर०, १४५)

(२) अच्छी तरह जानना। प्रयोग—देखो सकल संसार विहायी, जोन्हे छरि फटके (सु० सा०—सुर, ४२५५)

### फटकने न देना

पास न जाने देना। प्रयोग—हम तो बीमारी में भी बराबर किराया देते और मकान में किसी को फटकने न देते (पेहरे—अश्क, ७२); वह तो घाटो पहर अवसर देखा करता है। तू ही उन्हें फटकने न देती होगी (रंग० (१)—प्रेमचंद, ३२१)

### फटकार पड़ना

डाँटा जाना। प्रयोग—जब कि फटकार ही रहो पड़ती मूख फटकारते रहे तब क्या (चुमते०—हरिऔध, ८५)

### फटकार बरसना

(१) श्रीहीन होना। प्रयोग—बेइमानों की तो मूरत ही से फटकार बरसती है (मान० (४)—प्रेमचंद, २९)

(२) खूब डाँट पड़नी।

### फटकारना

(१) सामानों से पा लेना। प्रयोग—जो एक हजार रुपए हर महोने फटकार कर विलास में उड़ाते हो, उसमें आत्म-बल जैसी वस्तु रह ही नहीं सकती (गोदान—प्रेमचंद, १६५)

(२) भला बुरा कहना। प्रयोग—संसार में भटकते हुए जीवों को देखकर कलशा के अभ्रु से वे काँठर नहीं हो जाते थे बल्कि और भी कठोर होकर फटकार बताते थे (कबीर—८० प्र० दि०, १५४)

### फटना

अत्यंत पीड़ा होनी। प्रयोग—सगर मुश्किल से पचास कदम चले होंगे कि गर्दन फटने लगी (गोदान—प्रेमचंद, ९९)

### फटा गला

भारी फटी हुई आवाज। प्रयोग—फटे गले से नसीर बोला × × (मुग०—पू० वर्मा, ४४०)

### फटा-फटा रहना

उदासीन रहना। प्रयोग—कुछ देर बाद जोहरा आई XX पर रमा आज उससे भी फटा-फटा रहा (गहन—प्रेमचंद, २८९); इतने दिनों तक वह मुझ से फटा-फटा रहा, आज जो खुद मेरे पास आया, तो क्यों? (मा—कौशिक, ३७९)

### फटी आँखें

फैली हुई आँखें। प्रयोग—बनगी फटी आँखों उसे देखने लगी (सुहाग०—पू० ना०, १३९); घरना फटी हुई आँखों अंतिम फूँकारें ले रहा था (मुग०—पू० वर्मा, १५४)

### फटी आँखों से देखना

भाव गुप्त आँखों से देखना। प्रयोग—गुनकर वह कुछ देर फटी आँखों से मुझे देखती रह गई (कल्याणी—जेनेन्द्र, १०२)

### फटी हालत होना

बुरी दशा होनी। प्रयोग—वर्षों न रहती सदा फटी हालत पास मुख किस तरह फटक पाता (चुमते०—हरिऔध, ४८)

### फटे बांस सा स्वर

मोटी धीरे कटु आवाज। प्रयोग—एकाएकी छा गये सफाटे में उनका फटे बांस सा स्वर बोला—मानिटर कहाँ है? (शेखर (१)—अज्ञेय, ९२)

### फटे-हाल

बहुत ही दुरवस्था में होना। प्रयोग—आज तो वह रानी है। इस फटे-हाल में भी रानी है (गोदान—प्रेमचंद, २१०); लेकिन मैं या फटेहाल घरना बालक और कमलापति से प्रतिष्ठित पैसापति पुत्र (अपनी सब—उग्र, ९८)

### फड़ डालना

जुआ का खेल होना। प्रयोग—मेरी माँ और मामी को मकान के पिछले खंड में बंद कर मेरा माई बिचले खंड में जुए का फड़ डालता (अपनी सब—उग्र, २४)

(समा० मुहा०—फड़ बिछाना)

### फड़क उठना

(१) प्रगल्भ होना। प्रयोग—गोड़ (श्री रामदास गोड़) जो पढ़कर फड़क गये (पट्टम० के पत्र—पट्टम० शर्मा, ४१); ऐसा चढ़ाव हो कि मड़वे वाले देखकर फड़क उठे (गहन—प्रेमचंद, ७)

(२) उत्तेजित हो उठना।



## फड़कता हुआ

### फड़कता हुआ

जीपीला । प्रयोग—ब्रजभाषा की पुरानी कविता से कुछ चुने हुए, फड़कते हुए उदाहरण आगे धीरे धीरे तो बड़ा अच्छा हो (पद्म० के पत्र—पद्म० शर्मा, २१)

### फफककर रोना

फूट-फूट कर रोना । प्रयोग—सहसा गौरा बिन्दुल घबरा हो गयी और काफी पर बाहें धीरे धीरे गिर टेक कर फफक कर रो उठी (नदी०—अज्ञेय, ५३)

### फफेड़ना

भकभोरना, खीछालेदार करना । प्रयोग—द्विवेदी जी ने पहले ही हमले में हरिश्चन्द्र को बह धरकर फफेड़ा है कि सब हिन्दी वाले की बोल जावेंगे (गु० नि०—वा० मु० गु०, ४३४)

### फवती उड़ाना,—कसना,—लेना

हंसी उड़ाना, व्यंग करना । प्रयोग—हमारे ऊपर फवती कसी जा रही है × × उन दोनों ने तुरंत समझ लिया (मृग०—वृ० वर्मा, ३२०); फवतियां ले सिवाह-मुह कह लो कम बड़ा है न साहबी का रंग (मर्म०—हरिऔध, ९४); लोग पहले उसे तुच्छ समझते थे, अब उससे ईर्ष्या करने लगे, उस पर फवतियां उड़ानी शुरू की (मान० (३)—प्रेमचंद, १५); पंडित हृषीकेश जी की इस प्रकार उत्तरोत्तर उन्नति और प्रतिष्ठा को देखकर भाटपाड़े के उन धार्मिक लोगों की राय भी बदल गई, जिन्होंने इनके अंगरेजी पहने पर फवतियां उड़ाई थीं (पद्म पराग—पद्म० शर्मा, ६०); दो-एक सहृदय महाशयों ने दबी जवान से फवतियां भी कसी (प्रेम०—प्रेमचंद, २५२); बाई जी की धीरे देखकर लोग राखेलान पर फवतियां भी कस रहे थे (ज्ञान०—यशपाल, ४३)

### फवती कसना

### दे० फवती उड़ाना

### फवती लेना

### दे० फवती उड़ाना

### फरफंद

छल-कपट । प्रयोग—जाति का दिन फिरा जिन्हें पाकर जी न फरफंद के रहे नेही (चुमते०—हरिऔध, ६५)

### फर्श कर देना

मारपीट कर जमीन पर गिरा देना । प्रयोग—अब जो तनिको बोल्थो तो फिर मारे जूतन के फरस कर देदब (राधा० ग्रंथा०—राधा० दास, ११५)

### फर्शो सलाम

खूब झुककर किया जाने वाला सलाम । प्रयोग—उस्ताद जी ने आते ही पहले तीनों व्यक्तियों को एक फर्शो सलाम किया (मा—कौशिक, १२५)

(समा० मुहा०—फर्शो सलाम )

### फल चखना

परिणाम भुगतना । प्रयोग—कांपडा बात बात में है जी फल बुरे हैं इसीलिये चखते (चुमते०—हरिऔध, ९)

(समा० मुहा०—फल खाना)

### फल चखाना,—देना

किये का उचित फल देना । प्रयोग—निज पवित्र पुण्यारथ का फल देह चखाई (राधा० ग्रंथा०—राधा० दास, ६९९); देई सच फल प्रगट प्रभाऊ (राम० (बाल)—तुलसी, ६)

### फल देना

### दे० फल चखाना

### फल पाना

किये का परिणाम भुगतना । प्रयोग—मो फल तुरत सहब सब काहू (राम० (बाल)—तुलसी, ७७)

(समा० मुहा०—फल फलना,—भोगना,—मिलना)

### फलना

अनुकूल होना; अच्छा फल मिलना । प्रयोग—मालूम होता है, हनुमान जी फल रहे हैं (मूले०—मग० वर्मा, १६५)

### फलना फूलना

उन्नति होना । प्रयोग—नील कांत की आत्मा की मुख होगा जब वह इस बेसहारा बच्चे को फलते-फूलते देखेगा (बीने०—रा० रा० ५२); करो दया प्रभुवर पहले सम पुनः वह फले फूले (मर्म०—हरिऔध, २)

### फसली बुखार

मौसम के कारण घानेवाला बुखार । प्रयोग—बया फसली



बुलार का इस कदर जोर है (पट्टम० के पत्र—पट्टम० शर्मा, २०५)

### फाँके-मस्त होना

दरिद्रता में भी प्रसन्न या मस्त रहना। प्रयोग—कितने मुफलिश कल्लाच फाँके मस्त अब अपने हाड़ के उत्तमता की शोली में ऐसे आते हैं तो देखते ही बनता है (भट्ट नि०—भा० भट्ट, १५-१९); पर फाँकेमस्ती में भी मैं परियों के स्वाव देखता रहा (चतुरी०—निराला, ३५); घन छोड़ कर मरने से फाँके मस्त रहना कहीं अच्छा है (मान० (२)—प्रेमचंद, ३९)

### फाँस लेना

अपने वश या प्रभाव में कर लेना। प्रयोग—कमबस्त जाने कहाँ से इतना हाव-भाव सीस आती हैं जो भोले-भालों को यों ही फाँस लेती हैं (भारती०—रा० रा०, ९०); हम एक दूसरे को फाँसना भी चाहते हैं (चोटी०—निराला, १२६); आज मैंने डायरेक्टर कादिर को फाँस लिया (पैतरे—अशक, ४५)

(समा० मुहा०—फाँस लाना,—रखना)

### फाँसी चढ़ जाना

(१) फाँसी की सजा भुगतनी। प्रयोग—मैंने × × पक्का कर लिया कि कैद काटूंगा, फाँसी चढ़ंगा × × मगर इस शैतान के आगे सपने में भी सिर नहीं भुकाऊंगा (बल०—नागा०, ५५)

(२) मौत को भगनाना।

(समा० मुहा०—फाँसी के तल्ले पर झूल जाना,—पर झूल जाना,—पर लटक जाना)

### फाँसी देना

(१) कष्टदायक स्थिति में डालना। प्रयोग—हाय! मेरे माता पिता ने मुझे अच्छी फाँसी दी (राधा० प्रधा०—राधा० दास, ५६०)

(२) गले में फंदा डालकर मार डालना।

### फाँसी होना

बहुत कष्टदायक होना। प्रयोग—जोग बटोरे लिए फिरत हो, बजवासिन की फाँसी (सु० सा०—सूर, ४२५६)

### फाग खेलना

प्रसन्नता मनाना। प्रयोग—निवज्र भए दोऊ खेलत है बारहमासी फाग (सु० सा०—सूर, ४२७०)

### फाड़ खाना या फाड़े खाना

(१) बहुत दुखदायी होना। प्रयोग—जो घर नमुषा को फाड़े खाना था, उसमें आज पहुँच कर ऐसा आनन्द आया जैसे किसी बिछुड़े मित्र से मिली हो (मान० (१)—प्रेमचंद, २४७)

(२) बहुत तंग करना। प्रयोग—नाह की मुबास लागे हूँ है कैयो 'कैसब' मुमाज ही की बास भीर-भीर फारे खाति है (कैशव०—कैशव, १५९)

(३) गुस्सा होना। प्रयोग—उसे किसी बच्चे को डांटने का भी अधिकार न था, सात फाड़ खाती थी (मान० (३)—प्रेमचंद, ७५)

(४) चिड़चिड़ाना, झूलाना।

### फाल बांधना

उल्लंघन कर बांधना; कदम भर का फासला। प्रयोग—कहै पद्माकर त्यों हुंकरत, फुकरत फैलत फलात फाल बांधत फलका में (पद्माकर रचित—हि० श० सा०)

### फिकरा कसना

कोई बुरती हुई बात कह देनी। प्रयोग—कुंवर साहब को देखकर लोगों ने फिकरे कसे (इंस्टा०—मग० शर्मा, ४२); हाल में एक के खांसते ही दूसरों के खांस उठने का उल्लेख कर उन्होंने जो फिकरे कसे, उन्हें सुनकर मैं डरा, क्योंकि मुझे तो खाँसी धापी ही थी (पैतरे—अशक, ३५)

(समा० मुहा०—फिकरा चुस्त करना,—बाजीकरण)

### फिट्टा मुँह

(१) 'जहन्नुम में जाए' 'जो चाहे हो' यह भाव। प्रयोग—अपने आप में तो सकत नहीं फिर ऐसे राज का फिट्टे मुँह। कहाँ तक आप को सताया करें (इंशा०—इंशा०, १०४)

(२) खिसियाया हुआ चेहरा।

### फिरंट रहना

बेहوش रखनी, बिमुख होना। प्रयोग—अब्यक्त तो वह खुद ही आप से फटे-पटे रहेंगे, मगर आप भी फिरंट रहिए (मा—कौशिक, ३९०)



### फिर जाना

(१) प्रतिकूल होना। प्रयोग—परमात्मा हम से फिर गया है (रंग० (२)—प्रेमवन्द, ६१)

(२) बदल जाना। प्रयोग—भयव नाम बिधि कियेउ सुभाऊ (राम० (बाल)—तुलसी, २८५); इन मीर साहब को मालूम है कि रानी साहब से मेरा दिन बिलकुल फिर गया है (झांसी०—वृं० वर्मा, ३८२)

### फिर पड़ना

क्रोध करना। प्रयोग—यदि होतो में कोई मंदी गानियां बकता चला जाता है तो पुरा भाव लगने पर आप उसे मारने न जायेंगे, उससे दूर हटेंगे, पर यदि जहां-जहां आप जाते हैं वहां-वहां वह भी आपके साथ-साथ बघ्नील बकता जाता है तो आप उस पर फिर पड़ेंगे (चिंता० (१)—मुक्त, ९८)

### फिसलना

(१) मन चल जाना। प्रयोग—मैं यदि फिसलूनी गुन पधपर प्रिय, तुम होगे उत्तरदायी (स्वर्ण धूलि—पंत, १४७); जाय कैसे नहीं फिसल कोई जो घगर है फिसल-फिसल जाता (बोल०—हरिऔध, १९९) (÷)

(२) पतन होना। प्रयोग—वह जानती थी कि यद्यपि संयमशील पुरुष बड़ी मुश्किल से फिसलते हैं, मगर जब एक बार फिसल गए तो किसी तरह से नहीं सम्भल सकते (रंग० (२)—प्रेमवन्द, ३४७); देखिए प्रयोग (१) में (÷) भी

### फिसिर-फिसिर चलना या होना

गुप्तचर बात या सलाह होनी। प्रयोग—कुमार कृष्ण घोर प्रधान अधिकारिणिक में दीर्घकाल तक फिसिर-फिसिर चलती रही (बान०—ह० प्र० द्वि०, २१०)

### फीका

नीरस; तल्व हीन। प्रयोग—तबि रस रीति नंद-नंदन की, सिखवत निरगुन फीकी (सू० सा०—सूर, ४३१५); निज कबित केहि नाग न नौका सरस होउ अथवा अति फीका (राम० (बाल)—तुलसी, १४); प्रेम बिना फीकी सब बातें कहहु न लाख बनाई (सा० प्र० (१)—भारतेन्दु, ५२०); यशोधरा का गाना समाप्त होने पर लोगों ने अनुभव किया कि वीरगुप्त के गाने के घागे यशोधरा का गाना फीका था (चित्र०—भग० वर्मा, ७९)

### फीका पड़ना

अपेक्षाकृत कम होना। प्रयोग—अगर आप हमारी जननी बनना मंजूर करें तो निश्चय सारे दुःख फीके पड़ जायें (गंगा०—उग्र, ८)

### फीका लगना

(१) तुलना में धी-हीन लगना। प्रयोग—तुम्हारे चित रजधानी नौकी, मेरे दास-दास के चेरे, तिनकी लागति फीकी (सू० सा०—सूर, २१६५); यदि मैं कहूं कि बम्बई की इपटा के रहसों को देखकर इलाहाबाद में उदय शंकर का नृत्य फीका लगा तो इसमें प्रत्युक्ति न होगी (पेंतरे—अश्क, २५) (÷)

(२) महत्वहीन या तुच्छ लगना। प्रयोग—लोक लाज कुल की मरजादा अति ही लागति फीकी (सू० सा०—सूर, २९६२); बीरा बन्यो मुख लात मनोहर मोहिं सिंगार नय्यो सब फीको (केशव ग्रंथा०—केशव, ७८); मन कम बचन जू यो अनुरागो ताहि मुकुति अति फीकी लागे (नंद० ग्रंथा०—नंद, १६९); संसार के सब मुख धपने प्राण जीवन बिना उनको फीके लगते ये (परीक्षा०—श्री० दास, १५६); देखिए प्रयोग (१) में (÷) भी

(३) नीरस लगना, बेस्वाद लगना। प्रयोग—रंग-नचावन जान बिना धनजानंद लागत फागुन फीकी (धन० कवित्त—धना०, ४७); नौकी पै फीकी लगे, बिन अवसर की बात (वृ० स०—वृन्द, २); राज भवन मुख साज सबै, पै तुम बिन हमको फीको (राधा० ग्रंथा०—राधा० दास, २५)

### फीका स्वर

उत्साहहीन स्वर। प्रयोग—बाबा खड्दी पर लोट गए। फीके स्वर में बोले—तुम जाओ (शेखर (२)—अज्ञेय, ९५)

### फीकी बात

नीरस, बेस्वी बात। प्रयोग—बात फीकी सुन पड़, फीके हुए रंग फीका देख दिल फीका हुआ (बोल०—हरिऔध, १९६)

### फीकी हंसी

वह हंसी जो हृदय से न उठी हो, विवशता की हंसी। प्रयोग—शेखर फीकी हंसी हंस दिया (शेखर (२)—अज्ञेय, २१०)

(समा० मुहा०—फीकी मुसकान)



### फुटानी निकल जाना

मोजमस्ती खत्म हो जानी; पस्त हो जाना। प्रयोग—  
 अब तो नाव खेते-खेते सारी फुटानी निकल जाती है,  
 देवता ? (ब्रह्म०—दे० स०, ५०)

### फुरेरी लेना

डर या रोमांच के कारण शरीर में कंपन होना। प्रयोग—  
 नहीं घन्हाइ नहीं जाइ घर, बित बिहूट्यो तकि तीर।  
 परसि फुरहरी ले फिरति बिहंसति, भंसति न नीर (बिहारी  
 रत्ना०—बिहारी, ६४५); करकि करकि बाहु फुरहरी लेति  
 सरकि सरकि उठे मैं सर खोजहे (देव—हि० श० सा०)  
 (समा० मुहा०—फुरेरी आना)

### फुसफुसाना

कानाफूसी करनी। प्रयोग—मेरे बड़े भाई-जैसे हजरत  
 छिपे-छिपे फुसफुसाते कि महन्त बटुक-विलासी है (अपनी  
 खबर—उग्र, ५९)

(समा० मुहा०—फुस-फुस करना)

### फूंक देना

(१) खर्च कर डालना। प्रयोग—इलाहाबाद जैसे सूखे  
 शहर में भी मैं दो सौ फूंक देता था (रेशमी०—राम० वर्मा,  
 १४३-४४)

(२) किसी आंदोलन को बढ़ावा देना।

(३) मुंह से आग में हवा देना।

(४) नष्ट कर देना।

### फूंक-फूंक कर पैर रखना

(१) बहुत संभाल-संभाल कर काम करना। प्रयोग—  
 पांव सर्वदा फूंक-फूंक कर धरती पर मैं रखती हूँ (वेदेही०—  
 हरिऔध, १२८); बेशक वह ऐसी खबरें नहीं छापते, ऐसी  
 टिप्पणियाँ नहीं करते कि सिर पर कोई घाफत आ जाय।  
 फूंक-फूंक कर कदम रखते हैं (गोदान—प्रेमचंद, १७५);  
 तब से बेचारे बहुत संभल कर चलते थे। फूंक-फूंक कर  
 पांव रखते थे (गादन—प्रेमचंद, २)

(२) बचा बचा कर चलना।

### फूंक मारकर उड़ा देना, —मैं उड़ा देना

(१) बहुत घासाना से नष्ट या असफल कर देना।  
 प्रयोग—कहे देती हूँ हट जाओ, नहीं तो तुम्हारी समस्त  
 कुसंभ्रणों को एक ही फूंक में उड़ा दूंगी (स्कंद०—प्रसाद,  
 ११६)

(२) बहुत तुच्छ समझ कर उपेक्षा करनी। प्रयोग—  
 जिस प्रयोजन और धवसर की तलाश में वह इतनी दूर  
 घाया था, किस सरलता से फूंक मारकर वह उड़ा दिया  
 जा रहा था (ज्ञान०—यशपाल, १६२)

### फूंक में उड़ा देना

दे० फूंक मार कर उड़ा देना

### फूंक से उड़ जाना

तनिक सी विपत्ति से पस्त या नष्ट हो जाना। प्रयोग—  
 फूंक से घाय उड़ न जावेंगे पांव क्यों फूंक फूंक हैं रखते  
 (चुमते०—हरिऔध, ९)

### फूंक से पहाड़ उड़ाना

(१) असम्भव कार्य करने का प्रयत्न करना। प्रयोग—  
 पुनि पुनि मोहि देखाव कुठारु, चहत उड़ावन फूंक पहाड़  
 (राम० (बाल)—तुलसी, २७८) (÷)

(२) मामूली प्रयत्न से बहुत बड़ा काम करना। प्रयोग—  
 देखिए प्रयोग (१) में (÷)

### फूट के बीज बोना, —डालना

बैर कराना। प्रयोग—खाने पीने की छिन्नाघट और जाति  
 पांति के झगड़ों को तरफकी दे देश में सब ओर फूट का  
 ऐसा बीज बोवे कि जातीयता या कीमियत की कहीं गन्ध  
 भी न रह जाय (भट्ट नि०—बा० भट्ट, २३); मैंने नई  
 रानी और पुरानी रानियों में काफी फूट डालवा दी (मुग०—  
 व० वर्मा, ३९४); इसे हम लोगों में फूट डालने को भेजा  
 गया है (देवकी०—रा० रा०, ७०); हे हमारे न कारनामे  
 कम फूट के बीज बेतरह बोये (चुमते०—हरिऔध, ५९)

### फूट की बेल बढ़ना

फूट-भाव फैलना। प्रयोग—कहाँ रही प्यारी मानवता,  
 बड़ी फूट की बेल (कामना—प्रसाद, १००)

### फूट डालना

दे० फूट के बीज बोना

### फूट पड़ना, फूटना

(१) रो पड़ना, करुणार्द्र होना। प्रयोग—अब मां फूट  
 पड़ी (परस—जैनेन्द्र, ६०); × × पंडित जी × × बरा से  
 कावणिक प्रसंग पर फूट पड़ते थे (पहम पराग—पहम० शर्मा  
 ९१)



नहीं समाता (इंशा०—इंशा०, ८८); इस कल्पना का आनन्द लेकर वह फूली न समाती थी (मान० (१)—प्रेमचंद, ३८); रंगतों में रंग कर अपनी फूल फूले न समाते हैं (मर्म०—हरिऔध, ५५)

### फूला फिरना

(१) धर्मद में रहना । प्रयोग—फिरत कत फूल्यो फूल्यो (कबीर ग्रंथा०—कबीर, १६९) (÷)

(२) सूत्र प्रसन्न होना । प्रयोग—फूली फिरति रोहिणी प्रेमा नख सिख किए सिंगार (सुर—हि० श० सा०); देखिए प्रयोग (१) में (÷) भी

### फूला होना

(१) बहुत आनंद या गर्व में होना । प्रयोग—इकटक रहत तुल नहिं कबहुं एते पर हैं फूले (सु० सा०—सुर, २९८९)

(२) कटा होना ।

### फूले अंग न समाना, —न समाना

अत्यन्त आनंदित होना । प्रयोग—उठा फूलि अंग नाहिं समाना, कंथा टूक टूक भरारना (जायसी०—हि० श० सा०); यह शोभा देखत पय-पालक फूले अंग न समात (सु० सा०—सुर, ७९०); बेरी चंदन हाथ के रीझि चढ़ायो गत बिह्वल छितिपर दिभ पिश लूले वपु न समात (केशव—हि० श० सा०); गिरिवर काछौ कलु भय नाहीं फूले गोप न अंग समाहीं (नंद० ग्रंथा०—नंद०, १६८); राजकन्या अति आनंद कर फूली अंग न समाती थी (प्रेम सा०—ल० ला०, १७३); जिसका मुंह अबलोकन करके फूले नहीं समाते (मर्म०—हरिऔध, १५०); लेखिकाएं अनुरागमय प्रोत्साहन से भरे हुए पत्र पाकर फूली न समाती (मान० (१)—प्रेमचंद, ३२३)

### फूले न समाना

दे० फूले अंग न समाना

### फूले फूले फिरना

आनन्द में होना । प्रयोग—फूले फिरें गोपी-ज्वाल ठहर ठहर के (सु० सा०—सुर, ६५२); फूलन की माला हाथ, फूली फिरें घाली साध, भांकत भरोखे ठाड़ी नंदिनी जनक की (नंद० ग्रंथा०—नंद०, २८०); कहि पठई जिय भावती पिय आवन की बात । फूली आंगन में फिरें आंग न प्रांग

समात (बिहारी राजा०—बिहारी, २५४); पातनि तकत मूल भूले फिरें फूले वधा, घाली बनमानी जू के फल की कहा कहै (धन० कवित—धना०, ९८); फूली फिरती थी प्रकृतता उत्सुकताति तरंगित थी (देहेही०—हरिऔध, ५६)

### फूलों की सेज पर सोना

बड़े आराम से रहना । प्रयोग—घाज है फूट फूट रोते वे जो रहे फूल सेज पर सोते (चुमते०—हरिऔध, २२); सुख और दुख के कितने ही चित्र तुम देख चुके । फूलों की सेज पर सोए हो, कांटों की राह भी आह भर पार की (परि०—निराला, २२३)

### फेंट कसना

कमर कसकर तैयार होना । प्रयोग—डोल बजावती गावती गीत मचावती धंधुर धुरि के धारन फेंट फते की कसे द्विजदेव जू चंचलता बस चंचल तारन (द्विजदेव—हि० श० सा०)

(समा० महा०—फेंटा कसना,—बांधना)

### फेंट पकड़ना

इस प्रकार पकड़ना कि भाग न पावे । प्रयोग—अब लौ तो तुम विरद बलायो भई न मोसों भेंट । तजौ विरद के मोहि उबारौ मूर गही किस फेंट (सुर—हि० श० सा०); मुरदास बैकुंठ पेट में कोउ न फेंट पकड़तो (सुर०—हि० श० सा०); लें उगलवा माल पकड़ें फेंट हम पेट में है तो रहे क्यों पेट में (चुमते०—हरिऔध, ३२)

(समा० महा०—फेंट धरना)

### फेर में पड़ना

(१) भ्रष्ट में पड़ना । प्रयोग—न हो तो अपनी बहुरिया से जोर डलवाना कि कल-कारखाने के फेर में लक्ष्मीचंद न पड़े (मूले०—भग० वर्मा, १३९); हिन्दुओं, हाथ पांव के होते जब कि बेबसी तुम्हें भाती । तो भला क्यों न फेर में पड़ते देव की छाँव क्यों न फिर जाती (चुमते०—हरिऔध, २४)

(२) मुसीबत या बहकावे में आ जाना ।

(३) असमंजस में पड़ना ।

(४) घाटा सहना ।

### फेरन-फारन

उतारा हुआ कपड़ा । प्रयोग—अरे, अपना जूटन लिलाकर, अपना फेरन-फारन पहनाकर ही तौ हमारा पतंपाल करती



हैं। (बल०—नागा०, ५)

### फेरवट की बातें करना

छल-कपट या भूठ-फरेब की बातें करना। प्रयोग—फिर मेरा जी टटोलने के लिये फेरवट के साथ बात करके व्यर्थ क्यों समय नष्ट करते हो (भा० ग्रंथा० (१)—भारतेन्दु, ५५६)

(समा० मुहा०—फेरफार की बातें करना)

### फेरा करना

आवागमन के चक्कर में पड़ना। प्रयोग—कालहि घंड़ू मीच बिहंड़ू, बहुरि न करहि फेरा (कबीर ग्रंथा०—कबीर, १५४)

### फेरा देना

विवाह में भांवर पड़नी या होनी। प्रयोग—अरे बेटा, हमलोगों में ऐसा ही होय है। हजार नाक पर मारे तब फेरे दिए सगी ने (धरती०—वि० प्र०, १५४)

(समा० मुहा०—फेरा पड़ना)

### फेरी देना,—लगाना

(१) बार-बार घाना; आना। प्रयोग—पेट के फेर में पड़े जब है तब भला किस लिए न दें फेरी (बोल०—हरिऔध, २२४)

(२) घूम-घूम कर बेचना। प्रयोग—मां तरकारियां लेकर फेरी लगाती है (अतीत०—महादेवी, ९१)

(३) परिक्रमा करनी। प्रयोग—देवल फेरी देही, नांव निरंजन कबहुं न लेही (कबीर ग्रंथा०—कबीर, १५७)

### फेरी लगाना

#### दे० फेरी देना

#### फैल करना,—मचाना

(१) नलरा करना, ज़िद करनी। प्रयोग—छैल नए नित रोकत गैल मु फैलत का पं अरैल भये हो (घन० कबित—घना०, १९७); अच्छा, जब हम दोनों को इससे मुल है, तो फिर तू क्यों फैल मचाती है? (मा—कौशिक, ८८)

(२) खेल करना।

#### फैल मचाना

#### दे० फैल करना

#### फोड़ लेना

दूसरे पक्ष के मनुष्य को अपने पक्ष में कर लेना। प्रयोग—पान्सा ने उनमें से घनेक प्रमुख व्यक्तियों को व्यापारिक रिश्तत देकर अपनी ओर फोड़ लिया था (सुहाग०—अ० ना०, १०९); परन्तु लोगों को अपनी बात और व्यवस्था वापिस नहीं लेनी थी, इसलिए बाह्मण को फोड़ लिया और उसने पावल बखिया को छिपा लिया (झांसी०—वृ० वर्मा, ३३१); मालूम होता है, उन लोगों ने घंघे को फोड़ लिया (रंग० (१)—प्रेमचंद, २२१)

#### फौज रेंगाना

फौज आगे बढ़ाना। प्रयोग—हौं मारिहौं भूप डी भाई, अस कहि सन्मुख फौज रेंगाई (राम० (ल)—तुलसी, ९५१)

( व )

### बंटाटार करना या होना

काम बर्बाद करना या होना। प्रयोग—अपने नाटक 'पर्दा उठाओ, पर्दा गिराओ' में मैंने रिहर्सलों में बड़ी बींग मारने वाले अभिनेताओं को X X कुछ का कुछ बोलकर नाटक का बंटाटार करते दिखाया है (पैतरे—अशक, २३)

### बंडल होना

फालतू होना, मूर्ख होना। प्रयोग—तुम भी यार अजीब

बंडल हो तुम्हारे हमारे में कोई फर्क है (पैतरे—अशक, १२८)

### बंदर का आदी का स्वाद न जानना

मूर्ख या अनजान व्यक्ति का महत्वपूर्ण वस्तु के महत्व को न जानना। प्रयोग—सच है बंदर घादी का स्वाद क्या जाने (भा० ग्रं० (१)—भारतेन्दु, ३७६)

### बंदर की बला तबेलेके सिर पड़ना

किसी की मुसीबत किसी और के ऊपर आनी। प्रयोग—



बंदर की बला तबेले के सिर पर जाती है। म बाबा, हम किसी के लेने-देने में नहीं पड़ते (झुठा० (१)—यशपाल, ४०२)

### बंदर को आइना दिखाना

अयोग्य या असमर्थ व्यक्ति से कुछ अच्छे काम या बात की आशा रखनी। प्रयोग—आखिर आप 'बंदिक सन्देश' किसे सुनाना चाहते हैं? भैर से बीन की दाद लेना चाहते हैं। बानर को दर्पण दिखाना चाहते हैं? (पद्म० के पत्र—पद्म० शर्मा, १५९)

### बंदर-घुड़की देना

केवल डराने के लिए हाटना। प्रयोग—उसका यहाँ रहना ही बता रहा था कि वह केवल बंदर घुड़की दे रहा है (मान० (२)—प्रेमचंद, १२६)

(समा० मुहा०—बंदर भभकी देना)

### बंदर-बांट

दो के भागड़े में घपना लाभ कर लेना। प्रयोग—भैया, इन बंदर-बांट करनेवाले पंचों से बचो (विप०—प्रेमी, ९)

### बंदूक छतियाना

बंदूक को छाती से लगाकर निशाना साधना। प्रयोग—हम कहेंगे खरी न सहमेंगे क्यों न बंदूक लोग छतिया लें (बोल०—हरिऔध, ८०)

### बंधन के नीचे आना

(१) बंधनों में बंधना। प्रयोग—गिरिजा जामु नाम जपि मुनि काटहि भवपास। सो कि बंध तर आवैं, व्यापक बिस्व निवास (राम० (लं)—तुलसी, ९४३)

(२) माया-मोह में लिप्त होना।

### बंधन ढीला करना या होना

(१) चौकसी या रोकथाम में कमी होनी। प्रयोग—मधु, मेरेय, मुरा, घासव, गोडीय धादि विमिल मारिणए अपने मद के धावेस में बांधकर कावेरी पट्टगुम के युवक सेठों के नैतिक बंधन ढीले करने लगो (मुहा०—अ० ना०, १३४)

(२) भयभीत होना। प्रयोग—हांक मुनत दसकंध के भये बंधन ढीले (बिनय०—तुलसी, ३२)

### बंधन तोड़ना

मुक्ति पानी। प्रयोग—कहत कबीरा जो हरि ध्यावैं, जीवत बंधन तोरे (कबीर ग्रंथा०—कबीर, २८१)

### बंधना

(१) बश में होना। प्रयोग—यह महिमा मेई पै जानत, जातें घापु बंधावत (सु० सा०—सूर, १०८६); मिली ज्योति-छवि से तुम्हारी ज्योति-छवि मेरी, नीलिमा ज्यों शून्य से बंधकर मैं रह गई (अना०—निराला, ४)

(२) पुलिस द्वारा पकड़ा जाना। प्रयोग—घगर हाकिमों से भूठों भी कह दें, तो सारा मोहल्ला बंध जाय (रंग० (१)—प्रेमचंद, २१०)

### बंधी गत बजाना

जो सब करते या कहते हों वैसा ही करना। प्रयोग—मैं आखिर और करता क्या। जो बात थी लिख दी। बंधी गत मुझे बजानी नहीं आती। आजकल समालोचना और भूमिका की एक रंग की बंधी हुई इवार्त मुकर्रर हो गई है (पद्म० के पत्र—पद्म० शर्मा, २१०)

### बंधी दीठ

घजान। प्रयोग—बंध गये, और हूँ बंधे जाते, पर बंधी दीठ आज भी न खुली (सुभते०—हरिऔध, ५८)

### बंधी रकम

निश्चित रकम। प्रयोग—नो जनाब, कोई बंधी हुई रकम है नहीं (प्रेमा०—प्रेमचंद, ३९१)

### बक-ध्यान लगाना

डोंग करना; कपट करना। प्रयोग—रन ते निलज भाजि गृह आवा, इहां आइ बक ध्यान लगावा (राम० (लं)—तुलसी, ९५९)

### बक-ध्यानी

कपटी, डोंगी। प्रयोग—हिरदा का विलाव नैन बक ध्यानीं ऐसी भगति न होई रे प्रांनों (कबीर ग्रंथा०—कबीर, १६७); तब बोला तापस बक ध्यानी (राम० (लं)—तुलसी, १७२)

### बक फटना

कुछ बोल पाना। प्रयोग—क्या कहूँ? कैसे कहूँ? बक नहीं फटता (मृग०—वृ० यमा, २७)

### बकरी की तरह मुंह चलना

हर समय कुछ खाते रहना। प्रयोग—हिल न बकरे की तरह दाढ़ी सके, मुंह न बकरी की तरह चलता रहे (चोले०



बकरी बनना या होना

५०१

बगले का हंस हो जाना

—हरिऔध, १९०

**बकरी बनना या होना**

(१) सीधी नस हो जाना। प्रयोग—सज्जन ने हाथ छोड़कर तड़ से उसके मुँह पर तमाचा मारा, खुबती सहन कर बकरी बन गई (वृंद०—अ० ना०, १२७)

(२) दिन भर खाने वाला।

**बकरे की माँ का खैर मनाना**

जो नुकसान होनेवाला है उसे कब तक टाला जा सकता है, व्यर्थ आशा करनी। प्रयोग—मान लो, इस वक्त देखो तुम्हें क्या भी ले, तो बकरे की माँ कब तक खैर मनायेंगी (गदन—प्रेमचंद, २१८); हाँ, उनके भाग्य से उनको रोज नई हाँडी मिल जाती है किन्तु बकरे की माँ कब तक खैर मना सकती है (मेरे०—गुलाब०, ६२)

**बकवाद बढाना**

व्यर्थ की बातें करनी। प्रयोग—कहि कहि कपट संदेसनि मधकर ! कत बकवाद बढावत (सु० सा०—सूर, ४५०६)

**बखिया उखेड़ना,—उधेड़ना**

(१) झंझा-फोड़ करना। प्रयोग—लेकिन मैं इन लोगों को यों न छोड़ूँगा—एक-एककी बखिया उधेड़ कर रख न दूँ, तो नाम नहीं (मान० (४)—प्रेमचंद, ४३); हम बड़े ही बल्ले-डिये होवें आप यों मत उखेड़िये बखिये (चुमते०—हरिऔध, २)(÷)

(२) कटू घालोचना करनी। प्रयोग—तुम्हारी रचना के बखिये उधेड़कर रख दिये (कठ०—दे० स०, ९०); देखिए प्रयोग (१) में (÷) भी

**बखिया उधेड़ना**

दे० बखिया उखेड़ना

**बगलुट भागना,—टुट भागना**

बहुत तेजी से भागना। प्रयोग—एक हिरनी मेरे सामने कनौतिया उठाए घा गई उसके पीछे मैंने छोड़ा बगलुट फेंका (हंशा०—हंशा०, ९७); छप्पर में आग लग गई, तो मिट्टी बगलुट भागा (रंग० (२)—प्रेमचंद, १३३)

**बगलुट भागना**

दे० बगलुट भागना

**बगल भाँकना**

सौच-विचार में पड़ना, उपयुक्त उत्तर न दे पाना। प्रयोग—जब कहती हूँ—रूपे तो दे पाये, अब माँम क्यों नहीं लेते। क्या पर गये तुम्हारे बहू दोस्त ?—तो बस बगल भाँक कर रह जाते हैं (मान० (१)—प्रेमचंद, ३११); जामुन बगलें भाँकने लगा मुँह—दु० वर्मा, ७७)

**बगल निकलना**

बुद्धावस्था के कारण काँध में बाल निकलना। प्रयोग—नङ्के का कंठ फूट छाया, बगलें निकल आईं × × अब बबुआ नहीं है, गोना कर दो (कुल्लू०—निराला, १५)

**बगल बजाना**

(१) बहुत प्रसन्नता प्रकट करनी, खूब खुशी मनानी। प्रयोग—इसमें से किसी पर डियो हो जाय × × या अपने प्रसामियों के हाथों पिट जाय तो उसके और सभी भाई उस पर हँसेंगे, बगले बजायेंगे (गोदान—प्रेमचंद, १३)

(२) उपहास करना। प्रयोग—देखिए प्रयोग (१) में (÷)

**बगल में दबाना**

अधिकार में करना, ले लेना। प्रयोग—लंगे धनूप रूप संपत्ति बगल दावि उचिके प्रचान कुच कंचन पहार से (देव—हि० श० सा०)

(समा० महा०—बगल में छिपाना,—धरता,—रखना)

**बगला-भक्ति**

दिखावा, दिखावटी भक्तमनसाहत। प्रयोग—पर गांव के अन्य लोग नारायण की बगला-भक्ति के प्रभाव से कह रहे थे—नारायण लाल बुरा हो, वह गांव को आग लगाने का पाप नहीं कमा सकता (बह्म०—दे० स०, २७१); द्वार पर से हट जाओ, नहीं तो पहले तुम्हारी हड्डियाँ तोड़ूँगा मारा बगलाभगतपन निकल जायगा (रंग० (१)—प्रेमचंद, १५४)

**बगला-भगत होना**

कपटी, धोखेबाज। प्रयोग—अच्छा तो आपने घोर बगला-भगत पंचों ने मिलकर मेरे एक भातवर घसामीकी ठगान कर दिया (गोदान—प्रेमचंद, १७३); बड़ा बना हुआ बगला-भगत है सतरा (वृंद०—अ० ना०, ५१)

**बगले का हंस हो जाना**

अयोग्य व्यक्ति का योग्य बन जाना। प्रयोग—मज्जन फल



पेलिअ ततकाला । काक होहि पिक बकड मराला ।  
(राम० (बाल)—तुलसी. ६)

### बघारना

जोर-जोर से कहना; दिखावा करना । प्रयोग—बहुत पांडित्य मतबघारना, सीधी तरह से लिख देना जिससे बेचारा समझ जाय (पट्टम० के पत्र—पट्टम० शर्मा, १२६)

### बचत निकलना

बचत का उपाय समझ आना । प्रयोग—उनकी बाखें खिल गईं, सोचा, बचत निकल आई (छोटी०—निराला, १५०)

### बच्चे-बच्चे की जवान पर

हर किसी के द्वारा कहा जाना या याद किया जाना । प्रयोग—रहमत का नाम उन दिनों पंजाब के बच्चे बच्चे की जवान पर था (पैलर—अश्क, २९); एक वर्ष के बाद भागीरथी का नाम हिन्दी जगत में बच्चे बच्चे की जवान पर था (सु० सु०—सुदर्शन, १७०)

### बच्चे से होना

गर्भवती होना । प्रयोग—दूसरे ज्वानी की लड़की बच्चे से थी और रेल का डाक्टर भी इन छोटे स्टेशनों पर कहा जाता है (चित्तन—अश्क, २६)

### बच्चों का खेल

सामूली काम, मजाक समझना । प्रयोग—जाति सेवा को बच्चों का खेल समझ रखा है (रंग० (२)—प्रेमचंद, २४६)

(समा० महा०—बच्चों का खिलवाड़)

### बछड़े का खूँटे के बल उछलना

कोई सहारा पाकर ही बड़ी-बड़ी बातें या घुंष्टता करनी । प्रयोग—दुनों के सह देने से लोड़े की इतनी जुरंत हुई है, नहीं तो मजाल थी कि यों टरता । बछड़ा खूँटे के ही बल कूदता है (प्रेमा०—प्रेमचंद, ५९)

### बछिया के ताऊ होना

भोले होना, मूर्ख होना । प्रयोग—हो तुम भी निरे बछिया के ताऊ (गबन—प्रेमचंद, ९९)

(समा० महा०—बछिया के बाबा होना)

### बजना

जोर से लड़ाई-झगड़ा होना । प्रयोग—दो रोज से घर में पति-पत्नी में खटपट चल रही है । कल दोपहर में तो

बहुत जोर से बज गई थी (बूँद०—अ० ना०, १०२)

### बजाकर

बंका पीटकर, खुल्लमखुल्ला । प्रयोग—सुदिन सोपि सब साज सजाई देउं भरत कहूं राजु बजाई (राम० (अ)—तुलसी, ४०१); कवि बोधा बजाइ के प्रीति करे, मह आतम-ज्ञान हिये में धरे (इश्क०—बोधा, १)

### बझ गिराना

घोर घनिष्ट करना । प्रयोग—कौसल्या सब काहू बिगारा तूम जेहि लागि बख पुर पारा (राम० (अ)—तुलसी, ४१८)

### बटाऊ होना

(१) निर्मोही होना । प्रयोग—चेटक लाय हरहि मन जौ सहि गय है फेंट । सांढ नाठ उठि भए बटाऊ ना पहिचान न भेंट (जायसी—हि० श० सा०); भए बटाऊ नेह तजि बाद बकति बेकाज । अब अलि देत उराहनो उर उपजति अवि लाज (बिहारी रत्ना०—बिहारी, २७२) (÷)

(२) थोड़े दिन के साथी होना । प्रयोग—मधुप बिराने लोग बटाऊ । दिन दस रहे आपने स्वारथ, तजि फिरि मिले न काऊ (सु० सा०—सूर, ४२८८); देखिये प्रयोग (१) में (÷) भी

### बटुक-खिलासी होना

कम उम्र के लड़कों से अनुचित सम्बन्ध रखने वाला व्यक्ति । प्रयोग—मेरे बड़े भाई-जैसे हजरत छिये-छिये फुस-फुसाते कि महन्त बटुक-खिलासी है (अपनी खबर—उग्र, ५९)

### बट्टा लगाना

(१) दाग या कलंक लगाना । प्रयोग—यदि मेरे साथ न्याय न बरता जायगा तो इस राज्य के इस सिद्धान्त पर कि वह प्रति वर्ण के लोगों को एक दृष्टि देखता है, बट्टा लग जायगा (भा० प्रथा० (१)—भारतेन्दु, ६१३); सूक्ष्म विचार के देखो तो फारस और घरब की ओर के लोग × × अपने रूप में किसी तरह का बट्टा न लगने देना और रसाइन के साथ धीरे-धीरे हंसा खिला के घपना मतलब गांठना × × बिल्कुल नहीं जानते (प्र० पी०—प्र० ना० मि०, ८२); दीक ने देखा कि उसके बड़प्पन में बट्टा लगता है (तिलली—प्रसाद, २३४)



(२) किसी चीज में मिलावट या लराबी के कारण दाम में कमी होना ।

### बट्टा लगाना

(१) कलकित करना । प्रयोग—दोष (दोष) कैंसी बुरी बात है जिसमें सचमुच हो उसके गुणों में बट्टा लगा दे, जिस पर झूठमूठ आरोपित किया जाय उसकी शान्ति भंग कर दे (प्र० पी०—प्र० ना० मि०, ९२); दिल में पछता रहे थे कि नाहक अपनी शराफत में बट्टा लगाया (रंग० (२)—प्रेमचंद, ४१७)

(२) हानि करवानी ।

### बट्टे-खाते जाना,—डालना

नुकसान या हूबत की रकम को बराबर करना । प्रयोग—सो साहूकारों ने कई हजार रुपये बट्टे-खाते डाल, कान पकड़, जीभ दबाकर मंजूर किया कि चुनार में कोई गुरु है तो यह है पं० महादेव मिश्र (अपनी खबर—उग्र, ८५); हजारों रुपये प्रतिवर्ष बट्टा खाते चले जाते थे (प्रेमा०—प्रेमचंद, १८५)

(२) व्यय जाना, निर्व्यय होना ।

(समा० मुहा०—बट्टे-खाते लिखना)

### बट्टे-खाते डालना

दे० बट्टे-खाते जाना

### बड़-बोला, बड़-बोला

बहुत बोलने वाला । प्रयोग—मे कुछ ऐसा अनोखा बड़ बोला नहीं जो राई को परबत कर दिखाऊँ (इशा०—इशा०, ८९); गुटूँ और स्नेह दोनों बड़-बोली थीं (शूला० (१)—यशपाल, १७); बोलने में कब न बड़-बोले बड़े बोल लें, बोली अगर है बोलते (बोल०—हरिऔध, १२२)

### बड़-भागी होना

सौभाग्यवान होना । प्रयोग—ऊधो हम घाजू भई बड़-भागी (सू० सा०—सूर, ४१५०); श्री मिथिलेश मुता बड़-भागी । स्यो सुत सासुन के पग लागी (केशव० (२)—केशव, ४१४); बड़भागी रागी अलि ! ऐहं घनआनंद सौ आखिन मिरहे मधु लहे भावतो अली (घन० कवित्त—घना०, १९५); छांदोग्य उपनिषद् में रैव के बड़भागी होने की यों उपमा दी है कि × × (गुलेरी ग्रंथ (१)—गुलेरी, ८०)

### बड़ा करना

(१) महत्व देना, महत्वपूर्ण बनाना । प्रयोग—सूरदास प्रभु समुक्ति देखिये, मे बड़ तोहि करि दीन्हो (सू० सा०—सूर, १९१)

(२) पालन-पोषण करना ।

(३) दीया बड़ा करना, दीया बुझाना ।

### बड़ा कुल

सम्मानित वंश । प्रयोग—तुम तो बड़े बड़े कुल जनमें, अरु सबके सरदार (सू० सा०—सूर, ४१६१)

### बड़ा गाल होना

बड़-बड़कर बोलना । प्रयोग—हंसि कह रानि गाल बड़ तोरें (राम० (अ)—तुलसी, ३८४)

### बड़ा घर

(१) जेलखाना । प्रयोग—मे बिना लाला को बड़े घर भिजवाये मानंगी नहीं (गोदान—प्रेमचंद, ११०); वह तो जितने दिनों के लिए बाहेगा बड़े घर भिजवा देगा (कला०—उग्र, ५४)

(२) धनी या सम्मानित व्यक्ति का घर । प्रयोग—बड़े घर की बहू बेटी, करति वृथा भँवारि (सू० सा०—सूर, २१७३); हरेंद्र बड़े घर का लड़का था (राधा०—प्र० स०, ४); बहुत सी स्थियाँ ऐसी होती हैं, विशेषतः बड़े घरों की—जिनकी कामधर्मे के रूप में भी लोगों के सामने हाथ पैर हिलाने की घड़कन नहीं खुली रहती (बिंता० (१)—शुक्ल, ६८); नलिनी, हम लोग बड़े घरों की औरतें हैं (मोर०—जग० माधुर, ८८)

### बड़ा दिन

किसमस । प्रयोग—एक बार बड़े दिनों में मैंने कलक्टर साहब को डाली दी (रेशमो०—राम० वर्मा, ८५)

### बड़ा दिल

उदार व्यक्ति । प्रयोग—काहू को न बड़ो हियो काहू को न बड़ो हाथ, काहू के न बड़े हाथी मुकुवि बलान के (मति० मक०—मतिराम, १६०); मेरे दिल का नाता भी सिर्फ उन्हीं लोगों से जुड़ता है जो इतना बड़ा दिल रखते हों (चूँद०—अ० ना०, १४९)

### बड़ा नाम होना

बहुत कीर्ति या प्रशंसा होनी । प्रयोग—मुता है बृषभानु



की री, बड़ी उनकी नाउ' (सु० सा०—सूर, १३३७); धावका इतना दबाव है, इतना बड़ा नाम है (मूले०—भाग० तर्मा, १५७)

### बड़ा बोल बोलना

हीन होकनी। प्रयोग—जो मुरमा होते हैं सो बड़ा बोल किसी से नहीं बोलते (प्रेम सा०—सा० सा०, १५६)

(समा० मुहा०—बड़ा बोल मारना)

### बड़ा भाग्य होना

सौभाग्य होना। प्रयोग—राम भलि राम भलि राम चितामणि, भाग बड़े पापी छाड़े जिनि (कबीर ग्रंथा०—कबीर, १२७); अपनी छपनी दया विनारी, भाग बड़े कहि बारवारी (सु० सा०—सूर, २८०५); भूमि तल धर के बड़े भाग (गोता० (वाल)—तुलसी, २२); ज्यों के बड़े भाग हैं जो प्रीतम के संग रहेंगी (प्रेम सा०—सा० सा०, १०२)

### बड़ा हाथ होना

(१) उदार होना। प्रयोग—काहु को न बड़ो हियो काहु को न बड़ो हाथ, काहु के न बड़े हाथी मुकवि बखान के (मति० मक०—मतिराम, १६०)

(२) बहुत योग्य होना।

### बड़ा होना

बेपु होना। प्रयोग—हम बड़े लोग बड़े के संगी भाग बड़े गृह भाग (व्याख्यानक) (सु० सा०—सूर, ४५६८); बिगड़ि विरवि बड़ भवत विधाता (राम० (वाल)—तुलसी, २६)

### बड़ाई खाना

सम्मान पाना। प्रयोग—तारा मंडल देसि करि, पंद बड़ाई लाइ (कबीर ग्रंथा०—कबीर, ३७)

### बड़ाई देना

बादर करना, पस का भागी बनाना। प्रयोग—कीन्हैसि पानूस विहिम बड़ाई (पट०—जायसी, ११३); प्रभु सक विमूजन मारि बिभार्ई केवल नज्वाहि दीन्हि बड़ाई (राम० (ल)—तुलसी, १००२)

### बड़ाई मारना

खोखी होकनी। प्रयोग—जो घरने गृह अपनी बड़ाई मारते हैं सो क्या कुछ नले कह्यते हैं (प्रेम सा०—सा० सा०, १४६)

### बड़ी नाक होना

मान-अपमान का बहुत ध्यान होना। प्रयोग—जो सोचेंगी कि सड़े बड़ी नाक लेकर घर से निकले थे (कुंठ०—अ० ना०, २२३)

### बड़ी-बड़ी बातें करना

हीन मारना। प्रयोग—रमा को बड़ी-बड़ी बातें करने का फिर अवसर मिला (गजन—प्रेमचंद, ३०); कहते हैं—“बुधितिर, बाने बड़ी-बड़ी, साधना की नू किया करना था” (कुंठ०—दिनकर, ७७)

### बड़ी बांह होना

बड़ा कृपालु या महायुक्त होना। प्रयोग—बागम जंबकार में है, तो भी देव की बड़ी बांह है (सतमी०—राहुल, १७)

### बड़ी याचा करना

घर जाना। प्रयोग—गोरव याचा के लिये टालमटोल मत करो, कोई नहीं जानता, कब बड़ी याचा करनी पड़ जाय (रंग० (२)—प्रेमचंद, ३९)

### बड़े आदमी

(१) धनवान। प्रयोग—कैसे छोटे नरन नै मरन बड़न के काम। मइयो दमामी जात क्यों कहि बड़े के काम (बिहारी ग्रंथा०—बिहारी, १३१) (—); बड़े बड़े आदमियों से राह रम्य हो जाय तो बुरा नहीं है। बड़े बड़े काम निकलते हैं (गजन—प्रेमचंद, ८०) (—)

(२) सम्मानित। प्रयोग—जे गरीब पर हित करे ते रहीम बड़ लोग (रहीम कवि०—रहीम, ८); बड़ा आदमी सम्मान कर बकबर ग्राह्य को पथ चितकर कुछ पूछने में संकोच होता था (पटम परत—पटम० शुभा, २६९); देखिए प्रयोग (१) में (—) भी

### बड़े कांटे का होना

बड़ा इज्जतदार होना। प्रयोग—दाता के पिता बड़े कांटे के ठाकुर थे (गोली—धनु०, २८)

### बड़े गुरु की पढ़ाई होना

बहुत आकाङ्क्ष होना। प्रयोग—बड़े गुरु की बुद्धि पड़ी वह काहु को न पलंगे (सु० सा०—सूर, २३४२)

### बड़े घर की हवा खाना

जेम जाना। प्रयोग—अब बड़े घर की हवा खाये बच्चे



बड़े घर की हवा खिलाना

५०५

बड़-बोला

(मैला०—रैणू, २); बीच बाड़ तो बड़े घर की हवा खा रहे हैं (सिल्ली—प्रसाद, २६३)

**बड़े घर की हवा खिलाना,—भिजवाना**

जेल की सजा करवानी । प्रयोग—दस घर की अगर कोई भीज इधर-उधर हुई तो बाप-बेटे दोनों की ही बड़े घर की हवा खिला दूंगा (भूले०—मग० वर्मा, ४११); घड़ी, कितने ही बड़ों को बड़े घर भिजवा दिया, तुम हो किम फेर में (मान० (३)—प्रेमचंद, १३०)

**बड़े घर भिजवाना**

दे० बड़े घर की हवा खिलाना

**बड़े छोटे**

सभी लोग । प्रयोग—जामु प्रबल माया वन सिव विरंचि बड़ छोटे (राम० (लं)—तुलसी, ९१८)

**बड़े बाप का बेटा**

धनी-मानो प्रतिष्ठित व्यक्ति का पुत्र । प्रयोग—हैं बड़े बाप के अगर बेटे सम्पत्ता का गला न तो कतरें (मर्म०—हरिऔध, ६६)

**बड़े बोल बोलना**

घमंड की बातें करनी । प्रयोग—का बहू पंचि कोटि मह कोटी । घम बड़ बोल बीभ कह छोटी (पद०—जायसी, ८५५); बैन बड़े बड़े मेनन के बल बोलत क्यों है इती इतरानी (घन० कवित्त—घना०, १९८); बड़े बड़ाई-ना करे, बड़े न बोले बोल (रहीम कवि०—रहीम, १५)

(२) भला बुरा कहना । प्रयोग—पहा साना दो कोड़ी का आदमी बड़ा बोल सुनाता है (वीने०—रा० रा०, १९४)

(समा० मुहा०—बड़े बोल सुनाना)

**बड़े भाग्यवाली**

सौभाग्यवालिनी । प्रयोग—तोहि चरन मन लागो मारिग-धर सो मिले जो जो बड़ भागो (कबीर ग्रंथा०—कबीर, २६९); मूर स्वाम बड़भागिनी सोई जिन मिलि लाइ लड़ाए (सु० सा०—सूर, ३५४९)

**बड़े भाग्य से**

बड़े सौभाग्य के फलस्वरूप । प्रयोग—भाग बड़े ते पाइवो तू भरि भरि पीड कबीर (कबीर ग्रंथा०—कबीर, २५६)

दसन मोह तव गो सप्रकाम । बड़े भाग उर जावद जामु (राम० (बाल)—तुलसी, ४)

**बड़-बड़ कर बातें करना, बड़-बड़ कर बातें करना,—बोलना**

(१) धृष्टता पूर्वक बातें करनी । प्रयोग—बहुत बड़-बड़ करवातने लगी हो जैसे कहीं की रानी हो (मुगा०—पु० वर्मा, ५५); बात तब कैसे भला बड़ती नहीं । बात बड़-बड़ कर रहे करते घर (धुमती०—हरिऔध, ३४)

(२) बहुत बातें करनी । प्रयोग—देखने को तो जावेद भी खुश था, बर्निक बड़ तो मुनील से बड़-बड़ कर बातें कर रहा था (कठ०—दे० स०, २२४)

(३) बोलो बजारनी । प्रयोग—बजरंगी, बहुत बड़कर बातें न करो (रंग० (१)—प्रेमचंद, ३२); क्यों कुंभर माहव महाराज, जब तो बड़-बड़कर बातें न करोगे ? (रंग० (२)—प्रेमचंद, ७६); रामनाथ ने जबानों के स्वभाव के अनुसार जालवा से खूब जोड़ उड़ाई थी, खूब बड़ बड़ कर बातें की थी (गवन—प्रेमचंद, १६)

**बड़-बड़ कर बातें करना**

दे० बड़-बड़ कर बातें करना

**बड़-बड़ कर बातें मारना**

(१) बड़ी-बड़ी बातें करनी—घबरे करना । प्रयोग—तु बहुत बड़-बड़ कर बातें मारती है, मुझे दिखा तो तेरी पुस्तकें कहा धरी है ? (मिखा०—कौशिक)

(२) व्यंग्य करना ।

**बड़-बड़ कर बोलना**

दे० बड़-बड़ कर बातें करना

**बड़-बड़ कर हाथ मारना**

निजकोष किसी वस्तु को लिए खाना या खाना । प्रयोग—तीन महीने बाद घर का मासिक जिसने मृतक-भोज में खूब बड़-बड़ कर हाथ मारे थे, अचिर ही उठा (मान० (४)—प्रेमचंद, १६०)

**बड़-बोला**

दे० बड़-बोला



### बढ़ना

उन्नति करनी। प्रयोग—क्या हुआ जो अब वह बढ़ गए (ईशा०—ईशा०, ९८); वह नहीं पाया कभी कोई कहीं बेतरह बेड़न लोगों का बढ़ा (बोल०—हरिऔध, ३६)

### बत-कहा होना

(१) बढ़ा-बड़ाकर कही बात। प्रयोग—यह तो बूतों का बतकहा है (स० प्रथा०—स० मिश्र, २५)

(२) बहुत बात करनेवाला।

### बत-बल होना

बहुत बचबारी होना। प्रयोग—जानी जालि मुर हम इनकी बतबल बचल जोल (सु० सा०—सुर, ४४८८)

### बत-बढ़ाव करना

विवाद को और बढ़ाना। प्रयोग—अब जलि बतबढ़ाव खल करही (गम० (लं)—सुलसी, ८९३)

### बतोलना

बात, व्यर्थ बात। प्रयोग—आज दिन भी बेतरह पिस रहे, घुटते उनके बतोलने हैं नहीं (सुमते०—हरिऔध, ७४)

### बढ़ जाना

घात लगाना। प्रयोग—मैकु सिंह और बिगन गुरु में बढ़ गई (भूले०—भग० शर्मा, १६६)

### बढ़ में

एकज में, बढ़ते में। प्रयोग—तुमहु अब हम बन की बात। तुरत हमारे बद में लकरी लाकत यहि दुस गाल (सुर—हि० श० सा०)

### बढ़न तोड़ना

(१) जंगझाई लेनी। प्रयोग—आरति कप संताप जुझाई। तनु तोरति अब लेत जंभाई (नंद० प्रथा०—नंद०, १३४)

(२) बूझार आदि के कारण स्वस्थ खराब हो जाना।

### बढ़न में आग लग जाना

बहुत क्रोध होना। प्रयोग—यह हाल मुनकर तो उसके बढ़न में आग ही लग गयो (गीदान—प्रेमचंद, २१३)

### बधाई बांटना

किसी शुभ काम की खुशी में बधाई देना। प्रयोग—बांटिहै मोलि बधाई कमाई की जालि में आते महापति पार्ले (घन० कविश—घना०, २००)

### बधावा बजना

खुशी के गीत, गाना-बजाना होना। प्रयोग—ना तिहि बिभ बधावा बाने, ना तिहि गीत नाद नहीं साज (कवीर प्रथा०—कवीर, २४३)

### बधिया बैठ जाना

बहुत हानि होनी। प्रयोग—पांच हजार दहेज में दे दे, घोर पांच हजार नेम म्योछाबर, बाजे-बाजे में उड़ा दें, तो फिर हमारी बधिया ही बैठ जायगी (मान० (१)—प्रेमचंद, ६४)

### बन आना

अनूकूल अवसर उपस्थित होना। प्रयोग—कहत कबीर मुनहु रे संतहु अब ऐसी बन आई (कवीर प्रथा०—कवीर, ३०६); मेले ठलों में अपनी खूब बन आती है (मान० (४)—प्रेमचंद, ३१); घर आने पर जब लड़के घेंते या अंगोछे में लाई या गढ़ा ले बाहर खेलने निकलते तो उस समय सतमी के बच्चों की बन आती (सतमी०—राहुल, २)

### बन कर, बन-टन कर

सजपज कर। प्रयोग—देखी बुंदावन खलहि गोपाल। मय बनि ठनि आई बज की बाल (सु० सा०—सुर, ३४६७); बनि आइन बनि आइ के, बंठि रूप की हाट (रहीम कवि०—रहीम, ५६); पेड़ क्यों लिये डालिया हैं फूल क्यों बंटे हैं बन-टन ? (मर्म०—हरिऔध, ४१)

### बन का कुआं होना

बेकार बस्तु होनी। प्रयोग—गुरदास प्रभु तुम बिन घर ज्यो बन भीतर के कूप (सु० सा०—सुर, २२३५)

### बन-टन कर

### दे० बन कर

### बन पड़ना

(१) संभव होना। प्रयोग—इस शिक्षा का प्रायः पर बहुत प्रभाव पड़ा और प्रयास पूर्वक यह रहस्य को छिपाने लगे पर छिपाना असंभव था। बहुतेरा संघम किया, पर कुछ बन न पड़ा (पट्टम प्राग—पट्टम० शर्मा, १७३-७४) (÷)

(२) कर सकना। प्रयोग—देखिए प्रयोग (१) में (÷)

(३) मजलता मिलनी। प्रयोग—टट्टी के घाड़ से शिकार करने वाले घुलों की बन पड़ी (भट्ट नि०—दा० भट्ट, ११०)



### वन-वन की लकड़ी चुनना

(१) मारे-मारे फिरना। प्रयोग—अरे आपके घन से पाया हुआ यह शरीर मुख से कालवर्ण करे और आप वन-वन की लकड़ी चुनें (राधा० प्रश्ना०—राधा० दास, ७७७)

(२) बहुत ढोड़-धूप करनी।

(समा० मुहा०—वन-वन की पत्ती तोड़ना)

### बनना

(१) उन्नति होनी, विकास होना। प्रयोग—सब भाति बिभी-पन का बनी (गीता० (सु०)—तुलसी, ३९); बनत न लार्देर जब पलटै दिन अपने (राधा० प्रश्ना०—राधा० दास, ३५) इसी कारण यह बात यही देखी गई कि यह देश जहाँ की सम्पत्ति इतनी अधिक थी कि जिसे लूट-लूट और मत्कवाले बन गये और बनते जाते हैं, सदा विदेशीय नेताओं का शिकार बना (मट्ट नि०—बा० मट्ट, ६१); कुछ बनाये नहीं बनी अब तक जान पर आ बनी बचा न मके (चुमते०—हरिऔध, २); यात्रा से मनुष्य बनता है, मा (दुष्प्राप्त—दे० स०, ४५)

(२) नखरा या ठोंग करना। प्रयोग—कुछ नहीं, बन रही है, या इतना गुणज्ञान ही नहीं है कि इनकी कड़ कर सके (रंग० (१)—प्रेमचंद, ७६); हाँ मैं समझ रहा हूँ—घाप सोच रहे हैं, यह आदमी बन रहा है (शेखर (२)—अज्ञेय, ६३)

(३) मित्रता होनी। प्रयोग—बनी निहारी उनकी ऊँची, आयो जस को टीकी (सू० सा०—सुर, ४२६७); बाप बेटे में बिलकुल नहीं बनती (कर्म०—प्रेमचंद, २०); महाराज से उनकी पटती नहीं थी (गोली—चतुर०, १४५)

(४) बेचकू बनना। प्रयोग—भई घाज "ताश" बादला मत पहिनना नहीं तो फिर पुरे बनोगे (राधा० प्रश्ना०—राधा० दास, ९४); द्विवेदी जो दूसरों को बनाने वाले थे पर स्वयं बन गए (गु० नि०—बा० मु० गु०, ५२९)

### बनना-बिगड़ना

उन्नति और घबनति होनी। प्रयोग—तकदीर का खेल है, भगवान की दया चाहिए, आदमी के बनते बिगड़ते देर नहीं लगती (मान० (७)—प्रेमचंद, ३४)

### बनाकर

(१) गड़ कर, भूटा। प्रयोग—जो घमण्य कष्ट कहव

बनाई (राम० (घ)—तुलसी, ३५९); यह मैं बड़े दावे और हलफ से ईश्वर को हाज़िर-नाज़िर जानकर कह रहा हूँ, इसमें जरा भी बनाकर नहीं (पट्टम० के पत्र—पट्टम० शर्मा, ३०)

### बना-बनाया खेल बिगड़ जाना

ठीक होते हुए काम का बिगड़ जाना। प्रयोग—बाबू रमानाथ, आप क्यों बना-बनाया खेल बिगड़ रहे हैं (गदन—प्रेमचंद, २५४)

### बना लेना

कमा लेना; बचूल लेना। प्रयोग—मुना या उस रात में नरगिस ने एक हजार बना लिया था (ज्ञान०—यशपाल, ४६)

### बनाना

(१) बेचकू बनाना। प्रयोग—द्विवेदी जो दूसरों को बनाने वाले थे पर स्वयं बन गये (गु० नि०—बा० मु० गु०, ५२९); मैंने भोपते हुए कहा—आप तो बना रही हैं (मान० (१)—प्रेमचंद, २६२); इन कहारों-बहारों को बनाते क्या देर लगती है (मा—कौशिक, २५९)

(२) उन्नति करानी। प्रयोग—जो बनाते ही बिगड़तों को रहे घाप घब वे हैं बिगड़ते जा रहे (चुमते०—हरिऔध, २२); जमुर् आवे, आवे आवे × × न जाने कितनी मानव जातियाँ यहाँ आईं और घाज के भारतवर्ष के बनाने में घपना हाथ लगा गई (अशोक०—ह० प्र० दि०, ९)

### बनारसी बाल बलना

बहुत होंसियारी से धोला देना; सरे आम घपमानित करना। प्रयोग—दुर्गाकुंड के उन शास्त्रार्थ में मैं भी घपने गुरुजी के साथ दर्शक-रूप से था, जिसमें स्वामी जी के साथ बनारसी बाल बनी गई थी (तिलो—प्रसाद, ५०)

### बनाया करना

तैयारी करनी। प्रयोग—सब रघुपति कविपतिहि बुलावा, कहा चले कर करतु बनावा (राम० (सु०)—तुलसी, ८२९)

### बनी-बुनी बात

विश्वावृत्ती या बनाई हुई बात। प्रयोग—ये मुनी की मुनी मुने कैसे जब मुनी है बनी बुनी बातें (चुमते०—हरिऔध, ४५)



### बनी बात बिगड़ जाना

होते हुए काम में बिगड़ उठ लड़ना। प्रयोग—मन पछितानि सीय महतारी। बिधि अब संवरी बात बिगारी (राम० (बाल)—तुलसी, २७६)

### बबूल लगाकर आम चाहना

बिपरीत फल चाहना। प्रयोग—करता था तो बबूर रखा अब करि बबू पछताइ। बोर्ब पेड़ बबूल का, अब कहाँ ते खाई (कबीर ग्रंथा०—कबीर, ३०); काटहु अब बबूर लगावहु, बदन की करि बारि (सु० सा०—सूर, ४५२७)

### बमगोला गिराना

बर्बाद करना। प्रयोग—घड़िया के सिद्धान्त पर तो यह बम का गोला गिरा दिया (पट्टम० के पत्र—पट्टम० शर्मा, ८२)

### बमचला मचाना या मचाना

भगड़ा या कहा-मुनी होना या करनी। प्रयोग—चाहते थे कि महिलाओं में भी बमचला मचे (प्रेमा०—प्रेमचंद, २५)

### बम-भोलानाथ होना

बड़ा ही सरल होना। प्रयोग—एकदम बमभोलानाथ है, सिंह जी (मिला०—रेणु, ३३)

### बरफी खाने के बाद गुड़ खाना

अच्छी वस्तु के बाद बुरी वस्तु मिलनी। प्रयोग—बरफी खाने के बाद गुड़ खाने को किसका जी चाहता है (गहन—प्रेमचंद, ३८)

### बरस पड़ना, बरसना

(१) बहुत अधिक कूड़ होकर टाँटने-डपटने लगना। प्रयोग—मैंने तो सब बात कही थी, आखिर बरस पड़ी क्यों? (नूर०—भक्त, ६२); नामवती पीसी × × फूहा के टोकते ही बरस पड़ी (पत्नी०—रेणु, ४९५)

(२) वेग से प्रगट होना। प्रयोग—ज्यों ज्यों उत ध्यानन पे धानंद मु आप धोरें रथों ल्यो इत चाहनि में चाह बरसति है (घन० कवित्त—घना०, १८५); धानों में स्नेह बरस रहा था (पट्टम० के पत्र—पट्टम० शर्मा, ११३); पिता का क्रोध जब बरस जाना था तब दोषार जानता था, हम फिर सखा है (शेखर (१)—अज्ञेय, ११८)

### बरसना

#### दे० बरस पड़ना

### बल खाती हुई

धुंधरानी, लचकती हुई। प्रयोग—घगर ये उमड़ती हुई मेघ घटाए मेरी हो बलखाती हुई वे अलकें हैं (कनु०—भारती, ४९)

### बल खाना

(१) घाटा सहना, हानि सहनी। प्रयोग—घगर दो बार सौ बल खाने पड़े तो कोई बड़ी बात नहीं (मान० (७)—प्रेमचंद, ३१)

(२) झुकना।

(३) लचकना।

(४) ऐँठ जाना।

### बल झाड़ना,—तोड़ना

शक्ति कम कर देना। प्रयोग—लपटि गयी सब अंग-धंग प्रति, निर्विष कियो सकल बल भारघी (सु० सा०—सूर, ११९२); अपमान या हानि की जो ग्लानि उस अपमान या हानि ही तक ध्यान को ले जाय—उसके कारण तक न बढ़ाये—वह बुराई के मार्ग पर बल चुकने वालों का थोड़ी देर के लिए पर धाम या बल तोड़ सकती है, पर उनका मुंह दूसरी ओर नहीं मोड़ सकती (चिता० (१)—शुक्ल, ६३)

### बल डालना,—पड़ना

(१) चक्कर में डालना या पड़ना। प्रयोग—सब मुखों के हमें पड़े लाले हैं कुदिन में न कौन ढाले बल (चुमते०—हरिऔध, ७६)

(२) तनाव या भेद पैदा करना या होना। प्रयोग—बल पड़े रह गये सगे न सगे। बल पड़े लाल गई भनी बातें (बोल०—हरिऔध, २२२)

### बल तोड़ना

#### दे० बल झाड़ना

### बल धकना

शक्ति में कमी होनी। प्रयोग—गर्जा अति संतर बल बांका (राम० (लं)—तुलसी, ९६८)

### बल पड़ना

#### दे० बल डालना



**बल पर बसना**

किसी की शक्ति पर निर्भर करना। प्रयोग—सुरपति बसत बाह बल जाके (राम० (अ)—तुलसी, ३९४)

**बल पाना**

सहारा पाकर और मजबूत होना। प्रयोग—भूप प्रताप भानु बल पाई (राम० (बाल)—तुलसी, १६५)

**बल मथना**

बल को तुच्छ प्रमाणित कर देना। प्रयोग—सभा मांभ जेहि तब बल मथा। करि बरुण मह मुगपति जथा (राम० (ल)—तुलसी, ९०२)

**बला जाना,—टलना**

मुसीबत टलनी; जबरदस्ती आ पड़े किसी भंभट से छुट्टी मिलनी। प्रयोग—जिह सिमरन तेरी जाई बलाई। जिह सिमरन तुम पोहै न माई (कबीर ग्रंथा०—कबीर, २९०); बला से जाडो मरेंगे, बला तो सिर से टल जायगी (मान० (१)—प्रेमचंद, १४६)

(समा० मुहा०—बला उतरना,—दूर होना,—सिर से दूर होना)

**बला टलना**

दे० बला जाना

**बला पड़ना,—पीछे फिरना**

किसी अनचाही वस्तु का जबरदस्ती जिम्मे पड़ जाना। प्रयोग—जिन्य कुछ जारावा नहीं, तिनह मुख नीदड़ी बिहाइ मेर अब्बो बूमिवा पूरी पड़ी बलाइ (कबीर ग्रंथा०—कबीर, ५१); फिर रही है बुरी बला पीछे खोलता दुह बिहंग है फिर पर (चुमते०—हरिऔध, ३)

**बला पीछे फिरना**

दे० बला पड़ना

**बला सिर पर लेना**

जान बूझ कर भंभट में पड़ना। प्रयोग—मैंने पहले ही घाप को पत्र लिखा था कि यह बला सिर पर न लीजिए (पद्म० के पत्र—पद्म० शर्मा, ७५-७६)

(समा० मुहा०—बला मोल लेना)

**बला से**

“कोई परबाह नहीं” यह भाव। प्रयोग—तो अनेक

घोगुन-भरिह बाहे पाहि बलाइ। जो वति संपति ह बिना जघुपति राखे जाइ (बिहारी रत्ना०—बिहारी, ४२१)

**बलायें लेना**

प्रेम से दूसरे की विपदायें अपने ऊपर लेना। प्रयोग—हम बलायें घापकी हैं ले रहे। और हम पर आप लाते हैं बला (चोखे०—हरिऔध, ४९)

**बलि का बकरा**

दूसरों के लिए मारा जाने वाला। प्रयोग—सब कुछ है, लेकिन महत एक तरह का बलि का बकरा होता है (बीने०—रा० रा०, २०६)

(समा० मुहा०—बलि का पशु)

**बलि जाना, बलि-बलि जाना**

बग्य बग्य होना; न्योछावर होना। प्रयोग—जानूँ कि मोरें सरस बसंता, मैं बलि जाऊँ तोरि भगवंता (कबीर ग्रंथा०—कबीर, २३८); तात जाऊ बलि बेगि नहाइ जो मन भाव मधुर कछु लाइ (राम० (अयो)—तुलसी, ४२२); छवें छिगुनी पड़ना गिलत अनि दीनता दिखाइ। बलि बावन को ज्यौनु मुनि क्यों बलि तुम्हें पत्पाइ (बिहारी रत्ना०—बिहारी, १५९); बलि गई बहु बार बयोवती, छवि विभूति बिलोक बजेनु की (प्रिय०—हरिऔध, ६)

**बलि-बलि जाना**

दे० बलि जाना

**बवंडर का तिनका होना,—पत्ता होना**

अस्थिर होना, बे सहारा होना। प्रयोग—अब बिन देखे जान प्यारे यौ धनंद घन मेरो मन भवै भट्! पात हूँ बधुरे को (धन० कवित्त—धना०, २०); घकेले मन कुछ काम नहीं कर रहा था मन बवंडर का तिनका बन रहा था (बल०—नागा०, ८२)

**बवंडर का पत्ता होना**

दे० बवंडर का तिनका होना

**बवाल पालना**

भगड़ा-भंभट होना या करना। प्रयोग—साहम-साह भगड़ा करके बवाल पालना और धपले में मुपत तमाशा देखने का अवसर भी खोना—यह उनका मार्ग नहीं था (शेखर (२)—अक्षेय, ३९)



(समा० मुहा०—बचाल खड़ा होना,—पैदा होना, बचाले जान होना)

### बसेरा देना

ठहराना, आधय देना। प्रयोग—प्रभु कह गरलबंधु समि केरा। अतिप्रिय निज उर दीन बसेरा (तुलसी—हि०श०सा०)

### बह जाना

(१) पूर्ण रूप से प्रभावित होना। प्रयोग—सूर प्रभु के ध्यान कित धरि, अतिहि काहे बहति (सु० सा०—सूर, २३६५); असहयोग की एक लहर घाई और देस उसमें बह गया (शेखर—अज्ञेय, ११२); कह न उका वह कभी, “भीष्म तूम कहाँ बहे जाते हो?” (कुरु०—दिनकर, ६४)

(२) मलत रास्ते पर चलना। प्रयोग—ऐसी को बहि गयो, प्रजा हूँ बसै तुम्हारे (सु० सा०—सूर, २०७९)

(३) महत्त्व लो देना; न टिक सकना। प्रयोग—रह गए लोग लोभ सब बह गए, भए अकाल के मुंह काले (राधा० प्रंथा०—राधा० दास, २२); बड़े-बड़े धर्ममत शास्त्रत शांति का संदेश लेकर आए हैं और मनुष्य की दुर्बलताओं के आवर्त में न नाने किधर बह गए हैं (अशोक०—ह०प्र०हि०, ९८)

(४) बहुतायत के कारण कद्र न रह जानी।

### बहकी-बहकी बातें करना

बहुत बड़ी-बड़ी बातें करनी। प्रयोग—पता नहीं क्यों, अनेक बार महाराजा जो बहकी-बहकी बातें करने लग जाते हैं (विप०—प्रेमी, १८)

बहती गंगा में हाथ धोना,—नदी में पांच पखारना सब के साथ अनायास खुद भी लाभ उठा लेना। प्रयोग—अब रहे न रहे यही समयो बहती नदी पांच पखार लें रो (ठाकुर०—ठाकुर, ९); यह दुनिया है एक समाया नाचो बूंदो हीही हाहा। बहती गंगा धो लो हाथ वही डाक के सीतों पात (गु०नि०—बा०मु०गु०, ६९९); उस बहती गंगा में सभी हाथ धो सकते थे (गवन—प्रेमचंद, ४४); अविद्या, बटपादारी करने वाले किसान अपनी जमीन नकदी कराले—बहती गंगा में हाथ धो लें (मैला०—रेणु, १५२)

### बहती नदी में पांच पखारना

दे० बहती गंगा में हाथ धोना

### बहसर घाट का पानी पीये होना

बहुत धूलें और धनुषबी होना। प्रयोग—घोर वह जो मालती है, जो बहसर घाटों का पानी पीकर भी मिस बनी फिरती है (गोदान—प्रेमचंद, ७६); निउनिया की बात छोड़ो, वह बहसर घाट का पानी पी चुकी है (बाण०—ह०प्र०हि०, १६२)

### बहनापा जोड़ना

स्त्रियों का परस्पर प्रेम-संबंध करना। प्रयोग—नया जानती थी कि बहनापा जोड़नेवाली फिर सोचे मुह बात भी न करेगी (मा—कौशिक, ८८)

### बहरा कर देना

दूसरों के अनुनय-विनय पर ध्यान न देने देना। प्रयोग—श्रीमद वक न कीन्ह केहि प्रभुता बधिर न काहि (राम० उ०—तुलसी, १०९६)

### बहा देना

(१) छोड़ देना। प्रयोग—दान कबीर रक्षा ल्यो लाइ, भर्म कर्म सब दिये बहाइ (कबीर प्रंथा०—कबीर, १७४); जा दिन ते जवराज कहाए। विक्रम वृद्धि विवेक बहाए (केशव० (२)—केशव, ४१२); जा दिन बंसी बजाइके हो लोनी हमे बुलाय। ता दिन गुरुजन-भोति हो कित दीनी सबे बहाय (भा० प्रंथा० (२)—भारतेन्दु, ६६०)

(२) व्यर्थ नष्ट कर देना।

### बहा ले जाना या बहना

भावाविष्ट कर देना या होना। प्रयोग—और नाटक दर्शकों को देश काल की सुधबुध भुलाये अपने साथ बहाये लिये जा रहा था (पैतरे—अशक, २४)

### बहाऊ होना

रही या निकम्मा होना; बहाने लायक होना। प्रयोग—खरी पातरी कान की कौन बहाऊ बानि। प्राक कली न रखी करे जली, जली जिय जानि (बिहारी रजा०—बिहारी, १४)

### बहाली बताना

बहाना करना। प्रयोग—यह तो उससे बहाली बताना जो न जानती हो (भा० प्रंथा० (१)—भारतेन्दु, ४६१)



### बहुवर्णियापन करना

स्वांग या होंग करना । प्रयोग—तो फिर यह बहुवर्णियापन क्यों करते हो (सा—कौशिक, २५२)

### बहे जाते का सहारा होना

विपत्ति में पड़े हुए का सहायक होना । प्रयोग—तोहि सम हित न मोर संसारा । बहे जात कइ भइसि अचारा (राम० (अ)—तुलसी, ३९३)

### बांका होना

बहुत सुंदर होना या आकर्षक होना । प्रयोग—उनके कहने का हंग बड़ा बांका था (गु० नि०—बा० मु० गु०, १०)

### बांछें खिलना

बहुत प्रसन्न होना । प्रयोग—नूपुर सामने जाते ही उसकी बांछें खिल गईं (सुहाग०—अ० ना०, २३७); नवाब साहब की बांछें खिल गईं (झासी०—वृ० ठमा, १७५); अमर ने झुककर मङ्गल जी को दण्डवत किया और वहां से बाहर निकला तो उसकी बांछें खिल जाती थी (कर्म०—प्रेमचंद, ३०६)

### बांध टूटना,—तोड़कर वह चलना

(१) जबदंस्ती रोके हुए भाव का और न रुक पाना, फूट कर निकल पड़ना । प्रयोग—मौसी, शशि, शेखर तीनों ही जैसे कोई बांध तोड़ कर बोलते रहे थे (शेखर (२)—अज्ञेय, ३१); भट्टिनी का आनंद घाज बांध तोड़ देना चाहता था (वाण०—ह० प्र० दि०, ३०८); एकदम मोन का बांध टूट गया—और 'अनुजलहक' (अह ब्रह्मास्मि) की घोषणा गुंज उठी (पद्म पराग—पद्म० शर्मा, १७४)  
(२) मर्यादा भंग करनी या होनी ।

### बांध तोड़ कर वह चलना

दे० बांध टूटना

### बांधना

अपने वश या अधिकार में रखना । प्रयोग—तुम हमारा हाथ न छोड़ो । तुम से दिल टूट चुका था मगर तुमने डरा कर भी बांध लिया (चोटी०—निराला, १२५); पहले ही परिचय में उनके मोहार्द ने मुझे बांध लिया (पैतरे—अशक, १५८)

(समा० मुहा०—बांध कर रखना)

### बांस की जड़ में शमोई होना

नुकसान पहुंचाने वाला होना । प्रयोग—अबही ते उर संसय होई । बेनुमूल मुत भयउ पमोई (राम० (लं)—तुलसी, ८७०)

### बांस पर चढ़ाना

(१) प्रसन्ना करनी—महत्त्व देना । प्रयोग—यह तो भटनागर की आदत में शामिल है कि जिसको चाहे बांस पर चढ़ा दे, जिसको चाहे टेंगा दिखा दे (कठ०—दे० स०, ३७३)

(२) बदनाम करना ।

### बांसों उछलना,—बल्लियों उछलना

(१) बहुत प्रसन्न होना । प्रयोग—मेरी विसात मुट्ठी भर की भी तो नहीं, पर सुन्दर (हमीन) चीख देवी और 'बिताब' (चंचल) हो गयी, बांसों उछलने लगता हूं (पद्म पराग—पद्म० शर्मा, ३९३)

(२) नाराज होना, विदकना । प्रयोग—सोते हुए ज्वाला-मुली पर घपनी इच्छाओं के बाग-बगीचे लगानेवाले विदेशी व्यापारीगण क्रोध और उत्तेजना में बांसों-बल्लियों उछलने लगे (सुहाग०—अ० ना०, १५७); अपनी इच्छा से चाहे जो करे, पर मेरे कहने से बल्लियों उछलती है (चित्र०—कौशिक, ४८)

(३) अति प्रार्थना में आना ।

### बांसों पानी चढ़ना

खतरनाक स्थिति उत्पन्न हो जाना । प्रयोग—राजा के कान में बात पड़ जायगी तो बांसों पानी चढ़ेगा (चोटी०—निराला, १२०)

### बांसों बढना

बहुत अधिक बढ़ना । प्रयोग—घफवाहों में वह उद्देश्य बांसों बढकर एक नये अर्थ का जामा पहनकर फैल गया (बुद०—अ० ना०, ९)

### बांसों बल्लियों उछलना

दे० बांसों उछलना

### बांह उठाकर पुकारना

खुले घाम घोषणा करनी । प्रयोग—जपौ राम जू अंति उबारै, ठाडी बांह कबीर पुकारै (कबीर ग्रंथा०—कबीर,



१२९); और तुम तटपर बाह उठा उठा कर कुछ कह रहे हो (कनु०—भारती, ८०)

**बाह की छांह लेना या होना,—में वसना**

शरण में आना । प्रयोग—चाहत अनाथ-नाथ ! तेरी बाह वस्यो हौं (दिन०—तुलसी, १८१); रही बाह-छांह, राजा राम की जनम भरि, भूति हूँ तेनापति और उर घायो है (क० र०—सेनापति, ९५); इन्द्र को अनुज तैं उगेन्द्र घवतार या तैं, तेरी बाहि छाहि लैं सबाहि साधियतु है (भूषण ग्रंथा० भूषण, १४६)

**बाह के सहारे**

काम करने से । प्रयोग—है करमरेख मृटियों में ही बेहतरी बाह के सहारे है (चुमते०—हरिऔध, ८)

**बाह गहना,—पकड़ना**

(१) सहारा लेना, आश्रय लेना । प्रयोग—जिसकी जिन्दगी भर की जिम्मेदारी ली थी, जिसकी सदैव के लिए बाह पकड़ी थी, क्या उसके साथ इतनी भी उदारता न करोगे ? (मान० (२)—प्रेमचंद, १६)

(२) सहारा देना, आश्रय देना । प्रयोग—गहि बाह सुर नर नाह आपन दास जगद कीजिए (राम० (कि)—तुलसी, ७६८); गिरत गहत बाह, धाम में करत छांह, पालत बिपति मांह, कृपा रस भीनो है (क० र०—सेनापति, १०४); निर-धार अपार दै धार-मसार दई, गहि बाह न बोरिये नू (घन० कवित—घना०, ८); हरीचंद की बाह पकरि दूढ़ पाछे छोड़ न देहु (मा० ग्रंथा० (२)—भारतेन्दु, ३६९); तुमने ऐसे गाढ़े समय मेरी बाह पकड़ी जब मैं बीच धार में बहा जा रहा था (गहन—प्रेमचंद, १६८); पांच हम तो रहे पकड़ते ही पर कहाँ बाह आपने पकड़ी (चुमते०—हरिऔध, २); मेरी बाह गही स्वामी ने मैंने उनकी छांह गही (यशो०—गुप्त, ४३) (+)

(३) विवाह करना । प्रयोग—कोई पुरुष मेरी बाह गह ले और मैं आजीवन उसे ही अपना मानूँ (सुहाग०—अ० ना०, ३६); देखिए प्रयोग (२) में (+) की

**बाह गहे की निभाना,—लाज**

सहारा देने के वचन की खातिर साथ निभाना । प्रयोग—सूर पवित पावन करि कीजे, बाह गहे की लाज (सू० सा०—

सूर, २१९); या कुल रीति बहिन की प्रीति जो बाह गहे की निबाहियतु है (ठाकुर०—ठाकुर, ३७); तऊ न स्वामी सपान तजत तेहि बाह गहे की लाज (मा० ग्रंथा० (२)—भारतेन्दु, ५७)

**बाह गहे की लाज**

दे० बाह गहे की निभाना

**बाह टूटना**

सहायक न रह जाना । प्रयोग—कूटते क्यों न तब फिर छाती फूटते बांह भी टूटी (चुमते०—हरिऔध, ७०)

**बाह देना**

(१) सहारा देना । प्रयोग—सुख सोऊँ मुनि वचन तुम्हारे, देहु कृपा करि बाह (सू० सा०—सूर, ५१); खुद भी चड़े, साथ ले भुक्कर गिरतों को बाहें देकर (चक्र०—दिनकर, १४१)

(२) प्रेमपूर्वक । प्रयोग—कबीर माया जिन मिले, सो बरियां दे बाह नारद से मुनिवर मिले, किसी भरोसी त्याह (कबीर ग्रंथा०—कबीर, ३५)

**बाह पकड़ना**

दे० बाह गहना

**बाह फड़कना**

जोश-उत्साह का अनुभव करना । प्रयोग—बाह मेरी तो फड़कती ही नहीं है फड़कती आँख तो फड़का करे (बोल०—हरिऔध, ३५)

**बाह में कसना**

**बाह की छांह लेना**

**बाह होना**

सहायक होना । प्रयोग—गोरा बादिल राजा पाहा । राउत दुवो दुवो जनु बाहा (पद०—जायसी, ४६७)

**बाहों में वसना**

आश्रय करना । प्रयोग—और तुमने मुझे अपनी बाहों में कम लिया है (कनु०—भारती, ३६)

(समा० मुहा०—बाहों में भरना)

**बाई छुना,—लगना**

(१) बायू का प्रकोप होना । प्रयोग—सगी सब बाप तुम्हारेहि बाई करे उलटी बिधि क्यों कह जाइ (केशव० (२)—



केशव, २०४); कहे वह ठीक ठीक कुछ क्यों, छू गई है जिसकी बाई? (श्लेष प्रयोग) (समं०—हरिऔध, ८८)(+)

(२) घमंड आदि के कारण व्यर्थ का काम या बातें करनी प्रयोग—देखिए प्रयोग (१) में (+)

(समा० मुहा०—बाई चढ़ना)

### बाई पचना

(१) घमंड टूटना। प्रयोग—जब कि बाई पची जवाना की माल कैसे न तो पिचक जाता (बोल०—हरिऔध, ७९); भगवान परशुराम के नाम मात्र में शत्रियों की बाई पच जाती है (गंगा०—उग्र, २१)

(२) बाण का प्रकोप शांत होना।

### बाई पचाना

घमंड दूर कर देना। प्रयोग—मुझे यदि आता हो तो मैं पचा दूँ कुत्तों की बाई (बिदेही०—हरिऔध, ३८)

### बाई लगना

दे० बाई छूना

### बाकी न उठा रखना

सब कुछ कह या कर डालना। प्रयोग—अब आप बिलकुल बेफिक्र हो जाइए। हम लोग कुछ बाकी उठा न रखेंगे (देशमी०—राम० वर्मा, ९१)

(समा० मुहा०—बाकी न रखना)

### बाकी निकलना या निकालना

देना या पावना होना। प्रयोग—धरमराइ जब लेखा मांग्या बाकी निकसी भारी (कबीर ग्रंथा०—कबीर, १६३)

### बाग खींचना

प्रवृत्ति या गति रोकनी। प्रयोग—गति की ऊँचा उठाने के लिये बाग अपनी कब न वे खींचे रहे (चुभते०—हरिऔध, १३२)

### बाग न मोड़ना

जिस रास्ते पर चल रहे हों उससे विमुख न होना। प्रयोग—हैं खेलों धौलागिरि गोरा। टरो न टारा बाग न मोरा (पद०—जायसी, ५३१९)

### बागडोर हाथ में लेना या होना

(१) प्रबंध हाथ में लेना या होना। प्रयोग—तू जानती है चुदाबत सरदार घजीत सिंह ने मेवाड़ के घन में एक बड़ी

सिन्धी सेना पाल रखी है घोर उसकी बागडोर अपने हाथ में ले रखी है (विप०—प्रेमी, १४)

(२) वज्र में होना। प्रयोग—उन्हें जायद विदित हो गया था कि उनकी बागडोर उन स्त्री के हाथ में है जो पाटलि-पुत्र के बड़े से बड़े सामन्तों को केवल संकेत पर नचा सकती है (चित्र०—मग० दर्मा, ६९)

(समा० मुहा०—बागडोर पकड़ना,—बागडोर संभालना)

### बाज आना

हैरान आना; दिलचस्पी न रह जानी। प्रयोग—राति की वे गति घोंस की ए अब हौ तेरी बातनि बाजहि आई (केशव०—केशव, ७०)

### बाजार करना

खरीदने के लिए बाजार जाना। प्रयोग—उसने कहा हों, आज सनीबर है न। हमलोग बाजार करने चापे है (कंकाल—प्रसाद, २२०)

### बाजार गरम होना

(१) अनुकूल होना। प्रयोग—भार फुक टोना टनमन करने वालों की बाजार गरम हुई (मट्ट नि०—बा० मट्ट, ११०)

(२) खूब काम करना; बढ़ती पर होना। इतने दिनों तक जसवंत नगर में नर-हत्या घोर न्याय-हत्या का बाजार गरम था (रंग० (२)—प्रेमचंद, ८७) (+); मौत का बाजार गरम हो रहा था (चित्र०—कौशिक, १२३)

(३) खूब चर्चा होती या प्रचार होना। प्रयोग—हिन्दी के उत्तम ग्रंथों के लिए पारितोषिक देने की व्यवस्था की गई परन्तु उसमें भी सिफारिश का बाजार गरम हुआ (राधा० ग्रंथा०—राधा० दास, ३६७); देखिए प्रयोग (२) में (+) भी

(४) बाजार में पाहुक या चीज की अधिकता होनी।

(५) दाम बढ़ती पर होना।

### बाजार चलते हाथ पटकना

बात-बात में मारपीट कर बैठना। प्रयोग—मर्दों को काम ही ऐसा कौन था है? बाजार चलते हाथ पटकते हैं (बोने०—रा० रा०, २३)



### बाज़ार ठहरना

बाज़ार-राम में स्थिरता या जानी। प्रयोग—ठहर गई बाज़ार, दहल गए निठुर सभी गल्लेवाले (राधा० ग्रंथ०—राधा० दास, २२)

### बाज़ार तेज़ी पर होना

मांग या बूढ़ि जोरों पर होनी। प्रयोग—भोला ने शान जमायी घबकी बाज़ार बड़ा तेज़ रहा महतो, इसके अरसी खपए देने पड़े (गोदान—प्रेमचंद, ८)

(समा० मुहा०—बाज़ार पर तेज़ी आना)

### बाज़ार मिलना

(१) मांग या पूछ होनी। प्रयोग—जिन विषयों के गंभीर अध्ययन से मनुष्य का मस्तिष्क परिष्कृत और हृदय सुसंस्कृत होता है, उसमें भ्रम लगता है और उसके लिए बाज़ार जानानी से नहीं मिलता (अशोक०—ह० प्र० द्वि०, १५७)

(२) बिक्री होने की मुविधा होनी।

### बाज़ार में आग लगना

चीजें बहुत महंगी होनी। प्रयोग—भैया, जरा आज का खरचा तो टांक दो। बाज़ार में जैसे आग लग गयी है (गढ़न—प्रेमचंद, १७७)

### बाज़ार में बैठना

वैश्यावृत्ति अपनाती। प्रयोग—और ज़ोर-जुलूम करने से यदि जिठानी जी बाज़ार में जा बैठेंगी तब भी तो हमलोग किसी को मुंह दिखाने लायक न रहेंगे (मा० मा० (१)—कि० गो०, १२८)

### बाज़ार आदमी

बुरे रास्ते पर ले जानेवाला घादमी; बदचलन आदमी। प्रयोग—बस अब तुम यहाँ से चल दो। ऐसे बाज़ार घादमियों का यहाँ कुछ काम नहीं है (परीक्षा०—श्री० दास, ९१)

### बाज़ार सूत्री

वैश्या। प्रयोग—जैसे वह सब कुछ माफ कर सकती है, पर यह नहीं कर सकती कि पति बाज़ार स्त्रियों के साथ समय व्यतीत करे (मारती०—रा० रा०, ९६)

### बाजी बदेना

मत बदली। प्रयोग—उनकी ताश खेलने का बड़ा व्यसन है वह सदा बाजी बदकर खेलते हैं (परीक्षा०—श्री० दास, १०३)

(समा० मुहा०—बाजी लगाना)

### बाजी मार लेना,—ले जाना,—हाथ में रहना या होना

स्पर्धा में सफल हो जाना। प्रयोग—इसलिए कितनी भी अच्छी योजना बनाइए और कितना भी सुंदर उपदेश सुना जाइए, सात्विक साहित्य की ओर प्रवृत्ति नहीं जाती और हल्के ढंग का साहित्य बाजी मार ले जाता है (अशोक०—ह० प्र० द्वि०, १५७); जिस मुहावरे में सोचने का वह आदी या उसमें भुवन उससे "बाजी ले गया" या (नदी०—अशोक, ५२); राजा साहब ने बाजी मार ली (रंग० (२)—प्रेमचंद, १५२); याने दार साहब बहुत खुश हुए। सोचा रंग बड़ गया, बाजी हाथ है (चोटी०—निराला, २७) दूसरी बाजी भी उन्हीं के हाथ रही (गवर्न—प्रेमचंद, ३६)

### बाजी ले जाना

दे० बाजी मार लेना

### बाजी हाथ में रहना या होना

दे० बाजी मार लेना

### बाजू पकड़ना

सहायता चाहनी या करनी। प्रयोग—इनका बाजू पकड़े रहना है (चोटी०—निराला, १५४)

(समा० मुहा०—बाजू देना)

### बाट करना

रास्ता खोलना, मार्ग बनाना। प्रयोग—जील्हो जरासंधन बंदि छोरी। जुगल कपाट बिदारि बाट करि, जतनहि तैं सधि जोरी (सू० सा०—सूर, ४८३४)

### बाट जोहते आखें पथरा जाना

बहुत प्रतीक्षा करते करते थक जाना। प्रयोग—प्रमुख साहूकार मगन गंधी बोला—बाट जोहते-जोहते आखें पथरा गई (झासी०—दू० वमा, २६५)

### बाट जोहना,—देखना,—निरखना

घासरा देखना। प्रयोग—चिबेली मनाहू न्हाइए, सुरति



मिले जो हाथि रे। तहां न फिरि मय जोइये, मनकादिक मिलिहै सावि रे (कबीर ग्रंथा०—कबीर, ८८); बहुत दिनन की जोबनी बाट तुम्हारी राम (कबीर ग्रंथा०—कबीर, ८); निरखि निरखि मग कमल नयन को प्रेम मगन भए भारे (सू० सा०—सूर, ४१९७); नहि आवनि ओधि, न रावरी आस, इते पर एक सी बाट चहौ (घन० कवित्त—घना०, ५२); अंग सिंगार सिंगार के सावरे, रावरी बाट विलोकत हूँ है (मति० मक०—मतिराम, ११४); जोहत परी पलंगिआ, पियके बाट (रहीमकवि०—रहीम, ४४); ओ नंद घारि जो सब गोप ग्वाल आगे गये थे उन्होंने जा मयूरा के बाहर डेरो किये, ओ कृष्ण बलदेव की बाट देख देख अति चिता कर आपस में कहने लगे... (प्रेम सा०—ल० ला०, १०५); हमारे सब मित्र तुम लोगों की बाट जोहते हैं (भा० प्र०(१)—भारतेन्दु, ५८७); इस समय स्वदेश भक्त प्रजामात्र आपकी बाट जोह रही है (राधा० ग्रंथा०—राधा० दास, ६७२); वहाँ उसके लिए जलपान रखे रेणुका उसकी बाट जोहती रहती (कर्म०—प्रेमचंद, २२); दासजी अपनी पीर में बैठे थे जैसे किसी की बाट देख रहे हों (झासी—वृ० वर्मा, ४४)

(समा० महा०—बाट तकना)

### बाट दिखाना

- (१) मार्ग प्रदर्शन करना। प्रयोग—कहि कबीर परचा भया गुरु दिखाई बाट (कबीर ग्रंथा०—कबीर, १३)
- (२) प्रतीक्षा करवानी।

### बाट देखना

दे० बाट जोहना

### बाट निरखना

दे० बाट जोहना

### बाट पड़ना

- (१) रास्ते में तंग करना। प्रयोग—बाट परी ऐसी बात, मोहि तो नहीं मुहात, काहे इतरात करत अपनी हठ भारी (भा० ग्रंथा० (२)—भारतेन्दु, ५०)
- (२) रास्ते में लूट लिया जाना, हाका पड़ना, हरण होना। प्रयोग—तरनिउ मुनि परिनी होइ जाई। बाट परइ मोरि नाव उड़ाई (राम०(अ)—तुलसी, ४६५)

### बाट आना

अत्यधिक होना। प्रयोग—हर हाक से धन्यवादी की एक बाट सी आ जाती (मान०(१)—प्रेमचंद, ३२३); अभी उन्हें लाहौर आये महीना भी न बीता था जब भाभी के पत्नी की बाट आ गई कि उसे जलन्धर के नरक से शीघ्रातिशोघ्र निकाल कर लाहौर के स्वर्ग में XXX बंटाया जाय (चेतन—अशक, २३८); उन्हीं दिनों बंगला उपन्यासों की बाट से हिन्दी की नई संतानों के नामकर्मण में भी गुगान्तर आ गया था (लिली—निराला, ५८)

### बाट में बह जाना

किसी बात या मत के गहरे प्रभाव में बह जाना। प्रयोग—हम सब उस बाट में बह जायगा। जोहरा भी दगा दिया (गबन—प्रेमचंद, ३१२)

### बात आई-गई करना या होना

बात भूल जाना; बात को धीरे महत्व न देना। प्रयोग—अच्छा खैर हटाओ इन सब बातों को ! बात आई-गई करो (वृ०—अ०ना०, ४२२)

(समा० मुहा०—बात गई गुजरी करना)

### बात आगे बढ़ाना

- (१) चर्चा धीरे आगे बढ़ाना। प्रयोग—ग्वाला प्रसाद का माया ठनका, लेकिन उन्होंने बात आगे नहीं बढ़ाई (भूले०—मग०वर्मा, २०८)
- (२) भगड़ा करना।

### बात आना

- (१) सगाई की चर्चा होनी। प्रयोग—बहुत महाराजों के कुंवरो से बातें आईं पर किसी पर इनका ध्यान न बढ़ा (इंशा०—इंशा०, ९४)
- (२) चर्चा होनी।

(३) दोष लगना—किसी काम के लिये दोषी ठहराया जाना।

### बात उगल देना

किसी गुप्त बात को कह देना। प्रयोग—अतः मैं उससे सब बातें उगलवाने का अवसर देखने लगी (गोली—चतुर०, २३८)



### बात उधार कर कहना

(१) साफ-साफ कहना । प्रयोग—घनलायक हम हैं, की तुम ही, कहीं न बात उधारि (सु० सा०—सूर, ३५०१); नंददास प्रभु कछु न रहेगी, जब बातन उपरीगी (नंद० प्रश्ना०—नंद०, ३१२) (÷)

(२) झुल कर खरी बात कहनी । प्रयोग—वेखिए प्रयोग (१) में (÷)

### बात उछालना

उपहास करना या किया जाना; घाम-चर्चा होनी । प्रयोग—घनसिंह की दुकान पर आरती का उल्लेख कभी 'बिन सिपाई हथिनी' के रूप में किया जाता, कभी उसे 'जंगल की हिरनी' कह कर बात उछाली जाती (ब्रह्म०—दे० स०, ११२)

### बात उठाना

(१) चर्चा चलानी । प्रयोग—जब समझी में बात सवन की भूठ हो यह बात उठावति (सूर—हि० श० सा); भई, किस तरह बात उठाऊ (मा०—कौशिक, ५७); जिस दाता ने साज तक उनका निबाह किया है वही अब भी करेगा, तुमको ऐसी-ऐसी बातें न उठानी चाहिये (ठेठ०—हरिऔध, ५६); हमारा बात उठाना भी ठोक न होगा (झुठा० (१)—यशपाल, २३४)

(२) नावबार बात सहनी । प्रयोग—कन्या ने फिर बात उठाई (बुंद०—अ० ना०, १३०)

(३) बात न मानना ।

### बात उड़ना या उड़ाना

(१) बात को घोर कोई महत्व न दिया जाना या न देना । प्रयोग—कल मैंने मालिन से हंसी में यह बात लड़ा तो बी बी पर भीतर मेरा जो ही जानता था (भा० प्रश्ना० (१)—भारतेन्दु, २५); पर किशोरी को वह छेड़ छड़ा प्रच्छो लगती बड़ी हंसमुख लड़की है । यह कह कर बात उड़ा दिया करती (कंकाल—प्रसाद, १०२); इतने में मोटर का हानं मुनाई दिया घोर एक पल में रतन आ पहुँची । वकील को बुलाने की बात उड़ गई (गहन—प्रेमचंद, १९०)

(२) चर्चा या झगड़ा फैलनी या फैलानी । प्रयोग—भूठे ही यह बात उड़ी है, राधा कान्हू कहत नर नारी (सु० सा०—सूर, २३२५); नगर में यद्यपि इस बात को

फैलने से दबाया गया तथा पि बात उड़ ही गई (सुहाग०—अ० ना०, १३०); लोग बे सिर-पैर की बात उड़ा रहे हैं । (दूधगाछ—दे० स०, २५१); परजात बातों की छाती जलती है । तरह-तरह की बात उड़ावेंगे वे (परती०—रेणु, २०७)

(३) विषय बदला जाना या बदलना । प्रयोग—ला चुके, ला चुके, लाने की यह सूरत है ?—हरगोविन्द ने बात उड़ाने के वास्ते कहा (परीक्षा०—श्री० दास, २०)

### बात ऊपर हो आना

(१) भेद झुल जाना । प्रयोग—छोटी, यदि बात ऊपर ही आ जावे तो मैं मारे जाने तक के लिये तैयार हूँ (झांसी०—बृ० वर्मा, ५२)

(१) बात स्पष्ट होनी । प्रयोग—“क्यों देवीदयाल, तुम लोग तो बाढ़ालों के सिरमौर हो गांव में, कुछ समझ में आती है क्या बात है ?” “बात ऊपर रखी है । महा गंवार भी समझ जाय” —रं० देवी दयाल विशेष रूप से अंतर्मुख हो गए (लिली—निराला, ७२)

### बात कट जाना

बात का विरोध होना । प्रयोग—बार में भूत भागता है तो घोरत भी भाग जायगी । अब तो कट गई तुम्हारी बात ? (रंग० (१)—प्रेमचंद, १८७); बात जिससे सदा रही कटती क्यों न उस जीभ को कटा डालें (चौखे०—हरि-औध, ९३); प्रभु की बाणी कट सकी युक्ति एक सी अट न सका (साकेत—गुप्त, ९०)

### बात करते

सुरत, बहुत जीध, कहते ही । प्रयोग—सच है सुख का यही बात करते ही बीत जाता है (राधा० प्रश्ना०—राधा० दास, १०३)

### बात करना

विवाह की चर्चा करना । प्रयोग—जह करियत तो बात तहां तेरि होति बुराई (नंद० प्रश्ना०—नंद०, १७१)

### बात कसना

ज्यंग्र मारना । प्रयोग—हरि प्रसन्न को लगा कि यह इस नारी से बाहर नहीं है कि वह इसी समय उस पर दो एक बातें कस दे (सुनीता—जैनेन्द्र, ३५)



### बात का काटना

बात द्वारा पीड़ा पहुँचना । प्रयोग—उसकी हर बात परमेश्वर को काटे जा रही थी (बोने०—रो० रा०, ६६)

### बात का गहरी होना

महत्वपूर्ण बात होना । प्रयोग—पर वह बातें गहरी थी, ज्वाला प्रसाद को अब यह अनुभव हुआ (भूले०—मग० र्मा, ४६)

### बात का तार उठाना

बात का कम चालू करना । प्रयोग—सज्जन अपनी बात का तार उठाना चाहता था (बुंद०—अ० ना०, २४३)

### बात का धनी होना

प्रतिज्ञा पालन करनेवाला । प्रयोग—वस महाशय वस मैंने समझ लिया कि आप बातों के बड़े धनी हैं (भा०ग्रं० (१)—भारतेन्दु, ६३९); वैसे मुझी हरसहाय उस समय इस विवाह से इन्कार कर सकते थे, पर बात के धनी पे (भूले०—मग० र्मा, १८); मैं यह निश्चय रूप से कह सकती हूँ कि वह अपनी बातका धनी है (रंग० (२)—प्रेमचंद, २३); मान तब तक मिल नहीं सकता हमें । बात के जब तक न हो लगे धनी (बोल०—हरिऔध, ९८)

### (समा० मुहा०—बात का पूरा होना)

### बात का पक्का होना

(१) अपने बचन पर दृढ़ रहना । प्रयोग—अगर मैं सच्चे बाप की बेटी हूँगी तो बात की भी पक्की हूँगी । (मान० (१)—प्रेमचंद, २५०); एजेंट के लिये दूसरों पर कम से कम ऐसा प्रभाव डालना आवश्यक है कि वह मनुष्य बात का पक्का है (मेरे०—गुलाब०, ५७)

### (२) बात निश्चित होनी ।

### बात का बर्तगढ़ करना या होना

तुच्छ या साधारण बात को व्यर्थ बड़ी बनाना । प्रयोग—यदि इतने बड़े बात के बर्तगढ़ से भी न समझे हों तो इस छोटे से कथन में हम क्या समझ सकेंगे (प्र० पी०—प्र०ना० मि०, ४८); तोफी, XX तुम्हारे साथ कौनसा अत्याचार किया जाता है । जरा-सी बात का बर्तगढ़ बनाती हो (रंग० (१)—प्रेमचंद, ७३); ये-सबब बात-बात में अड़ कर क्यों करे बात का बर्तगढ़ हम (बोल०—हरिऔध, १०८)

### बात काटना

(१) किसी की कही बात का विरोध करना । प्रयोग—मैं आप की बात तो नहीं काट सकता पर इससे तो मंत्री राक्षस ही बड़-बड़ के जान पड़ता है (भा०ग्रं० (१)—भारतेन्दु, १८७); अभी जाकर दो बोरे आंटा और पांच टिन घी और साधो और घामे के लिए खबरदार, जो किसी ने मेरी बात काटी (मान० (१)—प्रेमचंद, ५९)

(२) दूसरे की बात समाप्त हुए बिना बीच में बोलना । प्रयोग—मृम फिदवी अमाराम का इससे बहुत काम पड़ता है इसी से बात काट कर पुछना पड़ा (गु० नि०—वा०मु० गु०, ४४७); विगनू दूसरों की बात नहीं काटनी चाहिये (भूले०—मग० र्मा, १५७); रेखा बात काट कर इस दी (नदी०—अज्ञेय, ३५); मनोहर बात काट कर बोला—घरे राम-राम चाची, तुम क्या कहती हो (मिल०—कौशिक, ६७)

### बात की भड़ी लगाना या लगाना

बहुत बातें होनी या करनी । प्रयोग—फूल मुंह से अगर न भड़ पाया बात की भड़ भला लगी तब क्या (बोले०—हरिऔध, १२१)

### बात की तह तक पहुँचना

असली बात या पूरे भेद की जानना । प्रयोग—मुझे खुशी हुई कि तुम्हें दाद देने की कला आ गई बात की तह तक तो पहुँच जाते हो (पट्टम० के पत्र—पट्टम० शर्मा, १३४)

### बात की तान टूटना

बर्बाद होना । प्रयोग—कभी बात की तान इस पर टूटती कि बड़ी मछली छोटी मछली को क्यों खा जाती है—कभी चावल का भाव XX (ब्रह्म०—दे० सं०, ४३३)

### बात की बात में

बिना विशेष प्रयत्न के । प्रयोग—इन्के निकट प्रीति और मित्रता कोई ऐसी चीज है जो दस पाँच रुपये की कसर खर्च से बातों में हाथ आ सकती है (परीक्षा०—श्री० दास, २८-२९); मिर भुका कर नाक रगड़ता हूँ उस अपने बनाने वाले के सामने जिसने हम सबको बनाया और बात की बात में वह कर दिखाया कि जिसका भेद किसी ने न पाया (इंशा०—इंशा०, ८७); उसे तो बात की बात में ने नूना



## बात की बात होना

(राधा० प्रं०—राधा० दास, ५८४); इनके यहाँ का पान-पानी गाँव तथा ग्वेड़ के चारों ओर बात-की-बात में बँद हो गया (कुली०—निराला, ३७)

## बात की बात होना

मार बात। प्रयोग—चतुराई हरि ना मिले, ए बातों की बात (कवीर प्रं०—कवीर, ४७)

## बात की मार खाना

तकों से परास्त होना। प्रयोग—कनक बात की मार खा कर निरुत्तर रह गयी (झुठा० (२)—यशपाल, ३०६)

## बात की हवा

बात का तनिक भी प्रं०। प्रयोग—माई लार्ड के घर तक प्रजा की बात नहीं पहुँच सकती, बात की हवा नहीं पहुँच सकती (गु०नि०—वा०मु०गु०, २०५)

## बात खटकना

बात अनुचित और असंगत जान पड़नी। प्रयोग—विजय को भगवान शंकर का नाम प्रच्छा लगा परन्तु बात बुरी लगी। खटकी (मृग०—वृ० शर्मा, ३२७)

## बात खाली जाना

वचन निष्फल होना; कहने के अनुसार कोई बात न होनी। प्रयोग—समझदार है आप, व्यर्थ मत, करके अपनी खाली बात अप्रयत्न मोल लीजिए यों अब करके सबसे बेर हठात (नूर०—मरु, ११०)

## बात खुलना

गुप्त बात का प्रगट होना। प्रयोग—या निरुत्तरता में जे प्रेमी है बिन को तो प्रेम और बड़े और जे कच्चे है बिन की बात खुल जाय (मा० प्रं० (१)—भारतेन्दु, ४६४); उसने सोचा तनिक सी बात खुलने से भी हम बड़ी आपत्ति में पड़ेंगे (राधा० प्रं०—राधा० दास, १५९); अभी तक तो बात छिपी हुई है। लेकिन अगर किसी दिन खुल गई तो मेरे मुँह पर स्याही पुत जायगी (सिंदूर०—ल० मिश्र, ६); जब बात खुल गयी तब सब छिराने की नेष्टा व्यर्थ है (सौ०—ब० स०, ९५)

## बात सोना

(१) सास बिगड़ना; इज्जत न रह जाना। प्रयोग—इस समय मुझे सबसे बड़ी चिंता अपनी बात सोने की है

(रंग० (१)—प्रमचंद, १३६)

(२) बात न मानी जानी।

## बात खोल कर कहना

बात स्पष्ट करके कहना। प्रयोग—जो मेरा बयान लिया जायगा तो मैं एक-एक बात खोल कर कह दूँगा (प्रेमा०—प्रमचंद, ३२२-३२३)

## बात खोलना

गुप्त बात कहना। प्रयोग—खुल सकें या न खुल सकें छाँहें, क्या खली बात को भला खोलें (चुमते०—हरिऔध, ४५)

## बात गढ़-गढ़ कर बनाना,—गढ़ना

काल्पनिक बात बनानी। प्रयोग—भूँटे कहत स्वाम-अंग सुन्दर, बातें गढ़ि-गढ़ि बानत (सू० सा०—सूर, २९२५); गढ़ी बतियाँ, मढ़ी छतियाँ, बड़ी छतियाँ, निदान की ठोरे (घन० कवित्त—घना०, १०५); क्या किसी की हम गढ़ेंगे हड्डियाँ बात गढ़ लेंगे अगर गढ़ते बने (चुमते०—हरिऔध, ८६)

## बात गढ़ना

दे० बात गढ़-गढ़ कर बनाना

## बात गाँस करना

बात को मन में रखना। प्रयोग—तुम वह बात गाँस करि राखी, हमको गई भुलाई (सू० सा०—सूर, २३६६)

## बात गिरह में बांधना

अच्छी तरह समझना और याद रखना। प्रयोग—मेरी बात गिरह में बांध लो भैया, वहाँ वह प्रच्छा न होगा (निर्मला—प्रमचंद, १००)

## बात गोल कर जाना

न कहना। प्रयोग—यहाँ बँटे-बँटे नीरव ने निर्णय लिया था कि यदि क्षतुल यह प्रसंग आरंभ करेगा तो वह बात को गोल कर जायगा (ब्रह्म०—दे० स०, २०१); तुम उनकी बात को गोल कर जाते हो, कुछ नहीं लिखते, कहाँ है (पट्टम० के पत्र—पट्टम० शर्मा, १३७)

## बात चटपटी होना

हल्की-फुल्की मनोरंजक बात होनी। प्रयोग—जमक मिचं लगने पर बात चटपटी हो जाती है (चुमते०—हरिऔध, १)



### बात चबा जाना

कुछ कहते-कहते रुक जाना । प्रयोग—भगत बात चबाते हुए, कान खुजलाता है (मैला०—रेणु, ३६९); परन्तु दूसरे ही क्षण उनके हृदय में यह विचार उठा कि शंभू के मुँहपर ऐसी बात कहना हमारे आत्मगौरव × × के खिलाफ है । अतएव उस बात को चबा गए (मा—कौशिक, १७३)

### बात चलना

(१) बात आगे बढ़नी; बातचीत होनी; चर्चा होनी । प्रयोग—आइ बात तेहि आगे चली । राजा बनिज आव सिंघली (पद०—जायसी, ७६); चाले की बातें चलीं, मुनत सखिनू के टोल, गोएँ हूँ लोइन हंसत, बिहंसत जात कपोल (विहारी रत्ना०—विहारी, १३४); कुछ बात चलती न देखकर गृह स्वामिनी ही एक चेष्टा करती है (शेखर (१)—अज्ञेय, १५७)

(२) बात मानी जानी । प्रयोग—जब चलाये न बात चल पाई तब भला किस तरह न मुँह चलता (चुमते०—हरिऔध, १४)

(३) विवाह के सम्बन्ध की चर्चा होना ।

### बात चलाना

(१) जिंक छेड़ना । प्रयोग—को घम हाव सिध मुख घाला । को यह बात पिता सों चाला (पद०—जायसी, १९५); पुनि रानी रानिनि पै आई । द्रुपद मुता तब बात चलाई (सू०सा०—सूर, ४९१५); कुछ बात चलावत पैरु चलै मन आनतही मनमथ जगै (केशव ग्रं०—केशव, ९२); क्यों चलायेंगे हमारी बात वे जब चलाते बात उनकी हम नहीं (बोल०—हरिऔध, १११); भैया, हमारी क्या बात चलाते हो, जो आदमी पेट पालने के लिये भीख मांगेगा, वह पुन-घरम क्या करेगा (रंग० (२)—प्रेमचंद, १६३)

(२) विवाह सम्बन्ध के लिये चर्चा करनी । प्रयोग—जह राधे की माय, बैठि तह बात चलाई (नंद० ग्रंथा०—नंद०, १७०); उनकी लड़की है ×× तू कहे तो बात चलाऊँ (बूंद०—अ० ना०, १७५)

(३) बात पूछनी, कद्र होनी । प्रयोग—जहाँ भुराहि दिहें सिर छाता । तहाँ हमार को चाले बाता (पद०—जायसी, ३९५१)

(४) बात मनवानी । प्रयोग—जब चलाये बात न चल

पाई तब भला किस तरह मुँह चलता (चुमते०—हरिऔध, १४)

### बात छीलना

बहुत खोज पूछ करना । प्रयोग—चाल चल छीलछील बातों को छल छली कर किसे नहीं छलते (चुमते०—हरिऔध, १२९)

### बात छेड़ना

जिंक करना । प्रयोग—किन्तु वहाँ मेरे सामने इन बातों को मत छेड़ना (भा० ग्रंथा० (१)—भारतेन्दु, ६९०)

### बात जड़ना

उपर की बात उपर कहनी । प्रयोग—क्यों किसी की बात हम जड़ते रहें (चोखे०—हरिऔध, १२२)

### बात जमना या जमाना

(१) किसी बात का हृदय में भली भाँति स्थान कर लेना या कराना । प्रयोग—फिर भी यह बात उसके दिल में जम गयी (कर्म०—प्रेमचंद, ३९)

(२) बात का फम बंध जाना ।

(समा० मुहा०—यात बैठना या बैठाना)

### बात जाना

(१) विश्वास न रह जाना । प्रयोग—मेरी बात गई इन आगे प्रवर्हि करति विनु पानी (सू०सा०—सूर, २३८५); कहि रहोम घन बड़ि पटै जात घनिन की बात (रहोम कवि०—रहोम, ४); ऐसा न हो, पीछे नाहों कर दो, और मेरी बात जाय (मा—कौशिक, ६०)

(२) बात न मानी जाना ।

### बात टालना

बात न माननी । प्रयोग—प्रभु की बातहि टारि आपुनी बातहि राखूँ (राधा० ग्रंथा०—राधा० दास, ५६७)

### बात टूटना

किसी चलती हुई बात या सम्बन्ध को समाप्त करना या हो जाना । प्रयोग—मुना या कि आपके विवाह का निश्चय हुआ था, फिर मुना कि बात टूट गयी (नदी०—अज्ञेय, ७९)

### बात तोड़ना

बात के सिल-मिले को बंद करना । प्रयोग—बोधन भग



रहा। राजा ने बात नहीं तोड़ी बोला (मृग०—वृ० वर्मा, ४३); बात तोड़ दी गई थी ताकि कृष्ण समझ नहीं पाये। उससे छिपाई थी (देवकी०—रा० रा०, ९)

### बात तौल कर कहना

समझ-बूझ कर बात कहनी। प्रयोग—वह हर बात को पूरी तरह तौल कर ही मुँह से निकालती (कठ०—दे० स०, १६४)

### बात दबना या दबाना

बात की ओर आगे चर्चा न होनी या न करनी। प्रयोग—बात फँस गई, बानेदार आए, फिर हथपा देकर दबाया (कुल्लू०—निराला, ३५)

### बात देना

वचन देना, किसी काम को करने का आश्वासन देना। प्रयोग—मे अपनी बात दे चुका हूँ क्या तुम्हें इसका कुछ खयाल नहीं है? (मान० (२)—प्रेमचंद, १०६); जिस मदद के लिए वह × × × बात दे चुके हैं, पुलिस को उसकी खबर नहीं हो सकती (चोटी०—निराला, १३-१४)

### बात न उठा रखना

कोई प्रयत्न बाकी न छोड़ना। प्रयोग—मैंने इस लड़ाई से बचने के लिये कोई बात उठा नहीं रखी (कर्म०—प्रेमचंद, ४७); हाँ, हाँ, हम लोग अपनी तरफ से कोई बात उठा नहीं रखेंगे (जहाज०—इ० जोशी, १७९); सिकन्दरबाद पहुंचने पर परिचर्या और सेवा शून्यता में वहाँ बानों ने अपनी शक्तिभर कोई बात उठा न रखी (पद्म पराग—पद्म० शर्मा, ११०)

### बात न पूछना

(१) कोई खोज-खबर न लेनी। प्रयोग—तूँ उस निठुर निछोही बात न पूछी ताहि (पद०—जायसी, २३१४) (÷); मीन वियोग न सहि सकें नीर न पूछे बात (सुर—हि०श० सा०); भानू उदय कहूँ देखि न परिहै कोउ न पूछिहै बात (राधा०प्र०—राधा० टास, ६९) (÷); मेरा खसम तो मेरी बात ही नहीं पूछता (गहन—प्रेमचंद, १३) (÷)

(२) कोई महत्व न देना, कद न करनी। प्रयोग—मन बिछुरे तन छार होइगो, कोउ न बात पुछातो (सू० सा०—सूर, ३०२); क्यों ही जरा सामने हुए पर भाड़कर निकल

जायगे, बात भी न पूछेगे (मान० (१)—प्रेमचंद, ५); पूछता बात तक नहीं कोई पर नहीं तार डोंग का टूटा (सुमते०—हारऔध, ९४); देखिए प्रयोग (१) में (÷) भी

### बात निकलवा लेना

किसी गुप्त बात को कहलवा लेना। प्रयोग—हम हैं मुँशी राधेनाथ, हमसे बात निकलवा लेना घासान नहीं है (मूले—भग० वर्मा, १९)

### बात पकड़ लेना

(१) तर्क करना, हज्जत करनी। प्रयोग—हमारी तेज तो पारल से भी जल्दी बात को पकड़ती है (कठ०—दे० स०, १०३)

(२) किसी की सामान्य रूप में कही बात को अनावश्यक रूप से महत्व देना।

### बात पकना

सलाह मशविरा होना, निर्णय लिया जाना। प्रयोग—ये बातें चार में पकी और फिर जाति के दस-गंच मूख मूख लोग कोबलन से मिलने के लिए धाये (सुहाग०—अ० ना०, १७६)

### बात पक्की करना या होना

(१) विवाह तै करना या होना। प्रयोग—जब इस तरह पूरा साल गुजर गया धीरे कन्या का सत्रहवाँ लग गया, तो मैंने एक जगह बात पक्की कर ली (मान० (१)—प्रेमचंद, ३२०); कहते थे, लड़का हीरे का टुकड़ा, गुलाब का फूल है। बात-चीत दस हजार में पक्की हो गई है (लिली—निराला, ११)

### बात पढ़ना

(१) आवश्यकता होनी, मौका घाना। प्रयोग—सब ही रंग में घन आनंद पं बस, बात परे पर नाहि कहूँ (घन० कवित्त—घना०, १०९)

(२) चर्चा चल पड़ना। प्रयोग—अधिकांश ने मुँह पर उचित ही कहा, परन्तु पीठ-पीछे बात पढ़ने पर बोले... (मा—कौशिक, ७२)

### बात पढ़ाना

सिखाना-पढ़ाना। प्रयोग—नागरि आगरि ही बहु भाति तुम्हें अब कौन सी बात पढ़ैय (घन० कवित्त—घना०, २००)



### बात पर जाना

बात पर ध्यान देना, कहने पर भरोसा करना । प्रयोग—बुआ उसकी बात पर घा चुकी थीं (बोटी०—निराला, १३३)

### बात पी जाना

किसी कटु बात को मन में दबा कर रह जाना । प्रयोग—बुढ़िया कड़वा घूंट बना के बात को पी गई (ये कोठे०—अ० ना०, १५७)

### बात फूटना

किसी गुप्त बात का प्रगट हो जाना । प्रयोग—तो पहले हमारा आपका ईमान हो जाय और कहीं भी किसी प्रकार भी बात न फूटन पावे (झांसी०—वृ० वर्मा, ३७६)

### बात फेंकना

व्यंग्य मारना या कहना । प्रयोग—गरुड़पुत्र भा ने दूर से बात फेंकी (परती०—रेणु, ३९); साल मूँह है साल अंगारा हुआ । दूसरों पर बात क्यों है फेंकते (बोल०—हरिऔध, ४९)  
(समा० मुहा०—बात मारना)

### बात फेरना

चर्चा का विषय बदल देना । प्रयोग—पर उसने धीरज को हाथ से जाने न दिया था, इसलिये बात फेर कर कहा (ठेठ०—हरिऔध, २१)

### बात फैलना

बहुत लोगों को मालूम होना । प्रयोग—फैल गई पर बाहिर बात मु नीकें भई इन काज कनौड़ी (घन० कवित—घना०, १४); बात फैल गई, थानेदार आए, फिर रुपया देकर दबाया (कुल्ली०—निराला, ३८); कह दोगी तो यह बात फैल जायगी कि तुम घोर कुंवर जी अलग-थलग जाति के हो (मृग०—वृ० वर्मा, २७५)

(समा० मुहा०—बात चौड़ियाना)

### बात फैलाना

चर्चा बढ़ाना । प्रयोग—हम को क्या पड़ी जो ऐसी बुरी बात की फैलाती फिरें (मृग०—वृ० वर्मा, २०४); तब यह बात किस ने फैलायी है, जानते हो भैया, उसी पाजी महंगू ने (तितली—प्रसाद, १७२)

### बात फोड़ना

भेद प्रगट करना । प्रयोग—ऐसी न होय के यह बात फोड़ के उलटी आग लगावे (भार० प्रथा० (१)—भारतेन्दु, ४४२)

### बात बघारना

डोंग हांकना । प्रयोग—यह बड़ी रूपरतन है जो कभी समारवादी बातें बघारा करता था (वृ० ना०—अ० ना०, ४५६)

### बात बड़बोली लगना

छोटे मुँह बड़ी बात लगनी । प्रयोग—शेखर को लगा कि वह जो कहना चाहता है वह तभी कह सकेगा जब साप ही उसका उपहास भी करता आय, नहीं तो बात बड़ी बड़बोली लगेगी (शेखर (२)—अशोक, ११३)

### बात बढ़ना या बढ़ाना

(१) विवाद या झगड़ा बढ़ना या बढ़ाना । प्रयोग—बात तब कैसे भला बढ़ती नहीं बात बड़ बड़ कर, रहे करते अगर (चुमते०—हरिऔध, ३४); लेकिन बात बड़ी नहीं । न जाने कैसे यह धर्म-युद्ध रुक गया (मैला०—रेणु, १०); मुन्नाजी ने तो कुछ जवाब न दिया, बात बड़ जाने का भय था (मान० (१)—प्रेमचंद, २५१); शेखर चुपचाप अपने दफतार की ओर जाता हुआ सोचने लगा, बात बढ़ाना तो वह नहीं चाहता था, लेकिन और चारा क्या था ? (शेखर (२)—अशोक, ३७)

(२) व्यर्थ बातों का कहा जाना या कहना । प्रयोग—बाड़इ कहा पार नहि लहऊँ (राम० (बाल)—तुलसी, १९)

### बात बनाना

(१) प्रयोजन सिद्ध होना । प्रयोग—खोज मारि रघु हांकहु ताता । जान उपाय बनिहि नहि बाता (राम० (अ)—तुलसी, ४५२); धीर धरी अकुलात कहा, अब तो बनि बात सब बनि आई (मति० मक०—मतिराम, १९०); बन में गये न बात बनेगी (मर्म०—हरिऔध, ५); वह खादमी भले है इससे बात बन भी गई (स्याम०—जैनेन्द्र, २९)

(२) साब रहना ।

(समा० मुहा०—बात संवारना)

### बात बना लेना—संवारना

किसी बिगड़नी हुई स्थिति या काम को संभाल लेना ।



प्रयोग—बड़े भाग बिधि बात बनाई (राम० (बाल) —तुलसी, ३१२); तात बात में सकल सवारी (राम० (अ) —तुलसी, ५२२); संभलो बिगड़ी बात बनाओ। भले काम कर नाम कमाओ (मर्म०—हरिऔध, १६)

### बात बहलाना

बात टालना। प्रयोग—महचरि चतुर बात बहरावै। टेव है बाहि मूरछा घावै (नंद० ग्रंथा०—नंद०, १२०)

### बात-बात में

घोड़ा सा भी कुछ होने पर। प्रयोग—कापता बात बात में है जी फल बुरे हैं इसीलिये चलते (चुमते०—हरिऔध, ९)

### बात बिगड़ना या बिगाड़ना

(१) स्थिति खराब होनी या करनी। प्रयोग—कहहि पर-सपर पुर नर नारी। भलि बनाइ बिधि बात बिगारी (राम० (अ)—तुलसी, ४४३); बिगरी बात बने नहीं, लाख करो किन कोइ (रहीम कवि०—रहीम, १६) (÷); साल भर हो गये जनी तक एक पैसा नहीं दिया। सेठ जी ने कहा है, बात बिगड़ने पर रुपये दिये तो क्या दिये (मदन—प्रेम-चंद, ११२) (÷); जब कि हम बात बात में बिगड़े बात कैसे न तब बिगड़ जाती (चुमते०—हरिऔध, ३४); है हमारी बात की यह दानगी है बनाकर बात बात बिगाड़ते (चुमते०—हरिऔध, ८५)

(२) इज्जत नष्ट हो जानी या करनी। देखिए प्रयोग—

(१) में (÷)

(३) विफल होना या करना।

### बात बैठना

(१) मेल-जोल होना। प्रयोग—बात क्यों उससे बिठाये बैठती फेर करके पीठ जो है बैठता (चौखे०—हरिऔध, ५३)

(२) युक्ति सफल होनी। प्रयोग—तब भला बात बैठती कैसे बैठ पाई न बात जब दिल में (बोल०—हरि-औध, १९६)

### बात मठोरना

बातें करनी। प्रयोग—क्षण के दर्शनों के लिये दो-तीन घोरतें दालान में बंठी हुई बातें मठोर रही हैं (बूंद०—आ० ना०, १५०)

### बात मथना

मन के भाव को उत्तर-प्रत्युत्तर से जान लेना। प्रयोग—चर्चा कर आया हूँ परन्तु बात पक्की नहीं की है। सोचा, पहले अपने घर पर बात को मथ लूँ तब पक्की करूँ (मृग०—वृ० वर्मा, १३६)

### बात मन में बैठना

बात उपयुक्त लगनी। प्रयोग—तुम्हारी वह बात मेरे मन में बैठ गई कि हुक्काम का विश्वास-पात्र बने रहने के लिये अपनी स्वाधीनता का बलिदान क्यों करते हो (रंग० (१)—प्रेमचंद, २७७)

### बात मांजना

बात ठीक कर लेनी। प्रयोग—इस अवधि में उसने अपनी बात मांज ली (परती०—रैणु, ९४)

### बात मुंह से निकलना

बात कही जानी। प्रयोग—जान आलम जबान × × कट कर गिर जाय अगर कोई बेजा बात मुंह से निकल जाय (मृग०—वृ० वर्मा, ३०५)

### बात में न होना

झांझा या प्रभाव में न होना। प्रयोग—उसने तो साफ कह दिया कि उसकी बेटी अब उसकी बात में नहीं (परती०—रैणु, २०६)

### बात में सल पड़ना

बात समाप्त होनी, दब जाना। प्रयोग—एकहि बोल, ई जाहु चली भगरो सगरो मिटि बात परै सल (घना० कवित—घना०, १९९)

### बात रखना

किसी की या अपनी कही बात पूरी करनी। प्रयोग—प्रभु की बातहि टारि आपुनी बातहि राखूँ (राधा० ग्रंथा०—राधा० दास, ६६७); जरा सी बात भी अब उसकी नहीं रखी गई? (परस—जैनेन्द्र, २७); उसे पूरा विश्वास था कि नारायण दरोगा उसकी बात रख लेगा (ब्रह्म०—दे० स०, ९२); राजपुरुष ने आचार्य की बात रखली (वैशाली० (१)—चतुर०, ८०)



### बात रह जाना

(१) कही बात के अनुसार काम होना। प्रयोग—बात रहे सो काज और बर सरबस जाई (कुण्ड०—गिरधरदास, १); तुम्हें ज्वालासिंह के यहाँ चले जाना चाहिए था। चाचाजी की बात रह जाती (प्रेमा०—प्रेमचंद, २९); सब जगह बात रह नहीं सकती बात का बांध दें भले ही पुल (चोखे०—हरिऔध, ५८)

(२) इज्जत बनी रह जाना।

### बात लगना

(१) किसी तीक्ष्ण बात का हृदय को व्यथित करना। प्रयोग—ठकुराइन—क्या बात है। चोर उधर से घाया, यही बात उसे लग गयी (मान० (२)—प्रेमचंद, ६६); मेरी बात कुमार को लगी (वाण०—८० प्र० द्वि०, ५९); पर सायद बात उसे लग गई है। यह अच्छा तो नहीं है, पर क्या करूं? (जय०—जैनन्द्र, १७९)

(२) विवाह स्थिर होना। प्रयोग—बातचीत लगी तो नहीं है पर दो-चार दिन में लग जायगी (मा—कौशिक, १३९)

### बात लगाना

(१) एक की कही हुई बात को दूसरे से कह कर मनोमालिन्य पैदा करा देना। प्रयोग—यह न कहो, पर का भेदी लंका दाहे। कौन जाने, कोई आदमी साबासी लूटने के लिये मुखर बनने के लिये, वहाँ सारी बातें लगा आए (रंग० (१)—प्रेमचंद, २१८)

(२) चुगली करना। प्रयोग—न जानिये कोई दुष्ट कुछ बात लगाय दे, इससे उचित है कि सब मिल बैठ ले चले (प्रेम सा०—ल० ला०, २३)

### बात लड़ना

तर्क होना। प्रयोग—मुझे श्रीमती जी की विद्या की धाह नहीं थी एक दिन बात लड़ गई (कुली०—निराला, ६९)

### बात संचारना

दे० बात बना लेना

### बात सुनना

(१) कहा मानना। प्रयोग—सूरदास—प्रभु संतत हित ते, कहे सुनत नहि बात (सु० सा०—सूर, ४३९१)

(२) भला बुरा सुनना, डांट सुननी। प्रयोग—नोकरी में बड़े झंझट हैं, काम बहुत करना पड़ता है, रात-दिन मालिक की बातें सुननी पड़ती हैं (मिखा०—कौशिक, ९); आपके पीछे मुझे बातें सुननी पड़ती हैं (गवन—प्रेमचंद, १०७)

### बात सुनाना

मला-बुरा कहना। प्रयोग—जब सों हम नेह कियो उन सों तब सों तुम बातें सुनवाती हो (मा० प्र० (२)—भार-तेन्दु, १५६); तितली कभी-कभी इसके लिए राजी को बात सुनाती (तितली—प्रसाद, २७२); देखो भैया, वह कितना बातें सुना गया (कुछ—५० पु० वल्लशी, ४७)

### बात से फिर जाना

कही बात से मुकर जाना। प्रयोग—हम फिरेंगे न बात से अपनी (चुमते०—हरिऔध, १४)

(समा० मुहा०—बात से टल जाना)

### बात से बात निकलना

एक सी बात के विलसिले में किसी दूसरी बात का प्राना। प्रयोग—बात निकलती चली गई (ब्रह्म०—दे० स०, १३१)

### बात हवा में उछलना

(१) चारों ओर फैल जाना, चर्चा होनी। प्रयोग—पाकिस्तान बनने की बात बार-बार हवा में उछलनी (कठ०—दे० स०, १७४)

(२) बात का एकदम समाप्त हो जाना।

(समा० मुहा०—बात हवा में उड़ जाना)

### बात हारना

वचन देना। प्रयोग—लेकिन हमारे साथ के लिए तुम बात हार चुकी हो (चोटी०—निराला, १३५); जानशंकर से बात हार चुकी हूँ (प्रेमा०—प्रेमचंद, ३१५)

### बातचीत लगना या होना

शादी का न होना या चर्चा होनी। प्रयोग—हां यह तो बताओ, लड़की का विवाह कब करोगे? कहीं बातचीत लगी है? (मिखा०—कौशिक, २१८)

### बातें भाड़ना

बातें करना या किये जाना। प्रयोग—घात तो बड़ी बातें भाड़ रहे हो (रेशमी०—राम०वर्मा, १६७)



### बातें तोड़ना-मरोड़ना

बातों को कुछ का कुछ रूप देना, बिगाड़ना। प्रयोग—तोड़ कर भी मरोड़ कर बातें जाति का क्यों गला मरोड़ें हम (चुमते०—हरिऔध, २०)

### बातें बनाना

(१) भूठ बोलना, बहाना करना। प्रयोग—घाट बाट औषट जमुना तट, बातें कहल बनाई (सू० सा०—सूर, २०८०); कहहि झुठि फुरि बात बनाई। ते प्रिय तुम्हहि करुह मै माई (राम० (अ)—तुलसी, ३८६); भोर ही आय बनाय के बातन चातुर हूँ बिगती बहु कीजे (मति० मक०—मतिराम, १०९); चल बहुत बातें न बना (भा० ग्र० (१)—भारतेन्दु, ९); लाला बजकिशोर बातें बनाने में बड़ होशियार है (परीक्षा०—श्री० दास, ५३); मैं बातों का बनाना बाज इस साल से देण रहा हूँ (लिली—निराला, १४); तुम बड़े चकमेबाज हो, बातें बनाकर काम निकालना चाहते हो (मान० (४)—प्रेमचंद, २८५)

(२) यों ही कुछ कह देना। प्रयोग—राधीजू श्री जानकी-लोचन मिलिबे को मोद कहिबे को जोगु न, मैं बातें सी बनाई है (गीता०(बाल)—तुलसी, ७१); सझाराज, बहुत बातें बनाकर कहीं उल्टे धरे से न मूढ़ लेना (गवस—प्रेमचंद, ५८)

(३) केवल बातें बहुत सी करनी, पर काम न करना। प्रयोग—कल तक हम बातें बनाकर काम चला सकते थे, घाज नहीं चला सकते (अशोक०—ह० प्र० द्वि०, १५२)

(४) खुशामद करनी।

### बातें मारना

बीग हाँकनी। प्रयोग—उस दृष्टि में वह भाव था, जो एक बुद्धिमान आदमी की दृष्टि में उस समय होता है, जब वह एक मूर्ख आदमी को बड़-बड़ कर बातें मारते हुए देखता है (चित्र०—कौशिक, ८०)

### बातों में आना

किसी के कहने पर विश्वास कर लेना। प्रयोग—इसलिए मैं कहता हूँ कि दूसरे की बातों में आकर अपना कर्तव्य भूलना बड़ी भूल की बात है (परीक्षा०—श्री० दास, ३५); वे कभी बात में नहीं आते लग गई है जिन्हें कि सच्ची धुन (चुमते०—हरिऔध, १०); लेकिन मैं इनकी बातों में आने-वाला नहीं हूँ (रंग० (१)—प्रेमचंद, १२६)

### बातों में उड़ जाना

बातों द्वारा फुललाया जाना। प्रयोग—बातनि ही उड़ि जाहि घोर ज्यों, त्यों नाही हम काँची (सू० सा०—सूर, ४३०४)

### बातों में पड़ना

किसी के कहने पर विश्वास कर लेना। प्रयोग—आयें तो बौद्ध भिक्षुओं की बातों में सबी नहीं पड़े ? (चित्र०—मग० वर्मा, १५१)

(२) किसी बात से सम्पत्ति होना या हस्त जैप करना।

### बातों में फँसाना

(१) बात में लगाए रखना। प्रयोग—जो महाशय मुझे बातों में फँसाए हुए थे, उखल कर कई कदम पीछे हट गये (सिद्ध०—ल० मिश्र, १६५)

(२) बातों द्वारा बहकाना। प्रयोग—नेह फन्दे में फँसाते क्यों नहीं फल मिलेगा कौन बातों में फँसा (बोल०—हरिऔध, १११)

### बातों में लगाना

बातों में लीन रखना। प्रयोग—बातनि जाय लगाइ लई, रस ही रस में मन हाथ के लीनो (मति० मक०—मतिराम, १८०)

### बातों में लाना

(१) बातों में लीन रखना। प्रयोग—बातनि ही सुत लाइ लियो। तब लौ मधि दधि जननि जसोदा माखन करि हरि-हाथ दियो (सू० सा०—सूर, ७८६)

(२) बात में दूर करवाना।

### बादल खुलना

बदली हटनी। प्रयोग—दूसरे दिन बादल जरा खुला (झांसी०—वृ० वर्मा, २७८)

### बादल फटना

मेघों का छितर-बितर होना। प्रयोग—बादल अब फट गये थे और सूर्य भगवान रह-रहकर अपने दर्शन दे देते थे (भुले०—मग० वर्मा, २३९)

### बातें बनाना

वेश धारण करना। प्रयोग—बहुत जतन करि बाँक बाँना, लौज मिलाव जोव तहाँ ठाना (कवीर ग्रंथा०—कवीर, २४१)



### बाबा पहन लेना

(१) युद्ध के लिए प्रस्तुत होना। प्रयोग—“हरिचंद”  
सौ भयो सामना नीके जुगप्रो बाबी (भा० प्र० (२)—मार-  
तेन्दु, ५५०)

(२) रूप धारण कर लेना।

### बाप के जाण होना

असली होना, एक वसम के रूप में प्रयुक्त। प्रयोग—  
मारो गुलवा गाल तब बाबा की जाई (सू० सा० परि० (१)  
—सूर, ३५)

### बाप दादा का नाम डूबना या डुबाना,—मिटना या मिटाना

पूर्वजों की प्रतिष्ठा नष्ट होनी या करनी। प्रयोग—वर  
बेचू तो यहाँ लेनेवाला ही कौन है? और फिर बाप दादा  
का नाम डूबता है (मान० (८)—प्रेमचंद, ६८); गांव में  
खबर उड़ी—नरैन्द्रबाबू ने आचार्य पर कसर कस ली—  
बाप-दादे का नाम मिटा दिया (चतुर्थी—निराला, ६५)

### बाप-दादा का नाम मिटना या मिटाना

दे० बाप-दादा का नाम डूबना या डुबाना

### बाप दादा की हो जाना

किसी के अधिकार में हो जाना। प्रयोग—जिनमें जिन  
काम के वास्ते जितना रुपया पहले ले लिया वह उसके  
बाप दादे का हो चुका (परिभा०—श्री० दास, ९७)

### बाप बनना

स्वार्थवश किसी की इज्जत या खुशामद करनी। प्रयोग—  
अभी देख लीजिए, पंजाबी रिफ्यूजियों पर जुल्म हुआ  
तो वे लोग गांधी जी के सामने मुस्ता दिखाते थे और इन  
मौलानाओं पर पड़ी तो आकर गांधी जी को बाप बना  
लिया (झूठा० (२)—यशपाल, २१५)

### बाबा आदम के वक्त को

बहुत पुरानी वस्तु या बहुत बूढ़े (पुराने लाल बाले)।  
प्रयोग—इसका एक मुख्य कारण हमारे मन में यह भी  
लटक रहा है कि प्रायः जातिपाति और विरादराने के  
माभिलों में खूबसूरत दिमागवाले बाबा आदम के परदादा  
बुढ़ा ही की प्रधानता रहती है (मट्ट नि०—बा० मट्ट,  
४७)

### बाबा आदम निराला होना

सारा रवैया अलग होना। प्रयोग—हिन्दीवालों का बाबा  
आदम ही निराला है। साहित्य सेवियों की ऊट कैसे हो।  
(पट्टम० के पत्र—पट्टम० शर्मा, १७९)

### बायन देना

छेड़-छाड़ करनी। प्रयोग—भले भवन जब बायन दीन्हा  
पावटूगे फल आपन कीन्हा (राम० (बाल)—तुलसी, १४९)

### बायें देना

बचा जाना, कतरा कर निकल जाना। प्रयोग—बायें  
दियो विभव कुरुपति को भोजन जाय विदुर पर कीन्हों  
(तुलसी—हि० श० सा०)

### बायें हाथ का खेल होना

बहुत घासान काम होना। प्रयोग—एक एक को पांच-  
पांच साल के लिए भेजवा दूँ। यह मेरे बायें हाथ का खेल  
है (गोदान—प्रेमचंद, ११८); दीवान जी ने उसाह से हाथ  
फेंकते हुए कहा—यहतो मेरे बायें हाथ का खेल है (परसी०  
—रेणु, ३१६); मुठ सांसारिक भुंगार को भी परमार्थ प्रेम  
बतना कर टट्टी की जाड़ में शिकार खेलना मूकियों के  
बाएँ हाथ का खेल है (पट्टम पराग—पट्टम० शर्मा, २०३);  
संतानें बांझों को देना बायें हाथ का उनका खेल (नूरु०—  
भक्त, ७८); अपने दोष को छिपाने के लिये दूसरों पर  
दोषारोपण करना उनके बायें हाथ का खेल है (मेरे०—  
गुलाब०, ९८)

(समा० मुह०—बायें हाथ का काम)

### बायें होना

चिड़ होना, अपमान होना। प्रयोग—नाम लेत दाहिनी  
होत मन, बाम बिधाता बाम को (बिनय०—तुलसी, १५६)

### बारह-सड़ी पढ़ाना

प्रारंभिक शिक्षा देनी। प्रयोग—सूर सकल पठदरसन वै,  
हो बारहसड़ी पढ़ाऊँ (सू० सा०—सूर, ४७४४)

### बारह बाट करना,—जाना या होना

खिल-भिन्न करना या नष्ट कर देना या होना। प्रयोग  
—मोहि लगि यह कुठाट तेहि ठाटा पालेसि सब जगु बारह  
बाटा (राम० (अ)—तुलसी, ५७२); राज करत बिनु काब  
ही ठट्टहि जे कुर कुठाट तुलसी ते कुरराज ज्यों, जैह बारह  
बाट (दोहा०—तुलसी, ४१७)



बारह बाट जाना या होना

बारह बाट जाना या होना

दे० बारह बाट करना

बारह-बानी होना

कलक रहित होना। प्रयोग—सकल दोर मंह चुनि-चुनि बानी। तेन्ह मंह दीपक बारह बानी (पद०—जायसी, २१२५); हरि के चरित मई उहि सीले, दोउ है वे बारह बानी (अंग०) (सु० सा०—सूर, २३६३)

बारात ठहरना

भीड़-भाड़ होनी। प्रयोग—नायकराम के बरामदे में तो नित्य एक बारात ठहरती थी (रंग० (२)—प्रेमचंद, १५९)

बारीक निगाह होना

सूक्ष्म और ऐसी दृष्टि होनी। प्रयोग—उसे समझना जरा बारीक बुद्धि मांगता है (अजय०—देवराज, ८६)। निगाह ऐसी बारीक पार्य थी कि सूरत देखते ही आदमी पहचान जाते थे (मान० (३)—प्रेमचंद, १३१)

बारीक बात

सूक्ष्म ही एकड़ में न आनेवाली बात। प्रयोग—आप ऊपर के वाक्यों में एक बहुत ही बारीक बात कहते हैं (गु० नि०—बा०मु०गु०, ३४३)

बारीकियों में उतरना

सूक्ष्म अध्ययन करना। प्रयोग—रागसंगिनिधों की बारीकियों में उतरने के लिए आज उसी ने पहल की थी (दूधगाछ—दे० स०, २२५); न्यायालय कानून की बारीकियों में नहीं पड़ता (गदन—प्रेमचंद, ३२१)

बारीको से

सूक्ष्मता से, विस्तृत ध्योरे के साथ। प्रयोग—ब्रिटिश सरकार के शासन की गति-विधि में घफसरो का जिले भर में दौरा करने, प्रत्येक दफ्तर के नाम को बारीकी के साथ देखने-भालने, पानों, तहसीलों और जेलखानों का निरीक्षण करने का महत्वपूर्ण स्थान था (आसी०—पृ०, तर्मा, १९३)

बाल कटाना

साधु हो जाना। प्रयोग—जोन होती रहे कपट की काट क्या रहे और क्या कटाये बाल (बोल०—हरिऔध, १)

बाल की खाल काटना—निकालना

वर्ण की बहुत खानचीन करनी। प्रयोग—भूकुरी-फो छंद-पंक्ति के सहस्रों सूक्ष्म वर्ण हैं पर उन वर्णों को बिना बाल की खाल निकालने बालों जवान् महावीर बुद्धिवालों के कोई समझ नहीं सकता (प्र० पौ०—प्र० ना० नि०, ५७); कन्नी, तू बचपन में भी बहुत प्रश्न पूछती थी, बाल की खाल निकालती रहती थी (झूठा० (२)—यशपाल, ६३२); बहूजी, बाल की खाल निकाला करती थी, यह बेनारे कुछ नहीं बोलते (गदन—प्रेमचंद, २००); बाल की खाल काट खल पन कर खल किसे बेतरह नहीं खलते (चुमते०—हरि-औध, १२९)

(समा० मुहा०—बाल की खाल खींचना)

बाल की खाल निकालना

दे० बाल की खाल काटना

बाल की नोक बराबर, बाल बराबर

तनिक भी। प्रयोग—हम इस साले बी ए, बी ए की परवाह बाल बराबर नहीं करते (झूठा० (१)—यशपाल, ५३); मुझे चरके धन्धेकी रती भर परवाह नहीं—बाल की नोक बराबर भी नहीं (मान० (२)—प्रेमचंद, ३२०); मैं कह सकता हूँ, उसने अपने मन में बाल बराबर भी धंख के लिए दूरी नहीं घाने दी (दूधगाछ—दे० स०, ३५६); निकल भागने को जी चाहा, परन्तु वहाँ बाल बराबर भी साँस न थी (आसी०—पृ० तर्मा, ३८१)

बाल खिचड़ी होना

(१) बालों का काला सफेद होना। प्रयोग—हे उस नहीं ऐसी जवादा, गो खिचड़ी बाल पकाये है (नूर०—भक्त, १०६); सिर और दाढ़ी के बाल खिचड़ी हो गए थे (रंग० (१)—प्रेमचंद, ११)

(२) सफेद-उस होना।

बाल चुनवाना

दुर्गति करवाना। प्रयोग—चुनने को उस बिचारी का लहू बाल चुनवाना न तुमको चाहिए (बोल०—हरिऔध, ४)

बाल नोचना

तंग करना। प्रयोग—यों मैं किसी गरीब को सताना



नहीं चाहता, लेकिन वह भी नहीं देना सकता कि वह भले धारमियों के बाल मोचे (रंग० (२)—प्रेमचंद, ११३:११४)

### बाल पकना

बढ़ापे के कारण बाल सफेद होना । प्रयोग—केस पके तन पक्की रोग में मनुष्यों तबहु न पाका (भा० ग्रं० (२)—भारतेन्दु, ६४९); बाल ही है पका नहीं मेरा देखते देखते पका दिल भी (चुमते०—हरिऔध, ६६)

### बाल बराबर

#### दे० बाल की नोक बराबर

#### बाल बाँका न कर सकना या न होना

तनिक भी अनिष्ट न कर सकना या न होना । प्रयोग—सूर केस नहीं टारि सकें कोउ, दांत पीसि जी जग मरें (सू० सा०—सूर, २३४); होइ न बाँको बार भगत को, ओ कोउ कोटि उपाय करै (विनय०—तुलसी, १३७); रानी केतकी का एक बाल भी बाँका नहीं हुआ (इंशा०—इंशा०, ११४); किन्तु चारुण्य ने × × कह दिया था कि राक्षस का किसी प्रकार बाल बाँका न होने पावे (राधा० प्रथा०—राधा० दास, २६७); अगर मेरे बेटे का बाल भी बाँका हुआ तो घर में आग लगा दूँगी (गोदान—प्रेमचंद, १११); मैं आऊँगा कुछ दिन गये बाल होगा न बाँका (प्रिय०—हरिऔध, ५१); तुम्हारे बिल्लीने कितना ही जोर लगाया, मेरे बिमटे का बाल भी बाँका नहीं कर सकत (मान० (१)—प्रेमचंद, ३२); है कौन ऐसा जो तुम्हारा बाल भी बाँका करे (जय०—गुप्त, ४२)

### बाल-बाल ऋणी होना

बहुत ऋणी होना । प्रयोग—छः महीने के बाद मुभागी चारपाई से उठी, तो उसका बाल-बाल सेठ साहब का ऋणी था (सु० सु०—सुदर्शन, ५३)

### बाल-बाल बचना

किसी दुर्घटना से बहुत सूक्ष्म अंतर से बच पाना । प्रयोग—महाराज, नरव नष्ट होने से बाल बाल ही बचा है (सुग०—वृ० वर्मा, २९३); इसके दूसरे या तीसरे रोज पड़ा कि पाल गिरफ्तार होने से बाल बाल बच निकला है (कल्याणी—जैनेन्द्र, ८५); वीरपाल बाल-बाल बच गया (रंग० (२)—प्रेमचंद, ६०-६१)

### बाल-बाल बिन जाना

खूब दुर्गति होनी । प्रयोग—जब कि अन्धेर कर रहे हो सिर ! तब न क्यों बाल बाल बिन जाते बोल०—हरिऔध, १९)

### बाल भर

तनिक ता । प्रयोग—बिन गये बाल बाल भी न हटें (चुमते०—हरिऔध, ३०)

### बाल भी न दुखना

तनिक भी दुःख कष्ट न होना । प्रयोग—साईं और पीर की दुआ से तेरा बाल न दुखे (ज्ञान०—यशपाल, १०१-१०२)

### बाल सन होना

बाल सफेद हो जाना, बढ़ापा जाना । प्रयोग—बुढ़िया के बाल सन हो गये थे (कर्म०—प्रेमचंद, ३४)

### बाल सफेद करना

धनुभव प्राप्त करना । प्रयोग—मैंने भी इसी दुनिया में बाल सफेद किये हैं (कर्म०—प्रेमचंद, ३४६)

### बाल सफेद होना

(१) बढ़ापा जाना । प्रयोग—तीनों पन ऐसे ही गोए, केस भए सिर सेत (सू० सा०—सूर, २९६); थोचले करते रहोगे जब तक सिर ! तुम्हारे बाल उगले हो चले (चोखे०—हरिऔध, ७४)

(२) उम्र बीतनी । प्रयोग—वहीं मैं पैदा हुआ, वहीं मेरे बाल सफेद हुए (कठ०—दे० स०, २३); हिंदी की सेवा में ही उनके बाल सफेद हुए थे (पद्मपराग—पद्म० शर्मा, ३३६)

### बालिशत भर का

छोटा । प्रयोग—यह सब ताऊजी के दुलार का फल है कि बालिशत भर का लड़का मुझे धमकाता है (चित्र०—कौशिक, ५०)

### बालू का घरोँदा

(१) झिन्न-झिन्न हो जानेवाला । प्रयोग—पवि को पहार कियो क्याल ही कपाल राम बापुरो बिभीपनू घरोँदा हुतो बालू को (कवि०—तुलसी, ११४)

(२) अस्थायी, न टिक सकनेवाला ।

### बालू की भीत

दुर्बल आधार । प्रयोग—ऐसी बालू की दीवार पर जीवन



वालू में से तेल निकालना

का आधार नहीं रख सकती थी (गोदान—प्रेमचंद, ५१)

**वालू में से तेल निकालना**

जहाँ या जिससे कुछ न मिलने की संभावना हो, वहाँ भी पाने का प्रयत्न करना। प्रयोग—आप अच्छा समझिए या बुरा मेरे अंदर एक गुण है, जिसे आप वालू में से तेल निकालना समझ सकते हैं (अशोक—८० प्र० द्वि०, ३६)

**बावन तोले पाव रत्ती**

जो हर तरह से ठीक हो, बिल्कुल दुस्त हो। प्रयोग—बात 'घग्गी चोखी' बावन तोले पाव रत्ती—पानी बिल्कुल सही और सच है (पद्म० के पत्र—पद्म० शर्मा, ११०)

**बावन हाथ होना**

बहुत साधन-सम्पन्न होना। प्रयोग—बर्मादार के बावन हाथ होते हैं (प्रेमा०—प्रेमचंद, १७७)

**बावले की बड़**

पागल आदमी की व्यर्थ की बातें। प्रयोग—आजकल "बिहारी सतसई" की टीका में लगा है। टीका का कुछ नमूना भेजता हूँ। देखिए कुछ है भी या निरी बावले की बड़ हो है (पद्म० के पत्र—पद्म० शर्मा, २३०)

**बासा देना**

(१) ठहरने के लिये स्थान बतलाना। प्रयोग—गुदर सदन मुखद सब काला। तहाँ बासु से दीन्ह भुआला (राम० (बाल)—तुलसी, २२७)

(२) रखना, प्रतिपालन करना। प्रयोग—बास दिव्य को यहै फल है घनआनंद जो क्षिन दोष न लागे (घन० कवित्त—घना०, २००)

**बासी कढ़ी में उवाल आना**

जोस ठंडा पड़ने के बहुत समय बाद पुनः जोस आना। प्रयोग—सदियों बाद यह बासी कढ़ी में उवाल आया और राज की चिनगारी चमकी (पद्म० के पत्र—पद्म० शर्मा, ३-४)

**बासी भाड़ू फेरना**

बहुत प्रपमान करना। प्रयोग—रोज ही बड़ी बाड़ू मणों मेरी नई जवानी पर बासी भाड़ू फेरती है (मंगा०—उग्र, ६६-६७)

बासी भात में भी खुदा मियाँ का हिस्सा होना तुच्छ या सामान्य वस्तु भी भगवान की कृपा से मिली-मिल मानना। प्रयोग—ऐसे आतंकमय, दण्डमय जीवन के लिए मैं ईश्वरका एहसान नहीं लेना चाहता। बासी भात में खुदा के सांभे की जरूरत नहीं (मान० (२)—प्रेमचंद, १९९)

**बाहर की हवा लगना**

(१) बाहर के वातावरण-स्थिति का कुप्रभाव पड़ना। प्रयोग—तुम्हें बाहर की हवा नहीं लगी, लग जाती तो तुम भी मेरे ही समान सोचते (ब्रह्म०—दे० स०, ७७)

(२) घर से बाहर अच्छा लगना।

**बाहर न जाना या न होना**

अंतर न होना, घलम न होना। प्रयोग—हम भले ही प्रिया जी की रिस सहेंगी, पर तोसुं हम सब काह बातों बाहर नहीं (मा० प्र० (१)—भारतेन्दु, ४५०); मैं आप लोगों से बाहर थोड़े ही हूँ (मान० (४)—प्रेमचंद, १५९); हिंसात्मक को लगा कि यह इस नारी से बाहर नहीं है कि वह इसी समय उस पर दो एक बातें कस दे (सुनीता—जैनेन्द्र, ३५); बैसे आपकी जैसी इच्छा हो, मैं उससे बाहर नहीं हूँ परन्तु मेरी इच्छा तो अभी विवाह करने की नहीं है (मिस०—कौशिक, १५९)

**बाहरी तरफ**

(१) शहर से बाहर। प्रयोग—ऐम ही खूब भांग पीना, भ्रानाटे इसके पर सवार होकर बाहरी ओर जाना X X मयस्सर हो तो क्या बात है (मा० प्र० (३)—भारतेन्द्र, ९२०); एवका पर चढ़ बाहरी तरफ जाने और बूटी छानने ही में दुनिया का मजा है (राधा० ग्रंथा०—राधा० दास, ९५)

(२) शंका-निवारण के लिए जाना।

**बाहु-बल तौलना**

शक्ति का अंदाज करना। प्रयोग—मनहुं तोलि निज बाहुबल, चला बहुत मुख पाद (राम० (बाल)—तुलसी, १८८)

**बिकला**

मुलाम होना। प्रयोग—भोजे घनआनंद सुआन के गिनार दुग, नैमिक निहारें जिनकी निकाई पै बिके (घन० कवित्त



बिकी हुई

५२९

बिजली टूटना

—घना०, १३६): जाहि चाहि उहिम कियो, गने न निमि  
मग डाभ कन्त बिकान्यो अनत सो, रह्यो अजस को लाभ  
(मति० मक०—मतिराम, २०४)

बिकी हुई

आत्म-विस्मृत। प्रयोग—बीधी सी, बंधी सी, बिध बड़ी सी,  
बिमोहत सी, बंठी वह बकत, बिलोकत बिकानी सी  
(शब्द०—देव, ३२)

बिखरा हुआ मन

अस्थिर-अशांत मन, अस्पष्ट मन। प्रयोग—इस समय  
उन्से मिलने में उसके बिखरे हुए मन को एकाग्र होने के  
लिए काफी जोर लगाना पड़ा (शेखर (२)—अज्ञेय, १०३);  
इस एकांत में अपने बिखरे हुए मन को संभाल लू (ध्रुव०,  
—प्रसाद, ३६)

बिगड़ जाना

(१) प्राकृतिक स्थिति खराब हो जानी। प्रयोग—कितु  
सीधा और बड़ा मल्लाह उस बिगड़े घर की बड़ाई में और  
कहता ही क्या (तिली—प्रसाद, ५१)

(२) चरित्र-व्यूत होना। प्रयोग—महावृष्टि चलि फूटि  
किआरी। जिमि सुतंत्र भए बिगरीहि नारी (राम० (कि)—  
तुलसी, ७७३)

बिगड़ी बनना या बनाना

बुरी स्थिति का संभल जाना या संभाल लेना। प्रयोग—  
पतित उधारन विरद जानि के, बिगरी लेहु संवारी  
(सू० सा०—सूर, ११८); उम्र-भर दुनिया को रिझाया,  
सब तो बस राम को रिझाने में लगी हूँ, वे रीझ जाए  
तो मेरी बिगड़ी बन जाए (ये कौडे०—अ० ना०,  
१८२)

बिगड़े-दिल होना

बात-बात में नाराज हो जानेवाला व्यक्ति। प्रयोग—  
ठाकुर दीन बिगड़े-दिल थे ही, साक-साक कह दिया (रंग०  
(२)—प्रेमचंद, ३१८)

बिगाड़ का बीज बोना

लड़ाई, वैमनस्य का मूलपात करना। प्रयोग—बीज जब  
ये बिगाड़ का बोते किस तरह प्यार बेलि उग पाती (चुमते०  
—हरिऔध, ३४)

बिचक जाना

भड़क जाना। प्रयोग—ऐन मोके पर सबसे बड़ी, जिसका  
नाम अम्बा है, बिचक गई (समा०—उग्र, ५२)  
(समा० मुहा०—बिचक जाना)

बिच्छी चढ़ना

(१) बिच्छी के जहर का असर होना। प्रयोग—छत्र  
बड़ी जनु सब तन बीच्छी (साम० (अ)—तुलसी, ४१५)  
(२) बहुत व्याकुल होना।

बिछा होना

बहुत अधिक होना। प्रयोग—वहाँ जात-यात पचासों  
कायतकार और कई जमौदार बिछे पड़े थे (बल०—नागा०,  
२६)

बिछोह पड़ना

वियोग होना। प्रयोग—एक दिन ऐसा होइया, सबगु पड़े  
बिछोह (कबीर ग्रंथा०—कबीर, २१)

बिजली गिरना या,—टूटना

(१) मुसीबत पड़नी, घनिष्ट होना। प्रयोग—“भारती  
दय” गया और हमेशा के लिए गया। गुरुद्वार के प्राह के  
मुँह में जाक पड़े। गुरुद्वार के दीर्घकाय देवता पर बिजली  
गिरे (पद्म० के पत्र—पद्म० शर्मा, २३७); कोई दिन नागा  
नहीं जाता कि एक-न-एक घर पर बिजली न गिरती हो  
(प्रेमा०—प्रेमचंद, १६५)

(२) अत्यंत अप्रत्याशित घटना के कारण क्लिप्तचित्त विमूढ़  
हो जाना। प्रयोग—यह क्या हुआ अचानक मुझ पर  
बिजली टूट गिरी जो (नुर०—भक्त, ६२); अचरकान्त पर  
बिजली सी गिर पड़ी (कर्म०—प्रेमचंद, १०९)

(समा० मुहा०—बिजली पड़ना)

बिजली गिराना

कष्ट देना। प्रयोग—महाविद्यालय के मुख्याध्यापक जी  
का देहान्त हो गया—इस तड़ितु समाचार ने दिल पर  
बिजली गिरा दी (पद्मपराग—पद्म० शर्मा, ११२); खोज  
बेवस और बेवों पर अबस हम गिरा दें भले ही बिजलियाँ  
(चुमते०—हरिऔध, १५१)

बिजली टूटना

दे० बिजली गिरना



बिजली बन जाना

५३०

बिना नाक का करना या होना

**बिजली बन जाना**

अत्यंत चपल एवं गतिमय होना । प्रयोग—अंतिम नृत्य में तो वह बिजली बन गई (सुश्रुत०—अ० मा०, ७६)

**बिजली मार जाना**

(१) किसी आकस्मिक घटना के कारण हतबुद्धि हो जाना । प्रयोग—राजी मारा बीजुरी बिसंभर कलु न संभार (पट०—आयसी, ३८६)

(२) आसमान से बिजली गिरने के कारण फसल या वृक्षों का जल जाना ।

**बिना कण के भूसा कूटना,—फटकना**

बिना लाभ का काम करना । प्रयोग—तो कहा बीज-जल-बल कीन्ह, बिनु बन तुव कौ कूटै (सु० सा०—सुर, ३६२); भूडी बात तुमो-नी बिन बन, फटकत हाथ न धावै (सु० सा०—सुर, ४५१६)

**बिना कण के भूसा फटकना**

दे० बिना कण के भूसा कूटना

**बिना कान पूछ हिलावे**

बिना किसी प्रतिवाद के । प्रयोग—तो फिर क्यों बिना कान-पूछ हिलाए चले आए ? (रंग० (३)—प्रेमचंद, ८३)

**बिना गुठली का मेघा**

ऐसा काम या चीज जिसमें लाभ हो लाभ हो । प्रयोग—X X आप बीमा का रोजगार क्यों नहीं करते, यह बिना गुठली का मेघा है (राधा० प्रश्ना०—राधा० दास, ३२१)

**बिना छांह के**

बिना निषात-न्याय के । प्रयोग—कमाई में तुम्हारे शक नहीं, मगर कुछ बढ़ाया, कुछ जलाया, और अब मुझे बिना छांह के छोड़े चले जाते हो, बैठने का ठिकाना भी नहीं (रंग० (२)—प्रेमचंद, ३८७)

**बिना तप के काशी पाना**

बिना प्रयत्न के बड़ा लाभ होना । प्रयोग—तुम ही मन में गुनि धो देणो, बिनु तप पावो काशी (सु० सा०—सुर, ४०६४)

**बिना दाम के नौकर,—मोल का चेरा,—मोल के गुलाम**

हर समय सेवा में प्रस्तुत; पूर्ण अनुगत । प्रयोग—सूर-दास प्रभु के बस ऐसे, दासी सकल भई बिनु मोल (सु०

सा०—सुर, १२४८); भारत ही कित सुदृढ़ नाथ बिनु मोल की दासी (नंद० प्रश्ना०—नंद, १४); सबी, यह कहा कहै है हम तो याको बेम देलि बिन मोल की दासी होर रही है (मा० प्र० (१)—भारतेन्दु, ४३४); जिसकी ओर उसकी कृपा-दृष्टि हो जाती, वह अपना सही भाग्य समझता, सर्व के लिए उसका बेदाम का गुलाम बन जाता (मान० (८)—प्रेमचंद, ५१); स्वामा कहलाकर, हो बैठो बिना दाम की चेरी (मुकुल—सु० कु० चौ०, ३०)

**बिना दाम के खरीद लेना,—गुलाम बनाना,—घश में करना**

पूरा अनुगत बनाना । प्रयोग—घति जाघोन भई बज बनित, बम कीन्हो बिनु मोल (सु० सा०—सुर, ३४९३); रोमनि सै भिजयो हियरा, पनआनंद स्याम सुवान कृपा को मोल निगी बिन मोल, जमोल है प्रेम पदारप-दान कृपा को (घन० कवित्त—घना०, १७४); आज अपनी जरा सी मेहर की निगाह से बादशाहत को बिना कीमत खरीद सकती हो (राधा० प्रश्ना०—राधा० दास, ६९०); आपकी ये ही बातें तो लोगों को बेगम गुलाम बना लेती हैं (परीक्षा०—ब्र० दास, २१); सब के सब रमा के बिना दामों के गुलाम से (गवन—प्रेमचंद, ४४)

**बिना दाम के गुलाम बनाना**

दे० बिना दाम के खरीद लेना

**बिना दाम के विक्रि जाना**

पूर्ण अनुगत होना । प्रयोग—धन्य-धन्य दुइ नेम तुम्हारी, बिनु दामनि मो हाथ बिकानो (सु० सा०—सुर, १६५२); कीजे दास दासतुलसी घब, कृपाविधु बिनु मोल बिकाऊ (तिनय०—मुलसी, १५३); को बिन मोल बिकात नहीं, 'मतिराम' कहै मुनकान मिठाई (मति० मक०—मतिराम, ९१); मगर हम विक्रि गये बेमोल उवकी एक छाया पर (चक्र०—दिनकर, ३४२)

**बिना दाम के घश में करना**

दे० बिना दाम के खरीद लेना

**बिना नाक का करना या होना**

अवमानित या प्रतिष्ठाहीन करना या होना । प्रयोग—बेहि पिनाक बिनु नाक किए नृप, नवहि विषाद बढ़ायो



(गीता० (वा०)—तुलसी, १३); दूत विनाक को मनाऊ काम राम से, ते नाक बिनु भए भूगुनायकु फलक से (कवि०—तुलसी, ५२)

### विना पंख के उड़ना

असंभव काम करना चाहना; विना साधन के कोई काम करना। प्रयोग—नारद कहा सत्य सोइ जाना, बिनु पंखहु हम बहहि उड़ाना (राम० (वा०)—तुलसी, ५९)

### विना पानी की करना

वेष्टित करना। प्रयोग—मेरी बात गई इन घावों, घर्षित करति बिनु पानी (सु० सा०—सूर, २३५५)

### विना पानी की मछली

बहुत व्याकुल। प्रयोग—विना मलिन की अपरी यह होगी न क्यों (वेदेही०—हरिऔध, १०७)

### विना बात की बात

अत्यंत तुच्छ या महत्वहीन बात। प्रयोग—शुरू में मेरी माता पानी बड़ी मोमी राजेश्वरी बाई मुझ से एकबार विना बात की बात पर इतनी तन गई, इतनी तन गई कि मेरा जीना दूधर हो गया (ये कोठे—अ० ना०, १५०)

### विना भीतके चित्र बनाना

असंभव काम करने की चेष्टा करनी। प्रयोग—विना भीति तम चित्र निवृत्ति हो, सो कैसे निवृद्धे री (सु० सा०—सूर, १३९१)

### विना मूँछ का आदमी

कायर। प्रयोग—धमौन लाकर सेत को मेंड का फैसला करनेवाले को सभी मन हो मन, विना मूँछ का आदमी समझते हैं (परली०—रैणु, ६५)

### विना मोल का जेरा

दे० विना दाम के नौकर

### विना मोल के गुलाम

दे० विना दाम के नौकर

### विना मौत मरना

अपनी गलती बिना ही बुरा फल मिलना या दुख पाना। प्रयोग—मन भायो बियोग में आरिखो ओ तो तिहारो तो नौके जरैअमरै। ये तुम्हें मति कोऊ कही हितहीन, मु या

दुख बोध प्रमोद मरे (एन० कवित्त—एना०, ७०)

### विना सींग-पूँछ का पशु होना

मनस्य होते हुए भी मानवोचित भावनाओं से हीन होना। प्रयोग—अस प्रभु छाहि भर्जहि जेहि घाना, ते नर पशु बिनु पूँछ विषाना (राम० (सु०)—तुलसी, ५४६)

### विरादरी करना

विरादरी की दावत करना। प्रयोग—इकरम सम्भनन का सिलाय देव घोर ई जो पचास-साठ पेन्नी-पेन्नी, नाते-रिस्तेदार आवे उनके विरादरी कर दावो (मल्ले०—भग० वर्मा, १५०)

### चिल्ली के गले में घंटी बांधना

मूर्खतापूर्ण कार्य करना। प्रयोग—घड़ी तो मस्तिष्क है कि विचार के गले में घंटी कौन बांधे (मल्ले०—भग० वर्मा, २१२)

### चिल्ली के भाग्य से छींका टूटना

अचानक कोई मनोरथ पूरा हो जाना। प्रयोग—असमान ने घाप ही मेज दिया। चिल्ली के भाग्य छींका टूटा (रंग० (२)—प्रेमचंद, १२४); चिल्ली के भाग्य छींका टूटा—शुक्रवार दोपहर की डाक में लाहौर से एक भारी सिफाफा आया (ज्ञान०—राधापाल, ३३)

### चिस्मिल्ला ही गलत होना

शुक्र से ही भूल होनी। प्रयोग—बगर भी चक्का न मिला तो चिस्मिल्ला ही गलत हो जायगा (जहाज०—इ० जौशी, १६४); पहले ही दिन वह कलह धारेंच हुआ, चिस्मिल्ला गलत हुई, तो बाबे कौन जाने क्या होगा (रंग० (२)—प्रेमचंद, १०६—१०७)

### विस्तर गोल करना

बिदा होने लिए प्रस्तुत होना, चलने की तैयारी करनी। प्रयोग—एक दिन शेखर जी विस्तर गोलकर × × स्वयं-सेवकों के पहले दल के साथ कैम्प में जा पहुंचा (शेख० (२)—अज्ञेय, ३३-३४); एक घंटे में ही डाक्टर नाथू का विस्तर गोल हो गया (गोली—चतुर०, २३०); कहिए मुनीब साहब, क्या इरादे हैं? विस्तर गोल कीजिए, साहब! (कठ०—दे० स०, ५७)

(समा० मुहा०—विस्तर उठाना,—छपेटना)



### बीच करना

मध्यस्थता करनी। प्रयोग—रहा न कोई धरहरिया करे जो दुहुँ महँ बीचु (पद०—जादसी, ३६/१२); बीच करना जो आवँ कोऊ, ताकीँ सौह दिवाऊँ मूरस्याम कोरनि के राजा, बहुरि कहाँ मैं पाऊँ (सु० सा०—सुर, २३५५); ललित भूकृति तिलक भाव, विपुल अक्षर द्विज रत्नाल, हास चास तर कपोल नामिका मुहाई मधुकर जग पंकज विष मुख विलोकि नीरज पर सरल मधुप जबली मानों बीच कियो आई (तुलसी—हि० ३० सा०)

### बीच की दीवार होना

छलभाव, दूरी या मनमुटाव का कारण होना; बाधा, रुकावट होनी। प्रयोग—यह अकमरौ मेरे और उसके बीच में दीवार बन गई है (मान० (१)—प्रेमचंद, १६९)

### बीच के आदमी

(१) मध्यस्थ व्यक्ति। प्रयोग—दुनियाँ के बीच के आदमी द्वारा बात करनी होती है (मेरे०—गुलाब०, ८२)

(२) मध्य स्थिति के व्यक्ति।

### बीच खेत

खुले मैदान, सबके सामने। प्रयोग—देख लेना, बेटी होगी और बीच खेत बेटी होगी (मान० (२)—प्रेमचंद, २००)

### बीच बाजार

खुले घाम। प्रयोग—आज रँडों की बीच बाजार में फजेती हूँ गई—कलपुत्री कहीं की (सू० ना०, ३३०); जब बीच बाजार में दे-भाव की पड़ेगी तब रोएंगे (रंग० (१)—प्रेमचंद, २१९)

### बीच में आना,—पड़ना

(१) मध्यस्थ होना। प्रयोग—बीच जो परे सत्य सो भाव, बोले सत्य स्वक (सु० सा०—सुर, ४३०५)

(२) हस्तक्षेप करना। प्रयोग—देख नागरत्ना, मैं माँ बेटी के बीच नहीं आना चाहती (सुहाग०—अ० ना०, ४३)

(३) जामिन होना।

### बीच में कूदना

घनावश्यक हस्तक्षेप करना। प्रयोग—जब बीधा ने

पन्द्रह रुपए में बीड़ा कर लिया, तो वह बीच में कूदनेवाली बीध ? (गोदान—प्रेमचंद, ३१)

### बीच में डालना

किसी काम या मामले की बातचीत किसी व्यक्ति के द्वारा करवानी। प्रयोग—इन्होंने सोचा होगा कि पंडा जी को बीच में डालकर काम निकाल लेंगे (रंग० (१)—प्रेमचंद, ३५)

### बीच में दीवार खड़ी होना

(१) घापस में विरोध या वैमनस्य होना, दूरी होनी। प्रयोग—अगर यह ईश्वरीय विधान है, तो उसने हमारे और तुम्हारे बीच में यह दीवार क्यों खड़ी कर दी है ? (रंग० (२)—प्रेमचंद, १८)

(२) छलभावपूर्ण होनी।

### बीच में पड़ना

८० बीच में आना

### बीच में खोलना

दूसरों की बात के बीच में खोलना; दूसरों के झगड़े में खोलना। प्रयोग—क्यों ? वह कहेगा नहीं, तु मेरे बीच में खोलनेवाली कौन है ? (मान० (१)—प्रेमचंद, २३४)

### बीच रखना

दुराव करना, परावा समझना। प्रयोग—कीन्ह प्रीति कछु बीच न राखा लखिमन रामचरित सब भावा (राम० (क)—तुलसी, ७६०)

### बीज बोना

स्थापित करना। प्रयोग—सारा मल मानस का धो लो। बीज बिरद का उर में बो लो (मर्म०—हरिऔध, १६)

### बीजारोपण करना या होना

प्रारंभ करना या होना। प्रयोग—वास्तव में उसा समय से हिंदुस्तानियों में कुछ ऐव का बीजारोपण हुआ (राधा० प्र०—राधा० दास, ३८६)

### बीड़ा उठाना,—लेना

कोई काम करने का सकल्प या भार लेना, उद्यत होना। प्रयोग—एँसे कह कृष्ण बलदेव पर बीड़ा उठाव कंस को प्रनाम कर स्वोमाधुर बुँदावन को चला (प्रेम सा०—ल० ला०, ९७); मैं इन पर बीड़ा उठाती हूँ (बंशा०—बंशा०,



## बीड़ा देना

५३३

बुझती आग में धी देना

११३); मेरे पति ने उस पतिना को मारने का बीड़ा उठाया (परली०—रेणु, ४१६); वह नहीं समझते कि किसी ने उनकी जिन्दगी भर का बीड़ा चोड़े हो लिया है (मान० (१)—प्रेमचंद, १३८); मानादहन ने महादहनवाक को हराने और निन्दित करने का बीड़ा उठा लिया (सुहाग०—अ० ना०, २९); प्रत्येक उम्मेदवार अपनी-अपनी डोल गोट रहा था मानों संसार के कल्याण का तमी ने बीड़ा उठाया है (प्रेमा०—प्रेमचंद, ४३४)

## बीड़ा देना

किसी कार्य को करने का दायित्व देना। प्रयोग—किरिया करसि त करसि समीरा। नाहित हमहि देहि हंसि बीरा (पद०—जायसी, ४२/१४)

(२) बयाना देना, साई देना।

## बीड़ा लेना

दे० बीड़ा उठाना

## बीतना

सहना, घटित होना। प्रयोग—प्रेम कथा सोई पे जाने, जापे बीती होई (सु० सा०—सूर, ४१६०)

## बीस बिस्वा,—बिस्सा

निरवय या निस्संदेह, पूर्ण रूप से। प्रयोग—मानु तिता बन्धु हित आपनी परम हित, मोको बीसह के ईस अनुकूल आजू भी (गीता० (अ)—तुलसी, ३३); कान्हू बूरी जिन मानो तिहारो बिलोकनि में बिस बीस बिसे है (केशव० (१)—केशव, २३); ऐसी परबीनि कौ कियो जो यह पुरुष तौ, बीस बिसं जानी महामूरख बिधाता है (जग०—पट्टमाकर, ४५); बीस बीस मंजुल मरीचि सनि फैंको कवि केलि सम उपमा लसति बिसे बीस की (घन० कवित्त—घना०, १४); बाजार चौक से होते हुए मेरे घर तक जाना। बीस बिस्वै वह तुम्हें घर ही पर मिलेंगे (रंग० (२)—प्रेमचंद, १४८)

## बीस बिस्सा

दे० बीस बिस्वा

## बीस से उन्नीस पड़ना

तुलना में कुछ घट कर होना। प्रयोग—कोई नया राग पहले उठाने का मोका सिरफ राधकली बाई को ही दिया जाता है और मुनीजान का नम्बर दूसरा हो जाने से नये-

पन का कुछ बला रहता है, निहाजा वह कुछ बीस से उन्नीस पड़ जाती है (जहाज०—इ० जोशी, १३९)

## बीस होना

(१) बड़कर होना। प्रयोग—मूख की रचना और रंग की दृष्टि में भी, शाबद कांता उममे बीस ही थी (बाहर०—देव०, ६१)

(२) बजना में या नाच में कुछ घबिक हो होना।

## बुका फाड़ कर रोना

फूट-फूटकर जोर से रोना। प्रयोग—वह आते परन्तु कोमल स्वर जब मनो के मर्म को बिह्वल कर के सीटा, वह बुका फाड़कर रो उठी (मारली०—१०/१०, १४९)

(समा० मुहा०—फुक्का फाड़कर रोना)

## बुखार उतरना या उतारना

जोश या शोध कम हो जाना या प्रवृत्त करना। प्रयोग—अनी हिन्दुस्तान पर बुखार उतारते हैं (बीटी०—निराला, १८)

## बुखार टूटना

ज्वर न रहना। प्रयोग—बुखार मेरा टूटता ही न था (गोली—चतुर०, ३४४); एकबार बीच में क्या-सा था कि बुखार टूट चला है (धरती०—ति० प्र०, ४८)

## बुझ जाना

(१) उल्लाह-हीन हो जाना। प्रयोग—साधवी पहले तो बड़ी प्रसन्न हुई परन्तु बाद में बुझ गई (सुहाग०—अ० ना०, १२२); जावेद भीतर से बुझ चुका था (कठ०—दे० स०, २२४)

(२) समाप्त हो जाना, मर जाना। प्रयोग—वही दैनिक पथ मनीषि जो के लिए श्वेत हन्ती बन गया, अवाह पाटे के कारण बंद करना पड़ा, कुछ दिन साप्ताहिक होकर बिसका, घात की बुझ गया (गुलेरी प्रस्ता०—गुलेरी, २४६)

(समा० मुहा०—बुझा होना)

## बुझती आग में धी देना,—तेल पड़ना

शांत होते हुए शोध का किसी बात से पुनः भड़क उठना। प्रयोग—बुझती हुई आग में तेल पड़ गया। जानप्रा तइय कर बीली (पवन—प्रेमचंद, ३०); और जब अर्जुन को मोह हुआ रहा-बीच बुझती आग में दिया पत भगवान ने (कृष्ण०—दिनकर, १०)



बुझती आग में तेल पड़ना

५३४

बुद्धि मारी जाना

बुझती आग में तेल पड़ना

दे० बुझती आग में घी देना

बुझा हुआ हृदय

निरुन्नाह हृदय । प्रयोग—उसके बुझते हुए मन ने जाना कि आगे कुछ गति नहीं है (शेखर (२)—अज्ञेय, १६३)

बुढ़ापे की मारी

बुढ़ापे से मरना । प्रयोग—मैं बेचारी बुढ़ापे की मारी दिन भर झलमारी करूँ, धीरे आप मीजें मारें (गंगा—उग्र, ४७)

बुढ़ापे की लकड़ी—लाठी

बुढ़ापे का सहारा । प्रयोग—वही लकड़ा तो बुढ़ापे की लकड़ी या (मा० ग्रं० (१)—भारतेन्दु, ५७३); ईश्वर ने कोई संतान दे दी तो वही हमारे बुढ़ापे की लाठी होगी (मान० (३)—प्रेमचंद, ४४); दयौलिया तो पुत्र को बुढ़ापे की लाठी कहा गया है (मा—कौशिक, १६)

बुढ़ापे की लाठी

दे० बुढ़ापे की लकड़ी

बुत्ते में आना

घोखे में आना । प्रयोग—आ, न बुत्ते में किसी के भी मक्के पेट के बुत्ते किया पों पों करे (बील०—हरिऔध, २२०)

बुद्ध बने रहना

सुध-बुध खोये रहना । प्रयोग—खैर, कबीरदास भाग्य-शाली थे, उन्हें राम-रस का चमका लग गया और वे दिन रात उस महारस में बुद्ध बने रहे (कबीर—ह० प्र० द्वि०, ७४)

बुद्धि का कोठा खाली होना

बेवकफ होना । प्रयोग—मैं तभी समझ गया था, इस मूर्ख का बुद्धि का कोठा बिलकुल खाली है (कुल्ली—निराला, ११८)

बुद्धि का घास चरने चला जाना

विवेकहीन होना, कोई विचार करने में घसमस होना । प्रयोग—ब्या बातें बकते हो ? बुद्धि घास तो नहीं चर गई ? (गंगा—उग्र, २५)

बुद्धि का रंक होना

अल्प-बुद्धि होना । प्रयोग—गुप्त न एकदम जंग उगाऊ मग मति रंक मनोरथ राज (राम० (बाल)—तुलसी, १३)

(गंगा० महा०—बुद्धि मन्द होना)

बुद्धि की मोटी होना, बुद्धि मोटी होना

बेवकफ होना । प्रयोग—जो रिभऊ तो महा बद्धि है, बिन रिभयें चैं सब मोटी । कहे कबीर तरक रोद मार्ये, ताकी मति है मोटी (कबीर ग्रंथा०—कबीर, १०५); चतुराई संग-जंग भरी है, परन-ज्ञान, न बुद्धि की मोटी (सू० सा०—सूर, २५१९); कुन्नीलाल और विभूतपाल आदि की कटती कहने में कमर न रखते व परन्तु अकल मोटी यी इगलिये उन्होंने इन्हें विनौना बना रक्खा था (परीक्षा०—श्री० दास, ६५)

बुद्धि खो देना

शोशहवास में न होना, बुद्धि से काम न लेना । प्रयोग—खोव गई बुधि, सोव गई मुधि, रोव हंसै उतमार अरयो है (घना० कवित्त—घना०, १५)

बुद्धि टेढ़ी होना

बुद्धि विकृत होना । प्रयोग—सोव मानू कह विधि बुधि बांकी (राम० (अ)—तुलसी, ६३९)

बुद्धि दौड़ना या दौड़ाना

उपाय सोचना, युक्ति निकालनी । प्रयोग—उन्ही कामों में उसकी बुद्धि दौड़ती है (परीक्षा०—श्री० दास ५०)

बुद्धि पर पड़ा पर्दा दूर होना

भ्रम या अज्ञान दूर होना । प्रयोग—मुनि मूढ़ गढ़ बचन रघुपति के उधरे पटल परमुचर मति के (राम० (बाल)—तुलसी, २८९)

बुद्धि पिछली होना

मूर्ख होना, बुद्धि न होना । प्रयोग—मूरख के जौ बुद्धि पाछिली, हमहुं करि दिवो आगे (सू० सा०—सूर, २८५१)

(गंगा० महा०—बुद्धि पीछे होना)

बुद्धि मारी जाना

(१) बुद्धि नष्ट होना । प्रयोग—पों करते-करते उनमें दीनता घाई, उससे उनमें मोह या पुमा, उनसे बुद्धि मारी गई (गुलेरी ग्रंथा० (१)—गुलेरी, ४)



(२) ठीक समय पर ठीक काम करने की न सूचना ।

**बुद्धि मोटी होना**

**२० बुद्धि की मोटी होना**

**बुरी घड़ी पड़ना**

मुसीबत पड़नी । प्रयोग—ब्राह्मण जो मुभ महुत देखकर हड़बड़ी से गया था उस पर बुरी घड़ी पड़ी (इशा०—इशा०, ९५)

**बुरी नजर रखना**

कुदृष्टि रखना । प्रयोग—पह जो घंघा है, हज़र एक ही बदमाश है । दूसरों की बूढ़-बेटियों पर बुरी निगाह रखता है (रंग० (१)—प्रेमचंद, २११)

**बुरे दिन**

घाविक या अन्य दृष्टि से बुरा समय, घापदकाल । प्रयोग—किसी के बुरे दिन न आएँ (दूधगा०—दे० स०, २६६)

**बुरे रास्ते पर चलना**

गलत काम करना । प्रयोग—बुरी राहें कब छोड़ी गईं बहुत काटे पावों में गड़े (मर्म०—हरिऔध, ५३); बुरे रास्ते पर पैर रखते ही उनकी आत्मा उन्हें धिक्कारती है (मेरे०—गुलाब०, ४४)

**बुलबुल हो जाना**

खुश होना, मुग्ध होना । प्रयोग—घर सचिव की योग्यता की ऐसी प्रशंसा कीजिए कि वह बुलबुल हो जाय (प्रेमा०—प्रेमचंद, ११४)

**बूकना या बूकना**

कड़ते जाना, बूकना । प्रयोग—ये बेयाकरण भी निरे ठंठ खसूची होते हैं, जो उदाहरण जिस रूप में किसी सूत्र की व्याख्या में आ गये हैं, वस वही तक इनकी गति है । वह भी पुस्तक सामने हो तब, नहीं तो घायं घायं घायं, जो है सो, बूकने लगते हैं (पद्म० के पत्र—पद्म० शर्मा, १३२); साधु महात्मा बराबर अंगरेजी बूकते रहे (पद्म पराग—पद्म० शर्मा, ११९)

**बूढ़ाबांड़ी होना**

हल्की हल्की बर्षा होनी । प्रयोग—दो एक बार बूढ़ा-बांड़ी हो गई है (पद्म० के पत्र—पद्म० शर्मा, ४५)

**बू आना या होना**

आभास मिलना । प्रयोग—घब इनकी जमीनदारी तो नहीं रही थी लेकिन रोब-दाब रहत-सहत, चाल-चाल घोर बलबीत से हुकूमत की बड़ी चिकट बू आती थी (दल०—नागा०, ६); जरबों को तुम्हारी बू भी मिल गयी, तो तुम्हारी जान की खरिदत नहीं (मान० (३)—प्रेमचंद, २०५); ये वही पिता थे, जिन्होंने एक दूसरे घबघर पर घबने किसी अफसर से मिलने जाने से इसलिये इनकार कर दिया था कि उसके निर्बंधन में कुछ इस भाव की बू थी कि तुम मिलने आ सकते हो—यद्यपि मैं चाहूँ तो तुम से न भी मिलूँ (शेखर (१)—अज्ञेय, ११६)

**बू न जाना**

असर दूर न होना । प्रयोग—घापके दिमाग से हुकूमत की बू अभी तक नहीं गई ? (कठ०—दे० स०, ३५६)

**बूझ की दृष्टि**

अंतर्बुद्धि; विवेक बुद्धि । प्रयोग—रूप धरें घुनि लो घन-घानंद सुभति बूझ की दीठि सु तानी । सोचन लेत लगाय के संग घनंग घबभे की मूरति मानी । हे किधौ नाहि लगी अगली सो लखी न परै कवि क्यौ हूँ प्रमानो । तो कहि भेदहि किकिनि जानति तेरी सो ए री मुजान हौ जानो (घन० कवित—घना०, १२१)

(समा० मुहा०—बुद्धि की दृष्टि)

**बूटी छानना**

भंग-बूटी पीना । प्रयोग—‘एक्का’ पर बड़कर बहरी तरफ जाने और बूटी छानने ही में दुनियाँ का मजा है (राधा० ग्रंथा०—राधा० दास, ९५); क्यों नरो में अनबनो के चूर हो मेन की बूटी नहीं क्यों छानते (दोल०—हरिऔध, ३१)

**बूढ़े तोते का न पढ़ना**

बूढ़े व्यक्ति का कुछ न सीख सकना । प्रयोग—बूढ़ा आदमी इतनी आसानी से नई शिक्षा नहीं ग्रहण कर सकता । बूढ़ा तोता पढ़ना नहीं सीखता (रंग० (२)—प्रेमचंद, १७५)

**बूढ़े तोते को पढ़ाना**

बूढ़े व्यक्ति को कुछ सिखाना; उम्र बीत जाने पर सिखाना । प्रयोग—तुमको तो बूढ़े तोते को राम-नाम पढ़ाना पड़ेगा (गोदान—प्रेमचंद, १४३)



**बूढ़े मुंह मुंहासा होना**

**बूढ़े मुंह मुंहासा होना**

बूढ़ापे में जवानी का लौक होना । प्रयोग—हम हसे तो क्या, न हमसा कौन है । बात बूढ़े मुंह मुंहासे की मुने (बोल०—हरिऔध, ८६)

**बूम मारना**

बेकार शोर करना । प्रयोग—तुम साता खानी पीनी बूम मारता है (पैतरे—अश्क, १२९)

**बैत कांपना**

डर दिखलाना । प्रयोग—सूध दान न काहें लेत । और अटपटी खाँड़ नंद-मुत्त, रहहु कांपावत बैत (सू० सा०—सूर, २०८६)

**बैत की तरफ कांपना**

घरघर कांपना, बहुत अधिक डरना । प्रयोग—पिता के दुतारे पुत्रों ! तुम जपराधी के समान बैत से कांपोगे (कामना—प्रसाद, २६); कांप उठा बैत की तरह सब तन जो हिली जांच बेतरह तेरी (बोल०—हरिऔध, २३१)

**बैत खाना**

बैत से मारा जाना । प्रयोग—जो करें काम बैत खाने का पीठ पर बैत है वही खाता (बोल०—हरिऔध, २२९)

**बे-कलेजे**

(१) शक्तिहीन । प्रयोग—वास होते हुए कलेजा भी है हमी लोग बे-कलेजे के (चुमते०—हरिऔध, ६६)

(२) कठोर हृदय ।

**बे-कहा होना**

किसी की कही बात न मुननेवाला हो जाना । प्रयोग—बात लगती बेकहों को बेघड़क (चुमते०—हरिऔध, १४)

**बे-जड़ होना**

निराधार होना । प्रयोग—तब भला वह किस तरह जी में जमे जब बताई बात ही बेजड़ गई (चुमते०—हरिऔध, ३५)

**बे-जान होना**

उत्साहहीन होना, शक्तिहीन होना । प्रयोग—लोग बेजान बन गये जब है जब मरे मन मिले, न जाग जगे (चुमते०—हरिऔध, ६५)

५३६

बे-भाव की जमाना

**बे-ले करना**

जवाब-सवाल करना । प्रयोग—मुखदेव ने घूमकर कहा—मधुवन ! बे, ले, मत करो (तितली—प्रसाद, १६६)

**बे-नफेल के ऊंट होना**

किसी के कहने में न होना, अपने मन का होना । प्रयोग—इसी का यह फल है कि लड़के बे-नफेल के ऊंट बने हुए हैं (मान० (१)—प्रेमचंद, ३१९)

**बे-पर की उड़ाना**

गप्प हांकना । प्रयोग—होरी ने बे-पर की उड़ाई । अपने महाजन के सामने भी घपनी समृद्धि-प्रदर्शन का ऐसा अवसर पाकर वह कैसे छोड़े (गोदान—प्रेमचंद, ३८); शिकायत लिखवा, देल, कैसी बे-पर की उड़ाते हैं (चोटो०—निराला, १९)

**बे-पानी कर देना**

बेइज्जत कर देना । प्रयोग—लेकिन, जितन बाबू ने दरोगा को भी बे पानी कर दिया (परतो०—रेणु, ५१२)

**बे-पानी होना**

(१) इज्जत उतर जानी । प्रयोग—बे पानी होने के भय से कृष्ण कृष्ण चिल्लाती है (नूर०—भक्त, ३९); दो दिनही के बाल-झांस में नाच हुई बे-पानी दिल्ली (चक्र०—दिनकर, ६५)

(२) अपने मान-प्रमान का ध्यान न रखने वाला होना ।

**बे-पेंदी का, बे-पेंदी का लोटा**

दुलमुल विचार वाला । प्रयोग—यह आज आप बेपेंदी के लोटे की तरह क्यों लुढ़कते फिरते हैं ? (राधा० ग्रंथा०—राधा० दास, ७०६); हमारे इस बेपेंदी के जगत् को देखकर एक बार सदृष्टास करने को जी होता है-हा-हा-हा-हा (नदी०—अज्ञेय, ८२)

**बे-पेंदी का लोटा**

दे० बे-पेंदी का

**बे-भाव की जमाना**

बुरी तरह मारना । प्रयोग—घरे पार कुछ न पछी, एक तो चोट लगी, दूसरे खानबाबा बे-भाव की लगे जमाने (राधा० ग्रंथा०—राधा० दास, ७६७)



### वे-भाव की पड़ना

महरी डाँट फटकार होनी; वृत्ति तरह मार पड़नी। प्रयोग—जरा बोले नहीं कि वह वे भाव की पड़ने लगे कि सिर झुजलाकर रह जाना पड़ता है (राधा० ग्रंथा०—राधा० दास, ७१९); अब अनवरी की चमड़े की छोटी सी पंखी भी गुम हो गई तब तो राम दीन पर वे-भाव की पड़ी (तिल्ली—प्रसाद, १०७); जब बीच बाजार में वे-भाव की पड़ेगी, तब रोएंगे (रंग०(१)—प्रेमचंद, २१९); जिन लोगों पर वे-भाव की पड़ रही थी वे भी, कम से कम उस समय हन रहे थे (पेंतरे—अशक, २७)

### वे-मुंह का

बहुत सीधा या निरीह व्यक्ति। प्रयोग—एक वे-मुंह की दुधमुट्टी पर पों बिपत डाना न तुमको चाहिये (बोल०—हरि-औध, ४)

### वे-मोल करना

वेकद्र करना। प्रयोग—जो हमें वेमोल करता ही रहे। कुछ नहीं है मोल ऐसे मत का (चुभते०—हरिऔध, ५०)

### वे-लगाम

बिना नियंत्रण या अंकुश के। प्रयोग—तैल में आकर जब मैं इतनी सब बातें बेलगाम बोलता चला जा रहा था तब यह देखकर मेरे मन के भीतर खिगा हुआ तमाशबीन अच्छे आनन्द का अनुभव कर रहा था..... (जहाज०—इ० जोशी, ४५); बात लगती बेलगामों की मुने × × दिन भला किरका नहीं है छिल गया (बोल०—हरिऔध, १५३); तुम्हें इतना बेलगाम न होना चाहिए था, वह (गवन—प्रेमचंद, २७७)

### वे-लाग बात

खरी एवं निष्पक्ष बात। प्रयोग—वह जो बात कहता है, बेलगाम कहता है (मान०(८)—प्रेमचंद, ६५); हाँ वकील ने कोई मुरब्बत नहीं की थी—एकदम बेलगाम बात की थी (नदी०—अशोक, २००)

### वे-सिर पैर का

असम्बद्ध; व्यर्थ। प्रयोग—उस समय तो चेतन वे-सिर-पैर के बहाने बनाकर सोने चला गया लेकिन दूसरे दिन उसने माँ से क्षमा माँगी (चेतन—अशक, १९९)

वे-सिर-पैर की बकना,—वात उड़ाना, —करना,—कहना,—हाँकना, वे-सिर वे-ठिकाने की बात करना

निरर्थक ऊलजलूल बातें करनी। प्रयोग—मैं कुछ ऐसा अनोखा बड़बोला नहीं जो राई को परबत कर दिखाऊँ × × और वे-सिर वे-ठिकाने की उसली-मुलली बातें सुभाऊँ (इशा०—इशा०, ८९); पर मुझे भय है कि आपका भी तो सूली पर टंगा है और सूली पर लोग प्रायः विवश होकर वे-सिर-पैर की बका कर करते हैं (भा० ग्रं०(१)—भार-तेन्दु, ६०४); आज तुम सबमूच कहीं से भाग खा के आए हो। इसी से ऐसी वे-सिर-पैर की हाँक रहे हो (प्र० पी०—५० ना० मि०, ११५); तुम तो वे-सिर-पैर की बातें करने लगे, दुबलशमजी (मान०(४)—प्रेमचंद, १५९); फिर गये सिर जब हमारे सिर धरे बात वे-सिर-पैर की कहने लगे (चुभते०—हरिऔध, ११८); लोग वे-सिर-पैर की बातें उड़ा रहे हैं (दुग्गाछ—दे० स०, २५१)

वे-सिर-पैर की बात उड़ाना

दे० वे-सिर-पैर की बकना

वे-सिर-पैर की बात करना

दे० वे-सिर-पैर की बकना

वे-सिर-पैर की बात कहना

दे० वे-सिर-पैर की बकना

वे-सिर-पैर की बात हाँकना

दे० वे-सिर-पैर की बकना

वे-सिर वे-ठिकाने की बात करना

दे० वे-सिर-पैर की बकना

वे-हाथ-पैर की होना

स्तब्ध हो जाना, चिक्कत-व्य-विमूढ़ हो जाना। प्रयोग—कौहर सो एडीन की लानी देसि सुभाइ। पाइ महावर देश को आयु भई वे-पाइ (विहारी रत्ना०—विहारी, ४४)

वे-हाथ होना

बश में न रहना। प्रयोग—जोग परा जनु अपरिन्ह साया। जोग हाथ हूँ भणउ वेहाया (पद०—जायसी, २७२); निरालंब दुन्य में भटकनेवाले इस जीव (घोनी) ने किमी ऐसे लाज बनावत-हारे की परवा तऊ न की, उसका



हाथ भी छोड़ दिया और खुद बेहाथ हो गया (कबीर०—हं० प्र० हि०, ९४); बेवसी से बेतरह बेहाथ हो हार किसने है न खोया नीलखा (गोला०—हरिऔध, १५०); भना में तुम्हें बेहाथ होने दे सकता हूँ। इस भरोसे न रहना (कला०—उग्र, ७५)

### बेच खाना

बंवा देना, नष्ट करना। प्रयोग—इहू बन मेरे हरि को नाउ, गाड़ि न बांधी बेचि न खाउ (कबीर प्रसा०—कबीर, २७१); पुरुष केरी सबें सौहै कबीरों के बाज, सूर प्रभु की कहा कहिए बेच साईं लाज (सूर—हि० श० सा०); मुनु भैया याकी टेव लरन की सकुच बेचि सी साईं लाज (तुलसी—हि० श० सा०)

### बेड़ा गर्क होना,—डूबना या डुबाना

काम बिगड़ना या बिगाड़ना, तबाह होना। प्रयोग—रईनों के बीच उठना बैठना कोई मामूली बात नहीं हुआ करती, हुनूर, जई सी कोई बात उनको नागवार खातिर हो तो हमारा बेड़ा ही गर्क हो जाए (ये कोठे०—अ० मा०, ९३); हमी नें बहक जाति बेड़ा डूबाया (चुमते०—हरिऔध, १५६); इन मूल बाहमणों का बेड़ा डूबा (देशालो० (१)—चतुर०, ३४४); डूबता देल जाति का बेड़ा कब कभी आंग डबडबा आई (चुमते०—हरिऔध, ५७)

### बेड़ा डूबना या डुबाना

#### दे० बेड़ा गर्क होना

### बेड़ा पार करना,—लगाना

किसी को संकट से पार लगाना या छुड़ाना। प्रयोग—यही तो बिनात है और ईद का त्योहार, अल्लाह ही बेड़ा पार लगावे (मान० (१)—प्रेमचंद, २५); 'बेड़ा पार लगानेवाला' बेड़ा पार करेगा (मर्म०—हरिऔध, ११)

### बेड़ा पार लगाना

#### दे० बेड़ा पार करना

### बेड़ा पार होना

संकट की स्थिति से छटकारा होना। प्रयोग—मुझसे क्या कह कर से। बस, तेरा बेड़ा पार (गोली—चतुर०, २६६)

### बेल मंटे या मुंहे चढ़ना

किसी कार्य का अंत तक ठीक-ठीक उतरना। प्रयोग—यह बेल मुंहे चढ़ने की नहीं है। दो में से एक को दबना पड़ना

(रंग० (१)—प्रेमचंद, ५७); उस समय मालूम होता था मानो यह बेल मंटे न चढ़ेगी (सु० सु०—सुदर्शन, १५४)

### बेला झुकना,—डलना

गाम होना। प्रयोग—अब बेला डल चली, हम भी रनिवास को जाते हैं (भा० प्र० (१)—भारतेन्द, ३); बेला झुक गया है, हागडर बाबू भी सा जायेंगे (मैला०—रेणु, ४३)

### बेला डलना

#### दे० बेला झुकना

### बैठकर खाना

बिना कुछ काम पंथा किए बैठे-बैठे खाना। प्रयोग—पर शल को यह बात काटे की तरह चुभ रही थी कि स्त्री कमामे और पुरुष बैठ कर खावे (दूधगाछ—दे० स०, २५९)

### बैठ जाना

(१) गिर पड़ना, नष्ट हो जाना। प्रयोग—वह रनवास है। बैठ गया है, दो-एक जगह से मालूम देता है (कुल्लो०—निराला, ४५)

(२) बंद हो जाना, समाप्त हो जाना। प्रयोग—खैर, वह कम्पनी तो बैठ गई (पैलर—अश्क, ६४)

(३) किसी काम में न लगे होना।

(४) संबंध तरीके से किसी के साथ रहना।

### बैठक-बाज

(१) पुराने घटे हुए लोग। प्रयोग—पाचारण बुद्धिवाला ऐसी परिस्थितियों में पड़कर बड़ा उठता है, पर बैठक-बाजों के माथे पर बल नहीं पड़ता (गदन—प्रेमचंद, ११४); यह इस कक्षा के सम्पन्न बड़ों में था, बड़ा जिनाड़ी बड़ा बैठकबाज (कर्म०—प्रेमचंद, २)

(२) निरवक गण्य करने वाला।

### बैठना

(१) किसी काम को करना। प्रयोग—स्कूल से लौटकर घमरकात नियमानुसार अपनी छोटी कोठरी में जाकर बैठ गया (कर्म०—प्रेमचंद, ५)

(२) बैश्याओं का रहना। प्रयोग—चावलवाली गली के मोड़ पर हम बैठती हैं (ज्ञान०—यशपाल, १२१)

### बैठने का ठिकाना करना

(१) जीविका का उपाय करना। प्रयोग—अपने मन में



समझते होंगे, हम लड़कों के लिए बैठने का ठिकाना किये जाते हैं (मान० ७) — प्रेमचंद, ४१)

(२) रहने का स्थान ठीक करना ।

### बैठने का ठिकाना होना

कोई आश्रय रह जाना । प्रयोग — घोर क्या, मुझे कहीं बैठने का ठिकाना रहेगा ? (मा — कौशिक, १०)

### बैठा देना

अशक्त कर देना, बुरी स्थिति को प्राप्त कराना । प्रयोग — एक बैल था, सांभे में जोत लेते थे, वह भी मरा, इधर स्यामा की अम्मा थी, वह भी भगवान के यहाँ गई । परमात्मा ने सब तरफ से बैठा दिया (लिली — निराला, ६५)

### बैठा होना

वंश में होना, उत्तराधिकारी होना, अपना होना । प्रयोग — मेरे पातेर अपनी दोहित्री को और जामाता को अपनी प्रतुल सम्पत्ति का उत्तराधिकार भी दे जायेंगे और उनके बैठा ही कौन है (सुहाग० — अ० ना०, १५३)

### बैठाऊं होना

बेकाम होना । प्रयोग — बैल बठाऊं हो गया है, डेढ़ सौ लगेगे तब कहीं एक बैल आवेगा (प्रेमा० — प्रेमचंद, ७)

### बैठाना

किसी स्त्री के साथ बिना विवाह किए ही रहना । प्रयोग — ताजमनी को जितन बाबू ने हवेली में बैठा लिया है (परती० — रेणु, ४८३); उन्होंने एक पतुरिया बैठाई थी (कुलजी० — निराला, ३६); अपनी जाति की लड़की को विधिपूर्वक उसके साथ ब्याह हुआ था; कोई बैठाली परठाली भी तो नहीं थी (मिसा० — कौशिक, १९१)

### बैठी रहना

(१) बिना ब्याहे रह जाना । प्रयोग — एक तो यों ही गंगा पुत्रों की पुरोहिती के कारण लोग पानी पीते चरते हैं, फिर तो बहुत बैठी ही रह जायगी (कुलजी० — निराला, १४३)

(२) प्रतीक्षा में रहना ।

### बैल भरना

बोलना, बाणी फूटनी । प्रयोग — कब है दंत दूध के देखो कब तुमरे मुल बैल भरें (सु० सा० — सुर, ६९४)

### बैर काढ़ना, — लेना

बदला लेना । प्रयोग — यह बिधि सब नवीन पायो बज

काइत बैर दुरानी (सुर० — हि० श० सा०); लेहो बैर पिता तेरो को, जेहै कहाँ पराई ? (सुर० — हि० श० सा०); काली कूर कोकिला कहाँ को बैर काइत री, कूक कूक अब हो करेजो किन कोरिले (धन० कवित्त — घना०, ५०)

(समा० मुहा० — बैर चुकाना, — निकालना)

### बैर ठानना

दुश्मनी मान लेनी । प्रयोग — कालि नाहि यहि मारग ऐहो, ऐसो मोसों बैर ठायो (सुर० — हि० श० सा०)

### बैर पड़ना

(१) सपू होकर कष्ट पहुँचाना । प्रयोग — ताको केस लखे नहि सिर तें, जो जग बैर परें (सु० सा० — सुर, ३७); कित जाहि कहा करै कैसें भरे यह कान्ह की बासुरी बैर परो (धन० कवित्त — घना०, ११३)

(२) बुरा मानना ।

### बैर लेना

### दे० बैर काढ़ना

### बैल के से दीदे निकालना

बिना कुछ समझे यों हो ताकते रहना । प्रयोग — “उठती है या घाऊं” “बैल के-से दीदे क्या निकाल रही है” आदि वाक्यों में जो कठोरता की धारा बहती रहती है, उसे मेरा अवोध मन भी जान हो लेता था (अतीत० — महादेवी, ३७)

### बैल से दूध निकालना

(१) जहाँ से कुछ भी मिलने की आशा न हो वहाँ से भी कुछ निकालने की चेष्टा करनी । प्रयोग — लुगामद वह बीज है कि पत्थर को मोम बनाती है, बैल को दुह के दूध निकालती है (प्र० पी० — प्र० ना० मि०, ५९)

(२) असंभव कार्य करने की चेष्टा करना ।

### बैल होना

(१) मूल होना । प्रयोग — गुप्त हित की कभी बतायें हम उसे ब्रह्म होते बन गया जो बैल हो (चोखे० — हरिऔध, १२६)

(२) बैल की तरह रात-दिन काम करनेवाला । प्रयोग — मैं बैल नहीं हूँ । तुम्हीं लोगों के लिए इस जंजाल में फना हुआ हूँ (कर्न० — प्रेमचंद, ११)



### बैसाखी छोड़ना

सहारा छोड़ना । प्रयोग—पुनः बही नक्कर, प्रकाशक.....  
और अबकी बार शास्त्र सम्मन अनामकत भाव से, घोर  
निन्दाओं की बैसाखिया छोड़कर (शेखर० (२)—अज्ञेय,  
१९८८)

### बोझ उठाना

किसी कठिन काम की जिम्मेदारी धपने ऊपर लेना ।  
प्रयोग—और फिर, स्वयं सेवा का भारी बोझ उठाकर  
उन्हें मनोरंजन की भी जरूरत है (शेखर (२)—अज्ञेय, ३४);  
अब भी यदि मैं लाइटी का काम सीख जाऊँ तो न केवल  
अपना बल्कि सारे परिवार का बोझ अपने कंधों पर उठा  
लूँ (चेतन—अशक, ४६)

### बोझ डालना

कोई दायित्व देना या काम करने को कहना । प्रयोग—  
ईश्वर की दया से मैं अभी जवान हूँ, हट्टा-कट्टा हूँ, अपना  
पेट पाल सकता हूँ तब क्यों तुम पर बोझ डालूँ  
(मिस्त्रा०—कौशिक, ४८)

### बोटी नुचन

दुर्लभ होनी । प्रयोग—बैसाखी खोटी पड़ी अब है जायगी नुच  
न किसलिये बोटी (चुभते०—हरिऔध, ११४)

### बोतल उड़ाना

धराव पीनी । प्रयोग—घर में बैठकर बोतल उड़ा जाते  
हो और यहाँ आकर सेबी बपारते हो (कर्म०—प्रेमचंद,  
२६२)

(समा० मुहा०—बोतल चढ़ाना)

### बोया हुआ काटना

करनी का फल पाना । प्रयोग—श्रीभक्ति मंदीर सचिवालय  
देवि मेघनाद, बपो लुनिअल सब पाही दादोजार को (कवि०  
—तुलसी, ४८)

### बोर देना

हुवा देना, चोपट कर देना, नष्ट कर देना । प्रयोग—  
आपण बड़े शीर की बोरे, अगनि लगाइ मंदिर में गोबे  
(कवीर ग्रंथ०—कवीर, १३४)

### बोरिया बंधना छोड़कर भागना

सब छोड़-छाड़ कर भाग जाना । प्रयोग—अगर जगत

पाड़े यह मुकदमा जीत गया तो हमें बोरिया-बंधना छोड़कर  
भागना पड़ेगा (मान० (३)—प्रेमचंद, १३२)

### बोरिया-बंधना बांधना,—समेटना,—सम्भालना, बोरिया बकचा लादना

चलने की तैयारी करनी, प्रस्थान करना । प्रयोग—वानड  
लाई काहु ठगोरी खन पुकार, खन बांधे बोरी (जायसी—  
हि० श० सा०); एक ओर से तो बड़ी भूत बहका रहा है कि  
अपना अपना बोरिया बंधना बांधो, घता हो (मा० प्र० (१)  
—भारतेन्दु, ५७१); कहता हूँ, सोपे से अपने बोरिए बकचे  
सादो और चलते फिरते नजर छाओ (रंग० (२)—प्रेमचंद,  
३२०); इन हजरत को अब यहाँ से बोरिया-बंधना संभालना  
पड़ेगा (रंग० (१)—प्रेमचंद, ४०६); मैंने यूनिवर्सिटी में दर-  
खास्त दी है । मंजूर हो गयी तो बोरिया-बंधना समेटकर  
उधर की राह लूँगा (प्रेमा०—प्रेमचंद, २४५); यहाँ से आज-  
कल में बोरिया-बंधना समेटना है (चोटी०—निराला, १३८);  
यदि सिबिया बलबाइयों में शामिल हो जाये तो मुझको  
कल ही बंधना बोरिया बांधकर यहाँ से चल देना पड़ेगा  
(झांसी०—दू० वर्मा, ४५९); नतीजा यह हुआ कि बोरिया-  
बंधना संभाल महाकवि जी उस वक्त चलते फिरते नजर  
आए (अपनी खबर—उग्र, १५)

### बोरिया बंधना समेटना

दे० बोरिया बंधना बांधना

बोरिया बंधना सम्भालना

दे० बोरिया बंधना बांधना

### बोरिया बकचा लादना

दे० बोरिया बंधना बांधना

### बोल जाना

(१) व्यवहार के योग्य न रहना, दम न रहना । प्रयोग—  
इन्हें भूखी मरने दो, दो दिन में बीति जायगे (मान० (३)—  
प्रेमचंद, २९४); बस, बोल गए ? मुझारे जैसे आदमी भला  
किसी का उद्धार क्या कर सकते हैं (मा०—कौशिक, ३१४)  
(२) मर जाना ।

### बोल न जाना

उत्तर न दे पाना, कह न पाना । प्रयोग—सूरबचन मुनि



रखी ठगो ली, बहुरि न आयी बोलि (सु०सा०—सूर, ४३०४)  
बोल न आयो उसासन के बड़े आमुन से मुखि राखि न  
पाई (मर्म०—हरिऔध, २८)

(समा० मुहा०—बोल न पाना)

### बोल फूटना

कुछ कहना । प्रयोग—दसपंद्रह दिन बाद एक दिन उम  
कमरे से पति-पत्नी की तीली कहा मुनी के बोल सहसा  
फूट पड़े (ये कोठे०—अ० ना०, २०)

(समा० मुहा०—बोली फूटना)

### बोलती आंखें

ऐसी आंखें जिनसे मन का भाव प्रगट हो । प्रयोग—  
परन्तु उनकी आंखें बोलती, बड़ी और आवाज कड़कदार  
प्रगट पड़ी तक बंसी ही रही (अपनी खबर—उग्र, ८९)

### बोलती चिड़िया उड़ जाना

मर जाना । प्रयोग—छोड़ सूना सरीर पिजड़े को  
उड़ गई आज बोलती चिड़िया (बोल०—हरिऔध, १२२)

### बोलती बंद करना या होना

निरुत्तर कर देना या होना । प्रयोग—मेले में गंगाबाई ने  
बड़े-बड़े हाकिमों की बोलती बंद कर दी (परती०—रेणु,  
३९५); गुरु जी की बोलती बंद हो गई (कुल्लो०—निराला,  
११२); मिल गये आज बोलने वाले बोलती बंद क्यों न हो  
जाती (बोल०—हरिऔध, १२१)

### बोलबाला रहना या होना

सम्मान और आदर बना रहना, महत्व होना । प्रयोग—  
हां, नचनिये भी हैं, घाबकल तो तबले का बोलबाला है  
(चोटी०—निराला, ६०); बोलबाला हो नहीं उनका सका जो  
बनाकर मुंह रहे, मुंह खोलते (बोल०—हरिऔध, १२२);  
बोदार पम्प शू का भी बोलबाला रहा (मेरे०—गुलाब०,  
१३३)

### बोला चाहता है

अत्यन्त सजीव । प्रयोग—यह किस चितरे की निपुणता  
है कि चित्र बोला ही चाहता है? (भा० प्र० (१)—भारतेन्दु,  
६०७)

### बोली-ठोली

व्यंग्य, अद्वितीय उक्ति । प्रयोग—कहूँ कबीर कहूँ फाग होत  
कहूँ हांसी बोली ठोली है (प्र० पी०—प्र० ना० मि०, १७८);

कभी बोली ठोली भी सुनाई दे जाती है मानो बाजार में  
किसी रत्नक मर्द के साथ न होने से वह मजाक बनने के लिये  
ही आयी बो(झूठा० (२)—यशपाल, १५८)

### बोली-ठोली कसना,—मारना, बोली बोलना,— मारना

किसी को लक्ष्य करके उपहास या व्यंग्य के शब्द कहना ।  
प्रयोग—हां जी बोलिया ठोलिया न मारो (इंशा०—इंशा०,  
९३); बोलने में कब न बड़ बोले बड़े बोल लें बोली अगर हूं  
बोलते (बोल०—हरिऔध, १२२); निहालदेई ने अपनी लड़की  
की बोली मारनेवाले के प्रति प्रीध प्रगट किया (झूठा० (२)  
—यशपाल, १३१); मजाल नहीं कि मुहल्ले का एक भी  
पुरुष उन अहीर बालाओं की मस्ती में छेड़छाड़ से व्याधात  
डाले बोली-ठोली कसे (बुंद०—अ० ना०, ५०१); देख जमीला  
हम बोली हो बोल रही है बोली (नूर०—मक्त, ६१)

(समा० मुहा०—बोली छोड़ना)

### बोली-ठोली मारना

दे० बोली-ठोली कसना

### बोली बोलना

(१) नीलाम में डाक बोलना । प्रयोग—जब हमारा मन  
हुआ नीलाम था, किसलिये बोली न तब बोली गई  
(बोल०—हरिऔध, १२१)

(२) दे० बोली-ठोली कसना

### बोली मारना

दे० बोली-ठोली कसना

### बोली में मिठास घोलना,—से अमृत टपकना

अत्यन्त मधुर एवं प्रिय बातें बोलना । प्रयोग—वह हीरामन  
पंडित मुआ । जें बोले तो अंशित चूषा (पद०—जायसी  
८। ६); अपनी बोली में मिठास घोलकर मेरी मां से उन्होंने  
कहना शुरू किया (बल०—नागा०, १४)

### बोली से अमृत टपकना

दे० बोली में मिठास घोलना

### बोहनी-बट्टा होना

पहली बिकी होनी । प्रयोग—अरे, तो कुछ बोहनी-बट्टा  
तो हो जाय (माल० (४)—प्रेमचंद, ८१)

### बोछार पड़ना

चारों ओर से सबकी फटकार पड़नी । प्रयोग—यह सब



बोझार हम्हीं पर है (राधा० प्र०—राधा० दास, ६९७); चारों ओर से होरा पर बोझार पड़ने लगी (गोदान—प्रेमचंद, ४५)

### बोने का चांद पकड़ना

छोटे व्यक्ति का बड़ा काम करने का प्रयत्न करना । प्रयोग—बाबन होकर चांद को पकड़ने की चेष्टा करना भी अपराध ही है पिताजी (मिस्रा०—कौशिक, २२६)

### व्योत करना.—लगना,—होना

कोई हिंसा बंधना या बंधाना, व्यवस्था होनी । प्रयोग—ए दई ऐसो कछ कर व्योत जु देखें अदेगित के दुग दाग (जग०—पद्माकर, १२); बंजना बिजितों को कर व्योत, बचावा मेने बारम्बार (वेदेही०—हरिऔध, २४); साज भी मछली की व्योत नहीं लगी (सिल्ली—प्रसाद, २३२); टूटने की व्योत बहतेरी हुई पर बुरा बंधन तनिक टूटा नहीं (चुमरै०—हरिऔध, ७१)

### व्योत लगना

दे० व्योत करना

### व्योत होना

दे० व्योत करना

### ब्रह्मांड फटना

(१) अधिक ताप से सिर में बहुत पीड़ा होनी । प्रयोग—बड़ी गर्मी है । इतना ही घावा, ब्रह्मांड फट रहा है (कुली०—निराला, ४५)

(२) सिर फटना ।

(समा० मुहा०—ब्रह्माण्ड चटकना)

### ब्रह्मा का अपने हाथों से संवारना

अत्यन्त सुन्दर होना । प्रयोग—कहा एक मैं आज निहारे जनु बिरबि निज हाव संवारे (राम० (बाल)—तुलसी, ३१३)

### ब्रह्मा की शाम होना

प्रलय निकट होना । प्रयोग—मेरे जिय ऐसी घावत भइ चतुरानन की सांभ (सू० सा०—सूर, ३८५३)



### भंग या भांग खाए होना

मद्ये की सी या पागलपन की बातें करनी । प्रयोग—रहें गर इन दिनों बायज की मैं पीना नहीं अच्छा तो बेशक मस्त कह बैठें कि तुमने भांग खाई है (प्र० पी०—प्र० ना० मि०, १७२); छात्र दिन X X भगवा पहननेवाले भी भांग खाए बैठे हैं (चुमते० (भू)—हरिऔध, ३)

(समा० मुहा०—भंग या भांग पिये होना)

### भंग या भांग चढ़ाना,—छनना या छानना

भांग पीना । प्रयोग—राजतन पर भले चढ़ाये भंग (चुमते०—हरिऔध, १२२); भंग छान कर महाराजजी ने खटिया पर लम्बी तानी (गु० नि०—बा० मु० गु०, २३४)

### भंग छनना या छानना

दे० भंग चढ़ाना

### भंडा या भांडा फूटना,—फोड़ करना या होना,—फोड़ना

भेद प्रकट करना या होना । प्रयोग—पर इसके साथ अपनी अंतरात्मा (कान्तेन्स) के गले पर छुरी चलाने का पाप तथा पंचों का श्राप भी ऐसा लग जाता है कि जीवन को नरकमय कर देता है और एक न एक दिन सबका भंडा फूट के सारी बेसी मिटा देता है (प्र० पी०—प्र० ना० मि०, १५५); इसलिये जब उसकी चालों का भंडा फूट गया तब भी कंस उसे एकदम मार न सका (देवकी०—रा० रा०, २३); उससमय उसे उगकी जरा भी शंका न थी कि एक दिन सारा भंडा फूट जायगा (गवन—प्रेमचंद, १८); इस सारे तप और साधन का पुरस्कार उन्हें इसके सिवा और क्या मिलता है कि अबसर पड़ने पर वह इन डकैतों का भंडा फोड़ करे (गोदान—प्रेमचंद, १७६); समाज में ऐसे-ऐसे पापों का भंडा

फोड़ खर होना चाहिये (बू०—अ० ना० ५४२); इसी कमरे में प्रेमलता का भंडाफोड़ हुआ था (मिला०—कौशिक, १६९); कर्ज का दौर शुरू हुआ और उसका बोझ बेहद हो जाने पर एक दिन भंडा फूट गया (बू०—अ० ना०, ५७८); शब्द सागरकी भूलों का भंडाफोड़ दिया है (पट्टम० के पत्र—पट्टम० शर्मा, १०५); किन्तु सुखदुःख ने भंडा फोड़ दिया था (देवकी०—रा० रा०, १२१)

(२) निराधार दोषारोपण होना या करना । प्रयोग—मेरे माथे पर दोष का भंडा न फोड़ो (गंगा०—उग्र, ४८)

भंडा या भांडा फोड़ करना या होना  
दे० भंडा फूटना

भंडा या भांडा फोड़ना

दे० भंडा फूटना

### भंगर की नाच होना

धूम-धिर कर उनी स्थान पर बने रहना । प्रयोग—फिर फिर चित्तु उतही रहनु, दूरी लाज की लाव । धंग-अंग सवि भोर में भयो भोर की नाच (बिहारी राजा०—बिहारी, १०)

### भगत बनना

भना बनना, भला बनने का डोंग करना । प्रयोग—जब देखा कि यहाँ दाल नहीं गलती, तो भगत बन गये (गवन—प्रेमचंद, ५३)

### भगवा पहनना

सन्ध्या लेना । प्रयोग—भूल में ही हो पड़े भगवा पहन जो भूलावों में नहीं अब नों भने (चुमते०—हरिऔध, १२३)

### भगवान के घर जाना,—यहाँ जाना

मर जाना । प्रयोग—इधर स्वामा की अम्मा थी, वह भी भगवान के यहाँ गई (लिली—निराला, ६५); देवीदीन ने



सखी हूँसी हंसकर कहा—बाल बच्चे तो सब भगवान के घर गये (गयन—प्रेमचंद, १३६)

**भगवान के यहाँ जाना**  
दे० भगवान के घर जाना

**भगा ले जाना**

किसी की स्त्री को अपने साथ चपके से ले जाना । प्रयोग—जो व्यक्ति इतना बदचलन निकला कि गांव के एक भले आदमी की लड़की को भगा ले गया X X ऐसे आदमी की बात का क्या विश्वास (मिसा०—कौशिक, २२३)

**भगीरथ प्रयास करना**

जी जान से प्रयत्न करना । प्रयोग—गांधी जी का भगीरथ प्रयत्न सफल हुआ (गोली—चतुर०, ३३१); मुम्हें तो मालूम है, हम लोगों ने बंगाल में प्राणियों के उद्धार के लिये कितना भगीरथ प्रयत्न किया (रंग० (२)—प्रेमचंद, १६१)

**भटका खाना**

मारा-मारा फिरना । प्रयोग—देखा देखी स्वांग धरि भूले भटका खाहि (कबीर ग्रंथा०—कबीर, २५४)

**भट्टी सा लगना या होना**

बहुत दुखदायी लगना या होना । प्रयोग—भवन मोहि भाळी सो लागत, मरति सोचहीं सोचन (सु० सा०—सुर २५६०); दुख को ली सही घुटि कैसे रहौ भयो भाकसी देखे बिना घर तो (घन० कवित—घना०, १८४)

**भड़क उठना**

(१) नाराज होना । प्रयोग—इनकी शक्ल देखते ही वह भड़क उठते हैं (मूले०—मग० तर्मा, २६१); लेकिन कथा-वाचक के मुँह से वह धध धोर हनुमान जी के लिए बन्दर और पूछ का प्रयोग सुनते ही वह धध-भक्त जी भड़क पड़े (अपनी खबर—उग्र, ११)

(२) आंदोलन का उठना ।

(३) जाग का तीव्र होना ।

**भड़भड़िया व्यक्ति**

ऐसा व्यक्ति जो बिना सोचे समझे सब कुछ सबसे कह दे । प्रयोग—मसलन मेरे मित्र ईश्वरशरण हैं जिन्हें मैं भड़भड़िया दोस्त कहता हूँ (पट्टमपराग—पट्टम० शर्मा, ४१२)

**भतार करना**

स्त्री का किसी से धर्वध सम्बन्ध करना । प्रयोग—सरग लोक ये हम चलि घाई, करन कबोर भरतारो (कबीर ग्रंथा०—कबीर, १८०)

**भद्रा उतरना या उतारना**

खूब हाँट-फटकार पड़नी या लगानी; हानि होनी । प्रयोग—हम लोगों में से जो कोई कमी उनकी इच्छा के प्रतिकूल कोई काम कर गुजरता था तो वह X X महाशय की चढ़ी तिरछी बितबन देखते ही चट भाँप लेता था कि देखें घाज हम पर क्या भद्रा उतरे (सा० सु०—बा० मट्ट, ४९)

**भभक उठना**

कोधित हो जाना । प्रयोग—मानसिंह भभक उठा (मृग०—वृ० तर्मा, ३६९); मैं गुस्से में भभक लेता हूँ और चलो, मन का गुबार निकल जाता है (कल्याणी—जैनेन्द्र, १२१)

**भभूत रमाना**

सन्धास लेना । प्रयोग—तन धूर जमी सोइ अंग भभूत रमाई (भा० ग्रं० (१)—भारतेन्दु, ४५९); तो रमाये भभूत क्या होगा जो रहा मन न राम में रमता (चुमते०—हरि-औघ, १२५)

**भय खाना**

डर जाना । प्रयोग—उनसे लोग बहुत भय खाते थे (देशाली० (१)—चतुर०, ४५); भय नहीं खाता कभी, जन्म जोर मृत्यु मेरे पैरों पर लोटते हैं (अना०—निराला, ९५)

**भर आना**

भावातिरेक में डूब जाना, घाई हो जाना । प्रयोग—शेखर जैसे भर घाया । उसने जल्दी से कहा—शशि (शेखर (१)—अज्ञेय, १७३)

**भर जाना**

(१) कोधित होना । प्रयोग—क्यों भला आप भर गये साहब कान ही तो भरे किसी ने ये (चौखे०—हरिऔघ, ४२)  
(२) चक जाना । प्रयोग—देखो कल जो भूला भूले अब तक बाँह भरी है (नूर०—मल्ल, ५८)

**भर जीभ खोलना,—मुँह खोलना**

घबलती तरह बातें करनी । प्रयोग—भेटे नहीं भरि अंक लला भरि जीभ न बोली जू बोल नवीन (केशव०—केशव, ५७); किसी से भर मुँह बोलती नहीं (परती०—रेणु, ८०)



### भर पेट

(१) जी भर कर। प्रयोग—पाद सुसाहिब राम सों, भरि-पेट बिगारी (विनय०—तुलसी, १४८)

(२) बिना किसी संकोच के।

### भर मुंह खोलना

दे० भर जीभ खोलना

### भरना

(१) भड़काना—किसी के विरुद्ध शिकायत करनी। प्रयोग—इस दावे के सबूत में कुछ कूटे सच्चे गवाह भी पेश कर दिये और बजीर को ऐसा भरा कि वह मंमूर की जान का ग्राहक हो गया (पट्टम पराग—पट्टम० शर्मा, १०६); चुन्नुमल एक तो खुद ही मुनीम जी से तंग आ गए थे, दूसरे मित्रों ने भी उन्हें खूब भर दिया था (चित्र०—कौशिक, १४)

(२) धन देना। प्रयोग—कुछ मुजावक नहीं, एक ही पाई सही; वह सब आप को भरनी पड़ेगी (रंग० (१)—प्रेमचंद, १५)

(३) दिन बिताना, सहना। प्रयोग—ऐसी बड़ी धन आनंद बेदनि देवा उपाय तैं आवे तबारे। हौं ही भरी अकली, कहौं कौन सौ, जा बिध होत है सांझ सबारे (धन० कवित्त—धना०, ५४); निहचै भाषी कौ कहो प्रतीकार जा होइ। तो नल से हरिचन्द से विपत न भरते कोई (धुं० स०—वृन्द, ३८)

(४) किसी बात को मनवाना या मन में बैठाना। प्रयोग—वह अहीर रुपए जरूर लाएगा। ताहिर को आज ही से भरना शुरू कर दो (रंग० (१)—प्रेमचंद, १०६)

### भरमा-भरमी

अनजाने, बिना सोचे-जांचे। प्रयोग—साला हुरदधान ने भरमा भरमी धपना संदेह प्रकट करके अंत में अपनी सफाई जताई (परीक्षा—श्री० दास, २७)

### भरा घर

सम्पन्न परिवार। प्रयोग—भरे घर से भरे घर में आई थी (भारती०—रा० रा०, १४८)

### भरा हुआ गला

भावातिरेक से पूर्ण आवाज। प्रयोग—उन्होंने भरे हुए

गले से कहा—सामन्त बीज गुप्त इस उत्सव में एक बड़ा रहस्य छिपा था (चित्र०—भग० वर्मा, ८४)

### भरी जवानी

पूर्ण यौवनावस्था। प्रयोग—हे हो उसकी भरी जवानी। यह क्या तुमने दिल में ठानी (गुं० नि०—दा० सु० गु०, ७१४); इसी मदिरा के कारण सिकंदर ने भर जवानी में अपने प्राण खो दिये (परीक्षा०—श्री० दास, ११३); भरी जवानी में भी उससे हो न सकेगी ऐसी भूल (मर्म०—हरिप्रोच, १५); इनके प्रतिरिक्त हसीनाबाई और नसीम बाई दो उगती हुई संगीत-नारिकाएं अपनी भरी जवानी में ही चलनाह को प्यारी हो गईं (ये कौठे०—अ० ना०, १०७)

### भरी बैठना

गुस्से से पूर्ण। प्रयोग—हम तो तुम जानो अकि भरे बैठि रहन बतने दिनन ते, मोका पादके हमहूँ अपने बिउ केर सब कुछ कहि सुनावा (बुंद०—अ० ना०, ४९९)

### भरे घर का चोर

किसी वस्तु की अधिकता देखकर हतबुद्धि हो जाना। प्रयोग—जित देखौं मन भयो तितहीं कौ, मनो भरे को चोर री (सु० सा०—सूर, ७५७); कोउ इन नैननि अटकि गये हवे तोभ तुभारे, भरे भवन के चोर भये बदलत हो हारे (नंद० प्रक्षा०—नंद०, १८२)

### भरे मुंह गिरना

(१) जानुर होना, लालाबित होना। प्रयोग—बाल्य विवाह से यह भी बड़ी हानि है कि “अयोध्या” के नियमानुसार केवल हाड़ मात्र देल लड़का या लड़की के निचे लोग भरे मुंह गिरते हैं, जैसे मुरगी खकार पर टूटे (मट्ट नि०—दा० मट्ट, १९)

(२) मुंह के बल गिरना; परास्त होना। प्रयोग—जिस जिस बात के लिए गिर उठाते हैं भरे मुंह गिरते ही जाते हैं (मट्ट नि०—दा० मट्ट, ८१)

### भरे होना

(१) नाराज होना, कोप दबाए हुए होना। प्रयोग—बहुत भरे हुए हैं घाप ठाकुर साहेब, कहिए क्या बात है? (मूले०—भग० वर्मा, ४५)

(२) बहुतायत से होना।



### भरोसा जाना

विश्वास होना । प्रयोग—मुनि सुत बचन भरोसा आवा (राम० लं)—तुलसी, ९१६)

### भर्राया स्वर

रलाई आने के कारण भारी हुआ स्वर । प्रयोग—स्वैतांक ने भराये स्वर में उत्तर दिया—स्वामी, मैंने आप के साथ विश्वासघात करने का अपराध किया है (चित्र०—भग० वर्मा, २८); नीलमणि को घावाज भर्राई हुई थी (ब्रह्म—दे० स०, ९०)

### भला ताकना

भला चाहना । प्रयोग—जस बीसना मोर भल ताका । तस फलु उन्ही देउं करि साका (राम० ब्र)—तुलसी, ४०३)

### भव तरना

संसार से मुक्ति-लाभ करना । प्रयोग—जे मन नहीं तजै बिकारा, तो क्यूँ तिरिये भौ पारा (कबीर ग्रंथा०—कबीर, १४५); सोई जस माइ भगत भव तरही (राम० बाल)—तुलसी, १३५)

भव पाश काटना, भव-बन्धन काटना,—खोलना सांसारिक माया-मोह से मुक्त होना । प्रयोग—रघुपति विमुख जतन कर कोरी । कवन सकइ भव बंधन छोरी (राम० बाल)—तुलसी, २०९); जामु नाम जपि मुनहु भवानी, भव बंधन काटहि नर जानी (राम० सु०)—तुलसी, ८१५); विरिजा जामु नाम जपि मुनि काटहि भवपास (राम० लं)—तुलसी, ९४३)

(समा० मुहा०—भव-बंधन छुड़ाना)

### भव बंधन काटना

दे० भवपाश काटना

भव-बंधन खोलना

दे० भवपाश काटना

### भव-बंधन छूटना

सांसारिकता से मुक्त होना । प्रयोग—गाथ संगति मिलि करि बसंत, भौ बदन छूटे जुग जुगंत (कबीर ग्रंथा०—कबीर, २१५); मुक्त भए छूटे भव बंधन (राम० लं)—तुलसी, १००२)

### भव-ताप निवारण करना

सांसारिक बंधनों या दुखों से मुक्त करना । प्रयोग—बहु पाप परबत छेदना, भौ ताप दुरिति निवारणा (कबीर ग्रंथा०—कबीर, २१८)

### भव-सागर तरना,—से पार करना

(१) मुक्ति देना या पाना । प्रयोग—भौसार अति बार न पारा, ता तिरवे का करहु बिचारा (कबीर ग्रंथा०—कबीर, २३४); जो न तरै भव सागर नर समाज भ्रम पाइ (राम० सु०)—तुलसी, १०७०); मेरा यही मनोरथ है कि राज-सुय यज्ञ कर आपको अर्पण करूँ तो भवसागर तरूँ (प्रेम सा०—ल० ला०, २९०)

(२) जीवन-यापन में सहायता देना । प्रयोग—यही तुम्हारे जीवन का मुल और संतोष है... यही भवसागर से पार करा देगा (बीने०—रा० रा०, ९९)

(समा० मुहा०—भव-समुद्र तरना)

### भव-सागर से पार करना

दे० भव-सागर तरना

### भविष्य काला होकर सामने नाचना

भविष्य अंधकारमय जान पड़ना । प्रयोग—भविष्य एक-दम काला होकर कमला के सामने नाच रहा था (बीने०—रा० रा०, ११४)

### भविष्य हाथ में होना

भविष्य निर्माण की क्षमता और दायित्व होना । प्रयोग—हमारे महान देश का भविष्य हमारे हाथों में है (अशोक—ह० प्र० द्वि०, ४६)

### भवे तनना

कोपित होना । प्रयोग—उसकी भवे तनी थी । मुँह कसा हो रहा था (सितली—प्रसाद, ९९)

### भस्म चढ़ाना,—माँजना

(१) शरीर पर भस्म लगाना । प्रयोग—बदन घी चंदन देहा । भस्म चढ़ाइ कीन्ह तन लेहा (पद०—जायसी, १११८) (÷); जे अंग रचे बसन प्राभूपन कैसे भस्म चढ़ावे (सु० सा०—सुर, ४२०४) (÷); माँचे जटा पहिरि उर कंथा, स्थावहु भस्म दग मुख माँचे (सु० सा०—सुर, ४५०१)



(२) सन्यास ले लेना। प्रयोग—देखिए प्रयोग (१) में (—)

(समा० मुहा०—भस्म रमाना)

भस्म मांजना

दे० भस्म चढ़ाना

भांजी मारना

बीच में रुकावट डालना। प्रयोग—तो घाप अलग बैठिए। हां, बीच में भांजी न मारियेगा (मान० (१)—प्रेमचंद, ६७); चाचा तुम बीच में भांजी मत मारो, मैं इस समय बिना कुछ खाये यहां से टलूंगा नहीं (मिल्ला०—कौशिक, ६९)

(समा० मुहा०—भांजी डालना)

भांड भर कर पाप करना

बहुत पाप करना। प्रयोग—बहुत भरोसो जानि तुम्हारी, घब कीन्हे भरि भांडी (सू० सा०—सूर, १४६)

भांवर पड़ना या होना

(१) विवाह में अग्नि की प्रदक्षिणा होनी। प्रयोग—करि होम विधिबत गांठि जोरी होन लागी भांवरी (राम०—(वाल)—तुलसी, ३३०); घब तेरी भावरें ठोक मुहूर्त में पड़ सकेंगी (विप०—प्रेमो, १०७)

(२) विवाह होना।

भांवर फिरना,—लेना

विवाह होना। प्रयोग—रामदेव संगि भांवरि लैहूँ, धनि धनि भाग हमार (कबीर ग्रंथा०—कबीर, ८७); नांनं रंगे भांवरि फेरी, गांठि जोरि बाबे पति ताई (कबीर ग्रंथा०—कबीर, १६५)

भांवर लेना

दे० भांवर फिरना

भाई चारा

मैत्री का सम्बन्ध। प्रयोग—मैं इन्साफ के मामले में भाईचारे को पास नहीं आने देता (परीक्षा०—श्री० दास, १३२); गुरु भाई स्वामी दयानन्द जी से आपका पनिष्ठ भाई चारा था (पद्मपराग—पद्म० शर्मा, १३३); पंदा जी जब आपसे भाईचारा हो गया, तो क्या परदा है (रंग० (१)—प्रेमचंद, १०२)

भाग-दौड़ की जिंदगी

धर्मव्यस्त जीवन। प्रयोग—देवकान्त ने स्वयं ही तो बताया था कि वहां का जीवन तो भागदौड़ का जीवन है (ग्रह०—दे० स०, ४५)

भागते भूत की लंगोटी

दूबते धन में से जो कुछ भी बोड़ा था। प्रयोग—लेकिन घाप ठहरे मूठों के शाहूपाह, इसलिए भागते भूत की लंगोटी को ही भली मानता हूँ (ये कोठे०—अ० ना०, २०६); एक हजार मिलते हैं ले लो, भागते भूत की लंगोटी ही भली (रंग० (२)—प्रेमचंद, १६१)

(समा० मुहा०—भागते की लंगोटी)

भागना

स्वीकार न करना, दूर हटना। प्रयोग—तुम परिश्रम तो बढ़ा करते हो कलाधर × × फिर रुपए पैसे से क्यों भागते हो ? (कला०—उग्र, १३)

भागे-भागे फिरना

(१) कतराना। प्रयोग—क्या बात है, क्या वह प्रयोज (प्रस्ताव) ही नहीं करते, या तू ही उनसे भागी-भागी फिरती है (रंग० (१)—प्रेमचंद, ३२१)

(२) दौड़-धूप करना।

भाग्य अंधेरा होना

बदकिस्मती होनी। प्रयोग—भाग तो तुम्हारा मुझ जैसा अंधेरा नहीं है, देखो उसमें अब उजाला आ रहा है (वीने०—रा० रा०, १०)

भाग्य-उघड़ी

सौभाग्यशाली। प्रयोग—हर्व है सोऊ घरी भाग- उघरी अनंदघन मुरम बरसि लाल देखिहौ हरी हमै (घन० कवित—घना०, ६०)

भाग्य का कुअंक दूर करना

बदकिस्मती को मिटा देना। प्रयोग—मंत्र महामनि विषय व्याल के मेटल कठिन कुअंक भाल के (राम० (वाल)—तुलसी, ४४)

भाग्य का रोना रोना

अपने प्रतिकूल भाग्य को कोसना। प्रयोग—बहु कभी भाग्य का रोना नहीं रोती थी (मान० (१)—प्रेमचंद, ४३)

(समा० मुहा०—भाग्य को रोना,—कोसना)



### भाग्य का सम्मुख होना,—साथ देना

भाग्य अनुकूल होना । प्रयोग—नौकरी की तलाश में चम्बई की खाक छान डालो, मगर भाग्य ने अब तक कहीं साथ नहीं दिया था (दे० कोठे०—अ० ना०, २३)

### भाग्य का साथ देना

#### दे० भाग्य का सम्मुख होना

#### भाग्य की लकीर

भाग्य में जो हो । प्रयोग—जो लकीरें हैं लकीरें भाग की कब न मूठी में हमारी बे रहों (चुमते०—हरिऔध, ५)

#### भाग्य के धनी,—बली

बड़े भाग्यवान । प्रयोग—भाग्य के बली हो तुम गुरु प्रसाद (मान० (४)—प्रेमचंद, ५१)

#### भाग्य के बली

#### दे० भाग्य के धनी

भाग्य खुलना,—चमकना,—जागना,—लौटना  
भाग्योदय होना । प्रयोग—सोए बहुतेरों, मेरो सोच हू निबेरी हरी, हों त जानौ कब थी उनीदे भाग ! जागीने (घन० कवित्त—घना०, ६७); आज मेरे भोरहि जागे भाग (भा० प्र० (२)—भारतेंद्र, २५७); भगवान चाहे ने तो तुम्हारे भाग खुल जायेंगे, ऐसे चम्के लच्छन हैं कि बाह (गोदान—प्रेमचंद, ३५); अब इस देश का भाग्य लौट गया है (झांसी०—वृ० वर्मा, १९); कोरी परीक्षा नहीं है । भाग्य जागने वाला है (मृग०—वृ० वर्मा, १५५); जगंगा भला न किसका भाग्य लगेगा किसे न प्यारा देश (मर्म०—हरिऔध, २२); राजासाहब का भाग्य इतने दिनों के बाद जागकर रहेगा (पद्म० के पत्र—पद्म० शर्मा, ६१); जब न हित की आंख खुल सकी खोले किस तरह भाग खुल सके कोई (चुमते०—हरिऔध, ४९)

### भाग्य खोटा होना

बुरी किस्मत होनी । प्रयोग—हा ! मेरे ऐसे खोटे भाग्य हैं कि कोई भी मुझे उत्तर नहीं देता (राधा ग्रंथा०—राधा० दास, ६०३); तुम्हारे भाग्य ही खोटे हैं तो मैं क्या करूँ (गोदान—प्रेमचंद, २०)

#### भाग्य चमकना

#### दे० भाग्य खुलना

### भाग्य छीनना

हिस्सा ले जाना; सब कुछ ले लेना । प्रयोग—बड़ी चतुर है यह स्त्री, पांच गुट्टों में भिलारी का भाग्य छीन ले गई (सुहाग०—अ० ना०, १३)

### भाग्य जागना

#### दे० भाग्य खुलना

#### भाग्य ठोंकना

भाग्य के नाम रोना । प्रयोग—भाग को तो ठोंकते ही हम रहे । आज छाती ठोंक कर भी देख लें (चुमते०—हरिऔध, ९२)

### भाग्य तिरछा होना

विधि प्रतिकूल होना । प्रयोग—तिरछी करम भयो पूरव की, प्रीतम भयो पाइ की बेरी (सू० सा०—सूर, १४२५)

### भाग्य-दशा खोलना

घनकूल बनाना । प्रयोग—सोचि निवारि करी मन धानंद मानो भाग दसा विधि खोली (सू० सा०—सूर, ४५९४)

### भाग्य पलटा खाना,— फिरना

स्थिति में परिवर्तन होना । प्रयोग—भूषण कहत सब हिंदुन को भाग फिरि चहे तें कुमति बनकता किरान सानी में (भूषण ग्रंथा०—भूषण, १५२); अंत को स्वर्गीय बाबू हरिश्चंद्र जी के समय में हिन्दी के भाग्य ने पलटा खाया (गु० नि०—वा० मु० गु०, ३१४); जिसके घर सुभागी जायगी, उसके भाग्य फिर जायेंगे (मान० (१)—प्रेमचंद, २५७)

(समा० मुहा०—भाग्य पलटना)

### भाग्य फिरना

#### दे० भाग्य पलटा खाना

#### भाग्य फूटना

बदकिस्मती होनी; दुर्दिन या विपत्ति घानी । प्रयोग—हा ! हमारे पूरे भाग फूटे जो ऐसे पति मिले (राधा० ग्रंथा०—राधा० दास, ५६०); पहली बार कन्नगी के सुहागरात के दिन जब उसका भाग्य फूटा था तब बहुत विवश होने पर भी उसे पेरियनायकी का बल था (सुहाग०—अ० ना०, १७१); फूट गया भाग या समय ने है पलटा खाया है (मर्म०—हरिऔध, १५१)

### भाग्य बड़ा होना,— भरा होना

भाग्यवान होना । प्रयोग—जमुमति रानी सब जग जानी ।



भाग्य भरा होना

५४२

भारी पांव से चलना

भाग भरी सुर नरनि बखानी (नंद० प्र० ११४);  
भाग बड़ो वहि भावति को, जेहि भावते लै, रंग चीन  
बसाये (शब्द०—देव, २४)

(समा० मुहा०—भाग्य बली होना)

भाग्य भरा होना

दे० भाग्य बड़ा होना

भाग्य में उजाला होना

खच्छे दिन आना । प्रयोग—भाग तो तुम्हारा मुझ जैसा  
खधेरा नहीं है, देखो उसमें उजाला आ रहा है (बौने०—  
रा० रा०, १०)

भाग्य में लिखा होना,— लीक लिखी होनी

किस्मत में होना । प्रयोग—प्राण पति सौ नेह कीन्ही, भाग  
लिखी सु पाइयें (सु० सा०—सूर, ४४८३); जो बिधि भाग में  
लीक लिखी मुबड़ाई बड़ न घट न घटाई (जग०—पद्माकर,  
६९); सोई मिले अरु तब मिले लिखि रही भाग जो (राधा०  
प्र०—राधा० दास, ५९); हमारे भाग में यही लिखा है,  
जब तक जीयेगी, इसी भाति कलेजा कूटती रहूंगी (ठेठ०  
—हरिऔध, ३०); लिखी भाग्य में तेरे जो बस वही मिलेगी  
मधुशाला (मधु०—वचन, पद ७०)

(समा० मुहा०—भाग्य में लिखा होना)

भाग्य में लीक लिखी होनी

दे० भाग्य में लिखा होना

भाग्य लक्ष्मी सो जाना, भाग्य सो जाना

भाग्य का प्रतिकूल होना । प्रयोग—सोए बहुतेरो मेरी सोन  
हू निवेरो हूरो, हौ न जानो कब धौ उनीदे भाग जगौने  
(घन० कवित्त—घना०, ६७); राज्य उलट जाएं, भूपों की  
भाग्य सुलक्ष्मी सो जाएं (मधु०—वचन, पद २१)

भाग्य लौटना

दे० भाग्य खुलना

भाग्य साथ होना,—सीधा होना

भाग्य अनुकूल होना । प्रयोग—मेरे पास इतनी लक्ष्मी  
थी बेटी, कि यदि भाग्य सीधा होता तो घाजीवन दूधों  
नहाती (सुहाग०—अ० ना०, ४०); शूरवीर भी है और  
भाग्य उनके साथ है (झांसी०—वृ० उर्मा, २५)

भाग्य सीधा होना

दे० भाग्य साथ होना

भाग्य सो जाना

दे० भाग्य लक्ष्मी सो जाना

भाड़ में जाना

नष्ट होना । प्रयोग—जो अस्त्र विजय न दिलाये, वह  
भाड़ में जाय (अम्ब०—रा० वे०, ४७); भाड़ में गई टोही  
(मुग०—वृ० उर्मा, ३९४)

भाड़ में भोंकना

फेंकना, नष्ट करना । प्रयोग—उस उलझन में संतोष  
था, साम्बना थी, एक छिपा दर्द था जो जानता है कि  
अपने को स्वेच्छया भाड़ में भोंक रहा हूँ (शैखर (२)—  
अज्ञेय, २०४); ऐसे निठले से तितली का स्वाह करके उस  
लडकी को क्या भाड़ में भोंकना है (तितली—प्रसाद, १०३)

(समा० मुहा०—भाड़ में डालना)

भाड़ लीपकर हाथ काला करना

बुरा काम करके बुराई पाना । प्रयोग—देख लेना, भाड़  
लीपकर हाथ काला ही रहेगा (मान० (१)—प्रेमचंद, ६)

भाड़े के टट्टू होना

पैसा लेकर काम करना । प्रयोग—मेरे बित्त में घाज तक  
मिहनताना पाने का ध्यान नहीं हुआ है, क्यों कि मुझे  
किराये के टट्टू बनने से घृणा है (मा० प्र० (१)—भारतेन्दु,  
६३८)

भात देना

(१) भात का भोज देना (दंड स्वरूप) । प्रयोग—बिरादरी  
में यह बात फैलेगी, तो हुक्का बंद हो जायगा, भात देना  
पड़ेगा (रंग० (१)—प्रेमचंद, १९२)

(२) विवाह में बर या कन्या के मामा का चावल एवं घोर  
सामान देना ।

(समा० मुहा०—भात भरना)

भार उठाना

उत्तरदायित्व अपने ऊपर लेना । प्रयोग—दूसरों का भार  
तो उठाऊंगा, अपने ही लिए दूसरों का मुंह ताकता हूँ  
(गवन—प्रेमचंद, १६१)

भारी पांव से चलना

धीरे धीरे बेमन से चलना । प्रयोग—भारी पावों चबकर  
कमला ऊपर गई (बौने०—रा० रा०, ३६)



### भारी बात

महत्वपूर्ण, सारगर्भित बात । प्रयोग—कब न भारी बात कह भारी बने बात हलकी कह बने हलके न कब (बोलो—हरिप्रोद्य, ११०)

### भारी लगना

बोझ मालम होना । प्रयोग—मेरी रोटियाँ भारी हैं, न दें (गोदान—प्रेमचंद, २५७)

### भाला तौलना

भावा चलाना या चलाने का अभ्यास करना । प्रयोग—हल की मृत्तिया पर हाथ रखनेवाले किसान तलवार की मृत्तिया पकड़ने के लिए मजबूर हो गये थे, बड़ी तौलने वाले भावे तौलते थे (मान० (३)—प्रेमचंद १४४)

### भाव के भूखे

प्रेम चाहने वाले । प्रयोग—भोरो भलो, भले भाव्य को भूखो, भलोई कियो मुमिरें तुलसी को (कवि०—तुलसी, २०३)

### भाव गिरना

दानों में कमी होनी । प्रयोग—तब से इसकी बिक्री कम हो गई इससे भाव भी गिर गया (राधा० प्रश्ना०—राधा० दास ३२३); लेकिन इस साल अनावास ही जिनमें का भाव गिर गया (कर्म०—प्रेमचंद, २९१)

### भाव चढ़ना

राम बढ़ जाना । प्रयोग—तम्बाकू, धान, पाट घोर मिर्चा का भाव एक साल चढ़ गया (मैला०—रेणु, २८५); भाव चढ़ गया है तो मजदूरी भी तो चढ़ गयी है (प्रेमा०—प्रेमचंद ५१)

(समा० मुहा०—भाव ऊँचा होना)

### भाव बताना

(१) संकेत से मन का भाव प्रगट करना । प्रयोग—कबहुँक धार्गे, कबहुँक पाछे, नाना भाव बतावें (सूरसा०—सूर, २०५८)

(२) जबानों समझाना ।

(समा० मुहा०—भाव देना)

### भावनाएं सोई होना

इच्छाएं दबी रहनी । प्रयोग—वह सोचा हुआ सा उस पोंसले की घोर चल देता है जिसमें उसकी सारी भावनाएं सोती हैं (शेखर (१)—अज्ञेय, १६१)

### भाषा-बद्ध करना

लोक प्रचलित भाषा में विचार या भाव प्रगट करना । प्रयोग—भाषा-बद्ध करवि में सोई मेरे मन प्रबोध जेहि होई (राम० (बाल)—तुलसी, ४२)

### भिगो-भिगोकर लगाना, भीगा हुआ चमरोधा लगाना

खूब डांटना-फटकारना; दुर्गति करना । प्रयोग—उसके जी में एक ज्वाला सी उठी कि इसी वक्त अंदर जाकर सास को और सालों को भिगो भिगोकर लगाये पर जल करके रह गया (मान० (१)—प्रेमचंद, १३५); देखिए कि घाप लोगों के दुश्मन ऊँची जातिवालों पर बड़ी बड़ी पगड़ी वालों पर किस तरह भीगा हुआ चमरोधा लगाया है, मैंने (परती०—रेणु, ३९५)

(समा० मुहा०—भिगो भिगोकर जूता मारना,—देना, भिगो कर जूता मारो, भीगा हुआ जूता मारना, भीगे हुए जूते से मारना)

### भिड़ का छत्ता छेड़ना

खतरनाक या पाजी घादमी से बचकर करना । प्रयोग—इससे हिन्दी में आलोचना करना भिड़ के छत्ते को छेड़ लेना है (गु० नि०—वा० मु० गु०, ४२७); भिड़ों के छत्ते को छेड़ने से क्या लाभ ? (झुठा० (२)—यशपाल, ४०६)

### भिड़ना

लड़ना, सामने मुकाबले में आना । प्रयोग—शिव से भिड़ने जाकर एक बार यह पिट चुके थे, विष्णु से डरते थे और बुद्धदेव से भी टक्कर लेकर लौट घाय्ये थे (अशोक०—हु० प्र० द्वि०, ९)

### भीग कर देखना

प्रेमपूर्ण दृष्टि से देखना । प्रयोग—जब कल गाना-नाचना हो रहा था, तब वह मेरी ओर तुम्हारी तरफ बार-बार देख रहा था कभी-कभी भीम-भीम कर रीझ-रीझ कर (मृग०—दृ० वर्मा, २१)

### भीम जाना

स्नेहसिक्त होना । प्रयोग—इस विश्वास पर मैं भीम जाता हूँ (जय०—जैनेन्द्र, १९०); भीना के बंगाली घाट मास्टर बिमल बाबू से मिलोगे तो पहली ही मुलाकात में भीम जाओगे (कठ०—दे० स०, ३९)



### भोगता स्वर

भावपूर्ण करण स्वर । प्रयोग—कल्याणी भोगते-कापते स्वर में कहने लगी... (बूँदो—अ० ना०, १०७)

### भोगा हुआ चमरींधा लगाना

दे० भिगो भिगोकर लगाना

### भीगी बिल्ली होना

सहमा हुआ, दबा हुआ । प्रयोग—भाइयों के सामने भीगी बिल्ली बन जाता है, पापी कहीं का, हत्यारा ! (गादान—प्रेमचंद, १११); हमीमें x x भीगी बिल्ली है घोर काठ के उल्लू है (चुमते० (मू०)—हरिऔध, ४); उनके पीछे पीछे भीगी बिल्ली की तरह नौकर घा रहा है (भोर०—जग० माथुर, १०४)

### भीगी हंसी

स्निग्ध हंसी । प्रयोग—एक मुहूर्त के लिए एक भीगी हंसी की रेखा उनके मूले अधरों पर खेल गई (बाण०—ह० प्र० द्विव०, १३८)

### भीड़ छंट जाना

भीड़ कम हो जानी । प्रयोग—प्रतीक्षा में खड़े हुए निराश सामंतों की भीड़ छंटने लगी (चित्र०—भग० वर्मा, ५९)

### भीड़ पड़ना

मुसीबत, संकट घाना । प्रयोग—देख लें आंख क्यों किसी की हम पड़ गये भीड़ क्यों कुड़े काखें (बोल०—हरिऔध, ३५)

### भीत के बिना चित्र बनाना

बे-सिर-पैर की बात करना । प्रयोग—तात रिस करत आता कहे मारिहों, भाति बिन बिज तुम करत रेखा (सुर०—हि० श० सा०)

### भीत में दीड़ना

अपनी सामर्थ्य से बाहर अवस्था घसंभव कार्य करना । प्रयोग—बालि बली खरदूषन और घनेक गिरे जे जे भीत में दोरे (तुलसी—हि० श० सा०)

### भीतर की आंखें अंधी होना

आंतरिक अनुभूति शून्य होना । प्रयोग—तब हुआ क्या बाहरी आंखें बचे जब कि आंखें भीतरी अंधी हुईं (चुमते०—हरिऔध, ३९)

### भीतर से पोला होना

सार या तथ्य न होना । प्रयोग—दीग हांकते रहते हैं पर भीतर से हैं पोले (मर्म०—हरिऔध, १२८)

### भीतर-बाहर

हृदय के अंदर और बाहर । प्रयोग—राम नाम मनि दीप यह जोह देहरी द्वार, तुलसी भीतर बाहरहुं जो बाहिसि उजियार (राम० (बाल)—तुलसी, ३२)

### भीतरी आंख अंधी होना,—फूटना

ज्ञानहीन होना । प्रयोग—जो गई है बाहरी आंखें बिगड़ तो गई क्यों फूट आंखें भीतरी (चुमते०—हरिऔध, ९२); बाहरी आंखें गई पहले ही रहीं भीतरी आंखें भी अब अंधी हुईं (चुमते०—हरिऔध, १२४)

### भीतरी आंख फूटना

दे० भीतरी आंख अंधी होना

### भुजा उठाकर कहना

(१) विश्वास और दृढ़ता से कहना । प्रयोग—भुजा टेकि के पाँहत बोला । छाड़हि देस बचन जो होला (जायसी—हि० श० सा०); चल न शत्रु कुल सन बारि-आई । सत्य कहउं दोउ भुजा उठाई (राम० (बाल)—तुलसी, १७५); जो भक्त नहीं है, जो अनुभव द्वारा साक्षात्कार किये हुए सत्य में विश्वास नहीं रखते, वे केवल तर्क में उलझ कर रह जाते हैं पर जो भक्त है, वे भुजा उठाकर घोषणा करते हैं—'धगुगहि सगुगहि नहि कछु भेदा' (तुलसीदास) (कवीर—ह० प्र० द्विवि०, २२१)

(२) प्रतिज्ञा करना ।

### भुजा टेक कर कहना

दे० भुजा उठाकर कहना

### भुजा ठोक कर लड़ना

वीरता पूर्वक ललकार कर लड़ना । प्रयोग—कहै पद्माकर प्रचंड जो परेनौ तो उमंड करि तोसों भुजदंड ठोकि लरिहौ (जग०—पद्माकर, ७२); बरनि तरयि, भुज ठोकि के गरजि, कही महाबली बालि के कुमार पाउँ रोपि के (क० र०—सेनापति, ९०)

### भुजा भर भेंटना

प्रेमपूर्वक घालिगन करना । प्रयोग—भेंटत भुज भरि भाइ भरत सो (राम० (अ)—तुलसी, ६७४); भरि गई भुज दुइ



भुजाएं फड़क उठना

करि घन अंग उमनि उमनि मुकुमारी (भा० ग्रं० (२)—  
भारतेन्दु, ६११)

भुजाएं फड़क उठना

(१) युद्ध करने के लिए परम उत्साह होना । प्रयोग—  
फरक उठी सबकी भुजा, खरक उठी तलवार (भा०  
ग्रं० (२)—भारतेन्दु, ८००); बीरों की दक्षिण भुजाएं बार-बार  
आप ही के भरोसे फड़क रही हैं (राधा० ग्रंथा०—राधा०  
दास, ६७२)

(२) कुछ करने का उत्साह होना ।

भुजाओं में बांध लेना,—भर लेना

कसकर आलिंगन करना । प्रयोग—‘बीर भुजनि भरि लई’  
सबनि जै नै उर लई’ (मंद० ग्रंथा०—मंद०, १३); इरीचंद,  
गहि लोजे भुज भरि नाही तो प्रण जात (भा० ग्रं० (२)—  
भारतेन्दु, ५७); दुख में जनुजों को भुज भरने बाळंगा  
(चक्र०—दिनकर, २८५)

दे० भुजाओं में भर लेना

भुजाओं में बांध लेना

भुट्टे सा उड़ाना

साफ काट डालना । प्रयोग—भुट्टे की तरह गरदन उड़ी  
हाथ का तोता उड़ा जी उड़ गया (बोल०—हरिऔध, २०६)

भुन जाना

भीतरही भीतर कुड़कर रह जाना । प्रयोग—परस्पर  
सामना होते ही जिस क्षण दोनों बच्चों ने कहा—‘गूड  
ईविनिंग’, उसी क्षण में शेखर भुन गया (शेखर (१)—  
अज्ञेय, १२१)

(समा० मुहा०—भुन भुन कर रह जाना)

भुरकुस करना

मारते-मारते बेदम कर देना या कबूतर निकालना । प्रयोग—  
‘यो लोहों की लाठी आदि नाना प्रकार के वस्त्रों से मार  
मार भुरकुस कर डालते हैं (सं० ग्रंथा०—सं० मिश्र, २६)  
पाटं भुलते ही परशुराम वेशधारी मेरा भाई स्टेज ही पर  
मुझे पमकाता कि चल घनदर, तेरा भुरकुस न कर दूँ तो  
मेरा नाम नहीं (अपनी खबर—उग्र, ५६)

(समा० मुहा०—भुरकुस निकालना)

भुला लेना

बहकाना; बनावटी बातें कह कर सत्य की जानकारी से  
दूर रखना । प्रयोग—‘त्यागे फिरत सकल कुसुमावलि,  
मालति भुरं लए (सू० सा०—सूर, ४१२४)

(समा० मुहा०—भुलावा देना)

भुस में आग लगाकर तमाशा देखना

भगवा या भंभट लगाकर घलग हो जाना तथा परिणाम  
का मजा लेना । प्रयोग—‘यहां तो तुम्हीं हो, साहब तो नहीं  
बैठे हैं । वह तो भुस में आग लगाकर दूर से तमाशा देखने  
घाई गई तो तुम्हारे सिर जायगी (रंग० (१)—प्रेमचंद,  
१०७)

भंकना

क्यबं बोलना । प्रयोग—‘लग गई यूरोपियन रंगत भली क्यो  
बनें हिन्दी गये भंका करे (चुमते०—हरिऔध, ११७)

भंज डालना या भून डालना

बहुत तंग करना । प्रयोग—‘रामहि वाम समेत पठे बन कोष  
के भार में भूजों भरत्वहि (केशव० (२)—केशव, २६४);  
जो भले, कर के भलाई बन सके दूसरों को जो नहीं है  
भुजते (बोल०—हरिऔध, २४२)

भंजी या भूनी भांग न होना

बहुत गरीब होना, पास में कुछ भी न होना । प्रयोग—  
‘भंजी भांग नहीं घर भीतर का पहिनी का खाई (भा० ग्रंथा०  
(३)—भारतेन्दु, ८६२); पें मियां लोग बाहर ही से उजले  
कपड़े पहने दिखाई देते हैं । घर में भूनी भांग नहीं होनी  
(रंग० (१)—प्रेमचंद, ३७९); मेरा भाई जब परदेश होता  
और घर में भूनी भांग भी न होती तब आई मूहल्ले-  
टोले से मन-आध मन मेहूँ ले जाती (अपनी खबर—उग्र,  
३७)

भूख प्यास चली जाना

खाने पीने का होश भी न होना; आत्म-विस्मृत हो जाना ।  
प्रयोग—‘देखि रूप सरबर कर गइ पिआस औ भूख (पद०—  
जायसी, २७)

(समा० मुहा०—भूख प्यास न लगना)

भूख बुझ जाना

(१) भूख का मिटना । प्रयोग—‘व्यर्थ मरतु जनि गाल



बजाई। मन मोदकन्हि कि भूख बुलाई (राम० (बाल) — तुलसी, २५३) (÷)

(२) इच्छा का अंत हो जाना। प्रयोग—देखिए प्रयोग (१) में (÷)

### भूख मिटाना

(१) इच्छा पूरी करनी, नृष्टि करनी। प्रयोग—फिर जिस भाषा से करोड़ों जनता अपनी मानसिक भूख मिटाने की आशा करती हो, उसमें इतना भी न हो तो कोई कैसे समझे कि सचमुच ही हम इस भाषा से प्रेम करते हैं (अशोक०—ह० प्र० द्वि०, १६२)

(२) कुछ खाकर भूख मिटाना।

(समा० मुहा०—भूख बुझाना)

### भूख से आंख नाचना

भूख से आंखें निकली पड़ती। प्रयोग—सड़े मूँडे डंडे के बल माल भले ही चाब लें, पर भूख से जिसकी आंखें नाच रही हैं, उनको वे कानी कौड़ी भी देने के रवादार नहीं (चुमते० (मु)—हरिऔध, ३)

### भूख होना

इच्छा होनी। प्रयोग—भैया, मुझे नाम की भूख नहीं है (रंग० (३)—प्रेमचंद, १६४); बड़ गई और भी मुँहों की भूख जब कि लिचड़ी हुए हमारे बाल हैं (बोल०—हरिऔध, ४)

### भूखा होना

इच्छुक होना। प्रयोग—हम तो कान्हू केलि की भूखी (सु० सा०—सूर, ४३००); नाहिन रामु राज के भूखे। धरम धुरीत विषय रस खख (राम० (अ)—तुलसी, ४१९); उसने सारी उमर एकान्त में बैठकर विचार विषा × × वह बड़ाई का भूखा न था (गु० नि०—वा० मु० गु०, ४९५); मैं उनके बखान की भूखी नहीं हूँ, अपना बखान धरे रहें (गोदान—प्रेमचंद, २०); मैं उनके साथ के लिए हर वक्त भूखा रहता था (व्याग०—जेनेन्द्र, ९)

### भूखो आंखें

(१) देखने की तीव्र इच्छा। प्रयोग—फिर वह भूखी आंखों से पथ निगलने लगा (शेखर (२)—अज्ञेय, ६५)

(२) वासनामय दृष्टि।

### भूड़ के खेत पर गोता मारना

ऐसे काम से कुछ पाने की आशा करना जहां से प्राप्त होना असंभव हो, बालू से तेल निकालना। प्रयोग—कित पट पर गोता मारत हो, आप भूड़ के खेत (सू० सा०—सूर, ४२१४)

### भूत उतरना,—भागना

(१) भूत का समाप्त होना। प्रयोग—आप कहा करते हैं कि वंशव हो जाने पर जातपात का भूत भाग जाता है (झासी०—वृ० वर्मा, ४६६); परमात्मा करें उनके सत्संग से तुम्हारा यह अंग्रेजी का भूत उतर जाय (पट्टम० के पत्र—पट्टम० शर्मा, १३७)

(२) प्रभाव दूर होना। प्रयोग—क्या कहें हम अभाग की बातें आज भी भाग भूत भय न भागा (चुमते०—हरिऔध, ४७)

(३) भूत का प्रभाव दूर होना।

### भूत उतारना

एंट या डिड निकाल देना। प्रयोग—मूँके मार-मार कर अपने दुश्मन का भूत उतारते हुए पृथ्वी लगे कि किसने मिथलाया है (कुल्ली०—निराला, ४२); कर उतारा हम उतारेंगे उसे भूत सिर पर जो किसी के चढ़ गया (बोल०—हरिऔध, १५)

### भूत का डेरा

सूना घर। प्रयोग—नैना भी चली गयी, अब घर भूतों का डेरा हो गया (कर्म०—प्रेमचंद, ३३१); वह रहा फूल हो गया कांटा स्वर्ग से भूत का बना डेरा (चुमते०—हरिऔध, ७४) (समा० मुहा०—भूत का बासा)

### भूत की तरह जुट जाना

किसी काम के पीछे पड़ जाना, पूरा किए बिना न छोड़ना। प्रयोग—वह जम्हो बड़ी पागल है। सवेरे से भूत की तरह जुटा है (भिखा०—कोशिक, २१०)

### भूत की मिठाई

(१) सहज में मिला घन जो शीघ्र ही नष्ट हो जाए। प्रयोग—भूत की मिठाई तैसी साधू की भूठाई तैसी स्यार की डिठाई ऐसी कपीरा छहूँ ऋतु है (केशव—हि० श० सा०)

(समा० मुहा०—भूत का पकवान)



भूत चढ़ना

५५४

भृकुटी में बल पड़ना

**भूत चढ़ना**

(१) भूत का प्रकोप होना। प्रयोग—तो चढ़ेगा न भूत तिर पर क्यों भूत बन जाय जो किसी का मन (चोखे—हरिऔध, १४२)

(२) बहुत आग्रह या हठ करना। प्रयोग—सैलानीपन का भूत चढ़ा रहता है (प्रेमा०—प्रेमचंद, ४०४)

(३) बहुत अधिक श्रेय करना।

**भूत भागना**

दे० भूत उतरना

**भूत लगना**

प्रेत-स्वाधा होनी। प्रयोग—बेतन परा न एको चेतु। सर्वहि कहा एहि लाग परेतु (पद०—जायसी, ३५७)

**भूत सर पर सवार होना,— सवार होना**

किसी बात की धन होनी। प्रयोग—इस समय नेवचर का भूत तिर पर सवार है (पद० के पत्र—पद० शर्मा, ११७); यही जो चाहता है कि चाहे अपनी जान रहे या जाय, इस जवरे का तिर नीचा कर दे। तिर पर एक भूत सा सवार हो जाता है (प्रेमा०—प्रेमचंद, ६२)

**भूत सवार होना**

दे० भूत सर पर सवार होना

**भूत देना**

गोलियों से मार डालना। प्रयोग—भगतसिंह ने मृपरिस्टेन्डेंट पुलिस को गोलियों से भूत डाला (कठ०—दे० स०, १५५)

**भूर का लहड़ होना**

डिखने में अश्रु पर वस्तुतः मारहीन। प्रयोग—सौदा बना भूर का लहड़ देखत मति लजबाई है (मा० घ० (२)—मारलेन्दु, ५५१)

**भूलकर भी नहीं**

कभी नहीं। प्रयोग—तो दिति तेहि न बिलोकी भूली (राम० (बाल)—तुलसी, १४७)

**भूल पड़ना**

भूल कर आ जाना। प्रयोग—भेषु भलोई, भनी बिधि सों करि, भूलि परे, किधों काहू भुलाये (शब्द०—देव, २४);

मैं घनगुप्त हूँ, भूल पड़े कहिए कहाँ? अपना भूषणवास समझ रहिए यहाँ (साकेत—गुप्त, १२०)

**भूल-भुलैया में पड़ना**

(१) ऐसी भ्रमक जिससे निकलने की राह न मिले। प्रयोग—हिन्दू जाति अपनी भूल-भुलैया में बेतरह फँसी है (चुमते० (मु)—हरिऔध, ६)

(२) किकर्तव्य-विमूढ़ हो जाना।

**भूलना**

आत्म-विस्मृत हो जाना। प्रयोग—मालति देखि भँवर गा भूली (पद०—जायसी, ३४१२२); हरि मुख देखि भूले नैन (सु० सा०—सूर, १५५४)

**भूसा फटकना**

व्यर्थ काम करना, ऐसे काम में लगना जिससे कोई लाभ न होनेवाला हो। प्रयोग—मूर स्याम तजि को भूसा फटके मधप तुम्हारे हेति (सु० सा०—सूर, ४४७९)

**भूसे की भीत होना**

तुरंत नष्ट हो जानेवाली वस्तु। प्रयोग—मूरवाम प्रभु तुम्हारे मिलन बिनु, भई भूसा पर की भीति (सु० सा०—सूर, ३५०२)

**भृकुटी चढ़ाना,—तानना**

कोप दिखाना। प्रयोग—सिवा पड़े सिव सों समाज आजु कहाँ चली काहू पे सिवा नरेस भृकुटी चड़ाई है (मुपण० ग्रंथा०—मुपण, २०७); सिहामन हिल उठे, राजवंशों ने भृकुटी तानी थी (मुकुल—सु० कु० चौ०, ४७)

(समा० म्हा०—भृकुटी टेढ़ी करना)

**भृकुटी तनना, भृकुटी में बल डालना,—बल पड़ना**

कूट होना। प्रयोग—बहुत से राजवर्गियों की भृकुटियों में बल पड़ गए (वैशाली० (१)—चतुर०, २४); फिर भृकुटी में बल डालकर बोले—×× (वैशाली० (१)—चतुर०, ९३) उनकी भृकुटियाँ तन गईं (वाण०—ह० प्र० द्वि०, ५९)

**भृकुटी तानना**

दे० भृकुटी चढ़ाना

**भृकुटी में बल डालना**

दे० भृकुटी तनना

**भृकुटी में बल पड़ना**

दे० भृकुटी तनना



### भेड़ चाल चलना या होना

एक जो काम करे सब का उसी को करना । प्रयोग—देखा देली करत सब, नाहि न तत्व विचार याको यह अनुमान है, भेड़ चाल संसार (सु० सु०—दृष्ट, १५४); अब तो यही भेड़ चाल चल पड़ी है, सभी प्रोड्यूसर जयन्त और इरा की जोड़ी ले रहे हैं (दूधगाछ—दे० सु०, २९८)

### भेड़िया होना

दुष्ट और छली होना । प्रयोग—तुम जानो ! जमाना भेड़िया है । तुम ठहरो जवान (बौने०—रा० रा०, १८२); उसने लिखा है कि राजपुत्र भेड़िये हैं, इनसे पिता को सर्वेव सावधान रहना चाहिये (स्कट०—प्रसाद, १४)

### भेड़िया-धसान होना

(१) बिना परिणाम सोचे दूसरों का अनुसरण करना । प्रयोग—तुलसी भेड़ी की धसनि, जड़ जनता सनमान । उपजत ही अभिमान भो, खोवत मूढ़ अपान (दीहा०—तुलसी, ४९५); राजा जनता के भेड़िया धसान को टूटे के सिर से हाँकते रहते हैं (झांसी०—वृ० वर्मा, १७३)

(२) बहुत भीड़ होनी ।

(समा० मुहा०—भेड़िया-धसान मचना, भेड़िया-चाल होना)

### भेड़ करना

(१) दुराव करना । प्रयोग—हम सौ भेड़ करें हित उन सौ, ऐसे गुन उनके री (सु० सा०—सुर, २७०५)

(२) समान दृष्टि से न देखना ।

### भेड़ का बांध बांधना

भेड़ को प्रश्रय देना । प्रयोग—भेड़ का बांध बांधती बेला खाल पर बांध लें न हम पट्टी (चुमते०—हरिऔध, ४४)

### भेड़ खोलना

रहस्य प्रकट करना । प्रयोग—जिय को भेड़ न खोलई वह नागरि चतुर सुजान (भा० प्र० (२)—भारतेन्दु, ३६६); जिससे पड़े बला में कोई, नहो खोलता है वह भेड़ (मर्म०—हरिऔध, १५)

### भेड़ पाना

(१) गुप्त रहस्य जान पाना । प्रयोग—अनह नहता भेड़ छे कल-कल पायी भेड़ (कबीर प्रथा०—कबीर, ३१०)

(२) पता पाना । प्रयोग—बूँदत फिरति ग्यारिनी हरि की, कितहुँ भेड़ न पावति (सु० सा०—सुर, १०७७)

### भैंस के आगे बीन बजाना

मूढ़ या अज्ञानी के सामने रस या ज्ञान की चर्चा करनी । प्रयोग—यहाँ के लोग मूर्ख हैं, तुम्हारी कदर क्या जानें । भैंस के आगे बीजा बज रही है (सु० सु०—सुदर्शन, १२०)

### भैंस लगाना

भैंस का दूध देना । प्रयोग—मेरे घर तो एक ही भैंस लगती है, उसका दूध बास बच्चों में उठ जाता है (प्रेमा०—प्रेमचंद, ८)

### भैंस से बीन की दाद लेना

जो किसी विषय का कुछ भी न समझे, उससे उसकी प्रशंसा चाहनी । प्रयोग—यातिर आप "वैदिक-संदेश" किसे सुनाना चाहते हैं ? भैंस से बीन की दाद लेना चाहते हैं (पट्टम० के पत्र—पट्टम० शर्मा, १५९)

### भैया-चार

रिश्तेदार । प्रयोग—बगल ही एक दूर के भैयाचार रहते हैं बंकिम को रोटी खिला दिया करते हैं (लिली—निराला, ६०)

### भोजन पाना

भोजन करना । प्रयोग—दोनों समय भोजन पाने छाते हैं और फिर मर्दाने में चले जाते हैं (सु० सु०—सुदर्शन, २१९)

### भोर का तारा

(१) निस्तेज, प्रभाहीन । प्रयोग—तब क्यों लोग दूसरों को दुःख देते नहीं प्रधाते जब जीवन के दिवस भोर के तारे हैं बन जाते (मर्म०—हरिऔध, ३०)

(२) तुरंत नष्ट हो जानेवाला, जिसका अंत निकट हो ।

### भौह उठाना

रोष या घसतोष प्रकट करना । प्रयोग—भौ उठा पावे न तेरे सामने बलहीन (चक्र०—दिनकर, १६४)

### भौह खिचना

रफ्त होना । प्रयोग—खिच गई भौह बला से खिच गई चढ़ गई तो रहे भौह चढ़ी (बोल०—हरिऔध, ३०)



**भौह चढ़ना या चढ़ाना,—टेढ़ी करना या होना,**

**—तनना या तानना,—तिरछी करना या होना**

कोष करना या होना । प्रयोग—बदत काहू नहीं निपरक निदरि मोहि न वनत बार-बार बुझाई हारी भौह मो पर तनत (सुर—वि० श० सा०); कुंवर चढ़ाई भौह, अब को बिलोकैं सोहैं, जहं नहं मे छवेत, खेत के से घोखे हैं (गीता० (आ०)—तुलसी, २५); जानी न भयन-भेद के भावनि न निह में नहीं भौह चढ़ाई (केशव—केशव, ५); सोहैं हैं तेरयो न त, बेती पाई मोह एहो क्यों बंटी किए ऐंठो खेटी भौह (विहारी रत्न—विहारी, ५०९); “देव” कहा कहीं बाहेर ह घर बाहेर ह, रहे भौह तरेरी (शब्द—देव, ६०); परसत गत मनभावन को भाउती की गई चहि भौहें रही तेसी उपमानें छवैं (जग०—पद्माकर, १०); मो मुरली घन आनंद की निनि तान भरी, चित भौहनि तानति (घन० कवि—घना०, १०४); इतने ह मैं जानैं न क्यों तू रहे सदा गीय मो भौह तनेनी किये (भा० ग्रं० (२)—मारतेन्दु, १५६); बेरी भौह चढ़ाय रिम भरी, गोल कपोलनि कर घर (राधा० ग्रंथा०—राधा० दास, ६४); X X आपस में बात बात पर भौहें चढ़ाना छोड़ दें X X तो परमेश्वर अवश्य हमारे उद्योग का फल दे (प्र० पी०—प्र० ना० मि०, ५७); मगर यह कहने के साथ ही उसकी तनी हुई भौहें डीली पड़ गयीं (मान० (१)—प्रेमचंद, १४६); उनमें मे कोई तो भी चढ़ाकर आंखें फिरा गये और कोई निर दिलाकर चुप हो रहे (पट्टम पराग—पट्टम० शर्मा, ८८); हरद्वारी का मस्कराना बाबू नाइव को बुरा लगा उनकी भौहें तन गई (मिखा०—कोशिक, १४); डाल कर ईसाइयत के जाल में तब भला भौहें चढ़ाते क्यों न वे (चुमते०—हरिऔध, १३७); क्षण भर के लिये भी उनकी भवें कुचिन नहीं हुई—माथे पर बल नहीं पड़ा (कबीर—१० प्र० हि०, १८५); देवीजीन ने दरोगा की बात सुनी तो उसकी भौहें तिरछी हो गयीं (गवत—प्रेमचंद, २२३); देव की टेढ़ी अगर भौहें न हों । क्या करेंगे लोग टेढ़ी भौह कर (चोखे०—हरिऔध, २१)

**भौहें टेढ़ी करना या होना**

**दे० भौह चढ़ना**

**भौह डीली पड़ना**

गुस्से में चढ़ी खोपरी कम होनी, गुस्सा कम होना । प्रयोग

—मगर यह कहने के साथ ही उसकी तनी हुई भौहें डीली पड़ गयीं (मान० (१)—प्रेमचंद, १४६)

**भौहें तनना या तानना**

**दे० भौह चढ़ना**

**भौह ताकना**

रुल देवना । प्रयोग—प्रकारन को हितु और को हे । बिरद ‘गरीब-निवाज’ कोन को भौहें जामु जन जोहे (विनय०—तुलसी, २३०); यद्यपि हमारा धन, बल, भाषा इत्यादि सभी निर्जीव हो रहे हैं तो भी यदि हम पराई भौहें ताकने की लत छोड़ दें X X तो परमेश्वर अवश्य हमारे उद्योग का फल दे (प्र० पी०—प्र० ना० मि०, ५७)

**भौह तिरछी करना या होना**

**दे० भौह चढ़ना**

**भौह मरोड़ना**

(१) आंख से इशारा करना या कनखी मारना । प्रयोग—परम चतुर में जानति तुम को, मो पर भौह मरोरति हो (सु० सा०—सुर, २८१७) (÷); हौ हू गई पदमाकर दोरि मुभौह मरोरति सेज लौ आई (जग०—पद्माकर, ४७) (२) नाक भौह चढ़ना—भौह सिकोड़ना । प्रयोग—होसलों के गले मरोड़े क्यों भौह अपनी मरोड़कर कोई (बोल०—हरिऔध, ३०); देखिए प्रयोग (१) में (÷) भी ।

**भौह में बल होना**

असंतोष या तनाव का भाव होना । प्रयोग—तुम्हें क्या यदि उसकी भौह में एक बल है, घावों के डोरे में खिचाव है (कामना—प्रसाद, ३९)

**भौह सिकोड़ना**

घसंतीप प्रगट करना । प्रयोग—सामने कल्याणी भौहें सिकोड़े हुए लड़ी थी (निर्मला—प्रेमचंद, १०)

**भौहों के इशारे पर नाचना**

पुण्यतः वश में रखना; जो चाहे सो करवाना । प्रयोग—भृकुटि बिलास नचावड ताही (राम० (बाल)—तुलसी, २०९)

**भौहों पर शिकन पड़ना,—भौहों में बल पड़ना**

कोधित दृष्टि । प्रयोग—नांव पर्यो छबला घन आनंद ऐंठति खेठति भौह किते बल (घन० कवि—घना०, १९९);



भौहों में बल पड़ना

५५७

भ्र-कषेप करना

उनकी भौहों पर शिकन पड़ी और हमारे प्राण मूखे (गोदान—प्रेमचंद, १५); पड़ सकेगा बल न मेरी भौह पर हम भला बेडंगियों में क्यों फंसे (दोश०—हरिऔध, १०६)

भौहों में बल पड़ना

दे० भौहों पर शिकन पड़ना

भ्रम की यचनिका फटना

भ्रम दूर होना । प्रयोग—बड़ी बार भई, लोचन उधरे,

भरम जचनिका फाटी (सु० सा०—सूर, ८७२)

भ्रम के हिंडोरे में झूलना

बहुत बड़े भ्रम में होना । प्रयोग—जो छवि निरगत सो पुनि नाही, भरम हिंडोरे भूले (सु० सा०—सूर, २९८९)

भ्र-कषेप करना

तनिक भी ध्यान या महत्व देना । प्रयोग—जब तक मनुष्य भटकता फिरता है भगवान उसकी ओर भ्रूषेप नहीं करते (राधा०—द्र० स०, ७०)



## म

### मंगलामुखी

वैद्या । प्रयोग—तब नगर की सब मंगला मुखियों की बुलबाया (प्रेमा सा०—ल० ला०, २३); एक ओर गायक और नर्तकियां मंगलामुखी बार-बनितार्ण संगीत सुधा बखेरने को सन्तुष्ट लड़ी थीं (देशाली० (२)—चतुर०, १७७)

### मंजना या मंजा होना

सधा और अभ्यस्त होना । प्रयोग—हम लोगों की तो सत्य हरिश्चंद्र आज कल अच्छी तरह याद है और उसका खेल भी सब छोटे-बड़े को मंज रहा है (भा० घं० (१)—भारतेन्दु, २६०); “जादू की कुर्सी” × × बार-बार खेले जाने और बार-बार संशोधित होने से धूल मंज कर वह, जहां तक माटकीयता का प्रश्न है, वहां ही उच्च कोटि का हो गया है (पैलरे—अशक, २६); पुराने आदमियों में अधिकांश तो बचपन से ही मिल में काम करने के अभ्यस्त थे और नुब मंजे हुए (गोदान—प्रेमचंद, ३०८); मोड़कर मुंह मित्राजवानों का दें मंजे हाथ के मंजे दिलला (बुभुते०—हरिऔध, ९९)

### मंजिल मारना

(१) बहुत दूर पैदल चल कर घाना । प्रयोग—इस मानसिक उद्वेग की दशा में वह कभी मोफी के पास घाते, कभी अपने कमरे में जाते, कुछ गुमसुम, उदास मलिन-मुख, निष्प्रभ, असाहजोन मानों कोई बड़ी, मंजिल मार कर लौटे हों (रंग० (२)—प्रेमचंद, ३५३)

(२) कोई कार्य करना ।

### मंजी भाषा

परिभाषित भाषा । प्रयोग—मेरी भाषा इतनी मंजी हुई न हो, लेकिन भरती के लिये मैंने एक पंक्ति भी नहीं लिखी (रंग० (२)—प्रेमचंद, १७०)

### मंभधार में छोड़ना,—घोरना

(१) विपत्ति के समय साथ छोड़ देना । प्रयोग—कायर कूर कुपूत हैं घोरि देत मंभधार (कुण्ड०—गिरधर दास, १९); तुझे मंभधार में छोड़ देने से बदनाम होना अच्छा है (रंग० (२)—प्रेमचंद, १०४)

(२) किसी बात को अनिश्चित अवस्था में छोड़ देना ।

### मंभधार में नाव डूबना

(१) जीवन का पार न लगना । प्रयोग—भट्टया, बस रुपया डूब न जाये । नहीं तो समझ लो नैया मंभधार में डूब जायेगी (वीने०—रंग० ला०, १६०)

(२) काम अधूरा रह जाना ।

### मंभधार में घोरना

### दे० मंभधार में छोड़ना

### मंभधार में होना

अनिश्चित या अस्थिर होना । प्रयोग—समिति इस समय मंभधार में है, बिनय के आचरण ने उसे एक भयंकर दशा में डाल दिया है (रंग० (२)—प्रेमचंद, १७८)

### मंढराना

घास-पास घूमते रहना, पीछे लगना । प्रयोग—देखतु जाद और काहू की, हरि पर सबहि रहसि मंढरानी (सू० सा०—सूर, २१०८); नरोत्तम तो छोकरा को देखते ही उस पर मंढराने लगा था (झुला० (२)—यशपाल, ३१३); यहीं कहीं मंढला रहे होंगे, जायेंगे कहीं (भा—कोशिक, १२५)

### मंभ चलना

बस में कर लेना, प्रभाव डालना । प्रयोग—साहब ने चढ़ी दौड़ लगाई । सरकार पर भी मंभ चला दिया (रंग० (२)—प्रेमचंद, ३०४)



### मंत्र देना

(१) गुप्त सलाह देनी । प्रयोग—अच्छा, तुम यहां कुंवर साहब को मंत्र दे रहा है, तुम्हारा पापा महेन्द्र को पट्टी पड़ा रहा है (रंग० (२)—प्रेमचंद, १८०)

(२) सलाह देना । प्रयोग—अब सो मंत्र देहु प्रभू मोही (राम० (अ)—तुलसी, ७०५)

(३) चेला बनाना ।

(४) उपदेश देना ।

### मंत्र पढ़ाना

गुप्त रूप से कुछ सिखाना । प्रयोग—अच्छा, मो काकी ने यह सलाह दी है, यह मंत्र पढ़ाया है (मान० (१)—प्रेमचंद, ८)

### मंत्र लगना

मंत्र का असर होना । प्रयोग—बिरह भूवंगम तन बसे, मंत्र न लागे कोइ । राम वियोगी ना जिवे, जिवे त बौरा होइ (कबीर ग्रंथा०—कबीर, ९)

### मकान बैठ जाना

मकान का कमजोर होने के कारण गिर जाना । प्रयोग—हरिहर प्रसाद का मकान बिल्कुल बैठ गया और उसी में वह दब कर मर गया है (मा० मा० (१)—कि० गो०, २१८)

### मक्खीचूस होना

बहुत कंजूस होना । प्रयोग—आप चाहें कैसे कड़े मिजाज हो X X मक्खी चूस हों X X जहां हम चार दिन X आपकी हां में हां मिलावेंगे X X बताइए तो आप कब तक राह पर न आवेंगे (प्र० पी०—प्र० ना० मि०, ५८); विश्वास परसाद तो एक नम्बर के मक्खीचूस घोर सकी आदमी है (मैला०—रेणु, १८९); विश्वास मानिए, बड़ा पोढ़ा आदमी है और बला का मक्खीचूस (मान० (४)—प्रेमचंद, २०६)

### मक्खी निगलना

असचिकर या अहित का काम करना । प्रयोग—पर मिस्टर मिनहा जान-बूझकर मक्खी न निगलना चाहते थे (मान० (३)—प्रेमचंद, १४१—१४२)

### मक्खी पर मक्खी मारना

बिना विचारे हवह अनुकरण करना । प्रयोग—नकलची इतिहास लेखकों ने उन्हीं के आधार पर बिना अधिक

छानबीन किये मक्खी पर मक्खी मारना शुरू कर दिया (पट्टम० के पत्र—पट्टम० शर्मा, २४८)

### मक्खी मारना

बिल्कुल निकम्मा रहना । प्रयोग—बुढ़ऊ दिनभर मक्खी मारा करते हैं, इतना भी नहीं होता कि जरा भाङ्ग ही लगा दें (मान० (१)—प्रेमचंद, ११६); बारह साल तक मकड़े की तरह शब्दों का जाल बुनता हुआ मैं मक्खियां मारता रहा (चतुरी०—निराला, ३८)

### मखमल में गाढ़े का पैबन्द लगाना

अच्छे एवं श्रेष्ठ के साथ तुच्छ या सामान्य का मेल कराना । प्रयोग—मैं उसकी लड़की से ब्याह करके अपनी नाक कटवाऊंगा । मखमल में गाढ़े का पैबन्द लगाऊंगा तो लोग क्या कहेंगे (मिस्ता०—कौशिक, ४३)

### मखाने के पत्ते से मुंह पोंछना

टापते रहना । प्रयोग—तज्जमनियां मखाने के पत्ते से मुंह पोछे प्रब अपना (परती०—रेणु, ४२४)

### मखौल उड़ाना, मज़ाक उड़ाना

उपहास करना । प्रयोग—मुंशी शिवलाल को लगा कि उनका लड़का इस सत्य और ईमानदारी पर जड़कर अपने पैरों में ही कुल्हाड़ी नहीं मार रहा है, बल्कि वह उनका मखौल भी उड़ा रहा है (मूले०—भग० वर्मा, १८५); उसके तप और सत्य-निष्ठा का मज़ाक उड़ाया जाता है (अशोक—ह० प्र० दिव०, १६६)

### मगज़ मारना,—लड़ाना

दिमाग लगाना, बहुत सोच विचार करना । प्रयोग—पिता ने दो-तीन दिन और शेखर के साथ मगज़ मारा (शेखर (२)—अज्ञेय, १४३); बजरंगी, जरा भैरो को बुला लो, इन्हें सब बातें समझा दें । मैं इनसे कहां तक मगज़ लड़ाऊं (रंग० (१)—प्रेमचंद, २३५)

(समा० मुहा०—मगज़पकची करना)

### मगज़ लड़ाना

दे० मगज़ मारना

### मगर से बैर कर पानी में रहना

अपने ही साथ के सशक्त लोगों से बैर करना । प्रयोग—मगर से बैर कर तो जल में से वमूल किये नहीं जा सकते (परस—जेनेन्द्र, ८)



### मगहरी चकचूर हो जाना

गर्ब दूर हो जाना। प्रयोग—पूरी लगे लखू मूरन की चकचूर हूँ जातू सर्वे मगहरी (इशक०—बोधा, ४)

### मछली-हट्टा बनाना या होना

बहुत शोर-गुल होना या करना। प्रयोग—चपरासी ! बेकार लोगों को घन्दर से निकालो। मछली हट्टा बना देता है (परती०—रेणु, ११२)

(समा० मुहा०—मछली-हट्टा मचाना)

### मजबूत काठी

मजबूत गठन का शरीर। प्रयोग—साबिला रंग, ठिगना कद, गोल माथा × × दिया जैसी नाक—मुसहर होते हैं, मगर मजबूत काठी के (धल०—नागा०, २६)

### मजा किरकिरा होना

आनंद का बीच में भंग हो जाना। प्रयोग—घाबकल 'मुर-सागर' अश्राप्य हो रहा है। पहले मुझि जो दो एक संस्करण पाये भी जाते हैं तो उनमें बपेपकों की और अशुद्धियों की इतनी भरमार मिलती है कि देखकर × × जो खट्टा घोर मजा किरकिरा हो जाता है (पद्म पराग—पद्म० शर्मा, ३५४)

### मजाक उड़ाना

दे० मज्जाल उड़ाना

### मटरगशती करना

इधर उधर घूमते रहना; मौज करनी। प्रयोग—मैं भी दादा के सामने मटरगशती ही किया करता था (गौदान—प्रेमचंद, २७); स्नान के बाद चन्दनादि लगाए अवधवासी परम प्रमत्त मटरगशती कर रहे हैं (अपनी लहर—उग्र, ४३)

(समा० मुहा०—मटर गशत करना)

### मटियामेट कर देना, मलियामेट कर देना

बिन्दुल नाट कर देना। प्रयोग—लेकिन विशेषी शक्कर की आमद ने उसे मटियामेट कर दिया (मान० (८)—प्रेमचंद ६५); एक तरफ मुझ की शक्तियाँ जीवन को मलियामेट करने पर तुल जाती हैं तो दूसरी घोर एक कलाकार अपनी कला साधना में कैसे इतना लीन रह सकता है (कठ०—दे० स० १११); मेरे कारण आपने × × अपने सिद्धांतों का, जीवन के आदर्श का मलियामेट कर दिया (रंग० (२)—प्रेमचंद, ८९)

### मठा मूसल धमकना

व्यर्थ की बड़ी-बड़ी बातें करनी। प्रयोग—घरे घो ! पड़ा न निगा, धमकने लगा मठा मूसल की (मृग०—बुं० वर्मा, ३३)

### मणि फेंक कर कांच बटोरना,—धूलि बांधना

मूल्यवान् वस्तु का तिरस्कार कर व्यर्थ की वस्तु का संग्रह करना। प्रयोग—कहा कांच के संग्रह कीन्हें, डारि अमोल मनी (सु० सा०—सूर, २०७६); मुरदास मानिक परिहरि कै छार गांठि को बांधे (सु० सा०—सूर, ४५१३)

### मणि फेंक कर धूलि बांधना

दे० मणि फेंक कर कांच बटोरना

### मतलब के बंदे,—मीत,—यार

स्वार्थी। प्रयोग—हरीचंद घर घर के भौंरा तूम मतलब के मीत (भा० प्रथा० (२)—भारतेन्दु, ७३); कोई कहता है 'वे मतलब के दोस्त हैं' (परीक्षा०—श्री० दास, २६); ठाकुर साहब भी मतलब के यार हैं (मान० (७)—प्रेमचंद, ६२); मतलबी उन्हें कहेगा कौन, नहीं हैं वे मतलब के यार (मर्म०—हरिऔध, ११२)

### मतलब के मीत

दे० मतलब के बंदे

### मतलब के यार

दे० मतलब के बंदे

### मतलब गंठना या गांठना

स्वार्थ सिद्ध करना या होना। प्रयोग—सरे बाजार मतलब गांठना, विशेषतः दिवाली में तो देश का देश ही उनकी 'स्वार्थ साधिनी' सभा का म्यंबर हो जाता है (प्र० पो०—प्र०ना० मि०, १०५); पुरुषोत्तम दास ने लाला मदन मोहन को कुछ उदास देखकर अपना मतलब गांठने के लिये कहा (परीक्षा०—श्री० दास, १०१); वे तो मतलब गांठेंगी, कोई मिल गये सहारा (मर्म०—हरिऔध, १०२); बाद को देखोमे तुम्हारी मुराद पूरी हो गई। मतलब गठ गया (चोटी०—निराला, ५५)

(समा० मुहा०—मतलब सधना,—साधना,—निकलना या निकालना)

### मति कच्ची होना

कम-समझ होना। प्रयोग—पुरुष न करहि नारि मति कांची



(पद०—जायसी, ५३१); हरिवरनारायण तजि लागत जनत कहूँ तिनकी मति कोची (सू० सा०—सूर, १८)

### मति खोना

अच्छे बुरे का विवेक खो बैठना । प्रयोग—मैं बिगरे अपनी मति कोई मेरे भूमि भूलो मति कोई (कवीर ग्रंथा०—कवीर, ३२२); मधुकर ! भलो मुमति यह कोई (सू० सा०—सूर, ४१६०)

### मति धकना,—पंगु होना,—मारी जाना

किर्तव्य-विमूढ़ हो जाना । प्रयोग—कैसे घनवानंद मुजान प्यारी छवि कहों, बीठि तो चकित ओ चकित मति भई है (घन० कवित्त—घना०, १२९); गई मुचि पंग, भई मति पंग नई कछु बात जतावति हो न (घन० कवित्त—घना०, ८५); “भाई ! तुम्हारी क्या मति मारी गई जो है तुमने ऐसे पतित को अपने मुंह लगाया” (मा० ग्रं० (३)—भारतेंद्र, ८३३); बड़ गई चिह्न कुठन हुई दूनी रुचि हुई नीच मति गई मारी (बोल०—हरिऔध, २०१); “आप प्रेम कहेंगे ?” “घोर क्या ? कहूँ, बिलबर दूसरे किसमें मति भला इतनी मारी जाती है” (जय०—जैनेन्द्र, ११०)

(समा० मुहा०—मति गति हारना,—भ्रष्ट होना)

### मति पंगु होना

दे० मति धकना

### मति फिरना

विचार बदलना । प्रयोग—तसि मति फिरी अहइ जस भाबी रहसी चेरि घालि जनु फाबो (राम० (अ)—तुलसी, ३८७)

### मति फेरना

बुद्धि बदल देना । प्रयोग—अजस पेटारी ताहि करि गई गिरा मति फेरि (राम० (अ)—तुलसी, ३८३)

### मति मारी जाना

दे० मति धकना

### मति हर लेना

बुद्धि-विवेक नष्ट कर देना । प्रयोग—मरन काल विधि मति हरि लीन्ही (राम० (अ)—तुलसी, ५२४)

### मत्थे जाना,—पढ़ना

जिम्मे खाना । प्रयोग—धाने में रपट नहीं लिखायी नहीं सो-सो-सो के मत्थे धोर जाते (गवत—प्रेमचंद, ३३); जेमे उसका समस्त प्रतिकार घोर दण्ड सिर्फ मेरे ही मत्थे पढ़ने के लिए हो (सतमो०—राहुल, ४)

### मत्थे पढ़ना

दे० मत्थे जाना

### मत्थे मढ़ना

जवरदस्ती ऊपर हाकना । प्रयोग—X X और पंद्रह-बीस दिन में एक बृहद् इतिहास-ग्रंथ तैयार करके बेचारे प्रकाशक के मत्थे मड़ दिया (पदम० के पत्र—पदम० शर्मा, २४८)

(समा० मुहा०—मत्थे डालना)

### मथ डालना

(१) उद्बेलित करना । प्रयोग—प्रश्न ने तारा के मन और मस्तिष्क को मथ दिया (झुठा० (१)—यशपाल, ९०)

(२) एक ही बात को बार-बार कहे जाना ।

### मद गंजन करना,—चूर करना,—भारना,—फेंटना,—मथना

गर्भ दूर करना । प्रयोग—तेहि समेत नृप दल मद गंजा (राम० (सु)—तुलसी, ८१७); रिपु मद मधि प्रभु मुजगु मुनायो (राम० (लं)—तुलसी, ९००); मागर को मदभारि चिकारि चिकट की देह बिहारि लयो जू (केशव० (२)—केशव, ३१४); मयत मनोज सदा मो मन, पै हौं हूँ कव, प्राणपति पास पाय ताप-मद फेंटिहो (घन० कवित्त—घना०, ६७); घूँघट-बीच मरीचनि की रुचि कोटिक बंदन को मद चूरति (घन० कवित्त—घना०, १९४)

### मद चूर करना

दे० मद गंजन करना

### मद भारना

दे० मद गंजन करना

### मद फेंटना

दे० मद गंजन करना

### मद मथना

दे० मद गंजन करना



मद से अंधा होना

**मद से अंधा होना**

बहुत धंभ में होना । प्रयोग—सहज असंक लकपति सभा गयउ मद अंब (राम० लं)—तुलसी, ८७७)

**मन अटकना—उलभना**

धनुरक्त होना, आकृष्ट होना । प्रयोग—अरुणि पर्यो मेरी मन तब तै, कर भटकत चक्र-डोरि हलत (सु० सा०—सुर, १२५९); घरनि पग पटक, कर भटकि, अटक मन तहाँ रोभे कन्हारि (सु० सा०—सुर, १६५९); सेनापति जाके बाँके रूप उरभत मन बीना मैं मधुर नाद सुधा भरसति है (क० र०—सेनापति, ६)

**मन आकाश में उड़ना**

मन में बहुत सी कल्पनाओं का उठना—बड़ी सुधी होनी । प्रयोग—मैना का मन आकाश में उड़ने लगा (मान० (१)—प्रेमचंद, १७६)

**मन आधा होना**

होतासाह होना । प्रयोग—भारों लग्यो आबो भयो मन कौन बिधि जीवन धरै (राधा० ग्रंथा०—राधा० दास, १५)

**मन उखड़ना**

मन का उदासीन या उबाट होना । प्रयोग—मेरा मन उखड़ा-उखड़ा नहीं (दुधगाछ—दे० स०, ५५); ठीक नहीं है, मैं भी कुछ कर नहीं पा रही हूँ, मन उखड़ा-उखड़ा सा रहता है—मैं एकाग्र नहीं हो पाती (अजय०—देवगज, २१६); राजा माहब ने देखा कि एजाज का मिजाज उखड़ा-उखड़ा है (चोटो०—निराला, ८९)

**मन उछलना**

खान्द होना । प्रयोग—शीतकाल है और सबेरा, उछल रहा है मानस मेरा (साकेत—गुप्त, २९२); कट्टो की बात सुनकर उसका मन उछला (परस—जैनेन्द्र, ३४)

**मन उड़ना**

मन बस में न होना । प्रयोग—तो लखि मो मन जो लही, सो गति कही न जाति । छोड़ी-गाह गढ़पो तऊ उड़पो रहे दिन राति (विहारी रत्ना०—विहारी, ५५६); कमला को वह इतना प्यार कर चुका था कि अब विवाह की तरफ से बिलकुल बीतराग हो रहा था । मन उड़ा फिरता था (लिली—निराला, ४७)

५६२

मन कड़ा करना

**मन उड़ा-उड़ा होना**

मन का अस्थिर या उदास होना, चंचल होना । प्रयोग—पर मन अजौब कुछ उड़ा-उड़ा सा हो रहा था (गोली—चतुर०, १४६); फिरता मन था उड़ा-उड़ा मिथिला में भवसंध था जुड़ा (साकेत—गुप्त, ३४७)

**मन उतरना**

उदास होना । प्रयोग—मिलीं तो, पर जैसे मन उनका उतरा हो (कल्याणी—जैनेन्द्र, ३१)

**मन उमड़ना**

(१) भावातिरेक होना । प्रयोग—उसका मन न जाने क्यों मौसी के प्रति ममता से उमड़ा आ रहा है, जिसे वह व्यक्त करने का साधन नहीं जानता (शेखर (२)—अज्ञेय, १९१)  
(२) उत्साह का अनुभव करना । प्रयोग—सुन पड़ता सिंहनाद—रण-कोलाहल अपार, उमड़ता नहीं मन, स्तब्ध सुधी है ध्यान धार (अना०—निराला, १६२)

**मन उलकना**

दे० मन अटकना

**मन ऊँचा होना**

(१) मन में दुश्चिंता बनी रहनी । प्रयोग—उन्हें लेकर ताई का मन सदा ही ऊँचा रहता है (बूँद०—अ० ना०, १६२)  
(२) उदार या उच्च विचार वाला होना ।

**मन एक करना या होना**

अभिन्न भाव से रहना या होना । प्रयोग—बिहरत दोउ मन एक करे (सु० सा०—सुर, ३०७८); एक भये मन दुहुनि के, छुटै न किये उपाद (मति मक०—मतिराम, २१९)

**मन कटना**

मन को बुरा लगना; ग्लानि होनी । प्रयोग—गुरेन्द्र की गद् के प्रति ईर्ष्या से तारा का मन स्वयं कट रहा था (झुठा० (१)—यशपाल, ९३); कल्याणी के सामने शीला को चोरी के धन की तरह छिपाए रखने में उसका मन कट रहा था (बूँद०—अ० ना०, ५१७)

**मन कड़ा करना**

मन से दुर्बलता दूर करनी । प्रयोग—इसका प्रतिकार सहज है, मन को कड़ा कीजिए (अम्ब०—रा० दे०, ५९);



पहचानो निज कर्म युधिष्ठिर ! कहा करो कुछ मन को  
(कुरु०—दिनकर, १४०)

### मन करना

(१) प्रेम करना । प्रयोग—परजन सों सो मन करे, पर-  
हरि हरि सों प्रीत (वृ० स०—वृन्द, १७९)

(२) याद करना । प्रयोग—कबहुं क स्याम करत छाँकी  
मन, किधौ प्रीति बिसराई (सू० सा०—सूर, ४३०१)

(३) इच्छा होनी ।

### मन कसर-मसर करना

मन में दुविधा होनी या करने की इच्छा न होनी ।  
प्रयोग—काम में तब न क्यों कसर होगी । जब रहा मन  
कसर-मसर करता (बोल०—हरिऔध, २०९)

### मन का अंधकार

अज्ञान । प्रयोग—हे ऐसे विशुद्धीप मन का अंधकार मिटा  
सकें ? (कला०—पंत, ७६)

### मन का आईना होना

मन के भावों को प्रगट करने वाला होना । प्रयोग—रूप  
इतनी तुच्छ वस्तु नहीं है माधुरी ! वह मन का आईना  
है (मान० (७)—प्रेमचंद, ४७)

### मन का चोर

(१) मन को लुभा लेने वाला । प्रयोग—वे गोपाल कहाँ  
गए मेरे मन के चोर (सू० सा०—सूर, ४५६२)

(२) मन की दुर्बलता । प्रयोग—मैं दुनिया से नहीं डरता  
शीला । अपने मन के चोर से डरता हूँ (वृ०—अ० ना०,  
२२०)

### मन का दाह मिटना

मन का कष्ट दूर होना । प्रयोग—गुरदास जबही उठि  
जंही, मिटिहै मनकी दाह (सू० सा०—सूर, ४४९८)

### मन का मेल

बुराव, ईर्ष्या, मन के विकार । प्रयोग—आसण पवन किये  
विद रहू रे, मन का मेल छाड़ि दे बीरे (कबीर ग्रंथा०—  
कबीर, २०७)

### मन का शूल

मन की वेदना या आशंका । प्रयोग—धिर चाप्यो सब

परिवार, मन की शूल हरी (सू० सा०—सूर, ६४२); तुम  
अपने जी में सोच बिचार करके मेरे मन का शूल जो  
खटकता है निकालो (प्रेम सा०—ल० ला०, ९३)

### मन किसी में होना

ध्यान में होना । प्रयोग—मेरा मन मुमिरे राम कूं,  
मेरा मन रामहि आहि (कबीर ग्रंथा०—कबीर, ५)

### मन की आँख

अंतर्दृष्टि । प्रयोग—तुम छपनी अनिमेष मुपमा की शृंख  
गहराईयों का रहस्य मेरे मन की आँखों में खोलो (कला०—  
पंत, ४७)

### मन की गाँठ खोलना

(१) मन की बात कहनी । प्रयोग—अब यों उर आवति  
है सजनी उन सों सपनेहूँ न खोलिये री, पर जो निलजे  
हूँ मिले तो मिली, मन ते गस गूज न खोलिये री (घन०  
कवित—घना०, १५७); मन की गाँठ वह मेरे सामने ही खोल  
पाती थी (गोली—चतुर०, ७१); कनक ने इस अन्याय के  
विरोध के लिए पुरी के विषय में जो कुछ कहा उससे नंबर  
को मन की गाँठ खोलने का अवसर मिल गया (झुठा० (१)  
—यशपाल, १३५)

(२) मन के दुर्भाव को दूर करना ।

(३) मन के अज्ञान को दूर करना ।

### मन की जलन जुझाना

मन का दुःख दूर होना । प्रयोग—नेकु नयन मन जरनि  
जुझाऊ (राम० (अ)—सुलसी, ५५८)

### मन की धाह लेना

किसी के मन में क्या है, इसका अंदाज लगा पाना ।  
प्रयोग—तेरा मन हो तो मैं बातों-बातों में उसके मन की  
धाह लूँ (मान० (१)—प्रेमचंद, २१)

(समा० मुहा०—मन की धाह पाना)

### मन की दोड़

चित्त की सुभ्र, कल्पना । प्रयोग—हे जहाँ पर न दोड़  
मन की भी बाँ बिचारी निगाह क्या रोड़े (चोसे०—  
हरिऔध, २)

### मन की बात खोलना

मन की बात कहनी । प्रयोग—प्रकाश ने उनके मनकी



मन की बात मन में रहना

५६४

मन के लड्डू से भूल मिटना

बात खोल दी (मान० (२)—प्रेमचंद, ६५)

**मन की बात मन में रहना, मन की मन में रहना**  
मन की इच्छा का मन में ही रह जाना, पूरी न होनी।  
प्रयोग—मन की मन ही माँक रही। जब हरि रथ चढ़ि  
चले मधुपुरी सब अज्ञान भरी (सु० सा०—सुर, ३८९७);  
बेटी, मेरी तो मन की मन में रह गयी (मान० (१)—प्रेमचंद,  
७५); सारे मनुष्ये खाक में मिला शिवे। मन की मन में  
रह गई (पट्टम पराग—पट्टम० शर्मा, ११२); आह ! मन  
की बात मन में ही रही (बोल०—हरिऔध, २०९)

**मन की मन में रहना**

दे० मन की बात मन में रहना

**मन की माला फेरना**

मन में सुमिरन करना। प्रयोग—मन माना की फेरता,  
जग उजियारा मोड़ (कबीर ग्रंथा०—कबीर, ४५)

**मन की मिटाई खाना,—के लड्डू खाना,—मोदक  
खाना**

(१) मन में कल्पना कर-कर के मुल पाना। प्रयोग—  
रूपरे-मैने का डोल भी हुआ कि मन की मिटाई खा रहे  
हो? (गोदान—प्रेमचंद, २६१); चाहिये सबमुच मिटाई  
लाव घब मूहनों मन की मिटाई खा चुके (बोल०—हरिऔध  
२०७)

(२) किसी चीज को पाने की कल्पना करनी। प्रयोग—  
पर मन के लड्डू खाने से तो काम नहीं चलेगा (मा० ग्रं०  
(१)—मालेन्दु २४); इन्हों मन मोदकों का स्वाद लेता हुआ  
बढ़ तो गया (गोदान—प्रेमचंद, १३८); चलो, ऐसी मन की  
मिटाई में नहीं खाती (मान० (२)—प्रेमचंद, ६१)

**मन की रोटी पोना**

नाना प्रकार की कल्पना करनी। प्रयोग—हुई न परवा  
पर मन की निव मन की रोटी पोता है (मर्म०—हरिऔध,  
२३१)

**मन की सफाई**

भली नीयत। प्रयोग—हमारी समझ में भी उस लेख से  
बहुत कुछ दम्भ की चानि निकलती है, चाहे उसे छिपेरी  
जी ने मन की कितनी ही सफाई में लिखा हो (गु० नि०—  
वा० मु० गु०, ४३०)

**मन कुम्हलाना**

मन का उदास होना। प्रयोग—बरस चुकी रस-बंद सरस  
हो, फिर भी यह मन कुम्हलाया (कामना—प्रसाद, २१);  
जाति मुखड़ा देख कुम्हलाया हुआ जो हमारा मन गया  
कुम्हला नहीं (बोल०—हरिऔध, २११)

**मन के अंधे**

अज्ञानी। प्रयोग—मन के अंधे आपि न बूझतु का कहि  
बूझावतु भाई (कबीर ग्रंथा०—कबीर, ३०३)

**मन के काले होना**

छोटा होना। प्रयोग—गौर सरीर स्यामु मन माहीं  
कालकूटमुख पयमुख नाही (राम० (बाल)—तुलसी, २८३);  
उफ्फोह ! हीरा मन का इतना काला है (गोदान—प्रेमचंद,  
११०)

**मन के मनके फेरना**

विचारों और कल्पना में दूबे रहना। प्रयोग—चार साड़े  
चार बने उसकी नींद खुलती, तब वह पलटकर सिर  
फाटक की ओर कर लेता घोर आकाश की ओर देखकर  
मन के मनके फेरा करता (शेखर (२)—अज्ञेय, ८१)

**मन के मैले**

छोटे; मन में दुर्भावना रखनेवाले। प्रयोग—मन के मैले  
बाहिर ऊजलो कितो रे, साँडे की धार जन की घरम इसी  
रे (कबीर ग्रंथा०—कबीर, १६७); सुनि प्रिय बचन मलिन  
मन जानी झुकी रानि घब रह अरमानो (राम० (बाल)—  
तुलसी, ३८५)

**मन के लड्डू**

बड़ी बड़ी कल्पनाएँ। प्रयोग—व्यर्थ मरहु जनि गान बजाई  
मन मोदकनि की भूल बुताई (राम० (बाल)—तुलसी, २५३)

**मन के लड्डू खाना**

दे० मन की मिटाई खाना

**मन के लड्डू से भूल मिटना**

केवल काल्पनिक वस्तु से तृप्ति होनी। प्रयोग—काकी  
भूल गई मन लाहू सो देखहु चित चेत (सु० सा०—सुर,  
४४७९); मृग तृष्णा कब पानी भई। काकि भूल मन लड्डुवन  
गई (नंद० ग्रंथा०—नंद०, ११२); भूल मन के मोदकों से कब  
गई (बोल०—हरिऔध, २०८)



### मन को चोट लगना

हृदय को क्लेश होना । प्रयोग—किसी सामाजिक या राजनीतिक घन्याय का व्यंग चित्र देखकर क्यों हमारे मन को चोट लगती है ? (मान० ७) —प्रेमचंद, ७१)

(समा० मुहा०—मन को चोट पहुंचना)

### मन को दबाना

(१) मन की दृष्टि को बरबस रोकना । प्रयोग—रखती हूँ मन को दबाकर ही सबंदा (यशो०—गुप्त, १३७); जब दबाए से नहीं मन ही दबा नाक को तब हूँ दबाते किसलिये (बोले०—हरिऔध, १३१)

(२) मन पर दबाव डालना । प्रयोग—हां, अपनी शिक्षा का खर्च वह पिता से लेने पर किसी तरह अपने को न दबा सका (कर्म०—प्रेमचंद, १८)

### मन को रखना

ध्यान केन्द्रित करना । प्रयोग—मंगलवार मांहि मन राखी राम रसाइण रसनां बापी (कबीर ग्रंथ०—कबीर, ८७)

### मन खट्टा होना

(१) जी दुखी होना । प्रयोग—मेरे चढ़ाव पर कंगन नहीं आया था उस वक्त मन ऐसा खट्टा हुआ कि सारे गहनों को लात मार दूँ (गवन—प्रेमचंद, १२); रोशन का मन खट्टा होने लगा (धरती०—दि० प्र०, ७०—७१) (÷)

(२) किसी के प्रति अच्छी भावनाओं का नष्ट होना । प्रयोग—हरिश्चन्द्र का मन खट्टा हो गया (भारती०—रा० रा०, ८०); देखिये प्रयोग (१) में (÷) भी ।

### मन खिंचना

(१) किसी वस्तु की ओर घाकृष्ट होना । प्रयोग—अतः मनुष्य की श्रद्धा के जो विषय ऊपर कहे जा चुके हैं, उन्हीं को परमात्मा में घट्यत विषय रूप में देखकर ही उसका मन लिप्तता है और वह उस विषय-रूप-विशिष्ट का सामीप्य चाहता है (चित्ता० (१)—शुक्ल, ४०); बांसुरी ऐसी बजाता कि मन घनाघात खिंचा चला जाता (पैतरे—अशक, १६)

(२) किसी से विरक्त होना । प्रयोग—लेकिन भुनिया की घोर से उसका मन खिंचता था (गोदान—प्रेमचंद, २८४)

### मन खिल उठना

अत्यंत प्रसन्न होना । प्रयोग—ऐसे प्रसन्नमुख हैं कि देखते ही मन खिल उठता है (गोदान—प्रेमचंद, ९२)

### मन खींचना

मन को आकृष्ट करना । प्रयोग—नृत्य के श्रम-दबाव से कुनों पर हार कपित होकर देखनेवालों के नेत्र और मन को जबरदस्ती अपनी ओर खींचते हैं (मा० प्र० (१)—भारतेन्दु, ४०४); वह हार एक सहस्र मणि-रजित नेत्रों से उसके मन को खींचने लगा (गवन—प्रेमचंद, ५७)

### मन खुलना

कुछ कहने की मन में प्रवृत्ति होनी । प्रयोग—मेरा मन उनकी तरफ खुला नहीं (आण०—जैनेन्द्र, २३)

### मन खोलकर

(१) ध्यान के साथ । प्रयोग—नाकों नू खोलि जंक भरि बण्ड लगावे (कुण्ड०—गिरधरदास, २५)

(२) प्रचुर मात्रा में ।

### मन खोलना

मन का सब कुछ कह देना । प्रयोग—कमला मन खोलती रही, शीला उस सामीप्य में आत्मीयता का गौरव पाती रही (दीने०—रा० रा०, २४); मन ने उनकी अपना मन खोलने के लिये उन्माहित किया (झांसी०—पृ० वार्ता, ६५)

### मन गलना

इयाद होना या मन की कठोरता दूर होनी । प्रयोग—बुद्धा का मन भीतर ही भीतर गल गया (दीने०—रा० रा०, ३८)

### मन गिरना

उन्माह्वित होना, साहस छूटना । प्रयोग—इस समय सत्य को फिलासफी के टेकन की बहुत सख्त जरूरत है, क्यों कि मन गिरता जा रहा है और उसे इसी टेकन पर टिकाकर मजबूत रखना होगा (परस—जैनेन्द्र, ९६)

### मन गिराना

उदास होना । प्रयोग—पगली, क्यों मन गिरा दिया ? (झांसी०—पृ० वार्ता, ९६)

### मन घुमड़ना

मन में नाया प्रकार की घादकाओं का उठना । प्रयोग—कमला का मन घुमड़ने लगा (दीने०—रा० रा०, ६३)



## मन चकरी होना

### मन चकरी होना

अस्थिर मन, एक को छोड़कर दूसरे में प्रेम करने वाला । प्रयोग—यह तो मूर निनाहि जे सौगी जिनके मन चकरी (सु० सा०—सूर, ४६०६)

### मन चलना

(१) प्रेम का भाव पैदा होना । प्रयोग—फिर उस सिंहाल में ऐसी धी ही कौन जिस पर उनका मन चलता (कर्म०—प्रेमचंद, ३३७); क्या उस दिल्ली पर कुछ मन चल गया था ? (सुग०—५० वमी, २९६)

(२) इच्छा होनी ।

### मन चुराना,—छीनना

मन मोह लेना । प्रयोग—कष्ट दिन करि दधि-मालन-चोरी अब चोरत मन मोर (सु० सा०—सूर, १३९५); रामचरित जे निरख मुनि ते मन लेहि चोराइ (राम० (३)—तुलसी, १०५२); लेत बसन मन चुराइ बादम चहन नुरत पाइ आइ हम और माहि नांगी सकुचाही (भा० ग्रंथा०—भारतेंद्र, २); घांघ चुराता ही रहता है छीन-छीन मन मेरा (स्मृ०—हरिऔध, ११८)

### मन छीनना

#### दे० मन चुराना

### मन छुटना

मन का विमुख या मुक्त होना । प्रयोग—जाके गुन बंधे मन छुटे और ठौरनि तें, सहज मिथाम सोबै स्वादनि सपति है (धन० कवित्त—घना०, १४०)

### मन छूना

हृदय को प्रभावित करना । प्रयोग—गजजन की सचाई कन्या के मन को छू गई (बुंद०—अ० ना०, ५२०); उस समय उसके मन को उन लोगों के शब्द छू गये (कठ०—दे० स०, १६२)

### मन छोटा करना या होना

(१) हताश, निराश या उदास होना । प्रयोग—इतना मन न छोटा करो (प्रेमा०—प्रेमचंद, २०१)

(२) मन संकुचित करना या होना ।

### मन जमना

(१) मन का स्थिर, एकाग्र या दृढ़ होना । प्रयोग—

बाबाजी, जबतक भगवान की दया न होगी, भक्ति धीरे धीरे किसी पर मन न जमेगा (रंग० (१)—प्रेमचंद, ९६)

(२) मन में विश्वास बैठना । प्रयोग—इन्द्रदल में और सब गुण तो हैं, पर वह उई स्वभाव का आदमी है । इन कारण मेरा मन उस पर नहीं जमता (रंग० (२)—प्रेमचंद, १८०)

### मन जाना

कल्पना, इच्छा या ध्यान की गहून होनी । प्रयोग—हिरदै धी हरि भेंटिदै, जे मन जतै नही जाइ (कबीर ग्रंथा०—कबीर, १९०); जऽपि नैन निरखत वह मूरति, फिरि मन जात तहो (सु० सा०—सूर, ४९०७); गो गोबर जहू लमि मन जाई (राम० (अ)—तुलसी, ७०८)

### मन जीतना

(१) मन को वासनाओं को बस में करना । प्रयोग—मन जीते जव जीतिवा ते बिषिया से होई उदाम (कबीर ग्रंथा०—कबीर, ३०८); यदि न भलके तो वह उस योगी के समान है जिसने मन को जीत लिया है (सा० सु०—वा० भट्ट, १६)

(२) बस में कर लेना, प्रभावित करना । प्रयोग—हमें अपने चरित्र की ऊंचाई धीरे जीवन की सचाई से घाने साथी सरदारों का मन जीतना चाहिए (विष०—प्रेमी, ९५)

### मन जोड़ना

प्रेम करना । प्रयोग—मैं अपनी मन हरि सों जोड़वो (सु० सा०—सूर, २२७९)

### मन टंगा रहना

किसी व्यक्ति या वस्तु की निता लगी रहनी । प्रयोग—मन पर पर टंगा हुआ होया । बोबी बच्चों की याद घाती होगी (मिला०—रैजू, ४७)

### मन टटोलना

मन की बाह लेना । प्रयोग—साधारण मनुष्यों का मन टटोलना तो कुछ बड़ी बात नहीं है (सा० सु०—वा० भट्ट, १७); वह घंघा सबमूच मुझे खाए देने के लिए साया है, या लाना दे रहा है । उरा इसका मन टटोलना चाहिए (रंग० (२)—प्रेमचंद, १४४-१४५); क्यों न लेने टटोल घाने



## मन टूटना

को और का मन टटोलते क्यों हैं ? (बील०—हरिऔध, २०९)

## मन टूटना

(१) माहस छूटना, हताश होना, चिन्न होना। प्रयोग—जुही—उनकी रुखाई से मन टूट सा गया था (झांसी०—पृ० तर्मा, २२६); पर जान पड़ता है, उसका मन टूट गया क्योंकि वह कभी नीम से गिर टिकाकर रो लेती है और कभी भाव देते देते रुकाकर आँखें पोंछने लगती है (अतीत०—महादेवी, ४९)

(२) इच्छा होना। प्रयोग—उसका मन शराब पर टूटता था, वह उसे बिग पिलाकर उसकी प्यास बुझाना चाहती थी (रंग० (१)—प्रेमचंद, ३१९)

## मन ठहरना

चित्त की साकुलता दूर होनी। प्रयोग—ज्यो बहरे न कहूँ ठहरे मन, देह सो आहि बिदेह को लेखी (घन० कवित्त—घना०, ६६); पिय के बिछरे बिरह बस, मन न कहूँ ठहराव (पुं० स०—पुन्द, १५२)

## मन उहकना

मन लगा रहना, लिप्त रहना। प्रयोग—इन छिह मन उहके सबहिन के, काहू को पर्यो न पुरो रे (कबीर ग्रंथा०—कबीर, ११५)

## मन डाँचाडोल होना.—डिगना

(१) किसी बात पर मन का एक निश्चय न कर पाना। प्रयोग—मन न डिगै तन काहे को डराई, चरन कमल चित राखो समाई (कबीर ग्रंथा०—कबीर, २८०); माँ ! ऐसी सुमति देना जिसमें मन न डिगने पावे (राधा० ग्रंथा०—राधा० दास, ७२३); डालते पीस पर्वतों को हम मन डिगावे अगर न डिग पाता (चोखे०—हरिऔध, १५१); जिस घड़ी उसका मन इस भाँति डाँचाडोल था, उसने फूलवारी की एक ओर से देवनन्दन को अपनी ओर आते देखा (ठेंठ०—हरिऔध, १८)

(२) मन का निश्चय से हट जाना, अस्थिर होना।

(३) मन में घर्षितिक घासक्ति आनी।

## मन डाल-डाल दौड़ना

धन का अस्थिर होना, मन में नाना प्रकार की बातें

५६७

मन तपना

आनी। प्रयोग—कुछ अच्छा नहीं लगता। मन डाल-डाल दौड़ता फिरता है (गहन—प्रेमचंद, १४९)

(समा० मुहा०—मन डाल-डाल फिरना)

## मन डिगना

दे० मन डाँचाडोल होना

## मन डूबना

हताश होना; दुःखी होना; निरत्नाह होना। प्रयोग—दो बजकर बीस मिनट हो गये तो कनक का मन डूबने लगा (छुटा० (१)—यशपाल, २८१)

## मन डोलना

मन का चंचल होना, आकृष्ट होना। प्रयोग—राम चरन जाके हरिदे बसत है, ता जन की मन क्यूँ होले (कबीर ग्रंथा०—कबीर, २१२); कहैमि पेम औ जपना बारी। बापु सत मन डोल न भारी (पद०—जायसी, १८६); हरि प्रेरित लछिमन मन डोला (राम० (३)—तुलसी, ७२७); पर सावधो बिद्यासागर का मन जरा न होला (राधा० ग्रंथा०—राधा० दास, २९१); वहाँ धाया एक सौदागर लोभी पर भोला, उसे ठगने को किसी का मन डोला (बुद्ध०—वचन, ६१); पड़ा कभी दुष्काल, मरे नर, जीवित का मन डोला (कुकु०—दिनकर, ११२); जानती है नानी ? ई करिया-कलन्दर का मन तो होल रहा है (परती०—रेणु, ३९६)

## मन डरना या डलना

किसी की ओर होना। प्रयोग—मेँ घाति बिमुख रही, यह सम्मुख नीकेँ उहाँहि डरूँ (सु० सा०—सूर, २७१६); रूप-हीन कुलहीन कुबरी, तामों मन जूँ डरूँ (सु० सा०—सूर, ४२६४)

## मन डीला होना

मन डुबल होना, आकृष्ट होना। प्रयोग—हाँ, एक पुवराज के सामने मन डीला हुआ (स्कंद०—प्रसाद, ४९)

## मन तपना.—डहना

मन को कष्ट होना। प्रयोग—कामों कहीं तपत मन निरि-रिन, को यह पीर सहे (सु० सा०—सूर, ४४६७); हुरय बहुत जमुना बिनु देखे, वहाँ-वहाँ नवलाज हँसो (सु० सा०—सूर, ४४६८)



### मन तोड़ना

(१) सम्बन्ध विच्छेद कर लेना । प्रयोग—मैं अपनी मन हरि सो जोर्यो । हरि सो जोरि सबनि सो गोर्यो (सु० सा०—सूर, २२७९)

(२) साहस छोड़ना ।

(३) उत्साह कम करना; दुर्गति करना ।

### मन तोलना

मन के किसी विचार की मृदता या दृढ़ता को देखना । प्रयोग—बारंबार बरजि बिपिया तैं, लैनर जो मन तोलै (कवीर ग्रंथा०—कवीर, २१२); है हिम्मत ? सुवसनाल अपने मन को तोलता है (परतौ०—रेणु, १३९); मान किसमें है कि मन को तोल ले (चोखे०—हरिऔध, १४५)

### मन धकना

(१) मन का स्तब्ध रह जाना । प्रयोग—लंका चाहि ऊँच गइ ताका । निरखिन जाइ दिस्टि मन याका (पद०—जायसी, २१६); सुन्दर बदन मुग सदन स्पाम की, निरखि नैन मन पावधौ (सूर सा०—सूर, ३६२५)

(२) मन का कामना-रहित होना । प्रयोग—तन-पौष्य सब याका मन नहि पाका हो माधो (भा० ग्रंथा० (२)—भारतेन्दु, ६४९)

### मन धमना

मन वश में होना । प्रयोग—तब धमेगी किस तरह संजीदगी धामने से मन न जब धमता रहा (खुमते०—हरिऔध, ७१)

### मन दबना

(१) उत्साह-हीन होना । प्रयोग—घावका मन भला क्यों दबा जा रहा है ? (पद्म० के पत्र—पद्म० शर्मा, २८)

(२) इच्छाओं का वश में होना । प्रयोग—जब दबाये से मन ही नहीं दबा, नाक को तब हैं दबाते किसलिये (चोखे०—हरिऔध, ११३)

### मन दहना

दे० मन तपना

### मन दूसरे के हाथ होना

दूसरे के वश में होना । प्रयोग—मुनिहि मोह मन हाथ

पराए, हंसहि वानु मन अति सबपाए (राम० (बाल)—तुलसी, १४६)

### मन देना

(१) मन लगाना, ध्यान देना । प्रयोग—मन दीयां मन पाइए, मन बिन मन नहि होइ (कवीर ग्रंथा०—कवीर, २८)  
(+); इन बनिपनि कैसे मन दीजे (सु० सा०—सूर, ४३३५); ध्यान पपीहन के धन हो, मन दे धन धानद कीजे अनोती (धन० कवित्त—धना०, ९७); श्रीकृष्णचंद बोले कि तुम सब मन दे मुनो भला ओ बुरा मैं ब्रह्माकर कहता हूँ (प्रेम सा०—ल० सा०, ८३)

(२) प्रेम करना । प्रयोग—तुम मन दियो धानि बनिता तो, मैं मन मान लगायो (सु० सा०—सूर, ३४४४); पीछे जारि अधमन हम दीनो दुनी मन तुम्हें तुम नाथ इत पाउ न धरत हो (क० र०—सेनापति, ८); अगर मन में कपट हो, मुझे बता दो X X ऐसों को मन नहीं देती (गोदान—प्रेमचंद, ४८); देखिए प्रयोग (१) में (+) भी ।

### मन दो होना

मनोमालिन्य होना । प्रयोग—काकी, तू भी पागल हो गयी है क्या ? जानती नहीं, दो रोटियां होते ही दो मन हो जाते हैं (मान० (१)—प्रेमचंद, १०)

### मन दौड़ाना

मन को इधर-उधर लगाना । प्रयोग—नैन मूँदि धरि ध्यान निरंतर, मन देख्यो दौराइ (सु० सा०—सूर, ४४२९)

### मन धरना

(१) ध्यान देना, मन लगाना । प्रयोग—सूरदास स्वामी मनमोहन तामे मन न धरे (सूर—हि०श०सा०)

(२) मन में निश्चय करना ।

### मन धुलना

मन के कलुष या दुर्भाव का दूर होना । प्रयोग—अभी तुम्हारा मन नहीं धुला ? देखर, मैं कहती हूँ, तुम नहीं जाओगे (शेखर (२)—अज्ञेय, १६९)

### मन नाचना

(१) आनंद होना । प्रयोग—महि बहु रंग रवित मन कांचा, जो बिलोकि मुनिवर मन नाचा (राम० (अ)—तुलसी, १०५२)

(२) लोभ होना ।



### मन पकड़ना

मन की बात समझनी । प्रयोग—मैं उनका मन पकड़ नहीं सकता (जय०—जेनेन्द्र, १२६); तन पर न हमारे अवगुंठन । घर हाथ पकड़ लेती हम मन (स्वर्णवृत्ति—पत, १५५)

### मन पकना

(१) किसी के दुर्व्यवहार से चित्त स्थिर होना । प्रयोग—उमने कहा कि छापे के बाद इस पेघे में रहना अब बहुत ही कठिन हो गया है, मेरा जी भी सब इस काम से पक गया है (ये कोठे०—अ०ना०, ८९)

(२) मन में बुद्धि या आना, कामना-रहित होना । प्रयोग—केस पके तन पक्यो रोग सो मनआ तबहु न पाका (भा० ग्रंथा० (१)—भारतेन्दु, ६४९)

### मन पढ़ना

मन का भाव जानना । प्रयोग—प्रब मैंने उसका मन पढ़ लिया था, उसका आत्मा देख लिया था (सु०सु०—सुदर्शन, २३५)

### मन पर चढ़ना

मन को जंचना या प्रिय लगना । प्रयोग—जबो सुनेद बड़े संगीत शास्त्री राजा नवाबखली के मन पर चढ़ी हुई थी (ये कोठे०—अ०ना०, १०७)

### मन पर तलवार चलना

मन को पीड़ा पहुँचनी । प्रयोग—प्रेमपात्र की मोहि का तनक हिल जाता मन के ऊपर सचमुच तलवार ही का काम कर जाता है (प्र०पी०—प्र०ना०मि०, ५६)

### मन पर लगाम देना

मन को नियंत्रण में रखना । प्रयोग—घोर कितने सोभाग्यशाली हैं, जिन्होंने मन पर स्वाधी लगाम दे रखी है (अम्ब०—रा०वे०, ३९)

### मन पाना

(१) मन की बात जाननी । प्रयोग—तुमने देवपुत्र-नन्दिनी के मर्म की व्यथा नहीं देखी है । निपुलिका समझती है उससे पूछ कर तुम उनका मन पा सकते हो (वाण०—ह० प्र०द्वि०, ९९)

(२) स्नेह प्राप्त करना । प्रयोग—मन दीयां मन पाइए, मन बिन मन नहि होइ (कबीर ग्रंथा०—कबीर, २८); पाए

न परत हारे पाए न मन तिहारे काहे दुग तारेहु ललाई दीजियतु है (भूपण ग्रंथा०—भूपण, २४५)

(३) रुख पाना, इच्छा देखनी । प्रयोग—नैक नीरे जाइ करि बादन लगाइ करि, कछु मन पाइ हरि बाकी गही बहिया (मति०मक०—मतिराम, १४७)

### मन पोहना

मन लगाना । प्रयोग—मुरदास स्वामी कहनामय, स्वाम-चरन मन पोइ (सु०सा०—सुर, २६२)

### मन फंसना

प्रासक्ति हो जानी । प्रयोग—बेपरवाही के संग मन फंस गयो कुदावं (भा०ग्रंथा० (२)—भारतेन्दु, ४०३)

### मन फटना

विरक्ति होनी, सम्बन्ध रखने को चीन चाहना । प्रयोग—मन फाटा बाइक दुरे, मिटी सगई साक (कबीर ग्रंथा०—कबीर, ६०); कोटि कोटि "मतिराम" कहि, जवन करो सब कोइ फाटो मन अरु दूष में, नेह न कबहुं होइ (मति०मक०—मतिराम, २३५); एक बेर मन फटे मुरम नहि फेरि लहीजै (राधा० ग्रंथा०—राधा० दास, ४४); पुरी के ऐसे ही किसी व्यवहार से उसका मन फट गया होगा (झुठा० (२)—यशपाल, ६६५); रघू का हृदय माँ की ओर से दिन दिन फटता जाता था (मान० (१)—प्रेमचंद, १)

### मन फिर जाना

किसी तरफ से चित्त का उचट जाना । प्रयोग—सचमुच तुम्हारा मन मुझ से फिर गया है? (वीने०—रा०रा०, २०२); मैं यही मांगती, कि मेरा स्वामी सदा मुझ से प्रेम करता रहे । उसका मन कभी मुझ से न फिरे (गवन—प्रेमचंद, १२५)

### मन फिराना

मन को दूसरी ओर लगाना । प्रयोग—कबीर माला काठ की, कहि समुझावै मोहि । मन न फिरावै आपणां, कहा फिरावै मोहि (कबीर ग्रंथा०—कबीर, ४५)

### मन फिसलना

घाकूट होना । प्रयोग—पुरुषों का कुछ ठीक नहीं एक पर से उसका मन उचट कर कितनी जल्दी घनेक पर फिसल



जाता है (मृग०—वृ० वर्मा, ३९५); हमारा भी नया ही नया मामला था, मन फिमान गया (वृ०—अ० ना०, ६३)

### मन फीका होना

मन में उल्लाह या रस न होना। प्रयोग—भा मन फीका नारि के लेखें। कस पिय पीठि दीन्ह मोहि देखें (पद०—जायसी, ५२४)

### मन फूलना

खुश होना। प्रयोग—तात मात सुत लोग कुटुंब में, फूल्यो फिरत मनो (कबीर ग्रंथा०—कबीर, २२०) मानहु कवल सरोवर फूलें। सगा क रूप देखि मन भूलें (पद०—जायसी, २२३); अपनी भुजा घोब पर मेली, गोपिन के मन फूलें (सु० सा०—सूर, ४३१५); और केनोदाम फैलि रही फूलि सीमकूल-दुति फूल्यो तनु मनु मेरो ग्यारे हरि मोहिपैं (केशव०—केशव, २१२)

### मन फेरना

(१) विमुख होना। प्रयोग—दिनन को फेर मोहि, तुम मन फेरि डार्यो अहो पन आनंद ! न जानो कैसी जोतिहै (धन० कवित्त—धना०, ३३)

(२) मन को हटाना, विचार परिवर्तन होना। प्रयोग—मेरी एक स्त्री है जिसे मैं धर्म से कहता हूँ कि मैं प्यार करता हूँ परन्तु यदि उसके स्वर्ग में जाने से किसी देवता की सहायता मिल सकती जो इस पापी जैन के चित्त को फेर देता तो मुझे उसने हाथ धोने में कुछ मोच न होता (भा० ग्रं० (१)—भारतेन्दु, ६३४); वस उसी समय से उन्होंने संसार की ओर से मन को फेरा (राधा० ग्रं०—राधा० दास, ४१६); यह कथा अनेक क्षेपकोमय विस्तार के साथ सुनायी तो गयी थी मेरा मन फेरने के लिए और मन फिरा भी (अलीत०—महादेवी, ७३)

(३) मन-बहुलाव करना।

### मन बंटना

ध्यान दूसरी ओर लगना। प्रयोग—तिलक के पहले समय तक विजय को ज्योतिर्मयी की याद घाती रही। पर नवीन विवाह प्रसंग से मन बंट गया (शिली—निशाला, ३२)

### मन बंधना

प्रेम होना। प्रयोग—बंद बकोर स्वाति गौ चातक, जैसै

बंधौ हियो (सूर सा०—सूर, ४१५०); मन मधे क्या मया नहीं साधे मन बंधे है जहान बंध जाता (चोखे०—हरिऔध, १४५)

### मन बढ़ना या बढ़ाना

(१) साहज बढ़ना, उत्साह होना या करना। प्रयोग—दियो जिरयाब नूपराब ने महर को आप पहरावनी सब दिखाए अतिहि सुख पाइ के लियो मिर नाइ के हरषि नंदराइ के मन बढ़ाए (सूर—हि० श० सा०); इधर कई दिन से पति को कुछ सदय देखकर उसका मन बढ़ने लगा था (गोदान—प्रेमचंद, २४३); यदि मेरा मन बड़ा हुआ रहता है तो हम बहुत से काम प्रसन्नतापूर्वक करने के लिए तैयार हो जाते हैं (चिता० (१)—शुक्ल, १६)

(२) इच्छा होनी या करनी।

### मन बदलना

विचार या रस में परिवर्तन होना। प्रयोग—बिचलेला का हृदय बदल गया, इसका बीजगुप्त को कुछ चीण आभास हो रहा है (चित्र०—मग० वर्मा, ७२); हमारे गांव के दोनों का भी मन बदल गया (झूठा० (१)—यशपाल, ४९९)

### मन बलियों उछलना

बहुत आनंद होना। प्रयोग—कमला का मन बलियों उछलने लगा (बौने०—रा० रा०, १५३)

### मन बसना

मन को बहुत प्यारा होना। प्रयोग—मोहन को मन मोहिनी में बस्यो, मोहिनी को मन मोहन माहीं (जग०—पद्मसा०, ६४)

### मन बांधना

(१) प्रेम करना। प्रयोग—हमहि छांड़ि कुबिजा मन बांध्यो कोन वेद की राह (सु० सा०—सूर, ३९८४)

(२) मन को बंध में करना। प्रयोग—बांधि हूँ क्यों मन पल्लेक, साधिहूँ क्यों पौन (सु० सा०—सूर, ४६१५); हम दोनों ही कम कर अपने मन को बांधे रहते थे (गोलो—चतुर०, १६५)

### मन विकना

मन किसी के बंध में हो जाना। प्रयोग—चटक-मटक-भरी लटक चलनि नोकी, मूढ़ मूयक्यानि देखें मो मन विकायनी (धन० कवित्त—धना०, १८४)



### मन बुझाना

मन के उत्साह का ठंडा पड़ जाना । प्रयोग—परमेश्वर का मन आया बुझ गया था कि नीतिमा नहीं जा रही है अभी (वीने०—री० रा०, १६५); मेरा मन भी बुझा-बुझा सा हो रहा था (अतीत०—महादेवी, ८१)

### मन बूढ़ा होना

मन में यौवनोत्साह का न रह जाना । प्रयोग—तन बूढ़ाई मन बूढ़ न होई । बल न रहा लालच जिय सोई (पद०—जायसी, ४९३)

### मन बैठना

(१) निरुत्साह हो जाना, डर लगना । प्रयोग—पिताजी के सामने झूठ बोलने की जवाबदेही करने की कल्पना से कनक का मन बैठ-बैठ जाता था (झूठा० (१)—यशपाल, १८३)

(२) मन को ठीक लगना । प्रयोग—मेरा मन बैठ गया, तो सब ठीक समझिएगा (रंग० (२)—प्रेमचंद, ४४)

### मन भटकना

मन का स्थिर न होना, बहुत से विचार उठना । प्रयोग—किंतु शीघ्र ही उसका मन भटकने लगा, गाना सुनना वह भूल गया (शेखर (२)—अज्ञेय, ७१); छोड़ फूले फूले भले पोधे मन भटकता फिरा बबूलों में (चोखे०—हरिऔध, १३८)

### मन भर आना,—उठना

(१) मन में दुःख होना । प्रयोग—बाबू रामज्वाया को उस अवस्था में देखकर पुरी का मन भर आया था (झूठा० (२)—यशपाल, २५०)

(२) भावातिरेक होना । प्रयोग—शेखर का अंतर इतना भर उठा कि उससे बात भी न कर सका (शेखर (२)—अज्ञेय, ५८)

### मन भर उठना

दे० मन भर आना

### मन भर जाना

(१) भरा जाना; तृप्त होना; अधिक प्रवृत्ति न होनी । प्रयोग—तब तो आपका मन अभी भरा नहीं (मारती०—रा०रा०, ८६)

(२) मन में विश्वास जम जाना । प्रयोग—मैं अपना मन भर लूँगा और किस तरह मेरा तोप होगा इस पर विचार करूँगा (भा० ग्रंथा० (१)—मारतेन्दु, ५६४); जो अच्छी तरह हमारा मन भर जायगा तो हम नालिश नहीं करेंगे (परीक्ष०—श्री० दास, १८९); अगर मेरा मन न भरा तो मैं लौट आऊँगा (गवन—प्रेमचंद, १६७); इतने से मवाब साहब का मन भर गया (झांसी०—वृ० वर्मा, १४५)

### मन भाना

भला लगना, पसन्द होना । प्रयोग—कहेहु नीक मोरेहु मन भावा, यह अनुचित नहीं नेवत पटावा (तुलसी—हि०श०सा०)

### मन भारी करना या होना

दुखी या उदास होना । प्रयोग—बही मोती बाई के गहनों से लौटकर आते हुए मेरा मन भारी हो गया (ये कोठे०—अ०ना०, १९२); मन बहुत भारी हो गया था पर उरासी को छिताना आवश्यक था (झूठा० (१)—यशपाल, २७८)

### मन भीनना

पूरी तरह रमना । प्रयोग—रंच मारि पावा तनि दीने, हरि सिमरन मेरा मन तन भीने (कबीर ग्रंथ०—कबीर, ३०९)

### मन भूलना

मन का धमिल हो जाना । प्रयोग—एहि भूठी माया मन भूला चूरे पाँख जैस तन फूला (पद०—जायसी, ५५)

### मन मंजा होना

मन साफ होना, कोई दुविधा या आशंका न होनी । प्रयोग—नाना साहब इत्यादि हम लोगों को अच्छी तरह जानते हैं, उनके मन मंजे हुये हैं (झांसी०—वृ० वर्मा, २६७)

### मन मथना

(१) मन को कष्ट पहुँचाना या पहुँचाना । प्रयोग—मयत मनोज सदा मो मन, पै हौं कब प्रानपति पास पाय तप-मद फेदिहौं (धन०कवित्त—धना०, ६७)

(२) मन में द्वन्द्व होना । प्रयोग—वह जानता था कि बिना इस बात के उत्तर में कोई ऐसा चुभता हुआ सत्य कह देगी जो इस समय उसके मन को मथ डालेगा (घुंटा०—अ० ना०, ३७२)



### मन मरना

(१) मन की इच्छाओं का खेप होना । प्रयोग—कबीर मन मृतक भया, दुरवक्त भया मरीर (कबीर ग्रंथा०—कबीर, ६४); नां मन मूवा न मरि मववा, नां हरि भनि उतरवा पारो रे (कबीर ग्रंथा०—कबीर, २२०); यह मन कठिन मरे नहि मारा (पद०—जायसी, ५५); और दूसर हुआ हमें जीना मन, धके मार, मर नहीं पाता (चुमते०—हरिऔध, ११३)

(२) उत्साहहीन होना । प्रयोग—तप सहारे न क्या सके कर जो मन उन्ही का मरा बहुत हारा (चुमते०—हरिऔध, २०)

### मन मसोस कर रह जाना,—खाना

विवश या निरुपाय हो कर रह जाना । प्रयोग—नबाब का मन मसोस ला गया । परन्तु उन्होंने घाना नहीं छोड़ी (झांसी०—वृ० वर्मा, ११०); पर क्या करूँ × × मन मसोस कर रह जाता हूँ (पद्म० के पत्र—पद्म० शर्मा, ६४); देखकर मान घुल में मिलता मन हमारा मसोस जाता है (बोल०—हरिऔध, २०९)

### मन मसोस खाना

#### दे० मन मसोस कर रह जाना

### मन मानना

(१) संतोष होना । प्रयोग—राजा मैं निदबं मन माना । बांधा रतन छोड़ि कै घाना (जायसी—हि० श० सा०), मधुकर कहि कैसे मन माने (सूर—हि० श० सा०)

(२) निश्चय होना । प्रयोग—कहे कबीर जे घंवर जानै, ताही मूं मेरा मन मानै (कबीर ग्रंथा०—कबीर, १३३) (÷); कै बिनु सपथ न अस मन माना सपथ बोलु वाचा परमाना (जायसी०—हि० श० सा०); जोग सिखाए क्यों मन माने, क्यों न ओस कन प्यास बुभाई (सु० सा०—सूर, ४५३८)

(३) धृष्टता लगना, अनुराग होना । प्रयोग—नंदलाल सौ मेरी मन मान्यो, कहा करंगी कोउ (सु० सा०—सूर, २२८१); सप्त प्रबंध सुभग सोपाना । जान नयन निरखत मन माना (राम० (बाल)—तुलसी, ४९); देखिए प्रयोग (२) में (÷) भी ।

### मन मार कर बैठ जाना,—रह जाना, मन मारना

(१) मन की इच्छा को मन में ही दबाकर रह जाना ।

प्रयोग—कवन सु मुनि जो मन को मारें (कबीर ग्रंथा०—कबीर, ३१५); मुहम्मद यह मन घमर है, कहु किम मारा जाइ (पद०—जायसी, ३५१); तब बैठी मन मारि आपनो, कछ मन सोच पर्यो (सु० सा०—सूर, ३०९८); कृपासिधु ताते रह्यो निनिदिन मन मारे महाराज ! ताज आपुही निज जांघ उधारे (विनय०—तुलसी, १४७); इसी से कहते हैं × × एवं के दिन मन मार के न बैठे (प्र०पी०—प्र०ना०मि०, १२०); अपना मन मारने से किसी को खुशी क्यों कर हो सकती है ? (परोक्षा०—शी० दास, ८१); अब ईश्वर की दया से उसके पास भी गहने हो गये थे । फिर वह क्यों मन मारे घर में पड़ी रहती (गवन—प्रेमचंद, ७०) (÷); याद भये मनमोहन की सखियां मन मारि महा मुरझाई (मर्म०—हरिऔध, २८); अगर तुम्हें कम पड़े तो और मंगा लेना लेकिन अपने मन को न मारना, समझा ! (मूले०—मग० वर्मा, २७१)

(२) खिन्न-चित्त होना, उदास होना । प्रयोग—इहि अंतर मुनि गए नृप पासा । मन मारे मुख करे उदाना (सु० सा०—सूर, ३५४०); उर घरि धीरनु गयउ दुआरे । पूर्णहि सकल देखि मन मारे (राम० (अ)—तुलसी, ४०८); ऐसे मन ही मन सोच विचार करता, मनि लिये, मनमारे सचाजीत घपने घर गया (प्रेम सा०—ल० ला०, १९५); पुत्र की रोगी घोर अस्थव्य दशा में पलंग के पास बैठ उदासीन मनमारे वह उसका मुंह ताक रही है (सा० सु०—वा० भट्ट, ६०); दोनों बरामदे में मन मारे बैठे हुए थे घोर शायद मोच रहे थे—घर में आज क्यों लोगों के हृदय उनसे इतने फिर गये हैं (मान० (१)—प्रेमचंद, १३५); देखिए प्रयोग (१) में (÷) भी ।

### मन मार कर रह जाना

#### दे० मन मार कर बैठ जाना

### मन मारना

#### दे० मन मार कर बैठ जाना

### मन मिट्टी होना

मन का निरुत्साह होना । प्रयोग—मेरा शृंगार होने लगा । कैसे तमाशे की बात थी । मन तो मेरा मिट्टी हो रहा था (गोलो—चतुर०, १४७)



### मन मिलना

(१) धनुरूल प्रकृति का होना । प्रयोग—तुम सुभागी को मारते बहुत हो, इससे उसका मन तुमसे नहीं मिलता (रंग० (१)—प्रेमचंद, १८६); और फिर हज़े भी क्या है, जहाँ मन मिले वहाँ शांति करनी चाहिए (बाहर०—देव० ९०) (÷)

(२) प्रेम होना । प्रयोग—सबति के मन जो मिले हरि, कोउ न कहति उचारि (सु०सा०—सूर, २११७); उन हरकी हुनिकें, इतें, इन सौधी मुसकाइ । नैन मिले मन मिलि गए दोऊ, मिलवत गाइ (विहारी रत्ना०—विहारी, १२८); धन धानंद प्यारे मुजान मुनो, न मिलौ तौ कहौ मन काहि मिले (धन० कवित्त—धना०, १०७); सोफिया प्रजात रूप से मि० कलाकं से कुछ खिची हुई रहती थी; हृदय बहुत दबाने पर भी उनसे न मिलता था (रंग० (१)—प्रेमचंद, ३२०); जब मिलाने से नहीं मिल मन मका तब मिनी दो जातिवां तो क्या मिनी (चुमत्तै०—हृत्विद्य, ५०); वे × × किसी कारणवश अपनी समुदाय प्राण होने । सलहज-ननदोई का मन मिल गया (ये कोठे०—अ० ना०, ५३); देखिए प्रयोग (१) में (÷) भी ।

(३) मित्रता होनी ।

### मन मीठा होना

मन में धानंद होना । प्रयोग—कुछ ऐसी मिठास थी उसमें कि आज तक उसने मन मीठा होता रहता है (मान० (१)—प्रेमचंद, १६६)

### मन मुंह को आना

तीव्र इच्छा होनी (मन की बात कहने की) । प्रयोग—शरीर पर लगी चोटों की पीड़ा से कराह देने को मन मुंह को आ रहा था (ज्ञान०—यशपाल, १२४)

### मन मुरझाना

मन दुखी या खिन्न होना । प्रयोग—पदुमावति मन जाहि जो झूरी । सुनत सरोवर द्विग गा पूरी (पद०—जायसी, ५४१)

### मन मूसना

आकर्षित कर लेना । प्रयोग—किधौ नंद-नंद (न) मद मूसकि तुमरे मन मूसे (नंद०ग्रंथा०—नंद०, ११); कान्हू

चलो उठि बंटे कहा ? मन मूसि परायोज्य कमन लागे (केशव०—केशव, ७७)

### मन में आंधी चलना

(१) मन में विचारों का संघर्ष चलना । प्रयोग—उसके मन में आंधी उठ रही थी, किन्तु मूल पर संघर्ष की शीतलता थी (तितली—प्रसाद, ६७) (÷)

(२) मन स्थिर न होना । प्रयोग—इनके तजने के विचार से मन में उठती आंधी है (नूर०—भक्त, ४); देखिए प्रयोग (१) में (÷) भी ।

### मन में आना

(१) मन में विश्वास का होना । प्रयोग—तागों उन कटु वचन सुनाये । पै ताके मन कछु न आये (सूर०—हि० श० सा०); सोइ भरोस मोरें मन प्रावा (राम० (बाल)—तुलसी, १६)

(२) विचार आना । प्रयोग—भरत भगति सुम्हरें मन आई । तजहु सोचु विधि बात बनाई (राम० (अ)—तुलसी, ६२४); सवें बड़ाई धूल मांगिबे की आई मन (राधा० ग्रंथा०—राधा० दास, ५७)

(३) ध्यान में आना । प्रयोग—यह तनु क्यों हो दियो न जावै और देत कछु मन नहीं आवै (सूर०—हि० श० सा०)

### मन में उतरना

(१) समझ में आ जाना । प्रयोग—इस तरह बतावे है कि वस मन में उतरता चला आ रहा है (घरती०—वि० प्र०, १२९)

(२) मन को स्वीकार होना ।

### मन में कटकर रह जाना

(१) बहुत लज्जित होना । प्रयोग—मैं मन में कटा जा रहा था पर न जाने क्या बात थी कि यह सफेद भूट उस वक्त मुझे हास्यास्पद न जान पड़ा (मान० (२)—प्रेमचंद, १०७)

(२) किसी तीखी बात से मन पर गहरा आघात होना पर कुछ कह न पाना ।

### मन में कहना

अपने प्राण सोचना-विचारना । प्रयोग—विहसे लखनु कहा मन माही (राम० (बाल)—तुलसी, २८६)



### मन में कांटे की तरह खटकना

मन में किसी के दुर्व्यवहार या दुःख का कष्ट होना ।  
प्रयोग—पर वह बात मेरे मन में कांटे की तरह खटक रही है (तिलक—प्रसाद, २९३)

(समा० महा—मन में कांटे चूभना)

### मन में गड़ना—चूभना

(१) मन में गहरा स्थान बनना । प्रयोग—वह मूर्ति मन गड़ी हमारे दरि न मोवन जायें (सु० सा० (परि०)—सूर, १६८); दरि न टारें छवि मन ज चभी (सु० सा०—सूर, २४८८); बचन करम तेरे मेरे मन गड़े है (विनय०—तमसी, १८०); तं मोहन मन गड़ि रही गाड़ी गड़नि, गवालि । उठै मत्ता नटमाल ज्यों मोनिन के उर सालि (बिहारी रत्ना०—बिहारी, ६०९)

(२) मन को कष्ट देना । प्रयोग—मेरे मूँह से जो कटु शब्द निकले थे, वह सब जैसे मेरे ही हृदय में गड़ने लगे (मान० (१)—प्रेमचंद, १५९)

### मन में गांठ पड़ना—बैठना

किसी अप्रिय बात का मन में धर कर लेना । प्रयोग—तब तो वह भी गग लेकिन उसी बात पर उनके मन में प्रायद गांठ बैठ गई (कल्याणी—जैनेन्द्र, ३०); मेरी से मेरी कभी सफाई से बातचीत नहीं हुई । उसके मन में गांठ पड़ी हुई है (रंग० (१)—प्रेमचंद, ३९२)

### मन में गांठ बैठना

दे० मन में गांठ पड़ना

मन में धर करना,—जगह करना,—होना स्नेह या प्रेम होना । प्रयोग—तिय को मन नंदलाल में तिय मन में नंदलाल (पद्मा०—पद्माकर, ५६); हिन्दी के परम रसिक दूसरे हरिश्चन्द्र पंडित प्रताप नारायण मिश्र के हृदय में बाबू रामदीन सिंह के किस हित ने जगह की ? (गु० नि०—बा० मु० गु०, २९); लक्ष्मी दासिन के दिल में बालदेव जी ने धर कर लिया है (मिला०—रेणु, १९३)

### मन में चूभना

दे० मन में गड़ना

### मन में चोर पालना या होना,—पैदा होना

(१) संदेह होना । प्रयोग—मगर मोहिनी के मन में तो

चोर या, वह सन्नों का घोड़ा सा रंग देखकर ही वहाँ से टलना चाहती थी (यैकोठे०—अ० ना०, ११६); फिर भी दीनानाथ के मनमें चोर पैदा हुआ था । गौरी से इस विषय में वह एक शब्द भी न कह सका (मान० (२)—प्रेमचंद, १९६)

(२) कोई बुरा करके स्वयं मन में आशंकित होना ।

प्रयोग—मेरा इतना गहरा साधी होने पर भी अपने मन में चोर पालता है कि खुशामद करके लोगों से अपने लिए लेख लिखाता हूँ (बुँद०—अ० ना०, ३७)

### मन में चोर पैठना

मन में अशंका होनी । प्रयोग—“उनके मन में कोई चोर पैठ जाय ?” “चोर पैठे या डाकू, गाव तो उन्हें ही देनी पड़ेगी” (गोदान—प्रेमचंद, २८)

(समा० मुहा०—मन में चोर बैठना)

### मन में छुरी रखना

मन में दुर्भावना रखनी । प्रयोग—शायद दुनिया को दिखाता है कि मैं अपने भाइयों को कितना चाहता हूँ और मन में छुरी रखी हुई है (मान० (१)—प्रेमचंद, २)

### मन में जगह करना

दे० मन में धर करना

### मन में जगह बनाना

प्रेम पाना । प्रयोग—चन्द्रकला के मन में कोई जगह नहीं बना सका (सिंदूर०—ल० मिश्र, ९२)

### मन में डौल करना

मन में विचार करना, व्यक्ति सोचनी । प्रयोग—विना गुन यों पुहुमि उधरं, यह करत मन डोर (सु० सा०—सूर, ४०३१)

(समा० मुहा०—मन में डौल बांधना)

### मन में तूफान उठना

विचारों का अंदोलन होना । प्रयोग—यह न समझो संग्राम सिंह कि मैं अंधा हूँ । छाठों पहर मेरे हृदय में एक तूफान उठता रहता है (विप०—प्रेमी, ३१)

### मन में दरार पड़ जाना

मन में अंतर पड़ना । प्रयोग—मेरे मन में पड़ गई ऐसी



एक दरार । फाटा फटक पषोरण ज्यू, मिस्या न दूजी बार  
(कबीर ग्रंथा०—कबीर, ६०)

### मन में धंसना

चित्त में प्रभाव उत्पन्न करना—दिल में असर करना ।  
प्रयोग—हमारे अपढ़ खयाल वालों के मन में यह कभी  
धसता ही नहीं कि दुनिया के और-और हिस्सों में क्या  
हो रहा है (मट्ट नि०—वा० मट्ट, १०८); हाय, हाय, इतना  
बड़ा पुलिन्दा तुमने गिरा दिया, यह बात मेरे मन में धंसती  
नहीं (मा० मा० (१)—कि० गो०, ४८)

### मन में धरना

मन में निश्चय करना । प्रयोग—करी अजय मख अस मन  
धरा (राम० (ल०)—तुलसी, १४४)

### मन में पैठना

मन पर प्रभाव होना या मन को ठीक लगना । प्रयोग—  
इसका सत्य दोखर के मन में धीरे-धीरे पैठता है (शेखर (२)—  
अज्ञेय, १९०)

### मन में फटकने न देना

मन में तनिक भी न जाना । प्रयोग—बह किनी बुराई को  
मन में फटकने भी नहीं देना चाहता (वृ०—अ० ना०,  
४४६)

### मन में फूलना

बहुत खुश होना । प्रयोग—कबीर मन फूल्या फिर, करता  
हं में ध्रम (कबीर ग्रंथा०—कबीर, ३८)

### मन में फेरना

बार-बार मन में याद करनी, सोचना । प्रयोग—पर सरस्वती  
की ओर से यह ऐक्य, सम्मिश्रण इतना आत्यंतिक नहीं था  
वह आजकल जाने क्यों चितित सी रहती थी, जाने क्या-  
क्या मन में फेरती रहती थी (शेखर (१)—अज्ञेय, १४०)

### मन में बसना

ध्यान में बना रहना, स्मृति में रहना । प्रयोग—निदा होयत  
बेकूठ जाइयै । नाम पदारथ मनहि बसाइयै (कबीर ग्रंथा०  
—कबीर, ३०१); मिथ एक मन बसत हमारे, ताहि मिले  
सुख पाइहो (सू० सा०—सूर, ४०६७)

### मन में बात उठना

मन में विचार आना । प्रयोग—जब से मेरे मन में यह बात

उठी, तब से मेरा खाना-पीना घाधा रह गया (मा—कीशिक,  
२१)

### (समा० मुहा०—मन में उठना)

### मन में बात बैठना

किसी बात का हृदय में निश्चित रूप से बैठ जाना । प्रयोग—  
रमा के मन में बात बैठ गई (गवन—प्रेमचंद, २१९)

### (समा० मुहा०—मन में बात जमना)

### मन में बैठना

(१) मन को ठीक लग जाना, मन में निश्चय होना । प्रयोग  
—लेकिन यहाँ भी कुछ कविताएँ उसके मन में बैठ गईं  
(शेखर (१)—अज्ञेय, २४७); सूरदास, तुम्हारी यह बात मेरे  
मन में बैठ गई (रंग० (१)—प्रेमचंद, १२७)

(२) मन पर स्थायी प्रभाव डालना, अच्छी लगना । प्रयोग  
—मुन्नी उनके मन में बैठ गई है (मान० (१)—प्रेमचंद, ९३)

### मन में भाना पर मूड़ी हिलाना

मन में अच्छा लगना पर ऊपर से उसे स्वीकार न करना ।  
प्रयोग—मनभाव मूड़िया हिलावेवाले भाव से बोली—मैं  
उनके बखान की भूली नहीं हूँ (गोदान—प्रेमचंद, २०)

### मन में मथानी फिरना

मन में उद्वेलन होना । प्रयोग—उस स्थान को देख कर  
मुगनपनी के मन में मथानी सी फिर गई (मृग०—वृ० वर्मा,  
४३१)

### (समा० मुहा०—मन में मथानी चलना)

### मन में मरोर उठना

किसी बात का रह-रह कर मन में उठना । प्रयोग—  
माधुरी के मन में अनवरी की बात रह-रह कर मरोर उठती  
थी (तितली—प्रसाद, ४१)

### मन में मुड़ना

झिझकना । प्रयोग—गण्ड सभी मन नेकु न मुरा । वाति  
तनय अतिबल बांकुरा (राम० (ल०)—तुलसी, ८८०)

### मन में मैल आना,—जमना,—रखना,—होना

मन में बुराई होनी या रखनी । प्रयोग—इन दोनों के मन में  
जो मैल घा गई थी वह धीरे धीरे बहुत ही दूढ़ हो गई (राधा०  
ग्रंथा०—राधा० दास, ३०४); मैं क्या जानता था कि मेरो



के मन में मेरी ओर से इतना मेल है (रंग० (१)—प्रेमचंद, १९११); बुरे जी में जो मन जमी, धुलावे भी वह नहीं धुली (मर्म०—हरिऔध, ८४); इसीलिए मन में मेल रखनेवाले न होकर भी वे सदा हर एक की बुराई पर विश्वास कर लेने को तत्पर रहते थे (शेखर (१)—अज्ञेय, ११५); सह कर भी घोर कष्ट तन पर, आया न मेल तेरे मन पर (साकेत—गुप्त, १६०)

### मन में मेल करना

तनिक भी चिन्ता करनी । प्रयोग—निज बचाव मुनि घोरतु हरलता करत न कतु मन मेल (मा० प्रशा०—भारतेन्दु, ५८४)

### मन में मेल जमाना

दे० मन में मेल आना

### मन में मेल रखना

दे० मन में मेल आना

### मन में मेल होना

दे० मन में मेल आना

### मन में रखना

(१) स्मरण रखना, ध्यान देना । प्रयोग—राम नाम हिरदै धरि, निरमोक्तिक होरा (कबीर प्रशा०—कबीर १९७); सूर प्रभु को ध्यान जित धरि, अतिहि काहे बहति (सु० सा०—सूर, २३६५); मन न धरति मेरी कह्यो तूँ आपनै तवना अहे, परति परि प्रेम की परहष पारि न प्रान (विहारी रत्ना०—विहारी, २३९); मान भी लोचिण मैं दे छाया, लेकिन मैं अभी प्रसन्न हूँ, अभी तक उस सीटी की याद मुझे छूट करती है, और आपने घाठ जाने नहीं गंवाये, फिर भी घाप अभी तक वह बात मन में रखे है (शेखर (१)—अज्ञेय, ११५)

(२) गुप्त रखना, प्रकट न करना ।

### मन में रमना

मन पर गहरा असर होना । प्रयोग—मन रमि रही मनो-हर मूर्ति को मुमिरे अविनाशी (सु० सा०—सूर, ४५४४)

### मन में लाना

(१) विचार करना, सोचना । प्रयोग—सूर प्रभु मन यहै जानी, बजहि देउ पठाइ (सु० सा०—सूर, ४०३१)

(२) हृदय में कोई स्थान देना । प्रयोग—नारी सौ नर

प्रीति लगावै । पै नारी लिहि मन नहि मन ल्यावै (सु० सा०—सूर, ४४६)

### मन में शूल होना

मन में रह-रह कर कष्ट होना । प्रयोग—मुनि मुनि होइ भरत मन गुला (राम० (अ)—तुलसी, ५२१)

### मन में समाना

मन में वस जाना । प्रयोग—सूर वही निज रूप स्याम की, है मन मांझ समायौ (सु० सा०—सूर, ४३१४)

### मन में होना

दे० मन में घर करना

### मन मैला करना या होना

दुर्भाव करना या होना । प्रयोग—तुम जनि मन मैलो करो लोचन जनि फेरो (विनय०—तुलसी, २७२); वृत्त उदय के हित ललचाई । मति कौउ मन मैलो करि जाई (मंद० प्रशा०—मंद०, २१०); हो मन मैलो न जो लौ कछु घब छाँड़तु बोलियो बोल हंसोहै (केशव०—केशव, १८); मामा, देखा आपने, इसका मन जरा भी मैला नहीं हुआ (रंग० (१)—प्रेमचंद, १९)

### मन मोटा करना

मन में दुर्भाव लाना, कष्ट होना । प्रयोग—तुम उसकी ओर से मन न मोटा करना (सेवा०—प्रेमचंद, २९२)

### मन मोड़ना

प्रवृत्ति या विचार को दूसरी ओर लगाना, उदासीन होना । प्रयोग—परिनिषिद्धि घाने पर मेरी वेदना-बुद्धि तुम दोनों की ओर से ही मन मोड़ ले तो कोई घनहोनी, अटपटी बात न होगी (सुहाग०—अ०ना०, १२३)

### मन रखना

(१) इच्छा पूरी करनी । प्रयोग—कहा हमारी मन यह रखे, हमही पर सतराई गई (सु० सा०—सूर, २३४६); संवर के दाता अरु भूखन कनक देत एक साधु मने बीस बिस्वा राखि लेत है (क०र०—सीतापति, ११५); आखिर एक न एक दिन यह सब माल मदन मोहन का ही तो होगा, फिर उस बच्चे का मन क्यों न रखवा जाय (मा० मा (२)—कि० गी०, १९५); कन्नगी अपने हर खेसी के दास दागियों का उचित रूप से मन रखना जानती थी (सुहाग०



—अ० ना०, १११); गृह, निषाद, सबरों तक का मन रखते हैं प्रभु कानन में (पंच०—गुप्त, १६); फिर भी कभी-कभी मेरा मन रखने को वह खेलने बैठ जाती (बाहर०—देव०, २३)

(२) मन बहलाना । प्रयोग—मदन गुपाल प्रवट दरसन बिनु कयी राखें मन नागर (सू० सा०—सूर, ४१११); इसी लिये कि वह खेल न रहा था, मुझे खिला रहा था, मेरा मन रख रहा था (मान० (१)—प्रेमचंद, १६९); जान दांकर मन रखने के लिए इधर-उधर की बातें करने लगे (प्रेमा०—प्रेमचंद, ९४)

### मन रमना

(१) मन लीन होना । प्रयोग—जैसे माया मन रमे, यूँ जे राम रमाइ (कबीर ग्रंथा०—कबीर, ६)

(२) प्रेम होना । प्रयोग—जहि कर मनु रम जाहि सन तेहि तेही सन काम (राम० (बाल)—तुलसी, ९१)

### मन रह जाना

(१) मन लगा रह जाना । प्रयोग—रानी ही में मन रहि गयो । मरि विदभे की कन्या भयो (सू० सा०—सूर, ४०६)

(२) इच्छा पूरी हो जाना ।

### मन राता होना

अनुरक्त होना । प्रयोग—तुम्हारे चरन कवल मन राता गुन निरगुन के तुम्ह निज दाता (कबीर ग्रंथा०—कबीर, २३१); अस विवेक जब देइ बिधाता । तब तजि दोष गुनहि मन राता (राम० (बाल)—तुलसी, ११)

### मन रीता करना

मन की बात कह कर मन हल्का करना । प्रयोग—अपना मन रीता करने और मेरा भरने के लिए यदि तुम मुझे अपनी जीवन कहानी सुनाओ तो कैसा करे (सुहाग०—अ० ना०, ३७)

### मन लगाना

(१) मन को अच्छा लगना । प्रयोग—नंद नंदन बस कीन्हें राधा भवन गए चित नैकु न लागत (सू० सा०—सूर, २५०३); मेरा मन भी वहां लगता न था (तिली—प्रसाद, ५९); दो तीन दिन रह कर कुली की पाठशाला और पत्नी को देखकर मैं लगनऊ बना आया लेकिन जी नहीं लगा (कुली०—निराला, १२५)

(२) प्रेम होना । प्रयोग—गोकुल नाइक वीठला, मेरी मन लागी तोहि रे (कबीर ग्रंथा०—कबीर, ५५); मन लागेउ ओहि कवल की डही । भावै नहि एकी कठ हंसी (पद०—जायसी, ४६१२); मेरी मन रसिक लग्यो नंदलालहि भलत रहत दिन राती (सू० सा०—सूर, ४२९९); बामुदेव पद पंकज दंपति मन धति नाम (राम० (बाल)—तुलसी, १५५); मन लागत जाको जबे जिहि की करि दाया तो सोऊ निभावत है (भा० ग्रंथा० (२)—भारतेन्दु, ५२०); ऐसे ही मन लग्यो रहे नित चरन कमल जिहि (राधा० ग्रंथा०—राधा० दास, ५१)

(३) लगन होना; एकाग्रता होना । प्रयोग—तन घर जाति हित बहन में न लगे मन घर जाति मन में न लगे (बोल०—हरिऔध, २११)

### मन लगाना

(१) प्रेम करना, आनन्द होना । प्रयोग—मन कम बचन कहति हों साँची में मन तुमहि लगायो (सू० सा०—सूर, २३०२); सुनिहहि बालबचन मन लाई (राम० (बाल)—तुलसी, १४) (÷); नारायन बस होय मनहि दूइ करि जु लगावें (राधा० ग्रंथा०—राधा० दास, ४६); जाती भी तो मन न लगाती मगर छब तो मन तुमसे लग गया (मान० (१)—प्रेमचंद, १०); एक दो बार उठने उठने मजाक भी किया कि वह अपनी बहू को बुलावेगा या इधर-उधर मन लगावेगा (चेतन—अशक, १३२)

(२) मनोयोग-पूर्वक । प्रयोग—पवन रूप तजि निरगुन ध्यावहु, इक चित इक मन लाइ (सू० सा०—सूर, ४१२०); देखिए प्रयोग (१) में (÷) भी ।

### मन लगाना

प्रेम करना, मन लगाना । प्रयोग—ऐसे मन लाइ लें राम रसना, कपट भवति कीजें कौन गुणा (कबीर ग्रंथा०—कबीर, २१५); तजि नागेशरि फूल सोहावा । कवल बितेये सौ मन लावा (पद०—जायसी, ३५९); नंद कहाँ पुधि भली दिखाई । मैं तो राज-काज मन लाई (सू० सा०—सूर, १५०३); श्री सहित घनूज समेत कृपानिकेत पद मन लाइहौ (राम० (अर०)—तुलसी, ७२५); नंद जगोदा तप करपो मोही सौ मन लाय (प्रेम सा०—अ० ना०, १५)



### मन लेना

(१) मन की बाह लेने का प्रयत्न करना। प्रयोग—वह भावज का मन लेती रहती थी (बुं०—अ० ना०, १६५)

(२) किसी के मन को बश में कर लेना। प्रयोग—मुधि बुधि कछु न रही उत चितवत, मेरो मन उन पलटि निवोरी (सू० सा०—सूर, २४८४); एकन सो बतराइ कछु दिन एकन को मन लै चलै लै चलै (जग०—पद्मकर, १५); दरसो, परसो, बरसो, सरसो मन लै हू गण पै बसो मन ही (घन० कवित्त—घना०, ७५); मांग लें माग जो सकें हमसे, छापका मन करे तो मन ले ले (बोल०—हरिऔध, २११)

### मन लौटना

पुनः स्मरण या ध्यान आना। प्रयोग—शेखर का मन फिर अपने कालेज के अनेक साधियों की ओर लौट गया (शेखर (२)—अज्ञेय, ७०)

### मन, वचन, कर्म से

पूर्ण रूप से। प्रयोग—मन, वच, कर्म से तुमहि पठावत बज को तुरत पसानौ (सू० सा०—सूर, ४०४४); जदपि जो पिता नहि अधिकारी दासो मन कम वचन तुम्हारी (राम० (बाल)—तुलसी, १२३)

### मन साधना

मन को बश में करना। प्रयोग—मम्मा मन स्यो काजु है मन साधे सिधि होइ (कबीर ग्रंथा०—कबीर, ३१२)

### मन साफ करना,—रखना,—होना

हृदय में कोई दुर्भाव न होना। प्रयोग—लिखने-पढ़ने वालों को अपना मन स्व साफ रखना चाहिए (गुं०नि०—सा०मु०गु०, ४३२); पहले अपने मन को पाप साफ कीजिये उनका मन भी साफ हो जायगा (विप०—प्रमी, ९७); जिस तरह कल भरी अवातल में पंखों ने मुझे निरपराध कह दिया उसी तरह तुम भी मेरी ओर से अपना मन साफ कर लो (रंग० (१)—प्रेमचंद, १५५-१५६)

### मन साफ रखना

दे० मन साफ करना

मन साफ होना

दे० मन साफ करना

### मन से जूझना,—लड़ना

मन की इच्छाओं के ऊपर विजय पाने की कोशिश करनी।

प्रयोग—जिहि घटि जाण विनांष है तिहि घटि आवटणां पणां विन बड़े संघांम है नित उठि मन सौ भूझणां (कबीर ग्रंथा०—कबीर, ५१); सो मुल्ला जो मन स्यो लरे (कबीर ग्रंथा०—कबीर, ३२९)

### मन से दूर होना

(१) भूल जाना। प्रयोग—न्यारी होति न चित ते कबहुं छिन पल धरो महरति (सू० सा०—सूर, ४५४४)

(२) मन न मिलना।

### मन से देखना

तनिक भी सोचना (किसी बारे में)। प्रयोग—परमारध स्वारथ मुख सारे भरत न सपनेहुं मनहुं निहारे (राम० (३)—तुलसी, ६४७)

### मन से निकल जाना

याद या ध्यान में न रहना। प्रयोग—किन्तु क्या शेखर के मन से भी वे निकल गये? (शेखर (१)—अज्ञेय, ५९)

### मन से निकाल देना

हृदय से दूर कर देना। प्रयोग—चतुर सेन के दिल के लोगों को धीर कौल बहिनों को बह बड़ी आसानी से मन से निकाल सका था (शेखर (२)—अज्ञेय, २०)

### मन से मुड़ना

मन से दूर होना। प्रयोग—नीकी नासा-पुट ही की उचनि अचंभे-भरी, मुरि कै इचनि सों न क्यों हूँ मन ते मुरे (घन० कवित्त—घना०, १२९)

### मन से लड़ना

दे० मन से जूझना

### मन सोधना

मन को टटोलना, मन के दोष दूर करना। प्रयोग—हमारे कहा देखि है रे तू आपनो ही मन सोधो (सू० सा०—सूर, ४४९१)

### मन सोना होना

उच्च धीर विदोष मन होना। प्रयोग—मेरे जेठ का मन कंचन है प्राभी! (मारती०—रा० रा०, ९५)



### मन हरना

आकर्षित करना, लुभाना । प्रयोग—चटक लाइ हरहि मन जो लगि गय है फँट (पद०—जायसी, २१४); नेकु चिते मुसुवयाई के सब को मन हरि लीन्ही (सू० सा०—सूर, ४३); मंडपु बिलोकि विचित्र रचनो रचिरता मुनिमन हरे (राम०—बाला—सुलसी, ३२३); हरे हरे बोलति बिलोकति हंसति हरे, हरे हरे चलति हरति मन लाल के (केशव० (१)—केशव, १२३); और वह जो मेरे मित्र का मन हर ले गई ? (सुहाग०—अ० ना०, १३)

### मन हरा करना या होना

चित्त प्रफुल्लित कर देना या होना । प्रयोग—क्या सोहावनी हरी दूबों से भरे हुए मंदान मेरे मन को हरा कर सकते थे (सौ०—ब्र० स०, १५५); ये फुहारें मानों चिताओं को हृदय से धो डालती हैं, मानों मुरझाये हुए मन को भी हरा कर देनी हैं (गवत—प्रेमचंद, १)

### मन हल्का होना

मन से चिंता दूर होनी । प्रयोग—अच्छा हुआ तुम्हारे मार्ग से क्या, मन से एक कुंठा हट गयी । तुम्हारा मन हल्का हो गया (झूठा० (२)—यशपाल, २८७); दोनों का मन हल्का था (कंकाल—प्रसाद, ४६)

### मन हाथ में करना

बश में करना । प्रयोग—मन करि हाथ आपनै राखै, चित न कह डुलावै (सू० सा०—सूर, ४४१४); बातनि जाय लगाय लई, रस ही रस मैं मन हाथ कै लीनो (मति० मक०—मतिराम, १८०); मन हाथों में करने का बल छोटे छोटे हाथों में है (बोल०—हरिऔध, १७१)

(समा० मुहा०—मन हाथ में रखना,—लेना)

### मन हाथ में होना

मन बश में होना । प्रयोग—कहा करों मन हाथ नहीं (सू० सा०—सूर, २२७३); नेह में न नाम रहे द्वारे बजनाथ रहे कैसे मन हाथ रहे साथ रहे सब सों (जग०—पद्माकर, ७०); जो रहीम मन हाथ है, मनसा कहूँ किन जाहि (रहीम कवि०—रहीम, १०); करि न सकै कोउ कछु रहै बस जो रहीम मन (राधा० प्रशा०—राधा० दास, ५२); मन रहे हाथ मान रहता है मन-बहक सुभ-बूझ लोवी है (बोल०—हरिऔध, २०८)

### मन हाथ से चला जाना

मन बश में न होना । प्रयोग—वह सुंदर रूप बिलोकि सखी मन हाथ तें मेरे भग्यो सो भग्यो (मा० ग्रं० (२)—भारतेन्दु, १७२)

### मन हाथों पर लिए रहना

हर इच्छा पूरी करनी । प्रयोग—उस पर किसी दिन उसका मन हाथों पर लिये रहनेवाली भाभियां कहती थी कि उसके भाई सतयुग के हैं, नहीं तो कौन एक निठले व्यक्ति को बैठे-बैठे खिला सकता है (अतीत०—महादेवी, ५७)

### मन-गढ़त होना

अपने मन से बनाई बात होनी । प्रयोग—यह सब मन-गढ़त है । डरगोको का डकोसना (झांसी०—बु० वर्मा, १९); एक ने कहा—यह बिल्कुल मनपढ़न्त कहानी है (ब्रह्म०—दे० स०, ३७)

### मन-चले होना

(१) रसिक होना । प्रयोग—मानता है न कौन मन की बात है कहां पर न मनचलों की पृष्ठ (मर्म०—हरिऔध, ९६); मुहल्ले के आधे दर्जन मनचले ब्राह्मण युवक उस वेश्या से मिलने मेरे वहां आ जमते थे (अग्नी सवर—उग्र, २३); हम किसी की प्रेम-रस-गुणों दृष्टि को उधर उठने न देंगे, कोई मनचला जवान इधर कदम रखने का साहस नहीं कर सकता (रंग० (१)—प्रेमचंद, ३१५)

(२) किसी वस्तु को देखते ही उसे पाने की इच्छा करने वाला व्यक्ति ।

### मन-चोटी होना

मन के इच्छानुसार होना । प्रयोग—होलत ग्याल मनो रन जीते । भए सबनि के मन के चीते (सू० सा०—सूर, ६५०); जान मुखारे रही रहि आए हो, होति रही है सदा चित चीती (घन० कवि०—घना०, ९६); तेरे मन को दुख परिहरो मन चीत्थी कारज सब करौ (प्रेम सा०—ल० ला०, २४१)

### मन-बढ़ावन

मन में उत्साह पैदा करनेवाला । प्रयोग—घायो सुसावन मन बढ़ावन सबहि के आनंद भयो (राधा० प्रशा०—राधा० दास, १५)



### मन-बीती

मन में जो कुछ महा हो। प्रयोग—ऊधी सौ समुझाइ प्रगट करि, अपने मन की बीती (सु० सा०—सूर, ४०६७)

### मन-मांगी

इच्छानुरूप। प्रयोग—उचित असीस लही मन मांगी (राम० (अ)—तुलसी, ६०५)

### मनसूखे बांधना

युक्ति सोचनी। प्रयोग—मालिक भी हमें पायल करके अपंग बना डालने के मनसूखे बांध रहे थे (बल०—नागा०, १९८)

### मनाना

प्राथना करनी। प्रयोग—सबके डर अभिलाषु श्रम कहहि मनाइ महेसु (राम० (अयो)—तुलसी, ३७३); समय अपनाओ जानिके मनहि मनायो ईस (कुण्ड०—गिरधरदास, १३)

### मनोभाव पेंटना

मन का भाव प्रतिकूल होना। प्रयोग—उनका मनोभाव घाज क्यों पेंठ गया, कुछ-कुछ मेरी समझ में आया (कुल्लो—निराला, ५८)

### मनोरथ छुंछा पड़ना

मनोकामना अपूर्ण रह जानी। प्रयोग—मैं सब कीन्हे तोहि बिनु पूछे। तेहि तें परेउ मनोरथ छूछे (राम० (अ)—तुलसी, ४०२)

### मनोरथ पुरवना

मनोकामना पूरी होनी। प्रयोग—पुरवहुं सकल मनोरथ मोरे (राम० (बाल)—तुलसी, २२)

(समा० गृहा०—मनोरथ पूजना)

### मर कर भी

किसी भी अवस्था में नहीं। प्रयोग—यह तो बह मर कर भी नहीं कर सकता (शीलर (१)—अज्ञेय, १५९); कब तक तुम्हारा काम समाप्त होगा? कहीं बाहर भी निकलना चाहें तो मर के भी नहीं निकल सकती (रेशमी०—राम० वर्मा, १३५)

### मर जाना

(१) समाप्त हो जाना। प्रयोग—घोर फिर वह नया जाने कि मेरा चिचिलेसा के प्रति प्रेम मर गया (चित्त०—मग०

वर्मा, १७६); यह कंदन, यह अधु, मनुज की आशा बहुत बड़ी है बतलाता है यह मनुष्यता अब तक नहीं मरी है (कुरु०—दिनकर, १४५)

(२) पैड़-पौधों का सूख जाना। प्रयोग—इहां कुम्हड़ बतिया कोउ नाहीं। जे तरजनी देखि मर जाहीं (राम० (बाल)—तुलसी, २७९)

(३) रुपया या किसी वस्तु का हाथ से जाता रहना।

### मर मिटना

श्रम करते-करते विनष्ट हो जाना। प्रयोग—क्या कहूं, मैं तो इस बार कलकत्ते में आकर मर मिटा (पट्टम० के पत्र—पट्टम० शर्मा, १८५)

### मर-खपकर,—पचकर,—मर कर

किसी प्रकार, बड़े प्रयत्न या परिश्रम से। प्रयोग—अकसर लोग ऐसे हैं कि जिम्माजी मेहनत से मर-खपकर उन्होंने लिखना-पढ़ना तो सीख लिया है पर कविता के रसास्वाद से वंचित हैं (पट्टम पराग—पट्टम० शर्मा, २६२); मैं मर-मर कर कमाऊं और यह बंटे-बंटे मौज उड़ावें और चरस पीयें (गद्यन—प्रेमचंद, १७७); काम मर-मर क्यों मरे-मन से करे (बोल०—हरिऔध, २१०); “विशालभारत” यहां आज आया है, दूसरी जगह मैं भी अभी पहुंचा होगा। जब यह बात है तो मर-पच कर वक्त पर निकालने से क्या फायदा हुआ? (पट्टम० के पत्र—पट्टम० शर्मा, ८०)

### मर-पच कर

दे० मर-खप कर

### मर-मर कर

दे० मर-खप कर

(समा० गृहा०—मर पचना)

### मरण बनना

मृत्यु होनी। प्रयोग—सब कर मरन बना एहि लेखे (राम० (लं)—तुलसी, ९१९)

### मरना

(१) शय्यंत प्यार करना। प्रयोग—बहुत तुम पे हूं मरने वाले यहां, तुम्हारी है मरने की बारी कहां? (गुंनि०—वा०मु०गु०, ७००); तुम्हें तो गवं होना चाहिए कि जिसे



मरने की फुरसत न होना

५८२

मरा हुआ

तुमने चाहा, भाज दुनिया उस पर मर रही है। (अम्ब०—रा० वे०, ५४); मैं ही इन पर मरने लगी थी (पूज्या३—दे० स०, ५५)

(२) हैरान होना; दुःख पाना; बहुत प्रयत्न करना। जाते होइ घकाज आपनी, काहें वृथा मरौ री (सु० सा०—सूर, २७२०); मेरे का लघु स्यात को उर में मोद होइ व्याधि। अब जान्यो ब्रज प्रेम की अहत न आधी व्याधि। वृथा सम करि मरघी (नंद० ग्रंथा०—नंद०, १६४); करि कोऊ अनेक उपाय मरौ हमें जीवनि एक कृपा बहिनै (घन० कवित्त—घना०, १७३); पवि मरत वृथा सब लोग जोग तिर घारी (भा० ग्रंथा० (१)—भारतेन्दु, ४५९); जब तक जीता हूं इनके पीछे मरता हूं (गोदान—प्रेमचंद, २५)

(३) बहुत पसंद करना। प्रयोग—पंजाब वाले पुरुष धन का दादरा मुनने के लिए मरते हैं (रौ कोठे०—अ० ना०, १०५)

(४) अत्यन्त विनित होना। प्रयोग—चोई-चोई देश लोभवश इतना अधिक माल तैयार करते हैं कि उसे किसी देश के गले मढ़ने की क्रिक में दिन रात मरते रहते हैं (चित्ता० (१)—शुक्ल, ७४)

**मरने की फुरसत न होना**

विलकुल मौका न मिलना। प्रयोग—दिन भर दावाजी बाजार भेजते रहते हैं, फुरसत ही कहां पाता है। मरने की छुट्टी तो मिलती नहीं, पड़ा-पड़ा सोयेगा (गोदान—प्रेमचंद, १६१)

**मरने पर भी नहीं**

कभी भी नहीं, किसी प्रकार भी नहीं। प्रयोग—तोर कलंक मोर पछिताऊ। मृएहुं न मिदिहि न जाइहि काऊ (राम० अ)—तुलसी, ४०६)

**मरभुखा होना**

दरिद्र; जो खाने को तरसे। प्रयोग—मालूम होता है, कोई मरभुखा नीच आदमी है, पहले सिरे का कमीना और छिल्लोरा (गवन—प्रेमचंद, २६५)

**मरम्मत करना या होना**

(१) खूब मारना; दुर्दशा करनी। प्रयोग—लेकिन वहां तो सभी एक से हैं, तुम किस किस की मरम्मत करोगे

(गोदान—प्रेमचंद, ५०); वू किधर से आ गया? वह तुझे इइने मये हुए है, देखना आज कौसी मरम्मत होती है (मान० (१)—प्रेमचंद, ३१७); किन्तु पंडित जी भाई साहब की मरम्मत करते हुए रास्ते से ही लौट आये (चेतन—अशक, ३५)

(२) दुरुस्त करना; खताइ कर ठीक करना। प्रयोग—यदि आप यह फरमावें कि मैंने जो भाषा और व्याकरण वाला लेख लिखा है, अब तक के हिन्दी लेखकों की मरम्मत के लिए है—मदा के लिए नहीं तो इसका क्या जय होगा? (गुंनि०—वा०मु०गु०, ४३७); जानते तो हो कि सूर मिठ्ठा पर जान देता है फिर क्या भैंरो की मरम्मत नहीं की (रंग० (१)—प्रेमचंद, ९९); दूसरे दिन कुछ अवसर इस घटना को लेकर चुप रहे और कुछ ने नेलाओं और प्रतिलिपियों की अच्छी खासी मरम्मत की थी (वृ०—अ०ना०, ४०६)

**मरहम रखना**

(१) सांत्थना देनी। प्रयोग—माता के सिवा कौन उसे छाती से लगा सकता है, कौन उसके दिल पर मरहम रख सकता है (रंग० (१)—प्रेमचंद, २५७)

(२) घिगरी बात को बनाना।

(३) किसी नाराज व्यक्ति को मनाना।

(समा० महा०—मरहम-पट्टी करना)

**मरा जाना**

व्याकुल होना; हैरान होना; पस्त होना। प्रयोग—मैं तो मरा जा रहा हूँ इन कावटों के मारे (रेशमी०—राम० वर्मा, ५४)

**मरा हुआ**

(१) निस्तेज, जिसका प्रयोग या महत्व कम हो गया हो। प्रयोग—अंत को स्वर्गीय बाबू हरिद्वन्द्व जी ने मरी हुई हिन्दी को फिर से जिलाया (गुंनि०—वा०मु०गु०, ३१३); पृथ्वीराज ने हमारे देश के मरे हुए हिन्दी रंगमंच को पुनः जिलाने में कितना बड़ा काम किया है, इसे हम अभी नहीं धांक सकते (पैतरे—अशक, ३५)

(२) बुरी। प्रयोग—किताब वाले ने जब अपनी घातका प्रगट की और खरी-दारी बातें मुना डाली तब अपनी उस



मरी हुई हालत में भी मेरे मन में पहली प्रतिक्रिया यह हुई कि उसके मुँह पर एक तमाचा जड़ हूँ (जहाज०—६० जोशी, ४९)

### मरे को मारना

दुःखों को और दुख देना । प्रयोग—मपचा महा मनीन मुए मारि मंगल चहत (राम० (अ)—तुलसी, ६५९); वेई धन आनन्द जू जीवन कौं देते तिन ही को नाम मारिनि के मारिखे कौ रहियो (घन० कवित्त—घना०, १०३)

### मरे जाना

व्याकुल हुए जाना; किसी वस्तु को पाने के लिए बहुत ही आतुर होना । प्रयोग—यह समाज का दोष है कि हम लोग बाहरी ठाटबाट पर इस प्रकार मर रहे हैं (राधा०—३० स०, ५); मान के अग्रमान जी में ये भरे । संत बनने को मरे जाते रहे (चुमते०—हरिऔध, १२४)

### मरोड़ गहना

तोष करना । प्रयोग—रझो मोहू, मिलनो रझो, यो कहि गहूँ मरोर । उत दे सखिहि उराहनो इत पितई मो जोर (बिहारी रत्ना०—बिहारी, ४९३)

(समा० मुहा०—मरोड़ पकड़ना)

### मरोड़ डालना

अशक्त और बेबस कर देना । प्रयोग—मीडि राखे मृगत, मरोड़ि राखे पातसाहूँ वेंरी पीसि राखे बरदान राख्यो कर में (मृपण ग्रंथा०—मृपण, २०९)

### मरोड़ी करना

खीचा-तानी करनी । प्रयोग—तब मिय लो चित खोर सकल अंग चीन्हे पर कत करत मरोरी । एक मुनि मूर हर्गो मेरो सरबस घम उलटी दोनों मंग होगी (सुर०—हि० श० सा०)

### मर्म का भाला लगाना, —की चोट लगाना

हृदय पर गहरा प्रभाव होना । प्रयोग—मारे बहुत पुकारिया, पीर पुकारें और लागी चोट मरम्म की रझो कबीरा ठोर (कबीर ग्रंथा०—कबीर, २५५); कहा कहीं कछु कहत न आवे तयो मरम की भानो (सु० सा०—सूर, २०२६)

### मर्म की चोट लगाना

दे० मर्म का भाला लगाना

### मर्म को छू लेना

मन या तथ्य की गहराई तक पहुंचना । प्रयोग—पर एक बात कहती हूँ, उसके मर्मों को छू लो (वैदेही०—हरिऔध, ७७)

### मर्म लेना

भेद लेना । प्रयोग—गहूँ घाट भट समिटि सब लेउ मरम मिलि जाइ (राम० (अ)—तुलसी, ५५९)

### मर्म-वेधी बातें

मन को पीड़ा पहुंचाने वाली बातें । प्रयोग—बड़ी दुःख-दायिनी मर्म-वेधी बातें हैं (वैदेही०—हरिऔध, ८)

### मर्यादा के द्वार तोड़ना

मर्यादा का उल्लंघन या उपेक्षा करनी । प्रयोग—रोझि-परबस पर बस न चलत कछु ऐसे ही मैं होरी को रंगीलो बन्धो दावरी । दिन ही मैं तिन-सम कानि के कषाट तोरि घुंघरि खबीर की को मानत विभावरी (घन० कवित्त—घना०, १८७)

### मर्यादा थापना

मर्यादा निर्धारित करनी । प्रयोग—दिल्लीपत मरजाद पाचि मन मोद बड़ावत (राधा० ग्रंथा०—राधा० दास, ७१२)

### मर्सिया पढ़ना

शोक मनाना । प्रयोग—पड़े मर्सिया दुनिया सारी, ईद मनाती मधुशाला (मधु०—बच्चन पद, २५)

### मल धुलना

बुराईयाँ दूर होनी । प्रयोग—गल रहा है पाप मल है धूल रहा क्यों भला धो धो न हम तलवे पिये (चुमते०—हरिऔध, ६)

### मलियामेट कर देना

दे० मलियामेट करना

### मलोल्लेखाना

मानविक व्यवसा सहनी । प्रयोग—तब कुंवर ने मसोम के मलोल्लेख के कहा X X (ईशा०—ईशा०, ९२)

### मवांस करना

निवाग करना । प्रयोग—कहै पद्माकर कालिंदी के कदंबन में, मधुवन कीन्हों जाइ महत मवासो है (पद्मा०—हि०श०सा०)



**मष्ट करना.—धरना,—मारना**

चुप रहना; न बोलना। प्रयोग—धोलत लखनहि जनक डेराही मष्ट करहु अनुचित भल नाही (तुलसी—हि० श० सा); मुन्यो वसुदेव दोउ नंदमुषन आये × × कहो पिय कहत मुनिहै बात पोरिया जाय कहिहैं रही मष्ट धारे (सूर—हि० श० सा०); बहस करके स्त्रियों से आज तक कोई नहीं जीता। पर मष्ट मारकर जीत सकता है (गुं कहा०—गुलेरी, २२)

**मष्ट धरना**

दे० मष्ट करना

**मष्ट मारना**

दे० मष्ट करना

**मस भीगना,—भीजना,—भीनना**

मूछों का निकलना आरम्भ होना, लड़कों का जवान होना। प्रयोग—दोरे दुहं दुई देखिबे को दुति देह दुहं की दुहं न को भावै। ह्यां इनके रस भीजत से दूग ह्यां उनके मसि भीजत धावै (जग०—पद्मकर, ५); कुछ यों ही सी उसकी मसं भीनती चली थी (इशा०—इशा०, ९१); अवस्था बीस की हो गयी थी पर अभी मसं भी न भीगी थी (कर्म०—प्रेमचंद, ३); लड़के का कंठ फूट पाया × × मसं भीनने लगी, अब बबुआ नहीं है, गौना कर दो (कुली०—निराला, १५)

**मस भीजना**

दे० मस भीगना

**मस भीनना**

दे० मस भीगना

**मसकत की कमाई**

परिश्रम से अर्जित धन। प्रयोग—मेरी यह दुर्गति इसीलिये न है, कि अंधा हूं, भीख मांगता हूं। मसकत की कमाई खाता होता तो मैं भी गरदन उठाकर न चलता, मेरा भी आदर-मान न होता (रंग० (१)—प्रेमचंद, ९३)

**मसल देना**

नष्ट कर देना। प्रयोग—मीड़ि राखे मुगल मरोड़ि राखे पातसाह वैरी पीसि राखे बरदान राख्यो कर में (भूषण ग्रंथा०—भूषण, २०९); जब लो तिनको मसल नहि तुव पद में बनाइहो (राधाग्रंथा०—राधा० दास, ७०२); बिचलते नहीं हैं कभी आनवाले उन्होंने मसल कब न डाले

कमाले (चुमते०—हरिऔध, १८८); चूटकी में घभी मसल हूँ क्या उस पागल की हस्ती (नुर०—मक्त, ९५)

**मसा न मन्नाना**

एकदम शांति होनी। प्रयोग—घर में मन्नाटा या, जिसे “मसा नहीं मन्नाय” कहा है (कुली०—निराला, ५७)

**मसाला मिलना या होना**

सामग्री मिलनी। प्रयोग—घब हम को एक छून की देर नहीं करनी। कलकत्ता रवाना हो जाना है। बंध गया। हमारे पास भी मसाला है। यह वही आदमी है (चोटी०—निराला, १३२)

**मस्का पालिश करना,—लगाना**

चापलूसी करना। प्रयोग—जो मस्का लगाता है उसे भी मस्का कहते हैं (दूधगाछ—दे०स०, १५८); अगर वो सचमुच डाइरेक्टर कादिर की फिल्म का हीरो होने जा रहा है तो अभी से मस्का पालिश करना चाहिए (पैलर—अश्क, १२६)

**मस्का लगाना**

दे० मस्का पालिश करना

**मस्त-मौला होना**

कोई परवाह न करने वाला मस्त व्यक्ति होना। प्रयोग—वे मिर से पैर तक मस्तमौला थे (कवीर—ह०प्र०दि०, १५७)

**मस्तक उन्नत करना**

(१) सम्मान दिलाना या पाना। प्रयोग—तुमने भारत की शिष्टुषियों का मस्तक उन्नत कर दिया (रंग० (२)—प्रेमचंद, २०७)

(२) स्वाभिमानो, गौरवपूर्ण बनना।

(समा० मुहा०—मस्तक ऊँचा करना)

**मस्तक भारना**

मिर की मरम्मत करनी; मारना। प्रयोग—दुसमन दावा-गौर तिनहुं को मस्तक भारै (कुण्ड०—गिरधरदास, २२)

**मस्तिष्क की खुराक होना**

मानसिक संतोष और ज्ञान देनेवाली होना। प्रयोग—हिन्दी भारतवर्ष के हृदयदेश में स्थित करोड़ों नर-नारियों के हृदय और मस्तिष्क को खुराक देनेवाली भाषा है (अशोक०—ह०प्र०दि०, ४७)



### मस्तिष्क भोधा होना

(१) कुछ समझ न आना । प्रयोग—फिर भी इधर मेरा चित्त जड़ होता जा रहा है, बुद्धि मग्न होती जा रही है और मस्तिष्क भोधा हो रहा है (बाल०—ह०प्र०दि०, १६५)  
(२) जड़ मूर्ख होना ।

### महनामध मचाना

एक ही बात को बार-बार कहे जाना; जिद करनी । प्रयोग—कोई मिठाइयों की रट लगा रहा है तो कोई पैसों के लिए महनामध मचाये हुए है (मान० (३)—प्रेमचंद, ५८)

### महाजन का पेट भरना

बाकी चुकाना । प्रयोग—एक-एक हाथ ही होके रह जायगी, मक्का और जवार और कोदो से लगान छोड़ ही चकेगा, महाजन का पेट थोड़े ही भरा जायगा (गोदान—प्रेमचंद, १५५)

### महाभारत

सड़ाई-भगड़ा । प्रयोग—घर में महाभारत मचा रहता है (गोदान—प्रेमचंद, २५); इतने महाभारत के बाद सर विलियम ने "रामः रामो रामाः" शुरू किया (सा० सी०—महा०दि०, ४२); मगर वह तुम्हारी कौन है, जिसके कारण घर में यह महाभारत शुरू कर रहे हो (सु०सु०—सुदर्शन, १००)

### महारथी होना

समर्थ या योग्य होना; बहुत क्षमता-सम्पन्न होना । प्रयोग—हिन्दी में अब बड़े-बड़े महारथी पैदा हो रहे हैं (पद्म० के पत्र—पद्म० शर्मा, २२)

### महारानी आना

बेचक निकलना । प्रयोग—बहुत खुशामद करने पर रकिया ने बताया कि उस घर में महारानी आती है (अतीत०—महादेवी, ४०)

### महीन खाना महीन पहनना

जल्दा खाना-पहनना । प्रयोग—यहाँ तो खाने को भी महीन चाहिए पहनने को भी महीन चाहिए, यह हमारे बूते की बात नहीं है (मान० (१)—प्रेमचंद, २५०)

### माँइन में थापना

पितरों के समान आदर करना । प्रयोग—जी लो ही

जीवन भर जीवों सदा नाम तुव जपिहो । दधि ओदन दोना करि देहो घर माँइन में पधिहो (सूत—हि० शा० सा०)

### मांग संधारना

बालों का भुंगार करना । प्रयोग—बच्चों नूप नारी नौदये, बच्चों पनहारो को मांग । वा मांग संधारै पीव की, वा नित उठि सुमिरे राम (कवीर ग्रंथा०—कबीर, ५३)

(समा० मुहा०—मांग-पट्टी करना,—बांधना)

### मांग-कोख से जुड़ाना

स्त्रियों का सीभाव्यवती तथा संतानवती रहना । प्रयोग—आनंद अवनि राज रानी सब मांगहु कोख जुड़ानी (गीता० (वा०)—तुलसी, ४)

(समा० मुहा०—मांग-कोख से सुखी रहना)

### मांजना

संशोधन करना, सुधारना । प्रयोग—पौने दो बरस में उमने अपनी सोलह कहानियों का एक संग्रह खूब मांज-संधार कर तैयार कर लिया था (शुभा० (१)—यज्ञपाल, २२)

### माई का लाल

बहादुर व्यक्ति । प्रयोग—कभी किसी माई के लाल ने मेरी पीठ में धूल नहीं लगाई (रंग० (२)—प्रेमचंद, २७७)

### माई-बाप समझना या होना

(१) सब कुछ समझना या होना । प्रयोग—पैसा ही माई-बाप होगा ? (दूधगाछ—दे० स०, २५५)

(२) सहायक । प्रयोग—गरीबों का कोई माय-बाप नहीं है ? (परली०—रेणु, ६२); महान जी, आप हमारे माता-पिता हैं (तितली—प्रसाद, १८४)

### मात खा जाना

परास्त हो जाना । प्रयोग—मुनो बिलावत की अब बात संजरवेटिव खा गए मात (गु० नि०—वा० मु०, ७२०)

### मातम-पुरसी करना

(१) समवेदना प्रगट करनी । प्रयोग—जाते ही संवत्सिकल मुले जेर लये । मेरी मातम पुरसी करेंगे (मान० (५)—प्रेमचंद, २७)



(२) किसी की मृत्यु के बाद उसके घर जाकर उसके परिवार के लोगों से समवेदना प्रगट करनी।

### माता का दूध लज्जित होना

कायरता के कारण लज्जा का विषय बनना। प्रयोग—प्राचीर्वाद दीजिए, बुद्ध परमेश्वर की माता का स्तन्य लज्जित न हो (स्कंद०—प्रसाद, ३)

### माथा ऊँचा करना

प्रतिष्ठा पानी; सगर्व लड़े होना। प्रयोग—कर सके अपना न जो ऊँचा चलन वे कभी माथा न ऊँचा कर सके (बोल०—हरिऔध, २६); ठुकराया मैंने दोनों को रखकर अपना उन्नत ललाट (सो०—वचन, ४९)

### माथा खा जाना,—खाली करना

बहुत तंग करना; मगड़पच्ची करनी। प्रयोग—फिर हमारा हरिदास बाबू का साथ कुकुर-भौंभौ, हुज्जते बंगाल, माथा खाली कर डालते हैं (भा०ग्रंथा० (१)—भारतेन्दु, ३३०); फिजूल के लिए हमारा माथा न खाओ, जाओ (जहाज०—इंजोशी, ५४)

### माथा खाली करना

दे० माथा खा जाना

### माथा गरम होना

गुस्सा आना। प्रयोग—तब मेरा माथा गरम हो उठा। खून खौलने लगा (जहाज०—इंजोशी, १८३)

### माथा रगड़ना

आड़िबी करना। प्रयोग—पर दया बेपीर को घाई नहीं, रात भर माथा रगड़ते ही रहे (बोल०—हरिऔध, २८)

(समा० मुहा०—माथा घिसना)

### माथा चढ़ना

परमंड होना, गुस्सा होना। प्रयोग—बड़े घर की बेटी नहीं मालूम देती। हरवक्त माथा चढ़ा रहता है (गोली—चतुर०, २८८)

### माथा झुकाना,—नवाना

(१) सादर प्रणाम करना। प्रयोग—भेंटि पाट समदम के फिरि नाइ के माथ (पद०—जायसी, ३४१२६); रघुकुल मनि मम स्वामि सोइ, कहि लिय नायउ माथ (राम०/बाल)—तुलसी, १२९); दीनो कुज्वाब दिलीय को धौ नु डर्यो सब

गोसलखानो डरारो। नाथो न माथहि दक्षिणनाथ न साव में सैन न हाथ हथ्यारो (भूपणग्रंथा०—भूपण, १६०); क्यों बड़ों का कर नहीं सकते अदब देल उनको क्यों न माथा झुक सका (बोल०—हरिऔध, २६) (÷); कह दिया बाबा यही क्या कम किया आप क्यों माथ नवायेंगे उन्हें (बोल०—हरिऔध, २६) (÷)

(२) आदर करना। प्रयोग—जहाँ भी मैंने पाया कोई माथा नवाने योग्य, उसके मुँह पर भी बिता (बुद्ध०—वचन, ५७); देखिए प्रयोग (१) में (÷) भी।

माथा झुराना,—मारना,—लड़ाना,—पच्ची करना बहुत दिमाग लगाना। प्रयोग—सला हम कौ मिले उधो वचन मारत माथ (सु०सा०—सुर, ४०३५); ऐसी को ठाली बेठी है तुमसों मूढ़ झुरावें (सु०सा०—सुर, ४५१६); वकीलों और गवाहों के साथ कितनी माथा-पच्ची करनी पड़ी है, कि मेरा दिल ही जानता है (कर्म०—प्रेमचंद, ८०); सभी देश का बड़ा-बड़ा माथावाला माटी परेखने वाला माथा लड़ा कर हार गया (परती०—रेनु, ५६); फिर कोई बालिका या प्रोड़ा बधू भी नहीं है, जिसे सान्त्वना देने के लिए किसी को माथा पच्ची करनी पड़ेगी (बाण०—ह०प्र०द्वि०, ६८)

(समा० मुहा०—माथा मिड़ाना,—पिटून करना)

### माथा ठनकना

पहले से ही आशंका होनी। प्रयोग—यह असंभुन देल उसका माथा ठनका (प्रेमसा०—ल०ला०, १७६); मेरा माथा वहीं ठनका कि यदि यही दस्ता रही तो वहाँ भी अवकाश मिल चुका (पद्म पराग—पद्म० शर्मा, ४१६); मेरा माथा तो उसी दिन ठनका (अम्ब०—रा०वे०, ६९); ज्वाला प्रसाद का माथा ठनका लेकिन उन्होंने बात आगे नहीं बढ़ाई (मूले०—मग०वर्मा, २०८)

### माथा ठोंकना

भाग्य को दोष देना। प्रयोग—हम लोगों ने अपना-अपना माथा ठोंका और इस इश्य को उसी मनुष्य के अपराग किया (भा०ग्रंथा० (३)—भारतेन्दु, ९४८); एक दिन चेतन लेकर बारह बजे रात को लौटा मगर देखा तो बापे दर्जन भिन्न उस वक्त भी उठे हुए थे। माथा ठोंक लिया (मान० (१)—



प्रेमचंद, २८५); कुछ न बोले घाँस उनकी भर गई। ठोंक कर माथा बेनारे चप रहे (बोल०—हरिऔध, २७)

**माथा नवाना**

दे० माथा भुराना

**माथा नीचा होना**

(१) लज्जित होना। प्रयोग—देख इनका इस तरह माथा झिरा बाज माथा हो गया नीचा बहुत (बोल०—हरिऔध, २५)

(२) बेइज्जत होना।

**माथा पकड़ कर बैठ जाना**

हताश होकर बैठ जाना। प्रयोग—देख कर यह घम सिर मेरा गया। बैठ माथे की पकड़ कर हम गये (बोल०—हरिऔध, २४)

**माथा पटकना**

प्रयत्न करना। प्रयोग—मूर्ख नासमझ को समझाकर राह पर लाने को हजार-हजार माथा पटको कुछ नहीं होता (सा०सु०—बा०महट, ८२)

**माथा पीटना**

दुल या भल्लाहट प्रगट करनी। प्रयोग—नादिर ने माथा पीट लिया (मान० (३)—प्रेमचंद, १६३); माथा लेते पीट कुटुंबी छिन्नलता सा कंप उठता तन (स्वर्णधलि—पंत, २)  
(समा० मुहा०—माथा कूटना,—धुनना)

**माथा पृथ्वी पर रखना**

अत्यन्त आदर पूर्वक अभिवादन करना। प्रयोग—हुदज लिलाट अधिक मनि करा। संकर देखि माथ भई धरा (पद०—जायसी, ४१६)

(समा० मुहा०—माथा टेकना)

**माथा मही तक लाकर जुहार करना**

अत्यन्त झुककर प्रणाम करना। प्रयोग—कीन्ह जोहार माथ महि लाइ (राम० (अ)—तुलसी, ५५३)

**माथा मारना**

(१) बहुत प्रयत्न करना। प्रयोग—मानते ही वे नहीं मेरी कही हम कहाँ तक मारते माथा रहे (बोल०—हरिऔध, २६)

(२) दे० माथा भुराना

**माथा लड़ाना**

दे० माथा भुराना

**माथा सिकुड़ना**

त्योरी पर बल पड़ना; असंतोष प्रगट होना। प्रयोग—घाप ही मुझको सिकुड़ जाना पड़ा जबका माथा सिकुड़ता देख कर (बोल०—हरिऔध, २७)

**माथा-पच्ची करना**

दे० माथा भुराना

**माथे का लिखा,—की लिखावट,—की लीक**

जो भाग्य में हो। प्रयोग—काम करके ही जगह से जो टला वह सका है टाल माथे का लिखा (बोल०—हरिऔध, २४); है भला किस काम का वह, जो कहे कब किसी से लीक माथे की मिटी (बोल०—हरिऔध, २५); कोसते हो दूसरों को किस लिये कौन माथे की लिखावट पड़ सका (बोल०—हरिऔध, २७)

**माथे काढ़ना**

दायित्व ढालना। प्रयोग—सो जन्म हमरेहि माथे काढ़ा। दिन चलि गए ब्याज बढ़ बाढ़ा (राम०(बाल)—तुलसी, २८१)

**माथे की मणि होना**

अत्यन्त प्रिय होना। प्रयोग—प्रथम सो जोति गगन निरमई। पुनि सो पिता माथे मनि भई (पद०—जायसी, ३११)

**माथे की लकीर मान कर चलना**

भाग्य पर निर्भर करके कुछ करना। प्रयोग—वे भला कब छोड़ अपने पथ को मान माथे की लकीरों को चले (बोल०—हरिऔध, २५)

**माथे की लिखावट**

दे० माथे का लिखा

**माथे की लीक**

दे० माथे का लिखा

**माथे चढ़ना**

(१) बेअदब होना। प्रयोग—तुम सुन हो × × हमें तुम्हारे एक घड़ी भर भी आँखों के आगे न रहने से दसों दिना अवकारमय मालूम होता है पर जब माथे पर नई शाली



हो सब तो हमलोग उताप के मारे मर जाते हैं (भा० प्रथा० (३)—भारतेन्दु, ८४७)

(२) शरारती होना ।

### माथे पड़ना या होना

जिम्मेदारी आनी । प्रयोग—जो कुछ निम्नो सोइ माथे पर, आति परै सब सहिये (सू० सा०—सूर, ४११९); सूर स्वाम विनु प्रान तजति है, दोष तुम्हारे माथे (सू० सा०—सूर, ४२२५)

### माथे पर उठा लेना

गुस्से के कारण खूब चीखना-चिल्लाना । प्रयोग—और कैसे भन्नाये, कि आते ही सारे बंगले को माथे पर उठा लिया उन्होंने (कला०—उग्र, ४५)

### माथे पर चढ़ाना

शिरोधार्य करना, स्वीकार करना । प्रयोग—नाचें फूल्यो अंगनाइ, सूर बकसीस पाइ, माथे को चढ़ाई लीनो लाल को बगा (सू० सा०—सूर, ६५७); गोबर का उपला जब जलकर खाक हो जाता है, तब साधु-मंत उसे माथे पर चढ़ाते हैं (मान० (८)—प्रेमचंद, २३)

(समा० मुहा०—माथे चढ़ाना या धरना)

### माथे पर त्योरी चढ़ना

क्रोधित होना । प्रयोग—आपका जल पिया गिलास उठाना पड़ जाय तो माथे पर त्योरियां आ जायंगी (झुठा० (२)—यशपाल, २१५)

(समा० मुहा०—माथे पर भौं चढ़ना)

### माथे पर बल आना,—बल पड़ना,—शिकन पड़ना

(१) आकृति से क्रोध, दुल या असंतोष आदि प्रगट होना । प्रयोग—पर इससे उसके माथे पर जरा भी बल नहीं आया (गुंनि०—बा०मुंगु०, ४९९); सुनने वालों ने यह सब राखाल काका को भी जा मुनाई, पर क्या मजाल कि उनके माथे पर एक भी बल पड़ा हो बल्कि सुनकर हसते रहे (ब्रह्म०—दे०स०, १०६); क्षण भर के लिये भी उनकी भवे कुंचित नहीं हुई, माथे पर बल नहीं पड़ा (कवीर—ह०प्र०द्वि०, १८५); मोफिया को अम हुआ कि इंदु मुझे अपनी क्षमाशीलता से लज्जित करना चाहती है, माथे पर शिकन पड़ गई (रंग० (१)—प्रेमचंद, ६४) (—)

(२) चिंता या परेशानी होनी । प्रयोग—उलझने आई

बहुत सी सामने बल न माथे पर कभी उसके पड़ा (बोल०—हरिप्रोद्य, २४); साधारण बुद्धिवाला ऐसी परिस्थितियों में पड़कर पबड़ा उठता है, पर बैठकबाजों के माथे पर बल नहीं पड़ता (गबन—प्रेमचंद, ११४); देखिये प्रयोग (१) में (—) भी ।

(समा० मुहा०—माथे पर डालना)

### माथे पर बल पड़ना

दे० माथे पर बल आना

### माथे पर बाएँ पाँच के अंगूठे से टीका लगाना

अर्पित तुच्छ सम्भला । प्रयोग—जिनके माथे पर हम बाएँ पाँच के अंगूठे से टीका लगावें वह महाराजों का राजा हो जावे (इशा०—इशा०, ९८-९९)

### माथे पर शिकन पड़ना

दे० माथे पर बल आना

### माथे पर सींग होना

कोई विशेषता होनी । प्रयोग—घोर हारने के माथे क्या सींग होती है ? (भा०प्रथा० (१)—भारतेन्दु, १८)

### माथे पर भाग्य की मणि होना

भाग्यवान होना । प्रयोग—को देख पावें वह नागू । सो देखे माथे मणि भागू (पद०—जायसी, १०१७)

(समा० मुहा०—माथे पर भाग्य होना)

### माथे पर हाथ होना

कृपा होनी । प्रयोग—तुम्हारे मस्तक पर हो सदा कृपा का वह शुभचिह्नक हाथ (मुकुल—सु०कु०चौ०, ८८)

### माथे पर होना

(१) देख-रेख करनेवाला होना, संरक्षक होना । प्रयोग—माथे पर गुरु मनि मिथिलेगू (राम० (अ)—तुलसी, ६७१)

(२) कोई दायित्व अपने ऊपर होना । प्रयोग—घब तो जानता हूँ, मेरे ही माथे है, मैं न कहूँगा तो सब चीपट हो जायगा (मान० (१)—प्रेमचंद, १२७)

### माथे बैठाना

बहुत छूट दे रखनी । प्रयोग—माथे नहि बैसारिअ गठहि मुषा जो लो न (पद०—जायसी, ८५)

(समा० मुहा०—माथे चढ़ाना)



माथे मड़ना

### माथे मड़ना

जिम्मे डालना, उत्तरदायी ठहराना। प्रयोग—मारा दोष उसी के माथे मड़ा गया (अपनी खबर—उप, ६५); उनके माथे कोई अपराध नहीं मड़ा जा सकता (ब्रह्म०—द०स०, ९६); रात भर जलना व घर घर काँपना देव ने माथे इसी से मड़ दिया (बोल०—हरिऔध, २८)

### माथे मानना

सादर स्वीकार करना। प्रयोग—गुरदास प्रभु के जिय भाषे आयसु माथे मानि (सूर—हि०श०सा०); प्रथम जो आयसु मो कहूँ होई माथे मानि करौ सिख सोई (राम० (अ)—तुलसी, ६१७)

### माथे मारना

(१) अवज्ञापूर्वक देना। प्रयोग—बाबा जान, साह जी के रुपये साह जी के माथे मारो घोर इनसे कहौ कि अपना रास्ता नापे (कठ०—द०स०, २७४)

(२) तुच्छ समझना।

### माथे में कीड़े कुलबुलाना

किसी काम को करने की इच्छा होनी। प्रयोग—तुम्हारे माथे में तो लड़ने-भिड़ने के लिये कीड़े कुलबुलाना करते हैं (मृग०—दृ०दर्मा, ३६)

### मान का धुरा

मान-सम्मान। प्रयोग—मान जिनका मान रखकर के मिला, मत बिगाड़ो मान का उनके धुरा (चुमते०—हरिऔध, ३४)

### मान की होना

बस की होना। प्रयोग—डाक्टर साहब कहते थे, अब नहीं बचेंगे—कम से कम हमारे मान की बात नहीं रही क्योंकि यहाँ वैसे अस्प नहों हैं न वैसी दवा है (कुञ्जो०—निराला, १२९)

### मान मथना,—मर्दन करना

गर्व चूर्ण करना। प्रयोग—काल चक्र का मरते मान, ता मूलना कूँ सदा सलाम (कबीर ग्रंथा०—कबीर, २००); इन जरासंध मरजंध मम मान मधि बांधि बिनु काल बल इहाँ धाने (सूर—हि०श०सा०); सेन सहित तब मान मधि, जन

५८८

मामला गोल होना

उजारि पुर जारि (राम० (लं)—तुलसी, ८९०); हाँ यदि मेरा मान मर्दन कराना ही अभीष्ट हो तो दूसरी बात है (सेवा०—प्रेमचंद, ९१)

### मान मर्दन करना

दे० मान मथना

### मान रखना

प्रतिष्ठा करनी। प्रयोग—मानियों का यही मानना है, मान कर बात, मान रख लेवें (चोखे०—हरिऔध, २६)

### मानना

(१) आदर करना। प्रयोग—मानवीय जी भी शिवप्रसाद गुप्त को इतना मानते थे कि काशी में उन्हीं के यहाँ रहते, उन्हीं का अन्न पाते थे (अपनी खबर—उप, ११६) (÷); काशी में बेश्याएँ उन्हें बहुत मानती थीं (ये कोठे०—अ०ना०, २०९); काशीराज इन्हें बहुत ही मानते थे (राधा० ग्रंथा०—राधा० दास, ३१६) (÷); जब पिताजी यहाँ टिप्पटी कलेक्टर थे तो उन्होंने कम्पनी का काम करा दिया था तभी से मैनेजर मानता है (भिसा०—कौशिक, २२८)

(२) मानता मानना। प्रयोग—बर संजोग मोहि मेखहु कलस जाति हौ मानि (पद०—जायसी, २०९)

(३) प्रेम करना। प्रयोग—देखिए प्रयोग (१) में (÷)।

### मामला गठना

मतलब पूरा होना। प्रयोग—अब गठ गया मामला, यह भी सपूत की करनी अपनी आँखों देख लें (लिली—निराला, ७३)

### मामला गर्म होना,—तूल पकड़ना

भगड़ा या बातचीत आगे बढ़नी या तेजी पर होनी। प्रयोग—मुखदा ने मामला गर्म होते देखा तो चुप हो गई (कर्म०—प्रेमचंद १०८); कहीं मामला तूल न पकड़ गया हो ? (प्रेमा०—प्रेमचंद, १८८)

### मामला गोल होना

कुछ गोलमाल होना। प्रयोग—मैं जब भादुड़ी महाशय के पास उनके दाइंग कम में पहुँचा तब उनकी मुद्रा देखते ही भाँप गया कि मामला कुछ गोल है (जहाज०—इ० जोशी, २३५)



**मामला ढीला होना,—फोका होना**

सफलता की आशा न होनी। प्रयोग—जहाँ शादी की बात चली थी, वहाँ मामला ढीला मालूम होता है क्या ? (दूधगाछ—दे० सं०, ३६८); सम्पादकीय टिप्पणियाँ महत्व की न हुईं तो मामला फोका रहेगा (पद्म० के पत्र—पद्म० शर्मा, ९)

**मामला तूल पकड़ना**

दे० मामला गर्म होना

**मामला फोका होना**

दे० मामला ढीला होना

**मायके की जूती में खुशबू आना**

मायके की किसी भी चीज का अच्छा लगना। प्रयोग—स्त्री का स्वभाव यह भी है कि समुदाय की राई उसे पहाड़ लगती है। घोर मायके की जूती में भी उसे खुशबू आती है (वीने०—रा० रा०, १४२)

**माया कटना**

माया-मोह का प्रभाव दूर होना। प्रयोग—माया कटे कटती नहीं (अशोक०—ह० प्र० द्विव०, १४)

**माया जोड़ना**

भौतिक साधन जुटाना; प्रेम संबंध करना। प्रयोग—तिल-तिल करि यह माया जोरी। चलती बेर तिलां ज्यू तोरी (कबीर ग्रंथा०—कबीर, १२०)

**माया लगना**

(१) प्रभाव पड़ना। प्रयोग—कहइ करहु किन कोटि उपाया। इहाँ न लागिहि राउरि माया (राम० अ)—तुलसी, ४०३)

(२) प्रेम होना।

**मार खाना**

(१) पीटा जाना। प्रयोग—जोरी कीयां तुलम है मांगे न्याव खुदाइ। लालिक दरि खूनी खड़ा, मार मुहं मुहि खाइ (कबीर ग्रंथा०—कबीर, ४३)

(२) परास्त होना।

**मार लेना**

(१) दबा जाना; हड़प जाना। प्रयोग—हिस्ट्रिक्ट बोर्ड

से अस्पताल की मंजूरी हुई है, रुपया मिला है। सब चुपचाप मार कर अब बेगार खोज रहे हैं (मैला०—रेणु, १६)

(२) प्राप्त करना। प्रयोग—राजा की शादी किसी राजकुमारी से ठीक करवा दी और दस-बीस हजार उसी में मार लिये (गोदान—प्रेमचंद, १६०)

**मार से भूत भागना**

मार से सभी का डरना। प्रयोग—बस में तो घाएँ घोरत का बाप, औरत किस खेत की मूली है, मार से तो भूत भागता है (रंग० (१)—प्रेमचंद, १८७)

**मार होना**

(१) बुरा असर होना। प्रयोग—पर जर्नलिज्म की यही तो मार है; कहीं गहरे नहीं जाने देना सब कुछ का ज्ञान होना चाहिए, पर उपला ज्ञान (नटो०—अज्ञेय, ९४-९५)

(२) मार-पीट होना।

**मार-मार कर वैद्य बनाना,—हकीम बनाना**

(१) किसी अयोग्य को जबर्दस्ती योग्य बनाना। प्रयोग—इन्होंने मार-मार कर वैद्य बना दिया (गोदान—प्रेमचंद, २९२)

(२) जबर्दस्ती करना। प्रयोग—अब तक तुम क्यों उसे मार-मार कर हकीम बनाने पर तुली रहती थीं (मान० (२)—प्रेमचंद, २८१)

**मार-मार कर हकीम बनाना**

दे० मार-मार कर वैद्य बनाना

**मारना**

(१) बमूलना। प्रयोग—कूड़ा हम साफ़ करे घोर मोटी-मोटी तनखाहें ये मारे (झांसी—दृ० वर्मा, २४२)

(२) दुख देना। प्रयोग—मूर स्याम मेरी जति बालक, मारत ताहि रिगाइ (सु० सा०—सूर, ११२८); क्या सबमुन इस दुष्ट क्षत्रिय ने मेरी प्यारी बुझौती खीन ली? तब तो मार डाका पापी ने (गंगा०—उग्र, २८)

(३) प्रभाव नष्ट करना।

**मारा जाना**

नुकसान हो जाना, नष्ट होना। प्रयोग—इस गड़बड़ से लाभ उठाने के लिये स्वार्थी पुस्तक-व्यवसायी प्रकाशक,



धष्ट पाठोंवाली और असम्बद्ध टीकावाली प्रिण्टिंग पोथियाँ प्रकाशित करके अपना उल्लू सीधा करते हैं और गरीब परीक्षार्थी मुक्त में मारे जाते हैं (पट्टम पराग—पद्म० शर्मा, ३९०); मैं अपने स्वाति-वेम के कारण मारी गई (प्रेमा०—प्रेमचंद, ३७१)

**मारा फिरना,—मारा डोलना,—मारा फिरना**

(१) बुरी दशा में इधर उधर फिरना। प्रयोग—साँचे मारे मारे डोलें। छली दुष्ट सिर बड़ि-बड़ि बोलें (मा० ग्रंथा०—भारतेंदु, ६७०); तो ऐसे बिना मतलब, बिना कोई ठौर-ठिकाने कहाँ मारे-मारे फिरोगे—यही बने रहो न (मिस्त्रा०—कौशिक, ४७); एक दिन वह शाम तक नौकरी की तलाश में मारा-मारा फिरता रहा (गदन—प्रेमचंद, २८)

(२) कोई पृष्ठ न होना। प्रयोग—निम्नी मौज के साथ खानियर की रानी बनी रहे और तुम मारी-मारी फिरी (मृग—दृ० तर्मा, २८१); मैं संसार की सताई हूँ, ठोकर खाकर मारी-फिरी हूँ (कंकाल—प्रसाद, १२३)

**मारा-मारा डोलना**

दे० मारा फिरना

**मारा-मारा फिरना**

दे० मारा फिरना

**मार्ग**

तरीका, उपाय। प्रयोग—उनकी आय के घोर कौन-कौन से मार्ग थे, यह कौन जानता है (गदन—प्रेमचंद, २)

**मार्ग का दीपक**

पथ-प्रदर्शक। प्रयोग—उसकी सरलता और सज्जनता ने एक वेष्टा तक को मुग्ध कर दिया और वह उसे सहकाने और बहलाने के बदले उसके मार्ग का दीपक बन गयी (गदन—प्रेमचंद, ३२०)

**मार्ग खुलना**

(१) क्रम चल पड़ना। प्रयोग—पुस्तक के साथ योग्य सम्पादक का नाम होगा तो बिजो भी होगी और भविष्य के लिए मार्ग खुल जायगा (शेखर (२)—अज्ञेय, १५९)

(२) रुकावट का उप होना।

**मार्ग देना**

रास्ते से हट जाना। प्रयोग—जब वह समुद्र को जाना

चाहता, पानी रुक जाते, पहाड़ उसे मार्ग दे देते (गुलेरी ग्रंथा०—गुलेरी, ८)

(समा० मुहा०—मार्ग छोड़ना)

**मार्ग पर लाना**

ठीक करना या सत्कर्म में प्रवृत्त कराना। प्रयोग—देव करहु दया मोहि मारग लावहु जितु भव बंधन टूटना (कवीर ग्रंथा०—कवीर, २८३); पंडित मुमति देइ पंथ लाबा। जो कुपंथ तेहि पंडित न भावा (पद०—जायसी, ८६)

**मार्ग में खड़ा होना,—बाधक होना**

प्रगति, कार्य या विचारों में रुकावट डालने का कारण होना। प्रयोग—देवती हूँ, मैं तुम्हारे मार्ग में बाधक बन रही हूँ (शेखर (२)—अज्ञेय, २१५); काम और क्रोध भी उनके मार्ग में जरूर खड़े हुए होंगे, उन्होंने उनको धर्मी साहस के साथ जीता (कवीर०—ह० प्र० दिव०, १८४)

**मार्ग में बाधक होना**

दे० मार्ग में खड़ा होना

**मार्ग में रोड़े बिछाना या बिछाना**

प्रगति और विकास में बाधक होना या बाधा डालना। प्रयोग—परन्तु मैंने तो तुम्हारे मार्ग को स्वच्छ करने के सिवा रोड़े न बिछाये (स्कंद०—प्रसाद, ९०)

(समा० मुहा०—मार्ग में रोड़े बतना या होना)

**मार्ग लगना,—लेना**

(१) किसी रास्ते पर चलना। प्रयोग—फारि पटोर कीन्ह मैं कंवा। जहं पिउ मिले लेहुं सो पंवा (पद०—जायसी, ५०३) (÷); जोमी हह तो जुगति सों मांगहु भृगुति लेहु लं मारग लागहु (पद०—जायसी, २३२)

(२) कोई कार्य करना। प्रयोग—जो जिय चहसि परम मुख, तो यहि मारगु लाग (विनय०—तुलसी, २०३); देखिग प्रयोग (१) में (÷) भी।

(समा० मुहा०—मार्ग पकड़ना)

**मार्ग लेना**

दे० मार्ग लगना

**माल उगलवा लेना**

चोरी का घन वसूल कर लेना। प्रयोग—माल जिनका क्यों उगलवा लें न हम (चुमत्त०—हरिऔध, ३१)



### माल उड़ाना

(१) धन फूँकना। प्रयोग—उड़ाकर माल दूसरों का, भूल कर भी न पेट पालें (मर्म०—हरिऔध, १०); मूल का माल उड़ाते क्या सगता है? (प्रेमा०—प्रेमचंद, १११)

(२) खूब बढ़िया भोजन करना। प्रयोग—भाई, डाक्टर साहब का इतना माल मैंने उड़ाया कि फिर मुझ में यहां तक आने की शक्ति न रही (मा०मा० (२)—कि०गो०, ८९)

(३) धन-सामान चोरी करना। प्रयोग—और वही लोग जिन्होंने माल उड़ाया अब तक मेरे मित्र बने हुए हैं (रंग० (१)—प्रेमचंद, २२२)

(४) मोज करना। प्रयोग—मरे कमाई करने वाले, संड मुसंडे माल उड़ावें (बोल०—हरिऔध, ७२)

### माल कटना

(१) माल मिलना। प्रयोग—किस्मत खुली, घर बैठे माल कटने लगा (मट्ट नि०—वा० मट्ट, ११०)

(२) अनुचित रूप से किसी का धन हड़प लेना।

(समा० मुहा०—माल काटना)

### माल चाभना

बढ़िया भोजन करना। प्रयोग—चाब मैं माल बात भूठी कह है तुम्हे ज्ञान ही नहीं सच का (बोल०—हरिऔध, २१९)

### माल निगलना,—मारना

किसी का धन हड़प लेना। प्रयोग—माल निगला क्यों उगलवा लें न हम (चुमते०—हरिऔध, ३१); तुम्हारी मां ने अपने मैंके से जो माल मारा है वह निकालो (वृ०ट०—अ० ना०, ५९६)

### माल मारना

दे० माल निगलना

### माल-मलीदा उड़ाना

मोज से खाना-पीना, आराम करना। प्रयोग—जहां कमाना-धमाना नहीं, मेहनत-परिश्रम नहीं—पड़े-पड़े हराम के माल-मलीदे उड़ाना है (गोली—चतुर०, १७३)

### माला चढ़ाया जाना

सम्मान-महत्त्व मिलना। प्रयोग—है भलाई वां ठहर पाती नहीं हो बुराई पर जहां माला चढ़ा (बोल०—हरिऔध, १२९)

### माला फेरना

(१) माला लेकर जप करना। प्रयोग—किसलिये माला रहे तब फेरते जब मलों से हाथ मालामाल थे (चोखे०—हरिऔध, ११३)

(२) बारबार याद करना।

(समा० मुहा०—माला जपना)

### माशा भर

तनिक सा। प्रयोग—करम करीमां जिलि रह्या, अब कछु लिग्या न जाइ। मासा घटे न तिल बर्ष, जो कोटिक करे उपाइ (कबीर प्रथा०—कबीर, ५८)

### मिजाज आसमान पर चढ़ना या होना

बहुत घमंड होना। प्रयोग—फिर क्यों न औरतों का मिजाज आसमान पर चढ़ जाय (कर्म०—प्रेमचंद, १३४); है उससे ही मिजाज उसका यों आसमान पर चढ़ा हुआ (नूर०—मक्त, ५२); घाज गायत्री का मिजाज आसमान पर होगा (प्रेमा०—प्रेमचंद, १८२)

### मिजाज गरम होना

गुस्से में होना; दिमाग खराब होना। प्रयोग—ऐसे मोको पर गुरुदेव महाशय का मिजाज गरम हो उठता था (सा०सी०—महा० दिव०, ४३)

### मिजाज-पुर्सी करना

(१) खूब पीटना; खबर लेना। प्रयोग—इन्स्पेक्टर—कुछ उनकी भी मिजाज पुर्सी करने की जरूरत होगी (गवत—प्रेमचंद, २८४)

(२) हाल-चाल पूछना; कुशल-समाचार पूछना।

### मिट जाना

फिरा होना; बहुत महत्व देना। प्रयोग—मामूँ यों ही किलसफे पर मिटा हुआ था; अरस्तू के इस स्वप्न-दर्शन ने ओर भी आग पर घी का काम दिया (पहम पराग—पहम० शर्मा, १५२)

### मिट्टी

शव। प्रयोग—वहां तुम लोग न जाने मिट्टी की क्या गत करो? (प्रेमा०—प्रेमचंद, २३६)

### मिट्टी अच्छी होना

शरीर हृष्ट-पुष्ट होना। प्रयोग—हो ऐसा बड़ी अच्छी



मिट्टी है उनकी (मान० (१)—प्रेमचंद, १८१)

### मिट्टी उठना

शव का शववाचा के लिए उठाया जाना । पुत्ती हाथ-हाथ करती जाती थी और कोसती जाती थी, तेरी मिट्टी उठे, तुम्हें हेजा हो जाय, देवी मैया तुम लोल जाय (गोदान—प्रेमचंद, ३१)

### मिट्टी कर देना

बर्बाद कर देना, नष्ट कर देना । प्रयोग—चंद बदन ओ चंदन देहा । भसम चड़ाइ कीन्ह तन सेहा (पद०—जायसी, ११८); वह संसार का सुख भोगने के लिये पैदा नहीं हुए फिर इन्हें ले जाकर हम क्या अपना मज्जा मिट्टी करे ? (परीक्षा०—श्री० दास, ११६); हरिश्चन्द्र ने हिन्दी तथा देश के लिए सारे संसार की दृष्टि में अपने को मिट्टी कर दिया (राधा० ग्रंथानु०—राधा० दास, ३६२)

### मिट्टी का पुतला

उत्साह-हीन, निष्प्राण । प्रयोग—अब तो निरा मिट्टी का पुतला हूँ भाई साहब, बिल्कुल मुर्दा (मान० (४)—प्रेमचंद, ३००)

### मिट्टी की तरह फेंकना

अत्यंत तुच्छ समझकर उपेक्षा करनी । प्रयोग—उसमें थी यह साहसिकता जो जीवन को मिट्टी की तरह फेंक सकती थी (शेखर (२)—अज्ञेय, १२९)

### मिट्टी के माधो,—लौंदा

मूर्ख होना; नासमझ होना । प्रयोग—इसमें संदेह नहीं अंग्रेजी राज्य की कृपा से हम अब यह निरे मिट्टी के लौंदा नहीं हैं जो पचास वर्ष पहले रहे (मट्ट नि०—बा० मट्ट, १३५); मैं तो समझती थी कि तुम में भी कुछ कसबल है, अब देखती हूँ तो निरे मिट्टी के लौंदा हो (मान० (१)—प्रेमचंद, १०); मालिक अपने एजेंट को मिट्टी के माधव के रूप में नहीं देखना चाहते हैं (मेरे०—गुलाब०, ५८)

### मिट्टी के मोल

(१) महत्वहीन । प्रयोग—कोठ बिन पखे बोल जो बोला । होइ बोल माटी के मोला (पद०—जायसी, ७८)

(२) बहुत सस्ता ।

### मिट्टी के लौंदा

दे० मिट्टी के माधो

### मिट्टी के शेर

बनावटी बहादुर । प्रयोग—घरे वारे मेरे मिट्टी के शेर ! क्या बात कह गया इस वक्त (बुँद०—अ० ना०, ४४४)

### मिट्टी खराब करना या होना,—ख़ार करना या होना

(१) बुद्धि धार करनी या होनी । प्रयोग—यदि कैसा ही मज्जन, × × सुशील क्यों न हो, पर खुशामद न जानता हो तो इस उमाने में तो उसकी मिट्टी ख़ार है (प्र०पो०—प्र०ना०मि०, ५९); पर कोई घर में बसाने के लिए ले जायेगा तो दर-दर मिट्टी ख़ार तो नहीं करेगा (झुठा० (१)—यशपाल, ५०५); × × दफ़्तर में किसी की मिट्टी इतनी खराब नहीं है जितनी बेवारे शरीब की (मान० (४)—प्रेमचंद, २०५); सब बता मैंने तो रतन की बात न मान कर अपनी मिट्टी खराब की (झुठा० (१)—यशपाल, २६१) (÷)

(२) नष्ट करना या होना । प्रयोग—जब ऐक्टर ही बख़्ख़ नहीं तो उनसे ड्रामा खेलवाना उसकी मिट्टी खराब करना या (मान० (४)—प्रेमचंद, ७८); देखिए प्रयोग (१) में (÷) भी ।

### मिट्टी ख़ार करना या होना

दे० मिट्टी खराब करना या होना

### मिट्टी छूते सोना होना

जो काम हाथ में लिया जाय उसी में सफलता मिलनी । प्रयोग—यह उसी की बरकत है कि आप मिट्टी भी छू लें तो सोना हो जाय, लेकिन आदमी भरसक अपनी हिफाजत करता है (मान० (७)—प्रेमचंद, ३१); जब चढ़ती पर रहता है किसी का दिन तब वह माटी भी छू देगा तो सोना हो जायगा (मैला०—रेणु, ३३०); लाला रामनारायण श्रमवृत्तसर के प्रसिद्ध व्यापारी थे, मिट्टी को भी हाथ लगाते तो सोना हो जाता (सु० सु०—सुदर्शन, २३७)

### मिट्टी ठिकाने लगना या लगाना,—पार लगना या लगाना

अत्यधिकिया होनी या करनी । प्रयोग—आज मर जाय, तो बिरादरी ही तो इस मिट्टी को पार लगावेगी ? (गोदान—प्रेमचंद, १३२); हैं तो अपने । मर जाऊँगी तो मिट्टी तो ठिकाने लगा देने (कर्म०—प्रेमचंद, ३५)

(समा० मुहा०—मिट्टी की गति होना)



### मिट्टी पलीद करना या होना

दुर्दशा करनी या होनी। प्रयोग—पंडित जी आप तो आप, यहां तो मनु की मिट्टी पलीद है (शेखर(२)—अज्ञेय, १५१); तुम बड़े सैतान हो पार, मेरी मिट्टी क्यों पलीद करते हो (मान०—प्रेमचंद, १०८); अपने पक्ष की विजय का समाचार बहुत गम्भीरता के साथ सुनाना शुरू करते थे और फिर पर पक्ष की मिट्टी पलीत होने की बात खिल-खिलाकर हंसते हुए समाप्त करते थे (झांसी०—पुं० वर्मा, ५१)

### मिट्टी पार लगना या लगाना

दे० मिट्टी ठिकाने लगना या लगाना

### मिट्टी में मिल जाना या मिला देना

चौपट हो जाना या कर देना; नष्ट हो जाना या कर देना। प्रयोग—केत बजावत उतरे पाटी। केत बजाइ गए मिलि मांटी (पद०—जायसी, ४३७); जब दांतों के बिना पुपला सा मुंह निकल आता है, और चिबुक (ठोड़ी) एवं नासिका एक में मिल जाती है उस समय सारी सुघराई मिट्टी में मिल जाती है (५० पी०—५० ना० मि०, ७३); क्रोध भरे रहें परन्तु उसको निकलने किसी प्रकार न दें, नहीं तो सब किया कराया मिट्टी में मिल जावेगा (झांसी०—पुं० वर्मा, २०३); मिट्टी में मिल गई अंत में जिससे सोने की लंका (पंच०—गुप्त, ६४); जिस दिन हम माता को भूल जायेंगे उस दिन हमारी कला मिट्टी में मिल जाएगी (दुधगाछ—दे० सं०, ९७); गिरस्तों के पीछे तुमने अपने को मिट्टी में मिला दिया (मान० (१)—प्रेमचंद, १२२); जब सक्तावतों का भाग्य उत्कर्ष पर आता है, तब चूड़ावतों को मिट्टी में मिला देने का यत्न किया जाता है (विप०—प्रेमो०, ९); खोल दिल जो गले न मिल पावें, तो मिला दें न मान मिट्टी में (मर्म०—हरिऔध, ६६); मुसलमान और नीची कोमवाले हिन्दू मिट्टी में मिल जायेंगे (चोटो०—निराला, ८३)

### मिट्टी होना

(१) बर्बाद हो जाना। प्रयोग—चलो सब आनंद मिट्टी हुआ (राधा० प्रशा०—राधा० दास, ३२१); याना कौन पकावेगा? × × मेरे बिना सब मिट्टी हो जायगा

(ज्ञान०—यशपाल, ३४); मेरे तो साढ़े पांच सो मिट्टी हो गये (झुठा० (१)—यशपाल, ३३१)

(२) बहुत लज्जित होना। प्रयोग—कनक लज्जा और संताप से मिट्टी हो जाती—क्या मेरी भूल इतनी अधिक है? (झुठा० (२)—यशपाल, ३५९)

(३) बहुत गंदा होना।

### मिठा-मिठा कर बोलना

बहुत नम्रता और प्रेम से बातें करनी। प्रयोग—दोनों और भी सहम उठे। घाज ठाकुर जीता न छोड़ेगा कंसा मिठा-मिठा कर बोल रहा है। उतनी ही भिगो-भिगो कर लगावेगा (मान० (१)—प्रेमचंद, ३०३)

### मिती पूजना

हुंडी का निपट समय पर निकारा जाना। प्रयोग—इसमें कोई चोखा नहीं हो सकता क्योंकि मेरे जहाज मिती पूजने के एक महीना पहिले अवश्य ही पहुँच जायेंगे (भा० प्रशा० (१)—भारतेन्दु, ५६८)

(समा० मुहा०—मिती पुराना या पुगना)

### मिनमिन करना

(१) बहुत नम्रता से बोलना। प्रयोग—हमारे सामने मिन-मिन करती है, एकान्त में आग पर तेल छिटकती है। (सु० सु०—सुदर्शन, २१०)

(२) टालमटोल करना।

### मियां की जूती मियां का सर करना या होना

(१) जिसकी वस्तु उसे ही देनी। प्रयोग—यहां मुकदमा लड़ते-लड़ते उझ बीत गयी लेकिन घर का पैसा नहीं खरचा। मियां की जूती मियां का सर करते हैं। इस मानसों से मांग कर एक को दे दिया (मान० (३)—प्रेमचंद, १३०)

(२) जिसकी चीज हो उसी के विरुद्ध उसका प्रयोग करना।

### मियां-मिट्टू

आत्म-प्रशंसक। प्रयोग—मुझे आप जैसे मियां मिट्टुओं की जरूरत नहीं (सेवा०—प्रेमचंद, १२९)

### मिला लेना

अपने पक्ष में कर लेना। प्रयोग—और लोग पुलिस को मिला लेते हैं (मान०—प्रेमचंद, १३५)



### मिली-भगत होना, मिले होना

किसी दुर्भागिनी में योग देने वाला । प्रयोग—चरपट घोर घृत गंठिलोरा मिले रहहि तेहि नाँव (पद०—जायसी, २१४); मेरी घोर भाई साहब की मिली-भगत थी (पैतरे—अशक, २१); मरदों की तो मिली-भगत है । मरद चाहे घोरत के घंग-अंग, पोर-पोर काट डाले, कोई उसको मने नहीं करता (रंग० (१)—प्रेमचंद, ३३२)

### मिले होना

#### दे० मिली-भगत होना

#### मिश्री की डली दिखाकर विष देना

धोखा देना; कहना कुछ करना कुछ; प्रेम जताकर फिर हवाई करनी । प्रयोग—परतीति दे बीबी अनोति महा विष दीनो दिखाय मिठास-दरी (घन० कवि—घना०, १५७)

#### मिश्री घोलना

बहुत मिठास से बोलना । प्रयोग—बालों में मुझ सा हो वह भी मिसरी घोले (मर्म०—हरिऔध, ११७)

(समा० मुहा०—मिश्री की डली घोलना)

#### मीठा उपदेश

बहुत समझा-बुझाकर प्रेम से दिया गया उपदेश । प्रयोग—जब वह मुझे मिलती बड़े मीठे-मीठे उपदेश दिया करती थी (लाग०—जैनेन्द्र, ९)

#### मीठा क्रोध

हल्का क्रोध । प्रयोग—ऐसे दुःख में आलस्य या घनामध्य से उत्पन्न नैराश्य, दूसरे की प्राप्ति में अपनी सापेक्षित छोटाई का बोध, दूसरे की असंपन्नता की इच्छा, और अंत में इस इच्छा की पूर्ति में बाधक उस दूसरे व्यक्ति पर एक प्रकार का मीठा क्रोध, इतने भावों का मेल रहता है (चित्ता० (१)—शुक्ल, ११८)

#### मीठा ठग

प्रिय बातें करके ठग लेने वाला । प्रयोग—न तो वह इतनी चिकनी-चुपड़ी बातें करे कि 'मीठा ठग' समझा जाय और न इतनी लापरवाही से बात करे कि X X अशुष्ट और मूर्ख समझा जाय (मेरे०—गुलाब०, ५३)

#### मीठा बनना

प्रिय बनना । प्रयोग—जीम तो है चूक तेरी कम नहीं जो न मीठा बोल कर मीठी बनी (बोले०—हरिऔध, ९७)

### मीठा बोलना,—घबन बोलना

एसी बात कहना जो सब को भ्रम लगे । प्रयोग—जेता मीठा बोलना, तेसा साधन जागि (कबीर ग्रंथा०—कबीर, ४९); मारग यहि ठाढ़ी रहै (री) बोलत मीठे बोल (सु० सा०—सूर, ३४८); और राजा, राष्ट्र का गोप, दुःख जीवन योग्य, मुसका कर बोलने वाला हो और बात करने पर मनुष्यों को मीठा उत्तर दे (गुलेरी० (१)—गुलेरी, १२-१३)

### मीठा लगना या होना

किसी प्रकार के लाभ या आनंद आदि की प्राप्ति होना । प्रयोग—ऐसा तेरा झूठा मीठा लाग़ा, ताचें साचे मूं मन भागा (कबीर ग्रंथा०—कबीर, १७१); जो मोहि राम लागते मीठे । तो नवरस-घटरस-रस-घनरस हूँ जाते सब मीठे (विनय०—तुलसी, १६९); मिठाइयां खाते बखत तो मीठी मालूम होती हैं दाम देते क्यों कड़वा लगता है (रंग० (१)—प्रेमचंद, ३७२); किस तरह से दूसरे मीठे बने और हम कैसे बने तीते रहे (बोले०—हरिऔध, ४३); स्वभाव इतना मीठा है कि तुमसे क्या कड़ू (सु० सु०—सुदर्शन, १८९)

### मीठा घबन बोलना

#### दे० मीठा बोलना

#### मीठा-मीठा गप्प और कड़वा-कड़वा थू करना

घच्छा-घच्छा ग्रहण कर लेना घोर बुरी या भ्रमट की चीजों को छोड़ देना । प्रयोग—जानू से कहते क्यों नहीं कि मीठा-मीठा गप्प, कड़वा-कड़वा थू ? (प्रेसा०—प्रेमचंद, २३०)

#### मीठी आँख पर पकाना

भीतर-भीतर कष्ट पहुंचाना । प्रयोग—पिता का क्रोध जब बरस जाता था, तब शेरर जानता था हम फिर सजा है; मां जब कुछ नहीं कहती थी तब उसे लगता था कि वह मीठी आँख पर पकाया जा रहा है (शेरर (१)—अज्ञेय, ११८)

#### मीठी चुटकी लेना

बात-बात में हल्के ढंग से मजाक बनाना । प्रयोग—रामजी ने मीठी चुटकी ली—बाबूजी, घाय मेरे लिए ही गा रहे हैं (शेरर (२)—अज्ञेय, ९२)

(समा० मुहा०—मीठी चुटकी उड़ाना)



### मीठी छेड़छाड़

प्रिय न लगनेवाला हसी-मजाक। प्रयोग—आदमाराम की इन मीठी छेड़ों को, अफसोस है कि आपने गालियाँ समझा (गुं नि०—बा० मु० गु०, ५३४)

### मीठी नींद सोना

मुख की नींद सोना। प्रयोग—दोनों साले मीठी नींद सोते रहते हैं और मैं बेलों को सानी-पानी देता हूँ (मान० (१)—प्रेमचंद, १३४); मैंने आते ही सबसे बड़ा अन्याय यह किया कि तुम्हारी मीठी-मीठी नींद में विघ्न डाल दिया (जहाज०—६० जोशी, ५४४); सब मीठी नींद में चुपचाप पड़े सोते हैं (पद्म पराग—पद्म शर्मा, २६४)

### मीठी बातें

प्रिय बातें। प्रयोग—दुआँ सबति मिलि पाट बईठी। हिय विरोध मुख बातें मीठी (पद०—जायसी, ३६२); भुज फरकत अगिया तरकति, कोठ मीठी बात मुनावे (सु० सा०—सूर, ४०७२); सब कोई बिन से मीठी बात बोलते हैं (स० ग्रंथा०—स० मिश्र, २५); यशोधरा इस प्रकार की भाषा सुनने की अभ्यस्त न थी और विशेषतः एक ऐसे व्यक्ति से जिससे X X कुछ क्षणों का परिचय हो। पर फिर भी बात मीठी थी (चित्र०—मग० वर्मा, १००); मुनाता है मुह मीठी बात, पेट में रहता है कुछ और (मर्म०—हरिऔध, ११२); इन सारे अभावों की पूर्ति के लिये रमानाथ के पास मीठी-मीठी बड़ी-बड़ी बातों के सिवा और क्या था (गदन—प्रेमचंद, १८)

### मीठी बोली

ऐसी बोली जो सबको अच्छी लगे। प्रयोग—मानिक घघर दसन नग हेरा। बँन रसाल खांड मकु मेरा (पद०—जायसी, ४११०); मीठे-मीठे बोल बोलि, ठगी पहिले तो तब, अब जिय जारत, कहौ घौ कोन न्याय है (घन० कवित्त—घना०, ५)

### मीठी होना

प्यारी होना, भली लगना। प्रयोग—छबि को सदन गोरो बदन, कबिर भाल, रस निचुरत मीठी मृदु मुसकयानि में (घन० कवित्त—घना०, २)

### मीठी-मीठी बातें बनाना

ऊपर से खूब अच्छी और प्रेम की बातें करनी। प्रयोग—X X अपने लाभ के लिये मालिक को हानि पहुँचाना, व्यवसाय में झूठमूठ की मीठी-मीठी बातें बनाना X X आदि जितने प्रपंच के कार्य हैं सभी जीवन मुख के बाधक और हानिकारक हैं (भट्ट नि०—बा० भट्ट, ७८)

### (समा० मुहा०—मीठी-मीठी बातें करना)

### मीन-मेख करना

किसी काम के करने में आना-बीछा करना। प्रयोग—उसने सो कहा तो सो खर्च किए, एक कहा तो एक। किंगी ने मीनमेख न की (मान० (१)—प्रेमचंद, ५८); करके मीन-मेख सब ओर, किया करें वृध वाद कठोर (साकेत—गुप्त, २८९)

### मीन-मेख निकालना

दोष निकालना। प्रयोग—हिसाब में मीन-मेख निकालने के कारण प्रायः ही रिखीराम की मास्टर जी से चला-चल ही जाती थी (झुठा० (२)—यशपाल, ३५३); घोर जो ज्यादा मीन-मेख निकालेगी तो उसकी शादी दूसरी जाति में कर दूँगा (बूँद०—अ० ना०, ११०); जब कोई धार्मिक प्रश्न आता है, तो तुम, उसमें स्वाहम-स्वाह मीन-मेख निकालने लगते हो (रंग० (२)—प्रेमचंद, १६८)

### मीन-मेख होना

संदेह की संभावना होनी। प्रयोग—पर इसमें मीनमेख नहीं है कि संसार में उनका होना न होना बराबर होगा (प्र० पी०—प्र० ना० मि०, १५४); सबेरे से भर घी, सेर भर सहद और डेढ़ सो केलों का कलेवा लधाशाति के लिए मौजूद। उसमें कोई मीनमेख ही नहीं (मृग०—गु० वर्मा, ४३७)

### मुँडवाना

घाटा करवाना, रुपये बसूलना। प्रयोग—मनोहर ने मुख से ज्यादा बातचीत नहीं की। समझ गया कि यह मुँडे चाहते हैं (प्रेमा०—प्रेमचंद, १०१)

### मुँह थाना

(१) वाद-विवाद करना। प्रयोग—ऐसे दरबार की दूर ही से तमस्कार करना चाहिए जहाँ लौहिया पंडितों के मुँह आवें



(भा० ग्रंथा० (१)—भारतेन्दु, ३७८); एक-दो मछलियों के लिए तो कोई मछुआ नीलमणि के मुँह न घाता (ब्रह्म०—दे० सं०, ४८); कोई मेरे मुँह क्या आवेगा बेचारा ? (मान० (३)—प्रेमचंद, १३०); चाहिए या मुँह नहीं घाना हमें घब भता हम कौन मुँह लेकर चलें (बोल०—हरिऔध, ८२)

(२) मुँह के अंदर छाले पड़ना ।

(३) बेहरा सृजना ।

### मुँह उजला करना

इज्जत पानी या बड़ानी । प्रयोग—भारत-रमनि-समाज ! आज उज्ज्वल कौनो मुख (राधा० ग्रंथा०—राधा० दास, ६२९)

### मुँह उजागर होना

प्रतिष्ठा बड़नी । प्रयोग—संसार में बहुत से अच्छे-अच्छे काम इसी के लिये किये जाते हैं कि जग में हमारा मुँह उजागर रहे (भट्ट नि०—बा० भट्ट, १३८)

### मुँह उठाना

(१) जाने की प्रवृत्ति या दिशा पकड़नी । प्रयोग—अब किधर के इरादे हैं ? × × देखो, जिधर मुँह उठ जाय (मा—कौशिक, २००)

(२) सम्मान या गर्व से कुछ कहना या करना, सम्मानपूर्वक जीवन बिताना । प्रयोग—लेकिन तुम आज मुँह भी उठा सकती हो तो मेरी बदौलत (कल्याणी—जैनेन्द्र, ७०)

### मुँह उतर जाना

(१) लज्जित होना । प्रयोग—विजयधा का मुँह उतर गया (देवकी०—रा० रा०, २) (÷)

(२) निरुत्साह होना । प्रयोग—मुँह सटक जाये न सटके में पड़े घाल से उतरे, न मुँह जाये उतर (बोल०—हरिऔध, ८७); देखिये प्रयोग (१) में (÷) भी ।

### मुँह उतरा होना

मलिन-मुख होना । प्रयोग—देवि का मुख आज इतना उतरा हुआ क्यों है ? (चित्र०—भग० वर्मा, ६९); मुख तेरा उतरा सा क्यों है भू कमान क्यों चढ़ी हुई (नूर०—भक्त, २)

### मुँह ऐसा मुँह लेकर

घिटापटाकर । प्रयोग—निदान मोलवी साहब मुँह ऐसा मुँह लेकर चले आए (राधा० ग्रंथा०—राधा० दास, ३३०)

### मुँह का आग उगलना

घप्रिय या दुर्वचन कहना । प्रयोग—इस तरह का बना कलेजा है । जो कि सारी मुसीबतें सह ले । बेधड़क घाग मुँह उगल लेवे । जीभ बातें गरम गरम कह ले (चोखे०—हरिऔध, ४५)

### मुँह का उतार-चढ़ाव

चेहरे का भाव-परिवर्तन । प्रयोग—पह कह कर राधाकृष्ण ने छुट्टनमियाँ के मुख का उतार-चढ़ाव ध्यानपूर्वक देखा (मा—कौशिक, २६४)

### मुँह का कड़वा

दुर्वचन बोलने वाला । प्रयोग—मुँह की कड़वी है । लाल मिचं ही तो है (ब्रह्म०—दे० सं०, ४६)

### मुँह का कहे देना

चेहर से प्रगट होना । प्रयोग—सखी तेरा मुखड़ा कहे देता है कि तू कुछ सोचा करती है (भा० ग्रंथा०—(१) भारतेन्दु, ४२१)

### मुँह का कौर छिन जाना या छीनना,—की रोटी छिन जाना या छीन लेना

(१) रोजी छिन जानी या छीन लेनी । प्रयोग—छिनता कौर है किसी मुँह का, किसी का लुटा जाता है धन (मर्म०—हरिऔध, १०); अगर आप मेरे मुँह का कौर छीनना चाहेंगे तो घाय घाटे में रहेंगे (गोदान—प्रेमचंद, १७८); वही है महि में नर-सिरमौर नहीं छीनता रहता है जो कभी किसी के मुँह का कौर (मर्म०—हरिऔध, १५); उसके मुँह की रोटी छीन कर तुम्हें दे दू तो तुम मुझे भला कहोगे बोलो ? (कर्म०—प्रेमचंद, १५४)

### मुँह का कौर होना

आसान काम होना । प्रयोग—इस उमाने में दो-चार हजार के गहने बनवा लेना मुँह का कौर नहीं है (गवन—प्रेमचंद, ४५)

### मुँह का खराब

कटु बोलने वाला । प्रयोग—हीरा इतना नीच नहीं है । वह मुँह का ही खराब है (गोदान—प्रेमचंद, १०९)

### मुँह का टाँका टूटना

कुछ कह पाना । प्रयोग—क्या कहें दिल के फफोलों की



की टपक । टूट मुंह का तो सका टांका नहीं (चुमते०—हरिऔध, ६१)

### मुंह का पानी उतर जाना

(१) अपमानित होना या लज्जित होना । प्रयोग—गरजत कंस बंस सब साजे, मुख की नीर हरषी (सु० सा०—सूर, ३६४३)

(२) चेहरा श्री-हीन हो जाना ।

### मुंह काला करना (दूसरे का)

(१) किसी अरुचिकर या बुरी वस्तु अपवा व्यक्ति को दूर करना । प्रयोग—तुलसी दुख दूनो दसा दुहुं देखि, कियो मूलु दारिद को करिया (कवि०—तुलसी, १३१); तू मेरे घर से अब सदा के लिये मुंह काला कर (सुहाग०—अ० ना०, ३१)

(२) बदनाम करना; कलंकित करना । प्रयोग—तुम्हारा एक चलता अफसर सिराजुद्दौला का मुंह काला करने के के लिए एक कयासी बकूष की मादगारी के तौर पर बना गया है (गु० नि०—बा० मु० गु०, २४३); लालिमा रख सकें जो न उसकी तो बना दें न जाति मुंह काला (मर्म०—हरिऔध, ६५)

### मुंह काला करना

(१) कुकर्म करना, अभिचार करना । प्रयोग—अगर (मे) भ्रष्टा हूं तो जो लोग यहां अपना मुंह काला करने पाते ह, वे कुछ कम भ्रष्ट नहीं हैं (मान० (२)—प्रेमचंद, ५१); भूल कर कोई न मुंह काला करे मुंह रहे हित रंग से सब दिन रंगा (बोल०—हरिऔध, ८३)

(२) बदनामी पाना । प्रयोग—जाति को डाल काल के मुंह में बेतरह मुंह किया गया काला (चुमते०—हरिऔध, ९५)

### मुंह काला कराना

(१) कलंकित होना, बदनाम होना । प्रयोग—रहिमन घोरे दिनन की कौन करै मूल स्याह (रहीम कवि०—रहीम, २५); अपना मुंह काला करा रहे हो, हमारा भी कराओगे (झूठा० (२)—यशपाल, ३०३)

(२) अनुचित संबंध करना ।

### मुंह काला होना

(१) कलंकित होना । प्रयोग—बोलि उठी प्रभु को प्रन पारी । नातक होत है मो मुख कारो (केशव० (२)—केशव, ३२३); श्री सरजा सिव तो जम सेत सों होत हैं म्लेच्छन के मुंह कारे (भूषण ग्रंथा०—भूषण, १६०); रह गए लोग लोग सब बह गए, भए अकाल के मुंह काले (राधा० ग्रंथा०—राधा० दास, २२); अश्रुमती नाटक के लिखे जाने से बङ्ग-भाषा के साहित्य का मुंह काला हो गया है (गु० नि०—बा० मु० गु०, ५४४); मन चलायमान किया तो जग में तेरा मुंह काला होगा (गोलो—चतुर०, १६७)

(२) भागना । प्रयोग—देखें कब इन दुष्टों का मुंह काला होता है (भा० ग्रंथा० (१)—मारलेन्दु, ५२७)

### मुंहकी खाना

पराजित होना; दुर्दशा होनी; नीचा देखना । प्रयोग—अनेक राजकुमार उस सुंदरी की प्रशंसा सुनकर घाते थे, मीनार पर चढ़ने का प्रयत्न करते थे और मुंहकी खाकर लौट जाते थे (सुहाग०—अ० ना०, ११६); पर आखिर तो मुंह की खाई । अपनी करनी आगे घाई (गु० नि०—बा० मु० गु०, ७२१); आज्ञा जान पड़ता है कि उधर से मुंह की खाई है तो जी में यही समाई (राधा० ग्रंथा०—राधा० दास, ७०७); नायकराम जैसा फेकंत और लठैत कैसे मुंह की खा गया (रंग० (१)—प्रेमचंद, २१७); सब के जेनरल सिमथ सम्मुख था, उसने मुंहकी खापी थी (मुकुल—सु० कु० चौ०, ५६); जिस समय जोधपुर और जयपुर की यात्रियों ने मिल कर तिथिया का सामना किया था—उन्हें मुंह की खानी पड़ी थी (विप०—प्रेमी, ९७)

### मुंह की बात छीन लेना

किसी के मन की बात कह बँटना । प्रयोग—तुमने मेरे मुंह से बात छीन ली (रंग० (१)—प्रेमचंद, २२०); भई ! यह बात तो तुमने मेरे मुंह से छीन ली (सु० सु०—सुदर्शन, २७०)

### मुंह की मीठी

मधुर वचन बोलने वाली । प्रयोग—मन मलीन मुंह मीठ नृप राउत सरल सुभाउ (राम० (अ)—तुलसी, ३८८)

### मुंह की रोटी छिन जाना या छीन लेना

दे० मुंह का कौर छिन जाना या छीन लेना



### मुंह की लाली रखना या रह जाना

प्रतिष्ठा बनाये रखनी या बनी रह जानी। प्रयोग—लालिमा रख सकें न जो उनकी तो बना दें न जाति मुंह कासा (मर्म०—हरिऔध, ६५); रख ली प्रियतम घाज हमारे मुख की तुमने लाली (नूर०—भक्त, १०२); अब अपने मुख की लाली रखने का सारा भार उसी पर था (गुबन—प्रेमचंद, १८); समझते होंगे इस तरह अपने मुंह की लाली रख लेंगे लेकिन जिस बात को दुनिया जानती है, उसे कैसे छिपा लेंगे (गदोन—प्रेमचंद, २५७); प्रियतम के अनुराग-राम में रंग गये रहती थी जिसके मंजुल-मुख की लालिमा (देहेही०—हरिऔध, ५४); क्यों न मुंह की बनी रही लाली (चुमते०—हरिऔध, १५)

### मुंह के बल

तुरत, आतुरता पूर्वक। प्रयोग—सब लोग लड़े-लड़े थक तो गए ही थे, मुंह के बल बैठ गए (भा० प्रथा० (३)—मारतेन्दु, ९३९)

### मुंह के बल गिर पड़ना

(१) लज्जित होना, परास्त होना। प्रयोग—वही गिरेगा मुंह के बल जो जायेगा गड़बड़ा (मर्म०—हरिऔध, २५); परन्तु तुम लोगों ने नगर बनाकर धोके की टट्टियों और जालों का भी प्रस्तार किया है। तुम्हीं मुंह के बल गिरोगे (कामना—प्रसाद, ६८)

(२) किसी वस्तु को पाने के लिये अत्यंत आतुर होना।

### मुंह के भाव पढ़ना

चेहरा देखकर सामनेवाले के भाव जान लेना। प्रयोग—चिन्तेला ने खेतांक के मुखांकित भाव पढ़ लिये (चित्र०—भाग० वर्मा, ६०)

### मुंह खिलना

प्रसन्न होना। प्रयोग—देस मुख मुल देस कमलों सा खिला (चुमते०—हरिऔध, ३५)

### मुंह खुलना

(१) कहना। प्रयोग—मेरा मुंह नहीं खुल सकता उनके सामने भाभी (भारती—१० रा०, ९५); पर मिसेज का मुंह अब भी न खुला (रंग० (१)—प्रेमचंद, ७६); मुंह खुला जिसका न औरों के लिये दांत उसका बैठ क्यों जाता नहीं

(खोले०—हरिऔध, १८४); कहीं धर्मशारथ हो तो उसका मुंह खुलना चाहिए (भूष०—प्रसाद, ६१)

(२) उद्दता-पूर्वक या निर्भीकता पूर्वक बातें करने की आदत पड़नी।

### मुंह खुलवाना

बोलने को विवश करना। प्रयोग—तुम्हारे जब्त की बानगी देखे आ रहा हूं बेटा, अब मुंह न खुलवाओ (कर्म०—प्रेमचंद, ३४४)

### मुंह खोलकर

स्पष्ट रूप से; विकट रूप से; बहुत बड़े परिमाण में। प्रयोग—नई परिस्थितियां मिलीं, नये दोस्त मिले, निगाह फैलती गई और जिन्दगी की स्वाहिशें मुंह खोल कर सामने आई (ल्याग०—जैनेन्द्र, ४६)

### मुंह खोल कर मांगना

संकोच छोड़कर मांगना। प्रयोग—मुंह खोलकर हरि प्रसन्न हो गए मांग बंठा है, तब यह तो है ही कि उसे अपने लिए नहीं चाहिए (सुनीता—जैनेन्द्र, ८२)

(समा० मुहा०—मुंह खोल कर कहना)

### मुंह खोलना

(१) चुप रहने के बाद कुछ बोलना। प्रयोग—फूलमती क्रोध के मारे ओठ चबा रही थी, पर इस अवसर पर मुंह न खोल सकती थी (मान० (१)—प्रेमचंद, ६१); जरा भी तो मुंह खोलना चाहिए (भोर०—जग० माधुर, १२०); लेकिन जीना भरना जिसके हाथ है, उसीके हाथ है। हम कौन जो उस पर मुंह खोलें? (कल्याणी—जैनेन्द्र, ३७) (÷); चुक ने आज नहीं मुंह खोला नहीं ताचता दिखलाता है (देहेही०—हरिऔध, १०६)

(२) निंदा करना; विरोध करना। प्रयोग—संभल कर ये मुंह को खोलें राज्य में है जिनको बसना (देहेही०—हरिऔध, ३७); किन्तु यह नहीं हो सकता कि ग्रन्थाप देखा करुं और मुंह न खोलूँ (प्रेमा०—प्रेमचंद, २२)

(३) जवाब-सवाल करना। प्रयोग—वह जो बात कहता है, बेलगम कहता है और गांव के अनपढ़े उसके सामने मुंह नहीं खोल सकते (मान० (८)—प्रेमचंद, ६५); देखिए प्रयोग (१) में (÷) भी।

(४) याचना करना।



### मुंह खोले बैठना

कोई काम करने या वस्तु को लेने के लिए लाजावित होना। प्रयोग—आखिर रमा की आर्थिक दशा तो उससे खिरी न थी फिर भी सात सो की चीजों के लिए मुंह खोले बैठी थी (गवन—प्रेमचंद, ६६)

### मुंह गिर जाना

उदास हो जाना। प्रयोग—राय साहब का मुंह गिर गया (गोदान—प्रेमचंद, २३८)

### मुंह चढ़ाना

रुष्ट होना। प्रयोग—मां ने मुंह चढ़ाकर कहा X X (निशि०—वि० प्र०, ७८)

### मुंह चलना या चलाना

(१) मुंह से व्यर्थ की बात या दुर्वचन निकलना या निकालना; कुछ बोलना। प्रयोग—जब चलाये न बात चल पाई, तब भला किस तरह न मुंह चलता (चुमते०—हरिऔध, १४); वहुएँ छाटा पाथ लेती है, पर गूहस्थी चलाना क्या जानें। हाँ, मुंह चलाना खूब जानती है (गोदान—प्रेमचंद, २५); अब लगे आप मुंह चलाने क्यों जीभ तो कम नहीं रही चलती (चोखे०—हरिऔध, ४५)

(२) भोजन होना या करना।

### मुंह चाहना,—जोहना,—ताकना,—देखना

(१) सहायता चाहना; कृपा या आश्रय चाहना। प्रयोग—समुझि-समुझि गूह आरति अपनी, धर्मपुत्र मुख जोर्व (सू० सा०—सूर, २५९); जब सब कोरव यों बैर किये रहें, तब ये मेरे बालक किसका मुंह चहें (प्रेम सा०—ल० ला०, १४२); आप ऐसी बात कहेंगे कि शोक से मति विकल हो रही है तो भारतवर्ष किसका मुंह देखेगा (भा० ग्रंथा० (१)—भारतेन्दु, ५३८); जरा सी बातों के लिए दूसरे का मुंह जोहते हैं (मट्ट नि०—बा० मट्ट, ६७) (÷१); सारी हिंदू जाति इस समय एक तुम्हारा मुख देख रही है (राधा०ग्रंथा०—राधा० दास, ७३९); हमारे हावों में दीपक है, कंधे पर लाठी है, कमर में तलवार है, पैरों में शक्ति है, हम क्यों न आगे चले? क्यों दूसरों का मुंह देखें? (रा० (२)—प्रेमचंद, १६८); देखते लोग हैं हमारा मुंह, मुंह दिखाते हम नहीं बनता (चुमते०—हरिऔध, ६०); वह अपने मन की करेंगे X X तो मैं भी उनका मुंह न जोहूँगी (कर्म०—

प्रेमचंद, २१); जिस लौटे को अपना गुलाम समझा, उसका मुंह न ताकेगी (मान० (१)—प्रेमचंद, १); जो लोग पहले मुझ से बोलना तक पसन्द न करते थे, वे लोग आज मेरा मुंह जोहते हैं (राधा०—प्र०स०, ३३-३४) (÷१) (÷२); जातिवां मुंह जोह जिनका जो सकी इन दिनों है आग में ही वो रही (चुमते०—हरिऔध, २२) (÷१)

(२) कोई सोच-विचार करना। प्रयोग—ऐसे घबराहट पर मैं रुपये का मुंह नहीं देखता (कर्म०—प्रेमचंद, ६७)

(३) निर्भर करना। प्रयोग—आम सिपाही तो इन्हीं लोगों का मुंह ताकते हैं (मुग०—पुं० वर्मा, ३०४); जानती ही नहीं, सब बातों में उन्हीं का मुंह जोहती रही है (अजय०—देवराज, ७६); देखिए प्रयोग (१) में (÷१) भी।

(४) इच्छा जानने की अनुमति रहना एवं तुरंत पूरी करना। प्रयोग—मां-बाप दोनों ही उसका मुंह जोहते रहते हैं (गोदान—प्रेमचंद, २३०); आप के कई भाई-भतीजे होते हैं, वह कभी इनकी बात भी नहीं पूछते; आप बराबर उनका मुंह ताकते रहते हैं (मान० (१)—प्रेमचंद, ३१५); देखिए प्रयोग (१) में (÷२) भी।

(५) प्रकम्प्य बैठे रहना।

### मुंह चिड़ाना

(१) किसी के हावभाव या कचन को बहुत विगाड़कर निकल करनी। प्रयोग—कभी संगुठा दिखाता है, मुंह है कभी चिड़ाता (कर्म०—हरिऔध, ११८); एक बार तो जब एक सज्जन मेरे घरमें बैठकर मुझे लक्ष्मी के कल्पित शेष गिना रहे थे तब वह दरवाजे के बाहर खड़ी होकर उन्हें छोटे बच्चों की तरह मुंह चिड़ा रही थी (अतीत०—महादेवी १२३) (÷)

(२) उपहास करना। प्रयोग—मैंने जो आ नये में बुल-बुल का मुंह चिड़ाया (इंशा०—इंशा०, ५८); तू जान बूझ के बार-बार क्यों पूछती है? ऐसे पूछने को तो मुंह चिड़ाना कहते हैं और इसके सिवा मुझे व्यर्थ पाद दिलाकर क्यों दण देती है? (भा० ग्रंथा० (१)—भारतेन्दु, ४२३); मुंह चिड़ाकर न सायं मुंह की हम (बोल०—हरिऔध, ८४); देखिए प्रयोग (१) में (÷) भी।

(३) तुलना में परास्त कर देना। प्रयोग—वह तो आपने हमारे बिगड़े हुए बावुओं की सी बात कही जो पहनावे में,



कमरे की सजावट में, बोली में, चाय और शराब में, बीनी भी प्यालियों में—गरज दिखावे की सभी बातों में तो अंगरेजों को मुंह बिढ़ाने है लेकिन जिन बातों में अंगरेजों को अंगरेज बना दिया है X X उनकी हवा तक नहीं छू जाती है (गहन—प्रेमचंद, ५२)

### मुंह चुराना, — छिपाना

(१) लज्जा के मारे सामने न होना । प्रयोग—पूछें ते तुम बदल दुरावत, मुझे बोल न बोलत (सु० सा०—सुर, ५२७); अगर इस दिन यही तेरी रही तो रतन से मुंह चुराने की नीयत न आवेगी (गहन—प्रेमचंद, ५४) (÷); उसका मन कल्याणी के सामने जाने से मुंह छुपाता था (बुंद०—अ० ना०, २१५)

(२) बचना-कतराना । प्रयोग—वेहि दिन घटके काम, न ता दिन मुलहि दिवावे (राधा० प्रधा०—राधा० टास, ३६); अगर इतनी मदद से एक पुष्क का जीवन सुधर रहा हो, तो कौन ऐसा है, जो मुंह छिपावे (मान० (५)—प्रेमचंद, ६०); कनक मन की उलझन से मुंह चुराने के लिये फिर उसके केशों में कंधी कर गया फोता बांधने लगी (झूठा० (२)—यशपाल, ५३४); सभी को सर्वेयां चाहिए घोर घोड़ा किसी की आंख नहीं लगता । किस-किस से मुंह चुरावेगी (मान० (१)—प्रेमचंद, २५); देखिए प्रयोग (१) में (÷) भी ।

### मुंह छिपाना

#### दे० मुंह चुराना

#### मुंह ज़रा सा निकल आना

अत्यंत रुजित होना । प्रयोग—दरोगा का मुंह ज़रा सा निकल आया (गोदान—प्रेमचंद, ११६)

(समा० मुहा०—मुंह ज़रा सा रह जाना)

### मुंह जोहना

#### दे० मुंह चाहना

#### मुंह फुलसना

धक्केलना पूर्वक दूर करना । प्रयोग—मुलगाए उसके मुंह को जो चाहत का नाम ले (ईशा०—ईशा०, ५६)

(समा० मुहा०—मुंह भौंसना)

### मुंह टूट जाना

अवमानित होना; बोलती बंद हो जानी । प्रयोग—वह

पाहता था, सम्पादकीय लेख पढ़कर तहलका मच जाय, कलब के विरोधियों के मुंह टूट जाय (शेखर (१)—अज्ञेय, २१५); जब कि मुंहतोड़ वा जबाब गये तब भला क्यों न टूट मुंह जाता (चोखे—हरिऔध, १५४)

### मुंह टेढ़ा होना

घसमुष्ट या रुष्ट होना । प्रयोग—जो वापस छाए तो सभी के मुंह टेढ़े थे (सु० सु०—सुदर्शन, २०९)

### मुंह डालना

खाने के लिए किसी पात्र में मुंह देना । प्रयोग—लाखागृह पांडवनि उबारें, साक पत्र मूल नाए (सु० सा०—सुर, ३१)

### मुंह ताकते रह जाना

(१) कुछ न कर सकना; विवश होना । प्रयोग—जम के दूत उसे सेतो ही से उठवा ले जाते हैं यह बेचारे उनके मुंह की तकते ही रह जाते हैं (गु० नि०—वा० गु०, ६२७); बहुधा देखा जाता है बड़े से बड़े कुलीन धरानेवाले इससे बंचित रह मुंह ताका करते हैं (मट्ट नि०—वा० मट्ट, १७५)

(२) निराश रह जाना । प्रयोग—एक हजार प्रेम्ण्टों से कम उम्मेदवार न थे, लेकिन सब मुंह तकते रह गये (मान० (४)—प्रेमचंद, २५०) (÷)

(३) बिना लाभ के रह जाना । प्रयोग—देखिए प्रयोग (१) में (÷) ।

### मुंह ताकना

#### दे० मुंह चाहना

#### मुंह तोड़ देना

कड़ा दंड देना । प्रयोग—मुनी तो, ऐसी का मुंह तोड़ने के लिए मैं ही काफी हूं (गोदान—प्रेमचंद, ४९); सब मुंह तोड़ा तुमने उस बेहूदी घोरत का (झूठा० (२)—यशपाल, ३३९); दो हमें मरहूम कर, मुंह तोड़ दो (बोल०—हरिऔध, १६४)

### मुंह धामना

बोलने न देना । प्रयोग—कोई किसी का मुंह नहीं रोक लेता (बीने०—रा० रा०, १९५); लोक व्यवहार की दृष्टि से बचने बचाने के लिए इष्ट यही है कि हम दुष्टों का हाथ



मुंह चुबाना

६०१

मुंह न खोल सकना

घामे और घुटों का मुंह (बिता० (१)—शुक्ल, ६४)

(समा० मुहा०—मुंह रोकना)

**मुंह धुधाना**

मुंह फुलाना। प्रयोग—मिर हिलाकर, मुंह घुधाकर, नाक भी बढ़ाकर, आंखें फिराकर लगे कहने × × (इंशा०—इंशा०, ८९)

(समा० मुहा०—मुंह धुधराना)

**मुंह-दर-मुंह कहना**

(१) सामने कहना। प्रयोग—मेरे लिए अब यही अंतिम उपाय है कि उस शैतान के मिर पर सवार हो जाऊँ और उससे मुंह-दर-मुंह बातें करके इस समस्या की तड़तक पहुँचने की चेष्टा करूँ (मान० (२)—प्रेमचंद, २०)

(२) मुंह-तोड़ जवाब देना।

**मुंह दिखाना**

सामने आना; उपस्थित होना। प्रयोग—जो तो सों हो तो मेरो हेतु हिया रे। तौ क्यों बदन देखावतो कहि बचन इयारे (पिनय०—तुलसी, ३३); क्यों वह मुंह दिखलाता है जो जन घाँवों में गड़ा (मर्म०—हरिऔध, २५)

(२) सामना करना; इस लायक बनना कि नज़िज़त न होना पड़े। प्रयोग—हमारे यहाँ किसी तरह का इगल फसल नहीं है बाबू साहब। × × मालिक को भी एक दिन मुंह दिखाना है बाबूजी (गवर्न—प्रेमचंद, ५७); देखते लोग हैं हमारा मुंह मुंह दिखाते हमें नहीं बनता (चुमते०—हरिऔध, ६०)

**मुंह दिखाने लायक न रहना**

ऐसी स्थिति में पड़ जाना कि दूसरों का सामना न किया जा सके। प्रयोग—तुलसिदास प्रभु बिनु जीवत रहि क्यों फिर बदन देखावोनी? (गीता० (बाल)—तुलसी, ६); जो बिना गिने ले लिए होते तो आज तो हम कहीं मुंह दिखाने के न रहते (बोने०—रा० रा०, १६०); धर्म को तो मुंह दिखाने योग्य, रख मुझे ओ भाग्य के फल भोग्य (साकेल—गुप्त, १९१); तू चाहती है कि हम कहीं मुंह दिखाने के लायक न रहें (रंग० (१)—प्रेमचंद, ५०)

(समा० मुहा०—मुंह दिखाने लायक न छोड़ना)

**मुंह देखकर**

स्वाल या भरोसा करके। प्रयोग—मैंने तुम्हारा ही मुंह

देखकर बिबाह किया है, तुम्हारे पिता की तौद देखकर नहीं (कुली०—मिरासा, २६); मब दिनों मुंह देखा जीबट का जिए सात अब कायरपने की क्यों रहें (चुमते०—हरिऔध, १०)

**मुंह देखकर जीना**

अत्यंत प्रेम करना। प्रयोग—घाज वे हैं जान के ग्राहक बने मुंह हमारा देख जो जीते रहे (चुमते०—हरिऔध, ८२)

**मुंह देख कर थोड़ा देना**

जो जैसा हो उसके साथ वैसा ही व्यवहार करना। प्रयोग—धनिया बोली—मुंह देखकर बीड़ा दिया जाता है, जानते हो कि नहीं (गौदान—प्रेमचंद, २६६)

**मुंह देखना**

दे० मुंह चाहना

**मुंह देखे का**

जो हार्दिक न हो, केवल ऊपरी दिखावा हो। प्रयोग—स्वारस लोभी मुंह देखे की हमलों प्रीति करी (भा० घं० (२)—मारतेन्दु, २७३); मैं समझ गयी, तुम मुझसे मुंहजबल नहीं करते। केवल मुंहदेखे की प्रीति करते हो (गवर्न—प्रेमचंद, ९०)

**मुंह देना**

(१) मिर बढ़ाना। प्रयोग—कबहुँ बालक मुंह न दीजिये, मुंह न दीजिये नारो। जोइ मन करें सोइ करि डारै, मुंह चढ़त है भारी (सू० सा०—सूर, २१३६)

(२) जानवरों का खाने के बर्तन में मुंह डालना।

**मुंह धो रखना**

किसी पदार्थ की प्राप्ति की घोर से निराश हो जाना। प्रयोग—मुंह धो रखिए, उसकी मोटरें जफतारों के लिए रिजब है (मान० (४)—प्रेमचंद, ७६); तुम्हें भौंपड़ा न मिलेगा। समझते होमें दोनों दुकानें मिलाकर महल लड़ा कर लूँगा इससे मुंह धो रखो (सू० सू०—सुदर्शन, ५७)

(समा० मुहा०—मुंह धो लेना)

**मुंह न खोल सकना**

(१) जोर न पकड़ना। प्रयोग—यहाँ में मौजूद था घोर कुत्ता की मुंह न खोलने देता था पर वहाँ तुम धकेली



रहोगी और कुत्सा को मनमाने आरोप करने का अवसर मिलता रहेगा (मान० (१)—प्रेमचंद, १९०)

(२) कुछ कह न सकना ।

### मुंह न दिखाना

(१) सामना न करना; लज्जित होना । प्रयोग—सोकनि मुल दिखाइ नहि सके (नंद ग्रंथा०—नंद०, २६९); इस मनोवेग के मारे लोग सिर ऊंचा नहीं करते, मुंह नहीं दिखाते (चिता० (१)—शुक्ल, ५६); हमेशा के लिए वह सब की छाछों से गिर जायेंगे, किसी को मुंह न दिखा सकेंगे (ग़वन—प्रेमचंद, २३८); मानाइहन इतने दुखी थे कि किसी को अपना मुंह तक न दिखाते थे (सुहाग०—अ० ना०, १३३)

(२) सामने न आना । प्रयोग—मंगल होता सदा धर्मगल मुख न दिखाता (वैदेही०—हरिऔध, ९)

### मुंह न देखना

परवाह न करनी । प्रयोग—इस समय दस-पांच रुपये का मुंह न देखना चाहिए (मान० (४)—प्रेमचंद, ७५-७६)

### मुंह न होना

(१) योग्यता या लाभकियत न होनी । प्रयोग—है तुम्हारा न मुंह कि संभलोगे मुंह तनिक देख आइने में लो (चुमते०—हरिऔध, ९५)

(२) छेद न होना (फोड़े आदि में) ।

(३) बोल न पाना ।

### मुंह निकल आना

(१) चेहरा उतर जाना । प्रयोग—जुगनू का मुंह उस कालिमा में बिलकुल जरा सा निकल आया (मान० (१)—प्रेमचंद, २७९)

(२) दुर्बल हो जाना ।

### मुंह नोच लेना

(१) खेद प्रगट करना । प्रयोग—मुंह दिखाते अगर नहीं बनता क्यों न तो बारबार मुंह नोचें (बोल०—हरिऔध, ८२)

(२) उचित दंड देना ।

(३) अच्छा जवाब देना ।

### मुंह पकड़ना

बोलने में बाधा देनी । प्रयोग—काकी काकी मुख माई बातनि की गड़िर्व (सु० सा०—सुर, २३५२)

### मुंह पर

सामने, प्रत्यक्ष । प्रयोग—आपके टुकड़ों पर पनने वाले आपके मुंह पर आपका अपमान कर रहे हैं और आप हंस रहे हैं (भुले०—मग० वर्मा, १६)

### मुंह पर आना

(१) कहने की प्रवृत्ति होनी । प्रयोग—जब कि नीरस बात मुंह पर आ गई किस तरह रस-धार तब जी में अहे (चोले०—हरिऔध, ४५)

(२) उमट कर जवाब देना ।

### मुंह पर कहना

उपस्थिति में कहना । प्रयोग—मैं उनके मुंह पर कह सकता हूं (झांसी—वृ० वर्मा, ४००); सच्ची बात मुंह पर कह सकते हैं, इसीलिए किसी की पटरी नहीं खाती (परती०—रेणु, ८७); वह, कोई मुंह पर न कहे, लेकिन सब धुड़ी-धड़ी करते हैं (रंग० (२)—प्रेमचंद, २३६)

### मुंह पर कालिख पोतना

कर्त्तव्य या अपमानित करना । प्रयोग—मान लो कि पेशवा की सेना न आती तो क्या हमलोग हथियार डालकर झांसी के मुंह पर कालिख पोतते ? (झांसी०—वृ० वर्मा, ३९५); जिन बातों को छिपाने की उसने इतने दिनों की चेष्टा की × × उन सबों ने आज मानों उसके मुंह पर कालिख पोत दी (ग़वन—प्रेमचंद, १३१)

(समा० मुहा०—मुंह पर कालिख लगाना)

### मुंह पर खड़ा होना

बहुत पास आकर खड़ा होना । प्रयोग—एक तो हुवा यों ही कम थी, दूसरे उस गंवार का आकर मेरे मुंह पर खड़ा हो जाना मानों मेरा गला दबाना था (मान० (१)—प्रेमचंद, १११)

### मुंह पर चांटा लगाना

अपने किये बुरे कर्म का फल पाना; अपमानित होना । प्रयोग—लगे मुंह में जिन से चांटे, बोलियां क्यों ऐसी बोलें (मर्म०—हरिऔध, ७३)



मुँह पर चूना पोतना

६०३

मुँह पर रखना

**मुँह पर चूना पोतना**

अपमानित करना। प्रयोग—क्यों री गेरिखनायकी, तेरी बेंटी आज मासातुवान और मानाइन के जमाई के मुँह पर चूना पोत आई, मुना है ! (सुहाग०—अ० ना०, १६)

**मुँह पर भाड़ू फिरना**

अपमान आदि के कारण चेहरा उतर जाना। प्रयोग—दारोगाजी के मुँह पर भाड़ू सी फिरी हुई थी (गोदान—प्रेमचंद, ११७)

**मुँह पर भाड़ू मारना**

अपमान करना। प्रयोग—दूसरी होती, तो तुम्हारे मुँह पर भाड़ू मारकर निकल गई होती (गोदान—प्रेमचंद, २५५)

**मुँह पर तमाचा खाना**

अपमानित, लांछित होना। प्रयोग—नाच हमने न कौन सा नाचा। कब तमाचा न खा लिया मुँह पर (चुभते०—हरिऔध, ६०)

**मुँह पर तमाचा मारकर**

(१) निर्विवाद प्रमाणित करके। प्रयोग—पर उस बात के लिए झूठ क्या बोलूँ जिसे मेरे मुँह पर तमाचे मारकर एक से अधिक जन सिद्ध कर सकते हैं (ये कोठे०—अ० ना०, ११)

(२) मुँह-तोड़ जवाब देकर।

**मुँह पर ताला जड़ना,—डालना,—देना,—पड़ना,—मुहर लगना या लगाना**

कुछ बोल न पाना या बोलने न देना। प्रयोग—इसी भय से अपने मुँह पर मुहर देकर मैं चुप रह गया (राधा०—अ० स०, १७२); प्रत्येक मनुष्य शपथ खाने पर तैयार था कि रूपचंद सर्वथा निर्दोष है, प्रेम ने उसके मुँह पर ताला लगा दिया है (मान० (८)—प्रेमचंद, ४६); मेरे मुँह पर ताला डाल दिया गया है, लेकिन क्या कलं बिना बोले रहा नहीं जाता (मान० (७)—प्रेमचंद, ५७); जब सरकारी वकील ने प्रश्न किया कि तुम जानती हो कि हिज हाइनेस भी इस साजिश में थे, तब किसी अतर्क्य शक्ति ने मेरे मुँह पर ताला जड़ दिया (गोली—चतुर०, २४९); पी लेने पर तो जाएगा पड़ उसके मुँह पर ताला (मधु०—वचन, पद, २४); मैं पूछती

हूँ, क्या ये सब मुँह पर मुहर लगाये रहती थीं ? (शांसी०—पू० वर्मा, २६); आज किसके मुँह में ताला लगावे लुत्तो ? (परती०—रेणु, ३७); स्त्रियोचित लज्जा ने उसके मुख पर ताला डाल दिया (मिता०—कौशिक, १०२); खुल सके तो किस तरह में खुल सके जब किसी मुँह में लगा ताला रहा (चुभते०—हरिऔध, ६८)

**मुँह पर ताला डालना**

दे० मुँह पर ताला जड़ना

**मुँह पर ताला देना**

दे० मुँह पर ताला जड़ना

**मुँह पर ताला पड़ना**

दे० मुँह पर ताला जड़ना

**मुँह पर धप्पड़ खाना**

(१) अपमानित होना। प्रयोग—जीभ संभारि न बोलते हैं मुँह चाहत क्यों अब खावो थपेरे (घन० कवित्त—घना०, १९९) (÷); किस तरह मुँह है दिखाते बन रहा क्या थपेड़े हैं नहीं मुँह पर लगे (बोल०—हरिऔध, १६५)

(२) चाँटा मारा जाना। प्रयोग—देखिए प्रयोग (१) में (÷)

**मुँह पर धूँक देना**

अत्यन्त उपेक्षा या अपमान करना। प्रयोग—मुझको कभी चुकते पाओ तो मेरे मुँह पर धूँक देना (शांसी०—पू० वर्मा, २१२); मुँह छिया लेवें, मगर मुँह पर भला धूँकने वाले न कैसे चुकते (चुभते०—हरिऔध, ८७)

**मुँह पर फटकार बरसना**

चेहरे पर हवाइयाँ उड़नी। प्रयोग—घौर चारों सज्जनों के मुँह पर फटकार बरस रही थी (गोदान—प्रेमचंद, ११८)

**मुँह पर बड़ाई करना**

किसी की उपस्थिति में उसकी तारीफ करनी। प्रयोग—तबि लघु बंधू बूढ़ि सजुवाई करत वदन पर भरत बड़ाई (राम० (अ)—तुलसी, ६१८)

**मुँह पर मुहर लगाना या लगाना**

दे० मुँह पर ताला जड़ना

**मुँह पर रखना**

(१) कहना, जपना। प्रयोग—हरि के नाँव गहर निमि करऊँ, राम नाम चित मुखा न धरऊँ (कबीरग्रंथा०—



मुंह पर रहना या होना

६०४

मुंह फाड़ कर कहना

कवोर, १२२); जिस "आप" को आप छपने लिए तथा घोरों के प्रति दिन रात मुंह पर धरे रहते हैं, वह आप क्या है (प्र० पी०—प्र० ना० मि०, ४३)

(२) दे देना (ओष से) ।

(३) खाना ।

(४) चाँटा मारना ।

**मुंह पर रहना या होना**

हर समय चर्चा करना । प्रयोग—देवकांत के मुख पर तो सदा भारतमाता का नाम रहता है (ब्रह्म०—दे०स०, २१०)

**मुंह पर लाना**

(१) मुंह से कहना । प्रयोग—बात-बात में दरोघा जी यही बोल मुंह पर लायेंगे—जेल तुम्हारी राह देख रही है (ब्रह्म०—दे०स०, ११७); वह अपने दिए पैसे घोर लिए ऐसे भूलता नहीं था, पर ऐसी बात कभी मुंह पर नहीं लाता था (सुनीता—जेनेन्द्र, ६); आज ये बातें मुंह पर नहीं लाई जा सकती (सुभते० (मु)—हरिओध, २)

(२) सामने कहना । प्रयोग—किसी का मुंह जो यह बात हमारे मुंह पर लावे (इंशा०—इंशा०, ९९); हमें निश्चय है कि आप पानीदार होंगे तो इस बात के उठते ही पानी पानी हो जायेंगे और फिर कभी वह शब्द मुंह पर भी न लायेंगे (प्र० पी०—प्र० ना० मि०, ४५)

**मुंह पर स्याही पुत जाना या पोतना**

अपमानित या कलंकित होना या करना । प्रयोग—कुमुदिनि तू बेरिनि नहीं घाई । मुंह मसि बोलि चढ़ावै भाई (पद०—जायसी, ४५१५); बंग-साहित्य के मुंह पर इससे स्याही फिरती है या नहीं ? (गु० नि०—वा० मु० गु०, ५४६); और-घोर तरह की भावनाएं उसमें होती तो वह तुम्हारे भाई की समुरालबालों के सगर्व मुखों पर अच्छी तरह स्याही पोतकर अब तक चली गई होती, ममशे ? (लिली—निराला, २५); अभी तक तो बात छिपी हुई है । लेकिन अगर किसी दिन खुल गई तो मेरे मुंह पर स्याही पुत जायेगी (सिद्ध०—ल० मिश्र, ६)

**मुंह पर हवाई उड़ना**

बेहरे से पबराहट प्रगट होना । प्रयोग—निश्चय भयो भविष्य वाक्य की, मुंह पर उड़ी हवाई (राधा० प्रथा०—

राधा० दास, २३); उसके मुख पर हवाईयां उड़ रही थी (गद्यन—प्रेमचंद, ६९); जब हवा घाप हो गये हम तो कपों न मुंह पर हवाईयां उड़ती (सुभते०—हरिओध, ३९)

**मुंह पाट होके पड़ना**

मुंह छिपाकर, ओपे पड़ना । प्रयोग—इसीलिए मैं मारे लाज के मुख पाट होके पड़ा था (इंशा०—इंशा०, ९६)

**मुंह पाना**

(१) रुख देखना । प्रयोग—निदरे रहति, डरति नहीं काहूँ, मुंह पाएँ वह कृतति है (सु०सा०—सूर, १८५७)

(२) सम्मति पाना ।

**मुंह पिटाना**

(१) बुरी दशा होनी । प्रयोग—बेबसों को सपेट चित पट कर पालना पेट मुंह पिटाना है (चोखे०—हरिओध, २३)

(२) चूस्ने भाड़ में जाना ।

**मुंह पीला पड़ना**

(१) उदास होना । प्रयोग—पियरे बदन दुख हिमरे समाइ रह्यो, कुजन में भयो न मिलाप गिरधर को (मति० मक०—मतिराम, ११३) (÷)

(२) जय या लज्जा के कारण मुंह श्रीहीन होना । प्रयोग—तमक तें लाल मुख सिवा को निरखि भए स्याहमुख नोरंग सिवाह-मुख पियरे (भूषण ग्रंथा०—भूषण, २१५); स्वेतांक का मुंह पीला पड़ गया (चित्र०—भग० वर्मा, २६) देखिए प्रयोग (१) में (÷) भी ।

(३) घबरा जाना । प्रयोग—चित्रलेखा का मुख एक क्षण के लिए पीला पड़ गया पर उसने संभल कर उत्तर दिया (चित्र०—भग० वर्मा, ३५)

**मुंह फाड़कर कहना**

(१) बेहया बनकर जवान पर लाना । प्रयोग—आपने मुझे सी सी रूप से खोला और बहुत सा टटोला तब तो लाज छोड़ करके हाथ जोड़ के मुंह फाड़ के चिन्तिया के यह लिखता हूँ (इंशा०—इंशा०, ९७)

(२) कहना । प्रयोग—अरे तुमसे मुंह फाड़कर नहीं कहा गया x x (घरती०—वि० प्र०, ३५)



### मुंह फाड़ देना

पराजय स्वीकार कर लेना, दीन हो जाना। प्रयोग—  
संगीन देखते ही मुंह फाड़ देते हैं और पैर पकड़ने लगते हैं  
(गु० कहा०—गुलैरी, ५०)

### मुंह फाड़ना

(१) घ्रातचर्य से देखना। प्रयोग—हर्षदेव पागल की भांति  
मुंह फाड़कर देखते रह गए (वंशालो० (१)—चतु०, ४३)

(२) बहुत अधिक मांग करना।

(३) प्रसन्नता से बोलना।

### मुंह फिरना

(१) विमुख होना। प्रयोग—मुंह गिरे मुंह गिरे हमास  
क्यों मुंह फिरे मुंह न फेर लेवें हम (बोल०—हरिऔध, ८४)

(२) लकवा मार जाना।

### मुंह फीका करना या होना

(१) असंतुष्ट होना। प्रयोग—आंसुनि भीजि, पसीजि  
हियो, छवि शोभन छीजि, भयो मुख फीको (शब्द०—देव,  
११४) (÷); महतो लड़का देखने आते हैं पर घर की दशा  
देखकर मुंह फीका करके चले जाते हैं (गोदान—प्रेमचंद,  
२८); फल चखे फीका व फीकी बात कह कौन सा मुंह  
हो गया फीका नहीं (बोल०—हरिऔध, ८६)

(२) उदास होना। प्रयोग—बारी बहू मूरझानी बिलोकि  
जिठानी करे उपचार किती को त्यो पद्माकर ऊँचो उतास  
लखे मुख सास को हँस रह्यो फीको (जग०—पद्माकर, २४);  
देखिये प्रयोग (१) में (÷) भी।

### मुंह फुलाकर बैठना,—फुलाना,—सुजाना

रुष्ट होना, आकृति से असंतोष या अप्रसन्नता प्रकट होनी।  
प्रयोग—माँ अलग मुंह फुलाये बैठी थी, स्त्री अलग (मान०  
(१)—प्रेमचंद, १५३); कारिन्दा साहब नजर के लिए मुंह  
फुलाये (गोदान—प्रेमचंद, २६); मेलादेई ने पूछा—कुड़िये  
(अरी लड़की) हुआ क्या? ऊपर मुंह सुजाये बैठी है  
(छठा० (१)—यशपाल, ७२)

### मुंह फुलाना

### दे० मुंह फुलाकर बैठना

### मुंह फूलना

(१) कोय घाना। प्रयोग—मुंह अगर फूलता किसी का  
है क्यों नहीं फूल तो झट्टे मुंह से (बोल०—हरिऔध, ८३)  
(÷)

(२) असंतुष्ट होना। प्रयोग—मुंह है कि हर बक्त सूजा  
हुआ। आखिर कुछ समय में भी तो धाये (कल्याणी—  
जेनेन्द्र, १२१); देखिये प्रयोग (१) में (÷) भी।

### मुंह फेरना

विरक्त होना। प्रयोग—आज तुम्हारी ओर से मुंह फेरते  
हुए छाती दो टुक हुई जा रही है (शिलो—निराला, ९४)

(१) मुंह घुमा कर देखना। प्रयोग—राखी मोहि नात  
जननी की, मदन गुपाल लाल मुख फेरो (सू० सा०—सूर,  
३६०८)

(२) रुख बदलना। प्रयोग—आज तुमने मेरे हृदय स्रोत  
का मुंह फेर दिया (सौ०—द्र० स०, ९९)

(४) विमुख होना। प्रयोग—जानकी रमन मेरे! राखे  
बदन फेरे, ठाउँ न समाउ कहाँ सकल निरपने (कवि०—  
तुलसी, १५१); नैननि काननि मोहीं सदा धन धानंद औरनि  
सों मुख फेरे (धन० कवित्त—धना०, १६६); 'दास' लेत मुख  
फेरि देखि कुछ लै यह मांगि न (राधा० ग्रंथा०—राधा० दास,  
५२); सुख में पा आकर चेहरे, संकट में अब मुंह फेर  
(साकेत—गुप्त, १००); अगर वह यह समझे कि शोकार नाथ  
दयाव या भय था मूलाह्वे में आकर अपने कर्तव्य से मुंह  
फेर लेंगे तो यह उनका भ्रम है (गोदान—प्रेमचंद, १७६)

(५) खाना। प्रयोग—घोड़े घास पर मुंह फेरने लगे  
(मृग०—वृ० वर्मा, १५३)

(६) साथ पदार्थ का खराब हो जाना, दुर्गन्ध आ जाना।

### मुंह फैलाना

(१) बड़ी मांग करनी। प्रयोग—भूठ मत बोलो पंडित,  
मैं दो आदमियों को फांस फूस कर लाया मगर तुम मुंह  
फैलाने लगे (गोदान—प्रेमचंद, २५१); मांगने के लिये न मुंह  
फैले मर मिटे पर न हाथ फैलाये (बोले०—हरिऔध, १३४)

(२) बहुत इच्छुक होना। प्रयोग—यहाँ के बड़े-बड़े रईस  
हम से नाता करने को मुंह फैलाये हुए थे (मान० (२)—  
प्रेमचंद, २७४)



### मुँह बन्द कर लेना

मुँह न बोलना । प्रयोग—बन्द तब तक न मुँह कर अपना साँस जब तक न बन्द हो जाये (चुभते०—हरिऔध, ४१)

### मुँह बन्द करना

(१) किसी को बोलने में परास्त कर देना । प्रयोग—बंद होगा न घास का आँसू । आप मुँह बन्द कर भले ही दें (चुभते०—हरिऔध, १४)

(२) किसी बात को छिपाने के लिए प्रेरित करना । प्रयोग—इस दुष्ट संपादक ने मुझे बुरा चरका दिया × × मैं इसका मुँह बंद रखने के लिए, इसे प्रसन्न रखने के लिये, कितने गलत किया करता हूँ × × इन सब खातिर-चारियों का यह उपहार है ! (रंग० (१)—प्रेमचंद, २७८)

(३) बदनामी की बात को कहने न देना । प्रयोग—वह तो अब तभी घर आयेगा जब वह पैसे के बल से सारे गाँव का मुँह बंद कर सके (गोदान—प्रेमचंद, १३७)

### मुँह बजाना

बड़-बड़ बर बातें करनी; गाल बजाना । प्रयोग—काम बाजों का रहा तब कौन सा मुँह बजाने से अगर बजता रहा (बोल०—हरिऔध, ८५)

### मुँह घनना

(१) चेहरे से असंतोष प्रगट होना । प्रयोग—मुँह बना देख मुँह बनाये क्यों (बोल०—हरिऔध, ८४)

(२) शर्मिन्दा होना ।

### मुँह बनाना

(१) रुष्ट होना । प्रयोग—आप तो बेसबब जरा-जरा सी बातों पर मुँह बनाएँ × × और दूसरे को वाजबी बात कहने का भी अधिकार न हो (परीक्षा०—श्री० दास, १२५); वृ इत बंटी बदन बनाए उत वह विकल विचारो (भा० प्रथा०—भारतेन्दु, ८४)

(२) किसी अप्रिय या अनुचित बात पर चेहरे से असंतोष प्रगट करना । प्रयोग—मुँह बना देख मुँह बनाये क्यों (बोल०—हरिऔध, ८४)

(३) तुच्छ समझना ।

### मुँह बा कर रह जाना

(१) पछताते हुए रह जाना । प्रयोग—फिर पछिताए कछु नाँह हँहें रहि जँहो मुँह बाई (भा० प्रथा० (१)—भारतेन्दु, ४९१)

(२) शरमा जाना ।

(३) चकित हो जाना ।

### मुँह बाना

लेने की इच्छा होनी । प्रयोग—जब गई बीरता बिदा हो तब क्या रहे बार बार मुँह बाते (चुभते०—हरिऔध, ९४)

### मुँह बाये होना

(१) इच्छुक या उत्कण्ठित होना । प्रयोग—क्या मुझे लड़कियाँ नहीं जुड़ती जो ऐसा करूँ । न जाने कितने जमींदार मुँह बाये फिरते हैं (मिसा०—कौशिक, ४३)

(२) सामने प्रस्तुत होना ।

### मुँह बिगाड़ना

मुँह बनाना (उपेक्षापूर्वक) । प्रयोग—उन्होंने मुँह बिगाड़कर कहा—गर्मी (कुल्ली०—निराला, १३०); मुँह बिगाड़कर न लाय मुँह की हम मुँह बिगाड़ें न मुँह बना करके (बोल०—हरिऔध, ८४)

### मुँह बिचकाना

(१) घृणा या असंतोष प्रगट करना । प्रयोग—सिन्धु तरंगें पक सनी टांगों से बहती धरा योनि की दुर्गन्ध धो-धो कर कड़वाती मुँह बिचकाती पछाड़ खाती रहती है (कला०—पंत, ८१)

(२) उपेक्षा करनी ।

### मुँह भर

भरपूर; भली भाँति । प्रयोग—कैकयी जोखी जियति रही । तीनों बात मानु सों मुँह भरि भरत न भूलि कही (गीता० (सु०)—तुलसी, ३७)

### मुँह भर के पाना

अच्छी तरह अपमानित होना । प्रयोग—तौर बिगड़े कीर मुँह का छिन गया पेट भर पाया न, मुँह भर पा गये (बोल०—हरिऔध, २१८)

### मुँह भर बोलना

अच्छी तरह बातें करना । प्रयोग—आपका मुँह ताकते ही



रह गये। आप तो मुंह भर कभी बोले नहीं (बोले—हरिऔध, ४३)

### मुंह भारी करना या होना

मुंह फुलाना; असंतोष प्रगट करना। प्रयोग—सो तो मैं जानता हूँ—कह कर श्री रामचन्द्र ने मुंह भारी कर लिया (कंकाल—प्रसाद, १४); गोकुल प्रसाद ने देखा—पत्नी का मुंह भारी है (सा—कौशिक, २३९)

### मुंह मलना

निरादर करना, अनिष्ट करना। प्रयोग—मल किसी का मुंह न कोई मुंह खिले (बोलो—हरिऔध, ८४)

### मुंह मारना

(१) किसी पशु का खेत में से दो चार गाल खाने के लिए मुंह लगाना। प्रयोग—मैंने सोचा कि दूसरों की क्यारियों में मुंह मारने की आज्ञा देने की अपेक्षा मन के इस उहड़ पशु को अपनी एक निज की क्यारी बना दूँ (चेतन—अश्व, २१२); उनमें से कोई लल भाड़ी चुपके से लेता मुंह मार (नू—मक्त, ११)

(२) सुस्वादु भोजन को जल्दी-जल्दी खेर सा खाना।

(३) किसी वस्तु को लेने की इच्छा होनी।

### मुंह मीठा करना या कराना

(१) किसी शुभ अवसर पर मिठाई खिलायी। प्रयोग—चलो वार, तुम्हें बाजार की गैर करा दें, मुंह मीठा करा दें (मान० (८)—प्रेमचंद, ८४); चलो मेरे घर, तुम्हारा मुंह मीठा कराऊँ (अपनी खबर—उग्र, ८१); चाची आज हमारा मुंह मीठा कराओ आज बड़ा शुभ समाचार लाया हूँ (मिखा०—कौशिक, ६६)

### मुंह मीठा होना

(१) प्रिय वचन बोलना। प्रयोग—मुंह मीठा मन विष भरा, रहे कपट के हत (प्रेम सा०—ल० ला०, ९२)

(२) मिठाई मिलनी।

(३) लाभ होना।

### मुंह मुरझाना

चेहरे पर उदासी झलकनी। प्रयोग—रहस्य समझने के बाद मेरा मुख मुरझा गया (बाण०—ह० प्र० द्वि०, १००)

### मुंह मूंदना

बोलने न देना। प्रयोग—जो चले हो जाति का मुंह मूंदने। दांत ताटू में तुम्हारे तो बसा (चुभते०—हरिऔध, ९५)

### मुंह में और पेट में और होना

कहना कुछ पर नियत कुछ दूसरी ही होनी। प्रयोग—मुख कह आन पेट बस आना। तेहि औगुन दस हाट बिकाना (पद०—जायसी, ८३)

### मुंह में उत्तर न आना,—बात न आना

कुछ कह न पाना। प्रयोग—भए बिकल मुख आव न बाता (राम० (बाल)—तुलसी, ८५); उत्तर मुख छापो नहीं जल भरि आयो नैन (केशव० (२)—केशव, ३९५)

### मुंह में काजल लगाना या लगाना,—कालिख पुतना या पोतना,—कालिख लगाना या लगाना, स्याही लगाना या लगाना

कलकित होना या करना। प्रयोग—सोइ मूरता कि अब कहूं पाई। अमि वृचि तो बिचि मुहं मसि नार्द (राम० (बाल०)—तुलसी, २७३); जगदम्बा जानकी जगतपितु रामचन्द्र, जानि निय जोहो, जो न लगे मुंह कारिखी (कवि०—तुलसी, १४); जाय वह मुंह तुरंत जल, जिस में गा बुरी कजलिया लगे काजल (चुभते०—हरिऔध, १३५); पुत सियाही जाय क्यों मुंह में किसी चाहिए मुंह में रहे चंदन लगा (बोल०—हरिऔध, ८३); जालपा ने तीव्र स्वर में कहा—X X वहाँ किसके मुंह में कालिख लगती? (गवन—प्रेमचंद, ४५); गोबर ने तो मुंह में कालिख लगा दी, उसकी करनी क्या पूछते हो (गोदान—प्रेमचंद, १२२); लगा किसके मुंह में चंदन, किसी मुंह में कालिख पोते? (मर्म०—हरिऔध, ६९); यहाँ तो घर भर की लौड़ी हूँ, सारी दुनियाँ मुंह में कालिख पोतने की तैयार (निर्मला—प्रेमचंद, ७६)

### मुंह में कालिख पुतना या पोतना

दे० मुंह में काजल लगाना या लगाना

मुंह में कालिख लगाना या लगाना

दे० मुंह में काजल लगाना या लगाना

### मुंह में खाक पड़ना,—छाई पड़ना

तुच्छ समझना। प्रयोग—“भारतोदय” गया और हमेशा के लिए गया। गुरुद्वय के ग्राह के मुंह में खाक पड़े (पद्म०



मुंह में घी-शक्कर होना

६०८

मुंह में मक्खी जाना

के पत्र—पद्म० शर्मा, २३७); छल किए छाती न कब छलनी बनी मुंह छिले मुंह में न कब छापी पड़े (बोल०—हरिऔध, ८७)

(समा० मुहा०—मुंह में खाक देना)

मुंह में घी-शक्कर होना

अनुकूल या अपने मन की बात किसी से सुनने पर प्रसन्न होकर उसको साधुवाद देने के भाव से ऐसा कहा जाता है। प्रयोग—रवीन्द्रनाथ—“आपके मुंह में घी-शक्कर × × अच्छा अब तो इजाजत दीजिए” (पैतरे—अश्वक, १५१); मुलोचना—“तेरे मुंह में घी-शक्कर। अब तो मुझ नसीब-जली का सहारा नू ही है” (सा—कौशिक, २३७)

(समा० मुहा०—मुंह में गुड़-घी होना)

मुंह में चंदन लगाना

सम्मान मिलना। प्रयोग—लगा किसके मुंह में चंदन, किसी मुंह में कातिल पोते? (मर्म०—हरिऔध, ६९)

मुंह में छाई पड़ना

दे० मुंह में खाक पड़ना

मुंह में छेद न होना

कहने का साहस न होना। प्रयोग—लोग छोछालेदरों में क्यों पड़े छेद मुंह में क्या किसी के है नहीं (बोले०—हरिऔध, १३३)

मुंह में तुलसी रखकर बात कहना

सत्य और ठीक बात कहनी। प्रयोग—सांची बात सब बोहत ही, मुल में मेले तुलसी (सू० सा०—सूर, ४४०६)

मुंह में दही जमना

कुछ न कहना। प्रयोग—और सोना के मुंह में दही जमा हुआ है वह यहाँ आकर पछतायी (गोदान—प्रेमचंद, ३०४); क्यों सही बातें नहीं जाती कही क्या जमाया है गया मुंह में दही (बोल०—हरिऔध, ८८)

मुंह में दांत न होना

बड़ापा आना। प्रयोग—किस लिए उस पर गढ़ाये दांत वह दांत मुंह में एक भी जिसके नहीं (बुभुते०—हरिऔध, १६०)

मुंह में दांत होना

सामर्थ्य होना। प्रयोग—इस दो अक्षर (दांत) के शब्द तथा इन थोड़ी सी छोटी-छोटी हड्डियों में भी चतुर कारीगर ने यह कौशल दिखलाया है कि किस के मुंह में

दांत हैं जो पूरा-पूरा बर्गान कर सके (प्र० पी०—प्र० ना० नि०, ७२)

मुंह में धूल डालना,—पड़ना

बाज आना। प्रयोग—रावि पराई रापता, लाया घर का खेत। औरों की प्रसोधता मुल में पड़िया रेत (कवीर ग्रंथा०—कवीर, ३७); जरासिधू, सिमृपाल-स्वाल मुल धूरि जु परिहू (नंद०ग्रंथा०—नंद०, १८२); जो न जगति पिय मिलन की, धूरि मुक्ति-मुह दीन जो लहियें संग सजन, तो धरक नरक हूं की न (बिहारी रत्ना०—बिहारी, ७५); हरीचंद जो याहि न मानें तिनके मुल में खेह (भा० ग्रंथा० (२)—भारतेन्दु, ६८)

मुंह में धूल पड़ना

दे० मुंह में धूल डालना

मुंह में पानी आना,—भरना

खाने को ललचाना। प्रयोग—मां के स्वर से स्पष्ट था कि लौकी देखकर उसके मुंह में पानी आ गया है (झुठा० (१)—यशपाल, २३); पर किसी की अच्छी चीज देखते ही जिनके मुंह में पानी आ जाता है, वे बराबर खरो-खोटी मुना करते हैं (चित्ता० (१)—शुक्ल, ७५); डाली में बड़े अंगूरो को देखकर कलक्टर साहब के मुंह में पानी आ गया (रेशमी०—राम० वमी, ८५); मुंह में पानी भर आया। बोला, चमूंगा क्यों नहीं, यहाँ पड़ा-पड़ा मक्खी ही तो मार रहा हूँ। कै स्पष्ट मिले ? (गोदान—प्रेमचंद, २१८)

(समा० मुहा०—मुंह में पानी छूटना)

मुंह में पानी भरना

दे० मुंह में पानी आना

मुंह में बात आना

कुछ कहने को होना। प्रयोग—क्यों भुला दी आपने, वह काम की बात मुंह में जो अभी आई रही (बोल०—हरिऔध, ८९)

मुंह में बात न आना

दे० मुंह में उत्तर न आना

मुंह में मक्खी जाना

(१) कुछ करने-धरने को न होना। प्रयोग—भाग सराहो कि सहर में हो। किसी गांव में होते, तो मुंह में मक्खियां घाती-जाती (रंग० (१)—प्रेमचंद, ३३)

(२) अत्यंत आलसी होना।



### मुंह में मुंह मिलाना

हां-जी, हां-जी, करना। प्रयोग—उम, मुखिया जो कहने हैं, उन्हीं के मुंह में और लोग भी मुंह मिलाने लगते हैं (राधा०—४० स०, ११७)

### मुंह में राम बगल में छरी होना

दिखाने को साधु पर कपटी होना। प्रयोग—बहुत देखे हैं हाजी और तीर्थ-यात्री। मुंह में राम, बगल में छरी (ब्रह्म०—६० स०, ३२६)

### मुंह में लगाम रखना,—लगाना

अपशब्द कहने से रोकना। प्रयोग—बह हमीदे की बात खींचकर बोला—मुंह में लगाम रख ! (कठ०—६० स०, २५४); अरे, मैं कहता हूं, मुंह में लगाम लगा (धूम०—३० भट्ट, ४४)

### (समा० मुहा०—मुंह में लगाम देना)

### मुंह में लगाम न होना

जो मुंह में आये, कह देना। प्रयोग—जरा या भी मुंह में लगाम नहीं ? (परती०—रैणु, २५९); मगर राजनी गोपाल, जमींदार के मुंह में लगाम नहीं (कला०—उग्र, १२१)

### मुंह में लगाम लगाना

दे० मुंह में लगाम रखना

### मुंह में लस न होना

बोलने में घनिष्ठ होना। प्रयोग—यदुवस के मुंह में लस नहीं है (परती०—रैणु, ५२२)

### मुंह में लाठी लगना

मुंह सूखना। प्रयोग—सुखहि धधर लागि मुंह लाठी (राम० (अ)—तुलसी, ५०८)

### मुंह में स्याही लगाना या लगाना

दे० मुंह में काजल लगाना या लगाना

### मुंह मोड़ना

(१) विमुख होना। प्रयोग—सूरदास प्रभु विछले सेवा, अब न बर्न मुख मोरे (सू० सा०—सूर, ११०६); कृपा जिनकी कछु काज नहीं, अकाज कछु जिनके मुख मोरे (कवि०—तुलसी, १३२); ऊधो सो मुख मोरि कै कहत तिनहि सो बात (नंद० ग्रंथा०—नंद०, १५७); मुख को निहोर्यो नू न मान्यो

सो भली करी ते, 'किसोराइ' की भी प्रब जो तू मुख मोरिहे (केशव०—केशव, ५८); कोऊ मुंह मोरो, जोरो कोटिक चवाई क्यों न, तारी सब कोऊ, करि सोरी मेरे को मुख (घन० कविस—घना०, २१५); रही लोक-वेद घर-बाहर से मुख मोड़ी (भा० ग्रंथा० (२)—भारतेन्दु, १२५); तोरि जगत सो नेह मोरि मुख जगके मुख सो (राधा० ग्रंथा०—राधा० दास, ६); क्या संसार में कोई ऐसी जगह नहीं है X X जहां वह संसार से अलग-थलग सबसे मुंह मोड़कर अपना जीवन काट सके (गवन—प्रेमचंद, १३२); राजसी विभवों से मुंह मोड़, स्वर्ग-दुर्लभ मुख का कर त्याग (देहेही०—हरिऔध, २०);

(२) परास्त करना। प्रयोग—जाया है अबकी बार भी मुल्तान का मुंह मोड़कर खाऊंगा (मृग०—वृ० वर्मा, २५८); मोड़कर मुंह मिजाजवालों का दें मजे हाथ के मजे दिखला (चुमत्ते०—हरिऔध, ९९);

(३) इनकार करना। प्रयोग—काम से मोड़े न मुंह, तोड़े न दम (चुमत्ते०—हरिऔध, ३७); एक तरफ तो बह के लिए कुम्भीपाक नरक है और दूसरी तरफ तुम्हारे जिम्मे थोड़ा सा खर्चा। सो उससे मुंह न मोड़ो (इंस्टा०—भग० वर्मा, ९६)

(४) किनारा मोड़ देना।

### मुंह लंबा करना

धरुवि या असंतोष प्रगट करना। प्रयोग—धमर ने मुंह लंबा करके कहा—चोरी से कोई काम नहीं करना चाहता नैना (कर्म०—प्रेमचंद, ९)

### मुंह लगना

(१) घृष्टता-पूर्वक बातें करनी। प्रयोग—ऐसे ही लोगों का सहारा पाकर कभी-कभी छोटे घादमी मुंशों जो के मुंह लग जाते थे (मान० (८)—प्रेमचंद, १७); यों मुलगी न लाग-आग कभी मुंह-लगे जो न मुंह लगे होते (चोखे०—हरिऔध, २४)

(२) किसी गाने-गीने को बरतु की चाह होनी। प्रयोग—हिन्दुओं के तो मैं मृत से मुंह लगी हूँ (भा० ग्रंथा० (१)—भारतेन्दु, ४८३); जान आलम, धगर उममें मजा न होता तो बादशाहों के मुंह क्यों लगती (मृग०—वृ० वर्मा, २२४)

(३) जवाब-सवाल करना। प्रयोग—सूर कहा धाके मल लागत, कोन याहि धव गारे (सू० सा०—सूर, ४४९३); निव



इसके मूँह मत लगी, यह कविताई में बड़ी पक्की है (भा० प्र० १) — भारतेन्दु, ३७७; मूँह लगता है मेरे ! पतित बनना चाहता है क्या ? (मृग०—वृ० वता, ३३); उमानाथ ने बड़े भाई को डाँटा—आप सामन्तवाह अम्मा के मूँह लगते हैं भाई साहब ! (मान० (१)—प्रेमचंद, ७१)

(४) परच जाना । प्रयोग—तबूबा को वह पैसे, मिठाईयाँ दे दिया करती थी × × इसने वह लौटा उसके मूँह लग गया था (मान० (३)—प्रेमचंद, २१९)

### मूँह लगाना

(१) मिर चढ़ाना; उड़ह बनाना । प्रयोग—सारांश यह है कि स्त्री को मूँह लगाना भी हानिजनक है और तत्त्व समझना भी मंगलकारक नहीं है (प्र० पौ०—प्र० ना० मि०, ८९); मैं कहती हूँ उन्हें घोर क्यों मूँह लगाया जाय ? (विष्ण०—प्रेमी, १४); संप्रज लोग बाबूषों को मूँह नहीं लगाते (रंग० (१)—प्रेमचंद, २६३) (—)

(२) रस देना; परच जाना । प्रयोग—जैसे ही उनि मूँह लगाई, तैनेही ये डरी (सु० सा०—सूर, ३०२२); जा मगदनी ज्यों घोरन ही जूँ लगावत ही मूँह ऐसे न हजै (केशव०—केशव, ७५); तै मूँह लगाई ताने मोहि मोन ही की कथा रसना के उर एकरम रहौ बनि है (छन० कवित्त—छना०, १३१); भाई तुम्हारी क्या मत मारी गई जो तुमने ऐसे पतित को अपने मूँह लगाया और जब उसके दल के सभापति बने (भा० प्र० (१)—भारतेन्दु, ८३३); मैं तो उसे क्यादा मूँह नहीं लगाता (झुठा० (१)—यशपाल, ३०५); कुछ लोग उससे बात किया चाहते थे, पर वह किसी को मूँह नहीं लगाता था (लैशाली० (१)—चतुर०, १२४)

(३) खाना । प्रयोग—भगर भग खेर को मूँह न लगातो यो (सु० सु०—सुदर्शन, २८१)

### मूँह लटक जाना

निराश होना, विग्न होना । प्रयोग—ज्ञानसंकर की गवाही हो गयी । सरकारी वकील का मूँह लटक गया (प्रेमा०—प्रेमचंद, २३३); मूँह लटक जाये न लटकें में पड़े क्षण उत्तरे न मूँह जाये उत्तर (बोल०—हरिऔध, ८७)

### मूँह लटकाना

किसी बात के अच्छी न लगने पर धर्मतोष प्रगट करना ।

प्रयोग—मूँह लटकाये भीतर घाता और फिर बाहर बना जाता (मान० (१)—प्रेमचंद, ४२); स्त्रियों ने हाथ की माँग भर कर हाथी भर दी, मूँह लटका दिये (मृग०—वृ० वता, १११)

### मूँह लपेट कर पड़ रहना

उद्याम पड़े रहना । प्रयोग—चौं दुधों की लपेट में जावे क्यों पड़े मूँह लपेट कर कोई (चौखे०—हरिऔध, २४)

### मूँह लायक बोझा होना

किसी व्यक्ति के योग्य बन्धु या व्यवहार होना । प्रयोग—आप लोग राजा हैं, यह मोटी-भोटी चीजें किस मूँह से घापकी भेंट कर्ण × × मूँह लायक बोझा तो होना चाहिए (मान० (४)—प्रेमचंद, २०८)

### मूँह लाल करना

बहुत पीटना । प्रयोग—मल किसी का मूँह न काई मूँह खिले लाल मूँह कर हो न कोई मूँह हरा (बोल०—हरिऔध, ८४)

### मूँह लाल हो जाना

(१) शर्म से चेहरे का लाल हो जाना । प्रयोग—हो रहे जब कि लाल पीले थे तब भला क्यों न लाल मूँह होता (चौखे०—हरिऔध, २३) (—)

(२) मार पड़ना । प्रयोग—देखिए प्रयोग (१) में (÷) ।

(समा० मूँहा०—मूँह सुख होना)

### मूँह सम्हाल कर बोलना

अपवाद कहने से रोकना । प्रयोग—मूँह सम्हारि तु बोलत नाही, कहत बराबरि बात (सु० सा०—सूर, ११५५); वस जब बहुत भई, मूँह सम्हाल के बोलो नहीं तो एक मुक्का ऐसा मार्केगा कि पृथ्वी पर लोटने लगोगे (भा० प्र० (१)—भारतेन्दु, ५); तुमने धागे से मूँह सम्हाल कर बात न की, तो मैं कहूँगा मेरे घर से निकल जाओ और अपना रास्ता नापो (ब्रह्म०—दे० स०, ११८)

### मूँह सामने करना

सामना करना । प्रयोग—कब हुआ सामना नहीं, पर हम कर सके सामने न मूँह अपना (चौखे०—हरिऔध, २)

### मूँह सीधा करना या होना

संतोष होना । प्रयोग—तुम तापद धपना सर्वस्व अंगण



करके भी उनका मुँह सीधा न कर सको (मान० (१)—प्रेमचंद, २३); यहाँ काम करने-करते मर जाओ पर किसी का मुँह ही सीधा नहीं होता (मान० (१)—प्रेमचंद, १३२)

### मुँह सीना

मुँह से बात न निकलना या न निकालने देना। प्रयोग—तुमने गजब किया लोगों का मुँह तक सी दिया था (गु० नि०—वा० मु० गु०, २४८); बड़े-बड़े धीरों के मुँह भी सिल गये (बेदेही०—हरिऔध, १६६); महरीका मुँह पहले ही सी दिया गया था (गबन—प्रेमचंद, २००)

### मुँह सुजाना

दे० मुँह फुलाकर बैठना

### मुँह सूखना

(१) भय या लज्जावश चेहरे का तेज जाता रहना। प्रयोग—बदन झुराड़ गयी क्यों तेरी, कहाँ गए बल, मोहन तात (सु० सा०—सूर, ११६०); मुनत सूख मुँह भा उर दाह (राम० (अ)—सुलसी, ४६९); तहसीलदार साहब का मुँह सूख जाता है (मैला०—रेणु, ३३४); वे भला आप सूख जाते क्या मूल न सूखा जवाब सूखा मुन (सुमते०—हरिऔध, १०)  
(२) प्यास या रोग के कारण गला सूखक होना; गले और जबान में काँटे पड़ना।

### मुँह से अक्षर न फूटना

कुछ भी न बोल पाना। प्रयोग—इतनी सारी बात सुन लेने पर भी फूलबाबू के मुँह से एक आखर नहीं फूटा (बल०—नागा०, ९५)

(समा० मुहा०—मुँह से आवाज न निकलना,—एक शब्द भी न निकलना)

### मुँह से आह भी न निकलना

तनिक भी दुःख न प्रगट होने देना। प्रयोग—पड़ संकटों में कितने निकलेगी मुँह से आह नहीं (बेदेही०—हरिऔध, ६०)

### मुँह से कच्ची-पक्की निकालना

दुर्वचन कहना, अनुचित कहना। प्रयोग—इस पर बहुत बिगड़े। कच्ची-पक्की मुँह से निकालने लगे (रंग० (२)—प्रेमचंद, २३७)

(समा० मुहा०—मुँह से कच्ची-पक्की कहना)

### मुँह से छीनना

किसी के अधिकार या अश की वस्तु छीननी। प्रयोग—छोटे भाई-भतीजों के मुँह से छीन कर पराए लड़के को दे देना—यह तो आज तक कही मुना नहीं (मा—कोशिक, ७३)

### मुँह से भुआं निकालना

निरादर करना, अपशब्द कहना। प्रयोग—तम घपने मुँह काड़े घुवा। चाहति परा नरक के कुँवा (पट०—जायसी, ४७७)

### मुँह से निकल पड़ना

सहसा कह पड़ना। प्रयोग—पागलपन की निकल करना कुछ हमी-बोल नहीं, झूल-झुक से समझदारी की बातें मुँह से निकल ही जाती हैं (चिंता० (१)—शुक्ल, २८)

### मुँह से निकालना

कहना। प्रयोग—जो मुँहसे न हो सकता तो यह बात मुँह से क्यों निकालता (इशा०—इशा०, ८९); पापी मनुज भी आज मुँह से राम नाम निकालते (जय०—गुप्त, ७८)

### मुँह से प्याला लगा होना

मोत्र-घानद में दिन बीतना। प्रयोग—क्यों किसी मुँह पर घुहराँवे लगी क्यों किसी मुँह से लगा प्याला रहे (बोल०—हरिऔध, ८८)

### मुँह से फूल भरना,—बरसना

अत्यंत मोठे वचन बोलना। प्रयोग—बात बनती ही रहे न बात, रहे मुँह से भी झड़ता फूल (मर्म०—हरिऔध, ८८); उसका दिल भले ही रोये x x किन्तु उसे अपने चेहरे पर हसी हो रखना है, अपने मुँह से फूल ही बरसाना है (अम्ब०—रा० वै०, ५५)

### मुँह से फूल बरसना

दे० मुँह से फूल झड़ना

### मुँह से बात छीनना

(१) दूसरा जो कहनेवाला हो उसी बात को स्वयं भी कह देना। प्रयोग—पार यह बात तुम मेरे मुँह से छीन ले गए (मा—कोशिक, १०९)

(२) दूसरे की बात के बीच में बोल पड़ना।

(समा० मुहा०—मुँह से बात उचकाना)



### मुंह से बात निकाल लेना

किमी से कुछ कहवा ही लेना। प्रयोग—इसी तरह वह बार-बार टालती रही; लेकिन मैंने पीछा न छोड़ा। आखिर उसके मुंह से बात निकाल ही ली (गवर्न—प्रेमचंद, ३०४)

### मुंह से बात निकालना

बात कही जानी। प्रयोग—न निकले कही बात मुंह से किमी से कभी नहीं घाटे (मर्म—हरिऔध, ९०)

### मुंह से बोली न जाना

कुछ भी न कह पाना। प्रयोग—मनहूँ निज की सी लिखी, मुँह न आवे बोल (सु० सा०—सुर, २०७९); जिस लिये हम फेरें उनपर छुरी, जो कि मुँह से बोल भी सक्ती नहीं (चुमते०—हरिऔध, १५५)

(समा० मूहा०—मुँह से बकार न निकलना,—बात न आना,—बोली न फूटना)

### मुँह से लाम-काफ निकालना

तनिक भी विरोध करना। प्रयोग—जरा भी गरम-गरम हुए, मुँह से लाम-काफ निकाली और मैंने गरदन दबायी (प्रेमा०—प्रेमचंद, २१०)

### मुँह से लार टपकना

मालुन होना। प्रयोग—घगरेजों को भारत में सत्ता विस्तार करते देख योरप के और लोगों के मुँह से भी लार टपकने लगी (सा० सी०—महा० द्वि०, ४७)

(समा० मूहा०—मुँह से लार गिरना)

### मुँह से श्री कृष्ण न कहना

कोई जबाब-सवाल न करना। प्रयोग—बहु विचारी ने मुँ से कभी श्री के कृष्ण—कुछ भी नहीं कहा (वृ०—अ० ना०, १५८)

(समा० मूहा०—मुँह से राम या कृष्ण न कहना)

### मुँह स्याह पड़ना

अपमान या दुश्चिन्ता से चेहरे का खीहीन होना। प्रयोग—तमक तें लाल मुख सिवा को निराल भए, स्याहमुख तोरण सिपाहमुख पियरे (भूषण ग्रंथा०—भूषण, २१५)

### मुँह हरा होना

प्रसन्नता होनी। प्रयोग—मत किती का मुँह न कोई

मुँह खिले लाल मुँह कर हो न कोई मुँह हरा (बोल०—हरिऔध, ८४)

### मुँह होना

(१) इस लायक होना। प्रयोग—इनका मुँह है कि हमारी कविता मुने (भा० ग्रंथा० (१)—भारतेन्दु, ३७५); तेरा मुँह है नहीं कि कायर नृसिर से खेलेगा? (मर्म०—हरिऔध, १४२); दिल पर जो कुछ गुजरती थी, दिल ही जानता है; लेकिन लिखने का मुँह भी तो हो (गवर्न—प्रेमचंद, २५२)

(२) हिम्मत होना। प्रयोग—जब आपने मेवा-धर्म और परोपकार के लिये राज्य को त्याग दिया, तो किसका मुँह है, जो आपको स्वार्थी कह सके (रंग० (२)—प्रेमचंद, ९७९८)

(३) कहा-मुनी होनी।

### मुँह-अंधेरे

बहुत सवेरे, सुबोध के पूर्व। प्रयोग—अंधेरे ही मुँह उठा और कोदई से बिदा मांगी (गोदान—प्रेमचंद, १४२); हम मुँह अंधेरे ही शिकार के लिए जाना चाहते हैं (मिसा०—कौशिक, १२०); परमों के रोज मुबह मुँह अंधेरे लडका बेलों में से पके खरबूजे चुन रहा था (ज्ञान०—यशपाल, ६३)

(समा० मूहा०—मुँह-उजाले)

### मुँह-आगे

सामने, अत्यंत निकट। प्रयोग—मरणा मुँह घायी लड़ा जीवण का सब भुक्ति (कवीर ग्रंथा०—कवीर, ७५)

### मुँह-चोर होना

लजालु होना। प्रयोग—भागलपुर कालेज में पढ़ता है गोमा, लेकिन मुँह चोर है (परती०—रेणु, ४१९); जो उन्हें है पसंद मुँह चोरी क्यों न मुँहचोर मुँह चुराये तो (बोल०—हरिऔध, ८६)

### मुँह-जोर होना

(१) बहुत बोलने वाला; घुट। प्रयोग—मंगीत में कवि रखती है, यह तो आपको मालूम ही है, इटेलिजेंट भी है पर जरा मुँहजोर × × (नदी०—अज्ञेय, १७३); लड़की कितनी मुँहजोर और उच्छ्वल हो गई है (झूठा० (२)—यशपाल, ३४१); हैं बड़ी कमजोरियाँ उन में भरी देख ली मुँहजोर की मुँहजोरियाँ (चोखे०—हरिऔध, ४५)



(२) जो बय में न रहे। प्रयोग—मानत लाज-लवाम नहीं, नेक न सहत मरोर। होत लाल लखि बाल के दुग-नुरग मुंहजोर (मति० मक०—मलिराम, २५८); उनकी दशा इस समय उस आदमी की-सी थी जो घपने मुंहजोर घोड़े के भाग जाने पर खुद हो (रंग० (१)—प्रेमचंद, ३६३); मेरा आबारा मन मुंहजोर घोड़े की तरह बाग नहीं मान रहा था (बाण०—ह० प्र० द्वि०, १०६)

### मुंह-तोड़ जवाब देना

तुरंत विरोधी उत्तर देना। प्रयोग—जब तक आप इनको मुंह तोड़ जवाब न देंगे यह सीधे न होंगे (परीक्षा०—श्री० दास, १०८); हर्ष का विषय है ऐसे आक्षेपों का मुंह तोड़ उत्तर महामहोपाध्याय डाक्टर हरप्रसाद शास्त्री जैसे विद्वानों के द्वारा दिया गया है (सा० सी०—महा० द्वि०, २२-२३); सज्जन के प्रशंसक सज्जन को तुरंत एक मोटिंग कर विरोधी पार्टी को मुंह तोड़ जवाब देने के लिए उत्तेजित बना रहे थे (बूट०—अ० ना०, ५७७)

### मुंह-देखा

लिहाज से, किसी की खातिर से, दिखावे का। प्रयोग—मुंह को न्याउ न कीजें, कहा रंक कह भूप (सू० सा०—सूर, ४३०५)

### मुंह-देखी कहना,—चात

जो सामने हो उसके जैसी बात करनी। प्रयोग—घप्य की क्या बकते हो। सब मुंह देखी बातें हैं (सौ०—इ० स०, ९६); सलोनी अभी तो आत्मानंद की तारीफ कर रही थी। अब अमर की मुंह-देखी कहने लगी (कर्म०—प्रेमचंद, २९८); ये लोग शास्त्र का पारायण नहीं करते—प्रघषा करते हैं तो सब बात न कहकर पजमानों को सतुष्ट करने के लिए केवल उनकी मुंह-देखी कहते हैं (सासी०—वृ० वर्मा, ४४); जो कि मुंह देख ही रहे हैं, वे बात कैसे कहें न मुंह देखी (चोखे०—हरिऔध, १८३)

### मुंह-फट होना

जो जी में आए उसे कह देने वाला होना। प्रयोग—मुंह-फट भांड भी लज्जास्पद घणों का ऐसा नम्र × × वर्णन न कर सकते होंगे (प्रेमा०—प्रेमचंद, १२९); सड़की × × गंवार, मुंहफट, लोहलट्ट के पाले पड़कर जनम भर जला

करे (ठेठ०—हरिऔध, ९); बात कट से अगर न कह दे, तो फिर उसे लोग क्यों कहें मुंहफट (बोल०—हरिऔध, ८६)

### मुंह-बोली

अत्यंत स्नेह जिस पर हो, प्यारी। प्रयोग—तब सके बोल और बेटी क्यों जब सकी कुछ न बोल मुंहबोली (चमत्ते०—हरिऔध, १६३); मगर मुंह बोली तो है। उसका दर्जा मां-जाई से भी ऊंचा है (सु० सु०—सुदर्शन, १००); कानपुर के नाना की मुंहबोली बहन 'झबोली' थी (मुकुल—सु० कु० चौ०, ४७)

### मुंह-मांगा मिलना

इच्छानुरूप मिलना। प्रयोग—गारवनी-पति-संपति देखि, कहे यह 'केशव' संभ्रम तातें। घावुन मांगत मोल भिवारिन देत दई मुंह मांगी कहा तें (केशव०—केशव, १५१); बुढ़िया हर महीने × × रमालों की पोटलिया बनाकर लानी और घमर उसे मुंह मांगे दाम देकर ले लेता (कर्म०—प्रेमचंद, ९१)

### मुंह-मांगी मुराद मिलना

इच्छित वस्तु मिलनी। प्रयोग—घमर वह मूक से निराश होकर यह कारखाना खोलने का विचार त्याग दें, तो मैं मुंह-मांगी मुराद वा जाऊँ (रंग० (१)—प्रेमचंद, २२३)

### मुंह-लगा

(१) बिना लिहाज के सब कुछ कह देने वाला या मिर-चड़ा। प्रयोग—कोई साढ़े ग्यारह बजे महरा आया। बड़ा मुंह लगा नौकर या (मान० (१)—प्रेमचंद, १०९); प्राइम मिनिस्टर के मुंह लगी है (झूठा० (२)—यशपाल, ३३८); बाबूजी का मुंह लगा नौकर है न ? (रेशमी०—राम० वर्मा, १७९)

(२) अधिक गरबा हुआ व्यक्ति।

### मुंहा-चाही होना

परस्पर देखना। प्रयोग—मुंहाचुही संनापति कोगरी, सकटें गवं बहावी (सू० सा०—सूर, ६७९); जानाकानी, कंड-हमी मुंहाचाही होत लगी, देखि दसा कहत बिदेह बिल-लाइके (गीता० (बा)—तुलसी, ८४)



### मुहा-मुंह

भरपूर, लबालब । प्रयोग—दुनियां भाँडा दुल का, भरी मुहामह भूष (कबीर ग्रंथा०—कबीर, २५)

### मुकदमा ठोकना

स्वाय के लिए घड़ालत की शरण जाना । प्रयोग—माह-बारी ने मुकदमा ठोक दिया था (मैला०—रेणु, ३४५)  
(समा० मुहा०—मुकदमा कायम करना)

### मुक्का चलाना

मुक्के से मारना । प्रयोग—है जहाँ गोली दनादन चल रही क्या करेंगे हम वहाँ मुक्का चला (बोल०—हरिऔध, १६३)  
(समा० मुहा०—मुक्का मारना)

### मुक्त-कंठ से कहना

बिना किसी जिवक के कहना । प्रयोग—इसमें मुक्तकंठ से कहा गया है कि केवल परमेश्वर का दिव्य मार्ग है (मा० ग्रंथा० (३)—भारतेन्दु, ५८३); प्रारम्भ के विद्वानों ने भी अभीरखसरो की मुक्तकंठ से प्रशंसा की है (पद्म पराग—पद्म० शर्मा, १८९); वह भी मुक्तकंठ से घोषकी प्रशंसा करते हैं (रंग० (१)—प्रेमचंद, ३१५)

### मुक्ति का दुवार

मुक्ति-प्राप्ति का साधन । प्रयोग—जिह सिमरति होइ मुक्ति दुवार । जाहि वैकुण्ठ नहीं संसारि (कबीर ग्रंथा०—कबीर, २९०)

### मुख कुम्हलाना

तिराश, हताश या मलिन होना । प्रयोग—सामने पाकर विपद की आघियां बीर मुखड़ा मेक कुम्हलाता नहीं (सुमते०—हरिऔध, १०)

### मुख भंजन करना

मुंह तोड़ना, अपमानित करना, हराना । प्रयोग—नाहि त करि मुख भंजन तोरा (राम० (ल०)—तुलसी, ८९३)

### मुख मुरझाना

श्री-हीन होना । प्रयोग—बीजगुप्त की आशा पर तुषारा-पात हुआ, उसका प्रफुल्ल मुख मुरझा गया (चित्र०—मग० वर्मा, ११)

(समा० मुहा०—मुख फीका पड़ना,—मलिन होना)

### मुख-दुति कुम्हलाना

दुःख के कारण चेहरे का पीला पड़ जाना । प्रयोग—हृदय कंप मुख दुति कुमुलानी (राम० (बाल०)—तुलसी, २१६)

### मुखपात्र

मन्य कर्तावर्ता । प्रयोग—गद्यगि डाक्टर इफोन प्रलो हय मंडल के मुखपात्र थे, पर खुला हुआ भेद था कि प्रेमशंकर ही उसके कर्णधार हैं (प्रेमा०—प्रेमचंद, ४३५)

### मुजरा करना

(१) प्रणाम करना । प्रयोग—तब संग मखिन के आए । मुजरा करि नाम सुनाए (भा० ग्रं० (२)—भारतेन्दु, ६६४)  
(२) वेश्याओं का किसी के यहाँ जाकर गाना गाना ।

### मुजरा पाना

निकट पहुँच पाना । प्रयोग—बड़े बड़े मुनि देव ब्रह्म शिव जहं मुजरा नहि पावै (भा० ग्रं० (२)—भारतेन्दु, ५८०)

### मुटमरदी

घमंड, नालायकी । प्रयोग—जरा यह मुटमरदी देखो कि घर में किसी को खबर तक न दी (कर्म०—प्रेमचंद, ३३२)

### मुट्टी खोलना

(१) उदारतापूर्वक देना । प्रयोग—हैं तरसते एक मुट्टी घन कोभाप की मुट्टी नहीं अब भी खुली (सुमते०—हरिऔध, ४)  
(२) मृत्यु होनी ।

### मुट्टी खोलना

उदारतापूर्वक देना । प्रयोग—मलिकाइन इन दिनों अपनी मुट्टी जरा खोल देती थी (बल०—नागा०, २६)

### मुट्टी गरम करना या होना

(१) घुस देना या लेना या मिलना । प्रयोग—कोई भी काम कठिन या आसान, उसे वह व्यक्ति चुटकियों में पूरा कर डालता था—बसते कि उसकी मुट्टी घण्टी तरह गर्म कर दी जाय (गोली—चतुर०, १३६); बोरी कीजण, हाके हाकिए × × कोई आपसे न बोलेगा । बस, कर्मचारियों मुट्टियां गर्म करते रहिए (रंग० (१)—प्रेमचंद, २९८); कांग्रेसी की मुसीबत से बड़ा तो किसी की मुट्टी गरम होती नहीं (बीने०—रा० रा०, ६३); अगर किसी मामले में गहरा फंसाव का खतरा दिखाई दे तो पुलिसवालों की मुट्टी गरम



## मुट्ठी डीली होना

होने से सब कुछ ठीक हो जाता है (जहाज०—६० जोश, १८६)

(२) लाभ करना या होना । प्रयोग—यत यह है कि सम्पादक लोग लेखकों से सेतमेंत में बेगार लेकर मादिक के सामने अपनी कारगुजारी दिखलाते हैं । मुख्य बनते हैं घोर मुट्ठी गरम करते हैं (पट्टम० के पत्र—पट्टम० शर्मा, १८५); क्या इस वक्त अपने सेठ जी से चार-पांच सौ रुपयों का बन्दोबस्त न करा दोगे ? तुम्हारी मुट्ठी भी गर्म कर दूंगा (गवन—प्रेमचंद, १०७); फिर बेनामों, रेहननामों और मुलहनामों की भरमार हो जायेगी । मुट्ठी गरम होगी (मान० (८)—प्रेमचंद, २७); जब मुट्ठी गरम हुई उनकी क्यों भला तब तिलक न फिर आता (चुभते०—हरिओध, १६४)

## मुट्ठी डीली होना

बहुत खर्च करना । प्रयोग—जितना ही उनके बाप कंजूस थे, उतना ही फूलबाबू की मुट्ठी डीली थी (बल०—नागा०, ४५)

## मुट्ठीभर

बहुत थोड़े । प्रयोग—माना कि वह बड़ा नीतिकुशल है पर बगावत कहीं जोर पकड़ गई, तो मुट्ठी भर आदमियों से वह क्या कर सकेगा ? (मान० (१)—प्रेमचंद, १९६); भाभी यहाँ कुछ लोग हैं × × मुट्ठी भर हैं, पर युवा है (सुनीता—जैनेन्द्र, १३८)

## मुट्ठी में आ जाना

अधिकार या वश में होना । प्रयोग—पर रुपया एक बार उनकी मुट्ठी में जाकर फिर निकलना भूल जाता था (मान० (८)—प्रेमचंद, १६); इस रात विजय श्री मुट्ठी के भीतर दिखलाई पड़ने लगी (आसी०—वृ० वर्मा, ३९५)

## मुट्ठी में करना,—रखना,—रहना या होना

वश में करना या होना । प्रयोग—गोनाई महेन्द्र गिर जिसकी यह सब करतूत है वह भी उन्हीं दोनों उजड़े हुए की मुट्ठी में है (इंशा०—इंशा०, ११३); इन एक लाख आदमियों की जान उसकी मुट्ठी में है (मान० (१)—प्रेमचंद, १८२); राजपरबंगा के कुमार जी उसकी मुट्ठी में है (मैला०—रेणु, ८७); यहाँ की जनता को मुट्ठी में रखने

के लिए कुछ राजा नवाबों का बनाए रखना बहुत जरूरी है (आसी०—वृ० वर्मा, १३०); लेकिन जिस ईश्वर के होने न होने को हम समझ सकते हैं, जिसको निर्गुण, निराकार, अपरिमय सब कुछ कहकर भी जिसके बारे में हमारा प्रतिष्क इतनी क्षमता रखता है कि उसके होने को मुट्ठी में कर सकें, किसी अर्थ से कह सकें कि वह है, उस ईश्वर के होने न होने से क्या (शेखर (१)—अज्ञेय, ९०); जनता को तो उसने ऐसा मुट्ठी में कर लिया है कि क्या कहें (कर्म०—प्रेमचंद, ३३१); वे बड़े ही चतुर और प्रभावशाली थे, नवाब को अपनी मुट्ठी में किए हुए थे (वृ०—अ० ना०, ४८७)

## मुट्ठी में रखना

दे० मुट्ठी में करना

## मुट्ठी में रहना या होना

दे० मुट्ठी में करना

## मुठभेड़ होना

(१) संघर्ष होना । प्रयोग—पिप को बन्नायो स्वाद कंसो रतिसंगर को, भए अंग-अंगनि तैं केते मुठभेरे हैं (भूषण ग्रंथा०—भूषण, २३९); रास्ते में कभी-कभी हिंसक जंतुओं से मुठभेड़ हो जाती (रंग० (२)—प्रेमचंद, ७०); अब तक कई बार तो कबीर साहब से ही उसकी मुठभेड़ हो चुकी है (कबीर—ह० प्र० द्वि०, ५६); कभी कभी मंगल से उससे मुठभेड़ हो जाती (कंकाल—प्रसाद, ३०) (÷)

(२) सामने पड़ना, भेंट होना । प्रयोग—ब्राह्म वही दिन था सो तुम से मुठभेड़ हो गयी (इंशा०—इंशा०, ९४); करि मुठभेर अंक बरबस भरि रोक्खी री मोहि अंचन तान (भा० ग्रंथा० (२)—भारतेन्दु, २८०); देखिए प्रयोग (१) में (÷) भी ।

## मुड़ मुड़ कर पछाड़ खाना

बहुत विनाप करना, दुखी होना । प्रयोग—टपटप टपकत नैन जब मुरि मुरि पखरा खात (भा० ग्रंथा० (२)—भारतेन्दु, ६७०)

## मुड़ना

विमुख होना, हार स्वीकार करके भागना । प्रयोग—शिव-खंडन तिनके भए राजा श्रीमल्लवान । बुद्ध-जुरे न मरघो कहं जानत सकल बहान (केशव० (१)—केशव, ९५);



मुफलिसी में आटा गोला होना

घाबने मेरा जो बनाया है, आपके कहने से मैं कभी मड़ना नहीं चाहता (ठेठ०—हरिऔध, ४७)

**मुफलिस्वी में आटा गोला होना**

मुसीबत या कमी में और मुसीबत या कमी होनी। प्रयोग—फिर उन्हें घावा पसीना सब बरन डंढा हुआ मुफलिस्वी में फिलममल छांटा घजी गोला हुआ (भा० ग्रंथा०—भारतेन्दु, ८६७)

**मुरभा जाना**

उदास और मलिन होना। प्रयोग—भूलभूल प्यास नोद नहि घावे, गई बहुत मुरभाइ (सु० सा०—सूर, ५०५); घनाधिकारी जिते तिते मुनि मुनि मुरभाए (मंद० ग्रंथा०—मंद०, २६); देखत ही, मुरभाइ परी मिय, कुंजर मज्जु ज्यों मंजरी सीजी (शब्द०—देव, ५९); मुझे नहीं मुरभ, उरमि नेह-मुरभनि, मुरभि-मुरभि निमिदिन डांवाडोल है (घन० कवित्त—घना०, २१); साव भवे मनमोहन की लखियां मन मारि महा मुरभाइ (मर्म०—हरिऔध, २८); क्यों मुरभाइ हुई प्रिये हो, कैसे बुझा हुआ है दिल (नूर०—भक्त, १)

**मुरीघत का मुंह मलना**

सौजन्यता का नाश करना, अलिप्त होना। प्रयोग—मिल, न उसको क्यों मुसीबत की कहें जो मिलन लेने न देवे कम हमें, बेहतर जो मुंह मुरीघत का मले दे गिरा जो मेल मुंह के बल हमें (चुभले०—हरिऔध, ५२)

**मुर्दा-दिल होना**

उत्साहहीन होना। प्रयोग—कलकले का यह उदाहरण हिन्दुओं के मुर्दा दिलों में जान डाल देतो ऐसे उपद्रव बांछ-नीय हैं घोर आवश्यक हैं (पट्टम० के पत्र—पट्टम० शर्मा, ४)

**मुर्दा होना**

उत्साहहीन होना, शक्तिहीन होना। प्रयोग—अरे, बाल देव जी तो मुर्दा हो गये मुर्दा (मैला०—रेणु, २०८); अब उन्हें मालूम हो जायेगा कि मैं बिलकुल मुर्दा हूँ (रंग० (२)—प्रेमचंद, १७४); अब तो निरा मिट्टी का पुतला हूँ भाई साहब, बिलकुल मुर्दा (मान० (४)—प्रेमचंद, ३००)

**मुर्दे को जिंदा करना,—में जान भर देना**

उत्साहहीन व्यक्ति का सज्ज होना या किया जाना। प्रयोग—ओ जो तुम अपने अट्टहास से डरा देते हो मर-पटों का मुनसान, भर देते हो मुर्दों में जान (बुद्ध०—वचन,

६१६

मुसीबतों का पहाड़

२८); पर यह तो सारी जाति ही मुर्दा है। किसे-किसे जिंदा कीजिएगा (पट्टम० के पत्र—पट्टम० शर्मा, ६१)

(समा० मुहा०—मुर्दे में जान आना)

**मुर्दे जाग उठना**

साहस या शक्ति होन व्यक्तियों का पुनः उत्साहित हो जाना। प्रयोग—बेकसी की दशा में प्रेमजंकर के भेजे हुए रूपों ने बड़ा कार्य किया। मुर्दे जाग पड़े। कादिर खा × × जी तोड़ कर मुकदमे की पैरवी करने लगा (प्रेमा०—प्रेमचंद, १८९)

**मुर्दे में जान भरना**

दे० मुर्दे को जिंदा करना

**मुर्दे से बाजी लगाकर सोना**

बहुत गहरी नींद में सोना। प्रयोग—“घोर सोये तो घोड़ा बेचकर, मुर्दों से बाजें लगाकर? (मान० (१)—प्रेमचंद, १५६); मुर्दों से बाजी बांधकर नहीं, मुर्दे होकर सो रहे थे (पट्टम पराग—पट्टम० शर्मा, ११)

**मुलायमियत से**

(१) नम्रता से, मीठेपन से। प्रयोग—मीर साहेब ने उससे भी अधिक मुलायमियत के साथ कहा—हुजूर गुस्ताखी माफ़ हो (भूले०—मगा० शर्मा, २६६); उन्होंने निकुड़ कर मुलायम-मुलायम जवाब दिया (लिलो—निराला, ७४)

(२) हलके हाथ से।

**मुश्कें चढ़ाना**

दोनों भुजाओं को पीठ की ओर करके कम लेना। प्रयोग—आखिर घीमू ने उसे फिर पटका घोर मुश्कें चढ़ा दी (रंग० (१)—प्रेमचंद, १६३)

(समा० मुहा०—मुश्कें कस लेना,—बांधना)

**मुस्कान दीड़ जाना**

चेहरे पर हल्की मुस्कान घानी। प्रयोग—एक मुस्कराहट उनके चेहरे पर दीड़ गई (शेखर (२)—अज्ञेय, ७४)

(समा० मुहा०—मुस्कान की रेखा खिंच जाना)

**मुसीबतों का पहाड़,—की टोकरी**

बहुत सी मुसीबतें, बड़ी से बड़ी मुसीबत। प्रयोग—तुम



मुसीबतों का पहाड़ सिर पर उठा सकते हो (भूलो—भा० वर्मा, ६२७); मुझे क्या मालूम था कि आप मेरे सिर पर मुसीबतों की टोकरी दोगे ? (गवन—प्रेमचंद, २०)

### मुसीबतों की टोकरी

#### दे० मुसीबतों का पहाड़

#### मुहर लगना या लगाना

(१) स्वीकृति मिलनी या देनी। प्रयोग—जित्नु जब तक आप की मुहर न लग जाय तब तक वह परामर्श कार्यक्रम में परिणत नहीं हो सकता (मा—कौशिक, २९); पर चूंकि दूसरे गांवों में उस पर सत्य की मुहर लगा दी जा चुकी थी, इसलिए धीरे-धीरे उसका मनोवैज्ञानिक प्रभाव उस विशेष गांव के अविश्वासी लोगों पर पड़ने लगा (जहाज—३० जोशी, ५२८) (+)

(२) प्रमाणित होना या करना। प्रयोग—एक मामिक पत्र का प्रस्ताव में भी बेताब जी से कई दिनों से कर रहा था। आपने उसकी पुष्टि करके ओचित्य की मुहर लगाई (पट्टम—पट्टम० शर्मा, २३६); देखिए प्रयोग (१) में (+) भी।

(३) प्रभाव पड़ना या डालना। प्रयोग—मेहता के बुद्धि-बल तेजस्विता ने उसके ऊपर अपनी मुहर लगा दी (गोदान—प्रेमचंद, ३१८)

(४) भली भांति बंद करना।

#### मूँछ उखड़ना या उखाड़ना

(१) कठिन दंड देना, अपमान होना या करना। प्रयोग—किसने आप से कहा ? जरा उसका नाम तो बताइये ? मूँछे उखाड़ लूँ, उसकी (गवन—प्रेमचंद, ५२); बेहया है बेहयापन से भरा × × मूँछ उखड़े है मूँछ करता खड़ी (बोलो—हरिऔध, १२४) (+); कौन समुरा कहता है कि भीख मांगती रही। हमारे सामने कहे तो मूँछे उखड़वा लूँ (मिसा—कौशिक, १९१)

(२) घमंड चूर करना। प्रयोग—देखिए प्रयोग (१) में (+)

#### मूँछें पेंटना,—मरोड़ना

घान दिखाना। प्रयोग—वे भाइयों की मूँछें उखाड़ कर मूँछ मरोड़ रहे हैं (चुभते—(मु)—हरिऔध, ३); जब हमारी

पेंठ ही जाती रही तब भला हम मूँछ क्या हैं पेंठते (बोलो—हरिऔध, १२३)

#### मूँछ के बाल ऊंचे होना

गर्व होना, पन मिलना। प्रयोग—क्यों आपुहि ऊंचे भए आप मोछ के बाल (मा० ग्रंथा० (२)—भारतेंदु, ८००)

#### मूँछ के बाल बिन जाना

(१) बहुत अपमानित होना। प्रयोग—घोलिये पलक दयाकर देखिये मूँछ के भी बाल अब हैं बिन रहे (चुभते—हरिऔध, ३) (+)

(२) बहुत दुर्दशा होनी। प्रयोग—देखिए प्रयोग (१) में (+)

#### मूँछ खड़ी होना

प्रतिष्ठा, गर्व बना रहना। प्रयोग—आति के देल रेख कर दुखड़े जो न बेताब बन उन्हें पूछें। रोंगटे जो खड़े न हो जावें तो रही क्या खड़ी मूँछ (चुभते—हरिऔध, ८५)

#### मूँछ गिरना,—जाना,—नीची होना,—पट होना

(१) प्रतिष्ठा नष्ट होनी। प्रयोग—आज बुन्देलों की नाक कटती है और कुंवर सागरसिंह की मूँछ जाती है (झासी—वृ० वर्मा, ३३७); जिस काम के करने से मुझ को अपनी मूँछ नीची करनी पड़ेगी, उस काम को मैं जी रहते कभी न कर सकूंगा (ठेठ—हरिऔध, ९); फिर गये मूँछ हमारी गिर गई। देख नीचा, मूँछ नीची हो गई (बोलो—हरिऔध, १२४); मूँछ कैसे पट भला होनी नहीं पट न पाई आन से, पत गो गई (बोलो—हरिऔध, १२४)

(२) घमंड चूर होना।

#### मूँछ जाना

#### दे० मूँछ गिरना

#### मूँछ टेना

आवेश में आना। प्रयोग—जब कि हमें लेने के देने पड़े तब भला हम मूँछ टेने क्या चले (बोलो—हरिऔध, १२४)

#### मूँछ तानकर

गर्व। प्रयोग—परन्तु न उसके मन में वहां से भाग जाने की इच्छा थी और न मौलवी चाहते थे कि वह मूँछ तान के, सिर उठाकर चला जावे (मृग—वृ० वर्मा, ४०३); उनके



मूँछ मोची होना

६१८

मूँची हिलाना

दर्शनमात्र से बड़ा से बड़ा व्यक्ति फौरन जबान बन मान से मूँछें तानता अपने मकान की घोर चला जाता है (गंगा०—उद्य०, १२)

**मूँछ नीची होना**

दे० मूँछ गिरना

**मूँछ नोच लेना**

(१) वेदव्रत करना । प्रयोग—बीसियों बार मनभले लड़के मूँछ तो नोच नोच हूँ लेते (बोले०—हरिऔध, ६२)

(२) गर्व चूर करना ।

(समा० मुहा०—मूँछ खीन लेना)

**मूँछ पकड़ना**

अपमान करना । प्रयोग—किसी की मूँछ पकड़ते हैं, किसी की आज्ञा दिखाते हैं ! (समा०—हरिऔध, ८४)

**मूँछ पट होना**

दे० मूँछ गिरना

**मूँछ फटकारना**

ताव दिखाना । प्रयोग—जब कि फटकार ही रही पड़ती । मूँछ फटकारते रहे तब क्या (चुमते०—हरिऔध, ८५)

**मूँछ मरोड़ना**

दे० मूँछ घेंटना

**मूँछ मुड़ा डालना**

अपनी हार या अपमान स्वीकार करना । प्रयोग—यह बात न हो तो मूँछें मुड़ा लूँ (मान० (७)—प्रेमचंद, ५४); लग गई पूँछ पिछलग्गों की जब मूँछ को तब रहे मुड़ाते क्या (चुमते०—हरिऔध, १२५)

**मूँछों की लाज रहना**

प्रतिष्ठा रह जानी । प्रयोग—भोज के मूँछों की लाज रही, मुख घोर नि लाज के भार नवाये (मति० मक०—मतिराम, १८२)

**मूँछों पर ताव देना**

अभिमान से मूँछ मरोड़ना; अभिमान दिखाना । प्रयोग—ताव दे दे मूँछ कगूरन पे ताव दे दे पाव दे दे अरिमुख कूदे परे कोट में (भूपण ग्रंथा०—भूपण, २०८); जब तो परित जी की लूब चढ़ बनी, मूँछों पर ताव दे, दे कर

लखारने सगे (परोक्षा०—श्री० दाम, १६); वह इतनी सीधी गमखोर निछुंन न होती तो आज सोभा घोर हुँरा की मूँछों पर ताव देते फिरते हैं, कहीं भोग मांगते होते (गोदान—प्रेमचंद, २७); काफ़ेसी जमींदारों व भाई बन्द और सार-सगुर मूँछों पर ताव देने लग गये थे (बल०—नागा०, १९९); देव जो मुह तो तबा सा हो गया मूँछ पर तुम ताव क्या हो दे रहे (बोल०—हरिऔध, १२३)

(समा० मुहा०—मूँछों पर हाथ फेरना)

**मूँछ चढ़ना**

बे-बदव हो जाना । प्रयोग—ज्यो ज्यो करी कछु कानि-कनौड़ त्यो मूँछ नड़े बड़े आवत नेरे (छन० कवित्त—छना०, १९९)

**मूँछ मारना**

(१) प्रयत्न करना । प्रयोग—मूँछ मारि हिय हारि कै हित हेरि हारि अब चरन मरन तकि घायो (तुलसी—हि० श० सा०); मूँछ मार कर भी कोई पैशाची का पंडित इस नई पिशाच भाषा का उद्धार नहीं कर सकेगा (हिन्दी सा०—ह० प्र० द्वि०, १०५)

(२) व्यर्थ समझना । प्रयोग—विषम वृषादिन की तृषा जिये मनीरुन मोधि । अमित, अपार, अगाध-जलू मारो मूँछ पणोधि (बिहारी रजा०—बिहारी, ३६७)

(३) बहुत दिमाग लगाना ।

(४) सर काट देना ।

**मूँछ मुड़ाना**

सम्पाद लेना । प्रयोग—मूँछ मुड़ावत धिन गए अजहूँ न मिलिया राम (कबोर ग्रंथा०—कबोर, ४६); तुलसी तो वे राम सों, नाहि न सहज सनेह । मूँछ मुड़ायो बादिही भांड भयो तजि गेह (दोहा०—तुलसी, ६३)

**मूँछ लेना**

ठग लेना । प्रयोग—मोटा भाई बना-बनाकर मूँछ लिया (मा० ग्रंथा० (१)—भारतेन्दु, ४७६); उन्हें उलट बनाकर ही मूँछा जा सकता है (गोदान—प्रेमचंद, २४२); गिर रहे जब दूसरों को मूँछते तब भला तूम भी न क्यों जाते मूँछे (बोल०—हरिऔध, १९)

**मूँछी हिलाना**

स्वीकृति देनी । प्रयोग—घोर ये शादी लगाई किमने की ?



रा०—घब सरकार, बापे लगाई न, हमारा कहे मां गिनती ।  
ऊ हमने कहाइन—सब ठीक है । हमहु आपन मुटिया  
हलाय दिहिन (रैशमी०—राम० तर्मा, १७८)

### मूठ चलाना,—मारना

जादू करना । प्रयोग—काहू देबननि मिलि मोटी मूठ मार  
वी (तुलसी-हि० ३० सा०); पीठि दिवें हो, नैक मूरि,  
कर घूँघट-पटु टारि । भरि, गुलाल की मूठि सौं, गई मूठि  
सी मारि (बिहारी रत्ना०—बिहारी, ३५०); बाल अनूठियें ऊठ  
गुलाल की मूठि में लालहि मूठि चलावें (धन० कवित्त—  
धना०, १९०)

### मूठ मारना

#### दे० मूठ चलाना

### मूच्छा जागना

मूच्छा के बाद होश घाना । प्रयोग—मेघनाद के मूरछा  
जागी (राम० (लं)—तुलसी, ९४४)

### मूर्ति बन जाना

निश्चल बंठी रहना । प्रयोग—माताएं भी मूर्ति बनी,  
व्यग्र हुए प्रभु धर्म-धनी (साकेत—गुप्त, १०४)

### मूल गंधाना

अपने पास की वस्तु को भी खो देना । प्रयोग—कहा  
कीयो हम घाइ करि कहा कहैये जाइ । इत के भए न उत  
के, चाले मूल गंधाइ (कबीर ग्रंथा०—कबीर, २३)

### मूल पूरना

मूल-धन बमूल होना । प्रयोग—तहीं दीजें मूल पूरें, नको  
तुम कछु लाहु (सु० सा०—सूर, ४१३५)

### मृत्यु होना

मान होना; महत्व होना । प्रयोग—तब मेरी बात का  
बपा मोल ? (शेखर (२)—अज्ञेय, ७३)

### मस लेना

(१) चोरी-चोरी सामान उठा ले जाना । प्रयोग—कबीर  
माया मोह की, भई अंधारी लोग । जे मूते ते मुनि निर,  
रहे बसत कू रोइ (कबीर ग्रंथा०—कबीर, ३४)

(२) ठग लेना ।

### मूसलाधार वृष्टि होना

देर तक जोरों से वृष्टि होनी । प्रयोग—‘भलें नाथ !’ नाइ

माथ चले पाण्डुरनाथ बरमे मूसलाधार बार-बार पोरि के  
(कवि०—तुलसी, ५४)

### मूसलों ढोल पीटना,—बजाना

(१) खूब खूशी मनानी । प्रयोग—तब तो बहा भानन्द  
आयेगा । मसोनी काकी मूसलों ढोल बजावेगी (कर्म०—  
प्रेमचंद, ४११)

(२) प्रचार करना । प्रयोग—धानी परम-प्रेम-पूर्वक किये  
हुए प्रचण्ड पापों को तो हृदय की अंध कोठरी में छिपा  
रखता, लेकिन किसी दूसरे के संग में होने के कारण भी  
कोई भला काम बन पड़ा हो तो उसका ढोल मूसलों  
पीटना (अपनी खबर—उग्र, ३६)

### मूसलों ढोल बजाना

#### दे० मूसलों ढोल पीटना

### मृगतृष्णा

ऐसी इच्छा जो पूरी न होने वाली हो । प्रयोग—मोई  
जाम मुनि राम न गावै, मृगतृष्णा भूठी दिन धावै (कबीर  
ग्रंथा०—कबीर, २३१)

### मृत्यु का मुंह

मृत्यु । प्रयोग—मुनो हे राम ! तूम भी धर्म धारो । पिता  
को मृत्यु के मुंह में उबारो (साकेत—गुप्त, ६७)

### मृत्यु की छाया मिर पर मंडराना,—हथेली के पास होना

मृत्यु निकट जान पड़नी । प्रयोग—कुन्दा नारी मित्र मठ  
उत्तरदायक दाम । गृह समर्थ के बाम तें मृत्यु हथेली पास  
(राधा० ग्रंथा०—राधा० टास, ६७); जब मृत्यु की छाया मिर  
पर मंडराने लगी तब उन्हें अपनी असली स्थिति का ज्ञान  
हुआ (भूले०—मग० तर्मा, ६२४)

(समा० मुहा०—मृत्यु की छाया पड़ना,—मंडराना)

### मृत्यु के मुख में पड़ना

मृत्यु होनी; नाष्ट होना । प्रयोग—बस ज्ञान ली सब शत्रु  
उमके मृत्यु के मुख में पड़े (जय०—गुप्त, ४२)

### मृत्यु बुलाना

ज्ञान-ब्रह्म कर ऐसा काम करना जिसमें मृत्यु का भय हो ।  
प्रयोग—मस मिलि देहि राबनहि धारो । राज करत एहि  
मृत्यु हुंकारी (राम० (लं)—तुलसी, ९०८)



### मृत्यु सूँघ जाना

मर जाना । प्रयोग—वह चुप थी जैसे उसकी बेतना की भी मृत्यु सूँघ गई हो (चेतन—अंक, १४०)

### मृत्यु से खेलना

ऐसा कार्य करना जिसमें मृत्यु का भय हो । प्रयोग—जग-मती कुछ नहीं बोलती । वह मृत्यु से खेल रही है (ब्रह्म—दे० स०, १६०)

(समा० मुहा०—मृत्यु का खेल खेलना)

### मृत्यु हथेली के पास होना

दे० मृत्यु की छाया सिर पर मंडराना

### मैंदकी को जुकाम होना

जबरदस्ती नखरा करना । प्रयोग—अच्छा ! अब तो मैंदकी को भी जुकाम पैदा होना हुआ । क्यों न हो (गहन—प्रेमचंद, २९३)

### मैंद थापना

मर्यादा स्थिर करनी । प्रयोग—सती-धर्म की मैंद धारि जग में जस पाओ (राधा० ग्रंथा०—राधा० दास, ६२९)

### मैला उठना

मैला समाप्त होना । प्रयोग—मेरा यह जिस्म  $\times \times$  दुगुना मूलमान है बीते हुए उत्सव सा, उठे हुए मेले सा—(कनु०—भारती, २६)

### मैहनत की रोटी खाना

मैहनत करके जीविका चलानी । प्रयोग—ईमानदारी के साथ मैहनत की रोटी खाते हैं और रामनाम का भजन करते हैं (भूले०—भग० वर्मा, ६)

### मैहमानी करना

खूब गत बनाना, मारना-पीटना । प्रयोग—नंद महारि की कानि करति हो ना तह करति मैहमानी (सुर—हि० श० स०)

### मैं खोना, मैं-मेरी खोना

अहं भाव दूर करना । प्रयोग—कहि कबीर मैं मेरी खोई, तबहि राम अवर नहीं कोई (कबीर ग्रंथा०—कबीर, १०९)

### मैं-मेरा करना

अपने अस्तित्व को अज्ञानवश छलम मानना । प्रयोग—मैं

मेरी करि यहु तन लोपी, समझत नहीं गंवार (कबीर ग्रंथा०—कबीर, १९६)

### मैं-मेरी खोना

दे० मैं खोना

### मैदान खाली करना

पूछ भूमि से भाग जाना । प्रयोग—कस्मीबाई के पराक्रम की, और तात्या की दोनों टुकड़ियों को दूसरी रिशा से आता हुआ देखकर मिन्धिपा के बे छु हजार पैदल मैदान खाली कर गये (झासी०—पृ० वर्मा, ४६०)

### मैदान छोड़ कर भागना

(१) मुकाबले से डर कर भाग जाना । प्रयोग—दिल्लू पहलवान मैदान छोड़ कर भाग गये थे (यूद०—अ० ना०, १५६); मैंने उससे साफ-साफ कह दिया है कि स्वामी जी मैदान छोड़ कर किसी हावत में नहीं भागेंगे (भूले०—भग० वर्मा, ३४३)

(२) कार्य में भाग जाना । प्रयोग—दलचरन का यों फिल्मी संगीत का मैदान छोड़कर भाग जाना यही सिद्ध करता है (दूधगाछ—दे० स०, २७६)

(३) पूछ से भाग जाना ।

(समा० मुहा०—मैदान छोड़ना)

### मैदान जाना

शोध जाना । प्रयोग—दिन भर मैं करीब पन्द्रह बार हाथ में लोटा लेकर मैदान की ओर जाते हैं (मैला०—रेणु, १५०)

### मैदान पड़ा होना

विस्तृत क्षेत्र होना । प्रयोग—गोस्वामी जी के भक्ति क्षेत्र में शील, शक्ति और सौंदर्य नीनों की प्रतिष्ठा होने के कारण मनुष्य की सम्पूर्ण भावात्मिका प्रकृति के परिष्कार और प्रसार के लिए मैदान पड़ा हुआ है (चित्ता० (१)—शुक्ल, २००)

### मैदान मारना

विजय प्राप्त करनी; खेल, बाजी आदि में जीतना । प्रयोग—हामिद ने मैदान मार लिया (मान० (१)—प्रेमचंद, ३४); राजेश्वर बाबू के तकाजे से जब बंशानी का मैदान मार लिया तो क्या टिप्पणियों का कूना मर न होगा ? (पट्टम० के पत्र—पट्टम० शर्मा, ९)



### मैदान में आना

मुकाबले पर आना । प्रयोग—अब उन्हें ऐसा लगना कि उन्हें मैदान में आना चाहिए (मूले०—भाग० दर्मा, १६४)

### मैदान में उतरना

(१) किसी सिद्धांत को लेकर जनता के सम्मुख आना । प्रयोग—ऐसा कोई ना मिले हम को लेइ पिछानि । अपना करि करिया करे, ले उतारै मैदानि (कबीर ग्रंथा०—कबीर, ६६); ज्ञान शंकर इस सम्मान्य पद के पुराने अभिवापी थे (प्रेमा०—प्रेमचंद, ४३३)

(२) पृष्ठ के लिये या किसी कार्य के लिए प्रस्तुत होकर मैदान में आना । प्रयोग—पालिटिक्स के मैदान में उतरे तो चोटी के लीडरों की चोटी पर जा चमके (पद्म पराग—पद्म० शर्मा, ७६)

### मैदान में कदम रखना

कोई काम शुरू करना । प्रयोग—यहां तक कि जो लोग स्वयं इस मैदान में कदम बढ़ाते हैं, अपनी आलोचना होते देखकर वही तुरंत हो जाते हैं (गुं० नि०—बा० मु० गु०, ४२७)

### मैदान साफ होना

कोई बाधा न होनी । प्रयोग—गंधी ने अणिक मुल की सांस ली । किसी तरह मैदान तो साफ हुआ (मान० (१)—प्रेमचंद, १३२); बड़ी मैदान साफ देखकर खिड़की पर सामने आ गई (बुंद०—अ० ना०, २४४); मैंने इधर-उधर देखा, मैदान साफ था (सु० सु०—सुदर्शन, ७२)

### मैदान हाथ से निकल जाना

भोका निकल जाना । प्रयोग—रमेश बाबू ने X X वह जवाब सुना तो चकराये मैदान हाथ से जाता हुआ दिखाई दिया (गर्वन—प्रेमचंद, ८२)

### मैल रखना या होना

वैमनस्य रखना या होना । प्रयोग—इसके व्यवहार में कोई मैल या दुराव नहीं था न कोई अधिक समीपता ही थी (नदी०—अज्ञेय, ४७)

### मैला करना या होना

बदनाम करना या होना । प्रयोग—जो चाहत, चटक न पड़े, मैली होइ न मिल । राज राजमु न झुबाइ तो नेह-बीकनो

चित्त (बिहारी रत्ना०—बिहारी, ३९६); प्रेम में जहां कब्जे की इच्छा है वहां मैल भी है (परस—जैनेन्द्र, ९४); मस्तिष्कों में बुरा दिल के मैल से तीरों को कर न दे मैला कभी (सुभते०—हरिश्चंद्र, १५४)

### मैले मनवाला

बुरा व्यक्ति । प्रयोग—पठण् बावि होइ मन मैला । भागो नुरत तजो यह मैला (राम० (कि)—तुलसी, ७५६)

### मोचों के मोची रह जाना

पहले की सी बुरी स्थिति में रह जाना । प्रयोग—यदि ऐसा न हो, तो यह कब संभव हो सकता है कि बड़ी-बड़ी कम्पनियों की पूंजी तो बढ़ती हो चली जाय और बेचारे मजदूर वही मोची के मोची बने रहें (चित्र०—कौशिक, २७)

### मोटा काम

(१) मेहनत का काम या बौका बतन आदि जैसे काम । प्रयोग—वह अपने हाथों से कोई मोटा काम न करती (मान० (१)—प्रेमचंद, १)

(२) स्थूल या प्रारंभिक काम । प्रयोग—मोटा काम है वर्ष विभाजन का (ज्ञान०—यशपाल, ९०)

### मोटा खाना मोटा पहनना

साधारण स्थिति में गुजर करना । प्रयोग—स्त्री भी मिली तो पड़ो-लिखी, भोकीन, जबान की तेज, जिसे मोटा खाने और मोटा पहनने से मर जाना कबूल था (मान० (२)—प्रेमचंद, ५९)

### (समा० मुहा०—मोटा खाना)

### मोटा बोल मारना

कटु वचन बोलना । प्रयोग—बोल न मोटे मारिये, मोटी रोटी मार । जीत सहस्र मम हारिबो, जीते हारि निहार (दोहा०—तुलसी, ४२९)

### मोटा भाग

बड़ा हिस्सा । प्रयोग—उनकी घामदनी का मोटा भाग जो घब तक घपने भाजे-भाजियों के लिए खर्च होता था, कहीं बाहर खर्च होने लगा (बुंद०—अ० ना०, ८)

### मोटा भाग्य

सौभाग्य । प्रयोग—सुर तर पाके मुनि जनां, जहां न कोई



## मोटा रहन-सहन

जाह। मोटे भाग कबीर के, तहां रहे पर छह (कबीर ग्रंथा०—कबीर, ३१); मुरदास मन मुदित असोदा, भाग बडे, कर्मन की मोटी (सु० सा०—सूर, ७८३)

## मोटा रहन-सहन

साधारण तोर का लाना-पीना, रहना। प्रयोग—उसने कोई संताम नहीं, लेकिन रहन-सहन मोटा है (निर्मला—प्रेमचंद, ३८)

## मोटा वस्त्र

सस्ता वस्त्र। प्रयोग—भूमि सयन पट मोट पुगता (तुलसी—हि० श० सा०)

## (समा० मुहा०—मोटा अन्न)

## मोटा होना

(१) घमंडी होना। प्रयोग—मोटी दमकंध सो न दुबरो बिभीषण सो, बुझि परो रावरे की प्रेम पराधीनता (तुलसी—हि० श० सा०)

(२) सम्पन्न होना। प्रयोग—ताहिर अली मोचने लगे कौन चमार सबसे मोटा है जिसे धाज रुपये न दू तो चौ चपड न करे (रंग० (२)—प्रेमचंद, २२४); धन-संग्रह करने का कार्य तो इन्हीं मोटे-मोटे लोगों के हाथ में होता है (विप०—प्रेमी, २१); दीनों पर उपदेश का भी दांव चलता है, मोटों को कोई उपदेश नहीं करता (रंग० (१)—प्रेमचंद, ९६)

## मोटा-भोटा

साधारण दर्जे का। प्रयोग—बुद्धिया यही चाहती है कि यह सब X X मोटा-भोटा लार्ज और पड़ी रहें (मान० (१)—प्रेमचंद, ११); आप लोग राजा हैं, यह मोटी-भोटी चीजें किस मुंह से आप की भेंट करूँ (मान० (४)—प्रेमचंद, २०८)

## मोटा-महीन

अच्छा-बुरा। प्रयोग—कभी फाके की मोबत नहीं आई। मोटा महीन दिन में दो बार जरूर मयस्सर हो जाता था (रंग० (२)—प्रेमचंद, २२२)

## मोटी आमदनी

बहुत आमदनी। प्रयोग—घोपरो से उन्हें मोटी आमदनी है (बुद्ध०—अ० ना०, ७७)

## मोटी खाल,—चमड़ी

सहज ही घनर न पड़ने वाला। प्रयोग—मोटी चमड़ी पर घनर हुआ है (मैला०—रेणु, ३४); प्रकाश जो, ऐसी मोटी खाल तुम कहाँ से लाओगे (पैतरे—अशक, ९०)

## मोटी चमड़ी

## दे० मोटी खाल

## मोटी ढाल पकड़ना

सबल का पक्ष लेना। प्रयोग—घनिया फुंकार मगरकर उधर दोड़ी—तुम भी मोटी ढाल पकड़ने चले (गोदान—प्रेमचंद, २३१)

## मोटी तनक्काह

काफी रुपये तनक्काह पाना। प्रयोग—कूडा हम साफ करें और मोटी-मोटी तनक्काहें बेमारें (झांसी०—वृ० वमा, २४२)

## मोटी तह जमी होना

किसी प्रभाव का इतना गहरा होना कि घोर कोई असर न पड़े। प्रयोग—मतलबों की मलाल की जिस पर है जमी एक एक मोटी तह। हम उसे कह मिलन नहीं सकते हैं न वह मेल है मिलाप न वह (चुभतै०—हरिऔध, ५२)

## मोटी बात

(१) स्पष्ट, सरल बात। प्रयोग—ढाल कटने से घाप भी गिर पड़ेगे ऐसी मोटी बात भी वे न समझ सके (राधा० ग्रंथा०—राधा० दास, २३७); यह मोटी सी बात है और इसे एक बच्चा भी समझता है (मान० (४)—प्रेमचंद, १०७)

(२) बड़ी बात। प्रयोग—छोटेपन महं छाड़ है, कैसे मोटी बात। छेरी के मुंह में दिपो ज्यों पेठा न समात (वृ० स०—पुन्द, ९५)

## मोटी बुद्धि

कम बुद्धि। प्रयोग—पर यदि कोई मोटी बुद्धि वाला कहे कि जो कोई अवयव ही नहीं तो फिर यही क्यों नहीं कहते कि कुछ नहीं है (प्र० पी०—प्र० ना० मि०, १४०); मेरी मोटी बुद्धि इन कथणिक मुलों को मुल कह कर नहीं मानती (राधा० ग्रंथा०—राधा० दास, ७४६); अभय कुमार मोटी बुद्धि का तथा कुछ दीर्घमूर्खी धादमी था (ठेथाली० (२)—चतुर०, १२४); मोटी बुद्धिवाले, स्पूलदर्शी अनभिज्ञ लोग भला इन रहस्य की बातों को क्या समझ सकते थे



(पट्टम पराग—पट्टम० शर्मा, १७१); ऐसी मोटी अकल के आदमी से ज्यादा बकवास करना व्यर्थ था (कर्म०—प्रेमचंद, ४६)

### मोटी रकम

बड़ी रकम । प्रयोग—घोर फिर धनवानों की प्रशंसा तो महात्मा गांधी भी समय-समय पर जी खोल कर करते रहे हैं, पर शर्त यह रहती है कि वे चर्खा चलाते हों, सड़क पहनते हों और उनके चर्खा पन्थ में मोटी-मोटी रकम देते हों (पट्टम० के पत्र—पट्टम० शर्मा, १००)

### मोटी-मोटी बात

खास-खास बात, स्थूल बातें । प्रयोग—मोटी-मोटी बातों को बड़े आग्रह से कहते सुनते हैं (भा०ग्रं० (३)—भारतेन्दु, ९५३)

### मोड़ना

(१) रुचि उत्पन्न करनी । प्रयोग—विश्वविद्यालयों के अधिकारी इन स्थानकों को यदि लोक साहित्य की ओर मोड़ सकें तो वे अनेक महार्थ रत्नों को जुटा ले पायेंगे (अशोक०—ह० प्र० द्विव०, १६३)

(२) दिशा परिवर्तित कर देना । प्रयोग—यहां से नाटक कुछ इस तरह मोड़ लेता X X है कि उसका जवाब नहीं (पेंतरे—अशक, २७)

### मोम का पुतला

(१) नकली, कृत्रिम । प्रयोग—यह मैं क्या देखता हूँ कि घर बाग पेड़ और मनुष्य X X ये वास्तविक सत्य नहीं, मोम के पुतले भर हैं (कला०—पंत, ५९)

(२) सहज ही प्रभावित होनेवाला ।

### मोम की गुड़िया

अत्यन्त कोमल, भोली । प्रयोग—वह पिघल गये हैं उस पर ही जो निरी मोम की गुड़िया है (नूर०—भक्त, ५२)

(समा० मुहा०—मोम की मरियम)

### मोम की नाक

(१) सहज ही विचार बदलने वाला व्यक्ति । प्रयोग—ये बिचारे तो मोम की नाक हैं, चाहे जिधर फेर दो । (भा० ग्रं० (३)—भारतेन्दु, ९४०)

(२) कोमल-हृदय होना । प्रयोग—मोम की नाक, मोम

दिल होवें नाक मल-मल करें न नाकों दम (बोल०—हरि-औध, ७३)

(३) सहज ही विश्वास कर लेने वाला व्यक्ति ।

### मोम बनना,—होना,—दिल होना

कोमल हृदय होना । प्रयोग—देखा न ! मां जी को कंसा अपनी ओर धुलका लिया—मोम बन गई (तितली—प्रसाद, ४६); देख सका कि यह नारी मोम नहीं है, उसमें धार भी है (जय०—जेनेन्द्र, २५-२६); मोम की नाक, मोम दिल होवें नाक मल मल करें न नाकों दम (बोल०—हरि-औध, ७३)

### मोम होना

दे० मोम बनना

मोम-दिल होना

दे० मोम बनना

### मोर-तोर

घपने-वराण्य का भाव । प्रयोग—मोर-तोर करि जरे धपारा, मृगशिष्ण्यां भूठी संसारा (कबीर ग्रंथा०—कबीर, २३३)

### मोरचा धामना

मोरचे पर लड़ने के लिए लड़े होना । प्रयोग—एक दिन मोरचा धामना पड़े तो भामने को जगह न मिले (रंग० (१)—प्रेमचंद, ३२)

### मोरचा बनाना

लड़ने या मुकाबले की तैयारी करना । प्रयोग—वर काका, वह तो कलकला से मोर्चा धारंभ करके दिसांगमुख से फिरंगी राज समाप्त करना चाहता है (ब्रह्म०—दे० स०, ११८)

### मोरचा लेना

(१) युद्ध करना । प्रयोग—मालवा के सुल्तान से मोर्चा लेने के लिये पहला और बड़ा अह्दा यही था (मृग०—वृ० वर्मा, ९९)

(२) संघर्ष करना । प्रयोग—पिछले कई वर्ष से, इसीलिए, मैं बारबार अपनी भावुक वृत्तियों से मोर्चा लेता आया हूँ (बाहर०—देव०, १); मैंने स्वयं उसे कई दिन तक लगातार मोरचा लेते देखा था (धरती०—वि० प्र०, १५३)

### मोल न होना

कोई वकत न होनी । प्रयोग—जो हमें बेमोल करता ही



रहे कुछ नहीं है मोल ऐसे मोल का (चुभते०—हरिऔध, ५०)  
(समा० मुहा०—मोल बहुत कम होना)

### मोल लेना

भक्त बना लेना। प्रयोग—बस-बस, मैं इतना ही चाहती थी। आप ने मुझे मोल ले लिया (रंग० (१)—प्रेमचंद, ७४); ऐसा शब्द नहीं मिलता जिससे कृतज्ञता प्रकट करूँ, आपने मुझे सदा के लिये मोल ले लिया (सुकुल०—निराला, ५२)

### मोह की धार में बहना

मोह में डूबे रहना। प्रयोग—भली भई मुधि रही मूर, नतु मोह धार में बहते (सु० सा०—सूर, ४१६८)

### मोहिनी डालना,—लाना

माया के बस में करना, मोह लेना। प्रयोग—फिरि चितवत हरि हमे निरखि मल, मोहत मोहिनि डारी (सु० सा०—सूर, १३५८); जिन्ह निज रूप मोहिनी डारी कीन्हें स्वयं नगर नर नारी (राम० (बल)—तुलसी, २३७); ग्याम सों बोलि गुगल काहो सु गुवातिन पै मनी मोहिनी डारी (जग०—पद्माकर, ४४); सेनापति ग्याम तुम नीके रस बस भग जानति हो तुम्हें उन मोहिनी सो लाई है (क० र०—सेनापति, ४१)

### मोहिनी लाना

#### २० मोहिनी डालना

### मौका हाथ लगना

अवसर मिलना। प्रयोग—दोड़ो, अबछा मौका तुम लोगों के हाथ लगा है (राधा० ग्रंथा०—राधा०दास, १२१)

### मौज उड़ाना

आनन्द लेना। प्रयोग—अरे, और तो घोर, हमारे बच्चे, फुफेरे, ममेरे, मौमेरे भाई जो इसी रियासत की बटोलत मौज उड़ा रहे हैं × × वह भी मुझ से जनते हैं (गोदान—प्रेमचंद, १३)

(समा० मुहा०—मौज करना,—पानी लेना,—मनाना)

### मौत का शिकार होना

मृत्यु को प्राप्त होना। प्रयोग—मेवाड़ के गाढ़े समय में काम आने वाले बीर मोड़ा व्यर्थ ही मौत के लिए शिकार होंगे (विप०—प्रेमी, ३१)

(समा० मुहा०—मौत का निवाला होना)

### मौत का सिर पर खेलना

मरने को होना, घापति समीप होनी। प्रयोग—यही समझ लो कि मौत हरदम सर पर खेलती रहती है (मान० (१)—प्रेमचंद, २५४)

### मौत का हाथ होना

मौत के बश में होना। प्रयोग—बया बचा रह गया विचार करें मौत का हाथ है नहीं किसमें (चुभते०—हरिऔध, ६५)

### मौत के घाट उतारना

मार डालना। प्रयोग—उन्होंने दोनों मंगल सरदारों को मौत के घाट उतार दिया (विप०—प्रेमी, १०); मा बटोलत हृम देते हैं कि हम शम्स को मौत के घाट उतार दिया जाय (कठ०—दे० स०, ३९१); दुनिया के दुश्मनों को है ज्ञात, लड़नेवाले उतर जाए मौत के घाट (बुद्ध०—वचन, ४४)

(समा० मुहा०—मौत के मुंह में डालना)

### मौत के मुंह में जाना

मरना। प्रयोग—मौत के मुंह में चले हैं ना रहे, है मगर हम दूसरों पर मर रहे चुभते०—हरिऔध, १३१)

### मौत के मुंह में भोंकना

जान बूझ कर खतरनाक काम करना। प्रयोग—भारतवर्ष में भी कभी राजाओं की सेना में शूर-वीर, रावत, भाट वह वह कड़के (कड़वे) कवित कहते थे कि लोग जानें अपनी मौत के मुंह में भोंक देते थे (पद्म पराग—पद्म० शर्मा, २५७)

(समा० मुहा०—मौत के मुंह में कूद पड़ना)

### मौन तोड़ना

चुप्पी छोड़नी, बोलने लगना। प्रयोग—थोड़ी देर तक तीनों मौन रहे, उस मौन को कुमारगिरि ने तोड़ा (चित्र०—मग० वर्मा, १४४)

(समा० मुहा०—मौन तजना)

### मौन बांधना

चुप रहना, न बोलना। प्रयोग—बिनक मौन बांध बिन बोला (जायसी—हि०श०सा०); जौ बोलै सो मानिक मूंगा। नाहि तो मौन बांध होइ मूंगा (जायसी—हि०श०सा०)

(समा० मुहा०—मौन गहना,—ग्रहण करना,—धारण



करना,—रहना,—लेना,—सम्हालना)

म्याऊं का ठौर

खतरनाक स्थिति; वह जो सहज पकड़ में न आए। प्रयोग

—पर वह बिना तो म्याऊं का ठौर भी क्योंकि न तो

उसका स्वामी हमारे जागते हुए सोता या घोर न उसके जागते हुए हम ऐसे सन्दृष्टान का साहस कर सकते थे (अतीत०—महादेवी, १०)

(समा० मुहा०—म्याऊं का मुंह)



## य

यम का केश पकड़ना

मृत्यु का आना। प्रयोग—जब जम घाड़ केश ले पकरें, तब हरि को नाम छड़ावन (कबीर ग्रंथा०—कबीर, २८९)

यम का डंडा लगना

मृत्यु निकट आनी। प्रयोग—कहत कबीर तब ही नर जागे, जम का डंड मूँद महि लागे (कबीर ग्रंथा०—कबीर, ३००)

यम का पाश

(१) मृत्यु। प्रयोग—वेद पुरान कहत जाकी साखी, तीरथि ब्रति न छूटै जम की पासी (कबीर ग्रंथा०—कबीर, १८४)

(२) बड़ी भारी विपत्ति आनी।

(समा० मुहा०—यम की फांसी, यम के सोटे खाना)

यम की फांसी पड़ना

मृत्यु होनी। प्रयोग—मन मकुँद जिह्वा नारायण परै न जम की फांसी (कबीर ग्रंथा०—कबीर, २६४)

यम के मुह से छड़ाना

मरते हुए की रक्षा करनी। प्रयोग—रेसम लाल कोयरा के एकलौते बेटे को जम के मुँह से छुड़ा बिपा (मैला०—रेणु, १८३)

यमपुर को घर बनाना

मृत्यु को प्राप्त होना। प्रयोग—देख जनक हठि बालक एह। कीन्ह चहत जइ जमपुर गेह (राम० (बाल) —तुलसी, २८५)

(समा० मुहा०—यमघाम को कूच करना, यमपुर पहुँचना, यमपुर से निमंत्रण आना)

यम-यातना होना

अत्यंत कष्टदायक होना। प्रयोग—भोग रोगसम भूषण भाऊ, जम जातना सरिस संसार (राम० (अ)—तुलसी, ४३३)

यश कमाना,—पाना,—लेना

श्रेय लेना, कपाति पानी। प्रयोग—आजु राम सेवक जमु लेऊँ (राम० (अ)—तुलसी, ५८९); समर बानि मन करि



जमु पावा (राम० (सुं)—तुलसी, ८१७); पिछले सत्साहस  
संशाम में रावसाहब ने बड़ा यश कमाया था (मोदान—  
प्रेमचंद, १२)

(समा० मुहा०—यश लुटना)

**यश का टीका**

यश । प्रयोग—बनो तिहारी उनकी ऊँची, छापी जस की  
टीकी (सू० सा०—सूर, ४२६७)

**यश गाना**

(१) प्रशंसा करनी । प्रयोग—कठेहि आदर देत सगाने,  
यहै सूर जस गाइये (सू० सा०—सूर, ३१८८); बहू मादिक  
गावहि जस जामू (राम० (बाल)—तुलसी, ७८)

(२) एहसान मानना ।

**यश पाना**

दे० यश कमाना

**यश में धब्बा लगाना**

पूर्व प्रतिष्ठित सम्मान में अंतर पड़ना । प्रयोग—हरेक  
मनुष्य में तीन तरह की हानि हो सकती है एक अपवाद  
करके दूसरे के गज में धब्बा लगाना, दूसरे शरीर की छोट,  
तीसरे मान का नुक्सान करना (परीक्षा०—श्री० दास, १२४)

**यश लेना**

दे० यश कमाना

**युग बीत जाना**

बहुत दिन या समय बीत जाना । प्रयोग—निमित्त नकोर  
नेन नहि लावत, ससि जोवत जुग बीते (सू० सा०—सूर,  
४४४९)

**युवराज करना**

युवराज का पद देना । प्रयोग—नाथ रामू कश्मिहि  
युवराज (राम० (अ)—तुलसी, ३७५)



### रंग उड़ना

भय या लज्जा से चेहरे की रंगत जाती रहनी । प्रयोग—  
विवरन भयउ निपट नरपालू (राम० (अ)—तुलसी, ३९९);  
बीजगुप्त के मुख का रंग उतर गया (चित्र०—मग० वर्मा,  
८४); नैना के चेहरे का रंग उड़ गया (कर्म०—प्रेमचंद,  
२११)

### रंग उतरना

(१) प्रभाव दूर होना । प्रयोग—नटखटी का रंग जो  
उतरा नहीं तो किसी ने क्या लगा टीका लिखा (सुमते०—  
हरिऔध, १२०)

### (२) दे० रंग उड़ना

### रंग करना

मौज में दिन बिताना । प्रयोग—मुखल हलधर अरु श्रीदामा  
करत नाना रंग (सु० सा०—सूर, ८३१)

### रंग खुलना

(१) शरीर का रंग साफ होना । प्रयोग—मोना का रंग  
कितना खुल गया है (गोदान—प्रेमचंद, ३०४)

(२) प्रभाव और तीव्र एवं स्पष्ट होना । प्रयोग—इनके  
द्वारा हमारे इष्ट के स्वरूप का पूर्ण विकास दिखाई पड़ना  
है—इनके बीच उनका (इष्ट का) रंग धीरे खुल पड़ता है  
(चित्ता० (१)—शुक्ल, ३६)

(३) चित्रों में रंग का खिल उठना ।

### रंग चढ़ना

प्रभाव होना । प्रयोग—देखा देली भगति है, कदे न चढ़ई  
रंग (कबीर ग्रंथा०—कबीर, ४८); सूरदास जो रंगी श्याम रंग  
फिरि न चढ़ै रंग पातै (सु० सा०—सूर, ४१६५); सलीम का

हृदय अभी इतना काला न हुआ था कि उस पर कोई रंग  
ही न चढ़ता (कर्म०—प्रेमचंद, ३४८); मुना है, उन पर  
इस गौतम का अच्छा रंग चढ़ा है (देवाली० (१)—चतुर०,  
३४७); मुझे डर है कि गुजराती हिन्दी का रंग आपकी  
जुवान धीरे कलम पर न चढ़ जाय (पट्टम० के पत्र—पट्टम०  
शर्मा, ५३)

### रंग चढ़ाना

(१) बहकाना । प्रयोग—पर वहाँ पार लोगों ने जो रंग  
चढ़ा लिया था वह न उतरा (गु० नि०—बा० मु० गु०, ३१६)

(२) किसी बात को धीरे प्रभावपूर्ण बनाना । प्रयोग—  
अधेड़िन ने बाहर से ही रंग चढ़ाया—जगो बटो, राजा क्या  
है, मानो इन्द्र है (मृग०—वृ० वर्मा, १२७); धामिबार ने  
तुम्हें स्त्री-सौंदर्य का कल्पित चित्र दिखाया है और मरिचा  
उस पर रंग चढ़ाती है (कामना—प्रसाद, ३९)

### रंग चोखा करना

अधिक प्रभावपूर्ण बनाना । प्रयोग—समर ने सारा वृत्तांत  
कह सुनाया । रंग चोखा करने के लिए दो-चार बातें अपनी  
तरफ से जोड़ दीं (कर्म०—प्रेमचंद, ५४)

### रंग छोड़ना

(१) रंग गिटना । प्रयोग—धीरे धीरे लोई भई, तऊ न  
छाड़ै रंग (कबीर ग्रंथा०—कबीर, ४८)

(२) प्रभाव दूर होना ।

### रंग जमना

(१) प्रभाव पड़ना । प्रयोग—जैहि के लिए प्रेम रंग  
जमा । का तेहि भूख मोद बिसरामा (पट०—जायसी,  
१२१४); साहस बटोरकर काधी के उन दिग्गज श्रीमानों



को मैंने अपनी कविता गुना ही दी। और रंग जम गया (अपनी खबर—उग्र, १०७); पुलिस का रंग जमता गया (गदन—प्रेमचंद, २७९); उनके बाद किसी दूसरे का रंग न जमता था, इसलिए उनकी बारी सब के बाद आती थी (सु० सु०—सुदर्शन, १६१)

(२) आनंद होना, मजा घाना। प्रयोग—कोई गाने बजाने का रंग जमाता है, कोई धोलधप्पे लड़कर, हंसाता हंसाता है पर ऐसे आदमियों से किसी तरह की उम्मेद नहीं हो सकती (परीक्षा०—श्री० दास, १३५); घनी भैंरो नहीं आया, उसके बिना रंग नहीं जमता (रंग० (१)—प्रेमचंद, २८)

(३) चौपड़ में रंग की गोटी का किसी अच्छे घर में बैठना जिससे जीत हो।

### रंग जमाना,—बांधना

प्रभाव डालना, रोआव लगाना। प्रयोग—दो-चार मन भूसा तो खाली अपना रंग जमाने को देता हूँ (गोदान—प्रेमचंद, २) कहो बंधू, क्या हाल है? आज तो तुमने बड़ा रंग जमाया? (जहाज०—जोशी, २३४); ब्राह्मण ने कंसा रंग समाज पर बांध रखा था (अपनी खबर—उग्र, ६२); या तो दावत दी न जाय, दी जाय तो रंग बांध दिया जाय (कठ०—दे० स०, १०७)

### रंग जाना

पूर्ण प्रभाव होना। प्रयोग—फिर वह सोचता, यह सब विशोभ उस घसंतोष के संस्कार का ही फल है जिसमें उसका अंतर रंगा गया है (शेखर (२)—अज्ञेय, २२३)

### रंग देखना

चाल-ढाल, व्यवहार देखना। प्रयोग—बहुत दिनों से तुम्हारे रंग देख रहा हूँ, आज सारी कसर निकाल लूंगा (रंग० (१)—प्रेमचंद, १८४)

### रंग न छोड़ना

अपना स्वरूप या स्वभाव न छोड़ना। प्रयोग—एकल हू रह सज्जन खल, सज्जन न अपना रंग मणि विष-हर विषकर सरप, सदा रहत एक संग (वृ० स०—वृन्द, १०१)

### रंग पकड़ना,—पर आना

(१) तेजी पर घाना, जोर पकड़ना। प्रयोग—मामला रंग पकड़ रहा है (चोटी०—निराला, १३८)

(२) कपड़े आदि पर रंग चढ़ना। प्रयोग—ज्यो बिनु पट पट गहत न रंग को, रंग न रसे परे (सु० सा०—सूर, ४६०४)

(३) प्रभाव में आना। प्रयोग—वह गृहिणी का आदर्श त्यागकर तिलियों का रंग पकड़ रही है (गोदान—प्रेमचंद, १६८)

### रंग पर आना

#### दे० रंग पकड़ना

#### रंग पर लाना

अनुकूल बनाना। प्रयोग—तब से नहीं राह पर उस भूले को मैं ला पाई हूँ कैसे उसे रंग पर लाऊँ सोच सोच घबड़ाई हूँ (नूत०—मक्त, ७८)

### रंग फीका करना या होना

(१) विशेष दबदबा न रहना या न रहने देना। प्रयोग—असली बात यह है कि गृहदेवियों का रंग फीका करने में इन्हें आनन्द आता है (मान० (१)—प्रेमचंद, २८७); कभी यों न पतले हुए दिन किसी के यों कभी हुए रंग किसी के न फीके (चुमते०—हरिश्चंद्र, १८५)

(२) मजा न घाना, उत्साह या महत्त्व में कमी होनी। प्रयोग—कवि जी (शंकर जी) के न जाने से रंग फीका रहा (पट्टम० के पत्र—पट्टम० शर्मा, ३२)

### रंग फीका पड़ना

(१) आनंद में कमी आ जानी। प्रयोग—एक गिरधर बिना, फीके भए सब रंग (सु० सा०—सूर, ४५६२)

(२) चेहरे का पबराहट के कारण पक् हो जाना।

(३) रोवदाव में कमी होनी।

### रंग बंधना

(१) प्रभाव होना। प्रयोग—जरा रंग बंध जाय फिर तो इकट्ठे बैठकर पिये लारंगे (पैतरे—अदक, १२८)

(२) जोर पकड़ना।

### रंग बदलना

(१) स्थिति में अंतर आना। प्रयोग—हमारा तैवर बदलते ही बेतरह जाय बदलने वाले राजा महाराजाधों का रंग बदल जाता था (चुमते० (भु)—हरिश्चंद्र, २)



(२) विचारों में परिवर्तन होना । प्रयोग—सन् १८८५ ई० तक तो हमने ऐसा रंग बदला कि हमने जन्मदाता तथा स्वामी भारतेन्दु जी के प्रकाल-कालप्रसिद्ध होने पर X X हमने एक कालम भी काला न किया (राधा० ग्रंथा०—राधा० दास, ५०१)

(३) कूड़ होना; नाराज होना ।

### रंग बरसाना

आनंद देना । प्रयोग—प्रेम सों लपेटी कोऊ तिपट घनूठी तान, मो तन चिताय माय लोचन दुरायगी । तब ते रही हो धूमि भूमि जकि बावरी हूँ, मुर की तरंगनि में रंग बरसायगी (घन० कविस—घना०, १८४-१८५)

### रंग बांधना

दे० रंग जमाना

### रंग बिगड़ना या बिगाड़ना

(१) हावत बिगड़नी, रोवदाव में कमी होनी या कर देनी । प्रयोग—रंग बिगड़ा कम न, बेसमभी मगर रंग में अपने सदा भूली रही (चुमते०—हरिऔध, ५७)

(२) मजा खराब होना या करना । प्रयोग—रंग बिगड़ा जो सौरी का, धरो में तो वे क्यों पैटे ? (मर्म०—हरिऔध, ३४)

### रंग भरना

(१) बात को बड़ा-बड़ा कर, अतिरंजित करके कहना । प्रयोग—आप सोच रहे होंगे मैंने बालों में इतना रंग क्यों भरा, केवल घटना का यथार्थ वृत्तांत क्यों न कह सुनाया (रंग० (१)—प्रेमचंद, १७८)

(२) रंगना ।

### रंग में डरना

किसी प्रभाव में पूरी तरह लीन होना । प्रयोग—स्वाम मुरलि के रंग डरे (सु० सा०—सुर, १८५१)

(समा० मुहा०—रंग में डूबे रहना)

### रंग में भंग पड़ना

आनन्द में बिघ्न पड़ना । प्रयोग—इधर यों हुआ रंग में भंग (साकेत—गुप्त, ३८); रंग में भंग हो गया, जो हो किस तरह तो उमंग दिखलावें (बोल०—हरिऔध, १३८)

### रंग में रंग जाना

किसी भाव या प्रभाव में तल्लीन हो जाना । प्रयोग—रंग तुम्हारे रातेडें चढ़ें न गगन होइ मुर (पट०—जायसी, २७१७); जे पहिले मन रंगे स्वाम रंग अब न चढ़ें रंग आन (सु० सा०—सुर, ४६०३); राम की लीह भरोसो हे राम की, राम रंग्यो, कवि राख्यो न केही (कवि०—तुलसी, १२६); आज घनं बिन काज खगो तिनही सों पगो जिन रंग रण हो (घन० कविस—घना०, १९८); परबस भए मदनमोहन के रंग रंगे सब त्यागी (भा० ग्रंथा० (२)—भारतेन्दु, ४६); १८ वीं शताब्दी के बाद के साहित्य में श्री रामचरित को भी माधुर्य भावना के रंग में रंगना पड़ा (हिन्दी साहित्य—ह० प्र० दिव०, ९३); योग जप तप रंग में तो क्या रंगे जो न परहित रंग में मन हो रंगा (चोखे०—हरिऔध, १५२); तुम पवित्र के रंग में रंगे मैं हूँ दक्षिणामूर्ती भारत (स्वर्ण-धूलि—पंत, ६)

### रंग में रलना,—रांचना

पूरे प्रभाव में होना । प्रयोग—दिन-दिन बढ़त नीर नलिनी ज्यों, स्माम रंग में नैन रहे रति (सु० सा०—सुर, ४४७८); अब हरि धीरे ही रंग रांचे (सु० सा०—सुर, ४६४५)

### रंग रांचना

दे० रंग में रलना

### रंग लगना

प्रेम होना, अनुरक्त होना । प्रयोग—साप संग जाकी हरि रंग लागे । घन घन सों जन पुरुष सभागा (कवीर ग्रंथा०—कवीर, २६७)

### रंग लाना

(१) प्रभाव या गुण दिखलाना, बढना । प्रयोग—नैन रहे रंग लाई, अब बेगल कहन न जाई । (कवीर ग्रंथा०—कवीर २९८); तो मेहरबान, यह मामला तो कुछ रंग लाएगा (मुले०—मग० वर्मा, ४५८)

(२) प्रभावित करना ।

### रंग होना

(१) घनुराग होना । प्रयोग—कुड़गु कोपु तजि रंग-रसी करति जूबति जग, जोड़ । पावस, गूढ़ न बात यह, बूढ़न हूँ रंग होइ (बिहारी रत्ना०—बिहारी, ४०४)

(२) रोवदाव होना ।



### रंग-रंग

(१) तौर लगेका । प्रयोग—उसे अपनी स्त्री के रंग-रंग का कुछ परिचय दूसरों से मिल चुका था (मान० (१)—प्रेमचंद, ४); रंग-रंग क्यों मिलता जब वह रंग-रंग में न होता (मर्म०—हरिऔध, ३)

(२) हातल ।

### रंग-भूमि पर (में) उतरना

अभिनय करना । प्रयोग—उसी को उस दिन क्यों नहीं रंगभूमि पर उतार देते ? (वाण०—ह० प्र० द्वि०, २९०)

### रंग-रांवी या रंग-राता होना

धनुरक्त होना, प्रभाव में होना । प्रयोग—इति कबोर रंग राता, मित्यो जग जोवन दाता (कबीर ग्रंथा०—कबीर, २९९); मन, बज, कर्म मोषि एकै मत, नंद-नंदन रंग-रांवी (सु० सा०—सूर, ४३०४)

### रंगना

(१) मिलना । प्रयोग—नेहकुली को बुकाम भी हो जाता है तो अम्बारों के कालम रंगे जाते हैं (पद्म० कैपत्र—पद्म० शर्मा, ५९)

(२) तस्वीन होना ।

(३) प्रभाव डालना ।

### रंगरेलियां

मोज-मस्ती । प्रयोग—तुमको रंगरेलियां सुझी हैं, मेरी फटती है छाती (सु०—भक्त, ४)

### रंगरेलियां मलाना

(१) धान्य मलाना । प्रयोग—इस निर्जन स्थान में कौन इस वक्त रंगरेलियां मना रहा है (मान० (३)—प्रेमचंद, १४६) (—)

(२) बिहार करना । प्रयोग—देखिए प्रयोग (१) में (—)

(समा० मुहा०—रंगरेलियां करना ।)

### रंगा स्यार

होयी-घोलेबाज । प्रयोग—फिर क्यों न हो तुम्हीं तुम्हें सब धोर बाज दिन है रंगे गिधार कहां न ? (मर्म०—हरिऔध, ९७); फिर मुझे भी समाज के इन रंगे गिधारों से घुसा हो रही है (मान० (४)—प्रेमचंद, ४१)

### रंगा होना

होयी होना । प्रयोग—तुम जैसे रंगे हुए पतियों का उखार नहीं करते (मान० (७)—प्रेमचंद, ५१)

### रंगीन मिजाज के होना, रंगोले होना

तबियतदार आदमी, रसिक । प्रयोग—रंगीन मिजाज तबियतजी ने अपना फियाना अंग्रेजों की चायानी देकर ऐंगियाई डंग पर लिखा (गु० नि०—वा० मु० गु०, २६२); फिताजी रंगीले आदमी थे, स्वर भी उन्होंने बड़ा जगड़ा पाया था (पेंतरे—अइक, १३)

(समा० मुहा०—रंगीली तबियत)

### रंगीन होना

(१) बहारदार, सुहावना रसपूर्ण । प्रयोग—हमो-ठट्ठा-मजाक धोर रंगीन किस्सा कहानी उन्हें पसन्द था (गु० नि०—वा० मु० गु०, २६१); कामना एक गर्वदुर्गं धोर सरल हृदय की स्त्री है । रंगीन तो है, पर निरीह इन्द्र धनुष के समान उदय होकर क्षीय होने वाली है (कामना—प्रसाद, ४७)

(२) रसिक होना । प्रयोग—एक पत्रनेश है । रंगीन है । कहता अच्छे डंग में है (झासी०—वृ० वर्मा, ७९)

### रंगीनी जाना या होना

मोज-मस्ती घानी या होनी । प्रयोग—जो सकी जी से न रंगीनी निकल रह सकेवा रंग न तो माया रंगे (सुमते०—हरिऔध, १२३)

### रंगोले होना

### रंगीन मिजाज के होना

### रंगे हाथ

सुरंग; बुरा काम करते हुए सप्रमाण पकड़ा जाना । प्रयोग—उन्हीं दिनों एक दिन, छापा मार कर बुनार की पुलिस ने मट्टपुर मूहले के जकारियों धोर उनके सगियों को रंगे हाथ गिरफ्तार कर जिया था (अपनी खबर—उप, २५); कुरसी पर आगे की धोर जिसक हल्की सलार के बाद रंगे हाथों पकड़े गए धोर की तरह वह बोली—एक रात जकर तहरा था मट्टपुर (मै कोठे०—अ० ना०, १५४); पाज सोझी ने मुम्हें रंगे हाथों पकड़ जिया (रंग० (१)—प्रेमचंद, ४०५)



### रकम उड़ाना

(१) खण्ड पाना । प्रयोग—विद्या-विद्या कर यह रकम उड़ाई जाती है (सैदा०—प्रेमचंद, १४)

(२) खण्ड खर्च करना । प्रयोग—मेरे भाई ने एक-एक को दोनों हाथों में बेचकर प्राप्त रकम को या तो जुधा में जपवा गांजा-बरस के धुआँ में उड़ा दिया (अपनी सखर—उग्र, २५)

**रकम खा जाना,—दवाना,—पचा जाना,—मारना**  
 दूसरे के धन को हड़प जाना । प्रयोग—परन्तु दूसरे रकम नहीं पच सकती नाबिश करके दमभर में खपा धरा लिया जायगा (परीक्षा०—पी० दास, १८७); दो ही बार दिन में पिशाच दोबान दस हजार की सखरी रकम मार लेगा (मा० मा० (१)—कि० गो०, ३०); श्री बाँके बिहारी जी की रकम दवाने का किसी को साहस न होता था (सैदा०—प्रेमचंद, ८); जब इस घोपली में व्यापारी लोग सैकड़ों की रकम डकार जाते हैं तो रमा बिन्टो पर एक घाना लेकर ही संतुष्ट क्यों हो जाये (गवन—प्रेमचंद, ४४); कोई कहता है सरकारी रकम खा गये थे (गवन—प्रेमचंद, १५०); असामियों को एक दूसरे से लड़ाकर रकमें मारते थे (गोदान—प्रेमचंद, १२८)

(समा० मुहा०—रकम डकारना)

### रकम दवाना

दे० रकम खा जाना

### रकम पचा जाना

दे० रकम खा जाना

### रकम मारना

दे० रकम खा जाना

### रक्त की नदी बहना या बहाना

समाप्तान मूड होना—मारकाट होनी या करनी । प्रयोग—बड़ी कठिनाता से हमारे सैनिक आपके निदेश की प्रतीक्षा में अपने को रोके हुए हैं नहीं तो × × उसी समय वहाँ रक्त की नदी बह जाती (वाग०—ह० प्र० टि०, २५८); विपत्ति केवल उन्हीं पर तो नहीं है, हमयोगी की भी रक्त की नदी बहानी चढ़ेगी (भूत०—प्रसाद, ३६)

### रक्त के आँसू रोना

बहुत दुखी होना । प्रयोग—तब जम्हो कहाँ मिलेगी जो

जमा-जमा कर मूलधरें उड़ाने की िया करेगी । रक्त के आँसू न रोने, तो कह देना कोई कहता था (गवन—प्रेमचंद, १७७)

### रक्त में होना

जन्म में होना, मरणा सम्बन्ध होना । प्रयोग—संगीत मेरे रक्त में है (दुष्प्राप्त—दे० स०, ४६)

### रक्त लेना

(१) महापक होना या रखा करना । प्रयोग—वा तुम शीतल ना हम विरले रखि लीनी हरि मेरी (कबीर प्रभा०—कबीर, २२६); धरती सरस होइ सब लाला । है कोई एहि राख बिधाना (पद०—जायसी, २१७); राखन नाहि कोउ करनानिधि, अलिकल राह सखी (सु०सा०—सुर, ४३३); जहाँ सब सकट, तुरंत सोच, जहाँ मेरी साहस राखे रमेरा (कवि०—सुलसी, १३४); मन तुम मोझी ताहि नेकु राखे रहियो जू, एहो मन धानद जू परे मृतमाल ही (धन० कवि०—धन० ११६); बिपना दिन राखे नहि कोई (प्रेम सा०—ल० सा०, १८); महाराज × × हम सब की रक्त लिया (इशा०—इशा०, १०३); बाल व्याज के गाल मो राखि लियो नहि हाथ (राधा० प्रभा०—राधा० दास, ६५)

(२) किसी रक्त को पानी रूप में घर में रख लेना । प्रयोग—रईस उससे व्याहृन करेगा—रक्त लेगा (मान० (४)—प्रेमचंद, १२२)

### रग पर सखर मारना

समांतिक प्रहार करना । प्रयोग—यह देखकर बिता हुई कि आपने हममें कुछ पोछा सा परिवर्तन कर दिया है । मुझे घर है कि कहीं रग पर सखर न मार दिया हो (पदम० के पत्र—पदम० जर्मा, ६९)

### रग-रग पहचानना

घबराती तरह जानना । प्रयोग—मैं तो इसकी रग-रग पहचानती हूँ (कठ०—दे० स०, १९)

(समा० मुहा०—रग-रग जानना, रगरग से वाकफ होना)

### रग-रग में चुपक बज उठना

बहुत पुलकित हो उठना । प्रयोग—इसका प्यान जाते ही उसकी रग-रग में चुपक बज उठते हैं (दुष्प्राप्त—दे० स०, २९९)



### रगड़ कर

बहुत मेहनत से, कस कर । प्रयोग—डाटाहीन मजूरो से रगड़कर काम लेते थे (गोदान—प्रेमचंद, २०८)

### रगड़ कर चंदन करना

एकदम चूर या नष्ट कर देना । प्रयोग—जाति के रगड़े बढ़ाते जो रहे मान उनका क्यों रगड़ भवन करे (बोलो—हरिऔध, २३३)

### रगड़ देना

(१) सजा देना, बदला लेना । प्रयोग—उम्हें जब मालूम होगा कि मेरे पीछे एक बल है, कोई है जो मेरी मुर्तीबल में भी मेरा है, तो इशामतल फिर पटवारी बनेगा और इन दुश्मनों को एक-एक करके रगड़ डालेगा (बोने—रा० रा०, १५१); दो रगड़ जो रगड़ सकी सब की (चुभते—हरिऔध, ३२)

(२) किसी के प्रतिकूल मत देना या कार्यवाही करना ।

### रगड़-भगड़ मचाना

भगड़ा होना । प्रयोग—मेरे ही कारन तो यह रगड़-भगड़ मचो हुई है, नहीं तो साहब को तुमसे कौन दुसमनी थी (रंग० (१)—प्रेमचंद, २२०)

### रगड़ा जाना

तकलीफ पाना । प्रयोग—बड़ी तो रगड़े जाते हैं, किया करते हैं जो रगड़े (मर्म०—हरिऔध, ८६)

### रगें डीली पड़ना

पक जाना । प्रयोग—क्यों न पड़ जाय रगें डीली क्यों भला सिर न घूम जाता हो (चुभते—हरिऔध, १४५)

### रगों में बिजली दौड़ना

साहस और उत्साह होना । प्रयोग—जाय बिजली दौड़ क्यों रग में नहीं काम क्यों सरगमियों से हम न लें (बोलो—हरिऔध, ११४)

### रच-रच कर

(१) बहुत होशियारी और कारीगरी के साथ । प्रयोग—जा तन रचि रचि भूषन पहिरे भाति-भाति के साथ (सू० सा०—सूर, २४२)

(२) सूब बढ़ा-बढ़ा कर । प्रयोग—बतियां रचि रचि कहल नयानी (सू० सा०—सूर, ४७१२)

### रज बराबर

आर्थिक सुख । प्रयोग—घन विभव की बात क्या जिनकेबड़े रज बराबर से समझो राज को (चुभते—हरिऔध, ८०)

### रण में रज रखना

रण जीतना । प्रयोग—सोनित बैरिन को बरसाय है, राज सता रन में रज राखी (मति० मक०—मतिराम, १८०)

### रण-बांकुरा होना

वीर होना । प्रयोग—घगद हनुमत अनुचर जाके रन बांकुरे वीर प्रति बांके (राम० (लं)—तुलसी, ९०२)

### रति जोड़ना

प्रेम करना । प्रयोग—गोकुल की मनि विभुवन नायक, दासी सी रति जोरी (सू० सा०—सूर, ४२९१)

### रत्ती भर

बहुत थोड़ा सा, जरा सा । प्रयोग—जाकी जेता निरमिया ताकी तेता होइ । रत्ती घटे न तिल बंधे, जो सिर कूटे कोइ (कवीर ग्रंथा०—कवीर, ५८); हिन्दी के पुराने और नये मुलेखकों और सेवकों को उनके दर्जे के अनुसार जैसी कुछ इज्जत उसके जो में है उसी हिसाब से एक रत्ती भी कम इज्जत वह डिवेदी जी की नहीं करता (गु०नि०—बा०मु०गु० ४८७); जिस केशव को उसने अपने प्रतःकरण से बर लिया था, वह इतना निष्ठुर हो जायगा, इसकी उसको रत्ती भर भी आशा न थी (मान० (१)—प्रेमचंद, २३२); कई बार सहसा वे ऐसे समय और ऐसा प्रसंग पृच्छते जिसकी रत्ती भर भी सम्भावना न होती (चेतन—अशक ३५)

### रत्ती-रत्ती

(१) पुरा-पूरा, सब । प्रयोग—अब मुझमें न उड़ो, रत्ती-रत्ती बात जानता हूँ (रंग० (१)—प्रेमचंद, ३८८)

(२) थोड़ा-थोड़ा ।

### रहा चढ़ाना,—जमाना

(१) रोब जमाना । प्रयोग—यह सौदा एक ही पाखी निकला । एक तो हमें फटकारे सुनायी, उस पर यह और रहा जमा गया (प्रेमा०—प्रेमचंद, ९५)

(२) किसी बात को और प्रोत्साहन या बढ़ावा देना । प्रयोग—मिसेज टंडन ने रहा जमाया—कहती है, मैं शादी करना ही नहीं चाहती (मान० (१)—प्रेमचंद, २७०); नहीं, राजकल तो ये जनसंघ के पैंदोकाइ हंगे—ताले दलाल ने एक रहा चढ़ाया (धुं०—अ० ना०, ४२)

(समा० गृहा०—रहा कसना,—देना,—लगाना)

### रहा जमाना

दे० रहा चढ़ाना



### रफूचकर होना

भाग जाना, गायब हो जाना । प्रयोग—यह हाल देखकर मेरी नींद और भी रफूचकर हो गई (मा० मा० (१)—कि० शो०, २२); तमाम दुनिया भर के मैले कुर्चेले कसीफ लोग दकट्टे हो हैजा पैसा कर रफूचकर होते हैं (भट्ट नि०—वा० भट्ट, १२४); बड़ी बर्मा को देखकर गहले ही लिङ्गी से रफूचकर हो गई थी (बु० द०—अ० ना०, २४४)

### रवदा पड़ना

खूब पानी बरसना । प्रयोग—नेह्रू चलते रवरे पड़ा घरती होइ बिहार सो सावज घामे जरे पड़ित करो विचार । कबीर—हि० श० सा०)

### रखत-जखत होना

मेल-जोल होना । प्रयोग—जानते हो, शहर के हाकिमों से उनका कितना रख-जखत है ? (रंग० (१)—प्रेमचंद, ३६)

### रम जाना

साधना में लीन हो जाना । प्रयोग—जोगी घा सो रमि गया आसणि रही विभूति (कबीर ग्रंथा०—कबीर, ६४)

### रम रहना

(१) लीन होना । प्रयोग—धीरे धीरे खाइबो अनत न जाइबो राम राम राम रमि रहिबो (कबीर ग्रंथा०—कबीर, १६५)

(२) जा कर रह जाना ।

### रस आना

आनंद मिलना । प्रयोग—नील कंठ और बंसी को भी इन बातों में रस आने लगा था (ब्रह्म०—दे० स०, १५३)

### रस की बातें

रसीली बातें—प्रेम की बातें । प्रयोग—घाम-पड़ोम की रस की बातें सुनाने लगा (भूले०—भग० वर्मा, २१५)

### रस बरसाना

श्रुति-मधुर होना, आनंद पहुंचना । प्रयोग—जो कि रस बरसा बहुत आला सके वे रसीले कंठ हैं कितने मिले (जोशे०—हरिऔध, १०३)

### रस में गीधना

प्रेम में पड़ना । प्रयोग—अब हरि कीन के रस गिधे (सू० सा०—सूर, ४४५४)

### रस में पगना

आनंद में पूरी तरह लीन होना । प्रयोग—नहि छुटति रति कचिर भामिनी वा रस में दोउ पागे (सू० सा०—सूर, १३०४); पिय पागे परोसित के रस में बस में न कहूं बस मेरे रहे (जग०—पट्टमाकर, १४)

(समा० मुहा०—रस में डूबना)

### रस में पगी होना—बोरी होना

(१) पूरी तरह आलस्य होना । प्रयोग—दूत बचन रचना प्रिय लागी प्रेम प्रताप बोर रस पागी (राम० (बाल)—तुलसी, १४४); अति विनीत बोलेउ बचन मनहुं प्रेम रस बोरि (राम० (उ)—तुलसी, १०४१)

(२) मधुर ।

(समा० मुहा०—रस में डूबी होना)

### रस में बोरी होना

दे० रस में पगी होना

### रस में सना

अत्यन्त रसपूर्ण । प्रयोग—बोली सती मनोहर बानी भय संकोच प्रेम रस सानी (राम० (बाल)—तुलसी, ७४)

### रस लूटना

आनंद पाना । प्रयोग—अधर रस मुरली लूटन लागी (सू० सा०—सूर, १५३९)

### रस लेना

(१) आनंद पाना । प्रयोग—धमर ने इस शिकायत की कोमलता या तो समझी नहीं या समझ कर उसका रस न ले सका (कर्म०—प्रेमचंद, १४)

(२) रसि रसना ।

### रस से

(१) आनन्द लेकर; स्वाद लेकर । प्रयोग—महिपाल बड़े रस से पत्नी की बातें सुन रहा था (बु० द०—अ० ना०, ४९५); कृष्ण रस ले-लेकर ला रहा था (देवकी०—रा० रा०, १६)

(२) आस्ते-आस्ते, मृत्तायम हाथ से ।

### रस-भंग होना

आनन्द का बीच में ही भंग हो जाना । प्रयोग—प्रेम मुनि बिपरीत भाषित, होत है रस भंग (सू० सा०—सूर, ४०३१);



कहि सपेस सब कथा प्रसंगु । जेहि बिधि राम राज रस भंगु  
(राम० (अ)—तुलसी, ५५२)

### रसातल को भेजना

नाश कर देना । प्रयोग—जाति को भेज कर रसातल में  
कान में तेल डाल कर मोये (चुभते०—हरिऔध, ५९)  
(समा० मूहा०—रसातल को पहुँचा देना)

### रसोई तपना

भोजन पकाना । प्रयोग—चंद मुरज जाके तपत रसोई  
बसंतर जाके कपरे छोई (कबीर ग्रंथा०—कबीर, ३२२); पेट  
लागि बैराट पर तपत रसोई भोम (शिक्षा० ग्रंथा०—राधा०  
दास, ५९)

(समा० मूहा०—रसोई चढ़ाना)

### रस्सी जलने पर भी बल बना रहना

स्थिति में बहुत बड़ा परिवर्तन हो जाने पर भी रुख में  
अंतर न आना । प्रयोग—इत पर काल की गति का प्रभाव  
महो पडा । रस्सी जल गयी पर बल नहीं टूटा (मान०  
(८)—प्रेमचंद, ६५)

### रस्सी हाथ में रखना

छपने बग में रखना । प्रयोग—स्त्री साखिर स्त्री है । उसे  
हीन चाहे कितनी ही दो पर रस्सी अपने ही हाथ में रखनी  
चाहिए (धरती०—वि० प्र०, ७१)

### रहंट की घरिया होना

ऐसी वस्तु जिससे लगातार पानी गिरता हो (आँखों के  
लिए) । प्रयोग—भगू वे नैन रहंट की घरी । भरी ते  
हारी छूँ छी भरी (पद०—जायसी, ३५१०)

### राइ का चरखा ओटना

(१) वही पुरानी बात करनी । प्रयोग—हमार पाठक X  
नाक भी निकोड़ यही कहेंगे घाज हमने कहाँ का राइों का  
सा चरखो ओटना प्रारंभ किया (महू नि०—बा० भट्ट, १३४)  
(२) जीविका अर्जन करने के लिए किया जानेवाला काम ।

### राई का पहाड़ और पहाड़ का राई करना

बड़े को छोटा और छोटे को बड़ा बनाना । प्रयोग—साईं  
सूँ सब होत है, बंदे ये कछू नाहि । राई ये परबत करे,  
परबत राई माहि (कबीर ग्रंथा०—कबीर, ६२); राई तें पर-  
बत हारै, राई मेरु करे (सू० सा०—सूर, ४८१७)

### राई का पहाड़ बनाना या होना

(१) छोटी सी बात को बहुत बड़ा-बड़ा देना । प्रयोग—  
मैं कुछ ऐसा अनोखा बड़ बोला नहीं जो राई को परबत  
कर दिखाने (ईशा०—ईशा०, ५९); मैं क्या जानता था कि  
राई का परबत हो जायगा, नहीं तो अपने हाथों से इस  
भोपड़े में आग लगा देता (रंग० (२)—प्रेमचंद, ३४१)

(२) छोटे को बड़ा बना देना । प्रयोग—साईं सूँ सब  
होत है, बंदे ये कछू नाहि । राई ये परबत करे, परबत  
राई माहि (कबीर ग्रंथा०—कबीर, ६२); राई ते परबत करि  
हारै, राई मेरु करे (सू० सा०—सूर, ४८१७); उनकी कल्पना  
तो राई का पर्वत बना लेती है (मान० (१)—प्रेमचंद, २४)

### राई भर

तनिक भी । प्रयोग—राई-भर भी है न बुराई दीखनी  
(वेदेही०—हरिऔध, २३३); करके पहाड़ सा पाप मौन रह  
जाऊँ ? राई भर भी धनुताप न करने पाऊँ ? (साकेत—  
गुप्त, २३१)

(समा० मूहा०—राई सा)

### राई-नोन उतारना,—करना,—धारना

एक प्रकार का टोटका जो कुदृष्टि के प्रभाव का नष्ट करने  
के लिए किया जाता है । प्रयोग—कबीर वारुया नांव परि,  
कीया राई लूँग (कबीरग्रंथा०—कबीर, ६२); कबहुँ अंग  
भूषण बनावति, राइ लोन उतारि (सू० सा०—सूर, ७३६);  
बजरानी अनेक घन वारति । पुनि-पुनि राई नोन उतारति  
(नंद० ग्रंथा०—नंद०, २०५); दूनी दृति छाई देह साईं  
दुबराई पिय, राई लोन वारिये प्रिया की पियराई पर  
(मति० मक०—मतिराम, १३५); काम कुछ भाइ फूँक से  
न चला लोन राई उतार व्यौत धकी (बोल०—हरिऔध,  
६५)

### राई-नोन करना

दे० राई नोन उतारना

### राई-नोन धारना

दे० राई-नोन उतारना

### राई-रस्ती

पूरा-पूरा । प्रयोग—जिनके ऊपर राई-रस्ती नाप-जोख कर



पापी को पापी कह कर व्यवस्था देने का दायित्व है, वे अपनी जानें (त्याग०—जैनेन्द्र, ५)

### राई-रत्ती से परिचय रखना

सब कुछ जानना । प्रयोग—भांसी के आसपास की भूमि का उनको राई-रत्ती परिचय प्राप्त हो गया (झांसी०—वृ० वर्मा, १८१)

### राक्षस होना

(१) बहुत क्रूर होना । प्रयोग—तुम्हारा सिर झूके यह नहीं चाहती थी—किसी के आगे नहीं, और उस... उस राक्षस के... (नदी०—अशोक, २३२)

(२) बहुत बलवान होना ।

### राख करना

बर्बाद कर देना । प्रयोग—बात बिगड़े बेतरह बिगड़े नहीं क्यों रखें पत, कर किसी को राख हम (बोल०—हरिऔध, ३८)

### राख की चिनगारी चमकना

दबे हुए जोश या उत्तेजना का उभड़ना । प्रयोग—सदियों बाद यह बासी कड़ी में उबाल आया और राख की चिनगारी चमकी (पद्म० के पत्र—पद्म० शर्मा, ३-४)

### राख की चिनगारी होना

दबा हुआ जोश या उर्पंग । प्रयोग—सदियों बाद यह बासी कड़ी में उबाल आया और चिनगारी चमकी (पद्म० के पत्र—पद्म० शर्मा, ३-४)

### राख डालना

दबा देना, डंक देना । प्रयोग—सुवर्ण की माँ बात पर राख डालना नहीं चाहती (परती०—रेणु, २४८)

### राख में मिल जाना या मिला देना

बर्बाद कर देना या होना । प्रयोग—बड़े-बड़े प्रतापी भूपति तुम्हारी आँखों के सामने राख में मिल गए (रंग० (२)—प्रेमचंद, ३४३)

### राज खुलना या खोलना

रहस्य प्रगट होना या करना । प्रयोग—अगर राज खुल गया X X तो मुझे और तुमको कहने को तो होगा कि इस बदकार घोरत ने सुल्तान को किसी रजिश की बजह से जहर दिया इसलिए मैंने इसको सजा दे दी (मुग०—वृ० वर्मा, ३३५)

### राजनीति का कीड़ा

हर समय राजनीति में ही लगा रहनेवाला । प्रयोग—हम तो साहब राजनीति के कीड़े हैं (बंद०—अ० ना०, १८३)

### राज्य उलट जाना

(१) राज्य का समाप्त हो जाना । प्रयोग—राज्य उलट जाए भूषों की भाग्य मुलक्ष्मी तो जाए (मधु०—वचन, पट २१)

(२) अधिकार खिन जाना ।

### राज्य करना

(१) मुख और वंश में जीवन बिताना । प्रयोग—जह-जह रही राज करी तह तह, केहू कोटि सिर भार (सू० सा०—सुर, ४२७७)

(२) अधिकार में होना ।

### रात आँखों में काटना,—निकलना

रात जागते बीतना । प्रयोग—बह रात उसके माता-पिता ने आँखों में काट दी थी (झूठा० (१)—यशपाल, ३४५-३४६); मैं किताबों का कीड़ा हूँ, जाड़े, गरमी और बरसात की सैकड़ों रातें तल्लीनता से पढ़ते-पढ़ते मैं ही आँखों में निकल गई हूँ (पद्म पराग—पद्म० शर्मा, २७२)

### रात आँखों में निकलना

दे० रात आँखों में काटना

### रात उतरना

रात होना । प्रयोग—रात उतर आई थी । नारायण कुरसी पर बैठा रहा (ब्रह्म०—दे० स०, २४८)

### रात का दिन करना

अत्यंत प्रयत्नशील होना । प्रयोग—सचमुच इसे छपवाने के लिए उसने रात-दिन एक कर डाला (कठ०—दे० स०, ३४१)

### रात की रात

(१) बहुत जल्दी—ऐसा बीत जाना कि पता ही न चले । प्रयोग—छः मास मानो रात-की-रात में कट गए (ब्रह्म०—दे० स०, ३८५)

(२) रात-रात भर ।

(३) एक ही रात में ।

### रात गहरी होना,—भीगना

(१) रात का धीरे-धीरे बढ़ना; अर्द्ध-रात्रि के बाद का



समय । प्रयोग—बूढ़ि बूढ़ि ठरै औधि-बाह पन खानंद यो, जीव मूकयो जाय ज्यो ज्यो भीजत सरबरी (घन० कवित्त—घना०, २१०); ज्यो ज्यो रात गहरी होकर दूसरा पहर बीतने लगा, मँड़क-भिल्लियों की चिल्लाहट और जुगनू की चमक में अन्तर पड़ने लगा (ज्ञान०—यशपाल, १२४); जब रात भीग गयी और वह न सोटा, भागी पहा चली जायी (गोदान—प्रेमचंद, १२३); भीगी रात, चलो सोने अब, कल दुंगा इसका उत्तर (नुर०—मक्त, ८)

### रात डलना

रात शेष होना । प्रयोग—अमित निशा नापक पश्चिम दिशि जायी औ बड़ि रैन चली डलि (भा० ग्रंथा०—भारतेन्दु, ४८३); डलती रात, अकेली खबला, निकल पड़ी तुम कौन, कहाँ ? (पंच०—गुप्त, २३); और रात भी डलती चली... ग्यारह, सब अच्छा (शेखर (२)—अष्टोद, ७२)

### रात पड़ना

रात होना । प्रयोग—दिवस चका साईं मिली, पीछे पड़िहे राति (कवीर ग्रंथा०—कवीर, २९)

### रात भोगना

दे० रात गहरी होना

### रात लगना

अधेरा लगना, चारों ओर निराशा होनी । प्रयोग—बामर बसत के घनत हूँ के अंत लेत, ऐस दिन पारै जू निहारै जिय राति है (घन० कवित्त—घना०, १०६)

### रात-दिन

घाटों पहर, हर समय । प्रयोग—जावंत अवति हस्ति औ चांटा । सब कह भूगति रात दिन बांटा (पट०—जायसी, ११५); निशिदिन रह्यो समीप हमारे, जोग मय कह पावो (सू० सा०—सूर, ४५४४); रैन-दिन रैन कौन लेह कहूँ पैंपे, भाग घापने ही ऐसे, दोष काहि थो लगाएव (घन० कवित्त—घना०, ४); नौकरी में बड़े भ्रष्ट है, काम बहुत करना पड़ता है, रात दिन मालिक की बातें सुनती पड़ती है (मिखा०—कौशिक, ९)

### रात-दिन का अंतर होना

बहुत अंतर होना । प्रयोग—जो दुख देखति हो पनखानंद रैन-दिना बिन जान मुतंतर जाने वेई दिन-राति, बखाने ते जाय परै दिन राति को अंतर (घन० कवित्त—घना०, २५)

### रानी का रुठ कर अपना रनिवास लेना

रुठकर अपने बसवाली करना । प्रयोग—घरे घपने राम को क्या, रानी रियायगी, अपना रनवास लेगी (कुल्लो०—निराला, १२६)

(समा० मुहा०—रानी का रुठ कर अपना सुहाग-लेना)

### राम का नाम

तनिक भी नहीं । प्रयोग—अंगरेजी चाहे आप राम का नाम ही जानते हों पर जरूरत पड़ने पर बंजन, बाइरन XX के प्रयोगों का भी मर्म आप खूब समझ लेते हैं और समझा भी देते हैं (सा० सी०—महा० द्विवेदी, १०४)

### राम जाने

(१) पता नहीं । प्रयोग—उनका अनुवाद दूसरे लग्न कर लेते हैं, ऐसा श्री प्रेमचंद जी कहते थे । राम जाने कहाँ तक ठीक है (पट्टम० के पत्र—पट्टम० शर्मा, २१२)

(२) भगवान कसम ।

### राम-कहानी

जीवन गाथा । प्रयोग—घनत—हुषा, यह राम-कहानी दूर करो (भा० ग्रंथा० (१)—भारतेन्दु, ५५५)

### राम-कहानी कहना

आप-बीती सुनाना । प्रयोग—कोई खास सुनाने लगता घपनी राम कहानी (नुर०—मक्त, ११६); अपनी वह राम कहानी पीछे सुनाऊंगा (कंकाल—प्रसाद, ७१)

### राम-राज्य होना

(१) मुख्यपूर्ण राज्य होना । प्रयोग—अब घापकी दवा से गांव में रामराज है (प्रेम०—प्रेमचंद, ४४८)

(२) एकाधिकार होना ।

### राम-राम करके

बड़ी कठिनाता से । प्रयोग—राम-राम करते इस बजे के करीब नींद ने मेरी पुकार सुनी (पट्टम पराग—पट्टम० शर्मा, २७१)

### राम-राम करना

अभिवादन करना, प्रणाम करना । प्रयोग—जल्दी जल्दी रगड़ी, छान कर पी, लमाखू लाई, आर्दना के सामने लड़े



होकर गगड़ी बांधी, घादमियों को राम-राम कहा, और  
× × बाहर निकले (रंग० (१)—प्रेमचंद, २०९-२१०)

### राम-राम होना

(१) कोई सम्बन्ध न रह जाना। प्रयोग—अब सडाइही  
जी गिरपारी। राम-राम तो बहुरि हमारी (सु० सा०—  
सुर, ३४४६)

(२) शेष हो जाना, मर जाना।

(३) दुखा-सलाम होना।

### रामबाण होना

अचूक होना। प्रयोग—रात मूर्तिमती कसगा है, जन्मकार  
देवताओं का कोई रामबाण भरहम है जो कुल वेदनाओं की  
टीस को सोल जाता है (शेखर (२)—अज्ञेय, २१७)

### राय गांठना

राय तै करना। प्रयोग—तो कहिए, मारा परामर्श गांठकर  
आप मेरे पास आए हैं (मा—कौशिक, २९)

### रार मोल लेना

जानबूझ कर भगड़ा करना। प्रयोग—मूझमें घब ठोकरे  
खाने की शक्ति नहीं है। न मैं पुलिस से रार मोल ले  
सकता हूँ (गवर्न—प्रेमचंद, २५५)

### रास आना या होना

मुवाकिक होना। प्रयोग—‘मिट्टी की मूर्त’ में बात नहीं  
बनी। योम रास नहीं घाई (कठ०—दे० स०, ८८); बेचारे  
बाबूजी दबे जाते × × मिन्नते करते थे पर वह किसी  
तरह रास न होती थी (कर्म०—प्रेमचंद, १८०)

### रास्ता कट जाना

रास्ता खत्म होना। प्रयोग—इन्हीं दुखड़ों में रास्ता कट  
गया (गोदान—प्रेमचंद, २५)

### रास्ता खुलना

रुकावट का दूर होना। प्रयोग—यदि उसमें यह क्षमता न  
होगी तो × × ईर्ष्या आदि बुरे भावों के संवार के लिए  
रास्ता खुल जायगा (चित्ता० (१)—शुक्ल, ९४)

### रास्ता खोलना

(१) रुकावट दूर करनी। प्रयोग—कूट के फल सब भारत  
बोए-बेरी के राह खुलाए जयचंदबा (भा० ग्रंथा० (२)—  
भारतेंद्र, ५०२)

(२) किसी प्रया को चालू करना।

### रास्ता छोड़ना

(१) रास्ते में जाने को जगह देना। प्रयोग—मैल न छाड़े  
साँवरों, क्यों करि पनघट जाऊँ (सु० सा०—सुर, २०६१)

(२) बाधक न होना।

### रास्ता दिखाई देना

उपाय समझ में आना। प्रयोग—संखर को रास्ता दीखा  
(शेखर (२)—अज्ञेय, १०५)

### रास्ता दिखाना

(१) जो करणीय है, उसमें अवगत कराना। प्रयोग—उनका  
चरित्र लोगों को एक अच्छा रास्ता दिखाना × × है  
(राधा० ग्रंथा०—राधा० दास, २९७); इसीलिए मैंने सोचा कि  
फावी पर मृत्यु का आलिंगन करने से पहले माकुनी के  
गांवों में रहूँ और उन्हें रास्ता दिखाऊँ (ब्रह्म०—दे० स०,  
८१); आप जैसे नवजवानों को राह दिखाने में मुझे सतोंप  
मिलता है (मोर०—जग० माधुर, १६)

(२) युक्ति बताना। प्रयोग—देखिये प्रयोग (१) में (÷)

### रास्ता देखना

प्रतीक्षा करनी। प्रयोग—प्रिया नरसति पंच, मिले कब हरि  
कंत गए इहि घन हंसि अंक लोन्ही (सु० सा०—सुर २६०२);  
हरि मारग बिलबहि मति धीरा (धम० (बाल)—तुलसी,  
१९७); द्वार चित्र देखन मित बाला। पिय मग देखे रूप  
रमाता (नंद० ग्रंथा०—नंद०, १२६); हम सब ते मन आनंद  
मानि। मग बिलबत तब घायमन जानि (केशव० (२)—  
केशव, २८४); मग हेरत दीठि हिराय गई जब ते तुम आवनि  
घोषि बरी (धन०कवित्त—धना०, ९२); मेरी स्त्री मेरा रास्ता  
देख रही होगी (रेशमी०—राम० वमी, ५७); वे कागज पंगित  
लिए बड़े दृक्छित्त विल से, घालें फाड़े, आपके आने का  
मार्ग देख रहे हैं (पद्म पराग—पद्म० शर्मा, ३६)

(समा० मुहा०—रास्ता ताकना)

### रास्ता देना

जाने के लिए स्थान देना। प्रयोग—सब ने माया-प्रेरित से  
होकर उसे मार्ग दिया (वैशाली० (१)—चतुर०, १८)

### रास्ता न छोड़ना

ठीठे पड़ना। प्रयोग—करी बिरह ऐसी, तऊ पैल न छाड़तु



नीच । दीर्घ हूँ चममा चमनु चाहै लहे न मोचु (बिहारी रसा०—बिहारी, १४०)

### रास्ता नापना,—मापना

(१) चले जाना । प्रयोग—तुमने घागे से मुह संभाल कर बात न की, तो मैं कहूँगा मेरे घर से निकल जाओ और अपना रास्ता नापो (ब्रह्म०—दे० स०, ११८); तुम अब अपना रास्ता नापो, बेफजूल हुज्जत मत करो (जहाज०—६० जोशी, ५५); पत्नी को ले, पता नहीं किस देव, रास्ता नापा (नूर०—मक, १०२)

(२) रास्ते की ओर एकटक प्रतीक्षा में देखना । प्रयोग—तेरी बाट हेरत हिराने धी पिराने पल, पाके ये बिकल नैना ताहि नपि नपि रे (घन० कवित्त—घना०, ६१); जब ते तुम आवनि-धौचि बदी तब ते धवियाँ मग मापति हैं (घन० कवित्त—घना०, ९२)

### रास्ता निकालना

युक्ति सोचना या निकालना । प्रयोग—कठिनाइयों में से रास्ता निकाल लेना, इनका स्वभाव ही गया है (अशोक०—ही० प्र० द्वि०, ३५); मैं तो समझ रहा था कि आपने कोई मार्ग निकाल लिया होगा (गबन—प्रेमचंद, २०)

### रास्ता मापना

दे० रास्ता नापना

### रास्ता पकड़ना

(१) चले जाना । प्रयोग—परशुराम—बाहुर्द डोऊ कुठा-रहि 'केशव' आपने धाम को पंथ गहो (केशव० (२)—केशव २६५)

(२) किसी तरीके को धारित्व करना । प्रयोग—शिक्षित लोगों के विचारों और व्यापारों ने तो दूसरा मार्ग पकड़ लिया था पर उनका साहित्य उसी पुराने मार्ग पर था (चिंता० (१)—शुक्ल, १९१); सोफिया ने इधर वह रास्ता पकड़ा (रंग० (२)—प्रेमचंद, ३४४)

(३) किसी काम को करने जाना । प्रयोग—करे गुमराह न जो हमको, राह हम ऐसी ही पकड़े (मर्म०—हरिऔध, ९०)

(४) किसी रास्ते पर सीधा जाना । प्रयोग—राह पकड़ तू एक बला बल पा जाएगा मधुशाला (मधु०—वचन, पद ६)

### रास्ता बताना

(१) मिलाना; तरकीब बताना । प्रयोग—फिर जब दिल की लगती है, तब दिल के खुश रास्ता भी बंदे को बता देते हैं (लिली—निराला, ११४)

(२) चलता करना; डालना ।

### रास्ता बदलना

दूसरा काम या रस अतिथार करना । प्रयोग—आप की यहो इच्छा हो तो कहिये मैं अपना रास्ता बदल दूँ (सिंदूर०—ल० मिश्र, ९७)

### रास्ता बनाना

प्रगति का मार्ग चुनना या बनाना । प्रयोग—एक सूत्र यह भी है कि हर एक को अपना रास्ता खुद बनाना चाहिए (जेसर (२)—अज्ञेय, ७३); लोगों की बीवियाँ × × अपनी हंसमुखता और मिलनमारी से अपने शोहरों के लिए रास्ता बना देती हैं और एक तुम हो (पैतरे—अशक, ४९)

### रास्ता बिगाड़ना

आगे के लिए गलत निर्णयितता चालू करना । प्रयोग—नूर भले की भलो होइगी, वं तो पंथ बिगारत हैं (सू० सा०—सूर, २८७२)

### रास्ता भूलना

बहुत दिनों बाद जाना । प्रयोग—कैसे रास्ता भूल पड़े ? (मूले०—भग० वर्मा, ४७८); हमारे घर का रास्ता कैसे भूल गई, जूनतारा ? (ब्रह्म०—दे० स०, १२६)

### रास्ता रोकना

(१) प्रगति में बाधक होना । प्रयोग—भवजाल विकट है, मायावक अनंत है, साधनमार्ग दुरनिगम्य है, बिप्लों की बाहिनी रास्ता रोके खड़ी है और गृहस्थ लाचार है (कबीर—ह० प्र० द्वि०, १५४)

(२) रास्ते में आगे न बढ़ने देना । प्रयोग—मारग गहि ठाढ़ी रहे (री) बोलत मोठे बोल (सू० सा०—सूर, ३४९८)

### रास्ता लेना

(१) जाना । प्रयोग—बगुदेव जी ने कृष्ण को तो जसोदा के दिग मुला दिया और कन्या को ले चट अपना पथ लिया (प्रेम सा०—ल० ला०, १९); दूसरे दिन सबेरे ही रमा ने



रमेश बाबू के घर का रास्ता लिवा (गवर्न—प्रेमचंद, ४९)

### रास्ता साफ करना या होना

अड़चन दूर करनी या होनी। प्रयोग—बिमाता की तो यही इच्छा थी कि उसे बनवान देकर अपनी चहेती नैना के लिए रास्ता साफ कर दे (कर्म०—प्रेमचंद, ६); अब अंगरेजों की अपना बल विक्रम और प्रभाव बढ़ाने में रोकने वाला कोई न रहा—फेंच, पुर्तगीज, इन सब ने उनके लिए रास्ता साफ कर दिया (सा० सी०—महा० द्विद्वी, ४५); चालाक निरंजन ने कूर्म जी के तीन सिर चबा डाले और फिर तो रास्ता साफ हो गया (कबीर—ह० प्र० द्वि०, ५५); इसके मार दिये जाने से हमारा तुम्हारा, दोनों का रास्ता साफ हो गया (मृग०—पृ० वर्मा, ३३५)

### रास्ता सोचना

उपाय सोचना। प्रयोग—मैंने उसके लिए राह भी सोच ली है (अम्ब०—रा० वे०, ६२)

### रास्ते का कांटा,—रोड़ा

मार्ग की बाधा। प्रयोग—उसने एक हाथ से अपना पेट भरा, दूसरे हाथ से उग्रता की राह के कांटों को साफ किया (भा० प्र० (३)—भारतेन्दु, ५९७); पर तेरा मोती न बने हा ! प्रिय के पथ का रोड़ा (यशो०—गुप्त, ६५); अगर मन को दबाकर, मुझे अपनी राह का कांटा समझ कर तुमने मेरी इच्छा पूरी भी की, तो क्या (मान० (१)—प्रेमचंद, ५०); राह के सभी कांटे तो दूर हो गये (भोर०—जग० माधुर, ३७); राह के जो घने रहे रोड़े हाथ जावें तो मरोड़े क्यों (बोल०—हरिश्चोद, १७४)

(समा० मुहा०—रास्ते का पत्थर)

### रास्ते का रोड़ा

दे० रास्ते का कांटा

### रास्ते की धूल बटोरना

गरीब होना, धन के अभाव में मारा-मारा फिरना। प्रयोग—कबहुं मग-मग धूरि बटोरत, भोजन की बिलखात (सु० सा०—सूर, ३६५)

### रास्ते पर आना

उचित काम करना। प्रयोग—जहाँ हम बार दिन × × घायकी हाँ में हाँ मिलावेंगे × × बताताइए तो आप कब

तक राह पर न आवेंगे ? (प्र० पी०—प्र० ना० मि०, ५५); पुलिस को अधिकार के साथ काम करने दिया आप तो रास्ते पर आ जाय (चोटी०—निराला, ४९); अस्तु, अब आप रास्ते पर आ गये (पद्म० के पत्र—पद्म० शर्मा, १०५)

### रास्ते में आंख बिछाना

बहुत आदर करना। प्रयोग—कांग्रेस के जलसे के बाद जिस शहर में गये, जनता ने उनके रास्ते में आंखें बिछा दी (मान० (२)—प्रेमचंद, ११५-११९)

### रास्ते में आना

बाधक होना। प्रयोग—कीड़त होते मुर-अमुर-नाग। हठि सिद्ध-मुनिन के पद लाग (गीता० (३)—तुलसी, ४५)

### रास्ते में कांटे बोना,—बबूल बोना

किसी का अहित करना, किसी काम में विघ्न खड़ा करना। प्रयोग—क्या तुम यह समझते हो कि इन अभागों को समा करने और इन्साफ की राह में कांटे बोने में मैं कोई घबड़ा काम करूँगा ? (परीक्षा०—श्री० दास, ११९-१२०); हमारी उग्रता के पथ में कांटा बोने वाले जहाँ और बहुत से कारण हुए हैं उनमें इस जाति विवेक की भी हम × × मानते हैं (मट्ट नि०—बा० मट्ट, ४६); अपने मुख-पथ में अपने हाथों में कांटे बोता हूँ (देदेही०—हरिश्चोद, ६०); हूँ न कांटा कि आँख में खटकूँ मैं न पथ में बबूल बोता हूँ (बोल०—हरिश्चोद, ४९); धारती के लिए मोतेली माँ लाकर वह उसके पथ में कांटे नहीं बोना चाहता था (ब्रह्म०—दे० स०, ४०)

(समा० मुहा०—रास्ते में कांटे बिछाना)

### रास्ते में बबूल बोना

दे० रास्ते में कांटे बोना

### रास्ते में रोड़ा अटकाना,—धिघ्न खड़ा करना

कार्य में अड़चन डालनी। प्रयोग—यह निरंजन बराबर महात्माओं के मार्ग में विघ्न खड़ा करता रहता है (कबीर—ह० प्र० द्वि०, ५६); हर जावेगा आपके रास्ते में रोड़ा नहीं अटकावेगा (सिद्ध०—ल० मिश्र, २५)

(समा० मुहा०—रास्ते में कांटे बिखेरना)

### रास्ते में धिघ्न खड़ा करना

दे० रास्ते में रोड़ा अटकाना



### रास्ते लगना

(१) चल देना । प्रयोग—उत समय ये सब रूप के मित्र मदनमोहन को छोड़कर अपने, अपने रास्ते लगेंगे (परीक्षा—श्री० दास, १४७)

(२) उपयुक्त काम में प्रवृत्त होना ।

### राह काटना

सामना होने से बचना । प्रयोग—और को देख भागते हैं दूर, है पड़ी राह काटने की बान (मर्म०—हरिऔध, ९७)

### राह चलते

(१) साधारणतः, बिना विशेष प्रयत्न के । प्रयोग—राह चलते ही मिल जायगी तो मिल जायगी, तब आंचल पसार लूंगा, वस ? (शेखर (२)—अज्ञेय, १५६); राह चलते उन पर स्वाहमन्वाह की छीटाकशी भी हो जाती (बुंद०—अ० नो०, ५७६)

(२) रास्ते पर चलने वाले; बिना जान पहचान के; जन-साधारण । प्रयोग—कभी-कभी राह चलते दिख जाते (बिने०—रा० रा०, ३१); एक राह चलते घादमी से 'हुपड़िया'—इन्का मंगवा कर स्टेशन पहुंचे (पद्म पराग—पद्म० शर्मा, ८२); बारात का नाटक उस वक्त पास होता है, जब राह-चलते आदमी उसे पसन्द कर लेते हैं (गवम—प्रेमचंद, ८)

### राह छेकना

रास्ते में बाधा देनी । प्रयोग—जो रहा छेकता निगाहों को वह चला राह छेकने तो क्या (बोल०—हरिऔध, १७३)

### राह ताक-ताक कर थक जाना,—देखते आंखें पक जाना,—देखते-देखते आंखें पधरा जाना

इंतजार करते करते दौरान आ जाना । प्रयोग—आपकी राह देखते देखते तो आंखें पक गईं (चेतन—अज्ञेय, ४०८); राह देखते-देखते तो आंखें पधरा गईं (रंग० (१)—प्रेमचंद, ४१९); हम कहें क्या तपाक की बातें आप की राह ताक ताक पके (चुमते०—हरिऔध, २)

(समा० मुहा०—राह देखते-देखते पलकें मूज जाना)

### राह ताकना

प्रतीक्षा करनी । प्रयोग—हम कहें क्या तपाक की बातें आप की राह ताक ताक पके (चुमते०—हरिऔध, २)

### राह देखते-देखते आंखें पक जाना

दे० राह ताक-ताक कर थक जाना

### राह देखते-देखते आंखें पधरा जाना

दे० राह ताक-ताक कर थक जाना

### राह पर चलना

(१) अनुसरण करना । प्रयोग—मुनिन्ह प्रथम कल कीरति गई । तेहि मग चलत सुगम मोहि भाई (राम० (वाल)—तुलसी, २१)

(२) ठीक कार्य करना ।

### राह पर लगाना,—लाना

ठीक काम करने को प्रेरित करना । प्रयोग—हम × × बेजड़ों की जड़ जमाते पे और भूलों को राह पर लगाते पे (चुमते० (मु)—हरिऔध, २); मूर्ख नासमझ को समझा कर राह पर लाने को हठार हठार माया पटको कुछ नहीं होता (सा० सु०—बा० मट्ट, ८९); वे ही भाई साहब को समझा कर ठीक राह पर ले आये (भारती०—रा० रा०, १००); हिन्दी वालों को भी राह पर लाना होगा (पद्म० के पत्र—पद्म० शर्मा, १५०); निकम्मों को राह पर लाने का इससे बड़कर और कोई उपाय ही नहीं (गवम—प्रेमचंद, ६)

### राह पर लाना

दे० राह पर लगाना

### राह बचाना

सामना करने से बचना । प्रयोग—हम किसी से घृणा करेंगे तो बहुत करेंगे उसकी राह बचावेंगे, उससे बोलेंगे नहीं (चिला० (१)—शुक्ल, ९९)

### राह भारी होना

रास्ता किसी प्रकार पार न होना । प्रयोग—राह भारी हुए भर आया जो भर गये पांव, आंख भर आई (चुमते०—हरिऔध, ११३)

### राह लगना

(१) वही काम करना जो और कोई करता हो । प्रयोग—मैं भी कहीं दिवंगत अग्रजों की राह न लगूँ, अतः तब यह साया कि पहले तो मेरी जन्मकुंदली न बनायी जाए, साथ ही जन्मते ही मुझे बेच दिया जाए (अपनी सवर—उग्र, १८)



- (२) अनुसरण करना ।
- (३) रास्ता पकड़ना ।
- (४) ठीक काम करना ।

### राह लगाना

ठीक काम करने की ओर प्रवृत्त कराना । प्रयोग—पर तुम्हें बिना राह लगाए न हटेंगे (मट्ट नि०—बा० मट्ट, ८१)

### राह लेना

चले जाना । प्रयोग—मुझे बराबर यह खटका लगा रहता है कि वह देश-विदेश की राह न लें (कर्म०—प्रेमचंद, २०); एक राह चलते आदमी से 'दुपट्टा'—इक्का मंगवा कर स्टेशन पहुंचने और टिकट कटा कर दिल्ली की राह ली (पट्टम पराग—पट्टम० शर्मा, ८२)

### राह-रस्म करना

प्राना-जाना, परस्पर व्यवहार शुरू करना । प्रयोग—गौस खां ने इनसे राह-रस्म पैदा करना शुरू किया (प्रेमा०—प्रेमचंद, १९२)

### रिमझिम पानी बरसना

हल्की बूँदा-बाँदी होनी । प्रयोग—बरसात के दिन है, सावन का महीना × × रह-रह कर रिमझिम वर्षा होने लगती है (गवर्न—प्रेमचंद, १)

### रिश्वत का बाजार गर्म होना

खूब रिश्वत दी और ली जानी । प्रयोग—दफ्तरों में रिश्वत का बाजार गर्म है (शुभा० (२)—यशपाल, ५२०)

### रीढ़ टूटना,—तोड़ना

अशक्त और बेकाम कर देना या हो जाना । प्रयोग—आत्महिंसा सबसे बड़ी हिंसा है क्योंकि वह राष्ट्रीय अभिमान को-राष्ट्र की-रीढ़ तोड़ डालती है (शेखर(२)—अज्ञेय, ५४); तेरे चाचा क्या मरे बाबा की रीढ़ टूट गई (निशि०—वि० प्र०, ४७)

### रीढ़ तोड़ना

दे० रीढ़ टूटना

### रुख देखना

सामने वाले की मनोवृत्ति या इच्छा देखनी । प्रयोग—नरपति सकल रहस्य रुख ताकें (राम० (अ)—तुलसी,

३९४); 'हरिचंद' तो दास सदा बिन मोल काँ बोलें सदा रुख तेरो लिए (भा० ग्रंथा० (२)—भारतेन्दु, १५६)

### रुख पाना

अनुकूल इच्छा जानना । प्रयोग—रहसी रानि राम रुख पाई । बोली कपट सनेहु जनाई (राम० (अ)—तुलसी, ४१२)

### रुख मोड़ना

(१) किसी कार्य को दूसरी ओर उन्मुख करना । प्रयोग—अब कुशल कहाँ इत है रही गई बिदा हृद के कब । उत रही कछुक भावत मोड़ रुख प्रताप मोर्यो जब (राधा० ग्रंथा०—राधा० दास, ७७०)

(२) बातचीत का विषय बदलना ।

### रुचि मानना

अच्छा लगना । प्रयोग—बिप बिकार बहुत रुचि मानी, माया मोह चित दीन्हा (कबीरग्रंथा०—कबीर, १७१); निरखत अंग-अंग की सोभा, ताही पर रुचि मानत री (सू० सा०—सूर, २८५४)

### रुपया उड़ाना

(१) बेहिमाब, लापरवाही से खर्च करना । प्रयोग—दुकान से रुपये चुरा-चुरा कर आचारागर्दी में उड़ाया करता था (जहाज०—६० जोशी, १३४); इससे वह बिहारी को खूब रुपया उड़ाने देते हैं (परस—जैनेन्द्र, ३३); मोटरकार की क्या ज़रूरत है ? क्या इस-याँच रुपए काट रहे हैं ? यों उड़ाने से तो कार्र का लजाना भी काफी न होगा (रंग० (१)—प्रेमचंद, ६७)

(२) चुरा लेना । प्रयोग—भगर सुभागी क्यों अपने घर से रुपए उड़ा ले गई ? (रंग० (२)—प्रेमचंद, १०८)

### रुपया ऐंठना

मालत-सही तरीकों से रुपए अमूलना । प्रयोग—बनियों से रुपये ऐंठने के लिए अवन चाहिए, दिल्ली नहीं है (गवर्न—प्रेमचंद, ५३); मदरास के किसी शास्त्री ने सत्रहवें शताब्दी में एक कृत्रिम यजुर्वेद की पुस्तक फादर राबर्ट डी नोमिली नामक पादरी की देकर उससे बहुत सा रुपया ऐंठ लिया (सा० सी०—महा० द्विवेदी, ७)



### रुपया खरा होना

रुपया मिलना या मिलने का निश्चय होना। प्रयोग—वहाँ चाहें, सौ रुपए में बेच सकता हूँ, मेरे अस्सी रुपए खरे हो जायेंगे (गोदान—प्रेमचंद, १५८)

### रुपया जोड़ना

रुपया जमा करना। प्रयोग—बालापन खैलत ही खोगो जीवन जोरत दाम (सु० सा०—सुर, ५७)

### रुपया टूटना

घाटा होना। प्रयोग—परन्तु दूसरे साल रुई की भरती की जिसमें सात-आठ हजार रुपए टूटते रहे (परीक्षा०—श्री० दास, १०)

### रुपया डूबना

- (१) किसी को दी हुई रकम न वसूल होनी। प्रयोग—मैंवा, बस काया डूब न जाए (बौने०—रा० रा०, १६०)
- (२) रोजगार में घाटा होने से रकम का नुकसान होना।

### रुपया पटाना

रुपया वसूलना; लेन-देन बराबर करना। प्रयोग—मैंने भी कमबस्ती के मारे हजार दो एक का कपड़ा दे दिया था इसलिए मैं भी अपने रुपए पटाने की राह सोच रहा हूँ (परीक्षा०—श्री० दास, १८३)

### रुपया पानी की तरह बहाना

बिना सोचे-समझे खूब खर्च करना। प्रयोग—बंश का बहपन दिलाने का इसके सिवाय और क्या मार्ग है कि ऐसे अवसरों पर खूब प्रदर्शन किया जाय, रुपया पानी की भाँति बहाना जाय (विप०—प्रेमी, २१); घाय तो देखते हैं, मैं रुपया पानी की तरह बहा रहा हूँ (रेशमी०—राम० वर्मा, ८८); रुपया-पैसा तो पानी के समान बहा दिया। उन्हें उसकी परवा न थी (सु० सु०—सुदर्शन, ५३)

### रुपया मार लेना

रकम दबा लेना। प्रयोग—सोग तो पहा तक कहते थे कि उन्होंने ही बड़ा रुपया मार लिया था (भारती०—रा० रा०, ९७)

### रुपया मारा पड़ना

किसी का रुपया दब जाना, न मिलना। प्रयोग—कितने

ही असामियों से कोड़ी न वसूल होती थी। रुपये मारे पड़ते थे (प्रेमा०—प्रेमचंद, ४४७)

### (समा० मुहा०—रुपया मारा जाना)

#### रुपये उगलना

रुपये देना। प्रयोग—बारकुन की डाँट पड़ी तो कैसे चुपके से रुपए उगल दिये (गोदान—प्रेमचंद, १५३)

#### रुपये का रुपया उगलना

धन से ही और धन जाना। प्रयोग—आज रुपया रुपया उगलता है (बौने०—रा० रा०, ११)

#### रुपये की गर्मी होना

धन का गर्व होना। प्रयोग—रुपए की गर्मी है, तो वह निकाल दी जायगी (गोदान—प्रेमचंद, ३०)

#### रुपये के दोस्त होना

धन एठने के मतलब से दोस्ती करनी। प्रयोग—कोई कहता है 'ये रुपए के दोस्त हैं' (परीक्षा०—श्री० दास, २६)

#### रुपये बनाना

लाभ करना। प्रयोग—वह चाहता तो दो-चार सौ रुपए बड़ी आसानी से बना लेता (मान० (२)—प्रेमचंद, ६०)

#### रुपये सीधे करना

रुपए वसूलना, बनाना। प्रयोग—हर सकं घाय क्यों न टके सीधे कर सकें क्यों न हम कमर सीधी (बोल०—हरिऔध, २३०)

#### रुई के बादल की तरह उड़ जाना

शीघ्र नष्ट हो जाना। प्रयोग—इसकी शिक में घर गृह-स्थी, राज दरबार सब कुछ रुई के बादलों की तरह उड़ जाते हैं (विप०—प्रेमी, १७)

#### रुई में लपेटी आग

ऐसी वस्तु जिसके संसर्ग से नाश निश्चित है। प्रयोग—मैं में बड़ी बलाइ है, सकं तो निकसी भाँजि। कब लग राखी है सखी, रुई पलेटी आगि (कबीर ग्रंथा०—कबीर, २७); किहि बिधि राखे, क्यों रहे, रुई लपेटी आगि (नंद० ग्रंथा०—नंद, ३८०)

#### रुखा जबाब

बिना किसी मुरौबत के दिया गया उत्तर। प्रयोग—तुमने तो आज ऐसा रुखा जबाब दिया कि मैं रो पड़ी (कर्म०—प्रेमचंद, १००)



### रूखा पड़ना या होना

बे-सुरोबती करना; फूट होना, । प्रयोग—उतक न देइ दुसह रिम रुखी । मृगिन्ह बितव जनु बाचिनि भूखी (राम० अ०) —तुलसी, ४२०); जीबनि-मूरति जान सुनौ गति जो जिय राबरो प्यार न पावती X X तो उर-दाहक प्राननि गाहक रुखे भग को परेखो न आवती (घन० कवित्त—घना०, ६१)

### रूखा-सूखा

बहुत साधारण भोजन । प्रयोग—और रुखी सूखी रोटी साकर दिन रात घटक परिश्रम में रत रहती थी (पेंसरे—अश्क, २५)

### रूखी बात

नीरम या अप्रिय बात । प्रयोग—कैसे रहति रूप-रस रांधी, पं बतिया मुनि रुखी (सु० सा०—सूर, ४१७५); रुखी सूखी बातनि हूं सरसं सनेह सुठि, हिय ते टरे न ये अनखि कर टारिबो (घन० कवित्त—घना०, १५४); तूम हमेशा रुखे-रुखे ही बोलते हो (मृग०—वृ० वर्मा, २७७)

### रूखी हंसी

ऐसी हंसी जो दिल से न निकली हो । प्रयोग—गजराज सिंह एक रुखी हंसी हंस पड़े (भूले०—मग० वर्मा, ४५); देवदीन ने रुखी हंसी हंस कर कहा—बाल-बच्चे तो सब भगवान के घर गये (गवन—प्रेमचंद, १३६)

### रूप की दोपहरी खिलना,—चढ़ना

रूप पूरे चढ़ाव पर होना । प्रयोग—उसके रूप की दोपहरी खिली थी (वंश-ली० (१)—चतुर०, १०९); पर मेरे रूप की जो दोपहरी चढ़ी थी, उसने कुंवरी की धारी हो घान को फोका कर दिया था (गोली—चतुर०, ८८)

### रूप की दोपहरी चढ़ना

दे० रूप की दोपहरी खिलना

### रूप धरना

रूप बताना । प्रयोग—सीतहि पास दिखावहि धरहि रूप बहु मंद (राम० (सु०)—तुलसी, ८०५)

### रूपचंद

रूपया, धन दोस्त । प्रयोग—हैं न भलमंसिदां जिन्हें प्यारी है जिन्हें रूपचंद से नाता (सुमते०—हरिऔध, १६४)

### रूप-माधुरी में खने होना

अर्थात् रूपवान होना । प्रयोग—सूर सजीवन होहि सु नव तन, रूप माधुरी साने (सु० सा०—सूर, ४२९३)

### रूप-राशि होना

अर्थात् रूपवान होना । प्रयोग—आवति दीखि बरातिन्ह सीता । रूप राशि सब भाति पुनीता (राम० (बाल)—तुलसी, ३२६)

### रुह फना होना

मयमोय होना । प्रयोग—शादी के ख्याल से मेरी रुह फना हो जाती है (कर्म०—प्रेमचंद, १०१); पहले तो सहज ही वेश में अपने भाई को देखते ही मेरी रुह फना होती थी तिस पर परशुराम का मेक-जग (अपनी सखर—उग्र, ५६)

### रेकाई टूटना,—तोड़ना

पूर्व स्थापित श्रेष्ठतम काम से बढ़कर होना । प्रयोग—इतनी जानदार दावत हुई कि पिछले सारे रेकाई टूट गये (गोदान—प्रेमचंद, ३१८); धाज से दो साल पहले मिस जीनत बी० ए० की परीक्षा में यूनिवर्सिटी का रिकार्ड तोड़ चुकी है (कठ०—दे० स०, १९३)

### रेकाई तोड़ना

दे० रेकाई टूटना

### रेख सांचना

जोर देना; प्रतिज्ञा करनी । प्रयोग—तुलसी कहते हैं सांची रेख बार-बार लांवी, डील किये नाम-महिमा की नाव जो-रिहौ (विजय०—तुलसी, २५८)

### रेख फूटना

मूर्च्छा निकलना शुरू होना । प्रयोग—आस-पास की वस्तियों के लड़के, जिनके अभी रेख तक नहीं फूटी XX धान से पग-हिवा बांधें, सिर ऊँचा किये फिरते हैं (ज्ञान०—यशपाल, ९७) (ममा० मुहा०—रेख आना,—निकलना)

### रेख में मेख मारना

कठिन या घसमघस काम करना । प्रयोग—करामाती पंडित रेख में मेख मार सकता है (सु० सु०—सुदर्शन, २४१)

### रेखा

आभास, चिन्ह । प्रयोग—ही तो सूबान महा धनजानंद पै पहचानि की राखी न रेखी (घन० कवित्त—घना०, ६७)



### रेखा खींच कर

दुःखतापूर्वक, विश्वासपूर्वक । प्रयोग—रेख खंचाइ कहउं बलु भाषी (राम० (अ)—तुलसी, ३८९)

### रेखा खींचना

(१) गणना करनी । प्रयोग—पूछेउ मुनिन्ह रेख तिन्ह खांची भरत भूषान होहि यह सांची (राम० (अ)—तुलसी, ३९१)

(२) सीमा निर्धारित करनी ।

### रेखा न होना

स्वान न होना । प्रयोग—साधु समाज न जाकर लेखा राज भगत सह जानु न रेखा (राम० (अ)—तुलसी, ५५१)

### रेड मारना

किसी काम या वस्तु का रूप बिगाड़ना, उसे बुरी तरह से करना । प्रयोग—दूसरे उडूँ इसकी ऐसी रेड मारे हुए है कि शुद्ध हिन्दी तुलसी, मूर इत्यादि कवियों की पद्य रचना के अतिरिक्त और कही मिलती ही नहीं (सा० सु०—बा० मट्ट, ११)

### रेत पर नाच चलना

असंभव काम होना । प्रयोग—घनवान की तो रेत पर भी चल जाती है पर निर्धन की नाच बलपुत्र में भी नहीं चलती (ब्रह्म०—दे० स०, २६)

### रेफ न आना

(१) तनिक भी घाब न लगना । प्रयोग—कोई दस मिनट तक तीनों ने खूब तलवार के जोहर दिखाये, पर मुझ पर रेफ न आयी (निर्मला—प्रेमचंद, ५२)

(२) तनिक भी ग्रहित न होना ।

### रेल-पेल होना

(१) बहुतायत होनी । प्रयोग—जिस धी दूध, शाक-भाजों मांस-मछली आदि के लिए शहर में तरसते थे, X X उन पदार्थों की यहां जिह्वा और बाहु के बल से रेल-पेल हो जाती है (प्रेमा०—प्रेमचंद, ५४)

(२) भीड़ होनी ।

### रोंगटे खड़े होना, रोआं खड़ा होना,—फूटना

बहुत डर जाना । प्रयोग—ठाड साहब के राजस्थान को पकौ तो हमारे शत्रियों की शान का हाल समझ रोषटे खड़े

हो जाते हैं (भट्ट नि०—बा० मट्ट, ३७); बड़ी दुःखदायिनी मर्म-वेधी बातें हैं जिनको कहते खड़े रोंगटे हो जाते हैं (देहे०—हरिऔध, ८); उस प्ररीर, दाढ़ी धीरे मूँछ को देखकर उसके रोंगटे खड़े हो गये (मृग०—पुं० वर्मा, ९५); उसकी बातों से मेरे रोंगटे खड़े हो रहे थे (जहाज०—इ० जौशी, ५१६); यकायक उस पाषाण मूर्ति देवी के तन में स्फूर्ति प्रकट हुई । तारा के रोंगटे खड़े हो गये (मान० (८)—प्रेमचंद, ४८); उस समय के कष्टों को याद करने से रोयें खड़े हो जाते हैं (मिला०—कौशिक, १७७); इधर देखो, मेरे रोयें फूट गये हैं (सिद्ध०—ल० मिश्र, ३५)

### रो-रोकर

बड़ी कठिनाता से; बहुत धीरे धीरे; बड़े दुःख से । प्रयोग—हवा खूब चलती थी इसमें पगडंडी भी नहीं नजर पड़ती, बड़ी मुश्किल से चले X X खैर बलबी तक रो-रो कर पहुँचे (भा० प्रज्ञा० (३)—भारतेन्दु, ९५२)

### रो-रोकर प्राण देना

बहुत ही दुखी होना । प्रयोग—बड़ी कुसुम आज अपन पति के निर्दय व्यवहार के कारण रो-रो कर प्राण दे रही है (मान० (७)—प्रेमचंद, ६)

### रोआं खड़ा होना

दे० रोंगटे खड़े होना

### रोआं न छू पाना

तनिक भी ग्रहित न कर पाना । प्रयोग—जब तक मैं यहां हूँ आपका कोई एक रोआं भी नहीं छू सकता (ठेठ०—हरिऔध, ४७)

### रोआं फूटना

दे० रोंगटे खड़े होना

### रोआं-रोआं कान होना

कोई बात सुनने की तीव्र उत्कंठा होनी । प्रयोग—रतन का रोआं-रोआं कान बना हुआ था, मानो कोई कौड़ी खपनी किस्मत/का फंसला सुनने को खड़ा हो (गवन—प्रेमचंद, १२१)

### रोज कुआं खोदना रोज पानी पीना

रोज कमाना रोज खाना । प्रयोग—रोज कुआं खोद कर पानी पीने वाले मनुष्य के लिए एक दिन भी ठाढ़ा बैठना भार हो जाता है (बूँद०—अ० ना०, १०२); और हम ठहरे



जनता दे नाटककार X X रोज कुम्मा खोदने और रोज पानी पीने वाले लोको दे नाटककार (कठ०—दे० स०, ४१७)

### रोज़ा खोलना

वत समाप्त करना । प्रयोग—नौ चिट्ठियों में से इस अंक में तीन तो होती, आप ने पीने दो पर ही रोजा खोल दिया (पद्म० के पत्र—पद्म० शर्मा, ८२)

(समा० मुहा०—रोज़ा टूटना.—तोड़ना)

### रोज़ा बरुशाने नमाज़ गले पड़ना

लाम का काम करने चलते नुकसान होना । प्रयोग—दमड़ी रोता हुआ चला गया । रोजा बरुशाने आया था, नमाज़ गले पड़ गयी (मान० (४)—प्रेमचंद, १९८)

### रोज़ी लेना

पेट भरने के प्रबंध का छिन जाना या छीनना । प्रयोग—मेरी रोजी क्यों ले रहे है हुजूर ? (गबन—प्रेमचंद, ३०६)

(समा० मुहा०—रोज़ी चुराना)

### रोज़े से रहना

उपवास करना । प्रयोग—ऐसा न हो कि हम लोग खाकर सोए और वह बेचारी रोजे से रह जाये (रंग० (२)—प्रेमचंद, २३४)

### रोटियां चलना,—मिलना

खाना-खर्चा चलना । प्रयोग—यहां तो रोटियां चलनी मुश्किल है, गहने-कपड़े को कौन रोये (मान० (७)—प्रेमचंद, ६१); फिर अम्मीबान का दिया हुआ दहेज ही इतना है कि उनकी तीन साल की रोटियां तो मजे से चल सकती हैं (कठ०—दे० स०, २३१); उन्हें रोटियां आप से मिलती हैं (कुल्लू०—निराला, १०९); मेरी तो बेगम के घर से रोटियां चलती थी (मा—कौशिक ३८०)

### रोटियां तोड़ना

(१) किसी के घर पड़े रह कर पेट पालना । प्रयोग—मुझे डिप्टी इतनी प्यारी नहीं है कि उसके लिए समुराल की रोटियां तोड़ूँ (कर्म०—प्रेमचंद, १५)

(२) भोजन करना । प्रयोग—कुछ करो-धरोगे नहीं ? होटल की रोटियां तोड़-तोड़ कर बनेगा क्या ? यह कोई डंग है रहने का ? (शेखर (२)—अज्ञेय, १३५); खुदा का शुक्र करो कि बँडे-बँडे रोटियां तो तोड़ने को मिल जाती है (प्रेमा०—प्रेमचंद, २७६)

### रोटियां फाड़ना

खाना खाना; टुकड़े तोड़ना । प्रयोग—भिलारिन कुछ दिन मुपत की रोटियां फाड़ती रही, फिर काम करने लगी (सु० सु०—सुदर्शन, २४९)

### रोटियां मिलना

दे० रोटियां चलना

### रोटियों के मुहताज होना

ऐसा व्यक्ति जिसे भरपेट भोजन भी न मिलता हो । प्रयोग—हफ्तों घर में नहीं आते कि दो बातें कर लूँ, पगर इनके यही डंग रहे तो साल-दो साल में रोटियों के मुहताज हो जायेंगे (मान० (२)—प्रेमचंद, ४१)

### रोटियों के लाले पड़ना

खाने की भी तगिया होनी, अत्यंत दरिद्रता होनी । प्रयोग—उसकी सारी जायदाद को इन्हीं लोगों ने कूड़ा कर दिया । अब उसे रोटियों के भी लाले हैं (मान० (१)—प्रेमचंद, १३५)

### रोटी कमाना

जीविका अर्जित करनी । प्रयोग—अपनी रोटी तो हर किसी को खुद कमाना चाहिए (कठ०—दे० स०, १३४); मेरा कारखाना ऐसे बेकारों को अपनी रोटी कमाने का अवसर देगा (रंग० (१)—प्रेमचंद, ७७)

### रोटी का चोर

खिलाने-पिलाने से जान बचाने वाला । प्रयोग—फिर ताहिर अली रोटी के चोर न थे, दोस्तों के आतिथ्य में उन्हें आनंद आता था (रंग० (२)—प्रेमचंद, २१९)

### रोटी का प्रश्न

पेट भरने की समस्या । प्रयोग—इससे मुसलमानों की रोटियों का सवाल हल होता है (बोटो०—निराला, २८)

### रोटी बढ़ाना

खाना बनाना । प्रयोग—बहू, तुम से कुछ काम था । क्या रोटी बढ़ाने जा रही हो ? (मा—कौशिक, ५७)

### रोटी-कपड़ा

भोजन-वस्त्र; जीवन निर्वाह की सामग्री । प्रयोग—उसका बाप एक बहुत ही धर्मात्मा दरिद्री है पर धन्य है ईश्वर को कि रोटी कपड़े से मुन्नी है (मा० प्रथा० (१)—भारतेन्दु, ५७२)



### रोटी-दाल चलना

जीवन-निर्वाह होना। प्रयोग—घर भी उनके पास इस पांच बीघा खेत है, रोटी दाल चली जाती है (ठंठो—हरिऔध, १०)

### रोटी-दाल से खुश होना

सामान्य रूप से खुशहाल होना। प्रयोग—दीनदयाल की उम्र बालीस से कुछ अधिक थी X X पर रोटी-दाल से खुश थे (मान० (१)—प्रेमचंद, ७४)

### रोटी-दाल से लड़ना

जीविका के लिए संघर्ष करना। प्रयोग—मधुबन जब कुपती नहीं लड़ सकता रामजस ! अब उसे अपनी रोटी-दाल से लड़ना है (तितली—प्रसाद, १४२)

### रोटी-पानी के चक्कर में होना

जीविका की चिंता में होना। प्रयोग—जिन लोगों को रोटी-पानी के चक्कर से घबकाव नहीं है वे सामूहिक रूप से एक होकर लड़े हो सकेंगे, यह असंभव बात है (विप०—प्रेमी, ३६)

### (समा० मुहा०—रोटी-पानी की चिंता होना)

### रोटी-पानी में लगाना

भोजन बनाना; गृहस्त्री के कामों में लगी होना। प्रयोग—सबरे तो बेचारी रोटी-पानी में लगी रहती है (सा—कौशिक, ६५)

### रोटी-बेटी करना या होना,—का व्यवहार करना या होना

लान-पान व विवाह का बराबर संबंध होना। प्रयोग—गंधर्व और रामजनी पहले परस्पर रोटी-बेटी नहीं करते थे (यै कोठे०—अ० ना०, २०१); मुगलों ने राजपूतों से मेल किया, रोटी-बेटी का व्यवहार किया (गोली—चतुर०, १८)

### (समा० मुहा०—रोटी-बेटी का संबंध होना)

### रोटी-बेटी का व्यवहार करना या होना

### दे० रोटी-बेटी करना या होना

### रोड़ा अटकाना

विघ्न या बाधा डालना। प्रयोग—पुलिस के कायें में रोड़ा अटकाने का तो प्रश्न ही नहीं उठता था (ब्रह्म०—दे० स०, ९१)

### (समा० मुहा०—रोड़ा डालना)

### रोता हुआ होना

उदास या मनहूस होना, बे-रोनक होना। प्रयोग—अजीब रोता हुआ शहर बन गया है यह (भूले०—मग० वर्मा, २८२)

### रोना

बहुत दुःखी होना। प्रयोग—तुम एक पेट को रोते हो, हम साला पकड़े जाते तो घन्दर हो जाते (पैतरे—चडक, १२७)

### (समा० मुहा०—रोना कलपना)

### रोना रोना,—ले बैठना

(१) शिकायत करनी। प्रयोग—जो छपा हुआ काम भेजता हूँ, इसमें भी इसका रोना रोया गया है कि कलकत्ते में शुद्ध पुस्तक नहीं छपती (पट्टम० के पत्र—पट्टम० शर्मा, १५०)

(२) कष्ट मुनाना। प्रयोग—आपने तो मुझ से मिलने घाने की दया की और मैं हूँ कि झूठमूठ का घपना रोना घापके सामने ले बैठी (भूले०—मग० वर्मा, ३०७); वर्तमान खग साहित्य के गीतों में सभी अपना ही रोना रोते हैं (परती०—रेणु, ४२९); पहले तुम्हीं ने घपनी लड़की का रोना रोया था (प्रेमा०—प्रेमचंद, १०२)

### रोना ले बैठना

### दे० रोना रोना

### रोना-गाना

(१) बिनती करना, गिड़गिड़ाया। प्रयोग—सेनापति हाल-बेल साहब अंगरेजों के किले की रक्षा के उपाय करने लगे पर कोई उपाय चलता न देखकर अंत में फिर अंगरेजों के गाड़े समय के भीत अमीचंद के शरण में गए, बहुत कुछ रोए गए (राधा० ग्रंथा०—राधा० दास, ३०८)

(२) बहुत दुःखी होना।

### रोना होना

(१) शिकायत होनी। प्रयोग—उन्हें तो मुझ से यही रोना है कि मैं किसी बात में बोलता ही नहीं (रंग० (२)—प्रेमचंद, १६६)

(२) कमी होनी।

### रोनेवाला न रह जाना

निर्वस मरना। प्रयोग—नाती पून कोटि इस घड़ा। रोवनहार न एकी रहा (पद०—जायसी, २५१०)



### रोब गांठना

रोब लगाना । प्रयोग—बेहतर रोब गांठते ही ये सब गया  
मोत को सहेजा क्यों (चोखे—हृत्त्रिओध, ५०)

### रोम खड़े होना—रोमावली खड़ी होना

भावातिरेक के कारण शरीर का रोमांचित होना । प्रयोग  
—स्यामल गात रोम भये ठाड़े (राम० (उ)—तुलसी,  
१०२३); बहु लालसा कथा पर बाढ़ी नयनन्ह तोर रोमावनि  
ठाढ़ी (राम० (बाल)—तुलसी, ११७)

### रोम पुलकित होना

प्रेम के कारण समस्त शरीर का घनन्दित होना । प्रयोग  
—पुलक रोम मदगद तेही छन सोभत अंग अभिराम (सु०  
सा०—सुर, ४०८४)

### रोम-रोम गीला होना

बहुत करुणाई होना । प्रयोग—जब घीसा नहाकर गीला  
अंगीछा लपेटे घोर आधा भोगा कुरता पहने अपराधी के  
समान मेरे सामने आ खड़ा हुआ, तब आँखें ही नहीं मेरा  
रोम-रोम गीला हो गया (अतीत०—महादेवी, ७५)

### रोम-रोम जलना

बहुत क्रोध या कुढ़न होनी । प्रयोग—उतने ही परिहास से

बड़ी रानी का रोम-रोम सा जल गया (मृग०—पृ० रमा,  
३६८)

### रोम-रोम में

शरीर भर में; पूरी तरह से । प्रयोग—मा सीतलता के  
कारण, माग बिलंबे छाड़ । रोम-रोम बिष भरि रह्या,  
अमृत कहाँ समाइ (कबीर ग्रंथा०—कबीर, ८४)

### रोम-रोम में रम रहना

पूर्ण रूप से व्याप्त होना । प्रयोग—बाहो घनचाहो जान  
प्यारे पे अनंद घन प्रीति-रीति विषम मु रोम-रोम रमी है  
(घन० कवित्त—घना०, १९)

### रोमांच होना

सिहरन होनी । प्रयोग—बिना छुए रोमांच हो उस्ता, बिना  
बोले मन समझ लेता है (कला०—पंत, १०२)

### रोमावली खड़ी होना

दे० रोम खड़े होना

### रोशनी डालना

स्पष्ट करना । प्रयोग—एक जगह इस बात पर रोशनी  
डाली गई थी.....(कठ—दे० सा०, ३९२)



## ल

### लंगर करना

(१) बरारत करनी । प्रयोग—मिर ते नीर डराई दे फोरी सब गगरी गेदुरि दई फटकारि के, हरि करत जू लंगरी (सू० सा०—सूर, २०३५)

(२) रुकना ।

### लंगी लगाना

बाग चलना, दांव-पेंच लगाना । प्रयोग—मुल्लो ने राजनै-  
तिक लंगी लगायी है (परली०—रेणु, १४९)

### लंगोट कसना

(१) स्त्री से वारोरिक सम्बन्ध न करना । प्रयोग—हमारी सेवा में मरते दम तक चुक न होय इसके लिए लंगोट कसे रहता (बूँद—अ० ना०, २५३)

(२) कुश्ती के लिए प्रस्तुत होना ।

### लंगोट के कच्चे

अनैतिक सम्बन्ध में संलग्न व्यक्ति । प्रयोग—लेकिन लंगोट के यह कच्चे थे—भट्टे ढंग से (अपनी खबर—उग्र, ६२)

### लंगोट के सच्चे—लंगोटा-बंद

ब्रह्मचारी होना या धर्मनैतिक सम्बन्ध में न पड़ना । प्रयोग—महन्त भागवत दास सिद्धांत और लंगोट के सच्चे थे (अपनी खबर—उग्र, ६०); छाजीवन नृत्य और संगीत के फेर में रहते हुए भी लंगोट के सच्चे बने रहे (ये कोठे—अ० ना०, २०९); हमेशा लंगोटाबंद रहकर सतगुरु के स्थल की रक्षा करेंगे (मैला०—रेणु, ७३); कभी किसी माई के लाल ने मेरी पीठ में धूल नहीं लगाई, तो बात क्या थी ? लंगोट के सच्चे थे (रंग०—प्रेमचंद, २७७)

### लंगोटा-बन्द

दे० लंगोट के सच्चे

### लंगोटिया यार होना

वचन का मित्र होना । प्रयोग—अपने लंगोटिये मित्र कल्याण भगत पर व्यंग्य करने में उन्हें आनंद आता है (ब्रह्म०—दे० स०, १९); यह कर्तार सिंह पं० शादीराम के लंगोटिया यारों में से थे (चेतन—अ०, १३६); वह मेरे लंगोटिया यार हैं (कुल्लो—निराला, १३)

### लंगोटी लगाये घूमना

निर्धन हो जाना, पास में कुछ न होना । प्रयोग—अगर तुम्हारे धर्म-मार्ग पर चलता तो आज मैं भी लंगोटी लगाये घूमता होता (कर्म०—प्रेमचंद, ४१)

### लंघन करना

उपवास करना । प्रयोग—देखिये दसा ब्रसाथ अंतिमां निपेटनि की, भसमी बिषा पै नित लंघन करति है (घन० कविस—घना०, १६)

### लंबा

दीर्घकालीन । प्रयोग—मां ने बातों बातों में बताया था कि रेवाम का काम करने वालों को अपने लम्बे अनुभव से यह ज्ञान हो जाता है कि वे ठीक अवसर पर पोलू को गरम पानी में डाल दें (ब्रह्म०—दे० स०, १८९)

### लंबा बनना या होना

चल देना । प्रयोग—तुम दो-एक हाथ चला के वहाँ से लम्बे हो जाना और मैं सब देस लुंगा (प्रेमा०—प्रेमचंद, २१६)

### लंबा हाथ मारना

बिना प्रयास के या अनायास बहुत धन प्राप्त होना । प्रयोग—लेकिन मुझा ने लंबा हाथ मारा (चोटी०—निराला, १००)

### लंबा-चोड़ा

बड़ा, अधिक, विस्तृत । प्रयोग—महाराज ! कुमुदपुर का वृत्तान्त बहुत लंबा चौड़ा है (मा० ग्रं० (१)—मारतेन्दु,



१६३); चुने का किल बड़ा लम्बा-चौड़ा आया (मेरे०—गुलाब०, २२)

### लंबी तनखाह पाना

तनखाह में काफी राख पाना । प्रयोग—सरकारी नौकरी में मौज करते हैं, लम्बी तनखाहें पाते हैं (भूले०—भा० वमी, ४६५)

### लंबी तान कर सोना

निश्चित पड़े रहना । प्रयोग—गूँझता है न क्या है हो रहा और लम्बी तान कर हँसो रहे (चुमते०—हरिऔध, २५)

### लंबी तानना

लेटकर सो जाना, निश्चित हो जाना । प्रयोग—भंग खान कर महाराज जी ने छटिया पर लम्बी तानी (गु० नि०—वा० मु० गु०, २४३); मामूली कामों से छुट्टी पाकर ब्यालूकी और पलंग पर लंबी तानी (मा० मा० (१)—कि० गो०, ६४); जब कि चोटें हों करम पर चल रही थी बनावट ने उसे ही हक लिया तान ली तब आपने लम्बी अगर तो तिलक लम्बा लगाकर क्या किया (चुमते०—हरिऔध, १२०); कभी वे उठ पड़ते, कभी समय सुनने के बाद फिर आध-पौन घंटे के लिए लम्बी तान लेते थे (दो कोठे०—अ० ना०, ४२)

### लम्बी बांह

सबका उद्धार करने की प्रवृत्ति । प्रयोग—परन्तु रक्षा करने वाले की बांह बड़ी लंबी है (राधा० प्रशा०—राधा० दास, ३४३); घापकी बांह है बहुत लंबी, घाप ही बार बांह वाले हैं (बोल०—हरिऔध, १४८)

### लम्बी रस्सी देना

बहुत हील देना । प्रयोग—बहु उसकी सुनामद करता, अपने सिद्धान्तों को लंबी से लंबी रस्सी देता पर मुखदा इसे उसकी दुर्बलता समझ कर टुकरा देती (कर्म०—प्रेमचंद, १३)

### लम्बो सांस भरना

हताश होना, दुःख प्रकट करना । प्रयोग—शोइते क्या, शोइ लंबी देखकर सांस ही लंबी अगर भरने लगे (बोल०—हरिऔध, ११३)

(समा० मुद्रा०—लम्बी सांस खींचना,—छोड़ना,—लेना)

### लंबी-चौड़ी बात,—लंबी बात करना

कम लघु पर अधिक विस्तार वाली बात । प्रयोग—कहो, उनके खाने का क्या किया, लम्बी-चौड़ी बातें ही बनानी जाती है कि कुछ करना भी आता है ? (मा० प्र० (१)—भारतेन्दु, २२); अपने मतलब के लिए लम्बी लम्बी बातें बनाने से कोई मिव नहीं हो सकता (परीक्षा०—श्री० दास, ३४); ऐसे ही है मनुज गुणों से पूजा जाता लम्बी लम्बी बात नहीं है बात बनानी (मर्म०—हरिऔध, ७५); ऐसे समाज की कल्पना ऐसी परिस्थिति का स्वप्न जिसमें गुण ही गुण, प्रेम ही प्रेम हो या तो लम्बी-चौड़ी बात बनाने के लिए या दूसरों को फुसलाने के लिए ही समझा जा सकता है (चिन्ता० (१)—शुक्ल, १२९); गु तो बात भी लम्बी-चौड़ी करने लगी (कामना—प्रसाद, ५५)

### लम्बी-लम्बी तारीखें पड़ना

मुकदमे की सुनवाई के लिए बहुत-बहुत दिनों बाद की तिथि का निश्चय होना । प्रयोग—न जाने क्यों मुकदमे की अब लंबी-लंबी तारीखें पड़ने लगी थी (शैलर (२)—अज्ञेय, ७२)

### लंबो-लंबी बात करना

दे० लम्बी-चौड़ी बात

### लंबे कदम रखना,—लंबे डग भरना

जल्दी-जल्दी चलना । प्रयोग—राम्ते में लंबे-लंबे डग भरते चले जा रहे थे, उसी समय उनकी दृष्टि एक व्यक्ति पर पड़ी (मा—कौशिक, ४२); लम्बे कदम रखते हुए वे एक ओर बढ़ चले (ज्ञान०—यशपाल, १३२)

### लंबे डग भरना

(१) बड़ी प्रवृत्ति करना । प्रयोग—हमसे लम्बी-लम्बी बातें सुन लो, लंबी डगे भरने की कहानियाँ कहलवा लो, लेकिन लंबी तान कर सोना ही हमें पसन्द है (चुमते० (मु०)—हरिऔध, ४)

(२) जल्दी जल्दी चलना ।

### लंबे पैर पसार कर सोना

मर जाना । प्रयोग—कबीर सूता क्या करे, जागि न जय मुरारि । एक दिना भी सोवणा, लंबे पाँव पसारि (कबीर प्रशा०—कबीर, ५)



### लम्बे बालोंवाली

बदचलन, घाप । प्रयोग—ये औरत तो लम्बे बालोंवाली है । जरा सी देर में इज्जत साक में मिला दे है (निशि०—वि० प्र०, २३७)

### लंबे-लंबे उम धरना

दे० लंबे कदम रखना

### लंबे होना

चल देना । प्रयोग—अगर तुमने इसे इतना मिर न चड़ाया होता तो अब तक लंबा हुआ होता (मान० (१)—प्रेमचंद, १०४)

### लकड़-तोड़ होना

नीरस होना । प्रयोग—तुलसी-सतसई के दोहे बड़े लकड़-तोड़ हैं (गु० नि०—वा० मू० गु०, ५५४)

### लकड़ी होना

(१) सहारा होना । प्रयोग—घड़े की लकड़ी तो जादू ही था (ब्रह्म०—दे० स०, २५६)

(२) बहुत दुबला-पतला होना ।

(३) सूख कर कड़ा होना ।

### लकीर के फकीर

पुराने ढंग पर चलने वाले । प्रयोग—हमारी हिन्दू की कौम धारणत 'कनसरबेटिब', लकीर पर फकीर (मट्ट नि०—वा० मट्ट, १२१); पर सुनो भाषा यही क्या है सलूक क्यों बनाते हा लकीरों का फकीर (बोल०—हरिऔध, २९); आवश्यकता भी पूर्ण हो जाती है और लकीर की फकीरी का भी निर्वाह हो जाता है (दे०—गुलाब०, १२४)

### लकीर पीटना, लीक पकड़ कर चलना,—पर चलना,—पीटना

पुरानी प्रथा या तरीके के अनुसार काम करना । प्रयोग—कोई पुरानी लीक पीटते हैं कोई कहता है नया (मा० ग्रंथा० (२)—भारतेन्दु, ५७१); लीक पीटनेवालों की पुरानी पड़ी हुई सन्दाबली हटा देने से उनकी काव्य भाषा में भी बड़ी सफाई दिखाई पड़ी (चिंता० (१)—शुक्ल, १९०); घाप समर्थ है, राखता बनाती चलती है, हम दूसरों की बनाई हुई लीकें पीटते हैं (नदी०—अज्ञेय, ३४); रेखा ने फिर कहा—अकेले

हैं तभी लीक पकड़ कर चलते हैं (नदी०—अज्ञेय, ३१); अपने पूर्व पुरुष स्वर्गीय महाराजा जयन्द की लीक पर ये चलते हैं (विप०—प्रेमी, ६७); सन् १६४४-४७ तक घोसानाल भी अपने स्वर्गीय बाप की लीक पर ही चलता रहा (कला०—उग्र, ६५); सब बड़े मूर्ख और पुरानी लकीर पीटने वाले कहे जाते हैं (कामना—प्रसाद, ४४); १८ बरस से मैं दफ्तर में लकीरें पीट रहा हूँ (भोर०—जग० माधु, ७१)

### लक्ष्मी-वाहन होना

(१) धनवान होना । प्रयोग—हिन्दी वालों का बाबा आदम ही निराला है । साहित्य-नेबियों की कद कैने हो । इन्हें तो रायबहादुर, कोई बड़े भारी लीडर और लक्ष्मी-वाहन चाहिए (पट्टम० के पत्र—पट्टम० शर्मा, १७९)

(२) महामुख होना ।

### लग जाना या लगना

लोकरी में लगना । प्रयोग—वहाँ महोने में दस दिन भी लग जाते हैं तो सब निकल आता है (पैतरे—अशक, ५६)

### लग रहना

लिप्त होना, प्रेम होना । प्रयोग—ऐसा कोई ना मिले, जासो रहिये लमि (कबीर ग्रंथा०—कबीर, ६६)

### लगती बात कहना

(१) मर्म-भेदी बात कहनी । प्रयोग—मैं इस बाद-विवाद की गर्मा-गर्मी में अक्सर तेज हो जाता और लगने वाली बात कह जाता (मान० (१)—प्रेमचंद, १०४); लगती बातें कह करता है वह न किसी छाती में छेद (मर्म०—हरिऔध, १५)

(२) चुटकी लेना ।

### लगन लगना या होना

(१) किसी कार्य को करने की धुन लग जानी । प्रयोग—जाति पड़ी सोती है अब भी उसे न लगन लगी (मर्म०—हरिऔध, १४७)

(२) प्रेम होना । प्रयोग—जासो लगन लागी होई (सू०सा०—सूर, ४५६९); तारे चिन्ते रात बीतती, नींद न आती लगे लगन (मर्म०—हरिऔध, १४४)

### लगना

(१) मनमुटाव होना, झगडा होना । प्रयोग—गृहवते ही



इसने पर-पूरजे निकालने शुरू किये । दोस्तों में लगने लगी (पेंतरे—अ३८, ९७)

(२) असर होना । प्रयोग—कहो तुम्हारी लागत काहें (सू० सा०—सूर, ४२३०)

(३) तंग करना, छेड़छाड़ करनी । प्रयोग—घोरनि मो करि रहे घचगरी, मो सौ लगत कम्हाई (सू० सा०—सू, २०२२); तुलसी बिनोकि अकुलानी जातुधानी कहै, बार-बार कह्यो, पिय ! कपि सौ न लागि रे (कवि०—तुलसी, ४४)

(४) खर्च होना ।

(५) बुरा मालूम पड़ना ।

(६) रिश्ते में होना ।

### लगाना

(१) किसी के विरुद्ध कहना । प्रयोग—और उसे गालियों ही से संतोष न होता, ज्यों ही भैंरो दूकान से जाता, एक-एक के सौ-सौ लगानी (रंग० (१)—प्रेमचंद, १८१); जो लगाये कहें लगी लिपटी वे कभी बन सके नहीं सन्धे (चुमते०—हरिऔध, १३)

(२) प्रेम करना । प्रयोग—लड़कों का क्या है, सभी से लगाये रखना चाहते हैं (झूठा० (१)—यशपाल, ९३)

(३) खर्च करना ।

### लगाई-बुझाई होना

कुमंत्रणा होनी । प्रयोग—ये सब नंदो बीबीजी की लगाई-बुझाई है (बूंद०—अ० ना०, ३२१)

### लगाम कसना,—खींचना,—लगाना

निषंजन रखना, रोकना । प्रयोग—मालूम होता है बेगम साहिबा लगाम कस रही हैं (मुले०—भा० वर्मा, ३४४); इरोगा जी चढ़ते मुस्से की लगाम खींच सज्जन की ओर देखकर मुस्कुराते हुए जोर से बोले... (बूंद०—अ० ना०, ५५); माधव की भूमिका में कभी-कभी मैं इतने धावेस में बोलता था कि रिहसल के समय × × मेरे ऊपर लगाम लगानी पड़ती थी (भोर०—जग० माधुर, १६३)

(समा० मुहा०—लगाम चढ़ाना,—देना)

### लगाम खींचना

दे० लगाम कसना

### लगाम लगाना

दे० लगाम कसना

### लगाव होना

सम्बन्ध होना; आकर्षण होना; प्रेम होना । प्रयोग—दोनों भाइयों के स्वभाव में जमीन-आसमान का अन्तर था और इसीलिए ज्ञान प्रकाश को अपने घर में कोई लगाव न रह गया था (मुले०—भा० वर्मा, ४१९)

### लगी होना

प्रेम होना, अनुरक्त होना । प्रयोग—जाके लागी होइ मु जानै (सू० सा०—सूर, ४५६७); जाके लगी दिल जानत नाहि को जान पराये की जानत को है (इश्क०—बोधा, १७)

### लगी-लिपटी कहना

बात स्पष्ट न कहना, तरफदारी करनी । प्रयोग—जो लगाये कहें लगी लिपटी वे कभी बन सके नहीं सन्धे (चुमते०—हरिऔध, १३)

### लगे रहना

(१) निर्भर करना । प्रयोग—मो कुटुंब याही लग्यो, ऐसी कह पाऊं ? (सू० सा०—सूर, ४८६)

(२) व्यस्त रहना ।

### लगे हाथ

किसी काम के साथ साथ किसी अन्य कार्य को भी कर डालना । प्रयोग—आप लगे हाथ धीर भी करमाते हैं—“भाषायों के भी जीवन की सीमा होती है...” (गुंनि०—वा० मु० गु०, ४४५); दयानाथ का जो तो सहारा था कि लगे हाथ उसे भी ले लो × × पर जगदेवरी इस पर राखी न हुई (गवन—प्रेमचंद, ७); जाति हित क्या रियां लगे हाथो क्यों नहीं आप बीच लेते हैं (चुमते०—हरिऔध, ३०)

### लगन धरना

शुभकार्य के लिए मूर्त निकलवाना । प्रयोग—लगन धरी श्री रचा बिआह (पद०—जायसी, २६११); रवि प्रपन्न भूपति धरनाई राम तिलक हित लगन धराई (राम० (अ)—तुलसी, ३८८)

### लच्छेदार बातें

पूमा-किराकर मनोरंजक वंग से की गई बातें । प्रयोग—



सब जानते हैं कि यह अपने मतलब की कह रहा है पर लच्छेदार बातों के मायाजाल में फँस बहका सभी जाते हैं (प्र० पौ०—प्र० ना० मि०, ६०); बड़े बात बड़ी लच्छेदार करते हैं (निर्मला—प्रेमचंद, १३४)

### लच्छेदार भाषा

आलंकारिक और मनोरंजक भाषा। प्रयोग—परन्तु बालें-टाइन साहब की संस्कृत पंक्तियों की जैसी लच्छेदार संस्कृत नहीं (सा० सी०—महा० द्वि०, ५९)

**लज्जा का आचमन करना,—को जूतों मार कर निकाल देना,—धोलकर पी जाना,—डाल देना,—धो डालना,—वेच खाना**

निलंज हो जाना। प्रयोग—ओखि बुधि तैं करी सजनी, लाज दीन्ही छारि (सु० सा०—सुर, २२६७); सुर-प्रभू को कहा कहिये, बेचि साईं लाज (सु० सा०—सुर, ३७६८); लाज अर्च बिन काज लगी तिनहीं गो पगो त्रिन रंग-रण हो (घन० कवित्त—घना०, १९८); क्या कहना है, लाज को जूतों मार के पीट-पीट के निकाल दिया है (मा० ग्रंथा० (१)—भारतेन्दु, ४४९); मैंने सब लज्जा ऐसी धो बहाई कि जाए गए भीतर-बाहर वाले सब के सामने कुछ बक उठती हूँ (मा० ग्रंथा० (१)—भारतेन्दु, ४६२); जिनके आंस का पानी बरक गया है और घरम घोर हिजाब को धो बेंटे हैं उन्हें नीचे से नीचा काम करने में संकोच नहीं रहता (सा० सु०—वा० भट्ट, ४६-४७); 'तुम मुझे छोड़ कर चले जाओगे ? कहते लाज नहीं घाती ?' 'लाज तो धोल कर पी गया' (गोदान—प्रेमचंद, २७२); हरजाई, लाज घरम तो धोबकर पी गई (परसी०—रेणु, २५९)

(समा० महा०—लज्जा की चादर उतार फेंकना, लज्जा भून खाना)

### लज्जा का भी लज्जित होना

अप्रति लज्जाजनक स्थिति होनी। प्रयोग—साधू भूप बोले मुनि बानी राज समाजहि लाज लजानी (राम० वा०—सुलसी, २७३)

### लज्जा के मारे मरे जाना

बहुत लज्जित होना। प्रयोग—बिनती करत मरत हो लाज

(सु० सा०—सुर, ९६); तुमने उसकी घोर बड़े प्रेम से देखा था, बेकारी लाज के मारे मर गयी थी (गवन—प्रेमचंद, २३)

(समा० महा०—लज्जा के मारे गड़े जाना)

**लज्जा को जूतों मार कर निकाल देना**

दे० लज्जा का आचमन करना

**लज्जा धोल कर पी जाना**

दे० लज्जा का आचमन करना

**लज्जा टूटना**

लज्जा न रहना। प्रयोग—कुबटा एकु पंच पतिहारी, टूटी लाजु भरें पतिहारी (कबीर ग्रंथा०—कबीर, २६८)

**लज्जा डाल देना**

दे० लज्जा का आचमन करना

**लज्जा धो डालना**

दे० लज्जा का आचमन करना

**लज्जा वेच खाना**

दे० लज्जा का आचमन करना

**लज्जा लुटना**

लाज न रहनी। प्रयोग—नैन मिले उर के पुर पैठते लाज लुटी न छुटी तिनका सो (घन० कवित्त—घना०, १२३)

**लज्जा से गड़ जाना,—जमीन में गड़ जाना,—डूब मरना,—दोहरा होना,—पानी-पानी हो जाना,—पीला पड़ना,—मर जाना,—मारी जाना**

बहुत लज्जित होना। प्रयोग—लाजन्ह बुझि मरयि नहि ऊभि उठावयि माय (पद०—जायसी, ३६१५); लोबन दान कह कोत मांगत, यह मुनि-मुनि धति लाजनि मारी (सु० सा०—सुर, २०८१); कहि केसव घापनी जांव उधारि कै, आप ही लाजनि को मरई (केशव० (१)—केशव, ५८); पल-पल पर वीरी परति परी लाज के राज (जग०—पट्टमाकर, २१); लाजहि ते महि जाति कहूँ अहि जाति कहूँ गज की गति भाई (जग०—पट्टमाकर, ३३); हौ सति लाजन जात गरी 'मतिराम' सुभाव कहा कही पी के (मति० मक०—मतिराम, ११८); पंडित जीXXलज्जा के मारे



धरती में गड़ चले जाते थे पर कुछ बोल नहीं सकते थे (परीक्षा०—श्री० दास, ५५); जेलर लज्जा से गड़ गया (शेखर (२)—अश्वेय, ९२); यदि वह सीधे ढंग से मेरी बात का उत्तर देता तो मैं निश्चय ही लज्जा से पानी-पानी हो हो गया होता (जहाज०—इ० जोशी, १९६-१९७); XX में लाज से धनुष की तरह दोहरी हो जाती हूँ (कुनु०—भारती, २६); सोफी संकोच और लज्जा से गड़ी जाती थी (रंग० (१)—प्रेमचंद, १४९); परन्तु मुझे तुम्हको पृथ कहने में संकोच होता है, लज्जा से गड़ी जा रही हूँ (स्कंद०—प्रसाद, १२०); भरत हो कर यहाँ ब्या धाज करते स्वयं ही लाज से वे डूब मरते (साकेत—गुप्त, ६०)

(समा० मुहा०—लज्जा से सिमिट जाना)

लज्जा से जमीन में गड़ जाना

दे० लज्जा से गड़ जाना

लज्जा से डूब मरना

दे० लज्जा से गड़ जाना

लज्जा से दोहरा होना

दे० लज्जा से गड़ जाना

लज्जा से पानी-पानी हो जाना

दे० लज्जा से गड़ जाना

लज्जा से पीली पड़ना

दे० लज्जा से गड़ जाना

लज्जा से मर जाना

दे० लज्जा से गड़ जाना

लज्जा से मारी जाना

दे० लज्जा से गड़ जाना

लट्ट जाना

दुर्बल हो जाना । प्रयोग—बच्चों न मेल जोल लट्ट जाता एकता बच्चों न छटपटा जाती (चुमते०—हरिऔध, ६५); क्या कुदिन धन सुदिन नहीं होगा दिन ब दिन गात है लटा (चुमते०—हरिऔध, ५०)

लट्टने पर लात चलना

गिरे हुए पर पीर मार पड़नी । प्रयोग—तो तुम्हें लात बार लानत है लात चलती अगर सटे पर है (बोल०—हरिऔध, २३५)

लटपट

किसी प्रकार दुबलम सुललम । प्रयोग—रहिये लटपट काटि दिन वह घामें मा मोय (कुण्ड०—गिरधरदास, १४)

लटा हाथी भी नौ लाख का होना

आर्थिक व्यवस्था बिगड़ जाने पर भी बड़े घरों में बहुत कुछ होता । प्रयोग—शापट वह संसार से यह श्रेय लेना चाहती थी कि इस गयी बीती दशा में भी लटा हुआ हाथी नौ लाख का है (मान० (१)—प्रेमचंद, ९३)

लट्ट-पट्ट

सब सामान । प्रयोग—इस जाति धीरे धर्म की दशा यद्यपि महाभारत के पीछे से ही बिगड़ने लगी थी, इस महाभारत के प्रवेश और महाप्रलय का प्रारंभ उसी समय संघटित हो चुका था, 'भारत लक्ष्मी' और 'सरस्वती देवी' सभी यहाँ से सदा के लिये अपना लट्ट पट्ट बांध कर चल खड़ी हुई थी (पद्म पराग—पद्म० शर्मा, १०)

लट्ट होना

प्रभावित होना । प्रयोग—जानहुँ लट्ट हुआ एक साया । जम भा लट्ट चढ़े नहि हाथा (पट०—जायसी, ४१११७); हम तो रोमि लट्ट भईं लालन महाप्रेम तिय जानि (सूर—हि० श० सा०); रही लट्ट हूँ, लाल, हो ललित वह बाल अनूप । कि तो मिथ्या दयो दई, इतें मनोमें रूप (बिहारी रत्ना०—बिहारी, ४७३); कहै पदमाकर लट्ट हूँ सोट पोट भई, चित्त में चुभी जो चोट चोप चटवारे की (जग०—पद्माकर ५९); नाच लट्ट हूँ लग्यो फिरे पायनि, बापनि चाहि लड़ीलिये जोननि (घन० कवित - घना० १३५); मुसलमानी बाल पर उस समय बहुत लोग लट्टू थे (गु० नि०—बी० मु० गु०, ११३); वह घामीणों की भाँति सराफे में पहुँच कर उसकी चमक-दमक पर लट्टू न हो जाता था (रंग० (२)—प्रेमचंद, १६९); इसी से टेन नाम का एक फ्रांस निवासी लेखक घग्गेजी साहित्य पर लट्टू हो गया है (सा० सी०—महा० द्वितीय, २५); मेरी बच्ची मा-बेटे की मूर्ति पर लट्टू है, इनके लिए मुझे बंबई से आना पड़ा (दूगाछ—दे० स०, ३५९)

लट्टु लिए फिरना

(१) हर समय पीछे लगे रहना । प्रयोग—लोग ब्याहम-



लट्ट होना

क्याह अंगरक्षित के पीछे लट्ट लिए फिरते हैं (प्रेमा०—प्रेमचंद, १०९)

(२) उलटा काम करना ।

लट्ट होना

उलट्ट होना । प्रयोग—गुलमहम्मद बात करने में जैसा लट्ट जान पड़ता है वैसा वास्तव में नहीं है (झासी०—पृ० वर्मा, ४५६)

लट्टकई करना, लट्टकबुद्धि करना

बच्चों जैसी बातें करना; धननुभवों । प्रयोग—कंस कहा लट्टकई कीनी, कहि नारद समुझायी (सु० सा०—सूर, ६२२); लट्टके से बात कहनी तम्हें किसी भाँति उचित नहीं, इसने लट्टकबुद्धि की तो की (प्रेम सा०—ल० ला०, २७८)

लट्टकबुद्धि करना

दे० लट्टकई करना

लट्टखड़ाती जीभ

दुविधा या असमंजस से । प्रयोग—हे सदा बिकती भुगतती दुल बहुत धूम है उनके उल्लाड़ पछाड़ की । हम भले ही लट्ट-लट्टाती जीभ से बात कह लें लट्टकियों के लाड़ की (चुमते०—हरिऔध, १५५)

(समा० मुहा—लट्टखड़ाती जयान)

लट्ट फटना

लाभ की बात होनी । प्रयोग—लट्ट भले ही फूट जाय उसमें से तुम्हें तो हिस्सा मिलने में रहा (दूधगाछ—दे० स०, ३०५)

लट्ट बंटना

लाभ होना । प्रयोग—बंबई में कौन से लट्ट बंटते हैं ? (दूधगाछ—दे० स०, ४६)

लताड़ पाना

भला बुरा सुनना । प्रयोग—यह लताड़ पाकर मेरे लिए डूब मरने की बात होगी, घर में उनका आश्रय बना रहूँ (रंग० (१)—प्रेमचंद, १७३)

लताड़ मिलना

झांट पड़नी । प्रयोग—अपने जीवन में उसे ऐसी लताड़ न मिली थी (गोदान—प्रेमचंद, ११६)

लताड़ना

भला-बुरा कहना । प्रयोग—देवी जी, आप तो हमें ऐसा

६५४

लताड़ धो-धो करना या होना

लताड़ रही हैं मानों अपनी प्राण-रक्षा करना कोई पाप है (गोदान—प्रेमचंद, ७२)

लत्ता उड़ाना

खुब लपेटना, दुर्गति करनी । प्रयोग—बल्लाह ! मैं डाक्टर साहब के लसे उड़ा देता । यहाँ ऐसी-वैसी जिरह न करते (प्रेमा०—प्रेमचंद, २५१)

लथेड़ना

(१) भला-बुरा कहना । प्रयोग—वह क्रोध से भरी हठ कालिकाटीन के घर गयी और उसकी स्त्री को खूब लथेड़ा (मान० (८)—प्रेमचंद, ६९); हम लथेड़ें तो लथेड़ें क्यों उसे सा घपेड़े लें न पेड़े के लिये (चोखे०—हरिऔध, १२४)

(२) मारना; दुर्गति करनी । प्रयोग—नायकराम जैसे फेंकत और लठेत कैसे मुँह की खा गया । कहां संकड़ों के बीच से बेदाग निकल जाता था, कहां एक लौड़े ने लपेटे डाला (रंग० (१)—प्रेमचंद, २१७)

(३) फँताना ।

लदवा देना

जेन भिजवा देना । प्रयोग—ई है ऐसा तेज गुरू बरसन के देवे लदाई (भा० ग्रं० (१)—भारतेन्दु, ३३३); उनकी घाड़ न होती तो पुलिस ने अब तक मुझे कब का लदवा दिया होता (रंग० (१)—प्रेमचंद, २१८)

लपक कर

तुरंत; तेजी से । प्रयोग—धनिया ने लपक कर पगहिया उसके हाथ से छीन ली (गोदान—प्रेमचंद, ४२)

लपट पड़ना

किसी काम में लग जाना । प्रयोग—जान बेजान में पड़े कैसे जब दिलो जान से नहीं लपटे (चुमते०—हरिऔध, १०५)

लथ हिलाना

बुद्ध कहना । प्रयोग—मिर भला किम तरह हिलेमा तब लथ हिलाये अगर नहीं हिलता (नोल०—हरिऔध, १०३)

लथड़ धो-धो करना या होना

गड़बड़ करना या होना । प्रयोग—यदि ऐसा होगा तब तो आप लोगों की हिन्दी खुदा के फजल में उर्दू से भी सरल हो जायगी और तीन महीने की जगह तीन-तीस ही वर्ष



में सीखी जायगी और यदि उर्दू न जानने वालों को 'बिन्दी' न धावेगी तो आप लोगों की हिन्दी में लबड़ धो धो मच जायगी (गुं नि०—वा० मु० गु०, १५०); ओ उचित है वह करें बित को लगा बात में या क्यों लबड़-धो धो करें (बोल०—हरिऔध, २२०)

### लवाड़िया होना

झूठा होना। प्रयोग—जालपा से अब अगर गहने की बात कही गयी, तो रमानाथ को पूरा लवाड़िया समझेगी (गदन—प्रेमचंद, १६)

### ललाट की रेखा

किस्मत में जो लिखा हो। प्रयोग—परी जो रेख ललाट अधिक सुख, भेटि दुकार बनायो (सू० सा०—सूर, ४२४२) (समा० मुहा०—ललाट के अक्षर)

### ललाट में लिखा होना

किस्मत में जो हो। प्रयोग—साधू संग परापति लिखिया होइ ललाट (कबीर ग्रंथा०—कबीर, २६१); केतो धाय मरै कोइ बाटा सो पै पाव जो लिखा ललाटा (पद०—जायसी, ४९१६); कह मनीस हिमवंत मुनु जो बिधि लिखा ललार (राम० (बाल)—तुलसी, ८१); कह जाहु नाहिन मिटत जो बिधि लिख्यो ललार (सू० स०—दृन्द, ९)

### लल्ला जानना दद्दा न जानना

लेना जानना, देना न जानना। प्रयोग—इससे बड़ के नीति निपुणता क्या होगी कि रुजगार में, व्यवहार में × × बैर में, प्यार में लल्ला के सिवा दद्दा जानते ही नहीं (प्र० पो०—प्र० ना० मि०, ८३)

(समा० मुहा०—लल्ला पढ़ना, दद्दा न पढ़ना)

### लल्लो-चप्पो करना

खुशामद की बातें करनी। प्रयोग—धनियां ने लप्पो-चप्पो करना न सीखा था (गोदान—प्रेमचंद, २९८)

(समा० मुहा०—लल्लो पत्तो करना)

### लवलेस न होना, लेस न होना

तनिक भी न होना। प्रयोग—राम सच्चिदानंद दिनेसा। नहि तह मोह निमा लवलेसा (राम० (बाल)—तुलसी, १२९)

### लस्टम-पस्टम

किसी प्रकार। प्रयोग—यों ही कुछ दिनों लस्टम पस्टम चले (राधाग्रंथा०—राधा० दास, ४१५); दो दिन पेशवा ने लस्टम

पष्टम गोला-बारी घंगरेजों से बदली (झांसी०—सू० वर्मा, ४४६)

### लहना पाना

लेना किया वेंसा पाना। प्रयोग—ऊधो ! लहनी अपनी पैरै (सू० सा०—सूर, ४५२६)

### लहर आना

किसी कार्य को करने का जोश आना। प्रयोग—प्रसहयोग की लहर आई, और देश उसमें बह गया (शेखर (१)—अज्ञेय, ११२)

(२) प्रानंद आना।

### लहर खाना

विष का प्रभाव रह-रह कर उभरना। प्रयोग—सूर स्पाम बिनु विकल बिरहिनी, मुरि-मुरि लहरै खात (सू० सा०—सूर, ३८९०)

लहू का घूट पीकर रह जाना,—भर कर रह जाना जोश को जल कर जाना। प्रयोग—आज मैं लहू का घूट पीकर रह गई, नहीं तो जिन हाथों से तुमने उसे डकेला है, उसमें लूक लगा देतो (रंग० (१)—प्रेमचंद, ८९); हे लहू घूट आज वे पीते पी गये थे समुद्र जो सारा (चुमते०—हरिऔध, २०); कर्मल की निविलता और स्वास्थ्य का कारण वह सूख समझता था और लहू के घूट भर कर रह जाता (ज्ञान०—यशपाल, १६९)

### लहू का घूट भर कर रह जाना

दे० लहू का घूट पीकर रह जाना

### लहू खोलना

बहुत कोब होना। प्रयोग—क्यों निचुड़ता न आंस से लोह जब लहू खोल बंतरह पाया (बोल०—हरिऔध, ३४)

### लहू गारना,—चूस लेना

बहुत कष्ट देना। प्रयोग—साइये न मुंह की बखेरिये न बैर काटे कर लाल घांस लहू पगों का न गारिये (मर्म०—हरिऔध, १६४); भूल कितनों का लहू है पी रही रोग कितनों का लहू है गारते (चुमते०—हरिऔध, ६३); जाति-लोह चूस लेने के लिये कब नहीं हम जिन्द बनते हूँवहू (चुमते०—हरिऔध, १३२)

### लहू चूस लेना

दे० लहू गारना



### लहू पिला पिला कर पालना

- (१) घपना दूध पिला कर पालना । प्रयोग—जिन्हें मैंने अपना लहू पिला पिलाकर पाला, × × उन कलेजे के टुकड़ों को दूसरे को कैसे दे दूँ (मा—कौशिक, ५०)  
(२) बड़े काट से पालना ।

### लहू से हाथ रंगना

मार रानना । प्रयोग—रंग लाली प्यार की रंगत अगर हाथ जाता तो न लोहू से रंगा (चुमते०—हरिऔध, ७८)

### लहू होना

- (१) विनाश होना । प्रयोग—जो हुषा है तालसाधों का लहू लाल फल दल है उसी में ही रंगा (मोसे०—हरिऔध, २१०)  
(२) मारा जाना ।

### लहू-पसीना एक करना

बहुत मेहनत करनी । प्रयोग—यह घान उसने अपने खेत में उगाया था × × इसके लिए उसने लहू-पसीना एक किया था (ब्रह्म०—दे० स०, ८४)  
(समा० मुहा०—लहू-पानी एक करना)

### लाख कहना

बहुत कहना, कितना भी कहना । प्रयोग—जो गोरी पिय नेह गरब तो, लाख कहै किन कोई (सू० सा०—सूर, ३४४३)

### लाख रुपए की बात

खरी और महत्वपूर्ण बात । प्रयोग—यह तुमने लाख रुपए की बात कह दी भाई (गोदान—प्रेमचंद, ८); कभी करता है सच्चा हित, बात यह लाख टके की कह (मर्म०—हरिऔध, ८८)

### लाखों में खेल सकना

पान में खूब रूपा होना । प्रयोग—अगले जन्म में लहूकी जन्म लेना फिर तुम्हें भी इरा जितने पैसे मिल सकते हैं—लाखों में खेल सकोगे (दुष्काष्ठ—दे० स०, ३०३)

### लाग की आग

प्रतिद्वन्द्विता । प्रयोग—कलह-कोलाहल-परित देश, लगा है रहा लाग की आग (मर्म०—हरिऔध, ७१)

### लाग पड़ना

दुश्मनी करनी या होनी । प्रयोग—पिस्तौल और बंदूक

सब देखना, अब तो लाग पड़ गई (रंग० (१)—प्रेमचंद, २१७)  
(समा० मुहा०—लाग बांधना)

### लाग लगना

- (१) प्रेम होना, लगन लगनी । प्रयोग—सोएँ न योगबो, जागें न जाग, धनोलिये लाग मु आगिन लागी (धन० कवित्त—धना०, ३४); कस कमर कौन काम कर न सके लग गये लाग क्या न हाथ लगा (चुमते०—हरिऔध, ३०)  
(२) प्रतिद्वन्द्विता होना । प्रयोग—मीना का किवाह हुए कई दिन हो गए थे, लेकिन नगवा वालों को जैसे इसकी लाग लग गई हो (कठ०—दे० स०, ५८)  
(३) घुन होनी ।

### लाग-डांट करना या होना

मनमुटाव या अनबन होनी, स्पर्धा होनी । प्रयोग—लेकिन इस अवाड़े के चलने की देर नहीं कि लाग-डांट शुरू हो गई (मूले०—भग० वर्मा, १७२); वे इन डेरदारोंकी दृष्टि में ओझी थी । इसलिए लाग-डांट का प्रश्न ही उपस्थित नहीं होता था (ये कीठे०—अ० ना०, ११२); तुम लोगों की यह निहायत बेहूदी आदत है कि हर बात में लाग-डांट करने लगते हो (प्रेमा०—प्रेमचंद, ५८); दिन अगर लाग डांट में बीतें तो कटें बीच तान में रातें (चुमते०—हरिऔध, ६९)

### लाग-लपेट

गोलगोल बात । प्रयोग—कहते थे यह व्यक्ति लाग-लपेट का नहीं है (जय०—जैनेन्द्र, ११७)

### लाज-भोगी

सज्जापूर्ण । प्रयोग—माधुरी-मृदित मुख मुनील भाल, चंचल बिनाल नैन लाज-भीजिये चितोनि (धन० कवित्त—धना०, १२२)

### लाजों डूबना-उतराना,—मरना

अत्यंत लज्जित हो जाना । प्रयोग—कहूँ रस-रीति, कहाँ तन-गोधन, मुनि मुनि लाज मरो (सू० सा०—सूर, ४१६९); कोटि रतिराज अजरराज मिरताज की सौ देखि देखि राज-राज लाजनि भरत है (केशव० (१)—केशव, १९९); लाकी दूसरी धोर मुह करके लाजों में डूबने-उतराने लगी (सुग०—वृ० वर्मा, ५६)

### लाजों मरना

दे० लाजों डूबना-उतराना



### लाठी के जोर से

मार-पीट के द्वारा । प्रयोग—परानपुर इस्टेट के इन दो कर्मचारियों ने मिलकर कलम की नोक और लाठी के जोर से, जमींदारी की रक्षा की (परली०—रेणु, २३)

### लाठी में तेल लगाना

तड़ने की तैयारी करनी । प्रयोग—सोधा रास्ता है, उसने एक बालिस्त मेड़ तोड़ी है सो तुम मेड़ को ही उड़ा दो... पर घाकर लाठी में तेल लगाओ (परली०—रेणु, ६९)

### लाठी लेकर दौड़ना,—पीछे पड़ना

हर समय कुछ न कुछ शोष बूझते रहना; कट घालोचना करना । प्रयोग—तो समाज के पीछे लाठी लेकर पड़े रहो, तुम्हारी मर्जी बाबा (शेखर (२)—अज्ञेय, १४४); वह धर्म के पीछे लाठी लेकर दौड़ने लगा (कर्म०—प्रेमचंद, ९०)

### लाठी लेकर पीछे पड़ना

#### दे० लाठी लेकर दौड़ना

### लाठ लड़ाना

बहुत प्यार करना । प्रयोग—सूर स्वाम बड़ भातिनि मोई, जिन मिलि लाठ लड़ाए (सु० सा०—सूर, ३२४९); अरु कत लाठ लड़ाइ राग रस, हंसि-हंसि कंठ लगावें (सु० सा०—सूर, ४२७३); जंह नंद-नंदन जगबंदन पिय लाठ लड़ाई (नंद० ग्रंथा०—नंद०, १३)

### लात उठाना

मारने के लिए पेर उठाना । प्रयोग—तेहि अंगद कहूँ लात उठाई (राम० (शं)—तुलसी, ८७९)

### लात की मारी रोटियां

अवमान से भिटा हुआ भोजन । प्रयोग—लात की मारी रोटियां कंठ के नीचे न उतरेगी (कर्म०—प्रेमचंद, ४४)

### लात के आदमी,—देवता,—भूत

मार पड़ने पर ही डंग पर घाने वाला व्यक्ति । प्रयोग—लातों के देवता कहीं बातों से मानते हैं (कर्म०—प्रेमचंद, ६३); मैं तो पहले ही से कहता आ रहा हूँ कि लातों के भूत बातों से नहीं माना करते (पद्म० के पत्र—पद्म० शर्मा, १०८); लात का आदमी समझ देखो बात से किस तरह मान जाता (बोल०—हरिऔध, १११)

### लात के देवता

#### दे० लात के आदमी

### लात के भूत

#### दे० लात के आदमी

### लात खाना

पैरों की ठोकर या मार सहनी । प्रयोग—यह सकेगा मान कैसे बात से लात खाने की जिसे है लत लगी (बोल०—हरिऔध, २३४)

### लात देना

लात से मारना । प्रयोग—भाड़ना है अगर दुखली तो क्यों न दो लात हम उमे देवें (बोल०—हरिऔध, २३४)

### लात मारकर चला जाना

पराजित होकर चले जाना । प्रयोग—यह वह सामक का कि इस देश का चक्रवर्ती अयोध्वर होने पर भी एक दिन राजपाट को लात मार का जंगलों और बनों में चला गया था (गु० नि०—वा० मु०, गु०, २२०)

### लात मारना,—लगाना

निरस्कार करना; तुच्छ समझना, त्याग देना । प्रयोग—सूर सकल के स्वाय उपासी, मोकी मारत जानें (सु० सा०—सूर, ४७४७); मेरा धर्म कहता है नहीं खबरदार मच्चे गोप खबरदार, मच्चे गोप भागो मत भागते पर लात मारो (मा० ग्रंथा० (१)—मारलेन्दु, ५७१); बम चट उम्होंने पांच की हाथ मांझी की नौकरी पर लात मार इम्नीपा दे दी दिया (राधा० ग्रंथा०—राधा० दास, २८६); आप को अपना व्यवसाय और धन-अपनी पत्नी के आत्म-सम्मान से प्यारा है । उम्होंने दोनों ही को लात मार दी (कर्म०—प्रेमचंद, २५१); दिलाया किमने अपना त्याग लगा लंका विभक्तों को लात (देदेही०—हरिऔध, २१); क्या यह सच है काका, कि भावने फिरंगी की पेंशन पर लात मार दी ? (ब्रह्म०—दे०)

### लात लगाना

अपमानित होना । प्रयोग—लात पर है लात लगती जा रही छट तलवे का न सहलाना सका (चुमते०—हरिऔध, ९१)

### लात लगाना

#### दे० लात मारना



### लात सहना

अपमानित होना। प्रयोग—मच दिनों मूँह देल जीबट का जिये लात घब कापरपने की क्यों महे (चुमते०—हरिऔध, १०)

### लात-जूता चलना

मार-पीट होना। प्रयोग—अरे, वह जमाना चला गया जब राजपूत घोर बामन टोनी के लोग बात-बात में लात जूता चलाते थे (मैला०—रेणु, १९१)

(समा० मुहा०—लात जूता की होना)

### लात-जूते से बात करना

मारना-पीटना, अपमानित करना। प्रयोग—जमादार मुसक बंधवा के पिटवाता है घोर महाजन लात और जूते से बात करता है (गोदान—प्रेमचंद, २५०)

### लाद देना या लादना

जबरदस्ती किसी काम का बोझ किसी पर डाल देना। प्रयोग—फिर क्यों यह घपराध हम पर लादा जा रहा है? (कामना—प्रसाद, २५-२६)

### लानत भेजना

अत्यंत लज्जामय भेजना। प्रयोग—तुम्हीं मूँह लगने को फिरते हो। मैं तो ऐसी पर लानत भेजती हूँ (झांसी०—वृ० वमा, ३००); जी तो यही कहता है कि लानत भेजो जिनके पर (कठ०—दे० स०, ४००); घर लौटनेवाले पर लानत भेजता हूँ (मा—कौशिक, २५१)

### लाभ के लोभ में मूल गंधाना

और की आशा में पास का भी लो चेंटना। प्रयोग—मन बनजारा जागि न सोई, लाहे कारनि मूल न सोई (कबीर ग्रंथा०—कबीर, २१०)

### लाम-काफ करना

कानून बपारना; चाद-बिबाद करना; विरोध करना। प्रयोग—इस संगठन में जिन लोगों ने घोड़ा भी लामकाफ किया, कांग्रेस छोड़ कर सोसलिस्ट में गये, मिली जमीन उन्हें? (परती०—रेणु, २०२)

(समा० मुहा०—लाम-काफ निकालना)

### लार टपकना

(१) खाने की चीज देखकर लालच होना। प्रयोग—

भोला की लार टपक पड़ी। भटपट सिंकार मार लाये (गोदान—प्रेमचंद, २६७); घृत पक्व मसावेदार मांस की खुसबू से जिसकी भी लार टपकी, आप निमग्नित होने को पूछा (चतुरी०—निराला, ९)

(२) पाने की परम लालसा होनी। प्रयोग—उसी के यहाँ रेला को जिसने जाते जाते देखा है, उसके बारे में पूछे बिना नहीं रह सका है, और जिसने पूछा है, उसकी मानों दीठ से ही टपकती लार का विनक्तिमान बह धनुभव कर सका है (नदी०—अज्ञेय, ५२)

(समा० मुहा०—लार गिरना)

### लाल आंख

कोपपूर्ण दृष्टि। प्रयोग—जिसी की लाल आंखें देखकर, अपना निश्चय बदलना सिसौदिया कुल का स्वभाव नहीं है (विप०—प्रेमी, ७५)

### लाल फीता

सरकारी फाइल (गफलत और मुस्ती से काम होना)। प्रयोग—अतिवृत्ति, पुनर्वाग तथा जमीन-वितरण आदि ऐसे मसले हैं जिसमें सरकारी लाल फीता और घूसखोरी से घाप ही बचा सकते हैं (परती०—रेणु, ५०८)

### लाल बुभुक्षु होना

हर बात का कोई न कोई उत्तर देने को तैयार होना। प्रयोग—घब प्रश्न करने वाले एक प्रश्न कर सकते हैं कि क्यों शिवेरी जी को इस प्रकार अचानक लाल बुभुक्षु बनकर इस सद्दा की मुरमादानों का पता बनाने की जरूरत पड़ी? (गुं० लि०—वा० मु० गुं०, ४४९); पुनिम तो लाल बुभुक्षु है जग दिमाग लडाइये (गदन—प्रेमचंद, २२१)

### लाल बंद होना

मालदार होना, स्वस्थ होना। प्रयोग—ऐसे व्यक्ति पर यदि कोई भरो मभा में यह लालन लगाए कि वह किसी सेंठ या मालदार औरत का पैसा चाटकर लान बंद हो गया है तो उसे स्वाभाविक रूप से बड़ी तकलीफ होगी (बुंद०—अ० ना०, १९५)

### लाल मिर्च होना

बहुत जोशी, बदमिजाज या कटुबुद्धि खोलनेवाला। प्रयोग—मूँह की कड़वी है। लाल मिर्च ही तो है (बहु०—दे० स०, ४६)



### लाल साफा

पुलित । प्रयोग—आपका ऐसा अकाल है कि बाहू तो एक बार सहर लुटवा दूँ । ये लाल साफे लड़े मूँह तक ले रह जाय (रंग० (१)—प्रेमचंद, ४२१)

(समा० मुहा०—लाल पगड़ी)

### लाल होना

(१) गुस्से में होना । प्रयोग—जब कि होते हो तमक कर लाल तुम लाल हो जाती न तब क्यों खोपड़ी (बोल०—हरिऔध, २०)

(२) धनवान होना ।

(३) स्वस्थ होना ।

### लाल-पीली आँखें दिखाना

शोध दिखाना । प्रयोग—बिनय ने समझा था दीवान साहब जाते-ही-जाते गरज पड़ेंगे, लाल-पीली आँखें दिखाएंगे (रंग० (१)—प्रेमचंद, ३१४)

(समा० मुहा०—लाल आँखें दिखाना,—आँखें निकालना)

### लाल-पीले होना

गुस्ता होना, शोध करना । प्रयोग—है-है ! एकबारगी इतने लाल-पीले हो गए (भा० प्रथा० (१)—मारतैन्दु, ३७६); इसको मुनकर तो वे लोग बड़े ही लाल पीले हुए (राधा० प्रथा०—राधा० दास, ११८); लोग कहते हैं कि बहुत लाल पीले हो रहे थे ? (प्रेमा०—प्रेमचंद, १३); बापसी पर अतुल को शोध में लाल पीला देखकर धर्मानन्दी खिलखिला कर हँस पड़ा (ब्रह्म०—दे० स०, ६६)

### लाले पड़ना

अत्यंत कमी पड़नी । प्रयोग—आधे जोर जड़काली, परत प्रबल पाली, लोगन को लाली परपो, जिते कित जाइके (क० र०—सेनापति, ७०); जिन सालन चाह करो इतनी तिन्हें देखिबे के सब साले परे (ठाकुर०—ठाकुर, १६); इससे सो साल बीतने से पहले आज ही उनकी बात समझने के साले पड़ रहे हैं (गु०नि०—बा०मु०गु०, ४४१); सब मुखों के हमें पड़े लाले । है कुदिन ने न कौन डाले बल (सुमते०—हरिऔध, ७६); इस पौरुष के पड़े समर-पुर में भी लाले (साकेत—गुप्त, ४३९)

### लिखा न मेट सकना

भाग्य में जो हो उसे बदल न सकना । प्रयोग—मैं चाहै धनि क्या मलोनी । मेटि न जाइ लिखी जति होनी (पद० जायसी, ३१); पुनि-पुनि बोधत कृष्ण जिसो मेटे नहि कोई (सू० सा०—सूर, ३७०८)

(समा० मुहा०—लिखा न दूर करना)

### लिकाका बनाना

(१) ऊँची दिखावा बनाये रखना । प्रयोग—यहाँ तो निर्बोद होना कठिन हो रहा है । ऊपर से लिकाका बनाये रखना पड़ता है (ब्रह्म०—दे० स०, ३१५)

(२) इकोमत्ता करना ।

### लिकाफिया होना

केवल ऊँची टीमटाम होनी । प्रयोग—जिन्हें उसने माल-दार समझा, वो लिकाफिया निकले (बु०—अ० सा०, ३१३); × × सफाई और सजावट को लिकाफियापन का पर्याय न बना देना चाहिए (मेरे०—गुलाब०, ५०)

### लीक खिचो होना

मान होना । प्रयोग—सूरदास भगवंत भजत जे, तिनकी लीक बहूँ जग सांची (सू० सा०—सूर, १८)

### लीक गाना

गुण गाना । प्रयोग—दयति धरम घाबरन नीका । अजहुँ गाव खुति जिन्हु केँ लीका (राम० (बाल)—तुलसी, १५४)

### लीक पकड़ कर चलना

दे० लकीर पीटना

### लीक पर चलना

दे० लकीर पीटना

### लीक पीटना

दे० लकीर पीटना

### लीप देना

चोपट कर देना, गड़बड़ करना । प्रयोग—इन हरामजादों के मारे घर में एक घड़ी भी धैन से बैठना दुभर है जब से पैदा हुए, सब लीप दिया (मा—कोशिक, ३९)

### लोपा-पोती करना

(१) भूत-रुच बोलकर बात को ठकने का प्रयत्न करना ।



प्रयोग—पहुँचते भी हैं तो उस वक़्त जब सार काट हो चुकती है, सो भी सरसरी तहकीकात के बहाने सोचापोंती के लिये (पट्टम पराग—पट्टम० शर्मा, ८)

(२) बिगड़े काम को बनाने का अवफल प्रयत्न करना।

### लीला करना

भगवान का अवतार लेकर नाता किया-कनाप करना।

प्रयोग—लीला कीन्ह जो तेहि अवतारा सो सब कहिहो मति अनुसार। (राम० (बाल)—तुलसी, १५३)

(२) लबाघा करना।

### लुच्चा-लुंगाड़ा होना

बदचलन होना। प्रयोग—हूँ साहब, वह तो सरीक़ज़ादी है और हम लोग लुच्चे-लुंगाड़े हैं—क्यों ? (मा—कौशिक, २२६)

### लुटिया हुआ

काम बिगाड़ना। प्रयोग—किसी को न मरजाद यों कूट रोई कियोथि कभी यों न लुटिया हुआई (बुभुक्षे०—हरिऔध, १८५)

### लू खाना

गर्मी के दिन की गरम हवा लपनी। प्रयोग—इनसे पहले म० पी० की लू नहीं खाई थी (कुञ्जी०—निराला, १६)

### लू-लू बोलना

बिड़ना, उपहास या उपेक्षा करना। प्रयोग—लोगों ने लू-लू बोली घोर कुंवर साहब ने कार बिबिल लाइन की तरफ़ बढ़वा दी (इस्टा०—मग० शर्मा, ४२)

### ले उड़ना

(१) किसी को लेकर भागपट चल देना। प्रयोग—बेगम को बहकाया होगा, वह सोधी-मादी तो है ही, धा मधी होगी बातों में, बग ले उड़े (मा—कौशिक, ३८७)

(२) किसी बात को सुनते ही उसकी बहुत महत्व दे कर चारों ओर फैलाना।

### ले डालना

(१) मार डालना, हराना। प्रयोग—वह तो बड़ी खैर भई, नहीं धात्र मुघरबा इन्हें ले डारत (मिस्त्रा०—कौशिक, १३६)

(२) खराब करना-बोपट करना।

### ले डूबना

अपने साथ-साथ दूसरे का भी नुकसान करा देना। प्रयोग—नई प्रतिभा डूबने का रास्ता तो मुझे ले डूबेगा (दूधगाछ—द० स०, २५५); कलिया तो अपने साथ × × सब को ले डूबना चाहता है (मैला०—रैणु, ३६७); हाथ, मैं अपने साथ उसे भी ले डूबा (गवन—प्रेमचंद, १३२)

### ले-उड़ा होना

ठम या धोखेबाज होना। प्रयोग—एजेंट के लिये दूसरों पर कम से कम ऐसा प्रभाव डालना आवश्यक है कि यह मनुष्य बात का पक्का है और ले-उड़ा या उधक्का नहीं है (मैरे०—गुलाब०, ५७)

### ले-दे करना या होना,—मचना

(१) बिबाद होना। प्रयोग—घर-घर में बाद-विबाद होने लगा, अमुक वर्ग लड़ है अमुक सबर्ग, इस बात पर खूब ले दे मची (झांसी०—दु० शर्मा, ४२); हुल्नाइ में दो-चार ठूकाने भी खोड़ी बहुत लूट गई। बाजार में ले-दे पड़ गई (बुंद०—अ० ना०, १९७); महापति-निर्वाचन के लिए पोर धांदोतन छिड़ा हुआ था, वही ले-दे हो रही थी (पट्टम० के पत्र—पट्टम० शर्मा, ५३); लेडीज एण्ड जेण्टलमैन 'मिट्टी की मूरत' पर बहुत ले दे हो ली (कठ०—द० स०, ८३); जब तक उसने अपनी मा का हमेसा अदब किया था, पर अब उसकी भी ले-दे मचाता (रिंग० (१)—प्रेमचंद, ३८८)

(२) दुर्गति होनी। प्रयोग—मिनिस्टर साहब की ओर मेरी वह ले दे शुरू हुई कि कुछ न पृथिव (मान० (४)—प्रेमचंद, ९)

### ले-दे मचना

दे० ले-दे करना

### लेई-कुचेई

जमानू की। प्रयोग—जब इस उम्र में ख्याल करने की पुन मवार हुई है। लेई-कुचेई इगम-जगा देई (पट्टम० के पत्र—पट्टम० शर्मा, १६९)

(लमा० मुहा०—लेई-पूजी)

### लेखनी उठाना

लिखने के लिए प्रस्तुत होना। प्रयोग—अपने घरबारी के उत्तर में माधित कर दिया है कि खालीपना का लेखनी



उठाना आप जैसे दुबले बिलों के लिए खाली बिहाना है  
(गुं नि०—हा० गुं गुं, ५०५)

### लेखनी दीहाना

बिलना । प्रयोग—कोई महीना खाली नहीं बीतता कि  
पक्षा में लेखों की कल्पना न खाली हो और सम्पादकों को  
अपनी लेखनी की दीहाने के लिए मैदान न मिल जाता हो  
(मट्ट नि०—बा० मट्ट, १५)

### लेखा देना

(१) हिमाव देना । प्रयोग—साहिब मेरा लेखा मांगे, लेखा  
कर्म करि दीजें (कवीर ग्रंथा०—कवीर, १५०)

(२) पूरी तरह वर्णन करना । प्रयोग—मे लम्हा राज  
बहुत सुन देखा । जो पूछहु दे जाइ न लेखा (पट०—  
जायसी, ३१२)

### लेखा मांगना

हिमाव मांगना । प्रयोग—धरमराट जब लेखा मांग्या,  
बाकी निकसी भारी (कवीर ग्रंथा०—कवीर, १६३)

(समा० महा०—लेखा लेना)

### लेखा-जोखा

हिमाव । प्रयोग—जो दुनियादार किये-कराये का लेखा-  
जोखा दुरुस्त रखता है वह मरत नहीं हो सकता (कवीर—  
ह० प्र० दि०, १५७)

### लेखे में होना

गिनती में होना, तुलना में होना । प्रयोग—जहि मायन  
गिरि मेह उहाही, कहहु तुल केहि लेखे मोही (राम० बाला—  
तुलसी, २०)

### लेन-देन

(१) भण्ड का व्यवहार । प्रयोग—कुछ खरीदारी है,  
यही गहर में कुछ रिवायत है । कुछ लेन-देन करने है  
(मा—ज्ञानिक, २३३)

(२) गरीबार, संबंध ।

### लेना एक न देना दो

कुछ मतलब नहीं । प्रयोग—मानि के भैंसो, मनीत की  
सोइयो लंबे को एक न देबे को दोऊ (कवि०—तुलसी, १६९)

### लेना-देना न होना, लेने-देने में न होना

कोई मतलब न होना । प्रयोग—ये पीये नहीं हरात उहा ते,

मोसी लेन न देन (सू० सा०—सूर, २५६९); लेनो न देनो,  
हलाव भलाव न, नातो न मोतो कहा कही मोसी (केशव०—  
केशव, ५१); सीधा-साधा सरीर आदमी लाख न किसी के  
लेने में, न देने में (मान० (४)—प्रेमचंद, १५९); न बाबा, हम  
किसी के लेने-देने में नहीं पड़ते (झुठा० (१)—यशपाल, ५०२)

### लेने के देने पड़ना

फायदे के बटले नुकसान होना । प्रयोग—कहा कही इन  
बंदिन पावे होत लेन के देने (मा० ग्रंथा० (१)—भारतेंद्र,  
४२४); ये बाले दरोगा जी के कानों तक जा पहुँची, तो  
लेने के देने पड़ जायेंगे (बहु०—दे० सा०, ११७); मैं तो  
कहती हूँ कि ज्ञान रखकर काम कर । कहीं बीमार पड़  
गयी तो लेने के देने पड़ जायेंगे (मान० (१)—प्रेमचंद, १२६);  
जब कि लेने के हमें देने पड़ तब भला हम मंड लेने क्या  
बले (बोल०—हरिऔध, १२५)

### लेने-देने में न होना

दे० लेना-देना न होना

### लेन न होना

दे० लखलेश न होना

### लो दही लाव दही की बात होना

अपनी गरज का मवाज होना । प्रयोग—मुनीते में लो  
साहक से दम-लाव हजार और मिल जायेंगे लेकिन इस  
मध्य लो २५ हजार की मरिजाल से मिलेंगे । लो दही  
लाव दही वाली बात है (मान० (४)—प्रेमचंद, १६२)

(समा० महा०—ले दही ले दही का प्रश्न होना)

### लोक की लीक छुटना, लोक-लाज की लोई उतार फेंकना

सामाजिक मर्यादा का उल्लंघन कर निर्लज्ज हो जाना ।  
प्रयोग—धीरज मोचन मोचन जोल बिलोकि के लोक की  
लीकनि छुटी (केशव०—केशव, १०२); उन्होंने अपनी लोक  
लाज की लोई उतार कर फेंक दी थी (दे कोठे०—अ० ना०,  
५३)

### लोक में उजागर होना

लोक में प्रसिद्ध होना । प्रयोग—मोड बिजई बिजई गुन  
सागर । नामु मुजमु पीबोह उजागर (राम० (सु)—तुलसी,  
५२५)



### लोक-लाज की लोई उतार फेंकना

दे० लोक की लीक छूटना

#### लोट-पोट करना

(१) बहुत आनंद देना। प्रयोग—राजा साहब पर दो मुँहे साप की फबती डाक्टर महोदय को लोट-पोट कर देती थी (प्रेमा०—प्रेमचंद, १११)

(२) थोड़ा विश्राम करना।

#### लोट होना

आसक्त होना। प्रयोग—फंसे विद्वान्मूल खंख, फोटो देख कर लोट हो गये (मिसा०—कौशिक, १८८)

#### लोट-पोट होना

(१) व्याकुल होना। प्रयोग—नैनन में लागे जाय, जागे मु करेजे बीच, या बस हूँ बीच धीर होत लोट पोटा है (घन० कवित्त—घना०, २३)

(२) घामक्त होना। प्रयोग—चपल खबीले रूप में भई लोटक पोटा (सु० सा० (परि० १)—सुर, ७१); कहै पद्माकर लटु हूँ लोट पोटा भई बित्त में चुभी जो चोट चोप चटवारे की (जग०—पद्माकर, ५९); मुरदास बड़ा गबक जबान है, इसी से सुंदरी का मन उस पर लोट-पोट हो गया होगा (रंग० (२)—प्रेमचंद, १२०)

(३) बहुत हंसना—हंसते-हंसते लोट जाना। प्रयोग—स्वर्गवासी पंडित प्रताप नारायण मिथ उसे पढ़ने पढ़ते लोट-पोट हो गये थे (गु० नि०—बा० सु० गु०, १५०); उनका हंसनेवाली कहानियाँ तो ऐसी चित्ताकर्षक होती थी कि लड़के दिन में बार-बार बार उसी को दोहराने को कहते थे और मुन कर लोट पोटा हो जाते थे (सतनी०—राहुल, ७७)

(४) बहुत प्रसन्न होना। प्रयोग—साहब बहादुर ने उसे पड़ा तो लोट-पोट हो गये (प्रेमा०—प्रेमचंद, १८१)

#### लोटे भर पानी को भी न पूछना

कोई महत्त्व न देना, खोज पूछ न करनी। प्रयोग—हमारे पास रुपया है तो भाई-बंद, जात विरादरीवाले सब साले आबेंगे, नहीं तो कोई लोटे भर पानी को न पूछेगा (लिखी—निताला, ३०)

#### लोन निकलना

नमकहरामी का फल निकलना। प्रयोग—ताते मन पोलिमत घोर बरतोर मिसि फूटि फूटि निकसत है लोन रामराय को (तुलसी०—हि० श० सा०)

#### लोमड़ी के खट्टे अंगूर होना

कोई चीज न मिलने पर उसको बुरा बतलाया जाना। प्रयोग—मानों वे लोमड़ी के खट्टे अंगूरों की प्रतिध्वनि हों (हिन्दी सा०—ह० प्र० दि०, १२८)

#### लोरी देना

लोरी गाना। प्रयोग—नानी प्यार से जया का मुँह चूम कर बड़ी लोरी देने लगती है (दूधगाछ—दे० स०, २९२)

#### लोह-लट्ट

असंस्कृत, उजड़। प्रयोग—लड़की को अच्छा खाना न मिले, अच्छा कपड़ा न मिले, वह घनपढ़, गंवार, मूफट्ट, लोहलट्ट के पाले पड़ कर जनम भर जला करे (ठेठ०—हरिऔध, ९)

#### लोहा बजना

पूड़ होना। प्रयोग—जो असुर दल उनके निकट गया तो दोनों बीर लसकार के ऐसे टूटे कि जैसे हाथियों के घूँघ पर सिंह टूटे जो लगा लोहा बजने (प्रेम सा०—ल०ला०, १४७)

#### लोहा मानना

प्रभुत्व या श्रेष्ठता स्वीकार करनी। प्रयोग—गिर ही गई लड़क कर लह से, लोहा मेरा मानेगी काम पड़ा था उसे किसी से भली जानि अब जानेगी (नूर०—मक्त, ७७); मैं उसी का अनुगत हूँगा, यह हृदय उसी का लोहा मानेगा (कामना—प्रसाद, ४७); फिर मोरचा लेना है वीरपाल मिह से, जिसका लोहा मैं भी मानता हूँ (रंग० (३)—प्रेमचंद, ६७)

#### लोहा लेना

(१) लड़ना; युद्ध करना। प्रयोग—सनमुख लोह भरत मन लेऊ जितत न मुरसरि उत्तरन देऊ (राम० (अ)—तुलसी, ५५०); हमें इन सरदारों से नहीं, जयपुर-नरेश से भी लोहा लेना है (विष०—प्रेमी, ५०) (+); लह बहे तो बहे वह न लोहा लेने से चूकेगा (मर्म०—हरिऔध, १३२)

(२) मुकाबला करना, झगड़ा करना। प्रयोग—मैं इन मूर्खों की बबंरता से लोहा लूँगा (बुंद०—अ० ना०, ३५५);



हमें अब छोटी मानकिन से लोहा लेन का पट्टी (मूले०—भा० वर्मा, १४८); देखिये प्रयोग (१) में  $(\div)$  भी।

### लोहे का चना होना

बहुत कठिन कार्य होना। प्रयोग—बरंच यह भी कहना ठीक है कि यह बड़ी-बड़ी विद्याओं के बड़े-बड़े विषय लोहे के चने हैं, हर किसी के दांतों फूटने के नहीं (प्र० पौ०—प्र० ना० मि०, ७७); वह कहा जाता है लोहे का चना वह नहीं हलवा किसी के मुंह में है (बोल०—हरिश्चंद्र, ९३)

### लोहे का सोना बनाना

सारहीन या महत्वहीन व्यक्ति या वस्तु को महत्वपूर्ण बनाना। प्रयोग—तुम्हें लोह से स्वर्ण बना प्रभु जग के प्रति कर देगे जीवित, आओ प्रभु के द्वार (स्वर्णधूलि—पं०, ९१)

### लोहे की कील गाड़ना

अपनी विजय घोषित करनी; अधिकार स्थापित करना। प्रयोग—आपको भी जानना चाहिये कि आप तोमर राजपूत से बात कर रहे हैं जिसके पुरखों ने इसी दिल्ली में लोहे की कील गाड़ी थी (मृग०—वृ० वर्मा, ३६३)

### लोह के चने चबवाना

अत्यंत कठिन कार्य करना या होना। प्रयोग—भाई, सेवा बड़े कठिन है, लोहे का चना चबावे के पड़ये, फोकर्टे धीरे होगी (भा० ग्रंथा० (१)—भारतेन्दु, ३२५); मुस्तारों और मूनीनों के दाबपंच समझना, उसके लिए लोहे के चने चबाना था (मान० (७)—प्रेमचंद, ३७)

### लोहे से आग बरसाना

बहुत बौर पराक्रमी होना। प्रयोग—जिसके लोहे से घाग बरसती थी, वह जंगल की लकड़ियां बटोरकर घाग सुक-गाता है (स्कंद०—प्रसाद, १५१)

### लौ लगाना

धुन होनी, ध्यान लगना। प्रयोग—कानों को भी मधुर रव की घाज भी लौ लगी है (प्रिय०—हरिश्चंद्र, २५०)

### लौ लाना

प्रेम करना। प्रयोग—जिहि बन सीह न संचरै, पंषि उड़े नहि जाइ। रैन दिवस का गमि नहीं, तहां कबीर रखा ल्यो नाइ (कबीर ग्रंथा०—कबीर, १८); वे नहि जानति देव-पुजाई। केवल स्वामहि सौ लौ लाई (सु० सा०—सूर, १५२१)



## व

### वकालत करना

किसी के पक्ष में बोलना । प्रयोग—तुम क्यों उसकी वकालत कर रही हो ? (मान० ४) —प्रेमचंद, १००)

### वक्तृता भाड़ना

भाषण देना । प्रयोग—चाची अपनी वक्तृता भाड़ रही थी (कंकाल—प्रसाद, ५२)

### वचन न आना,—न कढ़ना

कुछ कहते न बनना । प्रयोग—प्रेम मगन मूल वचन न आया (राम० ३३) —तुलसी, ७३५); पृथ्वी दिसि हेरे सर्व भरे महा हिय पौर बंन नहि कछु कहे (राधा० प्रथा०—राधा० दास, २५)

(समा० मुहा०—वचन न निकलना)

### वचन न कढ़ना

दे० वचन न आना

### वचन न जाना,—न टरना

विण हुए आश्वासन या प्रतिज्ञा का पूरा होना । प्रयोग—भूपति राम सपथ जब करई । तब मागेहु जेहि बचन न टरई (राम० ३३) —तुलसी, ३९२); रघुकुल रीति सदा चलि आई प्राण जाइ बर वचन न जाई (राम० ३३) —तुलसी, ३९५); बेटा जित ते अधिक है चारिउ जुग परिमान सा दशरथ नृप परिहरेउ वचन न दीन्हो जान (कुण्ड०—गिरधरदास, १)

### वचन न टरना

दे० वचन न जाना

### वचन प्रमाण करना

वचन सत्य प्रमाणित करना । प्रयोग—बरष चारि दस विविध बसि करि पितु वचन प्रमाण (राम० ३३) —तुलसी, ४२२)

### वचन में बंधना या बांधना

प्रतिज्ञाबद्ध होना या करवाना । प्रयोग—नंद जमोदा बचन बंधायो । ता कारन देही धरि आयो (सू० सा०—सूर, २२३७)

### वचन लगना

बात का अवर होना । प्रयोग—जाको हृदय कठोर सिद्धि, लगे न कोमल बंन (सू० सा०—वृन्द, ६७)

### वचन-वान से मारना

अप्रिय बातों से पीड़ा पहुंचानी । प्रयोग—तुम संदेश ले आए ऐसो, वचन वान कर मारे (सू० सा०—सूर, ४३०२)

### वधिक की बांसुरी का मृग बनना

(१) पूरी तरह वश में होना । प्रयोग—बांसुरी के शब्द मुनि मुनि, वधिक की मृगिनी भई (सू० सा०—सूर, ४४५३)  
(२) धोखे में फँस जाना ।

### वरदहस्त होना

कृपा होनी । प्रयोग—प्रायः जन्मजात अनाथ—ऐसा जिस पर किसी का भी वरदहस्त नहीं रहा (अपनी खबर—उग्र, ३४)

### वर्षा कर देना

बहुत देना । प्रयोग—मिखारी पुनः बाबू साहब पर आशीर्वादों की वर्षा करने लगा (मिखा०—कौशिक, ४); उस फिरभी मेम के बाग में मलमल की सी हरी घाम है । फल और दूध की वर्षा कर देती है (गुंजहा०—गुलेरी, ५०)

### वस्त्रामोचन करना या होना

सब कुछ चोरी चला जाना । प्रयोग—करे चाटिया वस्त्र मोचन दे देके सब भांसी (भा० ग्रं० १) —भारतेन्दु, ३३३)

### वह दिन न रह जाना

पहले की वी आर्थिक स्थिति न रह जानी । प्रयोग—घब



हम लोगों के वह दिन नहीं रहे कि तुम को नौकर रख लूँगी (तिलली—प्रसाद, ५२-५३)

### घाण लगाना

कष्ट होना। प्रयोग—जा दिन तैं बिछुरे नंदनंदन, अंग-अंग लागे बान (सु० सा०—सूर, ४१९८)

### घाणी फूटना

मुँह से शब्द निकलना। प्रयोग—परन्तु मेरी बाणी तुम्हारे यश में तभी फूटेगी, जब तुम या तो वीरता से युद्धजय करो या रणभूमि में काम आओ (गोली—चतुर०, २९)

### घाम अंग फरकना

शरीर के घाम अंग में विशेष प्रकार का स्पंदन (स्त्रियों के लिए शुभ और पुरुषों के लिए अशुभ माना जाता है)। प्रयोग—प्रभु पयान जाना बँदेही, फरकि घाम अंग जनु कहि देही (राम० (सु)—तुलसी, ८३०)

### घाम घाणी बोलना

कटु वचन बोलना। प्रयोग—गुर समीप गवने सकुचि परिहरि बानी बाम (राम० (बाल)—तुलसी, २८४)

### घाम होना

(१) प्रतिकूल होना। प्रयोग—तजतु घटान न, हठ परधी सठमति घाठी जाम। भयो बामु वा बाम को रहै कामु बेकाम (विहारी रत्ना०—विहारी, १७०)

(२) दुष्ट होना। प्रयोग—बोले भृगुपति सख्य हँमि तहँ बंधु सम बाम (राम० (बाल)—तुलसी, २८७)

### घार ओछा पड़ना

सड़वाई में बार का भरपूर हाथ न पड़ना। प्रयोग—तुरंत मुंदर ने चपल गति से अपनी तलवार उस पर डार्ई। बार ओछा पड़ा, घोड़े की पीठ पर (झांसी०—वृ०वर्मा, २९०)

### घार का घर करना

बात का असर होना। प्रयोग—पिल्ली ने सोचा, बार पर कर गया (मृग०—वृ०वर्मा, २८१)

### घार खाली जाना

(१) कही बात का घर न पड़ना। प्रयोग—बीजगुप्त का यह बार भी खाली गया—बीजगुप्त तड़प उठा (चित्र०—भग० वर्मा, ७३)

(२) किसी का प्रहार बच जाना।

### घार-पार न होना

सीमा न होनी। प्रयोग—मेरी प्रगल्भता का बार-पार न रहा (पैतरे—अशक, १४)

### घारने जाना

ग्योछावर होना। प्रयोग—सोभा निरखि निछावर करि उर साइ बारने जँही (तुलसी—हि० श० सा०)

### घारि पर भीत उठाना

असंभव काम करने का प्रयत्न करना। प्रयोग—मनु हठ परा न मुनइ मिलावा। महत घारि पर भीति उठावा (राम० (बाल)—तुलसी, ८९)

### वाहवाही लूटना

प्रशंसा पाना। प्रयोग—लूटते हैं वाहवाही आप ही हम कहें क्या आपकी क्या बात है (बोल०—हरिऔध, ११०)

### वाही-तवाही बकना

बेहूदा बातें बकना। प्रयोग—जाने भो दो भाई, तुम ने भौ वाही-तवाही बकने लगेंगी (रेशमी०—राम० वर्मा, १६५); यह पदम् यों ही वाही-तवाही बकला फिरता है (प्रेमा०—प्रेमचंद, १३७)

### विचार शिथिल होना

पूर्व-योजना या विचार के धावेग में कमी होनी। प्रयोग—राजेश्वर बाबू पुस्तक प्रकाशन की एक संस्था खोलना चाहते थे, क्या उनका वह विचार शिथिल हो गया? (पद्म० के पत्र—पद्म० शर्मा, १६)

### विचार-सागर में डूबना

विचारों में लीन होना। प्रयोग—योगी कुमारनिरि मुखो था, विचार-सागर में वह डूबा रहता था (चित्र०—भग० वर्मा, १६)

(समा० मुहा०—विचार-सागर में गोते खाना)

### विचारों को बिखेर देना

विचारों को स्थिर न रहने देना। प्रयोग—उसने पाया कि मत्तिका के कहे हुए कुछ एक वाक्य बार-बार आकर उसके विचारों को बिखेर देते हैं (शेखर (२)—अश्वेय, २०)

### जिया छतना

सांग सीधी जानी। प्रयोग—पुरोहित जी कुछ मुस्कुराकर



विद्रोह का भंडा खड़ा करना

बोले—विजया छन रही है ? (सं—कौशिक, ५५)

**विद्रोह का भंडा खड़ा करना**

लोगों में विद्रोह का भाव फैलाना । प्रयोग—हम मानें या न मानें, विद्रोह के ऊँचे-ऊँचे झंडे लड़े करें या नारों की जंघी गलियों में दीवारों से अपना तिर फोड़ें, फिर भी नये युग का साथ टाले नहीं टल सकेगा (ये कोठे—अ० ना०, १३७)

(समा० मुहा०—विद्रोह भड़काना)

**विधि का लिखा या लेख**

भाग्य में जो हो । प्रयोग—कहां रतन रतनाकर कंचन कहा सुमेरु । देव औ जोरी दुहुं लिखी मिलै सो कचनेहु फेर (पद०—जायसी, १९३); विधि लिखी नहि टरत क्यों हूँ, यह कहत घकुलात (सू० सा०—सूर, ४०४२); कह मनीस हिमचंत मुनू जो विधि लिखा लिलार (राम० (बाल)—तुलसी, ८१); कौन कौन बात को परेखो उर आनिये हो जान प्यारे कैंते विधि-अंक टारिवत है (घन०कवि—घना०, २२६); क्या सोचा था ! क्या हुआ ! विधना के लेख को कौन मेट सकता है (मिला०—कौशिक, २१३)

**विधि दाहिने होना**

भाग्य अनुकूल होना । प्रयोग—बड़ी बेस विधि भयो दाहिनी, पनि जमुमति ऐसो मुत जापी (सू० सा०—सूर, ८६६); भयेउ कोसिलहि विधि घति दाहिन (राम० (अ)—तुलसी, ३८४)

**विधि वाम होना,—विपरीत होना**

भाग्य प्रतिकूल होना । प्रयोग—भयउ वाम विधि फिरेउ मुनाऊ (राम० (बाल)—तुलसी, २८५); मोरेहु कहैं न संसय जाहीं । विधि विपरीत भलाई नाही (राम० (बाल)—तुलसी, ६६); बाएँ लिखबेयन के वाम विधि होन लागे दाएँ लिखबेयन पे दाप मी मई लगी (मृपण ग्रंथा०—मृपण, २२६); इस देश-जाति के हुए विधाता हो बाएँ (सी०—वचन, २३०)

**विधि विपरीत होना**

दे० विधि वाम होना

**विधि सनमुख होना**

विधि का अनुकूल होना । प्रयोग—भरतु प्रातप्रिय पार्वहि

६६६

विपत्ति के धपेड़े

राजू बिधि सब बिधि मोहि सनमुख आनू (राम० (अ)—तुलसी, ४११)

**विधि-गति वाम होना**

भाग्य प्रतिकूल होना । प्रयोग—लिखत सुधाकर गा लिखि राह विधि-गति वाम सदा सब काह (राम० (अ)—तुलसी, ४२३)

**विपत्ति का पहाड़ टूटना,—के बादल घिर आना**

एकाएक घोर विपत्ति का आना । प्रयोग—इतने ही में मेरे ऊपर विपत्ति का पहाड़ टूट पड़ा (गोली—चतुर०, ३०३); बादल घिर घामें जो विपत्तियों के क्षत्रियों पर, रहती सदा हो जो घापदा (परि०—मिराला, २२७)

(समा० मुहा०—विपत्ति के बादल फट पड़ना)

**विपत्ति का बीज बोना,—की नींव देना**

विपत्ति की शुरुवात का कारण बनना । प्रयोग—रामहि तिलक कालि जो भयऊ तुम्ह कहू विपति बीजू विधि बयऊ (राम० (अ)—तुलसी, ३८९); धवध उजारि कीन्हि कैंकेई दीन्हति यथत विपति कैंनेई (राम० (अयो)—तुलसी, ३९९)

**विपत्ति का सागर,—की आंधी,—की घानी**

बहुत बड़ी विपत्ति । प्रयोग—जिस निर्दय दैव ने मुझे इस विपत्ति सागर में डाला उसी ने इस समय न जाने कौसी मोहनो माया मेरे हृदय पर डाल रखी है (राधा० ग्रंथा०—राधा० दास, ७७०); सामने पाकर विपद की आधिया घोर मुखड़ा नेक कुम्हलाता नहीं (चुमते०—हरिऔध, १०); दुख भला किस तरह कहें उसका जो पड़ी हो विपत्ति-घानी में (चुमते०—हरिऔध, १५७)

**विपत्ति की आंधी**

दे० विपत्ति का सागर

विपत्ति की घानी

दे० विपत्ति का सागर

विपत्ति की नींव देना

दे० विपत्ति का बीज बोना

**विपत्ति के धपेड़े**

बार-बार की विपत्ति । प्रयोग—विपत्ति के धपेड़ों से चेहरे सहज ही नहीं मुरझाते (अशोक०—ह० प्र० द्वि०, ३५)



### विपत्ति के बादल

मुसीबत । प्रयोग—परन्तु इंग्लैंड के कुछ लोगों को भारत में घाने वाली विपत्ति के बादल का एक छोटा सा टुकड़ा दिखनाई पड़ने लगा था (झांसी०—पृ० २४४)

### विपत्ति के बादल फिर आना

दे० विपत्ति का पहाड़ टूटना

### विपत्ति टूटना

विपत्ति घानी । प्रयोग—नहीं टूटती तुम पर सबके साथ विपत्ति यह भारी (कुरु०—दिनकर, ११२)

वियोग में जलना या जलाना,—मरना या मारना हर समय वियोग में दुःख पाना या देना । प्रयोग—हम उसी कछु भली न कीन्ही, निमिदिन मरत वियोग (सू० सा०—सूर, ४८८९); मन भायो वियोग में जारिबो जो तो तिहारी सौ नोके जरेंरुभरें (घन० कवित्त—घन०, ७०)

### वियोग में मरना या मारना

दे० वियोग में जलना या जलाना

### विरह चलना

यश बना रहना । प्रयोग—जग-जग विरह यह बलि भायो, सत्य कहत घब होरे (सू० सा०—सूर, ११०६)

### विरह का घाव,—की आंच,—की चिनगारी,—की लपट

विरह का दुःख । प्रयोग—मृनि के विरह चिनगि ओहि परी (पद०—जायसी, १९१४); अब काहे को लोन समावत, विरह अनल के दाहि (सू० सा०—सूर, ४३४३); हरि बिछु-रत हम जिते सहे दुख जिते विरह के घाट (सू० सा०—सूर, ४१५५); निकसि बसिष्ठ द्वार भए ठावे (राम० (अ)—तुलसी, ४४६); बाही की बित चटपटी घरत घटपटे पाद । लपट बुझावत विरह की कपट-भरेऊ आद (विहारी रत्न०—विहारी, ३३)

### विरह का जंजाल दूर करना,—दाग भरना,—शूल मिटना

विरह का भाव दूर करना । प्रयोग—विरह जंजाल मेदि मोपिनि की घावहु काज निवाहि (सू० सा०—सूर, ४०६८); भिनिही हृदय विराह सवन मुनि, मेदि विरह के दाग

(सू० सा०—सूर, ४०७४); गदगद जन पुलक भयो, विरहा को मूल गयो, कृष्ण दरस आनुर प्रति प्रेम के बिहाला (सू० सा०—सूर, ४०८२)

### विरह का दाग मिटना

दे० विरह का जंजाल दूर करना

### विरह का शूल मिटना

दे० विरह का जंजाल दूर करना

### विरह की आंच

दे० विरह का घाव

### विरह की कांती होना

विरह को दूर करने का साधन होना । प्रयोग—कत लिखि-लिखि पठवत नंद-नंदन कठिन विरह की कांती (सू० सा०—सूर, ४१०८)

### विरह की चिनगारी

दे० विरह का घाव

### विरह की लपट

दे० विरह का घाव

### विरह में जलना,—नदी में डूबना

विरह में बहुत दुखी होना । प्रयोग—यह मत दे मोपिनि की घावहु, विरह नदी में भासत (सू० सा०—सूर, ४०४४); एक हम जरति विरह की जारी, तुम कत दहन दहो (सू० सा०—सूर, ४५४८)

### विरह नदी में डूबना

दे० विरह में जलना

### विरह-व्यथा भागना

विरह भाव का अंत होना । प्रयोग—जो पे स्वाम रहत घट, तो कत विरह बिधा न परानी (सू० सा०—सूर, ४५५८)

### विरुद बदना

प्रशंसा करनी । प्रयोग—बंदी मागध मृतगन विरुद बदहि मति घोर (राम० (बाल)—तुलसी, २६९)

### विरोध की आग

विरोध का भाव । प्रयोग—उत्मा एकाएक जल का फतवा देने पर तैयार न हुए पर विरोध की आग बुरी होती है (पट्टम पराग—पट्टम० शर्मा, १७६)



विवेक की आंख फूटना

### विवेक की आंख फूटना

विवेकहीन होना । प्रयोग—फूटि गए सुनि तान के 'केसव'  
आंखि अनेक विवेक की फूटी (केशव (१)—केशव, १०२)

### विश्वास उठना

विश्वास का न रह जाना । प्रयोग—इनका परिणाम यह  
होता है कि आपस का विश्वास उठ जाता है (मट्ट नि०—  
वा० मट्ट, ७८-७९)

### विश्वास उपजना

मन में विश्वास होना । प्रयोग—कवि के वचन सप्रेम सुनि  
उपजा मन विश्वास (राम० (८)—तुलसी, ८०८)

### विश्वास पर जाना

विश्वास करना । प्रयोग—कबनें अवसर का भयउ गयउ  
नारि विश्वास (राम० (अ)—तुलसी, ३९९)

### विश्वास में विष घोलना

विश्वास के भाव को ठेस पहुंचानी । प्रयोग—रस प्याय के  
ज्याय, बड़ाय के आस, बिसास में पौ बिस घोरिये जू  
(घन० कवित्त—घना०, ८)

### विश्वास हिल उठना

पूर्व विश्वास के बारे में शंका होनी । प्रयोग—पुरुष का  
यह व्यवहार देख कर नारी का विश्वास हिल उठे तो  
आश्चर्य भी क्या है ? (दूधगाछ—द० स०, २७९)

### विष उगलना,—घमन करना

(१) अप्रिय या कटु बोलना । प्रयोग—मेघनाद, है बिफल,  
उगलता है जो विष तू (साकेत—गुप्त ४३९); यह विष  
क्यों उगलते हो । साक-साक क्यों नहीं कहते कि मेरे घर  
से निकल जा (रंग० (२)—प्रेमचंद, ४२४)

(२) किसी के विरुद्ध कहना । प्रयोग—लेकिन दुर्भाग्यवश  
दो एक भाषण कर्ताओं ने ब्रिटिश सरकार के खिलाफ विष-  
घमन करते-करते हिन्दुओं के खिलाफ भी विष घमन कर  
शाला (भुले०—मग० वर्मा, ४४०); अवेजों के विरुद्ध हमने  
जितना विष घमन किया—घात्र के आतंकवादी क्या करेंगे  
(शीसर (२)—अज्ञेय, १३९)

### विष का घूंट पीना

मर्त्यतः अप्रिय बात को सह जाना । प्रयोग—इसविण् वेचारे

६६८

विष चढ़ना

इस धनौति को विष की घूंट के समान पीते (मान० (८)  
—प्रेमचंद, ७६)

### विष की क्यारी खोना

बुरे कर्म करना । प्रयोग—विष की क्यारी खोइ करि,  
लुण्ठत कहा पछिताइ (कबीर ग्रंथा०—कबीर, २८)

### विष की गांठ

बुराई; ग्रहित करने वाला । प्रयोग—मुन नहीं रही हो,  
मे भी विष की गांठ हूँ (गवन—प्रेमचंद, १३); आप इसे  
समझते क्या हैं, पूरा विष की गांठ है (मा—कौशिक, ३७५)

### विष की पोट बांधना

बुरे कर्मों का फल संवित करना । प्रयोग—पहले बुरी  
कमाइ करि, बांधी विष की पोट (कबीर ग्रंथा०—कबीर, ६)

### विष की चुभाई

(१) कटुतापूर्ण । प्रयोग—कह जानते हैं वस कुटिल जन  
वचन ही विष के चुभे, जय०—गुप्त, ६८)

(२) अनिष्टकारी ।

### विष की बेल खोना

ऐसा कार्य करना जिसमें हानि हो । प्रयोग—देखोरी  
संबंध पाछिलो पर विष बेलि बई (सु०सा०—सू०, १८९०);  
आनंद केलि सहेलिन को, कोई मोतिन को विष बेल बई  
तू (शब्द०—देव, ११३)

### विष के दांत

अनिष्टकारक । प्रयोग—दांत सारे गिर गये तो क्या हुआ  
दांत बिलके हैं नहीं अबतक भड़े (बोल०—हरिऔध, ९२)

### विष घोलना

(१) लड़ाई लगवानी; दुर्भावना पैदा करनी । प्रयोग—  
जो लोग पुलिस को पूस विभाग कह कर हमारे विरुद्ध  
विष घोलते हैं, उन्हें यह भी तो नहीं भूल जाना चाहिए  
कि बेतन में तो हमारा पार नहीं पड़ सकता (ब्रह्म०—  
द० स०, २४७)

(२) कटु बोलना ।

### विष चढ़ना

(१) विष का घसर होना । प्रयोग—एक केनक भ्रष्ट  
कामिनी, विष फल कीण्ड पाइ । देखे ही वे विष चढ़े,  
खाये सँ मरि जाइ (कबीर ग्रंथा०—कबीर, ४०)



(२) कुढ़न होना ।

(३) कोष होना ।

### विष पीना

अप्रिय या दुखदायी स्थिति को स्वीकार या सहन करना । प्रयोग—विष तरह-तरह का हंसकर पीना आया बस, एक ध्येय के हित में जीता आया (चक्र०—दिनकर, २५२)

### विष पीना

अनिष्टकारी काम का मूचपात करना । प्रयोग—धड़ा, प्रेमशंकर और बड़ा बड़ ने यह मारा विष पीया है (प्रेमा०—प्रेमचंद, ३७२)

### विष लगना या होना

अत्यंत अप्रिय लगना या होना । प्रयोग—तन जागे का ऐसहि नाण, विष से लागे बेट पुराण (कबीर ग्रंथा०—कबीर, २०६); काहू खेल भयउ बिख काहू संखित मूरि (पट०—जायसी, २०५); तात्पर्य यह कि  $\times \times$  कविता के लिए यह नई सम्भत्ता विष हो गई (सा० सु०—वा० मट्ट, २५); तब अमी की सोत क्यों मानो गई जब कि विष जैसी हसी लगती रही (बोल०—हरिऔध, १०७)

### विष चमन करना

#### दे० विष उगलना

### विष होना

(१) बहुत बुरा होना । प्रयोग—साता भीठी खाई सी, अंति कालि विष होइ (कबीर ग्रंथा०—कबीर, ३९) (+)

(२) हानि कारक होना । प्रयोग—देखिए प्रयोग (१) में (+)

### विष-फल होना

कुफल होना; बुरा, हानिकारक होना । प्रयोग—एक कनक धर कामिनी, विष फल कोण्ड पाइ (कबीर ग्रंथा०—कबीर, ४०)

### विष-भरा होना

(१) अहित करने वाला होना । प्रयोग—चखति चषक रुरि पियौ जिन रूप-रस, कैसे सो गरव-मनी सीखनि सो पागिहै (घन० कवित्त—घना०, १५३)

(२) कटु शब्द बोलने वाला ।

### विषाद की गांठ

विषाद का भाव । प्रयोग—जहां जान प्यारी रूप-गुन को

न दीप लहे, तहां मेरे ज्यो परे विषाद-गुरभनि है (घन० कवित्त—घना०, १६)

### वेश करना,—धारण करना

किसी के रूप-रंग और पहनावे की नकल करनी । प्रयोग—नंद-नंदन जगत बंदन, धरे नटवर भेष (सू० सा०—सूर, ४५५२); नर अहार रजनीवर चरही कपट वेष विधि कोटिक करही (राम० अ—सुलसी, ४३१)

### वेश धारण करना

#### दे० वेश करना

#### वेश के आगे भेद कैसा

जिसे बताए बिना काम न चले, उससे क्या छिपाना । प्रयोग—बैद आगे भेद कैसी, छेद ती छाती किए (सू० सा०—सूर, ४४५३)

### वेशव्य को भीख देना

वेशव्य पर तरस लाना । प्रयोग—कमला को लगा मारी भीड़ उसी के वेशव्य को भीख दे रही है (बोने०—रा० रा०, ५६)

### वेशाखनंदन होना

मूख होना । प्रयोग—भजि भूत प्रेतक सीतल वेशाख-नंदन हम भए (राधा० ग्रंथा०—राधा० दास, १६)

### व्यंग्य कसना

व्यंग्य करना । प्रयोग—जारी ने सदा इन पर व्यंग्य कना था (ब्रह्म०—दे० स०, ५५)

(समा० मुहा०—व्यंग्य छोड़ना)

### व्यथा भरना

व्यथा सहन करना । प्रयोग—अब यह विधा कौन विधि भरिये, कीज देद बताइ (सू० सा०—सूर, ४२९४)

### व्याख्यान भाड़ना

भाषण देना । प्रयोग—अब तक जिते देखा, मन पर व्याख्यान भाड़ते ही देखा (मान० (३)—प्रेमचंद, ५९)

### व्रत डानना

नियम लेना, प्रतिज्ञा करनी । प्रयोग—तजि माया संसार सबनि को, व्रज जबतिन वन डान्यो (सू० सा०—सूर, ४३१४)



## श

### शत्रु का युद्ध में पीठ न देखना

कभी हार न होनी। प्रयोग—जिन्हें कै लहहि न रिपु रन पीठी नहि पावहि परतिप मनु डीठी (राम० (बाल)—तुलसी, २३९)

### शनि-दृष्टि पड़ना

बुरी दृष्टि पड़ना। प्रयोग—सी० आई० श्री० की शनि दृष्टि उस पर पड़ जाती (मेर०—गुलाब०, १९)

### शब्द पड़ना

सुनाई पड़ना। प्रयोग—पर-पर इहे सव पररो (सू० सी०—सूर, ४०५०)

### शब्दों के कोड़े लगाना था लगाना

भला-बुरा कहा जाना या कहना। प्रयोग—धूल और मृदास व्यक्ति की पोल खोलना, शब्दों के कोड़े लगाना आज से हजार बरस बाद भी बिहित समझा जायगा (पद्म० के पत्र—पद्म० शर्मा, ५१)

### शब्दों में बांधना

शब्दों द्वारा प्रगट करना। प्रयोग—वह जानता है कि वह कुछ चाहता है जिसे आकार नहीं दे सकता, शब्दों में नहीं बांध सकता (शेखर (२)—अज्ञेय, २१३)

### शर चढ़ना

पति की चिता पर चढ़कर पति के साथ जल मरना। प्रयोग—लोग कहे यह सर चढ़ो हो सौ चढ़ो पिय लागि (पद्म०—जायसी, ३४१४)

### शरण ताकना

आश्रय चाहना। प्रयोग—जो नर होइ चराचर दोही आवे सम्य सरन तकि मोही (राम० (सु०)—तुलसी, ५४३)

### शरण रखना

अपना कुल-नाथ बनाना, संरक्षण में लेना। प्रयोग—राम

सुकंठ विभीषन दोऊ। राखे सरन जान सब कोऊ (राम० (बाल)—तुलसी, ३५)

### शरारत का पुतला होना

बहुत शरारती होना। प्रयोग—वह भी शरारत का पुतला था, घीमू से भी दो अंगुल बड़ा हुआ (रंग० (१)—प्रेमचंद, ९०)

### शरीर गलना

शरीर का क्षीण होना। प्रयोग—रघु पहिचानि बिकल लखि धोरे गरहि गात जिमि आतप ओरे (राम० (अ)—तुलसी, ५११)

### शरीर गिरा जाना

दुर्बल होना, शक्ति क्षीण होनी। प्रयोग—कई दिन से तुम्हारी ऐसी दशा क्यों हो रही है × × दिन-दिन शरीर गिरा पड़ता है (भा० ग्रंथा० (१)—भारतेन्दु, १४)

### शरीर घुला जाना

किसी बिता के कारण शरीर का दुर्बल हुआ जाना। प्रयोग—गिरस्ती के पीछे तुमने अपने को मिट्टी में मिला दिया, अपनी देह घुला डाली, मैं अंधा नहीं हूँ (मान० (१)—प्रेमचंद, १२२)

### शरीर छूटना

मृत्यु होनी। प्रयोग—इच्छा तो यही है कि सत्य छूटने और दीन होने के पहले ही शरीर छूटे (भा० ग्रंथा० (१)—भारतेन्दु, ३०५)

### शरीर छोड़ना,—स्थागना

मृत्यु को प्राप्त होना। प्रयोग—द्वारामती शरीर न छोड़ा, जगननाथ ले प्यंद न गाड़ा (कबीर ग्रंथा०—कबीर, २४३) बटी को जो मूरदास जी का वृत्तांत जान पड़ा तो उसने



शरीर हो छोड़ दिया (राधा० प्र० १०—राधा० दास, ४७१);  
यहां तक कि पांच महीने कष्ट भोगने के बाद उसने ठीक  
होती के दिन शरीर त्याग दिया (मान० (८)—प्रेमचंद, ६६);  
और कौन जानता है, तेरी तरह मुझे भी अज्ञान गुमनाम  
इस बिगड़ान में शरीर छोड़ना पड़े (सतमी०—राहुल, ६५);  
यदि प्रेमी को यह निश्चय हो जाय कि मर जाने पर प्रिय  
की छाँवों में आई हुई आँसू की एक बूंद वह देख सकेगा  
तो वह अपना शरीर छोड़ने के लिए तैयार हो सकता है  
(चित्ता० (१)—शुक्ल, ९३-९४)

**शरीर जलना.—में आग लगना**

(१) कोच हो जाना । प्रयोग—जोग की गति मुनत मेरे  
अंग घागि गई (सु० सा०—सुर, ४३२१); कमल नैन की  
कपट कहानी मुनत भयो तन तातो (सु० सा०—सुर, ४५५१)  
(-); दच्छ न कछु पछी कुसलाता सतिहि बिलोकि जरे  
सब गाता (राम० (बाल)—तुलसी, ७६); बिलासियों के मूँह  
से बड़ी-बड़ी बातें सुनकर मेरी देह भस्म हो जाता है  
(गोदान—प्रेमचंद, १६५)

(२) कुड़ जाना ।

**शरीर त्यागना**

दे० शरीर छोड़ना

**शरीर भर जाना**

शरीर पृष्ठ हो जाना । प्रयोग—मैं तो आपको पहचान तक  
न पायी...आपका शरीर भर गया है (पैतरे—अशक, १४३)

**शरीर में आग लगना**

दे० शरीर जलना

**शरीर में गरम हवा भी न लगना**

अत्यंत लाड़-प्यार में पले हुए होना । प्रयोग—मद मरति  
मुकुमार मुभाऊ तात बाउ तन लाग न काऊ (राम० (अ)—  
तुलसी, ५६०)

**शरीर में न समाना**

अत्यंत अधिकता होनी । प्रयोग—मुनि पत्नी पुनके दोउ आता  
अधिक मनेह समात न गाता (राम० (बाल)—तुलसी, २९५)

**शरीर में बिजली दौड़ जाना**

रोमांच हो जाना । प्रयोग—एक बिजली सी उसके शरीर  
में गूँदी से चोटो तक कौद गई (ज्ञान०—यशपाल, १००)

**शर्म भून कर खा जाना**

निरलज्ज होना । प्रयोग—जब तुमने शर्म ही भून खायी है,  
तो जो चाहो करो, अखियाँ है (मान० (२)—प्रेमचंद, ३१२)

(समा० मुहा०—शर्म-हवा धोकर पी जाना)

**शर्म से गड़ना,—गरदन टूटना,—पानी-पानी होना**  
बहुत लज्जित होना । प्रयोग—भले घरों की स्त्रियाँ तो  
उनके ठाट देख कर ही शर्म से पानी-पानी हो जाती हैं  
(मान० (१)—प्रेमचंद, २८७); चैन मिह मारे शर्म के जमीन  
में गड़ा जाता था (मान० (१)—प्रेमचंद, ३०१); शर्म के मारे  
उसकी गर्दन भी तो टूट गई होती (बल०—नागा०, १४३)

**शर्म से गरदन टूटना**

दे० शर्म से गड़ना

**शर्म से पानी-पानी होना**

दे० शर्म से गड़ना

**शव की तरह जीना**

पौष्टहीन होकर जीना । प्रयोग—जीवत सब सम चौदह  
पानी (राम० (लं)—तुलसी, ८९४)

**शस्त्र डाल देना**

हार मान लेनी । प्रयोग—बिक्रम साहस भीत बिचारे ।  
जुद्ध ब्या गहि आयुध हारे (केशव० (२)—केशव, ४११)

(समा० मुहा०—शस्त्र छोड़ देना)

**शहद लगाकर चाटना**

ध्वंश रखना । प्रयोग—सुरदास प्रभु सोख बतावै, सहद  
लाइ कै चाटी (सु० सा०—सुर, ४५४४); पुरनोट को शहद  
लगाकर चाटूँगा क्या ? (गवन—प्रेमचंद, ८८)

**शाखा बटाना**

विस्तार करना । प्रयोग—होइहि सोइ जो राम रवि राखा  
को करि नकं बडावै साखा (राम० (बाल)—तुलसी, ६६)

**शाखोच्चार करना**

विवाह के समय वंश-परम्परा का वर्णन करना । प्रयोग—  
वर कुंभरि करतल जोरि साखोबाग दोउ कुल गुरु करे  
(राम० (बाल)—तुलसी, ३२९)

**शादी लगना या लगाना**

विवाह सम्बन्ध स्थिर होना या कराना । प्रयोग—और ये  
शादी लगाई किसने यो ? (रेशमी०—राम० वर्मा, १७८)



### शान बढ़ाना

(१) किसी एक वस्तु को घोर बढ़ाना—तीव्र बनाना। प्रयोग—तीछन ईछन बान बलान सो पैनी दसानि लै शान बढ़ावत (धन० कवित्त—धना०, ११४); इस विषय में कवियों का प्रयत्न ही सच्चा है जो मनोविकारों पर मान ही नहीं बढ़ाते बल्कि उन्हें परिमार्जित करते हुए सृष्टि के पदार्थों के साथ उनके उपयुक्त सम्बन्ध निर्बोह पर जोर देते हैं (चित्ता० (१)—शुक्ल, ५३); मांग (Demand) और वस्तु की प्राप्यता (Supply) के स्वाभाविक नियम तो काम करते ही हैं किन्तु बेचनेवालों की सात्वत और दूसरों की लज्जरत में लाभ उठाने की प्रवृत्ति उसमें घोर भी मान सदा देती है (मेरे०—गुलाब०, ७९); बाकी कहारों ने हमारे तरफ घूरते रहकर उसके मुँसे पर और शान सदा दिया (बल०—नागा०, १४४)

(२) मूँच बनाव सिंगार करना।

(३) रगड़कर तेज करना।

(४) उत्साहहीन को उत्तेजित करना।

### शान मारना

शान को बर्तें करनी। प्रयोग—माकर गिरगिट से कहे का मारति हो शान (कुण्ड०—गिरधरदास, १८)

(समा० मुहा०—शान बघारना)

### शान में चट्टा लगना

रोबराब या मान मर्वादा में टोप जाना या कमी होनी। प्रयोग—मजूरी करने से म्निमित्त बमिधनरी की शान में चट्टा नहीं लगता (कर्म०—प्रेमचंद, १२०)

(समा० मुहा०—शान में फर्क आना)

### शाबाशी लुटना

प्रशंसा करनी। प्रयोग—कौन जाने कोई आदमी शाबासी लुटने के लिये × × वहाँ सारी बातें लगा जाए (रंग० (१)—प्रेमचंद, २१८)

### शाम उतरना

शाम होनी। प्रयोग—शाम उतर रही है, घोर बिराग कहीं नजर नहीं धाते (कठ०—दे० स०, १३७)

### शासन की कमर डीली पड़ना

शासन में दुर्बलता आनी। प्रयोग—दिल्ली के शासन की कमर बरा डीली पड़ी कि ये स्वतंत्र हो जाने के ताब पर आ जाते थे (मृगा०—वृ० रत्ना, ६५)

### शिकंजे में कसना

घपने वश में कर लेना, जाल में फँसाना। प्रयोग—निकल न पाया जिस पर मने कस है दिया शिकंजा (नूर०—भक्त, ६१); उसने कुछ ऐसी व्यापारिक सिद्धान्त की बातें की, इमानाश को कुछ ऐसा शिकंजे में कसा कि बेचने को हो-हो करने के सिवा घोर कुछ न सूझा (गवर्न—प्रेमचंद, २६)

(समा० मुहा०—शिकंजे में जकड़ना)

### शिकायतों का दफ्तर खोल देना

ठेर शिकायत करनी। प्रयोग—वहीं खड़े-खड़े जानपा ने मन-ही-मन शिकायतों का दफ्तर खोल दिया (गवर्न—प्रेमचंद, २२७)

### शिकार खेलाना

शिकार करने में सहायता देनी। प्रयोग—तह-तह तुम्हहि घेहेर खेलाउब। सर निरभर जल ठाड देलाउब (राम० (अ)—तुलसी, ५००)

### शिकार फँसना या होना

किसी ऐसे घादमी को भूठ सच कह कर फँसाना जिसने लाभ होने वाला हो। प्रयोग—घात का शिकार तो बहुत ही नफीस है (राधा० प्रंथा०—राधा० टास, ६८५); निपाही ने समझा या शिकार फँसा इसने कुछ ऐडू गा (मान० (४)—प्रेमचंद, २०३); तुम्हें भटकाने को है फिरके बंदी का शोर होना मत इन तालों के शिकार (बुद्ध०—वध्वन, ४५) (समा० मुहा०—शिकार फाँसना)

### शिकार बनना

(१) कुप्रभाव में घाना। प्रयोग—इसी कारण ×× यह देश ×× सदा विदेशीय विजेताओं का शिकार बना (महु नि०—वा० भट्ट, ६१); हम परिस्थितियों के शिकार बने हुए हैं (मोदान—प्रेमचंद, ५१); क्योंकि साधन की अशक्ता की सत्यभ्रष्ट होने का कारण मान लेने पर भी यह प्रश्न बना ही रह जाता है कि विद्वान और प्रतिभाशाली व्यक्ति भी साधन की अशक्ता के शिकार क्यों बन जाते हैं? (अशोक०—ह० प्र० दि० ३२)

(२) लक्ष्य बनना। प्रयोग—ऊँची जी सर की गोपियों के उपहास के अग्ले शिकार बने (मेरे०—गुलाब०, १४९)

### शिकार हाथ से जाता रहना

लाभदायक आसामी का वश में निकल जाना। प्रयोग—



कुछ देर कदमकदम में रहे। फिर रहा नहीं गया। शिकार हाथ से निकल जायगा (घोटो०—निराला, १५); अगर कहीं यह शिकार हाथ से निकल गया तो फिर न जाने कितने दिनों और राह देखनी पड़े (गदन—प्रेमचंद, ५)

### शिखर छुना

चरम स्थिति को पाना। प्रयोग—मैं रोता था भाई के भय से, जनता ने समझा भरत जो अभिनय कला का शिखर छू रहे हैं (अपनी खबर—उग्र, ३१)

(समा० मुहा०—शिखर पर पहुँचना)

### शिगूफा छोड़ना

नयी बात छोड़ देनी। प्रयोग—देखिए, राय साहब ने यह नया शिगूफा छोड़ा (प्रेमा०—प्रेमचंद, २५६)

(समा० मुहा०—शिगूफा खिलाना)

### शिप्पा जमना

संयोग होना। प्रयोग—बह हजार-पाँच सौ रुपए में गम खाने को तैयार था, पर कहीं शिप्पा न जमता था (रंग० (१)—प्रेमचंद, १५६)

### शीत मारना

ठंड का गहरा कुप्रभाव होना। प्रयोग—सूर स्पाम कुछ छोह करौ जू सीत गई तनू मारी (सू० सा०—सूर, १४०६)

(समा० मुहा०—शीत लगना)

### शीतल बाणी

धानंद देने वाली मीठी बाणी। प्रयोग—मुनि सुमंत्रु सिय सीतल बानी। भयउ बिकल जनु फनि मन हानी (राम० (अ)—तुलसी, ४६४)

### शीराज्ञा बिखरना

(१) इंतजाम खराब होना। प्रयोग—अभी दो महीने भी नहीं गुजरे, लेकिन शीराज्ञा बिखर गया (रंग० (२)—प्रेमचंद, २७१)

(२) टाँका टूटना—मिलाई खल जानी।

(समा० मुहा०—शीराज्ञा खलना,—टूटना)

### शीश नवाना

नत होना, अधीनता स्वीकार करनी। प्रयोग—दीन धनी आधीन है, शीश नवावत ताहि (वृ० स०—वृन्द, १४५)

### शीश में उतारना

(१) मोहित करना, बश में कर लेना। प्रयोग—आपने देखा, इन दोनों भाइयों ने गायत्री को कंसा सीधे में उतार लिया ? (प्रेमा०—प्रेमचंद, ३५५)

(२) भूत छुड़ाना।

### शुष्क व्यवहार

बमुरीबली करनी। प्रयोग—मेरे साथ तुमने कभी शुष्कता का व्यवहार नहीं किया (मिसा०—कौशिक, १५२)

### शूल कटना

आशका या दुख का दूर होना। प्रयोग—अंधा नर चेत नहीं, कटे न संजय शूल (कबीर ग्रंथा०—कबीर, ४०)

### शूल मिटना

कष्ट का दूर होना। प्रयोग—हरि बिछुरन की शूल न जाइ (सू० सा०—सूर, ४३५७); कह सीता बिधि भा प्रति-कूला, मिलिहि न पावक मिटिहि न मूला (राम० (सु)—तुलसी, ८०७); जय जय धनि अंबर में भई बरषत फूल शूल मिटि गई (नंद० ग्रंथा०—नंद०, २२४)

### शूल सहना

कष्ट पाना। प्रयोग—अपनी करनी बिचारि गुसाई, काहे न शूल सहौ (सू० सा०—सूर, ३५३); गून गार्जनि जाय परे अकृ-लाय मनोज के घोजनि शूल सहौ (घन०कवित्त—घना०, २०३)

### शूल होना

वेदना होनी। प्रयोग—सूरदास स्वामी के बिछुरे राति दिवस भयो शूल (सू० सा०—सूर, ४०९०)

### शेखी किरकिरी होना,—मारी जाना

घपमानित होना; गर्व खर हो जाना। प्रयोग—XX इसमें तुम्हारी क्या शेखी मारी जाती थी ? (रंग० (१)—प्रेमचंद, ४१); अभी चार दिन को कहो चला जाऊँ तो X X सारी शेखी किरकिरी हो आयी (निर्मला—प्रेमचंद, १४)

(समा० मुहा०—शेखी झड़ना,—निकलना)

### शेखी बघारना,—मारना

बड़-बड़ कर बातें करनी, डींग मारना। प्रयोग—घर में बैठकर बोतल के बोतल उड़ा जाते हो घोर यहाँ जाकर शेखी बघारते हो (कर्म०—प्रेमचंद, २६२); लाग शेखी बघारे,



लाख हवाई किले बनाये, सचाई तो सचाई है (कठ०—  
दे० स०, १४१); माया बड़ी शेखी मारा करता है (प्रेमा०—  
प्रेमचंद, ४०५)

(समा० मुहा०—शेखी जताना,—हांकना)

शेखी मारना

दे० शेखी बघारना

शेखी मारी जाना

दे० शेखी किरकिरी होना

शेर का बच्चा शेर होना

बहादुर व्यक्ति के बहादुर संतान होनी । प्रयोग—शेर का  
बच्चा शेर ही होगा, गधा तो हो नहीं जायगा (ज्ञान०—  
यशपाल, १०२)

शेर की मांद में घुसना,—हाथ डालना

खतरनाक काम करना । प्रयोग—किसने सिंह की गुफा में  
जानबूझ कर हाथ डाला है ? (राधा० प्रथा०—राधा० दास,  
७१४); शेर के मांद में घुसना कोई बहादुरी नहीं है, मैं इसे  
मुखता समझता हूं (गोदान—प्रेमचंद, ७३)

शेर को मांद में हाथ डालना

दे० शेर की मांद में घुसना

शेर से पंजा लेना

सशक्त से मुकाबला होना । प्रयोग—जाति-सेवा की बच्चों  
का खेल समझ रक्खा है । यह बच्चों का खेल नहीं हैXX  
शेर से पंजा लेना है (रंग० (२)—प्रेमचंद, २४६)

शेर होना

(१) बड़ा बहादुर होना । प्रयोग—हो गये हैं शेर वे, तो  
हर तरह क्यों न देखें हमें बेकार कर (चुभते०—हरिऔध,  
१३७); यह सब आप ही के हाथों में है, चाहें तो आज  
स्त्रियां शेर हो जाएं (सु० सु०—सुदर्शन, २०६)

(२) निर्भय और घुट्ट होना । प्रयोग—तुम X X मीठी  
मूसकराहट के साथ उसकी बातें सुनोगे, तो वह क्यों शेर  
न होगी ? (मान० (२)—प्रेमचंद, २७०); उसकी संदूक में  
तस्वीरों का एल्बम निकल आने से वह पूरी तरह शेर हो  
गया (बुंद०—अ० ना०, १६५)

शेर-दिल होना

बहादुर होना । प्रयोग—मुना है उसका लाबिद बड़ा शेर-  
दिल का (कला०—उग्र, ११४)

शेर-बकरी का एक घाट पानी पीना

सबल-निर्बल सब को एक समान अधिकार और सुविधा  
होनी । प्रयोग—जल पियत सिंह जरूज अजा साब (राधा०  
प्रथा०—राधा० दास, १०); उसने सोचा कि अभी तो अंग्रेज  
का राज है, अभी तो शेर और बकरी एक घाट पानी पी  
सकते हैं (कठ०—दे० स०, २५१); इसके राज में शेर बकरी  
एक घाट पानी पीते हैं (मूल०—मग० उर्मा, ४६)

शैतान की आंत

बहुत लम्बी वस्तु । प्रयोग—कंडल कोटें तो शैतान की  
आंत की तरह मशहूर है (पैतरे—अश्क, ६१)

शैतान की फटकार

बुरी दशा होनी । प्रयोग—हमेशा शैतान की फटकार  
रहती है (प्रेमा०—प्रेमचंद, ३९१)

शोभा की नदी उमड़ना

शोभा का घाघिश्य होना । प्रयोग—अंग-अंग नूतन निकाई  
उमलनि छाई, भोन भरि चली शोभा नदी ली उफनि है  
(घन० कवित्त—घना०, १४२)

शौक चराना

शौक होना । प्रयोग—घड़ी का शौक चराना था, उसका फल  
भोगो (मान० (४)—प्रेमचंद, २५७); घन्छा, अब घापको  
भी शौक चराना (मा—कौशिक, २१०); दूसरे प्रोफेसरो को  
कोठियों में रहते देख X X मुझे भी कोठी बनाने का  
शौक चराना मेरे०—गुलाब०, २५)

श्मशान जगाना

श्मशान में बैठ कर मंत्र सिद्ध करना । प्रयोग—कपट सयानि  
कहति कछु जागति मनहुं मसानु (राम० (अ)—तुलसी, ४०६)

श्रीगणेश करना या होना

प्रारंभ करना या होना । नगर में जाति-हित के लिए  
जो काम होता है, मुखदा के हाथों उसका श्रीगणेश होता  
है (कर्म०—प्रेमचंद, २१६); इस भांति बातों में समर का  
श्रीगणेश हुआ जहां (जय०—गुप्त, ६१); बंकिम ने जिस  
काम का श्री गणेश किया था, सोचा, उसे पूरा किए बिना  
बाहर न जायगा (लिली—निराला, ७७)

श्वेत यश

निर्मल यश । प्रयोग—श्री सरजा सिव तो जस सेत सों  
होत है म्लेच्छन के मुंह कारे (भूपज प्रथा०—भूपज, १६०)



## स

### संकट के बादल मंडराना

चारों ओर से विपत्ति का घेरना । प्रयोग—भते गगु, आज वज्जीवण के अष्टकुल पर घौर मल्ल, कासी, कोल गगु राज्यों पर संकट के बादल मंडरा रहे हैं (वैशाली० (२)—चलर०, ९४-९५)

(समा० मुहा०—संकट के बादल घिर आना,—छाना) संकरा समय

मुसीबत का दिन । प्रयोग—समं सांकरे मुभिरिये, समरय हितकारी (विनय०—तुलसी, ३४); नेही-सिरमौर एक तुम ही लो दोर, नाही और ठौर, काहि सांकरे संभारिये (घन० कवित्त—घना०, २२५)

### सांकरे के साथी होना

विपत्ति में सहायक होना । प्रयोग—तुम हरि, सांकरे के साथी (सू० सा०—सूर, ११२)

### संकुचित हाथ से

कजूमी से । प्रयोग—भविष्य का कपाल करके सतमी उसे बहुत संकुचित हाथ से खर्च करती थी (सतमी०—राहुल, २)

### संग डोलना,—लगी डोलना

साथ-साथ घूमना । प्रयोग—सूर श्याम जिनके संग डोलत, हंमि बोलत, मधि पीवत फेनु (सू० सा०—सूर, ११०७); हरीचंद संग लागी डोलौ सुंदर रूप-भिलारी भई (भा० ग्रंथा० (२)—भारतेन्दु, ४०३)

### संग लगना

साथ में चलना । प्रयोग—मोरे बास भंवर संग लागहि (पद०—जायसी, ३५/११); घर की नारि बहुत हित जासी, रहति सदा संग लागी (सू० सा०—सूर, ७९); मुनिबर वृन्द विपुल संग लागे (राम० (अ)—तुलसी, ६९७)

### संग-लगी डोलना

दे० संग डोलना

### संगीन के बल पर

शस्त्र का भय दिलाकर । प्रयोग—गोविन्दी ने जैसे संगीन की नोक पर कहा—अच्छी बात है, निज दू गी (गोदान—प्रेमचंद, २४४)

### संगीन चढ़ाना

बंदूक पर एक तरह का नुकीला हथियार लगाना । प्रयोग—वे सिपाही संगीन चढ़ाए नीचीस घंटे भोपड़ी के सामने वाले मैदान में टहलते रहते थे (रंग० (२)—प्रेमचंद, ३४६)

### संजीवनी बूटी होना

प्राणदान देने वाला होना । प्रयोग—ह्यां हैं निकट जमोदा नंदन, प्राण संजीवन मूरि (सू० सा०—सूर, ४३०६)

### संठ के संठ रह जाना

जड़ होना, मूल होना । प्रयोग—इसी से हम जिन बातों को अपनी घोर खीचना आरम्भ करते हैं उनमें 'टकार' के नीचे वाली नोक की भांति पहले तो हमारी गति खूब होती है पर पीछे से जहां दृढ़ता में चूके वहीं संठ के संठ रह जाते हैं (प्र० पी०—प्र० ना० मि०, ५४)

### संदेह की हवा बहना

संदेह फैलना । प्रयोग—इधर भी जहां कहीं न्योता गया, वहां से कुछ ही लोग आए । कारण, संदेह की हवा बह चुकी थी (लिली—निराला, ३३)

### संपत्ति छाना

सब घोर भरा-पूरा होना । प्रयोग—जब ते उमा मैल गृह जाई । सकल मिडि संपत्ति तह छाई (राम० (बाल)—तुलसी, ७८)

### संबन्ध टूटना

सम्बन्ध न रहना । प्रयोग—उसका पारम्परिक सम्बन्ध बहुत कुछ टूट गया था (सा० सी०—महा० द्विवेदी, १९)



### सम्बन्ध तोड़ना

सम्बन्ध न रखना । प्रयोग—वे लोग सोलह बरस पहले सम्बन्ध तोड़ चुके थे (झुठा० (२)—यशपाल, ४६६)

### संसार

बहुत या सब लोग । प्रयोग—लखन कहेउ मुनि सोल तुम्हारा । को नहि जान विदित संसारा (राम० (बाल)—तुलसी, २५१)

### संसार अंधेरा लगना

सब कुछ दुःखमय और मूना लगना । प्रयोग—बीर बीर सिय-नाम-नयन धिनु लागत जग अंधियारो (गीता० (अ)—तुलसी, ६६)

### संसार की हवा लगना

(१) व्यवहार-कुशल हो जाना । प्रयोग—दीन कुप्यु-चरननि रति सरसं । इहि संसार व्यापार न परसे (नंद० प्रशा०—नंद०, १८६) (÷)

(२) छली होना । प्रयोग—देखिए प्रयोग (१) में (÷)

### संसार चलना

संसार का काम होना । प्रयोग—बिरस रस किहि मंच कहिए, क्यों चले संसार (सु० सा०—सूर, ४०३१)

### संसार छोड़ना

(१) संसार से विरक्त हो जाना । प्रयोग—योगी ? हाँ, क्योंकि उसने संसार छोड़ दिया था (चित्र०—भग० वर्मा, १६); हाँ, मैंने जब संसार छोड़ दिया है तब किसी की बात क्यों सहूँ ? (कंकाल—प्रसाद, १६९)

(२) मृत्यु को प्राप्त होना । प्रयोग—चित्रलेखा को एक पुत्र हुआ, पर उत्पन्न होने के साथ ही वह संसार को छोड़ गया (चित्र०—भग० वर्मा, १०)

(समा० मुहा०—संसार त्यागना)

### संसार तरना

मोक्ष पाना । प्रयोग—मूर हरि की कुना ते सल तरि गए संसार (सु० सा०—सूर, ३७२६)

(समा० मुहा०—संसार-सागर से तरना)

### संसार में पदार्पण करना

अनुभव प्राप्त करना । प्रयोग—और बीजगुप्त ! तुमसे केवल यही कहना है कि श्वेतांक के दोषों को क्षमा करना— यह

वभी अवबोध है, संसार में यह सभी पदार्पण कर रहा है (चित्र०—भग० वर्मा, १४)

### संसार से उठ जाना

(१) प्रचलन में न रहना । प्रयोग—क्या संसार में मेरा मूला-हवा बिल्कुल उठ गया (परीक्षा०—श्री० दास, ९०)

(२) मर जाना । प्रयोग—तुम इस बात का खेद न करो कि तुम्हारा मित्र संसार से उठा जाता है (भा० प्र० (१)—भारतेन्दु, ६३३); जो लोग उनकी सहायता करते थे वह संसार से एक एक कर उठ चुके थे (गु० नि०—दा० मु० गु०, २५८)

### संसार से चले जाना

मर जाना । प्रयोग—या तो देवी के दर्शन पाऊँगी या यही इच्छा लिए संसार से पयान कर जाऊँगी (मान० (८)—प्रेमचंद, ४८)

(समा० मुहा०—संसार से श्रावदाना उठना—कूच कर जाना,—गुजर जाना,—बिदा होना,—यात्रा समाप्त होना)

### संसार से ऊपर उठना या होना

अनाधारण होना । प्रयोग—रूप सवाई दिन दिन बड़ा । बिधि सरूप जब ऊपर गड़ा (पद०—जायसी, ११६)

### संसार से नाता टूटना

(१) मर जाना । प्रयोग—वह सोने की पड़ो होमी जब संसार से मेरा नाता टूटेगा (प्रेमा०—प्रेमचंद, ३५९)

(२) सन्यास ले लेना ।

(समा० मुहा०—संसार से नाता त्यागना)

### संसार से बिदा करना या होना

मार डालना या मरना । प्रयोग—दिल पर जो कुछ बीतती, वह दिल में ही सहती थी और जब न सहा गया तो संसार से बिदा हो गयी (मान० (१)—प्रेमचंद, २४)

### संस्था खोलना

संस्था प्रारम्भ करनी—चालू करनी । प्रयोग—राजेन्द्र बाबू पुस्तक-प्रकाशन की एक संस्था खोलना चाहते थे, क्या उनका वह विचार शिथिल हो गया (पद्म० कैपत्र—पद्म० शर्मा, १६)

### संस्कृत-मुस्त कहना

मना-बुरा कहना । प्रयोग—मुस्ते में भर कर मैंने बुद्धा को



सूब सकन सुस्त कहा (त्याग०—जैनेन्द्र, 381); कल इन्हें  
बहुत सकन सुस्त कहा (प्रेमा०—प्रेमचंद, 239)

### सगाई भाना

विवाह सम्बन्ध की बातचीत होनी। प्रयोग—कई जगहों  
में बातचीत हुई, कई सगाइयाँ आपी पर अपने जामी न  
भरी (मान० (१)—प्रेमचंद, 20)

### सजीव वर्णन

ऐसा चित्र या वर्णन जो हृदय और प्रभावपूर्ण हो।  
प्रयोग—वास्तव में घापने चढ़ा सजीव वर्णन किया है  
(पद्म० के पत्र—पद्म० शर्मा, 20)

(समा० महा०—सजीव चित्र)

### सठिया जाना

बुद्धि मंद हो जानी। प्रयोग—यशोदा ने रोचना की ओर  
ऐसे देखा जैसे बुद्धिया सठिया गई है (देवकी०—रा० रा०, ९);  
दिल में कहते होंगे, यह तो सठिया गया है पर, यहाँ  
दुनिया देखे हुए है (रा० (१)—प्रेमचंद, 386); तू सठिया  
गई है। रुपये ले और चैन की बंसी बजा (सु० सु०—  
सुदर्शन, 86)

### सड़क की धूल समेटना

सारहीन को महत्व देना। प्रयोग—द्विवेदी जी कुछ ऊँचे  
दरजे की बात करने लगते हैं तो सड़क की धूल समेटने  
लगते हैं (गु० नि०—वा० मु० गु०, 883)

### सड़ा करना

दुख कष्ट पाते रहना। प्रयोग—तुम्हारे सिवा और कौन  
बैठा हुआ है, जिसके लिए यहाँ पड़ा सड़ा कंक (गवन—  
प्रेमचंद, 31)

### सती होना

(१) बहुत कष्ट सहना। प्रयोग—तुमने झकेले ही सब कुछ  
नहीं कर लिया है। मैं भी अपनी बच्चियों के साथ सती  
हुई हूँ (गोदान—प्रेमचंद, 133)

(२) बलिदान होना।

### सत्त खो देना

जबरदस्ती समागम करना। प्रयोग—चाँहाल, तू ने यह  
क्या अंधेर किया जो मेरा सत्त खो दिया (प्रेम सा०—ल०  
ला०, ७)

(समा० महा०—सत्त तोड़ना)

### सत्त बांधना

मत पर स्थिर रहना। प्रयोग—कहेमि पेम जो उपना बारी  
बांध मत मन होन न भारी (पद०—जायसी, 156)

### सत्तर चूहे खाए होता

हर तरह का कर्म किए होना। प्रयोग—लक्ष्मी तो पुरानी  
है, खेती गिनाई है। सत्तर चूहे खाई हुई है (मैला०—रेणु,  
७५)

### सदर दरवाजा होना

प्रमुख साधन या तरीका होना। प्रयोग—आजकल तो  
यही उपाधियों का सदर दरवाजा हो रहा है (प्रेमा०—  
प्रेमचंद, 130)

### सनक सवार होना

घुन होना, ज़िद होनी। प्रयोग—कभी-कभी ऐसी सनक  
सवार हो जानी थी कि सब छोड़-छाड़ कर कहीं भाग जाऊँ  
(मान० (१)—प्रेमचंद, 148)

(समा० महा०—सनक चढ़ना)

### सनसनाते हुए निकल जाना

जल्दी से निकल जाना। प्रयोग—उसी बख्त मेरे किसी  
तीख ताने से तन कर मेरे ही टेबल पर से बड़ी छुरी उठा  
कर 'निराला' मनसनाते सड़क पर चले गए थे (अपनी  
खबर—उग्र, 14)

(समा० महा०—सन से निकल जाना)

### सना होना

पूरी तरह निपट होना। प्रयोग—क्या किया दे कर बड़े  
उजाले निकल जो रहा मन मेल में सब दिन सना (चुमते०  
—हरिऔध, 121)

### सन्नाटा खींचना

एक-बारगी चुप हो जाना। प्रयोग—सब-के-सब कैसा  
सन्नाटा खींचे बैठे रहे। मालूम होता था किसी के मुँह में  
जीन ही नहीं है (प्रेमा०—प्रेमचंद, 60)

(समा० महा०—सन्नाटा मारना)

### सन्नाटे में आना

ठक् रह जाना; कुछ कहते-सुनते न बनना। प्रयोग—राम-  
नाथ सन्नाटे में आ गये (मैला०—कौशिक, 152); द्वारका  
रास सन्नाटे में आ गये (सु० सु०—सुदर्शन, 92); ज्ञानशंकर



सन्ध्या में जा गये (प्रेमचंद, ३६५)

### सन्ध्यास लेना

किसी कार्य में विरक्त होना। प्रयोग—लोनों से मिलने-जुलने से उसने दिल्ली आने का निश्चय करने के पूर्व ही सन्ध्यास ले लिया था (शेखर (२)—जहाँ, २२४)

### सपना देखना

कल्पना करनी। प्रयोग—ओ ओ तुम सपना देखते हो बनाने का एक सदा इंसान (हुडू—वचन, २७)

### सपना सा होना

विषया होना। प्रयोग—गमहि बिचारि जोब जब देखा, यह संसार सुपन करि लेखा (कबीर प्रबंध—कबीर, २३४)

### सपना हो जाना

कभी न दिखलाई पड़ना; एकदम गायब हो जाना। प्रयोग—मूढ़ से जो चाहे ईमानदार बन ले, पर अब कुछ सपना हो गया (रंग (१)—प्रेमचंद, ३२)

### सपना होना

अकारणिक होना, व्यर्थ होना। प्रयोग—हम न जान्नी जयम ऐसी, रैन की सुपनी धवी (सु० सा०—सूर, ४४८३); उमा कहत मैं अनुभव अपना। सत हरि भजन जगत सब सपना (राम० (अ)—तुलसी, ७७३); मोक्ष अपना बिकास अपना हित मन जगत को न मान ले सपना (चौखी—हरिऔध, १२२)

### सपने की बात

अवधार्य बात—कभी न दिखलाई पड़नेवाली। प्रयोग—जहाज चलाने की विद्या में तरकी कम्मा और जहाजों में बढ़कर अपने देश का राष्ट्रिय दुमरे दूर देश में ले जाना × × इत्यादि बातों में उद्यम और प्रयत्न (Activity) की दरकार थी इसलिये ये बातें हमारे महा सपने की सी हो गईं (मेट्ट नि०—बा० भट्ट, ६१)

### सपने की राजधानी

अवधार्य बात। प्रयोग—सपने की राजधानी हूँ यह जो जागी कछु नाहीं (सु० सा०—सूर, ४०८६)

### सपने की सम्पत्ति

अवधार्य सम्पत्ति। प्रयोग—घबरी रीति लखी इसी सांभरे होती है संपत्ति उनी सपने की (जग०—पट्टमाकर, २३);

सपने की संपत्ति लो दुल देन जान्नी पन जानर कहा भी मुख पावो रस नाहि के (घन० कवित्त—घन०, १५१)

### सपने में भी नहीं

कभी नहीं। प्रयोग—माया तरवर विविध का, साया दुख संताप सोलसता सुपने नहीं, फल लोको तनि ताव (कबीर प्रबंध—कबीर, ३४); मैं जिनको सपनेहुं नहि देखी, तिनकी बात कहति फिरि केरी (सु० सा०—सूर, २३४५); फिरत सनेहुं मयन मुख अपने नाम प्रवाद सोच नहि सपने (राम० (बात)—तुलसी, ३५); यह रस अपने सपने कबहुं नहि पावो तिम (नंद० प्रबंध—नंद०, १२); मारी तरे न आपनो सपनेहुं भरतार (केशव० (२)—केशव, २७४); करत नहीं अपराधका, सपनेहुं पीष (रहीम कवित्त—रहीम, ५१); अब यो उर आवति है सजनी उन सो सपनेहुं न बोविये रो (घन० कवित्त—घन०, १५७); ऐसी बहुत सो बातें हैं जिनसे हम हिन्दुओं को अब स्वाद में भी सुखी नगीब नहीं है (मा० प्रबंध (३)—मारलेन्दु, ९३४)

### सप्तम सोपान पर होना

चरम स्थिति में होना। प्रयोग—पिता जी का शोध सप्तम सोपान पर पहुँचा (कुली०—निराला, ४०-४१)

### सफाई कर देना

(१) किसी के पत्र में बोलना—उसकी ओर से सफाई देनी। प्रयोग—तुम्हीं एक बार सुभाषी को सफाई करते फिरते थे, घाब हरजाई कहते हो (रंग (२)—प्रेमचंद, ४०१)

(२) सब कुछ फूँक देना।

(३) मार डालना।

(४) सब कुछ बुरा ले जाना।

### सफाई कराना

(१) भगड़ा दूर करा देना। प्रयोग—मेने बहुत बाटा कि उसे कुलाकर दोनों पलों में सफाई करा दूँ, मगर न जाता है, न मेरे पलों का प्रलर देता है (मान० (७)—प्रेमचंद, ६)

(२) सर्वसात करवा देना।

### सफाई देना

जीवाप प्रमाणित करना, स्थिति स्पष्ट करनी। प्रयोग—किसी से प्रेम करना तो पाप नहीं है, तुम व्यर्थ में अपनी



और सीना की सफाई दे रहे हो (मान० (२)—प्रेमचंद, ४८);  
मेने आपकी जम्मीवान की धपली सफाई भी दे दी है  
(मा—कीशिक, ११३)

### सफाई से

(१) कुशलता से। प्रयोग—जुम मोच ही नहीं सकती  
कि टिय सफाई से मेने कादिर साहब को अपने बस में  
किया है (ऐलरे—अशक, ५१)

(२) ईमानदारी से। प्रयोग—मा ने धरमि प्रकट करते  
हुए कहा—गंदा काम है, मैं सफाई से काम करना चाहता  
हूँ (गवन—प्रेमचंद, ४३)

(३) सुलकर, बिना किसी दुराव के। प्रयोग—मेरी से  
मेरी कभी सफाई से बातचीत नहीं हुई। उसके मन में  
गांठ पड़ी हुई है (रंग० (१)—प्रेमचंद, ३९२)

### सफेद को काला करना

भले को बुरा बताना। प्रयोग—हाल कर धीरे को अंधरे  
में जो बना कर मुफेद को काला (बोल०—हरिऔध, ५७)

### सफेद भूट

साफ भूट। प्रयोग—मैं मन में कटा जा रहा था, पर न  
जाने क्या बात थी कि यह सफेद भूट उस वक़्त मुझे  
हास्यास्पद न जान पड़ा (मान० (१)—प्रेमचंद, १०७); चन्द्र-  
माधव ने सफेद भूट बोलते हुए कहा—वही मिस गौरा,  
मुझे धन्यवाद देने की कोई बात नहीं है (नटी०—अज्ञेय,  
६८); दीदे की सफाई तो देखो, धांस में धांस डाले सफेद  
भूट बोल रहा है (मा—कीशिक, ३४४)

### सफेद बघाई

निष्कल बघाई। प्रयोग—विहावलोकन के लिए आपको  
भूरि-भूरि धन्यवाद और सफेद-सफेद बघाई देता हूँ  
(पट्टम० के पत्र—पट्टम० शर्मा, १७७)

### सफेद बालों की लाज रखना

बूढ़ापे का सम्मान बनाए रखना। प्रयोग—इस लम्बी दाढ़ी  
पर निगाह डालिए, इन सफेद बालों की लाज रखिए  
(प्रेमा०—प्रेमचंद, २८५)

### सफेद हाथी बंधना या होना

खर्च बढ़ने का उपक्रम होना। प्रयोग—यही दैनिक पत्र  
मनीषि जी के लिये खेत हराती बन गया (गुलेरी पंख (१)  
—गुलेरी, २७६)

### सफेद-पोशी

अच्छे कपड़ों से सुलज्जित। प्रयोग—दो-चार घर बिगड़े  
सफेदपोशों के भी हैं, जिन्हें उनको हीनाकन्या ने गहर में  
निर्वासित कर दिया है (रंग० (१)—प्रेमचंद, ९)

### सफेद-पोशी

अच्छे तरीके का रहन-सहन। प्रयोग—बड़ा कुटुम्ब है।  
सफेद पोशी साफ लगी है। गुजर नहीं होती (झांसी०—  
पू० शर्मा, १४४)

### सब धान बाइस पैसेरी होना

(१) सब को एक या समझना। प्रयोग—हाथ-हाथ कैसे-  
कैसे दुखी लोग हैं—और मजा तो यह है कि सब धान  
बाइस पैसेरी (मा० पंखा० (१)—भारतेन्दु, ४४९); तो फिर  
जन्मपत्नी का क्या फल हुआ "सब धान बाइस पैसेरी"  
(राधा० पंखा०—राधा० दास, ५४७); इतना मान-आदर से  
धपने यहां रखते हैं, बिनाले निनाले हैं और समय पड़ने  
पर सब धान बाइस पैसेरी (मिला०—रेड्, ३४)

(२) मिल-मिल गन्ध की वस्तुओं को एक समझना।

### सब्र बाग दिखाना

काम निभाकने के लिये बड़ी-बड़ी आवाएं दिखानी। प्रयोग  
—यह तो सुना हुआ है और बिहारी बाबू आपकी पाट  
नगाने के लिये उबम यह सब्र बाग दिखाले हैं (परीक्षा०  
—झी० दास, १०४); यह आपकी सब्र बाग दिखाने की  
था (राधा० पंखा०—राधा० दास, ३०२); महारमा जी ने उन्हें  
सब्र बाग दिखाकर उनकी पत्नी, अम्बुडियां, कण सत्र उठा  
लिये (गोदान—प्रेमचंद, ६३); उन्होंने उसे बहुत मनाया,  
सब्र बाग दिखाये, पर वह न माना (बूट०—झी० दास,  
१५३); पत रात्रि की पासीराम ने भी × × बड़े-बड़े सब्र  
बाग दिखाए थे (मा—कीशिक, ६९)

### सम्झता की सीढ़ी

विकास की स्थिति। प्रयोग—सम्झता की माना सीढ़ियों  
पर हमारी जनता के माना समूह खड़े हैं (अशिक०—हू०  
प्र० दि०, १६०)

### समझ के पीछे साठी लिए घूमना

नासमझी करनी, बेवकूफी की बातें करनी। प्रयोग—  
समझ के पीछे साठी बांधे घूमेगी और ऊपर से गर्व करेगी  
बिलोड़ी (गुहारा०—झी० दास, ६८)



### समझ से ऊंची बात

ऐसी बात जो बुद्धि में न घाती हो। प्रयोग—भैया चित्ता प्रसाद, हमारी समझ से तो ऊंची है यह पोकी (ब्रह्म०—दे० स०, ३१२)

(समा० महा०—समझ के बाहर की बात)

### समझ पर पत्थर पड़ना

बुद्धि का काम न करना। प्रयोग—जो समझ पर पड़ा न पत्थर है है कलेजा अगर नहीं पत्थर (बोल०—हरिऔध, १८६)

### समय आ जाना

मृत्यु निकट होनी। प्रयोग—दोनों बेटों ने बहुत दौड़-धूप की परन्तु माँ का समय आ गया था (झुंडा० (१)—यशपाल, ६)

### समय का पलटा खाना,—फिर जाना

(१) स्थिति में परिवर्तन होना। प्रयोग—रहा प्रथम घब ते दिन बीते समउ फिरें रिपु होहि पिरीते (राम० (अ)—तुलसी, ३८७); यह ठीक है पर समय फिर गया है (राधा० ग्रंथा०—राधा० दास, ६७१); फूट गया है भाग या समय ने है पलटा खाया (सर्मा०—हरिऔध, १५\*)

(२) मौसम में परिवर्तन होना।

### समय का फेर

भाग्य-दशा। प्रयोग—मरतु ध्याम पिजरा-परची सुआ समें के फेर। घादरु दे दे बोलिपतु बाइसु बलि की बेर (विहारी रत्ना०—विहारी, ४३५)

### समय की हवा

युग का चलन। प्रयोग—परन्तु समय की हवा के खिलाफ होने के कारण पञ्चनेश के तर्क-वितर्क वाले चोड़े से छन्द बिलकुल पिछड़ गये (झाँसी०—वृ० वर्मा, ४२)

### समय चूकना

ठीक अवसर पर कार्य न करना। प्रयोग—समय चूक पुनि का पछिताने (राम० (बाल)—तुलसी, २६८); माई समय न चूकिये यथाशक्ति उन्मान (कुण्ड०—गिरधरदास, २५)

### समय पड़ना

विपत्ति आनी। प्रयोग—पड़ता समय है बीर पर ही,

भीरु-कायर पर नहीं (जय०—गृध्र, ३४)

### समय फिर जाना

दे० समय का पलटा खाना

### समय होना

अच्छे दिन होना; प्रतिष्ठा के दिन। प्रयोग—समय प्रताप-भानु कर जानी (राम० (बाल)—तुलसी, १६८)

### समर-सेज पर सोना

युद्ध में मृत्यु को प्राप्त होना। प्रयोग—राम निरादर कर फलु पाई। सोबहु समर सेज दोउ भाई (राम० (अ)—तुलसी, ५८९)

### समा बंधना

गाने बजाने या भाषण आदि का श्रेष्ठता के कारण छा जाना। प्रयोग—पर उसके गानें में समा न बंधा तो आप को वह शर्त पूरी करनी पड़ेगी (परीक्षा०—श्री० दास, ५५); इधर या इस भाँति समा बंधा, उधर व्योम हृया कुछ और ही (प्रिय०—हरिऔध, ७)

### समाई रखना

(१) दमता होनी। प्रयोग—यदि किसी के एक चांटा जमाने का शौक रखते हो तो दस चांटे खाने की समाई रखो (गु० नि०—ठा० मु० गु०, ५०५)

(२) सह जाना।

(समा० महा०—समाई करना)

### समाज जुड़ना

सब लोगों का एकत्रित होना। प्रयोग—भोर न्हाइ सब जुरा समाजू (राम० (अ)—तुलसी, ६७०)

### समाज साजना

सब को जुटाकर किसी काम की तैयारी करनी। प्रयोग—बेगि बिलवून करिष नृप साजिष सबद समाज (राम० (अ)—तुलसी, ३७६)

### समाधि छूटना

ध्यान भंग होना। प्रयोग—छूटि समाधि संभू तब जागे (राम० (बाल)—तुलसी, ९८)

(समा० महा०—समाधि टूटना)



### समाधि लगाना

ध्यान लगाना । प्रयोग—संकर सहज मरूप संहारा ।  
नागि समाधि घञ्जंड अगारा (राम० बाल) —तुलसी, ७२

### समान देना

तुलना म रखना, उपमा देनी । प्रयोग—सदा कृतानिधान  
हो, कहा कही मुजान हो, अमान दान-मान हो, समान  
काहि दीजिय (घन० कवित्त—घना०, ९३)

### समीप आना या होना

मन में निकटता का अनुभव करना । प्रयोग—मुखदा उसके  
समीप आने लगी (कर्म०—प्रेमचंद, २२)

### समुद्र उमड़ आना

अत्यधिक परिमाण में होना । प्रयोग—अंत में कण रस में  
उनकी समाप्ति होती है क्योंकि शरीर की मुवि आते ही  
एक साथ बेबसी का समुद्र उमड़ पड़ता है (मा० ग्रंथा० (१)  
—भारतेंद्र, ४६३)

### समुद्र पर लीक डालना

असंभव कार्य को करने का प्रयत्न करना । प्रयोग—चाहे  
इन्होंने समुद्र पर लीक डालने का यत्न किया हो, पर चीर  
वे ही नहीं हैं जिनके सिर पर सफलता का मुकुट चढ़ता  
है, वे भी चीर होते हैं जो भगड़ते-भगड़ते मर घोर प्रति-  
कूल विधि के पादपीठ बन जाते हैं (गुलेरी ग्रंथ (१)—  
गुलेरी, २७८)

(समा० मुहा०—समुद्र की धाह लेना)

### समूल जाना

पूरी तरह नष्ट हो जाना । प्रयोग—दिवस चारि सरसा  
रहे, अंति समूला जाहि (कबीर ग्रंथा०—कबीर, ३९)

### सम्हल कर बोलना

मर्यादा में रह कर बात करना । प्रयोग—तब भुकि बोली  
ग्वालि बात किन कहो संभारै (सु० सा०—सुर, २०७९);  
रे नृप बालक काल बस बोलत तोहि न संभार (राम०  
(बाल) —तुलसी, २७७)

### सम्हल-सम्हल कर पैर रखना

बड़ी सावधानी से काम करना । प्रयोग—हरिप्रसन्न ने  
सोचा था कि ठीक आधी रात को घर से निकल कर चलना

ठीक न होना । संभल-संभल कर पैर रखना चाहिए  
(सुनीता—जैनेन्द्र, १७६)

### सर होना

- (१) ध्यान आना, ऊपर जान पड़ना । प्रयोग—पद की  
मर्यादा सर हो गई (चोटी०—निराला, ७)
- (२) चित्रय मिलनी । प्रयोग—राजेन्द्र बाबू के तक्रारों में  
जब बैंगाली का मंदान मार लिया तो क्या टिप्पणियों का  
कूबा सर न होना (पद्म० के पत्र—पद्म० शर्मा, ९)
- (३) ऊपर आ पड़ना ।
- (४) हैरान करना ।
- (५) समझ होनी ।

### सरकार की मेहमानी खाना

जेल की सजा भुगतनी । प्रयोग—शायद दो-चार साल के  
लिए सरकार की मेहमानी खानी पड़े (गबन—प्रेमचंद,  
३०८)

(समा० मुहा०—सरकार की मेहमानी करना)

### सरदार होना

खेप्ट होना । प्रयोग—तुम तो बड़े बड़े कुल जनमें, घर  
सबके सरदार (सु० सा०—सुर, ४१६१)

### सरपरस्त होना

देखभाल करने वाला । प्रयोग—धानी मैंने जब जरा ही  
आँखें खोलकर दुनिया को देखा तो मेरा कोई सरपरस्त  
नहीं (अपनी खबर—उग्र, ३४)

### सरसरी तौर पर,—नज़र डालना

बहुत ध्यान से नहीं । प्रयोग—कल जो 'माधुरी' आई तो  
मे बलार में पड़ा था । × × एक बार सरसरी तौर पर  
सब पड़ गया (पद्म० के पत्र—पद्म० शर्मा, २२५); जी हाँ  
अभी सरसरी नज़र डाले चला आ रहा हूँ (बुंद०—  
अ० ना०, ३०)

### सरसरी नज़र डालना

दे० सरसरी तौर पर

### सर्द-गर्म कहना

भला-बुरा कहना । प्रयोग—बल्कि उन्होंने तो परोक्ष में  
फूका को काफ़ी सर्द-गर्म तक कह डाला (त्याग०—जैनेन्द्र,  
२५)



सर्वस्व जाता देखकर आधा छोड़ देना

६८२

साई के सौ खेत होना

**सर्वस्व जाता देखकर आधा छोड़ देना**

बड़े नुकसान को बचाने के लिए थोड़ा नुकसान सहना ।  
प्रयोग—सकुचत तात कहत एक बाता । अरघ तजहि वृष  
सरबस जाता (राम० अ)—तुलसी, ६१५)

**सलाम करना**

छोड़ देना । प्रयोग—जब से हज़ूर तशरीफ ले गये, मैंने  
भी नौकरी को सलाम किया (प्रेमा०—प्रेमचंद, २४५)

**सलामी करना**

सेवा में उपस्थित होना । प्रयोग—अपने मतलब के लिए  
सलामी करने जाता हूँ (गोदान—प्रेमचंद, १७)

(समा० मुहा०—सलामी बजाना)

**सबा बीस होना**

बहुत ठीक होना । प्रयोग—बंबई जो कहे सो सबा बीस  
(दुधगाछ—दे० स०, ४६)

**सबा सोलह आना**

पूर्णतः, बिना किसी कमी के । प्रयोग—सज्जन की बात  
मुझे सबा सोलह आनें ठीक जंच रही है बिनो (बूंद०—अ०  
ना०, २०८); × × गोस्वामी तुलसीदास जी द्वारा प्रति-  
पादित वैराग्यपूर्ण उपदेश को मैंने कम से कम एक वस्तु  
के सम्बन्ध में सबा सोलह आने रूप से अपना लिया है  
(मेरे०—गुलाब०, ३३)

**सवारी गांटना**

(१) सवारी करनी । प्रयोग—तुम उसके टट्टू हो, तुम्हें  
घास खिलायेगी × × तुम्हारे घुट्टों पर हाथ फेरेंगी लेकिन  
इसीलिए कि तुम्हारे ऊपर सवारी गांठे (गोदान—प्रेमचंद,  
१९५)

(२) अपने बश में करना ।

**सवाल्लों की झड़ी लगा देना**

एक के बाद एक प्रश्न पूछे जाना । प्रयोग—जब बिठूर  
सोटा, घबसर पाकर उन बालकों ने भांसी के विषय में  
सवाल्लों की झड़ी लगा दी (झांसी०—पृ० वर्मा, ५९)

**समुराल की राई पहाड़ लगाना**

समुराल की छोटी बात भी बड़ी लगनी । प्रयोग—स्त्री का  
स्वभाव यह भी है कि समुराल की राई उसे पहाड़ लगती  
है और मायके की ज़मीन में भी उसे खूबसूरत आती है

(वीने०—रा० रा०, १४२)

**सस्ता**

(१) मुक्ति-शून्य; वासनापूर्ण । प्रयोग—उसने मुगलों के  
उद्यान देखे—सस्ती सजावट और गरिब के प्रयोग और  
बस ! (शेखर (२)—अज्ञेय, २६)

(२) बिना या कम प्रयत्न के मिलनेवाली वस्तु । प्रयोग—  
जहाँ तहाँ मैं सब आवँगे, मुनि मुनि सस्ती नाम । धब तो  
पर्यो रहेंगी दिन-दिन मुमकौ ऐसी काम (सू० सा०—सूर,  
१९१)

(३) महत्वहीन ।

**सस्ते**

आसानी से । प्रयोग—लेकिन अम्बपाली इतने सस्ते नहीं  
हार मान सकती थी (अम्ब०—रा० वै०, ४८)

**सस्ते छूटना**

थोड़े ही व्यय, परिश्रम या कष्ट में कोई काम हो जाना ।  
प्रयोग—राजा ने सोचा, बहुत सस्ता छूटा यह (झांसी०—  
पृ० वर्मा, ५८)

(समा० मुहा०—सस्ते गला छूटना)

**सहस्र मुख से भी न वर्णन कर पाना**

अवर्णनीय होना; अति सुन्दर होना । प्रयोग—एहि विधि  
राम विषाह उछाह । सकइ न बरनि सहस्र मुख जाह (राम०  
(बाला)—तुलसी, ३४१); कृत पुण्य सेटिठ के वैभव घोर  
चमत्कार एवं दानशीलता को देख-देख कर लोग दत्त-  
सहस्र मुखों से प्रशंसा करते नहीं घषाते ये (वैशाली० (२)  
—चतुर०, १२१)

**सहारे की लकड़ी**

सहायक । प्रयोग—मेरे दो जवान बेटे इस लड़ाई में देशो-  
पकार के लिये मारे गए उन्हें मानो मेरे सहारे की लकड़ी  
छिन गई (परीक्षा०—प्री० दास, १३०)

**सही भरना**

स्वीकार कर लेना । प्रयोग—बानी विधि गौरि हर सेसह  
गनेस कही सही भरी लोमस भृगुद्विबुह बारिषो (तुलसी—  
हि० श० सा०)

**साई के सौ खेत होना**

बहुत उपाय होना । प्रयोग—जड़ी साई के सौ खेत है



इसका इन्तजाम मैं कर सकता हूँ (गवर्न—प्रेमचंद, १२८)

### सांच को आंच न होना

सच्चे एवं ईमानदार व्यक्ति को कोई डर न होना । प्रयोग—सांचहि आंच न कूहें सांच की जय जु सदा है (राधा० प्रथा०—राधा० दास, ३९); झूठ की खुलती है कलाई सांच को नहीं आती आंच (बुद्ध०—सच्चन, ९०); हाँ, सांच को क्या आंच ? बलिये, अभी मैं उनके सामने कह दूँ (सेवा०—प्रेमचंद, ६७)

### सांचे में डला

मुडौल, मुगठित । प्रयोग—सूरदास प्रभु रीझि बकित भए मनहु काम सांचे भरि काढ़ी (सू०सा०—सूर, ९१८); आपकी लेखनी से जो कुछ भी निकलता है वह सांचे में डला होता है, इससे तो किसी को इनकार ही नहीं (पद्म० के पत्र—पद्म० शर्मा, २४४)

### सांभ पड़ना

संभ्या होनी । प्रयोग—परी सांभ पुनि सखी सो धाई (पद०—जायसी, २७३)

### सांठ-गांठ करना या कराना

हेल मेल करना या होना ; गुप्त सम्बन्ध करना या होना । प्रयोग—इसी नदी रांड ने ही सांठ-गांठ कराई थी (बुद्ध०—अ० ना०, ६२); मारकी-बीच के फौजियों से सांठ-गांठ रखी है उसने (पैतरे—अशक, १२३)

### सांठ-गांठ होना

(१) भीतर-भीतर एक होना । प्रयोग—ऐसे कुत्सित कार्य में पुन से सांठ-गांठ करना उनकी अंतरात्मा को किसी तरह स्वीकार न था (गवर्न—प्रेमचंद, २४); भैरों के मन में संदेह हो गया कि जरूर इन दोनों में कुछ सांठ-गांठ है (रंग० (१)—प्रेमचंद, १८३); सांठ-गांठ पक्की होते ही दोनों नष्ट कद के पास भीड़ में पुनः धा गये (कला०—उग्र, १११)

(२) गुप्त रूप से प्रेम होना । प्रयोग—क्या कोई स्त्री बिना सांठ-गांठ के अपनी छाती किसी पर-पुरुष के सामने उधाड़ेगी (मुग०—वृ० वर्मा, २९६); उसकी एक ग्वालिन से सांठ-गांठ हो गई तो मझले बाबू को इस बात का पता लग गया (बल०—नागा०, ७)

### सांड की तरह घूमना

घाजादी घोर बेकिसी से घूमना । प्रयोग—दिन भर सांड की तरह फिरते हो, कहीं मजूरी क्यों नहीं करते ? (रंग० (२)—प्रेमचंद, १०५-१०६)

### सांप के बिल में हाथ डालना

जान-बूझकर खतरे और नुकसान में पड़ना । प्रयोग—मगर वह क्यों सांप के बिल में हाथ नहीं डालते ? इसीलिए तो कि उनके घरवालों को कष्ट न उठाना पड़े (गोदान—प्रेमचंद, १७५)

### सांप के मुंह की छछुंदर होना,—छछुंदर की गति होना

दोनों घोर से अनिष्टकारी स्थिति होनी । प्रयोग—भई रीति हठि उरग छछुंदरि, छाड़े बनै न खात (सू० सा०—सूर, ४३५७); धरम मनेह उभय मति घेरी । भइ गति सांप छछुंदर केरी (राम० (अ)—तुलसी, ४२४); अगर वह तुम्हारी तरफदारी करे तो अंजुन छफसर उन्हें बागी समझे । तुम्हारी सांप छछुंदर की सी हालत हुई (गु०नि०—बा० मु० गु०, २५४); अब तो सांप छछुंदर की गति हो रही है (राधा० प्रथा०—राधा० दास, ६७१); पचा दाखिल करते समय उसकी हालत सांप छछुंदर जैसी हो गई (परसी०—रेणु, ४४१); क्या बताऊँ ? सांप-छछुंदर की-सी गत है (मा—कौशिक, ३५०); कादिर भाई उसका अहसान मानते हैं, पर इसे क्या करे कि वह अहसान सांप के मुंह की छछुंदर बन गया है (पैतरे—अशक, ११०)

### सांप के मुंह में उंगली डालना

जान का खतरा मोल लेना । प्रयोग—सोफ़ी, क्यों नादान बनती हो ? सांप के मुंह में उंगली डालना कौन-सी बुद्धिमानी है ? (रंग० (१)—प्रेमचंद, ४७)

### सांप के साथ खेलना

(१) भयंकर कार्य करना । प्रयोग—छोटे घी बड़े मेरे पूतऊ घनेरे सब, सांपनि सों खेलें, मेलें गरे छुराधार सों (कवि०—तुलसी, ४८) (÷)

(२) जान-बूझकर खतरनाक काम करना । प्रयोग—देखिए प्रयोग (१) में (÷)

### सांप को दूध पिलाना

किसी दुष्ट के प्रति स्नेह होना जो मौका मिलते ही अहित



करेगा। प्रयोग—तब हंस कर संवर कहने लगा कि भाई, यह मेरे लिए दूसरा प्रद्युम्न कहाँ से आया, क्या दूध पिला देने रूप बड़ावा (प्रेम सा०—ल० ला०, १५६)

(समा० मुहा०—साँप को दिल में जगह देना)

**साँप निकल जाने पर लकीर पीटना**

काम या बात हो जाने पर व्यर्थ प्रयत्न करना। प्रयोग—बुढ़ापे में भी बुढ़ऊ बाबा के सिवा हमारे सब नाम साँप निकल जाने पर लकीर पीटना है (प्र० पी०—प्र० सा० मि०, ५१); जब वे भुन जाते हैं तब कहीं चोरी का पता चलता है। साँप निकल जाने पर लकीर पीटी जाती है (मेरे०—गुलाब०, ८१)

**साँप पालना**

सत्तरनाक व्यक्ति को प्रश्रय देना। प्रयोग—पराया लड़का भी अपना नहीं होता। हाथ-पांव हुए, और तुम्हें दुत्कार कर जलज हो जायगा। तुम अपने जिसे साँप पाल रहे हो (रंग० (१)—प्रेमचंद, २६)

**साँप मर जाय पर लाठी न टूटे**

काम भी बन जाय और मुकसान भी न हो। प्रयोग—ही० एम० पी० ने सोचा, साँप भी मर जायगा, लाठी भी न टूटेगी (चोटी०—निराला, ५२)

**साँप सूँघ जाना**

(१) सन्न हो जाना, अत्यंत भयभीत हो जाना। प्रयोग—ज्वाला प्रसाद को जैसे साँप सूँघ गया हो (मूले०—मग० ठमी, २२२); घर के जलातलाने में वह कभी ही कभी आया करते थे और जब घाते थे तब X X मा तक को साँप सूँघ जाता था (बुंद०—अ० ना०, ८९)

(२) साँप काटना। प्रयोग—अरे, तुम क्या सरेशाम से सो गईं? अभी तो आठ भी नहीं बजे। कहीं साँप तो नहीं सूँघ गया (मान० (४)—प्रेमचंद, ८८)

**साँप-छछुंदर की गति होना**

दे० साँप के मुँह की छछुंदर होना

**साँय-साँय बात करना**

बहुत धीरे बात करनी। प्रयोग—वह साईस के पास जा बैठा, और दोनों में साँप-साँव बात होने लगी (रंग० (२)—प्रेमचंद, १११)

**साँस उखड़ना**

(१) पुरा इम न रहना, हिम्मत पस्त होनी। प्रयोग—पाँव अनचन तलाह देने में साँस जब भी उखड़ उखड़ जाती (चुमते०—हरिऔध, १०३)

(२) हाफना।

(३) मरने के समय रोगी का बड़े कष्ट से साँस लेना।

(समा० मुहा०—साँस टूटना)

**साँस ऊपर-नीचे होना**

(१) तबियत पबरानी, परेशानी होनी। प्रयोग—तलाशी! होरी की साँस तले-ऊपर होने लगी (गोदान—प्रेमचंद, ११४)

(२) हाफना।

**साँस गिनना**

मृत्यु की प्रतीक्षा करनी। प्रयोग—बला से आपकी। साँस गिन रही हूँ (भारती०—रा० रा०, १२३)

**साँस चढ़ना**

हाफना। प्रयोग—दूर से नीलमणि भागता हुआ आया। उसका साँस चढ़ा हुआ था (ब्रह्म०—दे० स०, २३९)

**साँस चलना**

मृत्यु के समय ऊर्ध्व साँस चलनी। प्रयोग—उस पक्षी उसकी साँसे चल रही थी और वह अचमरा सा हो रहा था (ठेठ०—हरिऔध, ३२)

**साँस छोड़ना**

लंबी साँस लेनी। प्रयोग—छाड़इ स्वास कारि जनु सापिन (राम० (अ)—तुलसी, ३८४)

**साँस जुड़ना**

ठीक से साँस घानी। प्रयोग—फिर बुढ़ापा साकत के लिए फेफड़ों को सोल कर जिरगी की हवा भरने लगा। साँस जुड़ी तो देवा—एक आदमी (वीने०—रा० रा०, २७)

**साँस टूट जाना या टूट-टूट जाना**

(१) हिम्मत पस्त होनी। प्रयोग—आस कैसे न टूट जाती तब साँस जब टूट-टूट जाती है (चुमते०—हरिऔध, ४०); रघुनाथ का सिर पेंदे के पास पहुँचते ही उसने दो गोले साथे धीरे सीबा होते होते उसकी साँस टूट गई (गु० कहा०—गुलेरी, ३६) (—)



(२) मृत्यु के पूर्व या ऐसे ही सांस का रुक रुक कर घाना ।  
प्रयोग—देखिए प्रयोग (१) में (÷)

(३) मरणासन्न होना ।

### सांस तोड़ना

मरना । प्रयोग—पति को उसने अपने सामने सांस तोड़ते देखा (धरती०—वि० प्र०, १५२)

### सांस न लेना

(१) बहुत डरना—आदर करना । प्रयोग—जग न लेता सांस जिनके सामने आज उनकी सांसते हैं ही रही (चुभते०—हरिऔध, २२)

(२) एकदम चुप-शांत रहना, तनिक भी न हिलना डुलना । प्रयोग—माजी चुप, अभी दुश्मन दूर नहीं है, अभी सांस न लेना (राधा० ग्रंथा०—राधा० दास, ७६१)

(३) जरा भी सब न करना ।

### सांस न होना

(१) जरा भी स्थान न होना । प्रयोग—निकल भागने को जी चाहा, परन्तु वहाँ बाल बराबर भी सांस न थी (शांसी—वृ० वर्मा, ३८१)

(२) सुराग या हवा जाने का छेद न होना ।

### सांस निकलना

मृत्यु होनी । प्रयोग—राम बिन निकसि न जाई सांस अजहं कौन घास (कबीर ग्रंथा०—कबीर, १२४)

### सांस नहीं में बसना

बहुत डर लगना । प्रयोग—मेरे तो सांस नहीं में बसते हैं (जय०—जेनेन्द्र, ९४)

### सांस फूलना

दमा या परिधम के कारण जल्दी जल्दी सांस लेना । प्रयोग—बैतरह सांस फूलती है क्यों सांस क्यों टूट टूट जाती है (बोल०—हरिऔध, ११२); बाई जी की सांस फूल गई (ज्ञान०—यशपाल, ४५)

### सांस भरना

(१) सांस लेना । प्रयोग—जिनको तुम भोरि बिसास करो सु न सांस भरें बपुरी अबला (धन० कवित्त—धना०, ९७); है उबरते अगर उबर लेवें । सांस हम ऊब ऊब कर न भरें (चुभते०—हरिऔध, ३९)

(२) किसी चीज के अंदर हवा भरनी ।

### सांस रोककर

(१) पूरी एकाग्रता से, और सब भूल कर । प्रयोग—लोग सांस रोक कर मुनने लगे (कुली०—निराला, ७१)

(२) बिना किसी प्रतिवाद के; चुपचाप । प्रयोग—मेरे छह वर्षों तक सांस रोक कर इस वृद्धावस्था में यह बीभत्स दृश्य देखती रही (बाण०—ह० प्र० द्वि०, ३१८)

(३) एक बारबी; एक ही झटके में ।

### सांस लेना

(१) रुकना । प्रयोग—सांस क्यों ले जाति-हित करते चले (चुभते०—हरिऔध, ४०)

(२) आराम मिलना; कुंठ मिलनी । प्रयोग—यह बोझ आप संभालें तो मुझ जरा सांस लेने का अवकाश मिले (प्रेमा०—प्रेमचंद, १८०)

### सांस लेने की जगह न होना

बहुत भीड़ होनी । प्रयोग—गाड़ी में सांस लेने की जगह नहीं, सिट्की पर जरा सांस लेने खड़ा हो गया तो उस पर इतना क्रोध ! (मान० (१)—प्रेमचंद, १११)

### सांस साधे होना

स्तब्ध होना; किसी घटना की घाटा में सबका आरांकित रहना । प्रयोग—फाटक के पास जाते ही मालूम हुआ, सारा घर सांस साधे टुप है (कुली०—निराला, ४५)

### सांसत का छकड़ा

बहुत बड़ी मुसीबत । प्रयोग—जिसके अंग-अंग सांसत के बने लड़े छकड़े ! (मर्म०—हरिऔध, १२३)

### साका चलना या चलाना

प्रभाव माना जाना । प्रयोग—हृदय मुकुतामात निरखत बारि अवलि बलाक । करज कर पर कमल वारत चलति जहं तहं साक (सूर—हि० श० सा०)

### सांस उठ जाना,—जाना,—न रहना,—मिटना

पुराने विश्वास का न रहना, प्रतिष्ठा नष्ट होनी । प्रयोग—जब × × मेरी सांस जाती रही तो फिर क्या मिजने में मेरा क्या काम निकला ? (परीक्षा०—श्री० दास, ८९); साक मिटे अरु भेद बात में परे जू तनकहि (राधा० ग्रंथा०—



राधा० दास, ५१); बाजार में तो अब उनकी रती भर भी साख न रही थी (रंग० (२)—प्रेमचंद, २१९); इतने ही दिनों में मृगौजी की साख भी उठ गई थी (निर्मला—प्रेमचंद, १२१) (समा० मुहा०—साख उखड़ जाना,—में बट्टा लगना)

### साख ऊंची उठना

घोर प्रतिक प्रतिष्ठा होनी। प्रयोग—पाप्मा की नीति घोर दुष्टता ने उनकी साख ऊंची उठा दी (सुहाग०—अ० ना०, १०७)

साख जमना या जमाना,—बंधना या बांधना विश्वास घोर प्रतिष्ठा होनी या प्राप्त करनी। प्रयोग—हां भाई, बाजार में इनकी साख बंधी है (मा० प्र० (१)—भारतेंद्र, ३३६); कब तुम्हकी देशी-अंतरदेशी क्षेत्रों में प्रभुता की साख जमानी है? (बुद्ध०—वचन, १४९)

(समा० मुहा०—साख बनना या बनाना,—होना)

### साख जाना

दे० साख उठ जाना

साख न रहना

दे० साख उठ जाना

साख बंधना या बांधना

दे० साख जमना

### साख मटियामेट करना

साख बिगाड़ना। प्रयोग—मोल मिट्टी के बिकेगा क्यों न वह साख ही जिसने कि मटियामेट की (बोल०—हरिओध, २१९)

### साख मिटना

दे० साख उठ जाना

### साखी बोलना

साखी मानना। प्रयोग—निगम जाकी साखी बोलें, कहें संत सुजान (कबीर ग्रंथा०—कबीर, १९०)

### साज सजाना

तैयारी करनी। प्रयोग—रामहि देउं कालि जूबराजू। सजहि मुलोचन मंगल साजू (राम० (अ)—तुलसी, ३९७)

### साभे की खेती

साभे का काम। प्रयोग—दोनों में साभे की खेती थी, कहा-मुनी हो गई (ये कोठे०—अ० ना०, ३०)

### साभे की सुई का टेले पर लदना

साभे के या पंचायती काम का सैर जिम्मेवारी से होना। प्रयोग—घंटे भर पंचायत हुई, पर सूरदास के पाग कोई न गया। साभे की सुई टेले पर लदती है। तू चल, मैं आता हूं, यही हुआ किया (रंग० (२)—प्रेमचंद, ३१५)

### साठे पर पाठे होना

बुझापे में भी पूरी शक्ति रहनी। प्रयोग—तुम जैसे मर्द साठे पर पाठे नहीं होते (गोदान—प्रेमचंद, ६)

### साढ़े साती होना

घोर घनिष्टकारी होना। प्रयोग—सजि प्रतीति बहु विधि गहि छौनी। धवध साढ़ साती तब बोली (राम० (अ)—तुलसी, ३८७)

### सात कोठरी में छिपा कर रखना

गुप्त से गुप्त जगह में छिपाना। प्रयोग—सात कोठरी में छिपा के रखूँ, पर इसकी निगाह पहुंच जाती है (गबन—प्रेमचंद, १७८)

### सात घाट का पानी पीना

(१) बुरी-भली सभी जगह जाना। प्रयोग—मुरपति राय सात घाटों का पानी पी चुका है (परती०—रेणु, ४६)

(२) बहुत चालाक होना।

### सात जन्म में भी नहीं

कभी नहीं। प्रयोग—जिसके घर में भूनी भांग नहीं, जो मेरा खेतिहर है, जो मेरे सामने बात करते हुए धरता है उसे मैं अपना समझी बनाऊँ! यह तो सात जन्म नहीं हो सकता (भिला०—कोशिक, ४३)

### सात राजाओं की साक्षी देना

किसी बात की सत्यता पर बहुत जोर देना। प्रयोग—सूर प्रभु यह बोल हिरदै, सात राजा साखि (सू० सा०—सूर, ४७५३)

### सात बार नौ त्योहार होना

रोज ही उत्सव त्योहार लगा रहना। प्रयोग—बरकला में ही रहो, यहां तो सात बार नौ त्योहार का योग रहता है (दूधगाछ—दे० स०, ४६)

### सात-चौदह की सैर कराना

जेल की हवा खिलाना। प्रयोग—हां, वह घर चल कर



हमलोगों को यह इनाम जरूर देगा कि पुलिस के हवाले कर सात चौदह की सैर करावेगा (मा० मा० (२)—कि० गो०, १६)

### सात-पांच

(१) इधर-उधर व्यर्थ का काम । प्रयोग—खैर इसी सात पांच में रात कट गई (मा० प्र० ३)—भारतेन्दु, ९६०)

(२) छल कपट । प्रयोग—एकदम बमभोलानाथ हैं सिपजी मन में कोई सात पांच नहीं रखते (मैला०—रैणु, ३३)

### सात-पांच करना

(१) बहुत बेचैन होना । प्रयोग—बात के सुनते ही उसे रात भर नींद न आई और उसने सात पांच कर रैन गंवाई (प्रेम सा०—ल० ला०, १९२)

(२) चालाकी या धूर्तता करनी ।

### सातवें आसमान पर पर मारना

बड़ी बड़ी कल्पनाएं करनी । प्रयोग—कलम हाथ लेते ही कितने कवियों की आंख की परो विश्व साहित्य के सातवें आसमान पर पर मारती है (कुल्लो—निराला, १०)

### सातों द्वीप में खोजना

सब जगह खोजना । प्रयोग—तद्यपि भवन भाव नहीं बज बिनु खोजों दीप सात (सू० सा०—सूर, ४५९५)

### सातों सुधि भूल जाना

होश हवास में न रहना । प्रयोग—मूरदास प्रभु के बिछरे तै, भूलि गई सुधि सातों (सू० सा०—सूर, ४५५२); भूल सुधि सातों दसा विबस गिरत गातों, रीझि बावरे हूँ तब और कछू भाखिये (घन० कवित्त—घना०, १२६)

(समा० मुहा०—सातों भूल जाना)

### साथ लगना

साथ हो जाना; साथ-साथ चलना । प्रयोग—ता साहिब के लागी साधा, दुख मुख मेटि रह्यो घनाधा (कबीर ग्रंथा०—कबीर, २४३); बालक बूढ़ बिहाइ गृहं लगे लोग सब साथ (राम० (अ)—तुलसी, ४५१)

### सानना

किसी बात में किसी और व्यक्ति या बात को भी मिला देना । प्रयोग—भरत को सानती है आप में क्यों ? पड़ेगे सूर्यवंशी पाप में क्यों ? (साकेत—गुप्त, ५९)

### सानी हुई

मिली हुई । प्रयोग—जैसे हरि जैसे तुम मेवक, कपट चतुर्-रई साने ही (सू० सा०—सूर, ४१३८); बोले मनोहर वचन सानि सनेह सोल मुजाय सौ (राम० (बाल)—तुलसी, ३३४)

### साफ आसमान देखना

विषय की ठीक-ठीक जानकारी करनी । प्रयोग—मैं जरूर कुल्ली का साफ आसमान देखूंगा (कुल्लो—निराला, ४३)

### साफ करना

(१) स्थिति स्पष्ट करनी । प्रयोग—इन मामले को अभी से साफ कर लेना चाहिए (प्रेमा०—प्रेमचंद, ३५)

(२) मार डालना; बरबाद करना ।

(३) लेन-देन आदि निपटाना ।

### साफ मन होना

कोई दुर्भाव न होना । प्रयोग—जाला मदनमोहन ने साफ मन से कहा पर हरदयाल के पापी मन को इतनी ही बात में खटका हो गया (परीक्षा०—श्री० दास, २६)

### साफ होना

(१) मर जाना । प्रयोग—जितने उपार्जन और काम करने वाले घादमी थे, साफ हो गए (कुल्लो—निराला, ८०)

(२) भला आदमी होना ।

(३) सब समाप्त हो जाना ।

### साफ-साफ बोलना

स्पष्ट बात कहनी । प्रयोग—इस मनोवेग के मारे लोग सिर ऊंचा नहीं करते, मुंह नहीं दिखाते, सामने नहीं आते, साफ साफ कहते नहीं (चिंता० (१)—शुक्ल, ५६)

### सामने आना

प्रत्यक्ष होना; अनुभव में आना । प्रयोग—अपक्षा और वरा यह सब तुम्हारे सामने आयेगा (चित्र०—मग० वर्मा, १४)

### सामने की परोसी थाली छिन जाना

मिली हुई वस्तु का छिन जाना । प्रयोग—चाप पीकर लैप जलाया, किताब हाथ में उठाई, पढ़ने बैठे ही था कि सागन्तुक मिश्रों की मदली ने आ घेरा—अजी रहने भी दो इस गरमी में पढ़ने बैठे हो ? किताब कहीं भागी जाती है, दिन में पढ़ लेना । एक साहब उठे, लैप उठाकर दूर रख आए, दूसरे किताब छीनने लगे । थपों के भूखे के आगे



से भले आदमियों ने परसा हुआ पाल उठा लिया (पद्म पराग—पद्म० शर्मा, २७०)

### सामने दृष्टि करना

मुकाबले से विचलित न होना। प्रयोग—करें सिप हठि नौही डोठी। जब लनि त्रिअ देह नहि पीठी (पद०—जायसी, ५३/१४)

### सामने बोलना

बड़ों को प्रत्युत्तर देना। प्रयोग—महुं मनेह सकीन बन सनमुख कहौ न बंत (राम० (अ)—तुलसी, ६१९)

### सामने मुंह कर बात न करना

सामने न घाना। प्रयोग—तब लौ मुख करि सामुहें तुमसों कबहुं न भागिहौं (राधा० प्रंशा०—राधा० दास, ७०५)

### साथ से भागना

दूर-दूर रहना, डर से सामने न जाना। प्रयोग—मैं उनके साथ से भागता (मान० (१)—प्रेमचंद, ५०)

### साहस का साथ छोड़ना,—टूटना

साहस में कमी आना। प्रयोग—उनका साहस उनका साथ छोड़ने लगा (भिक्षा०—कौशिक, १३); जब कभी जस्मों को अकेला पाकर वह प्रेम प्रदर्शन की इच्छा करते तभी उनका साहस टूट जाता था (भिक्षा०—कौशिक, २५)

### साहस टूटना

दे० साहस का साथ छोड़ना

### सिंदूर लुटना

विधवा होना। प्रयोग—और तब सम्मान से जाते गिने नाम उनके, देश मूल की सालिमा है बची जिनके लुटे सिंदूर से (कुरु०—दिनकर, १)

(समा० मुहा०—सिंदूर पुछना,—मिटना)

सिंह की मूँछ पर हाथ फेरना,—के मुँह में आना,—के मुँह में उँगली देना,—के मुँह में सिर देना दुस्साहस का काम करना। प्रयोग—जनि जानहु गौरा सो अकेला। सिंह की मोछ हाथ को मेली (पद०—जायसी, ५३/१४); भेने हो सत्पावह का भंरा खड़ा किया, नाग की जगाया सिंह के मुँह में उँगली डाली (रंग० (२)—प्रेमचंद, ३५८); सुवल् चौधरी को खूब मालूम था कि जोतन सिंह से रार मचाना सिंह के मुँह में सिर देना है (मान० (२)—

प्रेमचंद, ३०); बच गया था भाग्य से, फिर सिंह के मुँह में आना चाहता है (स्कंद०—प्रसाद, १६३)

### सिंह के मुँह में आना

दे० सिंह की मूँछ पर हाथ फेरना

### सिंह के मुँह में उँगली देना

दे० सिंह की मूँछ पर हाथ फेरना

### सिंह के मुँह में सिर देना

दे० सिंह की मूँछ पर हाथ फेरना

### सिंहनाद करना

जोर से हुंकार करना। प्रयोग—पुनि पुनि सिपनाद करि भारी (राम० (बाल)—तुलसी, १९०)

### सिक्का जमाना

(१) रोब माना जाना। प्रयोग—अब बार नहीं पंच से बढ़कर भवां कोऊ। सिक्का य जम गया है कि भैया जो है सो है (भा० प्रंशा० (३)—भारतेन्दु, ८६१); तब तक इस देश के लोगों ने समझ लिया था कि अब श्रीमान पर यहाँ के जलवायु का पूरा सिक्का जम गया (गु० नि०—दा० मु० गु०, २००); उस थोड़ी देर की मूलकात में ही मेरे दिल पर उनका सिक्का जम गया (कर्म०—प्रेमचंद, ३१६); हसीना ने महफिल में अपना सिक्का जमा लिया था (ये कोठे०—अ० ना०, ११३)

(२) श्रांत होना।

(३) अधिकार स्थापित होना।

(समा० मुहा०—सिक्का चलना,—बैठना)

### सिक्का मनवाना या मानना

प्रभाव जमाना; श्रेष्ठता प्रमाणित होनी। प्रयोग—हिन्दी वालों को लुभ होना चाहिए कि उनका भी एक घादमी ऐसा है जिसने अपनी प्रतिभा का सिक्का फिल्मी देवताओं से मनवा लिया है (पेंतरे—अश्क, १४४); राजगुरु की ताकत का सिक्का सब को मानना पड़ा (कठ०—दे० स०, १८८); सचमुच स्वामी श्री श्रदानन्द का X X विरोधी तक सिक्का मान गये थे (पद्म पराग—पद्म० शर्मा, ७५)

(समा० मुहा०—सिक्का जमाना,—बैठाना)

### सिक्का-बंद

टकसाही, प्रामाणिक। प्रयोग—अब नसिह को भले ही कोई



सिक्के चन्द एक्टर न बहे XX पर जिस मस्ती और तन्मयता से उसने इस रोल में काम किया वह इस बात का प्रमाण है कि जन्मजात एक्टर भी होते हैं जिन्हें विशेष ट्रेनिंग की आवश्यकता नहीं पड़ती (कठ०—दे० स०, २१०-२११)

### सिटपिटा जाना

लज्जित या संकुचित हो जाना। प्रयोग—शोफर ने सिटपिटाकर जवाब दिया—हुजूर, वह किसी तरह मानती ही न थी, तो मैं क्या करता? (मान० (२)—प्रेमचंद, २३९); जब पादरी साहब को इसका पता चला तो बहुत सटपटाये (पद्म पराग—पद्म० शर्मा, ४४-४५)

### सिट्टी गुम होना,—भूलना, सिट्टी-पिट्टी गुम होना

सिटपिटा जाना; भयभीत हो जाना। प्रयोग—उनके सामने तो रोमांच हो हो आता है—पसीना सा सा जाता है। सिट्टी सी भूल जाती है (झांसी०—पृ० वर्मा, २२७); प्रायः उनके रंग मंच पर आते ही मेरी सिट्टी गुम हो जाती थी और अच्छी तरह याद किया हुआ संवाद भी सफाचट भूल जाया करता था (अपनी खबर—उग्र, ५६); पिता को अपनी ओर देखते देखकर उसकी सिट्टी पिट्टी गुम हो गई (बूँद०—अ० ना०, २८५); उसे देखते ही दोनों की सिट्टी भूल गई (लित्ती—प्रसाद, ४९)

### सिट्टी भूलना

#### दे० सिट्टी गुम होना

#### सिट्टी-पिट्टी गुम होना

#### दे० सिट्टी गुम होना

### सितम ढाना

अन्याय करना, ग़ज़ब करना। प्रयोग—उफ़, मैंने तुम पर कितने ज़ुल्म किये, कैसे-कैसे सितम डायें (पद्म पराग—पद्म० शर्मा, ३९९); किस तरह वे उन्हें जलायेंगी जो सितम बूढ़ बूढ़ कर डायें। जब हमों में न रह गई गरमी क्या करेगी गरम गरम घाहें (चुमते०—हरिऔध, ६३)

#### (समा० मुहा०—सितम करना)

### सितार का तार उतर जाना

पहले सी मस्ती या पानन्द न रह जाना। प्रयोग—कहाँ है गमक मूँदों में, तार उतरे सितार के हैं (मर्म०—हरिऔध, ७५)

सितारा चमकना,—जोरों पर होना,—बुलंद होना भारबोदय होना, उन्नति पर होना। प्रयोग—अच्छा पेंटर साहब। तब तो आपका सितारा चमक उठा—घोर रंग-बिरंगा (शेखर (२)—अज्ञेय, २१४); राय साहब का सितारा बुलंद था (गोदान—प्रेमचंद, ३१८); इस समय इन लोगों का सितारा चमका है (झांसी०—पृ० वर्मा, १५२); आपका सितारा जोरों पर है (पेंतरे—अशक, १५०); सदा ही न चमका किसी का सितारा (चुमते०—हरिऔध, १९१)

### सितारा जोरों पर होना

#### दे० सितारा चमकना

### सितारा डूबना,—फीका होना

बदकिस्मत होना। प्रयोग—हम मुसलमानों का सितारा देश में सदा के लिए डूब गया है (विप०—प्रेमी, ४८); पल पल अति फीके हो रहे हैं सितारे (प्रिय०—हरिऔध, ४३)

#### (समा० मुहा०—सितारा गर्दिश में होना)

### सितारा फीका होना

#### दे० सितारा डूबना

### सितारा बुलंद होना

#### दे० सितारा चमकना

### सिद्ध-हस्त होना

कुशल होना। प्रयोग—गर घाघर केनन डायल जामुसी किस्से लिखने में बड़े सिद्धहस्त है (सा० सी०—महा० द्वेदी, ६४)

### सिप्पा मिड़ना

(१) युक्ति सफल होनी। प्रयोग—यहाँ कैसे इसका सिप्पा भिड़ गया, कुछ समझ में नहीं आता (बूँद०—अ० ना०, २४६)

(२) रोब-जमना।

#### (समा० मुहा०—सिप्पा बैठना)

### सिमट जाना

लज्जा करनी। प्रयोग—वह जरा सिमट सी गई, फिर भी मुसकराते हुए उसने कहा—(इंस्टा०—मग० वर्मा, ७)

### सियापा चढ़ना

रोना, दुःख होना। प्रयोग—कम से कम उन पर यह निराशा का उन्नाद और जन्म भर का सियापा तो नहीं



बड़ा या कि हम गिरते ही जामेंगे (गुलेरी प्रथ (१)—गुलेरी, १०४-१०५)

### सिघार बोलना

एकदम मूनसान होना । प्रयोग—जिन नाट्यशालों में तिल रखने की जगह न मिलती थी, वहाँ सिघार बोल रहे थे (मान० (६)—प्रेमचंद, १४५)

### सिर

झिम्मे । प्रयोग—भोजन मेरे सिर कर रहा है, जो कुछ पाता है, सबे-पानी में उड़ा देता है (रंग० (२)—प्रेमचंद, २७७)

### सिर आना

(१) दायाँ होना, उतरदायी होना । प्रयोग—जब बेटा जन्माया तो उसकी रसा भी तुम्हारे ही सिर आई (राधा० प्रथा०—राधा०दास, २२५); आपको कुछ पता भी हो लड़कों का; आती घालिर मेरे सिर ही है न (शेखर (१)—अज्ञेय, ११७)

(२) भूल-प्रेत आदि का आलेख आना ।

(३) आवेग होना, प्रभाव होना ।

### सिर आसमान से लगना

बहुत गर्व होना । प्रयोग—जिन्हें भूईं माथ संगन तिन्हें लागे । धाने उठे घाउ सत भागा (पद०—जायसी, ४३१५)

### सिर उठाकर चलना

गर्व के साथ चलना । प्रयोग—जिस त्याग-कल्पना के चल पर वह सब स्त्रियों के सामने सिर उठाकर चलती थी, उस पर इतना कठोरापात ! (मान०—प्रेमचंद, १७१); परन्तु न उसके मन में वहाँ से भाग जाने की इच्छा थी और न मोलनी चाहते थे कि वह भूँछे तान के, सिर उठाकर चला जावे (मृग०—वृ० दर्मा, ४०३); वह शिवभागर की लड़कियों के समान साड़ी क्यों पहनती है ? वह सिर उठाकर क्यों चलती है (ब्रह्म०—दे० स०, ११२)

### सिर उठाना

(१) विरोध में सड़ा होना । प्रयोग—जिन्हें जिन्हें सीम उठाए घरती घरे जिलाट (पद०—जायसी, ४७१५); अगर मैंने कोई अनुचित काम किया होता तो आपको जूतियाँ लाकर भी सिर न उठाता अगर मैंने कोई अनुचित काम नहीं किया (मान० (१)—प्रेमचंद, २११); यही वह राजभक्त है x x

जिसके सामने सिर उठाने की बादशाह को भी मजाल नहीं (सु० सु०—सुदर्शन, २४); यदि मेरे घर में किसी घूस ने बहुत सिर उठा रक्खा हो और मैं उसके नष्ट करने के लिए बीस सहस्र मूँडा व्यय कर दालूँ तो मुझे कौन रोक सकता है ? (मा० प्र० (१)—भारतेंद्र, ६२४) (÷); सिर उठाने वाली जनता को ये जमींदार ताल्लुकेदार ही कुचल दिया करेंगे (झासी०—वृ० दर्मा, १३०); हमने सुझाया कि अनिष्ट सिर उठाए तो राज्य का पहला कर्तव्य है कि वह उस सिर को सीधा कर दे (जय०—जैनेन्द्र, १६५) (÷)

(२) ऊँधम मचाना । प्रयोग—देखिए प्रयोग (१) में (÷)

(३) सामने मुँह करना, प्रतिष्ठा के साथ खड़ा होना । प्रयोग—दोषी किसी के सामने क्या सिर उठा सकते कभी (जय०—गुप्त, ७५); सिर उठाना उन्हें पहाड़ हुआ । जो उठाते पहाड़ उंगली पर (चुमते०—हरिऔध, १९)

(४) तीव्र होना । प्रयोग—जब-जब उसकी याद सिर उठाली है, मुझे घपनी तरफ धंका होती है (सुनीता—जैनेन्द्र, १५)

### सिर उठाना मुश्किल होना,—उठाने की फुर्सत न मिलना

काम से ज़रा भी फुर्सत न मिलनी, काम में सदा व्यस्त रहना । प्रयोग—वह चाहता था इतना काम, इतना काम कि सिर उठाना मुश्किल हो जाय (शेखर (१)—अज्ञेय, २०५); दरजी को सिर उठाने की फुर्सत न थी (मान० (५)—प्रेमचंद, ११)

### सिर उठाने की फुर्सत न मिलना

#### दे० सिर उठाना मुश्किल होना

### सिर उठाना

न्याय करना । प्रयोग—पापी कौन ? मनुज ने उसका न्याय पुरानेवाला ? या कि न्याय खोजते बिघ्न का सीम उठाने वाला ? (कुरु०—दिनकर, ३७)

### सिर उतरना या उतारना

सिर धड़ से काट कर अलग किया जाना या करना । प्रयोग—कबीर निज घर प्रेम का, मारग प्रगम अगाध । मोल उतारि पग तनि धरै, सब निकटि प्रेम का स्वाद (कबीर प्रथा०—कबीर, ६९); ओहि के बार जीवनहि वारो । सिर उतारि नेबछावरि हारो (पद०—जायसी, २२४); सिर



सरोज निज करन्हि उतारो, पुनेउ अमित बार विपुरारी  
(राम० (लं)—तुलसी, ८८८); सिर उतार लेंगे। मजा क्या  
देने (परती०—रंगू, ४५७); कोई बदमाश हमारी ही बहु-  
बेटी को बुरी निगाह से देखे, तो बुरा लगेगा कि नहीं।  
उसके खून के प्यासे हो जायेंगे, घात पाएंगे तो सिर उतार  
लेंगे (रंग० (२)—प्रेमचंद, ४००)

### सिर ऊँचा करना या होना

(१) प्रतिष्ठा के साथ लोगों के बीच खड़े होना। प्रयोग—  
इस मनोवेग के मारे लोग सिर ऊँचा नहीं करते, मुह नहीं  
दिखाते (चित्ता० (१)—शुक्ल, ५६)

(२) प्रतिष्ठा होनी। प्रयोग—मोहल्ले वालियां कह रही  
थी कि इससे नगरे का सिर ऊँचा हुआ है (कठ०—दे०  
स०, ४९); एक तरे सामने ही सिर नवा सिर सबों के सब  
जगह ऊँचे रहे (बोल०—हरिऔध, ७); उसने देवियों का  
मस्तक ऊँचा कर दिया था (मान० (१)—प्रेमचंद, १९०)

### सिर ओढ़ लेना या ओढ़ाना

अपने ऊपर दायित्व ले लेना या देना। प्रयोग—बुजुर्गों मुझसे  
भड़ गयी है, यह मैंने पिछली बार ही कहा था, और जो  
तुम ओढ़ाओ सिर घाँलों पर, मगर पहले यह धपराध की  
कंबली भाड़ लूँ तब न (नदी०—अज्ञेय, २६५-२६६)

### सिर करना

(१) दायित्व देना, मढ़ देना। प्रयोग—आप मेरी राम  
मानें तो ऐसी औरत को किसी दूसरे के सिर कर द  
जमाने में पुनर्विवाह चल रहा है (बोने०—रा० रा०, २०३)  
(२) बाल संवारना; चोटी करना।

### सिर कलम करना

सिर काट लेना। प्रयोग—तो कलम अभी कर दीजे,  
हाजिर है मेरा यह सर (नूर०—मरु, ३१)

### सिर का बोझ उतरना,—हल्का होना

ऋण या किसी दायित्व से मुक्त होना। प्रयोग—इतने  
दिनों के परिश्रम के बाद सिर का बोझ कुछ हल्का होता  
(मान० (१)—प्रेमचंद, १७); उतर गया है सिर का बोझ  
(बुद्ध०—वक्त्र, १००)

(समा०—महा०—सिर का बोझ टलना)

### सिर का बोझ हल्का होना

दे० सिर का बोझ उतरना

### सिर की कसम

शपथ का एक रूप। प्रयोग—घन्ना लोभो, मेरे सिर की  
कसम, कि सबसे सुंदर खाल नहीं है? (मान० (१)—  
प्रेमचंद, २४३)

### सिर की बल्ला

अपनी मूर्खता। प्रयोग—बलायें धरने सिर की क्यों,  
दूसरों के सिर पर डालें? (मर्म०—हरिऔध, ८४)

### सिर कुचलना

पराजित करना, दबा देना। प्रयोग—इनका सिर कुचलने  
के लिए मैंने एक सबल सेना मीची अपने अधिकार में रखी  
है (विप०—प्रेमी, ५०); अरियों का सर है कुचल दिया मंत्री  
शौर्य दिखाया है (नूर०—मरु, ५५)

### सिर कूटना

बहुत परिश्रम या प्रयत्न करना, रोना-छटपटाना। प्रयोग—  
जाको जेता निरमया, ताको तेता होइ। रंती घटे न तिल  
बधे, जो सिर कूटे कोइ (कबीर ग्रंथा०—कबीर, ५८); टूट  
पड़ती ही रही सिर पर बिपद सिर पटकते कूटते ही हम  
रहे (बोल०—हरिऔध, १३)

### सिर के बल

(१) जादर से। प्रयोग—जो मिले जो खोलकर उनके  
यहां चाहता है जो कि सिर के बल चले (बोले०—हरिऔध,  
१२) (—); आने को तो सिर के बल धायेंगे (सु० सु०—  
सुदर्शन, १३); इस काम को धाय सिर के बल करते हैं  
(सा० सो०—महा० द्वितीय, १०२)

(२) तत्परता से। प्रयोग—नसीबहीन अपनी इन्द्रपुरी के  
निर्माण में सिर के बल लगा हुआ था (मुग०—पृ० वर्मा,  
३५७); तुम मुझे केवल उसका शुभ नाम और स्थान बता  
दो, मैं सिर के बल दोड़ी हुई उसके पास जाऊंगी (मान०  
(७)—प्रेमचंद, १६); सरकार ! खबर के पाते ही मैं सर के  
बल दोड़ा आया (नूर०—मरु, ९९); जीजी, न होना तुम्हीं  
बुला लेती। बुलाने पर सिर के बल जाती (परस—जैनेन्द्र,  
१३१); देखिए प्रयोग (१) में (—) भी।

### सिर के बल नीचे आना

बुरी तरह परास्त होना। प्रयोग—किन्तु जब देखते हैं कि  
जंगीलाट के मुकाबिले में आपने पटखनी खाई, सिर के बल  
नीचे आ रहे (गु० नि०—बा० मु० गु०, २१३)



सिर के बल होना

६६२

सिर बढ़ाना

**सिर के बल होना**

बहुत प्रयत्न करना। प्रयोग—लड़के पास होने के लिए सर के बल हो रहे हैं। (सुकुल०—निराला, १४)

**सिर के बाल सफेद होना**

उच्च बीतनी, बुढ़ापा आना। प्रयोग—मुझसे योग्य देविपा इसी कानपुर में मौजूद है, जिनके सिर के बाल महिला-समाज की सेवा करते-करते सफेद हो गये। (सु० सु०—सुदर्शन, १७७)

**सिर खपाना, सिर-खपी करना**

किसी बात को लेकर बहुत सोच विचार करना। प्रयोग—आगे द्विवेदी जी ने व्याकरण की जरूरत पर सिरखपी की है। (गु० नि०—बा० मु० गु०, ४३८); जा बूढ़े, जा; कहीं से एक पाच मदिरा मांगकर पी ले, और उसके आनंद में किसी जगह पड़ा रह। क्यों सिर खपाता है। (कामना—प्रसाद, ६८); इन भयड़ों में व्यर्थ सिर खपाती हो। (रंग० (१)—प्रेमचंद, ४३); जो नहीं तूम मानते यह बात हो तो नहीं हम सिर खपाना चाहते। (बोल०—हरिऔध, १३)

**सिर खाना**

व्यर्थ की-बकवास कर तंग करना। प्रयोग—उसने फिरपुछा तो उत्तर मिला—सिर मत खाओ। (शैलर (१)—अज्ञेय, ६०); तूम लोग झूठ ही मेरा सिर खा रही हो। (तितली—प्रसाद, १६२)

(२) तंग करना। प्रयोग—लेकिन रोड़-रोड़ रुपए के लिए मेरा सिर न खाया करो। (मर्म०—प्रेमचंद, ११)

**सिर खाली करना**

तर्क-वितर्क बातचीत करनी। प्रयोग—उसने कोई विवाद की चर्चा करता है तो अपने सिद्धान्त के मण्डन का व्याख्यान देने लग जाते हैं। बसो उन्हीं में सिर खाली कर। (गु० कहा०—गुलेरी, ११)

**सिर गंजा करना या करवाना**

खुब पिटाई करनी या करवानी। प्रयोग—कौन सिर गंजा करायेगा भला एक क्या दस बीस बंजा के मिले। (बोल०—हरिऔध, १६२)

**सिर गाड़ी पेर पहिया करना**

अधिक परिश्रम करना, खूब दोड़-धूप करना। प्रयोग—ये

पसिस्टेंट, जो सिर गाड़ी पेर पहिया किये सेट से मेकअप कम की उमीन नापा करते हैं  $\times \times$  उन्हें वेतन कितना मिलता है? (दूधगाध—दे० सा०, ३१४)

**सिर गंधना**

सिर के बाल सवारना। प्रयोग—जिह्वा सिर केस कुसुम भरि गूँदे कैसे भस्म चढ़ेंगे। (सु० सा०—सूर, ४३१०)

**सिर घूमना**

(१) घबराहट होनी। प्रयोग—सिर गया घूम बन गये वृत्त हम बात मुँह से नहीं निकल पाई। (चुमते०—हरिऔध, १६३)

(२) मर्यादा का उल्लंघन कर सामान्य नियम आदि से भिन्न रास्ता लेना—उईड या घुष्ट हो जाना। प्रयोग—घूम जायें क्यों कोई सर, लगे केसर की पिचकारी? (मर्म०—हरिऔध, ६८)

(३) सिर में चक्कर घाना।

**सिर चढ़ कर बोलना**

(१) गर्व करना, उद्धत होना। प्रयोग—साँचे मारे मारे बोलें। खली दुष्ट सिर चढ़ि चढ़ि बोलें। (भा० प्रश्ना० (१)—भारतेन्दु, ६७०)

(२) प्रभावपूर्ण होना।

**सिर चढ़ना**

घुष्ट होना। प्रयोग—कबहुं बालक मुँह न दीजिये, मुँह न दीजिये नारी। जोइ मन करे सोइ करि डारे, मुँह चढ़त है भारी। (सु० सा०—सूर, २१३६); दानव-दनुज बड़े महामूढ़ मुँह चढ़े, जीते लोकनाथ नाथ! बलनि भरम। (विनय०—सुलसी, २४९); मैं जितना ही तरह देता हूँ, उतना ही यह सिर चढ़ती जाती है। (गोदान—प्रेमचंद, १११); कनक उनका आदर जरूर करती थी परन्तु कनक के प्रभाव से ऊषा बहुत सिर चढ़ने लगी थी। (झुठा० (२)—यशपाल, ३१६)

**सिर चढ़ाना**

(१) आदर करना। प्रयोग—जो हम हाथ आवाते जानति लेती मौस चढ़ाई। (सु० सा०—सूर, ४४२९)

(२) अनुचित महत्व देकर उईड बनाना। प्रयोग—भली काम ते सुतहि पठावो बारे ही ते मुँह चढ़ावो। (सु० सा०—सूर, १००९); मैंने अब तक दब, दब कर ब्या उनको सिर



चड़ा लिया (परीक्षा०—श्री० दास, ११५); मुझे तो उन मर्दों पर क्रोध आता है, जो स्त्रियों को सिर चढ़ाते हैं (गवर्न—प्रेमचंद, ८४); दादा, इन कमीनों को बहुत सिर चढ़ा रखा है घापने (भूले०—भग० वर्मा, १९१); तुम्हीं ने उसे पढ़ा-लिखाकर इतना सिर चढ़ा रक्खा है (भोर०—जग० माधुर, १०५)

(३) सादर स्वीकार करना। प्रयोग—पाती लीन्ह लें सीस चढ़ावा (पद०—जायसी, २३/२१); अब तो सब सीस चढ़ाय लई जू कछू मन भाई मुकीजिये जू (घन० कवित्त—घना०, ४१); महाराज, तुमने भला मता किया, यह वचन हमने भी सिर चढ़ाय मान लिया (प्रेम सा०—ल० ला०, ९५)

### सिर छिपाने का स्थान

आश्रय का स्थान। प्रयोग—सिर छिपाने को भी तो स्थान न था, कहाँ ठोकरें खाती फिरती? (सु० सु०—सुदर्शन, ५१); पंडित जी दिन-रात सिर छिपा सकने लायक जगह को खोज में थे (झूठा० (१)—यशपाल, ४६२)

### सिर जमीन पर रखना या होना

अधीन होना, विलस्य होना। प्रयोग—जिन्ह भुईं मांथ गंगन तिन्ह लागा। थाने उठे आउ सब भागा (पद०—जायसी, ४३/१८); जिन्ह जिन्ह सीस उठाए धरती धरे लिवाट (पद०—जायसी, ४७/५)

### सिर जाना

(१) जिम्मे पड़ना। प्रयोग—यह नहीं कि उनके इलाके में अस्मियों के साथ कोई खास रियायत की जाती हो × × मगर यह सारी बदनामी मुक्तारों के सिर जाती थी (गोदान—प्रेमचंद, १२)

(२) सिर कटना। प्रयोग—पार ब्रह्म कूँ सेवतां, जे सिर जाइ त जाव (कबीर ग्रंथा०—कबीर, ७०)

### सिर भुंकना

लज्जित होना। प्रयोग—तुम्हारा सिर झुके, यह नहीं चाहती थी—किसी के घागे नहीं (नदी०—अज्ञेय, २३२)

### सिर झुका कर

अत्यंत विनय से। प्रयोग—सिर झुका कर नाक रगड़ता हूँ उस घपने बनानेवाले के सामने जिसने हम सब को बनाया (इंशा०—इंशा०, ८७)

### सिर झुका कर मान लेना

बिना किसी प्रतिवाद के स्वीकार कर लेना। प्रयोग—कृतज्ञता-प्रदर्शन और धन्यवाद-दान के अनन्तर मैं 'बहुमत' की आज्ञा के आगे सिर झुकाकर इस दुर्गम मार्ग में प्रवृत्त होता हूँ (पद्म पराग—पद्म० शर्मा, ३०५); क्या मां-बाप जो कहें उसको सिर झुकाकर मान लेना ही हम लोगों का धर्म नहीं है? (ठेठ०—हरिऔध, १९-२०)

### सिर झुकाना

(१) हार माननी, अधीनता माननी। प्रयोग—सौह दिष्टि कइ हेरि न जाई। जेई देला सो रहा सिर नाई (पद०—जायसी, १/१६); वहाँ कबीर की बुद्धि भी सिर झुकाती है (गु० नि०—वा०मु० गु०, ४४३); राजा कितना ही सबल हो; पर न्याय का घोर ख रखने के लिये कभी-कभी राजा को भी सिर झुकाना पड़ता है (रंग० (१)—प्रेमचंद, ४०४); स्वालिपर नगर को बौरान कर दिया, फिर भी स्वालिपर के ऊंचे किले ने न तो फाटक खोले घोर न सर झुकाया (मृग०—वृ० वर्मा, २)

(२) स्वीकार करना। प्रयोग—उनको इच्छाओं के आगे सिर झुकाना हमारा धर्म है (गवर्न—प्रेमचंद, २०१); मुझे भी पंथों की राय के आगे सिर झुकाना पड़ा (मेरे०—गुलाब०, २२)

(३) आदर करना। प्रयोग—बुद्धि के बिनाइकें, मुसाई ! कबि-नाइकें, सु लीजियो बनाइ कै कहत सिर नाइ कै (क० र०—सेनापति, २); यह कम आदर नहीं है कि तीन-तीन, चार-चार हुलवाले महत्तो भी उसके सामने सिर झुकाते हैं (गोदान—प्रेमचंद, ७); फ़ारस के विद्वानों ने भी अमीर ख़सरो की मुक्त कंठ से प्रशंसा की है, उनकी उस्तादी के सामने सिर झुकाया है (पद्म पराग—पद्म० शर्मा, १८९)

(४) लज्जा से गर्दन नीची करनी। प्रयोग—मूरदास वभू मुनि-मुनि बातें, रहे भूमि सिर नाए (सु०सा०—सूर, ४०६५); ललि जिनको मुख वीर सब सिर रहे नवाई (राधा० ग्रंथा०—राधा० दास, ६९८); जिसे लीग कुमारी जानते हैं उसके साथ यदि हम किसी देव मन्दिर के मार्ग पर भी देखे जाते हैं तो सिर झुका लेते हैं (चित्ता० (१)—शुक्ल, ६१); मानव-रक्त का प्रवाह संगीत का प्रवाह नहीं,



रस का प्रवाह नहीं—एक बीभत्स दृश्य है, जिसे देखकर आँखें मुँह फेर लेती हैं, हृदय सिर झुका लेता है (मान० (१)—प्रेमचंद, १८२)

(५) नमस्कार करना ।

### सिर ठोकना

पछताना । प्रयोग—मां मोहन बीबी ने मुना तो सिर ठोक लिया (भारती०—रा० रा०, ११६)

### सिर डालना

वाचित्व डालना । प्रयोग—प्रथम कुमल करि कपटु संकेला । सो उचाट सबके सिर मेला (राम० (अ)—तुलसी, ६५९)

### सिर तोड़ना

नाश करना । प्रयोग—तोड़ दंगे सिर बड़प्पन का न क्यों लड़ बड़ों के साथ जड़पन के संगे । है उन्हीं की चूक पत्थर क्या करे टूट जावे सिर छगर टककर लगे (बोल०—हरिऔध, ११)

### सिर देना

प्राण निष्काश करना—जान देनी । प्रयोग—प्रेम न खेतो मीपजै, प्रेम न हाटि चिकाइ । राजा परजा जिस रुचै, सिर दे सो ले जाइ (कबीर ग्रंथा०—कबीर, ७०); पेम मुनत मन भूलु न राजा । कठिन पेम सिर देइ तौ छाजा (पद०—जायसी, १६); मूरदास सिर देत मूरमा, मोइ जानै व्योहार (सु० सा०—सूर, ३८००)

### सिर धरना,—मानना

सादर स्वीकार करना । प्रयोग—मातु, पिता, पति, वधू, मुजन नहि, तिनहुँ की कहिबो सिर धारवो (सु० सा०—सूर, ४१८२); आपु गुप्त करि राजी मोकी, मैं आवमु सिर मान लियो (सु० सा०—सूर, २५५८); सादर सिय प्रसादु सिर धरेऊ (राम० (बाल)—तुलसी, २४४)

### सिर धुन कर पछताना

बहुत पछताना । प्रयोग—सभा माम, अमुरनि के आने, सिर धुनि-धुनि पछितायो (सु० सा०—सूर, ६७८); बीन्हें प्राकृत जन गुन गाना, सिर धुनि गिरा लगति पछिताना (राम० (बाल)—तुलसी, १८); निज उदार पंथ नहि सुभत सोस धुनत पछिताई (भा० ग्रंथा० (१)—भारतेन्दु, ४९१)

### सिर धुन-धुन कर

बहुत जोरों से । प्रयोग—आपको “भेदिया घमान” पसन्द

आई, यह सुनकर अपने भाग्य की जो है सो “विद्याल भारत” वाले सिर धुन-धुन कर सराहना कर रहे हैं (पट्टम० के पत्र—पट्टम० शर्मा, १८८)

### सिर धुनना

(१) पछताना । प्रयोग—मापी गुड़ में गड़ि रही, पंथ रही लपटाइ । ताली पीटे सिर धुनें, मीठे बोई माइ (कबीर ग्रंथा०—कबीर, ४८); जो जो सुनें धुनें सिर राजा प्रीति क होइ अगाह । अस गुनवंत नाहि भल सुअटा बाउर करिहै काहु (पद०—जायसी, ७९); जो जहं सुनइ धुनइ सिर सोई (राम० (अ)—तुलसी, ४१५); रस बिहीन जे छच्छर सुनही । ते छच्छर फिरि निज सिर धुनहीं (नंद० ग्रंथा०—नंद०, १०४); बारुनि के बस बलदाऊ भए सखा सब, संग लै को जैयें दुल्ल सोस धुनियत है (केशव०—केशव, २६) (÷); मोहन को बोल सुनें धुनें सोस, मन हो मैं धुनें सोच भारी गुनें गहि बूढ़े सोक है (घन० कवित्त—घना०, १९३); उन्हें चार बातें तुम कह दो या अपने ही सिर को धुन लो (बोल०—हरिऔध, १०८); पंडित जी को ‘मुनाजातेबेबा’ इतनी पसन्द आई कि मुग्ध हो गये, बार-बार पढ़ते ये धीर सिर धुनते थे (पट्टम पराग—पट्टम० शर्मा, ९२)

(२) प्रयत्न करना । प्रयोग—मुगल बादशाहों ने हजार सिर धुना पर उदयपुर के राणाओं ने बेहद तकलीफ उठाने पर भी अंत तक × × मुसलमानों को अपनी लड़की न दिया (भट्ट नि०—बा० भट्ट, ३०); देखिए प्रयोग (१) में (÷) भी ।

(३) किसी अप्रत्याशित बात से स्तब्ध रह जाना, गहरा प्रभाव होना । प्रयोग—मैं ही नहीं, सारी सभा सिर धुन रही थी (मान० (४)—प्रेमचंद, ११८)

### सिर न उठा सकना

(१) काम में व्यर्थ व्यस्त होना । प्रयोग—रामेश्वरी सबेरे से रसोई में घूमी तो शाम तक सिर न उठा सकी (मान० (४)—प्रेमचंद, १०२); जमादार का सर न उठा (चोटी०—निराला, ६५)

(२) लज्जा या आदर के मारे सिर झुका रहना । प्रयोग—तालाजी के सामने तो वह सिर तक नहीं उठाते, पान तक नहीं खाते, भला भगड़ा क्या करेंगे (गवन—प्रेमचंद, १५०-१५१)

(३) पूर्णतः पराजित हो जाना ।



### सिर नवाना

(१) सादर प्रणाम करना। प्रयोग—मेरा मन मुमिरे राम कू, मेरा मन रामहिं चाहि। अब मन रामहिं ह्वै रह्या, सोस नवाबो काहि (कबीर ग्रंथा०—कबीर, ५); पुरब बार होइ कै सिर नावा (पद०—जायसी, १७१); कंस मारि राजा करै, आपहु सिर नावै (सु० सा०—सुर, ४); एहि विधि निज मन दोष कहि सबहि बहुरि सिर नाइ (राम० (वाल)—तुलसी, ४१); धरि ई धन तब सोस नवाए (नंद० ग्रंथा०—नंद०, १५७); ताते प्रथमहि नाइका नाइक कहत बनाइ। जगति जयामति आपनी मु कबिन को सिर नाइ (जग०—पट्टमाकर, २); इत सुर-राज, उत ठाढ़े हैं असुर-राज, सोस दिगपाल, भुवपाल, नवावत हैं (क० र०—सेनापति, ५७); मनि लें तबहि चल्थो सिर नाथ। सत्राजित मन सोचतु जाय (प्रेम सा०—ल० ला०, १९५); एक तेरे सामने हो सिर नवा सिर सबों के सब जगह ऊंचे रहे (बोल०—हरिऔध, ७)

(२) लज्जा से सिर झुकाना। प्रयोग—कह्यो कहा कहिये अब तुम सों, तिन सिर नीचो नापो (सु० सा०—सुर, ४५०९); सब देव अदेवनि, अरु नर देवनि, निरलि निरलि सिर नाए (केशव० (२)—केशव, ३७७)

(३) विनम्रता पूर्वक कुछ करना। प्रयोग—कस सेवा सिर नाइ कै परन पालु बुधि सोइ (पद०—जायसी, ४४२); नरी किनरी आसुरी, सुरी रहति सिर नाइ (केशव० (१)—केशव, ९७); हाथ जोर सिर नाइ कै, दांत तरे तून राखि। परम नम्र ह्वै कहत हैं, दीन बचन छति भाखि (भा० ग्रंथा० (२)—भारतेन्दु, ६३३)

### सिर नीचा करना

(१) लज्जा से सिर झुकाना; लज्जा अनुभव करना। प्रयोग—ऐसी स्वरिणी को कौन गृहस्थ अपनी कन्या कह कर सिर नीचा करेगा (कंकाल—प्रसाद, ३६); मैं बिगड़ जाऊंगा तो बता से, पर किसी की धोस तो न सहेंगा, किसी के सामने सिर तो नीचा नहीं करता (प्रेमा०—प्रेमचंद, १२)

(२) लज्जित करना। प्रयोग—मेरा सिर घाज तक किसी ने नीचा नहीं किया था सो इसने मेरी इतनी बेइज्जती की (राधा० ग्रंथा०—राधा० दास, ६२०); बड़े-बड़ों का सिर

नीचा कर चुका हूँ, इन्हें मिटाते क्या देर लगती है (रंग० (१)—प्रेमचंद, २१९)

### सिर नीचा पड़ना या होना

लज्जित होना। प्रयोग—अभी परदा खोल दूँ तो सिर नीचा हो जाय (गोदान—प्रेमचंद, ३३); पेशवा के प्रधान सेनापति का सिर नीचा पड़ गया (झांसी०—पु० वर्मा, ४३५)

### सिर पकड़ कर बैठना

निश्चेष्ट बैठना, निष्क्रिय होना। प्रयोग—तो न हम बैठते पकड़ कर सिर पेट तुममें न जो कसर होती (चोखे०—हरिऔध, ११५)

### सिर पकड़ना

बहुत पछताना। प्रयोग—नीच सिर पर जब चढ़ा सोचा न तब सिर पकड़ते हो भला अब किस लिये (बोल०—हरिऔध, १०)

(समा० मूहा०—सिर पकड़ कर रोना)

### सिर पचाना, सिर-पच्ची करना

(१) दिमाग लगाना। प्रयोग—प्रस्तु, इस श्लोक के गढ़ने वाला मालूम होता है मार्ग की खोज के पीछे सिर पचाता हुआ श्रुतियों को उलट-पुलट कर देखा × × (भट्ट नि०—बा० भट्ट, २२); इतनी सिर-पच्ची करने के बाद भी उनको इतनी घाय न होती थी कि चिता-रहित जीवन बिता सकते (सु० सु०—सुदर्शन, ११९)

(२) तग करना।

### सिर पटकना

(१) बहुत परिश्रम या प्रयत्न करना। प्रयोग—यह मैं जानती थी कि मेरे इतने सिर पटकने पर भी तुम्हारे मन में प्रेम का उदय न होगा (मा० मा० (१)—कि० गो०, ९०); तिलक तो लाख सिर पटकने पर भी बाजार न जाते, पर इस वक्त अपने विवाह की खुशी थी, चले गए (रंग० (२)—प्रेमचंद, ४४); सुनील सिर पटक कर रह गया (कठ०—दे० स०, २०२); टूट पड़ती ही रहो सिर पर बिपद सिर पटकते कूटते हीड़म रहे (बोल०—हरिऔध, १३)

(२) पछताना। प्रयोग—देखिए प्रयोग (१) में (÷)।

### सिर पड़ना

(१) जिम्मे पड़ना। प्रयोग—देखिएत परी तिहारे माथे, यह हांसी दुख दोऊ (सु० सा०—सुर, ४४२९)



(२) हिले में घाना, भुगतना। प्रयोग—जो पहले अपने सिर परई। सो का काहु के बरहरि करई (पद०—जायसी, २१५); जान बूझि मैं यह कुत कीन्हो, सो मेरे सोस पर्यो (सु० सा०—सूर, २७१६); जब अपने सिर पड़ेगी तब इनको होना चायेगा (मान० (१)—प्रेमचंद, १५४); पक गया जी, नाक में दम हो गया तुम न सुधरे, सिर पड़ी हमने सही (चोखे०—हरिऔध, ३८)

### सिर पर आ पड़ना

(१) दापित्व अपने ऊपर आ पड़ना। प्रयोग—हो, दुर्भाग्य-वश यह काम मेरे ही सिर पड़ा (रंग० (१)—प्रेमचंद, ३३६); इस बीच में एक और काम सिर पर आ पड़ा है (पट्टम० के पत्र—पट्टम० शर्मा, १२१); अब जब सिर पर आ गई है, तब राजा कुछ न कुछ अवश्य करेगा (मृग०—वृ० वर्मा, ३४५) (÷); खैर, अब जो सिर पर आ पड़ी है, निपटा जायेगा (मूले०—मग० वर्मा, ४७७)

(२) भोगने को जो आ पड़ना। प्रयोग—मति भूलि गई तब, सोच करत अब, जब सिर ऊपर आई (केशव०—केशव, ३०९); आप सही जो सिर पर आई होसी है भई होसी है (गु० नि०—बा० मु० गु०, ७१७); देखिए प्रयोग (१) में (÷) भी।

### सिर पर आ पहुँचना या आना

(१) बहुत समीप आ पहुँचना। प्रयोग—पाछे कछु न होइया जो सिर पर आब काल (कबीर ग्रंथा०—कबीर, २५१); आइ गयो सिर पे चड़ाप मैं बान निज बिरहिन दोरि दोरि प्रानन सम्हारो हाव (भा० ग्रंथा० (२)—भारतेन्दु, १६४); पस सिर पर आ गया, कम्मल के बिना द्वार में रात को वह किसी तरह नहीं सो सकता (मान० (१)—प्रेमचंद, १४६) (÷)

(२) बहुत थोड़ा समय रह जाना। प्रयोग—सिर पर आकर जब हुआ उपस्थित रहा है हिल उठा सोच परिणाम तुम्हारा मन है (चक्र०—दिनकर, २७८); देखिए प्रयोग (१) में (÷) भी।

### सिर पर आफत आना

विपत्ति पड़नी। प्रयोग—बेशक वह ऐसी खबरें नहीं छावते, ऐसी टिप्पणियाँ नहीं करते कि सिर पर आफत आ जाय (गोदान—प्रेमचंद, १७५)

### सिर पर भारा लेना

सारा शरीर चिरका देना। प्रयोग—सिर करबत तन करसी लै लै बहुत सोभे तेहि घात (पद०—जायसी, १०१६)

### सिर पर आसमान उठा लेना

(१) बहुत गर्व करना। प्रयोग—आसमा जिसने उठा सर पर लिया वह उठाया चार कंधों पर गया (मोल०—हरिऔध, १४६)

(२) बहुत चीखना-चिल्लाना। प्रयोग—उसके स्वर ने फिर सिर पर आसमान उठा लिया (बूट०—अ० ना०, २४)

### सिर पर उठा लेना

(१) किसी काम की जिम्मेदारी अपने ऊपर लेना। प्रयोग—डोली से उतरते ही सारा काम सिर पर उठा लिया (गोदान—प्रेमचंद, २७)

(२) बहुत होहल्ला करना; लड़ाई-भगड़ा करना। प्रयोग—देहातियों की आपत्त होती है कि वह जरा सी बात के लिए मुहल्ले भर को सिर पर पर उठा लेते हैं (गु० नि०—बा० मु० गु०, ४५२); मगर साहब जो बिगड़ा है तो सारा दफ्तर सिर पर उठा लिया है (मोर०—जग० माधुर, ७०)

(३) बहुत आदर करना। प्रयोग—नहीं भंते, जब मैं उनसे कहूँगा कि आप राजकुमार हैं और सम्राट से बात करके धारहे हैं, तो वे आपको सिर पर उठा लेंगे (दशालो०—चतुर०, १८९)

### सिर पर एक भी बाल न बचना

खूब दुर्गति होनी। प्रयोग—बार जो कहीं वहाँ खाली हाथों गए तो वह बे भाव की पड़गी कि सर में एक बाल भी न रहने पायेगा (राधा० ग्रंथा०—राधा० दास, ७५५-७५६)

### सिर पर कफन बांधना

मरने तक को तैयार होना। प्रयोग—इस बीच में चम्पानेर के राजपूत सिर पर कफन बांध कर गुजरात के बंधरों से मरते-मिटते लोहा लेते रहे (मृग०—वृ० वर्मा, ९०); प्राणिक वह जो सिर पे कफन बांधे फिरे, यह क्या कि आगिकी भी हो रही है, रिमचं नी घोर नोकरी भी चल रही है (नदी०—अज्ञेय, १७२)

### सिर पर खड़ा होना

बहुत समीप आना। प्रयोग—अंम से बेरी सिर पर ठावे,



पर हाथि कहा बिकाड (कबीर ग्रंथा०—कबीर, १९४); यदि वे अंधे नहीं हैं तो उन्हें अपने सिर पर खड़ी विपत्ति दिखाई देनी चाहिए (भूष०—प्रसाद, ३५-३६); मैं तो लुट गया भैया, क्या सिर खड़ा है, कैसे क्या होगा ? (मान० (७)—प्रेमचंद, ६३)

### सिर पर खेलना

जान तक की परवाह न करनी । प्रयोग—तेरा मुंह है नहीं कि कायर सिर से नू खेलेंगा ? (मर्म०—हरिऔध, १४२)

### सिर पर गुजरना

सहना । प्रयोग—आश्चर्य है कि आपके सिर पर जो कुछ गुजरी, उसके कारण भी नहीं बता सकते (रंग० (१)—प्रेमचंद, २०७-२०८)

### सिर पर घड़ा फोड़ना

दोष देना । प्रयोग—तो कह, किस तुम्हारे के माथे वह अपना घट फोड़ा ? (यश०—गुप्त, ६५)

### सिर पर चढ़कर नाचना

(१) हावी होना । प्रयोग—ताकें मूढ़ चड़ी नाचति है, मोचति मोच नटी (सू० सा०—सूर, ९८)

(२) मंहुलगा होना ।

### सिर पर चढ़ना

(१) महारा प्रभाव होना । प्रयोग—चाड़ चढ़त चढ़त अति लाड़िलो हूँ, कैसें गर्न बर्न जेइव ओट पाय तब के (घन० कवित्त—घना०, १३७); हाँ, रात देर तक वह तखवीर सिर पर चड़ी रही (सुनीता—जैनेन्द्र, ९३)

(२) उईंड बनना । प्रयोग—त्यों त्यों नीच चढ़त सिर ऊपर ज्यों ज्यों सोल बस डोल दई है (विनय०—तुलसी, १३९); नीच सिर पर जब चड़ा मोचा न तब सिर पकड़ते हो भला अब किस लिये (बोल०—हरिऔध, १०); रोज-ब-रोज ये लोग सिर चढ़ते चले जाते हैं (रेशमी०—राम० वर्मा, ८३)

(३) उधार बाकी होना । प्रयोग—अभी बनिये के ५०) सिर पर चढ़े हैं (मान० (१)—प्रेमचंद, ६८)

(४) जिम्मे होना । प्रयोग—मेरी हत्या का पाप तुम्हारे सिर चड़ेगा (मा० मा० (१)—कि० गो०, ३६)

(५) मान मिलना ।

### सिर पर चढ़ाना

बहुत महत्व देकर घादल बिगाड़नी । प्रयोग—तुम्हीं ने रांड को मूढ़ पर चड़ा रखा था (गोदान—प्रेमचंद, २४७)

### सिर पर छाया होना

कोई महारा या साधुग होना । प्रयोग—रहे मग मुम्हारे छाया हम सोम बिराजन (राधा० ग्रंथा०—राधा० दास, ४); फिर जिसकी आंखों की पुतली, लकड़ी जिस बूढ़ा के कर की छिनेगी न कैसे वह कलये, छाया रही न जिसके सिर की (वीदेही०—हरिऔध, ७०)

### सिर पर जादू डालना

जादू के प्रभाव से वश में करना । प्रयोग—राधी काहि दिष्टि बंध खेला । सभा मोहि चेटक सिर मेला (पद०—जायसी, ३८३)

### सिर पर जाना

जिम्मे पड़ना । प्रयोग—जाती है मेरे सिर; सानो-सानो मैं कल, गाव-गैस मैं दुई, दूध लेकर बाजार में जाऊ (गोदान—प्रेमचंद, २४)

### सिर पर जूता बजना

जूते से मार पड़नी । प्रयोग—सोलुप भन गृहपमु ज्यों जह तहें सिर पदजान बजै । तदति अधम बिचरत तेहि मारग कबहु न मूढ़ लजै (विनय०—तुलसी, ८९)

### सिर पर टूट पड़ना

(१) घातमण कर देना । प्रयोग—धर्म के हीन-भोग हो जाने से, वर्ग के विगड़ जाने से ही अत्याचारी सिर पर टूट पड़े हैं (सुा०—सू० वर्मा, ३२)

(२) घटित होना । प्रयोग—यह बख्शाल, यह विपत्ति का का पहाड़ घबानक कैसे सिर पर टूट पड़ा (पदम पराग—पदम० शर्मा, ३२)

### सिर पर ठीकरा फोड़ना

दोषी ठहराना । प्रयोग—सिर गवा घूम किस लिये इतना ठीकरा फोड़ दूसरों के सिर (बोल०—हरिऔध, ९)

### सिर पर डालना

(१) किसी पर दायित्व देना । प्रयोग—बलायें अपने सिर की क्यों दूसरों के सिर पर डालें ? (मर्म०—हरिऔध, ८४); दोनों ने सारी जिम्मेदारी उन्हीं के सिर पर डाल दी और खुद बिल्कुल घलम हो गये (गधन—प्रेमचंद, ३१२) (÷)

(२) किसी बात के लिए दूसरे को जिम्मेदार बनाना । प्रयोग—अपनी गुन घोरनि सिर डारत (सू० सा०—सूर, २२०४); देखिए प्रयोग (१) में (÷) भी ।



सिर पर धूल डालना

६६८

सिर पर पांच या पैर रख कर भागना

(३) जाड़ करना। प्रयोग—पड़े जानति सूर के प्रभु, सिर गए कछु डारि (सु० सा०—सूर, २२४५)

**सिर पर धूल डालना**

पछुताना; सिर धतना। प्रयोग—इस लज्जाई समुद्र कहें खेले। नाज मयंद धरि सिर पेरे (पद०—जायसी, ४११८)

**सिर पर धूल लगाना**

चरण-रत्न लेनी; आदर करना। प्रयोग—द्वार मे पांच चूम लेवेंगे धूल सिर पर लजक लगा लेगे (चुमते०—हरिऔध, ५)

**सिर पर नंगी तलवार लटकना**

हर समय संकट की सहायता करी रहनी। प्रयोग—इन पर नंगी यह है कि इमेला सिर पर नंगी तलवार लटकती रहती है (मान० (१)—प्रेमचंद, २८२)

**सिर पर न होना**

नियंत्रण या देखरेख करने वाला कोई न होना। प्रयोग—परम स्वतंत्र न सिर पर कोई (राम०—बाला—तुलसी, १४९); मो सिर पर नहीं और आप भी उतना ध्यान नहीं दे सकते (चित्तन—अक, २२९)

**सिर पर नाचना**

(१) पंजाब डालना। प्रयोग—राखन मो नृप जान न जानी, माया विषम मोस पर नाची (सु० सा०—सूर, १८); मोह नव पाप आइ सिर नाच्यो सुविषय के छल हार्यो (राधा० प्रंशा०—राधा० दास, १२)

(२) निकट जाना। प्रयोग—क्यों नरेम बाज फर सोची तिय मिस मीचू मोस पर नाची (राम० (अ)—तुलसी, ४०४)

**सिर पर पगड़ी बंधना**

दाविस्व या गौरव मिलना। प्रयोग—घाप तन देखिये न देखो करतुति मेरी अपम उधारिखे की तेरे सिर पाग रे (क० र०—सेनापति १२१); उसके सिर पर घर की सरदाही पगड़ी बांधी गई थी—परिवार का नेता या वह (अपनी खबर—उग्र, २५)

**सिर पर पटिया पारना**

दुःखार की ओर उन्मुख कर लेना—प्रेम में फँसाना। प्रयोग—वे मेरे सिर पटिया पारे, कंधा काहि उड़ाई (सु० सा०—सूर, ४०४४)

**सिर पर पड़ना,—बीतना**

(१) जिम्मे पड़ना। प्रयोग—महु एहि खोज होइ तिसि चाई। तुरे रोग हरि माखे जाई (पद०—जायसी, ८१४); करहि मयै, सिर मेरे ही किरि परे घनेनी (विनय०—तुलसी, १४७)

(२) खपने ऊपर पड़ना, गुजरना। प्रयोग—जो सिर परे सरे मो गहें (पद०—जायसी, ४७८); जो मत मुनि हम पाइ कौताई। मो निवान हम माखें चाई (पद०—जायसी ५११४); बीती है मेरे सिर। मैं ऐसी कच्ची नहीं कि थोड़े में बहुत उबल पड़ू (भा० प्रंशा० (१)—भारतेन्दु, ४४४); जो सिर पर पड़ता है वह सहना ही होता है (राधा० प्रंशा०—राधा० दास, ६१४); कौन जानता है बिदेश में सिर पर कौपी आवेगी (नूर०—भक्त, ८); जब सिर पर पड़ेगी तब मालूम होगा बेटा, अभी जो चाहे मो कह लो (गोदान—प्रेमचंद १७); अरे बेटा, तुम क्या जानो इन बातों को, मेरे सिर तो बीत चुकी है, प्राण नहीं में समाया हुआ है (मान० (३)—प्रेमचंद, १०९); तभी क्या मालूम कि जब राज-परिवार में कोई उत्सव या सत्कार होता है तो हम गरीबों के सिर पर क्या बोतली है (विश०—प्रेमी, २०)

**सिर पर पहाड़ गिर पड़ना,—टूट पड़ना**

एकाएक घोर विपत्ति का घा पड़ना। प्रयोग—वेगम के सिर पर मूसीबतों का पहाड़ ही टूट पड़ा (नूर०—भक्त १६); उसके सिर पर एक पहाड़-सा टूट पड़ा (सैश०—प्रेमचंद, २२); क्या करे औ किसे पुकारे क्या। जब कि सिर पर पहाड़ टूट पड़े (बोल०—हरिऔध, ८); तो पड़े क्यों पहाड़ सिर पर सिर नह अंगर दुख रहे मुन्नी के हों (चुमते०—हरिऔध, १०४)

**सिर पर पहाड़ टूट पड़ना**

दे० सिर पर पहाड़ गिर पड़ना

**सिर पर पांच देना**

सब को खपने मोचे करके रखना, तुच्छ समझना, उपेक्षा करनी। प्रयोग—बिहरिहें जग-सिर पे दे पांच (भा० प्रं० (२)—भारतेन्दु, ५९३)

**सिर पर पांच या पैर रख कर भागना**

चबराकर भाग जाना। प्रयोग—डाकू सिर पर पैर रखकर



इधर-उधर भागे (झांसी०—वृ०वर्मा, २८२); तम चाही तो बड़ कल ही सिर पर पैर रखकर भाग जाय (परतो०—रेणु, ४०); जूगनू बिल्ली की तरह कमरे से निकली और सिर पर पांव रख कर भागी (मान० (१)—प्रेमचंद, २७६)

### सिर पर पैर रखना

(१) पराजित करना, विवश करना। प्रयोग—तदवि आपु जीती पुरी तदवि धारि कुशलत। जब खी जिय चाह्यो रह्यो धारि सोव पै लात (भा० ग्रं० (१)—भारतेन्दु, १८६)

(२) उपेक्षा करनी।

### सिर पर बला आना

अपने ऊपर कोई संभट आ पड़नी। प्रयोग—जो फंसाते है बला में और को क्यों भला आती न उनके सिर बला (बोल०—हरिऔध, १०)

### सिर पर बिजली गिरना

गजब होना। प्रयोग—मुभागी के काटो तो बदन में खून नहीं। मालूम हुआ, सिर पर बिजली गिर पड़ी (रंग० (१)—प्रेमचंद, ३९०)

### सिर पर बिठाना

(१) बहुत आदर करना। प्रयोग—लेकिन घामे चलकर इन लोगों को सिर पर भी नहीं बिठलाना है (झांसी०—वृ०वर्मा, ३८२); नीच को तो बिठा लिया सिर पर। ऊंच की चोटियां गईं नोची (चुभते०—हरिऔध, ६२)

(२) सबसे खेड बताना। प्रयोग—भारतवर्ष की जल-वायु में ही कुछ ऐसा गुण है कि यहां के साधक और संतित समस्त प्रचलित पौराणिक परम्परा को स्वीकार करते हैं × × और अपने उपास्यदेव को सबके सिर पर बैठा देते हैं (कबीर—ह० प० द्वि०, ७१)

(३) सिर चढ़ाना।

### सिर पर बीतना

दे० सिर पर पड़ना

### सिर पर बैठा होना

अभिभावक होना; रक्षक होना। प्रयोग—जसुर कंस घप-वस बिनासन, सिर ऊपर बैठे रखवारे (सु० सा०—सूर, ६२८)

### सिर पर बोझ या भार लेना या होना

वापिस्त्र लेना। प्रयोग—जा सिरि तीनि लोक को भारा, सो क्या न करे जन की प्रतिपारा (कबीर ग्रंथा०—कबीर, १२३); तह-तह रह्यो राज करी तह-तह, लेट्टू कोटि सिर भार (सु० सा०—सूर, ४२७७); क्या न सिर पर बोझ भारी है लडा क्या न सरदन पर गया झुझा रखा (बोल०—हरिऔध १३५)

### सिर पर भूत चढ़ना,—सवार होना

(१) किसी काम की जबरदस्त धुन लगनी। प्रयोग—कभी न उतरे उसका नशा जिसके सिर पर इसका भूत चढ़े (भा० ग्रंथा० (२)—भारतेन्दु, ५६५); सब स्थिति इस समय यह है कि बरजोर सिंह के सिर पर भूत सवार हो गया है, इस नालिश का सम्मन पाकर (मूले०—भा०वर्मा, ४८); भूत सिर पर है बड़प्पन का चडा (चुभते०—हरिऔध, ११५); सिर पर सन्देह का भूत सवार था ही, लगा विचार की सीधी-टेढ़ी गलियां झांकने (सुकुल०—निराला, ७६)

(२) शरारत की नीयत होनी। प्रयोग—कर उतारा हम उतारेसे उसे भूत सिर पर जो किसी के चढ़ गया (बोल०—हरिऔध, १५); धर्म नहीं शरारत है। उसके सिर पर जो भूत चडा हुआ है उसका उतार मेरे पास है (प्रेमा०—प्रेमचंद, १६)

### सिर पर भूत सवार होना

दे० सिर पर भूत चढ़ना

### सिर पर मंडराना

(१) किसी विपत्ति का चारों ओर से घेरना। प्रयोग—जो कुछ कमजोरी था गयी थी, वह संकट को सिर पर मंडराने देखकर भाग गई थी (मान० (७)—प्रेमचंद, २७); मूर्ख ! तेरा नाश तेरे सिर मंडरा रहा है (देवकी०—रा० रा०, ७६)

(२) हर समय माथ रहना।

### सिर पर मुसीबतों का टोकरा पटक देना

बहुत बड़ी मुसीबत में खाल देना। प्रयोग—मुझे क्या मालूम था कि आप मेरे सिर पर वह मुसीबतों की टोकरी पटक देंगे ? (गबन—प्रेमचंद, २०)



### सिर पर मोत खेलना,—मंडराना

ऐसी खतरनाक स्थिति में होना जिसमें मृत्यु का भय हो।  
प्रयोग—पूरे, तुम्हारे सिर पर मोत खेल रही है (रंग० (२)  
प्रेमचंद, २५४); तब भला क्या मन मनाने तुम चले जबकि  
सिर पर मोत मंडराने लगी (बोल०—हरिऔध, ११)

### सिर पर मोत मंडराना दे० सिर पर मोत खेलना

#### सिर पर लेना

(१) जिम्मे लेना, अपने ऊपर लेना। प्रयोग—कबीर मन  
फुलवा फिर, करता हूँ मैं धर्म कोटि कम सिर ले चढ़वा,  
चेत न देवे धर्म (कबीर ग्रंथा०—कबीर, ३८); क्या मैं झूठी  
झण्ड खाने का पाप अपने माथे पर लूँ ? (भा० ग्रंथा० (१)  
—भारतेन्दु, ६३१); मेरे ही कुकरम से भगवान का यह कोप  
आया है, घोर मैं ही अपने माथे पर उसे लूँगा (मान० (२)  
—प्रेमचंद, ११३); अब लड़की के विवाह का सब सिर पर  
लेने के लिए क्या आते (झुआ० (२)—यशपाल, ४६६)

(२) सहन करना। प्रयोग—कंपकंपते हुए जाड़े और  
अरब की पिघलानेवाली प्रवण्ड धूपें, सिर पर ली (पद्म  
पराग—पद्म० शर्मा, १७२)

#### सिर पर चख गिरना

(१) बहुत बड़ी मुसीबत पड़नी। प्रयोग—क्यों न प्राण  
बह देगा जिसके सिर पर चख पड़े ? (मर्म०—हरिऔध,  
१२३)

(२) अप्रत्याशित घटना का हो जाना।

#### सिर पर विपत्ति का चितान तनना

बहुत मुसीबतों का घेरे रहना। प्रयोग—धीरे होते कभी  
घबोरे नहीं क्यों न सिर पर विपत्ति चितान तने (चुभते०—  
हरिऔध, ३७)

#### सिर पर सफलता का मुकुट चढ़ना

सफलता मिलनी। प्रयोग—चाहे इन्होंने समुद्र पर लोके  
झालने का यत्न किया हो, पर बीर वे ही नहीं हैं जिनके  
सिर पर सफलता का मुकुट चढ़ता है; वे भी बीर होते हैं  
जो भगदते भगदते मर और प्रतिकूल विधि के पादपीठ  
बन जाते हैं (गुलेरी ग्रंथा० (१)—गुलेरी, २७८)

### सिर पर सवार होना

(१) तगावा करना या होना। प्रयोग—उस घठनी को  
ईमान की तरह बचाती चली जाती थी इसी ईद के लिए,  
लेकिन कल खालन सिर पर सवार हो गयी तो क्या  
करती ? (मान० (१)—प्रेमचंद, २५); बाण की मुहिम सिर  
पर सवार है और सभी उस ओर बढ़ना भी शुरू नहीं  
किया (पद्म० के पत्र—पद्म० शर्मा, १३)

(२) धुन लगनी। प्रयोग—हो भले कितनिये करें भूले,  
हो न सिर पर सवार नादानों (मर्म०—हरिऔध, ६६);  
शगून के रूप कहां से आयेगे, यही चिन्ता उसके सिर पर  
सवार थी (गोदान—प्रेमचंद, १६)

(३) पीछे लगना। प्रयोग—मेरे लिए अब यही अंतिम  
उदास है कि मैं उस सैतान के सिर पर सवार हो जाऊँ  
और उससे मंह-दर-मुंह वाले करके इस समस्या की तह  
तक पहुँचने की चेष्टा करूँ (मान० (२)—प्रेमचंद, २०)

(४) जुटे रहना, निकट होना। प्रयोग—एक-न-एक मेह-  
मान रोज यमराज की भांति सिर पर सवार रहते हैं  
(मान० (१)—प्रेमचंद, ३११); अन्नदाता और कुछ कहना  
चाहते थे, पर नई रानी सिर पर सवार थी (गोली—  
चतुर्ग, २५९); रोज कोई न कोई चिन्ता सिर पर सवार  
है (रेशमी०—राम० वर्मा, ८०)

(५) दाबित्व होना। प्रयोग—कजें सिर पर सवार रहेगा  
तो उसकी चिन्ता हाथ रोके रहेगी (गवन—प्रेमचंद, ५६)

### सिर पर सहना

अपने ऊपर सहना। प्रयोग—जो दुख कठिन न सहा  
पहारू। सो अंगवा मानुस सिर भाह (पद०—जायसी,  
४७८)

### सिर पर साया होना

शमिभावकत्व होना। प्रयोग—ईदवर से शायंता है कि  
हम लोगों के सिर पर आपका साया अभी बहुत दिनों बना  
रहे (पद्म० के पत्र—पद्म० शर्मा, २४१)

### सिर पर सुरखाब का पर लगना

कोई विदेष्टता होनी। प्रयोग—अमीर के सर पर और  
क्या सुरखाब का पर होता है, जो कोई काम न करे वही  
अमीर (भा० ग्रंथा० (१)—भारतेन्दु, ४८१)



सिर पर से छाया उठ जाना

७०१

सिर पीट-पीट कर रोना

### सिर पर से छाया उठ जाना

कोई सहायक या अभिभावक न होना। प्रयोग—दोनों बच्चे ही थे, जब उनके सिर से उनके पिता की छाया उठ गई थी (चेतन—अशक, २१५)

(समा० महा०—सिर पर से साया उठ जाना)

### सिर पर सेहरा बांधना

दायित्व देना। प्रयोग—सीस पर तुम्हारे तब सेहरा समर का बांध भेजा है फलहवाच होने की दक्षिण में (पाँ०—निराला, २२१-२२२)

### सिर पर सेहरा होना

(१) प्रशंसित होना। प्रयोग—सिर लिये हथेली पर जो उसके सिर सेहरा धरना है (नू०—भक्त, ५५)

(२) प्रधान होना।

### सिर पर हाथ फेरना

(१) आशीर्वाद देना; कृपा करनी; शरण में लेना।

प्रयोग—बेतरह फेर में पड़े हम हैं। फेरते हाथ क्यों नहीं सिर पर (चुमते०—हरिऔध, ३)

(२) धोखा देना या बहकाना।

(३) प्रेम दिखाना।

### सिर पर हाथ रखकर रोना

अपने भाग्य को रोना। प्रयोग—सृष्टि को कम संग जानि बिधि बावरो मूढ़ पै हाथ धरि बहुत रोगो (मा० प्रथा० (२)—मारतेन्दु, ४३७); न मानोगी, तो सिर पर हाथ धर कर रोवेगी भी (मा—कौशिक, ५२); मर जाऊँगा तो आप सिर पर हाथ धर कर रोयेंगे (गोदान—प्रेमचंद, २५)

### सिर पर हाथ रखना

सहायक होना; छत्रछाया होनी। प्रयोग—कबीर तू काहे डरै सिर परि हरि का हाथ (कबीर प्रथा०—कबीर, ५८); तो फल सिद्धि होइ मुरज, गुरु मायें हाथ धरै (सू० सा०—सूर, ४३२६); मेले चरन चारु चारुपु सुत मायें हाथ दिवायो (गीता० (वा)—तुलसी, १७); तुमने इनके सिर हाथ न रखा होता तो आज इनकी न जाने क्या गति होती (मान० (१)—प्रेमचंद, ११); हाथ रखिये अनाथ के सिर पर कान पर हाथ आप मत रखिये (चुमते०—हरिऔध, ११५); सिर पर पिता का हाथ रहे (दूधगाछ—दे० स०, ४५)

### सिर पर होना

(१) निकट होना। प्रयोग—परम प्रबुद्ध रिपु सीस पर तबपि सोच न पास (राम० (लं)—तुलसी, ८७१); मुकुन्दमा दायर करने के लिए अभी काफी बक्त है लेकिन यह एतेकजान सिर पर आ गया है और मुझे सब से फिक्र यही है (गोदान—प्रेमचंद, २३८); परीक्षा सिर पर है, कहीं जा ही नहीं पायी हूँ (छूटा० (१)—यशपाल, ९२)

(२) सहायक होना। प्रयोग—जब क्या सोचें आइ बनीं सिर परि साहिब राम धनी (कबीर प्रथा०—कबीर, ११८); सहज मूर कपि भालु सब पुनि सिर पर प्रभु राम (राम० (सु)—तुलसी, ८५१); काहू कौ न डर, सेनापति ही भिडर सदा, जाके सिर ऊपर नु माई राम तोषी है (क० र०—सेनापति, ८९); मुझे मालूम हो कि मैं भी स्त्री हूँ, मेरे सिर पर भी कोई है (कर्म०—प्रेमचंद, १५८)

(३) ऊपर होना; जिसके वश में हम हों। प्रयोग—तब बिततर जिय सहा न तोरें। पानसाहि है सिर पर मोरें (पद०—जायसी, ४७६); दुर्भाग्यवश इस समय जो व्यवस्था हमारे सिर पर है, उसमें इस बात की छूट है (अशोक०—ह० प्र० द्वि०, १५७)

(४) मान्य होना। प्रयोग—तौ यह बचन तौ मायें मोरें। सेवा करी ठाढ़ कर जोरे (पद०—जायसी, ४४५); सम्राट की आज्ञा हमारे सिर पर है (अम्ब०—रा० वै०, ६०)

(५) दायित्व होना। प्रयोग—बहु के सिर बड़ा पाप है, इसमें इतना लोभ ठीक नहीं (इस्टा०—मग० तर्मा, ९५); यह काम उसने इतना भारी समझा है कि उसका भार सारे मनुष्यों को बाँट दिया है, दो-चार माननीय लोगों के ही सिर पर नहीं छोड़ रखा है (विला० (१)—शुक्ल, २०)

### सिर पीट लेना

भाग्य पर रोकर बैठ जाना। प्रयोग—अच्छा तो अब रहस्य खुला। मने सिर पीट लिया (मान० (१)—प्रेमचंद, २८७)

### सिर पीट-पीट कर रोना

बहुत रोना या पछताना। प्रयोग—नाज सिर पीट पी कर रोई गिर सये पेट पेटवाली का (बोल०—हरिऔध, २२१)



### सिर पीटना

(१) शोक करना। प्रयोग—बुढ़िया नायका सिर पीट रही थी (मान० (२)—प्रेमचंद, ५३)

(२) प्रयत्न करना।

### सिर फटना

सिर में बहुत पीड़ा होनी। प्रयोग—सारी देह घक कर चूर-चूर हो रही थी × × सिर पीड़ा से फटा पड़ता था (मान० (१)—प्रेमचंद, २३९)

### सिर फिर जाना

(१) विचार बदल जाना। प्रयोग—छोकरी तो ऐसी न थी, पर लौट के साथ उसका सिर भी फिर गया (कर्म०—प्रेमचंद, ११२); है सुधारों की बहा पर घास क्या हो जहाँ पर सिर घरों का सिर फिरा (चुभते०—हरिऔध, ११८) (+)

(२) उन्माद होना। प्रयोग—सम्मी बिहकर बोली—तुम्हारा सिर फिर गया है (परतों०—रेणु, ३०१); अगर इससे लड़का हो जाता तो हमारा क्या सिर फिरा हुआ था (सु० सु०—सुदर्शन, २४६)

(३) पसंद होना। प्रयोग—तुमने तो अभी केवल एक दरजा पोस दिया है और अभी से तुम्हारा सिर फिर गया (मान० (१)—प्रेमचंद, ८२); देखिए प्रयोग (१) में (+) भी।

### सिर फोड़ना

(१) माया-पचो करनी। प्रयोग—विषे कर्म की कंचली, पहिर हुआ नर नाग। सिर फोड़े सूर्य नहीं, की आगिशा अभाग (कबीर ग्रंथा०—कबीर, ४१)

(२) तू-तू मैं-मैं करनी। प्रयोग—अब तक बराबर सभाओं में जाकर एक दूसरे का सिर इसीलिये फोड़ते हैं जिसमें धर्म की उन्नति हो (राधा० ग्रंथा०—राधा० दास, ६३४)

(३) कपाल-क्रिया करनी।

### सिर बेचना

(१) पूर्ण समर्पण करना। प्रयोग—बैच तेरे हाथ जिसने सिर दिया फिर उसे क्या सिर गया या सिर रहा (नोट०—हरिऔध, ७)

(२) प्राण जाने की संभावना होते हुए भी किसी काम को करना।

### सिर मड़ना

(१) जबरदस्ती किसी वस्तु को किसी के विषम लगाता। प्रयोग—घाय जो बे मर रहे हैं तो मर क्यों मृगीवत बेमुही सिर मड़ते (चुभते०—हरिऔध, १६०)

(२) किसी कार्य के लिए किसी को उत्तरदायी ठहराना। प्रयोग—लोग घरना कोष स्वीकार करते हैं भय स्वीकार करते हैं × × पर ईर्ष्या का नाम कभी मुंह पर नहीं लाते; ईर्ष्या से उत्पन्न अपने कार्यों को दूसरी मनोवृत्तियों के सिर मड़ते हैं (चिंता० (१)—शुक्ल, १२३); पढ़ लिख बेसी भूलों को लेखक के सिर तो कहां संशोधक के सिर भी नहीं मड़ते (गु० नि०—बा० मु० गु०, ४५३); अभी तह-सीलदार साहब लखरवालों की सारी बेइन्साफियों का इलजाम घापके ही सिर मड़ रहे थे (प्रेमा०—प्रेमचंद, २०२)

### सिर मानना

#### दे० सिर धरना

#### सिर मारना

(१) समझाते-नमझाते हैरान होना। प्रयोग—क्या करेंगे तोर पत्थर पर चला कूड़ से सिर मारते कब तक रहें (बोल०—हरिऔध, १६)

(२) सिर खपाना; प्रयत्न करना। प्रयोग—बहुतन्ह अंस रोइ सिर मारा। हाथ न रहना झूठ संसारा (पद०—जायसी, ३४१५); यदि खुरपी कुदाल ही करना है तो मदरसे में किताबों से सिर मारने की क्या जरूरत? (मान० (८)—प्रेमचंद, ८३); महिपाल ने पयावकाश महीनों सिर मारा, परन्तु वह नगर के प्राचीन इतिहास को ठीक तरह से न जान पाया (बूंद०—अ० ना०, २२७); मेरा जी ठिकाने नहीं है झूठे ही मैं इधर-उधर सिर मार रही हूँ (ठंठ०—हरिऔध, ३२)

(३) तर्क-वितर्क करना; झकझक करनी। प्रयोग—कल महरी से घंटों सिर मारा (मान० (४)—प्रेमचंद, १००)

### सिर मुड़ाते ही ओले पड़ना

कार्यारम्भ होते ही बिघ्न पड़ना या बुरा फल मिलना। प्रयोग—मैं जानता कि सिर मुड़ाते ही ओले पड़ेंगे, तो मैं विवाह के नखदीक ही न जाता (गदन—प्रेमचंद, ३४); है मृगीवत की पटा पहरा रही क्यों न ओले सिर मुड़ाते ही पड़ (बोल०—हरिऔध, १४)



### सिर रखना

सादर स्वीकार करना। प्रयोग—रिपि घायसु अमीन सिर राखी (राम० (अ)—तुलसी, ५७५)

### सिर रगड़कर मर जाना

कितना भी प्रयत्न करना। प्रयोग—माहव सिर रगड़कर मर जायें, तो भी अब जमीन नहीं सा मरने (रंग० (१)—प्रेमचंद, २२०)

### सिर रगड़ना

गिड़गिड़ाना; खुशामद करनी। प्रयोग—जो रहीम पय तर परें, रगरि नाक घड़ सीम (रहीम कवि०—रहीम, १०)

### सिर लेना

दे० सिर पर लेना

### सिर सफेद होना

बूढ़ापा आना। प्रयोग—करम करम करि करमन कर, पाप करम न कर मूढ़, सीम भयो सेत है (क० र०—सेनपति, १००)

### सिर सूंघना

बड़ों का मंगल-कामना के लिए छोटी का मस्तक सूंघना। प्रयोग—प्यार की बाम से न बस में रह सिर उमग लोग मूँघ लेते हैं (बोल०—हरिऔध, १४)

### सिर से खेलना

(१) प्राणों की परवाह किए बिना किसी काम में लग जाना। प्रयोग—क्या हमें थोड़ा मिला लाखों मिले सिर मवाया जो न सिर से खेल कर (बोल०—हरिऔध, १३)

(२) दूसरों को लड़ाना।

### सिर से पैर तक

आरम्भ से अंत तक; सर्वांग। प्रयोग—पाइन ते सिल लौ लखि के कवि बोधा मजा बरनी एक छोटी (इश्क०—बोधा, १०); चारदिवारी के बाहर निकलते ही कवि है—सिर से पांव तक (मान० (७)—प्रेमचंद, ५); अच्छा लीजिए, मेरा कहा सब झूठ है। सिर से पांव तक झूठ (कल्याण—जैनेन्द्र, ५०); बाहर निकलो, बाहर तुमको सिर से पैर तक न रंग दिया घोर नवान दिया तो मेरा नाम निम्नी नहीं (मृग०—वृ० वमी, ५)

### सिर से पैर तक आग लग जाना,—जल जाना

अत्यन्त प्रीति होना। प्रयोग—रामेश्वरी के सिर से पांव तक आग लग गई (मान० (४)—प्रेमचंद, १०३); सगार में ऐसी भी कोई स्त्री है, जिसका पति उसका गुंवार देखकर सिर से पांव तक जल उठे (मान० (३)—प्रेमचंद, २३)

### सिर से पैर तक जल जाना

दे० सिर से पैर तक आग लग जाना

### सिर से बला टलना या टालना

(१) आफत या भेभट हटना या टटाना। प्रयोग—किसी तरह यह बला सिर से टके आर चैन में मोयें (मान० (१)—प्रेमचंद, ६१)

(२) बिना मन में काम करना।

### सिर से बोझ डाल देना

सांसारिकता के बोझ से मुक्त करना या होना। प्रयोग—सतगुरु की कृपा भई, डारया सिर से बोझ (कबीर ग्रंथा०—कबीर, ४४)

### सिर से भूत उतरना

धुन दूर होनी। प्रयोग—जब तक एक दफे अच्छी तरह मार न खा जायगा, इसके सिर से भूत न उतरेगा (रंग० (२)—प्रेमचंद, १३२)

### सिर से लेकर पैर तक देखना

अच्छी तरह देखना। प्रयोग—शेखर ने एक बार फिर उसे सिर से पैर तक देखा (शेखर (२)—अज्ञेय, ५२)

### सिर सौंपना

आत्म-बलिदान करना। प्रयोग—जब लग सिर सौंपे नहीं, कारज सिधि न होइ (कबीर ग्रंथा०—कबीर, ६९)

### सिर हथेली पर लिये फिरना

मृत्यु से न डरना, जान की बाजी लगाकर कोई काम करना। प्रयोग—लोक हित के हाथ जिनके सिर चिके वे हथेली पर लिये ही सिर फिरे (बोल०—हरिऔध, ९); जो हथेली पर लिये ही सिर फिरे टालने को जाति के सिर की बना (बुभुते०—हरिऔध, १०४)

(समा० म्हा०—सिर हथेली पर लिये रहना,—हाथ पर लिये फिरना)



### सिर होना

(१) बार-बार किसी बात का ध्यापन करके तंग करना। प्रयोग—रामू को दुल्हन को जब मालूम हो गया कि सुभागी घर न करेगी तो और भी उसके सिर हो गयी (मान० (१)—प्रेमचंद, २५०); कह दिया था हो सकेगा अब न कुछ आज फिर क्यों आप यों सिर हो गये (बोल०—हरिश्चंद्र, १३)

(२) उन्मत्त पड़ना; तंग करना। प्रयोग—मूक से नहीं हो सकता कि कोई दो-बार दिन के लिए आ जाय तो उसके सिर हो जाऊँ (मान० (४)—प्रेमचंद, १०४)

(३) सादर स्वीकार होना। प्रयोग—राउर राय रजायमु होई राउरि सपण सही सिर मोई (राम० (४)—तुलसी, ६५४)

(४) हिम्मे होना। प्रयोग—अग्निमिपेलीटी के कार्य निर्वाह का जोर एक आदमा के सिर नहीं है (परीक्षा०—श्री० दास, ७४)

(५) संदेह करना।

### सिर-आंखों के चल करना

बड़े उत्साह से करना। प्रयोग—घोर जो काम तुम कहो, वह सिर-आंखों के चल करूँगी। मगर घर करने की मन्कते न कहो (मान० (१)—प्रेमचंद, २५०)

### सिर-आंखों पर बैठाना.—रखना

बहुत आदर-मत्कार करना। प्रयोग—मेरे तैमे विद्वान को वे लीग सिर-आंखों पर रखेंगे (ताण०—३० पृ० दि०, १४४); कोई मेहमान आ जाता तो उसे सर-आंखों पर बैठाते (प्रेमा०—प्रेमचंद, ९); प्यार खूबकरा है जिनकी आंखों में रखें लोग क्यों उन्हें न सिर आंखों पर (बोल०—हरिश्चंद्र, १२)

(समा० मुहा०—सिर आंखों पर आना)

### सिर आंखों पर बैठाना.—रखना

(१) सादर स्वीकार करना। प्रयोग—काम पूरा हो जाने पर हुजूर जो कुछ अपनी खुशी से अदा करेंगी वह सिर आंखों पर रखूँगा (प्रेमा०—प्रेमचंद, १४५)

(२) दे० सिर आंखों पर बैठाना

### सिर आंखों पर रहना

बड़े स्नेह या आदर में रहना। प्रयोग—जड़का इतने दिनों

बाद घर धाया है, हमारे सिर आंखों पर रहे (मान० (८)—प्रेमचंद, १४)

### सिर-आंखों पर होना

(१) सहर्ष स्वीकार होना। प्रयोग—मैं अममय हूँ, हाँ उनकी अंगूठी मैंने सिर आंखों से स्वीकार की (भा० प्र० (१)—भारतेन्दु, ६४१); भगवान की आज्ञा सिर आंखों पर (अम्ब०—रा० वै०, ४०); बुजुर्गी मुझसे झड़ गयी है, यह मैंने गिल्ली बार ही कहा था; और ओ तुम ओझाओ सिर आंखों पर, मगर पहले यह अपराध की कंवली भाड़ लूँ तब न (नटी०—प्रज्ञा, २६५-२६६)

(२) माननीय होना। प्रयोग—आप लोग मेरे सिर पर हैं पर मैं क्या कहूँ क्योंकि मैं पराधीन हूँ (भा० प्र० (१)—भारतेन्दु, ३०६); भेलादेई X X बोली—जी आयांनू (जागत को स्वागत) सिर आंखों पर आइये, आप बैठिये ता (झूठा० (१)—यशपाल, ६५)

### सिर-आंखों से

सहर्ष। प्रयोग—मिसेज सेवक—तो आप ही चले जाइए न? ईश्वर सेवक—सिर घीर आंखों से; मेरा तांगा मंगवा दो (रंग० (१)—प्रेमचंद, ६८)

### सिर-खपी करना

### दे० सिर खपाना

### सिर-चढ़ा

मुंह लगा—घुष्ट। प्रयोग—जोग कहें यह सर चढ़ी हो सी चढ़ी पिय लागि (पट०—जायसी, ३४१४); यह सिर-चढ़ी तो स्वयं ही दूल्हा खोज कर आई है (तिल्ली—प्रसाद, १६१); ये सभी डीठ, चंचल, सरचढ़ी सहेलियों की तरह मुझे घेर लेती हैं (कनु०—भारती, २४)

### सिरताज होना

सर्वश्रेष्ठ होना। प्रयोग—हमारी सखी सब कवियों की सिरताज तो हुई (भा० प्र० (१)—भारतेन्दु, ३७६)

### सिर-तोड़

वेहद; बहुत अधिक; जो जान से। प्रयोग—नारायण शास्त्री दांत पीसते और सिर तोड़ परिश्रम अपने पश की पुष्टि के लिए करते (झांसी०—वृ० वर्मा, ४२); खोद देने के



लिये जड़ जाति की जो कि है, सिर तोड़ कोशिश कर रहा  
(चुमते०—हरिऔध, १०९)

### सिर-दर्द

व्यर्थ की भ्रमट । प्रयोग—तुमहीं मिलि रसबाद बढ़ायो ।  
उरहन दे दे मूढ़ पिरायो (सु०सा०—सूर, १००९); मुझे इस  
दर्द-सिर की फुसंत नहीं है (प्रेमा०—प्रेमचंद, ६५)

### सिर-दर्द लेना

व्यर्थ की भ्रमट में पड़ना । प्रयोग—जब तक कोई ऐसा  
आदमी न हो, जिसके साथ मुझे आराम से ज़िन्दगी बसर  
होने का इत्मीनान हो, मैं यह दर्द-सिर नहीं लेना चाहती  
(कर्म०—प्रेमचंद, १०१)

(समा० मुहा०—सिर-दर्द मोल लेना)

### सिर-धरा

प्रिय, श्रेष्ठ । प्रयोग—यह बात सुनकर वह जो लाल  
जोड़ेवाली सबकी सिर धरी थी उनसे कहा X X (ईशा०—  
ईशा०, ९३); उन बिछे सिरधरों के पांव तले जो न घावों  
बिछीं बिछीं तो क्या (चुमते०—हरिऔध, ५)

### सिर-पच्ची करना

दे० सिर पचाना

### सिर पूँठ न होना,—पैर न होना

कोई आधार या तथ्य न होना । प्रयोग—यह जो आपने  
गढ़मढ़ कई एक वाक्य X X उगल दिये हैं, इसका कुछ  
सिर-पैर है ? (गु० नि०—वा० मु० गु०, ४३७); बाहर के  
आये हुए विद्वानों को देखता भी था, जेंट-सेंट बकते जा रहे  
हैं न सर, न पूछ (चतुरी०—निराला, ५४); सपनों के सिर-  
पैर नहीं होते (नदी०—अज्ञेय, ३१३); तब से जो अलवारों  
में घा रहा है उसका सिर-पैर बताना मुश्किल है (जय०—  
जेनेन्द्र, ४३९)

### सिर-पैर न होना

दे० सिर-पूँछ न होना

### सिर-पैर समझ में न आना

कुछ भी न समझ में आना । प्रयोग—घनेक बार पढ़ जाने  
पर भी बिट्ठी का सिर-पैर उसकी समझ में न आया  
(ज्ञान०—यशपाल, ४१)

### सिर-फिरा

औंधी बुढ़ियाला । प्रयोग—हैं हमी कुछ इस तरह के सिर-  
फिरे आँख में सरसों सदा फूली रही (चुमते०—हरिऔध, ५७)

### सिर-माथे चढ़ाना

घायत घादर करना; आदरपूर्वक स्वीकार करना । प्रयोग  
—धन्यवाद की विभूति तकसीम कर दी है । सबने सिर-  
माथे चढ़ाई, आँखों से लगाई (पद्म० के पत्र—पद्म० शर्मा,  
१९५); भारत के अमर तपस्वी की इस धुनी से ले भभूत  
अपने सिर-माथे चढ़ाती (सो०—दशरथ, २४४)

### सिर-माथों पर

सादर ग्रहण करना । प्रयोग—सिर माथे मैंने बचन तुम्हारा  
माना (साकेत—गुप्त, २३८); घापकी सूझ को कहें क्या हम  
आपकी रीझ बूझ सिर माथे (दीप्त०—हरिऔध, ८)

### सिर-मौर होना

श्रेष्ठ स्थान पाना । प्रयोग—नेही सिरमौर एक तम ही ली  
मेरी दोर नाहीं ओर ठौर, काहि सांकरे संभारिये (घन०  
कवित्त—घना०, २२५); अलंकार पे तीनहु बरनत कवि  
सिरमौर (पद्म०—पद्माकर, ६७); कपवा पास न हो तो  
आप सकल-गुण-वरिष्ठ शिष्ट समाज के सिरमौर होकर  
भी श्रद्धास्पद नहीं हो सकते (सा० सु०—वा० मट्ट, ४०);  
देवीदयाल पहले तीन बिस्वेवाले कनबजिए य, अब तेरह  
बिस्वेवाले बनकर गांव के ब्राह्मणों में सिरमौर है (लिली—  
निराला, ७२); उस समय सम्राट गद्गद् हो जावंगे घोर  
में कवियों का सिरमौर हो जाऊँगा (भोर०—जग० माधुर,  
१४१)

### सिरकी तानना

भोपड़ी बना कर रहना । प्रयोग—मेरा जा चाहता है कि  
हम दोनों अपना डेरा-डंडा लेकर चलते घोर वहाँ अपनी  
सिरकी तानते (गवन—प्रेमचंद, १६८)

### सिरे का

धक्कल दरजे का । प्रयोग—नवरस में जू सिंगार रस सिरे  
कहत सब कोइ (जग०—पद्माकर, २)

### सोंग कटाकर बछड़ों में मिलना

बूढ़े का लड़कों में मिलने का प्रयास करना । प्रयोग—अब  
हमारा उनके साथ मिलना सोंग कटा बछड़ा बनना क्यों



जान पड़ता है ? (सा० सु०—बा० भट्ट, ५०); आपकी जो कविता वज्रभाषा में पुराने ढंग की होती है, वह मुझे अधिक पसंद आती है, आप उसी ढंग पर लिखा कीजिए । सींग कटाकर बछड़ों में दाखिल न हुआ, अपना स्टाइल न बिगाड़िये (पद्म० के पत्र—पद्म० शर्मा, २२०)

### सींग समाना

गुजायत होना, ठिकाना होना । प्रयोग—तुह गड़ाये चहा गड़े कैसे सींग मेरा सका जहाँ न समा (बोल०—हरिऔध, २३७)

### सी करना

दुख करना । प्रयोग—धरित्रिया उड़ते दहलते ओ नहीं सिर उतरते किस निचे वे सी करे (चुमते०—हरिऔध, ७)

### सीख धरना

उपदेश देना । प्रयोग—ऐनी सिद्धि छाड़ि कित बोलत घोरनि सीख घरी (सु० सा०—सूर, ४३१७)

(समा० मुहा०—सीख देना)

### सींठी लगना

निःस्वार लगना । प्रयोग—मानत नहिं बातें मन, लागति हमें सींठी (सु० सा०—सूर, ४३९८)

### सीधा करना

(१) दंड देकर ठीक करना । प्रयोग—वह समझते हैं कि हमें सब की आलोचना करने का अधिकार मिल गया है घोर हमारी आलोचना कोई करे तो हमारे भाई बंधु × × पारों घोर से लट्ट लेकर सहायता के लिए आ घमके ओर बिछा से नहीं तो उसे लट्ट से सीधा कर दें (गु० नि०—बा० मु० गु०, ४२८); बदमाशों और गुनहगारों को सीधा करना आपका काम है (गोली—चतुर्ग, १९९); कोई टेढ़ी घाली से भी देख जाए, तो जूते मार-मार कर सीधा कर दूँ (सु० सु०—सुदर्शन, १९१)

(२) रुपया वसूल करना ।

(३) लक्ष्य की घोर लगाना ।

### सीधा-सादा

भोला-भाला । प्रयोग—मुसी दीनदयाल उन घादमियों में थे, जो सीधों के साथ सीधे होते हैं, पर टेढ़ों के साथ टेढ़े ही नहीं, घेतान हो जाते हैं (गधन—प्रेमचंद, ६)

### सीधी उंगली धी निकालना

सरलता से काम बनाना । प्रयोग—जो लगि मधे न कोई दें बोज । सूधो अंगूरि न निकसै घोऊ (पद०—आयसी, ३४।१०); मैं करता रहम न जानूँ, वह पढी नहीं है पढ़ी । सीधी खंगूली से हरमिज निकला है कभी नहीं धी (नुर०—मक्त, ९५); आप जानते हैं, सीधी उंगली धी नहीं निकलता (मान० (३)—प्रेमचंद, १३२)

### सीधी बात न आना

ठीक-ठीक बात न करना । प्रयोग—कमलनैन की कानि करति है घावत वचन न सूधो (सु० सा०—सूर, ४३०४)

### सीधी बात न बोलना

सत्य और प्रिय बात न बोलना । प्रयोग—त्रिभ्या वचन मूध नहीं निकसै तब सुकरित की बात कहै (कवीर ग्रंथा०—कवीर, १७०); बात पीधी किस तरह से तब कहें बाट म जब बात टेढ़ी हो पड़ी (चुमते०—हरिऔध, ८६)

### सीधी राह

मलमलसाहत का मार्ग तरीका । प्रयोग—इनका संगठन इतना बलशाली है कि सीधे रास्ते इनसे पार पाना असम्भव है (विप०—प्रेमी, ३९)

### सीधी राह पर

उचित कार्य करते हुए । प्रयोग—इससे अब भी हठ छोड़ सीधी राह पर आइये धर्म-धर्म पुकार कान की बलियाँ मत भारिये (मट्ट नि०—बा० मट्ट, २५); बस अब तुम सीधी राह से चली चलो (मा० मा० (१)—कि० गो०, १२५)

### सीधे बोलना

नम्रता से बोलना, ठीक-ठीक जवाब देना । प्रयोग—पूछे ते तुम बदन दुरावत, सूधे बोल न बोलत (सु० सा०—सूर, ८९७)

### सीधे मार्ग पर आना

(१) सुधर जाना । प्रयोग—अगर मुझे विश्वास होता कि सम्पत्ति समाप्त कर के वह सीधे मार्ग पर आ जायेंगे, तो मुझे डरा भी दुःख न होता (मान० (७)—प्रेमचंद, ४१)

(२) ठीक घोर उचित काम करना ।

(समा० मुहा०—सीधे रास्ते पर आना)



### सीधे मुँह बात न करना

बहुत गर्व के कारण टेंढ़े बोलना, प्रेम से न बोलना । प्रयोग—हो बड़, हो बड़, बहुत कहावत, मुँधे कहत न बात (सू० सा०—सूर, ३६५); नौ हरो से वह सीधे मुँह बात न करता था (मान० (१)—प्रेमचंद, १०४); पहले तो मस्का पालिश कर के मकान ले लेंगा फिर सीधा मुँह बात नई करेगा (पैतरे—अंक, १३७); क्या जानती थी कि बड़नाया जोड़नेवाली फिर सीधे मुँह बात भी न करेगी? (मा—कौशिक, ८८); जो नाबरिया सीधे मुँह बात नहीं कर सकना, उसे नौ नाव चलाने का काम छोड़कर कोई भार काम कर लेना चाहिए (ब्रह्म०—दे० स०, ४८)

### सीधे रास्ते लाना

(१) ठीक कार्य की ओर प्रवृत्ति करा देना, सुधारना । प्रयोग—क्या मुनहगारों को कसल करके तू उन्हें सीधे रास्ते पर ले जायगा? (मान० (१)—प्रेमचंद, १८४)

(२) अच्छा सबक सिखाना ।

### सीना चाक करना

बलिदान करना । प्रयोग—बुलबुल सीना चाक करे ओ मैं फूलों सा मूक रहूँ (चक्र०—दिनकर, ४२)

### सीना चौड़ा होना

गर्व होना । प्रयोग—ममहडों के मुँह से हमदर्दों को यह बात सुनकर हमारा सीना चौड़ा हो गया भैया ! (बल०—नागा०, १९५)

(समा० मुहा०—सीना फूलना)

### सीना तान कर खड़े होना

सामना करने को साहस के साथ प्रस्तुत होना । प्रयोग—समुद्र की सीत्कार भरती आसुरी आंधियों के बीच वज्र की चट्टान पर सीना ताने यह क्रियाका घर है? (कला०—पंत, ७९)

### सीना तान कर चलना

(१) गर्व करना । प्रयोग—सिप जो बाइब टोनी के तड़ेलों का सीना तान कर चलना बरदाश्त नहीं कर सकते (मैला०—रेणु, ७८)

(२) अकड़ कर चलना ।

(समा० मुहा०—सीना निकाल कर चलना)

### सीना धड़कना

डर लगना । प्रयोग—दीखी सिधराज सबहेरि को समर मुनि नर काह मुरन के सोने धरकन है (भूषण ग्रंथा०—भूषण, २०८)

### सीनाजोरी करना

जबरदस्ती करनी । प्रयोग—चोरी और सीनाजोरी ! देवीजी दांत पीस कर रह गयीं (मान० (२)—प्रेमचंद, २०७); चोरी और सीनेजोरी की तो बात ही खोर है (सा० सी०—महा० द्विप्रेत, ८८)

### सीने पर मूंग दलना

सरेखाम दुख देना । प्रयोग—जैसे जायीं थी वैसे ही पंजों के बल चली गयीं हमारे सीने पर मूंग दल गयीं (पैतरे—अंक, ११२)

### सीने पर साँप लोदना

(१) ईर्ष्या होनी । प्रयोग—तो इतने सीने पर लाट जाता है साँप (बुद्ध०—बच्चन, ८२); दुश्मनों के सीनों पर इस विवाह से साँप सोट गए (दूधगाछ—दे० स०, २५१)

(२) प्रत्यंत भयभीत हो जाना ।

(३) मन हो जाना ।

### सीने में अंगार होना

मन में बेदना या बिद्रोह की गहरी अनुभूति होनी । प्रयोग—ओ जो तूम अपने सीनों में लेके चलते हो अंगार (बुद्ध०—बच्चन, २८)

### साँप से समुद्र उलीचना

अगण्यश्रय साधन से बहुत बड़ा काम करने का प्रयत्न करना । प्रयोग—कहत सारदहू कर मति हीचे सागर सीप कि जाहि उलीचे (राम० (अ)—तुलसी, ६४१)

### सीमा होना

अंतिम पराकाष्ठा तक पहुँचना । प्रयोग—सुंदरता रस गुन की सीमा, मूर राखिका स्वाम (सू० सा०—सूर, १६६३); मोभा सीध मुभय दोउ बीरा (राम० (बाल)—तुलसी, २४०)

### सीरी-ताली बात

जली कटी या भली बुरी बात । प्रयोग—कहू सीरी, कुछ ताती जानी, कान्हि देत दुहाई (सू० सा०—सूर, ३४४४)



### सीसी सटकना या सटकाना

सिट्टी-पिट्टी गुम होनी या कर देनी। प्रयोग—एक बार तो मिथजी की भी सीसी सटका दिया था (मैला०—रेणु, ६८)

### सुंती देह

गठी दुबनी देह। प्रयोग—अवस्था पचास-साठ के बीच कहीं भी। फट्टरी दाड़ी। लंबे बाल। सुंती देह। मझोला कद (जय०—जेनेन्द्र, ६६)

### सुदृष्टि होना

अनकूल होना। प्रयोग—एक कहें, बाम विधि दाहिनी हमको भयो, उत कौन्ही पीठ, इत को सुदृष्टि भई है (गोता० (अ)—तुलसी, ३४)

### सुयश का टीका लेना

बहुत यश पाना। प्रयोग—आबहु री मिलि सुनहु सयानी, लेहु सुयश की टीको (सु० सा०—सूर, ४१३२)

### सुख का सपना हो जाना

सुख का लेश भी न रह जाना। प्रयोग—कहा कहीं कहु कहत न आवे, सुख सपना भयो मोह (सु० सा०—सूर, ३९९८)

### सुख का हिडोला झूलना

सुख में जीवन बिताना। प्रयोग—बड़ ब्रभागी रहेगी घोर कन्यगी सुहागिन बनकर सातों सुखों के हिडोले पर झूलेगी (सुधा०—अ० ना०, १७२); आज वे पाले दुखों के हैं पड़े जो सदा सुख-पानने में हो पड़े (सुभते०—हरिऔध, ८३)

### सुख की खान होना

बहुत सुखदायक होना। प्रयोग—अगुति मुकुति किहि काज हमारे, जदपि महा सुख खानि (सु० सा०—सूर, ४१५९)

### सुख की नींद सोना

निश्चित होकर रहना। प्रयोग—घापने कहा था कि यहां से जाते समय भारतवर्ष को ऐसा कर आऊंगा कि मेरे बाद घले वाले बड़े साठों को वर्षों तक कुछ करना न पड़ेगा, वे कितने ही वर्षों सुख की नींद सोते रहेंगे (गु० नि०—बा० मु० गु०, २१२)

### सुख की सीज उठ जाना

सुख समाप्त हो जाना। प्रयोग—सुख की सीज उठी ता दिन ते, पठर स्याम बिनाने (सु० सा०—सूर, ४२९३)

### सुख भरना

सुख की अनुभूति होनी। प्रयोग—देखि सकल जननों सुख भरही (राम० (उ)—तुलसी, १०५१)

### सुख मानना

सुख की अनुभूति करनी; सुख के साथ। प्रयोग—लीन्ह अवधपति सब सुख माने (राम० (बाल)—तुलसी, ३३३)

### सुख में राते होना

अत्यंत सुख में होना। प्रयोग—वे अपने सुख ही के राते, तजियत यह अनुहार (सु० सा०—सूर, ४३७६)

(समा० महा०—सुख में डूबे होना,—मग्न होना)

### सुख लटना

सुख भोगना। प्रयोग—राम सिया-कर परस मग्न भग, कौतुक निरखि सखी सुख लटे (सु० सा०—सूर, ४६९); गुप्त गोपाल करो रस लीला, हम लूटी सुख रासी (सु० सा०—सूर, ४१७३); उन प्रातपियारे बिना यह जीवहि राखि कहा सुख लटनो है (भा० ग्रंथा० (१)—भारतेन्दु, ३४); इसकी तो बयस खेलने-खाने और यौवन का सुख लटने की है (मिस्ता०—कौशिक, ४)

### सुख-स्वर्ग बनाना

सुख की कल्पना करनी। प्रयोग—मैंने अपनी सहेलियों से उनकी सुहागरात की कथाएं सुन सुन कर अपनी कल्पना में सुखों का जो स्वर्ग बनाया था, उसे आपने कितनी निर्दयता से नष्ट कर दिया (मान० (७)—प्रमचंद, ९)

(समा० महा०—सुख-स्वप्न देखना)

### सुग्गे का सेमल होना

भ्रमपूर्ण होना। प्रयोग—सुफल लागि पग टंकड़ तोरा। सुआ क सेवर तू भा मोरा (पद०—जायसी, २१४)

### सुतली में पोत पोहना

बेमेल या असंगत काम करना। प्रयोग—सूरदास कहू सुनी न देखी, पोत सुतरी पोहत (सु० सा०—सूर, ४३०८)

### सुतारवाली देह

मुडोल शरीर। प्रयोग—बुआ की उख पन्नीस होगी। लम्बी सुतारवाली बंधी पुष्ट देह (चोटी०—निराला, २)



### सुधा-रस में बोरी

सरस, मधुर । प्रयोग—सौन सुधाई सनो बतियानि बिना  
इन काननि ले कहा प्याऊँ (घन० कवित—घना०, ८८)

### सुधाकर लिखते राह लिखा जाना

अच्छा काम करने बराबरी जाना । प्रयोग—लिखत सुधाकर  
मा लिख राह । बिधि गति वाम सदा सब काहू (राम० (अ)  
—तुलसी, ४२३)

### सुनगुन

आभास, सुराग । प्रयोग—मैंने जब यह सुनगत सुनी थी तो  
समझाया था । मझते तो माफ़ मकर गये (पट्टम० के पत्र  
—पट्टम० शर्मा, १६९)

(समा० मुहा०—सुनगुनाहट)

### सुनतो-उड़ती बात

फफवाह । प्रयोग—भाई, हम भी सुनती-उड़ती बात कहते  
हैं (मैला०—रैणु, २९९)

### सुनना

ध्यान देना, बिनती मान लेनी । प्रयोग—भगवान ने मेरी  
सुन ली (मान० (१)—प्रेमचंद, १४५)

### सुनहरा मौका

अनुकूल अवसर । प्रयोग—घरे दादा, यह सुनहरा मौका  
भला हम हाथ से जाने देंगे ? (मूले०—भग० वर्मा, १६०);  
कल के द्विप से मैं बेहद असन्तुष्ट हूँ । एक सुनहरा मौका  
मिला था पर मैंने उसका कोई बड़िया उपयोग नहीं किया  
(अजय०—देवराज, १२२); ऐसा सुनहरा अवसर पाकर भी  
तुम्हें उससे फायदा उठाना नहीं आता (रंग० (१)—प्रेमचंद,  
६९)

### सुन्न खींच जाना

एकदम चुप रह जाना, कुछ न कहना या न करना । प्रयोग  
—बस सुन्न खींच जाइए या दम न मारिये (इंशा०—  
इंशा०, ८१)

### सुबह का दीपक होना

थोहीन होना; मतिन होना । प्रयोग—सुनि रघुवीर की बचन  
रचना की रीति, भयो मिथिलेस मानो दीपक बिहान को  
(गीता० (वा)—तुलसी, ८८)

### सुर बदलना

रस बदलना । प्रयोग—एक सुर से चाहते गाना अगर सुर

मिले तो सुर बदल जाता नहीं (बोल०—हरिऔध, १४०)

### सुर भरना

किसी गाने बजानेवाले का सहारा देने के लिए स्वर लगाना ।  
प्रयोग—जो लगामे तान लग गानी नहीं तानपुरे को उठा  
कर सुर भर (बोल०—हरिऔध, १४०)

### सुर में सुर मिलाना

(१) मार्मिकता स्वागत करना । प्रयोग—एक सुर से  
बोसते तो क्यों नहीं सुर अगर सुर में मिलाना जानते  
(बोल०—हरिऔध, १३९)

(२) चापलूसी करनी ।

(३) हाँ में हाँ मिलाना ।

(समा० मुहा०—सुर में सुर भरना)

**सुरधाम जाना, सुरपुर की राह लेना**—सिन्धारना  
मृत्यु को प्राप्त होना । प्रयोग—तनु परितरि रघुवर  
बिरह राउ गयउ सुरधाम (राम० (अ)—तुलसी, ५१८);  
भूपति सुररति पुर पग धारेउ (राम० (अ)—तुलसी, ५२२);  
ते तनु नजि सुरलोक सिधारे (राम० (बाल)—तुलसी, २१४);  
उन महाराज विवाह के पहले ही सुरधाम गामी हुए  
(राधा० प्रथा०—राधा० दास, १८५); घर से सूर को निकले,  
मोटर से टकरा कर सुरपुर की राह ली (मान० (१)—  
प्रेमचंद, २८३)

### सुरपुर की राह लेना

दे० सुरधाम जाना

### सुरपुर सिन्धारना

दे० सुरधाम जाना

### सुरखाव का पर लगना

कोई खासियत होनी । प्रयोग—जयन्त घोर मनोज को क्या  
सुरखाव के पर लगे हैं ? (दृष्टाछ—दे० स०, ३०३); उसमें  
रहकर मझमें कीन से सुरखाव के पर लग जायेंगे (प्रेमा०—  
प्रेमचंद, १२३)

### सुरत बंधना

याद आनी । प्रयोग—मोते, उठते, बैठते, खाते, पीते, देव-  
बाला ही की सुरत उनकी बंध रही है (ठठ०—हरिऔध,  
६४)



### सुरमा घुलाना

आँखों में सुरमा लगाना । प्रयोग—तबेन सुरमा घुलाये के आँख पर चरलामृत लगाये हो जे मे पलकबाजी खूब चले, हाँ एक पलक एहरो (भा० ग्रं० (१)—भारतेन्दु, ३२८)

### सुराग पाना,—मिलना,—लगाना

आभास होना, सुनगुनी होनी । प्रयोग—लेकिन पुलिस छापे के ठीक पहले अलग के घर वह सूचना देने गये थे कहीं से खबर-सुराग पा कर कि भागो, पुलिस आ रही है (अपनी खबर—उग्र, २५); जब नारायण को यह सुराग मिला और वह रंजन के बाँस-कुँज में पहुँचा, तो वह मन्थन खाली पड़ा था (ब्रह्म०—दे० स०, २८८); फिर उसका सुराग कैसे लगा (कठ०—दे० स०, १८९)

### सुराग मिलना

दे० सुराग पाना

### सुराग लगाना

दे० सुराग पाना

### सुराग लगाना

गुप्त रीति से कुछ पता लगाना । प्रयोग—जब अमरवत नगर विद्रोहिणों से पाक हो गया, X X तो विनय ने सोफी का सुराग लगाने के लिए कमर बाँधी (रंग० (३)—प्रेमचंद, ६७)

### सुखरू बनना या होना

यशस्वी, प्रतिष्ठित होना । प्रयोग—घनिषा ने कहा—बिरादरी में सुखरू कैसे होते (गोदान—प्रेमचंद, १५४); बात यह है कि सम्पादक लोग लेखकों से संतमंत में बेगार लेकर मालिक के सामने अपनी कारगुजारी दिखलाते हैं । सुखरू बनते हैं और मट्टी गरम करते हैं (पद्म० के पत्र—पद्म० शर्मा, १८५); यह न कहो, घर का भेदो लंका दाहे । कोन जाने, कोई आदमी X X सुखरू बनने के लिये, वहाँ सारी बातें लगा जाएँ (रंग० (१)—प्रेमचंद, २१८)

### सुखी होना

ताजा; गरम; उत्तेजक । प्रयोग—घाज के प्रखवार की सब से बड़ी सुखी यही थी कि कुरैशी माहब कापेस छोड़ कर मुस्लिम लोग में शामिल हो गये (कठ०—दे० स०, २५०)

### सुलगाना

भीतर ही भीतर नाराज होना । प्रयोग—शेखर ने अपने कमरे के द्वार बंद करके कुंझो चढ़ा ली, बत्ती बुझाई और चारपाई पर बैठ कर सुलगन लगा (शेखर (१)—अज्ञेय, २५)

### सुलभना

(१) बधन या भ्रमट से मुक्त होना । प्रयोग—हाथ अट-पटी दसा निपट चटपटी सों, क्यों हूँ घनभानंद न मूखें सुरभनि है (घन० कवित्त—घना०, १७)

(२) उलभन दूर होनी ।

### सुला देना

मार डालना । प्रयोग—कर पूर्ण रण-लिप्सा अभी क्षण में सुलाऊँ मैं तुम्हें (जय०—गुप्त, १९)

### सुहाग अच्छल रहना, सुहाग-भरी रहना

सौभाग्यवती रहना । प्रयोग—हृदय प्रसीसहि प्रेमबस रहिअहु भरी सोहाग (राम० (अ)—तुलसी, ६०५); जब तक गंगा-यमुना में पानी है, घापका सोहाग अच्छल रहे (भा० ग्रंथा० (१)—भारतेन्दु, २७०)

### सुहाग उजड़ना,—लुटना

विधवा होना । प्रयोग—भाभी का तो सुहाग ही उजड़ गया (बोने०—रा० रा०, ७३); लुट सदा के लिये गया सरबस घाज बेवा सोहाग है सोती (बोल०—हरिऔध, ६९)

(समा० मुद्रा०—सुहाग खोना)

### सुहाग खड़ा होना

विवाह होना । प्रयोग—इसी मौलिया के लिए ले दे के जो छोटा मकान था ब्याह पर बिक गया था, तब तो इसका सुहाग खड़ा हुआ था (बोने०—रा० रा०, ९४)

### सुहाग लुटना

दे० सुहाग उजड़ना

### सुहाग-भरी रहना

दे० सुहाग अच्छल रहना

### सुई का पहाड़ होना

जरा सी बात का बहुत बड़ जाना । प्रयोग—हाकिमों के बीच में बोलना जान जोखिम है । जरा भी सुई का पहाड़ हो गया (प्रेमा०—प्रेमचंद, १००)



### सूई के नाके से हाथी निकलना या निकालना

कठिन या असंभव काम होना या करना। प्रयोग—सूई के छेद से हाथी निकाल लेने की बुद्धि ही आज सही बुद्धि है (मैला०—रेणु, २२६)

(समा० मुहा०—सूई के नाके से खुदाई को या सब को निकालना)

### सूख कर कांटा होना

अत्यंत दुर्बल होना। प्रयोग—कसगा—छो! सूख कर कांटा हो गये (मान० (१)—प्रेमचंद, ४०); वह नित घटती ही जाती है, हो गई सूख कर कांटा है (नूर०—भक्त, ३५)

(समा० मुहा०—सूख कर तिनका होना,—लकड़ी होना)

### सूख जाना

(१) डर जाना। प्रयोग—यह बानी मुनि ग्वारि भुरानी (सू० सा०—सूर, २२३७); कंकवसुता सुनत कटु बानी। कहि न सकइ कछु महमि सुखानी (राम० (अ)—तुलसी, ३९०); कुंवर साहब ने उमरी ओर कुछ ऐसी कड़वी आंखों से देखा कि वह मुख सा गया (मान० (१)—प्रेमचंद २४१); राजेन्द्र को देखकर रामेश्वरजी सूख गए (लिलो—निराला, १९)

(२) दुर्बल हो जाना। प्रयोग—दिन-ब-दिन है सूखती ही जा रही हो गई बेजान बूढ़े की बहू (चुभते०—हरिऔध, १६१)

(३) उदास और दुखी हो जाना। प्रयोग—जबहि आए मुने ऊधो, अतिहि गई भूराइ (सू० सा०—सूर, ४०८७); वे मला आप मुख जाते क्या मुख न सूखा जवाब सूखा सुन (चुभते०—हरिऔध १०); आप रात के ग्वारह-ग्वारह बारह-बारह बजे तक बाहर रदते हैं। मैं यहां बंठी सूखा करती हूँ (चित्र०—कौशिक, ९१-९२)

(४) शेष होना। प्रयोग—इधर वह मिलमिला भी लग-भग सूख चला या (त्याग०—जेनेन्द्र, ६)

### सूखते धान में पानी पड़ना

दुःखी या निराश व्यक्ति में आशा का संचार होना। प्रयोग—मलिनह सहित हरषी अति रानी, सूखत धान परा जनु पानी (राम० (बाल)—तुलसी, २७०)

### सूखा

नीरस। प्रयोग—इलाहाबाद जैसे सूखे सहर में भी मैं दो सो फूँक देता था (रेशमी०—राम० वर्मा, १४३ १४४)

### सूखा जवाब देना

साफ इन्कार करना। प्रयोग—दूसरी ओर वहाँ का बहुत कुछ बड़प्पन निकल जाय, गहरे-गहरे साघी बहरे हो जाय या सूखा जवाब देते लगें (चिला० (१)—शुक्ल, ६६); वे मला आप मुख जाते क्या मुख न सूखा जवाब सूखा सुन (चुभते०—हरिऔध, १०)

### सूखा दिल

भाव-शून्य हृदय। प्रयोग—काश तुम्हारे सूखे हुए दिल पर भावों के बादल बहारा कर बरस पड़ते (भोर०—जग० माधुर, २६)

### सूखी मुस्कान,—हंसी

ऐसी हंसी जो दिल में न निकली हो। प्रयोग—सूखी मुस्कान, फीका दर्द (वीने०—रा० रा०, २८); मिनेत्र मेवक ने सूखी हंसी हस कर कहा (रंग० (१)—प्रेमचंद, २५९); क्यों न भूखा मुख के पाले पड़े क्यों न सूखा मुँह हमें सूखी हंसी (चोखे०—हरिऔध, ६२)

### सूखी हंसी

दे० सूखी मुस्कान

### सूखी हड्डियां

बुढ़ापे से स्वात शरीर। प्रयोग—कायर! छोड़ दे नहीं तो दिखा दूंगा कि इन सूखी हड्डियों में कितना बल है (कामना—प्रसाद, ९४)

### सूखी-भेद्य अंधकार

गहरा अंधकार। प्रयोग—सविशान्वकार की घनघोर घटा, आंध्र जाति और उसके भिर महचर वैदिकधर्म पर कुछ इस प्रकार छाई हुई थी कि उस सूखीभेद्यांधकार में कुछ न सूझता था (पद्म पराग—पद्म० शर्मा, १०); सूखीभेद्य अंधकार में छिपनेवाली रहस्यमयी नियति का X X नील आवरण उठा कर झांकने वाला (स्कंद०—प्रसाद, २५)

### सूत की तरह तोड़ना

बिना परिश्रम तोड़ देना। प्रयोग—गृह गुरु-लाज सूत सौ तोड़पी, डरी नहीं व्यवहार (सू० सा०—सूर, १६१४)

### सूतक लगाना

छूत लगनी। प्रयोग—ऊठल बंठल सूतक लागे सूतक परे रसोई (कबीर पंथा०—कबीर, २८८)



### सूरज की तरह चढ़ना

पूरी प्रताप से चढ़ाई करनी। प्रयोग—सूरि के चड़े भातु होइ रतन होइ जल मोन (पद०—जायसी, ३८११)

### सूरज को लहर आना

लहरने जैसा कष्ट होना। प्रयोग—मुनतहि राजा गा मुकछाई। जानहु लहरि मुरज के घाई (पद०—जायसी, १०२१)

### सूरज के सम्मुख लुगनु

लुगना में अत्यंत सामान्य होना। प्रयोग—महिमा घमित मोरि मति थोरी रवि सम्मुख लखोनि अजोरी (राम० (अ)—तुलसी, ७०१)

### सूरज को दीपक दिखाना

महान या गूणी व्यक्ति को कुछ मामूली बात बतानी; जो स्वयं विख्यात हो, उसका परिचय देना। प्रयोग—उसकी अधिक प्रशंसा करनी मानों सूर्य को दीपक दिखाना है (सौ०—श्र० सं०, ४०)

### सूरज चढ़ना

सबेर होना कुछ देर होनी। प्रयोग—भएउ बिहान भान पुनि चढ़ा। सहसहुं करा कैस बिधि गढ़ा (पद०—जायसी, ४३९); सूर्य चढ़ आया और मुझे सबर न हुई (पदम पराग—पदम० अर्मा, २७२)

### सूरज झुकना

(१) शाम होनी। प्रयोग—कब तक वे बातें करते रहे यह उन्हें प्यार नहीं रहा पर अब सूर्य झुकने लगा था (देवकी०—रा० रा०, ००)

(२) घबराती होनी।

(समा० महा०—सूरज ढलना)

### सूरज डूबना

शाम के समय सूर्य का अस्त होना। प्रयोग—दिनान्त था ये दिननाव डूबते (प्रिय०—हरिओध, ११५)

(समा० महा०—सूरज छिपना)

### सूरज पर धूल फेंकना

किसी निर्दोष या साधु पुरुष को लालन लगाना। प्रयोग—एल जिगने रवि पर फेंकी, निरी वह उसके ही मूह पर (लैदेही०—हरिओध, ३७)

(समा० महा०—सूरज पर धुकना, धूल भोंकना)

### सूरज सिर पर चढ़ आना

दीपहर होनी। प्रयोग—सूरज सिर पर चढ़ आया, चर्वा कातते पमीना चुवा आया (ढोने०—रा० रा०, ३७)

### सूरत आंखों से न उतरना

हर समय प्यान बना रहना। प्रयोग—उमकी सूरत उमकी आंभों से कभी न उतरनी थी (प्रेमा०—प्रेमचंद, ३६८)

(समा० महा०—सूरत आंखों में फिरना)

### सूरत दिखाना

(१) सामने घाना। प्रयोग—तब भला क्या निकालते सूरत जब कि सूरत सके नहीं दिखला (चुमते०—हरिओध ९७)

(२) थोड़े समय के लिए किसी में मिलना।

### सूरत निकालना

(१) सुधार कर प्रच्छा बनाना। प्रयोग—इस प्रकार दो महीने के धम और नये अभिनेताओं की लग्न, सहयोग और सहृदयता से मैंने अभिनेताओं का उन्वारण ठीक कर, प्रतिदिन रिहर्सन लेकर नाटक की सूरत निकाल दी (पल्ले—अश्क, २८)

(२) कोई व्यक्ति सोचना। प्रयोग—तब भला क्या निकालते सूरत जब कि सूरत सके नहीं दिखला (चुमते०—हरिओध, ९७)

### सूली पर चढ़ना

(१) किसी संभट या खतरे के काम को करना। प्रयोग—चढ़ जा बेटा सूली पर भगवान् सब भला करेगा (मिल्ला०—कौशिक, १८८)

(२) फाँसी द्वारा मृत्यु को प्राप्त होना।

(समा० महा०—सूली पर लटक आना)

### सैंत का

बहुत ज्यादा; बिना दाम का। प्रयोग—मुनू मैया ! याके मुन मोगी, इन मोहि नयो बुलाई। दधि में पड़ी सैंत की मोपे चीटी सबे कड़ाई (सु० सा०—सूर, ९४०)

### सैंध मारना

(१) झलित करना; पैसा चुसना। प्रयोग—सभी गरीब का खून चुसते हैं, गरीबों के भोंपड़ों में सैंध मारते हैं (प्रेमा०—प्रेमचंद, ११०)

(२) मकान में छेद बना कर चोरी करनी।

(समा० महा०—सैंध लगाना)



### सिर पर से छाया उठ जाना

कोई सहायक या प्रेमभावक न होना। प्रयोग—दोनों बच्चे ही थे, जब उनके सिर से उनके पिता की छाया उठ गई थी (चेतन—अटक, २१५)

(ममा० मुहा०—सिर पर से साया उठ जाना)

### सिर पर सेहरा बांधना

दायित्व देना। प्रयोग—सीस पर तुम्हारे सब सेहरा समर का बांध भेजा है फलहवाब होने को दक्षिण में (पारो—निराला, २२१-२२२)

### सिर पर सेहरा होना

(१) प्रशंसित होना। प्रयोग—सिर लिये हथेली पर जो उसके सिर सेहरा धरना है (नूत०—मक, ५५)

(२) प्रदान होना।

### सिर पर हाथ फेरना

(१) आशीर्वाद देना; कृपा करनी; शरण में लेना। प्रयोग—बेतरह फेर में पड़े हम हैं। फेरते हाथ क्यों नहीं सिर पर (चुमते०—हरिऔध, ३)

(२) धोखा देना या बहकाना।

(३) प्रेम दिखाना।

### सिर पर हाथ रखकर रोना

अपने भाग्य को रोना। प्रयोग—मृष्टि को क्रम संग जानि बिबि बावरो मूड़ पै हाथ धरि बहुत रोयो (मा० ग्रंथा० (२)—भारतेन्दु, ४३७); न मानोगी, तो सिर पर हाथ धर कर रोवेगी भी (मा—कौशिक, ५२); मर जाऊंगा तो घाय सिर पर हाथ धर कर रोवेंगे (गोदान—प्रेमचंद, २५)

### सिर पर हाथ रखना

सहायक होना; छत्रछाया होनी। प्रयोग—कबीर तू काहे डरे सिर पर हरि का हाथ (कबीर ग्रंथा०—कबीर, ५५); तो फल सिद्धि होइ सूरज, गुरु मार्ग हाथ धरे (सू० सा०—सूर, ४३२६); मेले चरन चारु चारु सुत मार्ग हाथ दिखायो (गीता० (वा)—तुलसी, १७); तुमने इनके सिर हाथ न रखा होता तो आज इनकी न जाने क्या गति होती (मान० (१)—प्रेमचंद, ११); हाथ रखिये अनाथ के सिर पर कान पर हाथ आप मत रखिये (चुमते०—हरिऔध, ११५); सिर पर पिता का हाथ रहे (दूधगाछ—दे० स०, ४५)

### सिर पर होना

(१) निकट होना। प्रयोग—परम प्रबल रिपु सीम पर तदपि सोच न चास (राम० (ले)—तुलसी, ८७१); मुकदमा दाखल करने के लिए अभी काफी वक्त है लेकिन यह एडवोकेट सिर पर आ गया है और मुझे सब से फिक्र यही है (गोदान—प्रेमचंद, २३८); परीक्षा सिर पर है, कहीं जा ही नहीं पायी है (शुभा० (१)—यशपाल, ९२)

(२) सहायक होना। प्रयोग—अब क्या सोचें आई बनी सिर पर साहिब राम धनी (कबीर ग्रंथा०—कबीर, ११८); सहज सूर कवि भालु सब पुनि सिर पर प्रभु राम (राम० (सु)—तुलसी, ८५१); काहु कौ न डर, सेनापति श्री निहल सदा, जाके सिर ऊपर नू माई राम तोषो है (क० र०—सेनापति, ८९); मुझे मालूम हो कि मैं भी स्त्री हूँ, मेरे सिर पर भी कोई है (कर्म०—प्रेमचंद, १५८)

(३) ऊपर होना; जिसके वश में हम हों। प्रयोग—तब झितडर जिय घड़ा न तोरें। पातसाहि है सिर पर मोरें (पद०—जायसी, ४७६); दुर्भाग्यवश इस समय जो व्यवस्था हमारे सिर पर है, उसमें हम बात की छुट है (अशोक०—ह० प्र० द्वि०, १५७)

(४) मान्य होना। प्रयोग—जो यह बचन तो मार्ग मोरें। सेवा करो ठाढ़ कर मोरें (पद०—जायसी, ४४५); सम्राट की आज्ञा हमारे सिर पर है (अम्ब०—रा० वै०, ६०)

(५) दायित्व होना। प्रयोग—बहु के सिर बड़ा पाप है, इसमें इतना लोभ छीक नहीं (इस्ता०—मग० तर्मा, ९५); यह काम उसने इतना भारी समझा है कि उसका भार सारे मनुष्यों को बांट दिया है, दो-चार माननीय लोगों के ही सिर पर नहीं छोड़ रक्खा है (चित्ता० (१)—शुक्ल, २०)

### सिर पीट लेना

भाग्य पर रोकर बैठ जाना। प्रयोग—अच्छा तो सब रहस्य खुला। मेने सिर पीट लिया (मान० (१)—प्रेमचंद, २८७)

### सिर पीट-पीट कर रोना

बहुत रोना या पछताना। प्रयोग—नाज सिर पीट पी कर रोई सिर गये पेट पेटवाली का (बोल०—हरिऔध, २२१)



### सिर पीटना

(१) शोक करना। प्रयोग—बुढ़िया नायका सिर पीट रही थी (मान० (२)—प्रेमचंद, ५५)

(२) प्रयत्न करना।

### सिर फटना

सिर में बहुत पीड़ा होनी। प्रयोग—सारी देह बक कर चूर-चूर हो रही थी × × सिर पीड़ा से फटा पड़ता था (मान० (१)—प्रेमचंद, २३९)

### सिर फिर जाना

(१) विचार बदल जाना। प्रयोग—झोकरा तो ऐसी न थी, पर नौड के साथ उसका सिर भी फिर गया (कर्म०—प्रेमचंद, ११५); है सुधारों की वहाँ पर घाम क्या हो जहाँ पर सिर धरों का सिर फिरा (चुमते०—हरिऔध, ११८) (÷)

(२) उन्माद होना। प्रयोग—मर्मा विद्वकर बोली—तुम्हारा सिर फिर गया है (परली०—रैजू, ३०१); अगर इससे लड़का हो जाता तो हमारा क्या सिर फिरा हुआ था (सु० सु०—सुदर्शन, २४६)

(३) घमंड होना। प्रयोग—तुमने तो अभी केवल एक दरजा पोस किया है और अभी से तुम्हारा सिर फिर गया (मान० (१)—प्रेमचंद, ८२); देखिए प्रयोग (१) में (÷) भी।

### सिर फोड़ना

(१) माया-पच्ची करना। प्रयोग—विषय कर्म की कंचुली, पहिर हुआ नर नाग। सिर फोड़े मूर्ख नहीं, को आगिला अभाग (कबीर ग्रंथा०—कबीर, ४१)

(२) तु-तू में-में करनी। प्रयोग—अब तक बराबर सभाओं में जाकर एक दूसरे का सिर इसीलिये फोड़ते हैं जिसमें धर्म की उन्नति हो (श्या० ग्रंथा०—राधा० दास, ६३४)

(३) कपाल-क्रिया करनी।

### सिर बेचना

(१) पूर्ण समर्पण करना। प्रयोग—बैच तेरे हाथ जिसने सिर दिया फिर उते क्या सिर गया या सिर रहा (बोल०—हरिऔध, ७)

(२) प्राण जाने की संभावना होते हुए भी किसी काम को करना।

### सिर मड़ना

(१) जबरदस्ती किसी वस्तु को किसी के जिम्मे लगाना। प्रयोग—घाय जो बे मर रहे हैं तो मरें क्यों मृगीवत बेमुही सिर मड़गे (चुमते०—हरिऔध, १६०)

(२) किसी कार्य के लिए किसी को उत्तरदायी ठहराना। प्रयोग—लोग घाना प्रोध स्वीकार करते हैं भय स्वीकार करते हैं × × पर ईश्या का नाम कभी मूढ़ पर नहीं लाते; ईश्या से उत्पन्न अपने कार्यों को दूसरी मनोवृत्तियों के सिर मड़ते हैं (चिता० (१)—शुक्ल, १२३); पड़ निख बेसी भूलों को लेखक के सिर तो कहा संशोधक के सिर भी नहीं मड़ते (गु० नि०—बा० मु० गु०, ४५३); अभी तह-सौन्दर साहब लश्करवालों की सारी बेइन्साफियों का इलाज घायके ही सिर मड़ रहे थे (प्रेम०—प्रेमचंद, २०२)

### सिर मानना

दे० सिर धरना

### सिर मारना

(१) समझाते-बसझाते हैरान होना। प्रयोग—क्या करोगे तौर पत्थर पर चला कूद से सिर मारते कब तक रहे (बोल०—हरिऔध, १६)

(२) सिर सपाना; प्रयत्न करना। प्रयोग—बहुतन्हु अंस रोड़ सिर मारा। हाथ न रहना झूठ संसारा (पट०—जायसी, ३४१५); यदि खुरपो कुदाल हो करना है तो मदरसे में कितायों से सिर मारने की क्या जरूरत? (मान० (८)—प्रेमचंद, ८३); महिपाल ने यथावकाश महीनों सिर मारा, परन्तु वह नगर के प्राचीन इतिहास को ठीक तरह से न जान पाया (बूट०—अ० ना०, २२७); मेरा जी ठिकाने नहीं है झूठ ही में इधर-उधर सिर मार रही हूँ (ठेठ०—हरिऔध, ३२)

(३) तर्क-वितर्क करना; झकझक करनी। प्रयोग—कल महुरी से घंटों सिर मारा (मान० (४)—प्रेमचंद, १००)

### सिर मुड़ाते ही ओले पड़ना

कार्यारम्भ होते ही विघ्न पड़ना या बुरा फल मिलना। प्रयोग—मैं जानता कि सिर मुड़ाते ही ओले पड़ेंगे, तो मैं विवाह के नजदीक ही न जाता (रावन—प्रेमचंद, ३४); है मृगीवत की घटा घहरा रही क्यों न ओले सिर मुड़ाते ही पड़ (बोल०—हरिऔध, १४)



### सिर रखना

सादर स्वीकार करना। प्रयोग—रिपि घाघगु घघोस सिर राखी (राम० (अ)—तुलसी, ५७५)

### सिर रगड़कर मर जाना

कितना भी प्रयत्न करना। प्रयोग—भाहव सिर रगड़कर मर जायें, तो भी अब जमीन नहीं पा सकते (रंग० (१)—प्रेमचंद, २२०)

### सिर रगड़ना

गिड़गिड़ाना; खुशामद करनी। प्रयोग—जो रहीम पग तर परे, रगरि नाक धर सीध (रहीम कवि०—रहीम, १०)

### सिर लेना

दे० सिर पर लेना

### सिर सफेद होना

बुढ़ापा आना। प्रयोग—करम करम करि करमन कर, पाप करम न कर मुड़, सीध भयो सेत है (क० र०—सेनापति, १००)

### सिर सूंघना

बड़ों का मंगल-कामना के लिए छोटों का मस्तक सूंघना। प्रयोग—प्यार की बास में न बस में रह सिर उमग लोग सूंघ लेते हैं (बोल०—हरिऔध, १४)

### सिर से खेलना

(१) प्राणों की परवाह किए बिना किसी काम में लग जाना। प्रयोग—क्या हमें थोड़ा मिला लाखों मिले सिर मंवाया जो न सिर से खेल कर (बोल०—हरिऔध, १३)

(२) दूसरों को लड़ाना।

### सिर से पैर तक

आरम्भ में अंत तक; सर्वांग। प्रयोग—पाइन ते मिल ली लखि कै कवि बोधा मजा बरनी यक छोटी (इश्क०—बोधा, १०); चारदिवारी के बाहर निकलते ही कवि है—सिर से पांव तक (मान० (७)—प्रेमचंद, ५); घबछा लीजिए, मेरा कहा सब झूठ है। सिर से पांव तक झूठ (कल्याणो—जेनेन्द्र, ५०); बाहर निकलो, बाहर तुमको सिर से पैर तक न रंग दिया घोर नवा न दिया तो मेरा नाम निम्नी नहीं (मृग०—पू० वर्मा, ५)

### सिर से पैर तक आग लग जाना,—जल जाना

अत्यन्त क्रोध होना। प्रयोग—रामेश्वरी के सिर से पांव तक आग लग गई (मान० (४)—प्रेमचंद, १०३); समार में ऐसी भी कोई स्त्री है, जिसका पति उसका दुंगार देखकर सिर से पांव तक जल उठ (मान० (३)—प्रेमचंद, २३)

### सिर से पैर तक जल जाना

दे० सिर से पैर तक आग लग जाना

### सिर से बला टालना या टालना

(१) आफत या भ्रष्ट हुटना या हुटाना। प्रयोग—हिमी तरह यह बना सिर से टले आर चैत से मोय (मान० (१)—प्रेमचंद, ६१)

(२) बिना मन से काम करना।

### सिर से बोझ डाल देना

सांसारिकता के बोझ से मुक्त करना या होना। प्रयोग—सतगुरु की कृपा भई, डारवा सिर से बोझ (कबीर ग्रंथा०—कबीर, ४४)

### सिर से भूत उतरना

धुन दूर होनी। प्रयोग—जब तक एक दफे अच्छी तरह मार न खा जायगा, इनके सिर से भूत न उतरेगा (रंग० (२)—प्रेमचंद, १३२)

### सिर से लेकर पैर तक देखना

अच्छी तरह देखना। प्रयोग—घेवर ने एक बार फिर उसे सिर से पैर तक देखा (शेखर (२)—अज्ञेय, ५२)

### सिर सौंपना

आत्म-बलिदान करना। प्रयोग—जब लग सिर सौंपे नहीं, कारज निधि न होइ (कबीर ग्रंथा०—कबीर, ६९)

### सिर हथेली पर लिये फिरना

मृत्यु से न डरना, जान की बाजी लगाकर कोई काम करना। प्रयोग—लोक हित के हाथ जिनके सिर बिके वे हथेली पर लिये ही सिर फिरे (बोल०—हरिऔध, ९); जो हथेली पर लिये ही सिर फिरे टालने को जाति के सिर की बला (बुभते०—हरिऔध, १०४)

(समा० मुहा०—सिर हथेली पर लिये रहना,—हाथ पर लिये फिरना)



### सिर होना

(१) बार-बार किसी बात का घायल करके तंग करना । प्रयोग—रामू की दुल्हन को जब मालूम हो गया कि सुभाणी घर न करेगी तो और भी उसके सिर हो गयी (मान० (१)—प्रेमचंद, २५०); कह दिया था हो सकेगा अब न कुछ आज फिर क्यों आप यों सिर हो गये (बोल०—हरिश्चंद्र, १३)

(२) उलझ पड़ना; तंग करना । प्रयोग—मुझ से नहीं हो सकता कि कोई दो-बार दिन के लिए आ जाय तो उसके सिर हो जाऊँ (मान० (४)—प्रेमचंद, १०४)

(३) सादर स्वीकार होना । प्रयोग—राउर राय रजायमु होई राउरि सपथ सही सिर मोई (राम० (अ)—सुलसी, ६५४)

(४) जिम्मे होना । प्रयोग—स्पिनिसपेलीटी के कार्य निर्वाह का बोझ एक आदमी के सिर नहीं है (परीक्षा०—श्री० दास, ७४)

(५) संदेह करना ।

### सिर-आंखों के बल करना

बड़े उत्साह से करना । प्रयोग—घौर जो काम तुम कहो, वह सिर-आंखों के बल करोगी, मगर घर करने को मन्ते न कहो (मान० (१)—प्रेमचंद, २५०)

### सिर-आंखों पर बैठाना,—रखना

बहुत आदर-सत्कार करना । प्रयोग—मेरे जैसे विद्वान को वे लोग सिर-आंखों पर रखेंगे (ताण०—१० पृ० द्वि०, १४४); कोई मेहमान आ जाता तो उसे सर-आंखों पर बैठाने (प्रेमा०—प्रेमचंद, ९); प्यार खपकना है जिसकी आंखों में रखें लोग क्यों उन्हें न सिर आंखों पर (बोल०—हरिश्चंद्र, १२)

(नमा० मुहा०—सिर आंखों पर आना)

### सिर आंखों पर बैठाना,—रखना

(१) सादर स्वीकार करना । प्रयोग—काम पूरा हो जाने पर तुजूर जो कुछ अपनी सुगी में अंश करेगी वह सिर आंखों पर रखूँगा (प्रेमा०—प्रेमचंद, १४५)

(२) दे० सिर आंखों पर बैठाना

### सिर आंखों पर रहना

बड़े स्नेह या आदर में रहना । प्रयोग—मझका दाने दिनों

बाद घर घाया है, हमारे सिर आंखों पर रहे (मान० (८)—प्रेमचंद, १४)

### सिर-आंखों पर होना

(१) सहर्ष स्वीकार होना । प्रयोग—मैं असमर्प हूँ, हाँ उनकी अगुही मेने सिर आंखों से स्वीकार की (मा० प्र० (१)—भारतेन्दु, ६४१); भगवान की आज्ञा सिर आंखों पर (अम्ब०—रा० वै०, ४०); बुजुर्गों मुझसे भइ गयो है, यह मेने पिछली बार ही कहा था; और जो तूम् ओढ़ाओ सिर आंखों पर, मगर पहले वह अपराध की कबली भाइ लूँ तब न (नदी०—अशोक, २६५-२६६)

(२) माननीय होना । प्रयोग—आप लोग मेरे सिर पर हैं पर मैं क्या करूँ क्योंकि मैं परधीन हूँ (मा० प्र० (१)—भारतेन्दु, ३०६); भेलादेई X X बोली—जी आमांनू (आगत को स्वागत) सिर आंखों पर आइये, आप बैठिये ता (झुठा० (१)—यशपाल, ६५)

### सिर-आंखों से

सहर्ष । प्रयोग—मितेज सेवक—तो आप ही चले जाइए न ? ईश्वर सेवक—सिर घोर आंखों से; मेरा तांगा मंगवा दो (रंग० (१)—प्रेमचंद, ६८)

### सिर-छपी करना

### दे० सिर छपाना

### सिर-चढ़ा

मुंह लगा—पुष्ट । प्रयोग—लोग कहें यह सर चढ़ी हो सी चडों पिय लागि (पट०—जायसी, ३४४); यह सिर-चढ़ी तो स्वयं ही दूल्हा खोज कर आई है (सितली—प्रसाद, १६१); ये सभी दीठ, चंचल, सरचढ़ी सहेनियों की तरह मुझे घेर लेती हैं (कनु०—भारती, २४)

### सिरताज होना

सर्वश्रेष्ठ होना । प्रयोग—हमारी सखी सब कवियों की सिरताज तो हुई (मा० प्र० (१)—भारतेन्दु, ३७६)

### सिर-तोड़

बेहद; बहुत अधिक; जी जान से । प्रयोग—नारायण शास्त्री दांत पीसते और सिर तोड़ परिश्रम अपने गज की पुष्टि के लिए करते (झासी०—दु० वर्मा, ४२); खोद देने के



**स्वांग करना,—बनाना,—भरना**

(१) भूटी नकल करनी; डोंग करना । प्रयोग—देखा देली स्वांग घरि भूले भटका साहि (कबीर ग्रंथा०—कबीर, २५४); कहा भयो रवि स्वांग बनायो, अंतरिजामी निकट न आयो (कबीर ग्रंथा०—कबीर, १३२); की करि लियो स्वांग बीबहि तें, बैसैहि लागत कांचे (सू० सा०—सूर, ४१३४); घालि रह सारा भ्वांग अपनी धाक बँटाने के लिये ही किया था या कुछ धीर (गवत—प्रेमचंद, १७); परन्तु जिस काम को कभी नहीं किया, उसे करते नहीं बनता, स्वांग भरने नहीं बनता (स्कंद०—प्रसाद, १४७); निस्संदेह इस सफलता के लिए मुझे स्वांग भरने पड़े (प्रेमा०—प्रेमचंद, ४२४)

(२) वेश बदलना ।

(३) किसी का उपहास करने के लिए भड़ी शकल बनाकर मजाक उड़ाना ।

**स्वांग बनाना**

दे० स्वांग करना

**स्वांग भरना**

दे० स्वांग करना

**स्वाद चखना**

अनुभव करना । प्रयोग—हो चूके देश पर निछावर जो स्वाद जो जाति प्यार का चख लें (सुमते०—हरिऔध, ५)

**स्वाद चखाना**

किसी को उसके किये अपराध का दंड देना । प्रयोग—देहें उनको स्वाद तुरतहि दिनहि चखाई (राधा० ग्रंथा०—राधा० दास, ५९९)

**स्वार्थ का अखाड़ा होना**

सब का स्वार्थ में लीन होना । प्रयोग—सारा संसार स्वार्थ का अखाड़ा ही तो है (अशोक०—हु० प्र० द्वि०, १३)

**स्वार्थ के गाहक होना**

स्वार्थी होना । प्रयोग—तुम जति सब स्वारथ के गाहक, नेह न जानत आयो (सू० सा०—सूर, ४४६६)

**स्वार्थ में बंधे**

मतलबी दोस्त । प्रयोग—तेरा संगी को नहीं, सब स्वारथ बंधी लोह (कबीर ग्रंथा०—कबीर, २६)

(समा० मुहा०—स्वार्थ के सगे)

**स्वास्थ्य गिरना**

स्वास्थ्य खराब होना । प्रयोग—मेरा स्वास्थ्य उन दिनों गिरना शुरू हो चुका था (पैतरे—अशक, २५)



### हंसकर

(१) लुगो-लुगो । प्रयोग—जोरहि न चाहें पन पूरो नित  
 खे निबाहें, हारें हंसि घापो, ओति माने नेह-नीति है  
 (घन० कवित-घना०, १६१)

(२) उपेक्षा का भाव ।

### हंस कर टाल देना, हंसी में उड़ा देना

तुच्छ या साधारण बनाकर टाल देना । प्रयोग—तब भला  
 घोर चाल क्या चलते टाल देते न बात क्यों हंस कर  
 (बोल०—हरिऔध, १०६); किस तरह से हंसी उड़ाये हम  
 वे हंसी में हमें उड़ा देंगे (बोल०—हरिऔध, १०५)

### हंस का भाग कौण द्वारा लिया जाना

प्राप्य व्यक्ति को मिलनेवाली वस्तु अयोग्य के पास जानी ।  
 प्रयोग—परिमिति मणु लाज तुमही को, हंस को भाग काग  
 लें जाइ (सु० सा०—सुर, ४७८८)

### हंस बनाते-बनाते कौआ बना देना

अच्छी और बुरी वस्तु बनाते-बनाते बुरी बना देना ।  
 प्रयोग—सोचहि दुषण देवाहि देही । विरजत हंस काग  
 किय जेही (राम० (वाल)—तुलसी, १८३)

### हंस-कौण का साथ होना

परस्पर विरोधियों का साथ होना । प्रयोग—हंस काग को  
 मग भयो (सु० सा०—सुर, ४०३६)

### हंस-मुख होना

हर समय प्रसन्न रहनेवाला । प्रयोग—राउ राक सब घर-  
 घर मूखी । जो देखिअ गो हंसवा मूखी (पद०—जयसा,  
 २१२)

### हंस-हंस कर गले लगाना

प्रसन्नता से स्वीकार करना । प्रयोग—घर कत लाइ लड़ाइ  
 राग, रस, हंसि-हंसि कंठ लगावै (सु० सा०—सुर, ४२७३)

### हंसते हंसते

प्रसन्नता पूर्वक । प्रयोग—जिन चूड़ावतों ने मेवाह के मान  
 की रक्षा के लिए सदा हंसते-हंसते प्राण चड़ाए हैं X X  
 उनके दो-एक सरदारों की कुबुद्धि का दंड सम्पूर्ण शाखा  
 को देना उचित नहीं होगा (विप०—प्रेमी, ३१)

(समा० मुहा०—हंसते-खेलते,—बोलते)

### हंसते-हंसते दोहरा हो जाना,—पेट में बल पड़ना, —लोटपोट हो जाना

बहुत हंसी घानी । प्रयोग—सा साहब के हंसते-हंसते पेट  
 में बल पड़ गए (दूधगाछ—दे० स०, ९६); जीनत हंसते-  
 हंसते दोहरी हो गई (ऊठ०—दे० स०, १११); किंतु यदि  
 लेखक के दृष्टिकोण से देखा जाय तो जिसे देखकर दर्शक  
 हंसी के मारे लोटपोट हो गये, वह केवल नाटक का पैरोका  
 मात्र है (पैतरे—अशक, ३९); देख खेर गीदड़ का बनना  
 हंसते-हंसते लोट गये हम (बोल०—हरिऔध, १०६)

### हंसते-हंसते पेट में बल पड़ना

दे० हंसते-हंसते दोहरा होना

हंसते-हंसते लोट-पोट होना

दे० हंसते-हंसते दोहरा होना

### हंसना

उपहास करना । प्रयोग—हंसहि बक दादुर चातकही हंसहि  
 मलिन खल विमल बतकही (राम० (वाल)—तुलसी, १५);  
 हंसिबेवारे सब दुखित दुख नूझत बिरलन (राधा० ग्रंथा०—  
 राधा० दास, ४५); तब दोनों भी तो बहुत ममूढ़ और भरे  
 पूरे नहीं हो कि मेरे पति को हंसते हो (गुलेरी ग्रंथा (१)—  
 गुलेरी, १८); बिना बर्षी किये जा नहीं सकता, पिता को  
 लोग हंसते (लिली—निराला, ९५)



### हंसने लायक

उपहास करने योग्य । प्रयोग—हंसिबे जोग हंस नहि सोरी (राम० (बाल)—तुलसी, १५)

### हंसाई होना

उपहास होना । प्रयोग—जो जनतेउ बिनु भट भुवि भाई । तो पनु करि होतेउ न हंसाई (राम० (बाल)—तुलसी, २६०)

### हंसी उछालना

हसना । प्रयोग—बुकस्टाल का मानिक कंधे फड़काता, हाथ मलता धिकार की तरफ बढ़ा और एक बेतकल्लुक हंसी उछालते हुए बोला—कुछ भी चून लीजिए (कठ०—दे० स०, १२)

### हंसी उड़वाना या उड़ाना

व्यंगपूर्ण निंदा करना; या करवाना । प्रयोग—लाला सीताराम को सम्यता का पावन्द बताकर उनकी बहुत हंसी उड़ाई है (गु० नि०—बा० मु० गु०, ४२९); इस हासिक कामना की प्रकट करके वह अपनी हंसी न उड़वाना चाहती थी (गवर्न—प्रेमचंद, ४५); मेरे स्कूल के लड़के भी आपका नाम आदर से लेते हैं, हालांकि शहर के और वड़े रईसों की हंसी उड़ाने हैं (प्रेमा०—प्रेमचंद, ३८५); जिस तरह से हंसी उड़ाये हम वे हंसी में हमें उड़ा देंगे (बोल०—हरिश्चंद्र, १०५)

### हंसी कराना

उपहासास्पद बनना । प्रयोग—काहे भी कटु वचन कहत हो, करत आपनी हांसी (सू० सा०—सूर, ४१६१); वर अनुहारि बरात न भाई । हंसी करेहु पर पुर जाई (राम० (बाल)—तुलसी, १०४)

### हंसी का काम करना

ऐसा काम करना जिससे लोगों को उपेक्षा करने या हंसी उड़ाने का मौका मिले । प्रयोग—हम हंसों का काम करते हैं नहीं (बोल०—हरिश्चंद्र, १०५)

### हंसी का फौव्वारा छूटना

बहुत हंसी आनी । प्रयोग—दूसरी ओर भाड़ों की तकलें जारी थी, जिससे परिहास और अट्टहास के फव्वारे छूट रहे थे (झांसी०—पुं० वनी, ४६२); × × कई लोग उन्हें घेरे इस स्कीम को सुनते हुए हंसी के फव्वारे छोड़ रहे थे (बुट०—अ० ना०, ३७०)

### हंसी की रेखा

हंकी हंसी । प्रयोग—एक मूर्त के लिए एक भीगी हंसी की रेखा उनके मूखे घघरों पर खेच गई (वाण०—४० प्र० दि०, १३८)

### हंसी खेलना

हंसी छा डानी । प्रयोग—सभी के मूरभे कपोलों पर हंसी खेलती है (लिली—निराला, ६१)

### हंसी में उड़ा देना

दे० हंसकर टाल देना

### हंसी चारना

‘ऐसी हंसी चूल्हे में जाय’—इस अर्थ में प्रयोग । प्रयोग—पठ देहु मेरे लाल लईवै, वारों ऐसी हांसी (सू० सा०—सूर, ३७९७)

### हंसी से दोहरा होना

हंसते-हंसते लोट-भोट होना । प्रयोग—लड़के हंसी से दोहरे हुए जा रहे थे (पैतरे—अश्क, २२)

### हंसी होना

उपहास होना । प्रयोग—हांसी होम लगी बज में, जोगहि राखहु मोई (सू० सा०—सूर, ४१६०); हंस रहे हैं लोग तो हंसते रहे है घगर होती हंसी होती रहे (बोल०—हरिश्चंद्र, १०५)

### हंसी-खेल होना

साधारण या तृच्छ काम होना । प्रयोग—इससे और सी० घाई० डी० वालों को सबक मिलेगा कि किसी का अपमान करना हंसी-खेल नहीं है (शेखर (२)—अज्ञेय, ५७); पामल-पन की नकल करना कुछ हंसी-खेल नहीं, भूल-बूक से कुछ समझदारी की बात मुंह से निकल ही जाती है (चित्ता० (१)—शुक्ल, २८)

### हक्का-बक्का रह जाना

विस्मित होना । प्रयोग—जब मूरज छिए गया × × तब तो कुंवर उदैमान भूला प्यासा उनीदा, जंभाडया और घंगड़ाइया लेता हक्का बक्का होके आसरा लगा दुवने (इंशा०—इंशा०, ९१); अद्भुत रस में तो सभी आदर्य की बात देव मुन के दांत बाप, मुंह फेंकाव के हक्का-बक्का रह जाते हैं (प्र० पौ०—प्र० ना० नि०, ७४); फूलमयी हक्का-



बक्का होकर उसका मुंह ताकने लगी (मान०(१)—प्रेमचंद, ५९); अम्मी जान वह बात सुन कर हक्की-बक्की रह गई, जैसे उनके हाथों के तोते उड़ गये हों (कठ०—द० स०, २१०)

### हजम करके डकार तक न लेना

किसी वस्तु या बात को एकदम अपने तई रख लेना, उसकी कोई किन्ना-प्रतिकिन्ना न प्रगट करनी; पूरी तरह हटप जाना। प्रयोग—आप तो मेरे कई पत्रों को हजम कर गये, डकार तक न लीं यानी पट्टप तक न लिखी (पट्टम० के पत्र—पट्टम० शर्मा, ११०)

### हजम करना

(१) किसी के मान की बेइमानी में पका जाना; हटप जाना। प्रयोग— $\times \times$  ज्यादा रुपये होने पर छिटा रखने के सिवा, सीधे रास्ते में हजम नहीं किसे जा सकते (चोटो०—निराला, १०३); तुम्हारा मनोवांछित उद्देश्य यही है कि सफे का बड़ा भाग किसी-न-किसी होले में आप हजम करो (रंग० (१)—प्रेमचंद, ८२)

(२) बात को अपने ही तई रखना।

### हज़ार तरह से

बहुत तरह से। प्रयोग—सारी निशा मतिराम मनोहर, कैल के पुत्र हज़ार उधारे (मति० मक०—मतिराम, ९५)

### हज़ार मुंह से

अत्यधिक; अनेक प्रकार से। प्रयोग—लगे सराहन सहस्र मुख जानि जनम निज बाँटि (राम० (बाल)—तुलसी, ३१६)

### हज़ार हाथ

निश्चय ही; घासानों से। प्रयोग—रूपरत्न से काम तो हज़ार हाथ निश्चय ही बन जायगा (सूँद०—अ० ना०, ४५५)

### हज़र में हाज़िर रहना या होना

खिदमत में हाज़िर रहना। प्रयोग—साईं मूं साचा भवा, रहसी मुदा हज़र (कबीर ग्रंथा०—कबीर, ६८); रज्जु ले सबे हज़र होति लुम, सहित मुता वृषभानु (सू० सा०—सूर, ४०६३)

### हटक न मानना

किसी के मना करने पर भी काम करने से न रुकना। प्रयोग—बंसीधनि मुहु कान परत ही गुरुजन-हटक न मानति (सूर—हि० श० सा०)

### हटतार होना

टकटकी लगनी। प्रयोग—वह रूप की रासि लखी तब त सबी आविन के हटतार भई (घन० कवित्त—घना०, १३९)

### हट्टा-कट्टा

हृष्ट-पृष्ट। प्रयोग—अभी जब हट्टा-कट्टा सांड बना है तब तो यह रोनी मुरत है तो बुझाये म तो बात पूछने रो देवा (मा० ग्रंथा० (१)—भारतेन्दु, ५६०); आप-सा  $\times \times$  हट्टा-कट्टा हेहमास्तर इस तरह बुझार की जद में कैसे घा गया? (पट्टम० के पत्र—पट्टम० शर्मा, २०८); देवदर की दवा से मैं अभी जबान हू; हट्टा-कट्टा हू (मिखा०—कोशिक, ४८)

### हठ पड़ना—हठ माँड़ना

हिद पर घड़ रहना। प्रयोग—मनु हठ परा न सुनइ मिखावा (राम० (बाल)—तुलसी, ८९); क्यों हठ माँड़ रही री सजनी! टेहन श्याम गुजान (सूर—हि० श० सा०)

(समा० मुहा०—हठ ठानना,—पकड़ना,—घांघना)

### हठ माँड़ना

### दे० हठ पड़ना

### हड्डियां चलना

शक्ति का साव देना। प्रयोग—जब तक हड्डियां चली, मैंने काम किया (गौली—चतुर०, ३४४)

### हड्डियां लोहे की होना

बहुत ताकतवर और बिमहा आदमी होना। प्रयोग—मूरदास था तो दुबला-पतला, पर उसकी हड्डियां लोहे की थी (रंग० (१)—प्रेमचंद, १८५)

### हड्डी-तोड़ परिश्रम

बहुत कड़ी मेहनत। प्रयोग—ठेकेदार के यहां बीस रुपये माहवार पर उसका बीबीस घंटे हड्डी तोड़ परिश्रम! (ज्ञान०—यशपाल, ७०)

### हड्डी-पसली तोड़ना

बहुत मारना-पीटना। प्रयोग—हर के मारे मैंने अभी तक इनकी मारपीट नहीं की। अब हड्डी-पसली तोड़ता हूँ (झासी०—वृ० वमां, १०१)

(समा० मुहा०—हड्डी-हड्डी तोड़ना दुकस्त,—करना)

### हृत्थे चढ़ना

(१) हाथ में घाना, प्राप्त करना। प्रयोग—जब वहां भी



कुछ हथ्ये चढ़ना न दिखाई दिया तो थाने ले गया (मान० (४)—प्रेमचंद, २०३); धरे, एक दो सो क्या, वे न जाने कितने दो सो खाएंगी, तब कहीं हथ्ये चढ़नी (मा—कौशिक, ३००) (÷); रोगी और कृष्णवान पुरुष की सुन्दरी पत्निया भी आसानी से बिलानियों के हथ्ये चढ़ जाती है (ये कौठ०—अ० ना०, ५८) (÷)

(२) बश में होना। प्रयोग—जानहुं लटू दुपौ एक साया। जग भा लटू चढ़ै नहि हाथा (पद०—जायसी, ४११७); धगर कोई उनके हथ्ये नहीं चढ़ा तो वह दरोगा गढासिह से जो हाल में इस इलाके में आये थे (गोदान—प्रेमचंद, १२९); देखिए प्रयोग (१) में (÷) भी।

(समा० महा०—हथ्ये पड़ना)

### हथ्ये चढ़ाना

बश में कर लेना। प्रयोग—सेठ जी ने समझा था, इक्के-वाले को हथ्ये पर चढ़ा लिया (मान० (४)—प्रेमचंद, ३०)

### हत्या करना

(१) नष्ट करना। प्रयोग—लेकिन मुरौवत में सिद्धान्तों की कुछ न कुछ हत्या करनी ही पड़ती है (गोदान—प्रेमचंद, १७६)

(२) रूप बिगाड़ना।

### हत्या का टीका माथे पर होना

हत्या के लिए जिम्मेदार होना। प्रयोग—डहर सातों बालकों की हत्या का टीका मेरे ही माथे पर है (गंगा०—उग्र, २८)

### हत्या के घाट उतारना

मार डालना। प्रयोग—क्या घाटबं बच्चे को भी देवी गंगा आज हत्या के घाट उतारेंगी? (गंगा०—उग्र, ३०)

### हत्या लगना

कोई झंझट गले पड़ना। प्रयोग—यह तो बड़ी हत्या लगी। इससे कैसे बिट छुटेगा (मा० ग्रंथा० (१)—भारतेन्दु, ५३४)

### हत्या होना

(१) समाप्त होना; नष्ट होना। प्रयोग—कुछ न सही; कुछ दिन तो उसने जालपा को सुखी रखा। उसकी लाश-साओं को हत्या तो न होने दी (गवन—प्रेमचंद, १३३)

(२) दुखद होना।

### हथ-कंडा होना

बालाकी की युक्ति होनी। प्रयोग—तुम्हारा बलि-पशु यदि किसी कारण से तुम्हारे हथकंडे ताड़ भी जाय तो किसी से प्रकाशित करने के काम का न रहे (प्र० पो०—प्र० ना० मि०, ६७); महाजनी के हथकंडे और बह्वंश उसके सामने रोज ही रचे जाते थे (कर्म०—प्रेमचंद, ६); सब छूट वह हथकंडो से हाथ भला कब धोता है (सर्म०—हरिऔध, १३१)

### हथ-फेर

इधर-उधर के तरीकों से। प्रयोग—क्यों कमाये औ करे कुछ काम क्यों काम जब हथफेर से है चल रहा (बोल०—हरिऔध, १७१)

### हथ-फेर रूप

वह धन जो बिना लिखा-पढ़ी या गिरवी के थोड़े समय के लिए दिया या लिया जाय। प्रयोग—बाजार में तो सब उनकी रस्ती भर भी साख न रही थी, जमामार प्रसिद्ध हो गए थे—कोई धेले की चीज़ को भी न पतिपाता, इसलिये मित्रों से हथफेर रूप लेकर काम चलाया करते (रंग० (२)—प्रेमचंद, २१९)

### हथ-लपक होना

चुपचाप चीज़ को गुप्त करने वाला। प्रयोग—अब ऐसा हथलपका हो गया है कि सो जतन से पेसे रख दो, खोज-कर निकाल लेता है (रंग० (२)—प्रेमचंद, २७६); क्यों न बक्की किया करे बकबक हथलपक क्यों करे न हथलपकी (बोल०—हरिऔध, १६८)

### हथ-लेवा होना

विवाह होना। प्रयोग—जब लग पीव परचा नहीं, कन्या कंवारी जाणि। हथलेवा हीरे लिया, मुसकल पड़ी पिछाणि (कबीर ग्रंथा०—कबीर, ४७)

### हथिया लेना

जबरदस्ती धाधिकार कर लेना। प्रयोग—मनोज सोचता है, जयन्त के पास कोई जादू की अंगूठी तो नहीं जिसके जोर से उसने इसको मुझसे हथिया लिया (दृग्गाछ—द० स०, २९९); जिसने मेरुपप करने से पहले पारिवर्त्मिक के रूप में पांच रुपये हथिया लिये थे (पैरै—अशक, १७); वह अपनी माता सावित्री देवी से, अनेक प्रकार के बहाने करके, प्रति मास सो-डेढ़ सो रूप हथिया लेते थे (मा—कौशिक, २४३)



### हथियार डालना

हार माननी । प्रयोग—एक साँववाले से कहलवा भैया, हथियार डालकर मेरे पास आ जाओ (झांसी०—वृ० वर्मा, २८८)

(समा० मुहा०—हथियार धर देना,—रख देना)

### हथेली का आँवला, हाथ का आँवला

(१) सहज प्राप्त वस्तु । प्रयोग—हाथ का आँवला न है अबसर बावला मन उतावला न बने (चुमत्ते०—हरिऔध, ३७); इस पर भी कई विद्वान् योरप में ऐसे हो गये हैं और अब भी कई मौजूद हैं, जिनकी लिखी संस्कृत-भाषा देखकर मालूम होता है कि वह उन्हें करतलगत धामपकवत् हो रही है (सा० सो०—महा० द्वि०, ५५); एक लघु हस्तामलक यह भूमि-मण्डल गोच, मानवों ने पढ़ लिए सब पृष्ठ जिसके खोल (कुरु०—दिनकर, ६१)

(२) घच्छी तरह जानी समझी बात । प्रयोग—जब सका जान तब जगत सारा हो गया आँवला हथेली का (चोले०—हरिऔध, १३२)

(३) बहुत निकट की वस्तु ।

### हथेली पर जान रखना,—लेना,—सिर रखना

मरने तक की परवाह न करनी । प्रयोग—अस लागेंहु केहि के सिख दीन्हे । आणहु, मरें हाथ जित लीन्हे (पद०—जायसी, २३३२); बांध जिसने देव-हित सेहरा लिया वे हथेली पर लिये ही सिर फिरे (बोल०—हरिऔध, १५०); घासू पीकर जीना; जाये देह, हथेली पर ली जान (अना०—निराला, ११२); सिर लिए हथेली पर है जो उसके सिर सेहरा धरना है (नूर०—मक्त, ५५)

### हथेली पर जान लेना

दे० हथेली पर जान रखना

### हथेली पर बाल जमाना

अत्यंत काम करना । प्रयोग—यह चमेली है खिलाना घाग में यह हथेली पर जमाना बाल है (चोले०—हरिऔध, ४८)

### हथेली पर लिये रहना

उत्सर्ग करने को प्रस्तुत रहना । प्रयोग—सज्जन यह दिखाना चाहता था कि उसके मित्र और वह, विशेष रूप से वह, किसी भी सदुद्देश्य की पूर्ति के लिये सदा अपना

नन-मन-धन हथेली पर लिये तैयार रखे रहते हैं (वृ०—अ० ना०, १४९)

### हथेली पर सिर रखना

दे० हथेली पर जान रखना

### हथेली में आना या होना

प्राप्त होना, बन में होना । प्रयोग—रामनाम कलि काम तरु, सकल सुमंगल कंद । सुमिरत करतल सिद्ध सब, पग-पग परमानंद (कति०—तुलसी, २७); आज की किर-किरी की तरह खटकनेवाला कलिंग भी प्रब मेरी हथेली में है (भोर०—जग० साधु, ३९)

### हम-प्याला होना

जिगरी-दोस्त होना । प्रयोग—बैसे वह मंद जमावड़ा मेरे घर हुआ था, लेकिन हम-प्याले लोग पड़ोसी ही थे (अपनी खबर—उग्र, २३)

(समा० मुहा०—हम-निवाला होना)

### हरताल फिरजाना

बर्बाद हो जाना । प्रयोग—मगर अपनी बुरी करनी से मेरे सारे गुनों पर हरताल फिर गयी है (कला०—उग्र, २९)

### हरदी चुने सा एक रंग हो जाना

कोई भेद न रह जाना । प्रयोग—एक हूँ गए हरदी-चून-रंग ज्यों, कौन पै जात निरुवारि माई (सु० सा०—सूर, २८९२)

### हरा हो जाना

(१) प्रसन्न होना । प्रयोग—मेरी भव बाधा हरी, राधा नागरि सोइ । जा तन की भाई परें स्याम हरित-दुति होइ (विहारो रजा०—विहारी, १); हूँ है सोऊ घरी भाग-उधरी अनंदधन, सुरस बरसि लाल देखिहो हरी हमें (धन० कविस—धना० ६०); आप की कविताएँ आज भी याद आती हैं तो तबीयत हरी हो जाती है (सु० सु०—सुदर्शन, १८१); अमृत भी पल्लव-पुटों में है भरा, विरस मन को बना दे जो हरा (साकेत—गुप्त, १५); पहले से कुछ हरे हुए हैं, रे ? (निर्मला—प्रेमचंद, ८०)

(२) माद आ जाना । प्रयोग—झिन-झिन गाल मुखात, झिनहि झिन हुलसत होत हरे हैं (गीता० (सुं)—तुलसी, ३६७)

(३) ताबा हो जाना ।



### हरा-भरा होना

धन-धान्य से पूर्ण; सुखी। प्रयोग—जाति की कब हरा भरा पाकर दिल हमारा उमड़ उमड़ उमड़ा (सुभते०—हरिऔध, १०६); हरा-भरा रहता मंदिरालय जग पर पड़ जाण पाला (मधु०—बचन, २५); यह नीति और सदाचारों का महान आश्रय-वृक्ष—गुप्त साम्राज्य—हरा-भरा रहे (स्कंद०—प्रसाद, १३८)

### हरा-हरा सूझना, हरियाली सूझना

चारों ओर आनंद ही आनंद दिखाई देना। प्रयोग—गाधिमून कह हृदय हंसि मुनिहि हरिअरद सूझ (राम०—बाल)। तुलसी, २८१; दशा दलित हो गई यहां तक तुम्हें सूझती हरी हरी (नूर०—भक्त, ६)

### हरापन होना

हमी-सुखी होनी। प्रयोग—तब हमारी जिन्दगी में हरापन था बांकापन था (भोर०—जग० माधुर, ७१)

### हराम की कौड़ी

अनुचित रीति से या मुफ्त में मिला धन। प्रयोग—मैं यह हरगिज नहीं चाहता कि मेरे घर में हराम की कौड़ी भी आवे (गवन—प्रेमचंद, ५२)

(समा० मुहा०—हराम का माल)

### हराम-घाट उतारना

बुरे रास्ते पर लगाना। प्रयोग—कुछ नहीं तो सैकड़ों तरंगों को उन्होंने हराम-घाट पर इस उत्साह से उतार दिया होगा मानों राम ही का काम अंजाम दे रहे हों (अपनी खबर—उग्र, ८९)

### हरियाली सूझना

दे० हरा-हरा सूझना

### हरें फिटकिरी के बिना चोखा रंग होना

बिना खर्च या परिश्रम के बढ़िया काम होना या बहुत मजा आना। प्रयोग—यहां मुल्ली-डंढा है कि बिना हरें-फिटकिरी के चोखा रंग देता है (मान० (१)—प्रेमचंद, १६१)

### हरें लगे न फिटकिरी

बिना परिश्रम के; मुफ्त में। प्रयोग—जानते होंगे कि यहां रुपए बरस रहे हैं, बस बिना हरें-फिटकिरी के मुनाफा हाथ आ जाता है (प्रेमा०—प्रेमचंद, १३३)

### हल पकड़ना

खेत में हल चलाना; खेता करनी। प्रयोग—पिछले साल उसने मालिक का हल पकड़ा था (सतमी०—राहुल०, ६)

(समा० मुहा०—हल जोतना)

### हलका कटम

धीरे-धीरे, पैर दबाये। प्रयोग—बन्ना पंजों के बल, हलके कदमों से दुहकी चाल चली जा रही थी (ज्ञान०—यशपाल, ९४)

### हलका होना

(१) चिंता-रहित। प्रयोग—शामकी घूमने निकल गया। बड़ा हलका अनुभव कर रहा था (जय०—जैनेन्द्र, १७६)  
(२) चुच्छ होना। प्रयोग—जिद्दि नेह विरोध बढ़्यो सब गो, उर आवत कौन के लाज गई। जिद्दि के भरि भार गहार दबे, जग मोझ गई तिन तें हरई (घन० कवित्त—घना०, ४१); आज मैं सब की आंखों में हलका हो रहा हूँ (सी०—द० स०, २६); हाकिमों का ऐसा हलका बर्ताव देख कर निर्भीक हरिचन्द्र ने धानरेरी मजिस्ट्रेटों का भार उसी दम अपनी गर्दन से उतार कर फेंक दिया (गु० नि०—दा० मु० गु०, ३१७); हो न भारी सके कभी हलके हैं न छिपती सुखी हुई बातें (चोखे०—हरिऔध, २६); "तुम ठीक कहती हो", नाथ ने कहा, "मैं हलका नहीं उतर सकता था और कुल मिलाकर शायद यह उचित ही हुआ" (जय०—जैनेन्द्र, १६४)

(३) किसी जिम्मेदारी से मुक्ति पानी।

### हलकापन दिखाना या होना

चुच्छता दिखानी या होनी। प्रयोग—गर-घर गए रहोम होइ अक्सहि हलकाई (राधा० ग्रंथा०—राधा० दास, ३४); कब न भारी बात कह भारी बने बात हलकी कह बने हलके न कब (बोल०—हरिऔध, ११०); क्या करती हो छोटी मालकिन, सपना हलकापन दिखाती हो (सुहाग०—अ० ना०, १५०)

### हलकी बात

(१) बुरी बात। प्रयोग—कब न भारी बात कह भारी बने बात हलकी कह बने हलके न कब (बोल०—हरिऔध, ११०) (÷)

(२) छोटी बात। प्रयोग—देखिए प्रयोग (१) में (÷)



हल्दी की कुटी गांठ हो जाना

७२४

हवा खिलाना

### हल्दी की कुटी गांठ हो जाना

घर या पस्त होना। प्रयोग—गुरुष होना तो इतने में सिलबट्टे के बीच में हल्दी की कुटी गांठ हो जाता (बीने०—रा० रा०, १४३)

### हलफ उठाना

कसम खाना। प्रयोग—गुलरीवाली ऊपजाऊ जमीन के लिए सरबन बाबू ने हलफ उठा कर कह दिया था (परती०—रेणु, ३२६)

(समा० मुहा०—हलफ लेना)

### हलाल का टुकड़ा खाना

मेहनत और ईमानदारी की कमाई से जीवनयापन करना। प्रयोग—भीख वह नहीं लेती। केवल खिदमत कर हलाल का टुकड़ा खाती है (ज्ञान०—यशपाल, १३१)

### हल्ला बोलना

आक्रमण करना। प्रयोग—बांध तोड़ जिस रोज फौज खूब कर हल्ला बोलेगी (चक्र०—दिनकर, ३५७)

### हवा उखड़ना

रोच न रह जाना। प्रयोग—सहर में इनकी हवा उखड़ गई (दुंद०—अ० ना०, २०७)

(समा० मुहा०—हवा उड़ना)

### हवा कर देना

बाल तेज करनी। प्रयोग—मैंने बाइसिकिल की ओर भी हवा कर दिया (गु० कहा०—गुलेरी, ११)

### हवा करना,—डोलाना

पंखे से हवा करना। प्रयोग—घाघु सीस लें बेंठी कोरा। पवन डोलावहि सलि चहु ओरा (पद०—जायसी, ३४२); पाप पखारि बंठि तर छाही। करिहउ बाउ मुदित मन माहीं (राम० (अ)—तुलसी, ४३५); पाके चरन कमल जापोगी, भ्रम भए बाउ डोलावोगी (गीता० (अ)—तुलसी, ६); बेनुकेपन, बांकपन, बेहुदपन बेलपन को है किया करती हवा (चुमते०—हरिप्रोद्य, १३९)

### हवा के घोड़े पर सवार होना

(१) अपनी ही करना, किसी की न सुनना। प्रयोग—एक दिन, जब मैं, हवा के घोड़े पर सवार हो रही थी, तब मेरी

लाज क्या तुम्हारे आगे कुछ बाकी बची थी? (मा० मा०

(२)—कि० गी०, ९९)

( ) बहुत जल्दी में होना।

### हवा खाना

(१) गूढ़ बाबू के सेवन के लिए बाहर निकलना, रहना।

प्रयोग—खाने को कलिया पुलाव चढ़ने को गाड़ी घोड़ा है सांभ सवेरे उन पर बैठ हवा खाने को जाते हो (गु० नि०—बा० मु० गु०, ६२४); जौनपु के राजा × × से इनसे बहुत ही स्नेह था, निश्चय मिलने और हवा खाने जाने का नियम था (राधा० ग्रंथा०—राधा० दास, ३२१); जो कल संग हवा खाती थी घाज हवा बतलावे (नुर०—भक्त, ६५); उस समय श्रीचंद्र और मोहन गाड़ी पर चढ़कर हवा खाने गये थे (कंकाल—प्रसाद, २४०); इसी समय शहर के रईस और महाजन हवा खाने घाते थे (रंग० (१)—प्रेमचंद, ११)

(२) प्रयोजन विधि तक न पहुंचना, कुछ न मिलना।

प्रयोग—तुम्हारी मंशा है, अपनी जमीन इनके नाम करा दूं और मैं हवा खाऊं, यही? (कर्म०—प्रेमचंद, १५२)

(३) प्रभाव पड़ना। प्रयोग—लखनऊ की हवा खा के तू बड़ा चंट हो गया है गोबर (गोदान—प्रेमचंद, २१६); उक्त साधु अंगरेजी के कोई बड़े विद्वान न थे, इन्टेंस तक पढ़े थे। कुछ दिनों मद्रास की हवा खा आये थे और उन्हें अंगरेजी बोलने का संव्यामक रोग लग गया था (पद्म पराग—पद्म० शर्मा, १२०)

(४) हवा का घानंद लेना। प्रयोग—कोई मुल से बेंठी झूले की ठंडी-ठंडी हवा खा रही थी (मा० ग्रंथा० (१)—भारतेन्दु, ४४६); बादल मंदरा रहे हैं, बरसात की बहार है, ठंडी बगार बह रही है, आप भी हवा खा जाइए (पद्म० के पत्र—पद्म० शर्मा, ४८)

(५) कोई सम्पर्क रखना। प्रयोग—सिवाय अपनी बीबी के कभी दूधर-उधर की हवा ही नहीं खाते (राधा० ग्रंथा०—राधा० दास, ७१९)

### हवा खिलाना

(१) अनुभव कराना; आनंद उपभोग कराना। प्रयोग—अंग्रेजी बंदरगाहों से दोस्तों को नक्काबी गुलिस्ताबों में



बाहर छोड़ते घोर हर तरह हवा खिलाकर कबूल करा लेते हैं कि मित्र नवाबी सम्पत्ता के विचारों के विरुद्ध सम्पत्ता का कोई भी बाधा मनुष्य के गले से हबह नहीं मिल सकता, अंगरेजी कारनेट तो गप्पे की धुपकार है (लिलो—निराला, १०९)

(२) जेल भिजवाना ।

**हवा चलना,—बहना**

(१) किसी प्रवा या फैशन का चलना; स्थिति होना । प्रयोग—कहा कान्हू है कहं री अब हम, कौन बगार बही (सू० सा०—सूर, ३८३६); मुझे यह कहते हुए शर्म आती है कि इस त्याग और तपस्या की भूमि भारत में भी कुछ बही हवा चलने लगी है (गोदान—प्रेमचंद, १६८); एक हवा हो चल गई कि संभ्रांत घरों की औरतें अपने पतियों की आँखों में धूल भोंक कर अपने प्रेमियों को भजती थी (ये कोठे—अ० ना०, ८४)

(२) रुक होना । प्रयोग—स्पूमैन का यह कहना था कि हवा ही चल गई कि च्यवन का रामायण वाल्मीकि के पहले था (गुलेरी ग्रंथा (१)—गुलेरी, १०३)

(३) चारों ओर चर्चा होनी । प्रयोग—जो हम मुनित रही सो नाहीं, ऐसीही यह बागु बहानी (सू० सा०—सूर, २३५५)

(४) मांग होनी । प्रयोग—बाजार में कैसे हवा चल रही है, यह बिलकुल अलग बात है (दूधगाछ—दे० स०, २९६)

**हवा डोलाना**

दे० हवा करना

**हवा तक न लूना**

कोई खतरा या संसर्ग न होना । प्रयोग—यह तो आपने हमारे बिगड़े हुए बाबूओं की मो बात कही जो X X दिवावे की सभी बातों में अंगरेजों को मुंह बिढ़ाते हैं लेकिन जिन बातों ने अंगरेजों को अंगरेज बना दिया है, और जिनकी बदौलत वे दुनिया पर राज्य करते हैं, उनकी हवा तक नहीं छू जाती है (गवन—प्रेमचंद, ८२)

(समा० मुद्रा०—हवा तक न लगना)

**हवा देख कर पाल तानना,—पीठ देना,—रुख देना** परिस्थिति और रुख देखकर काम करना । प्रयोग—

मूरशम प्रभु आपुर्हि जेये, जैसी बवारि तेसी दोजे पीठि (सू० सा०—सूर, ३१८९); दरबार में उनकी बड़ी इज्जत थी । जैसी हवा बहती वैसा ही रुख देते थे (सू०—अ० ना०, ४८४); जिन्होंने हवा देख कर पाल ताना । जिन्हें घा गया बात बिगड़ी बनाना (चुभते—हरिऔध, १९०)

(समा० मुद्रा०—हवा देख कर ओट देना)

**हवा देखकर पीठ देना**

दे० हवा देख कर पाल तानना

**हवा देख कर रुख देना**

दे० हवा देख कर पाल तानना

**हवा देना**

बढ़ाना; उग्र बनाना । प्रयोग—यह तो हमारे भगदों को हवा देता है (ब्रह्म—दे० स०, ३०४)

**हवा न लगना**

(१) पदों में रहना । प्रयोग—हवा हू न लागती ते हवा ते बिहाल मई, लालन की भीर में संभारती न छाती है (भूषण ग्रंथा०—भूषण, २११) (÷)

(२) मुख-मुविषा में रहना । प्रयोग—देखिए प्रयोग (१) में (÷)

**हवा न लगने देना**

(१) तनिक पास न फटकने देना । प्रयोग—मे तो कभी अपनी प्यारी बेटो को भलेचढ़-कुल-कलंक की हवा भी न लगने दूंगी (राधा० ग्रंथा०—राधा० दास, ६८२)

(२) कोई असर न होने देना ।

**हवा फिर जाना,—बदल जाना**

हृदय के भाव बदल जाना, सामूहिक रूप से विचारों में परिवर्तन होना । प्रयोग—हवा बदल गई । एक क्षण में गांधियों का ताँता बंध गया (रंग० (२)—प्रेमचंद, २८४); जो फिरा दे न फेरनेवाले तो फिर तो हवा फिर कैसे (बोल०—हरिऔध, ५८)

**हवा फैलना**

किसी विचार का प्रचार होना । प्रयोग—नया देहाती में भी यह हवा फैलने लगी ! (प्रेमा०—प्रेमचंद, २८४)



### हवा बांधना

प्रभाव जमाना । प्रयोग—है गगन तल में हवा उसकी बांधी थाक उसकी है घरातल में धंसी (बोले०—हरिऔध, १५८)

### हवा बताना

किसी वस्तु से संबंधित रखना, टाल देना । प्रयोग—रहते जल पक्षी आगे पर इसके हाथ न आते । पानी पर उड़े हवा-से बाला को हवा बताते (मुर०—भक्त, २१)

### हवा बदल जाना

दे० हवा फिर जाना

### हवा बहना

दे० हवा चलना

### हवा बांधना

(१) झूठा प्रभाव जमाना; डींग होकनी । प्रयोग—ईश्वरों ने अपने पिता, चाचा, ताऊ आदि सबसे मेरी परिचय कराया और उसी प्रतिशोधित के साथ । ऐसी हवा बांधी कि कुछ न पुछिए (मान० (१)—प्रेमचंद, १०८); दुनिया में हवा बांधनेवालों के चेहरों पर हवाइयां उड़ने लगती थीं (चुभते० (मु०)—हरिऔध, २)

(२) नाम करना; प्रचार करना ।

### हवा बिगाड़ना

रोति या खाल बिगड़नी; बुरे विचार फैलना । प्रयोग—लाहौर की हवा इतनी जल्दी बिगड़ जायगी, यह तो मुझे मालूम न था (कठ०—दे० स०, २९३); इस गांव की कुछ हवा ही बिगड़ी हुई है । मैं सब कुछ समझता हूँ (प्रेमा०—प्रेमचंद, ५९)

### हवा बिगाड़ना

बदनामी करनी । प्रयोग—इस परचे से केमनिस्ट लोगों की हवा बिगाड़कर वो ये वोट फोड़ना चाहता है (बूद०—अ० ना०, १२४)

### हवा मिलना

पता चलना । प्रयोग—ऐसी बातें दिन भर में कई बार होती थीं, पर बजमोहनलाल को कभी इनकी हवा भी न मिलती थी (मा—कौशिक, ९६)

### हवा में उड़ा देना

कोई ध्यान न देना । प्रयोग—जागेश्वरी ने इस बाधा को

मानो हवा में उड़ाकर कहा × × (गबन—प्रेमचंद, ५)

### हवा में गिरह लगाना

असंभव बात करनी । प्रयोग—ऐसा चलता हुआ आदमी तो मैंने देखा ही नहीं । हवा में गिरह लगाते हैं (मा—कौशिक, २६९)

(समा० मुहा०—हवा में किले बनाना)

### हवा में भरना

खल या विचार से प्रभावित होना । प्रयोग—पर प्रयाग की चौथी कांग्रेस के समय छोटे लाट कालविन साहब की हवा में भर कर उन्होंने मुसलमानों को हिन्दुओं से फटकर चलने की सलाह दी (गु० नि०—बा० मु० गु०, २८०)

### हवा में महल बनाना

कल्पनालोक में विचरण करना । प्रयोग—घरी पगली, तू तो हवा में महल बना रही है (मा—कौशिक, ९)

(समा० मुहा०—हवा में महल बांधना)

### हवा में से पकड़ना

मुनी-मुनाई बात को ले लेना । प्रयोग—ये उन विचारों का प्रत्यक्ष प्रचलित रूप है जिन्हें आज का नया साहित्यकार आसानी से हवा में से पकड़ लेता है (अशोक०—ह० प्र० द्वि०, ४४)

### हवा लगना

असर होना । प्रयोग—कछू मालती के बिछुरे तब से भ्रमरें भिरेवे की बाय लगी (इश्क०—बोधा, २१-२२); तो यह कहो, तुमको भी अंग्रेजों की हवा लग गई (सु० सु०—सुदर्शन, १८९); उन्हें योरोप की बुरी हवा लग गई थी (बूद०—अ० ना०, ४७५); मालूम होता है, आपको भी नये जमाने की हवा लग गयी (मान० (१)—प्रेमचंद, २२९)

### हवा से अछूता रहना

कोई असर न होना । प्रयोग—धार्मिक लोग—पादरी और महन्तिनी—परिवर्तन की ज्यार से अछूती रहती हैं (मेरे०—गुलाब, १३५)

### हवा से बचना

प्रभाव से बचना । प्रयोग—भाई साहब की नज़र में मेरे उनके संग रहने में अनेक प्रायदे थे । पहले तो घर में कोई शरा-रती नहीं रहेगा, दूसरे उनकी निगरानी में रामलीला वालों



## हवा से बातें करना

७२७

हां में हां मिलाना

की बुरी हवा से मैं बचूंगा, तीसरे X X (अपनी खबर—उग्र, २८)

## हवा से बातें करना

(१) बहुत तेज दौड़ना या चलना। प्रयोग—बार हवा से बातें करने लगी (कठ०—दे० सं०, ४०); बात करता कभी हवा से हवा है वह कभी मंद मंद चलता है। खूब भरता कभी छलांगें हें मन कभी कूदता उछलता है (चोखे०—हरिऔध, १५४)

(२) आप ही आप या व्यर्थ बहुत सी बातें करनी।

## हवा होना

(१) गायब हो जाना। प्रयोग—जयकृष्ण की सारी उड़-डटा हवा हो गयी (मान०(२)—प्रेमचंद, १६९); खलिहानों में रखे हुए अनाजों का भूसा-दाना सब हवा हो गया (पद्म पराग—पद्म० शर्मा, ३९)

(२) तेजी से निकल जाना; क्षणिक। प्रयोग—जब तक मेहता कुछ बोलें, वह हवा हो गयी (गोदान—प्रेमचंद, ८३); देर हुई अब तनिक दयाकर जरा हवा हो जाना (नूर०—भक्त, ७६); उधर तुम्हारे मित्र को लेकर उनका घर एक दम हवा हो गया (लैशाली० (२)—चतुर०, १८)

## हवाइयां उड़ना या उड़ाना

चेहरे का रंग फीका पड़ जाना या कर देना। प्रयोग—छत्र चंवर नित दूरत ओत मुख तहं मनु छुटत हवाई (मा० ग्रंथा० (१)—भारतेन्दु, ५०२); मेरे कहने के डंग ने बाई जी के चेहरे पर एक झलक तो हवाइयां उड़ा ही दी (ये कोठे०—अ० ना०, १५१); दुनिया में हवा बांधने वालों के चेहरों पर हवाइयां उड़ने लगती थी (चुमते० (भू)—हरिऔध, २)

(समा० मुहा०—हवाइयां छूटना)

## हवाईकिला ढा देना

सारी कल्पनाएं नष्ट करनी। प्रयोग—कई बार उन्माद-सा हुआ कि अभी सारी कथा किसी पत्र में छपवा दूं, सारी कलाई खोल दूं, सारे हवाई किले ढा दूं (गवर्न—प्रेमचंद, २७२)

## हवाईकिला बनाना या होना

असंभव मनसूबे करना या होना; खयाली पुलाव पकाना या होना। प्रयोग—लाख खोली बघारे, लाख हवाई किले

बनाये, सबवाई तो सबवाई है (कठ०—दे० सं०, १४१); बज-किशोर हंस पड़े, बोले—ये सब हवाई किले हैं (मिस्त्रा०—कोशिक, १६२)

## हवाई डंग

काल्पनिक, वास्तविकता से दूर। प्रयोग—समालोचना भी अधिकतर हवाई डंग की होने लगी (विता०(१)—शुक्ल, २४१)

## हवा-खोरी

टहलना। प्रयोग—सबरे ही लाला मदनमोहन हवाखोरी के लिये कपड़े पहन रहे थे (परीक्षा०—श्री० दास, ६८); राजासाहब कई रोज से किस्ती पर हवाखोरी करते हैं (चतुरो०—निराला, ३५)

## हवालात की हवा खाना

जेल की सजा भुगतनी। प्रयोग—कलक्टर साहब ने कहा कि जमानतें नामंजूर कर दू, दो-एक दिन हवालात की हवा खाने दूं उन्हें, तो फिर क्या करता? (भूले०—मग० शर्मा, ४४३)

## हस्त-रेखा होना

भाग्य में होना। प्रयोग—अस स्वामी एहि कहं मिलिहि परी हस्त अमि रेखा (राम० (बाल)—तुलसी, ८०)

## हस्तक्षेप करना

किसी काम या बात में दखल देना। प्रयोग—न्याय में हस्तक्षेप करने वाले इस वृद्ध को निकाल दो (कामना—प्रसाद, ५१); उनसे कहिए कि मि० क्लार्क के हस्तक्षेप से मेरा अपमान होगा (रंग० (१)—प्रेमचंद, ३६६)

## हस्ती मिटना या मिटाना

जड़मूल से बर्बाद हो जाना या कर देना। प्रयोग—लक्ष्मण कह रहे हैं कि बहुत जल्द हमारे वर्ग की हस्ती मिट जाने-वाली है (गोदान—प्रेमचंद, १५); अरे इसमें तो घादमी की हस्ती तक मिट जाती है, शोभा किस खेत की मूली है (मिस्त्रा०—कोशिक, १८५)

## हां में हां मिलाना

(१) किसी की कही हुई बात की पुष्टि करनी। लुशामद करनी। प्रयोग—इसने कभी स्वामी का भला नहीं किया, केवल चूटकी बजाकर हां में हां मिलाया (मा० ग्रंथा० (१)—भारतेन्दु, ९०); जहां हम चार दिन X X आपकी हां में



हां मिलानेगे  $\times \times$  बतलाइए तो आप कब तक राह पर न  
सावेंगे (प्र० पौ०—प्र० ना० मि०, ५८) (÷)

(२) बुरी-भली बातों का समर्थन करना । प्रयोग—गोबर  
ने कटाक्ष किया—बड़े सादमियों की हां-में-हां मिलाने में  
कुछ-न-कुछ आनन्द तो मिलता ही है (गोदान—प्रेमचंद,  
१७); साधन मोरी की हां में हां मिलाकर वह नीलमणि  
को नीचा दिखाने पर तुला हुआ था (ब्रह्म०—दे० स०, ७०);  
देखिए प्रयोग (१) में (÷) भी ।

### हांक मारना

झोर से पुकारना । प्रयोग—परन्तु पुराने काल में प्रत्येक  
राजा को अपने शत्रुओं को हांक मार कर उनसे लड़े बिना  
सिंहासन पर बैठने का अवसर नहीं मिलता होगा (गुलेरी  
ग्रंथ (१)—गुलेरी, ४६)

(समा० मुहा०—हांक देना)

### हांक लगाना

(१) झोर देकर बहना । प्रयोग—जो सोंग छूतछात नहीं  
मानना चाहते हैं उनको चाहिये कि अच्छी दलोंसे से काम  
लें, वेतुकी हांक न लगाया करें (गु० नि०—बा० मु० गु०,  
३०२)

(२) झोर से पुकारना ।

### हांकना

(१) मांगना । प्रयोग—देखना, एक बात का ध्यान रखना,  
पर लोभी न हो, कहीं अनाप-बनाप हाँके (मा—कोशिक,  
१३८)

(२) बड़ी-बड़ी बातें करनी ।

### हांगी भरना

हामी भरना, स्वीकृति देनी । प्रयोग—छारी शरि पुलक,  
प्रसेद हू निवारि डारी, नेक रसना हू ते भरी न कछु हांगी  
री (पद्म०—हि० श० सा०)

### हांडी के चावल का पता होना

साधारण से साधारण गुप्त बात का पता होना । प्रयोग—  
अंगरेज का खोफिया तो ऊपर से ही किसी बात का पता  
लगाता था, कंगरेस के खोफिया को हांडी के चावल का  
भी पता रहता है (मैला०—रेणु, १९०)

### हा-हा खाना

निङ्गिड़ाना, बहुत पिनती करनी । प्रयोग—मारे लात,  
तोरे पात, भागे जात हा हा खात, कहे 'तुलसीस ! राखि'  
राम की नौ टेरि के (कवि०—तुलसी, ९२); मेरी प्यारी, मैं  
हाथ जोड़ूँ हा-हा साऊँ मानि जा (भा० दृशा० (१)—  
भारतेन्दु, ४५०); अनेक नेताओं से मिली । दर-दर की धूल  
पाँकी । सब की हा-हा खाई । पर बेकार (गोली—चतुर०,  
३१६)

(समा० मुहा०—हा-हा करना)

### हा-हा ही-ही करना

(१) हँसी-मजाक करना । प्रयोग—हा हा—ही ही करती  
में पड़ हाहा-हीही करना छोड़ो (बोल०—हरिऔध, १०५)

(२) बहुत हँसना ।

### हाजरी देना

सेवा में उपस्थित होना । प्रयोग—मित्रवृन्द सुबह शाम  
हाजरी देने आते और अपना सा मुँह ले कर लौट जाते  
(मान० (७)—प्रेमचंद, ५६); गोरम के बंगलन पै मारे मारे  
फिरो, हाजरी देयो  $\times \times$  (झासी०—पु० वर्मा, १५०);  
मैं जहर उनके अनुरोध का पालन करूँगा । उनकी कुटीर  
पर हाजरी दूँगा (पद्म० के पत्र—पद्म० शर्मा, ११८); मुझे  
यहां आये दो दिन हुए पर आपकी इयोड़ी पर आज ही  
हाजिरी दी है (मिसा०—कोशिक, ७७)

### हाज़िर-जवाब होना

किसी भी बात का ठीक-ठीक घोर तुरंत उत्तर देने वाला ।  
प्रयोग—अतः एक व्यापारी को हाज़िर जवाब होना  
चाहिये (मेरे०—गुलाब०, ४६)

(समा० मुहा०—हाज़िर-दिमाग होना)

### हाट चढ़ना

बाज़ार में बिकने के लिए आना । प्रयोग—पंडित होइ सो हाट  
न चढ़ा । चहौ बिकाइ नूलिना पड़ा (पद०—जायसी, ७४)

### हाथ अलग रखना

कोई योग न देना । प्रयोग—दूसरे तोर मोर क्यों न करें  
क्यों नहीं हाथ तुम अलग रहते (चुभतै०—हरिऔध, १६८)

### हाथ आना

मिलना, पकड़ में आना । प्रयोग—कबीर मन बिकरे



पहुँचा, गया स्वाद के साथ। मलका खाया बरजवाँ, अब  
क्यूँ धावे हाथि (कवीर प्रंशान—कवीर, २९); सातो सरम  
हाथ जनु आए घो सातो कबिलास (पद०—जायसी, २६११५);  
निमि-बासर मोहि बहुत सतायो अब हरि हाथहि आए  
(सु० सा०—सूर, ९१५); बहुरयो हाथ न आवई, जो हूँ  
जाइ उदास (केशव० (१)—केशव, ६३); यदि मुझे इसके  
बदले में वंशनगर का राज्य भी हाथ आए तो भी ऐसा न  
कहूँ (भा० प्रंशान (१)—भारतेन्दु, ६३१); परन्तु एक संघ  
साहित्य का हित तरंगिनी नामक मित्रवर श्री जगन्नाथ  
दास (रत्नाकर) जी के हाथ घावा है (राधा० प्रंशान—राधा०  
दास, २१५); अगर यहाँ आकर बैठ जाऊँ तो रोज़ दम-पाच  
रूपये हाथ आ जायें (गवत—प्रेमचंद, ९३); ऐसा ग्यारा  
रतन जिनको घाज यों हाथ आया (प्रिय०—हरिऔध, २०१);  
उसकी कमीज के निचड़े हो गए, बाहें और टांगें  
भी छिल गईं, मुँह खरोच गया, पर बटेर कोई हाथ न  
आया (शेखर (१)—अज्ञेय, १०२)

### हाथ उठा कर कहना

खुले घाम जोर देकर कहा। प्रयोग—उठ पड़ी हित के  
लिये कस कर कमर है उठा कर हाथ हम कहते यही  
(बोल०—हरिऔध, १६५)

### हाथ उठाना

(१) मारना; जान से मारना। प्रयोग—तुम्हारी इतनी  
मजाल कि मेरी बड़ पर हाथ उठाओ (गोदान—प्रेमचंद,  
३०); दिसांगमुख या आसपास के किसी गांव का कोई  
धिकारी इन परदेसी पक्षियों पर हाथ नहीं उठाता (ब्रह्म०—  
दे० स०, ६१); हाथ उन पर भला उठाये क्यों जो कि हैं  
ठोक फूल ही जैसे (चोखे०—हरिऔध, १०)

(२) हाथ ऊपर करके आशीर्ष देना। प्रयोग—घबकी  
बार जाते समय उसने आशीर्वाद का हाथ नहीं उठाया  
(मृग०—वृ० वमा, ३५०)

(३) बुरा-भला कहना। प्रयोग—यदि न आज बन जाऊँ  
में, किस पर हाथ उठाऊँ मैं? पूज्य पिता या माता  
पर? या कि भरत से भ्राता पर? (साकेत—गुप्त, ८६);  
भैया, मुझ पर हाथ न उठाओ, दुबला-पतला आदमी हूँ  
(रंग० (१)—प्रेमचंद, ३१)

(४) हाथ उठाकर वोट देना। प्रयोग—वे उठाते हाथ यों

ही हैं सदा क्यों न उन पर हाथ हम देवें उठा (चुभते०—  
हरिऔध, १४०)

(५) देना। प्रयोग—किस तरह हाथ तब उठावें हम कुछ  
न जब हाथ में हमारे हो (बोल०—हरिऔध, १७०)

### हाथ कच्चा होना

किसी काम या कला के करने में हाथ में कुशलता न  
होती। प्रयोग—इन्होंने भी चाहा, महीनों लगाए, पर  
इनका हाथ तो अब भी कच्चा है (सुनेता—जैनेन्द्र, ४९)

### हाथ कट जाना

(१) कुछ करने में असमर्थ होना। प्रयोग—दोनों बेल  
चले गये तब तो उसके दोनों हाथ ही कट जायेंगे (गोदान—  
प्रेमचंद, १५५); मैं अपना हाथ जो कटा चुका हूँ..... उसी  
दर से..... (सिद्ध०—सं० मिश्र, १३२)

(२) लिखा-पढ़ी पर दस्तखत हो जाना।

### हाथ कटा देना

(१) कुछ करने लायक न रह जाना। प्रयोग—घन  
किसी का देख काटें होठ क्यों हाथ तो हमने कटाया है  
नहीं (चुभते०—हरिऔध, ४१)

(२) लिखा-पढ़ी के द्वारा बंध जाना।

### हाथ करना

अपने अधिकार में करना। प्रयोग—मूरदास-प्रभु-चतुर-  
सिरोमनि, तिनको हाथ किया (सु० सा०—सूर, १५९४)

(समा० महा०—हाथ कर रखना)

### हाथ का

पास का। प्रयोग—जोभी मनहि भोहि रिस मारहि।  
वरब हाथ के समुंद पबारहि (पद०—जायसी, १५१२); लाल  
समझावा मगर समझा नहीं हाथ का हीरा हमें सोना पड़ा  
(बोल०—हरिऔध, ७१)

### हाथ का आंचला

दे० हथेली का आंचला

### हाथ का काम

जो काम किया जा रहा हो। प्रयोग—जब मैंने हाथ के  
सब काम छोड़ कर अपना नाटक “तुफान से पहले” लिखा  
(पैतरे—अशक, २७)

### हाथ का खिलौना

(१) मनमानी की जा सके, ऐसी चीज। प्रयोग—



सरकार उनके हाथ का खिलौना है (गोदान—प्रेमचंद, २४२); उस हाहाकार से बचने के लिए हम पुलिस की  $\times \times$  बकीलों की शरण लेते हैं और कानवती स्त्री की भाँति सभी के हाथों का खिलौना बनते हैं (गोदान—प्रेमचंद, १५); साहित्य-सम्मेलन पोलिटिकल लीडरों के हाथ का खिलौना बन रहा है (पद्म—के पत्र—पद्म ० अर्मा, ५३)

(२) प्यारी चीज ।

**हाथ का पांसा होना**

पूरी तरह बस में होना । प्रयोग—पूरी तो उसके हाथ का पांसा बन गया है (झुठा ० (२)—यशपाल, ६९५)

**हाथ का मक्खी न उड़ाना**

कुछ भी न करना, बहुत आलसी होना । प्रयोग—तब उड़ावेंगे वतन किस तरह हाथ जब मक्खी उड़ा पाते नहीं (बोल ०—हरिऔध, १७१)

**हाथ का मैल होना,—पैर का मैल होना**

मुक्त वस्तु होना । प्रयोग—कपड़ा-पैसा हाथ पांव की मैल है (मट्ट नि ०—बा ० मट्ट, १६); मान, बढ़ाई संसारी मुग़ ये सब तो पनधानों के हाथ के मैल हैं (राधा ०—ब्र ० स ०, ३४); धन तर्ज पर लोक-मेवा तर्ज न दें हाथ का यह मैल है वह माल है (जुमते ०—हरिऔध, १६८); मो-बेड़-सो खया घाप लोगों के हाथ का मैल है (ईस्टा ०—मग ० वर्मा, ९५)

**हाथ का सच्चा**

(१) ईमानदार । प्रयोग—आदमी बड़ा देवता था, हाथ का सच्चा और आँख का भी सच्चा (झुठा ० (१)—यशपाल, १२६); बिना बुलावे वह कभी न बोलता और हाथ का निहायत सच्चा (ज्ञान ०—यशपाल, ३७)

(२) सटीक निधान लगानेवाला ।

**हाथ की कठपुतली होना**

पूरी तरह बस में होना । प्रयोग—भारत के प्रधान पुरुष  $\times \times$  भगवान रामदेव श्रीकृष्ण या उनके हाथ की कठपुतली मुधिष्ठिर से (सा ० सु ०—बा ० मट्ट, ५); सामन्तों के हाथ की कठपुतली बनना मुझे स्वीकार नहीं है (विप ०—प्रेम, ५०)

**हाथ की बात**

छापने बस की बात । प्रयोग—पत्नी मर गई, बच्चे मर

गये, परन्तु वह सब हाथ की बात तो नहीं थी (देवकी ०—रा ० रा ०, २१)

**हाथ की लकड़ी होना**

सहारा होना । प्रयोग—फिर जिसकी आँखों की पुतरी, लकड़ी जिस बूढ़ा के कर की छिनेगी न कैसे वह कलपे, छाया रही न जिसके सिर की (वेदेहो ०—हरिऔध, ७०)

**हाथ की सफाई**

(१) कुशलतापूर्वक कुछ बुराया जाना । प्रयोग—जब आप पढ़ते थे, तब भी किताबों के खरीदने में आप ऐसी ही हाथ की सफाई दिखलाते थे (रेशमी ०—राम ० वर्मा, २०२)

(२) कुशलतापूर्वक हाथों से कुछ किया जाना । प्रयोग—यह शेरदहा तो देखो, क्या हाथ की सफाई है (गबन—प्रेमचंद, ९)

**हाथ के तोते उड़ जाना**

अबल मूम हो जाना; किकर्तव्य-विमूढ़ होना । प्रयोग—अपने सर्वस्व को जाते देखकर कल्याणी के हाथों के तोते उड़ गए (बुंटा ०—अ ० न ०, २९०); जेल के दरवाजा, अमले सिपाही, पहरेदार सबके हाथों के तोते उड़ गये (प्रेमा ०—प्रेमचंद, २६६)

**हाथ खाली जाना**

(१) बार भूटा पड़ना । प्रयोग—देखो यह हाथ खाली न जाय (राधा ० ग्रंथा ०—राधा ० दास, ६२५)

(२) दांव न मिलना ।

(३) धगेर कुछ पाए चले जाना ।

**हाथ खाली होना**

(१) पास में रुपया पैसा न होना; निर्धन होना । प्रयोग—इन सब खर्चों ने हाथ बिलकुल खाली कर दिया था (मान ० (८)—प्रेमचंद, ३०)

(२) समय मिलना, फुसंत मिलनी । प्रयोग—आज घर में लोग बत से हैं । न हाथ खाली होगा (मान ० (१)—प्रेमचंद, १५६)

**हाथ सींचना**

(१) देना बंद होना—बहुत कंजूसी से खर्च करना । प्रयोग—जब संभूनाथ द्वारा उन्हें यह पता लगा कि उनका नंदेह



ठोक निकला, तब से उन्होंने और भी हाथ खींच लिया (मा—कौशिक, २४३); अब घागे वर्षों में कराघो खर्च दो हजार, देख लो, कभी जो हाथ खींचे (लिलो—निराला, ९०)  
(२) किसी काम से अलग हो जाना। प्रयोग—इन लोगों के हाथ खींचने पर इस पत्र से साधारण सहानुभूति जाती रही (राधा० ग्रंथा०—राधा० दास, ५०१); संभव है × × चन्द्रगुप्त ने फिर कुबेर की दिशा में बढ़ने से हाथ खींच लिया हो (गुलेरी ग्रंथ (१)—गुलेरी, २१५-२१६); तब सेवा सम्पादन से मैं हाथ कदापि न खींचूंगा (नुर०—भरु, १४५); घाघी रोटी घोर एक-आध टुकड़ा मछली खा चुकने पर मैंने हाथ खींच लिया (जहाज०—इ० जोशी, ७२); संगठन एक ध्येय लेकर होता है, उसका एक निश्चित कार्यक्रम हो जाता है, फलतः उसको बढ़ाने के लिए लोग दूसरी दिशाओं से हाथ खींच लेते हैं (शेखर (२)—अज्ञेय, ११६)

### हाथ खुलना

- (१) मुक्तहस्त होकर खर्च करना। प्रयोग—जगदीश यात्रा के पीछे उदार हृदय हरिदचन्द्र का हाथ खुला (राधा० ग्रंथा०—राधा० दास, ३६३)
- (२) मारने की आदत पड़नी।
- (३) कला में सफाई आनी।
- (४) हाथ का अभ्यस्त होना।

### हाथ खुला होना

खर्च करने में कोई रुकावट न मालूम होनी। प्रयोग—हाथ खुला हुमा है, हिसाब-किताब में कोई दिलचस्पी नहीं (भुले०—मग० वर्मा, २१८); घबड़ाजान ने भी घब तक जीनत के बारे में अपना हाथ कापी खुला रखा था (कठ०—दे० स०, २१५)

### हाथ खून से रंगा होना

हत्यारा होना। प्रयोग—हाथ उनके नहीं बंटाये हाथ जिनके लहू भरे होंगे (चुमते०—हरिऔध, ११)

### हाथ गरम करना

- (१) लाभ करना (अपना)। प्रयोग—घोरों के लहू से हाथ रंग कर अपना हाथ गरम कर रहे हैं (चुमते० (भु)—हरिऔध, ३)
- (२) रुपए-पैसे देना।
- (३) धूस देना।

### हाथ गरम होना

द्रव्य मिलना। प्रयोग—यह बताओ मुनील जी, कि तेज-कोर दी टायरी छपने से हमारा हाथ भी गरम हो सकता है या नहीं (कठ०—दे० स०, ३२७)

### हाथ चढ़ना

- (१) मिलना। प्रयोग—मुनि अश्वि कदली वन घावा। हाथ न चढ़ा रहा पछिलावा (पद०—जायसी, ४२५); हीरा हाथ चढ़ा निमोन्निक छूटि गई संसारी (कबीर ग्रंथा०—कबीर, २७७)
- (२) वश में होना। प्रयोग—हो रानी पदुमावलि सात सरग पर बास हाथ चढ़ो सो तेहि के प्रथम जो आपुहि नास (पद०—जायसी, २३१७); बयौ हठ के सठ ! साधन सोधत होत कहा, मन यौ तरसे तैं। हाथ चढ़े जिहि स्थाम सुजान कहं तिहि पायन रे परसे तैं (घन० कवित्त—घना०, १७०); दन्विल के माथ सिवराज तेरे हाथ चढ़े घनुष के ताव गढ़-कोट दुरजन के (भूषण ग्रंथा०—भूषण, १४८); जाय दरिद कविजनन की, सेवै राज समाज। सिंह नृपति तब होत है, हाथ चढ़े मजराज (वृ० स०—वृन्द, ७१); यदि एक बार भी मेरे हाथ चढ़े तो मैं सब पुरानी कसर निकाल लूं (मा० ग्रंथा० (१)—मारतेन्दु, ५६४); इनमें से एक भी हाथ चढ़ जाय तो दूसरी को भी डाल लेंगे (मुग०—वृ० वर्मा, १२२)
- (३) किसी के कहें में आना।

### हाथ चलना

- (१) शीघ्रता से काम करना; काम करना। प्रयोग—पेट तब कैसे चलाये चल सकें जब किसी का हाथ ही चलता नहीं (बोल०—हरिऔध, १६८)
- (२) मारना।

### हाथ चलाना

- (१) मारने के लिए हाथ उठाना-मारना। प्रयोग—सज्जन ने घाव देखा न ताव उस पर हाथ चला दिया (वृ० स०—अ० ना०, ३७६); मैं तो घर-घर कांप रही थी कि कहीं तुम्हारे ऊपर हाथ न चला दें (गबन—प्रेमचंद, २७७); जब देखो, तब हाथ चला बैठता है (मा—कौशिक, ३९)
- (२) काम करना। प्रयोग—हाथ तो चलाने पड़ते ही तब भी (बोने०—रा० रा०, १४३)



(३) लाभ करना। प्रयोग—उरले दाव-पाव देलकर हाथ चलति ये, धन निःशंक हो गये (प्रेमचंद, २५)

### हाथ चूमना

(१) प्यार करना। प्रयोग—हाथ वे ही हाथ हैं जिस हाथ के चूमने की चाह रखते हो बड़े (चुमते—हरिऔध, ५)

(२) हसन-कौमल पर विमृग्ण हो जाना। प्रयोग—ऐसे अच्छे फूल पले बनाये हूँ कि सच्चे बेल बूटों की मात करते हैं। जो चाहता है कि कारीगर के हाथ चूम लूँ (परीक्षा—श्री० दास, १-२); चाहो विषकार मिल जाय, हाथ तो उसका लेवें चूम (बैदेहो—हरिऔध, १६)

### हाथ छोटा होना

कच्चा होना। प्रयोग—मलिकाइन का हाथ छोटा है। खलकर जब परोसती ही नहीं तो बेचारा मेहमान क्या सावेगा और क्या छोड़ेगा ? (बोलो—नागा०, २०)

### हाथ छोड़ना

(१) मारना; प्रहार करना। प्रयोग—कोई इस तरह घर की लक्ष्मी पर हाथ छोड़ता है ? (गोदान—प्रेमचंद, १११) मैं बकता हूँ, भौकता हूँ। डर रहता है कि हाथ छोड़ बैठें (कल्याणी—जैनेन्द्र, १२१)

(२) साप छोड़ देना। प्रयोग—तुम हमारा हाथ न छोड़ो। तुमसे दिल टूट चुका था (जोटो—निराला, १२५)

### हाथ जोड़कर

अत्यंत विनम्र होकर; डरते-डरते। प्रयोग—बिह्वलमति कहत गए, जोरे सब हाथा (सू० सा०—सूर, ५४०); उनके बाप दादे हमारे बाप दादे के आगे सदा हाथ जोड़ कर बातें किया करते थे (इंशा०—इंशा०, ९८)

### हाथ जोड़ना

(१) नमस्कार करना। प्रयोग—सब गिरिपिनी घसीसद जोरि जोरि के हाथ (पट०—जायसी, ११५); कर जोरे हरि विप्र जानि के, हित करि चरन पखारे (सू० सा०—सूर, ४८३८); पुनि पुनि प्रभु पद कमल महि जोरि पंकरुह पानि (राम० (बाल)—तुलसी, १३२); रघुकुल तिलक जोरि दोठ हाथा मुदित मानु पद नायेठ माथा (राम० (अ)—तुलसी, ४२१); बिनती बनाद, कर जोरि हो कहत ताते, जाते तुम करता जगत उतरासि के (क० र०—सेनापति, १०३) (+); बंदी देवि सरदबा, पद कर जोरि (रहीम कवि—रहीम,

३५); हाथ जोरि मिर नाइ के, दांत तरे तून राखि। परम नम्र हूँ कहत हैं, दीन बचन अति भाखि (भा० ग्रंथा० (२)—भारतेन्दु, ६३३); इधर हम हाथ जोड़ंगे, उधर वे हाथ छोड़ंगे (चिता० (१)—शुक्ल, ६४) (+); दुल पाते जब होते घनाय, कहते कवियों से जोड़ हाथ (अना०—निराला, २५)

(२) अनुनय-विनय करनी। प्रयोग—घन घानंद मीत सुजान हहा मुनिये बिनती कर जोरि करे (घन० कवित्त—घनी०, ७०); देखिए प्रयोग (१) में (+) भी।

(३) हाथ लगाना; योग देना। प्रयोग—धरयो पग पैलि दसमत्प हू के मरव पर, जीरो आइ हत्य समरत्प बाहु-बल में (क० र०—सेनापति, ८९)

### हाथ जोड़े रहना

सेवा में उपस्थित रहना, आज्ञाकारी होना। प्रयोग—प्रात जो न्हात, अथ जात ताके सकल, ताहि जमहू रहत हाथ जोरे (सू० सा०—सूर, २२२); पटरितु रहत जहां कर जोरे बंहुठ हू को मोहे (भा० ग्रंथा० (२)—भारतेन्दु, ४०७); जिस लोक क्वाति के पोछे ये हाथ जोड़े नहीं फिरे उसने इनसे कैसा किनारा कसा (गुलेरी ग्रंथ (१)—गुलेरी, २७८)

### हाथ भाड़ कर खड़ा होना

यह दिखाना कि मेरे पास कुछ नहीं है। प्रयोग—केत खेनार हारि तेन्ह पास। हाथ भाड़ि होइ चलाहि निरासा (पद०—जायसी, २१४)

### हाथ भाड़कर चल देना

सब कुछ छोड़ कर चल देना। प्रयोग—कहै कबीर अंत की बारी, हाथ भाड़ि जंस चले तुवारी (कबीर ग्रंथा०—कबीर, ११९)

### हाथ भाड़ते

आराम से, आसानी से। प्रयोग—देख मैं न ब्रायो ऐसे कौन जाने कैसे गयो दिल्ली कर मीड़े कर भारत किंत गयो (भूषण ग्रंथा०—भूषण, २२२)

(समा० मुहा०—हाथ फटकारते)

### हाथ डालना

किसी काम को प्रारम्भ करना। प्रयोग—जो काम मेरे बूते के बाहर है, उसमें हाथ डालकर क्यों अपनी जिन्दगी खराब कर (मान० (१)—प्रेमचंद, ८०); कर्नात ने सख्तन



को इस संदगी में हाथ न डालने का आदेश दिया था (बुंद०—अ० ना०, ५३३); जिस काम में वह हाथ डाले उसे जी जान से करना चाहिये (सा० सी०—महा० द्विवेदी, १०८) (÷)

(२) योग देना। प्रयोग—कामता ध्वनिचलित स्वर में बोले—हितने ही के हों, मैं अनीति में हाथ नहीं डाला चाहता (मान० (१)—प्रेमचंद, ६७); देखिए प्रयोग (१) में (÷) भी।

(३) हस्तक्षेप करना। प्रयोग—राजा धर्म के मामले में हाथ नहीं डाल पावेगे (मुग०—बु० वर्षा, २१८); शासन के कामों में तुम यों हरगिज हाथ न डालो (मुर०—भक्त, ९५); मैं क्या कहूँ, जो तुम करते हो, उसमें मैं हाथ डाल नहीं सकती (ठेठ०—हरिऔध, ४३)

(४) अनुचित तरीके से पाले की इच्छा करनी। प्रयोग—जिन राजपूत वीरों की सहायता से आज तुम्हें यह प्रताप प्राप्त हुआ है, वे कुलांगार, उन्हीं की बहू बेटियों पर हाथ डालते तुम्हें सज्जा नहीं आती (राधा० प्रशा०—राधा० दास, ६९१); लेख में लिखा है कि देवियों पर हाथ डालने से जैसे लंका घोर हस्तिनापुर का नाश हो गया, ऐसे ही × × का नाश हो जायगा (पद्म० के पत्र—पद्म० शर्मा, २४३)

### हाथ तंग होना

रूपए पैसे की कमी हो जानी। प्रयोग—उन्होंने लिखा था कि इस समय हाथ तंग है, इसलिए मदद करने से लाचार हूँ (बुंद०—अ० ना०, २९२); लेकिन कभी हाथ तंग रहने के कारण उनके लिए नए कपड़े न बनवा सकते × × तो दोनों माताएँ व्यंग्यों और कटुतियों से उनका हृदय छेद डालती थी (संग० (१)—प्रेमचंद, १२१)

(समा० मुद्दा०—हाथ दब जाना)

### हाथ तैयार होना

हस्तकला आदि में बहुत अभ्यस्त एवं कुशल होना। प्रयोग—बेला सितार से भी अच्छा बजा। बड़ा तैयार हाथ है (पद्म० के पत्र—पद्म० शर्मा, १०६)

### हाथ धामना

(१) मारने से रोकना। प्रयोग—लोक-व्यवहार की दृष्टि से अनिष्ट से बचने बचाने के लिए दृष्ट सही है कि हम बुद्धों का हाथ धामें और धृष्टों का मुँह (चिंता० (१)—शुक्ल, ६४)

(२) सहारा देना। प्रयोग—धामते हाथ क्यों नहीं मेरा है कहाँ हाथ धामने वाले (चुनते०—हरिऔध, ६५); धम् अवलाका कर लें धाम, सीताराम, सीताराम (खर्ग धूलि—पंत, १५९)

### हाथ दबाकर

(१) धीरे धीरे। प्रयोग—राइ, तुझे भाइ, लगाना भी नहीं आता × × हाथ दबाकर लगा (कर्म०—प्रेमचंद, ३३५)

(२) जिक्रापत से।

### हाथ दिखाना

(१) हस्तक्षेप दिखाना। प्रयोग—आप्या नहीं हजारे के साथ कि कील में दिखऊँ तुम्हें घपना हाथ (बुद०—वचन, ६९)

(२) लड़ाई में वीरता का प्रदर्शन करना। प्रयोग—मीर सज्जद ! सेनानायक दिलला दो फिर अपने हाथ। कह दो, सेना तलवारें कर नगी घाब मेरे साथ (मुर०—भक्त, १०९)

(३) हस्त-रेखा दिखाकर भाग्य जानना।

(४) बैद्य की नाड़ी दिखाना।

### हाथ देना

(१) सहारा देना। प्रयोग—दोनों हैं महान × × वे देंगे साथ—वे देंगे हाथ (बुद०—वचन, ८०); क्या उबर अब नहीं सकेंगे हम हाथ देकर उबारिये हमको (चुनते०—हरिऔध, ३)

(२) किसी से अपनी बात को पृष्ठ कराने के लिये हाथ में हाथ देना।

(३) फटकारना।

(४) किसी काम में योग देना।

### हाथ धोकर पीछे पड़ना

(१) सब छोड़ कर किसी के पीछे पड़ जाना। प्रयोग—सज्जा के सामने दहकत करते थे लेकिन जहाँ किसी ने दान दिलायी और यह हाथ धोकर उनके पीछे पड़े (गोदान—प्रेमचंद, ९४); धो न बैठेंगे हितों से हाथ हम हाथ धोकर क्यों न वे पीछे पड़े (चुनते०—हरिऔध, ११); इसलिए × × बीणा के पीछे हाथ धोकर पड़ गया है (मैला०—रेणु, १८८)

(२) किसी काम में जी जान से लग जाना।



### हाथ धो बैठना

सो देना, प्राप्ति की संभावना न होनी। प्रयोग—कापो... अपनी बोधिश से कामयाब न हो कभी-कभी तो वियोग में विन्दवी से हाथ धो बैठता है (सा० सु०—वा० मृ०, १४)

### हाथ धोना

(१) सो देना; प्राप्ति की संभावना न रहनी। प्रयोग—मुझे यह है कि और बिलंब करने में शायद मानी से हाथ धोना पड़े (मान०(१)—प्रेमचंद, २०७); पड़ते हो रहते हैं अब भी दिल में बुरे फसले जिनकी टपक बहुत खलती है हाथ सुखों से धो ले (मर्म०—हरिऔध, १२८)

(२) मुक्ति या छुटकारा पाना।

### हाथ न आना

(१) बल में न आना; पकड़ में न आना। प्रयोग—मूर ख्याम सति करत अचगरी, कैसेहु काहु हाथ न आवै (सु० सा०—सुर, २०५१); सो बितु लै उहि बोर चत्तारि तो वह नाथ हाथ नहि आवै (नंद० प्रथा०—नंद०, ११३)(+); ठाकुर मैं हू उपाय किये वह आवै न हाथ कुसंग बरसौ है (ठाकुर०—ठाकुर, ३८); यह देखो, हुरद के घंवर और आंखों के सामने फिर रहे हो, पर हाथ नहीं आते (पट्टन पराग—पट्टन० कर्मा, ४१); यह इंदु धनुष डोपदी का चोर है, इसका अयोध छोड़ शूच करिए धामे है—ओ हाथ नहीं आतो (कला०—पंत, १३७-१३८)

(२) कुछ न मिलना। प्रयोग—यह तन काचा कुंभ है, लियो फिरि या साधि। इतका सावा कुटि मया, कछु न आया हाथि (कबीर प्रथा०—कबीर, २५); नाखन लाग्यो रुई गई उडि हाथ कछु नहि आयो (सु० सा०—सुर, ३३५); देखिए प्रयोग (१) में (+) भी।

### हाथ न सुझना, हाथ से हाथ न सुझना

बहुत अचंचल होना। प्रयोग—आधी रात का समा बड़ी अचिपानी रात, × × पसारने पर हाथ भी न सुझता (डैट०—हरिऔध, २६); मैं धक्कर तुमसे केवल तम के प्रगाढ़ पदों में मिली जहाँ हाथ को हाथ नहीं सुझता था (कनु०—मारती, १४)

### हाथ न होना

(१) योग न होना। प्रयोग—जिन भिकारियों का धाधार

लिया गया था, उनमें राजा का हाथ न था (चौटी०—निराला, ४२)

(२) पास में न होना, प्राप्त न होना। प्रयोग—कबीर सुपन कर धन, जागत हाथि न होइ (कबीर प्रथा०—कबीर, २३१)

(३) रजस्वला होना।

### हाथ नाड़ी पर होना

आंतरिक स्थिति में अवगत होने की चेष्टा करनी। प्रयोग—उनका हाथ लोथों की नाड़ी पर है। कब उन्हें "लंला-मजनु" जैसी कहानी चाहिए, कब "सिकन्दर और पोरस" की × × यह सब-सब सूख जानत है (पैतरे—अशक, ५०)

### हाथ पकड़ना

(१) सहारा देना; शरण में लेना। प्रयोग—ऐसी दसा जग छायो अंधर बिना हित-मूरति कौन संभारे। हे तिन ही की कृपा पन धानद हाथ गहै विप-नामनि पारं (घन० कवित्त—घना०, १८१); काल व्याल के गाल सो राखि लियो गहि हाथ (राधा० प्रथा०—राधा० दास, ६५); हे गई प्रब बुरी पकड़ पकड़ी आप आ हाथ हाथ ले पकड़ मेरा (सुमते०—हरिऔध, ३); वह मानस के छाया पट पर सींच रही थी भांकी जिसने उसका कर पकड़ा उसकी मूर्त वह बांकी (नूरा०—भक्त, २७)

(२) किसी काम से रोकना। प्रयोग—अगर कुछ नीयत बद होतो, तो इसका हाथ किसने पकड़ा था, सुभागी को खुले खजाने रख लेता (रंग० (२)—प्रेमचंद, १५६); मैं अगर हाथ पकड़ू, तो जो बोर की सजा वह मेरी (सु० सु०—सुदर्शन, ९९); घरे, तेरा हाथ हमने कब पकड़ा? जमा-जमा तो सब तेरे हाथ में है, नू लूद बनवा ले (मूले०—भग०वर्मा, १०); जब वह न रहेंगे, उन चकत अपने धादपों का पालन करना। तब कोई तुम्हारा हाथ न पकड़ना (कर्म०—प्रेमचंद, ४५)

(३) विवाह करना। प्रयोग—यदि अपनी पत्नी पर अत्याचार करनेवाले किसी व्यक्ति को उसे समझाता है तो वह कहेगा कि "तुमने इसका हाथ पकड़ा है" (जिता० (१)—शुक्ल, १०९)

### हाथ पकड़ाना

(१) विवाह करा देना। प्रयोग—माता-पिता जिसका हाथ



पकड़ा देंगे, उसी की स्वीकार कर लोगे (मिलना०—औशिक, ३५)

(२) मुपुर्द करना ।

**हाथ पड़ना**

मिलना । प्रयोग—कबीर दिल त्यागति भवा, पाया फल सप्रथ्व । सागर माहि वहीनता, हीरे परि गवा हव्य (कबीर प्रथा०—कबीर, १५); कह गय हाथ परयो मुफलक मुत, यह ठग ठाठ ठग (सु० सा०—सुर, ४३३९); गति छोड़ होय रहै, मान न ठिक ठहराई । जेतो औगुन बुझिये, गनै हाथ परि जाई (विहारी रत्ना०—विहारी, ४५३)

**हाथ लिये रहना**

बड़ा आदर करना । प्रयोग—देवी की उनको हाथों पर लिए रहती (मान० (४)—प्रेमचंद, ६३)

**हाथ पर हाथ धरे बैठे रहना**

कुछ काम धंधा न करना, निश्चेष्ट रहना । प्रयोग—इस कार्य में आप हाथ पर हाथ धरे बैठ नहीं सकते (अशोक०—ह० प्र० हि०, १५७); फिर भी इन फाटकों के तोपची हाथ पर हाथ धरे न बैठें थे (क्रांसी०—वृ० वर्मा, ३७६); हम मनुष्य हैं, क्यों निराश हो बैठें, धरे हाथ पर हाथ (नूर०—भक्त, ७); क्यों रे, जब तक मैं जान मंगाऊँ, तब तक आराम से बैठ रहता हूँ । हाथ पर हाथ धरे ? (रेहमाँ०—राम० वर्मा, १९८)

**हाथ पसारना**

मांगना, प्राप्त करना । प्रयोग—जहूँ सवि शिष्टि न जाई पसारि । तहो पसारनि हाथ मिलोस (पद०—जायसी, २३४); पहिले हाथ पसारि के बहुरि पसारि पाय (कुण्ड०—गिरधर दास, ५२); पर सविष का तो धर्म नहीं कि किसी के आगे हाथ पसारि (भा० प्रथा० (१)—भारतेन्दु, २८३); भले पसारि हाथ लगे जब प्राण घघर तर (राधा० प्रथा०—राधा० दास, ४५); यदि कोई दीन बाह्यण लड़की व्याहने के लिए उनके सामने हाथ पसारता तो वह सानी हाथ न छोड़ता (मान० (८)—प्रेमचंद, ३७); कहे जाती हूँ, जिस दिन तुने उस चमकीली बस्तु के लिए हाथ पसारा, उसी दिन इस देश की दुर्दशा का प्रारम्भ होगा (कामना—प्रसाद, १७)

(समा० मुहा०—हाथ फैलाना)

**हाथ पसारें जाना**

(१) सानी हाथ जाना । प्रयोग—बार दिन में हाथ पसारें चले जैहो । ई ताल तुमरे संग न जाई (प्रेमा०—प्रेमचंद, १९१) (÷)

(२) मर्य के समय साध कुछ न ले जाना । प्रयोग—देखिए प्रयोग (१) में (÷) ।

**हाथ पसारें न मुझना**

बहत अचेरा होना । प्रयोग—मो जमा दी गई नहीं क्यों जोत तो नहीं मुझता पसारें हाथ (बोल०—हरिऔध, १७०)

**हाथ पीला होना**

बिवाह होना । प्रयोग—हमने तो दमकों पास कराकर बीलों के हाथ पीले करा दिये (झुठा०—यशपाल, ५५); बीना के हाथ पीले होने जा रहे हैं (कठ०—दे० स०, ४५)

**हाथ फेंकना**

(१) दांव चलाया । प्रयोग—आप तो बात फेंकते ही से अब लगे हाथ फेंकने तो क्या (बोल०—हरिऔध, १७३) (÷)  
(२) मारना । प्रयोग—देखिए प्रयोग (१) में (÷)  
(३) जल में दांव की कौड़ी फेंकनी ।

**हाथ फेरना**

चालाकी में हथिया लेना । प्रयोग—हाथ फेर बेरोश बना कर, दिल पर माक हाथ फेरा (नूर०—भक्त, ७६); तकाकी में देखा नहीं, तहबीबदार साहब ने हजारों पर हाथ फेर दिया (प्रेमा०—प्रेमचंद, ६)

(२) खाना । प्रयोग—घूमे रहने पर सब को पेहा अच्छा लगता है पर चौबेजी पेट भर भोजन के ऊपर भी पेट पर हाथ फेरते हैं (चिता० (३)—शुक्ल, ७०); आज घोर रह गया तो छः सेर पर हाथ फेरेंगे (निर्मला—प्रेमचंद, ३२)

(३) कोई काम करने का प्रयत्न करना । प्रयोग—परन्तु अटल ने सितार को पहल न करके बीणा पर हाथ फेरने का निश्चय किया (मृग०—वृ० वर्मा, ४२६)

(४) प्रयोग में आना ।

**हाथ फैलाना**

मांगना । प्रयोग—रूपा-पावनाथ सोकनाथ-नाथ सोतानाथ-तनि रपुनाथ हाथ और काहि जोड़िये (कवि०—दुलसी,



१२१); घर-घर जाचक भोज हित कर ओड़त कछु देह (पहमा०—पटुमाकर, ५०); बाबन आंगूर गात परपो ही पमारन (राधा० प्रथा०—राधा० दास, ५६); मसीबत में ही आदमी दूसरो के सामने हाथ फैलाता है (गोदान—प्रेमचंद, २१); कब उनके सामने हाथ फैलाते बड़ है बरा ? (मम०—हरिऔध, १२२)

### हाथ बंटना या बंटाना

काम में सहायता मिलनी या देनी। प्रयोग—घन्टा, हम बरा बहू की रोटी बिनाय देह जाय के, बिचारी का कुछ बट जाय (मुले०—भग० उमा, ११); मालिकों को चाहिये कि x x स्वयं ही नौकर का हाथ बटाया करें (मेरो—गुलाब०, १६३-१६४); विमृति के काम में हमें भी उन लोगों का हाथ बटाना चाहिए (सुधगाछ—दे० स०, २६४); देश का कलंक धोने में हाथ बटा, कल परीक्षा होगी (कामना—प्रसाद, ९४); हाथ उनके नहीं बटावेंगे हाथ बिन के लहू भरे होंगे (चुमते०—हरिऔध, ११)

### हाथ बंद करना

सबं कम या बन्द करना। प्रयोग—मुझे कभी-कभी बिता होती थी कि उन्होंने हाथ बन्द न किया तो नतीजा क्या होगा ? (मान० (१)—प्रेमचंद, ८८)

### हाथ बंध जाना

निर्देशित घषवा निर्धारित के अनिवार्य कुछ न कर सकना। प्रयोग—कोई चारा नहीं देन पड़ता। हाथ भी बंधे हैं (कुल्लो—निराला, ११३); चाहिये तोड़ना सभी बंधन बेहतर हाथ जब बंधे होंगे (बोल०—हरिऔध, १६७)

### हाथ बंधाना

परबध होना, शर्त में बंध जाना। प्रयोग—भला इस तरह हाथ किसने बंधाये किसी ने कभी यों न जानू बंधाये (चुमते०—हरिऔध, १८४)

### हाथ बटोरना

खर्च में कमी करनी। प्रयोग—घन अगर है बटोरना हम को तो बटोरे न हाथ अपना हम (चोखे०—हरिऔध, १२४)

(२) किसी कार्य में दिए जाने वाले सहयोग में कमी करनी।

### हाथ बढाना

(१) किसी काम को करने के लिए जाने जाना। प्रयोग—

उमके लिए सुब तब तक के लिए रुका नहीं रहता जब तक कि फल प्राप्त न हो जाय, बल्कि उनी समय से थोड़ा-थोड़ा करके मिलने लगता है जब से कर्म की ओर हाथ बढ़ाता है (चित्ता० (१)—शुक्ल, १५)

(२) लेने की इच्छा होनी, लेने या स्पर्श के लिए हाथ आगे करना। प्रयोग—पर जब उन वस्तु की ओर हाथ बढ़ाएंगे या ओरों को उसकी ओर हाथ बढ़ाने न देंगे तब बहुत से लोगों का ध्यान हमारे इस कृत्य पर जाएगा (चित्ता० (१)—शुक्ल, ७२); कोई उनकी जायदाद पर जबर-दस्ती हाथ बढ़ाएगा तो वे लड़ने पर उत्साह हो ही जायेंगे (रंग० (१)—प्रेमचंद, २०६)

(३) सहारे के लिए हाथ बढ़ाना।

(४) मैथी इत्यादि के लिए प्रस्तुत होना।

### हाथ बांधकर

बिनीत होकर। प्रयोग—इयाह से पहले मैंने परमात्मा से हाथ बांधकर जिस-जिस चीज के लिए प्रार्थना की थी, मुझे उससे भी अधिक मिल गया (सु० सु०—सुदर्शन, २१८)

### हाथ बांधकर खड़ा रहना

घन्यत जाजाकारी होना; यश में रहना; सेवा में बराबर उपस्थित रहना। प्रयोग—जल पिपित सिंह अरु अजा साथ बिचूत ठाड़ी जह बांधि हाथ (राधा० प्रथा०—राधा० दास, १०); इस देश के हाकिम घाफकी ताल पर नाचते थे, राजा महाराजा डोरी हिलाने से सामने हाथ बांध हाजिर होते थे (गु० नि०—बा० सु० गु०, २१३); वह नित्य घाफके सामने हाथ बांधे खड़ा रहेगा (मान० (७)—प्रेमचंद, ७); कोई लाट साहब बोड़ो हैं जो लोग हाथ बांध खड़े रहेंगे (मैला०—रेणु, ३०३)

### हाथ बांध कर खर्च करना

किपायत से खर्च करना। प्रयोग—लोग कहते हैं, सर्वो-गर्मी में, तीरथ-बरत में हाथ बांधकर खर्च करो (गोदान—प्रेमचंद, २३)

### हाथ बांधना

(१) कुछ करने से रोकना। प्रयोग—मेरा आदि-घर्म मेरे हाथ बांधे हुए है (रंग० (२)—प्रेमचंद, २९)

(२) खर्च कम करना।



### हाथ बांधा जाना

गिरफ्तार किया जाना। प्रयोग—हाथ कैसे तब न बांधे जायेंगे। जब खड़े हम हाथ बांधे ही रहे (चुभते०—हरिऔध, १०४)

### हाथ बांधे बैठना

चपचाप बैठना। प्रयोग—हाथ कैसे तब न बांधे जायेंगे जब खड़े हम हाथ बांधे ही रहे (चुभते०—हरिऔध, १०४)

### हाथ बैठना

(१) हस्त-कार्य में घम्यस्त होना। प्रयोग—कारचोबी, चिवकन, कामदानी पर भी हाथ भरपूर बैठा है (सौ०—ब्र० स०, ३१)

(२) युक्ति कारगर होना। प्रयोग—इस बेर भी यदि भगवान् एकलिंग की कृपा होगी तो वह हाथ बैठेगा कि फिर कभी इधर मुंह न करेगा (राधा० ग्रंथा०—राधा० दास, ५५३); बीनना, सीना, परोना, कातना, गूँघना, लिखना न घाता है कहे। काम की यह बात है, हर काम में बैठता है हाथ बैठते रहे (चोखे०—हरिऔध, १७)

### हाथ भर का कलेजा होना

(१) बहुत साहसी होना। प्रयोग—सब बोलने के लिए हाथ भरका कलेजा चाहिए, कुमारी जी (वि०—प्रेमो, ४५)

(२) उत्साह बढ़ना।

### हाथ भरा होना

पाम में पर्याप्त या बहुत होना। प्रयोग—आप एक नयी सी मोशल कहानी लिखिए, मैं जरूर आपकी मदद करूँगा। इस वक्त तो मेरे हाथ भरे हैं (पैतरे—अशक, ७६)

### हाथ मजबूत करना या होना

स्थिति दृढ़ करनी या होनी। प्रयोग—हमारे हाथ सब तरफ से मजबूत हैं (वृ०—अ० ना०, ५७)

### हाथ मरोड़ना

पछताना। प्रयोग—राजा बहुत मुण् तपि लाइ लाइ भूईं माय। काहूँ छुअँ न पारे नए मरोरत हाथ (पद०—जायसी, १०१५)

### हाथ मलकर पछताना

किसी चीज के न मिलने का पछतावा होना। प्रयोग—मुनि मुनि सीस धुनहि सब कर मल मल पछिताहि (पद०—जायसी, ४३१३); मुरदास बस भई विरह के, कर मोजे

पछितात (सू० सा०—सूर, ४५९४); कर मोड़े सहनरि पछिताई। कर चिंता कोन बनाई (नंद० ग्रंथा०—नंद०, १०६); खा। न खचें गुम घन, खोर सब ले जाय पीछे गयो मधु मन्त्रिका, हाथ मल पछिताय (वृ० स०—वृन्द, ११९); हाथ मल मल कर न क्यों पछिताय हम उड़ गये तोते हमारे हाथ के (चुभते०—हरिऔध, ७१)

### हाथ मलकर मरना, रह जाना

पछता कर रह जाना। प्रयोग—मुरदास विरिधर मैं पाए मन्मथ दोउ कर मीजि मरें (सू० सा० (परि० १)—सूर, ११४); दोनों हाथों लो—नहीं पीछे हाथ ही मलते रहोगे (मा० ग्रंथा० (१)—मारतेन्दु, ६६१); जब इन्द्रजित सवारी बाजे आदि लिए हुए जेल पहुंचे, तो मालूम हुआ, पित्ररा खाली है, चिड़िया उड़ गई। हाथ मलकर रह गए (रंग० (२)—प्रेमचंद, १५२); हाथ मल मल कब न रह जाना पड़ा कब गया पत्थर न छाती पर रखा (बोल०—हरिऔध, १५०)

### हाथ मल कर रह जाना

#### दे० हाथ मलकर मरना

### हाथ मलना

(१) बहुत पछताना। प्रयोग—हाथ मीजि विर धुनै सो रोवै जो निचित घम मोव (पद०—जायसी, २११); कर मीजति विर धुनति नारि सब, यह कहि-कहि पछिताही (सू० सा०—सूर, २५५१); कर मीजति निर धुनि पछिताही (राम० अ०—तुलसी, ४४३); तब न सवारी नाच, मीजति है जब हाव, सेनापति जदुनाथ विना दुल ए सहे (क० र०—सेनापति, ७२) (—); गढ़देव गढ़ चांदा भागनेर बीजापुर नृपन की नारि रोइ हावन मलति है (मृपण ग्रंथा०—मृपण, १४५) (—); मीड़ि के लेखे कर मीड़िबोई हाव लग्यो सो न लग्यो हाव रख्यो सकुचि सखान सो (घन० कवित—घना०, १५५) (—); दोनों यह हाथ कोई कहाँ तक मला करे (इशा०—इंशा०, ५६); यवन सैन मेवारहि लखि लखि हाथनि मोजे (राधा० ग्रंथा०—राधा० दास, ६७६) (—) (—१); तो लग्यो हाथ मलने जावक हाथ मरदन पर घर-हाला गया (चोखे०—हरिऔध, १६) (—); पार, दुनिया में जायें, तो कुछ दिन सैर सवाटे का घानन्द भी उठानो, नहीं तो एक दिन यो ही हाथ मलते चले जायेंगे (मान० (२)—प्रेमचंद, ३५)



(२) निराश और दुखी होना। प्रयोग—मीजत हाथ सकल गोकुल जन, बिरह बिकल बेहाल (सू० सा०—सूर, ३६१३); दूसरे भी मलते हैं हाथ, हैं घनाय हिन्दू, असहनीय हो रहा है अत्याचार (परि०—निराला, २२७); देखिए प्रयोग (१) में (÷) भी।

(३) क्रोध के कारण हाथ मलना। प्रयोग—घर दमन दसि मीजत हाथा (राम०—लाल, ५९४); देखिए प्रयोग (१) में (÷) भी।

### हाथ मारना

(१) किसी शर्त की पूर्ति करनी। प्रयोग—किसलिये हाथ दूसरा मारे घाइसे हाथ मारते हम हैं (बोल०—हरिऔध, १७३) (÷)

(२) प्रतिज्ञा-बद्ध होना। प्रयोग—मेरी जोरी है धीरामा, हाथ मारे जात (सू० सा०—सूर, ५३१); देखिए प्रयोग (१) में (÷) भी।

(३) नाजायज लाभ उठाना। प्रयोग—शब की बार बड़ा हाथ मारा है (मूल०—म० च० वर्मा, २२३)

(४) चोरी करनी।

### हाथ मिलाना

(१) मुकाबला करना। प्रयोग—दिलावरी तो जब देखता कि किसी कड़े आदमी से हाथ मिलते। इस बालक को पीट लिया, तो कौन-सी बहादुरी दिखाई (रंग०—प्रेमचंद, ९१)

(२) मित्रता करनी। प्रयोग—इंसान बही है जो अपने दुश्मन से भी सदा हाथ मिलाने के लिए तैयार रहे (कुँट०—श० ना०, २०५); हाथ कोई तब मिलाता किस तरह हाथ हमने जब बढ़ाया ही नहीं (बोल०—हरिऔध, १६७)

(३) किसी बात को स्वीकार करना।

### हाथ में

पाल में। प्रयोग—इसलिए साठ सौ आठ सौ जो हाथ बचेगा, वह आठे दिन काम ही घायेगा (ल्याग०—जैनेन्द्र, ६८)

### हाथ में आना,—करना,—पड़ना

अधिकार या वश में आना या करना; मिलना। प्रयोग—सहित, सनेह, सकोच, सुख, स्वेद, कंप, मूसकानि। प्राप्ति

पानि करि आपने, पान परे मो पानि (बिहारी रत्ना०—बिहारी, २६५); कंचन कलित मनि मूदरी लजित मानौ पिय परिजन मन हाथ करि लीने हैं (केशव०—केशव, २०१); बातन जाय लगाय लई रस ही रस में मन हाथ के लीना (मति० मक०—मतिराम, १२०); अकुलानि के पानि परघो दिन राति सुख्यो छिनकोन कहं बहुरै (घन० कवित्त—घना० ३०); मन हाथों में करने का बल छोटे छोटे हाथों में (बोल०—हरिऔध, १७१); मनुष्य प्रेम ही के द्वारा दूसरे के मन को अपने हाथों में करना है (सौ०—श० स०, ९०); दूसरों को देती, मूद की जगह मूल भी गायब हो जाता हमने लिया है तो हाथ में रुपए घाते ही नाक पर रख देंगे (गोदान—प्रेमचंद, २९८); चाहता था प्राप्त मैं करना जिसे तत्त्व वह करगत हुआ या उड़ गया (कुरु०—दिनकर, ६)

### हाथ में करना

#### दे० हाथ में आना

#### हाथ में खूजली होना

(१) मारने की इच्छा होनी। प्रयोग—रमा खुद खूब ताश और शतरंज खेलता था, पर भाइयों को खेलते देखकर उसके हाथ में खूजली होने लगती थी (गवन—प्रेमचंद, २०-२१)

(२) कुछ मिलने का शकुन होना।

#### हाथ में भंडा लेना

किसी काम को करने का निश्चय करना। प्रयोग—संकटों की तब करे परवाह क्या हाथ भंडा जब सुधारों का लिया (चुमते०—हरिऔध, १०)

#### हाथ में दिया होते कुआं में गिरना

साधन होते हुए भी अनिष्ट की प्राप्ति होना। प्रयोग—चौदस प्रभावस रवि रवि मांगहि कर देपक ले रूप परहि (कबीर प्रथा०—कबीर, २८९)

#### हाथ में नकेल रखना या होना,—बागडोर रखना या होना

अपने वश में रखना। प्रयोग—नाक में दम सदा रहेगा ही और के हाथ में नकेल रहे (बोल०—हरिऔध, १७०); और इन्ही महानुभावों के हाथ में राष्ट्र की बागडोर है (कर्म०—प्रेमचंद, १०२)



### हाथ में पड़ना

दे० हाथ में आना

हाथ में धागडोर रखना या होना

दे० हाथ में नकेल रखना या होना

हाथ में मेंहदी लगना

कुछ न करना, चुपचाप बैठे रहना। प्रयोग—नाग से लगते नहीं क्यों काम में हाथ में तो है नहीं मेंहदी लगी (चुभते०—हरिऔध, ८८)

हाथ में रखना

बश में रखना। प्रयोग—जोबन तुरं हाथ गद्दि लीजें। जहाँ जाइ तहं जाइ न दीजें (पट०—जायसी, १८४): वडे कहावत घाप मो गरुडे गोपीनाथ। तो बदिहो, जो राखिहो हाथन लखि मनु हाथ (बिहारी रत्ना०—बिहारी, २२९): इनको हाथ में रखने में शामन में विघ्न बाधा उत्पन्न न होगी (झांसी०—वृ० वर्मा, १७३)

हाथ में रहना

बश में होना। प्रयोग—उत ऊतर-पायें लगी मिहंदी सु कहा लागि धीरज हाथ रहै (घन० कवित्त—घना०, २२८): मेवार की प्रतिष्ठा तुम लोगों के हाथ है (राधा० ग्रंथा०—राधा० दास, ६२५): अरे मने तो पहले ही कहा था कि इंद्रे स ही पाम करा लेते लड़की अपने हाथ रहती (भोर०—जग० माधुर, १०६-१०७): चम्पा और कौशल के इस अभिमान का उद्देश्य यह था कि भारत के पूर्वोत्तर और पश्चिमी वाणिज्य द्वार सर्वतोभावेन मागधों के हाथ में रहें (वंशाली० (१)—चतुर०, ६९)

हाथ में लेना

(१) अपने बश में करना। प्रयोग—दान-कृपान-विधानन सो सिगरी बसुधा जिन हाथ लई है (केशव० (२)—केशव, २४९): जब से उनकी माता जी ने प्रबन्ध अपने हाथ में ले लिया है, जैसे घर लक्ष्मी आ गयी है (मान० (१)—प्रेमचंद, ८७) (÷)

(२) किसी काम को करने का विम्वला लेना। प्रयोग—सूद जी ने पुरी और कनक का मामला हाथ में लिया तो अपने स्वभाव और अभ्वास के अनुसार उसे शीघ्र ही निबटा देना चाहता (झुठा० (२)—यशपाल, ३१२): देखिए प्रयोग (१) में (÷) भी।

हाथ में हाथ देना या लेना

(१) सहयोग देना। प्रयोग—पर समय असमय बिना समझे हुए क्यों किसी के हाथ में हम हाथ दें (बोल०—हरिऔध, १६९)

(२) विवाह होना। प्रयोग—मैं हूँ वही तिमका लिये था हाथ घाने हाथ में (जय०—गुप्त, २५)

(३) उत्पन्न घनिष्ठता होनी।

हाथ में होना

(१) पाम में होना। प्रयोग—हाथ में बार पैसे होंगे तो पराये भी घाने हो जायेंगे (गदन—प्रेमचंद, १७७): भीत मागे हम नहीं मिलती रह गये हाथ में नहीं पैसे (चुभते०—हरिऔध, ७५)

(२) बश में होना। प्रयोग—गरि पराए हाथ है तुम्ह बिनु पाव न छूटि (पट०—जायसी, ३०१३): मैंना हाथ न मेरे आलो (सु० सा०—सूर, २८६८): सब सूर काज भरत के हाथा (राम० (अ)—तुलसी, ६२३): हिथो नहीं अब हाथ हमारे (नंद० ग्रंथा०—नंद, २७६): बाक चुरीनि चित्त घन आनंद चित्त मुजान के पानि भयो है (घन० कवित्त—घना०, १३४): चित्तर घोर पदमावती तो हमारे हाथ में है (राधा० ग्रंथा०—राधा० दास, ५९९): नेहरू बिलकुल कंपिट-लिस्टों के हाथ में है (झुठा० (२)—यशपाल, ३२५): वैशाली देखने की इच्छा तो बहुत हुई पर अब प्रोग्राम टउन जी के हाथ में है (पट्टम० के पत्र—पट्टम० शर्मा, १८): और यह भी घाप कैसे मानते हैं कि सृजन करना आप ही के हाथ में है? (शेखर (२)—अज्ञेय, ७४)

(३) किसी काम को करने की सामर्थ्य होना। प्रयोग—कीजें मनभाई इो कहि मैं जताई, तेरे हाथ ही बड़ाई घनघानंद सु काज की (घन० कवित्त—घना०, २११)

हाथ रखना

(१) प्राप्त करना। प्रयोग—देवकान्त पर हाथ न रख सकने का उसे बहुत खेद था (ब्रह्म०—दे० सा०, २४८)

(२) मारना। प्रयोग—मैं मोचता हूँ, आवाज कसनेवालों पर एक हाथ रखूँ तो छड़ी का दूध पाद आ जाय (चतुर्दी०—निराला, ४४)

(३) जानाकी की बातें करनी।

(४) योग होना।



### हाथ रह जाना

हाथ का चक जाना । प्रयोग—तुम तक पहुंचने के लिए मुझे बहुत तेज चप्पू चलाना पड़ा । मेरे तो हाथ रह गये (ब्रह्म०—दे० स०, ३४७); बेतरह जब सदा रहा चलता किस तरह हाथ तब न रह जाता (बोल०—हरिऔध, १६८)

### हाथ रहना

(१) योग होना । प्रयोग—देश के उत्थान, समाज की उन्नति और मानसिक भावों के विकास में कितने ही लोगों का हाथ रहता है (कुष्ठ—प० पु० वल्ली, ११६)

(२) मिलना, पल्ले पड़ना । प्रयोग—बहुतन्त्र अंस रोड़ सिर मारा । हाथ न रहा झूठ संसारा (पद०—जायसी, ३४१५); करिही मान मदमोहन सौ, माने हाथ रहैगौ (सु० सा०—सूर, ३४४४); फिर तो लज्जा ही लज्जा हाथ रह जाती है (चिंता० (१)—शुक्ल, ६५)

### हाथ रुकना

(१) खर्च में कमी होनी । प्रयोग—परन्तु जिस जगत पिता जगदीश्वर की संतान के उपकार के लिये इनका धन व्यय होता था उसकी कृपा से न तो कभी इनका हाथ रुका और न मरने के समय ये ऋणी ही मरे (राधा० प्रंथा०—राधा० दास, ३६७)

(२) किसी वस्तु की कमी के कारण काम में रुकावट घानी ।

### हाथ रोकना

(१) किरावत करना । प्रयोग—उम्के पास रुपया हो तो वह उम्के लुटानें में हाथ नहीं रोकता (परोक्षा०—श्री० दास, १०६); बाबू जी का पय छाता है, तो उसमें दस-बीस के नोट डकुर होते हैं, लेकिन अब मुझे हाथ रोकना पड़ेगा (मान० (२)—प्रेमचंद, २८२)

(२) काम रोक देना । प्रयोग—जैहि दिन बाद गाड़ के छेकें । गरबस लेइ हाथ को टेकें (पद०—जायसी, ४२४)

(३) बार बचाना ।

### हाथ रोपना

(१) हाथ फैलाना; मांगना । प्रयोग—दें न निज पानिप गवा पानिप रखें पाँव रोपें पर न रोपें हाथ हम (बोल०—हरिऔध, १७४)

(२) महापता करनी ।

### हाथ लगाना

(१) हाथ में धाना; प्राप्त होना । प्रयोग—घबहूँ जामु अयाने होत धाव नितु भोर । पुनि किछु हाथ न लागिहि मूसि जाहि जब चोर (पद०—जायसी, ११६); औ नहि लगिहहु कहें हमारे नहि लागिहि कछु हाथ तुम्हारे (राम० (अ)—सुलसी, ४१९); मन मेरो महाउर चायनि च्वै तुव पावनि लागि न हाथ लगे (घन० कवित्त—घना०, १२३); इक हाथ लगी मेरे जग बीच हसाई (भा० प्रंथा० (२)—भारतेन्दु, १९५); पागहु कटी सिकारहुं लप्यो न पाके हाथ (राधा० प्रंथा०—राधा० दास, २९); लेकिन इतना जानती थी कि गहने फिर न मिलेंगे और मनोमालिन्य बढ़ने के सिवा कुछ हाथ न लगेगा (मान० (१)—प्रेमचंद, ७५); इन हजरत मंसूर को कहीं वे ग्रंथ हाथ लगे (पद्म पराग—पद्म० शर्मा, १७०)

(२) कोई काम शुरू होना । प्रयोग—मुँसोजी, कारखाने में कब से हाथ लगेगा (रंग० (१)—प्रेमचंद, ३७५); अब लगेगी न देर होने में अब लगा हाथ लागवाले का (धुमते०—हरिऔध, ९९)

(३) हाथ से छू जाना ।

### हाथ लगाना

(१) काम प्रारम्भ करना । प्रयोग—असुर घाये, घायं आये X X न जाने कितनी जातिपाँ यहाँ आई घोर आज के भारतवर्ष बनाने में अपना हाथ लगा गई (अशोक०—ह० प्र० द्वि०, ९) (÷); जब एक दिन हमें अपनी भोपड़ी बनानी है तो क्यों न हमी से हाथ लगा दें (कर्म०—प्रेमचंद, ४९)

(२) किसी काम में योग देना । प्रयोग—यह जस्मो बड़ी पागल है । सबेरे से भूत की तरह जुटी है । और किसी का हाथ हो नहीं लगाने देती (मिस्सा०—कौशिक, २१०); देखिए प्रयोग (१) में (÷) भी ।

(३) खाना । प्रयोग—भगत जी तो न अण्ड को हाथ लगाते हैं, न मांस मदिरा के, समीप जाते हैं (ब्रह्म०—दे० स०, १९)

(४) कोई अहित करना (मारना) । प्रयोग—कियों का मजाल है कि हमारे देवकान्त को हाथ लगा सके ? (ब्रह्म०—दे० स०, ७९)



### हाथ लपकाना

किसी चीज को चुरा लेना; चोरी करनी। प्रयोग—मे भवानी को किसी के गले बांध तो दूँ लेकिन पीछे इन्होंने कहीं हाथ लपकाया तो वह तो मेरी गर्दन पकड़ेगा (गोदान—प्रेमचंद २१५)

### हाथ साफ करना

(१) चुपके से या धोखे से कोई वस्तु चुरा ले जाना या ले लेना। प्रयोग—माँ के गहनों पर हाथ साफ करके चारों भाई उसकी दिलचस्पी करने लगे थे (मान० (१)—प्रेमचंद, ७०); साखी पर हाथ साफ करके सबेरे नशानेवाले किसी धार्मिक की दृष्टि पड़ जायगी तो दो-एक पाई तुम्हें दे ही देगा (तिल्ली—प्रसाद, २३०); जाबियो को लूटते हो, सब मूढस्लेवालों ही पर हाथ साफ करने लगे (रंग० (१)—प्रेमचंद, ३८६)

(२) जाना। प्रयोग—पर बंगाली जिनका रकाबी पर हाथ साफ करते हैं, क्या उनका नाम लेते घोर पेट पर हाथ फेर के x x असली दाता को दुआ देते हैं? (गुं नि०—वा० मु० गु०, ५५८); महमूद ने कलेवे पर हाथ साफ करने शुरू कर दिये (मृग०—पृ० ४३, ७५)

(३) बसूलना; लाभ करना। प्रयोग—अदालत ने भी अच्छे हाथ साफ किए (भा० ग्रंथा० (१)—भारतेन्दु, ४०६)

(४) धन्याम करना।

(५) हाथ की युक्ति करनी।

### हाथ साफ होना

(१) हस्तकौशल में निपुण होना। प्रयोग—इटहरा का नक़्खेरी है। और कौन ऐसा साफ हाथ बजावेगा (मिला०—रेणु, २९५); विदेशी या कितना चालाक, माफ़ थे हाथ, सारी कौम हो रही थी हलाक (बुद्ध०—वचन, ४३)

(२) ईमानदार होना।

### हाथ सिर से लगाना

प्रणाम करना। प्रयोग—बूढ़ा दोनों हाथों को घटने सिर से लगाकर लीट गया (तिल्ली—प्रसाद, ५२)

### हाथ से

(१) द्वारा। प्रयोग—जाति जिनके हाथ से ऊँचे उड़ी सोय उसको क्यों न हाथों हाथ ले (चुमते०—हरिऔध, ६)

(२) कब्जे से।

### हाथ से खो जाना, चला जाना,—जाना रहना, —निकल जाना

कब्जे या बश में न रहना। प्रयोग—नौकरी हाथ से चली जाने की आशंका के बावजूद वह विभाग के मंत्री की आज्ञा पूर्ण करने के प्रयत्न में साथ देना चाहती थी (झुठ० (२)—यशपाल, ३४५); मदन मोहन के मन में हाथ से चीज निकल जाने का खटक न रहा (परोक्षा०—श्री० दास, ५); वह इन खेतों की चर्चा इस तरह करता मानों वे सजीव हैं। घोर वे ही अब हाथ से निकले जाते हैं! (मान० (८)—प्रेमचंद, ६९); “भूटा?” प्रश्न किया प्रमदा ने और कहा—“मेरा मन हाथ निकल गया है मेरे कर से होकर विषय, विकल, निरुपाय (पंच०—गुप्त, ३३); हाथ, हाथ! लड़का था, वह भी हाथ से निकल गया (गवन—प्रेमचंद, २०४); तारा को विश्वास हो गया कि पतिदेव हाथ से गए (सु० सु०—सुदर्शन, १००); मनोज बाबू, आपकी इरा तो आपके हाथ से गई (दुधगाछ—दे० स०, १९४)

### हाथ से चला जाना

दे० हाथ से खो जाना

### हाथ से छूटना

बचे रहना। प्रयोग—छात्र कपट के हाथ से छूटे रहें। पाँव मेरे तो कहीं कैसे छिक्के (चुमते०—हरिऔध, ३८)

### हाथ से जाना रहना

दे० हाथ से खो जाना

### हाथ से जाने देना

(१) धक्कर खो देना। प्रयोग—कौन ऐसे बड़े धक्कर धाए जो उसने हाथ से चले जाने दिए? (शेखर (२)—अज्ञेय, १३०)

(२) धाँपकार से चले जाने देना; छोड़ना। प्रयोग—अस्तर की प्रशंसा का कोई भी अवसर वे हाथ से नहीं जाने देते थे (बाहर०—देव०, ६८)

### हाथ से देना

(१) धाँपकार से चले जाने देना। प्रयोग—उत्तर मिला—तोहीद (जड़तवाट) और सत्यमति को हाथ से न देना (पद्म पराग—पद्म० शर्मा, १५२)

(२) स्वयं दे देना।



### हाथ से न छूना

तनिक भी छवि या सम्पर्क न रखना । प्रयोग—कभी दूध हाथ से तो छूती नहीं, खाने को कौन कहे (मान० १)—प्रेमचंद, २५३)

### हाथ से निकल जाना

#### दे० हाथ से खो जाना

#### हाथ से बेहाथ होना

बस में न होना । प्रयोग—पूहर घोर मंवार घोरतों के ही आदमी हाथ से बेहाथ हो जाते हैं (मा—कौशिक, २१४)

(समा० मुद्रा०—हाथ से बाहर जाना या होना)

### हाथ से हाथ न सूझना

#### दे० हाथ न सूझना

#### हाथ सैला होना

पास में रुपए-पैसे होना । प्रयोग—प्रकाशक का पत्र आया था कि बाजार की मंदी के कारण इस समय उनका हाथ सैला नहीं, रुपया फरवरी मार्च तक भेजेंगे (सुंद०—अ० ना०, १०२)

### हाथ हिलाने चलना

आराम से निश्चित भाव से चलना । प्रयोग—जब हितों से रहने नहीं हिलमिल तब चले हाथ क्या हिलाने हम (बोल०—हरिऔध, १६५)

### हाथ होना

(१) योग होना । प्रयोग—लेकिन मैं तुम्हें यकीन दिलाता हूँ कि इस सब में मेरा कोई हाथ नहीं है (भूले०—मग० वर्मा, १७३); इस तरह की गोपिधियों के संयोजन और संचालन में मन्त्रालय भाई सुरेन्द्र भादुड़ी का हाथ अधिक रहता था (जहाज—इ० जोशी, २२२-२२३); मि० क्लार्क को निश्चय था कि इस विद्रोह में रियासत का हाथ भी अवश्य था (रंग० २)—प्रेमचंद, ६६)

(२) कृपादष्टि होना । प्रयोग—तुम्हारे ऊपर खुदा का हाथ है, खुदा की बरकत है (रंग० १)—प्रेमचंद, ३५४)

(३) रजोदर्शन के चौथे दिन सूख होना ।

(४) बनावट होनी (किसीकी) ।

### हाथ-खर्च

फूटकर खर्च । प्रयोग—उनमें से कुछ रुपए उन्हें हाथ-खर्च के लिये देने थे (राधा० प्रथा०—राधा० दास, २७६)

### हाथ-पांव चलना या चलाना

(१) कार्य करने की सामर्थ्य होनी या कार्य करना ।

प्रयोग—मैं तो अपने हाथ-पैर चलाकर भी जानन्द से रह सकता हूँ (तिली—प्रसाद, ११२); सभी तो हाथ-पैर चलते हैं, पांग खाता हूँ (रंग० १)—प्रेमचंद, २४)

(२) मारपीट होनी या करना । प्रयोग—इस बात का जवाब बात से बोजिए । हाथ-पांव क्यों चलाने लगे ? (सुता० २)—यशपाल, १५३)

### हाथ-पांव जोड़ना

चित्ती करनी । प्रयोग—वह तो इन लोगों को जेहल भेज रहे थे लेकिन इन लोगों ने हाथ-पांव जोड़े, धककर बाटा, तब जाके उन्होंने छोड़ा (गोदान—प्रेमचंद, १८१); बड़ी-बड़ी मशीनवालों से हाथ-पैर जोड़ने पर तो हमारे बच्चों को दूध मिला (ये कीठे०—अ० ना०, ९९)

### हाथ-पांव ठंडा पड़ना या होना

(१) मरणात्मन होना । प्रयोग—अभी एक क्षण पहले महतो ने पानी मांगा था पर जब तक वह पानी लावे, उनका जी डूब गया और हाथ-पांव ठंडे हो गये (मान० १)—प्रेमचंद, २५३)

(२) भय या घासका से स्तब्ध हो जाना ।

### हाथ-पांव डाल देना

निष्क्रिय बैठ जाना । प्रयोग—हम अगर हाथ-पांव डाल सके तब कुदिन पीस क्यों नहीं पाता (सुमते०—हरिऔध, ४९)

### हाथ-पांव ढीले होना

साहस छोड़ देना; शिथिल हो जाना । प्रयोग—दूल्हाजु के हाथ पांव ढीले हो गये हैं (झांसी०—वृ० वर्मा, ४०३); गरीब की कमर टूट गयी । दिल बैठ गया । हाथ-पांव ढीले हो गये (मान० ३)—प्रेमचंद, १७९)

(समा० मुद्रा०—हाथ-पांव ढील देना, हाथ-पैर ढील देना)

### हाथ-पांव न चलना

किर्तव्य विमूढ़ हो जाना । प्रयोग—संकित हूँ ठाड़ी भई, हाथ-पांव नहीं होले (सु० सा०—सूर, २०७९)

### हाथ-पांव पटकना,—मारना

(१) कोपित करनी, परिव्रम करना । प्रयोग—उसने



हाथ-पांव तो बहुत मारे, पर उसकी कुछ चली नहीं (सु० सु०—सुदर्शन, ८५); लाख पटकतू हाथ-पांव पर इससे कब कुछ होने का ? (मधु०—वचन, पद ७०)

(२) छटपटाना ।

(समा० महा०—हाथ-पांव पीटना,—फटाफटाना,—हिलाना)

**हाथ-पांव फूल जाना**

निकतंतव्य विमूढ़ हो जाना; हर या शोक से घबड़ा जाना । प्रयोग—परन्तु आपको देखते ही उस बलवान पुरुष के हाथ पांव फूल गए (परोक्षा०—श्री० दास, ७०); देव न करे, आज मैं बीमार हो जाऊँ, तो तुम्हारे हाथ-पांव फूल जायेंगे (मान० (१)—प्रेमचंद, ८६); आज लालू के मुकदमे का फैसला सुनाया जायगा । हम लोगों के हाथ-पैर फूले हुए हैं (प्रेमा०—प्रेमचंद, ४५); × × अपने पुत्र को लोह में लथपथ देख माँ के हाथ-पांव फूल गये (बेलन—अश्व, ५८)

**हाथ-पांव बचाना**

खुब सावधान रहना । प्रयोग—अब भी घाप सावधान हो जाय और आगे से हाथ पैर बचाकर चले (मा० मा० (१)—कि० गो०, १६४); फिर वह नये सिरे से जीवन-संश्राम में प्रवेश करेगा, हाथ-पांव बचाकर काम करेगा, अपनी चादर के बाहर जो भर भी पांव न फैलायगा (गवन—प्रेमचंद, १५८)

**हाथ-पांव हिलाना**

(१) काम करना । प्रयोग—अपने हाथ-पांव हिलाने की जरूरत नहीं (मान० (१)—प्रेमचंद, १०९)

(२) परिश्रम करना ।

देखिए “हाथ-पैर” के मुहावरे भी

**हाथ-पैर कट जाना**

बेसहारा हो जाना, कोई सहायता देनेवाला न रहना । प्रयोग—जिस तरह मद के मर जाने से औरत अनाथ हो जाती है उसी तरह घोरत के मर जाने से मद के हाथ-पांव कट जाते हैं (गोदान—प्रेमचंद, ८)

**हाथ-पैर कांपना**

डर लगना । प्रयोग—मुहल्ले में तार का चपरासी घाया कि हाथ-पांव कांपने लगे (गु० कहा०—गुलेरी, १०)

**हाथ-पैर का मैल होना**

द० हाथ का मैल होना

**हाथ-पैर गलना**

बहुत उड़ होना । प्रयोग—पानी छूने हाथ पांव गलते हैं (प० पो०—प० ना० मि०, १०६)

**हाथ-पैर छोड़ देना**

निश्चेष्ट होना । प्रयोग—हार कर हाथ-पैर छोड़ देने से यश नहीं मिलता (मैर०—गुलाब०, ४६)

**हाथ-पैर पड़ना**

दीन भाव से प्रार्थना करनी । प्रयोग—मैं भी तो कह चुका, कष्टों और हाथ-पैर पड़ें, पर होना-हुआना कुछ नहीं (रंग० (२)—प्रेमचंद, २८२)

**हाथ-पैर मारना**

बहुत प्रयत्न करना । प्रयोग—उसने नेकी की है, तो उसका खूब दिहोरा पीटेगी और उससे जितना यश मिल सकता है उससे कुछ ज्यादा ही पाने के लिए हाथ-पांव मारेगी (गोदान—प्रेमचंद, २९७)

**हाथ-पैर सम्हालना**

(१) कुछ काम-धाम करने लगना । प्रयोग—जब तक जाहिर अली भी हाथ-पैर सम्हाल लेगा, फिर चैन-ही-चैन है (रंग० (१)—प्रेमचंद, १२१)

(२) सावधानी रखनी ।

**हाथ-पैर हिलाना**

काम करना । प्रयोग—दुनिया में हाथ-पैर हिलाना नहीं अच्छा मर जाना पे उठके कही जाना नहीं अच्छा (मा० गो० (१)—मार्तेन्दु, ४८०); तुम × × बिना हाथ-पैर हिलाए ही चाहते हो कि कोई तुम्हारे मुंह में उहड़ घोर खबंत टपका दे (रंग० (२)—प्रेमचंद, १७२)

**हाथ-पैर होना**

(१) काम करने में समर्थ होना । प्रयोग—कल इनके हाथ-पैर हो जायेंगे, फिर कौन पूछता है (मान० (१)—प्रेमचंद, १२)

(२) हर काम करनेवाले । प्रयोग—अन्नदाता का वह हाथ-पैर था । उसके बिना अन्नदाताका काम ही नहीं चलता था (गोली—चतुर०, १३६)

**हाथ-मुंह फैलाना**

बहुत जानन करना । प्रयोग—कुछ अगर चाह बेहतरी की



है तो बहुत हाथ मुंह न फेंकाने (बोल०—हरिऔध, १६९)  
हाथपाई करना या होना, हाथपाई कराना या होना

मलाई करना, मारपीट करना। प्रयोग—फिरंगियों ने आकर सिव्हर पर हाथपाई आरम्भ की (राधा० प्रथा०—राधा० दास, ३०६); मिस्टर हरिदास बैरिस्टर से तो एक दिन हाथपाई की नौबत आ गयी (प्रेमा०—प्रेमचंद, ११०); पाई कौन मलाई रिम में क्यों करते हैं हाथपाई (बोल०—हरिऔध, १७०); इन दोनों में न तो हाथपाई हुई है और न फिर फुटवेल (मृग०—दु० वर्मा, ४५); बातों-बातों में आप लोग हाथपाई पर उतारू हो गए (धूम०—उ० भट्ट, ७०)

हाथपाई करना या होना

दे० हाथपाई करना या होना

हाथों के खाए कैय होना

भीतर से खोखला पर फूल कर गुप्ता होना। प्रयोग—एक तो खुद ही यह सब पंडिया के नाऊ उस पर चटकी बनी, सुखामद हुई × × इस हाथों के खाए कैय हो गए (मा० प्रथा० (१)—मारलेन्दु, ४७६)

हाथों की फेरी होना

(१) अनुचित संबंध होना। प्रयोग—नाक पा, जिस आबो-हवा में पल-पुल कर बड़ बड़ी हुई थी, उसमें कई हाथों की फेरी रहो होगी (बल०—नागा०, १९)

(२) चालाकी से चोरी का इधर-उधर होना।

हाथों पर उठा लेना

बहुत आदर करना। प्रयोग—उमने तो सुनील को हाथों पर उठा लिया (कठ०—दे० स०, २४९)

हाथों बिक जाना या बेचना

पूरी तरह बरा में होना। प्रयोग—जुग जुग विरद गौ चलि आवी, भक्तनि हाथ बिकानी (सू० सा०—सूर, ११); को करि सोचु मरे तुलसी, हम जानकीनाथ के हाथ बिकाने (कवि०—तुलसी, १६५); उदर नरी किकर कहाइ बेच्यो विषयनि हाथ द्विपो है (विनय०—तुलसी, १७१); जा दिन ते बिलपो रो मो तन, ता दिन ते उन हाथ बिकानी (नट० प्रथा०—मंद, ३०५); वे तो हैं बिकानी हाथ मेरे हो तिवारे

हाथ, तुम प्रजनाथ हाथ कौन के बिकाने हो? (केशव० (१)—केशव, ७); तेरे काज दीन रहै तो बिन मलयौ हम तोही यो घघौन हाथ तेरेई बिकानी है (क० र०—सनापति ४५); दग देलै जहि आदरे, मन तेहि हाथ बिकान (रहोम कवि०—रहोम, १७); जीवन जगत मुदत निनही को जीवन बिकाने इनके हाथ (मा० प्रथा० (२)—मारलेन्दु, ४५३); सब की मुनना किन्तु किसी के हाथ न जाना बिक (मर्म०—हरिऔध, १४२); मैं कब बिका या उनके हाथ? (मुद्द०—वचन, ७९); बिनय भी तुम्हारे हाथों बिका हुआ-ना जान पड़ता है (रंग० (१)—प्रेमचंद, ६२); इस तरह सैनिक व्यक्ति किसी एक व्यक्ति के हाथों बिक नहीं जाती थी (विप०—प्रेमी, ६५)

हाथों सौंप देना

सरस्वती या देख-रेख में रख देना। प्रयोग—अपने शिष्यों को सैने योग्य व्यक्तियों के हाथ सौंप दिया है (चित्र०—मग० वर्मा, १९)

हाथों हारना

गामने बरा न चलना। प्रयोग—रोकी रहै न, दहै, धन घानंद बावरी रीझ के हाथनि हारिये (घन० कविता—घना०, ५)

हाथों-हाथ

फोरन; तत्परता से। प्रयोग—हाथों मेंहरी मन हाथों हाथ चुरावै (मा० प्रथा० (२)—मारलेन्दु, २९१); विशुद्ध दूध कहाँ मयस्सर होता है? सब दूध हाथों हाथ बिक जाता (मान० (१)—प्रेमचंद, ४३); रौतहट हाट में कटिहार मिल के कुल्हो लोग चार आने मेर नमर आलू हाथों हाथ उठा लेते हैं (मैला०—रेणु, १३)

हाथों-हाथ लेना

बड़े आदर और सम्मान में स्वागत करना। प्रयोग—देवता हाथ हाथ पसु लेही। पस पर जहाँ सीम नहु देहा (पद०—जायसी, १०२०); हाकिम जी की बेगम और बहु खरजीद ने दुखी तारा को बहुत महानुक्ति से हाथों-हाथ लिया (झुठा० (१)—यशपाल, ४१६); जाति बिनके हाथ न ऊँचे उठी। लोग उनको क्यों न हाथों हाथ ल (जुमै०—हरिऔध, ६)



### हामी भरना

स्वीकार करना। प्रयोग—चल सके हाथ पाँव तब कैसे जब कि हामी रहा न मन भरता (बोल०—हरिऔध, २०९)

### हाय-तोबा मचना या होना

रोना-चिल्लाना या हाय-हाय होना। प्रयोग—इतने पर भी केवल चन्द्रहार न होने से वहाँ हाय-तोबा मच गयी (गवन—प्रेमचंद, २०)

### हाय-हाय पड़ी रहना

अभाव का रोना होना। प्रयोग—घर में एक मेहरिया है और एक बुढ़िया मा। मुदा रात-दिन हाय-हाय पड़ी रहती है (रंग० (१)—प्रेमचंद, २५-२९)

### हार खाना

हारना। प्रयोग—जैसे कि यानेश्वर के हर्षवर्धन ने और सब देशों को जीत नर्मदा तट पर पुलकेशी (द्वितीय) से हार खाई (गुलेरी ग्रंथ—गुलेरी, २१६)

### हारिल की लकड़ी होना

सहारा होना। प्रयोग—हमारे हरि हारिल की लकरी (सू० सा०—सुर, ४६०६)

### हाल पतले होना, हालत खराब होना,—पतली होना

(१) आर्थिक स्थिति खराब होनी। प्रयोग—हमारी हालत बहुत खराब है (वीने०—रा० रा०, २०३)

(२) स्वास्थ्य खराब होना। प्रयोग—सूचना पहुँचते ही पेरियनायकी के तो हाल पतले होने लगे (सुहाग०—अ० ना०, ६३); हमारी तो हालत दिन पर दिन पतली हो रही है (ये कोठे०—अ० ना०, ९९)

(समा० मुहा०—हाल खराब होना)

### हालत खराब होना

दे० हाल पतले होना

हालत पतली होना

दे० हाल पतले होना

### हालत बिगड़ना

(१) आर्थिक स्थिति खराब होनी। प्रयोग—हम लोगों की हालत तो बिगड़ गयी है (झूठा० (२)—यशपाल, ५०३)

(२) तबीयत बहुत खराब होनी; मृत्यु निकट होनी।

### हालत संगीन होना

जीवन को सुतरा होना। प्रयोग—जब से कुल्फी की हालत

और संगीन हुई, तब से उनकी स्त्री के वहाँ एक क्षण पैर नहीं जमते (कुल्लो०—निराला, १३५)

### हिचकी लगना

(१) रोते-रोते बुरा हाल होना—हिचकी आने लगनी। प्रयोग—तार बंधता न आमुत्रों का है आज भी हिचकियाँ नहीं लगती (चुमते०—हरिऔध, ६३)

(२) मरने के निकट होना। प्रयोग—है हिचकते प्राण तन की छोड़ते या इसी से आज है हिचकी लगी (बोल०—हरिऔध, १२२)

### हिम्मत का जवाब देना,—छूटना,—टूटना,—पस्त होना

कार्य की कठिनता के कारण साहस जाता रहना। प्रयोग—घर में भुँजी भांग नहीं है तो भी न हिम्मत पस्त (भा० ग्र० (२)—भारतेन्दु, ३९६); वह धंधेरे में ही दीवार से चिमट कर खड़ा हो गया, उसकी हिम्मत ने जवाब दे दिया (गोदान—प्रेमचंद, १३६); अपनी हालत को देखकर हिम्मत छूट रही है (पदम० के पत्र—पदम० शर्मा, २१३); कभी-कभी पड़े-पड़े रमा का जी ऐसा पचराता है कि पुलिस में जा कर सारी कथा कह सुनाये। जो कुछ होना है, हो जाय × × लेकिन एक क्षण में हिम्मत टूट जाती (गवन—प्रेमचंद, १५५)

### हिम्मत छूटना

दे० हिम्मत का जवाब देना

### हिम्मत टूटना

दे० हिम्मत का जवाब देना

### हिम्मत पस्त होना

दे० हिम्मत का जवाब देना

### हिम्मत बांधना

साहस करना। प्रयोग—स्तन का कलेजा धड़का। पर हिम्मत बांधी और खड़ा हो गया (चोटी०—निराला, ६१)

### हिय की तपन मिटना या मिटाना

(१) मन का दुःख जेब होना। प्रयोग—मुरदास किसीर मिलबहु, भेटि हिय की तात (सू० सा०—सुर, ४००३)

(२) ईर्ष्या का अंत होना।

(समा० मुहा०—हिय की तपन बुझना या बुझाना)



### हिय में धरना

मन में विचार लाना। प्रयोग—बिसमय हरष न हिय कछु धरहु (राम० (बाल)—तुलसी, १४९)

### हिय में समाना

स्वीकार होना; हृदय को विश्वास होना। प्रयोग—मो मत मूढ़ कहत अवलनि सो, नाहि सो हूँ समाने (सु० सा०—सुर, ४४२३)

### हिय हारना

साहस छोड़ना। प्रयोग—प्रभुहि देखि सब नृप हिय हारे (राम० (बाल)—तुलसी, २५२)

### हिया मिराना

हृदय को आनंद और संतोष मिलना। प्रयोग—सूरदास देखी ब्रजबासिनि, तबही हियो मिराइ (सु० सा०—सुर, ४०५६); तपति बुझाइवे को हिय मियराइवे को रंभा तैं सरम तेरे तन को परस है (क० र०—सेनापति, ७); निमि-बामर घाटन बाटन में हवा हाटन देखि मिरावै हियो (इक०—बोधा, १३)

(समा० मुहा०—हिया जुड़ाना)

### हियाव पड़ना

साहस होना। प्रयोग—कामों कहौ काहुँ सो न बढ़त हियाउ-सो (विनय०—तुलसी, १८२)

### हिये की आँख खुलना

ज्ञान होना। प्रयोग—हाथ मरोरि धुनै मिर मांसी। पै तोहि हिए न उधरी पांसी (पद०—जायसी, ३४१५); उधरहि बिमल विलोचन ही के (राम० (बाल)—तुलसी, ४)

### हिरन हो जाना

भाग जाना; काफूर हो जाना। प्रयोग—अस्ति की राज-नीति आज हिरन हो गई थी (देवकी०—रा० रा०, १२१)

### हिलकी बंधना

रोते-रोते बुरा हाल होना। प्रयोग—इस बात का उत्तर कौन देता, चुन्नी की तो हिलकी बंधी हुई थी (मा—कौशिक, ३२३)

### हिलना

(१) विचलित होना। प्रयोग—हिल गये दिल भी न, हिलना चाहिये। जाय हिल क्यों पेट का पानी हिले (कुमते०—हरिऔध, ३७)

(२) पाम रहना; टिकरहना। प्रयोग—बहतरी किस तरह हिली रहती जब रहे काहिली दिवाते हम (कुमते०—हरिऔध, १२७)

(३) परचना।

(४) चले जाना।

### हिला देना

(१) विचलित करना। प्रयोग—बहु लोभ मुझे हिला रहा। प्रिय का ध्यान यहाँ जिला रहा (साकेत—गुप्त, ३२७); वे हिला लेते उन्हें देखे पये जो न श्रीरो के हिलाने से हिले (बोल०—हरिऔध, १८९)

(२) जड़ कमजोर कर देना।

### हिसाब कर देना

(१) नौकरी से हटाना। प्रयोग—नुरंत उसका हिसाब कर दिया गया। वह चला गया (ज्ञान०—यशपाल, ४०)

(२) लेन-देन की स्थिति स्पष्ट करनी।

(समा० मुहा०—हिसाब देना)

### हिसाब साफ करना या होना

लेन-देन बराबर करना या होना। प्रयोग—कोठी का हिसाब भी साफ हो जायेगा और बंगले का काम भी खतम हो जायेगा (सिंदूर०—ल० मिश्र, १७)

### हीरा होना, हीरे का टुकड़ा होना

(१) बहुत चरित्रवान और गुरी व्यक्ति होना। प्रयोग—अगर सराव और जुए की लत ने उसे न बिगाड़ दिया होता तो वह हीरा या बाबूजी, खरा हीरा (जहाज०—इ० जोशी, २५-२६); कहते थे, लड़का हीरे का टुकड़ा, गुनाब का फूल है (लिली—निराला, ११); तू स्त्री नहीं होरा है (सु० सु०—सुदर्शन, ३१९)

(२) बहुत मूल्यवान या महारवपूर्ण होना।

### हीरे का टुकड़ा होना

### दे० हीरा होना

### हीरे का रोजगार करने के बाद कांच देखना

बहुमूल्य वस्तु के बाद व्यर्थ की चीज में पड़ना। प्रयोग—'हरिचंद' जू हीरन को बेवहार के कांचन को ले परेसिये का (भा० प्रश्ना० (२)—भारतेन्दु, १७४)

### हीरे की कनी चाटना

हीरे का चुर साकर आत्म हत्या करनी। प्रयोग—आपके



जैसा जिसे हीरा मिले क्यों मरे वह चाट हीरे की कनी  
(चोखे—हरिऔध, ४९)

**हुक्का बंद होना, हुक्का-पानी बंद करना या होना**  
जाति-बाहर करना या होना । प्रयोग—हमारी विरादरी  
के लोग घमकाते हैं कि तुम जंट साहब की नोकरी करोगे  
तो हुक्का-पानी बंद हो जायगा (मान० (३)—प्रेमचंद, १४०);  
खाली हम ऐसा करें तो जाति बाहर कर दिये जाय—भाई  
विरादरी में हुक्का पानी बंद हो जाय (मिस्त्रा—कौशिक,  
१२७); विरादरी में यह बात फैलेगी, तो हुक्का बंद हो  
जायगा (रंग० (१)—प्रेमचंद, १९२)

(समा० मुहा०—हुक्का-पानी न रखना)

**हुक्का-पानी बंद करना या होना**  
दे० हुक्का बंद होना

**हुन बरसना**  
घन की बहुत अधिकता होनी । प्रयोग—घरछा तो यह  
रुपए कहाँ से आ गये ? कहाँ से हुन बरस पड़ा (गोदान—  
प्रेमचंद, ४१); हुन बरसता था, अमन था, चैन था (चुमते०  
—हरिऔध, १६)

**हुनर चलना**  
कोई प्रभाव डाल पाना; चालाकी चलनी । प्रयोग—मत्सर  
मान मोह मद चोरा । इन्ह कर हुनर न कवनहु घोरा  
(राम० (३)—तुलसी, १०५७)

**हुर हो जाना**  
चल देना । प्रयोग—सहसा एक आदमी ने कहा—पुल्लिप  
घा रही है । और सब के सब हुर हो गये (मान० (२)—  
प्रेमचंद, ७५)

**हुरे बोलना**  
हर्षध्वनि करनी । प्रयोग—धम्म पर हो रहे निष्ठावर हैं  
आज वे बोल बोल कर हुरे (चुमते०—हरिऔध, १३३)

**हुरों उड़ाना**  
बदनाम करना; तिरस्कार करना । प्रयोग—शरणाधियों के  
केस में जनसंघ वाले इनकी हुरों उड़ा रहे हैं तो उन्हें भी  
कहीं कीचड़ उछालनी थी (बुंद०—अ० ना०, ४२)

**हुलिया टाइट होना**  
बहुत हैरान हो जाना । प्रयोग—अब तो कम्प्युनिस्ट धायेंगे

बाबूजी, और इनकी हुलिया टाइट कर देंगे (बुंद०—  
अ० ना०, ४१)

(समा० मुहा०—हुलिया तंग होना)

**हुं न रह जाना**  
अहम् भाव मिट जाना, अहंकार दूर होना । प्रयोग—तू  
तू करता तू भया, नूतन में रही न हूँ (कबीर ग्रंथा०—  
कबीर, ५)

**हुक उठना**  
हृदय में पीड़ा होनी । प्रयोग—वे गुन ये सबगुन सुन हरि  
के, हृदय उठति है हुक (सु० सा०—सूर, ४२७२)

(समा० मुहा०—हुक बैठना)

**हुठा देना**  
अशिष्टता से हाथ मटकाना, ठेगा दिलाना । प्रयोग—  
नागरि, विविध विनास तजि, बसौ गवैलिनु माहि मूढ़नि  
में गनबो कि तू, हुठ्यो दे इठलाहि (बिहारो रत्ना०—बिहारो,  
५०६)

**हुर की बच्ची**  
बहुत सुंदर लड़की । प्रयोग—बंसे तो दोनों अच्छी हैं,  
परन्तु छोटी तो बिलकुल हुर की बच्ची है (मा—कौशिक,  
२९९)

**हृदय उछल पड़ना**  
प्रसन्न होना । प्रयोग—वे होते थे मुख, हृदय थे उछले  
जाते (वैदेही—हरिऔध, २)

**हृदय उमड़ आना**  
भावान्तरिक होना । प्रयोग—बाते बिलाप गई रसना पे  
हियो उमड़्यो कहि एको न भाई (घन० कवित्त—घना०,  
९४); उनका दयाई हृदय मेरा मुंह देखकर उमड़ पड़ा  
(वाण०—ह० प्र० द्वि०, १३५); कैंसी करुणा-जनक दृष्टि है  
हृदय उमड़ कर आया है (मुकुल—सु० कु० चौ०, ४५)

**हृदय कांपना**  
(१) डर जाना । प्रयोग—रिपिन कह्यो, तुव सतम जश  
धारभ सखि इन्द्र को राज-हित कंपी हीयो (सु० सा०—  
सूर, ४०५); बहुरि आइ देखा सुत सोई हृदय कंप मन धीर  
न होई (राम० (बाल)—तुलसी, २१०); उनको कहते बख-  
हृदय भी बार-बार है कंपता (मर्म०—हरिऔध, १४)



(२) सीत के प्रकोप से कंपन होना । प्रयोग—काया हिया जनावा मोऊ । तो पै जाइ होइ संग पीऊ (पद०—जायसी, ३०१९)

### हृदय का काँटा निकलना

दुश्चिन्ता, घाशका या दुर्भाव दूर होना । प्रयोग—पर चारों भाई बहुत प्रमत्त थे, मानों उनके हृदय का काँटा निकल गया हो (मान० (१)—प्रेमचंद, ७४)

### हृदय का घाय

हृदय की पीड़ा । प्रयोग—घपने ऐश्वर्य की परिस्थितियों में रहकर उसके हृदय का घाव अच्छा नहीं हो सकता था, पारतिपुत्र में उसने यही सोचा था (चित्र०—भग० वर्मा, १५६)

### हृदय का चोट खाना

हृदय को पीड़ा पहुँचनी । प्रयोग—जो वे आते न बज बरसो, टूट जाती न आशा । चोटे खाता न उर उतना जो न यो ऊब जाता (प्रिय०—हरिऔध, २०१)

### हृदय का टुकड़ा

प्रत्यंत प्रिय । प्रयोग—हाय वह तपस्विनी बूढ़ा माता ।  
× × उसका तो × × हृदय का टुकड़ा आँखों का तारा  
बूझने का सहारा, आशा का अबलम्ब, सब कुछ जाता रहा  
(पद्म पराग—पद्म० शर्मा, ३९)

### हृदय का दाह

हृदय की पीड़ा । प्रयोग—सोइ करी ज्यो मिटे हूँ को दाह, परं उर सीरक (सु० सा०—सूर, ४५४३)

### हृदय का धनी

विशाल एवं उदार हृदयवाला व्यक्ति । प्रयोग—वे धनी न हों तो क्या हूँ, वे हृदय के धनी हैं (रैशमी०—राम० वर्मा, १५२)

### हृदय का शूल होना

(१) दुःखदायी होना । प्रयोग—मगर भाव एक ऐसी बात हो गयी जो इस जाति की और युवतियोंके लिए चाहे गुप्त संदेश होती, मुलिया के लिए हृदय का शूल थी (मान० (१)—प्रेमचंद, २९७)

(२) दुःखमन होना ।

### हृदय का हार

प्रत्यंत प्रिय । प्रयोग—घोर मरणा ? वह बन जाता है कभी हृदय का हार भी (साकेत—गुप्त, २६४)

### हृदय की आँख

सुभवृत्त, आंतरिक ज्ञान । प्रयोग—सुआ जा पहुँ पड़ाए बैना । तेहि कत बुधि जेहि हिए न नैन (पद०—जायसी, ३१५); सदा न जे सुमिरत रहहि, मिलि न कहहि प्रिय बैन । ते पै तिन्हके जाहि घर, जिन्ह के हिये न नैन (दोहा०—तुलसी, ३२९)

### हृदय की कली खिल जाना

प्रसन्नता होना । प्रयोग—किन्तु ज्ञानशंकर के हृदय की कली यहाँ भी न खिली (प्रेमा०—प्रेमचंद, १०५); ठीक वस्तु मिल जाने से उसके हृदय की कली ऐसे ही खिल जाती है जैसे आत्मज्ञान से किसी वेदान्ती की (मेर०—गुलाब०, ५१)  
(समा० मुहा०—हृदय खिल उठना, हृदय-कमल खिल जाना)

### हृदय की खटक

दुश्चिन्ता । प्रयोग—घनभानंद स्वाम मुजान हरी जिय-चातकि के हिय की खटके (घन० कवित्त—घना०, १७०)

### हृदय की गाँठ

माया-मोह, दुर्भाव आदि । प्रयोग—माला पहर्पा कुछ नहीं, गाँठि हिरदा की खोइ (कबीर ग्रंथा०—कबीर, ४६)

### हृदय की गाँठ खोलना

मनोमालिन्य दूर करना । प्रयोग—सूर स्वाम अब तजो निठुरई गाँठि हृदय की खोलो जू (सु० सा०—सूर, ३१२७); फूट रहे क्यों मुख सो बोलो, हिय की गाँठि हंस हंस खोलो (मा० ग्रंथा० (२)—भारतेन्दु, १५४); तोतले जो मुन शिशु के बोल बिहस कर गाँठ हृदय की खोल (सो०—दत्तवन, १४)

### हृदय की भूख

मन की इच्छा । प्रयोग—लेकिन अपने हृदय की सारी भूख वह उस पत्र में भर देती (शेखर (१)—अज्ञेय, १०५)

### हृदय कुचलना

हृदय को पीड़ा पहुँचानी । प्रयोग—बिता और ग्लानि उसके हृदयको कुचले डालती थी (तावन—प्रेमचंद, २७)



### हृदय कुरेदना,—खुदना

मन को पीड़ा पहुँचानी। प्रयोग—खेल चलकेले हियौ खुदें  
पन आनंद यो जान प्यारे मतवारे भारे सुगरब के (धन०  
कवित्त—घना०, १३८); बाल विधवा (भ्रातृ जाया) की  
वयनीय दशा का ध्यान पंडित जी के कोमल हृदय को  
बराबर कुरेदता रहता था (पद्म पराग—पद्म० शर्मा, ९१)

### हृदय कुल्लिश के समान होना

अत्यंत कठोर हृदय वाला होना। प्रयोग—जिसे मरे भल  
भूपति जाना मोर हृदय सत कुल्लिस समाना (राम० (अ)—  
तुलसी, ५२८)

### हृदय कूटना

अत्यंत दुःख में छाती पर आघात करना। प्रयोग—मैं  
रोती हूँ हृदय घपना कूटती हूँ सदा ही (प्रिय०—हरिऔध,  
१३०)

### हृदय के टुकड़े-टुकड़े करना या होना

बहुत दुःख देना या होना। प्रयोग—प्यार रमार्जकर को  
बहुत दूर ले गया था। अब हृदय के टुकड़े-टुकड़े हुए जा  
रहे थे (लिली—निराला, ४५); तुमने मेरे हृदय के टुकड़े-  
टुकड़े कर दिए (रंग० (२)—प्रेमचंद, २७)

### हृदय को छूना

हृदय पर प्रभाव पड़ना। प्रयोग—बन लपटों से नए पंख  
मांगो, तुम मन के नभ में उड़ सकते, मर्म में बस सको,  
हृदय छू सको (कला०—पंत, २९); मन्दे के स्वर में जो  
दर्द या वह चन्ना के हृदय को छू गया (ज्ञान०—यशपाल,  
९५)

### हृदय को मथना

पीड़ा देनी। प्रयोग—चाची के कठोर वाक्य उनके हृदय  
को मथ रहे थे (प्रेमा०—प्रेमचंद, २७)

### हृदय खुदना

### दे० हृदय कुरेदना

### हृदय खो देना

सरसता, सहृदयता आदि हृदय के गुणों को नष्ट कर देना।  
प्रयोग—जो अनन्य भाव से अर्थ-साधना में ही लीन रहेगा  
वह हृदय खो देगा (चित्ता० (१)—शुक्ल, २६४)

### हृदय खोलकर

जी भर कर; मुक्त भाव से। प्रयोग—जय जयति जाट

प्रिय जाट जय हृदय खोलि सबहिन कस्यो (राधा० ग्रंथा०—  
राधा० दास, ३); जहाँ मृदुल पथ पथिक-जनों की हृदय  
खोल सेवा करता था (अना०—निराला, ४८)

### हृदय गलना

मन द्रवित होना। प्रयोग—तुम लोगों का पावन-तम,  
पनुराग-राग अवलोके है हृदय हमारा गलता, आसू रुक  
पाया रोके (वेदेही०—हरिऔध, ७७); भट्टिनी के नयनांबु  
से मेरा हृदय गलने लगा (वाण०—ह० प्र० द्वि०, २५१)

### हृदय चटकना

टूटी होना; हृदय खिन्न होना। प्रयोग—माँ का हृदय  
उभी छाया भीतर ही भीतर चटक गया (भारती०—रा० रा०,  
७१)

### हृदय चुराना

जी चुराना। प्रयोग—शीतलता पीकर प्रदाह से कैसे हृदय  
चुराऊँ ? (चक्र०—दिनकर, ३२७)

### हृदय छेद डालना

हृदय को बहुत पीड़ा पहुँचानी। प्रयोग—पंडित जी के  
अंतिम समाचार रूपी वचन से बच्चों के कुसुम-कोमल चित्त  
वनों छेद डाले (पद्म पराग—पद्म० शर्मा, ३६)

### हृदय जलना

(१) हृदय को क्लेश होना। प्रयोग—ता सुख हेतु दहत  
दुख दाहक, छिनु छिनु जलत जड़ात हियौ रो (सू० सा०—  
सूर, २४८४); अजहँ हृदय जलत तेहि आँचा (राम० (अ)—  
तुलसी, ४०२)

(२) ईर्ष्या होनी। प्रयोग—इधर राजा साहब का हृदय  
घपने सामने के एक छोकरे की उन्नति से जला हुआ था  
(राधा० ग्रंथा०—राधा० दास, ३६७); कौन जाने किस किन  
का हृदय जल रहा है कि दौरसेन के अधिपति महाराज  
कंस की सबसे अधिक प्रिय स्त्री, मागध सम्राट जरासंध  
की कन्या, आज यादव सिंहासन पर उपस्थित है (देवकी०—  
रा० रा०, ५१)

### हृदय जुड़ाना

आनंद होना। प्रयोग—ता सुख हेतु दहत दुख दाहक छिनु  
छिनु जलत जड़ात हियौ रो (सू० सा०—सूर, २४८४); नुरत  
किरे मुर हृदय जुड़ाना (राम० (बाल)—तुलसी, १९७)



हृदय टुक-टुक होना

७५०

हृदय पर सांप लोटना

**हृदय टुक-टुक होना**

बहुत मानसिक कष्ट होना। प्रयोग—पिताजी, चम्पा बीबी को छोड़ते हुए मेरा हृदय टुकड़े-टुकड़े होता है (मिसा०—कौशिक, १००)

**हृदय टेढ़ा होना**

दुष्ट या कुटिल होना। प्रयोग—लोग कहते हैं विरोधी के विचार संकुचित हैं उसका मस्तिष्क कमजोर है, उसका हृदय टेढ़ा है (शेखर (१)—अज्ञेय, ७०)

**हृदय उगमगाना, डाँचाडोल होना**

मन का विचलित होना। प्रयोग—उसका हृदय पहले ही से उगमगा रहा था (मा—कौशिक, ६९); जसो के आने से रामनाथ का हृदय डाँचाडोल हो उठा (मिसा०—कौशिक, २००)

**हृदय डाँचाडोल होना**

दे० हृदय उगमगाना

**हृदय तक पहुँचना**

मन का भाव पता लगाना। प्रयोग—दारोगा ने उसे आलोचक नेत्रों से देखा और उसके हृदय तक पहुँच गये (गोदान—प्रेमचंद, ११३)

**हृदय धामकर**

किसी प्रकार माहृत और संव करके। प्रयोग—दो हजार मनुष्यों ने हृदय धामकर फँसला मुना (मान० (८)—प्रेमचंद, ४७); हृदय धाम लेता संसार, मुन मुन घोर बज-हुंकार (परि०—निराला, १८७)

**हृदय दे देना**

पूरी तरह अनुरक्त होना। प्रयोग—भोला-भाला निज-हृदय को श्याम को दे चुकी है (प्रिय०—हरिऔध, १९९); प्राह, मैं ऐसे पुरुष को हृदय दे कर कृत-कृत्य हुई (वंशाली० (२)—चतुर०, ३७)

**हृदय दो टुक होना**

अत्यंत दुःख होना। प्रयोग—कछु बात मुने सपनेह बियोग की होन चहे दुद टुक हियो (केशव० (१)—केशव, १६४)

**हृदय धड़कना**

भय या आशंका में होना। प्रयोग—श्यामनाथ का हृदय धड़कने लगा (मा—कौशिक, ३४०)

**हृदय नाच उठना**

हृदय में अत्यंत प्रसन्नता होनी। प्रयोग—जमुना की तरंगों पर बालरवि की किरणें नाच रही हैं, जिन्हें देखकर हृदय मारे आनन्द के नाच रहा है (राधा०—ब० स०, १०५); लस-कलरव की गति पर रत हो हृदय नाचता रहता है (नुर०—मल्ल, ६); देख देख नाचता हृदय बहने को महा विकल-बेकल (परि०—निराला, १७६)

**हृदय निकाल कर रख देना**

बहुत मार्मिक बात कहनी; हृदय की बात कहनी। प्रयोग—आप तो अब खुद ही मुनंगे, डामे में अपना हृदय निकाल कर रख दिया है (मान० (४)—प्रेमचंद, ७७-७८); वास्तव में आपने बड़ा सजीव वर्णन किया है। हृदय निकालकर रख दिया है (पद्म० के पत्र—पद्म० शर्मा, २०)

**हृदय निकाल लेना**

किसी के मन को पूरी तरह अपने वश में कर लेना। प्रयोग—प्रति विचित्र देखेउं सो ठाढ़ी। चित के चित्र लोन्ह जिय काढ़ी (पद०—जायसी, ४६।२१)

**हृदय पत्थर होना**

अत्यंत कठोर होना। प्रयोग—जे हरि कथा न करहि रति तिन्ह के हिय पाषाण (राम० (३)—तुलसी, १०६८); हृदय ! पत्थर के होकर तू यह सब कान खोल के सुनो (मा० प्रथा० (१)—भारतेन्दु, २६५); स्त्री और दादा के वियोग के बाद हृदय पत्थर हो गया (कुल्लो०—निराला, ८०)

**हृदय पर चोट लगना**

हृदय को कष्ट पहुँचना। प्रयोग—परन्तु जब कोई दुष्ट उनसे भिड़ जाना, उनकी ईमानदारी पर संदेह करता × × तब मुंशी जी के हृदय पर बड़ी चोट लगती (मान० (८)—प्रेमचंद, १७)

(समा० मुहा०—हृदय को चोट लगना)

**हृदय पर छनका लगना**

हृदय को घाघात पहुँचना। प्रयोग—रामनाथ के हृदय पर एक छनका लगा। वह भीतर ही भीतर तिल-मिला उठे (मिसा०—कौशिक, २१३)

**हृदय पर साँप लोटना**

(१) अत्यंत भयभीत हो जाना। प्रयोग—लोटता हो ज्यों



हृदय पर साँप, सभय कौशल्या मुमित्रा काँप—हाथ कर, करने लगी उपचार-व्यजन, सिचन, परस घोर पुकार (साकेत—गुप्त, १९१)

(२) मग्न रह जाता ।

(३) ईर्ष्या होनी ।

**हृदय पर हाथ रख कर**

सच-गव, पूरी ईमानदारी से । प्रयोग—अपनी घोर देखो, हृदय पर हाथ रख कर पृथ्वी (कंकल—प्रसाद, १७०)

**हृदय पसीजना,—पिघलना**

(१) दयालु होना, दयाद्रु होना । प्रयोग—जामु दया-पूरित हृदय खलि जन मुखहि मलीन । पिघलि चलत हो धीर तजि मेटन को दुख दीन (राधा० प्रथा०—राधा० दास, ७); अपने देश घोर जाति को दुःख दावानल में दग्ध होता देखकर उनका हृदय पसीज गया (पद्म पराग—पद्म० शर्मा, १८)

(२) कठोरता दूर होनी, भावपूर्ण हो जाना । प्रयोग—प्रेम-पुराने को बीजू उद्यो जमि, छीजि, पसीजि हियो हुलसोहे (शब्द०—देव, ३३); जब उसके समवेदना के वाक्यों से पिता का हृदय पिघल गया और वे माता के संस्मरण सुनाने लगे, शेखर दबे पांव उठकर बाहर चला गया (शेखर—अज्ञेय, १४३)

**हृदय पिघलना**

दे० हृदय पसीजना

**हृदय फटना,—बिलगाना**

(१) अत्यंत द्रवित होना, दुःख होना । प्रयोग—हिवा फाट यह जबहि कुहकी । परे आँसु होइ होइ सब लूकी (पद०—जायसी, ३१७); निठुर बचन मुनि फटत हियो यह, रहि रे अलि मति मंद (सु० सा०—सूर, ४५३१); हा ! करुणामय नाथ हो कैसे कृष्ण मूरारि । फाटि हिय दुग चल्पी (नंद० प्रथा०—नंद०, १६३); देखि कष्ट हिय फटत है केहि संकट हैं प्रान (राधा० प्रथा०—राधा० दास, २६); मेरा हृदय इस हंसी से और भी फटने लगा (बाण०—ह० प्र० दि०, २३५); यह बात जब याद आती है × × तो कलेजे पर साँप लोट जाता है । सहृदयता का हृदय फटने लगता है

(पद्म० के पत्र—पद्म० शर्मा, २३२); इन बातों को याद करके उसका हृदय फटा जाता था (गवत—प्रेमवंद, १९६)

(२) किसी के प्रति अच्छे विचारों में न्यूनता पानी । प्रयोग—परन्तु बपेकार के इस ईर्ष्यापूर्ण क्रूर कृत्य से मातंगी का हृदय फट गया (वेशाली०—चतुर०, १०१)

**हृदय फटफ उठना**

प्रसन्न हो जाना । प्रयोग—भूले नाहिं हंसनि विहारी “हरिवंद” तैसी, बांकी चितवनि हिय करकि करकि उठै (मा० प्रथा० (२)—भारतेन्दु, १४८)

**हृदय बल्लियों उछलना**

उत्तेजित होना । प्रयोग—पुलिस के प्रत्याचारों से सिक्के-सिमटे पड़े हुए उनके हृदय जैसे बल्लियों उछल रहे थे (जहाज०—इ० जोशी, ९२)

(समा० महा०—हृदय बांसों उछलना)

**हृदय बिंधना**

हृदय को पीड़ा पहुँचनी । प्रयोग—क्यों घनआनंद यौ बचियें जिय ज्ञात बिधो अनियारिये कौपनि (घन० कवित—घना०, ११७)

**हृदय बिलगाना**

दे० हृदय फटना

**हृदय बिलोना**

जी आलोकित करना; व्याकुल करना । प्रयोग—रीक बिलोएई डारति है हिय, मोहति टोहति प्यारी अकोरै (घन० कवित—घना०, १४३)

**हृदय बैठना**

मन का बहुत दुखी और उत्साहहीन होना । प्रयोग—बिवाह के लिये रमाशंकर को इच्छा न थी । उसकी चोट ताजी थी । हृदय बैठ गया था (लिली—निराला, ४६-४७); टूटन चल दी, रामनाथ का हृदय बैठने लगा (भिसा०—कौशिक, ११२)

**हृदय बोरा होना**

मन का पूरी तरह किसी प्रभाव में होना । प्रयोग—घापुन पद-मकरंद मुवा रत, हृदय रहत नित बोरे (सु० सा०—सूर, ४२१८)

(समा० महा०—हृदय डूबा होना)



### हृदय भर आना या लेना

हृदय में दुःख या तकला होना। प्रयोग—जब इन मैमनि कौन चरगई भनि-भरि लेति हिए (सु० सा०—सूर ३०९७); आग ऐसी बाल न बहे हृदय भर आता है (रैजमी०—राम० वर्मा, ५७)

### हृदय भीगना

हृदय का भाव या रस में हूबना। प्रयोग—रीभनि लै भिजयो हिसरा, घन-घनत स्वाम मुजान कवा को (घन० कवित्त—घना०)

### हृदय में आग लगना

पाम या ईर्ष्या से पीड़ित होना। प्रयोग—उसी प्रेम से भरे हुए निष्कण्ट हृदय में आग-सी सुलगती रहती थी (गहन—प्रेमचंद, २७-२८)

### हृदय में आग लगाना

मन को पीड़ा दे जाना; विरहाग्नि लगा जाना। प्रयोग—मैंने जोरि मूल मारि हूँ, मैसुक मेह जनाइ घागि लैन आई शिय मेरे गई लगाइ (मति० मक०—मतिराम, २४०)

### हृदय में कांटा खटकना

किसी बात का मन में सदा पीड़ा पहुँचाते रहना। प्रयोग—मेरे हृदय में भी यह कांटा जन्म भर खटकता रहेगा (मिखा०—कोशिक, २१३); किन्तु भरो के हृदय में सदैव यह कांटा खटका करता था (रंग० (२)—प्रेमचंद, १०९)

### हृदय में काला धब्बा होना

दोष या बुराई होना। प्रयोग—उसके हृदय में कुछ ऐसे काले धब्बे थे जिन्हें दिखाने का उसे साहस न होता था (प्रेमा०—प्रेमचंद, ३७१)

### हृदय में कोमल स्थान होना

स्नेह होना। प्रयोग—अमरकान्त के हृदय में अगर घर-बारों के लिए कहीं कोमल स्थान था, तो वह मैना के लिए था (कर्म०—प्रेमचंद, ७)

### हृदय में खटकना

अप्रिय लगना। प्रयोग—साहित्य ने निवाजी ख़ुमान या ज़हान पर कौन पावसाह के हिये न खरकतु है (मृपण ग्रंथा०—मृपण, १६७)

### हृदय में गड़ना

(१) मन को अच्छा लगना। प्रयोग—पहुँची जंगल पार

हृदय परिक हार, कुंडल-तिलक-छवि गड़ी कवि जियरे (गीता० (वा०)—तुलसी, ४३); मेरे हृदय में वह हंसी गड़ गई है (सिद्धा०—ल० मिश्र, १४६)

(२) मन को बुरा लगना।

### हृदय में घर करना

(१) प्रभाव डालना। प्रयोग—धीरे-धीरे पिता को भी जान पड़ने लगा कि गांधीवाद शेखर के हृदय में घर करता जा रहा है (शेखर (१)—अज्ञेय, १२०)

(२) स्नेह पाना।

(समा० मुहा०—हृदय में घर बना लेना,—जगह करना—जगह बनाना)

### हृदय में चुभना,—सालना

हृदय को कष्ट पहुँचाना। प्रयोग—सो मुधि मो हिय में धन आनन्द सालति क्यों हूँ कड़ै न कड़ाई (घन० कवित्त—घना०, ६); वह बात बार-बार हृदय में चुभा करती है (रंग० (१)—प्रेमचंद, ६४)

### हृदय में दबा जाना

मन का भाव प्रगट न होने देना। प्रयोग—करुणा उसे पहचानते ही बाहर निकल आयी पर आलिंगन की कामना हृदय में दबाकर रह गयी (मान० (१)—प्रेमचंद, ३९)

### हृदय में दरार पड़ना

(१) पतित भयभीत होना। प्रयोग—बाजहि भेरि नफ़ीरि धपारा मुनि कादर उर जाहि दरारा (राम० (लं)—तुलसी, ९०७)

(२) व्यासा से व्याकुल हो जाना। प्रयोग—तिनके संग छूटत ही फट्टे रे हिय तोहि कहा न दरार फटी (केशव० (१)—केशव, ४)

### हृदय में न लगाना

हृदय में स्थान न देना, महत्व न देना। प्रयोग—जिन्ह हरि भगति हृदय नहि घानी (राम० (बाल)—तुलसी, १२६)

### हृदय में न समाना

(१) भावतिरेक होना। प्रयोग—जोरि पानि बोले बचन हृदय न प्रेम समात (राम० (बाल)—तुलसी, २८९); मूल मुजहि लोचन खरहि सोकु न हृदय समाइ (राम० (अ)—तुलसी, ४१५)

(२) बहुत अधिक होना।



### हृदय में नमक लगाना

जी को दुख देना । प्रयोग—दुरि दुरि बन की ओट फहा  
हिय लोन लगायो (नंद० प्रथा०—नंद०, १५८)

### हृदय में फफोले पड़ना

बहुत पीड़ा होनी । प्रयोग—मैं यहाँ अग्निकुंड में जल रहा  
हूँ, हृदय में फफोले पड़े हुए हैं, वहाँ किसी को सबर भी  
नहीं (रंग० (१)—प्रेमचंद, ३०७)

**हृदय में बसना,—बसेरा करना,—रमना,—समाना**  
महत्त्व, प्रेम या भक्ति पाना । प्रयोग—जाति जुलाहा क्या  
करे हिरदै बसै गुपान (कबीर प्रथा०—कबीर, २५३); हेरे  
कतहुं न पावो बसहु तो हिरदै मांह (पद०—जायसी,  
४८३); नेह तुम्हार जो हिए समाना । चितउर मांह न  
सुमिरेउ आना (पद०—जायसी, २७१५); सांवरी सी मन  
मूरति, हृदय माही रमि रही (सु० सा०—सूर, ४४८३);  
करम बचन मन राउर बेरा राम करहु तेहि के उर डेरा  
(राम० (अ)—तुलसी, ४९६)

### हृदय में बसेरा करना

दे० हृदय में बसना

### हृदय में रखना

(१) अच्छी तरह ध्यान में रखना । प्रयोग—उमा तो  
बचनु हृदय धरि राखा (राम० (बाल)—तुलसी, ८०)

(२) प्यार करना । प्रयोग—सो छवि सीता राखि उर  
रटति रहति हरि नाम (राम० (अ)—तुलसी, ७३१)

(३) छिपाना ।

### हृदय में रमना

दे० हृदय में बसना

### हृदय में शूल उठना,—सालना

हृदय में कष्ट होना । प्रयोग—सुधि-भूल सबे हिय मूल  
सले हम सो हरि ऐसे भए ए दई (घन० कवित्त—घना०,  
१०५); सहेगा वह कैसे अपमान ? उठेगा क्या हृदय में  
शूल (मुकुल—सु० कु० चौ०, १)

### हृदय में शूल बढ़ना

हृदय की पीड़ा में वृद्धि होनी । प्रयोग—सूर तिनूँ ले चले  
मधुपुरी, हिरदै शूल बढ़ाइ (सु० सा०—सूर, ३५९०)

### हृदय में शूल सालना

दे० हृदय में शूल उठना

### हृदय में समाना

दे० हृदय में बसना

### हृदय में सालना

दे० हृदय में चुभना

### हृदय में स्थान होना

स्नेह होना । प्रयोग—कमला को वह इतना प्यार कर  
चुका था कि अब विवाह की तरफ से बिल्कुल वीतराग  
हो रहा था । मन उड़ा फिरता था । हृदय में जगह न थी,  
था दर्द (लिली—निराला, ४७)

### हृदय में हलचल होना

मन में नाना प्रकार के विचारों का उठना । प्रयोग—  
कुमार गिरि के हृदय में एक हलचल उत्पन्न हो गई (चित्र०  
—भग० वर्मा, ४७)

### हृदय में हक उठना

हृदय को कष्ट होना । प्रयोग—मोरन की चूँके सुनि उठति  
हिये में हकै, चूँके नहीं चातिक-करेजो कड़िबो अरे (घन०  
कवित्त—घना०, २२९)

### हृदय में होली लगाना

मन को जलाना, कष्ट पहुँचाना; ईर्ष्या का कारण होना ।  
प्रयोग—तो मुख जाल ! गुलालहि लाय के मोतिन के हिय  
होरी लगाई (घन० कवित्त—घना०, १२१)

### हृदय रोना

बहुत दुःखी होना । प्रयोग—इस पही मेरा हृदय रो रहा  
है, उसमें उपदेश और ज्ञान की बात नहीं पहुँच सकती  
(रंग० (१)—प्रेमचंद, ९६)

### हृदय लगाना या लगाना

प्रेम होना या करना । प्रयोग—वे ठाड़े, उमदाहु उठ, जउ  
न बुझै बड़वागि । जाही सो लाग्यो हियो ताही के हिय  
सागि (बिहारी रत्ना०—बिहारी, ३८२); दियरा जवाय जागै  
पिय पाय तिय रागै, हियरा जवाय हम जोगहि जवावहो  
(घन० कवित्त—घना०, १२४)



हृदय बज सा होना

७५४

होठ चबाकर

**हृदय बज सा होना**

कठोर मन होना । प्रयोग—सुरदास बिछरत नहि दरबयो बज समान हियो (सु० स०—सुर, ४१८३)

**हृदय शीतल करना या होना**

आनन्द प्राप्त करना या होना । प्रयोग—मातो डीप राज ध्रुव कियो । शीतल भयो मानु को हियो (सु० स०—सुर, ४०३); उमड़ चले धालों के भरने, हृदय न शीतल हो पाया (कामना—प्रसाद, २१)

**हृदय से बोझ हटाना**

किसी बड़ी दुश्चिन्ता का दूर होना । प्रयोग—बोझमन के हृदय से एक भार सा हट गया (चित्र०—मग० दर्मा, ६५)

**हृदय से लगाना**

(१) प्यार करना, हर समय साथ रखना । प्रयोग—भोग विलास को वह जीवन की सबसे मूल्यवान वस्तु समझती थी और उसे हृदय से लगावे रहना चाहती थी (कर्म०—प्रेमचंद, १३)

(२) आनिगन करना । प्रयोग—सोक बिबम कलु कहै न पारा हृदय लगावत बारहि बारा (राम० (अ)—तुलसी, ४१३); मानि लगावो हिये सो हियो भरि आयो गरो कहि आयो कलु ना (जग०—पद्माकर, ५८)

**हृदय हर लेना**

हृदय मोहित कर लेना । प्रयोग—देखि देखि हरि की हरनता हरिन नैन, देखो कहा देखत ही हियो हर लेत है (केशव० (१)—केशव, २१९); कोंबर हाथ रबी मिहदी ठक नीके बजाय हरै हियरा रो (घन० कवित्त—घना०, १८८); बिहंगों का मधुर स्वर हृदय क्यों लेता हर ? (स्वर्ण-धूलि—पंत, ८७)

**हृदय हलका होना**

दुख या चिन्ता का भार कम होना । प्रयोग—यह कहकर जाह्नवी चली गई । सोझी का हृदय हलका हो गया (रंग० (१)—प्रेमचंद, १४७)

**हृदय हिलना या हिलाना**

विचलित होना; दयाग्रं होना या कर देना । प्रयोग—पत्थर पिघले किन्तु मुझारा तब भी हृदय हिलेगा क्या ? (पंच०

—गुप्त, २६); उसका कण कण हृदयों को हिलाव देता था (मान० (३)—प्रेमचंद, २८७)

**हृदय विदारक**

मनको बहुत कष्ट देने वाला । प्रयोग—ते जब कहि पठवत ये बातें जोग की हृदय विदारी (सु० स०—सुर, ४२१०)

**हेत उतारना**

प्रेम में कमी होनी । प्रयोग—कर गहि केव करै जो पता तऊ न हेत उतारै माता (कबीर ग्रंथा०—कबीर, १२३)

**हेत लाना**

प्रेम करना । प्रयोग—चारिउ बंद पड़ाइ करि, हरि सून लाया हेत (कबीर ग्रंथा०—कबीर, ३६)

(समा० मुहा०—हेत करना)

**हेरी देना**

पुकारना, आवाज देनी । प्रयोग—हेरी देत सखा सब आए चले चरावन गैया (सुर—हि० श० स०)

**हैस-बैस**

सोच-विचार । प्रयोग—इसी हैस बैंग में तीन दिन गुजर गए (रंग० (१)—प्रेमचंद, ३३४)

**हो रहना**

(१) निर्भर करना, घनुरक्त होना । प्रयोग—जो जाही का हों रहो, सो तिहि पूरे आस (गु० स०—गुन्द, ४)

(२) कहीं जाकर वहीं रह जाना ।

**हो लेना**

हिम्मत पस्त हो जाना । प्रयोग—दूसरे पत्थर के आते-आते मैं हो लिया था (गु० कहा०—गुलेरी, १२)

**होठ काटना**

भीतरी क्रोध या क्षात्र प्रगट करना । प्रयोग—घन किसी का देख काटें होठ क्यों (चुमते०—हरिऔध, ४१)

(समा० मुहा०—होठ चबाना)

**होठ खुलना**

कुछ कहना । प्रयोग—भर लबालब गया मितम प्याला खल हमारा सका न अब भी लब (चुमते०—हरिऔध, ९६)

**होठ चबाकर**

गुस्से से । प्रयोग—क्यों न जायें चबा चबावों को होठ को क्या चबा चबा होगा (बोल०—हरिऔध, १०१)



होठ पर आना या होना

७५५

होश ठिकाने लगाना

**होठ पर आना या होना**  
कहने के लिए मुँह तक आना । प्रयोग—जब उसे हम बता नहीं सकते होठ पर बात बच रही तो बया (बोलो—हरिऔध, १०१)

**होठ फड़कना**  
प्रावेश या क्रोध के कारण होठों में स्पन्दन होना । प्रयोग—रदपट फरकत नयन रिमोहें (राम० (बाल)—तुलसी, २६०); किम तरह बाँह तब फड़क उठती होठ भी जब फड़क नहीं पाता (बोलो—हरिऔध, १०१)

**होठ बिचकाना**  
अरुण या उपेक्षा प्रगट करनी । प्रयोग—बात सुन करके बिचारों से भरी कब नहीं वे होठ बिचकाते रहे (बोलो—हरिऔध, १०२)

**होठ मलना**  
दुर्वचन बोलने के कारण दंड देना । प्रयोग—जब निकलने लगे कलाम बरे लोग क्यों होठ तब न मज देंगे (बोलो—हरिऔध, १०३)

**होठों में कहना**  
बहुत धीरे से कहना । प्रयोग—चाहिये मुँह खोलकर कहना जिसे लोग होठों में उसे कैसे कहें (बोलो—हरिऔध, १०२)

**होठों में मुसकराना**  
ऐसा हँसना कि दाँत न दिखे । प्रयोग—जी रहा दुख मे मसलता एक का मुसकुराता एक होठों में रहा (बोलो—हरिऔध, १०२)

**होनहार पेड़ के पत्ते शुरू से हरे होना**  
प्रारंभ से ही भावी श्रेष्ठता का आभास मिलना । प्रयोग—होत हरे होने बिरबनि दल, मुमति कहति अनुमानि है (गीता० (बाल)—तुलसी, ८०)

(समा० मुहा०—होनहार पेड़ के पत्ते चिकने होना)

**होनी कहना**  
अपना जीवन वृत्त कहना । प्रयोग—बालमीक नारद घटजोनी । निज निज मुखनि कही निज होनी (राम० (बाल)—तुलसी, ६)

**होम कर देना**

(१) जला दालना, नष्ट करना । प्रयोग—हम अग्निक मोह घोर संकोच में पड़कर अपने जीवन के मुख घोर शान्ति का होम कर देते हैं (गवन—प्रेमचंद, ६९)

(२) उत्सर्ग करना । प्रयोग—जब रात्री में कोनउ घाफत आये, तब का लगाई और का मानस, सब अपने ही होम दें (झाँसी—वृ० वर्मा, १५२); मनीषी जी ने पच को अपने से पृथक नहीं समझा, मैंकहाँ उसमें कमाण और हजारों उगी में होम दिए (गुलेरी ग्रंथ (१)—गुलेरी, २७५)

(३) छोड़ देना ।

**होम करते हाथ जलना**

अच्छा कार्य करते बुरा फल मिलना । प्रयोग—दुसरे दिन मानसिंह की भी मालूम हो गया × × मोचला या होम करते हाथ जला (मृग०—वृ० वर्मा, ३८५); बंबई रहस्यों की नगरी है, होम करते हाथ जलने की वहाँ प्रायः संभावना रहती है (यै कीठें—अ० ना०, २१); संसार की भी क्या सीला है कि होम करते हाथ जलते हैं (रंग० (२)—प्रेमचंद, १०१)

**होली करना**

नष्ट करना । प्रयोग—जीवन मरपट पर अपने सब घर-मानों की कर होली (सी०—वचन, १५४)

(समा० मुहा०—होली जलाना)

**होश उड़ जाना**

किर्कतव्य-विमूढ़ हो जाना । प्रयोग—हाथ, इन दोनों के चरित्र को देखकर मेरे तो होश उड़ गए (मा० मा० (१)—कि० गो०, ८३); यह खबर सुनते ही दोनों के होश उड़ गए (रंग० (१)—प्रेमचंद, ९९); पर भीतर पैर रखते ही उनके होश उड़ गये (चोटी०—निराला, ६)

(समा० मुहा०—होश काफूर होना)

**होश ठिकाने लगाना**

(१) अच्छा सबक मिलाना । प्रयोग—मैं उसका होश जल्दी ठिकाने लगाऊँगा (मृग०—वृ० वर्मा, ७८)

(२) मति ठीक करनी, भ्रांति या मोह दूर होना ।

(समा० मुहा०—होश ठिकाने करना,—लाना)



होश फास्ता हो जाना

७५६

होसला बांधना

### होश फास्ता हो जाना

हुछ समझ में न आना । प्रयोग—इस तीखे अंग्रेज को देखकर मेरे तो होश फास्ता हो जाते थे (अपनी सवर—उग्र, ४९); अगर उन्होंने बात न मानी तो इनसे इतने सवाल किये जायेंगे कि होश फास्ता हो जायेंगे (चोटी—निराला, १०७)

### होआ होना

इराबना होना । प्रयोग—हिन्दू के लिए उर्दू हव्वा नहीं है, मुसलमानों के लिए हिन्दी भले ही हव्वा हो (पद्म पराग—पद्म० शर्मा, २७६)

### होस मिटना

इच्छा पूरी होनी । प्रयोग—मिटत न होस हाथ या मनकी

(भा० ग्रंथा० (२)—भारतेन्दु, ६१७)

### होसला छलकना

मन में इच्छा होनी । प्रयोग—होसला हो छलक रहा दिल में (चुभते०—हरिऔध, ३५)

### होसला पस्त होना

धर्य छूट जाना । प्रयोग—तू ने तो ऐसी लट्ट सी मार दी कि मेरे सभी होसले पस्त हो गए (राधा० ग्रंथा०—राधा० दास, ७०५)

### होसला बांधना

हिम्मत या इच्छा करनी । प्रयोग—हो सका क्या न होसला बांधे (चुभते०—हरिऔध, ३०)

14.3.71